# स्वर्गीय परमतपोनिधि गुरुवर्य



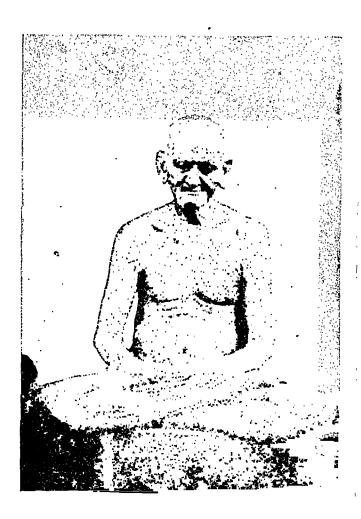
परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ति, योगीन्द्रचूडामणि, धर्मसाम्प्राज्यनायक, समाधिसम्प्राट्

# आचार्य श्री. १०८ शान्तिसागरजी महाराज

(जन्मभूमि– भोज जि. बेलगांम, दक्षिण भारत )

# चौतीस स्थानद्शन -

परम तपोनि ह



परमपूज्य चारित्रचूडामणि

श्री १०८ वर्धमानसागरजी मुनिमहाराज

(जन्मभूमि-भोज जि. बेलगांम, दक्षिण भारत)



🛞 नमः सिद्धेभ्यः 🛞

# चौंतीस-स्थान दर्शन

लेखक या संग्रह कर्ता परम पूज्य १०८ श्री श्रादिसागर मुनि महाराज (जन्मभूमि शेडबाल जि॰ बेलगाँव कर्नाटक)

> सहायक संग्रहकर्ता ग्रौर प्रकाशक श्री पंडित ब्र० उलफतराय जी जैन (जन्मभूमि रोहतक, हरयाएा)

श्री वीर निर्वाण सं० २४९४, विक्रम सं० २०२४, शा० शब्दे १८६०

भावयामि भवावर्ते भावनाः प्रागभाविता । भावये भाविता नेति भवाभावाय भावनाः ॥२३८॥

—गुण भद्राचार्यं विरचित-श्रात्मानुशासन्

# **% प्रकाशकीय \***

प्रातः स्मर्गाय, परमपूज्य, तपोनिधि, चारित्र चक्रवर्ती, योगीन्द्र-चूड़ामिण, धर्म साम्राज्य नायक, समाधि सम्राट्, ग्राचार्य परमेष्ठी स्व० १०८ श्री शान्तिसागर मुनि महाराज (गुरुवर्य) के परम-शिष्य चारित्र-चूड़ामिण स्व० १०८ श्री वर्धमान सागर मुनि महाराज (दीक्षा गुरु) के शिष्य १०८ श्री ग्रादि सागर मुनि महाराज (जन्म-भूमि शेडवाल कर्नाट्टक जि० बेलगांव) का श्री वीर नि० संवत् २,८७ में (ई० सन् १६६१ में) ससंघ चातुर्मास कारंजा (जि० ग्रकोला, में हो रहा था।

१०८ श्री श्रादिसागर जी महाराज
जीवठाएा। चर्चा श्रीर चौबीस-ठाएा। चर्चा
इन दो पुस्तकों देख रहे थे, मैं भी सामने बैठा
था, उनके मुखारविंद से शब्द निकले कि 'ये श्रंक भाषा
के उन प्राकृतियों के नाम की जोड़ दिये जाँग तो सर्वसामारए को विषय समभने में श्रीर भी सरलता हो जाय' बस, इस
निमित्त के उपलक्ष में यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है।

प्रकाशक: पं० **न०** उलफतराय जी जैन खम्मामि सञ्बजीवे सञ्बे जीवा खमं तु मे। मेत्ती मे सञ्बभूदेसु वेरं मज्भरण केरण वि॥

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधारयेत्। श्रात्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥





हे भगवन् ! यह संसार असार है, इसका कुछ वार है न पार है, इसमें निर्वाह करना असाधारण ठिनाइयों को सहन करते हुए नाना प्रकार के स्पर्छायुक्त व्यवहारों की घुड़दौड़ में बाजी लगाना किसी साधारएा द्धि का कार्य नहीं है, जिसने ग्रपने वास्विवक जीवन रहस्य को समका ग्रौर ग्रपने ग्रात्म वल से काम लिया ह मानों चारों पदार्थ (पुरुषार्थ) पा गया । सच पूछिये तो उसने बालू में से तेल निकाल लिया ग्रौर उसके लिये छ भी ग्रसंभव न रह गया, परन्तु यह कार्य कथन करने में जितना ही सरल ग्रीर बोधगम्य है उतना ही कार्य प में परिएात होने पर कठिन तथा कष्टसाध्य सिद्ध होता है, इसके लिये तो हे भगवन् ! ग्रापके वचनामृत ही क ग्रलौकिक जीवन का संचार कर सकते हैं , जितने जैन शास्त्र हैं तिन सबका सार इतना ही है व्यवहारकरी वपरमेष्ठी की भक्ति निश्चयकरी ग्रभेद रत्न त्रयमयी निजात्मा की भावना ये ही शररा है, यही समफ्तकर ने ग्रापके तत्वों के निचोड़ रूप पूर्वाचार्यों के बगीचों में प्रवेश करा दिया, इसके फलस्वरूप यह निकला कि परम गर मूनि महाराज के ग्राशीर्वाद से ग्रीर परम पूज्य चारित्र चूड़ामिए। स्व० १०८ श्री वर्धमान सागर मूनि ुाराज (दीक्षा गुरु) की कृपा से उन बगीचों के श्रनेक फूलों में से यह एक सुन्दर विकसित फूल सहज श्रपने श्राप. ाने हाथ लग गया, परन्तु ग्राक्चर्य यह है कि वह नाम से फूल था परन्तु इतना भारी रहा कि हमारे से नहीं 5 सका, इसलिए हमें पं० व्र० श्री उलफतराय जी के सहाय्य से उठाकर यह 'चौतीस स्थान दर्शन' नामक फूल को ाप सबके सामने रक्खा है, इसमें हमारा निज का कुछ भी नहीं है, ज्ञान का ग्रौचित्यपूर्ण विशद <mark>भं</mark>डार तो .चियों का ही है, तथापि वगीचे में प्रवेश करके ब्रह्मचारी जी की सहायता से जो एक पुष्प प्राप्त कर लाया រা है उसी को हे भगवन् ! हम ग्रादरपूर्वक ग्रापके पावन पाद-पद्यों में परम श्रद्धा तथा मक्ति के साथ चढ़ाने ा साहस कर रहे हैं, ग्राप तो बीतराग हैं ग्रापके लिये इसकी कुछ भी ग्रावश्यकता नहीं, परन्तु हे भगवन् ! यह तर्थ ग्रापका ही ग्रापको समर्पित है, इति शुभं मंगलम्।

—संग्रहकर्ता

तोमनिधि, ज्ञानसूर्य, श्रभीरण ज्ञानोपयोगी दिगंबर जैन मुनि १०८ श्री श्रादिसागर महाराज के 'शैंतीस स्थान दर्शन' ग्रंथ के सम्बन्ध में प्रारम्भिक—

# दो शब्द

में व्य जीवो ! कारंजा, जिला अकोला महाराष्ट्र देश में – मैंन ई० सं० १६६१ में चौवीस ठाएा चर्चा और 'जिन स्थन चर्चा' नाम की दो पुस्तकों देखीं । उस सयय ईत्पं उल्फतरायजी जैन रोहतक हरियाना निवासी उपस्थित थे। मेरे हृदय में ये भावना प्रगट हुई कि पुस्तकें बहुत ऊंची हैं। लेखक महोदय ने गागर में सागर भर दिया है। जीवकांड गोमट्टसार की प्ररूपणा बीस, घ्यान, श्रवगाहना, योनि श्रीर कुल प्रत्येक एक एक इस तरह कुल चौत्रीस विषय और कर्मकाँड गोमट्टसार के ५७ ग्राश्रव, १२० वंध, १२२ उदय, १४८ सत्व ग्रीर ५३ भाव इस तरह कुल पाँच विषय और घवल ग्रन्थ के संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल ग्रन्तर इस तरह पाँच विषय, तीनों ग्रन्थों के मिल कर कुल चौतीस विषय जिनका तीनों ग्रन्थों में ग्रनुमानत: ग्रठारहसों पन्नों में भिन्न भिन्न ग्रध्याग्रों में वहुत विस्तारपूर्वक वर्णन दिया गया है उन सब विस्तृत विषयों को उपरोक्त दोनों लेखक महोदयों ने एक रत्नमाला की तरह को व्ठकों के रूप में पूंथ दिया है। परन्तु जिसका लाभ उच्चकोटि के विद्वान् जिनके तीन ग्रन्थ कंउंगत हों वहीं दोनों पुस्तकों का लाभ ले सकते हैं कारए। ये दोनों पुस्तकें ग्रङ्क भाषा में गूंथी गई हैं। ग्रगर ग्रङ्क भाषा के साथ साथ प्रकृतियों के नाम भी लिख दिए जांय तो सामान्य वृद्धि वाले स्वाघ्याय प्रेमियों और उक्त ग्रन्थों को अध्ययन करने वाले छात्रों को भी विषय समभने में बहुत सरलता हो जाए परन्तु क्या करें ? इस महान् कार्य को हाथ में लेना यद्य पे मुफ्त जैसे अति अल्पज्ञ-अल्पबुद्धि साधारण व्यक्ति के लिये मानो महासमुद्र को निज वाह बल से तिरने का साहस करना है यह सुनकर उस समय उक्त ब्रह्मचारी पं० उलफतराय जी ने मेरे सामने ये भावना प्रगट की "गुरुदेव आपकी आज्ञा और आशीर्वाद के वल पर में अपना पूरा समय इस शुभ कृथि में लगाने को तैयार हूं।" जनका इनना जिनवागी प्रेम श्रीर गुरुभक्ति देख के मुभ्रे श्रीर वल मिला श्रीर यह कार्य करने से अपने लिए तो अनेक बार इस विषय की स्वाव्याय का परम लाभ होगा और कोई न कोई स्वाध्याय प्रेमी श्रीमान् घीमान् दाता मिलकर प्रकाशन का कार्य भी हो जायेगा। यह सोचकर यह कार्य सम्पन्न करने के लिए श्रनुमति दे दी।

तन्होंने दो वर्ष में तीनों ग्रन्थों को ग्रध्ययन पूर्वक ग्रवलोकन करके ग्रङ्कभाषा के साथ साथ में उन प्रकृतियों के नाम भी जोड़ दिये। फिर दो वर्ष में भिन्न निन्न स्थानों पर हम दोनों ने मिनकर विषय का पुनराव लोकन भी पूर्वापर विषय मिलाकर वहुत सूक्ष्म दृष्टि से संशोधन कर लिया है। फिर भी विषय बहुत गहन । नुकते के हेर फेर से जैसे खुदा का जुदा हो जाये इसी तरह यहां भी भूल होना संभव है। पाठक महोदय को हमारी भूल को सुषार लेना चाहिये, क्षमा करना चाहिये ग्रीर हम को भूल सुधार के लिये सूचित करना ताकि पुनर्मु द्रण में फिर भूल न हो सके।

दि मुनि स्रादिसागर शेडवाल जिला वेलगांव (कर्नाटक प्रांत) चौतीस स्थानदर्शन -



# परमपूज्य स्वाध्यायसम्राट् श्री १०८ आदिसागर मुनिमहाराज

( जन्मभूमि – शेडवाळ जि. वेलगांम, दक्षिण भारत )

# परम पूज्य श्री १० = श्री त्रादिसागर जी मुनि महाराज (शेडवाल) का

# जीवन परिचय

दक्षिण महाराष्ट्र प्रान्त में वेलगाँव जिला है उसमें शेडवाल नामक ग्राम में एक ख्यातनाम पाटील घराना है जिसमें प्रातः स्पर्णीय चारित्र्य चक्रवर्शेत ग्राचार्य श्री गांति सागर जी महाराज ने जन्म लिया।

उस पाटीन घराने के सावण्यावर शाखा में अपने चरित्र नायक का कार्तिक शुदी ५ ता० १० अक्टूबर १७६२ को शुभ जन्म हुआ, माता का नाम सरस्वती-जीजा तथा िता का नाम देवगींडा था। दो में बड़े धर्म संस्कार सम्पन्न तथा सदारारी थे, उनके चार पुत्र थे जिसमें अपने चरित्र नायक चौथे पुत्र थे उनका शुभ नाम वालगींडा उर्फ चेमनराय रखा गया।

वालगोंडा शेडवाल के कानडी प्राथमिक स्कूल में उमर के ग्राठवें साल में भरती हुए ग्रीर १६१० साल में सातवीं कक्षा पास हुए जो कि मुलकी नौकरी के लिए यीत समभी जाती थी।

१६१ से १६४६ तक तहसील कार्यालय में प्रमुख ग्रिधकारी रूप से बड़े सूक्षवूक ग्रीर प्रमाणिकता से कार्य समाप्त कर सन्मानपूर्वक ग्रवकाश ग्रहण किया जिसके परिणाम स्वरूप उनको लगभग पनास रुपये महावार जिन्दगी तक पेन्शन मंजूर हुई।

श्रापका वालकपन संस्कार सम्पन्न निभाने में श्रापकी माता जी का वड़ा हिस्सा था। बालगींडा नियमित रूप से मंदिर जाए इसलिए उन्होंने बड़ी कुशलता पूर्ण योजना वनायी थी। प्रति दिन श्रभिषेक-दूध इनके हाथ पहुंचाया जाता था, इसलिए कि श्रगर दूध मन्दिर में न पहुंचे तो श्रभिषेक रुक जाय श्रीर खबर श्रा जाय कि वालगींडा मन्दिर नहीं ग्राए, स्वाभाविकतः वालगींडा मन्दिर दर्शन से छुटकारा नहीं पासका। श्रागे चल के मन्दिर दर्शन का हढ़ संस्कार हृदय पर जम गया।

गृहस्थाश्रम में एक के बाद एक ऐसी दो धर्म पित्नयां हुई जिनसे चार पुत्र श्रीर दो पुत्रियों का लाभ हुशा। लेकिन कोई पुत्र ज्यादा श्रायु प्राप्त न कर सका, दो कन्याएं श्रपने घर की सम्पन्न हैं श्राज भी।

गृहस्थाश्रम में रहते हुए ग्रापने सदा धर्मायतनों की व्यवस्था सुचारु रूप से रखने में ग्रथक परिश्रम किया जिसका कि शेडवाल का श्री शान्तिनाथ मन्दिर एक ग्रादर्श मन्दिर है सरकारी कर्मचारी के रूप में काम करते समय ग्रापको सब रेकार्ड हिसाब ग्रादि ग्रद्य-यावत् रखने की जो ग्रादत हो गई वही धर्मायतन-व्यवस्था में बहुत काम ग्रायी।

सरकारी दफ्तर में प्रामािशकता, सरलता, न्याय-प्रियता के लिए ग्रापकी बड़ी भारी चाह रही ग्रीर मान-सन्मान भी रहा, लेकिन एक दिन ऐसी कुछ घटना हुई कि जिसको जिन्दगी भर तक भूल न सके।

तहसील ग्राफिस में कोर्ट ग्राफ वार्डम् इस्टेट की बाकायदा सूची रहा करती थी। वह इनके ही सुपुर्द रहती थी उसमें तोला भर सुवर्ण का टुकड़ा ऐसा था कि जिसकी कोई गणना उस इस्टेट में नहीं थी। वालगींडा रावसाहाव ने यह सोचा कि न यह चोरी हो सकती है न अचीर्याणु व्रत का ग्रतिचार, किस्मत की यह इनाम है, इसकी ठुकराना नहीं चाहिए। उन्होंने ग्रीर उतना ही सुवर्ण मिलाकर एक सीभाग्य ग्रलंकार बनवाया ग्रीर

ل

श्रीमित जी के सुपुर्द कर दिया। श्रीमित जी बड़ी प्रसन्न हुई, कोई श्रच्छे मीके पर श्रलंका र गले में पहनने के लिए उन्होंने रख दिया, है किन वह उस मौके के पहले ही न जाने कहां गायब हो गया।

घर में बरी अं सन्नना छा गई एक तो प्रतिचार के लिए बालगींडा साहव का दिल अस्वस्थ था उसमें ऐसा हुआ दोनों तरफ से परेशानी मोल लेनो पड़ी, कूछ अर्से के बाद उस सुवर्ण के कुछ करण चूहे के घर से प्राप्त हुए। उन्होंने फिर सत्य और अचीर्य का महत्व पहचान लिया और निर्दोष वृत पालन की ठान ली, यह घटना कहानी के रूप में श्रोताओं को समभा के अभी भी पाठ पढ़ाया करते हैं।

सरकारी कर्मचारी के रूप में बालगोंडा रावसाहब,
ग्रिंधकतर जीवन चिक्कोडी तालुके में ही व्यतोत हुग्रा,
उसके ग्रास पास श्राचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज
का बिहार होता रहता था, कोई मित्र के ग्राग्रह से
महाराज के दर्शन हो गये ग्रीर ग्रापकी त्याग, तपस्या,
कषायमंदता, वैराग्य प्रवलता ग्रीर शांतमुहा देखते ही
जैन दिगम्बरी दीक्षा ग्रीर ग्रासन्नी भवाता के रिस्ते जान
गये ग्रीर हृदय परिवर्तन चालू हो गया।

वस, ग्रव सरकारी कायंरत होते हुये भी किसी वहाने जरा ही फ़ुरसत मिलते ही ग्राप ग्राचायं श्री के चरणों में लग जाते थे। जनकी लगन, भिक्त देखकर ग्राचाय श्री ने पहचान लिया कि यह कोई सामान्य ग्रात्मा नहीं है यहां भी एक सश्रद्ध ग्रासन्न भन्य संयम प्रेमी जीव है। सम्पर्क वढ़ता रहा, जपदेश चालू रहा पहली धर्म पित स्वर्गवास कर गई थी यह देखकर ग्राचायं महाराज ने वत ग्रहण की प्रेरणा की। जनका भी जी ललचाया लेकिन योगायोग न था दूसरी शादी कर वैठे। दुर्देव या सुदैववश वह भी जल्दी ही चल वसी, ग्रव ग्राप समभ गये कि ग्रव का मौका यही सच्चा मौका है ग्रव विना विलम्ब संयम धारण करके जीवन साफल्य कर लेना चाहिए।

सन् १६१६ में जब ग्राचार्य श्री नसलापुर थे।

बालगोंडा ने सम्पर्क बढ़ाया १६२२ में कोण्णूर में पंचासु वृत धारण किए। १६३६ में जबिक आन ये श्री शिखरजी यात्रा के दौरान में गुजरात में कोठठा मुक्काम पर थे बालगोंडा ने दर्शन और वृत प्रतिमा धारण कर ली। सन् १६४५ में फलरूप में सातवीं वृह्यचयं प्रतिभा धारण कर ली।

श्रव वालगींडा पेन्शनर वन चुके थे, गृहस्थी जीवन की कोई जिम्मेदारी या रुचि शेष नहीं थी, संयम पालनाम्यास श्रीर मंदीरादि धर्मायतनों की ज्यवस्था के साथ श्रन्य समाज सेवा इतना ही काम था।

व्यवहार कुशलता के साथ बुद्धि प्रगल्भ वन गई थी श्रीर शास्त्राभ्यास में शीघ्रगति से तरवकी होते चली, श्रा म ज्ञान से वैराग्य शीलता बढ़ती गई श्रीर साथ ही संयम प्रीति, श्रव इस श्रवस्था में भी संतोष नहीं रहा, संयम में श्रागे बढ़कर पर्याय को सफल बन ने में ही रात दिन सोच चलता रहा।

बहाचारी बालगोंडा की संयम में प्रगति श्रौर किंच देखकर श्राचार्य श्री प्रसन्न होते थे, लगभग पैतीस साल तक श्राचार्य जी का श्रादर्श सामने रखते रखते श्रौर संयम का श्रम्यास बढाते बढ़ाते ब्रह्मचारी जी दिंगम्बर दिक्षा तक श्रा गये, श्राचार्य श्री की वार्ता समभने पर श्रापने श्रपना बिहार कुछ काल तक इस शुभ बार्ता के खुशी पर स्थगित कर दिया।

वहाचारी वाल हैंडा ने शेडवाल के आश्रम का मंत्रीपद और श्री शांतिनाथ मन्दिर का व्यवस्थ पक पद की
अपूर्व कशलता से निभाया और समाज और अव्यवहार श्री कार्य विश्वाम और संविष्ण था ऐसे कार्य कुशल,
व्यवहार चतुर बुद्धिमान और सत्यनिष्ठ व्यक्ति अगर
दिगम्बर दीक्षा ले तो स्विहत परिहत और धर्म प्रभावना
भी सिद्ध हो सकेगी, इस विचारधारा से दस हजार
श्रावक श्राविकाओं के विशाल समुदाय में श्री ०६
वर्धमान सागर जी के करकमलों हारा ब्रह्मचारी वालगींडा
अब प० पू० श्री १०६ आदिसागर मुनि पद में परिवर्तित
होकर आपको कृतार्थ मानने लगे, वह शुभ दिन ता० १५
मार्च १६४४ था।

दीक्षा के समय ग्रापका प्रकृति स्वास्थ्य बिल्कु व ठीक नहीं था रक्त क्षय से ग्राप बामार थे लेकिन उसका निक भी ख्याल न कर ग्राप दृढ़ ग्रात्मवल से संयम पालन में दलचित्त रहे —न जाने कैंसे शरीर स्वास्थ्य बिना किसी भौतिक इलाज के स्वय ही कुछ महिनों में ठीक हो गया।

कृछ असे तक प्राचार्य जी के सान्निध्य में रहकर मल चारादि प्रथों का अध्ययन किया उसके बाद दक्षिण उत्तर के तीर्थ य त्रा को निकले आपने ग्राज तक श्री सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर जी की कई बार यात्रा की ग्रीर शेष उत्तरदक्षिण सिद्ध क्षेत्र ग्रतिशय क्षेत्रों की भी कई बार यात्रा की, बिहार में जहां भी चातुर्मास होता था ग्रखंड स्वाध्य य चनना था।

श्रापकी महावृत परिपालना वड़ी सूक्ष्म होती है जिम पर श्रापके परात्पर गुरु श्राचार्य जी की छाया दिखाई देती है, ीक्षा लेने के बाद थोड़े ही दिनों में श्राप श्रव प्रथम नसलापुर श्राये तब की एक घटना श्रविस्मर-ग्रीय है।

ग्राप जब नकलापुर से रायनाग को चातुमांस के निए प्रस्थान करने का इरादा कर रहे थे कि रायवाग के एक गण्यपान्य प्रमुख श्री चिन्नामिए। सानव्थ बिराज ने एक ग्रादमी चिट्टी देकर नसलापुर भेजा, लिखा था कि मुनि श्री ग्रादिसागर महाराज हमारे गांव में च तूर्मास के लिए ग्राने की सोच रहे हैं लेकिन उनका चातुर्म स यहां निभना मुक्तिल है ग्रतएव वह कुछ ग्रन्थ ग्राम पसंद न करें हमारे यहां न ग्रायें।

चिट्ठी देखकर आप तिनक भी चितित न हुए लेकिन साथ ही साथ दृढ़ता से अपना निञ्चय दुहराया और रायवाग पधारे, श्री विराज साहब ने पन्द्रह दिन तक महाराज की अन्तर्वाह्य परीक्षा कर ली और अपनी भूल के लिए क्षमा याचना बी, इतना ही नहीं तो संघपति बन के संघ को श्री क्षेत्र सम्मेद शिखर को ले गये और मुनिराज के एकनिष्ठ भक्त बन गये, यह था सत्वेषु मैत्री, गुगीषु प्रमोद और विषरीत वृतौ माध्यस्य का प्रत्यक्ष प्रयोग, जिनका परिपाक जैनी दिगम्बर दीक्षा है।

कारंजा ता० ५-१-६७ ग्रभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग यह ग्रापका विशेष हैं दिन रात ग्रम्थयन, मनन, चिंतन, प्रवचन, ध्यान, उपदेश श्रीर लेखन चालू रहता है — ग्राज तक जितना लिखा उत्भें से ग्राधा भो प्रकाशित न ही हुग्रा जो वाङ्मय छप गया ग्रीर प्रकाशित हुग्रा है उसमें से कुछ यह है —

 १. त्रिकालवर्ति महापुरुष
 वारासिवनी

 २. नित्य नैमित्तिक क्रियावलाप
 छिन्दवाड़ा

 ३. ग्राहारदान विधि
 ग्रारा

 ४. सूतक विधि
 वारासिवनी

 ५. चौतीस स्थान दर्शन
 नागपुर

इसके ग्रलावा जो प्रकाशन के लिए मंजूर हुग्रा लेकिन प्रकाशित न हुग्रा वह —

६. सद्वोध दृष्टांत माला जीवराज ग्रंथ माला (मराटी) सोलापुर

विशेषतः चौतीस स्थान दर्शन के लिए गत कई साल से विद्वदर सिटांत मर्मज ब्रह्मचारी पिंडत उलफतराय जी जैन रोहतक वालों ने अथक परिश्रम करके यह ग्रंथ निर्माण किया है शास्त्रों में जो आज़तक केवल सख्या में कहा सुना जाता था उसको शब्दों में रखने का महन्त्रयास किसी ने नहीं किया था वह अपूर्व साहस इन दोनों वृद्ध महा-पुष्पों ने अपनी आयु पाऊणासों से ऊपर होने पर करके जैन मुभुक्ष साधकों के सामने एक नया आदर्श रखा देया है, धन्य है आप दोनों के जिनवाणी श्रद्धा की, अथक परिश्रम की और दुर्दम्य साहस की—

न इसमें कोई लोकिक ल भ है न स्याति की चाह है यह तो आत्महित साधना करते करते किया हुआ निरपेक्ष महत्कायं है जो युगों तक अजर अमर रहने वाला है और दीप स्तम्भ के समान मुमुक्षुओं को अपने संसार सागर में मिथ्यात्व शंलपर धड़क देकर पूटने वाले नौका को वचान वाला अमोध साधन है।

प० पू० श्री १०० ग्रादिसागर जी महाराज श्रीर पूज्य ब्रह्मचारी पंडित उलकतराय जी के चरण सान्निच्य में रहने का मुक्ते कई दिन तक मौका मिला, श्रापके सान्निच्य से मैं कृतार्थ हुत्रा ऐसी मेरी प्रामाणिक मान्यता है ग्रापके रत्नमय साधना की मेरे शत-शत प्रणिपात।

डा० हेमचन्द्र जैन कारंजा (ग्रकोला)

# पाक्कथन

'चौतीस स्थान दर्शन' यह अनूठा प्रन्थराज आज प्रकाशित हो रहा है जिसकी मुक्ते ग्रहगधिक प्रसन्नता हो रही है। ग्रन्थका विषय जैनदर्शनांतर्गत कर्मतत्वज्ञान से सम्बद्ध है ग्रीर कर्मतत्वज्ञान यह करणानुयोग से सम्बद्ध है मुज्ञ पाठक इससे परिचित ही हैं कि संपूर्ण जिनवासी चार विभागों में विभाजित है । १. प्रथमानुयोग . द्रव्यानुयोग ३. चरणानुयोग ग्रीर ४. करणानुयोग। चारों अनुयोगों की प्राचीन ग्रन्थराशि ग्रत्यन्त समृद्ध है । करणानुयोग यह एक निरतिचार निर्दोष निर्विकल्प गिएत प्रस्तुत करता है; चतुर्गंति भ्रमण के कारणभूत जीवों के परिमाणों की विचित्रता यह भी एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है जिसगर मनीषियों ने काफी विचार किया है जैनदर्शन ग्रात्मवादी है ग्रनात्मवादी नहीं है नास्तिक नहीं है पूर्ण ग्रास्तिक है। यह वस्तुस्थिति होते हुये भी जीव अपने सुख दु:ख के लिए ईश्वरवादियों को तरह जैनदर्शन और किसी सर्व शक्तिमान् स्वतन्त्र मित्र व्यक्ति या शक्ति को स्वीकार नहीं करता। उसका तो वह घोषवाक्य रहा है-

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा फलं तदीय लभते शुभाशुभम्। परेण दत्तं यदि लम्यते स्फुटं स्वयं कृतं कर्म निर्श्वकं तदा। जीव चाहे किसी गित का हो उसे प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल यह सब उसी के भली बुरी करनी के—करतूत के फल हैं 'जो जस करे सो तस फल पाय' 'जैसी रनी तेनी भरनी' ग्रादि उक्तियों के मूल में जो तत्व है, सिद्धांत है, वही जैनदर्शन का हार्द है, 'ईश्वरः प्रेरितो गच्छेत् स्वगं वा श्वभ्रमेव वा।' ग्रादि मान्यताग्रों से वह सैकड़ों कोस दूर है दूसरा यदि सुख दुःखों का दाता है ग्रीर यह जीव उसको भोक्ता होगा तो इसकेद्वारा होने वाली पाप पुण्य कियायें या धर्मानुष्ठान इन सब ही का कोई अर्थ या प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, इसलिये लोक परलोक सुख दुःख, रोग नीरोग, इष्टानिष्ट संयोग वियोग म्रादि संसार सम्बन्धी जितनी भी म्रवस्थायें हैं या हो सक्ती हैं उनका तकंगभ्य शुद्धशास्त्र तिद्ध गिएत प्रस्तुत करने का उत्तरदायित्व स्वभावतः जैनदर्शन के ऊपर म्राता है।

वह केवल 'ग्रहण्ट' कहकर या 'ग्रगम्प' कहकर ग्रपने उत्तरदारित्व को समाप्त करना भी नहीं चाहता। संसार सम्बन्धी जितनी विचित्रतःयें जीव सम्बद्ध हैं, चारों गितयाँ मनुष्य-देव नारक या तिर्यंच उसमें प्राप्त होने वाले नाना जाति के देह उनके वर्ग रस गंधादि या श्राकारप्राकारादि तथा कम या श्रधिक इन्द्रियों की सुडील या वेडील रचनायें, ग्रात्म प्रदेशों का शरीराधार से होने वाला कंपन स्त्री पुरुष या नपुंसक के ग्राकार ग्रादि की व्यवस्था का जैसा उसके पास उत्तर है उसी प्रकार जीवों के परिसामों की जो ग्रन्तरंग सम्वन्धी जितनी विचित्रतायें हैं कोई कोघी कोई क्षमाशील कोई गर्व-छल ग्रौर लोभ से अभिभूत है तो दूसरा तरसम रूप से मदकषायो या विकारहीन पाया जाता है; कोई स्वभावत: सुबुद्ध तो दूसरा कोरा निर्वुद्ध, कोई संयमशील तो कोई ग्रसंयम के की चड़ में फसा हुम्रा, कोई श्रद्धावान् हिंड सम्पन्न तो दूसरा श्रद्धाविहीन हिष्ट शून्य, किसी को संकल्प विकल्पों का मुसंस्कृत सामर्थ्य होता है, तो किसी में उर की किचिन्मात्रा भी नहीं पायी जाती । इन सारी विचित्र-ताग्रों का या सम्भाव्य सारी विचित्रताग्रों का जैनदर्शन के पास तर्क-शुद्ध विचार है। संक्षेप में यह कह सकते हैं विश्व का बाहरी रूप और अन्तरंग स्वरूप का ठीक ठीक हिसाव वैठालने में ईश्वर या ईश्वरसम दूसरी स्व तन्त्र शक्ति के मान्यता के बिना भी जैनदर्शन समर्थ हुआ है वह अपने समृद्ध कर्मतत्वज्ञान के बल पर ही हो पाया है। उसके परिज्ञान के लिए जैनदर्शन समान वस्तु

व्यवस्था भी संक्षेप में देखनी होगी। वह लोक को षडद्रव्य परिपूर्ण मानता है। जीव-पुद्गल धर्म अधमं भाकाश ग्रीर काल से मूल में छः स्वयंभू द्रव्य है। सबका स्वरूप भिन्न भिन्न है। जीव सचेतन है शेष प्रचेतन है। पुद्गल मूर्तिक है शेष अमूर्तिक है। धर्म-अधर्म आकाश संख्या में एक एक है। कालाए। असंख्यातः है। जीवों की संख्या अनिगनत अनन्त है पुद्गलों की जीवों से भी भ्रत्यधिक अनंत है। सब ही द्रव्य अनादि अनंत हैं; अपने ग्रपने गुरा पर्यायों में स्वयं सहभावी या कनभावी रूप से न्याप्त है। हर समय में उत्पाद न्यय धीन्य रूप है। इनमें से जीव और पुद्गनों को छोड़कर शेप चारों धर्म प्रधर्म ग्राकाश ग्रीर काल ये शुद्ध है परस्पर में वैसे तो छहों द्रव्य भ्रत्यन्त निरुट सम्पर्क में हैं एर क्षेत्रावगा-ही है। रही बात जीव ग्रीर पुद्गलकों की - इनमें भी जिनका पुद्गलों स (सूक्ष्म या स्थूल) सम्बन्ध सदा के लिए छूटा है ऐसे अनन्त जीव हैं वे भी शुद्ध सिद्ध कहलाते हैं। वे भविष्य में पुनर्वंव का कारण ही विद्यमान न रहने के कारण वन्धनवद्ध नहीं होते हैं; इनका मुक्त परमात्मा-विदेही-मुक्तात्मा ग्रादि ग्रनन्त शुभ नामों से स्मरण किया जाता है। पुद्गल द्रव्य मूर्तिक-रूपी है; स्पर्श रस गंध वर्ण वे उसके मूल-गुरा हैं। इन गुराों से वह ग्रभिन्न ही रहता है चाहे वह स्थूल स्कंधों के रूप में हो या सूक्ष्म परमास्पूत्रों के रूप में हो। परमास् ग्रवस्था शुद्ध रूप होती है; परमाण्य्यों की संख्या ग्रनंत है, स्कंघ स्वभावतः अशुद्ध होती है उनकी सख्या, अनंत होते हुए भी मूल में स्कंधों की जातियां तेईस हैं। जिनमें से जीव के साथ सम्पर्क विशेष जिनका होता है ऐनी पांच प्रकार की स्कंध जातियां हैं जिनको १. ग्राहार वर्गगा २. तेजस वर्गगा 3. भाषावर्गगा ४. मनोवर्गगा ग्रौर . नोकर्मवर्गणा कहते हैं । ये उत्तरोत्तर सूक्ष्म है । श्रपना श्रपना कार्य करने में परस्पर सहयोग से समर्थ है। इनका जीव भावों के ििमत्त से योग (प्रदेश कंपन) स्रौर उपयोग से (शुभाशुभ परिसाति से) ग्रावागमन ग्रनादि से होता ग्रा रहा है; ग्रीर भविष्य में भी जीव समीचीन पुरुषार्थं से जब तक सदा के लिए शुद्ध नहीं होता है तब तक तो इन स्कंध पुद्गलों का स्रावागमन अपनी अपनी योग्यता से हाता ही रहेगा। यही जीव का ससार कहा जाता है और इसा प्रिक्रिया के कारण जीव संसारी कहा जाता है। समयपाय इनमें भव्य जीव यथार्थ पुरुषार्थ से विक्रिसित रत्नत्रय से सम्पन्न होने पर संवर निर्जरा करता हुया मुक्त हो सकता है। संक्षेप में जैनदर्शन में इस प्रकार वस्तु व्यवस्था है।

यह वस्तु व्यवस्था जैनदर्शन की मौलिकता है और सूर्यप्रकाश में प्रत्यक्षगत वस्तु की तरह इसका स्पष्टता अवबोध होने पर एक जिज्ञासा सहज ही जागृत होती है कि, जीव और कर्मवर्गणा तथा नोकर्मवर्गणा का (स्राहार वगएा भाषावर्गएा तैजसवर्गएा ग्रौर मनोवर्गए। का) ग्रहण कब से करता त्रा रहा है ? क्यों करता है ? किन किन का'राों से करता है ? कब तक करता रहेगा ? उनमें न्यूनाधिकता का क्या कारगा है ? उससे जीव की हानि ही है ? या कुछ लाभ भी है ? ग्रह्मा बन्द होने के उपाय कौन से हैं ? ग्रादि प्रश्नमालिका खड़ी होती है। इसका तात्विक भूमिका पर जो विचार मूलग्राही रूप में किया गया है वह सदा सप्ततत्व विचार कहा जाता है। उपरोक्त जीव चेतना लक्षरा उपयोग स्व-रूपात्म ह है। स्पर्शरसादि गुगाविशिष्ट पुद्गल ग्रजीव रूपसे विविक्षित है। जीवों का विभाव विकार रूप परिरामन के निमित होने पर तप्त लोहा जैसे जल का भ्राकष एा करता है उस प्रकार बंद्ध जीवो के कर्मनोकर्मका ग्रह्ण होता है वे विभाव ग्रौर ग्रह्ण दोनों में ग्रास्नत्र करते हैं वे विभाव कषाय तथा जीव प्रदेशों के साथ कर्मस्कंधों का संइतेष बन्ध कहा जाता है। जव कोई सम्यग्ज्ञानी महात्मा ग्रन्तर्ह िट संपन्न ग्रन्तरा-मा स्वानुभूति सनाथ होता है उस समय उसकी जीवनी का ग्रन्तर्याम परिवर्तित होता है तब से वे विशुद्ध परि-ग्गाम ग्रौर उसके निमित से ग्रभिनव कर्मस्कंघों का ग्रास्नव-निरोध संवर' कहा जाता है । पूर्व संचितों भी क्रमशः क्षपर्णा के निमित्त रूप विशुद्ध परिणाम तथा क्रम क्षपणा को 'निर्जरा' कहते हैं इसी तरह वे सातिशय विशुद्ध परिगाम भी पूर्वसंचित कर्मों के सम्पूर्ण क्षपणा में निमित है उनकी 'भावमोक्ष' यह संज्ञा होती है तया सदा के लिए संपूर्ण कर्मी का सर्व प्रकार से ग्रलग होना द्रव्य मोक्ष' है स्रोर जीव मुक्त हैं।

जीवभाव तथा कमवंघ इनका तथा पूर्ववद्ध कमीं का यथा समय उदय श्रीर जीवभावों का परस्पर निमित्त नै मित्तिक सुन्यवस्थित सम्बन्ध निर्धारित हो जाने पर संसार सम्बन्धी सारी विचित्रताश्रों के विषय में जितनी भी समस्याय होंगी उनका ठीक ठीक उत्तर मिल जावेगा। कर्ता हता के रूप में किसी व्यक्ति विशेष के मानने की ग्रावव करता ही नहीं रहेगी। निजके पुण्य पापों के सर्जन में श्रीर भुक्तान में यह प्राणी जैसे स्वयं जिम्मेवार होता है उसी प्रकार कर्मनाश करके श्रनन श्रविनाशी सुख सम्पन्न परम श्रोष्ट श्रवस्था के प्राप्त करने में भी यह स्वयं समर्थ होता है यह सिद्धान्त ग्रन्थ का पूर्वार मनन श्रीर श्रव्ययन करने से श्राप ही श्राप सुस्तव्द होता जाता है श्रीर स्वावलंद्धन पूर्वक सम्पूर्ण स्वतन्त्रता की शवयता हिट्टप्थ में श्रा जाती है।

इन सात तत्वों में से ग्रास्त्रव वन्य तथा संवर-निर्जरा का मनीषियों ने भी सूक्ष्म सूक्ष्मतम विचार करने की पद्धित निश्चित रूप से निर्धारित की है वह भी एक महत्वपूर्ण पद्धित है। चौंतीस स्थान ये मुख्य रूप से सम्मुख रखकर कर्मवर्गणाग्रों के विषय में कार्यकारणादि भावों का पूरा ख्याल रखकर जो विचार प्रपंच हो सकता है वही इस ग्रन्थ का महत्वपूर्ण विषय विशेष है। प्राचीन ग्रायं ग्रन्थों का उसे ग्राधार है। प्राकृत गाथा, संस्कृत श्लोक, भाष्य महाभाष्य ग्रादि रूप से भी इस विषय का किसी मात्रा में वर्णन है फिर भी नक्शों के द्वारा ग्रालेखों के द्वारा इस विषय का स्पष्ट वोध सहज में होने से दर्पण में प्रनिविव की तरह विषयाववोध स्पष्ट-सुस्पष्ट होने में

कारेजा

१।१।६५

सुनिश्चित सहायता पहुंचती है। ग्रंथ निर्माताग्रों ने स्वयं सातिशय प्रयत्न करके ग्रध्ययन करने वालों कं। विषयं सुलभ किया है। इस ग्रन्थ के निर्माण में प० प० १०५ मृनि श्री ग्रादिसागरजी महाराज (शेडवाल तथा सम्माननीय पिडत उल्कतरायजी रोहतक (हरयाना) इन दोनों स्वाच्याय मग्न प्रशस्त ग्रध्यवसायियों का वर्षों का परिश्रम निहित है विज्ञ पाठकादि इस परिश्रमशोलता का यशार्य मूल्यांका कर सकते हैं। मैं भी इन अथकपरि-श्रमों की हृदय से सराहना करता हूं पूर्व में मूनी साधू गरा श्रीर प्रशस्त श्रद्यवसाय मग्न ज्ञानी लोग इस प्रकार का प्रसंशस्त अध्यवसाय महीनों करते थे। उससे एक बात तो निश्चित है कि राग द्वेप के लिये निमित्तभूत ग्रन्यान्य सांसारिक संकल्प विकल्पों से वे लोग श्रपनी श्रात्मा को ठीक तरह से बचा लेते थे दोनों महानुगावों का मैं हृदय से ग्राभारी हं उन्होंने ग्रकारण ही वीतराग प्रेम इस व्यक्ति नर ग्रधिक मात्रा में किया है ग्रीर जान विशेष न होते हुये भी प्रस्तावना के रू। में लिखने के लिये वाच्य किया। इसमें जो भी भूते हों वह मेरी हैं ग्रौर सच्चाई हो वह पूण्य जिनवागी माता की म्रात्मा है। उसे हमारी शतशः वंदना हो।

ग्राशा एवं विश्वास करता हूं कि स्वाध्याय प्रेमी जनता इस ग्रिटश्रम से ग्रवश्य ही उचित लाभ उठायेगी। साथ ही साथ प्रभु चरणों में यह हार्दिक प्रार्थना करता हूं कि जिनवाणी माता की सेवाग्रों के लिये ग्रंथ निर्माताग्रों को भविष्य में भी सुदीर्घ जीवनी ग्रीर स्वाध्याय ग्रध्ववसाय की इसी तरह शान्ति विशेष का लाभ हो।

विनीत

डा० हेमचन्द्र वैद्य

तया

न्यायतीयं मारिएकचन्द चष्ररे

## इस चौतीस-स्थान दर्शन ग्रन्थ ए। मूल स्तम्भ

### कर्म-सिद्धान्त

# लेखक- पं. ताराचन्द जैन, हास्त्री न्यायतीर्थ नागपुर.

असीम आकाश के ठीक मध्य-माग में लोक (विश्व) की रहस्यमय विचित्र रचना है। षड्दर्शन के प्रणेताओं तथा अन्य दार्शनिकों ने अपनी अपनी प्रतिमा के अनुसार लोक के इस रहस्य को जानने एवं उसे प्रकट करने का प्रयत्न किया है। परन्तु अपने सीमित बुद्धिबल से विशाल लोक के रहस्य को न जानने के कारण उनमें से कुछ ने सर्वशक्ति सम्पन्न. एक ईश्वर को ही लोक का नियन्ता उद्योषित किया है। तथा कुछ ने अपरिणामी नित्य प्रकृति को ही इसका निर्माता माना है। परन्तु जैन दर्शन में लोक रचना सम्बन्धी मान्यता इससे विल्कुल निन्न हैं। जैन दर्शन जिन अर्थात राग-द्वेष-मोह और अज्ञान आदि समस्त आत्मिक दोधों और दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करनेवाले पूर्ण वीतरान, सर्वज्ञ एवं हितोपदेशी परमात्मा द्वारा प्ररूपित किया गया है। इस अवसर्षिणी काल में इस दर्शन के प्रणेता भगवान वृषभदेवादि चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। उन लोकहितेषी महापुरुषोंने अपने केवलज्ञान से लोका लोक का पूर्ण रदस्य यथावत जानकर निम्नप्रकार से उसका स्परूप प्रकट दिया है।

#### लोक विभाग

आकाश द्रव्य अनन्त है। इस अनन्त (अमर्याद) आकाश के बिलकुल बीच में जीव, पुद्गल, धर्म, अधम और काल इन छह द्रव्यों के मेल से ही लोक निर्मित हुआ है। लोक के मुख्य तीन विभाग है ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधो लोक। उध्वलोक के सर्वोपिर माग में (तनुवातवंक्य में) मृस्यत: सिद्ध परमात्मा अनुपन अनन्त सुल का निरावाघर से अनुभव करते हुए विराज रहे हैं। उससे नीचे सर्वायिदि आदि अनुपन शोमात्मपन्न ३९ विमानों की सौंदर्य पूर्ण रचना है। इन विमानों (स्वर्गभृमि) में पूण्याधिकारी जीवों का जन्म हूआ करता है। जो भी मनुष्य शुभमावों से जितना पूण्यसंचय करता है, वह मरने के बाद तदनुकुल भागोपभंग सहित स्वर्ग में जन्म धारणकर चिरकाल तक ऐन्द्रिक सुल भोगता है। जो मनुष्य रतनत्रयश्य धर्म का आराधन करता है वह स्वानुभृति के बल्से आयु-धादि द मों का अन्तकर लोकाग्र में सतत निवास करता है। तथा कितप्य रतनत्रयधारी जीव पुण्यातिशय गरीर शुभभावों से मरण कर देवायु का बन्ध करके सर्वार्थिसिट अवि पश्च अनुत्तर और नवअनुदिशों में देवपर्याय धारण करते हैं। वहां पर भी वे मोगोपभोगोमें अनासक्त रहते हुए तत्व चर्च और तत्वान विनतन में तेतीस सागर जैसे सुदीघंकाल को भी अनायास व्यतीत कर देते हैं।

उद्यं लोक से नीचे मध्यम लोक की प्रकृतिक रचना है। इसमें मयनवासी देव, व्यंतर देव बौर सूर्य, चद्र आदि ज्योति देव, मनुष्य और विविध प्रकार के तिर्यंच निवास करते हैं। इस मध्यम लोक में जभ्बूदी गिंद असंख्य हीय और समुद्रों की महत्वपूर्ण रचना हैं। इसके न चे अधोलोक त्यवस्थित हैं। नेचे नाचे सात नरक भूमियां अनादिकाल से विद्यमान हैं। इनमें पाप संचय करने बले जीव ही अपने पापों का फल भोगनें के लिये वहां जन्म धारण करते हैं। सभी नारकी निरन्तर दुखानुभव करते हुए सुदीर्थ काल व्यतीत कर अपने मावानुसार समुद्र्य अथवा तियंच पर्याय धारण करते हैं।

सम्पूण लोक चौदह राजू छंचा सात राजू चौडा और ३४३ घन राजू प्रमाण हैं। इसके निर्माण में किसी ईश्वरादि व्यक्ति विशेष का महत्व नहीं हैं। यह लोक अनादि निधन हैं। इसका निर्माण स्वयं (प्राकृतिक) हुआ हैं।

### षड्द्रव्य और लोकरचना

आकाश व्यापक तथा अनंत प्रदेशी द्रव्य होने से अन्य द्रव्योंका आधार है। इसके असंख्यात मध्यप्रदेशों में असंख्यात प्रदेशी अनन्त जोव द्रव्य, अनंतानन्त पूर्वगल द्रव्य, असंख्यात प्रदेशी एक अखण्ड धर्म, द्रव्य, अधर्म द्रव्य और एक प्रदेशी असंख्यात काल द्रव्य मरे हुए हैं। ये समस्त द्रव्य अनादि काल से स्वयं विविध पर्यायों में परिणमित होते हुए परिणमनशील आकाश द्रव्य में आवेयरूप से विद्यमान हैं और भविष्य में भी इसी प्रकार की प्राकृतिक रचना सदा विद्यमान रहेगी। इन छह द्रव्यों का यह विचित्र शाश्वितक मेल ही लोक कहा जाता है। इस लोक के निर्माता ये जीवादि छह द्रव्य ही हैं। इसकी रचना एवं व्यवस्था के लिये अनन्त शिवतश ला ईश्वरादि की कल्पना तर्कसंगत नही है। परमेश्वर सम्पूर्ण राग- द्रेप और मोहरहित पूर्ण वीतरागी होते है, वे अनेक विषद्ध कार्यों के कर्ता कैसे वन सकते हैं।

इन छहीं द्रव्यों में परमाणु और नाना आकार को घारण किये हुए स्क्रन्यस्प पुगदल द्रव्य ही मूर्तिक हैं। यह स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण गुणों का घारक है। संसार में जो भी स्पर्शनादि इन्द्रियों से ज्ञात होता है, वह सब पुद्गल द्रव्य है। पुद्गल द्रव्य से भिन्न जीवादि पांचों द्रव्य इदियों से ग्रहण नहीं होते हैं, वे अमूर्तिक हैं। धमं द्रव्य अधमं द्रव्य काल द्रव्य और आकाश द्रव्य अगम भ्रमाण और युक्ति से ही सिद्ध किये जाते हैं। जीव द्रव्य अनन्त हैं, वे मुक्त जीव और संसारि-जीव दो भागों में विभक्त हैं। मुक्त जीव तो शृद्ध ज्ञान-दर्शन सुखमय अमूर्त रूप से लोकाग्र में संस्थित हैं, इसलिये उनको अल्पज्ञानी जानने में असमर्थ हैं। हम लोगों को आगम से ही उनकी जानकारी हो सकती है।

### जोवको संसारावस्था

मनुष्य, पश्च-पक्षी, क्षुद्र जंन्तु और पृथ्वी, जब्र, अग्नि, वाय एवं अगणित दनस्पतियां जोभी दृष्टि गोचर हो रहे हैं, वे सब संसारी जीव हैं। सस।रि-जीव अनादिकाल से कमों के निम्ति से निजस्वरूप को घुल द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव और भावमय सुदीर्घ (पश्च परावर्तनमय) संसार में परिश्रमण कर रहे हैं। प्रत्येक जीव का अनादि से स्वणं-पाषाण के समान कमों के साथ सम्बन्ध बना हुआ है। जब कमों का उदय होता हैं, तो जंब उसके निमित्त से स्वयं रागी, हेंपी, मोही और अज्ञानी वन जाता है और जब जीव कोधादि रूप विभावमय परिणमन करता हैं तब जीव के विकृतभावों का निमित्त पाकर कार्माण-वर्गणारूप पुदंगल द्रव्य स्वयं जीव से सम्बद्ध हो जाते हैं। विकारी जीवों के विभावों का निमित्त मिलने पर कार्माण-वर्गणा में नियम से विकारी पर्याय उत्पन्न होती हैं। पुदंगल द्रव्य की इस विकारी पर्याय को हो कर्म कहते हैं। कमं के निमित्त से स्वरूप से भृष्ट हुए जीव नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगित में विविध अवस्थाओं को पुन: पुन: ग्रहण करते हैं और छोडते हैं। चौरासी लाख गोनियों में जीव के परिश्रमण का नाम ही संसार हैं। प्रत्येक जीव अनादि से सम्पूर्ण लोक में (द्रव्य-क्षेत्र-काल) भावरूप संसार में परिश्रमण कर रहे हैं। वस्तुत: जीव कौर कमं के सम्पर्क को हा संसार कहते हैं। जीव के साथ यह अटल

नियम नहीं हैं, कि कमोदय के निमित्त से वह नियम से राग-द्वेष मोह और अज्ञानमय विभावरूप पिएणमां जब जीव स्वरुपावरूम्बन के बरु से दर्शनज्ञान चारित्रमय परिणमन करता है। उस कि मी विभाव परिणित नहीं होतो है। विभाव परिणित एप प्रमादावस्था के अभाव में जीव के कमों का आसव कौर बन्ध रक जाता है। बन्ध के अभाव में जीव का जन्म मरणरूप संबार समाप्त हो जाता है।

### जीव और कर्म

नवीन बन्धामाव होने पर पूर्वबद्ध कर्म आत्मविशुद्धि से निर्जोर्ण हो जाते हैं। सम्पूर्ण कर्मों का आत्मा से विच्छेद होते ही आत्मा मृतत हो जाता है।

जैनागम में कमं-विषय का यिस्तृत वर्णन है। भगवान ऋषभ देवादि चीवीस तीर्थंकरों के प्रामाणिक उपदेश का सार यहणकर मेंघावी महान तार्किक जैनाचार्यों ने पट्खण्डागम, गोम्मटसार-कमंकाण्ड सादि ग्रन्थों में कमं सिद्धान्त का विस्तृत वर्णन किया है। कमं का सामान्यस्वरूप आचार्यं नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने निम्नप्रकार लिखा है।

पयडी सील सहावे, जीवगाणं अणाइ सम्बन्धो । कणयं वले मलव ताण अत्यत्तं सय सिद्धं ॥

जैसे जलका स्वभाव शीतल, पवन का स्वभाव तिरछा वहना और अग्निका स्वभाव ऊरर की ओर ज ना है। उसा प्रकार निमित्त के बिना वस्तु का जो सहज स्वभाव होता है, उसे प्रकृति, लशी अथवा स्वभाव कहते हैं। यहा पर वस्तु शब्दसे जीव और पुद्गल का ग्रहण किया गया है। इन दोनों में से जीव का स्वभाव रागादिरूप से परिणमने काहै और कर्म का स्वमाव जीव को रागादिरूप से परिणमाने में ि मित्त होने का है। पोदगलिक कर्म और जीव का यह सम्बन्ध अनादि का है। जैसे खदान से निकटने वाले र णिपापाण में सोने और मल का मेल कब हुआ कहना अशक्य है, उसी तरह चेतन जीव द्रव्य और जड कमं द्रव्य के सम्बंध के विषय में तर्क करना अनुपयोगी है। इमीलिये आचार्य देव ने इन दोनो द्रव्यों के संयोग को अनादिकालीन स्वीकार किया है। वलादि आर्ष ग्रन्थों में भी सप्तारि जीन का अनादिद्रव्य कर्म के साथ सम्पर्कं माना हं। अनादिकालीन द्रव्य कर्म के उदय होने पर उसके निमित्त से जीव रःगादिकषायरूप विमात्र परिणति में परिणमित होता है। स्वमाव से हो उन द्रव्यों का ऐसा पारस्परिक कार्य कारण भाव चला आ रहा है। कभी जीव के रागादि विभावरुप निमित्त कारण से पुदगल द्रब्य विकृत होकर मर्मरुप से परिवर्तित हो जाते हैं। और कभी कर्मोदय का निमित्त प्राप्त कर जीव विभावरुप से परिणमन करत है। इस तरह स्हजरू। से दोनों द्रव्यों में कार्य कारण भाववना हुआ है। शरीर से भिन्न 'अहम' मैं ऐसी प्रतीति जीव का अस्तित्वं सिद्ध करती है और कर्मका अस्तित्व कोई धनी कोई निर्धंन, कोई मूर्खं कोई विद्वान, इत्यादि विचित्रता प्रत्यक्ष देखने से सिद्ध होती हैं। वास्तव में कर्म आत्मा की विविध नरकादि अवस्थाओं के होने में निमित्त है। और वह जीव की उस अवस्था के योग्य शरीर, इन्द्रियादि प्राप्ति का प्रमुख हेतु हैं। इसलिये जीवं द्रव्य और कर्मं दोनों ही पदार्थं अनुभव सिद्ध

जीव [शीदारिकादि शरीरसहित शरीर नामा नामकर्म के उदय से मन, बचन और काय योग से ज्ञानावरण दि आठ कमैरुप होनेवाली कर्मवर्गणाओं को एवं औदारिक, वैकियिक अहारक और तैजस शरीर

को पुद्गलविपाकी कहते हैं। जैसा कि निम्न आगम वादय से स्पष्ट है।

देहादी फासंता पण्णासा णिमिणताव जुगलंच। थिर सुह-पत्तेय दुग अगुहतियं पोग्गल विवाई।। कर्म काण्ड गा. ४७

नरकायु, तिर्पेगायु, मनुष्यायु और देवायु इन चारों आयु कर्म की प्रकृतियों का बन्व होने पर इनके उदय का फल जीव को नरकादि अवस्था में हो प्राप्त होता है। इसीलिये इन प्रकृतिओं की भविवपको संज्ञा है। प्रत्येक आयु का उपभोग जीव को जन्मानन्तर उसी जाति की पर्याय में प्राप्त होता है। नरकायु का फल नरकपर्याय में ही प्राप्त हो सकता है। तिर्यं न आदि किसी भी अवस्था में नरकायु का उदय नहीं हो सकता है इसी तरह वाकी तीनों आयू कर्म की प्रकृतियों का नियम है। नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यं गत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और देवगत्यानूपूर्वी नाम कर्म की इन चार प्रकृतियों का परिणाक [उदय) मरने के पश्चात् नवीन जन्म घारण करने के लिये परलोक को गमन करते हुए जीव के मार्ग में होता है इसीसे इन प्रकृतिओं को क्षेत्र विपाकी कहा गया है। जैसा की निम्नलिखित आप्वाक्य से सिद्ध है।

आऊणी भव विवाई खेंत्त विवाई हुय आणु पुन्वीओ। अट्टत्तरि अवसेसा जीव विवाई मुणेयन्व।।।

कर्मकाण्ड गा ६३८

भावार्थ-नरकादि चार आयु भवविपाकी है, क्योंकि नारकादि पर्यायों के होने पर हो इन प्रकृतियों का फल प्राप्त होता है और चार आनुपुर्वी क्षेत्र विपाकी हैं। अवशेष ग्वी ७८ प्रकृतियां जीवविपाकी हैं। इन अठहत्तर प्रकृतिओं का फल जीवको नारकादि पर्यायों में प्राप्त होता हैं। वे प्रकृतियां नोचे लिखे अनुसार हैं।

> वेदणिय-गोद-वादीणेकावण्णा तु णामपयडीणं । सत्तावीसं चेदे अहुत्तरि जीवविवाई ॥

वेदनीय की २ गोत्रकमं की २ घातिया कर्मों की ४७ और नाम कर्मकी तीर्थंकर आदि सत्ताइस प्रकृतियों का फल जीव ही मनुष्यादि पर्यायों में उपाजित करता है। इस प्रकार कर्म प्रकृतियों का परिपाक उनकी निजकी शक्ति से हुआ करता है।

#### कर्मो का आबाधा काल

योग और कवायों से कर्मों का बन्ध होते ही वे कर्म तुरन्त फल नहीं देते उसके लिये विशेष नियम है। इस नियम को आवाधा काल कहते हैं अर्थात अत्पवा अधिक स्थित बन्ध के अनूसार अल्प व अधिक विरह्काल के अनन्तर कर्म उदय में आने लगते हैं। आवाधा का निम्न प्रकार लक्षण हैं।

कम्मसरूवेणागय दन्वे णय एदि उदय रूवेण 1 रूवेण्दीरणस्स य आवाहा जाव ताव हवे 11

मावार्थं-कार्माण शरीर नामा नामकर्म के उदय से योग द्वारा आत्मा में कर्म रूपसे प्राप्त हुए पूद्गल द्रव्य जब तक उदय से अथवा उदीरणारूप से परिणत नहीं होते उतने काल को आबाधा कहते हैं। कर्म प्रकृतिओं को आबाधा के विषय में आगमोक्त विधि इस प्रकार है।

### उदयपिडसत्ताण्हं आवाहा कोडकोडि उवहीणं। वाससयं तप्पिड भागेणय सेसिट्टिदीणंच 11

जिन कमें प्रकृतियों की एक कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति बन्धती है उन कमों की सो वर्ष प्रमाण आवाधा निर्मित होती हैं। इस विधि से त्रैराशिक नियमानुसार कमें स्थिति के प्रमाण से न्यून व अधिक आवाधा निकाली जाती है। परन्तु जिन कमें प्रकृतियों की उत्कृष्ट स्थिति अन्तःकोडाकोडी प्रमाण बन्धती हैं, उनकी आवाधा अन्तर्मृहुर्त मात्र होती हैं। समस्त जवन्य स्थितियों की आवाधा स्थिति से संख्याल गुणी कम होती हैं। आयुक्तमं की आवाधा के विषय में निम्नप्रकार नियम है।

पुन्वाणं कोडितिभा गादासंखेपबद्धवोत्ति हवे 1 आउस्स य आवाहाण ठिदिपडिभागमाऊस्स !!

भावार्ष-आय कर्ष की आवाधा कोडपूर्व के तीसरे माग से लेकर आसंक्षेपादा प्रमाण अर्थात जिस काल से अलाकाल नहीं है ऐसे आवली के असंख्यातवें भाग प्रमाण मात्र हैं। परन्तु आयु कर्म की आवाधा स्थिति के अनुसार माग की हुई नहीं होती हैं। उदीरणा अर्थात कर्म स्थिति पूर्ण होने से पहले ही विश्वद्धि के वलसे कर्मों को उदयावली में लाकर खिरादेना ऐसी हालत में आयु को छोडकर सातों कर्मों की आवाधा एक आवली मात्र हैं। वन्धी हुई तद्भव संवन्धी भूज्यमान आयु की उदीरणा हो सकती हैं। परन्तु आयु की यह उदीरणा केवल कर्म मूमिज मनुष्य और तियंच के ही संमवित हैं। समस्त देव नारकी, भोगभूमिज मनुष्य और तियंच के भुज्यमान आयु की उदीरणा नहीं होती हैं। कर्म मूमिज मनुष्य और तियंचों का अकाल मरण भी होता है

### अकाल मृत्यु

कुछ विद्वानों का आयु के विषय में ऐसा मत है कि आयु की स्थिति के पूर्ण होने पर ही जीवों का मरण होता है किसी भी जीव का कदलीघात मरण (अकाल मृत्यु) नहीं होती हैं। परन्तु जैनागम में अकाल मरण का प्रचुर उल्लेख मिलता है निम्नलिखित वाक्यों से अकाल मरण की पुष्टि हीती हैं।

विसर्वेषणरत्तवखय-भय-आध्यागहण संकिलेसेहि। उस्सासाहाराणं णिरोह दो खिज्जदे आऊ !! गो. कर्म काण्ड गाया ५७

आयुक्मं के निषेक प्रतिसमय समानक्ष्य से उदित होते रहते हैं। आयु के प्रतिम निषेक की स्थिति के पूर्ण होने पर ही उसका उदय हुआ करता है और उसी समय जीव की वह पर्याय समाप्त हो जाती है। वर्तमान आयु के समाप्त होते ही परमव सम्बन्धी आयु का उदय शारम्म हो जाता है उस आयु के उदय होते ही नवीन पर्याय प्राप्त हो जाती है। संसारी जीव के प्रत्येक समय कोई न कोई एक आयु का उदय अवश्य हुआ करता है।

#### दशकरण

कर्म की सामान्यरूप से १० अवस्थायें मानी गई हैं।गोम्मटसार कर्मकाण्ड में इन अवस्थाओं को करण कहा गया है। उनका स्वरूप निम्नप्रकार है।

कम्माणं सम्बंधो बंधो उवकट्टणं हवे बिडिक् । संकमणमणत्थगदी हाणी ओवकट्टणंणाम ।। अण्णत्थिठियस्तुदये सय्हणमृदीरणाहु अत्थितं । सत्तंसकालपत्तं उदओहो दित्ति णिद्द्ठी ।। उदये संकममुदये चउसुविदाद् कमें णणोसकं । उवसत्चिणिघत्तिं णिकाचिदं होदिजंकम्मं ।।

भावार्थ-कर्मद्रव्य का आत्मद्रदेशों के साथ ज्ञानावरणादिरूप से सम्बन्ध होना बन्धकरण है बझ कमों की स्थिति तथा अनुभाग के बढ़ने को उत्कपण कहते हैं। वन्वरूप प्रकृति की स्थिति और अन्माग का कम हो जाना अपकर्षण करण है। जिस के उदय का अभी समय नहीं आया ऐसी कर्मप्रकृति का अपकर्षण के बलसे उदयावली में प्राप्त करना उदीरणाकरण हैं 1 पुद्गल द्रव्य का कर्मरूप रहना सत्त्रकरण कहलाता है 1 कर्मप्रकृति का फल देने का समय प्राप्त हो जाना उदयकरण है 1 जिससे कर्मउदयावली (उदीरणा) अवस्था को प्राप्त न हो सके वह उपशान्त करण हैं। जिसमे कर्मप्रकृति उदयावली और सकमण अवस्था को न प्राप्त कर सके उसे निधत्तिकरण कहते हैं । जिन्से वर्मप्रकृति की उदीरणा, संक्रमण, उत्कर्पण और अपकर्षण ये चारों अवस्थायें न ही सकें उसे निकाचितकरण कहते हैं। आयुकर्म में संक्रमणकरण नही होता अर्थात नरकादि की आयु वन्धने के अनन्तर वह आयु वदलकर तियंगायु, मनुष्यायु ओर देवायुरूप से परिणामों के बदलने पर भी परिवर्तित नहीं हो सकती हां नरकादि की आयु की स्थिति में शुगाशुभ परिणामों से उत्कर्पणकरण और अपकर्पणकरण तथा अन्य सात मी करण आयुकर्म के होते हैं। वाकी समस्तं कर्मों में दशकरण हो सकते हैं। गुणस्थानो की अपेक्षा प्रथम मिध्यादृष्टि से लेकर अपूर्वकरण अ.ठवें गुणस्थान तक १० करण होते हैं। अपूर्वकरण गुणस्थान से ऊरर सूक्ष्म सांगराय गुणस्थान तक ७ करण ही होते हैं। इसके वाद सयोगकेवली तक संक्रमणकरण के विना ६ करण ही होते हैं और अयोग केया को सत्व और उदय दो ही करण पाये जाते हैं। इस तरह जीव के परिणामों के निमित्त से कमों की व्यवस्था होती है।

### उपसंहार

समस्त द्रव्यों में परिणमनशील योग्यता है। इसी भावरूप योग्यता से ही समस्त द्रव्यों में निरन्तर उत्पाद—व्यय और श्रीव्य हुआ करता है। इसी स्वामाविक परिणमन शीलता या भावरूप योग्यता से प्रत्येक द्रव्य पर्यायान्तर प्राप्त करता है। जीव द्रव्य और पुद्गल द्रव्य में भावरूप योग्यता के साथ ही क्रियारूप योग्यता भी पायी जाती है। जीव प्रदेशों का हलन—चलनरूप परिष्यंद होता है, उसे क्रिया कहते हैं और प्रत्येक वस्तु में होनेवाले प्रवाहरूप परिणमन को भाव कहते हैं। इसीसे तत्वार्यसूत्र आदि ग्रन्थों में जीव और पुद्गल दो द्रव्यों को सिक्रय मानकर अवशेष धर्म, अधर्म, काल और आकाश इन चार द्रव्यों को निष्क्रिय बतलाया गया है। कियावतीशिवत के कारण ही जीव कियावान पुद्गल द्रव्यके निमित्त से आस्ताविद तत्वरूप से स्वयं परिवर्तित होता है अर्थात समस्त तत्त्वों में जीव का अन्वय पाया जाता है, इसिलये जीवही उनका आधार है। जीव द्रव्य स्वतः सिद्ध है, अनादि अनंत है, अमूर्तिक है और ज्ञानादि अनन्त धर्मों का अविच्छिन्न आधार होनेसे अविनाशी है। परन्तु पर्यायाधिक दृष्टि से जीव मुक्त और अमुक्त दो माणों में विभवत हैं।

जीव अनादिसे ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से मृच्छित होकर आत्मस्वरूप को मूले हुए हैं और राग-

ढेपादिरूप परिणत होकर बढ़ होते हैं, अत एव संसारी है। जैसे जीवात्मा अनादि है और जड पुद्गल मी अनादि है, वैसे ही जीव और कर्म इन दोनोंका बन्म भी अनादि है, वयोंकि जीव और कर्मका ऐसा ही सम्बन्ध अनादिसे चला आरहा है। यदि जीव पहले से हो कर्मरहित माना जावे तो रागादि विभावरूप अशुद्धि के अमाव में उसके बन्ध का अमाव मानना पड़ेगा और यदि शूद्ध अवस्थामें भी उसके बन्ध माना जावेगा तो फिर जीवको मोक्ष कैसे प्राप्त हो सकेगा। इस तरह मृक्ति का अमाव मानना पड़ेगा। इसी प्रकार पुद्गल द्रव्यकों भी यदि सर्वथा शूद्ध मान लिया जाता है, तो जैसे विनाकारण के आत्मा के सहजरूप से जान प्राप्त होता है, वैसे ही इसमे अकारण कोधादि प्राप्त होने लगेगे। और तब बन्धके कारणभूत कोधादिक के निर्निमत्त पाये जाने से यातो बन्ध शाश्वत होगा अथवा कोधादि के अभाव माननेपर द्रव्य और गुणका अभाव मानना पड़ेगा। इमलिये जीव और कर्म का अनादि सम्बन्ध है। यही बात पञ्चाध्यायों में पंडित राजमल्लजी ने निम्नरूप से प्रकट की है।

वद्धोयथा ससंसारी स्यादल्ब्घस्वरूपवान् । मूच्छितोऽनादितोऽध्टाभिज्ञांनाद्यावृतिकमंभि :। यथानादिःस जीवारमा यथानादिश्चपुद्गलः। द्वयोर्वन्घोऽप्यनादिः स्यात् संबंघो जीवकमंणोः ॥ तद्यथायितिष्कर्मा जीवःप्रागेव तादृशः। बन्धाभावोऽथ शुद्धेऽपि वन्धश्चेन्निवृत्तिःकथम् ।। अथचेद्पुद्गलः शुद्धःसर्वतःप्रागनादितः। हेतोविना यथाज्ञानं तथा कोषादिरात्मनः ।। एवं वन्धस्यनित्यत्वंहेतोः सद्भावतोऽथवा । द्रव्यामावो गुणाभावो कोषादीनामदर्शनात् ।।

जिस प्रकार कोई किसी का उपकार करता है और दूसरा उसका प्रत्युपकार करता है। वैसेही अशृद्ध रागादि भावों का कारण कर्म है और रागादिभाव उस कर्म के कारण है आशय यह है कि पूर्वबद्ध कर्मके उदय से रागादिभाव होते हैं और रागादिभावों के निमित्तसे नवीन कर्मों का बन्ध होता है। इन आये हुए नवीन कर्मों के परिपाक होनें से फिर रागादिभाव होते है और उन रागादिभावों के निमित्तसे पुन: अन्य नूतन कर्मों का बन्ध होता है। इस प्रकार जीव और कर्म का सम्बन्ध सन्तान की अपेक्षा अनादि है और इसीका नाम ससार है। वह संसार जीव के सम्यग्दर्शनादि शुद्ध भावों के बिना दुर्मोंच्य है। पंचाध्यायों में निम्नरूप से यह विषय प्रगट किया गया है।

जीवस्याशुद्धरागादिभावानां कर्मकारणम् । कर्मणस्तस्य रागादिभावाः अत्युपकारिवत् ।। पूर्वकर्मोदयाद भावोभावा प्रत्यप्रसंचयः । तस्य पाकात्पुनभावो भावाद् बन्धः पुनस्ततः ।। एवं सन्त.नतोऽन।दिः सम्बन्धो जीवकर्मणोः । संसारःसच दुर्मोच्यो विना सम्यग्दृगादिना ॥ न केवलं प्रदेशानांबन्धः स्याद् सापेक्षस्तद्द्वयोरिति ॥

वद्यपि जीव स्वभाव्यतः अमूर्त और चंतन्य स्वरूप है तथापि उसमें अनादिकालीन ऐसी योग्यता है जिससे वह जड मूर्तिक कमें से बन्धता हैं और कमें भी स्वभावसे ऐसी योग्यतावाला है जिससे जीव से सम्बद्ध होकर जीव की विकृतिमें निमित्ता होता हैं। जीव के अमूर्त ज्ञान गुण का मिंदरादिमूर्ज द्रव्य के सम्बन्ध से मूच्छित होना प्रत्यक्ष से देखा जाता है उसी प्रकार सदात्मक अपूर्त जीवकी बिकृति में निमित्ता होता है। अमूर्त जीव का सदात्मक मूर्तकर्म से बन्ध होने में कोई बाधा प्रतीत नहीं होती है, यद्यपि जीव का इस बन्धरूप संसार से उन्मुक्त होना कठिन प्रतीत होता है, परन्तु जीव का कर्मवन्ध

से मुग्त होना असंभव नही है। जब जीव स्वानुभव के बलसे सम्यग्दर्शनादिरूप से परिणमता है तव संसार की कारणमूत जीव की विभाव परिणति का पूर्ण अभाव हो जाता है और जीव मुक्त होकर सिट्द परमातमा बन जाता है।

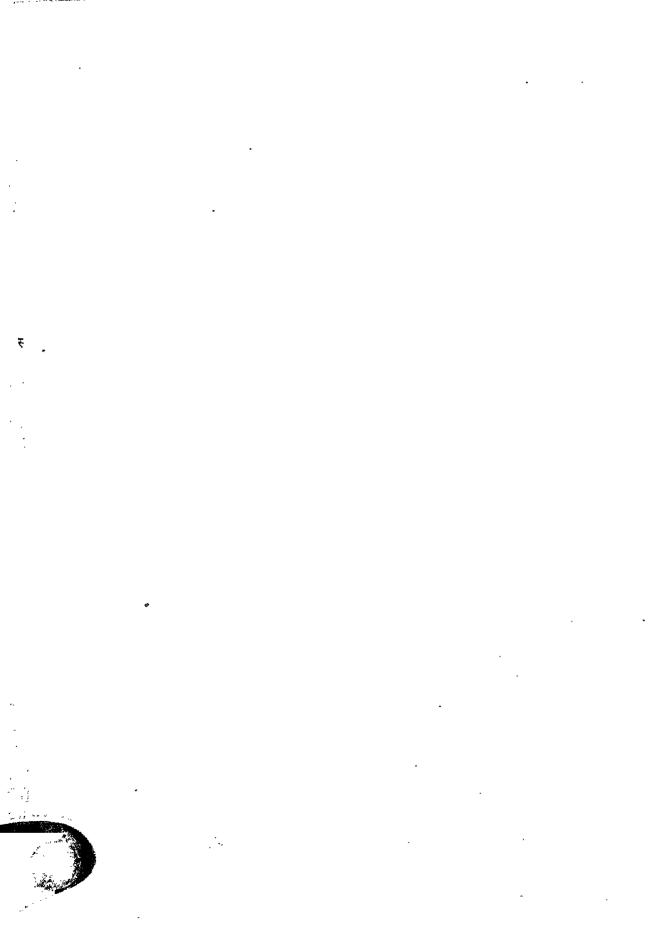
इस यन्त्र में कर्मों की कुल १४८ उत्तर प्रकृतिओं में बन्ध और उदय के समय घरीर से अविनाभाव सम्बन्ध रखनेवाले पांच बन्धन और पांच संधात अलग नहीं दिखायें जाते घरीर बन्धन में ही उनका अन्तर्भाव कर लिया जाता है। इसी तरह पुद्गल के २० गुणों का अभेद विवक्षासे वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श में ही अन्तर्भाव होता है। इस तरह कुल २६ प्रकृतिओं के घटाने पर १२२ प्रकृतियां ही उदय योग्य मानी गई है। और बन्धावस्था में सम्यक्त्व और सम्यिद्धमध्यात्व मिध्यात्व से प्रथक नहीं हैं, अतः बन्ध योग्य कुल १२० प्रकृतियां ही मानी गई हैं। अथम गुणस्थान में तीर्थंकर,आहारक चरीर आहारक अंगोपांग इन तीनों प्रकृतिओंका बन्ध नहीं होता इसलियें सिर्फ १९७ प्रकृतियां ही इस गुणस्थान में बन्धनें योग्य मानी गई हैं।

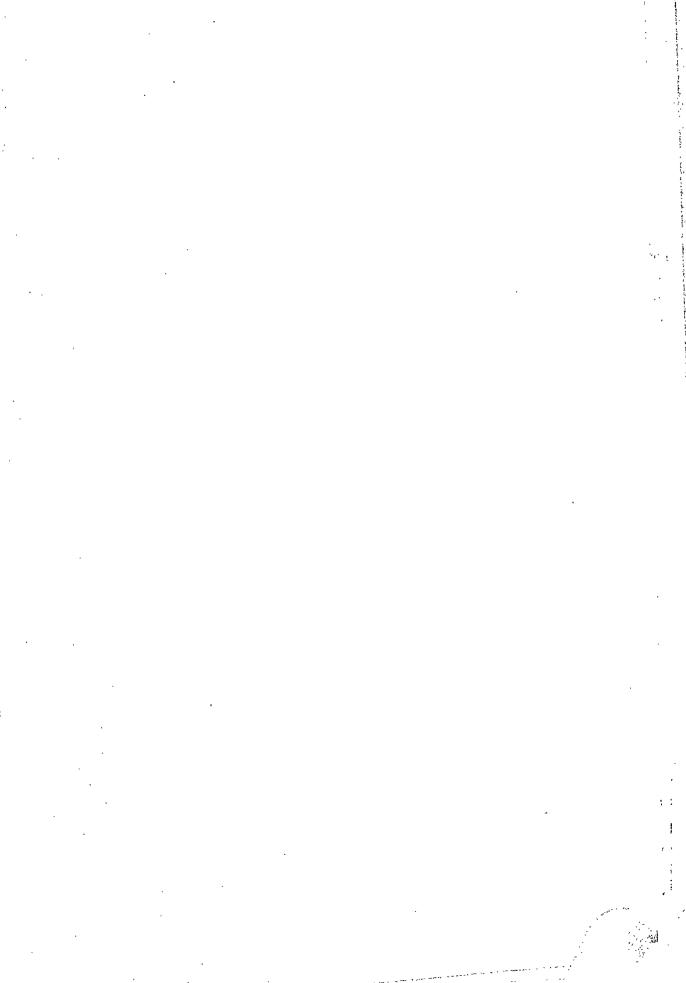
र्फू चतुर्थ गुणस्थान और पंचमादि सभी गुणस्थानी में जो १४८ आदि प्रकृतियों की सत्ता दिखाई गई हैं वह उपशम सम्यवत्व की अपेक्षा ही कथन किया गया है। क्षायिक सम्यत्व की विवक्षा में निथ्यात्वादि सात प्रकृतियों का क्षय हो जाने से सात प्रकृतियों कम हो जाती है।

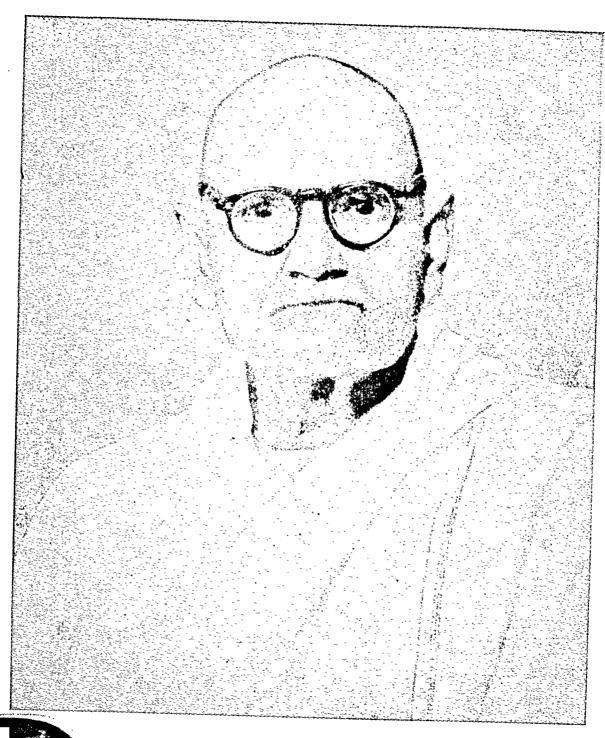
कर्मबन्धादियन्त्र

इस यन्त्र द्वारा कर्मप्रकृतियों के बन्य-बन्धव्युच्छित्ति आदिका गुणस्थान क्रमसे उल्लेख किया गया है।

अ. न.	गुणस्थान का नाम	ंबन्ध संख्या	बन्ध व्युच्छित्ति संख्या	उदय संख्या	उदय व्युच्छित्त संख्या	सत्तासं स्या	सत्ता व्युच्छित्ति संस्या
8	मिध्यात्व	११७	१६	 ११७	. ષ	१४८	0
२	सासःदन	१०१	२५	१११	९	१४५	0
n	सम्यहिमध्यात्व	७४	0	१००	१	१४७	0
8	असंयतसम्यग्दृष्टि	७७	१०	१०४	१७	\$Ας∙∰•	ę
4	देशविरत	६७	٧	८७	٤	१४७	8
[ &	प्रमत्त्रसंयत	६	Ę	८१	ц	१४६	0
9	ंकः अत्रमत्तसंयत	५९	<b>?</b>	७६	8	१४६	\\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\
6	अपूर्वकरण	५८	TY UV	७२	Ę	१४२	o
٩.	अनिवृत्तिकरण	२२	ч	६६	E&	१४२	0
१०	सूक्ष्मसांपराय	१७	१६	६०	१	१४२	o
११	उपशांतमोह	8	o	ષ્	२	१४२	0
१२	क्षीणकपाय	१	0	५७	१६	१०१	१६
१३	सयोग केवली	ę	<b>?</b> -	४२	३०	८५	0
88	अयोगकेवली	0	0	१२	१२	८५	८५







श्रद्धेय ब्रह्मचारी श्री उल्फत राय जैन

ノ・マケンド

लेखक- डॉ. हेमचंदजी जैन कारंजा जी. अकोला महाराष्ट्र

इस ३४ स्थान दर्शन ग्रंथ के प्रकाशक ब्रम्हचारी उल्फतराय जैन रोहतक (हरीयाना)

- १) तीन अगस्त सन १८९० को सोनीपत नगर जी रोहतक (हरीयाना) में लालाबुधुमलजी जैन अग्रवाल के घर जन्म हुवा । ६ वर्षकी आयुमे आपने अपने फुफाजी लाला उदमीरामजी जैन रोहतक के घर दत्तकपुत्र बने, बचपनसही धर्मसंस्कार हृदयमे उत्पन्न होते रहे है।
  - २) रोहतक गव्हर्मेन्ट हायस्कुलमे मैट्रीक तक अंग्रेजी हिन्दी, उर्दु, पारसी संस्कृत आदिका अध्ययन कीया। व्यापारी भाषा मुडी हीन्दी का भी ज्ञान प्राप्त कीया। वस्वईमे व्यापारी क्षेत्र तथा महाराष्ट्र, गुजरातमे धार्मीक संबंध के कारण गुजराती, महाराष्ट्रीयका भी ज्ञान प्राप्त कोया:
  - ३) १६ वर्ष की आयुमे सोनीपत निवासी एक जैन अग्रवाल कन्यासे विवाह हुवा जो ६ मास के बाद मरण की प्राप्त हो गयी ।
  - ४) विवाहके कुछ समय बाद दत्तक पिताजीकाभी स्वर्गवास हो गया उनका व्यापार संभालने के लीए विद्या अध्ययन छोडना पडा ।
  - ५) कुछ समय बाद दुसरा विवाह रेवाडी जी. गुडगावा निवासी लाला प्रभुदयालजी दीगंबर अग्रवाल जैन की कन्या से हुवा । दैव योगसे वह भी ७ बरस तक वायु रोगसे पीडीत रही । उसके चार भाई है १) बाबु करमचंदजी जैन अँडव्होकेट सुपरीमकोर्ट दील्ली। २) बाबु मेहेरचंदजी जैन अँडव्होकेट गुडगांवा (हरीयाना)
    - ३) वार्बु एस. सी. जैन भारत केन्द्र सरकारके इन्शुअरंस खातेके हेड रहे है। ४) बार्बु जे सी. जैन दीर्धकाल तक टाइम्स ऑफ इन्डीया के जनरल मेनेजर रहे है।
  - ६) तीसरा विवाह २४ वर्ष की आयुमे गुहाणा जी रोहतक (हरीयाना) के दीगंबर जैन कन्यासे विवाह हुवा । जिनके भाई लाला चत्रसेन, और लाला हरनामसींग है। इस तीसरी देवी का नाम सुख देविजी हैं। इन्होने ४ पुत्र दो कन्याओंको जन्म दिया. एक कन्या सुपुत्री पदमादेवी स्वर्गवास होगई शेष पांच बहन भाई इस प्रकार हैं।
    - १ पी. सी. जैन एरोड़ाम ऑफीसर कलकत्ता २ श्रीपाल जैन व्यापारी बम्बई ३) डॉ. एस एस. जैन एफ आर. सी. एस. लन्डन एडिन वर्ग ४) पि. के. जैन टाइम्स ऑफ इंडिया बंबई को पुना बांचके ऑफिसर है। ५) श्रीमती जयमाला देवी जिसने बी. ए. डिगरी प्राप्त किया है। बाबु इन्द्रकुमारजी एम. ए. मेरठ की धर्मपत्नि बनी है।
  - ७) प्रकाशक ब्रम्हचारी उलफतराय ३० वर्ष की आयुमे व्यापार के लिये वंबई आगये वहां गेहुं, अलसी, रुई, चांदी सोनेकी दलाली का काम कीया। वेंको को हाजर चांदी सोना गीन्नी की भी सप्लाय की,
    - ट) व्यापार के साथ साथ दिगंबर जैन भोलेश्वर मंदीर मे प्रातःकाल, गुलालवाडी मंदीरजी में रात्रीको तीस वर्षतक निजपर कल्याण के रूपमें आनररी तौर पर बास्त्र प्रवचन कीया। जिस समय संघपती सेठ पुनमचंद घासीलालजी ने सिखर समेद तीय यात्रा संघ निकाला साथ में चारित्र चक्रवर्ती साम्राज्य नायक तपो मुर्ती सिद्धांत पारंगत १०८ श्री आचार्य शांतीसागरजी मुनीम।हाराजभी संघ के साथ पघारे थे उस समय वम्हचारी उलफ्तरायजीने ६ मास तक पैदल यात्रा करके संघ सेवासे पुण्य लाभ लिया था।
    - ९) ५९ वर्ष के आयुमे १०८ आचार्य श्री वीरसागरजी मुनी महाराजसे सवाई माधवपूरमे दुसरी प्रतिमा धारणकर घरका कामकाज छोडिवया घरमेही डदासीन रुपसे रहने लगे।
    - १०) ६३ वर्ष के आयुमे महाराष्ट्र प्रांतके सातारा जिल्हे के लोनद मुकामपर चारित्र्यचक्रवर्ती साम्राज्यनायक १०८ आचार्य श्री शांतीसागरजी महाराजके चरण कमलोंमे ७ वी प्रतिमा धारण करके घर छोड दिया। देश विदेश भ्रमण करने लगे।

जिनवाणी के ४ अनुयोग (भाग)

सभी अनुयोग प्राणियोंका कल्याण करता है। प्रथमानुयोग:- ये प्रकाश डालता है। कीन प्राणी निगोद से निकलकर अरहंत बनकर मोक्ष चला १)

गया इस अनुयोग में आदि पुराण, उत्तरपुराण, पदमपुराण, हरिवंश पुराण आदि अनेक ग्रंथ हैं। २)

चरणानुयोगः – ये प्रकाश डालता है। इस मार्गपर चलनेसे दानवता नष्ट होती चली जाती है। मान-वता पर्यपर चलकर आत्मा परमात्मा बन जाती है। ५ मिथ्यात १२ अवृत १५ योग २५ कषाय सव मिलकर, सत्तावन, आश्रव कहलाते है। वो ही ससार बढाते है और इनके निराकरण करनेके लिये

तीन गुप्ति, पांच समिती, दस धर्म, १२ अनुप्रेक्षा २२ परिषहजय ५ चरित्र के सब मिलकर ५७ सम्बर कहलाते है। इनसे ही प्राणी मानवता पथपर चलकर कर्म को नष्ट करके भगवान वनजाता

है। इसके आधीन सागार, अनागार, श्रावकाचार, मुलाचार आदि अनेक ग्रंथ है। ₹) करणानुयोग:- इस प्रकार से जाना जाता है इनके भाव भूल से आत्मा चार गति, पंचेंद्री, ६ काय

में संसार में भ्रंमण कर रहा है। उस कमं सुधाको बतानेवाले षट खंडागम, धवल, महाधवल कमं कान्ड, जीवबंध गोमटसार आदि कर्म बतानेवाले अनेक ग्रंथ उपलब्ध है। द्रव्यानुयोग:- विज्ञान है, जिसको आज की भाषामें सायन्स भी कहते है जो ये प्रकाश डालता है, 8)

वास्तविक आत्मा का क्या स्वरुप है। उत्तपर लक्ष्य हो जानेपर सब संसार, वस्तुओं से सहजही राग्री भाव हटजाने से निज आत्मरस प्रगट हो जाता है। सुचना:- कोई भी अनुयोग पढ़ो अगर दृष्टि अपने आत्म शर्रीरस्वरुप पर लगी रहेंगी तो सर्वही चारों अनुयोग कल्याण कारी हो जायेंगे। अगर दृष्टि आत्मरस से हटकर सँसार रस पर लगी रहेगी,, तो किसी भी अनुयोग के पढनेसे आत्म कल्याण नही होगा,।

निरुचय और व्यवहार धर्मका अनिवार्य सहयोग:-निश्चय धर्म - अभेद, निरविकल एकाग्र, निजस्वरुप आत्मा की अवस्थायें है, इसका छद्मस्थ जीवों के अधिकसे अधिक अंतरमुहूर्त १ समय कम ४८ मिनिट भी है। इतने समय भी अगर उपयोग एकाग्र हो जाय तो केवल ज्ञान केवल दर्शन अनंत सुख अनंत वीर्य आत्मा के निज

गुण प्रगट हो जाते है। अनंतानंत काल तक स्थिर रहते है।

तब व्यवहार धर्म ही आत्माको अशुभ उपयोग मिथ्या देव गुरु शास्त्र श्रद्धा, हिन्सा, झूठ, नोरी, कुशील, परिग्रह, की निरगल तृष्णा हैप भावनाओं में जाने से रोकता है। सत्य देव ,गुहे, शास्त्र, श्रद्धा-पंच पांपों का श्रेणी बद्ध थोडा थोडा त्याग या महावृत रुप पुणं २८ मुल गुण रुप महावृत ५ इंद्री विजय ५ समिती ५ षटावश्यक ६ नग्नरहना १ भुमिशयन १ स्नान त्याग १ खडा रहकर भोजन लेना २४ धन्टे में एक ही बार भोजन लेना, १ दंत मंजन नही करना १, केश लुंच (हाथ

छद्मस्थ जीवोका उपयोग इतने समय एकाग्र नहीं रहकर चंचल अस्थिर डामाडोल होता रहता है,

से केश उखाडना) कुल २८ मूल गुण व्यवहार चरित्र ही बताये गये हैं। प्रकाशक के बिना किसी संकेत के अपनी ज्ञान दान भावनाओं से इस ग्रंथ प्रकाशन में द्रव्यदेने वालो की नामावली इस प्रकार है:-

५०० रु. सेठ मोतीलालजी गुलाब सावजी, नागपुर. २०० रु. दख्खन क्वीन मोटर सर्वीस ट्रान्सपोर्ट कार्पोरेशन प्रोप्राटर मिर्जा ब्रदर्स चिकोडी

जिल्हा बेलगाव (आंध्रप्रांत) २०१ ६ सेठ वनवारीलालजी गिरधारीलालजी जैन जेजानी, नागपुर १ रु. श्रीमती कस्तुरीदेवी धर्म पत्नी श्री मानकचंदजी जैन कासलीवाल नागपुर

सुमतोबाई किल्लेदार नागपूर " मानकबाई धर्मपत्नी श्री नेमीचंदजी, पाटनी नागपूर चमेलीदेवी धर्म पत्नी श्री नानकचंदजी, जैन नागपूर १०१ रु. श्रीमती तुलसीबाई धर्मपत्नी श्री कस्तुरचंदजी घनसोरवाले नागपुर १०१ रु. श्रीयुत नेमगोडा देवगोंडा जैन, बंडकीहॉल ता. चिकोडी जि. बेलगांव (आंध्रप्रदेश) १०१ रु. श्रीयुत सिंगई मूलचंदजी अध्यक्ष परवार मंदीर ट्रस्ट, नागपूर १११ रु सेठ कल्लुमलजी पदमचंदजी मालिक फर्म सेठ नंदलालजी प्रेमचंदजी परवार नागपुर,

#### ।। प्रकाशक का आभार प्रदर्शन ।। 🕆

में ब्रम्हचारी उल्फतराय जैन रोहतक (हरियाणा) निवासी श्री १००८ महावीर भगवान के चरण कमलों को नमस्कार करके उनसे बार-बार प्रार्थना करता हूं। जिस तरह इस ग्रंथ के प्रकाशन और निर्माण में सहयोग देकर पुण्य उपार्जन करने का मुझे शुभ अवसर प्राप्त हुआ हैं, इसी तरह मेरी अंतिम समाधि भी आत्म रस पूर्वक सम्पन्न हो। मै ब्रम्हचारी नत्थूलालजी जैन बारा सिवनी (मध्यप्रदेश) निवासी का आभार प्रदर्शन करता हूं जिनके निमित्त और सहयोग से मुझें कारंजा जिल्हा अकीला (महाराष्ट्र प्रांत) में परम तपस्वी आभीक्षण ज्ञानोपयोगी ज्ञान सूर्य १०८ श्री आदिसागरजी महाराज जैन मुनि (जिन की जन्म भूमि शेडवाल जिला वेलगांव मैसूर प्रांत है) के दर्शन और चरण स्पर्श करनेका पुण्य अवसर प्राप्त हुओ। में उपरोक्त मुनिमहाराज का भी परम कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस ग्रंथ का निर्माण करते हुए मुझे भी कुछ सहयोग देने का अवसर प्रदान किया और मुझे प्रकाशन करने की स्वीकारता प्रदान की । समाज सेवी ओर भावक वक्ता और लेखक आदरणीय डाक्टर हेमचन्दजी कारंजा जिल अकोला (महाराष्ट्र) निवासी का भी आभार प्रदर्शन करता हूं जिन्होंने मुझे समय समय पर इस ग्रंथ के प्रकाशन में सहयोग दिया और अंत में इस ग्रंथ की पस्तावना लिखने की भी कृपा की। आदरणीय कारंजा जैन समाज काभी आभार प्रदर्शन करता हूं । जो समय समय पर मुझे प्रोत्साहन देते रहे। तथा आदरणियश्री महावीर ब्रम्हचर्य आश्रम। कारजा के प्राण बाल ब्रम्हचारी परमदानी भीयत पं माणिकचंदजी टाटियाजी का भी आभार प्रदर्शन करता हूं। जिन्होने इस ग्रंथ की

प्रस्तावना लिखनेकी कृपा की है।

ग्रहस्थाश्रम के मेरे सुपुत्र प्रेमचंद (पी, सी.) जैन, एम. ए. विमान ऑफसर कलकत्ता, श्रीपाल जैन
व्यापारी बंबई, डाक्टर शांतिस्वरूप (एस. एस.) जैन बंबई, पिताम्बर कुमार (पी. के.) जैन (टाइम्स
ऑफ इंन्डीया की पूना बाँच के आफीसर,) सुपुत्री जयमाला देवी जो मेरठ नगर के आदरणीय
श्री. इंद्रकुमारजी जैन एम. ए. की अर्घागनि बनी, तथा श्री इंद्रकुमारजी जैन एम. ए. तथा उनके
पूज्य समाज सेवी पिता सेठ सुकु नालचंदजी का भी आभार प्रदर्शन करता हूं जिन्होंने इस ग्रंथ के
प्रकाशन में मुझे असीम प्रोत्साहन दिया है और बहुत भारी परिश्रम किया है।

चिरंजीव हरनामसिंह जैन गोहाना ने (जिला रोहतक हरियाना प्रांत) निवासी जो (उपरोक्त मेरे सुपुत्र प्रेमचन्दजी के आदरणीय मामाजी हैं) अपना सब काम छोडकर ६ महीने मेरे साथ रहकर अपूर्व सेवा की और प्रकाशन में, सहयोग दिया।
परवार दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट के प्रधान श्रीयुत सिंघई मूलचन्दजी जैन नागपुर तथा आदरणीय

परवार दिगबर जन मादर ट्रस्ट के प्रधान श्रायुत सिवंड मूलवन्दजा जन नागपुर तथा अदिर्णाय पं. ताराचंदजी शास्त्री, न्यायतीर्थ मुख्याध्यापक दि जैन महावीर पाठशाला नागपुर और श्रीयुत मानिकचन्दजी मोतीलालजी जैन कासलीवाल नागपुर का भी आभार प्रदर्शन करता हूँ जो मुझे हर समय इस काम में प्रोत्साहन देते रहे और आवश्यकता पडने पर भारी प्रकाशन कार्य में परिश्रम भी करते रहे।
मैं उन आदरणीय सज्जनों का भी परम कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मेरे किसी संकेत के बिना अपनी ज्ञान

मै उन आदरणीय सज्जनों का भी परम कृतज्ञ हूं जिन्होंने मर किसी सकत के बिना अपना ज्ञान भिवत के कारण इस ग्रंथ के प्रकाशन में कुछ द्रव्य भेंट किया जिनके नाम की सूची इस ग्रंथ में अलग छापी गई है।

(०) में आदरणीय पं ताराचंदजी शास्त्री न्यायतीर्थ का पुनः आभार प्रदर्शन करता हूं। जिन्होने इस ग्रंथके ७९३ से ८४० पन्नों तक तथा प्रारंभिक पन्नोंका प्रूफ संशोधन बहुत परिश्रम करके ग्रंथ की छपाई की त्रुटियों को दूर करने की बड़ी कृपा की तथा मेरे बहुत आग्रह करनेपर कमें सिद्धान्तपर एक अपूर्व लेख लिखने की भी कृपा दृष्टि की तथा जो पुस्तकें उनके मार्फत बिक्री होंगी वह मुल्य

११) सि. मूलचंदजीने भी म के करकमलोमेंभी अप भारी प्रकाशन कार्यके	ध्यप्रान्त, राजस्थान तथ गेण करनेका भार सहन् संपादन करनेमे भी जब	वह उन्होंने सहर्ष स्वीकार ा विदर्भ क्षेत्रके मंदिरों तथ ा करनेका आस्वासन देक ा मेरा उत्साह गिरते देखा त	ा १०८ पूज्य श्री मुनिराजो र मुझे कृतार्थं किया। इस तब भी मेरे उत्साह को नही
गरन दिया। निरंतर	मुझ प्रात्साहित करते ।	रहे । इन दोनों सज्जनोंकी : स्वासमोंकाभी एकः अभ्यान	प्ररणासेही यह भारी काम उन्होंत सुरक्ष हैं।
तहण एप सम्पन्न हा र	त्रिया हा म इन दाना स	ाहाशयोंकाभी पुनः आभारः	•••
: -	- विषय-सूची -		समाज सेवक <b>गरी उल्फतराय जैन</b> इ, रोहतक (हरियाणा)
विषय	पुस्तक का पन्ना नं.	विषय	पुस्तक का पन्ना नं.
<b>मंग</b> लाचरण	, १)	औदयिक भाव २१	२३)
३४ स्थान नाम के उत्तर भेव		पारणामिक भाव ३	२३)
३४ स्थान उत्तर भेद की ना		अवगाहना	ं २३)
गुण स्थान नाम व स्वरुप	<b>१०)</b>	सामान्यजीव नामावली	२४)
१४ जीवसमास	<b>१२</b> )	मिथ्यात्व गुण स्थान	२५)
६ पर्याप्ति	( 8 8	सासादन ", "	<b>₹</b> ₹)
१० प्राण	१३)	मिश्र ,, ,,	३९)
४ संज्ञा	<i>१३</i> )	अन्नत ,, ,,	४३)
१४ मार्गणा	(88)	देश वृत ,, ,,	५१)
४ गति मार्गणा	१४)	प्रमत्तः ,, ,,	५५)
५ इंद्री मार्गणा	१४)	अप्रमत्त ", "	€0 <b>)</b>
६ काय ,,	<b>१४)</b> ृ	अपूर्व करण ,, ,	६३) . <b>६</b> ६)
१५ योग "	१४) -	अनिवृति करण गुण स्थान सुक्ष्म सांपराय ,, ,,	
३ वेंद "	. १६)		10 F )
२५ कषाय मार्गणा	, १६)	भ्योग गोज	(oq)
८ ज्ञान "	१६)	सयोग केवली ,, , ,,	(Se
७ संयम ,,	१७ <b>)</b>	अयोगकेवली ,, ,,	८१)
४ दर्शन " ६ लेक्या मार्गणा	80)	अतीत ""(	सिद्ध भगवान) ८३)
	१७) १८)	नरक गति	<b>(4)</b>
२ भव्य "	१८) °८)	त्रिर्यच " "	९०)
६ सम्यक्त्व ,, २ संज्ञी ,, .	१८) १९)	मनुष्य ,, ,,	११३)
·	१९)	देव ""	१५५)
२ आहारक   ,, १२ उपयोग	१९ <b>)</b>	गतिरहित (सिद्धगति)	१७२)
१६ ध्यान	₹∘)	एक इंद्रीय	१७४)
५७ आश्रव	<b>રે</b> શ)્	दो ,,	१८०)
५३ भाव	<b>२२)</b>	तीन ,,	१८५)
२ औपशमिक भाव	રેર)	चार "	१९० <b>)</b>
९ क्षायक भाव	२२)	असंज्ञी पंचेंद्री	१९५ <b>)</b>
१८ क्षयोपसमिक भाव	<b>२२)</b>	संज्ञी पंचेंद्री	२००)
Many the state of	•		

इंद्रिय रहित (सिद्ध भगवान) २०५)	सामायिक छेदो पस्थापना संयम ४७४)
पृथ्वी कायक २११)	परिहार विशुद्धि ", ४७९)
जल ं ,,	सुक्ष्म सापराय " ४८३)
अग्नि ,, २२४)	यथारव्यात ,, ४८६)
वायो ,,	संयम। संयम संयम रहित (सिद्ध गति) ४९८)
्वनस्पति ,, विशेषात्र स्थापित स्थापित स्थापित ।	चक्षु दर्शन ४९२)
त्रसार्थ ,, अध्यक्षी अध्यक्षि रेश	अचेक्षु ,, ५०८)
अकायक (सिद्ध जीवं) कि विकास कि कि विवेश	. अवधि, ५१४)
	केवल ,,
सत्य उभय मनोयोग	
अंसत्य , ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	कृष्ण-नील लेरपा ५२८)
सत्य बचन योग	कापोत " ५३९)
असत्य उभय बचन योगं २६६)	पोत् ,, ५५०)
अनुभय ,, ,, २५००)	पद्म ,, ५६०)
अौदारिक स्थान काययोग स्थान २७५)	चावल ५६३)
भोदारिक मिश्र विक्रियक १९६५ विक्रियक	अलेखा ५७३)
	भव्य ५७५)
	अभव्य ५८८)
आहारक काययोग कि विकास २९९) आहारक मिश्र	भव्य अभव्य रहित (सिद्धगति) ५९७)
more than the second se	मिथ्यात्व ५९९)
कार्माण " ३०३) अयोग ३१२)	सासादन ६०२)
जवान २(२)	मिश्र ६११)
पुरुष विदे अस्ति । १९५० । ३१४)	प्रथमीपराम सम्यकत्व ६१६)
स्त्री	द्वितियोपशम " ६२४)
नपुंसक	क्षायोपशम ,, ६३०)
अपगत अभूति अध्यादेश करूवा का अध्यादि ३४५)	क्षायिक ५, " ६४१)
अनंतान्वंघी कषाय ३५२)	संज्ञी ६ ६५३)
अप्रत्योख्यानी १ विश्व हरे )	असंज्ञी ६६३)
प्रत्याख्यानी ,,	नासंज्ञी नाअसंज्ञी ६६८)
संज्वलन क्रोध मान माया कषाय 🧖 💛 ३८५)	
संज्वल्न लोभ	बाहारक ६७२)
हास्यादिक नी कषाय क्षा कर्म हा कि ४०७)	वताहारक ६८४)
अकृषाय भूगा, स्थान के प्रकार ४१४)	१०८ आचार्यं शांतिसागरजी महाराज ६९४)
	की समाधि समय
	३४ स्थान दोहे : १००० - १०० ६९७)
	र्श्वण्डक ७०२)
	मुलोत्तरकर्म प्रकृतियाँ अवस्था संख्या ७०६)
	मुलोत्तरकर्म प्रकृतियां विशेष विवरण ७०९)
	- मुलोत्तरकमें प्रकृतियां स्थिति बंघ ७१४)
	उदय व्युच्छति से पहले बंघ व्युच्छति ७१६)
असंयम ४५९)	उदय व्युच्छति के बाद वंघ व्युच्छति ७१७)
संयमा संयम कि कि कि कि कि कि है है हैं।	उदय बंघ विच्छति एक साथ 🚟 🙃 ७१७)

अपने ही उदय में बंघ प्रकृतियाँ दुसरी प्रकृतियों के उदय में बंघ	७१८)	आहारक और तिर्थंकार एक स्थान में एव के सत्ता नही	ह जीव <sup>∭ ¶</sup> ७४२) <sup>∭ ¶</sup>
प्रकृतियां अपने तथा पर के उदय मे बंध	७१८) -	गुण स्थान अनुदय उदय व्युच्छति प्रकृतियां	व्याप
प्रकृतियां	७१८)	उदीरणा व्याख्या	७४३) वस
निरन्तर बंध प्रकृतियां	७१८)	गुण स्थान अनुदय उदय व्युच्छति	७४४)
शांतर बंध "	७१८)	उदय उदीरणा विशेषताएं	७४५) नेपनी
शांत्तर निरन्तर बंघ "	७१८)	गुण स्थान अनुउदीरणा व्युच्छति	ল্মার
उद्देलन संक्रमण प्रकृतियां	७१९)	प्रकृतियां	७४६) 📶
विध्यात संक्रमण प्रकृतियां	७१९)	कर्मीदय कर्म स्वामीपना	होत्रे ( ७४७
अध:प्रवृत्त संक्रमण	७१९) -	<del></del>	
गुण संक्रमण ७५	७२०)	सत्व कर्म प्रकृतिया	७४७) हिं।
सर्वं संक्रमण ५२	७२०) .	गुण स्थान असत्व सत्व व्युच्छति	_ <b>७४९)</b> <sup>१ ते</sup>
त्रिर्यंच एकादश	७२०)	उपशम श्रेणी स्वरुप	७५१)
कर्म कांड की शक्तियोंकी कुछ ज्ञातव्य बातें	ं ७२१)	५ प्रकार संक्रमण	७५१) 🖟
६ सहननपर जागति	७२१)	५ प्रकार संक्रमण प्रकृति कोष्टक	७५३) ੂ
६ सहनन पर सात नरक जागति	७२२)	५ संक्रमण प्रकृतियां नाम	७५४) 🖟
५ ज्ञानावरणी बंघ स्वरुप	७२२)	स्थिति अनुभाग प्रदेश वंध संक्रसण	ग
o ਵਨੀੜਾਰਗੀ।	७२२)	गुण स्थान पर	७५६) 🚆
੭ ਕੇਟਕੀਸ	७२३)	५ संक्रमण भागाहार	૭ <b>૬७</b> ) 🗥
२८ मोहनोयकर्म "	७२३)	१० करण	७५७)
४ आयु कर्म ,,	७२५)		
९३ नामकर्म "	७२५) -	स्वमुखों दई परमुखोदयी प्रकृतिया	७५८)
२ गोत्रकर्म "	७२९)	अपकर्षंण गुण स्थान	७५८)
५ अंतरायकर्म "	७२९) -	मूल प्रकृतियां वंध उदय उदीरणा सत्व	
( ४ क्षाय कार्य वासना	७२९)	गुण स्थान	७६०)
१ कषाय वासना काल	७३०)	उदय स्थान ३	७६१)
६ ४ प्रकार मरण भेद	७३०)	उदय स्थान ७	७६१)
्र तीर्थंकर प्रकृति बंध नियम	७३०)	सत्व स्थान ३	७६१)
र्याच्याच स्वतीय बंध गाम स्थान	७३१) -	गुण स्थान पर उपयोग स्थान	७६२)
६ आहारक शरार बच गुण स्थान २ व्युच्छिति व्याख्या २ १४ गुण स्थान बंध व्युच्छिति १४ गुण स्थान अबंध बंध व्युच्छिति ११ गुण स्थान अबंध बंध प्रकृतियों	७३१)	गुण स्थान पर संयम स्थान	<b>७५२)</b> ७६३)
रे १४ गूण स्थान बंध व्युच्छति	'७३२)	गुण स्थान पर छेरया स्थान	७६३)
रे १४ गुण स्थान अबंध बंध व्युच्छति	(४६७)	नरकों में भाव लेश्या स्थान	, ७६३)
र्ं १४ गुण स्थान अबंध बंध प्रकृतियों	-		<del></del>
. भः गाम	७३५)	नारकी मरकर कहां कहां जन्म लेता है	(४३७)
५७ <sub>५३</sub> सादी अनादि ध्रुव अध्रुव बंध संख्या	७३५)	त्रियंच ,, ,, ,, ,,	७६४) ७६४)
२ : अबाधा काल स्वरुप	७३७)	मनुष्य ,, ,, ,, ,,	७६५ <b>)</b>
	<del></del>	देव ,, ,, ,, ,,	७६५)
है एक जीव के एक समय में प्रकृति बंध संख्या		कौनसा मिथ्या दृष्टि कौनसा देव	७६५)
८ आयुकर्म बंघ स्थान	9 60 )	बनता हैं ?	
कर्म बंघ स्थान	७४०)	भाव लिगी मरकर कहाँ जन्म ले सकता है	७६५)

•	
्ण स्थान पर सम्यक्तव प्राप्ति ७६६)  पण स्थान पर चढने और उतरने का कम ७६६)  पण स्थान का मरकर कहां कहां जन्म ले  अकता है। ७६७)  किन अवस्थाओं मे मरण नहीं होता है ७६८)	मूल भाव ५ उत्तर भाव ५३ नाम ७७८) मूल भाव ५ उत्तर भाव ५३ नाम ७७९) भाव भंग ७७९) गुण स्थानों पर ५ मूलभाव ७८०) गुन स्थानों पर ५३ भाव कोष्टक ७८१)
नाम कर्म उदय के ५ नियत स्थान तथा ७६८)	३६३ प्रकार मिथ्या टुब्टियों के भंग ७८३)
समुद्धात केवली व्याख्या ७६९)	- ३ कर्म स्वरूप ७८५)
उद्देलना प्रकृतियां १३ ७७०)	कर्म स्थिति रचना ७८५)
संयम विरादना कितनी बार ७७०)	शब्द कोष (अकारादि रुप) ७८६)
तीर्थंकर आहारक सत्ता एक जीव के एक साथ नहीं ७७१) आयु बंघ उदय सत्ता ७७१) आयु बंघ ८ अपकर्षण ७७१)	श्रीयुत पंडित ताराचंदजो शास्त्री न्यायतीर्थ तथा सिगई मूलचन्दर्जा अध्यक्ष परवार मदीर ट्रस्ट का नागपूर इस ग्रन्थ पर शुभ संदेश ७९४)
आयु कर्म भंग ७७२)	श्रीयुत सुरजमलजी प्रेम आगरा का
आश्रव मूल वेद ४	शुभ संदेश ७९४)
गुण स्थानों पर मूल अश्विव भंग ७७३)	पुस्तक प्राप्त करने के १३ केन्द्रों
गुँण स्थानों पर ५७ आश्रव नाम है । ७७४) ८ कर्मों पर आश्रव भावों की व्याख्या । ७७६)	की नामावली सूची ७९५) शुद्धि पत्रक ७९६)
Same as a second and a second of	

प्रकाशक की तम्र प्रार्थना:— माननीय विद्वानों से विनय पूर्वक प्रार्थना करता हूं कि मैं इस ग्रन्थ का प्रकाशक ब्रह्मचारी उल्फतराय मंदज्ञानी हूं कर्म सिद्धांत बहुत गूढ विषय हैं। लेखक पुज्य श्री १०८ आदिसागरजी मूनि महाराज प्रकाशन स्थान मेरठ से हजारों मील दूर आंध्रप्रदेश में विद्यमान थे इस कारण से भूलतो बहुत आई है परन्तु पं ताराचंदजी शास्त्री न्यायतीर्थ नागपूर तथा श्रीयुत सि. मूलचंदजी अध्यक्ष परवार मंदिर ट्रस्ट नागपूर ने बहुत भारी परिश्रम करके विषय का संशोधन तो बहुत कुछ करिदया है अबभी पाठक सज्जनों की दृष्टि में जो भूल और दिखाई दे तो कृपा करके भूल को शुद्ध करलेना। मुझको क्षमा करना भूल सुधार की सूचना लेखक और प्रकाशक को देने के कष्ट सहन करने की कृपा दृष्टि करना।

ः आपका सेवक -ब्र. उल्फलराय रोहतक (हरियाना)

# लेखक ब्रह्मचारी उल्कतराय रोहतक [हरियाना]

हे भव्य जीवो नर से नारायण बनने के पांच मार्ग इस प्रकार है:-

१) सत्वेष मंत्री-जीवो जीने दो। जब जन प्राणियों को धन भूमि देश राज स्त्री वैभव बढाने की इच्छायें प्रवल होती जाती है। मानवता नष्ट होती चली जाती है। दानवता भयंकर रुप वना देते है। आज सारे विश्व में नर संहार चल रहा है भयंकर राज युद्ध, राज विद्रोह, चोरी डकेंती रेलों, वाहनों, के उपद्रव हडताल आग लगाना गृह युद्ध भाषा साप्रदायकता पद लोलुपता स्वाध्याना के नाम पर मानवता को भूल बैठा है। यह सुख शांति देश उन्नति आत्म कल्याण के विरुद्ध जा रहा है। प्राणी मात्र पर मित्रता हो एक मात्र शांति मार्ग है। पशु पक्षी जल यल नम प्राणियों में भी तुम्हारी जैसी आत्मा है। सब ही सुख शांति से जीना चाहते है।

- २) गुणषु प्रमोदं: जो प्राणी सेवाभावी दानी ज्ञानी माता पिता भाई बहिन घर मुखिया समाज नेता राज अधिकारियों का सन्मान करता है। वो ही अपनी आत्मा को उन्नत बना सकता है। मुक्ति पा सकता है।
- ३) विलब्देषु जीवेषु कृपा परत्वः जो प्राणी दुखी दिरद्रों अंघों, लुले लंगडे अनाथ गरीव भाईयों को अपनी भुजा अपना हृदय समझकर उनकी अपने तन, मन, घन से रक्षा करता है। वो ही संसार स्वर्ग मोक्ष सुख पा सकता है।
- ४) मध्यस्थभावं विपरीत वृत्तौ सदा ममात्मा बुध धातु देवं: जो दुष्ट प्राणी हमारी सेवाओं का बदला दानवता में देते है। हमारा धन प्राण स्त्री संपदा छीनना चाहते है, नष्ट करना चाहते हैं तो तुम अपनी रक्षा तो करों। परन्तु तुम भी सामने जैसा दुष्ट बनकर प्राण हरण, धर्म स्थान नष्ट करना, आग लगाना जैसे पाप कार्य मत करो। आम के वृक्ष से ज्ञान तो प्राप्त करो। पत्थर मारने वाले को भी फल देता है।
- ५) आत्मरस पान आत्म ध्यान: स्त्री पुत्र धन संपदा राज वैभव मित्र राज को संसार में फसाने वाला समझकर सब का त्याग करके बाण प्रस्थाश्रम ग्रहण कर त्यागी बन निरजन बन पर्वत चोटी पर्वत गुफा, वृक्षों की कोटर में आत्म ध्यान आत्म समाधि लगाकर आत्म स्वरूप में एकाग्र हो जाता है। वोही आत्मा नर से नारायण बनकर सिद्ध लोक में जाकर आत्मा का अनंत दर्शन, ज्ञान, सुख, वीर्य का सुख भोगता है। यही अंतिम महावीर संदेश है। शुभं ता १-६-१९६८

## -: प्रकाशक के उद्गार :-भगवान से नम्र प्रार्थना [भजन नं. ॥ १॥]

कैसे पहुंचु तेरे द्वार ।। टेक ।।

भवसागर में भटक रहा हूं-छाय रहा अंधियार।
नैया डूव रही है-स्वामी दिखता नहीं किनार।
तुम ही छगा दो पार।। १।।

पर को अपना जान रहा हूं-करता उन्हीं से प्यार। निज रस की कछ खबर नहीं है-डूब रहा मझ धार। बेडा करो तुम पार।। २।।

नरभव किंठन मिला-अब सेवक कर आतम उद्धार। मोह गहल में चूका मूरख-रुलना पडे संसार। कर आतम उद्धार।। ३।।

## आत्म दुर्बलता पर पश्चात्ताप [ भजन नं. ॥ २ ॥

भव दुख कसे कटे हों जिनेश्वर मो को वडा अंदेशा है।। टेक ।। नहीं ज्ञान काया बल इंद्री-दान देन नहीं पैसा है। भव सुधरन को तप बहुत तपये-यह तन तो अब ऐसा है।।। १।।

निश दिन आरत ध्यान रहत है-धर्म ना जानु कैसा है। विषय कषाय चाह उर मेरे लोम चलम जम जैसा है।॥२॥

मों में लक्षण कीन तिरण को मिलन तेल पट जैसा है। आप ही तारो तो पार उतारों-मो मन में तो अभिलाषा है। ॥ ३ ॥

भिति रस की महिमा (भजन नं. 11 ३ 11)
भजन से रख ध्यान प्राणी भजन से रख ध्यान 11 टेक 11
भजन से षट खंड नव निधि-होत भरत समान 1
तिरे भव सागर से भाई-पाप को अवसान 11 १ 11
नबल शुकर सिंघ मरकट-कर भजन श्रद्धान 1
भये वृषम सेन आदि जगत गुरू पहुंच गये निर्वाण 11 २ 11
कहत नयनानंद जगमें-भजन सम न निधान 1
भये अरहंत सिद्ध आचार्य-पहुंच गये निर्वाण 11 ३ 11

## मानवता का पथ प्रदर्शन (भजन नं. ॥ ४ ॥)

सब करनी दया बिन थोथीरे ॥ टेक ॥
चंद्र बिना जैसे रजनी निरफल । नीर बिना जैसे सरोवर निरफल ।
आब बिना जैसे मोतीरे ॥ १॥ ज्ञान बिना जिया ज्योति रे ॥ २॥
छाया हीन तरोपर की छबि
नयाननंद नहीं होती रे ॥ ३॥

कर्म सिद्धांत का प्रकाश (भजन नं. ॥ ५॥)
सुख दुख दाता कोई नहीं जीव को पाप पुण्य निज कारण वीरा ॥ टेक ॥
सीताजी को अन्मि कुंड में किया सुरोंने निरमलनीरा ।
जब हर लीनी थी रावण ने तब क्यों ना आये कोई सुरधीरा ॥ १॥
बारीषेन पे खडग चलायो फूल माल कीनी सुरधीरा ।
तब क्यों ना आये तीन दिवस लग गिदडी भखें सुकु माल शरीरा ॥ २॥
पांडव मुनि जारे दुश्मन ने पाप निकांक्षित फल गंभीरा ।
मानतुंग अडतालीस ता ले तोडके छेदी बंध जंजीरा ॥ ३॥
ऐसे ही सुख-दुख हीत जीव को पाप पुण्य जब चलत समीरा ।
मंगल हुष विषादन करना थिर रखना चहिये निज हीयरा ॥ ४॥

ध्यानी का आत्म रस पान (भजन नं. ॥ ६ ॥)
देखो कैसे योगी ध्यान लगावे ध्यान लगावे आपेको पावे ॥ टेक ॥
ज्ञान सुधा रस जल भरलावे चुल्हा शील बनावे ।
करम काट को चुग चुग बाले ध्यान अग्नि प्रजलावे ॥ १ ॥
अनुभव भाजन निजगुण तंदुल-समता क्षीर मिलावे ।
सोहं मिष्ट निशांकित व्यंजन-समिकत छोंक लगावे ॥ २ ॥
स्यादवाद सप्तमंग मसाले गिनती पारना पावे ।
निश्चय नय का चमचा फेरे घृत भावना भावे ॥ ३ ॥
आप ही पकावे आप ही खावे-खावत नाही अंघावे ।
तदिष मुक्ति पद पंकज सेवे नयनानंद सिरनावे ॥ ४ ॥

## लेखक-माणिकचंद मोतीलाल जैन कासलीवाल

## इतवारी नागपुर २

# -: कुछ हृदय के उद्गार :-

- १) मुझे इस चौतीस स्थान दर्शन ग्रन्थ के प्रकाशक पुज्य श्री ब्रह्मचारी उल्फतरायजी महाराज रोहतक (हरियाना) की सेवा में रहने का चिरकाल से शुभ अवसर प्राप्त होता रहा है। आपकी मेरे तथा मेरे परिवार के ऊपर निरंतर वडा गांढ प्रेम और कृपा दृष्टि रही हैं। जब २ मुझे कोई रोग आदि चिताओं का अवसर अता है तो मैं आपकी छाया में जाकर शांति और धैर्य और आत्म रस के दो शब्द पाकर सब चितायें भूल जाता हूं।
- शापमें ऊंची विचार धारायें तथा ज्ञान और क्षमा वात्सत्य प्रेम और सहन ज्ञीलता अपूर्व है। आपका त्याग वहुत ही अपूर्व है। आप एक संपित ज्ञाली घराने के व्यक्ति है। आपके चार पुत्र और एक पुत्री बहुत ऊंची र पदवी धारी है। आपके वच्चों की माताजी भी अभी मौजूद है। आपने चिरकाल तक बंबई जैसे विज्ञाल नगर में व्यापारी क्षेत्र में और भ्रामिक समाज में वहुत प्रतिष्ठा प्राप्त की है। संवपित श्रीमान सेठ पुनमचंद घासीलालजी वंबई के सम्मेद शिखर संघ में साथ रहकर चारित्र चक्रवर्ती साम्राज्य नायक योगेंन्द्र चूडामणि आचार्य श्री १०८ शांति सागरजी मुनि महाराज की बडी सेवा करके अखिल भारतपर्व में बहुत प्रख्यातता प्राप्त की है तथा पुण्य लाभ लिया है।
- ३) परन्तु अव २० वर्ष से सव विभूति का त्याग करके जीवों को धर्मोपदेश दे रहे हैं। तथा आत्म कल्याण कर रहे है। आपकी समझाने की शैली इतनी तारिक और सरल है कि सामान्य बुद्धि वाले, वालवृद्ध, जैन, अज़ैन, सभी की आत्माओं का कल्याण होता है। ऐसी महान आत्माओं की सेवा करने का मुझे भी अवसर प्राप्त होता रहता है।
- ४) नागपूर समाज के ९ मंदिरों की सभी जनता को धर्म लाभ होता रहता है। तथा नागपूर की सर्वं जनता आएके प्रति बहुत भिवत और प्रेम रखती है। जब भी किसी मंदिर की समाज आपसे शास्त्र प्रवचन या व्याख्यान के लिये प्रार्थना करती हैं तो आप तुरंत ही अपनी स्वोकारता देकर प्रार्थी की भावनाओं का सन्मान करते हैं।
- ५) आपने आभिक्षण ज्ञानोपयोगी तपोमूर्ति श्री १०८ आदिसागरजी मुनि महाराज शेडवाल इस चौतीस स्थान दर्शन ग्रन्थ के संग्रहकर्ताजी को आठ वर्ष से निरंतर सहायक संग्रहकर्ता के रुप में तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन रुप में अपना तन, मन, धन से पूरा २ सहयोग दिया हैं। सर्व समाज आपके इस ज्ञान, रस के लिये अत्यंत आभारी है।
- ६) मैं १००८ श्री जिनेंद्रदेव भगवान से नम्र प्रार्थना करता हूं कि उपरोक्त पुज्य श्री ब्रह्मचारीजी के सुने हुये उपदेश अंतिम समय तक मेरे हृदय में प्रकाशमान रहे तथा मेरी आत्मा का कल्याण हो। शुभं ता. १-६-१९६८ तिथी जेठ सुदी ५ सं. २०२५

· 美国的基础的企业。

an a fired than  $\Omega$ 

the first the state of the stat

समाज सेवक माणिकचंद कासलीवाल नागपूर-२ 🖈 नमः सिद्धेभ्यः 🛧

## \* चौंतीस स्थान दर्शन \*

## -मंगलाचरण-

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो, आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सन्वसाहूणं ।। १ ।। चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।। २ ।। मङ्गलं भगवान्वीरो, मङ्गलं गौतमो गणी । मङ्गलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ।। ३ ।। सर्व मङ्गलमाङ्गलयं, सर्व कल्याण कारकम् । प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।। ४ ।।

#### चौंतीस स्थानोंके नाम--गाथा

गुण-जीवा-पज्जत्ती पाणा सण्णा तहेव विण्णेया ।
गइइंदियेच काये जोएवेए कसायणाणे य ।। १ ।।
संजम-दंसण-लेस्सा-भविया-सम्मत्त-सण्णि-आहारे ।
उवओगो झाणाणिय आसव भावा तहा मुणेयव्वा ।। २ ।।
ओगाहणा य बंधोदयपयडीओ य सत्तपयडी य ।
संखा खेतं फासण संजुता ते हवंति तीसंतु ।। ३ ।।
कालो य अंतरं पुण जाइय कुलकोडिसंजुया सब्बे ।
चउतीसं ठाणाणिहु हवंति जइया कमेणते गहिया ।। ४ ।।

# चौंतीस स्थानों के नाम, और उत्तर भेदों की तथा कोष्टकों की संख्या (क्रमांक)

ऋमांक	स्थान	उत्तर भेद	कोष्टक क्रमांक	ऋमांक	स्थान	उत्तर भेद	कोष्टक ऋमांक
१.	गुणस्थान	<b>१</b> ४ं	१ से १५	१९.	आहारक	२ .	९४ से ९५
٦.	जीवसमास	१४	"	२०.	उपयोग	१२	"
₹.	पर्याप्ति	६	"	२१.	ध्यान	१६	"
٧.	प्राण	१०	"	२२.	आस्रव	५७	"
ч.	संज्ञा	४		२३.	भाव	५३	"
ξ.	गति	8+6	१६ से २०	२४.	अवगाहना	11	"
७.	इन्द्रिय जा	ते ५+१	२१ से २७	२५.	वंधप्रकृतियां	१२०	"
८.	काय ़	६+१	२८ से ३४	२६.	उदय प्रकृति	यां १२२	,,
ς.	योग	१५+१	३५ से ४६	२७.	सत्वप्रकृतियां	- , ,	,,
१०.	वेद '	<b>3+</b> 8	४७ से ५०	२८.	संख्या	,,	
११.	कषाय	२५+१	५१ से ५७	२९.	क्षेत्र		"
१२.	ज्ञान (	८ (५+३)	५८ से ६३			11	<b>;;</b>
१३.	संयम	9+0	६४ से ७०	₹0.	स्पर्शन	"	<b>;</b> ;
१४.	दर्शन	४	७१ से ७४	₹१.	काल	11	<b>7</b> ;
१५.	लेश्या	६+१	७५ से ८०	३२.	अन्तर	"	23
१६.	भव्यत्व	२+१	८१-८२-८३	₹₹.	जाति (योनि	ा) ८४ ला	ख ,,
१७.	सम्यक्तव ६	(3+8+8+8)	८४ से ९०	३४.	कुल	. १९९॥.	Į)
१८.	संज्ञी	२+१	९१-९२-९३			लाख कोति	टे कुल जानना.

## चौंतीस स्थानों के उत्तर मेदों की नामावली

		• •
(१) गुणस्थान १४	(३) पर्याप्ति ६	(७) इन्द्रिय जाति
१ मिथ्यात्व गुणस्थान	१ आहार पर्याप्ति	१ एकेन्द्रिय जाति
२ सासादन ,,	२ शरीर ,,	२ द्विन्द्रिय जाति
३ मिश्र ,,	३ इन्द्रिय ,,	३ त्रिन्द्रिय जाति
४ असंयत (अविरत)	४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति	४ चतुरिन्द्रिय जाति
५ देशसंयत (संयतासंयत)	५ भाषा पर्याप्ति	५ पंचेन्द्रिय जाति
६ प्रमत्त	६ मन पर्याप्ति	(८) काय ६
७ अप्रमत्त	(४) प्राण १०	१ पृथ्वी काय
८ अपूर्वकरण	१ आयु प्राण	२ अप् (जल) काय
९ अनिवृत्तिकरण	२ कायबल प्राण	३ तेज (अग्नि) काय
१० सूक्ष्मसांपराय	इन्द्रिय श्राण-५	४ वायु काय
११ उपशांतमोह	•	५ वनस्पति काय
१२ क्षीण मोह (कषाय)	३ (१) स्पर्शनेन्द्रिय प्राण	६ त्रस काय
१३ सयोग केवली	४ (२) रसनेन्द्रिय ,,	(९) योग १५
१४ अयोग केवली	५ (३) घ्राणेन्द्रिय ,,	
(२) जीवसमास १४	६ (४) चक्षुरिन्द्रिय ,,	मनोयोग-४
१ एकेन्द्रिय वादर पर्याप्त	७ (५) कर्णेन्द्रिय ,,	१ सत्य मनोयोग
२ ,, ,, अपर्याप्त	८	२ असत्य मनोयोग
३ ,, सूक्ष्म पर्याप्त	०० मनोतल	३ उभय मनोयोग
४ ,, सूक्ष्म अपर्याप्त		४ अनुभय मनोयोग
५ द्विन्द्रिय पर्याप्त	(५) संज्ञा ४	वचन योग-४
६ द्विन्द्रिय अपर्याप्त	१ आहार संज्ञा	५ सत्य वचन योग
७ त्रिन्द्रिय पर्याप्त	२ भय संज्ञा	६ असत्य वचन योग
८ " अपर्याप्त	• •	७ उभय वचन योग
९ चतुरिन्द्रिय पर्याप्त	४ परिग्रह संज्ञा	
१० ,, अपर्याप्त	(६) गति ४	काय योग-७
११ असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ नरक गति	९ औदारिक काय योग
१२ " " अपर्याप्त	२ तियंच गति	१० औ. मिश्रकाय योग
	३ मनुष्य गति	११ वैकियक काययोग
१४ ,, ,, अपर्याप्त	४ देव गति 🚟 📆 🔸	१२ वै. मिश्र काय योग

१३ आहारक काय योग १४ आ. मिश्र काय योग १५ कामीण काय योग

#### (१०) वेद (लिंग) ३

१ नपुंसक वेद २ स्त्री वेद

#### ३ पुरूष वेद (११) कषाय २५

#### अनंतानुबंधी-४

१ कोध कषाय

२ मान

३ माया "

४ लोभ

#### अप्रत्याख्यान-४

५ क्रोध कषाय

६ मान

७ माया ,,

८ ल्रोभ

#### प्रत्याख्यान-४

९ कोध कषाय

१० मान "

११ माया "

१२ लोभ "

#### संज्वलन-४

१३ कोध कषाय

१४ मान "

१५ माया ,,

१६ लोभ "

#### नोकषाय–९

१७ हास्य नोकषाय

१८ रति 11 १९ अरति नोकषाय

२० शोक ,, ..

२१ भय

२२ जुगुप्सा "

२३ नपुंसक वेद ,, '

२४ स्त्री वेद ,,

२५ पुरूष वेद "

## (१२) ज्ञान ८

#### कुज्ञान-३

१ कुमतिज्ञान

२ कुश्रुतज्ञान

३ कुअवधि (विभंग) ज्ञान

#### ज्ञान-५

४ मतिज्ञान

५ शृतज्ञान 🐧

६ अवधिज्ञान

७ मनः पर्ययज्ञान

८ केवल ज्ञान

#### (१३) संयम ७

१ असंयम

२ संयमासंयम

३ सामायिक संयम

४ छेदोपस्थापना

५ परिहारविशुद्धि ,,

६ सूक्ष्मसांपराय ,,

७ यथाख्यात "

#### (१४) दर्शन ४

१ अचक्षु दर्शन ।

२ चक्षु दर्शन

३ अवधि दर्शन

४ केवल दर्शन

#### ं(१५) अशुभ लेश्या–३

१ कृष्ण लेश्या

२ नील "

३ कापोत ,,

#### शुभ लेश्या-३

४ पीत लेखा

५ पद्म "

६ शुक्ल ,,

#### (१६) भव्यत्व २

१ भव्य

२ अभव्य

#### (१७) सम्यक्तव

१ मिथ्यात्व (अवस्था)

२ सासादन ( ,,

३ मिश्र

४ उपशमसम्यक्तव

५ क्षयोपशम (वेदक) स०

#### (१८) संज्ञी २

१ संज्ञी

२ असंज्ञी

#### (१९) आहारक २

१ आहारक

२ अनाहारक

## (२०) उपयोग

#### ज्ञानोपयोग-८

१ कुमति ज्ञानोपयोग

२ कुश्रुत

३ कुअवधि 🗸 "

४ मितज्ञानोपयोग ५ श्रुत ६ अवधि ,, ७ मनःपर्यय ज्ञानोपयोग ८ केवल ज्ञानोपयोग

## दर्शनोपयोग-४

९ अचक्षु दर्शनोपयोग १० चक्षु दर्शनोपयोग ११ अवधि दर्शनोपयोग १२ केवल दर्शनोपयोग

#### (२१) ध्यान १६ आर्तथ्यान-४

१ इष्टिवयोग आर्तघ्यान २ अनिष्ट संयोग आर्तघ्यान ३ पीडा चितन आर्तघ्यान ४ निदान बंघ आर्तघ्यान

## रौद्र ध्यान-४

५ हिसानंद रौद्रध्यान ६ मृषानंद ,, ७ चौर्यानंद ,, ८ परिग्रहानंद ,,

#### धर्म ध्यान-४ ९ आजाविचय धर्मध्यान

१० अपायविचय " ११ विपाक विचय " १२ संस्थानविचय "

#### ्शुक्ल ध्याग–४

१३ पृथक्त वितर्कवीचार १४ एकत्विवतर्क अवीचार १५ सूक्ष्मिकया प्रतिपाति १६ व्युपरतिक्रयानिवर्तीनि

## (२२) आस्त्रव ५७

मिथ्यात्व-५ १ एकांत मिथ्यात्व

२ विनय मिथ्यात्व ३ विपरीत मिथ्यात्व

४ संशय मिथ्यात्व

५ अज्ञान मिथ्यात्व

अविरत-१२ हिंसक के अवस्था-६

६ एकेन्द्रिय अवस्था ७ द्विन्द्रिय अवस्था

८ेत्रिन्द्रिय अवस्था ९ चतुरिन्द्रिय अवस्था

१० असंज्ञी पंचेन्द्रिय अवस्था

. ११ संज्ञी पंचेन्द्रिय अवस्था

## हिस्यके अवस्था-६

१२ पृथ्वी कायिक जीव १३ जल कायिक जीव १४ अग्नि कायिक जीव १५ वायु कायिक जीव १६ वनस्पति कायिक जीव १७ त्रस कायिक जीव कषाय-२५ पूर्वीक्त

ः द्वोग-१५ पूर्वोक्त ्ये सव ५७ आस्रव जानना

#### (२३) भाव ५३ (१) औपशमिक भाव-२

१ उपशम सम्यक्त्व

२ उपशम चारित्र

#### (२) क्षायिक भाव-९

३ क्षायिक ज्ञान ४ क्षायिक दर्शन

५ क्षायिक सम्यक्त्व ६ क्षायिक चारित्र

७ क्षायिक दान

८ क्षायिक लाभ

९ क्षायिक भोग १० क्षायिक उपभोग

११ क्षायिक वीर्य

(३) क्षायोपशमिक (मिश्र)

भाव–१८ कुज्ञान–३

१२ कुमति ज्ञान

१३ कुश्रुत ज्ञान १४ कुअवधि (विभंग) ज्ञान

#### ज्ञान-४

१५ मित ज्ञानं १६ श्रुति ज्ञान १७ अविध ज्ञान

. १८ मनःपर्यय ज्ञान

#### - दर्शन-३

१९ अचक्षु दर्शन २० चक्षु दर्शन २१ अवधि दर्शन

#### क्षयोपशमलव्यि-५

२२ क्षयोपशम दान
२३ क्षयोपशम लाभ
२४ क्षयोपशय भोग
२५ क्षयोपशम उपभोग
२६ क्षयोपशम वीर्य

२७ क्षायोपशमिक (वेदक) सं० २८ सराग चारित्र (संयम) २९ देशसंयम (संयमासंयम)

#### (४) औदयिक भाव २१ गति-४

३० नरक गति ३१ तिर्यंच गति ३२ मनुष्य गति ३३ देवगति

लिंग (वेद)-३ ३४ नपुंसक लिंग ३५ स्त्री लिंग ३६ पुरूष लिंग

कषाय-४

३७ क्रोध कषाय ३८ मान कषाय ३९ माया कषाय ४० लोभ कषाय

> लेश्या—६ अशुभ लेश्या—३

४१ कृष्ण लेश्या ४२ नील लेश्या ४३ कापोत लेश्या

#### शुभ लेश्या–३

४४ पीत लेख्या ४५ पद्म लेख्या ४६ शुक्ल लेख्या

४७-मिथ्यादर्शन (मिथ्यात्व)

४८ असंयम ४९ अज्ञान

५० असिद्धत्व

#### (५) पारिणामिक भाव-३

५१ जीवत्व भाव ५२ भव्यत्व भाव ५३ अभव्यत्व भाव

#### (२४) अवगाहना

जीवों के देहप्रमाण अवगाहना का वर्णन करना इस स्थान का प्रयोजन है। सो हरएक कोष्टक में देखो।

#### ( ५५) बंध प्रकृतियां -१२०

८ कर्मों की उत्तर प्रकृतियां १४८ है, इनमें से--

#### (१) ज्ञानावरणको प्रकृतियां-५

१. मितज्ञानावरण, २. श्रुतज्ञानावरण,३. अविध ज्ञानावरण, ४. मनःपर्यय ज्ञानावरण,५. केवल ज्ञानावरण।

#### (२) दर्शनावरणकी प्रकृतियां-९

६. अचक्षूदर्शनावरण, ७. चक्षुदर्शना-वरण, ८. अवधिदर्शनावरण, ९. केवल दर्शना-वरण, १०. निद्रानिद्रा, ११. प्रचलाप्रचला, १२. स्त्यानगृद्धि, १३. निद्रा, १४. प्रचला।

(३) वेदनीयकी प्रकृतियां-२ १५. सातावेदनीय, १६. असातावेदनीय।

#### (४) मोहनीय की प्रकृतियां-२६ इनमें से दर्शन मोहनीय की प्रकृति-१

१७. मिथ्या दर्शन (मिथ्यात्व का) का वंध जानना।

#### चारित्र मोहनीय की प्रकृतियां-२५ अनन्तानुबन्धीकषाय-४

१८. ऋोध, १९. मान, २०. माया, २१. लोभ।

#### अप्रत्याख्यानावरणकषाय-४

२२. क्रोघ, २३. मान, २४. माया, २५. लोभ ।

#### प्रत्याख्यानावरणकषाय-४

२६. क्रोध, २७. मान, २८. माया, २९. लोभ ।

#### संज्वलनकषाय-४

३०. कोध, ३१. मान, ३२. माया, ३३. लोभ.

नोकषाय-९ (ईषत् कषाय भी कहते है।)

३४. हास्य, ३५. रित, ३६. अरित, ३७. शोक, ३८. भय, ३९. जुगुप्सा, ४०. नपुंसकवेद ४१. स्त्री वेद, ४२. पुरूष वेद.

#### , (५) आयु कर्म की प्रकृतियां-४

४३ नरकायु, ४४ तिर्यंचायु, ४५ मनुष्यायु, ४६ देवायु

#### (६) नाम कर्म की प्रकृतियां-६७ गतिनाम कर्म की प्रकृतियां-४

४७ नरकगति, ४८ तिर्यंचगति, ४९ मनुष्यगति, ५० देवगति

#### जातिनाम कर्म की प्रकृतियां-५

५१ एकेन्द्रिय जाति, ५२ द्वीन्द्रिय जाति, ५३ त्रीन्द्रिय जाति, ५४ चतुरिन्द्रिय जाति, ५५ पंचेन्द्रिय जाति

#### शरीरनाम कर्म की प्रकृतियां-५

५६ औदारिक, ५७ वैक्रियक, ५८ आहारक, ५९ तैजस, ६० कार्माण शरीर

#### अंगोपांगनाम कर्म की प्रतिकृयां-३

६१ औदारिकाङ्गोपांग, ६२ वैक्रिय-काङ्गोपांग, ६३ आहारकाङ्गोपांग, ६४ निर्माण नामकर्म,

#### संस्थान नामकार्य की प्रकृतियां-६

६५ समचतुरस्र संस्थान, ६६ न्यग्रोधपरि-मंडल संस्थान, ६७ स्वाति संस्थान, ६८ कुञ्जक-संस्थान, ६९ वामन संस्थान, ७० हुंडक संस्थान

#### संहनननाम कर्म की प्रकृतियां-६

७१ वज्जवृषभनाराच संहनन, ७२ वज्ज-नाराच संहनन, ७३ नाराच संहनन, ७४ अर्ध-नाराच संहनन, ७५ कीलक संहनन, ७६ असं-प्राप्तासृपाटिका संहनन

#### स्पर्शादिनाम क्म की प्रकृतियां-४

७७ स्पर्शनाम कर्म, ७८ रसनाम कर्म, ७९ गंधनाम कर्म, ८० वर्णनाम कर्म आनुपूर्वीनाम कर्म की प्रकृतियां-४

८१ नरक गत्यानुपूर्वी, ८२ तिर्यंगत्यानु-पूर्वी, ८३ मनुष्यगत्यानुपूर्वी, ८४ देवगत्यानुपूर्वी

८५ अगुरुलघु, ८६ उपघात, ८७ पर-घात, ८८ आतप, ८९ उद्योत, ९० उच्छ्वास, ९१ प्रशस्त विहायोगिति, ९२ अप्रशस्त विहायो-गित, ९३ प्रत्येक, ९४ साधारण, ९५ त्रस, ९६ स्थावर, ९७ सुभग, ९८ दुर्भग, ९९ सुस्वर, १०० दुस्वर, १०१ शुभ, १०२ अशुभ, १०३ सूक्ष्म, १०४, वादर, १०५ पर्याप्ति, १०६ अपर्याप्ति, १०७ स्थिर, १०८ अस्थिर, १०९ आदेय, ११० अनादेय, १११ यशःकीर्ति, ११२ अयशःकीर्ति, ११३ तीर्यंकर प्रकृति ।

सूचना—नामकर्भ की ९३ प्रकृतियों में बंध प्रकृतियां—६७ है। कारण शरीर नामकर्म में बंधन ५, और संघात ५, ये गिभत हो जाते है, इसे लिये. ये १० कम हो गये, और स्पर्श, रस, गंध, वर्ण इन्हें ४ गिने, इस लिये शेष १६ यह कम हो गये, इस प्रकार १०+१६ = २६ प्रकृतियां घट जाने से नामकर्म की बंध योग्य प्रकृतियां ६७ जानना।

#### (७) गोत्रकर्म की प्रकृतियां-२

११४-उच्च गोत्र और ११५ नीच गोत्र यह २ जानना।

#### (८) अन्तराय की प्रकृतियां-५

११६. दानान्तराय, ११७. लाभान्तराय, ११८. भोगान्तराय, ११९. उपभोगान्तराय, १२०. वीर्यांतराय।

इस प्रकार ज्ञानावरण की ५, दर्शना-वरणकी ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २६,

आयु की ४, नाम कर्म की ६७, गोत्र की २, और अन्तराय की ५, ये सब मिलकर १२० प्रकृतियां बंध योग्य है।

#### (२६) उदय-प्रकृतियां १२२

ज्ञानावरणकी ५, दर्शनावरणकी ९, वेद-नीयकी २, मोहनीयकी २८, आयुकर्म की ४, नामकर्मकी ६७ (जो बंध प्रकृतियों में है) गोत्रकर्मकी २, अन्तरायकी ५, इस प्रकार उदय योग्य प्रकृतियां १२२ है।

सूचना:—जब प्रथमोपशम सम्यक्त्व हो तब मिथ्यात्व के (१)मिथ्यात्व, (२)सम्यग्मि-थ्यात्व, (३)सम्यक्प्रकृति इस तरह तीन भाग हो जाते है। इनमें से सिर्फ मिथ्यात्वका बंध होता है शेष २ की सत्ता हो जाती है। और यह दो प्रकृतियां उदय में भी आ सकती है। इस प्रकार दर्शन मोहनीय की दो प्रकृतियां बढ़ जाने से उदय योग्य प्रकृतियां १२२ जानना।

#### (२७) सत्त्व-प्रकृतियां १४८

ज्ञानावरणकी ५. दर्शनावरणकी ९. वेद-नीयकी २. मोहिनीयकी २८. आयुकर्मकी ४. नामकर्मकी ९३. गोत्रकर्मकी २. अन्तरायकी ५. यह सब मिलकर अर्थात् आठो कर्मों की सब मिलाकर सुत्त्व प्रकृतियां १४८ है।

#### (२८) संख्या

किस स्थान में जीव कितने है, यह बतलाना इसका प्रयोजन है। सो हरएक कोष्टक में देखो।

## (२९) क्षेत्र

जीव कितने क्षेत्र में रहते है, यह बात क्षेत्र में बतलाना है। सो हरेक कोष्टक में देखो।

#### (३०) स्पर्शन

समुद्घात, उपपाद आदि प्रकारों से भूत, भविष्यत्, वर्तमान में जीव कहां तक जा सकता है, यह बात स्पर्शन में बतलाना है। सो हरेक कोष्टक में देखो।

#### (३१) काल

विविक्षित स्थानवाले जीव कितने काल तक लगातार उस स्थान में रहते है, यह बात काल में वतलाना है। सो हरेएक कोष्टक में देखो।

#### (२३) अन्तर

(विरहकाल) विविक्षित स्थान को छोड़-कर फिर उसी स्थान में जीव आ जावे, इतने बीच में कोई विविक्षित जीव उस स्थान में न रहे उस बीच के काल को अन्तर कहते है। सो हरेएक कोष्टक में देखो।

#### (३३) जाति (योनि)

८४ लाख है। उत्पत्तिस्थान को योनि या जाति कहते है। किन जीवों की कितनी जाति है, यह निम्न प्रकार जानना।

(१) नित्यनिगोदकी	७ लाख
(२) इतरनिगोदकी	७ लाख
(३) पृथ्वी कायिककी	७ लाख
(४) ਯਲ ,,	७ लाख
(५) अग्नि ,,	७ लाख
(६) वायु "	७ लाख
(७) वनस्पति "	१० लाख
(८) द्वीन्द्रियकी	२ लाख
(९) त्रीन्द्रियकी	२ लाख
(१०) चतुरिन्द्रियकी	२ लाख
(११) तिर्यंचपंचेन्द्रियकी	४ लाख
(१२) नारककी	४ लाख

(१३)	देवकी		४ लाख
(88)	मनुष्यकी	. "	१४ लाख

यह सव मिलाकर ८४ लाख योनि जानना ।

सूचना-कुछ और स्पष्टीकरण यह है कि, एकेन्द्रिय (स्थावरकायिक) की ५२ लाख, त्रसकायिक की ३२ लाख, विकलत्रय की ६ लाख, पंचेन्द्रिय की २६ लाख, तिर्यंचकी ६२ लाख जाति (योनि) जानना।

यह जो ८४ लाख योनि है यह सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित्त, शीत, उष्ण, शीतोष्ण, संवृत, विवृत, संवृताविवृत, इन नव भेदों के भेद प्रभेदोंसे ८४ लाख हो जाते है।

#### (३४) कुल

१९९॥ लाख कोटि कुल है। शरीर के भेद के कारणभूत नोकर्मवर्गणावों के भेद को कुल कहते है।

यह सब निम्न प्रकार जानना-

- (१) पृथ्वी कायिककी २२ लाख कोटि
- (२) जल ,, ७ लाख कोटि

(३) अग्नि "	Ŗ	लाख कोटि
(४) वायु "	७	लाख कोटिं
(५) वनस्पति "	२८	लाख कोटि
(६) द्वान्द्रियकी	ø	लाख कोटि
(७) त्रीन्द्रियकी	6	लाख कोटि
(८) चतुरिन्द्रियकी	९	लाख कोटि
(९) जलचर की	१२॥	लाख कोटि
(१०) स्थलचर (पशु) की	१०	लाख कोटि
(११) नभचर (पक्षी) की	१२	लाख कोटि
(१२) छातीसे चलनेवालोंर्क	रे ९	लाख कोटि
(१३) देवकी	२६	लाख कोटि
(१४) नारककी	२५	लाख कोटि
(१५) मनुष्यकी	१४	लाख कोटि

जोड़ १९९॥ लाख कोटि

सूचना-कुछ और स्पष्टीकरण यह है कि, त्रियंचकी १३४।। लाख कोटि, एकेन्द्रियकी ६७ लाख कोटि, पंचेन्द्रिय त्रियंचकी ४३।। लाख कोटि, पंचेन्द्रिय त्रियंचकी ४३।। लाख कोटि, पंचेन्द्रियकी १०६।। लाख कोटि, विकलत्रयकी २४ लाख कोटि, जोड़ करने पर होते है।

## १. गुणस्थान-और गुणस्थानों का स्वक्रव

गुणस्थान-मोह और योग के निमित्त से होनेवाली आत्मा के सम्यक्तव और चारित्र गुणों की अवस्थाओं को गुणस्थान कहते है, यह गुणस्थान १४ होते है।

- (१) मिथ्यात्व-मोक्ष मार्ग के प्रयोजन भूत जीवादि सात तत्त्वों में यथार्थ श्रद्धा न होने को मिथ्यात्व कहते है। मिथ्यात्व में जीव देह को आत्मा मानता है। तथा अन्य भी परपदार्थों को अपना मानता है। कषाय परि-णामों से भिन्न ज्ञानमात्र आत्मा का अनुभवन नहीं कर सकता है।
- (२) सासादन या सासादन सम्यक्त्व— उपशमसम्यक्त्व नष्ट हो जाने पर मिथ्यात्वका उदय न आ पाने तक अनन्तानुबन्धी कषाय के उदयसे जो अयथार्थ भाव रहता है उसे सासा-दन सम्यक्त्व गुणस्थान कहते है।
- (३) मिश्र या सभ्यग्मिश्यात्व-जहां ऐसा परिणाम हो जो न केवल सम्यक्त्व रूप हो और न केवल मिश्यात्वरूप हो, किन्तु मिला हुआ हो उसे मिश्र या सभ्यग्मिश्यात्व कहते है।
- (४) असंयत या अविरत सभ्यवत्व-जहां सम्यव्हर्गन तो प्रगट हो गया हो, किन्तु किसी भी प्रकार का व्रत (संयमासंयम या संयम) न हुआ हो, उसे असंयत या अविरत सम्यव्हत कहते है। इस गुणस्थान में उपशम-बेदक-क्षायिकसभ्यव्हव ये तीनों प्रकार के सभ्यव्हव हो सकते है।
- (५) देशसंयत या संयतासंयत या देशिवरत-जहां सभ्यग्दर्शन भी प्रगट हो गया हो और संयमासंयम भी हो गया हो उसे देश-संयत या संयता संयत या देशिवरत कहते है।

- (६) प्रमत्त या प्रमत्तिविरत—जहां महा-व्रत का भी धारण हो चुका हो किन्तु संज्वलन कषायका उदय मंद न होने से प्रमाद हो वह प्रमत्त या प्रमत्तिविरत है।
- (७) अप्रमत्त या अप्रमत्तविरत-जहां संज्वलन कषाय का उदय मन्द होने से प्रमाद नहीं रहा उसे अप्रमत्त या अप्रमत्तविरत कहते है। इसके दो भेद है। १. स्वस्थान अप्रमत्तविरत और २ रा सातिशय अप्रमत्तविरत, स्वस्थान अप्रमत्तविरत मुनि छठवें गुणस्थान में पहुंचते है और इस प्रकार छटे से सातवें में, और सातवें से छठे में परिणाम आते जाते रहते है।

सातिशय अप्रभत्तविरत मृनि के अधःकरण-परिणाम होते हैं। वे यदि चारित्र
मोहनीयका उपशम प्रारंभ करते है तो उपशम
श्रेणि चढ़ते है और यदि क्षय प्रारंभ करते है
तो क्षपक श्रेणि चढ़ते है। सो वे दोनों
(उपशम या क्षपक श्रेणि चढ़नेवाले मृनि)
आठवें गुणस्थान में पहुंचते है।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनि के परिणाम का नाम अधःकरण इसलिये है— कि इसके काल में विविक्षित समयवर्ती मुनि के परिणाम के सदृश कुछ पूर्व उत्तर समयवर्ती मुनियों के परिणाम हो सकते है ।

(८) अपूर्व करण-इस गुणस्थान में अगले अगले समय में अपूर्व अपूर्व परिणाम होते है, ये उपशमक और क्षपक दोनो तरह के होते है। इस परिणाम का अपूर्व करण नाम इस लिये भी है कि इसके काल में समान समयवर्ती मुनियों के परिणाम सदृशभी हो

जांय, किन्तु विविक्षित समय में भिन्न (पूर्व या उत्तर) समयवर्ती मुनियों के परिणाम विसदृश ही होंगे।

इस गुणस्थान में प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धि होती है, कर्मों की स्थितिका घात होने लगता है, स्थितिबंध कम हो जाते है; बहुतसा अनुभाग नष्ट हो जाता है, असंख्यात गुणी प्रदेश निर्जरा होती है, अनेक अशुभ प्रकृतियां शुभ में बदल जाती है।

- (९).अनिवृत्तिकरण-इस गुणस्थान में चढ़ते हुये अधिक विशुद्ध परिणाम होते है, यह उपशमक और क्षपक दोनों प्रकार के होते है। इस परिणाम का अनिवृत्तिकरण नाम इस लिये है कि इसके काल में विविक्षित समय में जितने मुनि होंगे सबका समान ही परिणाम होगा, यहां भी भिन्न समयवालों के परिणाम विसदृश ही होंगे। इस गुणस्थान में चारित्र मोहनीय की २० प्रकृतियों का (अप्रत्याख्यानावरण ४, प्रत्याख्यानावरण ४, प्रत्याख्यानावरण ४, संज्वलन ३, हास्यादि ९) उपशम या क्षय हो जाता है।
- (१०) सूक्ष्म सांपराय—नवमें गुणस्थान में होनेवाले उपशम या क्षय के वाद जब केवल संज्वलन सूक्ष्म लोभ रह जाता है, ऐसा जीव सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानवर्ती कहा जाता है, इस गुणस्थान में सूक्ष्म सांपराय चारित्र होता है जिसके द्वारा अन्त में इस गुणस्थानवाला जीव सूक्ष्म लोभ का भी उपशम या क्षय कर देता है।
- (११) उपशांतमोह (कषाय)—समस्त मोहनीय कर्मका उपशम हो चुकते ही जीव उपशांत मोह गुणस्थानवर्ती हो जाता है, इस गुणस्थान में यथाख्यात चारित्र हो जाता है। किन्तु उपशम का काल समाप्त होते ही दशवें गुणस्थान में गिरना पड़ता है। या मरण हो

तो चौथे गुणस्थान में एक्दम आना पड़ता है।

(१२) क्षीणमोह (कषाय) - क्षपक श्रेणि से चढ़नेवाला मुनि ही समस्त मोहनीय के क्षय होते ही क्षीण मोह गुणस्थानवर्ती हो जाता है। इस गुणस्थान में यथाख्यात चारित्र हो जाता है।

तथा इसके अन्त समय में ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय-कर्मका भी क्षय हो जाता है।

(क्षपक श्रेणि से चढ़नेवाला मुनि ग्यारहवे गुणस्थान में नहीं जाता है; वह दसवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान में आ जाता है।)

(१३) सयोग केवली—चारों घातिया कर्म के नष्ट होते ही यह आत्मा सकल परमात्मा हो जाता है। इस केवली भगवान के जब तक योग रहता है तब तक उन्हें सयोग केवली कहते है। इनके विहार भी होता है, दिव्यध्विन भी खिरती है। तिर्थं ङ्कर सयोग केवली के समव शरण की रचना होती है, सामान्य सयोग केवली के गन्धकुटी की रचना होती है। इन सबका नाम अईन्त—परमेष्ठी भी है। अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में इन के बादर योग नष्ट होकर सूक्ष्म योग रह जाता है। और अन्तिम समय में यह सूक्ष्म योग भी नष्ट हो जाता है।

(१४) अयोग केवली-योग के नष्ट होते ही ये परमात्मा-अयोग केवली हो जाते है। शरीर के क्षेत्र में रहते हुये भी इनके प्रदेशों का शरीर से सम्बन्ध नहीं रहता। इनका काल 'अ इ उ ऋ लू' इन पांच न्हस्व अक्षरों के उच्चारने के वरावर रहता है। इस गुणस्थान में उपांत्य और अंत्य समय में शेष वची हुई ७२ और १३ प्रकृतियों का क्षय हो जाता है। इसके बाद ही ये प्रभु गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान हो जाते है।

## २ जीवसंमास

जीवसमास-जिन सदृश धर्मोद्वारा अनेक जीवों का संग्रह किया जा सके उन सदृश धर्मोंका नाम जीवसमास है। ये १४ होते है।

- (१) एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त—जिन जीवों के स्पर्शन इन्द्रिय है तथा वादर शरीर (जो दूसरे बादर को रोक सके और जो दूसरे वादर से रुक सके) है और जिन की शरीर पर्याप्ति भी पूर्ण हो गई है वे एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त है। ये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति रूप पांच प्रकार के होते है।
- (२) एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त—एकेन्द्रिय बादरों में उत्पन्न होने वाले जीव, उस आयू के प्रारंभ से लेकर जब तक उनकी शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती, तब तक बादर अपर्याप्त कहलाते है। इनमें से जो जीव ऐसे है कि जो पर्याप्ति पूर्ण न कर सकेंगे और मरण हो जायगा उन्हें लब्ध्य पर्याप्त कहते है। और जो जीव ऐसे है कि जिनकी पर्याप्ति पूर्ण अभी तो नहीं हुई, परन्तु पर्याप्त पूर्ण नियम से करेंगे उन्हें निवृत्य-पर्याप्त कहते है। इन जीवसमासों में अपर्याप्त शब्द से दोनों अपर्याप्तों का ग्रहण करना चाहिये।
- (३) एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त—जो जीव एकेन्द्रिय है, सूक्ष्म, (जिन का शरीर न दूसरे को रोक सकता है और न दूसरे से रुक सकता है और सूक्ष्म नामकर्य का जिनके उदय है) है एवं पर्याप्त है। उन्हें एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त कहते है।

- (४) एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त-एकेन्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त नामकर्म का जिनके उदय है उन जीवों को एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त कहते है।
- (५) द्वीन्द्रिय पर्याप्त-जिनके स्पर्शन, रसना ये दो इन्द्रिय है तथा जो पर्याप्त हो चुके है उन्हें द्वीन्द्रिय पर्याप्त कहते है।
- (६) होन्द्रिय अपर्याप्त—उन हीन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्य पर्याप्त हैं या अभी निर्वृत्य-पर्याप्त है उन्हें द्वीन्द्रिय अपर्याप्त कहते है ।
- (७) त्रोन्द्रिय पर्याप्त-जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रिय है और जो पर्याप्त हो चुके है, उन्हें त्रीन्द्रिय पर्याप्त कहते है।
- (८) त्रीन्द्रिय अपर्याप्त-उन त्रीन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्य पर्याप्त या अभी निर्वृत्य पर्याप्त है उन्हें त्रीन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।
- (९) चतुरिन्द्रिय पर्याप्ति—जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियां है जो पर्याप्त हो चुके है उन्हें चतुरि-न्द्रिय पर्याप्त कहते है।

(१०) चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त-उन चतु-

- रिन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्यपर्याप्त या अभी निर्वृत्यपर्याप्त है, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त कहते है। (११) असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त-जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत ये पांचों इन्द्रियां हो किन्तु मन नहीं हो वे असंज्ञी पंचेन्द्रिय कहलाते है। वे पर्याप्ति पूर्ण हो चुकने पर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव केवल तिर्यंचगित में होते है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव भी केवल तिर्यंच होते है।
- (१२) असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्य पर्याप्त है या अभी निर्वृत्यपर्याप्त है असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।

- (१३) संज्ञो पंचेन्द्रिय पर्याप्त-संज्ञी अर्थात् मनसहित पंचेन्द्रिय जीव पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते है।
- (१४) संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्यपर्याप्त है या अभी निर्वृत्यपर्याप्त है, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।

े सूचना-सिद्ध भगवान अतीत जीवसमास होते है।

## ३ पर्याप्ति

पर्याप्ति—आहार वर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा के परमाणुवों को शरीर, इन्द्रिय आदि रूप परिणमावने की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते है। यह ६ होते है।

- (१) आहार पर्याप्ति—आहार वर्गणा के परमाणुओं को खल और रस भागरूप परिण-मावने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को आहार पर्याप्ति कहते है।
- (२) शरीर पर्याप्ति—जिन परमाणुओं को खलरूप परिणमायाथा उनका हाड वगैरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणमाया था उनको रुधिरादिक द्रवरूप परिणमावने को कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को शरीर पर्याप्ति कहते है।
- (३) इन्द्रिय पर्याप्ति-आहार वर्गणा के परमाणुओं को इन्द्रिय के आकार परिणमावने को तथा इन्द्रिय द्वारा विषय ग्रहण करने को कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को इन्द्रिय पर्याप्ति कहते है।
- (४) इवासोच्छवास पर्याप्ति—आहार-वर्गणा के परमाणुओं को क्वासोच्छवासरूप परिणमावने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को क्वासोच्छवास पर्याप्ति कहते है।

- (५) भाषा पर्याप्ति—भाषा वर्गणा के परमाणुओं को वचनरुप परिणमावने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को भाषा पर्याप्ति कहते है।
- (६) मनः पर्याप्ति—मनोवर्गणा के पर-माणुओं को हृदयस्थान में आठ पांखुड़ोके कम-लाकार मनरूप परिणमावने को तथा उसके हारा यथावत् विचार करने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को मनः पर्याप्ति कहते है।

सूचना-सिद्ध भगवान को अतीत पर्याप्त कहते है।

#### ४. श्राण

प्राण-जिनके संयोग से यह जीव जीवन अवस्था को प्राप्त हो और वियोग से मरण अवस्थाको प्राप्त हो उनको प्राण कहते है। ये १० होते है।

सूचना-सिद्ध भगवान अतीत प्राण कहे जाते है।

## ५. संज्ञा

संज्ञा-वांछाके संस्कार की संज्ञा कहते है। ये ४ होते है।

- (१) आहार संज्ञा-आहार संबंधी वांछा के संस्कार को आहार संज्ञा कहते है।
- (२) भय संज्ञा-भय संबंधी परिणाम के संस्कार को भय संज्ञा कहते है।
- (३) मैथुन संज्ञा-मैथुन संबंधी वांछा के संस्कार को मैथुन संज्ञा कहते है।
- (४)परिग्रह संज्ञा-परिग्रह संबंधी वांछा के संस्कार को परिग्रह संज्ञा कहते है।

सूचना-दशम गुणस्थान से ऊपर जीव अतीत संज्ञा वाले होते है।

## मार्गणा

मार्गणा-जिन धर्म विशेषों से जीवों की खोज हो सके, उन धर्म विशेषों से जीवों को खोजना मार्गणा है। ये १४ होते है।

## ६. गति मार्गणा

गित मार्गणा-गित मार्गणा नामकर्म के उदय से उस उस गित विषयक भावके कारण-भूत जीव का अवस्था विशेष को गित कहते है। इस गित की मार्गणा ४+१ है।

- (१) नरक गित-मध्य लोक के नीचे सात नरक है, उनमें नारकी जीव रहते है; उन्हें बहुत काल पर्यंत घोर दुःख सहना पड़ता है, उनकी गित को नरक गित कहते है।
- (२) तिर्यंच गति-नारकी, मनुष्य व देव के अतिरिक्त जितने संसारी जीव है, वे सव तिर्यंच कहलाते है। एकेन्द्रिय (जिसमें निगोद भी शामील है), द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये तो नियम से त्रियंच होते है और सिंह, घोड़ा, हाथी, कबुतर,मत्स्य आदि संज्ञी जीव भी तिर्यंच होते है। उनकी गति को त्रियंच गति कहते है।
- (३) मनुष्य गति—स्त्री, पुरुष, वालक, बालिकाएं मनुष्य कहे जाते है, इनकी गति को मनुष्य गति कहते है।
- (४) देव गित-भवनवासी, ब्यन्तर (जिन के निवास स्थान पहले नरक पृथ्वीके खर भाग और पङ्क भाग में है।) ज्योतिष्य (सूर्य, चन्द्र, तारादि) और वैमानिक (१६ स्वर्ग, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पंचानुत्तर में रहनेंवाले देव) इन चार प्रकार के देवों की गित को देव गित कहते है।

अगित-गित से रहित जीवों की गित को अगित या सिद्धगित कहते हैं; इनके गित नहीं है, ये गित रहित है।

## ७. इन्द्रियजाति मार्गणा

इन्द्रिय जाति-इन्द्रियावरण के क्षयोपशम से होनें वाले संसारी आत्माके बाह्य चिह्न विशेष को इन्द्रिय कहते है। इस की मार्गणा ५+१ है।

(१) 'एकेन्द्रियसें-पंचेन्द्रिय तक का वर्णन हो चुका है।

अतिन्द्रिय जाति-जो इन्द्रियों से (द्रव्ये-न्द्रिय व भावेन्द्रिय दोनों से) रहित है वह अतीन्द्रिय कहलाते है।

## ८. काय मार्गणा

काय-आत्मप्रवृत्ति अर्थात् योगसे संचित पुद्गलपिण्ड को काय कहते है । इसकी मार्गणा ६+१ है ।

अकाय-जिनके कोई प्रकार का काय नहीं रहा वे अकायिक (अकाय) कहलाते है।

## ९. योग मार्गणा

योग-मन, वचन, काय के निमित्त से आत्मप्रदेश के परिस्पंद (हलन, चलन) का कारणभूत जो प्रयत्न होता है उसे योग कहते है इस की मार्गणा १५+१ है।

- (१) सत्यमनो योग-सत्य वचन के कारणभूत मनको सत्यमन कहते है, उसके निमित्त से होनेवाले योग को सत्यमनो योग कहते है।
- (२) असत्यमनो योग-असत्य वचन के कारणभूत मन को असत्यमन कहते है और

उसके निमित्त से होनेवाले योग को असत्यमनो योग कहते है।

- (३) उभयमनो योग-उभय (सत्य, असत्य दोनों) मन के निमित्त से होनेवाले योग को उभयमनो योग कहते है।
- (४) अनुभयमनो योग-अनुभय (न सत्य न असत्य) मन के निमित्त से होनेवाले योग को अनुभयमनो योग कहते है।
- (५) सत्यवचन योग-सत्यवचन के निमित्त से होनेवाले योग को सत्यवचन योग कहते है।
- (६) असत्यवचन योग-असत्यवचन के निमित्त से होनेवाले योग को असत्यवचन योग कहते है।
- (७) उभयवचन योग-उभय (सत्य, असत्य दोनों) वचन के निमित्त से होनेवाले योग को उभयवचन योग कहते है।
- (८) अनुभयवचन योग-अनुभय (न सत्य व असत्य) वचन के निमित्त से होनेवाले योग को अनुभयवचन योग कहते है।
- (९) औदारिक काययोग-मनुष्य, तिर्यंचों के शरीर को औदारिक शरीर कहते है, उसके निमित्त से जो योग होता है उसे औदारिक काय योग कहते है।
- (१०) औदारिक मिश्रकाय योग-कोई
  प्राणी मरकर मनुष्य या त्रियंच गित में स्थानपर
  पहुंचा, वहां पहुंचते ही वह औदारिक वर्गणाओं
  को ग्रहण करने लगता है उस समय से अन्तमूंहूर्त तक (जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं
  होती) कार्माण मिश्रित औदारिक वर्गणाओं के
  द्वारा उत्पन्न हुई शिवत से जीव के प्रदेश में
  परिस्पंद के लिये जो उस जीव का प्रयत्न होता
  है उसे औदारिक मिश्रकाय योग कहते है।

- (११) वैकियक काय योग—देव व नार-कीयों के शरीर को वैकियक काययोग्न कहते है। उसके निमित्त से जो योग होता है उसे वैकि-यक काययोग कहते है।
- (१२) वैक्रियक मिश्रकाय योग-कोई मनुष्य या तियच मरकर देव या नरक गति में स्थानपर पहुंचा, वहां पहुंचते ही वह वैक्रियक वर्गणाओं को ग्रहण करने लगता है, उस समय से अन्तर्मुहूर्त तक (जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माण मिश्रित वैक्रियक वर्गणाओं के द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति से जीव के प्रदेशों में परिस्पंद के लिये जो उस जीव का प्रयत्न होता है उसे वैक्रियक मिश्रकाय योग कहते है।
- (१३) आहारक काययोग-सूक्ष्म तत्वमें संदेह होने पर या तीर्थ वन्दनादि के निमित्त आहारक ऋद्धिवाले छठे गुणस्थानवर्ती मुनियों के मस्तिष्क से एक हाथ का धवल, शुभ, व्याघात रहित आहारक शरीर निकलता है उसे आहारक काययोग कहते है; उसके निमित्तसे होनेवाले योग को आहारक काय योग कहते है।
- (१४) आहारक मिश्रकाय योग—आहा-रक शरीर की पर्याप्ति जब तक पूर्ण नहीं होती तब तक औदारिक व आहारक वर्गणाओं के द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति से जीव के प्रदेशों में परिस्पंद के लिये जो प्रयंत्न होता है उसे आहारक मिश्रकाय योग कहते है।
- (१५) कार्माणकाय योग-मोड़ेवाली विग्रह गति को प्राप्त चारों गतियों के जीवों के तथा प्रतर और लोकपूर्ण समुद्घात को प्राप्त केवली जिन के कार्माण काय होता है। उसके निमित्त से होनेवाले योग को कार्माणकाय योग कहते है।

अयोग-अयोग केवली व सिद्ध भगवान के योग नहीं होता है। योग रहित अवस्था को अयोग कहते है।

## १०. वेद मार्गणा

वेद-पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुंसक वेद के उदय से उत्पन्न हुई मैथुनकी अभिलाषा को वेद कहते है। इसकी मार्गणा ३+१ है।

- (१) नपुंसकवेद-जिससे स्त्री और पुरुष इन दोनों के साथ रमण करने का भाव हो उसे नपुंसकवेद कहते हैं।
- (२) स्त्रीवेद-जिससे पुरुष के साथ रमण करने की इच्छा हो उसे स्त्रीवेद कहते हैं।
- (३) पुरुषवेद-जिससे स्त्री के साथ रमण करने की इच्छा हो उसे पुंवेद या पुरुष-वेद कहते है।

अपगतवेद-जहां वेद का अभाव हो उसे अपगतवेद जानना।

## ११. कषाय-मार्गणा

कषाय-जो आत्मा के सम्यक्त्व, देश-चारित्र, सकलचारित्र, और यथाख्यातचारित्र-रूप गुण को घाते, उसे कषाय कहते हैं। इसकी मार्गणा २५+१ है।

- (१) से (४) अनन्तानुवंधी क्रोध, मान, माया, लोभ–उन्हें कहते हैं जो आत्मा के सम्यक्त्व गुण को घाते।
- (५) से (८) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, मान, माया, लोभ-उन्हें कहते हैं जो देश-चारित्र को घातें. (देशचारित्र श्रावक, पंचम-गुण-स्थानवर्ती जीव के होता है)
- (९) से (१२) प्रत्याख्यानावरण कोध, मान, माया, लोभ-उन्हें कहते हैं जो सकल चारित्र को घातें। (सकल चारित्र मुनियों के होता है)

- (१३) से १६) संज्वलन क्रोंघ, मान, माया, लोभ-उन्हें कहते हैं जो यथाख्यात चारित्र को घातें। (यथाख्यात चारित्र ११, १२, १३, १४ वे गुणस्थान में होता है)
- १७) हास्य-हंसने के परिणाम को हास्य कहते हैं।
- (१८) रित-इष्ट पदार्थ में प्रीति करने को रित कहते हैं।
- (१९) अरति-अनिष्ट पदार्थों में अप्रीति क़रने को अरति कहते हैं।
- (२०) शोक-रंज के परिणाम को शोक कहते हैं।
  - (२१) भय-डर को भय कहते हैं।
- (२२) जुगुप्सा-ग्लानि को जुगुप्सा कहते हैं।
- (२३-२४-२५) नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, पुरुषवेद-इन हरेक का वर्णन हो चुका है।

अकषाय-कषाय के अभाव को अकषाय कहते हैं।

## १२. ज्ञान-मार्गणा

ज्ञान-वस्तु के जानने को ज्ञान कहते हैं। इसकी मार्गणा ८ है।

- (१) कुमितज्ञान-सम्यक्तव के न होने पर होनेवाले मितज्ञानकों कुमितज्ञान कहते हैं।
- (२) **कुश्रुतज्ञान**—सम्यक्तव के न होने पर होनेवाले श्रुतज्ञान को कुश्रुतज्ञान कहते हैं।
- (३) कुअविध ज्ञान-सम्यक्तव के न होने पर होनेवाले अविधिज्ञान को कुअविधिज्ञान कहते हैं। इसका दूसरा नाम विभङ्ग-अविधिज्ञान है।
- (४) मितज्ञान-इन्द्रिय और मन के निमित्त से उत्पन्न होनेवाले ज्ञान को मितज्ञान कहते हैं।

- (५) श्रुतज्ञान मितज्ञान से जाने हुये पदार्थ के संबंध में अन्य विशेष जानने को श्रुत- ज्ञान कहते हैं।
- (६) अवधि ज्ञान-इन्द्रिय और मन की सहायता के विना, आत्मीय शक्ति से रूपी पदार्थों को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लेकर जानने को अवधिज्ञान कहते हैं।
- (७) मनः पर्यय ज्ञान-दूसरे के मन में तिष्ठते हुए (स्थित) रूपी पदार्थों को इन्द्रिय और मन की सहायता के विना आत्मीय शिक्त से जानने को मनः पर्यय ज्ञान कहते हैं।
- (८) केवलज्ञान-तीन लोक, तीन काल-वर्ती समस्त द्रव्य पर्यायों को एक साथ स्पष्ट जानना केवल ज्ञान है।

## १३. संयय-मार्गणा

संयम-अहिंसादि पंच व्रत धारण करना, ईर्यापथ आदि पंच समितियों का पालन करना, कोधादि कषाओं का निग्रह करना, मनोयोग, वचनयोग, काययोग इन तीनों योगों को रोकना, पांचों इन्द्रियों का विजय करना सो संयम है। इसकी मार्गणा ७+१ है।

- (१) असंयम-जहां किसी प्रकार के संयम या संयमासंयम का लेश भी न हो उसे असंयम कहते हैं।
- (२) संयमासंयम-जिनके त्रसकी अवि-रित का त्याग हो चुका हो, जिनके अणुव्रत का धारण है उनके चारित्र को संयमासंयम कहते हैं।
- (३) सामायिक संयम—सब प्रकार की अविरित से विरक्त होना, और समताभाव धारण करना, सामायिक संयम है।
- (४) छेदोपस्थापना संयम-भेदरूप से वृत के घारण करने को या वृतों में छेद (भंग)

होनेपर फिर से, व्रतों के पालन करने को छेदो-स्थापना संयम कहते हैं।

- ५) परिहारिवजुद्धिसंयम-जिसमें हिंसा का परिहार प्रधान हो ऐसे जुद्धिप्राप्त संयम को परिहारिवजुद्धि संयम कहते हैं।
- (६) सूक्ष्ममां ग्राय संयम स्वम कषाय (सूक्ष्मलोभ) वाले जीवों के जो संयम होता है उसे सूक्ष्मसांपराय संयम कहते हैं।
- (७) यथाख्यात संयम-कषाय के अभाव में जो आत्मा का अनुष्ठान होता है उसमें निवास करने को यथाख्यात संयम कहते हैं।

असंयम-संयन-संयमासंयम रहित-सिद्ध भगवान् सदा अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित है। उनके ये तीनों नहीं पाये जाते।

## १४. दर्शन-सार्गणा

दर्शन-आत्माभिमुख अवलोकन को दर्शन कहते हैं। इसकी मार्गणा ४ है।

- (:) अचक्ष्रकान-चक्षुरिन्त्रिय के अलावा अन्य इन्द्रिय व मन से उत्पन्न होनेवाले दर्शन को अचक्षुदर्शन कहते हैं।
- (२) चक्षुदर्शन—चतुरिन्द्रियजनय ज्ञान से पहले होनेवाले दर्शन को चक्षुदर्शन कहते हैं।
- (३) अगिवर्शन-अवधिज्ञान से पहले होनेवाले दर्शन को अवधिदर्शन कहते हैं।
- (४) केवलदर्शन-केवलज्ञान के साथ-साथ होनेवाले दर्शन को केवलदर्शन कहते हैं।

## १५. लेश्या-सार्गणा

लेक्या-कषाय से अनुरंजित योगप्रवृत्ति को लेक्या कहते हैं। इसकी मार्गणा ६+१ है।

(१) कृष्णलेक्या-तीत कोध करनेवाला हो, वैर को न छोड़े, लड़ने का जिसका स्वभाव हो, धर्म और दया से रहित हो, दुष्ट हो, जो किसी के वश न हो, ये लक्षण कृष्णलेश्या के है।

- (२) नीललेश्या—काम करने में मन्द हो, स्वच्छन्द हो, कार्य करने में विवेकरहित हो, विषयों में लम्पट हो, कामी, मायाचारी, आलसी हो, दूसरे लोग जिसके अभिप्राय को सहसा नहीं जान सके, अति निद्रालु हो, दूसरों के ठगने में चतुर हो, परिग्रह में तीव लालसा हो, ये लक्षण नील लेश्या के है।
- (३) कापोतलेक्या-एसे, निन्दा करे, द्वेष करे, शोकाकुल हो, भयभीत हो, ईर्षा करे, दूसरों का तिरस्कार करे; अपनी विविध प्रशंसा करे, दूसरे का विश्वास न करे, स्तुति करनेवाले पर संतुष्ट होवे; रण में मरण चाहे, स्तुति करनेवाले को खूब धन देवे अपना कार्य अकार्य न देखे। ये लक्षण कापोतलेक्या के है।
- (४) पीतलेश्या-कार्य, अकार्य, सेव्य, असेव्य को समझनेवाला हो, सर्व-समदर्शी हो; दया-परायण हो, दानरत,कोमल परिणामी हो। ये लक्षण पीतलेश्या के है।
- (५) पद्मलेश्या-त्यागी, भद्र, उत्तम कार्य करनेवाला, सहनशील, साधु, गुरु, पूजारत हो । ये लक्षण पद्मलेश्या के है ।
- (६) शुक्रलेश्या-पक्षपात न करे, निदान न बांघे, सब में समानता की दृष्टि रक्खे, इष्टराग अनिष्ट द्वेष न करे। ये लक्षण शुक्ललेश्या के है।

## १६. भव्यत्व-मार्गणा

भव्यत्व-जिन जीवों के अनन्त चतुष्टय-रूप सिद्धि व्यक्त होने की योग्यता हो वे भव्य है। उनके भाव को भव्यत्व कहते हैं। इसकी मार्गणा २५१ है।

- (१) भव्य-इसका वर्णन ऊपर हो चुका है।
- (२) अभव्य-उक्त योग्यता के अभाव को अभव्यत्व कहते हैं।

अनुभय-(न भव्यत्व न अभव्यत्व) सिद्ध जीव न भव्य है और न अभव्य है।

## ९७. सम्यक्त्व-मार्गणा

सम्यक्तव-मोक्षमार्ग के प्रयोजनभूत तत्त्वों के यथार्थ श्रद्धान को सम्यक्त्व कहते हैं। इसकी मार्गणा ६ है।

- (१) मिथ्यात्व—मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से तत्वों के अश्रद्धानरूप विपरीत अभि-प्राय को मिथ्यात्व कहते हैं।
- (२) सासादन सम्यक्त्व—सम्यक्त्व की विराधना होने पर अनन्तानुबन्धी कषाय के उदय से यदि मिथ्यात्व का उदय न आये तो मिथ्यात्व का उदय आने तक होनेवाला विपरीत आशय सासादन सम्यक्त्व कहलाता है।
- (३) सञ्यिष्मध्यात्व— सम्यिष्मध्यात्व प्रकृति के उदय से जो मिश्र परिणाम होता है, जिसे न तो सम्यक्तवरूप ही कह सकते है और न मिथ्यात्वरूप ही कह सकते है; किन्तु जो कुछ समीचीन व कुछ असमीचीन है उसे सम्यिष्मध्यात्व कहते है।
- (४) उपज्ञम सम्यक्त्व—अनन्तानुवंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्य-ग्मिथ्यात्व और सभ्यक् प्रकृति इन ७ प्रकृतियों के उपज्ञम से जो सभ्यक्त्व होता है उसे उप-ज्ञम सम्यक्त्व कहते है।

इसके एक प्रथमोपशम सम्यक्त्व और दूसरा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व ऐसे दो भेद है।

- (अ) प्रथमोपशम सम्यक्त्व—मिथ्यात्व के अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व कहते है। अनादि मिथ्याद्धिट मिश्रप्रकृति व सम्यक्ष्रकृति की उद्देलना कर चुकने वाले जीवों के अनन्तानुबंधी ४ मिथ्यात्व १ इन पांच के उपशम से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है, और ७ की सत्तावालों के ७ प्रकृतियों के उपशम से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है।
- (ब) दितीयोपग्रम सम्यक्त्य-क्षायोपश-मिक सम्यक्त्व के अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते है। और यह भी ७ प्रकृतियों के उपशम से होता है। सप्तम गुणस्थानवर्ती जीव यदि उपशम श्रेणी चढ़े तब उसके क्षायिक सम्यक्त्व या उपशम सम्यक्त्व होना आवश्यक है। वहां यदि उपशम सम्यक्त्व करे तब द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहलाता है। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में मरण हो सकता है, यदि मरण हो तो देव गित में ही जावेगा। प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण नहीं होता।
- (५) क्षायिक सम्यव्हव-अनन्तानुबंधी कोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्य-ग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन सात प्रकृतियों के क्षय से जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायिक स यक्त्व कहते हैं।
- (६) क्षायोपशमिक (वेदक) सः प्रक्टब-अनन्तानुबंधी ४, मिध्यात्व १, सम्यग्मिथ्वात्व १, इन ६ प्रकृतियों का उदयाभावी क्षय व उपशम से तथा सम्यक्प्रकृति के उदय से जो सम्यक्तव होता है। उसे क्षायोपशमिक या वेदक सम्यक्तव कहते है। इस सम्यक्तव में सम्यक्-प्रकृति के उदय के कारण सम्यग्दर्शन में चल

मिलन, अगाढ़, (जो कि सूक्ष्म दोष है) दोष लगते है।

## १८ संज्ञी मार्गणा

संज्ञी-जो संज्ञी अर्थांत् मन सहित है उन्हें संज्ञी कहते है। इसकी मार्गणा २+१ है।

- ् (१) संज्ञी-संज्ञी पंचेन्द्रियही होते है। ये चारों गतियों में पाये जाते है।
- (२) असंज्ञी-एकेन्द्रियसे लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक होते है। ये सब तिर्यंच है।

अनुभय-सयोगकेवशी व अयोग केवली व सिद्धभगवान् है, ये न संज्ञी है क्यों कि मन नहीं, और न असंज्ञी है क्यों कि अविवेकी नहीं। सयोगीके यद्यपि द्रव्यमन है परंतु भावमन नहीं है।

## १९ आहारक मार्गणा

आहारक-शरीर, मन, वचन के योग्य वर्गणावों को ग्रहण करना, आहारक कहलाता है।

जव कोई जीब मरकर दूसरी गितमें जाता है। तब जन्मस्थान पर पहुँचते ही आहारक हो जाता है, इससे पहले अनाहारक—रहता है, किन्तु ऋजु गितसे जानेवाला अनाहारक नहीं होता, क्योंकि वह एक समयमें ही जन्मस्थान पर पहुंच जाता है। तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव जब केवल—समुद्र्यात करते है तब प्रतरके २ समय, और लोकपूर्ण का १ समय इन तीन समयों में अनाहारक होते है, शेष समय अम्हारक होते है, शेष समय अम्हारक होते है। अयोग-केवली और सिद्धभगवान् अनाहारकहीं होते है।

## २० उपयोग

उपयोग-वाह्य तथा अभ्यन्तर कारणों के

द्वारा होनेवाली आत्माके चेतना गुणँकी परि-णित को उपयोग कहते हैं। ये २ है।

- (१) र साकारोपयोग-ज्ञानोपयोग को कहते है।
- ं (२) निराकारोपयोग-दर्शनोपयोग को कहते है।
- (१) ज्ञानोपयोग-को. नं. ५८ से ६३ देखो ।
- (२) दर्शनोपयोग-को नं. ७१ से ७४ देखो ।

#### २१. ध्यान

ध्यान-एक विषय में चिन्तवन के रुकने को ध्यान कहते हैं। ये १६ है।

- (१ इष्टिवियोगज्ञकार्यध्यान—इष्ट पदार्थ के वियोग होनेपर उसके संयोग के लिए चितवन करना इष्ट वियोगज आर्तध्यान है।
- (२) अनिष्ट संयोगज-अनिष्ट पदार्थं के संयोग होने पर उसके वियोग के लिए चितवन करना, अनिष्ट संयोगज आर्त-ध्यान है।
- (३) पीडाचितन या वेदनाप्रभव आर्त-ध्यान-शारीरिक पीड़ा होने पर उसके संबंध में चितवन करना पीड़ाचितन आर्तध्यान है।
- (४) निदानबंध-भोगविषयों की चाह संबंधी चितवन को निदान या निदानबंध आर्त-ध्यान कहते हैं।

आर्तध्यान में दुःखरूप परिणाम रहता है। आर्ति = दुःख उसमें होनेवाले को आर्त कहते हैं।

(५) हिसानन्द रोद्रध्यान-कृत कारित आदि हिंसा में आनंद मानना व हिंसा के लिए चितवन करना, हिसईनन्द रौद्रध्यान है।

- (६) मृषानन्द-झूठ में आनन्द मानना व झूठ के लिए चिन्तवन करना सो मृषानन्द रौद्रघ्यान है।
- (७) चौर्यानन्द—चोरी में आनन्द मानना व चोरी के लिए चिन्तवन करना, चौर्यानन्द रौद्रध्यान है।
- (८) परिग्रहानन्द-परिग्रह में आनन्द मानना व परिग्रह याने विषय की रक्षा के लिए चिन्तवन करना, परिग्रहानन्द रौद्र-ध्यान है।

रुद्र = कूर, उसके भाव को रौद्र कहते है।

- (९) आज्ञाविचय धर्मध्यान-आगम की आज्ञा की श्रद्धा से तत्त्व चिन्तवन करना आज्ञा-विचय धर्मज्ञान है।
- (१०) अपाय विचय-अपने या परके रागादिभाव जो दुःख के मूल है, उनके विनाश होने के विषय में चिन्तवन करना अपायविचय धर्मध्यान है।
- (११) विपाक विचय-कर्मों के फल के संबंध में संवेगवर्द्धक चिन्तवन करना विपाक-विचय धर्मध्यान है।
- (१२) संस्थानिचय-लोक के आकार काल आदि के आश्रय जीव के परिभ्रमणादि विषयक असारता का चिन्तवन करना और अरहन्त, सिद्ध, मंत्रपद आदि के आश्रय से तत्त्वचिन्तवन करना संस्थानिवचय धर्म- ध्यान है।
- (१३) पृथनत्व वितर्कवीचार शुक्ल-ध्यान-अर्थ, योग व शब्दों को परिवर्तनसहित श्रुत के चिन्तवन को पृथक्तव वितर्कवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

- (१४) एकत्विवतर्क अवीचार-एक ही अर्थ में एक ही योग से उन्हीं शब्दों में श्रुत के चिन्तवन को एकत्विवतर्क अवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।
- (१५) सूक्ष्मिक्रया प्रतिपाति-सयोग केवली के अन्तिम अन्तर्मुंहूर्त में जविक वादर योग भी नष्ट हो जाता है तव सूक्ष्म काययोग से भी दूर होने के लिए जो योग, उपयोग की स्थिरता है उसे सूक्ष्मिक्या प्रतिपाति शुक्लध्यान कहते हैं।
- (१६) व्युपरतित्रया निवृत्ति-समस्त योग नष्ट हो चुकने पर अयोग केवली के यह व्युपरतित्रया निवृत्ति नामक शुक्लव्यान होता है।

#### २२. आस्रव

अस्त्रज-कर्मों के आने के कारणभूत भाव को आस्रव कहते हैं। इसके ५७ भेद है।

- (१) एकान्त विश्यात्व—अनन्त धर्मात्मक वस्तु होनेपर भी उसमें एक धर्मका ही श्रद्धा न करना एकान्त मिथ्यात्व है।
- (२) वियरीत मिथ्यात्व-वस्तू के स्वरूप से विपरीत स्वरूप की श्रद्धा करना विपरीत मिथ्यात्व है i
- (३) संशय मिथ्यात्व-वस्तू के स्वरूप में संशय करना संशय मिथ्यात्व है।
- (४) बैनियक (विनय) मिथ्यत्व-देव, कुदेव में तत्त्व, अतत्त्व में शास्त्र, कुशास्त्र में, गुरू, कुगुरू में, सभी को भला मानकर विनय करना विनयमिथ्यात्व है।
- (५) अज्ञान जिथ्यात्व-हित, अहित का विवेक न रखना अज्ञान मिथ्यात्व है।

- (६) पृथ्वीकायिक अविरति-पृथ्वीका-यिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को पृथ्वीकायिक अविरति कहते हैं।
- (७) जलकायिक अविरति-जलकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को जलका-यिक अविरति कहते हैं।
- (८) अग्निकायिक अविरति-अग्निका-यिक जीवों की हिंसा से विरवत न होने को अग्निकायिक अविरति कहते हैं।
- (९) वायुकायिक अविरति-वायुकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को वायु-कायिक अविरति कहते हैं।
- (१०) वनस्पतिकायिक अविरति—वन-स्पतिकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को वनस्पतिकायिक अविरति कहते हैं।
- (११) त्रसकायिक अविरति-त्रसका-यिक (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय) जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को त्रस-कायिक अविरति कहते हैं।
- (१२) स्पर्जनेन्द्रिय विषय-अविरति स्पर्जन इन्द्रिय के विषयों से विरक्त न होने को स्पर्जनेन्द्रिय विषय-अविरति कहते हैं।
- (१३) रसनेन्द्रिय विषय-अविरति-रसना इन्द्रिय के विषय (स्वाद) से विरक्त न होने को रसनेन्द्रिय विषय-अविरति कहते हैं।
- (१४) **प्राणेन्द्रियविषय-अविरति**—प्राण इन्द्रिय के विषय से विरक्त न होने को ध्राणे-न्द्रिय विषय—अविरति कहते हैं।
- (१५) चक्षुरिन्द्रिय विषय-अविरित-चक्षु इन्द्रिय के विषय से विरक्त न होने को चक्षु-रिन्द्रिय विषय-अविरित कहते हैं।
- (१६) श्रोत्रेन्द्रिय विषय-अविरति-श्रोत्र इन्द्रिय के विषय से विरक्त न होने को श्रोत्रेन्द्रिय विषय-अविरति कहते हैं।

- (१७) मनोविषय—अविरति—मन के विषय से (सन्मान, आराम की चाह आदि से) विरक्त न होने को मनविषय—अविरति कहते हैं।
- (१८) से (४२) कषाय २५. इनका वर्णन कषाय मार्गणा में हो चुका है।
- (४३) से (५७) योग १५. इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है।

#### २३. भाव

भाव-अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशम आदि होने पर जो गुण (स्वभाव याउदय की अपेक्षा विभाव रूप) प्रगट हो उन्हें भाव कहते हैं—-इनका उपादान कारण जीव है। अर्थात् ये जीव में ही होते हैं। अन्य द्रव्य में नहींहोते; इसलिये ये जीव के निज तत्त्व या असाधारण भाव कहलाते हैं। ये भाव ५३ होते

## १. औपरामिक भाव २ है

औपश्रमिक-अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशम होने पर जो गुण (भाव) प्रगट हों उन्हें औपश्रमिक भाव कहते हैं।

- (१) औपशमिक सम्यक्तव-इस का वर्णन हो चका हैं।
- (२) औपशमिक चारित्र—चारित्र मोह-नीय की २१ प्रकृतियों के उपशम से जो चारित्र हो उसे औपशमिक चारित्र कहते हैं।

## २. क्षायिक भाव ९ है

क्षायिक भाव-अपने प्रतिपक्षी कर्मों के क्षय से जो गुण (भाव) प्रगट हों उन्हें क्षायिक भाव कहते हैं।

(३) क्षायिक ज्ञान-ज्ञानावरण कर्म के क्षय से जो ज्ञान प्रगट हो उसे क्षायिक ज्ञान (केवल ज्ञान) कहते हैं।

- (४) क्षायिक दर्शन-दर्शना वरण कर्म के क्षय से जो दर्शन प्रगट हो उसे क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन) कहते हैं।
- (५) क्षायिक सम्यक्त्व-इस का वर्णन हो चुका हैं।
- (६) क्षायिक चारित्र—चारित्र मोहनीय की २१ प्रकृतियों के क्षयसे जो चारित्र हो उसे क्षायिक चारित्र कहते हैं।
- (७) क्षायिक दान-जो दानान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक दान कहते हैं।
- (८) क्षायिक लाभ-जो लाभान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक लाभ कहते हैं।
- (९) क्षायिक भोग-जो भोगान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक भोग कहते हैं।
- (१०) क्षायिक उपभोग-जो उपभोगा-न्तराय के क्षय से प्रगट हो उसें क्षायिक उपभोग कहते हैं।
- (११) क्षायिक वीर्य-जो वीर्यान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक वीर्य कहते हैं।

## ३. क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव १८ है

क्षायोपशमिक भाव-अपने प्रतिपक्षी कर्मों में से किन्हीं—कर्मों के स्पर्द्धकों के उदयाभावी क्षय से किन्हीं स्पर्द्धकों के उपशम से व किन्हीं स्पर्द्धकों के उदय से जो भाव प्रगट हो उन्हें क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव कहते हैं।

- (१२),(१३),(१४) **कुज्ञान ३**-इनका वर्णन हो चुका हैं।
- (१५) से (१८) ज्ञान ४-इनका वर्णन हो चुका हैं।
- (१९, २०, २१) दर्शन ३-इनका भी वर्णन हो चुका हैं।

(२२ से २६) क्षायोपश्चिमकलब्धि ५-दानान्तराय आदि के क्षयोपशम से क्षायोपशमिक दान आदि ५ लब्धि होते हैं। इनका वर्णन हो चुका है।

(२७) **क्षायोपशमिक वेदक सस्यक्त्व**— इसका वर्णन हो चुका हैं।

(२८) क्षायोपज्ञमिक चारित्र या सराग संयम—अप्रत्याख्यानावरण ४, व प्रत्याख्यावरण ४ इन आठ प्रकृतियों के क्षयोपज्ञमसे महावृता-दिरूप चारित्र होता है उसे क्षायोपज्ञमिक (सराग) चारित्र कहते हैं।

(२९) देश संयम (संयमासंयम)-इस का वर्णन हो चुका हैं।

## ४. औदियिक भाव २१ होते है

औदयिक भाव-अपनी उत्पत्ति के निमित्त-भूत कर्मों के उदय से जो भाव प्रगट हों उन्हें औदयिक भाव कहते हैं।

(३० से ३३) गति ४-इनका वर्णन गति मार्गणा में हो चुका हैं।

(३४, ३५, ३६) **लिंग ३-**इनका वर्णन हो चुका हैं।

(३७ से ४०) कथाय ४-इनका वर्णन हो चुका है।

(४१ से ४६) लेक्या ६-इनका वर्णन लेक्या मार्गणा में हो चुका हैं।

(४७) **मिथ्यादर्शन**-इसका स्वरूप सम्यक्त्व मार्गणा में बताया गया है।

(४८) असंयम-इसका वर्णंन संयम मार्गणा में हो चुका हैं।

(४९) अज्ञान-ज्ञानावरण कर्म के उदय से जो ज्ञान का अभावरूप भाव है उसे अज्ञान भाव कहते है यह अज्ञान औदियक हैं। (५०) असिद्धत्व-जब तक आठों कर्मी का अभाव नहीं होता, तब तक असिद्धत्व भाव हैं।

## ५. पारिणामिक भाव ३ है

पारिणामिक भाव-जो कर्मी के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम की अपेक्षा के विना होवे वह पारिणामिक भाव है, ये ३ होते हैं।

(५१) जीवत्व भाव-जिस से जीवे वह जीवत्व है। वह दो प्रकार का है। १ ला ज्ञान दर्शंनरूप और २ रा दशप्राणरूप, इनमें ज्ञानदर्शनरूप जीवत्व शुद्ध पारिणामिक भाव है। और प्राणरूप जीवत्व अशुद्ध पारिणामिक भाव हैं।

(५२) भव्यत्व-इसका वर्णन भव्यत्व मार्गणा में हो चुका हैं।

(५३) अभव्यत्व-इसका वर्णन भव्यत्व मार्गणा में हो चुका हैं।

#### २४. अवगाहना

जिन जीवों के देह है उनके देह प्रमाण तथा देह रहित (सिद्ध) जीवों के जितने शरीर से मोक्ष गये है, उतने प्रमाण अवगाहना का वर्णन करना इस स्थान का प्रयोजन हैं।

२५ बंध-प्रकृतियां-१२० होते है। २६ उदय ,, -१२२ -886 २७ सत्व " २८ संख्या-इनका वर्णन २९ क्षेत्र– कोष्टकों में ३० स्पर्शन-देखो । ३१ काल-३२ अन्तर (विरहकाल)-३३ जाति (योनि) - ८४ लाख है। ३४ कुल-१९९।। लाख कोटि कुल है। इन सव का वर्णन उत्तर भेदों की

नामावली में किया है। वहां देखो।

# सामान्य जीवों के सामान्य आलाप

				•
नं.	स्थान	पर्याप्त-कालमें	अपर्याप्त-कालमें	िसिद्ध जीव
8 7 m	गुणस्थान १४ जीवसमास १४ पर्याप्ति ६ आहार शरीर इन्द्रिय आनापान भाषा मन	१४ गुण स्थान १४ जीवसमास ६ पर्याप्तियां संज्ञीपर्याप्त के होती है । ५ मनःपर्याप्तिके विना उक्त पाचों ही पर्याप्तियां असंज्ञीपचेन्द्रिय पर्याप्तों सेलेकर द्वीन्द्रिय-पर्याप्तक जीवों तक होती है ।	१४ गुण स्थान १४ जीवसमास ६ अपर्याप्तियां इन्हीं संज्ञी जीवों के होती हैं। ५ उन्हीं जीवों के अपूर्णता को प्राप्त वे ही पांच अपर्याप्तियां होती है।	अगुणस्थान अजीवसमास अतीत पर्याप्ति
~	ये छह पर्याप्तियां है।	४ भाषा और मनःपर्याप्ति के विना चार पर्याप्तियां एकेन्द्रिय पर्याप्तों के होती है।	४ इन्ही एकेन्द्रिय जीवों के अपर्याप्तकाल में अपूर्णता को प्राप्त ये ही चार अपर्याप्तियां होती है।	
8	प्राण १० स्पर्शनेन्द्रिय रसनेंन्द्रिय ध्राणेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रिय मनोबल	१० प्राण संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्या- प्तकों के होते हैं। ९ प्राण मनोबलके बिना शेष नौप्राण असंज्ञी-पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों के होते हैं। ८ प्राण श्रोत्रेन्द्रिय प्राण-	,	अतात प्राण सुचना अपर्याप्त अव- स्था में जिन जिन प्राणीं को
	वचनवल कायवल श्वासोच्छ्वास आयुप्राण ये दश प्राण है।	विना शेष ८ प्राण चतु- रिन्द्रिय जीवों के होते हैं। ७ प्राण चक्षुरिन्द्रिय प्राण- बिना शेष ७ प्राण त्रीन्द्रिय के होते हैं। ६ प्राण घ्राणेन्द्रिय प्राण- विना शेष ६ प्राण द्वीन्द्रिय के होते हैं।	६ प्राण आनापान, वचनबल बिना शेष छह प्राण चतु- रिन्द्रिय जीवों के होते हैं। -५ आनापान, वचनबल बिना शेष पांच प्राण त्रीन्द्रिय जीवों के होते हैं।	लब्धिरूप सब प्राण अपर्याप्त अवस्था में भी पर्याप्तवत
		४ प्राण रसनेन्द्रिय, वचनबल ये दो के बिना शेष चार प्राण एकेन्द्रिय के होते हैं। ४ प्राण केवली भगवान के पांच इन्द्रिय व मनोबल को छोड़कर शेष चार प्राण होते हैं।	शेष चारप्राण द्वीन्द्रिय के होते हैं। अनापान के बिना शेष	गिने जाते हैं। देखो षट्खंडा- गमकाल प्ररू- पना गाथा ११९

8 5	₹	٧	4
		वचनबल का अभाव हो जा ने पर कायबल, आनापान, और आयु के तीन प्राण होते हैं। २ प्राण तेरहवे गुण स्थान के अंत में कायबल और आयु ये दो प्राण होते हैं। १ चौदहवें गुण स्थानमें केवल एक आयु प्राण होता है।	
५ संज्ञा ४ आहार, भय, मैथुन और परिग्रह संज्ञा ये चार है।	8	8	क्षीण संज्ञा
६ गति ४	४ नरकगति,तिर्यंचगति,मनुंष्य गति, देवगति ये चारगति है ।	४ पर्याप्तवत् जानना	सिद्ध गति
७ जाति ५	५ एकेन्द्रियादि पांच जातियां होती है।	५ पर्याप्तवत् जानना ।	अतीत जाति
८ काय ६	६ पृथिवीकाय आदि छह काय होते है।	६ पर्याप्तवत् जानना ।	अतीत काय
९ योग १५	११ सत्यमनोयोग, असत्यम- नोयोग, उभयमनो योग, अनुभय-मनोयोग, सत्य- वचनयोग, असत्य वचन- योग, उभयवचनयोग, अनुभय वचनयोग,- औदारिक काययोग, वैक्रियककाय योग अहारककाय योग यह ११ योग।	१ औदारिकमिश्रकाय योग, २ वैक्रियक मिश्रकाय योग, ३ आहारक मिश्रकाय योग, तथा कार्माणकाय योग यह ४ होते है।	अयोग
१० वेद ३ नपुंसक वेद	<b>₹</b>	₹	अपगत वेद

१ , २	3	8	ં પ
स्त्री वेद ःः	r to write to come		
पुरुष वेद			
े ये तीन वेद है ।	The second of the		
7			
११ कषाय ४	४ अनंतानुबंधी,अप्रत्या ख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन, क्रोध मान-माया-लोभ ये चार, कषाये होती हैं।	पर्याप्तवत् .	अकषाय '
<b>१२ ज्ञान ८</b> (१२० ४ १)	८ कुमित, कुश्रुत, कुअविध- ज्ञान, मित, श्रुत, अविधि, मनःपर्यय और केवल ज्ञान ये ८ ज्ञान होते हैं।	कुअवधिज्ञान घटाकर शेष ७ ज्ञान पर्याप्तवत्	केवल ज्ञान
१३ संयम ७	७ असंयम,संयमासंयम, संयम, सामायिक, परिहारविशुद्धि सूक्ष्म सांपराय और यथा- ख्यात ये ७ होते हैं।	संयमासंयम, परिहारविशुद्धि, सुक्ष्म सांपराय घटाकर शेष ४ संयम पर्याप्तवत्	संयम,संयमा- संयम,असंयम रहित
्रेट कर्ने १४ दर्शन ४	४ चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अविधदर्शन और केवल दर्शन ये ४ होते हैं।	पर्याप्तवत्	केवल दर्शन
१५ लेश्या ६	६ द्रव्य और भाव के भेद से छह लेक्याएं होती हैं।	पर्याप्तव्रत् 🕟	अलेश्या
१६ भव्य २	२ भव्य और अभव्य जीव होते हैं।	पर्याप्तवत्	अनुभय
१७ सम्यक्तव ६	ि प्रिथा उपन्य श्रागावनाम	मिश्र घटाकर शेष ५ पर्याप्त- वत्	क्षायिक- सम्यक्त्व
१८ संज्ञी २	२ संज्ञी और असंज्ञी ये दो होते हैं।	पर्याप्तवत्	अनुभय
१९ आहारक २	१ आहारक	आहारक और अनाहारक	
२० उपयोग २	२ साकार उपयोग और- अनाकार उपयोग भी होते हैं।	पर्याप्तवत्	युगपत उपयोग

_
<u>بر</u> بر
" —

	. '			* **		•
थान में		एक जीव के एक समय में	u	१ १ मि० गुरा०	१ सम स	१ समास १६ देखो १ समास १ समास को०नं० १७ देखो
मिथ्यात्व गुरा स्थान में	श्रपयित	१ जीव के नाना समय में	و	१ मि० मुस्स०	१ समास	१ समास को० नं० १६-१८-व १६ देखो १ समास को० नं० १७ देखो व
		नाना जीवों की श्रपेक्षा	US.	१ पर्याह बत् जानना	७ ए३ निद्रय	(२) , बादर (४) श्रीन्द्रय अपयिति (४) श्रीन्द्रय "" (१) जसंशो पं०, "" (७) संशो पं० "" वि पं अपयिति अवस्था (१) न्रक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ असंशो पंचेन्द्रिय अपयिति अवस्था जातना को०नं० १६-१६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७ अपयिति अवस्था
कोष्टक नं० १		एक जीव के एक समय में	አ	१ मि॰ गुरा	१ समास	१ समास १६ देखो १६ देखो १ समा १ समा को०नं० १७ देखो
कोल		एक जीव के नाना समय में	>>	१ मिथ्यात्व गुरा	१ समास	१ समास को० नं० १६–१ <i>द–</i> १६ देखो १ समास १ समास को० नं० १७ देखो
दर्शन	। पयसि	नाना जीव की भ्रपेक्षा	m·	१ चारों गतियों में हरेक १ मिध्यात्व जानना सरेत ने १६ मे १६ हेन्नो	(१) एकेन्द्रि	(3) (4) (4) (5) (5) (5) (6) (6) (7) (6) (7) (7) (7) (7) (7) (7) (7) (7) (7) (7
चीतीस स्थान दर्शन	क० स्थान   सामान्य ग्रानाप	•	۵ م	१ गुएए स्थान १ मिथ्याहव	२ जीव समास १४ (१)ग्रेकेन्द्रिय सुक्ष्म पर्याप्त	(२) " अपयात (५) " अपयित (४) औत्तर पर्यात (६) " अपयित (६) " अपयित (६) " अपयित (६) " अपयित (१०) " अपयित (१०) " अपयित (१०) " अपयित (१२) " पं॰ अपयित (१२) " पं॰ अपयित (१२) " अपयित (१२) " अपयित १२० " अपयित १२० " अपयित १२० " अपयित

			<b>L</b> .		•	
स्थान में	n	१ भंग	को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग	को ०नं ० १६-१द- १६ देखो १ भंग को ०नं ० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १६ देखो
मिथ्यात्व मुसा स	9	१ भंग	मो०नं० १६ से १६ देखो	१ भंग	को० नं० १६–१८– को०नं० १६-१८- १६ देखो १६ देखो १ भंग १ भंग को० नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो	१ मंग को० नं०१६ से १६ देखो
( २६ <b>)</b> कोष्टक नं० १	υy	मंग १ भंग १६—१८—को०नं० १६-१८- उपयोग रूप व स्विध रूप इ	प्यातवत् सूचना—पन्ना २४ पर देखो ३-३ के भंग मन-भाषा—श्वासोच्छवास, ये ३ घटाकर 'शेष (३) (१) चारों गतियों में हरेक में	<ul> <li>का भंग श्राहार, शरीर, इिन्द्रम पर्याप्ति ये ३ का भंग जानना</li> <li>को० नं० १६ से १६ देखी</li> <li>पनोबल, वचनवल, स्वासोच्छवास ये ३ घटाकर शेप (७)</li> <li>७-७-६-५-४ ३-१० के भंग</li> </ul>		मः
	*	१ भंग को०नं० १६-१८- १९ हेन्से	१८ ५४। १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग -को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग १६को० नं० १६ से १६ देखो
	>-	१ मंग को० नं० १६—१८— १९ हेखो	r Fo	१ भंग को० नं० १६–१६– <sup>ह</sup> १६ देखो	- १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ <sup>व</sup> देखो
चौतीस स्थान दर्शन	er	६ ६-५-४-६ के भंग (१) नरक-मनध्य-देवगति मे	•	° т -	भंग को०नं० १६- . देखो गति भें -६-७-६-४-१० को० नं० १७ देखो	४ (१) चारों गतियों में हरेक में व
	۵ ا	३ पर्याप्ति ६ (१) ब्राहार पर्याप्ति (२) बारीर "	<ul> <li>(३) इन्द्रिय "</li> <li>(४) श्वासीच्छवास प०</li> <li>(५) भाषा पर्याप्ति</li> <li>(६) मन पर्याप्ति</li> <li>ये ६ पर्यापि जानना</li> </ul>	<ul> <li>४ प्रासा १०</li> <li>(१) मायु प्रासा,</li> <li>(२) कायवल प्रासा,</li> <li>(३) इन्द्रिय प्रासा ४,</li> <li>(स्पर्शनिन्द्रय, रसनेन्द्रिय,</li> </ul>	प्रायोन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय प्राया ये ५) (४) श्वासोच्छवास, (४) वचनवल प्राया, (६) मनोबल प्राया, ये १० प्राया जानना	५ संज्ञा ४ माहार, भय,

															٠.				
स्थान में	ks		१ गति चारों में से कोई	१ गति जानना १ जाति	- मोउनं० १६-१द-   १६ देखो		१ जाति मेरे मं	कार्ठ पुर देखी <sub>.</sub>	१ काय	कोठनं० १६-१८- १६ देखो	•	~ काय	कोत्नं० १७ देखो	? मंग			•	को०नं० १६ से	१६ देखो
मिध्यात्व गुरा स	9		र गति बारों में से कोई १	•	को० मं० १६—१⊆— १६ देखो		र जाति	्राक्ट कर्न का का वा	१ काय	को० नं० १६—१८— १६ देखो		<b>♦</b> काय	भेखो	१ भंग				को० नं० १६ से	१६ देखो
	25.5	४ का मंग को अनं ० १६ से १६ वेखो	४ चारों गति जानना	भ (१) नरक, मनुष्य, देव-	F	को० नं० १६-१८-१६ देखो	(२) तियैच गति में	खो		(१) नरक, मनुष्य, दंब- गति में हरेक में	1	(२) तियंच गति में		10 to	शौ॰ मिश्र काययोग, या वै॰ मिश्रकाययोग	मौर कामांस काययोग	ये २ योग जानना	(१) चारों गतियों में	हर्म में
( २७ ) कोघ्टक नं० १	×		१ गति ४ में से कोई	१ मति १ जाति	मोठनं० १६-१८- १६ देखो		१ जाति (	देखो	१ काय	-क्रो०नं० १६-१द- १६ देखो		* काय	को०नं० १७ देखो	१ योग				الم	१६ देखाँ
<b>क</b>	>	_	१ गति नारों में से कोई १		को० न० १६-१८- १९ देखो		र जाति होत्र मंत्र १७ हेम्बो		काय	का० न० १६–१५– १६ देखो		१ काय	को० नं० १७ देखो	१ भंग				-8 4-	१६ दला
दर्शन	ger	४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	जानना	i		१ पचेन्द्रिय जाति जानना को०नं० १६–१८–१९ देखो	(२) तियंच गति में १० १० ४० में है	देखी भाग भाग भाग है।		(१) नरक, मनुष्य, दवगात में हरेक में	१ त्रसकाय जानना क्रोत्मे १६ - १ १६ हेम्मो	(२) तियंच गति में		~	म्रो० मिश्र काययोग, वै० मिश्र काययोग.	कामिए। काययोग,	य ३ घटाकर (१०)	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में	हरक म
चौतीस स्थान दर्शन	~	मैथुन, परिग्रह ये जानना	६ गति नरक, तियँ व- मनुष्य	देवगति में ४ जानना ७ इन्द्रिय जाति ४		(३) मीन्द्रम जाति (४) चतुरिगदम जाति	(४) पंचेरिय जाति ये ५ जाति जातना		द काय	पृथ्वा, भ्रप <b>०</b> (जल), तेज (ग्रगिन), बायु,	वनस्पति, त्रसकाय, ग्रेट काम जानना			ह योग १३	ग्राहारक मिश्रकाययोग ग्रा० काययोग, ये र	घटाकर (१३)		;	

स्थान में	រេ	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ भंग १ भंग
मिध्यात्व मुसा स्थ	່ ຄ	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग सारे भंग सारे भंग १८ देखो ब सारे भंग १८ देखो व सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो भ
<b>,</b>	usr	को० नं० १६ से १६ देखो ह ह से १६ देखो १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो १३) तत्वंच गति में ३–२ के भंग को० नं० १७ देखो १३) मनुष्य गति में २–२ के भंग को० नं० १६ देखो १४) त्वं गति में २५ भंग को० नं० १६ देखो ११) नरक गति में २५ भंग को० नं० १६ देखो १३) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो १३) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो १३) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो १३) नरक गति में २१–२४ के भंग को० नं० १६ देखो
6 8	અ	१ योग १ वेद १ वेद १ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १६ देखो १ यंग १ यंग
( २५ कोष्टक नं	>>	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग सो० नं० १६ देखो सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो भो० नं० १६ देखो ""
चौंतीस स्थान दर्शन	m	ह का भंग को० न० १६–१ व– १६ देखी (२) तियंच गति में ह–२–१–६ के भंग को० न० १७ देखी १ नपुं सक वेद जानना को० न० १६ देखी (२) तियंच गति में ३–१ के भंग को० न० १६ देखी (४) देव गति में २–१ के भंग को० न० १६ देखी १८) तियंच गति में ३–१ के भंग को० न० १६ देखी २८, १६ देखी २८, १६ देखी २१, १८ के भंग को० न० १६ देखी २१ नरक गति में
चौँतीस स	2	- वृद्ध के

। स्थान	រេ	१ मंग ७-५-६ के शंगी में से कोई	१ मग १ ज्ञाम कोठनं० १६ देखो	१ साम स्रोध्येत शुख्यसम्	कार्यात् १८ दुवा १ ज्ञान कोठनंठ १८ देखो	१ ज्ञान को०न०१६ देखा	~	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
मिध्यात्व गुरा	ف	सारे भंग ७-द-६ के भंग को० नंः १८ देखो	सारे भंग (२) को० नं० १६ देखो	१ भग स्रोधन स्थाप	北京	सारे भंग को० न० १६ देखो		१ मंग को० नं० १६ देखो
	6	(४) देव गति में २४-२४-२३ के भंग को० नं० १६ देखो	२ न घटाकर गिति में	े का भग को० नं० १६ देखो (२) तियैच गति में २-२ के भंग	को० नं० १७ देखो (3) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ टेस्टो	देवगति के भंग नं० १६ —यहां क्	ा नहीं, है गा० ३२ तियों में	को० नं० १६ से १६ देखां २ (१) नरक गति में २ का मंग को० नं० १६ हेखो
, ,	<b>x</b>	नंग के मंग १८ देखो मंगों में से कोई १ अंग	र देखी	१ ज्ञान को०नं	को०नं० १ द देखो १ ज्ञान को०नं० १९ देखो		~	१ दर्शन कोर्जन् १६ देखो
( २६ कोष्टक नं	υν	सारे भंग ७-द-६ के भंग को० नं० १८ देखी	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भग कोःनं०१७ देखो सारेभंग	को० नं० १८ देखी सारे भंग को० नं० १९ देखो	-	· ~	१ भंग को०नं० १६ देखो
र्यशन	æ	(४) देवगति में २४-२३ के भंग को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक ग़ित में ३ का भंग	का॰ न॰ १६ देखाँ (२) तिर्यंच गति में २-३-१ के भंग को॰ नं० १७ देखों	(३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १८ देखों (४) देव गति में	३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो
चौंतीस स्थान दर्शन	2		१२ ज्ञान कुमति, कुश्रुति, कुग्रवधि ज्ञान थे (३)				१३ संयम असंयम	१४ दर्शन अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये (२)

*,,				oè )	( •			;
`^~.	٠.	चौंतीस	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं	नं० १		मिध्यात्व गुर्गा स्थान	थान में
	~	ar .	m	>>	<b>54</b>	~ون	9	и
j			(२) तियुच गति में	१ भंग	१ दर्शन	(२) तियँच गति में	भंग	, दर्शन
			१-२-२ के भंग	देखो	क्रो०नं० १७ देखो	१-२-२-२ के भंग	को० नं० १७ देखो	कोठनं० १७ देखी
			का० न० १७ द्वा (३) मनव्य गति में	सारे भंग	१ दर्शन		गरे भंग	१ दर्शन
				१ न देखो	को०नं० १८ देखो	के मंग	को० नं० १८ देखो	को०नं . १८ देखो
			को० नं० १ द देखो		٥	को० नं० १ द देखों		t h
			(४) देव गति मे	्र भग	४ दशन स्रोऽम् १० भ्रम्		क्रीत में ० १६ हेम्बो	६ पश्रम को मं ३ १ हेखो
			स्का मग	- 5 9 0	The United States	देखो		
	१५ लेखा	w	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१ भंग	१ लेश्या	. 05		१ लेख्या
	कृष्ण-नीर	कृष्ण-नील-कापोत,	(१) नरक गति में	देखी	कोठनं० १६ देखो	तिस	देखो	को नं १६ देखो
	पीत, पद्म, गुक्ल	शुक्ल	व का भंग			३ का भंग		
	मे ६ लेष्य	ा जानना	को० नं० १६ देखो			को० नं० १६ देखो		. 4
	•			भंग			१ भंग	श्या
			३-६-३ के भंग	कों नं १७ देखों	को०नं० १७ देखो		को० नं० १७ देखो	को ०नं १७ दंखी
			को० नं० १७ देखो			को० नं० १७ देखो		•
		-		नारे भंग			सारे भंग	
			६-३ के भंग	को भं १८ देखों	को०नं० १८ देखो		कों नं १ १ देवो	कील्न १ द देखो
			को० न० १८ देखो	•		कों नं १८ देखों	•	
			-	· ##	र लक्या		भूत	र लक्या -
			₹-3-8 # HT	कां० न० १६ देखा ,	का०न० १६ दला	३-३-१ क भग स्रोत मृत् १० भुन्नो	कां न० १९ द्वा	का न० १६ दबा
	१६ भव्यत्व	G	410 110 46 441	१ भंग	१ भंग	155 V 01 015	र भंग	a भंग
		भव्यः ग्रभव्य	चारों गियों में हरेक में	W	कों अं १६ से	चारों गतियों में हरेक में	को० नं० १३ से	कोन्नं १६से
	-		र का भंग	देखो	१६ देखो	२ का भंग	Æ	१९ देखो
			को० नं० १६ से १६ देखो			को०नं० १६ से १९ देखो		
	१७ हाम्यक्त		~	~	۰-	~	~	*
	• •	मिथ्यात्व	चारों गतियों में हरेक में	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व	चारों गतियों में हरेक में	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व
			१ मिथ्यात्व जानना	4	•	१ मिथ्यात्व जानना स्रोत्से १६ से १९ मेडो		
			विषय देव यह वात्राम					

		•			•	•			*
स्थान में	រ	१ मंग को० न०१६- १८-१६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १ से ६ देलो	१ उपयोग को०न०१६ देख	१ डपयोग को॰नं॰ १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	<b>१</b> उपयोग को०नं० १६ देखो	१ घ्यान को० नं० १६ से १६ देखो
मिथ्यात्व गुरा स	9	मंग को० न० १६-१८- १६ देखो	्१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१. भग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं०१७ देखो		१ भंग को० नं० १६ देखो	१- भंग को० नं० १६ से १६ देखी
	USP	· · ·	१ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	र चारों गतियों में हरेक में १-१ के भंग को० नं. १६ से १९ टेखो	हैं	४ का भंग को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-४ के भंग	१७ य म् गंग	का० न० १६ दला (४) देवगति में ४ के मंग को नं० १६ देलो	द वारों गतिय का भंग नं० १६ हे
~ ~	<b>5</b> 4	१ भंग को०नं० १६-१द- १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ माहारक	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	१ उपयाग को०नं० १६ देखो	१ घ्यान को०नं १६ से ( १६ देखो
कोष्टक नं	>	१ भंग १ भ को० नं० १६-१८-को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	<b>१</b> माहारक	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो		१ भग को० नं० १६ देखो	१ मंग को० नं० १६ से १६ देखो
स्योन	m	२ (१) नरक, मनुष्य, देवगति में हरेक में	न-१६ देखो खो	कारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना	का० न० ६६ त ६८ दखा १ (१) नरक गति में हरेक में ५ वा भंग	को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में ३-४-४-४ के मंग को० न० १७ हेखो	मनुष्य गति में ५-५ के मंग को० नं० १८ देखो	(४) देव गति में ५ का भंग को० नं० १६ देखो	न (१) चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग को० नं० १६ से १६ देखी
चौंतीस स्थान दर्शन	8	१८ संज्ञी श्रसंज्ञी, संज्ञी		१६ माहारक माहारक, मनाहारक	२० उपयोग भानोपयोग ३, टक्नीपयोग २	निना		ries 60	्यात (१) श्रातंदयात ४, इष्टिवियोग, भ्रतिष्ट तयोग, पीड़ा चित्तन,

The second secon

भ	u,	१ भग	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं०१८ देखो	१ भंग कोजनं०१६ देखो	१ भंग कोठनं० १६ देखो	
मुएा स्थान	ອ	सारे भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखी	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग	को० न० १६ देखो
मिथ्यात्व	<b>U3</b> -	४, मनोयोग ४, वचनयोग ४ औे काययोग १, वै० काययोग १ ये १०		को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३६-४०-४३- ४४-४३ के भंग	को० नं० १७"देखो (३) मनुष्य गति में ४४-४३ के भंग को० नं० १८ हेखो	(४) देवगति में ४३-४२ के भंग को० नं० १९ देखो	३३ कुअवधि ज्ञान घटाकर (३३)	(१) (१) नरक गति में २४ का मंग को० नं० १६ देखो
8 0	<b>a</b>	~ <del>با</del>	१ भंग कोटनं०१६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
( ३२ कोष्टक नं	>	सारे भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ अंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को नं० १७ देखो
रशिन	, m··	५२ श्रौ० मिस्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कामिशा काययोग १,	य ३ घटाकर (५२) (१) नरक गति में ४६ का भंग	को० नं० १६ देखो (२) तियैच गति में ३६-३८-४०-४३- ५१-५० के भंग	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५१-५० के मंग को० नं० १८ टेको	(४) देवगति में ५०-४६ के मंग को० नं० १९ टेखो	३४ १४) नरक गति में	र र भा भग को० नं० १६ देखो (२) तियेच गति में २४-२५-२७-३१-२७ के भंग की को० नं० १७ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	a	निदान बंध ये ४) (२) रीद्र ध्यान ४, (हिंसानन्द, मृपानन्द, चौयनिन्द, परिग्रहानन्द २२ श्रास्तव श्राः निश्रकाययोग १, श्राहारक काययोग १,			,		रेड़ भाव ३, दर्शन २, कुझान ३, दर्शन २,	त्यापश्यम् लाव्य ४, गति ४, कषाय ४, जिग ३, लेश्या ६, मिथ्या दशैन १, असंयम् १, अज्ञान १,

		,
थान में	n	१ भंग को०नं० १७ द्वो १ भंग को नं० १८ देवो १ भंग को०नं० १६ देवो
मिध्यात्व गुसा स्थान में	, ) ) 9	सारे भंग १ भंग कोर्ड १ भंग १ भंग कोर्ड १ भंग १ भंग को० न०१८ देखो को न०१८ देखो १ भंग १ भंग
	w	(२) तियंच गति में १४-२४-२७-२२-२४के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३०-२४ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में (४) देव गति में
दक्त मं० १	અ	१ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो
कोष्टक ह	>> : ·	श्रमंग को० नं० १ द देखो १ भंग को० नं० १६ देखो
चौंतीस स्थान दर्शन	er ·	(३) मनुष्य गित में         ३१-२७ के भंग         को० नं० १६ देखो         (४) देवगित में         २४-२७-२४ के भंग         को० नं० १६ देखो
चौंतीस	~	
,	~	मसिद्धत्व १, पारिस्थामिक भाव ३, ये ३४ भाव जानना

१००० (एक हजार) योजन की जानना, (यह भ्रवगाहना स्वयं भूरमरा सरोवर का कमल (वनस्पति काय ग्रीर स्वयं भूरमरा **ग्रवगाहना—**जघन्य ग्रवगाहना घनांगुल के **ग्रसंख्यातवें भाग जानना, (यह ग्रवगाहना** लब्ध्य पर्याप्तक जीव की है। ) उत्कृष्ट ग्रवगाहना — समुद्र में पंचेन्द्रिय महामत्स्य की होती है) विशेष खुलासा को० नं० १६ से ३४ देखो। 3

वंघयोग्य १२० प्रकृतियां ज्ञानावरस्तीय ४, दर्शनावरस्तीय ६, वेदनीय २, मोहनीय २६, (सम्यग्गिण्यात्व, सम्यक् प्रकृति ये २ घटाकर २६) ष्रायु ४, नामकर्म के ६७ (स्पर्शादिक ४, गति ४, जाति ४, शरीर ४, संस्थान ६, अंगोतांग ३, स्थावर १, बादर १, सूक्ष्म १, पर्यक्ति १, अपर्याप्त १, प्रत्येक शरीर १, साधारहा शरीर १, स्थिष १, अस्थिर १, सुम १, तीर्थंकर १, ये ६७) गोत्र २, ब्रन्तराय ५, ये १२० प्रकृति जानना, इनमें से ब्राहारकद्विक २, तीर्थंकर प्रकृति १ ये ३ प्रकृति संहमन ६, भ्रानुपूर्वी ४, विहायोगति २, भ्रगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छवास १, श्रातप १, उद्योत १, त्रस त्रशुभ १, सुभग १, दुर्भग १, सुस्वर १, दुस्वर १, त्रादेय १, त्रनादेय १, यशः कीर्ति १, धयशः प्रकृति १, निर्माण १, वंघ प्रकृतियां — ११७

**उदय प्रकृतियां—-११**७ उदययोग्य १२२ प्रक्रुतियां—वंघ योग्य १२० प्रकृतियों में मिष्यात्व प्रकृति का उदय के समय तीन खंड रूप नदय में त्राती है, (मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति ३) इसलिये उदय रूप १२२ प्रकृतियां जानना, इनमें से ग्राहारक द्विक २, तीयँकर प्रकृति १, सम्यग् मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, इन पांच प्रकृतियों का उदा इस गुरा स्थान में नहीं सस्य प्रकृतियां—१४८ नामकर्म की जिन २६ प्रकृतियों का अर्थात् स्पर्शं ८, रस ४, गंघ २, वर्षां ५, इन २० प्रकृतियों में से स्पर्श १ रस १, वर्गो १, इन ४ प्रकृतियों का ही वंघ होता है। इसलिये ये ४ प्रकृतियां घटाने से शेप १६ प्रकृतियां ग्रीर इसी तरह होता, इसलिये १२२ में से ५ प्रकृतियां घटाकर ११७ जानना ।

घटाकर ११७ प्रकृति जानना ।

3

वंघन ४, संघात ४ इन १० प्रकृतियों का पांच शरीर के साथ श्रविनाभावी सम्बन्ध है , इन १० प्रकृतियों का अलग वन्ध

नहीं होता इसलिये स्पर्शादि १६ श्रीर ये १० इन २६ प्रकृतियों का बन्ध में ग्रभाव दिखाया गया था वह सता में ग्राकर जुड़ जाती है। उदययोग्य १२२ में से छोड़ी हुई २६ प्रकृतियों को जोड़कर सत्ता रूप १४८ प्रकृति जानना )।

काल - जीन निरन्तर रहने की श्रपेक्षा समय वह काल कहलाता है। नाना जीवों की श्रपेक्षा सर्वकाल श्रथित् सर्वेलोक में निरन्तर मिथ्या इिट पाये जाते हैं। जैसे सूक्ष्म निगोदिया जीव लोककाश के सर्वे प्रदेश में मौजूद है, एक जीव प्रनादि मिण्या हिट अनादि काल से क्षेत्र—जीव रहने का स्थान सर्वेलोक है । यहां क्षेत्र स्थावर जीव की ग्रपेक्षा जामना (त्रसकाय जीवों का क्षेत्र त्रसना को जान्ना स्पर्शन--सर्वेलोक (विश्रह गति में श्रौर मारसांतिक समुद्घात की श्रपेक्षा जानना)

ш, О

n

श्रन्तर—मिथ्यात्व छूटने के बाद दुवारा जितने समय के वाद मिथ्या दृष्टि वने वह समय अन्तर कहलाता है। नाना जीवों की अपेक्षा कभी भी चला था रहा है। सादिमिथ्या शिट निरन्तर अन्तमुँहुत से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक रह सकता है। इसके बाद सम्यक्षत ग्रहेए। करके निष्यंय रूप से मोक्ष में चेला षायगा।

भन्तर नहीं पड़ता। एक जीव का मिथ्यात्व छूटने के वाद अन्तर्भे हुतै तक उपशम सम्यग्द्रफ्टि रहकर फिर दुवारा मिथ्या दृष्टि वन सकता है। मिथ्या हिष्ट जीव जब क्षयोपशम क्षम्याहिष्ट वन जाता है तव वह जीव ग्रगर क्षायिक सम्पग्हिष्ट न वने तो १३२ सागर वायुकाय ७ नाख, काल के बाद फिर मिथ्या दृष्टि बन सफता है।

नित्यमिगोग ७ लाख, इतर निगोद ७ लाख, प्रक्षेक वनस्पति १० लाख, द्वीन्द्रिय २ लाख, त्रीन्द्रिय २ लाख, चतुरिन्द्रिय २ लाख पंचेत्त्रिय पशु ४ लाख, नारकी ४ लाख, देव ४ नाख, मनुष्य १४ लाख इस प्रकार ८४ लाख योनि जानना। जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना। उनका विवर्षा पृथ्वीकाय ७ लाख, जलकाय ७ लाख, प्रिमिकाय ७ लाख,

कुल—१६६॥ लाख कोटिकुल जानना, उनका विवरसा पृष्वीकाय २२ लाख कोटि, जलकाय ७ लाख कोटि ग्रानिकाय ३ लाख कोटि, वायुकाय ७ लाख कोटि, वनस्पतिकाय २८ लाख कोटि, द्वीन्द्रिय ७ लाख कोटि, जीन्द्रिय ८ लाख कोटि, चसुरिन्द्रिय ६ लाख कोटि, जलचर पंचेन्द्रिय १२ो। लाख कोटि, स्यलचर पंचेन्द्रिय १० लाख कोटि, मभचर पंचेन्द्रिय १२ लाख कोटि, छाती चलने वाले सर्पादिक ९ लाख कोटि, नारकी २५ लाख कोटि, देव २६ लाख कोटि, मनुष्य १४ लाख कोटि, इस प्रकार १६९।। लाख कोटि,

200

सुचना --कोई माचार्य मनुष्य गति में १२ लाख कोटि कुल गिनकर चारों गतियों में १६७।। लाख कोटि कुल मानते हैं। गोमटसार

जीव कांड गाथा ११३ से ११६ के अनुसार।

_	_	
		1
`	•	
	,	
,		
		•

4			r						•					•			
ir i		एक समय में १ जीव की अपेका आलाप	រេ	~	~		.:				कोई १ अवस्या				नोई १ भवस्या		
सासादन गुण स्थान	त्रपयित	१ समय में नाना जीव की अपेक्षा आलाप	9	<b>6</b>	एकेन्द्रीय सुक्ष्म अपर्याप्त १ " वादर	वे इन्द्रीय " ते इन्द्रीय " चौ इन्द्रीय "	श्रसंज्ञी पंचेन्द्रीय '' संज्ञीपं चेन्द्रीय	सूचना आहार पयोपी तक ही गामान्त्री उत्तम है	तातायना रहता ह उसकी अपेक्षा ये सात स्थान बांटे हैं परन्तु शरीर पर्याप्ती	प्राप्त होते ही मिध्या दृष्टि बन जाना है।	सर्वे यनस्थायं				सर्वत्याय श्रवने अपने सामास	प्रमास्	>>
		सामान म्रालाप	w	~	श्रपयो प्त ७	•					ターメーシ・	लाब्ध रूप पयाप्त बत ऋपनी ऋपनी	पर्याप्ती साधान ज्यानीय इत ३		७-७-६-५-४-५ अवनी अवनी	सामास प्रमास	>>
कोंटिक नम्बर २		१ समय में एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रालाप	*	~	o.					,	;	•			\$	•	>>
भी	E	एक समय में नाना जीवों की अपेक्षा श्रालाप	>>	~	ov						w				~ 0		×
चौतीस स्थान दर्शन	्र पर्याप्त	सामान श्रालाप	m	~	संज्ञी पंचेन्द्रीय पर्यापि १				,		ج برمسرت طوید	पर्याप्त हो 	हाता स	·	१० संज्ञी पंचेन्द्रीय	पर्याप्त हो होता है	>
वींतीस स्थ	सामानम्रालाप		ù	१ सासादन	n				•	æ	or	. <del></del> -			· ·		7 min established
	कम स्थाननाम सामानग्रालाप	:	<b>~</b>	१ सासादन	गुरा स्थान २ जीव समास	r					२ पर्याप्ती ६	1			४ प्रास्त १० कोष्ठक १ प्रमास्त		५ संज्ञा ४

श्री दी द ते ह ते ह के प्राप्त क्षेत्र मान्य देश सामान्य क्षेत्र मान्य द के मान्य के के मान्य क		1																			•					i				
सींदीस स्थान दर्शन कोष्टक नम्बर् स् सातादनी मरकर महासादन कोष्टक नम्बर् स् कि कि काष्टिक नम्बर् स् काष्टिक कोष्टक नम्बर् स्कार प्रवासित के काष्टिक स्थाप स्कार कार्य गीग घटाकर वार्य गीग घटाकर कार्य गीग घटाकर कार्य गीग घटाकर कार्य गीग घटाकर वार्य गीग घटाकर कार्य गीग घटाकर कार्य गीग घटाकर कार्य गीग घटाकर वार्य गीग घटाकर कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य थे कार्य थे कार्य थे कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य का		स्थान	ıs	مه			~		3		$\sim$		,	कोई १ योम						4	काइ १ वद			कोई १' भंग	,		कोई १ कुजान	,		•
सींदोस स्थान दहीन कोटिक नम्बर् ४ ४ ४ ४ ४ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १		सासादन गुण र	g	æ			<b>ઝ</b> ₹			>•	सासादनी मरकर अगिन	काय बायु काय में जन्म	नहीं लेता है	m	-	:	•			ſ				७-५-६ के भंग		पर्या <b>प्र</b> वत्	् २ का भंग			~
सींदोस स्थान दर्शन के प्रहास स्थान दर्शन कि प्रहास के प्रमास है से से प्रमास के प्रमा		cr	050	m	सासादनी मरकर	५ श्राहार पर्याप्ति	तक ही सासादन	मुसा स्थान रह	सकता ह	कोष्टक १ प्रमासा	माहार पर्यापि	तक हो	३ मौदारिक मिश्र	वैकृयक मिश्र	कामांगा ये तीन	काय याग	•			- - - - -	त्र मराठा गामट	सार कमकाड	प्रमास	7 24		,	२ कुर्मात	<u> अश्रीत</u>		~
सींदीस स्थान दर्शन  श्र ४ ४ ४  प्रमास्त्र ४ ४ ४  प्रमास्त्र १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	( & )		<b>ઝ</b>	कोई १ गति।		~	,		c	~			~			,				•	~		_	कोई १ भंग		i				a
지	ا مد		×	>>		~	•			~			%	तियँच ग्रौर मनुष्य में वैक्नयक	काय योग घटाकर ६	नारकी और देव के ग्रोदारिक	काय योग घटाकर				m×.		•	७-५-६ के भंग	कोप्टक १ = प्रमास		३-२ के भंग			11 12 12 12 12 12 13 14 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15
지		स्थान दर्श	m	×	·· · · ·	~	संजी पंचेन्द्रीय		o. (	सज्ञा पचन्द्राय			°~	श्रौदारिक			वैक्रयक मिश्र	काय योग	कारमासा काय	योग घठाकर	m			X		,		, ;	•,	۵
१ मित कोष्ठक १ व काय कोष्ठक १ काय कोष्ठक १ काय कोष्टक १ काय कोष्टक भारत कोष्टक प्रमारा भारत कोष्टक प्रमारा कोष्टक काय कोष्टक काय कोष्टक काय कोष्टक काय कोष्टक काय काय काय काय काय काय काय काय काय का		नौतीस	8	-   ×		ব্			ه مون	≯मार्ख ४			e &			•						~		አ የ	~		ات	1	•	ग्संयम १
			~	इ. मित	•	19 दन्दी पां	कोष्ठक १	)	•	~		•	ह योग	LC							१० वद तान	क्रिव्दिक	₹ ¥ X	११ कषाय	कोष्टक	प्रमास	१२ जान ती	ेकुमति कु सम्बद्धा	92 82 92 93 93 93 93 93 93 93 93 93 93 93 93 93	१३ संयम य

\*

चौतीस स्थान दश्न		क्राध्टक नम्बर २		सामदन गुण स्थान	
m	>>	ν.	US		ព
6	P.	कोई १ दर्शन	6	6	कोई १ दर्शन
υν <sup>-</sup>	३-६-१-३-१ के भंग	कोई १ लेखा अपने	ऋपयिषि	-१ के संग	
प्रमास पर्याप	तीन का भंग नरक गति में	अपने स्थान प्रमासा	म्बस्या में		कोठा नं०७ में से
अवस्या में	172	विशेष विगत मराठी		० सासादनी मरकर	
***		सार कम का		नरक में नहीं जाता	
	गांत म	र १२ स २६६ तक दल।	•	३ का भग तियच गति म	
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१ का भग भवनत्रक दवा म			E)	
	त्र क्रांग्य क्रवा स्वायी	* 4		म् का भग मनुत् गात म	
	देवों में पीत पदम			३ का भूग भवनत्रक देवों में।	**************************************
•-	युक्ल	**************************************		कृष्ण नील कापीत	
រេ	१ का भंग कल्पातीत			३ का भंग कल्पवासी	
	ग्रहमीन्द्रों में गुक्ल	•		देवों में पीत पदम	,*
<b>୭</b> ⊁	लेक्या १ भ			म्रौर गुक्ल	
मौदारिक				१ का भंग कल्पातीत	
मिश्र				महमेन्द्रो में गुक्ल	
वेक्रयक मिश्र			,		 
ं कारमास ये		- - - -			•
तीन काय योग	- <del>-</del>			चिङ्दा तियचा म	•
घटाकर				कृत्या नाल कापात	
				1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	
~	~	~	~	•	~
भन्द हो				1	•
**************************************	~	~	o	~	•
~ 4	~	25		एकेन्द्री से असंशी पचन्त्री	कोई अवस्था
मा प्रभा छ।		- - - -		तक असभा मंजी पंचेत्दी संजी	٠.

सासदम गुण स्थान	<b>a</b>	का भंग विग्रह गति में अनाहारक का भंग निवृति पयिष अवस्था में आहारक ४ कोई १ उपयोग	न कोई १ ध्यान	o - ३३ - ३४ - ३४ - ३६ - ३७ ४० - ३६ - ३८ के मंग ० का भंग सासादनी मरकर का कोई १ भंग नरक में नहीं जाता ३३ का भंग एकेन्द्रीय तिरयंच अञ्चत ७ कराय २३	योग ३ का भंग दो इन्द्रीय के अवृत ट गिनकर का भंग तेइन्द्रीय के अवृत को गिनकर ६ का भंग चौंइन्द्रीय के अवृत १० गिनकर	का भग असंज्ञा पर्चन्द्राय .के अवृत १९ गिनकर का भंग संज्ञी पंचेन्द्री तिर्धेच मनुष कर्म
ःसास	U9°	« «	माम बर्गिक्	४०— अवृत १२	योग ३ ३४ का भंग दो इन् ५१ का भंग तेइन्द्रं को गिनकर ३६ का भंग चींड अवृत १० ि	३७ का भग भर के अवृत १ ४० का भंग संइ तिर्यं मन
३६ ) नम्बर्	'n	१ कोई १ उपयोग	कोई १ ध्यान	१ समय के भंगों का वर्शनकोण्टक १६ से १६ तक देखो		
, कोष्टक	Ж	۶-۷ کی ۱۳۰۰ × ۲۰۰۰ کی تبتر ۲۰۰۰ ۲۰۰۰ ۲۰۰۰ ۲۰۰۰ ۲۰۰۰ ۲۰۰۰ ۲۰۰۰ ۲۰	े का मंग कुश्रवाथ शांत घटाकर १ते २२ गुरा १ कीं मंग कुश्रवधि ज्ञान जोड़कर १ से ४ गुरा इ	६-४५ के धंग नरक गति में २२ कषाय २३ संशी पंचेन्द्रा	तियन आर मनुष क अवृत १२ कषाय २५ वीग ६ कोब्टक १७ १	
स्थान दर्शन	m²*	अनाहारक हो ५	น	४७ श्रौदारिक मिश्र वेक्डयक मिश्र कारमासा ये	वटाकर्	
चौतीस	કે કે	१६ आहारक अनाहारक आहारक २० उपयोग	कुमता कुनुता कुन्नविध ३ कुन्नान चक्षु मचक्षु दो दर्शन २१ घ्यान	काष्टक १ प्रमासा २२ श्राश्यव ५० कोष्टक नं० १ में १ मिथ्यात घटाकर		

	n	१७ का कोई १ मंग पर्याप्त करना
सासादन गुण स्थान	9	श्वत १२ कपाय २५ योग ३ ३६ का भंग भीय भूमियां मनुष्य त्रीपंच के नपुंसक वेद घटा-कर ३६ का भंग तथा पही ३६ का भंग तथा १६ स्वर्गों तक के देवों के भी होता है ३८ का भंग कल्पातीत अहमीन्द्रों के स्त्री वेद भी वट जाता है २८ कीई तीन गित घटाकर
	W	३१ कुथ्रवधि ज्ञान घटाकर
( ३७ ) कोष्टक नम्बर २	γ,	१७ का कोई १ का भंग कोण्टक नं० १ व प्रमाया
	>>	२६ कोई ३ गति घटाकर
चौतीस स्थान दर्शन	w.	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
चौतीस	2	३२ दर्शन २२ जिस्या ४ प्रज्ञान १ भव्यत्व १ भव्यत्व १
	~	२६ भाव

3

वंध प्रकृति १०१ कोष्टक नं० १ की वंद्य योग ११७ प्रकृतियों में से मिथ्यात १ नपुंसक वेद १ नरक गति नरक गत्यानुपूर्वी नरक शायु २४ एकेन्द्री यादि जाति ४ हुन्डक संस्थान १ सुपाटिक सहनन १ यातप १ साथारत्। सुक्ष्म अस्थावर अपयिपि ४ ये १६ घटाकर शेष १०१ का

उदय प्रकृति १०६ कोष्टक नं० १ की उदय योग ११७ प्रकृतियों \_में से मिथ्यात १ एकेन्द्री यादि जाति ४ नरक गत्यानुपूर्वी १ यातप १ सांधार्सा सुक्ष्म अस्थानर अपयति ४ मे ११ घटाकर क्षेष १०६ का उदय होता है ये मान्यता श्राचारीय यतीचुषभा ग्राचार्य मत के ग्रनुसार है

परन्तु भूतवती म्राचार्य महाराज य्रपयिप श्रवस्था में स्थावर १ एकेन्द्री म्रादि जाति ४ का उपय भी स्रपर्याप के माहार पर्याप तक सत्ता १४५ कोष्टक नं० १ की १४८ की सत्ता प्रकृतियों में से याहारक द्विक २ और तीर्थकर १ की सत्ता वाले जीव सासादन गुरा स्थान मे

क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग ।

स्पर्शन लोक का ग्रसंख्यातवां भाग ।

w.

यन्तर नाना जीवों को ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं १ जीव की ग्रपेक्षा ग्रर्ध पुगदल परावर्तन काल । काल नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्व काल १ जीव की ग्रपेक्षा १ ग्रांवली से ग्रन्तमुँहुर्त काल ।

योनि कोण्टक नं० १ की चौरासी लाख योनि में से मृग्नि काय ७ लाख ग्रीर वायु काय ७ लाख कुल १४ लाख घटाकर शेष ७० लाख काररा

कुल १८६३ लाख कोटि कोष्टक नं, १ के १६६<sup>५</sup> लाभ को में से ग्रनि काय ३ लाख कोटि वायु काय ७ लाख कोटि घट जाते हैं काररण इनमें

3

3

s m

दश्न
स्थान
ग्रीतोस
The

m	
नम्बर	
विदक्	•
16	

e m

वावास ।	चावास स्थान दश्म	म्बर् ३	मिश्र गु	मिश्र गुण स्थान
क० स्थान नाम सामान ग्रालाप	ाप पर्याप्त			त्रपयित
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव अपेक्षा नाना समय में	एक जीव भ्रपेक्षा एक समय में	
\$	m	>	מל	7 2-0-3
१ गुए स्थान मिश्र १	१ मिश्र गुरा स्थान चारों गतियों में हरेक में जानना	~	~	
२ जीय समास संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त		~	~	सुचना—इस मिश्र गुरा स्थान में मररा नहीं
म्यापि को० नं० १ देखो	हें चारों गतियों में झरेक में	ŲΥ	US*	हीता । (देखो मो० क० मा० ५४६) तथा यहां
	६ का गंग-को० नं० १६ से १६ के समान			-
, अस्स को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में. हरेक में	0 &	0 &	ानश कायथाता, या व - कृयक मिश्रकाय योग की
४ मंजा	٠٠ ٦٠	***************************************		या कार्मास्स काय योग इनकी सबस्थारे नहीं
को० नं० १	४ चारों गतियों में हरेक में	>>	>>	ग्रापान इसलिये
६ मित	४ का भंग-को० नं० १६ से १६ के समान		<b>***</b> *********************************	ग्रवस्था नह नेः कः
को० नं० १ हेबो	४ चारों गति जानना	१ गति चारों गति में से	१ गति ४ में से कोई १ गति	2
७ इन्द्रिय जाति १ पंचेन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति चारों गनिगों से बनेट से जनकर	कोई १ मनि १	•	
	ं त्यान १ वसकाय १ वसकाय चारों गतियों में हरेक में जानना	~	~	
१० । मनीयोग ४ वचनयोग४	स्री काग्रामा मन्द्र	१ मंग	१ योग	
भीर काययोग १ वै०काय	नार गापना पा प ० कायवाग घटाकर (१) नारों गतियों में हरेक में	िका भंग जानना को० नं० १६ से १६	ह के मंग में से कोई १ मोम जनजन	,
याग १ य ६० याग जानना	ह का भग-को० नं० १६ से १९ समान जानना	देखो	को० नं० १६ से १६ देखी	

-	चौतीर	( ४० ) चौतीस स्थान दर्शन	० ) नम्बर् ३	सासादन गुण	गुण स्थं।न
~	~	mr .	>>	×	<u> </u>
१० वेद कोठ नं० १	२ वेखो	२ (१) नरक गति में—१ नपुंसक वेद जाननना	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो	
		नाउ नुरु दुंबा (२) तिर्यंच —मनुष्य गति हरेक में ३–२ के भंग को० नं० १७–१८ देखो (३) वेद गति में — २–१ के भंग को० नं० १९ हेखो	कोंऽ नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो	
११ कषाय श्रमंतानुबंधी कपाय ४ घटाकर शेष <b>२</b> १ जानना	२१ वाय ४ जानना	२१ (१) नरक गति में – १६ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच—मनुष्य गति में हरेक में २१-२० के भंग को० नं० १७-१- अस्से	सारे को० नं० को० नं० १	भाग नव १६ दखा १ भंग कोव नंव १६ देखो कोव नंव १७—१८ देखो	
		(३) देव गति में	को नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	
ो० मं०	१ देखो	१ का भंग को० नं० देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ से १६ देखो	
	रू श्रसंपम	<u></u>	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	
९० दश्त को० नं० १६ १७ केटमा	० देखें तेखो	को० नं०	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ से १६ देखो	
ै म भ ०	व वा व	ह — ३ का मंग को० नं० १६ देखो व्य गति में हरेक में ६–३ के मंग नं० १७–१८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखों को० नं० १७–१८ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो को० नं० १७—१८ देखो	` `
	~ ~~	जे नं १६	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	
१६ भव्यत्व	भव्य	१ चारों गतियों में, हरेक में भव्य जानना को० न० को १६ से १६ देखो	को० न० १६ से १६ देखो क	१ को० न०१६ से १६ देखो	

,

स्थान	い…の一か	,	f	·					•			
सासादन गुण स्थ	×	को नं ०१६ से १६ देखो	१ को नँ० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	कोई १ उपयोग को न० १६ से १६ देखो	कोई १ घ्यान को नं० १६ से १६	१ भंग को नं० १६ देखी	को नं० १७–१८ देखो	को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	को नं० १७१ द देखो	को नं० १६ देखो
m.	<b>&gt;&gt;</b>	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं०१६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ तेखो	कोई १ भंग को नं० १६ से १६ देखो	ह का १ भंग को नं० १६-१६ देखी	सारे भंग को नंंं १६ देखो	को नं १७-१८ देखो	को नं० १६ देखो	सारे भंग को न० १६ देखो	को नं० १७-१८ देखो	को नं०.१६ देखो
कोष्टक नं उ	m.	३ चारों गतियों में, हरेक में १ मिश्र जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ चारों गतियों में, हरेक में १ संज्ञी जानना को नं० १६ से १६ देखें।	१ आहारक चारों गतियों में, हरेक में १ आहारक जानना को नं० १६ से १६ देखो	४-६ के मंग चारों गतियों में, हरेक में ६ का मंग को नं० १६ से १६ के मुजिब जानना	ें चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को नं० १६ से १६ के मुजिब जानना	४३ (१) नरक गति में—४० का भंग को वर १६ के गतिवस जाववा	्र भ प्राथन थाना। (२) तियं च—मनुष्य गति हरेक में ४२-४१ के भंग को नं० १७-१ द के मुजिब जानना	(३) देव गति में—४१-४० के भूग को नं॰ १६ के मुजिब जानना	३३ (१) नरक गति में—-२५ का भंग को नं, १३ के प्रसिंग जानना		त में नि
चौबीस स्थान दशीन	or .	१७ सम्यक्त्य मिश्र	१८ संजी संजी	१६ म्राहारक माहारक	२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३ दर्शनोपयोग ३	२१ घ्यान श्रातेष्यान ४, रौद्रघ्यान ४, श्राज्ञा विचय धर्मेष्यान १ ये ६ घ्यान जानना	२२ श्रास्तव मिथ्यात्व ५, श्रमंतानुबंधी स्वारस्य ८ स्वार	कथाय ८, आ० ामअकाय योग १, झा० कायद्योग १, झौ० मिश्रकायद्योग १,	व० मिश्रकायद्योग १, कामगिषकायद्योग १ ये १४ गटाकर ४३ ब्रान्नव जानना	२३ भाव कुझान ३, दर्शन ३, स्रहित ५, संसि ४, सिसा ३	~ h	भ मार्च जानना भ

%

(मराब्री
लिला है।
के अनुसार
18
530-538-55
मा॰
ie.
मी०
Įū.
। परन्तु यहां मो० क० मा० द२
<b>मुचना</b> —इस मिश्र स्थान में कोई श्राचार्यं श्रवधिदर्शन नहीं मानते हैं। गो० क० कोष्टक नं० २३४ देखों)।

**प्र**वगाहना—कोष्टक नम्बर १ के मुजिव जानना परन्तु यहां उत्कृष्ट य्रवगाहना महामत्स्य की जानना, विशेष खुलासा को नं० १६ से १६ देखो । वंघ प्रकृतियां—७४, ज्ञानावरस्तीय ४, दर्शनावरस्तीय ६ (निद्रानिद्रा, पचलाप्रचला, स्यानग्रद्धि ये ३ महानिद्रा घटाकर ६) मोहनीयकषाय १६ (अनंतानुबंधी कषाय ४, नपुंसक वेद १, स्त्री वेद १, ये ६ घटाकर १६) वेदनीय २, नाम कर्म के ३६ (मनुष्य गति १, मनुष्य-गत्यानुपूर्वी १, देवगति १, देवगत्यानुपूर्वी १, पंचेन्द्रय जाति १, श्रौदारिक शरीर १, वैक्रियिक शरीर १, तैजस शरीर १, कार्मास्स शरीर १, श्रौदारिक ग्रंगोपांग १, व० ग्रंगोपांग, समचतुरस्नसंस्यान १, वज्जवृषभ नाराच संहनन १, निर्मााग १, स्पर्शादि ४, प्रशस्त विहायीगति १, अगुरुलघु १, उपघात १, परधात १, रुवासोच्छवास १, प्रत्येक १, वादर १, वस १, पर्याप्त १, सुभग १, स्थिर १, ۶

उक्प प्रकृतियां—१०० को नं० २ के १११ प्रकृतियों में से अनंतानुबंघीय कषाय ४, एकेन्द्रियादि जाति ४, तिर्यं च मनुष्य देवगत्यानुषूर्वी ३, प्रस्थिर १ गुम १, प्रगुभ १, मुस्वर १, ग्रादेय १, यशः की*ि.* १, ये ३६) उच्चगोत्र १, ग्रंतराय ५ ये ७४ प्रकृतियां जानना । स्थावर १, मे १२ प्रकृति घटाकर घौर सम्यक्तमिष्य,हत १ जो कर १११-१२ · ६६ 🕂 १ = १०० उदय प्रकृतियां जानना सत्व प्रक्रतियां—१४७, तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर १४७ जानना । 3

्र प्रचना--जिस जीव के ४थे मुएए में तीर्थंकर प्रकृति का वंघ हो चुका है वह जीव उतरते समय में ३रे गुएए स्थान में नहीं ब्राता ।

सख्या---पल्य के ग्रसंस्यातवें भाग प्रमासा जीव जानना।

भैत्र -- ात्प का यसंख्यातवां भाग प्रमासा क्षेत्र जानना ।

स्पर्गन---१६वें सर्ग का मिश्र गुए स्थान पर्याप देव नीमरे नरक तक जाता है इसलिए द राजु जानना । m

काल --नाना जी गें की यपेका यन्तर्में हुर्त में लेकर पत्य के यसंख्य तर्बे भाग तक इस गुरा रूपा में रह सकते है। एक जीव की यपेका यन्त-मुँहर्त से अन्तं मुहर्त तक रह सकता है।

क्रनंतर—नाना जीवों की क्रोझा—एक समय से पत्र के क्रझंब्यातवें भाग तक संसार में कोई भी जीव इस मिश्र गुर्स स्यान में नहीं पाया जाता ऐक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहर्त से लेकर देशोन अर्घ पुद्गाल परावर्तन काल बीतने पर सादिमिथ्या हर्ष्टि के दुबारा मिश्र गुरा स्थान

जाति (योनि) --२६ लाख जानना, नरक की ४ लाख, पंचेन्द्रिय पगु ४ लाख, देवगति ४ ल ख, मनुष्यगति के १४ लाख ये २६ लाख जानना । कुल---१००।। लाख कोडिकुल जानना- नरक गति ६५ लाब कोडिकुल,

देवगति २६ लाख कोडि कुल, मनुष्य गति १४ लाख कोडि कुल, पंचिन्द्रिय तिर्यंच ४३॥ लास कोडि कुल, ये १०८॥ लात कोडि कुल जानना ।

_	
, , ,	
_	

•				ı			•
स्थान		१ जीव के १ समय के	្រ	को नं ० १६. से १६ देखी	१ मो न० १६ से १८ देखो	भंग १ को न०१६ से१६ देखो	१ भंग को न०१६ से१६ देखो
(अविरत्) गुण र	प्ति .	एक जीव के नाना समय के	٩	१ को न <i>े १</i> ६ से १६ देखो	को मं ० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं०१६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो
असंयत (अधि	श्रपयति	नाना जीवों की श्रोका	US	४ चारों गतियों मेंहरेक में १ श्रसंयत गुरा जानना परन्तु तिर्यं च गति में केवल भोग भिष्ट की	जातना कर्मभूमि जातना कर्मभूमि १ ११ हरेक में तियों में हरेक में ० अपर्याप्त जानना तिर्यं च गति में भोग भूमि की	त्री डिपयोग रूप मं हर्रक में नं १६	व गात म क वल भाग भूमि की उपेक्षा जानना ७ चारों गतियों में हरेक में ७ का मंग को नं० १६ से १६ देखो परन्तु तियँच
	,	एक जीव के एक समय में	ゔ゚	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ मंग को नं० १६ से १६ देखो
कोष्टक नं  ४		एक जीव के नाना समय में	>-	को न० १६ से १६ हेवो	को नं ० १६ स १६ देखो	१ मंग को नै०१६ से १६ देखो	१ मंग को न०१६ से १६ देखो
	पयिति	नाना जीवों की प्रपेक्षा	m	ृ चारों गतियों में हरेक में १ श्रसयत गुए। जानना को नं १६ से १६  देखो	१ चारों गतियां में हरेक में १ संजी पं० पर्याप्त जानना को नं० १६ से १६ देखो	ृ चारों गतियों में हरेक में ६ का मंग को नं० १६ से १६ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को नं० १६ से १६ देखो
चौतोस स्थान दर्शन		सामान्य प्रालाप	Cr.	१ श्रसंथत	पर्याप्त में भे	% देखी के	देखों १०
चौतोस		स्यान	a.,	मुग् स्थान	जीव समाम संज्ञी पंचेन्द्रि पर्याप्त क्रौर अपर्याप्ति ये	पर्याप्ति को नं० १ देखो	४ प्रायत् को न०१
				~	0.	lu.	

्र च	चौतोस स्थान दर्शन	<u>tr</u>	भूष ( भूष	४ ) न न ० ४	अस्यत (अ	असंयत (अविरत्) गुण स्थान	पान
~	N N	m	<b>&gt;</b>	メ	UST	9	r
४ संजा को नं	* देखो *	४ चारों रितयों में हरेक में ४ क मांग की नं० १६ से १६ देखो	ृंभंग ४ मतियों में से कोई १ गति जानना	१ भंग को नं० १६ से १९ देहाँ	गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना ४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को नं १६ से १६ देखों परन्तु तियँ व	१ भंग को नं० १६ से १० देखो	१ मंग को न १६ से १६ देखो
६ गति को नं० १ देखो	्र श्रेमी ४	४ चारों गति जानना	१ मंग को नं० १६ से १६ देही	१ गति ४ गतियों मे से कोई १ गति	गति में केवल भोगभूमि की, अपेक्षा जानना ४ (१) नरक गति में-पहले नरक की अपेक्षा जानना (२) तिय च गति, में क	१ गति १ को नं० १६ को पं० १६ देखों को नं० को नं० १७ देखों को नं०	्र मर्ति   पं० १६ देखो   नं० १७ देखो   नं० १८ देखो
·		-			₩ H 100 L	में नः	नं १९ देसी
७ इद्रिय जाति पंचेद्रिय जाति	र्गि १	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेरिय जाति जानन को न० १६ से १६ देखी	को नं० १६ स १६ से थेखो	१ को मं १ १ देखो	भवनिक देवों में ४था  गुर्ण नहीं होता  १  बारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाननः को नै० १६ से १६ देखां परन्तु ति व गति में केवल	भी नं ० १६ से १८ देख	१ को नं० १६ मे १६ देखो
1					जानना		: ;

		( አጹ )				1 1	
चौतीस स्थान दर्शन	शेन	कोष्टक नं०	×	असंयम	(मविरत) मुण स्थान	ुण स्थान	
2	m	>>	<b>2</b> 4	υ <sup>ω</sup> ΄΄	ඉ	ıs	
द काय १ यसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को न० १६ से १६ देः	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को नं० १६ से १६ देखो परन्त तिर्यंच गति से केबल	को नं १६ से १६ देखो	को ने १६ से १६ देखो	
ह योग प्राहार का मिश्रकाय योग १, ग्रा० काय	१० ग्रो० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १,	१ संग	१ योग	(मि की ग्रुपेशा है मिश्र काय योग श्रि काय योग	% म	१ थोग	
रे वदाकर	काया काय याग १ से ३ घटाकर (१०) चारों गतियों में हरेक में ६ का यंग को नं० १६ से १६ देशो	१ मंग को न १६ से १६ देखो	१ योग को नं० १६ से १६ देखो	कामार्थ काय थाग १, ये तीन योग जानना (१) झारों गतियों में हरेक में १-२ के भंग को नं० १६ से १६ देखो परन्तु तियंच गति में केबल भोग	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ योग को न० १६ से १६ देखो	
१० नेद को नं० १ देखो	? (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को नं० १६ देखों (२) नियंच मनत्य गति में	१ भंग को नं० १६ देखो को नं० १७-१	१ वेद को नं० १६ देखो नो नं० १७—१ <sub>ट</sub>	की अपेक्षा जानना २ रक गति में— तक वेद जानना नं० १६ देखो तन्न मित्र में—भेत्म	१ भग को नं० १६ देखो से मं० १७ टेस्सो	१ वेत को मं० विश्वी	
	हरेक में ३-२ के मंग को नं० १७-१ द देखों (३) देव गति में-२-१-१ के मंग को नं० १६ देखो	र्भा १८ देखो को नं० १६ देखो	देखो को नं० १६ देखो	भार थे गारा निनाम में अपेक्षा १ पुरुष वेद नना को नं० १७ देखो मनुष्य देव गति में क में १-१ के भंग को	को नं १९८ देखा १६ देखो		
्११ कपाय अनंतानुवंधी कपाय ४ घटाकर २१	२१ (१) नरक गति में १६ का भंग को नं० १६ देखो	स्वभंग को न०१६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखी	न् १५–१६ दुवा २० स्त्री वेद घटाकर (१) नरक गति में १६ का भंग को नं० १६ देखो	स्व भंग को नं० १६ देखो	्र भंग को न० १६ देखो	

न	ช	१ मंग को नं० १७ देखो १ मंग को नं० १८ देखो १ मंग १ मंग	्रेखो १ शान १ शान १ शान १ शान सेखो १ शान १ शान	् भार को नं० १५ देखो १ ज्ञान को नं० १६	१ को नं० १६ से१६ देखो	१ दर्शन को नं० १७ हेखो
बरत) गुण स्थान	9			सारे भंग को नं० १८ देखी १ भंग को नं० १६ देखी	को नं० १६ स १६ व्यास	१ भंग को नं० १६ देखो
(असंयत अविरत) गुण	U3"	(२) तियंच गति में भोग भूमि की प्रपेक्षा १६ का भंग को नं १७ देखो (३) मनुष्य गति में १६— १६ के भंग को नं० १८ को नं० १८ देखो देखो (४) देव गति में १६—१६-	देखी  3 १ भंग (१) नरक गति में ३ का भंग को नं० १६ को (२) तियंच गति में केवल १ भंग भोग भूमि की ग्रयेक्षा को नं० १७	१७ ५७। (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में ३-३ के भंग को नं० १६ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ क्रसंयम जाननार को नं० १९ से १९ देखी परन्तु तिग्रैच गति में केवल योग भूमि की	अपक्षा जानन। ६ (१) नरक गति में ३ का भंग को नं० १६ देखों
४६ ) नम्बर् ४	×	? भंग को नं० १७ देखो १ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १६ देखो	१ ज्ञान को नं० १६ । ज्ञान को नं० १७ १ ज्ञान	का न० १८ देखा १ ज्ञान को नं० १६ देजो	को नं० १६ भे १६ देखो	१ दर्शन को न०१६ देखो
( ४६ कोष्टक नम्	>	१ भँग को नं० १७ देखी १ भंग को नं० १८ देखी १ भंग १ भंग को नं० १६ देखी	१ मंग न० १६ १ मंग १ भंग १ भंग	का न० १८ देखा १ भंग को नं० १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखा	१ भग को न०१६ देखी
र्चोतीस स्थान दशेन	m	(२) तिर्यंच गति में २१-२० के मंग को नं० १७ देखों (३) मनुष्य गति में २१-२० के भंग को नं० १८ देखों (४) देव गति में २०-१६-१६ के भंग को नं० १६ देखों		भंग को नं० १८ देखों (४) देव गतियों में ३ का भंग को नं० १६ देखों	चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को नं० १६ से १६ देखो	३ (१) नरक गति में ३ का मंग को नं० १६ देखो
चौतीस स्थ	CY		ज्ञान मति–श्रुत–प्रवधि ज्ञान ये (३)		१ श्रमंयम	१६ देखी
	~		१२ ज्ञान मति–श्रुत ज्ञान ये (	•	१३ संयम	१४ दर्शन को नं

(४७) कोष्टक नं ०४ असंयत (अविरत) गुण स्थान ४	-	१ भंग १ दर्शन ते १७ देखो मीपभूषि की भ्रपेक्षा को ने १७ देशो को ने १९ दर्शन मीपभूषि की भ्रपेक्षा को ने १७ देशो को ने १९ देशो १ दर्शन हे छो को ने १९ देशो के में भा को ने १९ देशो को ने १९ देशो के में को ने १९ देशो के में को ने १९ देशो ने १९ देशो को ने १९ देशो ने १९ देशो को ने १९ देशो ने १९ देशो को ने १९ देशो ने १९ देशो को ने १९ देशो ने १९ देशो को ने १९	१ १ १  को नं० १६ से १६, को नं० १६ से चारों गतियों में देखों १६ देखों भंड्य जान- १६ से १६	को अपक्षा जानना सारे भंग है सम्यक्त्व है सम्यक्त्व है सम्यक्त्व है को नं १६ देखो हो सम्यक्त्व को नं १६ देखो हो है है
चीतीस स्थान दशैन	m · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	(२) तियंच गति मं ३-३ के भंग को नं० १७ देखों भंग को नं० १७ देखों भंग को नं० १८ देखों भंग को नं० १८ देखों भंग को नं० १९ देखों भंग को नं० १८ देखों भंग को नं० १८ देखों भंग को नं० १८ देखों भंग को नं० १९ देखों के भंग को नं० १६ देखों के भंग को नं० १६ देखों	१६ भव्यत्व १ वारों गतियों में हरेक में १ भव्य भव्य वातना को नं॰ १६ से १६ देख़ो	१७ सम्यवस्त्व ३ उपयाम-क्षायिक क्षयोनसरामसम्यक्त्व से ३ जानना

चौतोस स्थान दर्शन	m	मोरहका	४० )	असंयत (अ	असंयत (अविरत) गुण स्थान	स्थान
(२) तियँच गति में भंग को नं० १ (३) मनुष्य गति में भंग को नं० १ भंग को नं० १ भंग को नं० १	त में २-३ के १७ देखों 1 में ६-३ के १८ देखों २-३-२ के	? भंग को नं० १७ देखी सारे भंग को नं० १८ देखो सारे भंग को नं० १६ देखो	<ul> <li>१ सम्प्रकल्व</li> <li>१ प्रक्ति</li> <li>१ सम्प्रकल्व</li> <li>१ सम्प्रकल्व</li> <li>१ सम्प्रकल्व</li> <li>श सम्प्रकल्व</li> <li>श सम्प्रकल्व</li> </ul>	~	१ भंग को नं० १७ देखी सारे भंग को नं० १८ देखो	<ul> <li>१ भंग</li> <li>१ सम्प्रक्त्व</li> <li>देखो</li> <li>सारे भंग</li> <li>१ सम्प्रक्त</li> <li>को नं० १८ देखो को नं० १८ देखो</li> </ul>
१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना काँ नं० १६ से १६ देखो	रक में देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६देखो		सारे को नं॰ को नं॰ १६ है	भंग १ सम्पक्तव १६ देखोको ने० १६ देखो ११६ से को नं० १६ से देखो १६ देखो
४ चारों गतियों में हरेक १ श्राहारक जानना को न० १६ से १६ देखी	हरेक में तन। ९ देखी	को नं० १६ से १६ देखो	१ की नं० १६ से १६ देखी	भाग भूग्त का अपक्षा जानना २ चारों गतियों में हरेक में १-१ के भंग को नं०१६ से १६ देखो जरन्तु तियैच मिन्न में सेनल भीम भिन्न	दोनों, अवस्या को न० १६ से १६ देख	१ अवस्था को नं० १६ से १६ देखो
६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को नं० १६ से १६ देख	हरेल में १६ देखो	श्रमं को नं  १६ से १६ देखो	१ उपयोग को नं० १६ से १६ देखें		१ मंग को नं० ९६ से १९ देखा	१ उपयोग को नं० १६ से १६ देखो
मूचनाः—अवधि दर्शन में मरए। हो सकता है। परन्तु		मनुष्य और कल्प-	 वासी दवों में हो	कवन भाग भूमि का श्रपेक्षा जानना जम्म लेगा । (देखो गो०	क्रा ३२४-	(xče)

	स्थान	រេ	१ ध्यान को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग	भंग १ को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १७	देखो १ भंग को नं०१६ देखो	् मंग होत्तं १६ देखो १ भंग भोनं ०१६	देखो १ <b>मंग</b> मं० १७ स्टेक्सो
	(आंबरत) गुण स्थ	່ ໑	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ को मं० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो	भंग ० १८ देखो गंग	को मं मं भं	्रभंग सोस्ट १७ भेटी
-	असयत (आ	w	ह अपाय विचय धर्म त्यान घटाकर (६) चारों गतियों म–हरेक में ६ का भंग को नं० १७	त १६ दला परन्तु तिथ- च गति में केवल भोग भूमि अपेक्षा जानना ३६ मनोयोग ४, वचन योग ४ औं का योग १ से १६ घटाकर (३६)	(१) नरक गति में ३३ को नं २१६ देखो (२) तियँच गति में भोग भूमि अपेक्षा ३३	中事共通	(१) १३-३३-३२ के भंग को नं० १० देखों ३६ (१) नरक गति में २७ का भंग को नं० १६ देखो	(२) तियँच गति में भोग भिम की सरोक्षा २५ का
		አ	१ च्यान को न० १६ से १६ देखो	१ भंग	१ मंग को नं० १६देखो १ मंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं०१ न देखो १ भंग	को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं०१७ देखो
	काष्ट्रक न० ४	>>	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	भं	१ मंग को न० १६ देखो १ मंग को नं० १७ देखो	१ भग को नं० १८ देखो १ भंग	को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो
	-	m	१० नारों गतियों में हरेक में १० का भंग को न १६ से १६ देखो	४३ ऋौे मिश्र काय योग वै० मिश्र काय योग १ कर्माण् काय योग १ ऋगक्तर योग १	क गति में ८ ि १६ देखो च गति में १ ो नं० १७ दे	(३) मनुष्य गति में ४२-४१ के मंग को नं० १८ देवो (४) देवगति में ४१-४०-४०	के भंग को नं० १६ देखो ३६ (१) नरक गति में १८-१७ के भंग को नं० १६ देखो	(२) तियँच गति ३२-१६ के मंग को नं० १७ देखो
בישע היופה היובינת	नातात त्याम व्याप	~	ध्यान १० प्रातं ध्यान ४ रीद्र ध्यान ४ प्राज्ञा विचय १ भ्रपाय निचय १	श्रास्तव ४६ मिथ्यारव ५ स्रनंतानुवंध किवाय ४ आ० मिश्रकाय योग १	ये ११ घटाकर (३६)		भाव उपशम सम्यक्त्व १ झायिक सम्यक्त्व १ जान ३. दर्शन ३	डेघ म्यक्त्व '
			<u>~</u> «-	or &			er er	

1,00

चातास स्थान दश्रम	7.	कोष्टक नं० ४	≫	अस्	असंधम (अविरत)	जाण स्थान
~	m	>	-			9
	r	۰	<u>ح</u> ر	υ¥	9	រេ
गति ४, कषाय ४, लिग ३, लेश्या ६, असंयम १, ग्रज्ञान १, प्रसिद्धत्व १, नीवत्व १, भव्यत्व १ ये ३६ भाव जानग	(३) मनुष्य गति में३ ३-२६ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में २६-२६- २६-२५ के भंग को नं०। १६ देखो	१ भंग को नं०१ द देखो १ भंग को नं०१६ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १६ देखो	भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३०-२५ के भंग को नं० १० देखो (४) देव गति में ०-२० -२६-२६ के भंग को नं० १६ देखो	१ मंग को नं० १८ देखो को नं० १८ १ मंग को नं० १६ देखो को नं० १६	१ भांग को नं०१८ देख १ भंग हो नं०१६ देख

उदयप्रकृतियां—१०४. को नं० ३ के १०० प्रकृतियों में सम्यमिथ्यात्व घटाकर,सम्पक्पकृति १ यौर यानुपूर्वी ४ जोड़कर १००-१–६६ 🕂 ४ =१०४ वंध प्रकृतियां—७७ कोप्टक नम्बर ३ के ७४ प्रकृतियों में तीर्थंकर प्रकृति १, मनुप्यायु १, देवायु १ ये ३ जोड़कर ७७ जानना । अवगाहन-को नं० १६ से १६ देखो । उदयप्रकृति जानना । ۶ ۲

सित्व प्रकृतियां—१४६. उपशम सम्यक्त्व की ग्रपेक्षा १४८ जानता क्षायिक सम्यक्त्व की ग्रपेक्षा १४१ जानता ग्रथित ग्रनंतानुबंधी कपाय ४, मिथ्यात्व ३ (मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्ष्प्रकृति) ये ७ प्र० घटाकर १४१ जानना ।

संख्या---पत्य के असंख्यातने भाग प्रमास् जानना।

2

क्षेत्र---लोक का श्रसंब्यातवां भाग प्रमास् जानना ।

स्पशंत---नाना जीवों की अयेक्षा--सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा-- राजू प्रमाग् जानना ।

३२──गंनर──नाना जीवों की श्रपेग्ना कोई श्रन्तर नहीं पड़ता एक जीव की अपेक्षा──प्रम्यक्त्व छुटने के वाद श्रन्त भुहूते से लेकर देशोन श्रर्थपुद्गल परावर्तन काय---नाना जीवों की ग्रपेक्षा---सर्वकाल जाना । एक जीव को ग्रपेक्षा---ग्रर्स मुहर्न काल से = वर्ग ग्रविक ३३ सागर काल प्रमाण् जानना ।

काल तथा अन्तर पड सकता है।

फुल---१०=॥ लाख कोटि कुल जानता । विशेष इलासा को नं० ३ में देबो । जाति (योगि) २६ लाख जानना, विकोष ख्लासा को नं० ३ में देखो ।

चोंतीस स्थान दर्शन	गान दशैन भीरटक नवर ४	<b>ተ</b> ሂ	देश संयत गुण स्थान	स्थान में
क्र स्थान नाम सामान अल्लाप	पयिपि			घपयीत
	नाना जीवों की श्रयेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक - समय में	
~ ~	er e	>>	7.	±-6)-3
१ मुरा स्थान देश संयत	१ देश संयत (संयता संयत या देश वत) तियंच शौर मनुष्य गतियें जातमा को ने १०-१८ हेलो	१ को नं० १७-१= देखो	१ को नं० १७-१  देखो	सुनना — इस देश संयत गुगा स्थान
२ जीव समास संजी पं० पर्याप्त	१ संसी पंचेन्द्रिय पर्याप्ति श्रवस्था दोनों गतियों में को नं० १७-१८ के मिजव	१ १ अ.१ स्वा	8) 4.0 810. 817.	म विश्वह गांत ग्रार ग्रौदारिक मिश्र काय योग
३ पर्याप्ति को नं० १ देखो	**	१ भंग १ मां ६ का भंग		योग की म्रवस्थायें नहीं   होती इसलिये यहां
४ प्रासा को नं १ देखो	को नं० १७-१८ के मुजिव १० तियैच घोर मनस्य गतियों में हरेक में १० का भंग	को नं० १७-१८ देखो १ भंग १० का भंग	को नं० १७-१८ देखो १ भंग १० सर गंग	अवयपि अवस्या नही है. (देखों गों० क० गां०
४ संज्ञा को नं० १ देखो	को नं० १७-१८ के मुजिब ४ तिर्यंच कीर मनस्य गनियों में दरेक में ४ का भंग	को नं  १७-१५ देखो १ भंग ४ का भंग	को नं ९७-१८ देखो १ भंग ४ भंग	/ V C F Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y Y
६ मति तियेच, मनुष्य गति	को नं १७-१८ के मुजिब २ तियंच और मनुष्य में दोनों गति जानना	को नं० १७-१८ देखो १ गति दोनों में से कोई १ गति		
७ इन्द्रिम जाति पंचेन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति दोनों गतियों में हरेक में को नं० १७-१८ के मुजिब	को नं० १७-१न देखो १ को नं० १७-१न देखो	को नं० १७-१न देखो १ को नं० १७-१न देखो	,
द काय १ त्रस्काय	१ पर्वान्द्रयं जाति १ चसकाय तियम श्रीर मनुष्य गतियों में हरेक में १ चसकाय जानना को नं० १७-१८ देखों	१ को नं० १७-१= देखो	१ को नं० १७-१ न देखो	

चौंबीस स्थान दश्नेन	( ५२ ) कोष्टक नं० ५	St	THE PERSON OF TH	į
er ex			7 50 NF NF 1	वान
		>>	*	ह-०- <u>इ</u>
८ <b>गोग</b> मनोयोग ४, बचन	10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1	१ भंग	٥ بنا	
योग ४, श्री० काय शोम १ में जनन	ार्ष प्रशास मनुष्य गातया म हरक में ६ का भंग को नं० १७-१ न के मुजिब	ह का भंग को नं० १७ में १० टेक्से	w	
१० वेद भागा	m			
की न० १ देखो	तियंच शौर मनुष्य गतियों में हरेक में ३ का भंग	१ भग ३ का भंग को नं० १७-	տ Ք	
	ना नंद १७ त १६ के मुचिब	१८ देखो		
१९ कथाप सम्मानमंदी नम्मन		.ļ.	को नं १७ से १८ देखो	
जनतातुवना कषाय ४, श्रप्रत्याख्यान कषाय ४	(१) तियंच गति में १७ का भंग	तार मग को नं० १७ देखो	१ भग	
ये न घटाकर (१७)	की नंश १७ के मुखिब (२) मनहम मन्द्र में १०	सारे भंग	१ भंग	
१२ मान	११) गुरुष गात म १७ का मुम	को नं० १८ देखो	को नं० १७-१ न देखो	
का न०४ देखा	तियाँच और मनुष्य गतियों में हरेक में ३ का भंग	१ भग को नं० १७-१- ≯को	१ शान	
१३ संयम	भान० १७ १० के मुजिब १ हेब्रमांगा (संसम्भार्ते		ना न० १७-१म दिल्ली	
देश संयम	रेक में १	~ .	~	
१४ दर्शन	देखों १ ५५। तथम	की नं० १७१८ देखो	को नं० १७ १८ देखो	
को नंऽ ४ देखो	· it	१ भंग	१ दर्शन	
१ ४ लेख्या	को नं० १७-१८ के मुजिब	को नं० १७-१८ देखो	को नं० १७-१७ देखो	
तीन शत्रु लेश्या जानना	1 	१ भंग	१ लेडमा	
१६ भव्यत्व	का भग	को नं० १७-१८ देखों	को नं० १७-१ द देखो	
भटप हेंच		~	8	
१७ सम्पक्त्व ३		को नं० १७-१ न वो	को नं० १७–१ न देखो	
को नं० ४ देखो	रे (१) तियंच गति में २ का भंग को नं०१७ रू	१ भंग	१ सम्यक्त्य	
	मृजिब	का न० १७ देखो	को नं० १७ देखो	

चातीस स्थान दशन		कोष्टक नं० ५	ध्या संयत	त गुरा स्थान
~	m	<b>%</b>	×	<b>ర−</b> ၅−ప
	(२) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग अने असे	१ :सम्यक्षत्व	
	१ संजो		कार पर देवा	
संग	तियच और मनुष्य गतियों में हरेंक में जानना को० नं० १७-१८ देखो	ना   को० नं० १७-१न देखो	को० नं० १७-१८ देखो	,
{े महारक महारक	१   सिग्रेंच ग्रीर मनक्ष्य गति	1	~ ;	
			काठ नेठ १७-१ प्रवास	
२० उपयोग १०	; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ;	१ भंग	१ उपयोग	
का० न० ४ दखी	तिथन श्रीर मनुष्य गतिया में हरक में ६ का भूग   कोर्न १७-१८ के समान	नि   को० नं० १७-्ट देखो	को० नं० १७-१ न देखो	,
२१ ध्यान ११		१ भंग	% ह्यान	
कों नं ४ में विषाच-	तिर्यन और मनुष्य गि	को० मं	को० नं० १७-१ न देखो	
विचय धम ध्यान जोड्कर			•	
नि जीनना				
र्र आस्ति	ر الله الله الله الله الله الله الله الل	सारे भंग	१ भग	
अवरत ११ (।हसक क विषय	तियव आर सनुष्य गाति म हर्स	म   को० नं० १७-१८ देखो	. कों० नं० १७-१८ देखों	
पे ११) प्रत्याख्याम क्याय	5 0 0 0 0			
४, सज्यलन कपाय ४,				
नो कपाय ६, मनोयोग ४,	~~~			•
वचनयोग ४, ग्रीदारिक				
काययोग १ ये (३.)		:		-
जान ।				
३३ भाव ३१		माने भंग	, n	
उनशम सायिक सः २, शान ३,		मो० नं० १७ देखो	( 44 ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) (	
दशन ३, लिंग्च ४, क्षयोप	(१) तियैच गति में २६ का भंग सामान्य के ३१			
शम सम्यक्त १, संयमा	भंग में से क्षायिक सस्यक्त मनुष्य गति १.	ক		•
सयम १ मनुष्य गरि १,	दो घटाकर २६ का भंग कों० नं० १७	A&		
्रहयन् गति १, कपाय ४	ममान जानना			

er 54

•		
,	١.	3
1		į
_	•	•
_		

देश संयत गुरा स्थान	당-g-j ;	१ मंग को० नं०१८ देखो	यु १, स्रौदारिकद्विक २, वज्त्रवृषभनाराच	प्रकृतियों में से अप्रत्याख्यान कपाय ४, नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियकद्विक २, वि: कीर्ति १, मनध्यगत्यापवर्डी १ निर्मेन मनमन्त्रात्ति ०, के ०,० सम्भी १, सनस्याप्त	্ত স্থান্ধ। ঘ্তাক্ত্ত্ব জান্দা।	सम्यक्त्व की श्रपेक्षा को० नं० ४ के १४१			राजु मध्य लोक में मरसांतिक समुद्घात	जितिमा । एक बीव की सरोधन महर्ममन्त्रें से केन्स्य केन्स्य नाम्कर्ता ।	लगर दशान एक काटिपूब तक दशवृत में रह सकता है। देशोन ग्रर्थ पुद्गल परावर्तन काल गये पीछे निरुचय रूप से		T) ' लाख कोटिकुल से ५७॥ लाख कोटिकुल	-
<b>.</b> 5'	· <b>&gt;</b> ~	सारे भंग को० नं० १८ के समान	८, मनुष्यद्विक २, मनुष्य-म्रा	य ४, नरकद्विक <sup>े</sup> २, नरकायु <sub>निर्मं</sub> च महापत्नाक्ष ० भ	, राप प गरपागुप्रमा १, प ४६—१==१४७ जानना				एक जीव की अपेक्षा ६	ייי יילייל ראילי עי "אנחים	ग्यात्यपुर्वति स्थानि यन् प्रमान् प्रमान् अन्तमुहूर्वसि देशोन झर्ध पुद्गार	4	॰ पाल <b>प १</b> ८ लाल जानन टेकुल, ग्रौर मनुष्य के १४	
( ५४ कोष्टक नं०	m	(२) मनुष्य गति में ३० का भंग सामान्य के ३१ के भाग में से तियैंच गति १ घटाकर ३० का भंग को० नं० १८ के समान जानना	क्षवगाहना—को० नं० १७-१८ देखो । वध प्रकृतियां—६७ को नं० ४ के ७७ प्रकृतियों में से ग्रप्राक्यान कवाय ४, मनुष्यद्विक २, मनुष्य-त्रायु १,  ग्रौदारिकद्विक २, वज्जवृषभनाराच संहतन १, ये १० घटाकर ६७ जानना ।	L.Y	उपराम सम्यक्त्व की श्रपेक्षा नरकायु १, घटाकर १४६-१=१४७ जानना ।	सुचनाः—यदि नरकायु सत्ता में हो तो असे पंचम गुर्सा स्थान ग्रहस्स नहीं कर सकता है । १४०–क्षायिक प्रकृतियों में से नरकायु १ घटाकर १४० ।	संख्यापत्य के श्रसंख्यातवें भाग प्रमास्य जानना।	। तिने भाग प्रभारा जानना ।	स्पर्धन—नाना जीवों की ग्रपेक्षा लोक के ग्रसंख्यातवें भाग प्रमाएा जानना ।  एक जीव की ग्रपेक्षा  ६ राजु मध्य लोक में मरराांतिक समुद्घात वाला १६वें स्वर्ग की उपपाद शब्या को स्पर्ध कर सकता है ।			जाति (योनि)—१६ लाख जानना (तियँच पंचेन्द्रिय पञ 🗴 लाख मनता 🦦 नाम हे 🌊 🚃	फुल – ५७॥ लाख कोटिकुल जानना । (पंचेन्द्रिय तियैंच में ४३॥ लाख कोटिकुल, प्रौर मनुष्य के १४ लाख कोटिकुल से ५७॥ लाख कोटिकुल जानना)	
चौतीस स्थान दर्शन	α·	लिंग ३, शुभ लेक्या ३, प्रज्ञान १, प्रसिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये ३१ भाव जानना	श्रवगाहना—को० नं० १७-१८ देखो । वध प्रकृतियां—६७ को नं० ४ के ७७ संहतन १, ये १० घटाक	उदय प्रज्ञतियां—==७ को न॰ ४ के १०४ दुर्भग १, अनादेय १, झ	सन्व प्रकृतियां—१४७ उपशम सम्यक्त	ं <b>नाः</b> —यदि नरकायु सत्त प्रकृतियों	संख्यापत्य के श्रसंख	भित्रलोक के ग्रसंख्यातवें भाग प्रभारा	स्पर्धन—नाना जीवों । वाला १६वें	फालनाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल	फ्रम्तर—नाना जीवों । देशव्रत प्राप्त	जाति (योनि)—१६ र	फुल – ५७॥ लाख को जानना)	•
. H	~	लिंग : श्रज्ञान जीवत्व ३१ भा	% % % %	ts. m	26	भूम	ស	ا ا	o m	<b>~</b> ₩	() (i)	ar m	>0 TY	

_	
34 34	
_	

चोंतीस स्थान दर्शन	:र्शन	कोष्टक नं	w		प्रमत्तं	प्रमत्त गुरा स्थान
क्र हिंचान सामन्य शालाप	पयस्ति			अपयोप्ति		
	नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	क जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	। १ जीव के एक समय में
2	uò	>>	*	U3°	9	ľ
१ मुस्स स्थान १ प्रमत्त	१ प्रमंत्त गुरा स्थान मनुष्य गति में जानना को० नं० १८ देखी	१ को० नं० १ प देखो	शो नं० १ द हस्खो	१ प्रमत्त मुस्स स्थान को० न० १० देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १ व
२ जीव समास २ संजी पं० पर्याप्त अपर्याप्त	१ १ संझी पंचेन्द्रिय पर्याप्त क्रोत्र चंत्र १०० चेको	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १ द	१ संजी पंचेन्द्रिय श्रवयात	१ को० नं०१८ देखो	
३ पर्यापि को० नं० १ देखो	नाट पट ६५ ६५। ६ ६ का भंग को० नं० १८ के अनुसार जानना	१ भंग ६ का भंग को० नं० १८ देखी	६ भंग ६ मंग ६ का भंग कोट नं० १ घ देखो	का० न० १८ दखा ३ ३ का भंग को० नं० १८ समान जानना लब्ध रूप ६ पर्याप्त जानो	१ मंग ३ का भंग को० नं० १८ देखी	द्रला १ मंग ६ का भग को नं० १८ देखों
४ प्राया को० नं० १ देखो	१० १० का भंग को० नं० १ ट	१ भग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	सूचना १:-पेज नं० ५९ देखो ७ ७ का भंग को० नं० १८	र भंग ७ का भंग	<b>१</b> भंग ७ का भंग
५ संज्ञा • ४ को० नं० १ देखो		को० नं० १ द देखोको०नं० १ द देखो १ भंग ४ का भंग ४ का भंग	हो ०नं ० १ द देखो १ भंग ४ का भंग		को० नं० १८ देखी १ भंग ४ का भंग	को नं <b>० १</b> द देखो १ भंग ४ का भंग
६ गति. मनुष्य गति	के समान जानना १ मनुष्य गति	कोऽ नं० १८ देखीकोऽनं० १८ देखों १	हो <b>ं</b> नं० १ द देखों १	के समान जानना १	को० नं० १ द देखी को०न० १ द देषी १	को०न० १८ देघो .१
७ इन्द्रिय जाति १ पंचेन्द्रिय जाति	१ प्चेन्द्रिय जाति	~	~	~	~	~
द काय त्रसकाय	१ त्रसकाय	<b>~</b>	~	<b>~</b>	~	•

स्थान	ប	१ क्रोटनंट १ म देखो	१ को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १ प्रदेखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	१ संयम को०नं०१८ देखो
प्रमत गुरा स्थान	Ð	१ को० नं० १ द देखो	१ को० न०१८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १५ देखो	सारे भंग को० न० १८ देखो
·	- دي	१ आहारक क्लिश्र काययोग १ का भंग को० नं० १८ के समान	सूचना २-पेज ५६ पर १. एक पुरुष वेद जानना १ की भंग को० नं० १८ के समान	११ स्त्री-बपुंबक वेद २ घटाकर को० (११) जानमा ११ का भग को० न० १८ के समान	जातना ३ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर ३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान	सूचना ३-पज ४६ पर २ परिहार विद्यु॰संबमघटाकर (२) जानना २ का भंग कों॰ नं॰ १८ के समान जानना सूचनां४-पेज ५९ पर
11° .	*	१ योग को०नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १ प देखी	१ भंग को०नं० १ द देखो	१ झान को०नं० १ द देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो
क्रीप्टक	>>	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो '
चौतीस स्थान दर्शन	ĸ.	१० आ० मिश्रकाय योग १ घटाकर (१०) जानना ६-६ के भंग को० नं० १८ के समान	३ ३-१ के भंग को० नं० १८ के समान	१३ १२–११ के भंग को० नं० १८ के समान	४ ४-३ के मंग को० नं० १८ के समान	३—२ के भंग को० नं० १८ के समान
चौंतीस	. &		अ.हा.स्म मान पान भे (११) १० वेद को० नं० १ देखो	११ कषाय संज्वलन कषाय ४, नवनो कषाय ६, ये १३ जानना	१२ ज्ञान मति, श्रुत, श्रविष, मन पर्यय ज्ञान ये ४ ज्ञान जानना	१३ सयम सामायिक छेदोपस्था- पना परिहार वि०ये ३ संयम जानना

,						•			•		
	मुण स्थान	រ	१ दशन ३ के भंग में से कोई १ दशन	जानना १ लेख्या १ के भंग में से कोई १ लेख्या	जानना <b>१</b>	१ सम्यक्तव १ भंग में से कोई १	सम्प्रक्तं १	~	१ उपयोग ६ के भंग में से कोई १ उपयोग	आनना १ ध्यान ७ के मंग में से कोई १	ध्यान जानना
	प्रमत गुण	၅	१ भंग ३ का भंग जानना	१ भंग ३ का भंग जानना	~	सारे भंग २ का भंग जानना	को० नं० १ द देखो १	~ ~	सारे भंग ६ का भंग जानना को० नं० १८ देखो	<ul><li>१ भंग</li><li>७ का भंग</li><li>जानना</li></ul>	को० नं० १८ देखो
		U9"	३ ३ का भंग को० न० १८ के समान जानना	· nr	~	२ २ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ सजी	१ माहारक	8 उपयोग ७-६ के मंगों में मन: पर्ययज्ञान घटाकर (६) से कोई १ जानना ६ का मंग को०	कुर्ड ६५ भ समान जानना ७ ७ का भंग पर्याप्तवत् जानना	का० न० १८ देखो
	209-	מי	१ दर्श र ३ के भंग में से कोई १ दर्शन	जानना १ लेख्या ३ के भग में से कोई १ लेख्या जानना	~	१ सम्यक्त ३-२ के भंगों में से कोई १	सस्यवृत्व १	~	१ उपयोग ७-६ के भंगों मे से कोई १	१ ध्यान ७ के मंग में से कोई १ ध्यान	थानना
ดห )	कोष्टक नं०	>>	१ भंग ३ का भंग जानना	१ भंग ३ का भग जानना	~	सारे भंग १-२ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	~	~	्रसारे भंग ७-६ के भंग जानना को० नंह १८ हेखो	8 मंग ७ का मंग जानना	्र त दख १० ५० ५ दख
:	दर्शन	Its	३ ३ का भंग की नं० १८ के समान	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भव्यरव जानना	३ ३-२ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ संजी	१ श्राहारक	७ ७-६ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	७ ७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	
	चौंतोस स्थान द	or ~	१४ दर्शन को० न० ४ देखो	१५ लेश्या ३ गुभ लेश्या	१६ भग्यत्व १ भग्यत्व	१७ सम्यक्त्व उपश्चम-क्षायिक- क्षयोपश्चम ये (३)	१ दसंजी संजी	te w	२० उपयोग झानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३, ये ७ जानना	२१ ध्यान श्रातंत्र्यान ३ (श्रनित्द संयोग, पीडा ध्रनम नियम संय	1 NO 1

		,	•	
। स्थान	r	१ भंग १८-६-७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ भंग १७ का भंगों में में कोई १ भंग गानना	
प्रमत गुरा स्थान	9	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ५-६-७ के भंग जानना को० नं० १६ हेखो	१ संग १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	
	UST	१२ संज्वलम कषाय ४, हास्यादिनो कषाय ६ पुरुष वेद १, श्राहारक मिश्रकाय योग १ ये १२ श्रास्तव जानना १२ का भंग को० नं० १८ के समान जानना सूचना—यहां यह विवर्सा योग की श्रपेक्षा ही जानना	२७ म्राहारक काययोग की म्रपेक्षा २७ का भंग को० नं० १८ समान	
~ m	<b>5</b> 4	१ भंग १ भंग भं से कोई १ भंग जानना	<ul><li>१ भंग</li><li>१७ के भंगों में</li><li>से कोई १ भंग</li><li>जानना</li><li>गंग</li></ul>	· ·
( <sup>५ द</sup> कोष्टक नं	>>	सारे भंग प्रपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ५-६-७ के भंग जानना को० नं० १ द देखो	सारे भंग १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	
र्शन	m	२२ या २  प्रवेदारिक काय योग की अपेक्षा २२ का भंग संज्वलन कवाय ४, हास्पादिनो कवाय ६, वेद ३, मनोयोग ४, वचन योग ४, श्री॰ काययोग १ ये २२ का भंग जानना को० नं० १८ देखो (२) आहारक काययोग की अपेक्षा २० का भंग सज्वलन कवाय ४, हास्यादिनो कवाय ४, हास्यादिनो कवाय ६, पुरुष वेद १ मनोयोग ४, वचन योग ४, याहारक काययोग १, ये २० का भंग जानना	३१ ३१ का भंग को० नं० १८ के समान भ्रौ काययोग की भ्रपेक्षा जानना २७ के भंग को०नं० १८ के समान श्राहारक काययोग क श्रपेक्षा जानना	
चौंतीस स्थान दर्शन	₽×	र आस्तव संज्वलन कषाय४, नवनो कषाय ६, मनोयोग ४ वचनयोग ४, ग्रो० काय योग १, ग्रा० मिश्रकाय योग १, ये (२४)	भाव उपशम-सायिक स० २, ज्ञान ४, शंन ३, लिंध्य ५, क्षयोपश्यम-सम्यक्त्व१, मनुष्य गति १, कषाय ४ लिंग ३, शुभ लेश्या ३, सराग संयम १,श्रज्ञान १ अपसद्धत्व १, जीवत्व १	
्चौति	~	१२ श्रास्तव संज्वलन क कषाय ६, वचनयोग २ योग १, श्र योग १, भ्र योग १, भे	२३ भाव उपशम-क्ष ज्ञान ४, भ, क्षयोग मनुष्य ग लिंग ३, सराग संय ऋसिद्धत्व भव्यत्व १	

१३६ चौथे गुएए स्थान को क्षायिक सम्यक्तव की अपेक्षा १४१ प्रकृतियों में से नरकायु १ और तियाँचायु १ ये २ घटाकर १३६ जानना मे २ घटाकर १४६ परन्तु आहारक मिश्रकाय योग की अपेक्षा नस्य प्रझतियां—ान्श को० नं ० ५ के न७ प्रकृतियों में से प्रत्याख्यान कषाय ४, तियँच गति १, तियँच गत्यानुपूर्वी १, नीच गोत्र १, उद्योत १ से लेकर ५२५ धनुष तक जानना। ग्राहारक तैजस शरीर की अपेक्षा एक हाथ जानना सूचना ३---ग्राहारककाय योग तथा स्त्री वेद नपुंसक वेद के उदय में मन: पर्यय ज्ञान नहीं होता (देखो गो० क० गा० ३२४) तियंचायु १ सत्व प्रकृतियां—१४६ चौथे गुर्सा स्थान को उपशम सम्यक्त की स्रपेक्षा १४८ प्रकृतियों में से नरकायु १ स्रौर वंच प्रकृतियां – ६३ को॰ न॰ ५ के ६७ प्रकृतियों में से प्रत्याख्यान कषाय ४ घटाकर ६३ प्रकृतियां जानना। प्रकृतिया घटाकर और ब्राहारद्विक २ जोड़कर म्रथात् ८७-८==७६ - २----८१ जानना । सूचना ४---यहां म्राहारक मिश्र काययोग में परिहार वि॰ संयम नहीं होता। (देखो गो॰ क॰ गा॰ ३२४) सूचना २---इस प्रमत्त गुर्गा स्थान में ग्रौदारिक काययोग की ग्रपेक्षा ग्रपर्याप्त श्रवस्था नहीं होती सूचना १---यहां आहारक की अपेक्षा निवृत्ति पर्याप्ति ही होती है, लिब्य पर्याप्तक नहीं होती है। संक्षा---(५९३६८२०६) पांच करोड़ त्रानवें लाख प्रठ्यानवें हजार दो सौ छः के समान जानना न्नपर्याप्त न्नवस्या होती है। (देखो गो० क० गा० ३१६-३१७) क्रबमाहुना-मौदारिक शरीर की मपेक्षा ३॥ हाथ निशेष ख्लासा को० नं० १८ देखो। भेत्र-लोक के श्रसंख्यातवें भाग प्रमाए। जानना

3

थन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तमुहूर्त से देशोन अर्घपुद्गल पराषर्तन काल तक प्रमत भाव नहीं चिना - वह भाव की ग्रपेक्षा वर्णन है। शरीर की मुद्रा की ग्रपेक्षा नहीं है। प्रमत्त ग्रप्रमत्त भाव समय समय में बदलते रहते हैं कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना जाति (योनि)—१४ लाख योनि जानना ।

नाता ज़ीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की भ्रपेक्षा एक समय जानना

सर्गत--लोक के ग्रसंख्यातवें भाग प्रमासा जानना

अप्रमत गुरा स्थान	मपयति	एक जीव की श्रपेक्षा एक समय में	はーシージ	१ सुचना	१ इस प्रमत्त गुरा स्थान भे विग्रह गति ग्रीर	_		अपयोत अवस्य		१ ३१२ से ६१६)		१ योग के मंग में से कोई	योग जानता मंगों में से कोई वेद जानना	<ul><li>१ भंग</li><li>४-५-६ के मंगों में से कोई भंग जानना</li></ul>
		एक जीव की ग्रपेक्षा   एक जीव की ह	>		~	१ मंग १ भंग ६ का मंग ६ का भंग	१ भंग । झा भंग	<del></del>	३ का भग १ ( )		•	१ गति १ का भंग जानना ६ के भंग	१ योग १ मंग ३ के भंगों ३ का मंग १ वेद	१ भग ४-५-६ के भंग जानना नोई भग जानना
( ६० ) कोष्टक नं० ७	पयिषि	नाना जावों की ग्रपेक्षा	m	१ अप्रमत्त मुस् स्थान को० नं० १८ सेवो	र संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्ति श्रवस्था को० नं० १५ देखो	् ६ का भंग को० नं० १८ देखो	~ ``		र या भा भार गुरु दु दुवा १ मनुष्य गति जानमा	१ पर्वान्द्रय जाति जानना को० नं० १ द देखो	१ शसकाय जानना को० न० १ = देखी	नं० १८ देखो	रे ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१३ १३ का भंग को० नं० १ द के समान
चौतीस स्थान दर्शन	फ्रo/ स्थान   सामान्य क्रालाप		~	१ मुस् स्थान १	२ जीवसमास	३ पर्याप्ति क्षी० नं० १ देखी	४ प्राया को० नं० १ देखो	५ संज्ञा भग्न मेशन परिगन	६ मिति १५) १३१५ गा ५४६	७ शन्द्रम जाात	द कृत्य	ह योग को० नं० ४ देखो	१ ) वेद नपुसक, स्त्री, पुरुष वेद	११ कपाय संज्वलम कषाय ४

चौँबी	चौंबीस स्थान दक्षेन	, कोष्टक नं	<b>ඉ</b> ං	अप्रमत्त गुण स्थान	यान
~	٤ )	m	× 	న	かーターが
य	ये १३ कवाय जानवा				
१२ ज्ञान	<b>&gt;</b>	>>	० भंग	१ भंग	
	को नं  ६ देखो	४ का भंग को नं० १ द के मुजिब	४ का भंग	४-५-६ के मंग में से	
	•			कोई १ जान जानना	
१३ स्यम	m /		१ मंग	१ सयम	
i	सामायिक, छेदाय	रे का भग का न० १८ के मुजिब	३ का भंग	३ के भंग में से कोई	
	स्यापना, पारहाराव बुाद्ध	,		१ संयम जानना	
१४ दशन	7 7	*! -! -!	१ भग		
	का न० ४ दिला	र का भग का न० १८ क मुजिब	३ का भग	३ के भंग में से कोई	
ď				१ दर्शन जानना	
१ ५ लेख्या	m	m	8 मन	१ लेख्या	
	तीन गुभ लेश्या	३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	३ का भंग	३ के मंग में से कोई	
				१ लेश्या जानना	
१६ मञ्जात्व	~	१ मन्यत्व	~	~	
१७ सम्पक्त्व	lu.	กา	१ भंग	१ सम्यक्त्य	
	को नं० ४ देखो	३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	३ का भंग	३ के भंग में से कोई	
•		,		१ सम्यक्त्व जानना	,
१ न मना	~	१ संजी	~	~	e:
१६ आहारक	~	१ शहारक	~	o.•	
२० चपयाग	ອ '	න	१ गर्भ	१ डपयोग	
	का न० ६ देखा	७ का मंग को नं० १८ के मुजिब	७ का भग	७ के भंग में से कोई	
4 (	:			१ उपयोग जानना	
4 k edid	>> <u>*</u>	<b>&gt;</b> 0	र मंग	१ च्यान	
	नार वम ध्यान	४ का मंग को नं० १८ के मुजिब	४ का भंग	४ के भंग में से कोई	
	6		-	१ ध्यान जानना	
44 30 Ed	Y	٣.	१ भंग	१ भंग	,
प्रविद्या	सप्तलन कपाय ४	२२ का मग का न० १८ के मुजिब	४-६-७ के भंग को	१-६-७ के मंगों में से कोई	
1941	bld > 1		मं० १ त देखी	१ मंग जानना	
44141 4140	मनावाग ७, वचन याग ४		,	को नं० १८ देखो	
2 K	-1			الازي الأراق المراجعة	•

	चीतोस स्थान दश्न		
	2	कोष्टिक नं	නු
	_ -	m	त्रिंग स्थान
m- ( <b>&gt;</b>	रेश भाव		2-0-3
-	ग १० ६ दिखी	३१ का भंग को नं॰ १८ के मुजिब	
>> A-	. सग्राहमा—को नं ० -		१ भंग जानना की न० १ द देखो
er er	यंग प्रकृतियां—५६ को मं	10 年 6 6	0
W Ar	महिरिकदिक २ जोड उनम् प्रजीतयां—७६ को मं, ६ भ	र प ६२ अष्टातयां में से मस्थिर १, मधुम १, मयः के २ जोड़कर मर्थात ६३-६ = ५७ + ४६ मक्तियां जन	याहारकद्विक २ जोड़कर यथति ६३–६ = ५७ + ४६ प्रकृतियां जाति १, यरति १, योक १, यसाता १ ये ६ घटाकर क्रो उक्प प्रकृतियां—७६ को नं, ८ के
5	६७ जानमा ।	। १ ५१ प्रज्ञातयों में से महानिद्रा ३ (निद्रा निद्र	ती, प्रचला प्रचला स्थानमा
رون به (و	भरव प्रकृतियां—१४६ या १३६ को : संस्थाः—(२६६६१९ ३)	१३६ को नं ६ के मुजिब जानना।	नं० ६ के मुजिब जानना।
W O	क्षेत्र—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमास जानना।	क्षेत्र —लोक के असंख्यातवें भाग प्रमास जानता। स्वक्र —— —	गना ।
W.	भारा — नाना जीवों की ग्रयंक्षा मनेता।	भाग प्रमास जानना ।	
भ स्य	सुचना—प्रमत्त-क्रप्रमत्त् गुरा स्थान में समय श्रन्तर—नाता क्रिक्ट	——प्रमत्—ग्रप्रमत्त गुरा स्थान में समय समय में शाब बढलने उन्हें ॥	।
mr inr	गता वावा का अपेक्षा अन्तर प्राप्ति न हो सके। अनि (सेन्टर)	नहीं है। एक	जीव की अपेक्षा अन्ते मुहत में देशोन यथं परमात मार्ग
>o mr	कुल१४ लास कोटिकुल मनुष्य योनि जान कुल१४ लास कोटिकुल मनुष्य के जानना	- F -	ंगंंं ग्राविषमं काल तक अप्रमात भाव की

;

गुण स्थान			F-6-5	मूचनाइस यपवंकरसा समा	स्थान में अपर्याप्त अवस्था नहीं होता	ofic.				,			•			
अपूर्वकरण गुण स्थान	श्रवयति	एक जीव के एक समय में	אל .	B1 B1	१ मंग ९ का भंग	१ भंग	्र मंग अ सा मंग	~	~ ~	्र योग १ मोग में से कोई		३ के मंग में से कोई	१ वेद जानना १ भंग	४-५-६ के भंगों में से =ोर्ट भंग जानना	عا. م	१ ज्ञान ४ के भंग में से कोई १
		एक जीव के नाना समय में	>>	<b>ል</b> ፣ ው፣	ै भंग ६ का भंग	१ मंग	८० का मन १ मेंग ३ का ध्यंत	- - -	av a	्रभंग श्रिकाभंग			<u>*</u> بن	४-५-६ के मंग जानना	÷	ं १ भंग ४ का भंग
कोष्टक नं	<b>प</b> यांत	नाना जीवों की अपेक्षा	rti*	१ अपूर्व कर्सा नुसा स्थान १ संझी पत्रेन्द्रिय पयोप्त अवस्था स्रोडिंग १८ सेसी	नागर हैं ६ इ.क्या ग्रंग को नं० 1 द के अनसार जानना	0 1	्रका भनका नक्ष्य भन्ना प्राप्ता ३ ३ ऋर भंज को मंक्ष्य प्राप्ता	१ मनुष्य गरि	पंचेन्द्रिय जाति जानना १ मसकाम जनसम	भूता ना सो		३ का भंग को नं० १ द के मुजिब	१३ १३ का मंग को नं० १८ के मुजिब		>	४ का भंग को नं० १⊂ के मुजिवः ं
चौतीस स्थान दशेन		स्थान ग्रालाप	0	१. गुया स्थान २ जीव समास	३ .पयापि इन्हें ३ डेन्स	ا م	की नं १ देखी १ संशा अस्य स्थाय प्रियंत	नथ, नड्डा गारबंद ये ३ मंत्रा जानना ६ मति		ह योग ह	१० वेद जगामक स्त्री प्राप्त वेद	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	११ क्षाय संज्वान क्षाय ४,	नवनी कपाय ६,	११ मान अंगान	मति अ त अवधि मनः पर्यय ज्ञान ये (४)

चौतीस स्थान दश्चेन	कोष्टक नं	U	अपूर्वेकरण गुण स्थान	पुण स्थान
~	,m·	>	· 54	ก ช - ช
			झान जानना	
		को नं० १८ देखो	को नं० १८ देखो	
• इ.संयम	ዮ	% संव	१ संयम	
सामाधिक छेदोपस्यापना	२ का मंग को नं० १८ के मुजिब	र का भंग	र के मंग में से कोई	
•		it it.	्रत्यम् वान्ता	
१४ दर्शन			A	
अचसुदर्शन, चसुदर्शन,	३ का भग को न० १८ के मुजिब	<del>-</del>	२ क मंग म स पात्र	•
अवधिदश्त प (३)		# 4.0 % F. F. F.	क्षों मं ० १० सेवो	
१५ लेख्या १	१ शुक्त लश्या	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		
	क्षा न० १ माना ०	~ a	. ~	
र्ट मुक्तरव	ر مرمزم ش با در در درد درد درد درد درد درد درد درد	ر . بنتا	१ सम्मिबरव	
र सम्पन्त	े का भंग को नं० १० के मजिब	२ का भंग	२ के मंग में से कोई १	
יייי אין אין אין אין אין אין אין אין אין			सम्यक्तव जानना	
% मंत्री	१ संजी जानना को नं० १ व देखो	~	~	
१ माहारक		~	~	
	<b>9</b>	१ मंम	१ उपयोग	
	७ का मंग को नं० १ न के मुजिब	७ का भंग	७ के मंग्में से कोइ १	
			उपयोग जानना	
३१ ह्यान	१ पृथक्त वितक विचार सुक्ल ध्याम	~	00	
	को नं० १ व देखो	सारे भंग	० भंग	
२२ सास्रव	66	1-5-10 के मंग	१-१-७ न मंगों में ते	
को नं  ७ देखो	२२ का भंग को नं० १ द के मुजिब	को नं० १८ देशे	कोई १ भंग जानना	
			मो नं० १८ देखो	
२३ भाव २६	שׁ	१ भंग	र भंग	`
को नं० १८ देखी	२६ का मंग को नं० १४ के मुजिब	९७ मा भग	१७ क भगा म स काइ	
		को नं० १८ देखो	्रमा बाना	
		···········	को न० १८ देशो	

क्रन्तर--नाना जीवों की अपेक्षा उपश्चम श्रेसी में एक समय से लेकर वर्ष प्रथक्त्व तक जीर क्षपक श्रेसी में एक समय से लेकर छ: मास तक सहव प्रकृतियां —१४२, चीये गुर्ण स्थान के १४८ प्रकृतियों में में नरकायु १, तिर्मवायु १, क्रनन्तानुबंधी कवाय ४, ये ६ घटाकर बोष १४२ १३६. चौथे गुए। स्थान के झायिक सम्यगुष्यें की १४१ प्रकृतियों में से नरकायु १, तियंचायु १, ये दो घटाकर शेप १३६ की १३८. चीये गुएए स्थान सायिक सम्पग्रहच्टी की १४१ प्रकृतियों में से नरकायु १, तिर्यचायु १. देवायु १ में वे घटाकर शेप १३८ वरम प्रकृतियां— ३२ को नं० ७ के ७६ प्रकृतियों में से असंप्राप्तापुराटिका संहतन १, कलीक संहतन १, प्रकंताराजसंहतन सम्यक् प्रकृति १, ये खें भाग में – २६ प्रकृतियां वंघती है, वे निम्न प्रकार जानना गो० कर्मकांड (मराठी) में जो वंबव्युच्छित्ति कोष्टक नं० १ है उसमें जो ६वां १ घटाकर ५८ जानना। ये जो १८ प्रकृतियां वंयती हैं वे सब पहला भाग में ७वें भाग में -- २२ प्रकृतियां जो वंधती हैं वे ऊपर के २६ प्रकृतियों में से हास्य-रति २, भय-जुगुप्ता २, ये ४ घटांकर २२ जानना । भाग में बताये हुये ३'० प्रकृतियां ऊपर के ५६ प्रकृतियों में से २६ प्रकृतियां घटाकर जानना (देखों गो० कं० गा० २१७) जानना एक जीव की अपेक्षा उपराम श्रेगों में एक समय से देशीन अर्थ पुद्गल परावर्तन काल तक अन्तर जानना दूसरे भाग में ५६ जानना ऊपर के ५८ प्रकृतियों में से निद्रा और प्रचला ये २ घटाकर बंबती हैं (देखो गो० क० गा०, ४५६) काल-उपशम श्रेशी में एक समय से अन्तमुँ हते और सयक श्रेशी में अन्तमुँ हुते से अन्तमुँ हुते जानना। प्रकृतियों की सता क्षायिक सम्यगुरंटी की क्षपक अंसी में जानना। की सत्ता उपशम सम्यक्त्व की उपशम श्रेग़ी में जानना । मुचना-- उपरोक्त बंधन्युन्छित्ति के ७ भंग क्षपक थरेगी की अपेक्षा हो पड़ते हैं। मंग्या --१६६ उपदाम श्रेग्री में, श्रीर ४६८ क्षयक श्रेग्री में जानता । सता क्षापिक सम्पक्तव की उपशम श्रेणी में जानेन।। देवायु रंप प्रकृतियां — १.५, को नं ७ ७ के ५६ प्रकृतियों में मे स्परांत--लोक के ग्रसंख्यातवे भाग प्रमाए। जानना। जाति (पोनि) १४ लाख पोनि मनुष्य की जानता भेत्र - लोक के मसंख्यानवे भाग प्रमास् जानना।

मुल-१४ लाख कोटिकुलं भनुष्य की जानना।

चौंतीस स्थान	( ६६ ) दशुन कोष्टक नबर द		अनिवृत्तिकरण गुण स्थान में	<b>म</b>
क्रु स्थान नाम सामान आलाप	्र पयसि	,		अपर्याप्त
	नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
œ.	, 11-	<b>&gt;&gt;</b>	*	इ- <b>%</b> -१
१ मुख स्थान २ नीव समास १	१ अनिवृत्तिकरएा गुरा स्थान १ संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था को नं १= देखो	our ou-	01 or ,	
<ul><li>क्यांति</li><li>को नं  १ देखोः</li><li>प्रास्</li><li>को नं  १ देखो</li></ul>	६ ६ का मंग को नं० १८ के मुजिब १० १० का मंग को नं० १८ के मुजिब	<ul><li>१ भग</li><li>६ का भंग</li><li>१ भंग</li><li>१० का भंग</li></ul>	<ul><li>श्रमंग</li><li>श्रमंग</li><li>१० का भंग</li></ul>	
र संज्ञा मैथुन, परिग्रह	को नं	दोनों भंग २-१ के भंग	१ भंग १ मणे में से कोई १ मंग जानना	:
६ गति १ ७ इन्द्रिय जाति १ ८ काय १	१ मनुष्य गति जानना १ पंचेन्द्रिय जाति जानना १ घसकाय जानना १	ar er ar	où en er	-  -
को नं॰ ५ देखो १• वेद ३ नयुंसक, स्त्री, पुरुष	े का भंग को नं० १८ के मुजिब ३ ३-२-१-० के मंग को नं० १८ देसो	१ भग १ का भंग १ भंग १-२-१-० के भंग	१ योग ६ के भंग में से कोई १ योग जाननाः १ वेद ३-२-१-०के भंग में से कोई	-! -
११ कषाय संज्लान कषाय ४ वेद ३ ये ७ जानना	७ ७-६-५-४-३-२-१ के भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	का नव १८ दखा ७-६-५-४-३-२-१ के भंग जानना को नं० १८ देखो	१ भग जानगा को नं० १६ देखा ७-६-५-४-३-२-१ के भंगों में से कोई १ भंग ज्ञानना को न० १६ देखी	: :

गुण स्थान	<u> </u>						The state of the s
अनिवृत्तिकरण गुण	<b>ə</b> 4	१ ज्ञान ४ के भंग में से कोई १ क्षान जानना १ क्ष्म २॥ २ के भंग में से कोई	<ul><li>१ संयम जानना</li><li>१ दर्शन</li><li>३ के भंग में से कोई</li><li>१ दर्शन जानना</li><li>१</li></ul>	१ सम्यक्त्व २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	१ १ उपयोग ७ के भंग में से कोई <sup></sup> १ उपयोग जानना १	१ मंग ३-२ के मंगों में से कोई १ मंग जानता को न० १= के देखो	१ भंग (१) सवेद भाग में १६ के भंग में से कोई १ संग जानेता
	*	१ मंग ४ का भंग १८ मंग्र <sub>ं</sub> इ	१ मंग ३ का भंग १	१ मंग २.का भंग १	१ भग ७ का भंग १	सारे भंग ३-इ के भंग जानना को नं० १८ देखी	सारे भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना
नोष्टक नं ु ह		त का भंग को नंग १८:के मुजियं २ २ का भंग को नंग १८ के मुजिय	रे का भंग को नं०, १८ के मुजिद १ सुक्त लेश्या जानना १ भव्यत्व जानना	२ २ का भग को न० १८ के मुजिब १ संशी १ माहारक	७ का भंग को नं० १ द के मुजिब १ पृथमत्व वितक विचार शुक्त ध्यान को नं० १ द देखो	१६ १६-१५-१४-१४-१३-१२-११-१० के भंक को नं० १८ के मुजिब जानना	२६-२८-२७-२६-२५-२४-२३ के भंग को नं० १८ के मुजिब जानना
चौंतीस स्थान दश्नेन	~	१२ जान को नं० ६ देखी. १३ संयम २ समायिक, छेदोपस्थापना	१४ दर्भान को नं०४ देखी १५ लेख्या १५ मञ्जल्ल	१७ सम्प्रकल २ उपराम क्षायिक स० १८ संजी १६ महारक १	२	श्रास्त्रव संज्वलत कषाय वेद ३, मनोयोग वचन योग ४, ग्री का योग १ ये	रुव मार्च २६ को नं  त देखो

चौंतीस स्थान दश्नेन		
काण्टक नम्बर्स्स	सनिवृत्तिकरण गुण स्याः	स्याः
<b>&gt;</b>	×	ଶ-3
	(२) ज्ञबेद भाम से	
8७ का भंग जानना (२) अवेद भाग में	१६ के भंगों में से कोई १ मंग जानन	
	को नं० १८ देखी	
१४ अवगाहना—को है. ०= के.	-	
जि. प्रकृतियां— २२ पहले माग में— ज्ञानावरमातेम ए		
उच्चतीत्र १, यशकीती १, ये २२ जानना । २१. दुसरे भाग में सम्मन्ने हैं	अन्तराय ५, सातावेदनीय १	

१=. पांचवे भाग में---माया कषाय घटाकर १= जानना । १७. छटवे भाग क--लोक कषाय घटाकर १७ जानना। २०. तीसरे मार्ग में—कोवकवाय घटाकर २० जानना । १६. चौथे भाग में—मान कषाय घटीकर १६ जानना । २१. दूसरे भागे में —पुरुषवेद घटाकर २१ जानना।

**चदम प्रकुतियां**—६६. पहले माग में—को नं० ८ के ७२ प्रकृतियों में से यहां हास्यादि ६ प्रकृतियों का उदय घटाकर ६६ जानना । इस प्रकार छ: भागों में कमैं प्रकृतियों का बंघ षटता जाता है।

६४. तीसरे भाग में--स्त्रीवेद घटाकर ६४ जानना । ६३. चौथे भाग में— पुरुष वेद घटाकर ६३ जानना।

६१. छट्वे माग में—मानकषाय घटाकर ६१ जानना। ६०. सातेंने भाग में—माया कषाय घटाकर ६० जानना। ६२. पांचवे भाग में—कोघ कषाय घटाकर ६२ जानता

सरब प्रकृतिका — १४२, १३६, १३८ को नं क मुजिय जानना। १३७ प्रकृतियों का विशेष खुलासा निम्न प्रकार जानना। यह भेद अपक क्रोसी की अपेक्षा होते रे।

ैश्ले भाग के प्रारम्भ में—१३८ की सत्ता है। इनमें नरकद्विक २, तियैचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, महानिद्रा ३, (निद्रानिद्रा, प्रचला प्रचला, स्त्यानग्रुद्धि), साधारत्या १, सुध्म १, स्थावर १, ये १९ प्रकृतियां पहले भाग के ग्रन्त में ये = प्रकृतियां घटाने से दूसरे भाग के प्रारम्भ में १२२ की सत्ता जानेगा।

事 ३२ भाग के प्रारम्भ की ११४ प्रकृतियों में से तीसरे भाग के ग्रन्त में नपुंसक वेद १ घटाने से चीथे भाग के प्रारम्भ में ११३ २२ माग के प्रारम्भ की १२२ प्रकृतियों में से दूसरे भाग के अन्त में अप्रत्याख्यान कपाय ४, प्रत्याख्यान कपाय ४, घटाने से तीसरे भाग के प्रारम्भ में ११४ की सत्ता जानना।

4 के प्रारम में के अन्त में स्त्री वेद १ घटाने से पांचवें भाग में से चौषे भाग की ११३ प्रकृतियों ४वे भाग के प्रारम्भ सता जानना ।

६ नोकपाय घटाने से छटवे भाग के प्रारम्भ पांचवे भाग के ग्रन्त में हास्यादिक ११२ प्रकृतियों में से सता जानना ।

F से सातवे भाग के प्रारम्भ पुरुष बेद १ घटाने के ज्ञता में १०६ प्रकृतियों में छटवे भाग पुने भाग के प्रारम्भ की १०६ की सत्ता जानना ।

म्राठवे भाग के प्रारम्भ में घटाने से कोंघकपाय के जन्त में की १०४ प्रकृतियों में से सातवें भाग ६वे भाग के प्रारम्भ की मृत्ता जानता ।

प्रारम्भ में १०३ की नीवे भाग के के अन्त में मानकपाय घटाने से न्दे भाग के प्रारम्भ के १०४ प्रकृतियों में से ग्राठवे भाग ७वे भाग प्रारम्भ मत्ता जानना ।

ध्वे भाग के प्रारम्भ के १०३ प्रकृतियों में से नवे भाग के अन्त में मायाकषाय घटाने से दसवे गुए। स्थान के प्रारम्भ में १०२ की सत्ता जानना । (देखो गो० क० गा० ३३८ से ३४२) सत्ता जानना ।

संख्या--- २६६ उपशम अरेगी में ग्रीर ५६८ क्षपक श्रेग्री में जानना। क्षेत्र--लोक के ग्रसंख्यातवें भाग प्रमाग् जानना।

> اري ان W.

से अन्तर्मे हूर्त तक इस गुएए स्थान में समय से अन्तमुँ हुते तक और अपक अरेगी की अपेक्षा अन्तमुँ हुते स्पश्नन--लोक के श्रसंख्यातवें भाग प्रमास्य जानना । काल-उपशम श्रेशी की अपेक्षा एक रहने का काल जानना।

एक ममय से लेकर ६ मास तक संसार में कोई जीव न चढ़े और एक जीव की अपेक्षा उपंतम श्रे एी में एम समय से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक व्युच्छेद पड़ता है अर्थात् अन्तर जानना । जीवों की अपेक्षा उपशम थे साी में एक समय से लेकर वर्ष पृथक्तव तक जानना और क्षपक श्रोसी में

जाति (योनि)—मनुष्यगति के १लाख योनि जानना । कुल —मनुष्यं के १४ लाख कोटि ४ कुल जानना ।

7

च	चौतीस स्थान दर्शन		कोष्टन नं० १०	सूक्ष्म सोपर	सूक्ष्म सोपराय ग्रुण स्थान
		पयिति		म्रपयित	
स्यान	सामान्य श्रालाप	नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एकसमय में	
~	~	m.		٠ ٢	F-0-5
		१ मध्य सांपराय गसा स्थान	•	•	सुचना
	~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~			•	इस सूक्ष्मसापराथ गुरा
२ चीव समास	मास 🐧	१ संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्ति श्रवस्था १	~	•	स्थान में अपियाप्त अवस्था नहीं होती है
३ पयािप्त			१ भग	१ मंबा	<i>y</i>
×	को नं• १ देखो •	६ का भंग को न० १८ के मुजिब	६ का भग	् का भंग श्रमंग	
<u> </u>	को नं० १ देखो	१० मा भंग को नं० १८ के मुजिब	१० का भंग	१० का भंग	
५ संजा	~	१ परिग्रह संज्ञा जानना	~ <del>भे</del> ग	~	
६ गति • इन्दिय जाति	बाति १	१ मनुष्य गात जानना १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	क्षा भग	•	
द काय	• •••	१ त्रसकाय जानना	• •••	* •	
			o	~ ~	
ह योग	W	w		•	
	को नं० ५ देखो	६ का भंग को नं० १ द के मुजिब	१ भंग	१ योम	
			ह का भंग	े का भंग	
%० वद	• •	अपगत वद	c ·	0	-
११ कषाय	<b>~</b>	१ सुक्ष्म लाभ जानना	•~	~,	
		>		१ योग जानना	
१२ ज्ञान	<b>&gt;</b>	८ का भंग को नं० १८ के मुक्तिव	८ का भंग	४ के भंग में से कोई	
•	को नं० ६ देख		-	१ ज्ञान जानना	
१३ सयम	٠.٠	१ मूक्ष्म सापराय सथम जानना	~	ъ.	

• 9

ह भगंग १ दर्शन में कोई जा भंग ह के भंग में कोई जानना १ दर्शन जानना १ दर्शन जानना १ दर्शन जानना १ १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग भंग १ भंग भंग १	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग ९ भंग १ भंग १ ने भुष्येव १ ने भंग १ ने भंग		कोष्टक नं	>> o	सांपराय	सोपराय गुण स्थान	1
१ भग १ भग १ भग २ का भग १ भग १ भग १ भग १ का भंग १ के मुज्जि १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं०	र भग स्थान के मुजिब हिन्द के मुजिब के मुजिब हिन्द हिन्द हिन्द के मुजिब हिन्द	<u>,                                     </u>			1		
१ भंग १ भंग १ १ भंग ९ भंग १ भंग १ भंग १ द के मुजिब १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं०	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ में भों को नं० १ द के मुजिब १ द का भंग को नं० १ द का भंग को नं० १ द के मुजिब				१ दशन ३ के भंग में से कोई		٠
१ भंग २ का भंग ९ १ भंग ७ का भंग १ भंग १ द के मुखिब १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं०	१ भंग २ का भंग १ भंग ७ का भंग १ भंग १ का भंग को नं० १ के भुष्विच १ का भंग को नं० १ के भुष्विच		१ श्वक्ल लेश्या जानना	~	१ दर्शन जानना १		
१ भंग १ १ १ भंग ९ भंग १ भंग १ भंग १ द के मुजिब १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं०	१ भंग २ का भंग ९ भंग ९ भंग १ भंग १ का भंग १ के मुजिब १ का भंग को नं० १ का भंग को नं० १ के मुजिब	•	भव्यत्व जानना		~ ~~		
२ का भंग १ १ भंग ७ का भंग १ भंग २ का भंग को नं० १ द के मुजिब १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं० १ ६ के मुज्य	२ का भंग १ १ भंग ९ भंग १ भंग १ के मुजिब १ ६ का भंग को नं० १६ का भंग को नं० १ ६ के भुष्डिब			१ भंग	१ सम्यक्तव		
१ भंग ९ भंग १ भंग २ भंग २ का भंग को नं० १ न के मुजिब १ ६ का भंग को नं० १ ६ का भंग को नं०	१ भम ९ भम १ भंग १ भंग १ भंग १ ने मुजिब १ ने मुजिब १ ने मुखिब	r			र के मंग में से कोई		
१ भन ३ का भंग १ भंग १ भंग १ का भंग को नं १ का भंग १ भंग १ का भंग को नं १ का भंग को नं १ के भुष्ति	१ भंग ९ भंग १ भंग २ का भंग को नं १ न के मुजिब १ का भंग को नं १ का भंग को नं १ का भंग को नं १ के भुष्ति		१ मंत्री जानमा	٥	१ सम्पर्वत्व जानना		
१ भम १ १ भग १ भग २ भग को नं १ ने मुजिब १ भग १६ का भंग को नं १ ने मुज्जि	१ भम १ १ भग १ भग १ भग को न॰ १ द के मुजिब १ ६ का भंग को न॰ १ द के मुख्य		१ माहारक जानना	^ &^	~ 0.		
ं का भंग १ भंग १ भंग १ द के मुजिब १ ६ का भंग को नं १ ६ का भंग को नं १ द के मुज्जिब	े का भंग १ भंग १ भंग १ के मुजिब १ भंग १६ का भंग को नं १ के मुख्य		<b>9</b>	० भंस	१ जययोग		
१ भंग १ का भंग को नं १ न मुजिब १६ का भंग १६ का भंग को नं १ न भुष्वि	१ भंग २ का भंग को नं० १ द के मुजब १ भंग १६ का भंग को नं० १ द के मुख्ब	9	का भंग को नं० १८ के मुजिब	७ का भंग	७ के भंग में से कोई		
१ भंग १ द का भंग १ द के भंग १६ का भंग को नं १ द के मुख्य	१ भंग १ द के मुजिब १ द के मंग १६ का मंग को नं १ द के मुज्जिब	~ ·	पृयक्त वितक विचार गुक्त ध्याम	<b>~</b>	१ उपयोग जानना		
र भग भग ने नं १ द के मुजिब १ द का मंग को नं । १ द के मुजिब १ द के मुजिब १ १ भंग भंग को नं । १ ६ का मंग को नं । १ द के मुजिब	र भग को नं  १ द के मुजिब १ द का मंग को नं  १ द के मुजिब १ द के मुजिब १ द के मुजिब १ १ भग १ १ भग को नं  १ ६ का मंग को नं  १ द के मुजिब १ द के मुजिब १ द के मुजिब १ द के मुजिब	<del> 6</del> 	नि० १ त दोत्री	``!	~~		
र भा	र भा	•	०० १० व्याप्त मार्ग स्थापन	्रभग	% भंग		
२३ भंग को नं० १८ के मुजिब १८ का भंग को नं० १८ के मुजिब	२३ भंग को नं० १८ के मुजिब १८ का भंग को नं० १८ के मुजिब			्र पा भाग का न० १ द के मुजिब	र का भग		
भंग को नं० १८ के मुजिब १६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	भंग को नं० १८ के मुजिब १६ का भंग को नं० १८ के मुज्जि		ድ	१ भंग	ļ		, .
		is.	३ का भंग को नं० १ न के मुजिब	१६ का मंग की नं		٠	
				रन क मुख्य	~		
				-			
					1		

- **अवगा**हन--को नं• १८ देखो ।
- बंघ प्रकृतियां—१७ कोष्टक नं० ६ के,२२ प्रकृतियों में से संज्वलन कषाय ४ ग्रीर पुरुष वेद १ ये ५ घटाकर १७ प्रकृतियां जानना
  - ६० को नं० ६ के ६६ प्रकृतियों में से कोघ-मान माया ये ३ कषाय, ग्रीर वेद ३ ये ६ घटाकर ६० प्रकृतियां जानना
    - सत्त्व प्रकृतियां—१४२, १३६, १३६, १०२ को नं० ६ के मुजिब जानना ।
- संख्या—२६६ उपशम श्रेएी में और ५६न क्षपक श्रेेेेेें में जानना । अर्थात अढाई द्वीप में इतने जीव पदि हो तो एक समय में हो सकते है
  - क्षेत्र--लोक के ग्रसंस्थातवे भाग प्रमासा जानना।
- काल--उपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा एक समय से अन्तमु हुते तक जानना और क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा अन्तमुँ हुतें तक जानना स्पर्धंन--लोक का श्रसंख्यातवां भाग प्रमासा जानना ।
  - अन्तर-को नं ६ के मुजिब जानना।
    - नाति (योनी)—मनुष्य की १४ लाख योनि जानना कृल—मनुष्य की १४ लाख कोटि कुल जानना

_
<b>&amp;</b>
$\overline{}$

स्थात सामान्य नामा जीवों की प्रपेशा एक जीव के ज्ञान स्थात सामान्य नामा जीवों की प्रपेशा एक जीव के नामा सम्भ ने १ दे का प्रपेश स्थान १ १ इस्पेश स्थान १ १ से से प्रपेश स्थान १ १ से से प्रपेश शिवा वाना १ १ से प्रपेश १ १ से से प्रपेश शिवा वाना १ १ से प्रथा वाना वाना १ १ से से से प्रथा वाना वाना १ १ से से से प्रथा वाना वाना १ १ से से से से प्रथा वाना वाना १ १ से	चौतोछ स्थान दश्नेन	म कोप्टम नं० ११		उपशांत कष	उपशांत कषाय गुण स्थान
स्थान ब्रामाय नाता पीवों की प्रपेशा एक जीव के एक जीव के प्रक समय में एक में पीव हैं हैं भी पीव हैं हैं भी पीव हैं हैं भी जानना हैं हैं मों एक में एक में पीव हैं हैं मों एक पीव में एक में पीव हैं हैं मों एक में पीव हैं हैं मों एक समय जानना हैं हैं मों एक से स्था को ने हैं है मों जानना हैं हैं मों एक समय जानना हैं से पीव हैं हों में एक स्था में को ने हैं हैं मों हैं हैं मों हैं हों हैं से समय जानना हैं से पीव हैं हों में पीव हैं हों में हैं हों हैं से समय जानना हैं समय जानना समय जानना समय जानना समय जानना समय जानना समय जानना समय जा		पयिति		ऋपयिति	
हु स्थान हु ह उपयोग कपाय (मोह्) गुण स्थान हु संग विस्तान हु ह स्था मंग को पंक्रिय प्यांति प्रवस्था हु संग प्यांति हु स्था मंग को पंक्रिय प्यांति प्रवस्था हु संग यांति हु संग हु संग को नंक हु हेलों हु स्था मंग को नंक हु के मुख्य जातमा हु संग सोगा हु सम्मुच्य गति जानमा हु संग सोगा हु संग्राम हो से को हु हु संग्राम संग्राम हु संग्राम हु संग्राम हु संग्राम ह		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
गुण स्थान १ ६ उपशांत कपाय (मोह) गुण स्थान १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग पर्याप्ति स्थान १ संग्री पर्वेदिय पर्याप्ति अवस्था १ १ मंग पर्याप्ति ६ ६ का भंग को नं० १ द के मुजिय जातना १ मंग १ मंग १ १ मंग वातना ० श्रक्ताय जानना ० श्रक्ताय जानना ० श्रक्ताय जानना ० श्रक्ताय जानना ० १ मंग १ १ १ मंग १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १		m	<b>*</b>	*	R-0-7
प्रमिति ६ ६ का भंग को नं० १८ के मुजिब ६ का भंग को कं १८ के मुजिब जानना १० का भंग को कं १८ के मुजिब जानना १० का भंग ६ का भंग १० का भंग को नं० १८ के मुजिब जानना १० का भंग १० ६ का भंग १० क	१ गुर्स स्थान रजीव सम् <b>र</b> त	डपशांत कपाय (मोह) मुसा संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त श्रवस्थ	a- a-	e e .	सुचन[इस
प्राप्त १० १० का भंग को नं० १० के मुजिब जानता १० का भंग को नं० १० के मुजिब जानता १० का भंग को नं० १० के मुजिब जानता १ १ मनुष्य गति जानता १ १ मंग १ मनुष्य गति जानता १ १ मंग १ मनुष्य गति जानता १ १ मंग १ मंग १ १ मंग १ १ मंग १ १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ १ मंग १ मंग १ १ मंग १ १ मंग १ मंग १ १ मंग १ १ मंग १ १ मंग १ मंग १ १ मं	पर्याप्ति को नं० १ देखो		् भंग ९ का भंग ० भंग	१ भंग ६ का भंग १ थंग	उपशांत कषाय   (मोह) गुरा में अपयोप अवस्था
सज़ा । () १ मनुष्य गति जानना । १ १ मन् । १ विमा । १ १ विमा जानना । १ १ मन् । १ विमा जानना । । १ विमा विमा विमा । १ विमा जानना । १ व	प्रास मोनं	भा भंग अपगत सं	१० का मंग ०	१० का भंग ०	न्ते होती है।
इस्त्रिय जाति है पंचेन्द्रिय जाति जानना है भंग १ योग में भे के को में भे के हैं को में भे भे के को में भे के को में भे के के को में भे	मंजा गति	१ मनस्य गति जानना	ov 6	~ ~	
ह का भंग को नं० १ द के मुजिब के के के के भी में से हैं है के भी जानता के अपनात वेद जानता के का भंग को नं० १ द के मुजिब के भी भाग के १ वर्गन जानता के के भूगों में से १ वर्गन जानता के	७ इन्द्रिय जाति १ ८ काय	पंचेरिद्रय जाति जानना १ समकाय जानना	,	. ~	
<ul> <li>१ प्रांग जानना</li> <li>१ प्रांग जानना</li> <li>१ प्रांग को नं १ द के मुजिन</li> <li>१ प्रांग को नं १ द के मुजिन</li> <li>१ प्रवस्थात सपम जानना</li> <li>१ प्रवस्थात सपम जानना</li> <li>१ के भंग में भे के १ दर्शन</li> <li>१ कुछ लेख्या जानना</li> <li>१ प्रव्यत्व जानना</li> <li>१ प्रव्यत्व जानना</li> <li>१ प्रव्यत्व जानना</li> <li>१ प्रव्यत्व जानना</li> </ul>	म्  -  -		८ का भंग	ट के योग में से कोई	
<ul> <li>अकपाय जानना</li> <li>४ का मंग को नं० १ न के मुजिब</li> <li>१ प्रवस्थात सपम जानता</li> <li>१ प्रवस्थात सपम जानता</li> <li>१ मंग</li> <li>१ के मंग में में से देंगी</li> <li>१ कुछ लेध्या जानना</li> <li>१ मध्यत्व जानना</li> <li>१ १ प्रस्थत्व जानना</li> <li>१ १ प्रस्थत्व जानना</li> <li>१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १</li></ul>	, ५ दख।	६ का भग का न० १८ क मुग्निन ० अपगत वेद जानना	•	१ योग जानना ०	
<ul> <li>इ स्वा के क्या मंग को नं० १ न के मुजिब अका मंग अका मंग अका मंग के भंग में में के भंग में में के भंग में में के भंग को नं० १ न के मुजिब के मुजिब के कि मुजिब के मुजिब के कि मुजिब के मुजिब के कि मुजिब के मुजिब क</li></ul>		ञ्रकपाय जानन		0	
१ पथस्यात सयम जानता १ भंग १ १ प्रान जानन १ भंग १ १ भंग १ १ दर्शन १ १ दर्शन १ १ दर्शन १ १ दर्शन १ १ खुद्ध नेह्या जानना १ १ दर्शन वानना १ १ दर्शन जानना १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	० देखी	४ का मंग को नं० १ न के मुजिब	् भग ४ का मंग	८ भे संग में भे कोई	
इर्शन को नं॰ ६ देलों = ३ का भंग को नं॰ १८ के मुजिब = ३ का भंग   ३ के भंगों में से लेश्या १ शुद्ध लेश्या जानना   १ दर्शन जानना   १ दर्शन जानना   १ दर्शन जानना   १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	१३ संयम	१ यथस्यात सयम जानना	~ .	१ शान जानना	
लेहिया १ कुछ लेह्या जानना १ दुर्ग मंगा न प भग्यत्व १ मध्यत्व जानना १ १ १	वर्गन को नं० ६ हेलो	E THE THE THE PERSON OF THE PE			
۵	लेश्या	१ शुद्ध लेख्या जातना	<del>,</del>		
	,	१ भव्यत्व जानना	\$	~ ~	2

ib.	चीतास स्थान द <b>र्श</b> न	ान द <b>श्</b> न	( ७४ ) कोष्टक मं० ११	٠ -	उपशीत कषाय गुण स्थाम	गुण स्थाम
	~	а	nr	<b>&gt;&gt;</b>	. h	まーのーき
% क्यां अप	सम्यक्त्व जपशामधायिका स	ۍ` ت	२ ० का भंग को नं० १८ के मजिब	० भंग	े सम्पाद्धव २ के यंग से में क्रोह	
2n H	; ;		יייין יייין יייין יייין אייין איין אייין אייין איין אייין איין		१ सम्यक्त्व जान्ता	
s w	नशा श्राहारक	~ ~	र परा थाना १ साहारक जानना	v &*		
<u>තින</u>	डपदोता को नं० ६ क्षे	ह देखा	७ ७ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ का भंग ७ का भंग	१ उपयोग ३ के मंग में में कोई	
२१ व्यान	म	<b>~</b>	१ पृथकत्व वितक विचार सुक्ल घ्यान	~	? डपयोग जानना १	
र्ड्	ग्राप्तव को नं० ५ देखो	ंबें है	े हिकाभंगको नं० १ दिके मुजिय	० भंग १ के भंग में	१ मंग ६ के मंग में से कोई १	
२३ भाव	1	~ ]	İ	कोई १ योग १ भंग	योग जानना १ भग	
! म	कानुक भावों में से सूक्ष	स्हम लोभ १,	८९ का भग का न० ९६ क मुखब	१५ काभग कोनं०१ दक्त	१५ क भगां में सं कांद्र १ मंग जानना	
या	क्षाायक चारित घटकर्२१ भा	्त्र १ य २ भाव जानना		मुजिब जानना		
ंश्रदे	म्रथगाहना-	ग्रथगाहिना-को नं० १८ देखो।	देखो ।			
۲ ۲	वंघ प्रकृतिर	यंष प्रकृतियां—१ सातावेदनीय जानना	दनीय जानना ।			
ບ, ບ ກ. ລັ	उदय प्रकृति मन्त्र प्रकृति	उदय प्रकृतियां५६ को नं० मत्त्र प्रकृतियां१४२ १३६	नं० १० के ६० प्रकृतियों में से सूक्ष्म लोभ १ घटाकर ५६ जानना। ३६ को नं८ ६ मन्द्रिय जानना।	र ५६ जानना ।		
सूचना:- श्रु	न्यह मुस् स्	यह गुरा स्थान क्षयक श्रेशी वालों यह गुरा स्थान क्षयक श्रेशी वालों	त्रंच नहासम् । १८५१ १९८ या गुरु ८ मुजिब जाना। । यह गुर्सा स्थान क्षयम श्रेसी बालों के नहीं होता है । स्थार २६६ दमने सीन सरम्मा ।			
יח יש	क्षेत्र—लोव	ह का असंख्यात	्रेट रहा थान थाना । -लोक का असंख्यातवा भाग प्रमास जानना ।			
ur m o ex	स्पर्शत—्ते फाल—ग्रन्	—लोक का श्रसंख्या -ग्रन्तम <sup>ें</sup> हते से श्रतन	ग्रसंख्यातवा भाग प्रमास्। से ग्रतन्तम <sup>े</sup> हते तक जानना ।			
ያ ውና ሙ የ	म्रान्तर—ए	.एक समय से देशोन श्रध गिनि)१४ लाख मनष्य	—एक समय से देशोन श्रम पुद्गल परावर्तन काल प्रमासा के बाद दुवारा (योमि)१४ लाख मनध्य योसि जातना	। उपशम श्रेसा मिलेगी	_	
, ku,	कुल—१४	१४ लास कोटिकुल मनुष्य	मनुष्यं के जानना ।			•

क्षीण कषाय गुण स्थान में

चौतीम स्थान दश्ने	दश्नेन कोष्टक नवर १२		क्षीणकषाय गुण स्थान में	n <del>r</del>
क स्थान नाम सामान ग्रालाप	पयपि		अपर्यात	
	नाना जीवों की मपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
0'	m	>>	*	ర- <b>ల</b>
· A Company of the Co	ETIVE TITE (EAT) writer and an	8	~	स्चनाइस
र मुस्स स्थान अ जीव समास	्याणं क्षांत्र (माह) गुरा रचात १ मंत्री पंचित्रिय पर्याप्ति ग्रवस्था	• ~•	- 0	क्षीस्क्षियाय (मोह)
पयारि	<b>.</b>	2 斯	१ भंग	गुरा म अपयाप्त
को न० १ देखो	६ का मंग को नं० १८ के मुजिब	र का भग	इ.का.भग	अंग्रेस नहा
४ प्रास्ति १०	80 تقبتہ سے ہوں اور	१ सर्व	१० का भग	è mie
0	(०) अपगत संज्ञा जानमा			
ह मित	१ मनुष्य गति जानना	~	a.	
	१ पंचेन्द्रिय जाति जानमा	∾′.	~	,
द क्रीय	१ त्रसकाय जानना	مئد	ئى	
ह मोन		१ मेंग	१ द्यान	
को नं० १ दखी	ह का मंग को नं० १८ के मुजिय	८ का भंग	ट के मंग में से काहि १ योग जानना	,
० ० ०	(०) प्रपःत वेद जानना	o		
	(०) ग्रकवाय जानना	o		
	>>	ं १ भंग	१ मान	
को ने  इसो	ं ४ का मंग को नं० १८ के मुजिब	४ का भंग	ंड के भंग में में कोड़े १	
) 3 Hinh 2	१ यशस्याम सम्म जानना	۵۰	~-	,
	สา	१ मग	in the	
	३ का मंग को नं० १८ के मुजिब	३ का भंग	इ के मंग में से कोई १	
१५ लेखाः	१ शुमल लेह्या जानमा	· ~	~	; ;
ŧ.				
	principal description of the second control of the second control of the second of the second of the second control of the second co		,	

	4
,	ŀ
	4
F	:
. जानना	4
रा	•
ক	•
E	
वेदनीय	
H	•
साता	
e.	
1	
,E	
*	3
b	•
20	
12	i

उत्य प्रकृतियां—५७, को नं० ११ के ५९ प्रकृतियों में से बजनाराच संहतन १, नाराच संहतन १ से २ घटाकर ५७ जातना सत्त प्रकृतियां—१०१, को नं० १० के अपक अंगी के १०२ प्रकृतियों में से सुक्ष्मलोभ १ घटाकर १०१ की सत्ता जानना।

प्रन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से ६ मास तक को इं भी जीव क्षीस्त्योही न होगा और एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं। जाति (योति)—१४ लाख मनुष्य योनि जानता ।

कुल--१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की चानना।

चौतोस	चौतोस स्थान दर्शन		कोष्टक नं०	ह नं० १३	सयोगकेवः	सयोगकेबली गुण स्थान	न में
		पयाँत			श्रवयप्ति		
क्रमांकस्थान सामान्य ग्रालाप	न्न भालाप	नाना जीवों की श्रपेक्षा	 एक जीव के   नाना समय में	एक जीव के एकसमय में	नाना जीवों की भ्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय के	एक जीव के कए समये के
~	۲	m	>>	ж	U3°	9	n
१ गुरा स्थान २ जीव समस्य	۱ ۵۰	१ सयोग केवली गुग्रा॰	~ 0	~ 0	१ सयोग केवली गुरा	ov o	~ ~
्र याच्यानात संजी पं	त्रासात संजी पं० प० श्रपमीत	् संजी पंचेन्द्रिय पयिति स्रवस्था	•	<b>~</b>	र संज्ञी पंचेन्द्रिय श्रपयिति	,,	,
३ पर्याप्ति	بر ای موں ا			41.	mr .	१ भंग	१ भंग
<del>5</del>	का न० १ दल्ला	६ का भग का न० १८ द्वा	६ का भग	६ का भग	३ का भग का न० १८ दिशा लिड्य रूप ६ का भंग	न का भग	िर का भग लिडिय रूप द
		•					का भंग
प्रास्त	>>	>~	१ मंग	१ भंग	भाय बल १. काय बल १	२ का भंग	र मा भंग
मामु १, माय पल	ाय पल १	४ का भंग को नं० १८ के	४ का भंग	४ का भंग	ये २ प्रमास् जानना		
श्वासोच्छ् <sub>यास</sub> वचन बल	स १ ४ (४)	п-			र का मंग को नं० १८ देखो		
•		(०) अपगत संग्रा	o	٥	٥	٥	
्र माति   	e	१ मनुष्य गति जानना	۸٠	٥.	•	~	~
७ इस्त्रिय जाति न काम	a	१ पंचेन्द्रिय जाति	۵۰ ۵	۸٠,	~	e~ :	o~ 6
ू योच	~· 9	् त्रमकाय जानना	होतों मंग	, y zitar	∞• tı	नेमों संस	्र भूषा
सत्य मनःया		कार्माम का योग १	४-३ के भग	४-३ के भंगों में	कामिसिः व	<b>}-</b>	२-१ के अंगों
अनुभय योग		श्री० मिश्र काय योग १	-	से कोई? योग			मिस काह १
तत्य वचन याम् इत्यस्य योग	۰۰۰ جا د			जानना	(		यांग जानना
ज्ञी० काय योग	योग ०	को मं० १८ के मजिब		-	५-१ के भग की नि०१ द क		
श्री० मिश्र काय योग	काय योग १						
कामांस काय योग	गय योग ः १						

_
( 30
ت ب

•							•						. `				•											
गुण स्थान में	и		0 6	, á	~ ~~		~	~		o,	१ अवस्या	दोनों में से	18	जानना	को मं० १८	<u>.</u> 0	1	अ ५०	सारे भा	· · · ·	( - 8 of time)	में से कोई १	योग जानना				,	
सयोग केवली गुण	9	·	ο (	o &	م م	s~	۵۰	<b>&amp;</b> *		0	दानो अवस्था	म्राहारक भौर	अनाहारक	को न० १८ देखो		Ռ	THE PERSON	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	~		सारे भंग	2-8 年中年	से कोई १ योग	जानना				
सयोग	US		0		• •	٠.	0.1	۵*	~	9		(१) औं मिथकाय योग में	श्रवस्था जानना		यनाहारक अवस्था जानना	का वर्ष देव	Tit.	६ का का अगय जानन को नं० १८ देखो	~		œ	क.मािस्मिक का योग १	ग्री० मिथकाय योग १	ये २ योग जानता	२-१ के भंग को नं० १८ के	जानमा		_
क नं० १३	አ		0	0 0	· ~	~	۵,	~	~	o	۵٠					दोनों यगपत	N 1.8 11 15		•	٠	सारे भंग	५-३ के मंगे में	से कोई १ योग					
माध्यम	2.		<b>o</b> (	0 0	· «	٠	۵.	~	۵٠	0	۵.					होसों यसपत जानना	11.1.1. S.L.1.S. 11.15		~			计计计	कोई १ योग					
रीन	mr ·			(o) अक्षाय (c)	१ भवल शन जानना १ ययाख्यात जानना	१. केवल दर्शन जानना	१ शुक्ल लेश्या जानना		१ साधिक सम्यक्त	(१) अनुभय संशो	~	ग्राहारक जानना	को नं० १८ देखी			ſ	4	र का भग का न० १८ क मुजिय जानना	१ मूक्ष्म किया प्रतिपाति	शुक्ल ध्यान जानना	<b>≯</b>	कामिंस का योग १	य योग	मेर घट कर (४)	को नं० १८		५-३ के मंग को नं० १८ के	माल्य
चौंबीस स्थान दशीन	۵٬	ये ७ योग जानना	१० वेद	~	१२ ज्ञान १	r >0	१५ लेश्या १	१६ भन्यत्व १	१७ सम्यक्त १	१ द संजी	१६ बाहारक २	ग्राहारक, ग्रनाहारक	,			- Hamilton		क्वल ज्ञानापयाग १ फेबल दर्शनोपयोग १ ये २ जानका	२१ व्यान		२२ मालव	अपर के कमांक E	देखो योग स्थान के ७	योग श्रास्तव जानना	•			

	באנש	1,16	ս	_	१४ मग १४ का भंग को नं० १८	भूब		
	सयोगकेवली गण क्यांच	9	9		१ भंग १४ का भंग	किनि ० १ म भ		·
•	सयो		 JY		१४ पर्याप्त बल को नं० १८ देखो		,	-
( ५० ) कोष्ट्रक नम्बर १२	* / / / .	70 X		•	१ भग १ भंग । १ भंग । १ भंग । १ भंग । १ भंग हो । । । । । । । । । । । । । । । । । ।			
न दर्शन		m		2	१४ का भंग को नं मुिंब			
चौतीस स्थान दश्नेन	~		र ३ भास	×~	क्षायिक सम्वक्त्व १, क्षायिक चरित्र१, केवल ज्ञान१, केवल दर्शन १, क्षायिक लहिंध ५,	मनुष्य गति १, शुक्ल लेस्या १, श्रसिद्धत्व १.	जीवत्व १, भव्यत्व १, ये १४ भाव जानना	

·
THI !

रें से ज्ञानाबरसाीय ४, दर्शनाबरसाीय ६, (महानिद्रा ३ घटाकर ६), अन्तराय ५ ये १६ घटाकर क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाग् कपाट समुद्धात की अपेक्ष: जानना और प्रतर समुद्धारायें असंख्यात लोक प्रमाग् जानना और लोक सत्व प्रकुतियां——=५ को नं० १२ के १०१ प्रकृतियों में से ज्ञानावरस्तीय ५ दर्शनावरस्तीय ६, अन्तराय ५, ये १६ घटाकर =४ जानना । ग्रौर तीर्थंकर प्रकृति १ जोड़कर झर्थात् ४७—१६ च४१ ⊦ १ ≕४२ जानना । संख्या—(प्रध्यर्थ) ग्राठ लाख श्रठ्यानवें हजार पांच सौ दो जीव जानना । U. N

काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुं हुर्ने से देशोन कोटि पूर्व वर्ष तक जानना स्पगन---- ऊपर के क्षेत्र स्थान के मुजिब जानना।

अंतर—अन्तर नहीं है। जाति (योनि)—के १४ लाख मनुष्य योनि जानना।

कुल--१४ लाख कोटि कुल मनुष्य की जा ाना ।

अपीग केवलो गुण स्थान

U		ıc
_	e .	用瓦光
	-	-
	, <b>.</b>	
	•	
		MA
		U
	٠,	धान

					•	•
	-1	5-9-3	सुन्नाः— इस अयोग केवली गुराए स्थान में प्रपर्धाप्त फ्रवस्था नहीं होती है।	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	; ;	
h			,;		:	र जन
अपयि	एक जीव के एक समय में	<i>5</i> 4	<b>१</b> १ १ भंग ३ का भंग	o en en en en e	2 0 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00	१ १ १ १ १
	एक जीव के नाना समय में	>>	१ भग ६ का भंग १	D 6~ 3~ 6~ 0 (	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	कु क
पयति १ मध्य १५ १५ १५ १५	नाना जीवों की अपेक्षा	ť	प्रयोग केव संज्ञी पंचिति का भंग क् आधु प्रांस	(०) अपगत संशा जानमा - १ मनुष्यगति जानमा १ पंचेन्द्रिय जाति जानमा १ घसकाय जानमा (०) अयोग जानमा	) अपापप अफ्रपाय केवल ज्ञान यथाख्यान केवल दर्शन ) अलेख्या भव्यत्व ज्ञा	अस्य असम
;	सामान्य ग्रालाप	٤.	देखें ६ %	r mi er er o s	, , , , , , , , , ,	and an an an an
	क्रम स्थान	*	१ गुएए स्थान २ जीव समास ३ पर्याप्ति को नं० ४ प्राप्त	र संग्रा ६ यत्ति ५ इन्द्रिय जाति ६ योग १० वेद	११ कपाय १२ जान १३ तमन १३ दर्गः, १५ लेडमा १६ मन्यत्व	१७ सम्प्रकृत्य १८ स्त्राः १९ आहारक २० उपयोग २१ ध्यान

	4161-3 		
अयोग केबरी म		१ भंग ११३ का भंग हो नं० १८ के मजि	
>> ~	· >> ·	१ भंग १३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	
मोध्दक मं० १४	m·	१३ ११ का मंग को नं० १८ के मुजिब जानना	
🎺 चौतीस स्थान दश्तेत	~	१३ को नं० १३ के १४ भावों में से शुक्ल लेश्या १ घटाकर शेष १३ भाव जानना	

भ्रवगाहना को नं० १८ देखा। नंध प्रकृतियां—०

ड॰य प्रकृतियां—मनुष्यायु १, उच्चगोत्र १, सातावेदनीय १, मनुष्यगति १. पंचेन्द्रिय जाति १, त्रसकषाय १, वादरकाय १, पर्याप्त १, सुभग १,

आदेय १, यशकीति १, तीयंकर १ ये १२ प्रक्र तेयां जानना । सूचनाः---सामान्य केवली के तीःगँकर प्रकृति १ घटाकर ११ प्रकृति जानना ।

सरव प्रफुतियां—— दथ द्विचरम समय में को नं० १३ के मुनिज दथ और चरम समय में उदय की १२ प्रकृतियों में घसाता वेदनीय १ **धुचना**— सामान्य केवली की उदय की ११ प्रकृतियों में श्रसाता वेदनीय १ मिलाकर १२ की सत्ता जानना ।

भैत्र-लोक का श्रसंख्यातवां भाग प्रमास जानना ।

w

स्पर्गन—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाए। जानना ।

मुचना---१४वे गुएा स्थान की स्थिति जो दो समय की बताई गई है यह ८५ सत्ता प्रकृतियों की नाक्ष करने की घपेक्षा जानना और अ, इ, नाल---श्रन्तमुँ हुतं से श्रन्तमुँ हुतं जानना।

पन्तर—एक समय से लेकर ६ मास तक इसं गुरा स्थान में कोई भी जीव नहीं चढ़े। ग्ह, लू बोलने में जितने समय लगें पूर्ण **काल को जा**नन**ा**।

जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना । कुत--१४ साख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

W.

मतीत गुण स्थान या सिद्ध भगवान्

•					
क्र स्थान नाम सामा	सामान ग्रालाप	पयिति		ज्ञ <b>प्य</b> ि	
		नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
~	6	re ·	<b>)</b> 0	<b>a</b>	ひ-9-3
	-				सचन[य
र गुरा स्थान ३ जीव समास	<b>o</b> o	श्रतात गुरा स्थान जानन। जीव समास "			ही अपयोप अवस्या
३ पर्याप्ति	9	,, पर्याप्ति			नहां हाता है।
४ प्रास्त	. •	" प्रांस "			
५ संजा	o	त मंज			
६ मति	o	हिंस			
७ इन्द्रिय जाति	o	इन्दिय रहित			-
न क्षाय	¢	क्रीय " "			الله الله الله الله الله الله الله الله
ह योग	a	योग " "			<del></del>
<b>०</b> विद	o '	भपगत वेद,, "	•		
११ कवाय	•	श्रक्षवाय ,,		<b>.</b>	
१२ ज्ञान	~	१ केवल ज्ञान "	१ कवल झान	१ क्वल शान	
१३ संयम	9	.H.	e d		
१४ वर्शन	تمه	१ के बल दर्शन जानना	१ कवल दश्म	्र कवल दशन	
१५ नेश्या	0	मृतेर्या "			
१६ भव्यत्व	o (	श्रवभय "		Trans range	
१७ सम्पन्त	2-	र साथिक सम्यम्पन जानवा	र दाविक प्रम्मम्पत्	Piller of the life	
रेत संगो	¢	ग्रनुभय	***************************************		
१६ माहारक	0				
२० त्वयात	Ռ'		र युगपत् जानना	द दुरायत् र तिया	
र ध्यान	o	ध्यान राहत अवस्था जानमा			
रेर यात्रव	٥	यासव ,, ,, ,, ,,		***************************************	<del>-</del>
रश भाव	<b>&gt;</b> 4	्र क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दगन, क्षायिक वाय अनुस्तिक समावक जीवका में (५)	४ भाव जानना	भू मान जानग	
***		सायक सम्पर्धां जावरव प (४)			

सूचना: --- कोई ग्राचार क्षायिक भाव ६ ग्रीर जीवत्व १ ये १० भाव मानते हैं।

४ भवगाहना---को नं० १ द देखो ५ बंध प्रकृतियां---बंध रहित ।

अदय प्रकृतियां—उदय रहित

सस्य प्रकृतियां—सत्व रहित

क्षेत्र—४४ लाख योजन सिद्ध लोक (सिद्ध शिला) स्परोन—सिद्ध भगवान स्थिर रहते हैं।

भाल-मर्बेकाल।

अन्तर—अन्तरहित।

जाति (योमि) —जाति रहित

नरक गति में	भिर्म सम्बद्धाः स	एक जीव के एक समय में	u	<ul><li>१ मुस्स ।</li><li>१ ते ४ मुस्स ।</li><li>में कोई १ मुस्स ।</li></ul>	१ समास १ संजी पं० श्रप- यित जानना १ भंग ३ का भंग जानना
नरक	अपयोप्त	/ १ जीव के नाना समय में	و	सारे गुरा स्थान १ले ४थे दोनों गुरा। जानना	१ समास १ संज्ञी पं॰ अपयिष्ति  १ संज्ञी पं॰ अप- अवस्था जानना   यिष्ठ जानना १ भंग   १ भंग ३ का भंग जानना  ३ का भंग जानना
		नाना जीवों की ग्रपेक्षा	US	रे १ले ४थे ये २ गुराए० जानना सुचना— मनुष्य और तियंच गति वाला जीव सासादन गुरा स्थान में मरकर नरक गति में जन्म नहीं लेता, इसिलये यहां नरक गति में सासादन गुरा स्थान नहीं होता। (देखो गो० क० गाउ २६²)	१ अपर्याप्त अवस्था १ ले ४थे गुर्गा॰ में १ संज्ञी पं॰ अपर्याप्त जानना मन-भाषा-इवासोच्छवास ये ३ घटाकर शेष (३) १ले ४थे गुर्गा॰ मे १ का भंग आहार, शरीर इन्द्रिय पर्याप्ति ये ३ का
् इर् ) कोष्टक नं <b>०</b> १६		एक जीव के एक समय में	*	१ से में कोई १ से में कोई गुरा जानना	<ul><li>१ समास</li><li>१ संज्ञी पं० पर्यात</li><li>जानना</li><li>१ भंग</li><li>६ का भंग</li><li>जानना</li></ul>
<i>)</i> क्रोंक		एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	>	सारे गुर्णा १ से ४ सारे गुर्णा । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	१ जीव समास १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना १ भंग ६ का भंग जानना
र्शन	पयिति	नाना जीव की ग्रपेक्षा	m	४ १ से ४ गुरा० जानेना	१ पर्याप्त ग्रवस्था १ से ४ मुसा० में १संज्ञी पं० गर्याप्त जानना ६ १ से ४ मुसा० में ६ का भंग सामान्यवत् जानना
चौतीस स्थान दर्शन	क० स्थान   सामान्य म्रालाप		£ .	१ मुस्स स्थान ४ मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, मचिरत मुस्स् ये ४ मुस्स् जानेना	२ जीव समास २ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त ", अपर्याप्त ये २ जानना ३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखों

n X

चौतीस स्थान दर्शन	રોન	्र दर् कोष्टक नं	न् । न् १६	-	नरक	नरक गति में
	m	>>	ਤ\	<b>س</b>	9	ս
	१० १ से ४ गुरा० में	श्रंग १० का भंग	१ भंग १ का भंग	७ मनोबल, वचनवल,	१ भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग
	१० के भंग सामान्यवत् जानना			इवासोच्छवास, ये ३ घटाकर (७) १ले ४थे गुएए० में ७ का भंग		,
				भायु प्रांस १, कायवल प्रांस १, इन्द्रिय प्रांस- ४,		
	>>	१ भंग	१ भंग	F   F   F   F   F   F   F   F   F   F	१ भंग	१ भंग
	१ से ४ गुरा० में ४ का मंग	४ का भंग	४ का भंग	१ले ४थे गुएा० में ४ का मंग	४ का भंग	४ का भंग
	सामान्यवत् जानना १	~	۵	पर्याप्तवत् जानना १	>	o
ئا ئا ئا	१ से ४ मुसा० १ नजस मन्ति जनसम्	१ नरक गति	१ नरक गति	१ले ४थे मुराए में	नरक गति	नरक गति
	נילא יונט מוטטן			१ नरक गांत जानना सूचना—शेले गुरा स्थान में मनने ताला जीत मान		
				ही (१ से ७ नरक) नरकों में जन्म ले सकता है।		
				परन्तु ४थे गुरा स्थान में मरने बाला जीव १ ले नग्र		
<del></del> -	6	•		में ही जन्म ले सकता है।		
	१ से ४ मुरा० में १ पंचेन्द्रिय (संशो) जाति	्र   संज्ञी पं० जाति 	्र संज्ञी पं० जाति	१ १से ४थे मुसा० में १ संज्ञी पं० जाति वातता	१ संज्ञी पं० जाति	१ संशोपं जाति
	१ से ४ मुसाउ में १ समझाम जानना	श्रम्भाय	१ त्रसकाय	१ १ से अमुरा० में	१ त्रसकाय	श्रमकाम
				१ नसकाय जानना	,	

A C A SE LEASE MARKET & S. T.

ति में	ឋ	१ योग		१-२ के मंग में में कोई १	योग जानना	***************************************			•	. ~	१ नपुंसक वेद	ļ	<u>-</u>		७-द-१ के भग पर्याप्तवत		६-७-= के भग पयपितत्	जानना		_
नरक गति में	9	१ भंग		१-२ के भंगों में से कोई १ भंग	जानना		•			~	नपुंसक वेद	ii.	मार्भा	के सारे थग जानना	१ल मुरा० म ७-८-९ के भंग	पर्याप्तवत् जानना	४थे मुराए में ६-७-द ने भंग	प सिवत् जानना		
	US".	२ वै० मिश्रकाय योग १,	कार्मासाकाय योग १ ये २ योग जानना	१~-२ क भग ेले ४थे गुणा० में १ का थंग-कामिणकाय	योग विग्रह गति में	जानना २ का भंग–कामभाकाय	योग १, वै० मिथकाय	योग १, ये २ का भग निर्झेत्य पर्याप्त (स्राहार	प्यांपि के समय) अवस्या	म जानना ?	१ले ४थे गुरा० में	१ नपुंसक वेद जानना	२३-१९ के भंग	ते मुखा में	२ का भंग पयाप्तवत्	,	(२) ४थे गुर्गा० में १६ का भंग पर्याप्तवत्		सूचना—यह भग १ले नरक की श्रपेक्षा जानना	_
बर १६	አ	१ योग	4 2 3 4	ह के भग म स कोई १ योग जानमा	-					~	नपुंसक वेद	ļ	6-5-8 3 rit	मं से कोई १	भंग जानना	,	३२ ४थे पुराए में ६-७-न से मंगों	मं स कोई १	भग जानना	-
्र हुए कोष्टक नम्बर	>-	१ भंग	•	ह का भग जानना	,					۵	नपुंसक वेर	110	सार भग श्रमने श्रमने स्थात	के सारे भग	७-प-९ के भंग को० न० १ ः	समान		ि १व थे	समान	
दर्शन	m·	ह त्रै० मिश्रकाय योग १	कामिल्लिंग योग १, ये २ घटाकर (६)	१ स ४ मुरा० म ६ का मंग ग्रमोगोग ८ त्रमप्र गोग ४	वै॰ काय योग १ ये ६ का	भंग जानना				۵	१ से ४ मुस्ति में	१ नपुसक वेद जानना २३	२३-१९ से भंग	(१) १ते २२ गुरा० में	२३ का मंग-सामान्यवत् अतनत		(२) ३रे ४थे गुरा० में १६ का भंग-जनर के २	के भंग में से अनंतानुवंधी	कपाय ४, घटाकर शप १६ का भग जानना	
चातीस स्थान दर्शन	~	योग १३ गा० मिश्रकाय योग १.	ाय योग १, ाय योग १,	योग १, न्र (११)			<u> </u>			नपंमक वेद		الله الله الله الله الله الله الله الله	23			***************************************	****			
चार्त	~	ह योग ग्रा॰ मिश्रव	ब्राहारक काय योग १ ब्रौ० मिश्र । य योग १	ज्ञी० काय योग १, ये ४ घटाकर (११					4	१० वेद नपः	5	११ कपाय	ये २ घटाका (							-

i	,	. น				
चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं	o~ ∪~		नरक र	गति म
r	m².	>>	ઋ	υy	9	<b>u</b>
१२ जान	n n	सारे भंग	१ शान	प्र भागमध्य सम्बद्धाः	सारे भंग	<b>१</b> जान
भुनात २, गात २ ये ६ ज्ञान जानना	२-२ क भग (१) १ने २२ ३२ मुसा० में ३ इंग्लें के लंग	१-२-१ मुसा० में	३ के भग में में कोई 9 बान	क्षित्रपाव शांत वटाकर र) में २-३ के भंग बान (१) 8 से गागाः में 5 का यंग	्र ट्राप्ट	१से साति से
	र का फ नग तीन कुशान जानना /समित स्थान समानि	F	जानेता	त्रिक्ति पुराय में भा भा क्रिमति कुश्रुत ये २ जानना (२) ४३ मणः में	र का भंग जानना र का भंग जानना	र के भग में से
٠	(३) ४थे मुसा० में		र के भंग में से	३ का भग मित-श्रुत-	३ का भंग जानना	公司司司司
	र का भग तान शान (मति-श्रुत-ग्रवधि शान)	३ का भग	काइ १ मान जानना	अवाध जान य ३ का भग सुचना-यह ३ का भंग पहले		कोई १ भान
	जानना	ć		नरक की अपेक्षा जानता	į	जानना ,
१३ सयम श्रमंयम	१ १ से ४ नुसा० में	र असंयम	१ श्रसंयम	१ १ले ४थे मुसा० में	१ ग्रसंयम	१ १ ससंयम
	१ असंयम जानना		•	१ श्रसंयम जानना		
१४ दर्शन	, (1)	१ भग	१ दर्शन	m .	१ भंग	१ दशंन
भनसु दशन १, चक्ष दर्शन १,	२-३ क भग (१) १ले २२ गुरा॰ में	१ले २२ मुसा० में	२ के भंग में	२-३ क भग (१) ग्ले गुरा० में	१ले गुरा० में	२ के भंग में से
भवधि दशन १	२ का भंग	२ का	से कोई १ दर्शन	२ का भंग पर्याप्तवत्	२ का भंग	कोई १ दर्शन
यं ३ दशंन जानना	श्रमसु दर्शन १, चसु दर्शन		जानना	(२) ४थे गुरा॰ में	४थे गुसा० में	य के भंग में से सोक ० द्रक्ष
	(२) १२ ४थे मुसा० में	३२ ४थे मुरा॰ में	३ के भंग में से	र्या म्या स्थाप्तवत् सूचना-यहाँ ३ का भंग		1 × 1 × 10 × 10 × 10 × 10 × 10 × 10 × 1
	३ का भंग सामान्यवत् तीनो दर्जन जानना	३ का भंग	कोई १ दश्न	पहले नरक की भ्रपेक्षा		
१५ लेख्या ३		१ भंग (	१ लेश्या	m	१ भंग	१ लेखा
श्रयुभ लेश्या	१ से ४ गुरार में ३ का भंग कृष्ण-नील-कापोत	m #	३ के भंग में से कोई १ लेख्या	१ल ४थे मुरा० में ३ का भग पर्यात्त्वत	। भंग	३ के भंग में से कोई १ लेखा
१६ भव्यत्व	ये ३ श्रग्रुम लेश्या जानना	० भंग	जानना १ सतस्या		•	जानना
भठ्य, भ्राभ	२-१ भ भंग			3-8 strin	* Hi	1 2 2 4 4 4
•	(१) १ले मुरा॰ में	१ले मुराः में	२ के भंग पें	(१) १ले गुरा॰ में	१ले गुरा० में	र के भंग में
					. !	

m
२ का भंग
ί,
१ भव्य ही जानना
सारे भंग
•
१ले गुरा॰ मे १ मिध्यात्व
२२ मुखा में
१ सांसादन
m
१ मिश्र
<del>گر</del> '
३-२ का भंग

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	)	₩ ₩			; ;
~	ď	do John	١٥ ٪ د		ਜ	नरक गति में
	~	>	<b>5</b> 4	w	9	
१६	१ १से४ गुरा मे १ माहारक जानन	<b>१</b> ग्राहारक	१ माहारक	१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	दोनों अवस्था	्र अवस्था
,					—————————————————————————————————————	दोनों ग्रवस्था में से कोई   १ ग्रवस्था
२० उपयोग शानोपयोग ६ इस्टेन्ट्रेन	ह ४-६-६ के भंग	१ भंग	१ उपयोग	े वाहारक निवृद्य पर्याप्तक अवस्था में जानना ट		जानना
दशनापयाग ३ ये ६ उपयोग जानना	(१) १ले २२ मुरा० में ४ का मंग	१ले २२ मुसा० में	र के मंगों में से	न घटा	<b>४</b> भग	१ उपयोग
,	स्त्राम ३, दर्शन २ से प् का भंग जानना	४ का भंग	1-	(द) ४-६ के भंग (१) १ले गुराः० में	१ले गुराः में ४ का मंग	४ के भंग में से
		३२ मुसा० में ६ का भंग	द के भंग में से	४ का भंग कुमति, कुश्रुत, श्रचक्ष		काइ १ उपयाम जानता
	अयान दे, दर्शन हे से ह का भंग जनना (३) ८५		जानना	दशन, चक्षु दर्शन ये ४ का भंग जानना		
	đ	४थे गुरारा में ६ का भंग	६ के भंग में से कोई १ उपयोग	(२) ४थे गुरा० में ६ का भंग पर्याप्तवत् मननः	४थे मुसा० में ६ का भंग	६ के भंग में से कोई ९ उपयोज
	~			४ गा न्यह ६ का भग १ले नरक की श्रपेक्षा		जानना
	त-8-8° (·)	सारे भंग	१ च्यान	ط المالية المالية	सारे भंग	6
	त्रा रत्नुस्वयम् द्याम्यम्	१ले ३२ मुरा० में ८ का भंग	त के मंग में से	अपाय विचय थर्मेध्यान १ घटाकर् (६)	•	
में १० ध्यान जानना (	र्भार प्यान ४, राद्र ध्यान ४, ये द का भंग जानना (२) ३२ गरा० में	•	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	5-8 के भंग (१) १ले गुरा स्थान में	१ले मुसा० में ८ का भंग	द के भंग में से कोई? ज्यान
	त का भंग अपर के त भ	३रे गुरा। भे ६ का भंग	८ के भंग में से ( कोई १ ध्यान	्र का मंग पयाप्तवत् (२) ४थे गुरा में हे हा भंग	४थे मुराउ में	जानना ' ६ के भग में भ
				र पा सर श्रात ध्यान ४,	ट का भंग	कोई १ ध्यान

	>>	૪	υy	9	n
	>>	**	y		u
प्राज्ञाविचय धर्म ध्यान १ जोड़कर ६ का मंग			रींद्र ध्याम ४, याज्ञा- विचय धर्भ ध्यान १, से ६ का भा		
× ——	४थे मुसा० में	१० के भंग में	<del>-</del>		
		से कोई १ घ्यान			
६ के भग में अपाय ।वचय थर्मे घ्यान १. जोड़कर १० (					
		9 <u>vin</u>	° >	माने थांग	e Tří
वै० मिश्रकाय योग १   अप	स्यान	सारे मंग में से	वचनयोग ४, मनोयोग	स्रपने स्थान	सारे भग में से
			४, वै० काय योग १,	के सारे भंग	कोई १ भंग
 व	जानना	जानता	ये ६ घटाकर (४२) ४२-३३ के भंग	जानना	जानना
	१ले गुरा ० में	११ से १ न तक	(१) १ले गुरा० में	१ले मुसा० में	११ से १ न तक
~	तक	45	४२ का भंग-पर्याप्त के	११ से १८ तक के	के मनों में से
	मं	क भंग	<del></del>	भंग- को० नं०	कोई १ भंग
	१८ देखो	जानना		१ न देखो	जानना
हिस्य ६) १२, कपाय २३ (स्त्री-पुरुष वेद  घटाकर)			व० ।मश्रकाय याग १, कार्मासाकाय योग १	• •	
`%`			ये २ जोड़कर ४२ का		
<i>₩</i>				#	) /
· · ·	२रे गुरु में	१ - से १७ तक	३३ का भंग-छपर के	ह से १६ तम मे	THE THE THE
४४ का भंग-जपर के ४६   १०	तक के	के मंगों में से	४२ के भंग में से	भंग-को० नं०	कोई १ भंग
	ग'	कोई १ भंग	मिथ्यात्व ४, श्रमन्ता-	१ न देखो	जानना
भंग (प	१म देखो	जानना	नुबंधी कषाय ४, ये ६   घटाकर ३३ का भंग	**************************************	•
		६ से १६ तक	:		
४० का भंग-ज्ञपर के ४४   ६ व	६ से १६ तक के	के मंगों में से			•

चौतीस स्थान दर्शन	न दश्ने	, व	न्ध्य ) नं०१६		नरक	गति में
a	m	>>	<b>5</b> 4	US	9	tr .
	,				)	
	के मंग में से अनन्तानुबंधी	भंग-को० नं०	कोई १ भंग	, v-		•
	कषाय ४ घटाकर ४० का	१  देखो	जानुना			,
	सर्वात्त्र	1	•			
الم الم	113	सार भग	१ भग	o~ m²	सार भग	८ भग
उपश्म-सााम सम्यक्तव २	२६-२४-२५-२६ के भंग	,		उपशम सम्यक्त १, कस्त्रविध सम्		
क्रशान ३. ज्ञान ३.	(१) १ले गमा में	% मामा %	治 注: 是 5.6	भूजनाव शाप (,)	850	-
: ``:	स्	१७ का भंग-को०	से कोई श्रमंग	24-29 Strin	2	.:
क्षयोपशम सम्यक्त्व १,	:	१ प देखी		(8) 2时 中红 中	श्ले गुरा भे	१७ के भंगों में
नरक गति १. कषाय४,	लिह्		को मं श्र	२५ का भंग-पर्याप्त के	१९७ का भंग	से कोई १ भंग
नपुंसक लिंग १,				भंग में	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८
अगुभ लेखा ३,	अशुभ लेख्या ३, मिध्या-			ाधि ज्ञान घट		देखो
मिध्यादर्शन १,				ंग जा		
असंयम १, अज्ञान १				(२) ४थे मुरा भे	४थे मुराउँ में	१७ में भंगे में
श्रासद्धत्व १, पारि-	पारिसामिक भाव ३,			२७ का भंग-	१७ का भंग	से कोई १ मंग
सामिक भाव ३	ये २६ का भंग जानना				कों नं १८ देखो	को० मं० १८
यं ३३ भाव जानना	(२) २२ मुस्सं भे	२रे मुखः में	६ के भंगों में	में से उपश्म सम्यक्त		देखो
	२४ का भंग-ऊपर के २६	~	से कोई १ मंग	घटाकर २७ का भंग		
	के भग में से मिथ्यादर्शन	नं० १८ देखो	जानना	जानमा	~	
	१, अभव्यत्व १, ये २		मो० नं० १८			
	घटाकर २४ का भंग		देखो	सूचनाः यह २७ का		
	जानना			भंग ४थे गुएए स्थान में	,	
	(३) ३र मुर्गा० मे	३रे मुसा०	१६ के मंगों में			
	२४ का भंग-जपर के २४		सि कोई १ भंग	ग्राने वाले जीवों के लिये		
	। अवधि दश	को० नं० १८ देखो	जानना	जानना		
	जोड़कर २५ का भंग		को० नं० १८		1	
;	जानना		देखो	-		
	(४) ४थे मुस्तिः मे	४थे गुराः में	१७ के भंग में			į
	१ले नरक में	१७ का भंग	कोई १ भंग			
	! ! !		जानना			

नरक गति में	ឋ	
नरक	g	
	US	
न्तर व न् ० १६	ಶ	मो०नं० १ प्र देखो
, कोष्टक	>>	मो० नं० १ प्र देखो
दर्शन		र्द का भंग     डपशम-क्षायिक सम्यक्त्व     र, ज्ञान ३, दर्शन ३, लिंग ३, लिंग १, क्षयोपशम-     सम्यक्त्व १, नरक गति १, क्षयोपशम-     सम्यक्त्व १, नरक गति १, प्रस्यम १, प्रज्ञान १, प्रज्ञान १, प्रस्यम १, प्रज्ञान १, प्रस्यम १, प्रज्ञान १, प्रत्यम १, प्रज्ञान १, प्रत्यम १, प्रावत्व १ १, प्रत्यम १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
चौतीस स्थान दशैन	8	

	त्व १म घ
: =	0 0 X
10 th	150125
मरक की सरकार म	۶ ب
il in the second	i)
त क्	:
म	•
(เก	•
ा श्रोर ए	
निना	
प्रमासा	
. यंगुल	•
३ हाथ ६	जानमा ।
धनुत	वगाहना
ना. ज	की य
वगाह	भेदों
य	गनेक
स्	₩ ₩
d <del>e</del>	बी
१ले नरक	ानना,
- %ल	ह
।गाहना— १हे	
श्रवगा	

(१) १ले २रे ३रे नरक में पर्याप्त श्रवस्था में १०१ प्रकृतियों बन्ध होता है। बन्धयोग्य १२० प्रकृतियों में से नरक द्विक इन शवस्थाग्रों में २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैकियकद्विक २, याहारकद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४. साधारसा १, सुश्म स्थावर १, अपर्याप्ति १, आतप १ इन १६ प्रकृतियों का बन्ध नहीं होता। कारसा नारकी मरकर जन्म नहीं ले सकता है। इसलिये ये १६ प्रछितियां घटाकर १०१ जानना। बंध प्रकृतियां – १०१

۶۲ ۲۱

3

- (२) १ले रेरे ३रे नरक में निर्वेत्य पर्याप्त अवस्था में नियैचायु १, मनुष्यायु १ इन दोनों का बन्ध नहीं होता इसलिये ये २ ऊपर के १०१ प्रकृतियों में से घटाकर ६९ प्रकृतियों का बन्ध जानना। W
- (३) ४थे ५वें ६वें ७वें नरक में पर्याप्त अवस्था में १०० प्रकृतियों का वन्ध होता है। ऊपर के १०१ प्रकृतियों में से तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर १०० जानना (देखो गो० क० गा० ६३) 800
  - (४) ४थे ४वें ६वें नरक में निव्नेंत्य पर्याप्त श्रवस्था में तियैचायु १, मनुष्यायु १ ये २ का वन्ध नहीं होता इसलिये ये २ ऊपर के १०० प्रकृतियों में से घटाकर ६८ प्रकृतियों का वन्ध जानना । S
    - (५) ७वें नरक के निर्वे त्य पर्याप्त श्रवस्था में मनुष्य गति, मनुष्यगत्यानुषूर्वी १, उच्चगोत्र १, इन ३ प्रकृतियों नहीं होता इसलिये ये ३ ऊपर के ६५ प्रकृतियों में से घटाकर ६५ का वन्ध जानना । **ઝ**{ ₩
- ज्ञानावरएाीय ५, दर्शनावरएाीय ६ (तीन महानिद्रा घटाकर), वेदनीय २, मिध्यात्व–सम्यग्निध्यात्व–सम्यक् प्रकृति ३, कषाय २३, (स्त्री-पुरुष वेद घटाकर), नरकायु १, नीचगोत्र १, ग्रन्तराय ४, नामकर्म ३०, (नरक गति १**,** पंचेन्द्रिय लघु १, उपघात १, परघात १, उच्छवास १, अप्रशस्त विहायोगति १, प्रत्येक १, वादर १, वस १, पर्यापि १, दुर्भग १, जाति १, निमर्पि १, वैक्रियकद्विक २, तैजस १, कामरिए १, हुंडक संस्थान १, स्पर्शादि ४, नरकगत्यानुपूर्वी १, झगुरु-स्थिर १, अस्थिर १, गुभ १, युगुभ १, दुःस्वर १, प्रनादेय १,प्रयशकीति १ ये ३०) इन ७६ प्रकृतियों का उदयजानना । (देखी गो० क० गा० २६०) **उदय प्रकृतियां**—७६
  - सरव प्रकृतियां—१४७ (१) १ले २२ ३२ नरक में देवायु १ घटाकर १४७ प्रकृतियों का सत्ता जानना ।
- १४५ (३ ७वें नरक में मनुष्यायु का बन्ध नहीं कर सकता इसलिये देवायु १, तीर्थंकर प्रकृति १, मनुष्यायु १ ये ३ घटाकर १४६ (२) ४थे ५वें ६वें नरक में देवायु १, तीर्थंकर प्रकृति १ ये २ घटाकर १४६ का सत्ता जानना। १४४ प्रकृतियों का सत्तां जानना ।

ं संख्या—श्रसंख्यात नारकी जानना।

संख्यातवां भाग प्रमास्स जानना ।	स्पर्शन—लोक का ग्रसंख्यातवां भाग प्रमारा जानना। काल - नाना जीवों की ग्रपेक्षो सर्वकाल जानना। एक जीव की ग्रपेक्षा १ले नरक में जघन्य ग्रायु १० हजार वर्ष जानना ग्रीर सातवें काल - नाना जीवों की ग्रपेक्षो सर्वकाल जानना। एक जीव की ग्रपेक्षा १ले नरक में जघन्य ग्रायु १० हजार वर्ष जानना ग्रीर सातवें	नरक में उत्कुष्ट आयु ३३ सागर प्रमास जानना, बाच के अनक भेंद जानना। ग्रन्तर—नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं। एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँहर्त से ग्रसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक नारकी नहीं		्लाख्योनि जानना ।	गीटिकुल नरक में जानना ।
क्षेत्र.—लोक का प्रसंख्यातवां भाग प्रमासा जानना	स्पर्शन—लोक का ग्रसंख्यातवां भ काल – नाना जीवों की ग्रपेक्षा	नरक में उत्कृष्ट आयु दे । ग्रन्तर—नाना जीवों की ग्रपेक्षा	बन सकता है।	जाति (योनि)—४ लाख योनि जानना ।	फुल२५ लाख मोटिकुल नरक में

աւ ա. ա. »

_
a
ů
_

चौतीस	चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्ट	कोष्टक न <b>ं</b> ० १७		तियँच गति में	गति भे
क०/स्थान  सामान	सामान्य श्रालाप	पयप्ति				अपयोप	<b>b</b> e-
		नाना जीव की क्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
~	e	æ	>>	ઝ	us-	g	ឋ
१ गुएा स्थान मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, मिवरत देश संयत ये (१)	५ सादन, देश	१ (१) कर्म भूमि में १ से ५ तक के गुर्गा स्थान (२) भोग भूमि में १ से ४ तक कै गुर्गा स्थान	सारे गुया॰ १ से ४ गुया॰जानना १ से ४ गुया॰जानना	8 मुख्यः १ से ४ में से नोई २ मुख्यः १ से ४ में से नोई १ मुख्यः	३ (१) कमें भूमि में १ते २२ गुणः जानना (२) भूमि भूमि में १-२-४ गुण् जानना	सारे गुरा स्थान १ते २रे गुरा० जानना १-२-४ गुरा० जानना	१ मुसा० १-२ में से कोई १ मुसा० १-२-४ में से कोई १ मुसा०
२ जीव समास १४ को० नं० १ देखो	्र देखी १८ ४	<ul> <li>७ पयपित ग्रवस्था</li> <li>१ समास</li> <li>१ कमें भूमि में</li> <li>पहले गुएए में</li> <li>७ जीव समास पर्याप्त</li> <li>७ जीव समास पर्याप्त</li> <li>१ क्षे से नुएए में</li> <li>१ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना</li> <li>१ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना</li> <li>१ संज्ञी पं० पर्याप्त में</li> <li>१ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना</li> <li>१ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना</li> <li>१ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना</li> </ul>		१ समास ७ में से कोई १ समास जानना संज्ञी पं० पर्याप्त जानना जानना	ा ग्रीप्त प्रसम इसम	१ समास १ले गुर्या० में ७ में से कोई १ समास जानना २२ गुर्या० में ६ में से कोई १ समास जानना	१ समास ७ में से कोई १ समास जानना ६ में से कोई १ समास जानना
३ पयिप्ति को० नं	र्मि को० नं० १ देखो	६-५-४-६ के मंग	~ <del>باز</del>	१ भंग	म में में गीत जानना बासो०	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त १ संज्ञी पं० अप- जानना यिप्त जानना १ भंग १ भंग	१ संज्ञी पं० ग्रप- यिप्त जानना १ भंग

	,		, .	÷,	•	* 1	į		
	r	१ जा ।	१ के भग में से कोई १ ज्ञान ज्ञानना	<b>a</b>	३ के भंग में से कोई १ जान जानना		:	१ संयम	१ जमंयम
तियंच गति	9	१ भें	१ले २२ मुसाँ में २ का भंग	, , ,	४थे मुराए० में ३ का भूग		1	१ भंग	१ने २२ गुगा० में
- •	UJ	४ कुश्रवधि ज्ञान घटाकर(१) २-२-३ के भँग	(१) कर्म भूमि में १ले २२ गुए।० में २ का भंग कुमति कुश्रुति, ये २ कुज्ञान जाननः	(२) भोग भूमि में १ते २२ गुरा० में २ का मंग कुमित, कुथुन के २ कवाम जामना		<u>ज</u> ान्त्री	,	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	(१) कर्म भूमि में १ले २२े गुगा में
ह७ .) नम्बर् १७	*	में से कोई १ मंग	१ ज्ञान २ के भंग में से स्तेर ० ज्ञान	जातना ।	३ क भग म स कोई १ जान जानना	# = :	३ के मंग में से कोई १ ज्ञान जानता ३ के मंग में से कोई एक ज्ञान	जातना १ मंयम	१ क्रमंयम
् हिं कोष्टक न	>>	को० नं० १८ देखो	१ भंग १ले मुख् भं		१-२-३ गुएा० म ३ का भंग	४थे गुगए० में ३ का भंग	१-२-३ मुरा० में ३ का भंग ४थे गुरा० में ३ का भंग	१ भंग	१ से ४ गुमा भे
य स्थान	m	एक नपु सक का भंग	्र. १. १.३-३-३-३ के भंग ११) कर्म भूमि में १ले गुगा० में	र का भग एसान्द्रय सं असंशा पंचेन्द्रिय तक के जीवों में कुमति, कुश्रुति ये र कुनान जानना	१ले २२ ३२ गुर्ग में ३ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय में कुमति, कुश्चति कुश्चवधि ये ३ कज्ञान जातना	<ul> <li>४थे ५वे गुग्ग० में</li> <li>३ का भंग मित, श्रुति अविधि</li> <li>जान इन तीनों का भंग जानना</li> <li>(२) योग भूमि में</li> </ul>	१-२-३ गुर्गा० में ३ का भंग तीन गुजान जानना ४थे गुर्गा० में ३ का भंग मित कुल-अविध	ज्ञान ये ३ जान जा .ना	१-१-१- क भग (१) कमं भूमि में १ में ४ गुगां० में
चौतोस स्यान दर्शन	2		१२ ज्ञान कुज्ञान ३, ज्ञान ३, ये ६ ज्ञान जानना						मयम य २ मयम जानना

( ) OJ

स्वीतीस स्थान दश्न कोण्डन न् ० १८ । १८ वर्ग मान्यम स्थान स्थान दश्न कोण्डन न् ० १८ वर्ग मान्यम स्थान वाना (अस्त मान्यम वाना वाना (अस्त मान्यम वाना वाना वाना वाना वाना वाना वाना वान	तियँच गति	? असंयम -४ गुराः० में ? श्रसंयम ? असंयम		१७ म (४–९–२ के भंगों भंगों में से कोई दर्शन भंग जानना	० में २ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	में द के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	
वितिस स्थान दश्न के स्थान विश्व के स्थान दश्न कि स्थान दश्न कि स्थान दश्न कि स्थान विश्व कि स्थान कि		\$ - c - 2		१-२-२ के से कोई १ पानना		४थे त्या । ३ का भन	. •
वितिस स्थान दश्न के स्थान विश्व के स्थान दश्न कि स्थान दश्न कि स्थान दश्न कि स्थान विश्व कि स्थान कि	UP		है - २ - २ - २ के भंग (१) कर्म भूमि में १९ के १२ मुख्य में	४८-४-२ के भंग पर्याप्त- बर्व जानना ४था गुरा० बहां नहीं होत  ॐ(२) भोग भूमि में ्र १८०० २० माम	र का भंग अनुसु दर्शन नक्ष दर्शन, ये २ का भंग जानना	र का भंग अचक्ष दर्शन, चक्ष दर्शन, अवधि दर्शन, ये ३ का भंग जानना	
वैतीस स्थान दश्न हे हैं अस्यम जानना १ क्ष ४ क्ष अस्यम जानना १ क्ष ४ क्ष ४ क्ष अस्यम जानना १ क्ष ४ क्ष ४ क्ष अस्यम जानना १ क्ष ४ क्ष अस्यम जानना १ क्ष ४ क्ष अस्यम जानना १ क्ष ४ क्ष भ्र भ्र में भ्र में में भ्र में में भ्र में भ्र में में में भ्र में में में भ्र में में में में में में में भ्र में	9 2	<del></del>	? दर्शन ?—? के भंगों में से कोई?	दर्शन जानना		न वर्ग मः वर्ग मः	2
ह है असंयम जातना १ श्रेमें मुर्फ में १ स्वे मुण् में १ स्वे मुण् में १ से ४ मुण् में १ से १ मुण् में १ से भाग प्रकेटिय भीवों में १ मुण् में १ से भाग प्रकेटिय जीवों में १ से भाग प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना २ से में भ्राप में भी प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना २ से भाग में भी प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना २ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना ३ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना ३ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना ३ साम संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना ३ साम संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना १ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना १ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना १ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना १ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना १ से भाग संग्री प्रकेटिय के भ्रवस्य दर्शन जाना १ से भाग भ्रिम भ्रेम	) कोडि *	~ ~	१ भंग १वे मुख्य भंग १८-२ के भंगों		२रे मृत्याः २ का भंग	सरे मुसा २ का भंग	४थे ५वे गुरा० में ३ का भंग
वाँतीस स्थान र दर्शन १, दर्शन आत्ना र वर्शन आत्ना वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष	1 1	<ul> <li>४ असयम जानना</li> <li>४वे गुरा० में</li> <li>सयमासंयम जानना</li> <li>(२) मोग भूमि में</li> <li>१ से ४ गुरा० में</li> <li>१ असंयम जानना</li> </ul>	-२-२-३-३-२-३ के भंग (३) कर्म भूमि में ॥१ले गुराए में हिल्ला का भंग एकेन्द्रिय, द्विन्द्रिय,	दर्शन ही जानना भंग चक्षुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय जी दर्शन, चक्षु दर्शन	दर्शन जीतना २२ गुरा० में ग संशो पचेन्द्रिय के श्रचक्ष , बिधु दर्शन ये २ का भंग	श्रीताना ३२ गुरा० में मंग संशी पंचेरिद्रय के दि०, चक्षु द०, अवधि तिये ३ दर्शन जानना	
	1 1	,	مرَّ مَ مَ الله	् श्रम् अस	् २ स्थान	य का यचक्ष	ь Б

	<b>u</b>	१ लेख्या से को भग में से कोई १ बेख्या जातना १ लेख्या
तियैच गति		१ भग १ भग १ ने २२ गुएए० मे १ ने भग
<b>၈</b>	υy	रे के भंग (६) कर्म भूमि में श्ले २२ गुर्गा० में इ का भंग-एकस्त्रिय से संजी पंचेस्त्रिय तक जीवों में ३ अञ्चभ लेखा जानना रथा गुर्गा० यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १-२-४ गुर्गा० में १ का भंग १ कापोत नेब्या जानना सृज्ञा स्थान क्षेप ३ अञ्चभ संज्या जानना (देखों गो० क० गा० २६६-२६७ और ४४६)
कोष्टक नं०	*	१-२ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना १ नेह्या १ नेह्या १ नेह्या नानना ६ के भंग में से कोई १ नेह्या जानना ३ के भंग में से कोई १ नेह्या जानना ३ के भंग में से कोई १ नेह्या
चौंबोस स्थान दशन	. مر	१-२ गुस् : २ का भंग व का का भंग व का भंग व का
	m	१ ले २२ गुरा० में २ का भग श्रम्भु दर्शन वात्ता ३२ या ४ वे गुरा० में ३ या भग दीनों दर्शन वात्ता ३२ या भग दीनों दर्शन वात्ता ६ इ-६-३-३ के भंग १ कम भूमि में ३ का भंग-एकेन्द्रिय से असंती प्वेन्द्रिय तक तील अयुभ लेख्या जानता १ से ४ गुरा० में ६ का भंग मंत्री प्वेन्द्रिय तिवैनों में छह ही लेख्या भवे गुरा० में ३ का भंग ३ बुभ लेख्या जानना १३ गुरा० में ३ का भंग ३ बुभ लेख्या जानना १३ गोग भूमि में १ से ४ गुरा० में ३ का भंग ३ बुभ लेख्या जानना १३ गोग भूमि में १ से ४ गुरा० में ३ का भंग ३ बुभ लेख्या जानना सूनना—पर्यात अवस्था में तस्यगर्हिट जीवों को पीत
	0	लेस्या को० नंः १ देखो
च ू	~	१५ लेस्या

	<b>ग</b> ति	r	ावृ त्य पर्याप्तक)	मध्या होंट्ट देव	मरकर ग्राने वाले जीव	ito − ≱to		1000	€ 	<ul><li>१ अवस्था</li><li>१ भव्य</li><li>जानना</li></ul>	<u>~~~~</u>	. ? ~ 		१ सम्यवत्व	!
	तियैच गति	9	जीव भोग भूमि में अपर्यात्त (निवृंत्य पर्याप्तक) मार स्वर्ग मे १२ स्तर्भ नम् २०	ा हो होती है। या ही होती है।	४थ गुरा में मरकर १	मोग भूमियां कहला	१ भंग		रल मुस्तः मं	ररे गुरा० में १२ गुरा० में १ भव्य जानना	१ले गुरा। २ का भंग	२२ ४थे मुसा० में   १ मन्य जानना	, e		
		) Jor	वाले रे सनत्बु	गात में जन्म लेन बाल जीवों के अपर्याप्त अवस्था में मध्यम पीत लेश्या ही होप्ती है । गक्त उत्पन्न होने से पहले अगर   तिर्यच आग्न अन्य अस्थ के कि	ं उन्यं युका है। ती ४थ	वे भी सब तियंच जवन्य	() ()	(2) कमें भूमि में 2 कमें भूमि में 2 के मम	र का भंग पयमिवत	रि गुरा॰ में र १ मध्य जानना (२) भोग भिन भ	रेले गुरा॰ में रेका भंग पर्याप्तवत २२ रक्षे सम्ब	१ भव्य जानना	>>	मिश्र १, उपशम स० १ ये २ घटाकर (४)	१-१-१-२ के भंग (१) कमें भूमि में
१०० ) सम्मानम् १००			ं गुरुए — मारकर म्राने लेख्या ही रहती है। (व) ३२	। जीवों के श्रपयिति हेले श्रगर  तियंच ॥	8e) ai mi	त्र जयस्ताय ह्याप भ	१ अवस्था	में २ में से कोई	१ अवस्था	भे १ भव्य जानना	२ में से कोई १ यवस्था	~ % भु	१ सम्यक्त्व		१ मिथ्यात्व
(	>	1	गघन्य कापीत लेक्य	त में अन्में लेन बाले बे उत्पन्न होने से पह	ो गो० क० गा० भू प्रभाचल के पटले		१ भंग	१ले मुसा०	र का मर्ग	२-३-४-५ मुर्गा० १ भव्य जानना	१ले गुराए० में २ का भंग	२-३-४ मुसा० में १ भव्य जानना	१ भंग		१ मिष्यात्व
चौतीस स्थान दश्नेन	m.	सुचना २—(म्र) भवन्तिक ग्रौर सीवम् ईशान्य स्वनं के हेन	अवस्था में असंयत तियाँचों में र १ले गुरा में मरकर निर्मंच नि	सुचना ३—-नरक श्रौर देवगति में वेदक सम्यक्त्व उत्पन्न होने से पहले श्रगर  ितर्यच श्राप्त	सुचना ४मानुषोत्तर पर्वत के ग्रागे ग्रीर स्वयं प्रभाचल के पटके जो क्यांक्या है सुचना ४मानुषोत्तर पर्वत के ग्रागे ग्रीर स्वयं प्रभाचल के पटके जो क्यांक्या	r.	२ २-१-२-१ के भंग (१) कर्म भर्म	रले मुराउ में २ का भंग भव्य श्रभव्य	ये २ जानना	र २-६-४ गुएए० म एक भव्य ही जानना (२) भोग भूमि में	१ले गुरा० में २ का मंग भन्य, श्रभन्य ये २ जानना	२-३-४ गुराए में एक भव्य ही जानना	-}-}-	अनिनी (१) कमें भूमि भं १वे मामः भं	ें उल्लंभ १ मिथ्यात्व
	~	सुचना २		सूचना ३	सुचना ४	१६ भन्यत्व	भव्य, श्रभव्य	٠.				१७ सम्यक्त्व	को० नं० १६ देखो	,	

ति	ı.		३ का भंग जानना		३ का भंग जानना						१ भंग				E-2-6-5-0-0		,
तियँच गति	<b>9</b>		१-२ मुसा में ३ का भंग		१-२-४ मुसा में ३ का भंग	•					% भंग		•		१ले २रे मुसा में	७-७-६-५-४-३ के भंगों में से कोर्न	-
	W	ये ३ घटाकर शेप ३ ३-३ के भंग (१) कमें भूमि में	१ले २२े गुरा में ३ का भग-ब्राहार, शरीर इन्द्रिय पर्याप्ति ये ३ का भंग	जानना (२) भोग भूमि में १-२-४ गुए में	३ का भंग ऊपर लिखे अनुसार जानना	सुचनालिंग्ने रूप प्रपने प्रपने	यवस्या के समान सर्व	पर्याप्तियां होती है।			9	मनोयल, वचन वल, ख्वासा	च्छवास प्राम्, ये ३ घटाकर् ७	७-७-६-५-४-३-७ के भंग (१) कम अभि म	१मे २५ मुख् में	७ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में	-
कोष्टक नं० १७	*	६ का भंग	५४ के मंगों	में से : कोई १ मं -म जानन				-		्र की भग जानना	१ भंग			हरेक में १० का भंग	जानना	१-४-१-१-५	
मोष	>>	१ से ४ के मुण में इ. का मंग	१ले गुरा में	५-४ के मंग में से कोई १ मंग जानना						१ स ७ गुर्गा म ६ का भंग	० भंग			र सं भ्रमुमा से हरेक सं २० का	भंग जानना	१ले गुमा में	
दश्न	m	(१) कमें भूमि में १ से ५ जुरा में ६ का मंग संशी पं	जीव में सामान्यवत जानना १ले गुरा में	र का भंग द्विन्द्रिय से शसंजी पंचिन्द्रिय तक के जीवों में एक मनपर्याप्ति	घटाकर ५ का भंग	जानना ४ का थंग-मक्रेटिंग	जीवों में मन ब्रौर भाषा	वयापियं २ घटाकर ४ का भंग जानना	(२) भोग भूमि में असे भें स्मार्थित	६ का भंग सामान्यवत्	जानना <b>१</b> ०	20-8-4-6-6-8-90	क भग (१) कमे भूमि में	१ से ५ गुरा स्थानों में २० का भंग	संजी पंचेरिद्रय जीवों में	सामान्यवत् जानना १ले गुग् मे	,
चौंतोस स्थान दश्नेन	6										° દે	१ देख					
चौ	~	,	,								प्रधित	को मं				**************************************	

w

a

>

เร

9

श्वासो-

घटाकर

ह-द-७-६-५-४ के मंगों में से कोई १ भंग जानना >0 वल प्रासा घटाकर ६ का भंग मौर चसुरिन्दिय ये ३ प्रासा पंचेरिय जीवों में एक मनी-न्त्रिय प्रास्त ये २ घटाकर द जीवों में मनोतल, कर्गेन्द्रिय, जीवों में मनोबल, कर्गोन्द्रय जीवों में मनोबल मौर कर्णे-द का भंग चक्षुरिन्द्रिय घटाकर ७ का मंग ७ का भग त्रीन्द्रिय इ का भंग द्विन्दिय ह का भंग यसंजो का भंग जानना जानना

में से कर्गोन्दिय प्रासा १ घटाकर ५ का भंग शिन्दिय जीवों ६ में मंत्र १ बटाघर मं अपर ७ का भंग चक्षरिन्द्रिय 16€ 189 18€ ्र क ४ का भूग ४ का भंग द्विन्दिय ्रिका भंग जानना ७ का भंग जानना ७ का भंग श्रसंज्ञी के मुजिब जानना ये ३ प्रास्त वचनवल, में ऊपर के चकुरिहिंदय प्रासा पचेरिद्रय जीवों संजी पंचे िदय ऊपर के मनोबल, च्छवास, भीने मंगों में से कोई। १ मंग जानना

जीवों उपर के ५ के ब्रमंग में से ३ का भंग एकेन्द्रिय जीवों घटाकर ४ का भंग घासेन्द्रिय प्रास् 耳:

चसु, घारोन्दिय प्रास्त ये ३

घटाकर ६ का मंग जानना

४ का भंग अन्दिय

जीवों में यायु प्राण्, काय वल, श्वासोच्छवास, स्पर्श

इन्द्रिय प्रासा ये ४ प्रासा (२) योग भूमि में १ से ४ गुरा में

असंशी पंचेन्द्रिय यपयिति के सब यवस्थाएं हो हैं, परन्तु तीसंज्ञी स्थान में संज्ञी श्रसंज्ञी दोनों स्तिमा-लब्ब्य प्यापिक तिर्यंच १ वटाकर ये ३ प्रास् जानना में उपर के ४ के प्रास्त, ३ स्रथति रसनेन्द्रिय प्रासा कायवल शेव

का भंग जानना

जानना

हरेक मं

१ से गुरा में हरेक में १० का भंग

१० का भंग संजी पंचेन्द्रिय

जीवों में सामान्यवत् जानना

1

सदम्यान

ं की		_ hc	16-	<u>,</u>							·						<u> </u>								
तियैच	9	१-२-४ मुसा में	डनेस भेग समस	<b>F</b>	१ मंग			१ले २२ गुरा में	४ का मंग		१-२-४ ये मुसा में	४ का भंग	~	१ जाति			१-२ मुरा में पांचों	ही जाति में से कोई	१ जगति	-			१-५-४ गुरा में	१ पं० जाति	जानना
	ins.	(२) भोग सूमि में	१-२-४ मुसा में ७ का भंग ज्यर के मंत्री जंतिहरू जीते	जानना	>>	४-४ के भंग	(१) कर्म भूमि में	१ ते २२ मुस् मे	४ का भंग पर्याप्तवत्	(२) योग भूमि में	१-२-४ ये गुरा में	४ का भंग पर्याप्तान्	१ तियैच गति जानना	<b>వ</b>	५-१ के भंग	(१) कर्म भूमि में	५-१ के भंग	१ले २२ गुरा में	५ पांचों ही जाति जानना			5	(२) भोन भूमि भ	१-२-४ ये गुए। में	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना
<sub>६३</sub> ) हन्०१७	አ				? भंग		४ का मंग	जानना		४ का भंग	जानना		٥٠	१ जाति		•	र में से कोई	१ जाति जानना	१ पं० जाति	जानमा				१ पंचेन्द्रिय	जाति जानना
( ६३ ) कोष्टक नं०	>			,	१ भंग		१ से ५ मुख् में	४ का भंग		१ से ४ गुरा में	न का भं।		~	१ जाति			१ले गुरा में	५ जातियों में से	कोई १ जाति	•	ररेसे प्रमुख्य में	१ पंचेन्द्रिय जाति		१ से ८ गुरा में	१ पं० जाति
दर्शन	m		•		. >>	(१) कर्म भूमि में	१ से ५ जुगा में	४ का भंग सामान्यवत्	(२) भोग भूमि में	१ से ८ गमा मे	४ का भंग पर्याप्तवत्		१ तिर्यंच गति जानना	አ	५-१-१ ने यंग	(१) कर्म भूमि मं	१ले मुसा में	ते एकेन्द्रिय से	पंचेन्द्रिय तक के पांचों ही	जाति जानमा	२२ स ४ मुस् में	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	(२) भोग भूमि में	१ से ४ मुख्य में	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना
चौतीस स्थान दशन	~			-	y संता २	की नं० १ देखो			•				ट परिन	७ इन्द्रिय जाति ४	को नं० १ देखो		•								

४ का भंग

१ मं १

जानना

४ का भंग

जानमा

हरेक गुए। में ७

तियंच गति

१ पं॰ जाति जानना ६ काय में से १ काय १-२-४ मुसा में १ पं० जाति १ने गुरा में जानना १ काय (२) भाग भूगम प १-२-४ ये गुरा। में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुरा में ६-४-१ के भंग १ पंचेन्द्रिय जाति जानना ६ काय में १ काय से ४ गुरा में १ पं० जाति १ने गुरा में

> (१) कर्म भूमि में १ले गुरा में

६-१-१ के भंग

. को नं० १ देखो

द काय

५ में से कोई

ह योग ११ श्राण्डियोग योग श्राण्डिया योग श्राण्डिया योग ११ श्राण्डिया योग ११ श्राण्डिया योग ११ वेण्डिया योग ११	ह का मंग सामान्यवर्ष जानना १२ से ४ गुर्पा में १ वसकाय जानना १ से ४ गुर्पा में १ से ४ गुर्पा में १ से ४ गुर्पा में १ से ४ गुर्पा में १ कम भूमि में ११ के ६ का भूगों जानना १९ के ६ का भूगों	ह के भंग में कोई १ काय २२ से ४ गुरा १ त्रसकाय १ त्रसकाय १ से ४ गुरा १ से ४ गुरा १ ते गुरा में १ का भंग १ वे गुरा में २- के भंगों में से के	हुक मं १ १८ १८ व्यक्त मं १ १८ व्यक्त मं १ १८ व्यक्त व्यक व्यक्त	ह काय जानना ररे गुएए में ४ काय पृथ्वी, जल, वनस्पति त्रसकाय ये ४ जानना (२) भोग भूति में १-२-४ गुएए में से १ त्रसकाय जानना १ त्रसकाय योग ये २ योग जानना १ कम भूति में १ का भंग विग्रह गति में १ का भंग विग्रह गति में १ का भंग विग्रह गति में १ का भंग विग्रह प्रयुत्ति कामिए काय योग जानना १ का भंग विग्रह गति में १ का भंग वानना १ भाग भूति में १ ने भंग जानना १ भेग भूति में १ ने भंग जानना १२ भेग भूति में	्व स्काय में से कोई ६ काय में से श्रिक्त काय में से कोई १ काय में से कोई १ काय १ काय में से कोई १ काय १ काय में से कोई १ काय जानना १ संस्काय जानना १ योग १ योग १ मंग जानना १ संस्काय जानना १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग वानना १ १ मंग जानना वानना वानना वानना वानना से कोई १ मंग जानना वानना वानना वानना वानना वानना वानना	तियंच गति में  से कोई ६ काय में से प्रामं अ काय में से से कोई १ काय जानना १ योग शमना १ योग शमना १ योग शमना १ में से शमें से शमना जानना शमें से
	१ का भग एकेन्द्रिय जीव में एक औदारियक काय योग जानना (२) भोग भूमि में	:		•	v. 1	

· ,											,	3	
तियँच गति	Ŋ	F.		ਇ ਇ ~	३-१ भंगों में से कोई १ वेद जानना	1 11	वद जीननी			२ के भंग में से कोई १ वेद	जानना	१ मुरुष वेद	· .
तियैः	<u>5</u>	,	•	% भव	१ले गुए। में ३-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२२ मुस्स में ३-१-३ के मंंगें में	स काइ १ भग जानना			१–२ मुस्स में २ का भंग		१ भंग	
		سور	,	३ ३-१-३-१-३-२-१ के भंग (१) कर्म भूमि में	्रें हेले मुसाँ में ३–१ के भंग पर्याप्तवत् जानना २२ मसा में		स चतु- में जन्म	का लन अपक्षा ३ का संग झसझी पं० जीवों में जन्म लेने की श्रपेक्षा तीनों वेद	जानना ४था गुरा यहां नहीं होता (२) ग्रोग भिम में	१ले २२ गुरा स्थान में २ का मंग स्त्री, पुरुष ये २ वेद	जानना ४थे गुएा में १ का एक पुरुप वेद जानना	-x٤٤x٤x8	२४-१६ के भग (१) कमें भूमि में
( ६५ ) क्रोफ्टक सम्बर् १७		<b>3</b> 4			३ के भंगों में से कोई १ वेद जानना	१ वे मुखा में १ - ३ के भंगों	म स काइ १ वेद जानना		२ के भग में से   कोई १ वेद   जानना			१ भंग	
.,		>>		१ भंग	१ से ४ मुसा में ३ का भंग	१ले गुरा में १-३ के भंगों में	से कोई १ भग जानना	;	१ से ४ गुरा में २ का भंग			सारे भंग	
		m	१ से ४ गुर्गा में १ का भंग उपर के संजी पंचेत्द्रिय जीवों के मुजिब	३-१-३-२ के भंग १०० कर्म भाम	(१) कम साम म १ से ४ गुर्सा में ३ का मंग संजी पं०			३ का भंग ग्रसज्ञा प० जीवों में ३ वेद जानना (२) भोग भूमि में	१ से ४ गुरा में २ का भंग संज्ञी पं० सिग्नेन के स्त्री प्रका	ये २ वेद जानना		-82-x2-x2-82-x2 x2	१७-२४-२० के मंग (१) कमें भूमि में
i c	चातास स्थान	- &		बेद को नं० १ देखी								११ कदाय २५ को नं०१ देखो	, see

٥ ~

वी	चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	्रहरू कोष्टक मं	क ) मं० १७		तियंच	तियँच कति में
~	~	m	>>	*	US*	9	ß
						-	
		१ले मुसा में	१ले मुख् में	6-5-8	१ले गुरा में	१ समा में	તિક વ્ય ! ! ! ! !
		र भा संशी प्वेन्द्रिय तियंचो	16	भंगो		6-5-8 Hit	भंगों में से
		य सामान्यवत् जानना	कों में १८ देखी "	१ भंग	पर्याप्तवत् जानना	को नं० १८ देखो	· ~
		रिश्वा मार्ग प्रमान्य सं मधा	:	:	२२ गुरा में	E.	•
		के १५ के भंग में से स्टी-पहल			२४ का भग पयाप्तवत्	48	ŭ
		य र वेद घटाकर २३ का भंग			जानना १५ सन् १	का न० १८ देखो	
		जानना			एकेटिन से नाथानित्रम		
		२५ का भंग असंजी पंचेन्द्रिय	11		तक जनम लेने की ग्रदेशन	:	:
		जीव में उपर के २३ के भंग में			जारामा		
		स्यी-पुरुष में २ वेद जोड़कर २५			२५ का भंग १ले गता		
		का भग जानना	•		के शसनी पंचेतिय में		-
		いへい	•		जन्म लेने की ग्रयेक्षा		
`		२४ का भग संजी पंचेन्द्रिय					•
		तियभा में सामान्यवत् जानना			४था गुरा यहां नहीं होता		
		३२ ४थे मुसा में	गुरा में	井	(१) योग भिम में		
		. ९ का भग अपर क भगा में स	48-	ov thar	१ल २२ मुसा के में	१ले २२ ममा में	. 41
	<del></del>	अन्तानु रथा कषाय ४ घटाकर	को नं० १८ देखो	भंग	२४ का भंग पर्याप्तवत	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	
		भूषे नमा सं		**************************************	जानना	រេ	
		१७ मा मंग अपर के २१ के	사무 발생 다 ソーミー(9 라 파파	の場合はは	४थ मुसा म	४थे गुरा में	
		मंग में से अप्रत्याख्यान कपाय ४	को नं० १८ देखो		र के भग पयाप्त के रु के गंग के के नकी के	d <del>s</del>	#
		घटाकर १७ का भंग जानना			प्रमा म स ५२। वद   घटाकर १६ का भंग	की न० १८ देखी	कोइं १ भंग
	-	(२) योग भूमि में			E J		
		रेल स्रामुस् म स्र का भंग ऋषर के ऋगे भक्ति	मुस् भूति में	6-4-8 4 411	\$	age to the age.	
		के २५ के भंग में से एक नप्सक	को नं १ द देखी	म स काइ १ भंग			
		वेद घटाकर २४ का भंग जाना		•	;		
		. सरे मुखा मे	३रे ४ये गुरा में ह	६-७-न के भगो		,	
						-	

	•.	•	
गति	r -	<ul><li>१ मिथ्यात्व</li><li>१ सासादन</li><li>१ मिथ्यात्व</li><li>१ से में कोई</li><li>१ सम्यक्त्व</li><li>नानना</li></ul>	पहले तिथै चायु सम्यक्त्व १ अवस्था १-१ के भूगों में से कोई १ अवस्था जानना १-१-१ के भूगों भू कोई १
ਨਿਬੰਚ ਸ	9	१ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिथ्यात्व १ सासादन ४थे गुरा० में २ का भग	उत्पन्न होने के गति में भी क्षायिक १ भंग १-१ के भंगों में से कोई १ भंग २२ गुणुं० में १-१-१ भंगों में से नोई १ भंग
	U3°	१ले गुराए में १ मिथ्यात्व २२ गुराए में १ सासादन ४था गुराए यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले गुराए में १ मिथ्यात्व २२ गुराए में १ सासादन ४थे गुराए में २ का भंग झायिक ग्रौर झायोप्झिमिक सम्यक्त्व ये २ का भंग जानता	जिस जीव के क्षायिक सम्यक्त्व सकता है। इस अपेक्षा से तिर्धन १-१-१-१-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ के भूग प्याप्ति में १-१ के भंग प्याप्ति वत् २२ मुग्ग भें १ का भंग प्याप्ति वत् १-१ के भंग पहले गुगा के एकेन्द्रिय से संजी प्लेन्द्रिय तक के
मं० १७	<b>3</b> 4	१ सासादन १ मिश्र २ के 'गंग में से कोई १ सम्यक्त्व १ मिश्र १ मिश्र ३ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व	मनुष्य गति में में तियेच बन १ अंबस्या १-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
कोष्टक नं	>>	१ सासादन १ मिश्र ४थे ५वें०, गुण् ० में . २ का भंग १ मिथ्यात्व १ मिश्र ४थे गुण् ० में ३ का भंग	हो सकता है। परन्तु मर करके भोगभूमि १ भंग १-१ के भंग २२ से पूव गुराउ में
दश्रीन	· m·	२२ गुग् में १ सासादन इ२ गुग् में १ मिश्र 'ठथे थूवें गुग् में १ मिश्र २ का भंग उपश्म श्रीर क्षयोपश्म सम्यक्त्व ये २ जानना (२) भोग भूमि में १ले गुग् में १ मिध्यात्व २२ गुग् में १ मिश्र ४थे गुग् में १ मिश्र ४थे गुग् में १ मिश्र ४थे गुग् में	नया क्षायिक सम्यक्त्व नहीं तो क्षायिक सम्यक्त्व सहित (देखो गो० क० गा० ५५०) २ १ कम भूग भूम में १ का भंग एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंकेन्द्रिय तक के सव जीव असंज्ञी जानना १ का भंग संज्ञी पंकेन्द्रिय के सव जीव संज्ञी ध्वेन्द्रिय रहते हैं
चौतोस स्थान दशैन	~	-	सुचना—ितियंच गति में वंघ हो चुकी हो बताया गया है १८ संशी २ संशी यसंशा

चौतीम स्थाप प्रधान	r F	• •	805 )			
6	7 T T	मे विद	मेष्टिक मं० १७		7	
~	m	>>	5		ולומ	।तयच गात
			<   - -	w	9	n —
	र का भग सजो यहां सव ितर्येच संजी ही जानना (२) मोग भिन भे	व १ का भंग	१ संजी	जीवों में जन्म लेने की		-
	१ से ४ गुरा॰ में १ का मंग यहां सब तिर्धंच मंत्री के	१ से ४ गुसा० में व १ का भंग	ं १ संजी	अपला जातना ४था गुराः यहां नहीं होता (१) भोग भूमि में	· •	
१६ माहारक प्राहारक, अनारक	44 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6	~	ć	रल २२ ४थे गुरा० में १ का भंग यहां सब तियँच संज्ञी ही जानना	१-२-४ मुरा० में १ संज्ञी जानना	में १ संशो जानता
	<-{ क भग (१) कर्म भूमि भे		~	8-8-8-8 新和	१ भंग	१ अवस्था
	१ स ४ मृत्याः में १ याहारक जानना (३) के	१ से ४ मुस्सं में १ माहारक	१ माहारक	(१) कमं भूमि १ले २२ गुरा० मं	भ सह	
	(१) भाग भाम मे १ से ४ गुरा० में १ साहाह्य हा	१ से ४ मुस्स् भे	,	१ अनाहारक विग्रह गति में जानना	दोनों में से कोई १ यवस्था जानना	दाना म सं कोई १ अवस्था जानना
		१ माहारक		र आहारक मिश्रकाय योग में श्राहार पर्यापि हे सम्ब	-	
			<u>a</u>	ं तम्य जानना (२) मोग भूमि में १ले २२ ४थे गुरा० में निग्रह गति में अनाहारस	१-२-४ ये गुरा० में दोनों में से कोई १ १	दोनों में से कोई १ अवस्था जानना
			m.	जानना १ मिश्रकाय योग में शाहार पर्याप्ति के समस		*
	そう-テーキーキーキーを	१ भंग	१ उपयोग	महिरिक जानना ६		
गेपयोग ६ नोपयोग ३	भग (१) कमें भूमि में १ने गुगा भे		# X-1 # X-1 # X-1	कुप्रविध ज्ञान घटाकर ३-४-४-३-४-४-६		१ उपयोग
य ६ जानता ३ :	प्रम	३-४ के भंगों भे वि से कोई १ भंग		के भंग (१) कर्म भूमि में १५ सम्ब		
				्रं मुद्धाः म	१ले गुर्गा० में ३-	३-४-४ के मंगों

तियँच गति	n	में से कोई १ उपयोग जातना ३-४-४ के भंगों कोई १ उपयोग जानना	४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना
तियं	٠ 9	३-४-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना २२ गुरा० में ३-४-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ले २२ गुरा० में ४ कि भंग ४थे गुरा० में ६ का भंग
•	سون	३-४ के भंग-पर्याप्त वत् जानना ४ का भंग पर्याप्त के ५ के भंगों में से कुअवधि ज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना २२ गुएए० में ३-४ के भंग एकेन्द्रिर से असंज्ञी पंजेन्द्रिय तक जीवों में जन्म लेने को अपेक्षा पर्याप्त के ३-४ भंग जानना ४था गुएए० यहां नहीं होता	१ले २२ मुरा० में ४ कां भंग कुजान २, दर्शन २ थे ४ का भंग जानना ४थे मुरा में ६ का भंग मित- श्रुत श्रवधिज्ञान ३ श्रौर दर्शन ३, थे ६ का भंग जानना
तम्बर १७	አ	थ के भंगों में से कोई ९ उपयोग जानना ६ के भंगों में से कोई ९ उपयोग	योग योग स्योग स्योग
कोष्टक नम्बर	>>	जानना १ते २२ गुसा० में ५ का भग ३२ गुसा० में ६ का भंग	४थे ५वे मुस्तः में ६ का भंग १ले २रे मुस्स में ५ का भंग ३रे मुस्सः में ६ का भंग
चौतीस स्थान दश्नेन	m·	शीन्द्रिय जीवों के कुमति, कुन्नति, कुन्नति, श्रु के का भंग जातना ४ का भंग जातना ४ का भंग चतुरिन्द्रिय, प्रसंशी पंचित्रिय जीव के ऊपर ३ के भंग में चक्ष दर्शन १ कोइकर ४ का भंग श्रि पंचित्रय के कुशान ३, श्रु चक्ष दर्शन, चक्षु दर्शन, वस्यु दर्शन के कुशान ३, श्रु चक्ष प्रमंग चित्रय का भंग संशी पंचित्रय के कुशान ३, श्रु चक्ष दर्शन, चक्ष दर्शन वे २ ५ का भंग वित्रय के कुशान ३, दर्शन ३ ६ का भंग संशी पंचित्रय के किशान ३ दर्शन ३ ६ का	. 457
चौतीस	P*		

	तियँच गंति	ອ ນ		१ भंग 9 ज्यान		१ले २२ मुसा० में व के भंग में द का भंग में कोई १	१ले २२ मुगा० में द के भंग द का भंग में से कोई १	ध्ये गुरा० में ि में ममें ह का मंग से कोई १	<u>.</u>		
· ( . % )	भाष्ट्रक न० १७	-	न ६ का भंग	१ ध्यान	भं मंभमं संसन्धे	147	थान जानना १० के भंग में	से कोई १ े अपीए म ह्यान जानना आतं स्थान ४, रौद्र स्थान ४,	याजा विचय १९ के भंग में से काई १	ध्यान जानमा	
चौतोस स्थान दश्नेन	er er			~-	4 n 4 x	भंग जानना ३२ गुराण में ३२ गुराण में ६ का भंग-ऊगर के याजा विचय घर्मध्यान	अंग गुरा० स्थान में ४थे गुरा० में १० का भंग उत्पर के १० कर से		रने जातना रने गुरा० में १वें गुरा० में १० के मन में विपाक १० के मन में विपाक	विचय धर्म ध्यान जोड़ कर ११ का भंग जानना (२) भोग भूमि से	

٠. ـ		•		
	ı.	१ भंग सारे भंगों में से कोई:१ भंग जानना	११ से १० तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	a a
तियैच गति	6	१ भेग अपने अपने स्थात के सारे मंग चानना	१ले गुर्गा में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	2 2
	w	.४४ मनोयोग ४ वचन योग ४, ग्रौ० काथ योग १ ये १ घटाकर शेप (४४) जानना ४४-३-३३-३४-३५-	(१) कमं भूमि में १से गुराल में ३७ का भंग एकेन्द्रिय जीव में मिध्यात्व ४, अविरत ७, कपाय २३,	ता काय का मंग व का मंग में ऊपर से गें प्रविरत गिनकर भंग जान- का भंग
कोष्टक नं० १७	×	द के भंग में से कोई १ व्यान ६ के भंग में से कोई १ व्यान १० के भंग में से कोई १ च्यान १ भंग सारे भंगी में भे कोई १ भंग	११ से १ द तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	
की	<b>)</b> 2	१ते मुस् भें द का भंग ३२ गुस् भें ६ का भंग ४थे गुस् भें १० का भंग स २ भंग स २ भंग क सारे भंग बातना	१ते गुगा० में ११ से १ ट तक के मंग को० नं० १ ट के समान जानना	=
दर्शन	m <sup>,</sup>	१ से ४ गुरा में =-६-१० के मंग जवर के कमें भूमि के समान जानना भ१ ग्री० मिश्रकाय योग १, कामांग काय योग १, ये २ घटाकर (५१) ३६-३-३६-४०-४१- ४६-४२-३१-भग्र	(१) कमें भूमि में १ते गुएएं। में ३६ का भंग एकेन्द्रिय जीव में मिश्मारव ४, अविरत ७ (हिसक एकेन्द्रिय जाति का स्परीनेन्द्रिय	विराय १ — हिस्स ६ य ७ श्रिवरत) कपाय २३ (स्त्री- पुरुष वेद ये २ घटाकर २३) श्री० काय योग ये ३६ का भंग जानना ३ द का भंग द्वीन्द्रिय जीव में ऊपर के ३६ के भंग में श्रविरत ७ गी जगह द गिनकर (हिंसक का रमनेन्द्रिय विषय
चौंबीस स्थान दशुन	° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °	२ म्राझव ५३ म्राशित्मश्रकाय योग१ म्राहारककाय योग१ वै०मित्रकाय योग१ वै०काय योग१ ये४ वटाकर (५३)	•	

१ जोड़कर) ब्रांट अनुसाय बचन सम्मान स्थान	चौतीस स्थान दर्शन	न दश्नेन	्र १९५ कोष्टक नं	9 & c		तियैच गति	गति
भंग में प्रविस्त द की जगह है का भंग जातना  ४० का भंग जुरिस्त्रिय  ॥ भंग में अविस्त है की जगह १० मिनकर ४० का भंग जानना  ४३ का भंग जानना  ४३ का भंग जानना  ४३ का भंग जानना  ४३ का भंग में प्रविस्त १० की जगह ११ मिनकर भीर स्वी पुरुष वेद २ ये ३ जोड़कर ४३ का भंग  १० भिनकर भीर स्वी पुरुष वेद २ ये ३ जोड़कर ४३ का भंग में जानकर ४० का भंग में जानना		m	>>	×	UY'	9	ห
ह गिनकर ३६ का भंग जानना ४० का भंग चतुरिष्टिय ॥, जीव में ऊपर के ३६ के भंग में अविरत ६ की जगह १० गिनकर ४० का भंग अगना ४३ का भंग अग्न को भंग में अविरत १० की जगह ११ गिनकर और स्त्री पुरुष वेद २ में ३ जोड़कर ४३ का भंग ॥, ४४ का भंग ॥ ४४ का भंग ॥ ४४ का भंग भं ४० अग्न भंग में उत्पर १० की जगह १२ गिनकर ४३ के भंग में उत्पर १० की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग में उत्पर १० की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग में अग्निरत १० की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग में अग्निरत १० की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग में अग्निरत १० की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग में अग्निरत १० की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग भं		,			भंग में प्रविरत द की जगह		
आतना  ४० का भंग चतुरिन्द्रिय  भंग में अविद्ध है की जगह  १० गिनकर ४० का भंग  जनका  ४३ का भंग  असकी पंचेन्द्रिय जीव में  अपर १० की जगह  ११ गिनकर और स्त्री पुरुष  वेद २ ये ३ जोडकर ४३  का भंग  ४४ का भंग  ४४ का भंग  अपर के ४३ के भंग में  अपर है ४३ के भंग में  अपर है ४३ के भंग में  अपर है ४३ के भंग में  आविद्ध जीव में  अपर है ४३ के भंग में  आविद्ध ११ गिनकर ४४ का गंग  जानगा		१ जोड़कर) ग्रीर झनुभय वचन			३६ का		•
४० का भग चतुरिह्य ,,, जीव में अपर के ३६ के भग में अविद्य ६ की जगह १० गिनकर ४० का भंग जानाा ४३ का भंग जानाा ४३ का भंग में अविद्य जीव में अपर १० के भंग में अविद्य १० की जगह ११ गिनकर और स्वी पुष्ट वेद २ ये ३ जोडकर ४३ का भंग ४४ का भंग ४४ का भंग भं अविद्य ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग में अविद्य ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का गंग जाना।		योग १ ये २ जोडकर ३८ का			जान		
॥ जीव में अपर के वेह के भंग में अविरत ६ की जगह १० गिनकर ४० का भंग असंजी पंचेन्द्रिय जीव में उत्पर के ४० के भंग में अविरत १० की जगह ११ गिनकर और स्त्री पुरुष वेद २ ये वे जोड़कर ४३ का भंग " ४४ का भंग " ४४ का भंग " ४४ का भंग " ४४ का भंग " उत्पर के ४३ के भंग में जावरत ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का पंग जानग		भंग जानना	-		का भंग	11	,
भंग में प्रविरत ६ की जगह १० गिनकर ४० का भंग  प्रमंत्री पवेन्द्रिय जीव में  उत्पर के ४० के भंग में  प्रविरत १० की जगह ११ गिनकर और स्त्री पुरेष देद २ ये ३ जोडकर ४३  का भंग  ४४ का भंग  ४४ का भंग  उत्पर के ४३ के भंग में  जानगा  गानगा		३६ का भंग शिन्दिय जीव	11	**	में ऊपर		
१० गिनकर ४० का भंग जानमा ४३ का भंग असंजी पंकेदिय जीव में उत्यर के ४० के भंग में प्रविद्ध विद्ध		में उत्पर के ३० के भंग में			में श्रविरत		
अन्तमा अ३ का भंग  असंजी पंचेन्द्रिय जीव में  अतर के ४० के भंग में  अविरत १० की जगह ११ गिनकर और स्त्री पुरुष वेद २ ये ३ जोड़कर ४३  का भंग  ४४ का भंग  ४४ का भंग  अविरत ११ की जगह १२  गिनकर ४४ का गंग  जानना		ग्रविरत्र न की जगह ६ गिनकर			गिनकर ४		,
प्रमुक्त भंग भंग असिशी प्लेन्द्रिय जीव में अपर के ४० के भंग में यविरत १० की जगह यविरत १० की जगह ११ पिनकर और स्त्री पुरुष वेद २ ये ३ जोडकर ४३ का भंग ४४ का भंग संजी पुलेन्द्रिय जीव में अविरत ११ की जगह १२ पिनकर ४४ का मंग यविरत ११ की जगह १२ पिनकर ४४ का मंग में जारना		(हिंसक का झासोन्द्रिय विषय			धानमा		
असंजी पंजेन्द्रिय जीव में उत्पर के ४० के भंग में अविरत १० की जगह ११ गिनकर और स्त्री पुरुष विद २ ये ३ जोड़कर ४३ का भंग ४४ का भंग ४४ का भंग ४४ का भंग ११९ ते ११९ की जगह १२ गिनकर ४४ को जगह १२ गिनकर ४४ को जगह १२ गिनकर ४४ को गंग भंग ३०० १२ की जगह १२ गिनकर ४४ को गंग विरत ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का गंग जाना		३६ का			४३ का भंग	1	•
से "" ज्यार के ४० के भंग में याविस्त १० की जगह ११ गिनकर और स्त्री पुरुष ११ गिनकर और स्त्री पुरुष वेद २ ये ३ जोड़कर ४३ का भंग ४४ का भंग ४४ का भंग ४४ का भंग भंग ४४ का भंग संजी पंत्रेन्द्रिय जीव में ज्यावस्त ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का मंग जाविस्त ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का मंग जाविस्त ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का मंग भंग भंग भंग भंग भंग भंग भंग भंग भंग भ		जानना			पंचेन्द्रिय		
में भें भें भें भें भें भें भें भें भें भ		४० का भंग चत्रिरिद्य		:	ऊपर के ४० के भंग में		
रच स्य का भंग का भंग ४४ का भंग और के भंभ में उस्पर के ४३ के भंग में अपर के ४३ के भंग में अपर के ४३ के भंग में अविरत ११ की जगह १२ भिनकर ४४ का गंग जानना अन्य		जीव में ऊपर के ३६ के मंग में		•	प्रविरत १० की जगह		
स्य का मंग का मंग ४४ का मंग ४४ का मंग ४४ का मंग ४४ का मंग १४ संज्ञी पंत्रेन्द्रिय जीव में उत्पर के ४३ के मंग में अविरत ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का मंग जाना		म्रविरत ६ की जगह १० गिन			११ गिनकर और स्त्रो पुरुष		
का भंग		कर (हिसक का चस्रोरिन्द्रय			विद २ ये ३ जोड़कर ४३		
रिक मा भंग "" संजी पंचे न्द्रिय जीव में "" हिंदी पंचे निंद्रिय जीव में "" हिंदी पंचे निंद्रिय जीव में " हिंदी अविद्धा ११ की जगह १२ मिनकर ४४ का मंग जाना जाना		विषय १ जोडकर) ४० का			का भंग		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
<ul> <li>मं संजी पंचे दिय जीव में</li> <li>ज्यर के ४३ के मंग में</li> <li>प्रदे</li> <li>प्रवे</li> <li>प्रवे&lt;</li></ul>		भंग ज नना			४४ का भंग		
iग्, ११ द्रय द्रय द्रय त्रे १२ १२ १२ १२ १५ १५		४३ का भंग श्रसंशी पंचे०	2		संजी पंचेन्द्रिय जीव में		
हय हय हय हो हो हो हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे		जीव में ऊपर के 80 के भंग ू			ज्यर के ४३ के भंग में		···
त्रे के अने के किया किया के किया किया के किया किया किया के किया के किया के किया के किया किया किया किया किया किया किया किया		में अविरत १० के जगह ११			की जगह		
्र स्त्र १५, १५,		गिन कर (हिंसक का कर्गोन्दिय			गिनकर ४४ का 'रंग		
ू दूर्य ५ इ		विषय १ जोडकर) और स्त्री			जानना		
~ ूर्स भू भू		पुरुष वेद २ मे ३ जोड़कर ४३					
~ , स्य २२ . भू		का भंग जानना					
~ ५ म ५		५१ का भंग संजी	•	•			
		वि मिथ्यात्व ५ म्रविर		:			
> ~		(हिसक के विषय ६ + हिस्य					
~		६) कपाय २५, वचनयोग ४,					
५१ का भंग जानना		~	•				
		५१ का भंग जानना					
			-				

,	, '	
न गति	u .	१० से १७ तक कोई १ संग जानना जानना के संग में से कोई १ संग जानना १० में १७ तक के संगों में से कोई १ पंग
तियैच	9	१० से १७ तक के मंग को० मं० १० तक के समान जानना  श्ले नुगा० में ११ से १ = तक के मंग को० मं० १८ के समान जानना  २२ मुगा० में १० तक के मंग को० न० १ = के समान जानन
	·	२२ मुग्गु॰ में ३२-३१-३४-३४-३६ के मंग उत्पर के १ ले मिथ्या- त्व मुग्गु॰ ३७-३८-३६ ४०-४३ के हरेक मंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३२-३२-३४-३५-३६ के मंग जात्ता अरे काय्योग १ ये ६ योग ४, मनोयोग ४, योग ४, मनोयोग १, योग ४, मनोयोग १ व्याह्म वहाकर हे का मंग जात्ता काल योग १ ने २ जोड़ कर ३६ का मंग जात्ता ४८१ मुगा॰ में १ ने मुगा॰ में
२०७ । नम्बर १७	. zł	रे० से १७ तक कोई १ भग कोई १ भग कोई १ भग कोई १ भग वानता वानता वानता वानता वानता वानता वानता वानता वानता के भगों से में कोई १ भग वानता वानता वानता कोई १ भग वानता वानता
( १०७ कोप्टक नम्ब	>>	श्रेर गुस्सां में १० में १७ तक के भंग की मंग १६ तक के भंग १६ में १६ तक के भंग को के १८ में भुस्सां को ने ० १८ के भुम्म को ० में १८ में १८ तक के भंग को ० मं ० १८ में १८ तक के भंग को ० मं ० १८ के भुम्म को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भूम को ० मं ० १८ के भूम के भू
चौतीस स्थान दशेन	m	ररे गुरा० में  ४६ का मंग जमर के  ४१ के भंग में में मिख्यात्व ११ वेदाकर ४६ का मंग जातना  ३२ ४थे गुरा० में  ४२ का मंग जरर के ४६ के भंग में से अनस्तानुबंधी कथाय  ४ बहाकर ४२ का मंग जातना  १वे गुरा० में ३७ का मंग जपर के ४२ के भंग में से अप्रत्यक्यान कथाय ४ यसिंहता १, ये १ घटाकर ३७ का मंग जपर के ४२ के भंग में से अप्रत्यक्यान कथाय ४ यसिंहता १, ये १ घटाकर ३७ का मंग जातना  १३ पुरा० में ४१ का भंग जातना  २२ गुरा० में ४१ का भंग जातना  २२ गुरा० में ४१ का भंग जातना  ३२ रेवा भंग जातना  ४२ का भंग जातना  ३२ रेवा भंग जातना  ३२ रेवा भंग जातना  ४२ का भंग जातना  ४२ का भंग जातना  ४२ का भंग जातना  ४२ का भंग जातना
चौंतीस	O'	

चौतीस स्वान दशेन	कोष्टक नम्बर	০ <b>১</b> ১৮:		तियंच मति	
8	>>	ጵ	, U <sup>y</sup>	ற	u
	,		४थे गुएा॰ में ३३ का भंग कर्म भूमि के पर्याप्ति के ४२ के मंगों में स बचतयोग ४, मनोयोग ४, औे॰ काययोग १, स्त्री- नपुंसक वेद २, ये ११ घटाकर शेप ३१ में कामिषा काययोग १, श्रौ॰ मिश्र काययोग १, ये २ जोड़कर ३३ का	४थं गुसा॰ में ६ से १६ तक के भंग को॰ नं॰ १८ समान जानना	ह से १६ तक के भगों में से सोई १ मंग जानना
	सारे भंग		भंग जानना ३३	१ भंग	~ nin ~
२४-२५-२७-३१-२६ ३२-२६-२७-२४-२६ भंग (१) कमं भूमि १ते गुरा० में	न स्र	सार भंगां म स कोई १ भंग जानना २७ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १८ देखी	उपशम क्षायिकस्	भ्रपन भ्रपन स्थान के सारे भगा म सारे भंग जानना कोई भंगजान	तार भगा म स कोई भंगजानना
न्द्रिय, न-कुश्र्म १, च मि	सम:न जानना		२५ क भग (१) कर्म भूमि में १ले गुरा० में २४ का भग	१ेले गुरा० में १७ का भंग को० नं० १८ देखी	१७ के भंगों में से कोई १ भंग
ह, नपुसक लग १, अधुम लेख्या ३, मिथ्या दश्रीत १, असंग्रेम १, अज्ञान १, अस्ति- दृत्व १, पारिस्सामिक भाव ३ ये २४ का भंग असंग्री पंचेन्द्रिय जीवों में ऊपर के २४ के भंग में बक्ष		ĭ	रथ का भंग पर्यक्षित्रत् जाननः २७ का शंग पर्यप्तित् जानना २७ का भंग पर्यप्ति के ३१ के भंग में से कुश्चवित्		
	Ş				

मीतीस स्थान द्वांत स्थान ( कोड़कर २५ मा स्थान वातान हान ( कोड़कर २५ मा स्थान वातान हान ( कोड़कर २५ मा स्थान ( कोड़कर २५ मा स्थान ( कोड़कर २० मा स्थान ( काड़कर २० मा स्याक्ट काड़कर २० मा स्थान ( काड़कर भान ( काड़कर भान ( काड़कर भान	
क्रीठडक नं० १७ स्थापता के क्रीठडक नं० १७ स्थापता के व्यवस्था के व्यवस्था स्थापता के व्यवस्था के व	
क्रीट्डफ नं० १७  १ बोड़कर २५ का भग जानना २७ का भंग १० का भंग १० का भंग १० के भंग में स्थी का भंग जानना २२ गुण भे १० के भंगों में प्रधास में १० के भंगों में प्रधास के १० के भंगों में १० का भंग जानना ३२ गुण भे भंग भे वालत १० वा ३२ गुण भे भंग भे वालत १० के १० के भंगों में १० के भंग में बालत १० के भंग में बालत १० के भंग में बार्य प्रधास के ३१ हुद का भंग को० के १० के भंग में बार्य प्रधास के ३२ गुण भे ३२ गुण भे भंग भे वालत १० के १० के भंग में बार्य प्रधास के १० के भंग में बार्य के १० के भंग में वार्य के १० के भंग	
कोटडक नं० १७ १७ का भंग १७ का भंग १० का भंग १० का भंग १० के भंग में स्वी १० के भंग में स्वा १० के भंग में स्वा १० के भंग के स्व १० के भंग में से १० के भंग में से १० के भंग के स्व १० के भंग के से १० के भंग के से	२२ का भंग जानना
ह क्रीट्रक नं क्रीट्रक जीवों में र के र क्रीट्रक जीवों में र के र क्रीट्रक जीवों में उपर के सम में जीवित्रक जीवों में उपर के सम में क्रीट्रक क्रीट्रक के स्था के क्रीट्रक के स्था के क्रीट्रक के से क्रीट्रक के से में में में में मिथ्या हवान हे के सम जीवित्रक के का भंग जानना के के गुणा के से क्रीट्रक के सम जीवित्रक के का भंग जानना के क्रीट्रक के समान के क्रीट्रक के समान के क्रीट्रक के समान के क्रीट्रक के समान के का सम्बन्ध के के के क्रीट्रक के समान हिंदी के के जीवित्रक के क्रीट्रक के समान के के क्रीट्रक के समान के का का सम्बन्ध के	
श्रमं जानता भ्य जानता २७ का भंग २७ का भंग २० का भंग देश का भंग में उर्देश के भंग में स्त्री में २१ के भंग में स्त्री देश २ के भंग में स्त्री श्रम ३, ये ६ जोड़कर ३१ का भंग जानता २१ का भंग रेश में जानता २१ मुं भाग में कुत्रवधिज्ञान २२ गुण भें २६ का भंग जानता २२ गुण भें ३६ का भंग जानता ३२ मुं अदिक्तर के ३१ भंग में से मिच्या दर्शन १ का भंग जानता ३२ का भंग जानता ३२ का भंग जपर के ३२ का भंग जपर के ३२ का भंग उपशम	
श्रिक्तान क	असंपम १ अशान १, असिद्धत्व १, मन्यत्व १, जीवत्व १ ये
न् वर्षा	

चौतीस स्थान दर्शन	88 ) 88 )	, it			
e e	2	> > 5 To		तियँच गति	h-
	»   -  -	<b>24</b>	ייפט	ඉ.	
४वे मुरा॰ में	to the state of th			1 -	r
	<i>Æ</i>	र किम मंगों में से नोई ०	े ४थे मुस्	४थे गुरा में	10 of 14.17
. H	मान जा	के भंग जानना	र का भग पयात क	१७ का भंग कोट मं	. cho.
सयमा-संयम १ जोडकर	( W		सम्यक्तव १, स्त्री वेद १,	समान जानना	जानना
(१) भोग भूमि मं-			थुन लश्या ३ य ४ घटा कर शेष २४ में कापोत		
१ ले मुरा० में	१ने गुरा० में		लेख्या १ जोड़कर २४ का		
के ३९ के भगमें से नत गर	%७ मा भार	स मार्क १	म जातना		
विद १, प्रशुभ नेह्या ३, ३	ने ४ समान जानेना	<u> </u>	सुचरा-जिन जीवों के		: :
1015   G S   141   111   1			सम्यक्तव उत्पन्न होने से		
२४ का भंग उपर के कर्म १	マヤ 3項。 沖   Mm   25   計   対   対   対   対   対   対   対   対   対	१६ के मंगों में से	गर्म तथनायुवध चुका होता वह मस्यार्गित		
वेद १ सम्भाभित नपुसक व	* 1.~		जीव मरकर भोग भूमियां		
घटाकर २५ का भंग जानना	४ समान जानना T		तियं च निता है। उसकी अपेक्षा यह भंग जानना		
उट आ सम्मार म		4 6 4 11.11 # 3 %			
क ३० के मंग्रे में नर्मक	~ = # # # # # # # # # # # # # # # # # #				
वद १, ब्रामुभ नेद्या ३ मे घटाकर २६ कर भी		जानना			,
४थे गुरा स्थान मे	;       				
२६ का भग उपर के कर्म भूमि ३२ के धाम से ५	ंथ गुरा॰ म ं७ का भंग	१७ में भंगों म से			
र ने भाग से तमु सह ये दि । र जीम नेस्या है में ४ घटाकर	`HS H⊅	जानना			•
जाब रह म सामिक मम्पक्त					
				; ;	

- जानना ज्ञुत्रगाहुसा---जघन्य क्रवगाहुसा घनांगुल के ग्रमंक्यातचे भाग, ग्रौर उत्कृष्ट शवगाहुसा १००० (एक हजार) योजन तक को० नं० २१ से ३४ को देखों)
  - निर्मु त्य पर्याप्तक तियाच में ब्रायुवंध नहीं हो ता इसलिए ऊपर के ११७ में से ब्रायु ४, नरक द्विक २ ये ६ वंध योग्य १२० प्रकृतियों में से ग्राहारक दिक २, तीर्थकर प्र० १ ये ३ घटाकर ११७
- उदय योग्य १२२ प्रकृतियों में से नरकदिक २, नरकायु १, देवादिक २, देवायु १, मनुष्पद्विक २, मनुष्पायु १,उच्च गोत्र लड्ड्य पर्याप्तिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच में नरकाद्विफ २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्सिक द्विक २, ये ११७ प्रकृतियों में से घटाकर १०६ जानना 30 E
- १, याहारकद्विक २, तीर्यंकर प्र० १ ये १५ घटाकर १०७ प्रकृतियां जानना । उद्ग प्रकृतिषां —१०७
  - १, सूक्ष्म १, स्थावर् १, पंचेन्द्रिय तियँचों में ऊपर् के १०७ प्रकृतियों में से एकेन्द्रियादि जाति ४, ग्रातप, साधारसा न घटाकर ६६ जानना
- स्त्रोवेदी तियं नों में ऊपर के १७ प्रकृतियों में से पुरुष वेद १ नपुसंक वेद १, ये २ घटाकर शेष ६५ में स्त्रीवेद १ जोड़कर पंचेन्द्रिय पर्याप्त पुरुप वेदियों में ऊपर के ६६ प्रकृतियों में से स्तीवेद १, ग्रपर्याप्त धे १ घटाकर ६७ जानना जानना ।
- निर्माए। १, ग्रौदारिक द्विक २, तैजस—कार्माए। शरीर २, हुँडक संस्थान १, ग्रसंप्राप्तामुपादिका संहनन १, स्पर्शादि १, दुर्भग (स्त्री-पुरुप ये २ वेद घटाकर) तिर्यंचायु १, नीच गोत्र १, ग्रंतराय ४, नामकर्म २८ (तिर्यंच गति, एकेन्द्रिय जाति लब्ब्य पर्याप्तक तिर्यंचों में—-ज्ञानावर्साीय ५, दशैनानरसीय ६, (महानिद्रा ३ घटाकर) वेदनीय २, मोहनीय त्तियैच गत्यानुपूर्वी १, अमुरुलघु १, उपघात १, यातप १, साधार्या १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त स्थिर १, यस्यिर १, गुभ १, प्रगुभ १, प्रनादेय १, प्रयशः कीति १, ये २८) ये सव ७१ जानना ।
- भोगभूमि तियँचों में—ज्ञानावरस्तीय ४, दर्शनावरस्तीय ६ (महानिद्रा ३ घटाकर) वेदनीय २, मोहनीय २७ (नपुंसक शौदारिकद्विक २, तैजस कार्माए शरीर २, वज्र वृषभ नाराच संहनन १, समचतुरस्रसंस्थान १, स्पर्शादि ति भन गत्यानुपूर्वी १, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उनछवास १, प्रशस्त विहायो गति १, प्रत्येक १, वादर वेद को घटाकर) तियैचायु १, उच्च गोत्र १, ग्रंतराय ४, नामकर्म ३२ (तियँच गति १, पंचेन्द्रिय जाति १, निमिष् त्रस १, पर्याप्ति १, सुभग १, स्थिर १, मस्थिर १, गुभ १, मधुभ १, सुस्वर १, मादेय १, यशः कीर्ति १, उद्योत

तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर १४७ जानना । सत्व प्रकृतियां—१४७ 3

लब्ध्यपर्यापतक तियैचों में---लब्ध्यपर्याप्तक जीव मरकर देव गौर नार की नहीं बनता इसलिए देवायु ग्रौर नरकायु ये उपर के १४७ प्रकृतियों में से घटाकर १४५ जानना।

संख्या-अनन्तानन्त तिथैच जानना। २६ क्षेत्र-सर्वलोक जानना।

३० स्पर्शम-सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल सादि तिर्थंच (इतरिनगोद) एक जीव की ग्रपेक्षा श्रुद्र भव से ग्रसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक तिर्यंच

३२ अन्तर—नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं। एक जीव की ग्रपेक्षा तियैच गित को छोड़कर क्षुद्र भवसे नवसौ (६००) सागर काल तक तियैच नहीं वने । यदि मोक्ष नहीं जाय तो फिर तियैचों में (६०० सागर के वाद) याना ही पड़े ।

३३ **जाति (योनि)**—६२ लाख (पृथ्वी काय ७ लाख, जल काय ७ लाख, ग्रमिन काय ७ लाख, वायुवाय ७ लाख नित्यानिगोद ७ लाख, इत्तरनिगो**६ ७** लाख, वनस्पति १० लाख, द्विन्द्रिय २ लाख, त्रीन्द्रिय २ लाख, चतुरिन्द्रिय २ लाख, पंचेन्द्रिय ४ लाख, ये ६२ क्षाख) जानना ३४ फुल—१३४॥ लाख कोटिकुल जानना ॥

पृथ्गोकाय —२२ लाख कोटि कुल,जलकाय ७ लाख कोटि कुल, य्रागिकाय ३ लाख कोटि कुल, वायुकाय ७ लाख कोटि कुल, वनस्पतिकाय २= लाख कोटिकुल, द्विन्दिय ७ लाख कोटि कुल, योन्दिय न लाख कोटि कुल, चतुरिन्दिय ६ लाख कोटि कुल, पंचेन्दिय ४३॥ लाख कोटि कुल ये

•	•
	น
	कोष्टक नं

१ समास १ संशी पंचेस्टिय पर्यात जीव समास

१ (२) भोग भूमि में १ से ४ गुरा० में १ सं १ संग्री पं पर्याप्त ज नना १ से १८ गुरा० में हरेक में १८ गुरा०	३ २) मोग भूमि में १ से ४ गरा० में					
नं <i>र</i> लेखों विमे	२) भोग भूगि में से × गरा० में	>>	<b>ઝ</b> <	w	g	u
नं १८ देखो				(१) मोग भूमि में १ले २२ ४थे गुरा० में	, संज्ञी पं० अपर्याप्त	१ संजी पं
नं दे देखें कि	प० पयाप्त ज नना			१ संज्ञी पं० अपर्याप्त	जानना	श्रपयिति जानना
~ :	س س هار حن ا	१ भंग	१ भंग	त्रवत्था जानग	र-६ के भंग	३-६ के भंग
	१) कर्म भूमि में			मन-भाषा-रवासोच्छवास यं ३ घटाकर		
् (२)	ग्रा० म हरक में भेग सामान्यवत	६ का। भंग	६ का भंग	शेष (३) डपयोग	•	
<u>۳</u>	जानना	1		की अपक्षा जानना लिब्ध रूप ६ जानना		, .
₩ ~	(२) भाग भाग म १ से ४ गगा० में हरेस मे	e 		३-३ के भंग		
, U3*		- - - -	F F	(१) कम भाम म	. 0	· .
, सामा	'सामान्यवत् जानना			३ का मंग आहार	य की मन	३ का भग
				शरीर, इन्द्रिय पर्याप्ति ये		· ·
				३ का भंग जानना	,	:
				(२) भाग भूमि में		\ \frac{1}{4}
				रेल २२ ४थे मुस्ति में 3 का जंग उत्तर से करे	३ का भंग	३ का भंग
, c		, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		भूमि के समान जानना		
ने नं १ देखो		१ भग श्रपने श्रपने स्थान के	<b>४</b> भग		१ भंग	१ भंग
(S)	(१) कर्म भूमि में			ववन वव,	अपन अपन स्थान क	1. A. M. C.
१ स १ ५ १	१२ मुरा० में हरेक में १० का भंग	१० का भंग	१० का भंग	ر في ا		
सामा	सामान्यवत् जानना		The specific Continues	(१) समें भिष्म		
<u> </u>	१३वे गुरा में ४ का मंग केवली समुद्-	४ का भंग	४ का भंग	१-२-४-६वे गुगा० में ७ का भंग ग्राय तत	७ का भंग	७ का भंग
धात का द	धात की दण्ड श्रवस्थाये श्रायु,		_re-	कायवल १, इन्द्रिय प्रांसा ५		

_	
×	
$\sim$	
$\sim$	
_	

चौतीस	नौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	ره . د تا		मनुष्य	मनुष्य गति
	6	m	>> <u>,</u>	X	w	9	u.
		कायवल, स्वासोच्छवास, बचन- बल घे ४ प्राएा जानना (देखो गो०क्न०गा० ५६६-५६७) १४वे गुएए० में १ जायुबल प्राएा जानना (२) भोग भूमि में	१ मायुनल प्रमासा १ मायुनल प्रमासा		में ७ का भंग जानना १३ के मुर्गा० में २ का भंग केवली समुद्- धात की कपाट, अत्तर, लोकपूर्गा इन अवस्थायें याधु और कायवल में २	२ का मंग	२ का मंग
		१ से ४ गुरा० में १० का भंग सामान्यवत् जानना	१० का भंग	१० का भंग	जानना (२) मोग भूमि में १-२-४ गुरा० में ७ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के नामान जानना	७ का भंग	७ का भंग
। क्रो० नं० १ वेसो		भंग	१ भंग अपने अपने स्थान के	४ भंग	४ ४-०-४ के भंग (१) कर्म भूमि में	सारे भंग स्रपने अपने स्थान के	१ भग
		(१) कर्म भूमि में १ में ६ गुरा० में ४ का भंग शाहार, भय, मैधुन,	४ का भंग	४ का भंग	१-२-४-६वे गुगा० में ४ का भंग पर्याप्तवत् १३वे गुगा० में (०) का भंग केंग्ल-	४ का भग	४ का भग
	approximation and the second	पार्प्रहं ये ४ का भग जानग ७वे = वे पुरा० में ३ का भग श्राहार संजा घटाकर शेप ३ का भंग जानमा	३ क। भंग	३ का भंग	(५) मा नम्म सम्बन्धाये कोर्ड सज्ञा नही होनी इन्नानिये जून्य का भंग		
	Marin Marineri III. Association	हते गुगा० के सवेद भाग में २ का भंग मैथुन, परिग्रह ये २ भंग जानना	२ का भंग	२ का भंग	जानना (२) भोग भूमि में १-२-४ गुगा० में ४ सर अंग मगीवन्य	श्र का भंग	४ का भंग
•	( )	ट्य पुरा के प्रयेद भाग में १ परिप्रह संज्ञा जानना १०वे गुगा० में १ परिप्रह मंजा जानना	१ का भग १ का भंग	१ का भग १ का मंग	ं का मगापवातद्वेत् आनिता		}.

ಕ ಕ	मनुष्य 1	गति
<i>y</i> ,	<b>9</b>	្.
0		
४ का भंग		
~	. ~	~
१-५-४-६-१ ३व गुरा० म १ मनध्य गति जानना	-	-
\$ \$ \$ \$ \$	~	••
१ संशी पं० जाति जानना		
は	۵٠	~
१ वसकाय जानना		<del></del>
m	सारे भंग	
भा० मिश्रकाय याग १, भा० मिश्रकाय योग १,	श्रपने ग्रपने स्थान के सारे भंग	सारे भंगों में में में से सिंह र
	जानना	योग जानना
य ३ याग जानना १-२-१-१-१ के		,
भंग जानना		~~~~
<b>淮</b> 。	१-२ के भंग	१-२ के भंग
त काइ १   १ का भग विष्यह गति योग.जानना   में १ कामिंगा योग	जानना	में से कोई १ योग जानना
जानना		
ρ·	जानना २ का भंग ग्राटाउ	जीवनी

चौती	चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ११७ क्रोव्टक नं	ีน ~~ 		मनुष्य गति	गति
~~	ح	inr	>>	×	US	9	ប
	,		८ का भंग	८ के मंग में से कोई १ योग	पर्याप्ति के समय कार्मास काययोग १, भी० मिश्र	•	
	r	ह का भग ऊपर के ह क भग में से और काययोग घटाकर		जानना	काययोग ं य २ का भग जानना		
		ग्राहारक काययोग जोड़कर ६ का भंग जानना		, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	६वे मुरा० में १ का भग आहारक	१ आहारिक मिश्र काययोग जानना	१ आ० मिश्र काययोग जानन
		७ से १२ तक के मुसा० में १ का भंग अपर के १ से	८ का भंग	६ के भंग में से कोई १ योग	शरीर की अपेक्षा ब्राहा- रक मिश्रकाय योग १		
		६ मुराए के सामान जानना १३वे गरा० में		जानना	जानना १३वे गरा० में	२-१ के भंग जानना	** ** **
		र का भग द्रव्यमन की अपेक्षा औं काययोग १, सत्य	४-३ के भंग जाननः। ५-३ के भंग में से कोई ? योग	४-३ के भंग में से कोई १ योग	# 24		र-१ क मना म सि कोई १ योग
		वचन योग १, अनुभय वचन	,	जाननाः	कार्मासा काययोग १,		
					ये २ का भंग जानना		• •
		10			< का भंग केवली समु- हवात की प्रतर ग्रीर		٠
		अपेक्षा ऊपर के ४ के भंग में में महम मनोग्रोग १ सनभग्र		,	ग्रां श्रवस्थ	· ,	
		ज्ञ		,			
,			<b>o</b> .	o	(र) भाग भूगि म १-र-४ गुर्सा० में	१-२ के भंग जानना	१-२ के भंगों में
		(०) का मगं यहां काइ योग नहीं होता इसलिए शुन्य जानना	•		१-२ क भग ऊपर क कर्म भूमि के समान जाउना		से कोई १ योग जानना
		<b>म</b> ,				;	:
		१ से ४ गुएए० में १ का भंग अपर के कर्म	८ का भंग	ह के भंग में से कोई १ योग			
		भूमि के समान जानना		जानना	i		
	The state of the s						

मोतीस स्थान दर्शन	दशीन	कोष्टक नम्बर	म्बर् १ प		मनुष्य गति	
6	m	>	<b>x</b>	nəv	<b>6</b>	ប
१० वेद को० नं० १ देखी		१ भंग -०-२ अपने अपने स्थान के	सारे वेद	8-2-0-8-8-E	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान के	10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1
•	भंग हमें भूमि में ४ गुरा० में नप्सिक, स	३ का भंग	३ के भंग में से से कोई १ वेद जानना	के मंग जानना (१) कर्म भूमि में १-२ गुरा० में ३ का भंग पर्याप्तवत् तीनों	३ का भंग	३ के भगों में से कोई १ वेद
	पुरुष वेद ये ३ का भंग जानना १वे गुरा० में ३ का भंग ऊपर के तीनों वेद	३ का भंग		वेद जानना ४थे गुराः में १ पुरुष वेद जानना	१ पुरुष वेद जानना	जानना १ पुरुप वेद जानना
	वानिता ६वे गुराउ में १३ का मंग श्रीउ काय योग की महेश्यर उत्तर हें . तीसों बेट	३-१ के भंग जानना	के भंग जानना ३-१ के भंगों में से कोई १ वेद जानना	. इव गुर्सा० म ब्राहोरक मिश्र काययोग की ब्रपेशा १ पुरुष वेद जानना		१ पुरुष वेद जानना
	क काय			१३वे गुगाँ० में (०) का भंग केवल समुद्द- यात की ग्रवस्था में ग्रप-		•
	जानना जानना एवे दवे गुगा० में ३ का भंग उपर के तीनों वेद	३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ वेद	गत वेद जानना मूचना—लङ्घ पर्याप्तक मनुष्य नपुंसक वेद वेदी		
	जानता ध्वे गुल् मं सवेद भाग में	३-२-१-० के अंग जातना	जानना ३-२-१-० के भंगों में से कोई १ वेद		२ का भंग	२ के मंगों में से कोई १ बेद
	३ का भग १लं भाग म तीनों वेद (नषुंसक-स्त्री-गुरुष) जानना ० का भंग २२ भाग में		जा समा	्रह इ आर् ३०१) (२) भोग भूमि में १ते २२े गुगा में २ का भंग स्थी एक्प ये	१ पुरुप वेद जानना	शानना १ पुरुष वेद जानना
	स्त्री, पुरुष ये २ वेद जानना १ का भंग ३२ भाग मं १ पुरुष वेद जानना			् बंद जाना ४थे मुख् में १ पुरंग वेद जानना		

		,																	•		
मनुष्य गति	ı							THE &	सार भगा में	से कोई १ भंग	जानना	(१) नर्म भूगिमें	म म मान्य	भंग जानना		१५-७-त के मंगों	मंग जानना		\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	में से कोई १	भंग जानना
मनुष				-				सारे भंग	। अपने अपने स्थान	के सारे भंग	जानना	(१) कम भूगि म १से २२ गमा भ	७-द-१ के भग	पयतिवद् जानना		४य मुराठ म १-१- के भूग	पयितिक जानना		# c#	४-४-६ के भंग	पयसिवत् जानना
	υ <b>&gt;</b> *	सुचना—शाहारक काय योगी पुरुष वेदी ही होता	h-, /	(दखा गा० का० गा० २६६ और ३०१)		•		s s s	34-88-88-0-38-88	के भंग जानना	(१) कमें भूमि में		-	४थे मुस्सं भें	१६ का मंग	पयात क २१ क भग में में स्त्री-नयं मक धेर	ये २ घटाकर १६ का	भंग जानना	६व मुसा० म ११ का भंग	प्यक्तिवर्व जानना	१३वे मुरा॰ में
११६ ) नम्बर् १ व	አ	:	٥		-	र के भंग में से	जानना	१ भंग	सारे मंगों में से	कोई १ मंग	जानना	(१) कम भूमि म १ले गराा० में	६-७-५-५	मंगों में से	कोई १ भंग	<u> </u>					
्र कोष्टक म	- ≯ ,		. 0		-	२ का भंग		सारे भंग	अपने अपने स्थान	के सारे भंग		(१) कम भूगम म १ले गुरार में	<b>!</b>	जानना	६ का भग	उपश्चम श्रम्। चढते समय ७वे	मुएा स्थान के यंत	में जिस जीव ने	श्रनतानुबधा कपाय का विसंयोजन	किया हो और ११	वे गुसास्थान सं उतर कर १ले
मोतीस स्थान द <b>र्श</b> न	æ	(०) का भग आगे अवेद भाग में कोई वेद हैहीं होते	इसीलय जुन्य का भग जानना १०वे से १४वे गुसा० में	(०) का भर यहा काडहुवद नहीं होते इसलिये यहां भी	(२) भोग भूमि में	१ से ४ मुसा० में	ये दो वेद जानना	४८	६४-४४-६४-०४-४२-४४	6-5-4-8-3-5-8-8-8-8-8-8	क भग जानना	(र) क्षेत्र भूगित में १वे २२ मुस्स्य में	२५ का भंग	सामान्यवत् जानना	३२ ४थ गुरा० म	के भंग में से अनंतानुबंबो			रव गुराउ म १७ का भंग अपर के २१		कपाय ४, घटाकर १७ का भग जानना
चौंतीस	~							۲۲ ۲۲													***
`.	~							११ कपाय	(को० नं० १											,	

	<b>5</b>	७-६-६ के भगों जानना जानना मं के कोई १ भंग जानना	
मनुष्य गति	) - S	१३वे गुरां० में (०) का भंग कोई कपाय नहीं होती १२) भोग भूमि में १२ २२ गुरां० में ७-८-६ के भंग पर्याप्तवत जानना ४थे गुरां में ६-७-८ के भंग पर्याप्तवत जानना	
. ,		(०) का भंग केवली समुद्धात की अवस्था में कोई कपाय नहीं होती इसिलये जुन्य का भंग जाना (२) भोग भूमि में १ले २२ गुरा० में १८ का भंग प्यिप्त के २० के भंग में से स्त्री वेद १, घटाकर १९ का भंग जानता	
( १२० ) कोष्टक नं० १८	*	प्रिप्णः में आटा हो तो मध्यात्व की पर्याप्त अवस्थात्व की पर्याप्त अवस्थाय का नर वांच वें चे  चें चें चें चें चें चें चें चें च	म भय ग्रार जुगुप्सा य दोनो जोड़कर ६ का भंग जानना।
दशुन	. m²		कपाय ४, पुरंप वद १ य थ्र का भंग जानना
चौंबीस स्थान दर्भन	~		•

	·	ម		•
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	मनुष्य गति	9		
	·	w		
· · · · · · · (	नंबर १८	54	७-द-६ के मंगों जानना जानना संस्केड्ड १ मंग प्रमिना जानना	
<b>***</b> )	कोष्टक न	<b>&gt;</b>	ररे मुस्सा में ७-६-६- के भंग में लिज अनुसार जानमां है हरेक मुसार जानमां है हरेक भंग में हि असर के ७-६-६ के भंग में हि अन्तानुबंधी कवाय की एक एक अनस्तानुबंधी काममां अथितं ७-६-६ के हरेक भंग में से अनन्तानुबंधी काममां अथितं ७-६-६ के हरेक भंग में से अनन्तानुबंधी काममां अवित्र ७-६-६ के हरेक भंग में से अनन्तानुबंधी कामम का एक एक अवस्था की एम एक अवस्था की एम एक	कर शेष ६-७-द के' भंग जानना
	कोतीस स्पान दश्न	, er	४थे भाग-४ का भग में संज्वलम् कोव मान-माय-नोभ ये ४ का भंग प्रंते भाग में-३ का भंग मान-माया-नोभ ये ३ का भंग जानना इवे भाग में-२ का भंग वादर नोभ ये २ का भंग वादर नोभ-१ के भंग वादर ने १० का भंग दिखताया गया है १८ का भंग उपर के कमें १ के २४ का भंग उपर के कमें १ के २४ का भंग जानना ३२ ४ का भंग कारर के कमें भूमि के २९ के भंग में से पूक नधुंसक वेद घटाकर २४ का भंग जानना	:
,	क्रिंगिस क	r		
		~-		

चौतीस स्थान दर्शन	रशन	कोष्टक नं ७. १ द	ប		मनुष्	मनुष्य पति	
	m	≫	<b></b>	US	<b>9</b>		រ
			٨ .				
	,	४५ ६-७ झे.भंग	भ्नां में सेकोई				
	जपर के ६-७-व के हरेक भंग	क्षाय	१ भंग जानना				
	3	के भंग जानना	४-४-६के मंगों		-	•	
		ानें म	में से कोई १			_	
	· (1)	४-५-६ के भंग	जानना				
	उत्पर के ४-६-७ हरेक भंग में से	प्रत्यास्यान कपाय की	२ का भंग		~		
	-7-2	८-५-६ का भंग जानना	जानना		·		
		ध्वे गुराः भं	,			<del></del>	
		१ले २रे ३रे सवेद भाग में	.1.		<del>.</del>		
		२ का भंग संज्वलन कपाय	4			1,m/%.	
	की ग्रवस्था में से कोई १	संज्वलन कपाय श्रोर कोई				<del>,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,</del>	
	१ वेद्रय-२ का भंग जानना						
		४-५-६-७वे म्रवेद	१ का भंग				
		भाग में	जानना		**	<del> ,</del>	_
	१ का भंग कोई १ संज्वलन	केल			-	·-·········	
		१०वे गुरा० में					
		१ का भंग संज्वलन सुक्ष्म	••			•	
		लोभ कषाय जानना					
		११ से १४ गुरा॰ में					
		(०) का भंग	•		<b>-</b> -		,
		(२) भाग भूगि म				·····	
		१ल २रे मुरा० म					
	,		७-द-१के भंगों				
	जपर के कम भूमि, के समान	नु यहाँ	में से कोई १			·	•
	स्त्री-पुरुप इन वेदों में से कोई	१ वेद जानना	भंग जानना				:
,		मः	६-७-नक्ते भंगों			•	•
•		६-७-द के भग	में से कोई १	;		``	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	उपर के कमभूमि के समान	15	मंग. जानना			<del></del>	•
	इन दो वदा म सं कांड्र १ वंद	जानता				 !	

1 ( 1838 ) merchanism

गति	ប	१के मंग मेंसे कोई	१ज्ञान जानना	जानना			मसम्बाह्य १	जान जानना	मिस कोई १	ज्ञान जानना			. 1	१ कवल शान जानना			. । २ के भंग	मंस् कोई १		३ के मंग में	म काइ १			
मनुष्य गति	9	मारे गंग	18	सारे भग जानेना			२ का भंग	,	३ का भंग			; ;	and the second second	१ केवल जान	;	· .;	० का भंग			३ का भंग	•		37	
	: . u	3"	क्रमवधि ज्ञान १,	असनः पर्यय ज्ञान १,	य र बदायार (र) २-३-३-१-१ के	भंग जानना	१ १ गुर भुरा में	२ का भग कुमात, कुशुप्त भ २ कजान जानना	20 型间0 并	३ का भंग मात,		इने मुराउ मे	र् का मण	१३व मुर्गा० में	१ क्वल जान	न बल सभुद्वात गा सबस्या में जामना	(२) मोन भूमि में	रस २२ गुला म २ का भग कुमति	क्ष्यति ये २ कुज्ञान	्र जानना	३ का भंग मित,	। श्रिति, श्रवधि ज्ञान य	41 41 (11.11.	
	नम्बर् १ द	7	१ ज्ञान	मिर्भा म		से कोई १			ज्ञान जानना	४-३ के भंगों	मिस काई १	7				and the superiorism of			그그 > 왕 학리 편		जा,नना		जानना	_
£68 -)	कोष्टक न	.>-	मारे भंग	पने ग्रपने स्थान के	का भंग जानना		स्य अंग जानना	11.15 FF 15 m		1.3 Print	जानना			. ,						म ८ कि भग बाराग		० केवल जान	जानना	
	नोतीस स्थान दश्नेन	n		_ <del></del> _	(१) कर्म भूगि में १०० में १३ १२ १२ गुरा० में	3 का भंग छुमति, कुश्रुत,		<b>#</b>	३ का भग गात जुल श्रवविज्ञान ये तीन	ज्ञान जानना	्वे गुगा० म ४ का भंग और काययोग	की प्रपेशा मित श्रुति, ग्रवधि	मनः प्यंय ज्ञान य ४ का	भर जानन।	यांग की अपेक्षा मिति, श्रीत	म्यविद्यान य ३ का भग जानग	योग में त्या स्त्री और नपु सक	वेद के उदय में मनः पयय सान		७ स. १२ तक के मुगार कि	४ का भग भात, जुन्न, जन्म मनः प्रथंय ज्ञान ये ४	सा भग जानना	- - - - - - - -	(२) भोग भूमि में
100	नीतीस स	NINIE	8	१२ जान व्याच प्रयं (ट)																				,

११५ ) :

चीतीस स्थान दर्शन	दशीन	कोष्टक मन्बर	म्बर १८		मनुष्य गति	
~	m	>>	చ	υy	<b>9</b>	u
	११ से १४वे गुरा० में	१ यथाख्यात संयम	१ यथास्यात			
	१ यथाख्यात संयम जानना (२) भोग भिम भे	जानना	संयम			as & polynograph
	१ से ४ मुस्सिं में १ अस्यम जानना	१ अस्यम जानना	१ शसंयम			
१४ दर्शन ४		सारे भंग	१ दर्शन		सारे भंग	१ वर्शन
श्रचक्ष दशन १, चक्ष दर्शन १.	१-१-१-१-१ क भग			२-३-३-१-२-३ के मंग		
मर्वाष दर्शन १,	(१) कमं भूमि में	ساي بني بالماديد		(१) कर्म भूमि में	,	,
केवल दर्शन ४,	ने २रे मुग्ग	२ का भंग	२ के मंग में से	१-२ गुस्राः मे	२ का भंग ^	2 寄出武平市
यं ४ दशन जानना	ग्चक्षु दर्शन <del>१</del> २ च		कोई १ दर्शन	२ का भंग पर्याप्तवत्		कोई १ दर्शन
	चतु दशान १, य २ का भग		जानना	जानना	: !	जानमा
	३२ ४थे थने मुल् में	३ का भंग	३ के भंग में से	े का भंग पर्याप्तवत	र का मग	त के भंगों में से
	३ का भंग अचक्षु दर्शन १,		कोई १ दर्शन			काइ ८ दशम जातना
	चसु दर्शन १, यवधि दर्शन १,		जानना	६वे गुराउ में	11	
	यं ३ का भग जानना		•	३ का भेग याहारक		
	६व गुरा० म 3 का भंग श्री० काययोग ग्रीन	३ का भग		नियकाय योग की अपेक्षा	•	•
	ग्राहार काययोग की अपेक्षा			१३वे ससा० में	१ केवली वर्धन	,
	अपर के तीन ही वर्शन जानना		Alle, and stellar	१ का मंग केवल समूद्-	ज्यानमा	्र भवल वसान
	6	३ का भंग	2	वात की अवस्या में एक		
	र का भग ऊपर के ताना हो			केवल दर्शन जानना		-
	१३वे १४वे गुरा० में	१ केबल दर्शन	१ केवल दर्शन	त्र) भाग भूगम म	० का भंग	# # # #
	१ केवल दर्शन जानना	ंजानना	जानना	२ का भंग पयातवत्		नोई १ वर्णन
	(२) भाग भूमि म			जानना		•
	•	२ का भंग	一人部村中田	४थे गुरा॰ में	३ का भंग	विक भंग में से
	र का भग अवध्य दशन १,		काइ १ दशन	३ का भग पयातवत्	7. T	मोई १ दर्शन
			4-1-1-1			जानना

१२४ )

	नुष्य गति	្ ម		१ लेश्या	६ के भंग में से कोई १ लेख्या जानना	तीन में से से कोई १ लेखा जानना	१ शुक्ल लेश्या जानना	३ के भंग में से कोई १ लेखा जानना	मरके मनुष्य में भी तीन
	मनुष्य			सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान में	ω·	३ का भंग	१ धुक्ल लेह्या जानना	३ का भंग	वर्ती कल्पवासी देव के अपसीत अवस्था अपेक्षा जानना ।
		. 03"	जॉनना	ट् १-३-१-१ के भंग (१) कमें अगि भं	(१) गम् भाग भ १से २२ ४थे मुला० में ६ का भंग पयिसिवत् जानना	६वं गुराा० में ३ का भंग ब्राहारक मिश्रकाययोग की ब्रपेक्षा ३ बाभलेख्या जानना	१३वे गुरार में १ का मंग केवल समुद्धात की ग्रवस्था में एक शुक्ल लेश्या	जानना (२) भोग भूमि में १-२-४थे गुरा० में १ का मंग एक कापोत लेश्का जानना	सुचना १—४थे गुराज गति में जन्म सेमे वाले युभलेश्या कर्म भूमि की
;	ر م	×	३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	१ लेख्या	६ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	३ क भग म स कोई १ लेश्या जानना १ श्रुबल लेश्या	0	३ के भंग में से कोई १ केरया जानना	,
;	( १२६ कोष्टक नं०	>>	३ का भंग	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान के	का भंग इ. अंस	२ का <b>मर्ग</b> १ शुक्ल लेस्या	o	अ का भंग	÷
the second secon	दश्रीन	m	नक्षु दर्शन १, ये २ का मंग जानना ३२ ४थे गुगा॰ में ३ का भंग अचक्षु दर्शन१, चक्षु दर्शन १, अवधि दर्शन १ ये ३ का भंग जानना	६ ६-३-१-० ३ के भंग (१) कर्म भूमि में	१ से ४ गुरा० में ९ का भंग सामान्यवत् जानना ५वे ६वे ५वे मान् से	र र प्राप्त प्राप्त ३ का भंग नीन जु लेख्या जानना द से १३ गुरा० में	<ul> <li>१ ब्रुक्त लेक्या जानना</li> <li>१ ४वे गुगा० में</li> <li>(०) का भग यहां लेक्या</li> <li>२ हीं १</li> <li>(२) भोग भिम भे</li> </ul>	१ सं४ मुरा। ३ का भंग तीन भुभ लेश्या जानना	
:	चौतीस स्थान	~		१५ लेख्या क्षो० नं० १ देखो		,			
;				۵۲ م					4

.: . .

मनुष्य गति	u ·	मुस स्थान भीर तीन भ्रञुभ लेश्या ही ३०१-३२५-३२६-५४६)	सारे भंग १ अवस्था अपने अपने स्थान के २ का भंग दो में से कोई	ग्रानना	२ का भंग   दो में से कोई   १ अवस्था   १ अवस्था   १ भव्य हो   १ भव्य हो	भागता १ सम्प्रकल्व अपने स्थान सारे भंगों में के सारे भंग जानना से कोई १ सम्प्रकृत्व जानना	१ मिथ्यात्व १ मिथ्यात्व १ सासादन	
म	UY	सूचना २— लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य के गुर्गा स्थान समास संजी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त और तीन जानना दिखो गो० जिल्गा० ३०१-३२५	२ - १ के मंग भूमि में गुगा में			lt ≫		
(१२७ ) कोष्टक नं० १ द	*	HC HC	१ अवस्था		२ का भंग दो में से कोई १ अवस्था १ भव्य जानना १ भव्य	सारे भंग सारे भंगों में ग्रपने ग्रपने स्थान हु से कोई १ के सारे भंग सम्यक्त्व जानना	१ मिथ्यात्व १ मिथ्यात्व २ सासांदन १ सासादन १ मिश्र १ मिश्र	
it is	e .		२ २-१-२-१ के मंग (१) कर्म भूमि में	१ले मुर्गा० में २ का भंग भव्य, ग्रभव्य ये २ जानना २२ से १४ मुग्ग० के १ भव्य हो जानना	(२) भोग भूमि में १ले गुएए॰ में २ का भंग भव्य, ग्रभव्य ये २ जानना		(१) कमें भूमि में १ले गुर्या॰ में १ मिध्यात्व जानन २२ गुर्या॰ में १ सासादन जानना ३२ गुर्या॰ में	144 WITT
	चातास स्थाग	~	१६ भव्यत्व भव्य, सभव्य			१७ सम्यक्तव ६ मिथ्यात्व, सासाद्न मिश्र, अपशम, अप्रयिक, आयोप-	श्रामिक ये (६)	

----

<del> </del>	चौंबोस स्थान दश्नेन	दर्शन	<b>. is</b> :	१२न ) कोष्टक नं <b>० १</b> न		मनुष्य गति	
~	~	er	>>	*	, us .	9	. <b>u</b>
		४थे ५वे गुराः० में	३ का भंग	तीन मेंसे कोई	४थे गुराा० में.	२ का भंग	दो में से कोई
		र का मर्ग उपश्वम, क्षायिक, सायीपशमिक ये ३ जानना		१ सम्यक्त्व	२ का भंग क्षायिक,		१ सम्यक्त
		द्वे मुस् भे	३-२ के भंग	३-२ के भंगों	क्षयापशम य र का		
		रे का भंग ग्रीदारिककाय		में से कोई १	६वे मुस् भे	२ का भंग	2
		थांग का अपक्षा उपश्रम, आयिक क्षयोषकाम मम्बद्धन में ३ क्रा		सम्यक्त्व	र का भंग श्राहारक		
		भंग जानमा			मिश्रकाय योग को श्रपेक्षा		
		२ का भग आहारक काय			क्षायिक, क्षयपिश्वम य २		
		योग की अपेक्षा क्षायिक,			१३३ गमा वानिता	१ ध्रामिक सम्भ	9 प्रामिक
		सयोप्याम (वेदक) सम्यक्त्व			१ का भंग केवल		सम्यक्तव
		यं २ का भंग जानना			समद्वात की अवस्या में		जानना
		७वे मुसा॰ में १	३ का भंग	तीनों में से कोई	एक आधिक सम्यक्त	Pri de Santonio	:
		र का भग उपशम, सायक		१ सम्यक्त्व	जानना		
		नियायसम् य स् का भग जानना	٠	; ;	(२) मोग भूमि में	,	
		र का भंग जन्म भीर	२ का भग	दों में से कोई	१ले मुसा० में	१ मिध्यारव	१ मियः एव
		क्षायिक मस्यक्ष्य में उत्तानम		٢ ١٠٠٠	र मिथ्यात्व जानना		
		१२वे १३वे १४वे गमा० में	१ क्षायिक स०	ु स्मागिक	रेर गुरा॰ में	? सासादत	१ सासादन
		१ धायिक सम्यक्त्व जानना	जानना	सम्यक्तम	८ सासादन जानना ४थे गमा मे	o Hi	44 4
		(२) भोग भूमि में		जानना	र का भंग आधिक	F .	१ मध्यकत्त
		े रेलं मुगा० में	१ मिथ्यात्म	१ मिथ्यात्व	क्षयोपशम ये २ जानना		: ·
		१ । भध्वति जानना			सुचनायहां प्रथमीपशम		
		१ समिति सम्बन	: १ सासादन	१ मासादन	सम्तक्त्व में मर्गा नहीं	•	
		दरे मुरा० में	१ मिश्र	े मित्र	हाता है। दितायापम स॰ में शिमर्गा होता है मो		
		४ मित्र जानना ४थे मसार में		į, į	जानना (वेखो गो॰ क		
•	3	३ ली भग उपराम, क्षायिक		፣ ፣ ኒ. ፦	गा० ५५०-५६०-५६१)		
						The second secon	

	u (	१ संजी १ संजी जानना	१ जनस्या
मन्त्य गति	9	१ संग्री जानना संग्री जानना	सारे भंग पने अपने स्थान के
	٠	(१) कमं भूमि में १ से १ ते २ ४ थे ६वे गुगां० में १ संजी जानना सुचना — नक्ष्य प्रयक्ति मुक्ता मुक्ता के मुक्ता प्रयक्ति मुक्ता — नक्ष्य प्रयक्ति मुक्ता के मुक्ता वि ३ असंजी जीव के मुक्ता गित का उदय नहीं होता है, (देखो गो. के गां। वि इसिलये नक्ष्य प्रयक्ति का भुता में दी नम्ममा चाहिए परस्तु इन जीवों का भुता में दी मराग होता है इसिलये मनोवल प्राग्त भूता में दी मराग होता है इसिलये मनोवल प्राग्त भूता में ही भराग होता है इसिलये नहीं पाता १ देवे गुगां भें व्यक्ति वह जानना (२) भोग भूमि में १ते नम्म भूमि में	र संशा जानना २ १=१=१-१-१-१
६ / म्बर १८	K	१ संजी जानना १ संजी जानना	१ सनस्या
कीष्टक नम्बर	<b>&gt;</b>	१ संशी जानना ० १ संशी जानना	सारे भंग त्रपने श्रपने स्थान के
र्वोतीम स्थान दर्शन	m	क्षयोपश्चम ये ३ का भग जानना १ से १२वे गुण् में १ से १२वे गुण् में १ संगे जानना १३वे १४वे गुण् में १३वे १४वे गुण् में १३वे १४वे गुण् में १३वे १४वे गुण् में १३वि अगुण् में १३४ गुण् में १३४ गुण् में ११३४ गुण् में	१ -१-१-१ के मंग
चौतीम	~	H. →	् मनाहारक
•	~	प संज्ञों	१६ झ शास्त भासारक,

म् भूमि में स् अग्रहारक १ ज्ञाहारक (१) कमें भूमि में ज्ञाहारक ज्ञाहारक अज्ञाहारक अज्ञाहारक ज्ञाहारक ज	चौतोस स्थान दर्शन		कोष्टक नम्बर			मनुष्य गति	
भग जानमा १ ब्राहारक १ काहारक १ के भूमि में १ ब्राहारक १ काहारक अवस्था १ ब्राहारक प्रयस्था १ ब्राहारक प्रयस्था १ ब्राहारक प्रयस्था १ ब्राहारक अवस्था १ व्राहारक अवस्था		w.	>>	24	υ3·-	<b>9</b>	n :
१ माहारक १ माहारक अवस्था विग्रह मिल में जानता (विग्रह मिल में जानता (विग्रह मिल में जानता विग्रह मिल में विग्रह मिल		(१) कमं भूमि में १ से १२ गुरा० में	१ माहारक	१ आहारक	भंग जानना (१) कर्म भूमि में		
१ अनाहारक १ अनाहारक वात्तना १ आहार पर्याप्ति के समय १ अनाहारक वात्तना १ आहारक आत्तना १ आहारक अवस्था १ आहारक अवस्था १ आहारक अवस्था १ आहारक प्रवास्था भेग अवस्था अवस्था में अतहार पर्याप्ति के समय १ १ आहारक अवस्था केवली समुद्धात की क्ष्मां अवस्था केवली समुद्धात की काया अवस्था में जानना १ अनाहारक अवस्था में जानना १ अनाहारक अवस्था से जानना १ अनाहारक अवस्था होत्याह पर्याप्ति में जानना १ अनाहारक अवस्था होत्याह समय १ १ अनाहारक अवस्था से जानना १ अनाहारक अवस्था होत्याह समय वात्ता १ अनाहारक अवस्था वात्राह्म से अनाहारक अवस्था वात्राह्म से अनाहारक अवस्था वात्राह्म से जानना १ अनाहारक अवस्था वात्राह्म वात्राह्म के समय जानना		१ आहारक जानना १३वे मगा० में	१ ग्राहारक	१ आहारक	१ल २२ ४थे मुसा० में १ मनादारक मतस्या	१-१ के भंग जानना	दोनों में से कोई
१ आहारक बनस्था  भ स्वस्था जानना  १ आहारक जानना  १ आहारक अवस्था  १ आहारक प्रयासि के समय  १ आहारक प्रयासि के समय  १ आहारक प्रयासि के समय  १ याहारक प्रवस्था		र का भंग दंह समुद्यात	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		विग्रह गति में जानना		जानना
१ यनाहारक वानना प्रवस्था जानना ६वे गुरा० में १ याहारक वाहारक अवस्था । १ याहारक प्रवस्था । १ याहारक मिश्रकाय योग में याहारक मिश्रकाय योग में याहारक मिश्रकाय योग में याहारक प्रवस्था । १ याहारक प्रवस्था केवलो समुद्धात की केवलो समुद्धात की केवलो समुद्धात की केवलो समुद्धात की प्रवस्था में जानना । १ यनाहारक यवस्था में जानना । १ यनाहारक यवस्था है वानना । १ यनाहारक यवस्था विग्रह गति में जानना १ याहारक यवस्था विग्रह मिश्रक यवस्था विग्रह पर्यापि के समय जातना		म्रवस्था में एक ग्राहारक । मनस्था जानना			१ ग्राहारक ग्रवस्था ग्राहार पर्याप्ति के समय		
श्रवस्था जानना श्रवस्था जानना ६वे गुरा० में १ श्राहारक अदस्या १ श्राहारक मिश्रकाय योग श्रवस्था समय १ श्रेवे गुरा० में १ श्राहारक श्रवस्था १ श्रेवे गुरा० में १ श्राहारक श्रवस्था १ श्राहारक श्रवस्था १ श्राहारक श्रवस्था १ श्राना समुद्धात की केवली समुद्धात की भवाता १ श्राना भूमि में १ ले २२ ४थे गुरा० में १ श्राहारक श्रवस्था		१४वे गुए। मं	१ अनाहारक	१ अनाहारक	जानना		-
१ आहारक अदस्या अवस्था में आहारक मिश्रकाय योग समय १ वे गुण में १ याहारक अवस्था केवली समुद्धात की केवली समुद्धात की केवली समुद्धात की भवाद अवस्था भवाता। १ याहारक अवस्था भवाता। १ याहारक अवस्था भवाता। १ ये जानना १ अनाहारक अवस्ता विग्रह गति में जानना १ याहारक अवस्ता विग्रह गति में जानना १ याहारक अवस्ता		१ अनाहारक अवस्था जानना	अवस्था जानना	अवस्था जानना	६वे गुरा० में	१ आहारक	१ आहारक
१ आहारक १ आहारक मुक्काय योग अवस्था मुक्काय योग समय १३वे गुण् में १ याहारक अवस्था केवली समुद्धात की कपाट अवस्था में जानना १ यनाहारक अवस्था केवली समुद्धात की अतर लोकपुर्ध यवस्था में जानना १ ये जानना १ अनाहारक अवस्ता विग्रह गति में जानना १ याहारक अवस्था		(२) भोग भूमि में			१ याहारक अदस्या	ग्रवस्था	मनस्था
प्रवस्था में ब्राहार पर्याप्ति के समय १ वे गुरा॰ में १ क्राहारक अवस्था केवली समुद्धात की किवली समुद्धात की किवली समुद्धात की किवली समुद्धात की में जानना १ अनाहारक अवस्था में जानना १ भे जानना १ अनाहारक अवस्ता १ आहार पर्याप्ति के समय		१ से ४ मुसा० में	१ याहारक	१ श्राहारक	आहारक मिश्रकाय योग		
		१ माहारक मनस्या जानना	श्रवस्था	ग्रवस्था	में प्राहार पयािंत के		,
-					समय		
-					१३व गुरा० म	र माहारक मनस्था	
					१ याहारक अवस्था		ग्रवस्था
H-					केवलां समुद्धात कां		
					कपाट अवस्था म जानना		
					१ यनाहारक यवस्था	१ अनाहारक	१ यनाहारक
					क्वला समुद्धात की	ग्रवस्या	अवस्था
					प्रतर लोकपूर्ण मनस्था		
					में जानना		
					(२) भोग भूमि में		-
			· -		१से २२ ४थे मुरा० में	१-१ के भंग जानना	वानों में से कोड
		-	-		१ अनाहारक अवस्ता		१ अवस्या
					विग्रह गति में जानना		जानना
याहार पर्याप्ति के समय जानना					१ याहारक यवस्था		
जानमा		-	. ,		याहार पर्याप्त के समय		
					जानना		

		Same .	10 0 20 -	- <del>}</del>	<b>!-</b> .	·		
	5	१ डपयोग सारे भंगों में से कोई १ उपयोग जान 11	४ के भूग में से कोड़ १	उपयोग जानत ६ के भंग में से कोई १	डपयोग जानना इ.के भंग में से कोई १ डपयोग जाना	२ का भंग युषपत् जानना	#	्रम् मिष्ट १ उपयोग ६ के भंग में से कोएँ १
	: '9 \cdots	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जातना	४ का भंग	६ का भेग	ट्र का भंग	े का भंग युगपप्त जानना	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	ं का मंग
	υs	१० .कुवधि ज्ञान १, मन:पर्यय ज्ञान १ ये २ गटाकर (१०)	४-६-६-२-४-६ के मंग जानना (१) क्मे भूमि में १ते २२ गुगा० में	४ का भग अनायता कुयुति १, देशन २ घे ४ का भग जानना ४थे गुरा० में ६ का भग	पर्यात्विवत् जानना ९वे गुर्गा० में ६ का भंग ग्राहारक निमञ्जाय गोग की ग्रापेशा	प्यक्तियन् १३वे गुगाः भे २ का भंग केनल समुद्धात की ग्रवस्य। भे	क्त्रत शात, क्रवल न्यान ये २ का मंग युगपन् जानना (२) भेग भूमि मं	४ का भंग ऊपर के कम भूमि के समान कैं।नना ४वे गुगा० में
1 1 2 1 1	24	१ उपयोग सारे भंग में से कोई १ उपयोग	र के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में	में कोई १ उपयोग ६ के मंग में से कोई १	उपवान ७-६ के मंगों में से कोई १		6 के भंग में में कोई? उपयोग	२ का भग युगपत् जानता
	; >>	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग	जानना १५ का भंग ६ का भंग	. का भंग	७-६ के भंग जानना		७ का भंग	२ का भंग , युगपत् जानना
は見せ	m	१२ ५-३-६-७-६-७-२-५-६-६ के भंग जानना	(१) कर्म भूमि में १ले २२ गुगा॰ में ५ का भंग कुशान ३, दर्शन २ पे ५ का भंग जानना	इ.स. भंग कुशान ३, दर्शन ३ घट का भंग जानना ४व १व ६व ७वे गुगा० में ६ का भंग मित-य ति	ज्ञवधि ज्ञान ३ वर्णन ३, १ ६ का भंग जानता ६ते गुरा० में ७ का भंग जीवारिक काय	योग की प्रपेक्षा जान ३, दर्शन ३, मनः पर्यय जान १ ये ५ का भग जानना ६ का भंग श्राह्य रक्षाय नोम की प्रपेता जान ३,	दर्शन इ ये ६ का भंग जानना ७ से १२वे गुस्ए में ७ का भंग जान, दर्शन ३, मन: प्येष्ट्र जान १,	में ७ का भंग जानना. १३वे १४वे गुरा० में २ का भग केवल डामोगयोग १
चौबीस स्थान दशन	c'	२० उपयोग १२ जानोगयोग द दर्शनोगयोग ४	ये १० गानना		€			

चौंतीम स्थान	स्थान दशीन	( १२१ ) कोष्टक नवर	<i>)</i> बर १८		. नुष्य गति	. ,
cr	u.	*	×	US <sup>e</sup>	9	<b>b</b>
*	प्रवे गुगा० में	११ का भंग	११ के भंग में	इवे मुसा० में	७ का भंग	७ के भंग में
	११ का भंग ऊपर के १०			७ का भंग आहारक मिथ		से कोई. १
	के भग में विषाक विचय धर्मे		ध्यान जानना	काय योग की श्रपेक्षा		ध्यान् जान्ना
	ध्यान जोड़कर ११ का भंग			पयाप्तिवत् जानना		
	जानना			१३वे मुराए में	१ सुक्ष्म त्रिया प्र०	
	६वे मुख् में	७ का भंग	6 के भग में रे	१ स्हमित्रवा प्रतिपाति	गुक्ल ध्यान	प्रक.धुक्ल
	७ का भंग ग्रीदारिक ग्रीर		सं कांह १	शुक्ल ध्यान गुरा स्थान		ध्यान
	ग्राहारक काययोग को भ्रपेक्षा		ध्यान जानना	क ग्रन्त म जानन		
	उपर के ११ के भंग में से इष्ट		,	(२) भाग भाग म	•	
				१ले २र मुरा० म	त का अस	त अं भग म
				न का भंग ग्राते-	-	में कोह १
	संस्थानविचय धर्मध्यान १ जोड़			ध्यान ४, रोद्रध्यान ४,		ध्यान जानना
	कर ७ का भंग	•		ये द का भंग जानना		
	७वे मुसा॰ में	४ का भंग	४ के भंग में	४थे गुरा० में	ह का भंग	ह के मंग में
	४ का भंग ऊपर में ७ मे		में कोई १	६ का भंग ऊपर के		से कोई १
	भंग में से ग्रनिष्ट सयोग १,		ध्यान जानना	द के भंग में ग्राज्ञा	1	च्यान जानना
	वेदनाजनित १, निदानज १ ये		•	विचय यमें ध्यान १		,
	३ श्रातंच्यान वटाकर ४ का			जोड़कर ६ का भंग		
				जानना		
	द से ११वे गुरा॰ में	१ पृथकत्व वितक	१ पृथक्त्व वि०			
	१ पृथक्त वितक विचार	वि॰ गुक्ल ध्यान	विचार शुक्त			
	घुक्ल ध्यान जानना	1	<b>ब्यान</b>			
-	१२वे गुरा० में	१ एकरंव वितकं	१ एकत्व नि॰			
	१ एकत्व वितकं ग्रविचार	म्रवि० गुक्ल ध्यान	ग्रविचार गुक्ल			1
	गुक्त ध्यान जानना	•				•
	१३वे गुरा० में	१ सुक्ष्म क्रिया प्र	१ सूक्ष्म क्षिया	The second secon	4 6 7 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	***************************************
	् १ सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती	घुक्त ध्यान				
	शुक्ल ब्यान जानना १८४ च्या भ					
	म ०१३६ ४					,
	-					

मनुष्य गति	t g	सारे संग  प्रपने अपने स्थान के सारे संगोः सारे मंग जानना भगों में से कि ११ से १८ तक भगों में से ११ से १८ तक ११ से १८ तक ते मुण्ण में ११ से १८ तक ११ से १८ तक के मंग कोई १ गंग पर्याप्तवे नहीं होता कि मिध्यात्व की सता बाले जीव को ११ वें गुरा स्थान से उतर कर १ने गुगा स्थान से आकर में की समावधी
	υ <del>γ</del>	४६  मनोयोग ४, वचन योग ४,श्रो० काय योग १ वे ६ घटाकर (४६) ४४-३६-३३-१२-२ १-४३-३६-३३ के भंग जानना (१) कम भूमि में १ले गुएए० में ४४ का भंग सामान्य के ५५ के भंग में सनोयोग ४ वचन थोग ४, श्रो० काययोग १, श्रा० मिथकाय योग १, श्रा० मां जानना १, श्रा० मां अन अर के
४ ) न०१६	ጵ	ब्युक्तिया निक श्रुक्त ध्यान ६ में से कोई १० में से कोई भेगों में से भंगों में से के भंगों में से के भंगों में से कोई १ भंग
( १३४ कोष्टक नं	>	१ च्युपरत किया व्युविक्या निव ध्यान व्यान व का भंग ६ में नोई १ ध्यान १० में से कोई १० का भंग १० में से कोई १ ध्यान जानता सारे भंग जानता के सारे भंगों में ११ से १० के भंगों में से ११ के भंगे में १० से १० तक ११ के भंगे में १० से १० तक ११ के भंगों में से १० से १० तक ११ के भंगों में से १० से १० तक १० से १० तक
दर्शन	m	ज्युपरत किया निवित्ति ज्युपरत किया निवित्ति (२) भोग भूमि में १ ते २२ गुएए० में ६ का भंग ४ थे गुएए० में १० का भंग ज्यर के कमें भूर प्राच्याक वानना १० का भंग जानना १० का भंग जानना १० का भंग जानना १० का भंग १० के भंग १० के भंग १० के भंग १० का भंग जानना १० का भंग जानना १० का भंग जानना १० के भंग से मिथ्यात्व १०
चीतोस स्थान दर्शन	~	२२ ग्रासव १, वै० मिश्रकाययोग १, वे० काययोग १, ये २ गटाकर (१५)

मनुष्य गति	g g	भग में से मिथ्यात्व १ अमन्तानुवंशी का उदय नहीं होता। दिया। दिश्वा १ वहाकर ३६ का भंग हिट्ट का क्षांय के ७ के भंग में ३ का भंग अपर ही मरण होता है। इसिलेय यहां १ के भंग में ३ का भंग अपर ही मरण होता है। इसिलेय यहां १ का भंग छोड़ दिया है। योग मिना है वह अपर के योग को एक मंग जाना १२ का भंग जाना १२ का भंग जाना १२ का भंग वाना १२ के १२ का भंग वाना १२ के १२ का भंग वाना वाना वाना वाना वाना वाना वाना वान
कोष्टक नम्बर १ द	×	विपरीत मिथ्यात्व, एकांत मि॰, प्रज्ञान मिथ्यात्व, इनमें से कोई १ पिथ्यात्व, यविरत २, (हिंसक ६, एकेन्द्रियादि जीवों में से कोई १ जीव का हिंसक का कोई १ इन्द्रिय विषय १ ग्रीर हिंस्य ६ पृथ्वी ग्रादि जीवों में से कोई १ जीव हिंस्य १, ये २ ग्रविरत) ऊपर के कपाय मार्गेगा स्थान १ ले मंग की कपाय ६ ग्रीर उपर के योगमार्गेगा के १३ योगों में से कोई १ योग इन प्रकार १ + २ + ६ + १ == १० का भंग जानना ११ का भंग उपर के १० के भंग में से कपायका ६ का भंग घटाकर ग्रीर कपाय का ७ का मंग जोड़कर ११ का भंग जानना भंग जोड़कर ११ का भंग जानना भंग में से ७ का भंग घटाकर कपाय का द का भंग जोड़कर कपाय का द का भंग जोड़कर
चौतीस स्थान दश्ने	m.	बटाकर ४६ का भंग जानना ३२ ४वे गुएा० में ४२ का भंग ऊपर के ४२ के भंगों में से अनंतानुबधी क्पाय ४, बटाकर ४२ का भंग जानना भंग जानना भंग जानना भंग गुएा० में ३७ का भंग उपर के ४२ के भंग ये से अप्रत्याख्यान क्पाय ४, त्रसिहिंसा १ ये ५ बटाकर ३७ का भंग जानना ६वे गुएा० में २२ का भंग आविदार के वश के भंग में से प्रत्याख्यान क्पाय ४, अविदत ११ (स्थावर कीव हिस्य ५ और हिसा का इन्द्रिय विपय ६ से ११) ये १५ घ्राकर १-२ का भंग जानना २० का भंग आवारककाय योग का अपेक्षा ऊपर के २२ के भंग में से स्त्री नपुंसक वेद ये २ घटाकर २० का भंग ७वे न्हे गुएा० में २२ का भंग ऊपर के
चौतीस र	6-	

चौतं	ीस :	<b>चौं</b> तीस स्थान दशेंन	. ( १३६ कोष्ट्रक नस्बर	क् <b>र )</b> ः । बर् १८		मनुष्य	ध्य गति
	~	m	>>	24	USP	9	u ——
		अपर से २२ के भूम भूम	१३ का भंग उपर से १२ से	を の の の の の の の の の の の の の	१ श्वे गुरा० में २ का भंग केवली मम-		
		हास्यारि ६ नोकपाय घटाकर	भंग में से द का भंग घटाकर	म घटाकर	द्धात की कपाट श्रव-		
		१६ का भंग जानना	कषाय का ६ का भंग जो इकर १३	जो इकर १३	स्था में ग्रौ० मिश्रकाययोग		
		२रे भाग में-१५ का भंग ऊपर	का भंग जानना		१, क मत्या काययोग १	४वे गुराः में	ह मे १६ तक के
		के १६ के मंग में से नपुंसक	१४ का मंग ऊगर के १३ के	तक १३ क	ये २ का भंग जानना	हि में १६ तक के मंग मंगों	冲
		वेद १, घटाकर १५ का	भंग में से अविरत का २ का १ ला	२ का १ला	१ का भंग केवला	पयसिवत् जानना	१ भंग जानना
	_	भंग जानना	भंग (नीचे सूचना नम्बर ३ देखो)	ग्र ३ देखो)	समुद्धात की प्रतर, लोक	•	
		अवर	घटाकर और अविरत का ३ का	का ३ का	पूर्ो अवस्थामे १ कामांस		-,
			रेरा भंग जोड़कर १४ का भंग जानना	त भंग जानना	योग जानना		
		वेद १, घटाकर १४ का	१५ का भंग ऊपर के		(२) मोग भीम म		१४-६-७ के भंगों
		भंग जानना	भंग में से अविरत का	उ का	१ने गुरा भ		में से कोई १ मंग
		४ में माग में-१३ का भंग ऊपर	भंग घटाकर श्रविरत का ४ का भंग		४३ का भंग उपर के		जानना
		के १८ के भग में से पुरुष	घटाकर अविरत का ४ का भंग		कर्मभूमि के ४४ के भंग	<i>•</i>	
		वेद १ घटाकर १३ का	जाड़कर १५ का भंग जान ।		में से नपुंसक वेद १		
		भग जानना	१६ का भंग अपर के १५ के		घटाकर ४३ का भंग		
		थ्वे भाग में- १२ का भंग ऊपर	भंग में से अविरत का	का ४ का भंग	जानमा		
		क १३ के मंग में से कोंघ	घटाकर अविरत का	५ का भंग	२रे मुस्स में	१३वे गुरा० मे	१-१ के भंगों में
		क ग्य १ भटा तर १२ का	जोड़कर १६ का भंग		३ न का भंग उपर	र का भग	से कोई १ मंग
		भंग जानना	१७ का मंग अपर के १६ के	र के १६ के	के कर्मभूमि के अह से	म्रौ ि भिश्रकाय योग	जानना
		६वे भाग म-११ का भंग ऊपर	fr:		मंग में से एक नपुंसक	१ कामांग काययोग	
		क १२ क भग में से मान	घटाकर आवरत ६ का	मिंग जोड़	वेद घटाकर ३= का भंग	१ ये २ का मंग	
		कपाय १ घटाकर ११ का	कर १७ का भंग	,	जानना	१ का भंग	
		भंग जानना	१ व का भंग ऊपर के १७ के	1 4 2 4 4	४थे गुर्गा० में	पयसिवत् जानना	
		७वे भाग म-१० का भूग उपर	tro .	w H	३३ का भग	(२) भीम भूमि में	
		के १९ मिसे से माना	ग्रविरत	का ७ का भंग	उपर के कर्मग्रीन के	ारा ० म	११ से १८ तक
		क्षाय १ घटाकर १० का	जोड़कर १८ का भंग	भंग जानना	३३ का ही मंग यहां		· :-::
		भग जानना			जानना	पय:प्रवत्	
		१० या भग उपर से १६	•	:		जानना परन्तु यहा	अनिना
						्रक मन म	<u>.</u>

	,
	٠
_	٠
	•
,	
9	
ar	
•	,
	_

चौतोस स्थान	ा दश्नी	कोष्टक नं० १ द	·	मनुष्य गति	
~	m	>	υΥ	9	n
	३, ऋोष्ट			नपुँसक वेद छोड़कर स्त्री-पक्ष ये २ वेदों	
	मान-माया कपाय ३ ये ६ घटाकर १० का भंग जानना			में से कोई १ वेद जानना	
	११वे १२वं गुरा० म ह का भंग उपर के १० के	:		भ स	१० से १७ तक के मंगों में से
	भंग में में लोभ कपाय घटाकर			भंग पर्याप्तवत्	कोई १ भंग सानना
	१३वे गुरा॰ में ५ वा भग द्रव्यमन की			्र यहां हरेक भंग संस्कृतक मे	-
		भंग ऊपर के १ले कोई १ भग मिच्यात्व गुर्गा स्थान जानना		नेदों में से कोई १ जानना	
	श्रनुभय वचनयोग १, श्रौदारिक काययोग १ ये ५ का मंग	के १९ से १५ तक के हरेक भंग में से			ह से १६ तक के
	जानना	मिध्या दर्शन १, घटाकर १० से १७		भंग पयमित्रत् जानना	भगा भ स काइ १ भंग जाननां
		तक के भंग जानना ६ से १६ तक के		परन्तु यहा हरक भगपरन्तु यहा हरक में एक पुरुष वेद भंग में एक पुरुष	गरन्तु यहां हर्रक मंग में एक पुरुष
	३ का भग भावमन की श्रमेक्षा ऊपर के ५ के भंग में से	३२ ४थ ३१७० भ भगा भ स भात्र १ से १९ तक के भंग १ भंग जानना		जानना	वेद जानना
	सत्यमनोयं,ग १, अनुभयमनो- योग १ ये २ घटाकर ३ का	ऊपर के २२े गुरा० के १० से १७ तक			
	भंग जानना १४वे मगा० में	हरेक भंग में से ग्रनस्तानवंधी कपाय			
	(७) का भंग यहां कोई योग नहीं है	नी प्रवस्था १ घटा- कर ६ से १६ तक			
	(२) भोग भूमि में १ में ४ मसा० में	क भग जानना १वे मुसा० के दसे १४ तक के दसे १४ तक मंग मंगों में से कोई	;	;	
	१०-४४-८१ के भंग जार के कर्मभूमि के ५१-४६-	के ह मे १५. १ ते हरेक भंग			,
	`				

IJ

्रहरू ) अस्तर सम्बद्ध नम्बर्ग १८ व्यापा अस्तर १८ व्यापा समुख्य समित स्थापा	, b	योग गिनती में नहीं आयेगा	ध्व गुर्शा० म सबेद भाग में	े की भूग काष्ट्र १ याग, काष्ट्र ३ की भूग जानेंगा १ वेद और संज्वलन कषाय	में से कोई १ कपाय, ये ३ का मंग जानना	द भाग में	प्राद्ध लोम कपाय १. कोई १	र का भंग	पूरम लामकपाय १ मार काइ १ योग, ये २ का भंग जानना	११-१२-१३वे मुगा॰ में १ का भंग जानना	कोई १ योग जानना	(o) का में	यहां कोई योग नहीं होताः (२) योग भिम में	१ले गुएए० में ११ से १ स तक के मंगों	३१ में १८ तक के मंग में से कोई १ भंग जानना उगर के कमें भीम के सामान प्रस्त यहां हरेक भंग में	जानमा परन्तु यहां हरेक भंग । स्त्री-पुरुष इन दीनों वेदां	छ।डकर स्ता- में से कोड़े १ वेद	अस्मिर
	m-	योग गिनती में नहीं आयेग	सवेद भाग में	- 10	में से कोई १ कपाय, ये इ	जवेद भाग में		र का भंग	) तूटम लाभकपाय १ आर् य योग, ये २ का भंग जानना	११-१२-१३वे मुस्ए० में	कोई १ योग जानना	१४वे मुराउ में (०) का मंग	यहां कोई योग नहीं । (२) भोग भिम भे	१ ते गुरा भे	इश् में १८ तक के मं उपर के कम भूमि के साम	जानना परन्तु यहां हरेक	पुरुष इस योगों में से कोड	जानना -

บ

कोष्टक मं०

चौतोस स्थान दश्नेन

मनुष्य गति

	ប	
)	9	
	03*	
	አ	१० से १७ तक के मंगों में से कोई १ मंग जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष इन दो वेद जानना ६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ मंग जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना परन्तु
	×	१० से १७ तक के भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना परन्तु पहां हरेक भंग में स्त्री- पुष्ठष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना हरे ४थे गुएए० में ६ से १६ तक के भंग ऊपर्टके कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री- पुष्ठष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना
	m	
_	~	

सुचना--पहां हिसक के विषय को हरेक भंग में एक ही गिना है अर्थात हिस्यक के एक समय के भिन्न भिन्न विषयों में से किसी एक विषय पर कषाय रूप उपयोग को ही हिंसक गिना है। परन्तु---

१-एकेन्द्रिय जाति का स्पर्शनेन्द्रिय विषय १, २-द्वीन्द्रय जाति के स्पर्शन-रसनेन्द्रिय विषय ये २,

र-क्षान्द्रय जाति क स्पशन-रसनिन्द्रय विषय य २, ३-न्यीन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घार्योन्द्रिय विषय ये ३,

४-चतुरिन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घार्या-चक्षुरिन्द्रिय विषय ये ४, ५-म्रसंज्ञी पंचेन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घार्या-चस्र्-कर्योन्द्रिय विषय ये ५

६-संजी पचेन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घार्श-चसु-कर्श-मनइन्द्रिय विषय ये ६,

डन छ: अवस्थाओं के विषयों में से एक समय कोई १ ही विषय हिसक गिना जाता है अर्थात् किसी एक समय में किसी एक विषय पर ही कपाय रूप उपयोग होता है वह उपयोग ही हिसक गिना जाता है जिस हिसक की अपेक्षा से विचार करना हो तो उस ग्रवस्था को हिसक की जगह (२) मूचना — हिस्य के ६ भग निम्न प्रकार जानना।

र्रा भंग-पृथ्वी-जल ये र का भंग जानता। १ला भंग-पृथ्वी ये १ का भंग जानना ।

इरा भंग---पृथ्वी-जल-ग्रामिन ये ३ का भंग जानना।

४था भंग--पृथ्वी-जल-अग्नि-आयु ये ४ का भंग जानना ।

६वा भग--पृथ्वी-जल-अगिन-वायु-वनस्पति-त्रस ये ६ का भंग जाननी । थ्वा भंग--पृथ्वी-जल-अगिन-वायु-वनस्पति ये ५ का भंग जानना ।

इसके शिवाय और भी पृथ्वी-अपिन ये २ का भंग, पृथ्वी-आयु ये २ का भंग, पृथ्वी-वनस्पति ये २ का भंग और पृथ्वी-त्रस ये २ का भंग,

इस प्रकार ग्रनेक भंग वन सकते हैं।

(३) सूचना—-अविरत के ६ भंगों की विवर्षा निम्न प्रकार जानना---

३रा चार का भंग--हिसक का कोई १ विषय और हिस्य के कोई ३ जीव ये ४ का भंग जानना। २रा तीन का भंग—हिंसक का कोई १ विषय और हिंस्य के कोई २ जीव ये ३ का भंग जानना। १ लादो का भंग — हिसक का कोई १ विषय और हिस्य के कोई १ जीव ये २ का भंग जानना। ४था पांच का भंग—हिसक का कोई १ विषय और हिस्य के कोई ४ जीव ५ का भंग जानना।

६वा सात का भंग--हिसक का कोई १ विषय ग्रौर हिस्य के कोई ६ जीव ये ७ का भंग जानना थ्वा छ: का भंग—हिसक का कोई १ विषय श्रीर हिस्य के कोई ५ जीव ये ६ का भंग जानना।

चौंबीस स्थान दश्नेन	दश्नेन ं		१४२ ) मोह्यस मंद्र • म		
~	u		5 01 45-1	मनुष्य गति	নি
_	r	>-	מט	<b>9</b>	
र३ भाव	o X	सारे भंग	, rir.	_	
तियंचगति १,	46-46-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-	<u>₩</u>	सारे मंगों में से उपश्रम सम्यक्त	सारे भंग	१ भंग
दनगात १ य ३ घटाकर (५०)	74-74-78-73-79-		जानना उत्तरमचारित्र	م م	
	रह के भंग	१७ का कोई ? भंग	१७ का भंग कोई	~	भंग जानना
	। (१) कर्म भूमि म	(१) कमें भूमि में	भग विश्व भग		ग्राह्य का काइ १ भंग
	देश भुराठ म देश की भूग	रैले मुसार्ग म		78- ਜਜਾ	
	कुशान ३ दर्शन २, लिंडिंग ४,	रुष का भूग कुमति, कुश्र ति	भंग (१)		
		कुत्रवधितानों में से कोई	शानन। १वे मुसार में	्रें शुरा० में	
		१ ज्ञान, श्रमसुदर्शन	२० का भग प्रयाप्त के १३१ के भग में में कराजित		१७ के भंगों में
	१, पारिस्सामिक भाव ३, ये ३१	३१ में से कोई १ त्यांन	जान १, घटाकर ३०	अन्याय, प्यांत्यम् जान्ता ३० का	संकोई १
		दान-लाभ-भोग-	भग जानमा		
		उपभोग-बोर्य ग	रर गुरा० म २८ का भूग प्रमान भ	रहे मुग्तं में	
	ो मिथ्या दर्शन १	क्षयापदाम लोब्ध ५	२६ के भंग में से सम		१९६ के भंगों में
	र घटाकर २६	कोई १ मित. कोध-	ज्ञान १, घटाकर २६ बा	का।	संकाइ १
	अरे गगार भे	मान-माया-लोभ इन	भग जानना		
	३० का भंग जार के २६	चारा कषायों में से कोई १ हमान के-	े व भी भी प्राप्ति के		
-	ر مہ ا	वेदों में से कोई १	३३ के भंग में से उपग्रम	ाम । पर्याहवन जानना	१७ में भूगों में भूभूभू
	रें की भेग जानना ।	वेद, छः लेखायों मं	सम्पनत्व १, स्त्री वेद १,		भंग जानना
	देश का भंग	स काइं १ लेह्या, मिध्या हतंन १	े ३ पन पद ६, रथ घटाकर ३० का भंग जानना	कर	:
		असंयम १, अज्ञान १	सुचना -यह ३० का	i.	
	१, क्षयोपशम लिड्ड	ग्रसिद्धत्व १, भव्यत्य या श्रभव्यत्व में मे	रिले नरक से ग्राने वाले	b' .lc	
					-
		,	Sign of the state	[(6	

~ ≫	
<u> </u>	
•	."]
٠.	

चौंतीस २	चौतीस स्थान दर्शन २	क्रीष्टक न	तस्बर् १ द	υ <b>ν</b>	मनेटय	य गति
			,		•	
	थ, मनुष्यगति १, कपाय ४,	कोई १, जीवत्व १		६वे मुएए० में	६वे गुरा में	१७ के भंगों में
	लिंग ३, लेज्या ६, स्रमंयम १,	ये १७ का भंग	-	र्७ का भंग	१७ का भंग	से कोई १ भंग
	ग्रज्ञान १, यसिद्धत्व १, भव्यत्व१,	जानना		पयक्तिवत् जानना		जानना
	जाबत्व१, ये १३ का भंग जानना	सूचना — इस १७ ू	,	१३वे गुराउ में	. •	१४ के भंगों
	५वे गुरा॰ में	के मंग के भी अनेक		१४ का भंग		में से कोर्ट १ मंग
	३० का भंग अपर के ३३	प्रकार के भंग होते		पयाप्तित्रत जानना	पर्याप्तवत् जानना	जाननाः
	के मंग में से श्रमुभ लेखा ३,	हैं इसका खुलासा		(२) भोग भूगि में	(२) भोग भूमि म	
	8	नीचे सूच ।। नं०(१)		१ले मुराउ में	१ले गुरा॰ में	
	में रायमासंयम १ जोड़कर ३०	में देखो		२४ का भंग पयति के		से कोई १ भंग
			१६ के भंगों में	२७ के भंग में से कुज्रवधि		जानना
	६वे गुरा॰ में		से कोई १ भंग	जान १, जुभ लेश्या ३		
			जानना	थे ४ ज्ञाम १, घटाकर	परन्तु यहां स्त्री-	
	की अपेक्षा उत्पर के ३० के मिंसे मिथ्या दर्शन १	में से मिथ्या दर्शन १		शेष २३ में कापोत लेश्यापुरुष	इन दोनों	
	भंग में से संयमासंयम घटाकर	वटाकर १६ का भंग		१ जोड़कर २४ का भग	में से कोई १ वेद	
	यम	जानना		जानना		,
	or	सुचना-इस १६ के		२२ मुरा॰ में	२२ मुस् भ में	१६ के मंगों में से
		भंग में भी ऊपर के		२२ का भंग पर्याप्त के	१६ का भंग	कोई १ भंग
•	र्७ का भंग ब्राहारक	१७ के समान श्रनेक		२५ के भंग में से कुझवधि	-	जानना
	नाययोग को अपेक्षा ऊपर के	प्रकार के भंग	-	जाने १, गुभ लेख्या ३	के समान जा	
	३१ कं भेग में से उपश्म	~		<b>1</b> —	परन्तु यहां स्त्री,	
	सम्यक्तव १, स्त्री-नपुसक वेद		१६ के भनी में	में कापोत लेश्या १	पुरुष इन दोनों में	
	ू य ४		सं कोई १ भग	जाड़कर २२ का भग	स काइ १ वद	
		जनर ६ २२ मुसा०	जानना	जानना		3
	७व गुरा॰ म	क १६ क मंग के		४थे मुर्गा० में	J	१७ के मंगा में से
		समान जानना		२५ का भंग	१७ का भंग	कोई १ मंग
	कर	सूचना१६ के भंग	!		· hr	जानना परन्तु
	शेष २६ में सरागसयम १, मनः	में भी ऊपर के समान		म सम्यक्त १,		यहां एक पुरुष
	प्यय साम ८ थ र जाइकर २८ अनक प्रकार	अनक अकार के भग		स्था वद १, शुभ लश्या श् मे गन राक्तर शेष २४	जानना परन्तु वहा	वित हो जाननी
,					IIIVIIII YF FYR FY	

मनुष्य गति	น		
मनुष	و		:
	us* .	से कापोत लेक्या भंग जानना मंग जानना सूचना—भोग भूमि में जन्म लेने वाले के अपर्याप अवस्था में १ले २२ ४थे गुरा। में १ले न्ये। ही होती है (देखों गो० का० गा० ५४६)	
16	አ	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना भेग जानना	१७ के भंगों में से कोई १ मंग जानना
( १४४ ) <b>को</b> ष्टक न <b>०१</b>	>>	थये गुसा० में १७ का मंग उपश्म क्षायिक क्षयोपश्म स० इन तीनों में से कोई १ सम्यक्त, मित श्र ति श्र कोई १ जान, श्र जस्य दर्शन तीनों में से कोई १ दर्शन, श्र वारों गितयों में से कोई १ गित, वारों कषायों में से कोई १ कषायां ने से कोई १ क्षेत्रा, श्र सिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये १७ का भंग जानना में भी ऊपर के समान झनेक प्रकार के समान	जानना ५वे मुसा० में १७ का भंग उपशम-क्षायिक क्षयोपशम
श्रीन	m	अस्य सम्भूत संस्था संस्था स्थापन	के २७ के मंग में से वेद १ घटाकर २६ क का भंग जानना भाग में-२५ का भंग के २६ के भंग में से वेद १ घट कर २५
चौतीस स्थान दर्शन	~		

_
_

											•													,	•				
	រេ																												
סו,			·		<del></del>	- <del></del> -			~~~			····			<del>~~~</del>			····		·		•				<u>.</u>	<del>-</del> ;		
मष्नुय गति	9																												
मध्य																										·	• .		
			-																										
± 1	(Jar																												
	ŭ.																									;			
																										:			
		·	·				<u> </u>	<u>;</u> !				·									म					<u> </u>			
	<b>5</b> '					;		,													१७ के भगों मंस	१ भंग	जानना		-	,			
េស		•																			ि १९	कोङ					, f		
	]	· 0	神月	ताना. वर्शन	'ح	तया	, वि	ज	臣、	157	यावा	्या,	مَّدَ ا <del>ل</del>	ټہ	le.		***	समान	भून	•			वत्वरे	खं	迮	गिना	दशन	- تحد	 
कोष्टक नम्बर		ने कोई	नान	T ~		व्य गरि	ਜ ~.	। कपाया	क्रिय	# (	तान गुभ लघ्यावा	गुभ के श	१, अज्ञान	भव्यत्व	१७ का		१७ के भंग		d <del>s</del>	;	# o	Hi.	ों सम्प	स्म्यव	定	१ जान, तीने	से कोई १ दर्शन	ताब्ध	L constant
- 22		计并	न नी	하 귀	्यः स	म मह	कोड़ ,	. चार र	माड़े	न्ता भ	तान त्या	₩. ₩.		چ	क ~	नना	-इस	इपर	प्रकार		६वे गुरा० में	१७ का भंग	र तान	م م م م م	दि भ	خه پرې	本	कं किम्	) 5
16-	<b>&gt;</b> 0,	इन तीनों में से	सम्यव्दव तीनों जानों में	स काइ १ जान,	क्षयोपद्यम्,	तियंच या मनुष्य गतियो	d∓: (	क्रोबादि चारो	में से कोंड़े १ कपाय,	년 년 2	१ लिय,	में से कोई १ गुभ लेखा,	स्यमास्यम	श्रमिद्धत्व	जीवत्व १ ये	भंग जानना	मूचना—इस	में भी ऊपर के	अनेक प्रकार	जानना	112	ا مَهُ	उपशामादि तानों सम्पमत्नो	में से कोई १ सम्पक्तवों	मति श्रादि चारों ज्ञानो	मं संकोई	द्यमा म	क्षयापश् न	मुप्तगात
,								10- 2			<u>~</u>	· · ·	HT.	<u></u>			١٠				~					<del>神</del>	Nr ~		
,		माग में-२४ का भंग ऊपर	मान	रे४ का	म ऊप	के २४ के मंग में से माया	क्पाय १, घटाकर २३ का			अपर क	में से कोध-मान-	अ यो	ानना		२१ का भंग जपर के रव	नोम १	, घटाकर		,	म् २१	के भंग में ने उपशम सम्यक्त १	उपशान चारित्र१ में २ पटाकर धेव	जोड़कर		-•	£ .	गरित	मिवेल जात १, मेवल दशन १	याति
		मा	न्य के मंग में से	क्पाय १, घटाकर भंग जानना	काभ	गम	टाकर			भंग उ	H. A.	लिंग	घटाकर २३ का भग जानना	११वे गुर्गा० में	ऊपर	्रम् इम्	ক ক	ाना	१२वे गुरा० में	२० ना मंग उपर	शम स	। २ मुख	(त्र १		१३वे गुरा० में	१४ का भग क्षायिक	नम्पनत्व १, काविक चारित्र	मिवल जात १, मेवल दशन	जायिक महिरा ४, मनुष्याति
हिः	מזי	7.6-4	न मंग	क्पाय १, घ भंग जानना	1-23	**	₩ ₩	भंग जानना	व्या भू	1	TK	माया कषाय ३, लिंग	ا ج	१वे सुर	न भंग	ite ite	सि	२१ का भंग जानमा	२वे मु	म भंग	में उप	रत्र१,र	१६ साधिक चारित्र १	ानना	134 134 134	म म	रे, था		41.1 21.2 2.4
द्य		माग् ग	رن جر ره	क्पाय	भाग	₩ %	क्रिपाय	भंग	ă.	२३ मा	२० के भंग	। कपा	कर्	٠.	€	计正	ल व	का भं	•~	U.	मं भं	न नानि	क्षापिन	मः भंग जानना	~	ير	गिरव	न आह	में मित्रम्
चौतीस स्थान दर्शन		do.			हु हुने						رب دم	माय	वदा			145 145	वाधि	8		د د ست	ds 	जन्य	W.	<del> </del>			# /	मृत्	
गेस भ						"																					•		
वीं	~																											. •	
,	-																										1		
, *	-																									,	* 1 1 1		
																											ì		

	R		•
मनुष्य गति	9		·
•	ىون		
	*	१७ के स्नों में से कोई १ मंग जानना	९७ के भं <b>मी</b> में से कोई १ <b>म</b> ंग जानना
(१४६) कोष्टक नवर १८	>>	कषायों में से कोई १ कषाय, तीन जिगों में से कोई १ जिग तीनों शुभ नेर्याप्रों में से कोई १ शुभ लेर्या, सराग संयम १, प्रज्ञान १, प्रसिद्धत्व १, भच्चत्व १, जीवत्व १, ये १७ का भंग जानना सूचना—इस १७ के भंग में भी अपर के समान प्रनेक प्रकार के भंग;जानना । ७वे गुएए० में १७ का भंग ऊपर के ६वे गुएए० में	१७ के भंग के समान जानना . दवे गुए। में १७ का भंग उपराम या कायिक सम्यक्त्व में से कोई १ सम्यक्त्व उपराम या क्षायिक चारित्रों में से कोई इ चारित्र, मित आदि चार जानों में से कोई १ दर्शन, क्षयोपश्चम लिंच ५, मनुष्यगति १, संज्वलन कषायों में से कोई १ क्षाय, तीन वेदों में से कोई १ दर्शन, इ क्षयाय, तीन वेदों में से कोई १ क्षाय, तीन वेदों में से कोई १ क्षाय १, अज्ञान १, अज्ञान १, अप्रतान १, अत्रान १, आसिद्धत्व १, जीवत्व १ थे १७ का भंग जानना
थान दश्त	m	शुक्ल लेग्या १, ब्रसिखंद ११, भच्यां १, भोवत् १ १४ भाव जानना १४वे गुर्गा० में १३ का मंग अपर के १४ के भग में से शुक्ल लेग्या १, घटाकर १३ का भंग जानना (२) भोग भूमि में १७ का भंग अपर के कर्म भूमि के ३१ के भंग में से नपुंसक वेद १, ब्रशुभ लेग्या ३, थे ४ घटाकर २७ का भंग	२२ मुरा० में २५ का भंग अपर के २७ के भंग में से मिथ्या दर्शन, प्रभव्य, ये २ घटाकर २५ का भंग जानना ३२ मुरा० में २६ का भंग अपर के २५ के भंग में अवधि दर्शन १, जोड़कर २६ का भंग जानना ४थे मुरा० में २६ का भंग कमें भूमि, के ३३ के भंग में से नपुंसक वेद १, यगुभ लेश्या ३ ये ४ घटाकर २६ का भंग जानना
चौतीस स्यान	er		
		•	,

अपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानता हवे गुणु के में भाग में १७ वे सवेद भाग में १० वे समान जानता अवेद भाग में १० वे समान जानता अवेद भाग में १६ १६ का भंग जानता अवेद भाग में १६ १६ का भंग जानता भाग में से कोई १ जिंग घटाकर १६ का भंग जानता १० वे गुणु के भाग के १७ के भंगों में से भाग जानता १० वे गुणु के १० व्यापक १६ का भंग जानता १० वे गुणु के १० व्यापक १६ का भंग जानता १० वे गुणु के १० व्यापक १६ का भंग जानता १० वे गुणु के १० व्यापक १६ का भंग जानता १० वे गुणु के १० व्यापक १६ का भंग जानता १० वे गुणु के १० व्यापक १० वान तीन दर्शनों में से कोई	
गु० मं सवेद भाग में १७ वे. भंग भंगे में से को १ १ मंग जानना गुण स्थान के भंगों में से को है १ भंग जानना भाग के १७ के भंगों में से को है १ भंग जानना इ. के भंग में भी अवेद भाग में १६ के भंगों में से को है १ भंग जानना जानों में से को ई शंग जानना ज्यान शंग शंग शंग भी १, अञ्चल शंग भी १, अञ्चल सो १,	त्वमा—इस १ ऊपर के समान
भ्ग भंग भंग भंग प्रवास के भंग भंग वास्ता । भंग के भंगों में से कोई । भंग वास्ता । हे के भंगों में से कोई । भंग वास्ता । कोई १ भंग वास्ता वास कार्यक्षम या कोई १ भंग वास्ता । कोई १ भंग वास आर्यक । कोई १ भंग वास आर्यक वास्त्र के नामंग वास	के भंग जानना ध्वे गुरा टे
	१९९८ मान म
	अपर के दवे गुरा
	समान जानना श्रवेद भाग में
१ मंग जानना १६ के भंगों में कोई १ भंग जानना	१६ मा
१६ के भंगों में कोई १ भंग जानना	ज्पर के सबेट
१६ के भंगों में कोई १ भंग जानना	मं स कोई
१६ के भंगों में कोई १ भंग जानना	१६ का भग जानना
१६ के भंगों में कोई १ भंग जानना	ग्ना —इस १६ ार के समान
१६ के भंगों में कोई १ भंग जानना	भंग जानना
	१०वे मुसा० में
	१६ का भंग
मि या झायिक है १ चारित्र जानों में से कोई नों में से कोई नों में से कोई मि लिंध ४, प्रहम लोभ १, प्रजम लोभ १, प्रजम ना १, लानना	क्षापिक सम्यक्त
ानों में से कोई में में से कोई में लोड्य ४, इस लोभ १, अज्ञान १, खि १, जीवत्व जानना के भंग में भी	१ सम्पर्वत्व, उपश्रम
मों में से कोई म लिंडव ५, हिम लोभ १, अज्ञान १, एख १, जीवत्व जिमना के भंग में भी	ारत में से भा ने झादि चार इ
म लिख्य ४, फिम लीभ १, अज्ञान १, एख १, जीवत्व । जानग के भंग में भी	१ ज्ञान तीन दर्श
हिम लोभ १, अज्ञान १, इस्व १, जीवत्व । जानना के भंग में भी तनेक प्रकार के	दर्शन, क्षयोपश्चम
अज्ञान १ यस १, जीवत्व ग जानना इ के भंग में भी प्रनेक प्रकार के	मनुष्यगति १, सूरुम
ग्रह्म १, जीवत्व 1 जानना १ के मंग में भी प्रनेक प्रकार के	घुक्त लेश्या १,
। जानना है भंग में भी प्रनेक प्रकार के	सिद्धत्व १, भव
द के मंग में भी जिस्सार के जिस्सार के	१ ये १६ का भंग जानना
अनेक प्रकार के	बना—इस १
	गर के समान

मनुष्य मति	g g					-			•••							a-to-												; ;
१ त	హ	१५ के भंगों में से कोई	१ भंग जानना													_		85 F	भग जानना									!
कोट्टक नम्बर	>	११वे मुसा० में	१५ का भंग	उपश्म या क्षायिक सम्यक्त	में से कोई १ सम्यक्त, उपशम	चारित्र १, मित ग्रादि चार	जानों में से कोई १ जान, तीन	दर्शनों में से कोई १ दर्शन,	क्षयोपशम लिंध ४, मनुष्य	गति १, युक्ल लेक्या	१, यज्ञान १, यसिद्धत्व १,	भन्यस्य १ जीवत्व१, ये १५ का	भंग जानना	सूचना-इस १५ के भंग में भी	ऊपर के समान यनेक प्रकार के	भंग जानना	१२वे गुराः म	१५ का भग	क्षायिक सम्यक्त १, क्षायिक	जारत र, नात शाद बारा झामों में में कीदें ? जात नांच	दर्शनों में से कोई १ दर्शन.	शयोपशम लिंड्य ४, मनुष्यगति	१, युक्ल लेख्या १, श्रज्ञान १,	श्रासद्धत्व १, भव्यत्व १, जावत्व	१, य ११ का भग जानना	सूचनाइस ११ फ भग म भा	के भूग जानना	,
	us.					-			-										•								;	. ,
चौंतीस स्थान दर्शन	۶														•						<u>.</u>			-				

मनुष्य गति	n a		
H			
	<b>አ</b>	१४ का भंग जानना १३ का भंग जानना १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां	स्त्री-पुरुष इन दो वे ों में से कोई १ वेद जानता १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना
कोष्टक नं 🛮 १ द	×	भाम १, यक लिट्ट यक लिट्ट विक लिट्ट विल लेख्या भव्यत्व १, का भंग का भंग व १३ का व १३ का में से शुक्ल व १३ का	ऊपर के कर्म भूमि के १७ के भंग के समान जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दोनों वेदों में से कोई १ वेद जानना १२ गुएए० में १६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि-के-१६ के भंग के समान जानना परन्तु
शुन	m		
गैतोस स्थान दश्चन	R'	,	

~	õ
<b>→</b>	मीष्टक मं०
-	•
•	
,	दशीन
(	चौतीं स्यान

ति	ប	
मनुष्य गति	9	
	w	
÷.	<b>3</b> 4	१६ के भंगों में से कोई १ में। ज.नंता परन्तु यहां है। पुरुं इन दो वेदों में से कोई १ से जानना परन्तु स्त्री-पुष्ष इन दो वेदों में से कोई १ मेंग जानना परन्तु स्त्री-पुष्ष इन दो वेदों में से कोई १ कोई १ वेद गानना
कीष्टक नं० १ द	>>	यहां स्त्री-पुष्प इन दो वेदों में में से कोई १ वेद जानना ३ रे गुरा० में १ ६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के १ ६ के भंग समान परन्तु यहां स्त्री- पुष्प इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना ४थे गुरा० में १७ किंग भंग ऊपर के कर्म भूमि के १७ के भंग के समान जानना परन्तु यहां स्त्री-पुष्प इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना

(१) सुचना---१ले गुए।० के १७ के भंग में ग्रनेक प्रकार के भंगहोते हैं इसका खुलासा निम्न प्रकार जानना--જ જ

		-									
Ξ.	÷,	÷	<b>:</b>	2	<b>E</b>	=	:	2	2	÷	2
:	<b>:</b>	:			<b>£</b>		**	:	î.	*	11
2	:	"	:	33	۲.		<b>.</b>	:	1,		
१ तियंच गति	१ मनुष्यगति	१ देवगति	१ कोवकपाय	१ मानकशय	१ माया कपाय	१ लोभकपाय	१ नपु सक वेद	१ स्त्री वेद	१ पुरुष वेद	१ सभन्य	१ भव्य
	<b>R</b> .		<b>:</b> ,	11	•		1,	<b>.</b>		5.	2
:	=	:	=	<b>x</b> .	=	<b>=</b> ,	=	2	:	:	Ξ,
११वे	१२वे	% ३व १	१४व	११वे	<b>१</b> ६वे	%७५	<b>४</b> प्रवे	११वे	२०व	र् १वे	रश्

होने वाले सव ये मंग चारों गति, पांचों इन्द्रिय, पर्याप्त, अपर्याप्त, निर्कृत्य पर्याप्त, लब्ध्य पर्याप्त, इन सब अवस्थाओं में ही भेदों की व्याख्या है सो जानना।

(२) सूचना--लेश्या के ६ भगों का खुलांसा निम्न प्रकार जानना--जिस जीव के . लेख्यात्रों के भंग होते हैं उतनी ही लेख्यात्रों में समय-समय में एक एक लेख्या का परिसामन होता रहता है। दूसरे ढंग से ६ मंग निम्न प्रकार जानना

- की उत्क्रब्ट अवगाहना (६०००) छ: हजार धनुष (३ कोस) जानना ।
  - २४ **बष प्रकृतियां—१**२० सामान्य मनुष्य की अपेक्षा १२० प्रकृति जानना ।

सुचना---१४वे गुएा स्थान की अपेक्षा विशेष खुलासा गो० क० गा० ६४ से १०४ देखो ।

- ११२ निर्वेत्य पर्याप्तक मनुष्य में श्रायु ४, नरकद्विक २, आहारद्विक २ ये = प्रकृतियों का बंघ नहीं होता इसलिये ये = घटाकर
- लब्ब्य पर्याप्तक मनुष्य में देवद्विक २, तीर्थंकर प्रकृति १, ये ३ श्रौर ऊपर के ८ प्रकृति ऐसे ११ प्रकृतियां ऊपर के १२० में से घटाकर १०६ जानना।
  - १०२ सामान्य से मनुष्यों की श्रपेक्षा उदय योग्य १२२ प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, तियैचद्विक २, तियैचायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियकद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतर्ष १, उद्योत १, साघारत्। १, सुक्ष्म १, स्थावर १, ये २० प्रकृतियां घटाकर १०२ जानना । २६ उदय प्रकृतियां
- पर्याप्तक पुरुष वेदि मनुष्य में ऊपर के १०२ में से स्नी वेद १ अपर्याप्त १ में २ घटाकर जानना।
- पर्याप्त स्त्री में (मोनिगति मनुष्य) ऊपर के १०० प्रकृतियों में से तीर्थंकर प्र० १, आहारक द्विक २, पुरुष वेद १, नपुंसक वेद १ ये ५ घटाकर और स्त्रीवेद १ जोड़कर ६६ जानना
  - ति मिथ्यात्व १, स० म्रभि ०१, २ वेद घटकर), मनुष्यगनि १, नीच गोत्र १, मन्तराय ५, नाम कर्म २८, (मनुष्यगति १, लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य में ज्ञानावरस्यीय ५, दर्शनावरस्यीय ६ (महानिद्रा ३ घटाकर) वेदनीय २, मोहनीय २४ (स्त्री-पुरुष ये स्पर्वादि ४, मनुष्यगत्यानुपूर्वी १, अगुरुलघु १, उपथात १, साधारता १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, दुर्भग १, स्थिर १, पंचेन्द्रिय जाति १, निर्मासार् १,∵ औदारिकद्विक २, तेजर कामसित् शरीर २, हुन्डक संस्थान १, भ्रसंप्राप्तामुपाटिका संहनन १, प्रस्थिर १, गुभ १, प्रयुभ १, ग्रनादेयं १, ग्रयशः कीर्ति १, ये २७) ये सब ७१ जानना (देखो गो० क० गा० ३०१) <u>~</u>
    - मोग भूमियां मनुष्य में ऊपर के १०२ प्रकृतियों में से दुर्भग १, दुःस्वर १, यनादेय १, ययदाः कीर्ति १ नीच गोत्र १, नपुँसक वेद १ स्त्यानगुच्यादि महानिद्रा ३, ग्रप्रशस्त विहायोगति १, तीर्थंकर प्र० १, ग्रपयित १, वष्णवृषभ नाराच संहनन छोड़कर थेप ४ संहनन, समचतुरस्न संस्थान छोड़कर शेप ४ संस्थान, आहारकद्विक २ ये २४ घटाकर ७८ जानना (देखो गो० क
- १ले मिथ्य.त्व गुरा॰ में सामान्य मनुष्य की अपेक्षा से १४८ प्र॰ जानना। ہ۔ اح
- १४५ २रे गुएए० में तीयक्षिर प्र०१, माहारकदिक २ में ३ घटक्षिर १४५ जानना।

४थे गुग्गु० में ऊपर के १४७ में तीर्थंकर प्र० १ जोड़कर १४८ जानना उपशम सम्यग्द्धिट की अपेक्षा १४८ और क्षायिक ३२े गुगा० में ग्राहारकद्विक २ ऊपर के १४५ में जोडकर १४७ जानना। 9× %

सम्यग्द्रिट की ग्रपेक्षा ७ प्र० घराकर १४१ जानना ।

प्रे गुग्। में नरकायु १ घटाकर उपश्रम स० अपेक्षा १४७ मौर आयिक स० अपेक्षा १४० प्रकृतियां जानना उने गुएा० में तीर्यंचायु १ ऊपर के १४७ में घटाकर १४६ जानना क्षायिक स० अपेक्षा १३६ जानना। 9 % %

७वे गुराए में १४६ जानना । सूचना—६वे गुराए के अन्त में अनन्तानुवधी का विसंयोजन होकर सातिशय अप्रमत्त में जाकर उपशप श्रेसी चड़ने के सम्मुख होते हैं । رں مح

द्वे मुस् में ३ भंग होते हैं। 33 १ला भंग में उपशम सम्प्रमहिट के उपशम श्रेसी में १४२ प्र॰ की सत्ता जानता

सुचना—इन १४२ प्र० में मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति ये ३ सत्ता मौजूद हैं २रे भंग में क्षायिक सम्यम्हींट के उपश्म श्रेशी में १३९ प्र॰ की सत्ता जानना

सूचमा--इन १२६ प्र० में ऊपर के ३ मिथ्यात्व प्र० की सत्ता गहीं रहनी है ३२ भंग में आगिक सम्याइष्टि के अपक श्रेग़ी में १३८ प्र० की सत्ता जानना

सूचना--इस १३ = प्र॰ में देवायु की सत्ता नहीं रहती है।

ध्वे मुग्ता में भी ३ भंग जानना।

१ला भंग में- उपश्रम सम्यक्त्व की उपशाम श्रेग्री में १४२ प्र॰ जानना।

३२ भग में - क्षायिक सम्प्रकत्वी की क्षपक श्रेणी में १३ - प्र॰ का सत्ता जानना ०२ भंग में - क्षायिक सम्यवस्व की उपशम श्रेग्री में १३६ प्र॰ जानना ।

१०वे नुग्र में भी ३ भंग जानना।

२२ भंग में क्षायिक सम्यक्त्वी की उपश्रम श्रेशी में १३६ प्र० की सत्ता जानना १ ते भंग में उपजम सम्यक्त्वी की उपज्ञम श्रेग्री में १४२ प्र॰ की सत्ता जानना

३२ भंग में आयिक सम्यक्त्वी की अगक श्रेग्री में १०२ प्र० की सत्ता जानना।

सुयमा ... हवे मुमा० में के १३८ प्रकृतियों में से नरकडिक २, नियंचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, ब्रातप १, उद्योत १, महानिद्रा १, संज्वलन कोय मान-माया ये ३, हास्यादिनोकषाय ६, वेद ३, सावार्स्स १, सुक्ष्म १, स्थावर १, घप्रत्यानकषाय ४, प्रत्याख्यींनि क्ष्याय ४, ये ३९ प्रटाकर १०२ प्र० की सत्ता जानना

११ में गुमां भें रे भंग जानना بر جر م

१ले भंग में-जपश्यम सम्यन्तवी उपश्यम श्रोशी में १४२ प्र॰ की सत्ता जानना।

२रे भंगों में-क्षायिक सम्यक्त्वी उपशम श्रेशी में १३६ प्र॰ की सत्ता जानना ।

१०१ १२वे मुएए० में १०१ प्र० की सत्ता जानना।

१३ ने गुएए० में ऊपर के १०१ प्रकृतियों में से (१२वे गुएए० के ग्रन्त में) ज्ञानावरएपीय ५, दर्शनावरएपीय ६ (महानिद्रा ३ घटाकर), अन्तराय 📞 मे १६ घटाकर ८५ प्र॰ की सत्ता जानना।

वेदनीय २, डच्च गोत्र १, मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, तीर्थकर प्र० १, त्रसकाय १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, १४वे गुएए० के द्विचरम समय में ८५ प्र० की सत्ता जानना श्रौर चरम समय में १३ प्र० की सत्ता जानना। मनुष्यायु १, प्रादेय १, यशः कीति १, इन १३ प्रकृतियों का भी मोक्ष जाते समय नाश हो जाता है। حر تا

२ ८ सष्या--- श्रसंस्यात जानना इस,राशि में लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य भी सिमिनित है।

क्षेत्र—लोक का श्रसंख्यातवां भाग प्रमास्स अढ़ाई द्वीर की अपेक्षा जानना प्रतर समुद्धात की अपेक्षा लोक का श्रसंख्यात भाग प्रमास जानना लोकपूर्स समुद्धात की ग्रपेक्षा सर्वलोक जानना ।

३० स्पर्शत---जपर के क्षेत्र के समान जानना।

ही धारए करता रहे इस अवस्या में यदि मोक्ष नहीं हो तो दूसरी पर्याय घारए करे।

३२ ग्रन्तर—नाना जीवों की घ्रपेक्षा कोई घ्रन्तर नहीं ॣएक जीव की घ्रपेक्षा क्षुटभव तक मनुष्य न बने या घ्रसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक मनुष्य न बने ।

३३ जाति (योनि)—१४ लाल मनुष्य योनि जानना ।

३४ फुल—१४ लाख कोटि युल मनुष्य को जानना।

:	
_	
*	-
26	
~	
_	

देव गित क नाता एक जो म के समय में एक समय में एक समय में एक समय में एक समय में ति के मुख्य के मुख्य की में से जानता जानता अपयिषि १ संगी पंज्यानी १ संग १ भंग विका भंग जानता अभंग १ भंग १ भंग १ का भंग १ का भंग १ का भंग	
	, .
	४ का भग पवातवत्
~p ;	
र्षक जीव क नान समय मे ४ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	
पर्याप्त नाना जीव को अपेदा १ से ४ गुरा० जानना १ से ४ गुरा० में १ संजी पं० पर्यात जानना ६ के भूगा० के १ से ४ गुरा० के १ से ४ गुरा० के १ का भंग सामान्यवत् जानना १० का भंग सामान्यवत् जानना १० का भंग सामान्यवत् जानना	० का भग मामान्यवर्त
चोतोस स्थान दर्शन  स्थान मामान्य न  स्थान बानान र से प्रे पुण्ड में जीवसमास र संज्ञा पुलेन्द्रिय पर्याप्त प्रोति से १९०१ स्थान र १९०१ सोहित र १६वो स्थान र १६वो	
कि स्थान कि स्थान कि जुस स्थान कि जुस स्थान कि जुस स्थान जुनि जीर अपयाति जोर अपसीति जोर संज्ञा कि जार स्था कि जार कि	

, पति	ช	१ देवगति १ पंजेन्द्रिय जाति १ त्रसकाय १ योग १ योग १ योग से कोई १ योग
देव गति	<u>ه</u> ,	१ देवगति पंचेन्द्रिय जाति १-२ के मंगों में से होई १ मंग जानना
	w	१ से २ दे ४ थे गुराए में १ से २ दे गुरा० में मरने वाला जीव भवनिक में जन्म ले सकता है १ ले २ दे ४ गुरा० में मरने वाला जीव १ से १ ६ वे मुरा० स्थान में मरने वाला जीव व सकता है । १ ६ वे स्वनं और ६ ग्रै-वेयक में जन्म ले सकता है । १ १ पंनीन्द्रय जाति जानना में जन्म ले सकता है । १ १ पंनीन्द्रय जाति जानना दे व निद्रय जाति जानना १ दे दे ४ थे गुरा० में १ वंनीन्द्रय जाति जानना १ वे वोग २ जानना १ वे वोग २ जानना १ दे सम्भाय जानना १ वे वोग २ जानना १ वे वाम १ जानना १ वे वोग २ जानना १ वे वाम १ वे वाम १ वे वाम १ वे वाम वे वामित जानना १ वे वाम १ वे वाम १ वे वाम वे वे वाम १ वे वाम १ वे वाम १ वे वाम वे वे वे वाम वे वे वाम वे वे वाम वे वाम वे वे वाम वे वे वाम वे वाम वे वाम वे वाम वे वाम वे वे वाम वे वे वाम वे वाम वे वाम वे वाम वे वाम वे वाम वे वे वाम वे वाम वे वे वाम वे वाम वे वे वे वे वाम वे
) 3 &	'n	१ देवगति १ पंचेन्द्रिय जाति १ श्रमेग १ योग १ योग १ योग १ योग नोई १ योग जातना
( १५६ कोष्टक नं०	>>	१ देवगति १ पंचेन्द्रिय जाति १ श्रमंग १ भंग १ भंग
थान	m	१ से ४ गुएए० में १ देवगति जानना १ देवगति जानना १ १ से ४ गुए० में १ पचेन्द्रिय जाति जानना १ सम्बन्ध्य योग १, जनमांण काययोग १ ये २ घटाकर (६) १ से ४ गुए० में १ से ४ गुएए० में १ से १
चींतीस स्थान दर्शन	8	६ गति वैवगति वेवगति १ पंचेन्द्रिय जाति १ पंचेन्द्रिय जाति द काय १ प्राक्षात्रक काययोग १ प्राक्षात्रक काययोग १ प्राक्षात्रक काययोग १ प्राक्षात्रक काययोग १ प्राक्षात्रक काययोग १

देव गति	ឋ		~ ~ √6	11 १-२ के मंगों में से कोई १ वेद जानना		ग १ पुरुष बेद जानना	त १ पुरुप लिग जानना १ भंग	७-द-६ के मंगों में से कोई १ भग जानना
	9		सारे भंग प्रपने अपने स्थान के	२ का भंग जानमा	•	१ पुरुष वेद जानना	१ पुरुष वेद जानना सारे भंग अपने अपने स्थान के	७-८-६ के भंग को नं० १८ के समान आनना सुचना—पर्याप्तवत् जानना
	U3°	काययोग १, बै० मिश्र काययोग १ ये २ का भंग जानमा	२ २-१-१ के भंग (१) भवनत्रिक से १६वे स्वगंतक के देवों में	१से २२ मुसा॰ में २ का भंग स्त्री-पुरुष २ वेद जानना इन दोगों	गुराङ म मरकर पहा स्त्रीपुरुष लिंग हो सकता है	(२) नवज्ञ वेषक म १ले २२ ४थे मुएए० में १ पुरुप वेद ही जानना (३) १ले स्वर्ग से सर्वाथ सिद्धि तक के	४थे मुरा० में १ पुरुष लिग जानना २४ १४–२४–१६–२३–१६– १९ के भंग	(१) भवनविक देवों में १ले २२ गुराए० में २४ का भंग पर्याप्तवत् जानना
१५७ ) रक नं० १९	×		१ मेव	२ के मंग में से कोई १ वेद जानना	१ पुरुप वेद जानना	१ पुरुष वेद जाननाः	१ भंग	७१ के भंगों कोई १ भंग जानना
( १५५) कोष्टक	>>		सारे भंग अपने स्थान के	२ का भंग जानना	१ पुरुष वेद जानना	१ पुरुप वेद जानना	सारे भंग प्रपने श्रपने स्थान के	१ले मुस्रा० में ७-द-६ के भंग को० नं० १ द के समान जानग
चौतीस स्थान दर्शन	m		१ २-१-१ के भंग (१) भवनत्रिक देव से १६वे स्वर्ग तक के देवों में		(२) नवभ वयक भ १ से ४ मुराए में १ पुरुष वेद जानना	(३) नवश्रनुदेश श्रीर पंचानुत्तर विमान में ४थे गुरा० में १ पुरुप वेद जानना	२४ २४–२०–२३–१६–१६ के मंग	शानता (१) भवनत्रिक देव से १६वे स्वर्ग तक देवों में १ले २२ गुरा० में २४ का भंग सामान्यवर्ष जानना
चौतीर	~		ये २ वेद ना					(48)
	~		१० वेद स्त्री-पुरुष ये जानना				११ कपाय नपुंसक वेद	* # 10 b

,	÷2.7	
A CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	मं सं
	9	१ ले २२ मुत्तु मं ७-६ के भंग परतु सुचना अपर के समान जानना ४ मुत्तु भ ६-७-६ के भंग को० नं० १ ६ देखी परनु सुचना अपर के समान जानना १ ले २२ मु० मं ७-६-६ के भंग के समान जानना ४ मुत्तु नुचना अपर के समान जानना ४ मुत्तु ह्वना अपर
;	w	(२) १ से १ ६ स्वर्ग में १९ स्वर्ग में १८ का भंग एक का भंग जाना १९ का भंग जाना भंग जाना सुचना—सम्बद्धिट मर कर स्त्री प्रयांग में नहीं जाता १९ रहे गुगा भें १९ १९ गुगा भें १९ १९ गुगा भें १९ १९ मुगा भें १९ १९ मुगा भें १९ १९ मुगा भें १९ स्वामित जाना १९ मां मां प्रवित्त जाना वित्र जाना वित्र जाना वित्र जाना वित्र जाना वित्र जाना वित्र मंग प्रवित् जाना वित्र जाना वित्र मंग प्रवित् जाना वित्र मंग प्रवित् जाना वित्र जाना वित्र मंग प्रवित्र स्वामें में १९ का भंग प्रवित्र जानना वि
१४वः ): । नस्बर् १६	34	६-७-६ के भंगो में से कोई १ भंग जानना में से कोई १ भंग जानना से से कोई १ मंग जानना भंग जानना
( १४द <sup>.</sup> ) कोष्टक नस्बर	>>	सूचना—परन्तु हरेक भंग में नपुं- सक वेद छोड़कर होष २ वेदों में से कोई १ वेद जानना हे २ ४थे गुएए० में ए-७-६ के भंग को ० नं० १ ६ देखों परन्तु सुचना ऊपर् के समान जानना हे २४थे गुएए० में ६-७-६ के भंग हे ०-६ के भंग को नं० १ ६ देखों परन्तु सुचना ऊपर् के समान जानना हे ०-६ के भंग के समान जानना हे ०-६ के भंग के समान जानना
दशीन	m·	हरे मुख् में हे का भंग ऊपर के र्ष के भंग में से अनन्तानुबंधी कवाय थे, घटाकर २० का भंग जानना भंग जानना १ हे ते रोप् में अनन्तानुबंधी हे हे हे हो भंग में से स्त्री वेद १ घटा कर २३ का भंग जपर के २४ के भंग में से स्त्री वेद १ घटा कर २३ का भंग जपर के २३ के भंग में से अनन्तानुबंधी हे या भंग जपर के २३ के भंग में से अनन्तानुबंधी हे पाय थे घटाकर १६ का भंग जानना है अप मुख् में से अनन्तानुबंधी हे हे का भंग जपर के २३ के भंग में से अनन्तानुबंधी हे ते मं जानना में १३ के भंग में से अनन्तानुबंधी, वेतर विभाग में से अनन्तानुबंधी, वेतर के भंग भेग जानना
ं चौतीस स्थान दर्शन	8	
चौत	~	
<b>'</b>	!	

	រ .	१ कुनान २ के भंग में से कोई १ कुनान जानना अन्तना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	्र <b>अ</b> संयम
देव गति	g	परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना सारे भंग प्रपने प्रपने स्थान के २ का भंग जानना ३ का भंग	१ श्रसंयम
	US <sup>c</sup>	परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना १२-२-३-३ के भंग १९) भवनत्रिक देवों में १ले १२ गुएए० में १ का भंग कुमति कुश्रुति ये १ कुज्ञान का भंग जानना १९ो १ले स्वर्ग से नव- ग्रैवेयक तक के देवों में १ का भंग जानना १ के १ कुज्ञान जानना ४ थे गुएए० में १ का भंग जमित कुश्रुति ये १ कुज्ञान जानना ४ थे गुएए० में १ का भंग मित श्रुति अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान जानना (३) नव अनुदिश ग्रौर पंचानुत्तर के देवों में १ का भंग मित श्रुति अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान ३ का भंग मित श्रुति	१ १ले २२ ४थे गुरा० में १ श्रसंयम जानना
ू १ १	ř	१ कुनात ३ के भंग में से जातना कोई १ कुनात कोई १ जात जातना	<b>१</b> असंयम
कोप्टक नं० १६	>>	सारे भंग अपने स्थान के ३ का भंग जान ।। कुजान जार ना	<b>१</b> श्र <b>सं</b> यन
चौतीस स्थान दर्शन	m	ह - व के भंग भवनदिक से नवजे वेयक तक शेल दे नवजे वेयक तक शेल दे ने मुण में वेय के से मार्ग कुमति, कुञ्चूति, कुञ्चूति, कुञ्चूति, कुञ्चूति, कुञ्चूति, कुञ्चूति, मवनविक से सर्वाध सिद्धि तक अधे मुण्ण में व का भंग मिति, श्रुंति, ग्रवधि वान ये व का भंग जानता	१ १ से ४ मुरा० में १ श्रसंयम जानना
चौतीस	6		१ , यसंयज्ञ
,	~	१२ ज्ञान कुशान ३, ज्ञान २ ये ६ ज्ञान ज्ञान २	१३ ्संयम

ħ	१ खुल हे स्या	<ul><li>शुक्ल लेश्या</li><li>जानना</li><li>श्रवस्था</li></ul>	दों में से कोई १ प्रवस्था १ भव्य जानना	१ सम्यक्तव	१ मिथ्यात्व	ड के न म में कोड १ सम्पक्त
9	१ ग्रुक्ल लेश्या	~	२ का <b>भंग</b> १ भव्य जानना	सारे भंग	१ मिथ्यात्व · १ म.स.दन	३ का भंग
υ <b>»</b>	लेख्या जानमा (३) नवग्रं वेयक देवों में १ले २२ ४थे मुस्सा० में १ बुक्ल लेख्या जानमा (२) नवअमुदिश और पंचानुत्तर विमान के	दवा म ४थे गुरा॰ में १ गुक्ल लेश्या जानना २ २—१ के भंग	१ले मुराउ में २ का भंग पर्याप्तवत् जानना २२ ४थे मुराउ में १ भवन लानना	भू प्र मिश्र घटाक (५) १३ के मंग (१) भवनशिक देवों नव- गैतेमक तक के टेनों में	र ने मुमा० में १ मिथ्मारव ०२ मामा० में	१ स सादन (२) १ते स्वर्ग मे सर्वार्थ सिद्धि तक के देवों में ४थे गुएए० में ३ का भंग उपशम
24	१ शुक्ल लेश्या जानना १ शुक्ल लेश्या	जानना १ अवस्था	दो में से कोई १ प्रवस्था १ भव्य जानना	१ सम्पक्तव	१ सासादन	१ मिश्र २ में से कोई १ भंग जानना
حر	१ <sup>.</sup> ट्टन्ल लेश्या १ सुक्ल लेश्या	१ भंग	२ का भंग १ भव्य जानना	सारे भंग १ <sub>मिल्लास्त</sub>	१ सासादन	१ मिथ २ का भंग
w	(३) नवग्रं वेयक में १ से ४ गुए।० में १ शुक्ल लेग्या जानना (३) नवअनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुए।० में	र शुक्ल लक्य। जानन। २ २-१ के भंग	१ले मुरा० में २ का भंग भव्य, ग्रभव्य से २ जानना २२ ३२ ४थे मुरा० में	६ १-१-१-२-३-२ के भंग (१) भवनविक देवों में नवगै वेयक तक के देवों में असे समार्ध से	१ मिथ्यात्व जानना २२ मुस्स् मं १ मामादन जानना	डर्रे गुएए में १ मित्र जानना (२) भवनत्रिक देवों में ४वे गुएए में २ का मेंग उपश्म, क्षयोपश्चम
P		र भव्य, ग्रभव्य		बरव को० न० १ देखो		, .
~		१६ भव्यत्व		१७ सम्यवत्व को०		

देव गति

(१६१) कोप्टक नं० १९

चोंतीस स्थान दशन

( १६२ ) कोष्टक नं० १६	נו • • •	क्षायिक क्षयोपश् सम्यक्त ये ३/ स्वना—यह ३ भवनित्रक भवनित्रक भवनित्रक	,	२ का भंग   २ के भंगों में से क्षायिक- क्षित्व ये २ भंग जानदा	फ देवों में स्था में भी स्यक्त्व नहीं	े संजी संजी १ले २२४ थ्ये गुराए० में संजी संजी संजी संजी सिंजी है संजी जानना	१     २     दोनों अवस्था     १ अवस्था       जानता     १ अनाहारक विग्रह गति     १ अनाहारक     १ अनाहारक       में जानता     १ आहारक     १ आहारक     १ आहारक       पर्यापि के मित्र ग्रवस्था     १ आहारक     १ आहारक       में जानता     में जानता
दशेन	rt*	ux	१ का मंग उपराम जायक क्षयोपशम सम्यक्तव ये ३ जानना (४) नव अनुदिश और पचानुत्तर विमान के देवों में	क- य २ भंग	जानंता सुचना—भवनत्रिक देवों में पर्याप्त अवस्था में भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं हो सकता है।	१ १ से ४ गुएए० में १ संत्रो जानना	१ से ४ गुसा० में १ स्राहारक जानना
चौतीस स्थान दशेन	۶ .					१ द संजी संजी	१६ म्राहारक म्राहारक, मनाहारक

	n a	ह भंग १ उपयोग कुग्नवधि ज्ञान घटाकर (८) ४४६-६ के थंग	भवनतिक देवों में	र सा भूग वस्ति से भूग	रुल रर गुरा० म ४ का भंग पर्यापि के:५ के भंग में से कुत्रवधि जान घटा तर ४ का भंग जानना	रुल रर गुरा० म ४ का मंग पर्याति के ५ के भंग में से कुत्रववि जान घटा हर ४ का भंग जानना (२) १ले स्वर्ग से नव- ग्रै बेयक तक के हेवों में १ले २२ ग्रा० में ४ का भंग	रुल रर गुएए म ४ का भंग पर्वाति के थ के भंग में से कुम्रववि जान बटा तर ४ का भंग जानना (२) १ ले स्वगं से नव- ग्रे वेयक तक के हेवों में १ ले २ रे गुएए में ४ का भंग कुमिति, कुम्भुति, मचसु दर्शन, नक्ष दर्शन ये ४ का भंग	रुल रर गुरा० म ४ का मंग पर्वाति के.५ के भंग में से कुश्रववि जान घटा हर ४ का भंग जानना (२) १ ले स्वर्ग से नव- गू वेयक तक के हेवों में १ ले २२ गुरा० में ४ का भंग कुमिति, कुश्रुति, श्रवख़ दर्शन, चस्नु दर्शन ये ४ का भंग जा त्ना	रुल पर गुण्ड म ४ का भंग पर्वाति के प्र के भंग में से कुत्रववि जान बटातर ४ का भंग वानना (२) १ ले स्वगं से नव- ग्रे वेयक तक के हेवों में ४ का भंग डुमति, इश्चरि, ग्रचकु दर्शन, नक्षु दर्शन वे ४ का भंग जा तता . ४वे गुण्ड में ६ का भंग पर्य. प्रवे गुण्ड में ६ का भंग एवं त्रवे गुण्ड में ६ का भंग एवं त्रवात के हेवों में ६ का भंग एवं नुलु के व्यत्ति अगैर द्का भंग	श्व रर गुरा० म ४ का भंग पर्याक्ति के थ के भंग में से कुम्रवाधि जान बरातर ४ का भंग वानना (२) १ ले स्वगं से नव- ग्रे वेयक तक के हेवों में १ के २ में गुरा० में ४ का भंग डुमति, कुम्रुति, मचकु दर्शन, नक्ष दर्शन ये ४ का भंग जा तता ४ ये गुरा० में ६ का भंग १ का भंग	रुल रर गुएए म ४ का भंग पर्याक्ति के .५ के भंग में से कुस्रवांचि ज्ञान घटा तर ४ का भंग (२) १ ले स्वगं से नव- ग्रे नेयक तक के हेवों में १ ले २ रे गुएए में ४ का भंग ४ का भंग ४ का भंग ४ का भंग दर्शन वे ४ का भंग ज्ञा मार्ग ४ वे गुरार में ६ का भंग पर्य. प्रवाल में ६ का भंग प्रवाल में ६ का भंग प्रवाल में एका भूग प्रवाल में ६ का भंग प्रवाल में ६ का भंग प्रवाल में एका भंग प्रवाल में
	ist.	<b>१</b> उपयोग कुग्रवधि ज्ञान घ ४४-	(१) भवनतिक ४ के मंग में से १ के २२ गुरा कोई १ उपयोग ४ का भंग पय		भंग में से	•	•	•	• .	• .	
	>>	१ मंग	४ का भंग 🐧	-	६ का भंग						(17)
1.14.5	m·	ह ४-६-६ के नंग ०) गम्मारीया अन्य से सम्म	(१) भवनात्रक दवास नवप्र व- यक तक के देवों में १ले २२ गुएए० के ४ का भंग कमति कश्र ति.	कुप्रविध ज्ञान और अच्छा दर्शन,	•	में अपर शंन ज	का भंग जातना इरे गुरा० में ६ का भंग ऊपर के १ के भंग में ग्रनधि ग्रंन जोड़कर ६ का भंग जातना (२) भवनशिक देव से सर्वार्थ (२) भवनशिक देव से सर्वार्थ रिशेष्ट तक के देवों में	त्यं से वर्ष	का भंग जातना	का भंग जातना	का भंग जातना  ३२ गुएए० में  ६ का भंग ऊपर के १ के भंग में अवधि वान जोड़कर ६ का भंग जातना  (२) भवनविक देव से सर्वाधि सिद्धि तक के देवों में ४थे गुएए० में ६ का भंग मिते, श्रुति, अवधि वर्शन, अवधि दर्शन, ये ६ का भंग जनना  १०  ६-१० के भंग १ले २२ गुएए० में
वातास त्याम यसम	6	כט טשי ת	थे ६ जानना		-	*		•	•		

म् ।	नौतीस स्थान दश् <del>न</del> ेन	दशीन	( १६४ कोष्टक नं०	~ ~ °		हैंव गरि	
~	n	m	×	5	١	- 1	
			,	~	٠ور	စ	វេ
		३२ मुसा० में	८ का भंग	८ के भंग में से	१से २२ मना० में	न का भंग	# # # # # # # # # # # # # # # # # # #
	-			कोई १ ध्यान	द का भंग		्र कत्ताम् स्रोहे १ ध्याम
		भंग में याजा विचय धर्म		जानना	पयितवत् जानना	-	जानना
		ध्यान १, जोड़कर ६ का भंग			४थे गुरा० में	ट क. भंग	० भ भूग भू भ
		जानमा			६ का भंग ग्रातेच्यान ४.	•	कोई १ ध्यान
		<b>#</b>	१० का भंग	१० के भंग में से	रीद्रध्यान ४, याज्ञा		जानेना
		र ने प्रमा अपर के ह		कोई १ ध्यान	विचय धर्म ध्यान १ ये ६		:
		स्ताम १ जोनसम् १ जा जेन		जानना	का भंग जानना		
		जाता १, पाड्नार ८० का मध				~~~	
२२ माध्यव	43	: 0	मारे भंग	9 zin	Ś		
षो० मिश्रकाययोग	काययोग १,		अपने अपने स्थान के सारे भंगों में में	सारे भंगों से मे	० १ ४ महास्त्राप्त 🗡 महास्त्राप्त 🗸		्रभूम १
मीदारिक काययोग	काययोग १,	~7	सारे भंग जानना	कोई १ भंग	वै० काययोग १ ये ६	अपन अपन स्थान सार भगा म स से माने यांम जानमाजोस १ जांम	सार भगाम स
षा० मिश्र का०	. कार	ये २ घटाकर (४०)		जानना	घटाकर (४३)		からなるのかのの
भार कावयांग	यांग १,	10-8x-86-8E-		११ से १८	×3-35-33-82-30-		· 古 古 古
नपु सक वद	יב ו	188-80-80 H HT		明年前中田	३३-३३ के भंग	•	5 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
य १ घटा	कर (४२)	(१) भवनात्रक देवां से १६वे			(१) भवनत्रिक देवों से		,
		स्वग तक क दवा म		,	१६वे म्वगं तक के		
	-	रल गुरा० म		११ से १८ तक	देवों में		
		大	सं १ द तक के	क भगों में से	१ते गुराः मं		११ से १८ तक
•	•	सामान्य क २८ क मन् म सा	भग का० न० १८	काई १ भंग	•	48	के मंगों में से कोई
		काययोग १ ये २ घटाकर ५०	दंखा	जानना	भंग	10	१ भंग जानना
					म स मनायाम ४,	देखो	
		२२ गुरा॰ म	२२ गर्मा भे	१० से १७ मक	वचनयाग ४, व० काय	-	
		४५ का भंग ऊपर के		•	४३ का भंग जानना	- !	
		४० के भंग में से मिथ्यात्व	भंग को० नं० १८	कोई १ मंग			90 H 918 HH
		र घटाकर ४४ तक क भग		जानना	का मंग ऊपर के	१० स १७ तक के के	क मंगों में सकार
					के भंग में से १	भंग को०नं० १८	१ भंग जानना

( አታል )	देव गति	វេ	^;		ह से १६ तक के	北京北北	१ भंग जानना	,								११ से १ न तक	क मंगों में से	कोई १ मंग	जानना		१० से १७ तक	के मंगों में से	कोई १ मंग	जानना		ह से १६ तक के
		9			ठथे गुर्गा० मे	तक के मं	१८ देखो	-						-				भंग को० नं० १ न				१० से १७ तक के	ıs			४थे गुरा॰ में
		w	मिथ्यारव घटाकर ३८ का	भंग जानना		ऊपर के	३८ के मंग में से अतत्ता-को० नं०	नुवंधी कपाय ४, स्त्री	वेद १, ये १ घटाकर	३३ का भंग जानना	51.5	भवनत्रिक	नहीं होता	(२) नवग्रै वेयक के देवों	भ	१ले मुस् भ	४२ का मंग जपर के	४३ के भंगों में से स्त्री	वेद १ घटाकर ४२ का	मंग जानना	Her	का मंग ऊपर के	स्त मंगमें स्त्री	१ घटाकर ३	भंग जानना	४वे मुस्रा॰ में
	कोष्टक नम्बर १६	አ .	ह से १६ तक के	भंगों में से कोई	१ भंग जानना	-					कोई १ भंग		१० से १७ तक	110	कोई १ मंग	_	ह से १६ तक के	भंगों में से कोई	१ भग जानना							
		<b>&gt;</b>	३२े ४थे गुरा ० में	ट से १६ तंक के भग	कों० नं० १८ देखो			•	१ले गुरा० मे	११ से १८ तक के	भंग को० नं० १८	देखो	२रे मुस् । में	१० से १७ तक के	भंग को० नं० १=	देखो	३रे ४थे गुरा॰ में	ह से १६ तक के	भंग को० नं० १८	देखो			४वे मुरा० में	ह से १६ तक के	भंग को० नं० १८	देखो
	चौतीस स्थान दर्शन	m².	३२े ४थे गसा० में	४१ का भूग ऊपर के ४५	के भंग में से अनन्ता ृबंबी	क्पाय ४ घटाकर ४१ का		देवों में	१ ले मुस् ० में	४६ का मग ऊपर के ५०	के भंग में से स्त्री वेद १ घटा	कर ४६ का भंग जानना	२रे मुसा० में	४४ का भंग ऊपर के ४५	के भंग में से स्त्री वेद १ घटा-	कर ४४ का भंग जानना	३२ ४थे गुरा॰ में	४० का भंग ऊपर के ४१	टाकर	४० का भंग जानना	(३) नव य्रनुदिश ग्रीर पंचा-		४थे गुरा॰ में	नव	प्रै नेयक के ४० का भंग ही यहां-	,
		૪						•															٠			
	या	~										,														•

ह से १६ तक के संसों-में-से कोई ४थे गुराए में ३३ का भंग उपर के ६ ३३ का भंग ही (१६वे के स्वगंतक के ४थे गुरा स्थान के ३३ का भंग) यहां जानना

देवः गत्तिः		ह से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग १ भंग भंगों में से कोई १ भंग जानना जानना जानना जानना जानना जानना
ं देवः ग	ှစ်	्रेश गुरा० में ६ से १६ तक में भंगों में से कोई भंग देखी तु १८ तक के भंगों में से कोई भंग ति भंग काने में भंगों में से सारे भंग जाने में कोई १ भंग जाने में १७ के भंगों में १९ का भंग वाने ना जाने ना जाने में १६ के भंगों में १६ का भंग वाने से कोई १ भंग पर्यासवत् जाने ना जाने ना जाने ना जाने ना
	UJ	(३) नव अनुदिंश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुएए॰ में ३३ का भंग उपर के नवग्रे नेयक के ३३ का भंग ही यहां जानना ३६ -२४२६ -२४ -२६ -२४ -२६ -२४ -२६ मुएए॰ में १०० भंग प्याप्त के भंग से कुश्रविध जान पीत लेख्या २ घटा कर और अजुभ लेख्या ३ जोड़कर २६ का भंग वानना २४ का भंग पाति हे उप के भंग में १०० में २४ का भंग पाति हे उप के भंग में २४ का भंग पाति लेख्या १ ये २ घटा कर ग्रीर अनुभ लेख्या ३ जोड़कर २४ का भंग पाति लेख्या १ ये २ घटा कर ग्रीर अनुभ लेख्या ३ जोड़कर २४ का भंग पाति लेख्या १ ये २ घटा कर ग्रीर अनुभ लेख्या ३ जोड़कर २४ का भंग रेखे गुएएस्थान में यहां अने उप जा भंग ४थे गुएएस्थान में यहां
38.	2	१ भंग कोई १ भंग जानना उड़ के भंगों में कोई १ भंग जानना जानना अद के भंगों में से कोई १ भंग जानना
( १६६ कोष्टक नं०	>>	सारे भंग १ भंग तिसारे भंगों में से सारे भंग जानना कोई १ भंग जानना जानना जानना जानना जानना परन्तु पहां नधुंसक जानना
रश्न	W.	३७ २४-२३-२४-२६-२७- २५-२६-२४-२२-२२- २६-२७-२५ के भंग जानना (१) भवनविक देवों में १से मुखा में छवान ३, देवगति १, कपाय ४, देवगति १, कपाय ४, इनी-पुरुष वेद २, पीत लेह्या १, मिथ्या दर्शन १, अन्यम १, अज्ञान १, अम्यम १, अज्ञान १, ज्ञान १, मुख्या दर्शन १, ज्ञान १, ज्ञान १, अभ्या दर्शन १, ज्ञान ३ २५ का भंग जानना २३ का भग ज्ञान १ २५ का भंग जानना २३ का भग ज्ञान १ ३२५ का भंग जानना २३ का भग ज्ञान १, वे
चौंतीसं स्थान दर्शन	۲ م	२३ भाव उपश्रम क्षायिक क्षयोप- श्रम स०३, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, लिंह्य ४, देवगति १, क्पाय ४, स्त्री-पुरुष देद २, मिथ्या दर्शन १, लेक्या ६, प्रसंग्रम १, प्रज्ञान १, प्रसिद्धत्व १, परिस्तामिक भाव ३, ये ३७ भाव जानना

चौतीर	चौंतीस स्थान दर्शन	् । कोष्टिक	क नं० १६		देव	व गति
U.	m·	>>	వ	UY-	9	ឋ
,		३२ मुसा० में १६ के भंग	१६ का भंग में से कोई १ भंग	9 /5~		•
-	क भग म श्रवाद दशन जाडकर २४ का भग जानना ४भे गगाः में	का० न० १८ दला परन्तु यहां भी स्त्री पन्नत दम दो वेहों	जानना	कर ग्रान वाला जाव भवनत्रिक देव नहीं बगता (১) कत्पवासी हेकों में		
	२६ का भंग उपश्रम-क्षयो- पशम सम्प्रकत्व २ जान ३.	उत्त र । र । पर में से कोई १ वेद जातना		श्ले गुरा० में का मंग पर्याप्त	१ले मुसा० में १७ का भंग को०	१७ के मंगों में से कोई? भंग
	दर्शन, र. लिंडिंग ४, देवगति १,	४थे मुस्तु में	१७ के भंगों म	२७ के भंग में से	नं० १ न देखो	जानना
	कपाय ४, स्त्री-पुरुष लिंग २, लेक्या पीत १, असंयम १,	१७ का भंग को० नं० १८ देखो	से कोई १ भंग जानना	कुन्नवधि ज्ञान बटाकर २६ का भंग जानना	परन्तु यहां भी स्त्री पुरुष वेदों में	
	10	। परन्तु यहां ही स्त्री प्रकार इस सोनों वेदों		२२ मुरा० में २८ झराथम	से कोई १ वेद	
	भंग जानना	में से कोई वेद	>	पयिति के २५ के भंग में	२रे गुर्सा० में	१६ ने भंगें में
	**	जानना		से कुमधिज्ञान घटाकर	१६ का भंग	कोई १ भंग
	१ले मुराउ में	१ले मुरा॰ मे	१७ के मंगों में	२४ का भंग जानना	पयितिबद् जानना	जानना
	र७ की भग कुजीन ३, टिज्न २. लिड्ड ४. टेबगति १	र्७ का भग ऊपर के भवनत्रिक	स काइ १ भग जानमा	४थ गुरा० म २८ का भंग	४थ मुराउ म १७ का भंग	्र ७ क भगा म म कोई १ भंग
	कपाय ४, स्त्री-पुरुप लिग २,	दवों के १ले मुसा०		पयापि के २६ के मंग में	पयिसिवत् जानना	्रास्त्र भग जानना
	गुभ लेखा ३, मिच्यादर्शन १,	के १७ के भग के		से स्त्री-नेद १ घराकर	•	-
	श्रसयम १, श्रज्ञान १, श्रासद्धत्व    १, पारिस्मामिक भाव ३, ये	समान जानना		२८ का भग जानना (३) नवग्रै वेयक देवों में	-	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	२७ का भंग जानना			१ल मुसा० में	१ले गुरा॰ में	71
	ररे मुसा० में		१६ के मंगों में	지원 위 보대 가 가스 가 하나 함	१७ का भंग	
	)	१६ भा को० नं० १	त काइ १ भग जानना	पयात क र० क मंग म से कुश्रवधि ज्ञान घटाकर	प्राप्तवत् जानन्ति	,
•	ममव्य १ ये २ घटाकर २५			२३ का भंग जानना	il I	The state of the s
		पुरंप वदा म स कोई १ वेद जानना		· ~	१८ गुर्शा० म १६ का भंग	रद क मंगा म स कोई १ मंग
	२६ का भग जपर के	३२ मुरा० में	, ,,	पयिति के २२ के भंग में	पर्याप्तवत् जानना	जानना

चौतीस स्थान दर्शन	( १६ <sup>,</sup> कोष्टक नं०	१६८ ) नं० १८		<u>۱</u> ل	:
m-	>>	5	,	दव गात	
4 2 2	-	.	190	໑	ւ
रर के भग में अवधि दर्शन १ जोड़कर २६ का भंग जानना ४थे गुराक में २६ का भंग उपश्म-सायिक-स्रयोपश्म	१६ का भंग उपर के २२ गुरा के समान जानना ४थे गुरा० में १७ का भंग	१७ के मंग में सि स्रोक्त कर्न	<u>₩</u>	४थे मुसा० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१७ के भंग में से कोई १ भंग जानना
सम्पेषत्व ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, समोपश्चम लिंड्य ४, देवगति १, कपाय ४, स्त्री पुरुष वेद २ शुभ लेख्या ३, असंयम १.	माल्य यु स	भार ५ मर् जानना	पर्याप्टवत् जानना (४) नवअनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में		
न १, भव २६ का			४थे गुराए में २६ का भंग एम्स्न में २१ में	:	* <b>8</b>
	, t		ायात भ रथ् क भग म उपशम (द्वितीयोपश्चम) सम्यक्त्व जोडकर २६ का		
	१७-१६-१७ १७-१६-१६ के मंग को० नं० १८ १७ के हरेक भंगों	<del>प</del> ्	भंग जानना पुचना—-१३वे स्वगं से सर्वाफ्रें स्मिटि उस के		
# 1	दली परन्तु हरेक में भंग में यहां पुरुष वेद ही जानना		त्राप्त त्याक्ष तक क दव मनुष्यगति से ही श्राकर जन्म लेते हैं श्रीर यहां सरकर मनस्य मन्दि		
के भग जानना (४) नव अनुदिश और पंचा- नुत्तर विमान के देवों में	`	no le	ही जाते हैं (देखों मोo के गां० ५४२-५४३)		
से से	्थे गुसा० में १९ १७ का भंग को० से नं० १८ देखो परन्तु	१७ के भंगों में से कोई १ मंग जानना			
भटाकर २५ का मंग जानना सूचना श्रागे देखो	नता मा पुरुष वद हो मानता	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\			

प्रवगाहना---प्रारम्भी भवनत्रिक ग्रादि देवों के उत्कृष्ट ग्रवगाहना २५ धनुष को जानना, इसके ग्रागे सवर्षि सिद्धि तक के देवों में घटति-घटति सूचना--यहां ४या गुरा स्थान हो होता है, १ले २२ ३२ गुरा स्थान नहीं होते।

सनाथ सिद्धि के देनों में एक हाथ की ग्रवगाहना जानना, मध्य के ग्रनेक भेद होते हैं

%

3

- १०४ (१) सामान्यतया देवगति में पर्याप्त श्रवस्था में १०४ प्रकृतियों का बंध जानना, बंध योग्य १२० प्रकृतियों में से नरकद्विक २ नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्तियकद्विक २, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति ३, साधाररा १, स्थावर १

ग्राहारद्विक २, ये १६ प्रकृतियां घटाकर १०४ जानना ।

१०३, (२) अपयित अवस्या में ऊपर के १०४ में से मनुष्यगति १, तियैंचायु १ ये २ घटाकर और तीर्थंकर प्र० १ बढ़ाकर १०३ प्रकृतियों का बंध जानना ।

सूचना—जिन जीवों में मनुष्यगति में सम्यग्दर्शन पूर्वक केवली या श्रुत केवली के चर्सा मूल में तीयँकर प्रकृति बंधने के योग्य परिसामों के विशुद्धता का प्रारम्भ कर दिया हो परन्तु विशुद्धता की ग्रन्तिम क्षर्सा में वर्तमान श्रायु पूरी हो जाय तो देवगति मे निर्धे त्यपर्याप्तक प्रथवा पर्याप्त अवस्था में तीर्थंकर प्रकृति का वंध पड़ जाता है।

१०३, (४) भवनत्रिक देव और सव प्रकार की देवियां के पर्याप्त श्रवस्था में ऊपर के १०४ में से तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १०३ प्र० का १०२, (३) सामान्यतया ग्रवयीत ग्रवस्था में ऊपर के १०४ में से तिर्यचायु १, मनुष्यायु १ ये २ घटाकर १०२ प्र॰ जानना वय जानना।

१०१, (५) भवनिषक देव और सव प्रकार की देवियां के प्रपयित ग्रवस्था में-ऊपर के १०३ में से तियंचायु १, मनुष्यायु १ ये २ घटाकर १०१ प्र० का वंघ जानना ।

ग्रातप १ साधारसा

१०१, (८) ३२ १२वे स्वर्गतक के देवों में पर्याप्त प्रवस्था में-ऊपर के १०४ में से एकेन्द्रिय जाति १, घटाकर १०१ प्र० का बंध जानना ।

तियैच के देवों के अपयक्ति अवस्था में-ऊपर के १०१ प्र॰ में से तियंचायु १, मनुष्यायु १ मे २ घटाकर ६६ ee, (e) ३रे से १२ने स्वर्ग तक प्र० का वंध जानना ।

मं-जपर के १०१ में से देवों के पर्याप्त अवस्थां द्विक २, तिर्यंचायु १, उद्योत १ ये ४ घटाकर ६७ प्र० का वन्ध जानना। ह७, (१०) १३वे स्वर्ग से १६वे स्वर्ग तक के देवों में और नवर्ष वेयक तक के

अपयंति अवस्या में-ऊष्र के ९७ में से मनुष्यायु ६६, (११) १३वे स्वर्ग से १६वे स्वर्ग तक के देवों में और नवग्रै वेगक तक के देवों के १ घटाकर ६६ प्र० का वध जानना

- ७२, (१२) नव भनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों के पर्वाप्त अवस्था में–जानावरसीय ५, दर्शनावरसीय ६ (३ महानिद्रा घटाकर) मनुष्य दिक २, मनुष्यायु १, ङम्बगोत्र २, अन्तराय ४, नामकर्म प्र० ३१ (पंचेन्द्रिय जाति १, निमस्सि १, श्रौ० द्विक २, तैजस कार्मास्स शरीर २: समचतुर-संसंस्थान १, वज्जवृपभनाराचसंहनन १, स्पर्शादि ४, घगुरु लघु १, उनद्यात १, परधात १, उच्छवास १, प्रशस्तविहायोगति १, प्रत्येक १, वादर १, त्रस १, पर्याप्त १, सुभग १, स्थिर १, जुम १, म्रजुभ १, सुस्वर १, स्रादेय १, यद्यः कीर्ति १, वेदनीय १, अप्रत्याख्यान–प्रत्याख्यान–संज्वलन कपाय १२, हास्यादिक नोकपाय ६, पुरुष वेद १, त्रयशः कीति १, तीर्थंकर प्रकृति १ ये ३१) ये ७२ प्र० का वंध्राॄंजानना ।
  - (१३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में-ऊपर के ७२ प्रकृतियों में से मनुष्यायु घटाकर अपयित ग्रवस्था में ७१ प्र०
- डवष प्रकृतियां–७७, (१) सामान्य म्रालाप पर्याप्त म्रवस्था के देवों में–ज्ञानावरसीय ४, दर्शनावरसीय ६(३ महानिद्रा घटाकर)वेदनीय २, मिथ्यात्व, सम्यग्मिण्यात्व-सम्यक् प्रकृति ३, कपाय १६, हास्र दि नोकषाय ६, स्त्री-पुरुष वेद २, देवद्विक २, देवायु १, उच्चगोत्र १, श्रंतराय ५, नामकर्म प्र० २८ (पंचेन्द्रिय जाति १, निर्मास्य १, विककद्विक २, तैजस-कार्मास्य शरीर २, समचतुरस्रसंस्थान १, स्पंशािद ४, ब्रगुरु लघु १, उगघात १, परघात १, रवासोच्छवास १, प्रशस्तविहायो गति १, प्रत्येक १, वादर १, वस १, पर्यात १, सुभग १, स्थिर १, अस्थिर १, गुभ १, अगुभ १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १, ये २८, ये ७७ प्र० का उदय जानना ।
  - (२) सामान्य ग्रालाप ग्रपर्यात ग्रवस्या के देवों में-ऊपर के ७७ में से उच्छवास १, वैक्सिक काययोग १ ये घटाकर ग्रौर वै० मिश्र काययोग १, जोड़कर ७६ प्र० का उदय जानना। w 9
- (३) भवनत्रिक देव और १६वे स्वर्गतक के देव के स्त्री वेदी ये पर्याप्त श्रवस्था में-ऊपर के सामान्य के ७७ में से स्त्री वेद १ पटाकर ७६ प्र० का उदय जानना । ייי פ
- पुरुप वेद तक के देव के पुरुप वेदी में पर्याप्त अवस्था में –ऊपर के सामान्य के ७७ में से १६वे स्वर्ग यटाकर ७६ प्र॰ का उदय जानना। (४) भवनत्रिक देव ग्रौर رں ج
  - (.:) भवनत्रिक देव ग्रौर १६वे स्वर्ग तक के पुरुष वेदी देव के ग्रपयति ग्रवस्था में सामान्य ७६ में से उच्छवास **१, वै० काययोग १** ये २ घटाकर ग्रौर वे ० मिश्रकाय योग १ जोड़कर ७५ प्र० का उदय जानना। ار او
    - पुरुप नेद घटाकर शेष (६) भवनशिक देव ग्रीर १६वे स्वर्ग तक के स्त्री वेदी देव के ग्रपर्याप श्रवस्या में-पुरुष वेदी के ७४ में से ७४ में स्त्री वेद जोड़कर ७४ प्र० का उदय जानना। メ タ
- घटाक्र ७६ का प्र० का उदय स्त्री वेद १ (७) नवग्रैवेयक के देवाँ में पर्याप्त अवस्था में पुरुष वेदी में सामान्य के ७७ में से س و
  - में से वै० काययोग १, (=) नवर्षं वेयक के देनों में अपर्याप्त अवस्था में पुरुष ने ग़ी ही होते हैं इसिलये ऊपर के पर्याप्त के ७६ श्वासोच्छवास १ ये २ वटाकर शेष ७४ में वै० मिश्र काययोग जोड़कर ७४ प्र० का उदय जानना ।

かり

७० (६) नव अनुदिश और पंबानुत्तर विमान के देवों प्यक्ति अवस्था में-नवभें वेषक् के ७६ प्रद भार्त मिध्यात्व १, सम्थामध्यात्व १,
अनन्तानुवधी कपान ४, ये ६ घटाकर ७० प्र० उदय जानना ।
६६ (१०) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमाग के देवों में अपर्यात अवस्था में-प्याप्त के ७० अ० में ते उन्ध्रवात १
ये २ घटाकर ग्रीर वै ० मिथकाययोग १ जोड़कर ६२ प्र० का उद्य जानना ।
सचनानव अमुरिश और पंचानुत्र विमान में ये सव जीव सम्यरहिट ही होते हैं।
सस्य प्रकृतियां—१४७ (१) भवनिषक देव से १२वे स्वर्ग तक के देवों में तियँचायु १ घटाकर १४७ प्र० का सत्व जानना ।
१४६ (२) १३वे स्वर्ग से सर्वाथ सिद्धि तक के देवों में नरकांचु १, तियं बाचु १ ये २ घटा कर १४६ प्रव-का सत्ता जीनना ।
१४६ (३) भदनत्रिक देवी ग्रीर कल्पवासी देवियों में-तीर्षंकर प्र० १, नरकायु १ ये २ घटाकर १४६ प्र० का सत्ता जानना ।
संह्या—असंख्यात देव जानगा।
क्षेत्र—लोक का ग्रसंख्यातया भाग प्रमास् जानना।
स्पग्नम(१) सातराजुनोक का ग्रसंख्यातवा भोग प्रमारा जानना।
देश देने के लिये आते हैं ईस अपेक्षा।
(३) सातराजु—सर्वार्थ सिद्धि के ब्रहमीन्द देव माररागांतिक समुद्वात में मध्य लोक तक ब्रपन ब्रात्म प्रदेश का फल सकत है, इस
ज्ञोक्षा जानना ।
फास—नाना जीवों की अपेशा सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा दस हजार वर्ष से लेकर ३३ सागर का काल प्रमाण जानना ।
अन्तरनाना जीवों की अपेआ कोई अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा अन्तमुँ हूर्त तक तियंच या मनुग्य पयिय में रहकर दुवारा देव वन सकता
है मथया असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक अमस्स करके यदि मोक्ष न गया हो तो इतना अमस्स करने के बाद फिर जरूर देव
वनता है।
जाति (योनि)४ लाख योगि जानमा ।
कुल ३६ लाल कोटिमुल जानना ।

ω, ω ω >ο

स्थान नाम सामान ग्रालाप पर्याप्त नाना १ २   नाना				
				अपयक्षि
1 1	नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
I .	m.	>	ಶಳ	た-ら-み
THE PARTY THEFT	थान जानना	0 0	۰۰	सूचनायहां भी अपयोत्त अवस्था नहीं है।
, जापुर , पर्याप्ति		0 (	0 6	
•		· •	0	
० मित रहित	2 2	0 0	0 0	
<ul><li>इम्द्रय रहित</li><li>काय रहित</li></ul>		· •	, 0	
० योगरहित श्रयोग	योग "	o	0	
० स्रमगत वेद		0	•	~.~
० प्रक्पाय		० केवल जाम	0 : 0 : 0 : 0 : 0 : 0 : 0 : 0 : 0 : 0 :	
१ १ केवल ज्ञान	त यमासंयमः संयम् ये ३ के रहित जाननाः	0	0	
१ १ केवल दर्शन जानना		१ केवल दर्शन	१ केवल दर्शन	
• प्रलेखा	जानना	0	0	
० अनुभय उ	जानना	٠ ،		
१   १ झायिक स	सम्यक्तव जानना	१ ज्ञायक सम्यक्त	१ शायिक सम्यक्त	
ं ० अनुभय	2:	0	•	-
• मनुभय		0	•	· ·
२ २ केवल झा	केवल शानोपयोग, केवल दशनोपयोग दोना युगपत्	२ युगपत् जानना	२ युगपत् जानना	
जानना ० व्यानातीर	थानमा ध्यानातीत जानना	o	٥.	

चौंतीस स्थानं दर्शन	र्शन	२०	गति रहित में	गति रहित में या भगवान् में
~	ex.	>>	<u>ح</u> ر	ປ=ຄ.ສ.
२२ मासव २३ माव १	प्राप्तव रहित जानना १ क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक वीर्य, क्षायिक सम्प्यक्त्व, जीवत्व ये १ भाव जानता सूचना—कोई प्राचार्य क्षायिक भाव ६ श्रीर जीवत्व १ ये १० भाव मानते हैं।	० ४ भाव जानना	४ भाव जानना	

6 प्रवगाहना---३॥ हाय से ५२५ धनुप तक जानना।

बंध प्रकृतियां---अयंथ जानना। उत्य प्रकृतियां---अनुदय जानना।

सस्य प्रकृतियां—असत्ता जानना।

संख्या—अतन्तसिद्ध जानना । क्षेत्र—8५ लाख योजन सिद्ध याला (सिद्धों का श्रावास) जानना ।

स्पर्शन—सिद्ध भगवान् स्थित है। काल—सर्वकाल (अनन्तानन्त काल) जानना। मन्तर—अन्तर नहीं।

मन्तर—अन्तर नहीं। जाति (योनि)—यहां जाति नहीं। कुल—यहां कुल नहीं। ( ২৯১ )

र समास्त दोनों जानना कोई १ गुण् १ समास्त १ मुण् १ समा १ समास्त १ से कोई १ साम् १ से कोई १ समास्त में जानना १ से को १ से जानना १	फोष्टक नं० २१ पर्याप्त एक जीव के ताना एक जीव के एक समय में समय में नाना जीवों की अपेक्षा
र समास १ समास २-१ के भगों में कोई १ समास १ भग १ भग १ भग १ भग	
र वोनों जानना १ समास २-१ के भगों में से कोई १ समास १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग ३ का भंग	
दोनों जानता १ समास २-१ के भगों में से कोई १ समास १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग	~
१ समास २–१ के भगों में से कोई १ समास १ भग ३ का भंग १ मंग १ मंग ३ का भंग	
कोई १ समास १ मंग ३ का भंग १ कंग ३ का भंग	~
१ भंग ३ का भंग १ भंग ३ का भंग	समास जानना समास जानना
१ भंग ३ का भंग १ मंग ३ का भंग	-
१ भंग १ भंग १ भंग ३ का भंग	
१ मंग ३ का भंग १ फंग १ फंग ३ का भंग	
३ का भंग ३ का भंग १ कंग ३ का भंग	
अ का भंग १ भंग ३ का भंग	ر بابد کر بابد کر انداز کر ان
१ भंग १ भंग ३ का भंग	क का मध जानमा व मा मध जा
१ ८६८ अ. १६६ ८ सि. १ संग ३ का भंग	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
१ भंग ३ का भंग	
१ भंग ३ का भंग	
३ का भंग	
	४ का भग जानना ४ का भग जा

* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	द्रय	រ	<ul> <li>१ भंग</li> <li>४ काय</li> <li>१ काय</li> <li>१ काय</li> <li>१ काय</li> </ul>	
The second second second second	एकेन्द्रिय	<b>9</b>	<ul> <li>१ भंग</li> <li>४ का भंग</li> <li>१</li> <li>१ काय</li> <li>१ काय</li> <li>भं से कोई १ काय</li> <li>जानना</li> </ul>	;
		. w	रले २२.मुरा० में ४ का भग पर्याप्तजन् १ ले २२ मुरा० में १ पिनीच गति १ पोनीच्य जाति १ से २२ मुरा० में १ पोनीच्य जाति १ का भग को० नं० १७ काय १ घटाकर १ का भग जानना २२ मुरा० में ३ का भंग को० नं० १७ के ४ के भंग में से असकाय १ घटाकर ३ का भंग	सुचना—मिथ्यात्व स्रौर सासादन गुर्पा स्थान में मरते वाला जीव जिस गति, जिस इन्द्रिय, जिस काय, जिस आयु में जाकर जन्म लेने वाला है उसी गति, इन्द्रिय काय, सायु का उदय अपयित अवस्था में प्रारम्भ हो जाता है ऐसा
หลง )	१ १ ०	<i>a</i> ł	१ भंग ४ का भंग १ १ १ काय १ काय १ काय	
	कोष्टक नं०	>>	<ul> <li>१ भंग</li> <li>१</li> <li>१ काय</li> <li>पांचों में से कोई</li> <li>१ काय जानना</li> </ul>	
	दर्शन	ím	४ १ ते गुरा॰ में ४ का भंग को॰ नं॰ १७ के समान जानना १ के गुरा॰ में १ कि गुरा॰ में १ के गुरा॰ में १ के गुरा॰ में १ के गुरा॰ में १ के गुरा॰ में १ का भंग को॰ नं॰ १७ के ६ के भंग में से से ससकाय १ घटाकर ५ का भंग जानना	
	चौतीस स्थान दर्शन	0.	थ संज्ञा ४ संज्ञा ६ संज्ञा ६ मिल १ देखो। ६ मिल १ देखो। ६ मिल १ ४ प्रद्री, जल, ज्रसिन, द्याय, य स्थायर काय जानना	

	एकेन्द्रिय
( કેલ્કે)	कोष्टक नं० २१
	चौंतीस स्थान दशीन

नावाध	ובו בשונו אבניו	4.4(1)	אל מוז ולא ווג	<i>x y y y y y y y y y y</i>	•	rx.mr.	r x
~	8	er .	>>	አ	: W	9	ır
६ योग श्रौ०मिश्रकाययोग १, श्रौ० काययोग १,	३ गययोग १, गोग १,	१ले गुराा॰ में १ औदारिक काययोग जानना को॰ नं॰ १७ देखो	१ श्र <b>ी</b> ● काययोग जानना	१ श्रौ० काययोग जानना	२ कार्माल काययोग १, झौ० मिश्र काययोग १	१ मंग १-२ के भंग में हे कोई १ मंग	१ मंग २ के भंग में ते१०-२ के मंगों में १९ मंग से कोई १ योग
कार्मासकाययोग ये ३ योग जानना					ये २ योग जानना १-२ के भंग १ले २२ गुएए० में १ का भंग विग्रह गति	जानना	जानना
					में कार्माएं काययोग जानना २ का भंग आहार पर्यप्ति की ग्रवस्था में कार्मारा		
					काययोग और औ॰ मित्रकाययोग ये २ का भंग जानना		
० वे वेष	~	१ नपु सक वेद जानना १ले मुरा० में	१ नपु <sup>*</sup> सक वेद	१ नपु सक वेद	्र १ १ १ते २२ मुस्स् भे	१ नप्रसिक वेद	नप् सक बुवेद
११ कषाय	23	१ नपु सक वेद जानना २३/	सारे भंग	१ भंग	१ नपुंसक वेद जानना २३		१ भंग
स्यी-पुरुष	स्त्री-पुरुष वेद घटाकर (२३)	१ले गुरा० के २३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	झुन	७-८-६ के भंगों में से कोई १ मंग	१ले २२ मुसा॰ में २३ का 'नंग पर्याप्तवत्	भंग : देखो	७-८-६ के मंग में से कोई १ मंग
१२ झान कुमिति, कु	ज्ञान कुमति, कुश्रुत ये (२)	२ १ले मुरा० में २ का मंग कोंठ नं० १७ के	१ मंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान	आनगा २ १ले २२े गुएा० में २ का भंग पर्याप्तवत	१ भंग २ का भंग	१ जात २ के भूग में से कोई १ जान
१३ संयम	~ ≒	समान जानना १ले मुरा० मे १ असंयम	~	~	१ले २रे मुस्सं में	~	~
१४ दर्शन	~ ~	्रते गुरा॰ में १ प्रचक्ष दर्शन	~	~	१ अस्थम १ले २२े गुरा० में १ मनसू दर्शन	•	٥٠

	ប	110.116	१ मवस्या २–१ के भंगों में से कोई १ मबस्या जानना	१ सम्यक्त्व १-१ के भंगों में कोई १ सम्यक्त्व जानना	१ जानना प्रवस्था १ प्रवस्था प्रनाहारक दोनों में से कोई १ प्रवस्था	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग ज.नना
एकेस्विय	<b>9</b>	३ का भंग	२-१ के भंग में से कोई १ भंग	१ भंग १-१ के भंगों में से १ कोई १ भंग	१ असंजी जानना दोनों अवस्था याहारक, यनाहारक	१ भंग ३ का भंग
	U.S.	३ १ले २रेगुए१ में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	, , ,	१ १ के मंग १ -१ के मंग १ ले गुरा० में मिच्यात्व जानना २२ गुरा० में	<ul> <li>१ असंज्ञी</li> <li>१ असंज्ञी</li> <li>२</li> <li>१ले २२ गुस्स् में</li> <li>१ विग्रह गति में श्रना- हारक जानना</li> </ul>	(२) ब्राहार पर्यापिक समय ब्राहारक अवस्था जानना ३ १ले. २२ गुरा० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना
१७७ ) कोष्टक नं० २१	<b>3</b>	1- /5~	्र अवस्या दोनों में से कोई १ अवस्या	۵-	a. a.	१ ड्पयोग ३ के भंग में से कोई१ डपयोग जानना
<b>€</b> 16	×	१ भंग ३ का भंग	१ स्रवस्या भव्य-स्रभव्य में से कोई १ जानना	<b>~</b>	~ ~	१ भंग ३ का भंग
दशन	m	्रे १ले गुरा० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	२ १ने गुराा० में २ का भंग को० न० १७ के समान जनना	१ १ले गुर्गा० में १ मिथ्य,त्व जानना	१ले गुराए में १ प्रसंजी १ १ले गुराए में १ प्राहारक जानना	3 १ले मुसा० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना-
चींतीस स्थान दर्शन	~	श्रशुभ ले	१६ भव्यत्व भव्य, ग्रभव्य	१७ सम्प्यक्त्व मिथ्यात्व, सासादन	१ - संजी संजी १६ म्राहारक शहारक, मनाहारक	२० उपयोग कुमति, कुश्रुति श्रीर भचक्षु दर्शन ये (३)

	DX.12.5	ຫຸ	१ भंग द का भंग	सारे भंग १ भग सचना-अपने अपने सारे भग में से	्रांग क सार भग जानना १९ से १६ तक के १ भंग जानना	्र० से १७ तक के भंग को० न ऽ १ द के समान	जानना श्रुपने अपने स्थान के १७ के भंगों में से १ भंग कोई १ भंग १७ का भंग जानना	१६ का भंग १६ के भंगों में से को० नं० १८ के कोई १ भंग समान जानना	
( १७८ ) कोध्टक नं० २१	) o	१ मंग १ ध्य,न	द की भग द के भंग में से १ने २रे गुरा० में कोई १ ध्यान द का भंग पर्याप्तवत	ज्य	र भग जानना ३७—३२ के १८ पुरा० में ३७ का भग को० १८ के मगान	D zy	र भग १४ के भंगों में से २४–२ कोई १ भंग १ ले गुर जानना २४ का भंग १७ के समान	र पुण् में २२ का भंग ऊपर के २४ के भंग में से मिच्या- दर्शन १, ग्रमस्य १ मे २ घटाकर २२ का भंग को० नं० १७ देखो	
मींतीस स्थान दशेन	m l	े १ ध्यान स्रोते यान ४, १ने गमा भ	(प्र) त का भंग को० समान जान	रे थे, अविरत कामींग काययं ग १, रीसक एकेन्द्रिय का स्वश्निन्द्रिय का स्वश्निन्द्रिय अ र घटाकर (३६)	वेव	२३ भाव कुज्ञान २, ग्रचस् दर्शन १, लिंघ ४, तियैच गति १, कपाय ४	नपुंसक लिंग १, अधुभ लेखा ३, मिथ्या दर्शन को० नं० १७ के समान जानना १, असिद्धत्व१,पि साा- मिक भाव ३ ये २४	•	

बंध प्रकृतियां—१०६ (१) पर्याप्त अवस्था में १२० प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, आहारद्विक २, वै० द्विक २, देवद्विक २, देवायु १, मनुष्यद्विक २, मनुष्यायु१, द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रय-पंत्रेन्द्रिय जाति ४, याहारकद्विक २, वेक्तियक-हिक 2, ग्रौदारिक मंगपांग १, हुंडक छोड़कर शेप १ संस्थान, संहनन ६, विहायोगति २, स्वरद्विक २, त्रस १, सुभग १, उदययोग्य १२२ प्रकृतियों में से सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, स्त्री वेद १, पुरुष वेद १, नरकद्विक २, नरकाषु १, क्रवगाहम।—लब्ध्य पर्याक्त स्थावर काय के जीवों की जवन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवे भाग विग्रह गति में जानना और उत्कुष्ट तीयंकर प्र०१, ये ११ घटाकर १०६ प्र० वंध योग्य जानना । लब्ध्य पर्याप्तक जीव के भी १०६ प्र० वंध योग्य जानना १०७ (२) अपर्याप अवस्था में—निर्वेत्य पर्याप्तक अवस्था में तिर्यचायु और मनुष्यायु का वंघ नहीं होता है इसलिये ऊपर ग्रवगाहना एक हजार (१०००) योजन की स्वयं भूरमए। द्वीप के वनस्वितकाय कमल की जानना। --१४५ मिथ्यात्व गुगा स्थान में नरकायु १, देवायु १, तीर्यंकर प्र० १, ये ३ घटाकर १४५ जानना। १४३ सासादम मुसा० में ऊपर के १४५ में से ग्राहारकाद्विक २ घटाकर १४३ की सत्ता जानना १०६ में से ये २ श्रायु घटाकर १०७ प्र० का वंघ जानना (देखो गो० क० गा० ११३–११४) श्रादेय १, उक्चगीत्र १, तीयंक्तर प्र० १ ये ४२ घराक्र द० प्र० का उदय जानना । कारम्। इनके तियैचायु और मनुष्यायु का वंध अपयित अवस्था में ही होता है। म्ह्या — ग्रमन्तान्त जानता । ग्वशंत-सर्वलोक जानना सर्वलोक जानना

ज्ञाति (योनि)---५२ लाख योनि जानना । पृथ्वी जल, ग्रपिन, वायु, नित्यनिगोद, इतरिनगोद ये हरएक की ७ लाख ग्रौर [प्रत्येक वनस्पिति नाना जीवों की अनेशा अन्तर नहीं । एक जीव की अनेक्षा क्षुद्रभव से दो हजार सागर और एक कोटिपूर्व प्रमासा जानना। काल—नाना जीवों की श्रपेक्षा सर्वकाल, एक जीव की ग्रपेक्षा एकेन्द्रि के क्षुद्रभव से ग्रसंख्यात पुद्गलपरावतेन काल प्रमास्स जानना की १० लाख मिलकर ५२ लाख योनि जानना ।। ग्रन्तर

फुल—६७ नाल कोटिकुल (पृथ्वोकाय २८, जलकाय ७, अग्निकाय ३, वायुकाय ७, वतस्पतिकाय २२ नाख कोटिकुल) जानना

		ना एक जीव के एक समय में	n —		नाइ एक मुसा <b>०</b> १	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ४ का भंग	१ भंग
द्वीन्द्रिय		/ १ जीव के नाना समय में	<b>9</b>	दोनों गुराः मिथ्यात्व, सासादन	۵-	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ४ का भंग	१ मंग
	अपयक्ति	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	U9"	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ १से २२ गुरा० में ३००	द्वाद्रय अपयाप ३ मन-भाषा-श्वासो० पे ३ घटाकर (३) १ले २२ गुरा० में	३ का भंग ब्राहार, बारीर, इन्द्रिय पर्याप्ति ये तीन भंग जानना लिड्ड रूप प्रयाप्ति ४ वचनवल, स्वासोच्छवास ये २ घटाकर (४) १ले २२ गुर्या० में ४ का भंग को० ने०	१७ क समान ४
( १५० ) कोष्टक नं० २२		एक जीव के एक समय में	*	~	~	९ भंग ५ का भंग	१ भंग ६का मंग	१ भंग
~ ' <del> </del>	br:	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	>	~	~	१ भंग १ का भंग	१ भंग ६ का भंग	१ भंग
र्थान	पर्याप्त	नाना जीव की ग्रपेक्षा	m.	१ मिथ्यात्व गुसा०	१ १ले गुरा० में होस्थिय प्राप्ति	रू १ १ते मुसा॰ में १ का भंग को॰ नं॰ १७ के समान	६ १ले गुएा० में ६ का भंग को० नं० १७ के समान	>>
चौतोस स्थान दर्शन	न् सामान्य न् श्रालाप		2	१ गुरा स्थान २ मिथ्यात्व, सास दन	जीवसमास २ द्वीन्द्रिय पर्याप्त, श्रप०	पर्याप्ति मनपर्याप्ति घटाकर (५)	प्रासा भायु, कायबल, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय दवासोच्छवास, वचन, बलप्रासा, ये ६ जानना	>>
यो	क्र स्थान		~	१ मुस् स् मिथ्यात	२ जीवसमास द्वीन्दिय पय	३ पर्याप्ति मनपर्या	४ प्रास्त भायु, स्पश्ति दबासो बलप्रा	५ संजी

^	द्रय	n	४ का 'स	· ••	~	~	१ योग	8-13 के मंगों में से	कोई १ योग	जानना	i de		· <del>·</del> · · · · · · · · · · · · · · · · ·	,	~	१ भंघ		म्ताम्स	जानना
	हीन्द्रिय	9	४ का भंग	· ~	~	~	१ भंग	१-२ के भंगों में से कोई १ ग्रंग							~	सारे भंग		कों० नं० १ द देखो	
			१ले २२ मुस्सं॰ में ४ का भग को॰ नं॰ १७ के समान	१ तियैच गति	१ हान्द्रिय जाति	१ त्रसकाय		आं मिश्रकाय योग १	ये २ जानना	१-१ भ भग १ले २२ मुस्स० में	१ का भंग-विग्रह्मति में कामिएाकाय योग	जानना	२ का भग-श्राहार पर्या- प्ति के समय	कामस्पिकाय योग श्री० मिश्र योग जानना	१से २ रे मुस्स में	र मधुसम् वद जानन। २३	१ले २रे मुस्ए० में	२३ का भग पयिष्ठिवत जानना	c
•	, २२	೫	४ का भंग	۵,	~	~	१ योग	२ क धग में से कोई	<u> </u>						~	१ मंग	は - コード 争 ・ : : : :	भगों में कोई १ भंग	जानता
( 848	कोष्टक नं०	>>	४ का भंग	~	~	~	१ भंग	२ का भग							~	सारे भंग	७ के भंग	को० नं० १८ देखाँ	
	दर्शन	m	१ले मुसा० में ४ का भंग को० नं० १७ के समस्र	श्ले गुरा० में अस्तिमान	९ तिषय भारत १ले गुसाँ० में १ टान्टिंग जाति	१ले मुस्रिं में	्र असकाय र	ग्रौ० काय योग १ ग्रनुभय वचन योग १	ये २ जानना	१ल गुर्सा० म २ का भंग को० नं० १७					१ ले मुरा॰ में	१ नपु सक बद २३	रीन गुरा ० में	२३ का मंग को० नं० १७ के समान	
	चौतीस स्थान दशन	ે કે	कोठ नंठ १ देखी	६ गति	७ इन्द्रिय जाति 🧏 (१	द काय		न्नो॰ मिश्रकाय योग १ न्नौदारिककाय योग १	कामस्सिकाय योग १	भनुमय वचन याग र ये ४ योग जानना					६० वेद	११ कपाय ३३	पिनेद घटा	(8)	

द्वीन्द्रिय	n —	१ काम २ के भंग में से कोई १ ज्ञान १ १ के भंग में १ के भंग में १ क्रम था दोनों में से कोई १ अवस्था जानना १ सम्यक्त्व जानना १ अवस्था वानना १ अवस्था
ીં <b>ઝ</b>	<b>9</b>	१ भंग २ का भंग १ १ १ १ ३ का भंग अवस्थान की समान जातना १ भंग २ का भंग जानना अपनी अपनी अपनी अपनी १ भंग २ का भंग जानना १ भंग २ का भंग जानना १ भंग ९ ना भंग जानना
	w	र ले २२ गुर्या० में २ का भंग को० नं० १७ के समान १ क्रमयम १ क्रममान २ वानना २२ गुर्या० में १ समादन जानना २२ गुर्या० में १ सम्यादन जानना २० २२ गुर्या० में
fo २२	અ	१ वान २ के भंग में से कोई १ १ केर्या १ केर्या जानना १ केर्या जानना १ क्रवस्था १ केर्या जानना १ १ १ केर्या जानना १ १ १ केर्या जानना १ १ १ केर्या जानना १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
कोष्टक नं०	>>	<ul> <li>१ भंग</li> /ul>
रशिन	m².	१ १ कुप्यां में १ १ के समान १ के मुप्यं में १ १ के मुप्यं में १ १ के मुप्यं में १ कि मुप्यं में १ मिथ्यात्व जानना १ १ मध्यात्व जानना १ सम्बात्त जानना १ १ सम्बात्त जानना १ १ सम्बात्त जानना १ १ सम्बात्त जानना
चौतीस स्थान दर्शन	8	१२ ज्ञान २ कुमित, कुश्रुत ११ १३ म ११ १४ लेश्या ३१ १६ भवत्व २१ १६ भवत्व २१ १६ भवत्व २१ १६ भवत्व, ग्रभव्य २१ भव्य, ग्रभव्य २१ भव्य, सासादन १६ साज्ञी १६ माज्ञी १६ माज्ञि असंज्ञी १६ माज्ञि भव्य असंज्ञी भव्य असंज्ञी १६ माज्ञि भव्य असंज्ञी १६ माज्ञी भव्य अस्ति भव्य अस्य

य ४

_	
W.	
15	
~	
_	

<b>.</b>	n	१ उपयोग	३ के भग में से कोई १ उपयोग	१ घ्यान ८ के भंग में से कोई १ घ्यान	जानना १ भग		११ से १८ तक के मंगों में से कोई १ मंग	<ol> <li>संक्ष्य तक</li> <li>मंगों में से</li> <li>कोई १ मंग</li> </ol>		९६ क भगा म से कोई ९ भंग जानना
द्वीर दय	<b>9</b>	ر ۶ <del>با</del> نا	३ का भंग	१ भंग ८ का भग	सारे भंग	,	१९ सं ९ दत्तक क भंग पर्याप्तवत् ०००००	९० थ ९७ तभ भ भंग जानना		९९ मा भंग को० १६ का भंग को० नं० १६ देखो
	υs	१ श्राहार पर्याप्ति के समय श्राहारक जानना ३	१ले २रे मुरा० में ३ का भंग पर्नाहबत्	न १ले २रे मुरा० में न का मंग को० न० १७	कं समान ३८ श्रौदारिक काययोग १	य क र	इंद का भग कोर न० १७ के समान २२ मुएए में	२२ का मंग ऊपर क इद के भंग में से मिथ्यात्व १ घटाकर ३३ का भंग जानना	२४ १ले गुएए० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१८ गुराए न २२ का भग को० नं० १८ देखो
नं० २२	у,	१ उपयोग	३ के भंग में से कोई १ उपयोग	१ ध्यान	१ भंग	११ से १८ तक के भंग में से कोई	र्भा जानना		१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना	
कोष्टक नं०	>	श्रमंग	रेका भग	१ भंग	सारे भंग	१ले मुरा० में ११ से १८ तक के	भग का० न० १८ देखो		१ भंग १७ का मंग को०नं० १८ देखो	
चौतीस स्थान दर्शन	mr	to.	१ ले गुरा० में ३ का मंग को० नं० १७ के	समान द १से गुरा० में द का भंग को० नं० १७ के	समान ३८ कामसाि काययोग १	मेश्र काययोग १ टाकर (३८) १ले मुरा० में	रेंद का भग कोंं नेंं १७ के समन्त जानता		२४ १ले गुरा० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	
चौंतीस	~	०० सम्योग	कुत्रुति दर्शन ये (३)	२१ ध्य,न म्रातंच्यान ४, रोद्रध्यान ४ ये (न)	२२ माथव ४० मिण्यात्व ५, मिबरत द	(हिंसक का द्वीन्द्रिय जाति के स्पर्शन रस- नेन्द्रिय विषय २ + हिस्य	ट् ये ८) कपाय २३ योग ये ४ (४०)		२३ भाव को० नं० २१ देखो	

**श्रवगा**हना—लब्ब्य पर्याप्तक जीवों की जघन्य श्रवगाहना घनांगुल के श्रसंख्यातवां भाग श्रौर उत्कृष्ट श्रवगाहना १२ योषन तक यांख की जानना । उदय प्रकुतियां—–६१ को० नं० २१ के ८० प्रकृतियों में से साघारता १, सुक्ष्म १, स्थावर १, एकेन्द्रिय १, यातप १, ये ५ घटाकर शेष ७५ भे श्रौदारिक अंगोपांग १, यसंप्राप्ता सुपाटिका संहनन १, यप्रशस्त विहायोगति १, त्रस १, दुःस्वर १, द्वीन्द्रिय जाति १ ये ६ जोड़कर **थन्तर—**नाना जीवों की यपेक्षा यन्तर नहीं एक जीव की यपेक्षा क्षुद्रभव से यसंख्यात पुद्**गल परावर्तन काल तक यि मोक्ष नहीं** हो तो काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से संख्यात हजार वर्ष पर्यत निरन्तर द्वीन्द्रिय ही बनजा रहे सकता है । बंध प्रकृतियां—१०६ पर्याप्त अवस्था में जानना, को० नं॰ २१ देखो, १०७ अपर्याप्त अवस्था में जानना को० नं॰ २१ देखो । स्पर्गन—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वेलोक एक जीव की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग प्रमारा जानता । सरेच प्रकृतियां—१४५–१४३, को० नं० २१ के समान जानना । सैत्र--लोक का श्रसंख्यातवां भाग प्रमाएए जानना । जाति (योनि)—२ लाख योनि जानना । फुल--७ लाख कोटिकुल जानना संख्या--श्रसंख्यात जानना।

त्रीन्द्रिय	. ,	१ जीव के एक समय में	. g	8 मुख्य । 8 मुख्य । 9 भग १ भग १ भग १ भग
		१ जीव के नाना समय में	9	२ दोनों जानना १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग
	ै अप्यति	नाना जीवों को अपेक्षा	• 	् सिध्यात्व, सासादन १ १ १ १ भुण्ण में श्रीन्द्रिय अपीप्त जान्तेना ३ का भंग को० नं० २१ समान जानना लिड्य रूप प्याप्ति य च च प्र प्याप्ति य च च स्थार भ्र
रन्र ) न्० २३		एक जीव के नाना समय में	. <b>.</b>	१ १ भंग १ भंग ७ का भंग
( १६४ कोष्टक नं		एक जीव के नाना समय में	>-	8 १ भग १ मा भग १ भग ७ का भंग
चौतीस स्थान दर्शन	पयसि	नाना जीवों की श्रपेदा	æ	र विस्थात्व मुर्सा स्थान १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
चौतीस	क्र स्यान सामान्य ग्रालाप		~	१ गुरा स्थान २ मिथ्यात्व, सासादन २ जीव समास २ शन्दिय पर्याप्त श्रपः १ मन पर्याप्ति घटाकर (५) मन-कर्षा-चसु इन्द्रिय प्रारा घटाकर शेप (७)

१ भंग ४ का भंग

> १से २२ मुरा॰ में ४ का मंग पर्याप्तवत्

१ मंग ४ या भंग

१ भंग ४ का भंग

> १ते गुरा० में ४ का भंग को० नं० १७ के

थ्र संज्ञा को० नं० १ देखो

६ मति

समान जानना

१ले २२ मुरा० में १ तियंच गति

में १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	चौतीस स्थान दर्शन   २	<u> स्थान</u> ३	कोष्टक नम्बर	नम्बर् २३	us	श्रीन्द्रिय	<b>u</b> ;
१ मीह्य जाति । १ मि १ मि १ १ १ मि १ भि १ १ मि १ भि १ १ मि १ भि १ १ मि १ मे १ मे १ मे १ मे १ मे १ मे १	~	१ ले मुस्सं में	~	~	१से २२ गुसा० में	~	~
्ते गुस्काप्प १ भ्रमकाप्प १ भ्रमकापप्प १ भ्रमकापप्प १ भ्रमकाप्प १ भ्रमकापप्प १ भ्रमक्पप १ भ्रमकापप्प १ भ्रमक्पप १ भ्रमकापप्प १ भ्रमक्पप वर्षन वर्षन वर्षन वर्षन वर्षन १ भ्रमकापप्प भ्रमकापप्प १ भ्रमकापप्प १ भ्रमकापप्प १ भ्रमकापप्प १ भ्रमकापप्प १ भ्रमकापप्प भ्रमकापप्प १ भ्रमकापप्प भ्रमक्पप्प भ्रमकापप्प भ्रमकापप्	~	१ शिन्द्रिय जाति १ले गुरा० मे	~	~	१ शिन्द्रिय जाति १ले २२ गुरा० में	~	~
श्री० कार्ययोग १  ग्रानुभय वचन योग वचन योग १  ग्रानुभय वचन योग वचन योग वचन योग वचन योग वचन योग योग वचन योग योग वचन योग वचन योग योग योग वचन योग योग योग वचन योग	बो ४	< यसकाय २ २ ने गुरा ० मे		२ के भंगों में से कोई १ योग	्र चसकाय ् श्रौ० मिश्र काययोग १	洪	
से दे जानता को० नं० १७  से समान जानता  श्ले रहे गुण्ण में  श्ले पुण्ण में  श्ले पुण्ण में  श्ले गुण्ण में  श्ले गुण में  श्ले		औं काययोग १ यनुभय वचन योग १		जानना	~	मंस	作品
१ ले गुएए० में १ ले १ ले १ दे गुएए० में १ ते मुक्त ने १ के मिर	-	, <u>.</u> 2			१-२ के भंग १से २२ मुख्य में	,	1 .
रते गुण्डमं १ भंग २३ सारे भंग १ भंग २३ का मंग पर्याप्तवत् स्पात ज्ञान भंग कोठ नं० १७ के कोठ नं० १९ के भंग १ काम २३ का भंग पर्याप्तवत् पर्याप्तवत् स्पात ज्ञानमा २२ का भंग २३ का भंग पर्याप्तवत् पर्याप्तवत् निर्मा २२ का भंग पर्याप्तवत् निर्मा १२ का भंग १२ का भंग १२ का भंग १२ का भंग ३ का भंग कोठ नं० १७ के भंग मंग ३ का भंग कोठ नं० १७ के भंग कोई १ केव्या ३ का भंग कोठ नं० १७	~	१ले मुसाँ में १ नपुंसक वे द	~~ 		का० न० २१ द्वा १ते २२ मुरा० मे ४ माम्म भैर	~	. ~
२२ का भंग की० नं० १७ के २ का भंग २ के भंगों में ते १ ते २२ गुराए० में २ का भंग वर्षातवत् जानना १ के भंगों में ते १ ते २२ गुराए० में १ १ भंग १ १ में १ १ १ १ १ में १ १ में १ १ में १ १ १ १ १ में १ १ १ १ में १ १ १ १ १ में १ १ १ १ में १ १ १ १ १ में १ १ १ १ १ १ में १ १ १ १ १ में १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	२३ देखो	३ पुरा० में को० नं० १७ ननम	सारे निह		्रे तुर्भात्त्र प्र १ ले २२ मुख्य में २३ का मंग पर्याप्तवत्	सारे भंग ७-८-६ में भंग पर्यासवत्	<ul><li>भंग</li><li>७ से भंगों</li><li>में से कोई १</li></ul>
रिले गुण्ण में १ १ १२ २२ गुण्ण में १ १ अस्यम १ अस्यम १ १ अन्यस्य दर्शन १ १ अन्यस्य दर्शन १ १ अन्यस्य दर्शन १ १ भंग १ ले गुण्ण में १ भंग १ ले गुण्ण में १ भंग १ १ भंग १ भंग १ १ भंग १ १ भंग १ १ भंग १ भंग १ १ भंग १ भंग १ भंग १ १ भंग १ १ भंग १ १ भंग १ १ भंग १ भंग १ भंग १ १ भं	क्ष्युंच र		म ४	१ ज्ञान २ के मंगों में से कोई १ ज्ञान	२ १ते २रे गुर्या० मै २ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग २ का भंग	भग जानना १ ज्ञान २ के मंगों में से कोई १ ज्ञान
१ ते गुएए॰ में १ १ १ १ १ १ गुए॰ में १ १ अस्थम १ १ अम्बस दर्शन १ अम्बस दर्शन १ अम्बस दर्शन १ अम्बस दर्शन १ मंग १ तेर्या ३ के मंग में से १ ते २१ गुएए॰ में ३ का मंग कोई १ तेर्या ३ का मंग को० नं० १७ के	~	१ले मुसा॰ में १ असंग्रम	~`	~	२रे मुरा	•	जानना १
र संग १ लेख्या है संग १ संग १ संग १ संग है संग है है संग में से १ से २१ मुरा० में इका मंग है शिख्या है सामा कोठ नं० १७ के	~	१ते गुराः १ सनस् दर्शन	~	~	१ असयम १ने २२ गुरा० में १ समस्य दर्शन	~	~
समान जानन	त्या	है १ते गुरा० में ३ का मंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का मंग	१ नेव्या ३ के मंग में से कोई १ नेक्या	्र जन्तु प्रता ३ १ते २२ मुरा० में का मंग को० नं०	~   <del> </del>	१ लेख्या ३ के मंगों में से बोर्ड १ लेख्या

	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	( १वध स्रोधिक	{ ಇಅ } ಗ್ರಾಗ್ತ್ರ ರಿಸ			त्रीस्टिय
طالاا	त रथान दरान	on lab	al oli chi			
e e	m	>>	<b>న</b>	υν	9	u ·
१६ मन्यत्व भन्य, ग्रभध्य	२ १ले मुसा० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ मंग दो में से कोई १ ज्रदस्या जान त	२ के भंगों में से कोई १	२ २-१ के भंग १के गुरा० में २ का मग पर्याप्तवत् २२ ग्रा० में	१ मंग २-१ के मंगों में से कोई १ मंग	१ भंग के भंगों में से २-१ के भंगों मेंसे १ भंग कोई १ अवस्था
१७ सम्पन्तव मिथ्यात्व, सामादन	१ १ले गुरा० में मिथ्य त्व जानना	<b>~</b>	~	१ भव्य ही जानना १-१ कि मंग १ले गुएए० में १९ मिथ्यात्व जानना १२ मुएए० में	१ -१ भग १-१ के मंगों में से कोई १ भग	१ भंग के मंगों में से १-१ के भंगों में १ भंग सम्महत्व
१ द मंत्री हस्याहारक १६ प्राहारक साहारक, अनाहारक	१ते गुरा० में १ असंजी जानना १व्हें गुरा० में याहारक जानना	~ ~	~ .	<ul> <li>श्री गुरा॰ में</li> <li>श्री गुरा॰ में</li> <li>श्री श्री भेग</li> <li>श्री २२ गुरा॰ में</li> <li>श्री वग्रह गित में अना- हारक जानना</li> <li>श्रीहारक जानना</li> </ul>	१ २ दोनों जानता	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्या
२० उपयोग को० नं० २२ देखो	ड १ले गुरा० में ३ का मंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग - ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में मे कोई १ उपयोग	३ का भंग १ने २२े गुरा० में ३ का भंग पर्योतवत्	३ के भंग भंग	१ उपःभा ३ के भंगों में से कोई १ उपयोग
२१ ज्यान कोऽ नंऽ १२ देखो	ृश्ले गुसा ०में द का भूग को० नं० १७ के ममान जानना	द का भग	१ व्यान द के भंगीं में से कोई १ व्यान जानना	१ने २२ मुसा० में द का भंग पर्याप्तवत्	द का मंग	१ स्यान = के मंगों में से कोई १ ध्यान

4	चौतीस स्थान दर्शन	भ्राम	( १ <sup>दद</sup> कोष्ट्रक मं	_ C	· ·		नीटिया
	x 1.11. \ 1811			- 1	·		איווי
~	۲	m,	<b>&gt;</b>	*	υ <del>ν</del>	و 	<b>I</b> S
			-		,		
२२ माश्रव	~ ×	W m	सारे भंग	१ भंग	co m	र सारे भंग	१ भंग
को० नं० भूषा म	रेर के ४०	कार्मास काययोग १ गौर फिअ समामोम १			ग्री० काययोग १		•
क्रियाह	की जगह है जोडकर	ये २ घटाकर (३६)	१ले मसा० में	११ से १ पत्र	यनुमय वानाया। र् ये २ वहाक्तर (३६)	१ से गमा० में	99 H 9n nm
(हिसक का		१ल गुरा॰ में	१ द तक के	सारे भ	्रले मुरा० में	११ से १८ तक	भ भमी में स
विषय १	१ जोड़कर)	9.		कोई १ भंग	३६ मा भंग	के मंग जानना	कोई १ मंग
४१ जानना		के समान	को० नं० १८ देखो		पर्याप्तवत् जानना	- (	
, -				-	२रे मुंगा में	२२ मुस् भे	१० से १७ तक
		:			३४ का भंग को० नं०		के गंगों में से
			,		१७ के समान जानना	-	कोई १ भंग
1	?		•	•			जानना
र भाव ।	न १५%		१ भग	१ भग	> *	१ भंग	१ मंग
ं भा	न० २१ दखा	,	१७ का भंग	१७ के भगाम स	१ले मुरा॰ में	१७ का भंग	९७ के मंग मं
		১ ১ ১	क्रीं नं १८ के	कोई १ मंग	२४ का भंग को० नं०	पर्याप्तत्रत्	कोई १ भंग
-		समान जानना	समान जानना	जानना	१७ के समान जानना	•	जानना
·			•		२रे मुखः में	भंग को०	१६ में भूमें में
					२२ का भंग को० नं०		नोई १ मंग
		**************************************			१७ के मुजिब जानना		जानना
	-				-		
			÷		-	•	
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·			,			. :
	· · · · · · ·						
				•	•		

. . . . .

, <u>&gt;</u>	प्रवगाहना—लब्ज्य पर्यातक जीव की जवन्य श्रवगाहना क्रनागुर के श्रसंख्यातदे भाग श्रीर उत्कृष्ट श्रवगाहना पिपीलिका (चींटी) ३ कोस तक जानना	
24 OA	बन्ध प्रकृतियां १०६-१०७, को० नं० २१ के समान जानना । उदय प्रकृतियां—१ को० नं० २२ के समान जानना, परन्तु न१ प्रकृतियों में से द्वीन्द्रिय जाति घटाकर त्रीन्द्रिय जाति १ जोड़कर न१ की उदय	
:	जानना । गक्तिमां१४३ को० नं० २२ में समान जानना ।	,
າ ທ	मस्या—प्रसंख्यात लोक प्रमास जानना।	
T W . 6	क्षेत्र—लोक का ग्रसंख्यातवां भाग प्रमाए। जानना । स्वजंत—नाना जीवों की ग्रपेक्षा मारखांतिक समुद्धात ग्रीर विग्रह गति में सबे लोक जानना, एक जीव की ग्रपेक्षा लोक का ग्रसंख्यातवा भाग	
, u	प्रमास जाननाः। सम्ब्र_सना जीवी की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से संस्थात हजार वर्ष तक मरकर निरन्तर त्रीस्त्रिय वन	
٠ ٠	सकता है। सकता है। असंख्यात प्रशस परावर्तन काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो	
ሙ ርታ		
er er er yo	जाति (योगि)—२ लाख योगि जानना । कुल—= लाख कोटि कुल जानना ।	
,	)	

( teo )

,		एक जोव के एक समय में	u .	१ मुख् दो में से	5 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	१ भंग ३.का.मंग	र मंग ६ का मेंग		१ भंग ४ का भंग	~
चतुरिन्द्रिय		/ १ जीव के नाना समय में	9	२ दोनों जानना	~	१ मंग ३ का भंग को०	नं० १७ देखो १ भंग ६ का भंग		१ मंग ४ का भंग	~
म	अपयिति	नाना जीवों की भ्रपेक्षा	us	२ मिण्यात्व, सासादन	१ १ले २रे गुरा० में	१ चतुरिन्द्रिय अपयिषि ३ को० नं० २२ देखो	६ वचनवल, श्वासीच्छवास	ये २ घटाकर (६) १ले :२ मुरा० मे ६ का भंग को० नं०	१७ दला ४ ४ १से २२ गुरा० में ४ का मंग पर्याप्तवत	१ले २रे मुस्स् में
कोष्टक नं० २४		एक जीव के एक समय में	24	•	•	१ भंग ४ का भंग	१ भंग न का भंग	-	१ भंग ४ का भंग	~
क्रीक	hre'	एक जीव के नाना समय में	>	••	~	१ भंग ५ का भंग	१ भंग द का भंग		१ भंग ४ का भंग	~
गि	पयिष	नाना जीव की अपेक्षा	m	१ मिष्यात्व गुसा०	१ १ले मुस्स् भे			द का भेष को० न <b>० १७</b> के समान जानना	४ ले गुरा० में ४ का मंग कोई न० १७	क समान जानता १ ने गुराउ मे
चीतीस स्थान दर्शन	सामान्य ग्रालाप		~	र सासादन	न् अप॰	पयापि मनपर्यापि घटाकर (४)	प्रास्त कर्षा मन घटाकर, (८)		१ देखो ४	~
चौतीर	फ्र स्थान		~	१ गुण स्थान मिष्यात्व, सासादन	२ जीवसमास र चतुरिन्द्रिय प० श्रप०	३ पर्याप्ति मनपर्यापि	४ प्रारा कर्णं मन		५ मजा को० नं० १ देखी	مر 11

₩ ₩ .

_
१ भंग
को० न० देखो
-
•
24
१ भंग
४ का भंग

चतुरि-द्रय	វេ	१ ध्यान द के मंग में से कोई १ ध्यान	१ भंग	११ से १० तक के मंगों में से कोई १ मंग जानना	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भग जानना १ भंग		१६ क भगा म से कोई१ भंग जानना
मिं	9	१ भंग न का भंग	सारे भंग	१ले गुएए० में ११ से १८ तक के भंग जानना	१० ये १७ तक के भंग जानना १ भंग	९७ का भंग को० नं० १ न देखो	१६ का भग का० नं० १८ देखो
कोष्टक नं० २४	Ú3°	न १ले २रे गुर्सा० में न का भंग को० नं० १७	के समान ४० मौदारिककाय योग १	अनुभय बचन याग १ ये २ घटाकर (४०) १ले गुर्गा० में ४० का भंग को० नं० १७ के समान जानना	२२ मुसा० में ३५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २५	मधि ज्ञान घटा १ हो गुरा॰ में का मंग को॰ के समान जान २२ गुरा॰ में	र्व का भग का० न० १७ के समान जानना
	zi.	१ व्यान द के भेग में से कोई १ ध्यान	१ भंग	११ से १८ तक के मंग में से कोई १ मंग जानना	% भंग	१७ के भंग में से कोई १ भंग जानना	
कोष्टक	>>	१ भंग द का भग	सारे भंग	१ले मुर्गा० में ११ से १ द तक के भंग जानना	<b>%</b> भंग	ts t= &	
चौतीस स्थान दर्शन	m	द १ले गुरा० में दक्ता मंग को० नं० १७ के	समान जानना ४० कामश्यिकाय योग १	अ।० । मश्र कार्य यां। १ ये २ घटाकर (४०) १ले मुर्या० में ४० का भग को० नं० १७ के समग्त जानता	~; ~	रते मुग्गु० में २५ का मंग को० नं० १७ के समान जानना	
	د 	२१ घ्यान को० नं० २१ देखो	२२ ब्रासब को० नं० २३ के ४१	क मंग में आवरत हे की जगह १० जोड़कर (हिंस : का चक्षुरिन्दिय विषय १ जोड़कर) ४२ जानना	२३ भाव	नं॰ २१ के भंगों में चक्र नोड़ नर् राजना	

प्रवगाहना—तब्ध्य पर्याप्तक जीवों की जवन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवां भाग श्रीर उत्कृष्ट अवगाहना भ्रमर की एक योजन तक जानना

२५ बंध प्रकृतियां—१०६ श्रौर १०७ को० नं० २१ के समान ज.नना।

उदय प्रकृतियां—- ६१ को० नं० २२ के ६१ में से त्रीन्द्रिय जाति १ पटाकर चतुरिन्द्रिय जाति १ जोड़कर ६१ की उदय जानना

) सस्य प्रकृतियां—१४५–१४३, को० नं० २१ के समान जानना ।

न संख्या--- असंख्यात लोक प्रमास् जानना ।

.६ क्षेत्र—लोक का श्रसंख्यातवां भाग प्रमास्य जानना ।

• स्पर्शन-को० नं० २३ के समान जानना।

काल—नाना जीवों की श्रपेक्षा सर्वलोक जानना एक जीव की श्रपेक्षा क्षुद्रभव से संख्यात हजार वर्ष तक जानना ।

**थ्रन्तर—**नाना जीवों की श्रपेक्षा अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्**गल परावतेन काल तक यि** मोक्ष नहीं हो तो इसके बाद चतुरिन्द्रिय में ही जन्म लेना पड़ता है।

३३ जाति (गोनि)—-२ लाख योनि जानना।

४ कुल--७ लाख कोटिकुल जानना।

<u>کر</u>
W ~
_

चौतीस स्थान दर्शन	भेष्टिक र	१६५ ) न न ० २५		श्रसंजी पंचेन्द्रिय	चेन्द्रिय
पयक्ति			अपयि	· · ·	
नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के नाना समय में	नाना जीवों की ऋषेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
m· ·	>	3,	U3°	,	'n
१ मिथ्यात्व गुरा स्थान	~	~	् मिष्ट्यात्व, सासादन	२ दोनों जानना.	१ मुरा दो में से कोई
१ १ले मुराए में	w	۰۰	१ १ १ १ १ मन्तुर स	•	१ मुखा १
यसंश्री प्रयप्ति जानना १ १ले गुर्सा० में १ का मंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग १ का भंग	ं १ भंग १ का मंग	ं कं अपनी कं मं॰ २२	१ भंग ३ का भंग	१ मंग ३ का मंग
ह १ले मुरा० में ६ का मंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ८ का भंग	७ मनोबल, बचमबल, श्वासो- च्छवास ये ३ घटाकर ७) १ले २२ गुएा में	१ भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग
४ १ले गुरा० में ४ का मंग को० नं० १७ के समान जान ।	१ भंग ४ का मंग	१ भंग ४ का भंग	७ का मंग को० नं० १७- समान जानना ४ १ते २२ मुस्स० में ४ का भंग पर्यातवत्	१ भंग ४ का भंग	१ भग ४ का भंग
रेले गुए। में प्रियंच गति	· &-		१ले २रे मुरा० में १ तियंत्र गति	•	~

चौतीस स्थान दर्शन	. दर्शन	्रिंदर् ) कोप्टक नम्बर्	नम्बर २५		असंशी पंचेन्द्रिय	चेन्द्रिय
2	m	>>	೫	υy·		u
७ इन्द्रिय जाति	१ ले मुस्रा० में १ मंबेहत्य जामि	′ <b>~</b>	~	१से २२ गुसा० में	۵۰	٠.
द क्षाय १	१ले मुसा० मे	<b>~</b>	~	१ न १९ मुसार्ग्स	o~	~
ट योग ४	,	१ भंग	१ योग	१ त्रसकाय -	१ भग	० योग
कं किं मं कर देखी	१ले मुसा० में	२ का भंग		को० नं० २२ देखो	र भे भंग	१-२ के मंगों में
	र का भग काठ नेट र्ड	- The state of the s	काई १ याम		सं कोई १ भंग	से कोई १ योग
१० नेद		१ भंग	~	m	० भंग	ە ما
को० नं० १ देखो	र १ले मुस्सि में असर भंग स्रोत में शुरू	तीनों वेद जानना	तीनों वेदों में से	१ ते २२ मुसा० में		तीनों वेदों में से
	समान अतिना	`	काइ १ वद जानना	तीना वेद जानना क्रोठ मंत्र १७ के ममान		कहि १ देव
११ कवाय २४	7 7 7	सारे भंग	2 200	10 to	माने भंग	
को० नं० १ देखो	१ले गुरा॰ में	W	७-५-६ से भंगों	१ले २२ मसा० में	१ले २२ मस्त म	יו פ
	२५ का मंग को० नं० १७ के	को० नं० १ प्देखो	में से कोई १ मंग	र्भ का भंग पयिषवित्	७-द-६ में भंग	
	समान जानना					भंग
११ सान समस्य सथ			० आत्म 	٠,		१ जान
NEW INTER	र का भूग को० में० अ	- F - F - V	र क भगाम स	१ले २२ मुस्स में	२ का भंग	र के भंगों में से
	समान		काइ १ सान	र का भग का० न० १७	-	काइः१ जान
१३ संयम	سوجرت من ه	~	~	१२ २२ मुस् ० मे	~	41441 8
अस्यम् अस्यम्	र असपम			१ श्रसंयम		
र व प्रधान सम्बक्ष्य स्थान	त श्ले समा भे			ر ر ر	×	१ वर्शन
الم المراد المرا	२ का भ	<del>-</del>	मिस भगमिस कोई १ ह्यांन	१ल २र मुस्रिं० म	२ का भंग	र के मंगों में से
	समान जानना	,	जानना	י און ארן טרט	:	कार ८ मन
१५ लेख्मा		१ भंग	१ लेखा	m	१ भंग	१ लेख्या
यसुभ नस्या	्रत गुरा० म	३ का भंग	अ के मंग में से	१म २१	मंग	३ के मंगों में से
	त्र का अन्य काठ नठ ८ व		कार्ड १ लेखा	३ का मंग को० नं० १७		कोई १ लेख्या
	ामाम जानग		_	समान जानना		

श्रसंजी पंचेन्द्रिय	lt 9	१ भंग १ त्रविस्था कोई १ भंग जानेना से कोई १ कोई १ भंग जानेना से कोई १ १ भंग १ सम्यक्त्व १-१ के भंगों में से दोनों में से कोई १ भंग कोई १ सम्यक्त्व १ १ १ प्रवस्था	१ भंग १ उपयोग १ कोई १ भंग १ कोई १ भंग जानना १ भंग १ ध्यान १ भंग १ ध्यान १ ध्यान १ भंग १ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान १ भंग १ ध्यान १ १ भंग १ १ १ भंग १ १ १ भंग १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
	υ <del>ν</del>	जिस्सान में बामन में में	काठ नठ ११ दला ४ कोठ नंठ १४ देखो कोठ नंठ १४ देखो ४३ अीठ काययोग १, अनुभय वचनयोग १,
( १६७ ) कोष्टक नं० २४	አ	१ स्रवस्या १ संस्कोई १ स्रवस्या १ १	<ul> <li>१ डपयोग</li> <li>४ के भंग में से कोई १ डपयोग</li> <li>१ ध्यान</li> <li>१ को० नं० २४</li> <li>१ भंग</li> <li>१ भंग</li> </ul>
(	>>	श्र भंग को० नं० २१ देखो १ १	8 भंग ४ का भंग १ भंग को० नं० २४ देखो सारे भंग
दर्शन	m	<ul> <li>१ले गुएए० में</li> <li>२ का भंग को० नं० १७ के समान जानना</li> <li>१ले गुएए० में</li> <li>१ शाहारक हो जानना</li> </ul>	र ले गुर्गा० में  ४ का मंग को० नं० १७ के समान जानना  न को० नं० २४ देखो  ४३  ग्रौ० मिश्रकाय गोग १ कामिश्य काययोग १ ये २
चौतीस स्थान दशैन	8	१६ मध्यत्व २ मब्य, ग्रामध्य १ १ मध्यात्व, सासादन १ ६ माहारक २ ग्राहारक २ ग्राहारक २ ग्राहारक ग्राहारक ग्राहारक	२० डपयोग ४ को०. नं० २४ त्रेद्धो २१ घ्यान = = को० नं० २१ देद्दो २२ मासव ४, मन- इन्द्रिय विषय १ घटा-

असंज्ञी पंचेन्द्रिय	ľ	१९ से १८ तक के भगा में से नोई १ भग १८ तक के भगा में से कोई १ भग जाहे १ भग जाता	१७ के भंग कोई १ भंग जातना १६ के भंग में से कोई १ भंग जातना
असंजी	9	१ते मुसा० में ११ से १८ तक के मंग जानना २२ मुसा० में १० से १७ तक के मंग जानना को० नं० १८ देखी	१७ का भंग को० नं० १८ देखो १६ का भंग को० नं० १८ देखो
,	US-	ये २ घटाकर (४३) १ ते गुए।० में ४३ का भंग पर्याप्तवत् जानना २२ गुए।० में ३८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	२७ १ १७ में १० १० १० के समाम को० नं० १७ के समाम जानना २१ का मंग को० नं० १० के समाम जानना सूचना—लिध अपर्याप्त मनुष्य जोड़कर यहाँ २०-२६ के संग बन जाते हैं।
चौंतीस स्थान दशन	*	११.से १८ तक सारे भंगों में में कोई १ मंग जानना	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
	>	११ से १८ तक के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ का भंग को० नं० १
	u.	घटाकर (८३) १ले गुराए में ४३ का भंग की० नं० १७ के समान	रेखे गुर्धाः में रेख का भग को० नं० १७ समान जानना
	~	कर अविरत ११, कपाय २४, औ० मिश्र काययोग १, औ० काय योग १, अनुभय बचन योग १ मे ४५ आसव जानना सूचना यहाँ तीनों वेद लब्ध्य प्यक्तिक जीवों की अपेक्षा से माने हैं (देखों गी० क० गा॰ ३३०-	२३ भाव २७ कुम्नुत ज्ञान २, दर्शन ५, लिव्य ४, तिर्यंच गति १, क्षाय्य ५, स्त्रांच व्याप्त १, क्षाय्य ५, स्त्रांच व्याप्त १, म्रांचम १, प्रांचित्य १, पारिस्सामिक भाव ३, पारिस्सामिक भाव ३०१ प्रांचित में से होता है इस लिये मनुष्य गति भी जोड़नी चाहिये मराठी गीमट सार कमंकांड पता ३०१ देखो।

u W

3

सुभग १ ब्रादेग १, यशः कीति १, एकेन्द्रिय जाति ४ ये २६ जानना) ये सब ३२ प्र० घटाकर ७ जानना, मराठी गोमट सार कर्म प्रसंप्राप्तामुपाटिक संहनन छोड़कर शेप प्रथम के संहनन ४, हुंडक संस्थान, छोड़कर प्रथम के संस्थान ४, प्रशस्त विद्यायोगति १, (विक्तियक अष्टक ८, त्रयति नरकद्विक २, नरकाषु १, देवद्विक २, देवाषु १, वैक्तियकद्विक २ ये ८ जानना) कांड गाया २६६-२६७-३०१ में तियँच गति मनुष्यगति दोनों लिंब्य पयप्तिक जीव के बताई गई।

मनुष्यद्विक २, मनुष्यायु १, उच्चगोत्र १, नामकर्म प्र० ३२ (आहारकद्विक २, तीर्यंकर प्र० १, सुक्ष्म १, साघारए। १, स्थावर १, लक्क्य पर्याप्तक पंचेन्द्रिय तियंच में-उपयोग्य १२२ प्र॰ में से देनद्विक २, देनायु १, नरकद्विक २, नरकायु १, वैक्सिकादिक २, पहले के संहतन ४, पहले के संस्थान ४, सुभग १, ये ३२) पुरुष वेद, स्त्री वेद १, सत्यानगुष्यादि महानिद्रा ३, सम्यमिषयात्व १, ग्रातप १, एकेन्द्रिय जाति २, परवात १, उच्छवास १, पर्याप्त १, उद्योत १, स्वरद्विक २, विहायोगित २, यवाःकीर्ति १, श्रादेय १, सम्यक् प्रकृति १, ये ५१ घटाकर ७१ प्र॰ का उदय जानना।

सस्व प्रकृतियां—१४७ ग्रसंजी पंचेन्द्रिय तियँच ग्रौर लब्ब्य पर्याप्तक तियँच में तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १४७ प्र० का सत्व जानना

संख्या--श्रसंख्यात लोक प्रमाए जानना।

**क्षेत्र**—सर्वेलोक जानना । स्**यरांन**—सर्वेलोक जानना ।

> o m

काल-कोव्टक नम्बर १७ के समान जानना।

ग्रन्तर—नाना जीवों की श्रपेक्षा श्रन्तर नहीं ।एक जीव की श्रपेक्षा क्षुद्रभव त्रहुएा काल से नो सौ (६००) सागर काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो इसके वाद दुवारा असंशी पंचेन्द्रिय वन सकता है

जाति (योनि)—पंचेन्द्रिय तियंच गति में ४ लाख योनि जानना कुत--पंचेन्द्रिय तिर्यंच में ४३॥ लाख कोटिकुल जानना।

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	∕l <del>s</del>	( २०० ) कोदनक मं			
क्र स्थान् सामान्य	,	,	2		संशीपंचेन्द्रिय जीव में	जीव में
्र आलाप	<b>-</b>	पयाप्त		अपयप्ति		
	नाना जीव की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में		/ १ जीव के नाना	एक जीव वे
2	m	>>	×	υ,	_ _	्रक समय म
मुस् स्थान १४ को० नं० १८ देखो	१४ १ से १४ तक के गुरा। (१) नरकगति में १ से ४ गुरा। जानना	सारे गुरा स्थान सुचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जाउन	8 गुस् अपने अपने स्थान के	१-२-४-६-१३ मुरए० (१) नरक गति मे १-२-४ मुरए० जानना	सारे गुरा सुचना—सपने गाने ग्लान	र भुसा श्रमने अगने
	(२) तियंच गति में १ से ४ गुरा० कर्मभूमी में १ से ४ गुरा० भोगभूमी में (३) मनुष्य गति में १ से १४ गमा है हैं	% अस ४ १ स ४ १ स ४ १ ५ १ , , , , , , , , , , , , , , , , ,	. 3ुंधा के में सं कोई एक मुख-स्थान बानना	(२) तिर्यंच गति में १-२ गुएए कर्मभूमी में १-२-४ गुएए भोगमी में (३) मनुष्य गति में	सारे भंग जानना १-२-४-६-१३ के मुख जातना	स्थान क मुसा० में से कोई १ मुसा० स्थान जानना
,	र ते ४ मुरा० भागभूमी में (४) देव गति में १ से ४ मुरा० जानना कोठ न० १६ देखी	ं ; सभ ८ ०		<ul> <li>१-१-४-१३ गुए।० कर्मभूमी में जानना १-२-४ गुए।० भोगभूमी में (४) देव गति में १-२-४ गुए।० जानना</li> </ul>		
र जीवसमास संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त " , अपर्याप्त ये २ जानना	१ चारों गतियों मं हरेक गति में श्रीर तियंच शौर मनुष्य गति के भोगभूभी में १ संजीपचेन्दिय पयप्ति	१ समास हरेक गति में एक एक सजी पं ० पर्याप्त समास	<ul><li>१ समास</li><li>हरेक गति</li><li>में १ संज्ञी प०</li><li>पर्याप्त समास</li><li>जानना</li></ul>		१ समास हरेक गति में १ संशीपचेन्द्रिय श्रपयति समास	<ul><li>१ समास</li><li>हरेक गति में</li><li>१ संजी पं०</li><li>समास</li></ul>
	यवस्या ज नना को० नं० १६ से १६ देवो			१ संजी पं॰ श्रपयोप्त श्रवस्था जानना	जानना	जानना

	١	1		\$ 50	_	<del> -</del>	,		· <del></del>	ì
तियों सं		រេ	१ मंग ३ का भंग	%; ' <b>±</b> 1	१ भंग श्रपने श्रपने	स्यान के १ भंग जानना	16		१ मंग ज्ञपने क्षपने स्थान-के १ मंग जानना	
संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों		9	१ भंग ३ का भंग	13 2 - 20 2 - 20	सारे भंग सूचना	ज्ञपने स्थान के सारे <sub>न</sub> भंग जानना		<b>T</b>	सारे भंग सुचना-ज्ञपने श्रपने स्थान के १ भंग	
		บร	३ चारों गतियों में हरेक में ३ की भंग की० १६ से	१९ क समान जानता (२) भोग भूमि में तियंच ग्रौर, मनुष्य गति में ३ का भग को० नं० १७-१० के समान	नित्ता है । होता है । ७ (१) नरक, तियंच	देव गति में हरेक में ७ का मंग को० नं० १६-१७-१६ के समान	्रासना (२) मनुष्य गति में ७-२ के भंग को० नं० १८ के समाम जानना	(३) मंग भूमि में तियंब मनुष्य गति में	(१) नरक, तियंच देव गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१६ के तमान	
२०१ ) मः २०६	- 1	*	१ भंग ६ का भंग	*	१ भंग श्रपने श्रपने	स्थान के एक भंग जानना	£	<b>:</b>	१ भंग ग्रपने ग्रपने स्थान के १ भंग जानता	
भ		>>	१ भंग ६ का भंग	# 1	सारे भंग मूचना-श्रपने	ग्रपने, स्थान के सारे भंग जानना		£	सारे भंग सूत्रना-ज्ञपने क्रपते स्थान के सारे भंग जानना	
	נילויו.	m	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६ से	१६ के समान जानना (२) भोग भूमी में तिर्यंच मनुष्य गति में इ. का भंग को० नं० १७-१ द के समान जानना	१० (१) नरक, तिर्यन, देव गति में हरेक में	१० का भेग को० नं० १६- १७-१६ के समान जानना (२) मनत्म गति में	१०-४-१ के मंग कोठ नंठ १८ के ममान १८) भंग भूमि में निर्मेत्र मनाम निर्मे	१० द्या भंग कि नं १७-१८ के समान जानना	४ (१) नरफ, तिर्यंच, देव गति में होक में ४.का भंग को० नं० १६-१७- १६ के समान जानना	
मिन माध्य मिन्	الالالطالة	~	ω· . ,		१० नं० १६ सो	,		to Market Plans and a second	भंगा को० नं० १ देखो	
	٥ اد	~	३ पयापित को नं० १ देखो		४ प्राण् क्षो० नं				५ भंगा को० नं	1

चौंतीस स्थान दर्शन		( २०२ ) कोष्टक नं०	~ o	#V   -	संजी पंचेन्द्रिय जीवों	विर्में में
×	メ		<b>3</b> 4	w	ඉ	ır
(२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-० के भंग	1	₩	प्रपने प्रपने स्थान के मंगों में से कोई ९ मंग	(२) मनुष्य गति में ४-० भेग को० न० १ व	<b>:</b>	पयपित्रवत्
	=			के समान (३) भोग भूमि में तियँच-मनुष्य गति में		*
४ का भंग को० नं० १७-१न के समान जानना	•		o	४ का भग को० नं० १७-१८ के समान जानना ४		· •
र चारों गतियां जानना कोई १ गति	, कोई १	गति	कोई १ गति	बारों गतियां जानना	९ कोई १ गति	कोई १ गति
१ चारों गतियों में हरेक में पचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १६ देखों	ו		~	र पर्याप्तवद् जानना	<b>~</b>	•
१ नारों गतियों में हरेक में १ यमकाय जानना	~	-	~	१ पर्याप्तवत् जानना	~	~
~	~	भंग	१ योग	>>	१ भंग	१ योग
सूचना- स्थान बे	1 (15	पने अपने स् नों में से स	-अपने अपने सू०-अपने अपने त मंगों में से स्थान के भंगों में	कार्मास काययोग १, ग्री०मिश्र काययोग १,	सूचना-पर्याप्तवत्	पयपिवत् जानना
?, कोई Г?,	र्म. <b>४०</b> ७४	१ भंग जानना	से कोई १ योग जानना	वै॰ मिश्र काययोग १ ग्राहारक मिश्रकाययोग १		
य ४ घटाकर (११) (१) मरक गति-तियंच गति- हेबगति में झरेक में		TO STREET, SQUARE, SQU		यं ४ योग जानना (१) नरक-तियँच-देवगति भें त्रकेः भें		· ·.
१ का भंग को० नं० १६-१७- १९ के समान जान ।		***************************************		१-२ के मंग को० नं०१६- १७-१६ के ममान जानना		·
(२) मनुष्य गति में ६-६-१-३-० के भंग को० नं०			oninee Marine (etime	(२) मनुष्य गति में १-२-१-२-१ के मंग को०	,	
१ न के समान जानना				नं० १८ के समात जानना		

_
•
1
m
_
0
0
_
_

	រ	१ वेद पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	
जीवों स		अ तय आ	१ भंग पर्याप्तव जानना	
संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में	୍ର	१ भंग सूचना पर्याप्तवत् जानना	सारे भंग सूचना— पर्याप्तवत् जानना	:
संज्ञी प				
		(३) भोगभूमि से तियंच मनुष्य गरित में १-२ के भंग को० नं० १७-१ के समान जानना ३ १६ देखे १६ देखे १६ देखे १६ देखे १७ देखो १७ देखो १० १० १० से भंग को० नं० १० १० देखो १० १० १० भेग भोग भी भेग भी	१७-१ के भंग को० नं० १७-१ के भंग को० नं० १७-१ के समान जानना २५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तियंच गति में हैं।	जान गति में
	Ü	(३) भोगभूमि से तिर्यं मनुष्य गरित में १-२ के भंग को० नं० १७-१ के समान जानना ३ १६ देखे १६ देखे १६ देखे १९ देखे भंग को० नं० १७ देखो १० देखो १० देखो १८ देखो १८ देखो १८ देखो १८ देखो १८ देखो १८ १८ के भंग को० नं० १८ १८ के भंग को० नं० १८ १८ के भंग को० नं० १८ देखो	१५१ के भंग को० नं० १७-१ के भंग को० नं० १७-१ के समान जानना २५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग को० नं १६ के समान जानना १२ का भंग को० नं०	(६) मनुष्य
,		(3) H-3-6-8-6-8-6-8-6-8-6-8-6-8-6-8-6-8-6-8-6		
w	۶۲	<ul><li>१ वेद</li><li>अपने अपने</li><li>स्थान के भंगों</li><li>में से कोई १</li><li>वेद जातना</li></ul>	<ul><li>श्रमंग</li><li>श्रमंग</li><li>स्थान के मंगों</li><li>मं से कोई</li><li>१ मंग</li></ul>	κ'
मं० २६		<u>अप</u> स्थान नेद	० मं ५ य	
् कोष्टक म	>	१ भंग सुचना—अपने अपने स्थान के भंगों से से कोई १ भंग	सारे भंग सुचना —-श्रपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	
<b>'l</b> &	·	१ भंग सूचना— श्रपने स्था भंगों से से १ भंग	स्त्रचना अपने सा	
y.		प्रवं - :: 3-१ त के 1 देखों 1 के मंग 10 १६	。 (年 (年 (年)	<u>म</u>
		ति ते	क समान जानता २५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग को० ने के समान (२) तिर्यंत्र गति में २४-२५-२१-१७ के भंग	त्र १८ क तमान थानम (३) मनुत्य गति में
	m.	(३)! मोगः भूमि में- मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० समान जानना ३ (१) नरक गति १ का भंग को० नं० (२) तिर्यंच गिरि ३ का भंग को० न० (३) मनुष्य गिरि ३-३-३-१-३-१-९-१- को० नं० १८ (४) देव गति १८) भेगभूमि में मनुष्य गिरि में	के समान जानना २५ (१) नरक गति १६ के भंग को० के समान (२) तिर्यंच गति २५-२१-१७ के	(३) मन
दशन	<del></del>	(3); 43(3); 8 an 8 an 8 an 8 -3-3-6 9 -3-3-6	0, 0, 0, 0, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1,	
चौतीस स्थान दर्शन	~	र देखी र	२ देखो इस	
चौंती	~	बेद को० नं	कताय को० मं०	
-		के विद्र को ०	११ कवाय को० न	

जीवों में	ប	१ ज्ञान पयकिवत् जानना
संज्ञी पंचेरिद्रय उ	9	सारे भंग सूचवा—पर्याप्तवत् जानना
	υ <b>»</b>	२४-१६-१९-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में २४-२४-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (१) भोग भूमि में तियंच गति मनुष्य गतिमें १४-१९ के भंग को० नं० १७-१९ के भंग को० नं० १९ के समान जानना १८) त्रं य ज्ञान १ थे २ घटाकर (६) १९) नरक गति में २२ घटाकर (६) १९) नरक गति में २२ घटाकर (६) १९) तर्य ज्ञान १ थे २ घटाकर (६) १९) नरक गति में २२-३ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (३) मनुष्यगति के २२-३-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २२-३-३ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में
२०४ ) टकं ने० २६	<b>3</b> 4	1)
, २०) कोष्टक	>	सारे भंग सुचना—श्रपने स्थान के सारे जानना
चोतोस स्थान दर्शन	ſſŶ	२५ २१-१७-१३-११-१३-७-६ ५ ५-४-३-२;१-१-० के भंग को० नं० १ द्य के समान जानना (४) देवगति में २४-२०-२३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (१) भोग भूमि में तिर्यंच-मनुष्य गति में २४-२० के भंग को० नं० १६ के समान जानना (१) नरक गति में ३-३ के नंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) सेमा भूमि में जानना (४) देव गति में ३-३-४-१०-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) सोग भूमि में तिर्यंच-मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) भोग भूमि में तिर्यंच-मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १७-१०-१२ के समान
चौतीस	° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °	१२ ज्ञान फुज़ान ३, ज्ञान ४, ये ६ ज्ञान जानना

	, , ,	•	•	,
जीवों में	ឋ	१ संयम पर्यक्तिवत् जानना	१ दर्शन पर्याप्तवत् जानना	
सँजी पंचेन्द्रिय	9	सारे भंग सूचद्रा – प्यप्तिवत् जानना	सारे भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना	
	ns.	२-३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना ४ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, और यथाख्यात ये ४ जनना (१) नरक देव गति में १ का भंग को० नं० १६-१६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मियंच गति में	१-२-१ के भंग कों० नं० १८ के समान जानना (४) भोगभूमी में तिर्यंच मनुष्ठ गति में १ का भंग को० नं० १७- १८ के समान जानना २-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानका २-२ के भंग को० न० १७ के समान जानका १७ के समान जानना १७ के समान जानना	नं १८ के समान जानना
२०१ ) क नं० २६	Ä	संयम श्रपने श्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	
् २०५ कोष्टक नं	>	सारे भंग सूचना—	सारे भंग सूचना — श्रपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	
स्थान दर्शन	m	<ul> <li>(१) नरक देव गति ये</li> <li>१ का मंग ो० नं० १६-१६ के समान</li> <li>(२) तियंच गति में</li> <li>१-१ के मंग को० नं० १७ देखो</li> <li>(२) मनुष्य गति में</li> <li>१-१-३-२-३-२-१-१ के मंग को० नं० १० देखो</li> <li>(४) भोगभूमी में तियंच मनुष्य</li> </ul>	गति में १ का भंग को० नं० १७-१८ समान जानना  ४ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तियंच गति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना १७ के समान जानना १७ के समान जानना १७ के समान जानना १३) मनुष्य गति में	र र र र र ५ क मा भार नंं १८ के समान जानना
चौंतीस	8 2	१३ संयम श्रसंयम, संयमासंयम सामायिक, होदोपस्था- पना, पहिहारिवशुद्धि, मूक्ष्मसंपराय, यथा- ह्यात ये ७ संयम जानना	१४ दर्शन श्रचशुदर्शन, चक्षुदर्शन, श्रवधिदर्शन, केवलदर्शन ये ४ दर्शन जानना	

ने स	1. 1611	ıs	१ सम्प्रक्ति पर्याप्तवत् जानना	१ ग्रवस्था पर्याप्तवत् जानना	
संजी पंचेरिस्य जीवों में	, 5x.11   1131x	g	सारे भंग सूचना-—पर्याप्तवत् जानना	१ भंग सुचना —पर्याप्तवत् जानना	
		U3º	<ul> <li>१ वटाकर (१)</li> <li>१ नरक गति में</li> <li>१ के समान जानगा</li> <li>१ कियंच गति में</li> <li>१ कियंच गति में</li> <li>१ कियंच गति में</li> <li>१ के समान जानगा</li> <li>१ के समान को के समान को के समान को के के समान के समान के समान के के समान के सम</li></ul>	१ के भग को० नं० १६ के समान जुष्य गति में -२ के भंग को० ७-१६ के समान १ नरकदेव गति में गंग को० नं० १६- गंग को० नं० १६- समान जानना । तिर्यंच गति में समान जानना	(र/ मकुष्य गांत म १-० के मंग को० न० १= के समान जानना
२०७ ) मं० २६		24	<ul><li>१ सम्पक्तव</li><li>अपने अपने</li><li>स्थान के भंगों</li><li>में से कोई १</li><li>सम्पक्तव</li><li>जानना</li></ul>	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगां में से कोई १ अवस्था	
भ्राह्म अध्यक्ष		>	सारे भंग सूचना—अपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सुचना—-श्रपने ग्रपने 'थान के मंगों में से कोई १ मंग जानना	
दर्शत		สา	(१) नरक गति में  १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तियंच गति में  १-१-१-२ के भंग को० नं० १७ के समान (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-३-२-३-२-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) देव गति में	ं १६ के समान (५) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में १-१-१-३ के भंग को० नं० १७-१-३ के समान १०-१-३ के समान १०-१ नरक-देव गति में १ का गंग को० नं० १६-१६ के समान जातना (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ के समान	१-० के भंग को० नं० -१८ के समान जानना
न्स्त्रीय स्थान ह	בונוני בוני	۵ -	१७ सम्प्यक्त्व मिष्यात्व, सासादन, सिन्न, उपशमसम्पयक्त्व, स्थायिक, सायोगशम ये ६ सम्पक्त्व जानना	१ द संजी संजी	

$\overline{}$
រេ
. 0
3
$\overline{}$

:

,

चौतीस स्थान दशन	दर्शन	कोष्टक ।	नम्बर २६		संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों	गीवों में
٠	m	≫	*	U9'	<b>9</b>	n
<b>१६</b> याहारक याहारक,'अनाहारक	(४) भोग भूमि में         तियंच-मनुष्य ग         १ का भंग को०         १ का भंग को०         १६ के समान को०         १६ के समान को०         १६ के समान के         १ का भंग को०         १ का भंग को०         समान जानना         समान जानना         (३) मनुष्य गति में	१ भंग आहारक यनस्था	१ मनस्या माहारक मनस्या	(४) भोग भूमि में तिर्विच—मनुष्युश्वाति में १ का भंग को॰ नं॰ १७- १८ के समान जानना २ १९) नरक-देव गति में १-१ के भंग को॰ मं॰ १९९ के भंग को० नं॰ १८ १-१ के भंग को० नं॰ १८ के समान वानना	१ मंग दोनों में से कोई १ अवस्था	१ प्रवस्था कोई १ प्रवस्था
२० डपयोग ज्ञानीपयोग ८, दर्यनोपयोग ४, ये १२ जानना	१-१-१ के भंग को० नं॰ १ द के समन जानना (४) भोग भूमि में तियंच-मनुष्य गति में हरेक में १ द के समान जानना १ का भंग को० नं॰ १७-१ द के भंग को० न॰ १६ के भंग को० न॰ १६ के भंग को० न॰ १७ के समान १९ के समान १९ के समान १९ के समान वीन नं० १६ के समान को० नं० १६ के समान वानना	सारे मंग सुचना—-श्रपने श्रपने स्थान के सारे मंग	१ उपयोग यपने ग्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ उप ोग जानना	१-१-१-१ के मंग को० नं० १८ के समान जानना ४) भोग भूमि में ॥ [तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १७-१ के भंग को नं० १७-१ के भंग को नं० १७-१ के भंग को नं० १०-१ के भंग को० नं० १६ में १० नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना १) तिर्यंच गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना १) तिर्यंच गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	सारे भंग सूचना — पर्याप्तवत् जानना	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना

नीवों भ	u	्र ध्यान पर्याप्तवत जानना
संजी पंचेन्द्रिय जीवों में	9	सारे मंग सुचना— पयोत्तवत् ः
. :	US*	(४) हेव गति में ४-४-६-६ के संग को० नं० १६ के समान (१) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गि में ४-६ के समान १८०-१ के संगान १८०-१ के समान १८०-१ के संगान १८०-१ के संगान वाना (१) नरक गति में ८-६ के संगान जाना (१) निर्यंच गति में ८-६ के संगान जाना (१) मनुष्य गति में ८ को समान जाना (१) मनुष्य गति में ८ को समान जाना (१) मनुष्य गति में ८ को समान जाना (१) मनुष्य गति में ८ के समान जाना (१) मनुष्य गति में ८ के समान जाना (१) ने मनुष्य गति में ८-६ के संगा को० नं० १७ के समान जाना (१) देव गति में ८-६ के संगा को० नं० १६ के समान जानना (४) देव गति में ८-६ के संगान जानना (४) मनुष्य गति में
२०१ ) कोष्टक नं० २६	አ	१ ध्यानं स्थानं अपने स्थानं के सारे भंगों में से कोई १ ध्यान जानना
म म	>>	सारे भंग सूचना — प्रपने प्रपने स्थान के सारे मंग जानना
दर्शन	W.	(१) देव गति में  ५-६-६ के भंग को० नं० १६ के समान जातना (५) भोगभूमी में तियंव  मनुष्य गति में  १-६-६ के भंग को० नं० १६ के समान १९) तयंव गति में  ८-१०-११ के भंग को० नं० १६ के समान १९) तियंव गति में  ८-१०-११ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में  ८-१-१०-११-७-४-१-१-१ के भंग को० नं० १६ के समान जातना (४) देव गति में  ८-१-१० के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) मोग भूमि में तियंव  मनुष्य गति में  ८-१० के भंग को० नं० १६
चौतीस स्थान दर्शन	8	त के दिख्य
न्	~	२१ <i>ध्यान</i> को० नं०

चौंतीस	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं	नं ० २६	· .	सँजी पंचेन्द्रिय	य जीवों में
٤ - ١	m	≫	24'	us <sup>,</sup>	9	វេ
				८-६ के भंग को० नं० १७-१ में समास जासका		,
२२ शास्त्रय ५७	۳۲ عد .	सारे भंग	१ भंग	१८-१५ क्षांता बान्ता	सारे भंग	१ भंग
(१) मिध्यात्म ४,	भौ० मिश्रकाययोग १	सूचनाग्रपने	श्रपने श्रपने	मनोयोग ४,	सूचना —पर्याप्तवत्	प्यप्तिवत्
(संशय, विनय, विपरात, एकांत. ग्रजान ये ४)	वर मिश्र काययोग १, ऋा० मिश्र काययोग १	प्रपने स्थान के सारे भंग जानना	यान के भंगों में में कोई १	वचनयोग ४, ग्रीट स्त्रामोग ०	ं जानना	जानना
(२) मविरत १२,	÷ _	को० नं० १ द देखो	संयम जानम् (	वै० काययोग १,		
(हिसक ६, हिस्य ६	(४३)			भ्राहारक काययोग १.		
को० नं० १८ में देखो	(१) नरक गति में	११ से १ न तक के		मे ११ घटाकर (४६)		
(३) मत्त्राय २५	४६-४४ ४० क भग ्रा॰	% ७ तक		(१) नरक गति में	११ से १८ तक के	कोई १ मंग
(का नं १ म द्रला)	न० १६ क समान	ह सं १६ तक क	;	४२-३३ के भंग को० नं०	ह से १६ "	. ~
(डपर के योग स्थान	(२) तियंच गति में	१९ से १८ तक भे	•	१६ के समान जानना (२) सिगंच मित्र में	निना	:
मं ० ६ देखी)	११-४६-४२-३७ के भंग	ຸ້ ອຸ		४x-३६ के भंग को० न०	१९ स ९व तक क	
में ५७ श्रास्तव जानता	•••			१७ के समान जानना	भंग जानम	:
	जानना .		•	(३) मनुष्य गति में	११ में १८ तह	
	;			88-38-33-82-		
	(३) मनुष्य गति में	<b>~</b>		मं०	ह से १६ तक के भंग	
	-38-25-02-26-38-38	° %		१८ के समान जानना	१-६-७ में भंग	:
	-08-88-83-85-88-80-	हसं ९६ े	,	· .	१ का भंग	•
	८-४-२-० क भग	तसं १४			११ से १८ तकके भंग	
	का० न० १८ समात्र	५-६-७ क भग	<b>s</b> :	-95-52-55-52	१० से १७	•
		३-२ क धम	*	३३-३३ के भंग को० नं०	ह से १६	:
			१ भंग	१६ के समान जानना		
	(४) देवगति में	(०) का भग	कोई १ भंग	ायंच	११ से १८ तकके मंग	: :
	-02-22-32-22-0x	१० से १७ तक के	11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11	त्रार महुव्य गात म ४३-३८-३३ असे स्रो	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	
	८०- के भंग		22	नं ०-१७-१ व में समातः	₽ ₩	
-	·· को० नं० १६ समान	भंग जानना				***************************************
	जानना .			-	***	• ,

		•		
中	ឋ		<ul> <li>भग पर्याप्तवत् जानना</li> <li>भग</li> <li>भग</li> <li>१७-१७ के हर्षक भग में से कोई</li> </ul>	१७-१६ के हरेक भंग से पे कोई १-१ भंग १-१ भंग १-१ भंग १०-१९-१७- मंग १७-१९-१७- भंग से कोई भंग १७-१९-१७ के भंग १७-१९-१७ के
संजी पंचेल्दिय जीवों मे	9		सारे भंग सुचना—— पयिपवित् जानना सारे भंग १७-१७ के भंग जानना	१७-१६ के भेग जानना सारे भंग १७-१६-१७-१ १४ के भूग जान सारे भंग नानना
संज		w	्रह कुमवधि ज्ञान १, मनः प्यंय ज्ञान १, उपराम चारित्र १, संयमा-संयम बारित्र वे ४ घटाकर (४६)	१६ क समान २७-२५ के भंग को० =० १७ सनान जानना (३) मनुष्य गति में ३०-२६३०-२७-१४ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) देव गति में २६-२४-२६-२६ २६-२४-२६-२६ से भंग को० १६ समान जानना
	,	2	,, ,, ,, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	मंग १७–१६–१६–१७–१७–१७ के हरेक १७ के मंग जानना अग में से कोई (२ वा) नं १९ के संग जानना अग में से कोई (२ सारे मंग १७–१६–१६–१७–१७–१९–१६–१६–१८– १०–१६–१६–१९–१७–१७–१७–१९–(३ ४–१५–१५–१४–१४–१९–१९–१९–१९–१८–१८–१६–१८–१८–१८–१८–१८–१८–१८–१८–१८–१८–१८–१८–१८–
····(···)······(···)·······	काष्ट्रक प	>	११ से १६ तक के १० , १० से १७ , १० से १७ , १० संग जानमा सचना — अपने अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० १६ – १७ के भंग जानना को० न० १६ ने स्थान को	सारे भंग १७०-१६-१७-१७ १७ के भंग जानना । भंग १७ के भंग जानना । भंग सारे भंग जानना । १८-१५-१६-१६-१८-१९-१८-१९-१८-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-
The state of the s	1	<b>L</b> 3.	(४) भोग भूमि में-तियँचगति में श्रीर मनुष्य गति में ५०-४५-४९ के भंग को॰ नं॰ १७-१८ के समान जानता १३३ समान १३३ नरक गति में २६-२४-२८-२७ के भंग को॰ नं॰ १६ के समान	(२) तियंच गति में ३१-२६-३०-३२-२६ के द्यां० नं० १७ के समान ३१-२१-३०-३१-२१-२ ३१-२१-२१-२१-२१-२ २६-२१-२१-२१-२१-२ २३-२१-२१-२१-१ १३ के भंग कों० नं० के समान जानना २५-२३-२१-२६-१४-१ २५-२३-२१-२६-१४-१ २५-२३-२१-२६-१४-१
	चौतीस स्थान दशीन	~		वर्षन, थापिक सम्प- बत्व, सापिक चारिय, बाम, दापिक भोप, बापिक उपभोग, यापिक वीमें में ६ जानना (३) झवोगयम (मिश्र) भाव १८, कुमसि-कुश्रीत- कुम्रविन (विमंग) से ३ जुजान, मिन-जुत-प्रनिध-मनः पर्येष आन से ४ जान प्रवित्त-प्रनिक्त-भूगेन बान-जाभ-भोग-उपभोग दान-जाभ-भोग-उपभीग दान-जाभ-भोग-उपभीग वान-जाभ

मः <u>च</u> ्	- E	१७-१६-१७ में हरेक मंग में से कोई १-१ मंग जानमा
संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों	9	सारे भंग १७-१६-१७ के भंग जानना
	usr	(४) भोग भूमि में २४-२२-२५- के भंग को• नं० १७-१ के समान हरेक में जानना
~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~	<i>x</i>	१ भंग १७ के हरेक भंग भंसे कोई १-१ भंग जानता
( २१२ कोष्टक नं	>-	सारे भंग १७-१६-१७ के भंग जानना को० नं० १ = देखो
रशेन	m·	(५) भोग भूमि में २७-२५-२६ के भंग को० १७-१ के समान हरेक में जानना
चौंतीस स्थान दश्नेन	er .	= मारित्र देश पम) में भाव २१ ध्य-देव प दिया हिया निना नाना भाव
वि	~	सस्पक्त्व, सराग (सराग संचम), संचम (संचमातंत्र) १८ जानना (४) श्रीदारिक : नरक-तियंच-मनुष्ठ नर्षे के भाति, नपुंसक-स्त्री-पुष्ठ्य (वेद) ये ३ वेद, फोध-मान-माया-वे ये ४ कपाय, मि दश्न (मिथ्यात्व) फ़ुफ्त्य-नील-कापी। पद्म-शुक्ल ये ६ हे श्रमसंगम, श्रजान, द्धल, ये २१ श्री भाव जानना (१) जीवत्व, भव श्रमञ्चत्व ये ३ स्तामक भाव जात् इस प्रकार ५३ भ

मक्षणाहना---लब्घ्य पर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के मसंस्यातवे भाग जानना मीर उत्कृष्ट मवगाहना एक हजार

(१०००) योजन की स्वयंभूरमण समुद्र के महामत्स्य की जानना ।

इंच प्रकृतियां—१२० वंधयोग्य प्रकृतियां—१२० जानना इनमें से—

१०१ प्र० नरकगति में को० नं० १६ देखो। ११७ प्र० तिर्यंच गति में को० नं० १७ देखो। १२० प्र० मनुष्य गित में को० नं० १८ देखों। १०४ प्र० देनगति में को० नं० १६ देखों।

वंधयोग्य १२० प्रकृतियों का विवर्षा निम्न प्रकार जानना--

वंद्ययोग्य १२० प्रकृतिया की विवरसा निम्न प्रकार जानगा—— ज्ञानावरसाीय ४, मित-श्रुत-ग्रवधि-मन: पर्यय-केवल ज्ञानावरसाीय ये ४ जानना ।

(२) दर्शनावरएापि ६, श्रचक्षुदर्शन १, चक्षुदर्शन १, श्रवधिदर्शन १, केवलदर्शन १, निद्रा १, प्रचला १, निद्रानिद्रा १, प्रचला-प्रचला १, स्त्यानग्रद्धि १ ये ६ जानना ।

(३) वेदनीय २, सातावेदनीय १, श्रमातावेदनीय १ ये २ जानना ।

वरित्रमोहनीय के २४ इनमें कपाय १६ – (१) क्रनंतानुबंधी—कोध-मान-माया-लोभ, (२) क्रप्रत्याख्यान—कोध-माम-माया-लोभ, (४) मोहनीय १६, दर्शन मोहनीय के १, मिथ्यादर्शन जानना।

हास्य-रति-स्ररतिा-शोक-भय-जुगुप्सा ये ६ जानना । श्रौर नपुंसक वेद १, स्त्री वेद १, पुरुषवेद १ ये ३ वेद जानना । इस प्रकार चरित्र मोहनीय के १६ 🕂 ६ == २५ जानना । (३) प्रत्याख्यान--कोध-मान-माया-लोभ, (४) संज्वलन--कोध-मान-माया-लोभ, ये १६ कषाय जानना और नवनोकपाय-

(४) आयुक्तमं ४, नरकायु १, तियं बायु १, मनुष्यायु १, देवायु १ ये ४ जानना ।

(६) नामकर्म ६७।

(ग्र) गति नामकमे ४ – नरकगति, तियं चगति, मनुष्यगति, देवगति ये ४ जानना ।

(ग्रा) जाति नामकमे ५ — एकेन्द्रिय, द्यीन्द्रिय, यीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचोन्द्रिय ये ५ जानना

(इ) शरीर नामकमे ५—न्नीवारिक, वैत्रियिक, त्राहारक, तैजस, कार्माए, ये ५ जानना।

(इ) मंगोषांग ३--मीदारिक, वैफियिक, माहारक, ये ३ जानता।

(उ) निमाणि नामकमे १, (ऊ) संस्थान ६—समचतुरस्नसंस्थान, न्यग्रोवपरिमंडल सं●, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान. वामन-संस्यान, हुंडकस्यान, ये ६ संस्यान जानना ।

(ए) संहत्तन ६—वञ्जवूपमाराच संहत्तन, वञ्जनाराच संहत्तन, नाराच संहत्तन, अर्थनाराच संहत्तन, कीलक संहत्तन, मसंप्राप्ता मुपाटिका संइतन ये 🕻 संहतन जानना ।

(ए) स्पन्नं, रस, गंध, वर्णं, वे ४ जानता।

(मो) मानुपूर्ती ४—नरकगत्यानुपूर्वी, तियैनगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यापुपूर्वा, देवगत्यानुपूर्वी मे ४ जानना ।

- (यौ) यगुरुलंघु, उपधात, परघात, उच्छवास ये चार जानना ।
- स्थावर १, सुभग १, दर्भग १, आस्थर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, दुःस्वर १, आदेय १, अनादेव १, यशःकीति १, अयशःकीति १, पर्याप्त १, अपर्याप्त १, तीर्यंकर प्र० १ ये २५ जानना । इस प्रकार ये सब मिलकर ४ + ५ + ५ + १ (क) ग्रातप १, उद्योत १, ग्रप्रशस्त्रविहायोगति १, प्रशस्तविहायोगति १, प्रत्येक १, साधारसा १, बादर १, सूक्ष्म १, त्रस १, 十を十を十४十४十 44 = ६७ जानना 1
- . , , , , , , , , . . . (=) अंतरायकर्म ५—दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, ये ५ जानना । (७) गोत्रकर्म २—-उच्चगोत्र १ नीचगोत्र १, ये २ गोत्र ज नना ।

इस प्रकार ५ + ६ + २ + २६ + ४ + ३७ + २ + १ = १२० वंध प्रकृतियां जानना ।

- १०२ प्र० मनुष्य गति में जानना को० नं० १८ देखों। ७७ प्र० देव ।ति में जानना को० नं० १६ देखों। उदय प्रकृतियां---७६ प्र॰ नरकगति में जानना को॰ नं॰ १६ देखो । १०७ प्र॰ तिर्यंच गति में जानना को॰ नं॰ १७ देखो
  - सत्य प्रकृतियां—१४८ में से १४७ नरकगति में जानना को० नं० १६ देखो। १४५ तियँ व गति में जानना को० नं० १७ देखो 2
    - १४८ मनुष्य गति में जानना को० नं० १८ देखों। १४७ देवगति में जानना को० नं० १६ देखों। संख्या--- असंख्यात लोक प्रमासा जाननः।
- भेत्र—विग्रह गति में श्रौर नारसान्तिक समुद्दात को अपेक्षा श्रौर केवलीलोकपु ँ समुद्दात में सर्वलोक जानना। यसनाडी की अपेक्षा लोक का प्रसंख्यातवा भाग जानना। १३ वे गुरा स्थान में∞प्रदर केवलसमुद्धात श्रवस्था में अमंख्यात लोक प्रमासा≅क्षेत्र जानना।
- न राजु। जब १६वे स्वर्ग का देव किसी मित्र जीव को संबोधन के लिये तीसरे नरक तक जाता है उस समय १६ वे स्वर्ग से मध्यलोक स्पर्गन—केवल समुद्यात की ग्रपेक्षा सर्वलोक ग्रौर मारएांतिक समुदुघात की ग्रपेक्षा सर्वलोक जानता । लोक का ग्रर्संख्यांतिवां भाग ग्रर्थात् ६ र.जु स्रीर मध्यलोक मे ३ राज तक दो राजु इस प्रकार द राजु जानना ।
  - দে नाना जीयों की ग्रपेक्षां सर्वकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा क्षुद्रभव से नवसौ (६००) सागर तक काल प्रमास्स जानना ।
- **प्र**न्तर—म.म.जीवों की प्रपेक्षा कोई यन्तर नहीं । एक जीव की प्रपेक्षा क्षुद्रभव से श्रसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो तो इसके बाद सज्ञी पंचेन्द्रिय में दुवारा बन सकता है।
- कुल—१०८।। लाख कोटिकुस जानना, (नारभी २५, देव २६, तियेच ४३।। मनुष्य १४ लाख कोटिकुल ये सब १०८।। लाख कोटिकुस जानना) সংतি (घोनि)—२६ लाख जानना (नम्क गति ४ लाख, ६ेवगति ४ लाख, पंचेन्द्रिय तिर्यंच ४ लाख, मनुष्य १४ लाख, ये २६ लाख जानना) ्रचना --तिर्यंच के ४३॥ लाख कोटिकुल के विशेष घन्तर भेद निम्न प्रकार जनमा।
  - १२॥ लाख कोटिकुल जलचर जीव के जानंग।
- स्यलचर सरीमुपादि जीव के जाननाः । " पेट से चलने वाले जीव के जानना ।

क्र ह्यान नाम मामान्य ग्रालाप १ गुण स्थान २ ८ वाच समास ३ प्यानिस ४ पामा	प्रालाप				
१ मुस्स स्थान जीव समास पर्याप्ति	-	पयस्ति		. :	श्रपय ट 1
१ मुस्स स्थान जीव समास पर्याप्ति		नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव की क्रपेक्षा नाना समय में	एक जीव की मपेक्षा एक ६मय में	
		m	>	×	<b>μ−</b> 6−β
		यतीत गुर्गा स्थान जानना	0	0	
३ पर्याप्ति ४ मस्य		" जोव समास "	0	0	सुचना — यहां भी
		" पर्याप्ति "	o	•	अपयरित अवस्था
	<del></del>	,, प्रास्त	•	ō	नहीं होती है
५ संजा		अपगत संज्ञा "	o	0	, ,
६ मित		गति रहित सबस्या "	0	0	
७ इन्द्रिय जाति	-	इन्दिय ,, ,, ,,	0	0	•
न काय		काय 11 11 11	0	0	
ह योग		योग " " "	٥	0	
१० वेद	·	अपगतबंद ,,,	0	•	
११ कपाय	<del></del>	यक्षाय "	0	0	
१२ ज्ञान	~	१ केवल गान	१ केवल ज्ञान	१ केवल ज्ञान	
१३ संयम		श्रमयम-संयम्।संयम-संयम् ये ३ से रहित	0		
१४ दर्शम	~	१ केवल दर्शन जानना	१ केवल दर्शन	१ केवल दर्शन	
१५ तेरया		श्रलेह 'ा जानना	•	o	
१६ भग्नत्व		भनुभय "	0	•	
१७ सम्याभत्व	~	क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१ धायिक सम्यक्त	१ साधिक सम्पक्त	
१ त संशी		अनुभय जानना	0		ę
१६ माहारक	<del></del>	सनुभय जानना	0	0	
२० उनयोग	~	२ केवल शान-केवल दर्शनोपयोग दोनों युगपत	२ दोनों युगपत जानना	२ यगपत जानना	
२१ ज्यान		ब्यान रहित श्रवस्या जानना	, o		
२२ मासव		मासव ॥ ॥ ॥	0	•	
२६ भाव	<u></u>	सायिक ज्ञान, सायिक दर्शन, सायिक सम्यक्त	४ भाव जानना	४ भाव जानना	
		5 45°			•
		जाबरव, य १० भाव मानत है			

प्रवगाहना ३॥ हाय से ४२४ धनुष तक जानना

बंध प्रकृतियां---श्रवंध जानना ।

उदय प्रकृतियां—अनुदय जानना ।

सरैव प्रकृतियां — ग्रसता जानना संख्या--- अनन्त जानना

मैत्र--४५ लाख योजन सिद्ध शिला जानना।

स्पर्शन--सिद्ध भगवान् स्थित रहते हैं।

काल-सर्वकाल जानना ।

प्रमतर—अन्कर नहीं (सिद्ध अवस्या छुटती नहीं इसिलिये अन्तर नहीं है)

जाति (योनि)—जाति नहीं । कुल कुल नहीं ।

चीतीस स्थान दर्शन

जीव में		१ जीव के एक समय में	II.	 	१ समास २-१मगों में से	कोई १ समास जानना	२ संग ३ सा भंग १ भंग १ भंग	₹ <b>~</b> is	۸.
गुथ्वीकायिक जीव		१ जीव के नाना समय में	9	दोनों जानना		कोई एक समास	१ मन ३ का भंग १ मन ३ का भन	चं ∽	
	श्रपयित	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	U3°	२ मिध्यात्व, सासादन	२ २–१ के भंग को० नं० २१ के समान जाम,ना	३ ३ का भंग की० नंं २१	देखी लटिय रूप ४ पर्याप्ति ३ ३ का मंग को० तं <sub>०</sub> २१	' भ	४का मंग कोंंगं १७ देखो १से १रे गुरा० में १ सियंच गति
न० २५		एक जीव के नाना समय में	<i>⇒</i> ₹	~	१ समास ते में से कोई १ समास	१ मंग ४ का भंग	१ मंग ४ का मंग	१ मंग ४ का भंग	~
कोष्टक न		एक जीव के नाना समय में	>>	· ~	१ समा । दो में से कोई १ समास जानना	१ भंग ४ का मंग	४ मंग ४ का मंग	१ मंग ४ का भंग	~
चौतीस स्थान दर्शन	पयति	नाना जीवों की श्रपेशा	m·	१ सिस्यात्व जानना	् १ले मुस्न मं एकेन्द्रिय सुश्म मयिति बादर	५ ५ थातमा ४ १ले ६स्स् मे	当然人は	४ १लेमुल्युक्ते में ४ का मंग काठ ने १७ देखो	१से मुक्तः में १ तिर्यंच गति जानता
चौतीस स	फ्र स्यान सामान्य मालाप	-	~ ~	१ गुस स्थान मिष्यात्व, सातादन	र जीव समास ४ एकेट्रिय सुक्ष्म पर्याप्त " वादर " " सूक्ष्म अपर्याप्त	ये ४ जातना १ पर्याप्ति मो० नं॰ २१ देखो	४ प्रास् कोठ नंउ २१ देखो	४ संजा को० नंज १ देखो	दं मिति

•	£		بلا الله الله الله		<i>à</i> ∓ .	Cher			<u></u> .
जीवों में	u	~ ~	१ योग १-२ के भंगों में से कोई १ योग	•~	<ul><li>भंग</li><li>७-६-६के भंगों में</li><li>से कोई १ भंग</li><li>जानना</li></ul>	१ ज्ञान दोनों में से कोई	१ अशान १	्र श्लेखाः असंस्काह	तेश्या जानना १ अवस्था १ से २-१ के मंगों में से कोई १ मंग्
पृथ्वीकायिक जीवों	9	~ ~	१ भंग १-२ के मंगों में से कोई १ भंग जानना	~	सारे भंग ७-८-६ के भंग जानना को० नं० १८ देखी	२ दोनों क्रुज्ञान	~ «	न न	१ मंग २-१ के मंगों में से कोई १ मंग
-	, ,	१से २२ मुसा॰ में १ एकेन्द्रिय जाति १से २२ मुसा॰ में १ पथ्वीकाय जानना	२ १-२ के भंग को० नं० २१ के समान	१से २रेगुरा० में १ मपंसक बेट जानना		२ को॰ न॰ २१ के समान	१ते २२ गुरा० में १ श्रसयम जानना १ते २२ गुरा० में	१ अचसु दर्शन ३ को० नं० २१ के समान	२ १-२ के भंग को० नं० २१ के समान
२१६ } टक नं० २६	*	* ~	~	~	१ मंग ७-८-६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ ज्ञान दोनों में से नोई १ कजान	~ ~ 4)	१ लेखा १ में से कोई १	लस्या जानना १ मवस्या दोनों में से कोई १ अवस्या
( २ <b>१</b> न कोष्टक	>>	•~ •	~	~	सारे भंग ७-द-६ के भंग को० नं० १८ देखो	२ दोनों कुज्ञान	~ ~	१ भंग ३ का भंग	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था
चौंतोस स्थान दर्शन	m·	१के गुएए० में १ एकेन्द्रिय जाति ज्ञानना १के गुएए० में १ पृथ्वीकाय जामना	१ १ले गुरा॰ में श्रौ॰ काययोग जानता कां॰ नं॰ १७ देखो	१ले गुर्गा० में १ नपुंसक वेद जानना	२३ १ले पुरा० में २३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	२ १ले गुरा० में २ का मंग को० नं० १७ देखो	ेले गुरा॰ में मसंयम जानना १ले गुरा॰ में	र अपस् दशन ३ को नं० २९३के समान	र १ले गुर्या० में २ का भंग को० नं <b>० १७</b> देखो
चौंतीस	~	य जाति	द्ध्याम कोठ नं० २१ देखो		११ क्षाय स्त्री-पुरुष वेद्य घटाकर (२३)	१२ ज्ञान कुमति-कुश्रुति	१३ सयम १४ वशन १४ वशन	१५ लेख्या को० नं० २१ देखो	१६ भन्यत्व २ मन्य, प्रभन्य

चौंतीस स्थान दर्शन	न दर्शन	( २१६ कोष्टक नं०	२१६ ) क नं० २ <i>व</i>		पृथ्वीकायिक जीवों	तीवों में
8.	m.	<b>&gt;</b>	አ	บรา	9	៤
१७ सम्प्रमत्व , मिय्यात्व, सासादन	२ स्न १ले मुसा० में	~	~	् को० नं० २१ के समान	दोनों सम्पक्त्व दोनों में से कोई १	१ सम्पक्षत होनों में कोई १
रै त मंत्री	~ 0	•	~	जानना १से २२ गुरा० में • नमंत्री जानना	~	स्तरम्ब्द्ध
१६ प्राहारक याहारक अनाहारक	२ १ ४५२। थाना २ १ १९ में १९ में १९० में	~	~	९ अपना थाएगा २ को० नं० २१ के समान	दोनों अवस्था	<ul><li>श्रवस्था</li><li>दोनों में से कोई</li><li>श्रवस्था</li></ul>
२० उपयोग		१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के मंग में से	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ उपयोग पर्याह्म जानना
२१ ध्यान को० नं० २१ देखो	ट नो फो० नं० २१ देखो	१ भेग दका भंग	काइ ९ उपयात १ डयान द के भग में से	न को० नं० २१ के समान	१ भंग पयाितवत् जानना	१ ध्यान पर्याप्तवत् जानना
२२ आस्य को० नं० २१ देखो	३८ खो को० में० २१ के समान	<u> </u>	काइ ९ च्यान १ भंग हे सारे भंगों में से	३७ ३८-३२ के भंग को० १	सारे भंग कों० नं॰ २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ नेयो
२३ भाव को० नं० २१ देखो	४ ते को• नं∘ २१ के समान	सार भग फाइ १ भग १ मंग १ भंग को० नं० २१ देखो की <b>०नं० २</b> १ देखो	काइ १ भग १ भंग को <b>०नं० २</b> १ देखो	न० २१ क समान २४ २४-२२ के मंग को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	्रसा १ मंग को• नं० २१ ३खो
	paga apagus and short distribute to					• •
i ga maga kang kang kang kang kang kang kang k	National and Association					

भ्रषगाहना – लब्स्य पर्याप्तक जीव की जघन्य भ्रवगाहना घनांगुल के श्रसंच्यातवें भाग प्रमार्ग जानना श्रौर उरक्वब्ट भ्रवगाहना (उपलब्स मही **प्रन्तर—**नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा क्षुद्रभव से ग्रसंहाय पुद्**गल (परावर्तनकाल में यदि मोक्ष नहीं** फ ल —नाना जीवों की भ्रपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की भ्रपेक्षा क्षुद्रभव से ग्रसंख्यात लोक प्रमास्। जानना । उदय प्रकृतियां - ७६ को० नं० २१ के ८० में से साधारसा १ घटाकर ७६ प्र॰ का उदय जानना हो तो दुवारा पृथ्वी काय जीव वनना पड़ता है)। सध्य प्रकृति गं -- १४५-१४३ को० नं० २१ के समान जानना वंच प्रष्टतियां—१०६–१०७ को० नं० २१ के समान जानना । षाति योनि) — ७ लाख पृथ्वीकाय योनि जानना । संख्या---असंख्यात लोक प्रमास् जानना स्पर्यत—सर्वलोक जानना। हो सकी)। क्षेत्र—सर्वलोक जानना رم ک

फ़ुल--१२ लाख कोटिफुल जानना

·hr	and statement in the case of t	एक समय में एक समय में	ır	• मः <b>४</b> • मः <b>४</b> • मः <b>४</b>	गां ९ पुरा १ समाप्त कों० नं० २१ हेखो	१ भंग ३ का भंग		१ भंग ४ का भंग	~	٠ م	, die .	को० नं० २१ देखो
जलकायिक जीव में		१ जाव क नाना समय में	<b></b>	् दोनों गुरा	१ समास को० नं० २१ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का मंग	१ भग ४ का मंग	e .	o~ 6v.	१ भंग	को० नं० २१ देखो
नं	<b>अपर्याप्त</b>	नाना जीबों की भ्रपेक्षा	~ 133°	२ मिथ्यात्व, सासाःन	२ २-१ के भंग को० नं० २१ के समान		३ को० नं० २१ के समान	४ को० नं० २१ के समान	१ले २२ गुरा० में १ तिथन गति	दल २८ गुरी म १ एमेन्द्रिय जाति १से २२ मता १	१ जलकाय जानना २	को नं  २१ के समान
क्त नं० २६		एक जाव क एक समय में	<b>2</b> 4	~	१क समास को० नं० २१ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भग ४ का भंग	१ भग	۵۰ ۵	· ~	• ~	
कोष्टक	<b>k</b> c'	एक जाव क नाना समय मे	×	~	१ समास को० नं० २१ देखो	१ भंग ४ का भंग		₩ ₩	~ (	~ ~	· ~	,
र्शन	पयपि	नाना जीव की श्रपेक्षा	m	१ १ मिथ्यात्व जान ।।	२ को० नं० ५१ के सम:न	ू ४ को० नं० २१ के समान	४ को० नं० २१ के समान	४ को० नं० २१ के समान	१से गुरा॰ में १ तियंच गति १३ ——	्ल गुल् । १ गर्केन्द्रिय जाति १से मसा० में	्र अत्यक्ताय १ १	१ले मुराए में १ प्री० का० योग को० नं० १७ को देखो
चोतीस स्थान दर्शन	क्ष्यान सामान्य		۲	१ मुस् स्थान २ मिय्यात्व, सासादन	२ जीवसमास को० नं० २१ देखो	३ पर्याप्ति ४ को० नं० २१ देखो	प्रास् को० नं० २१ देखो	४ सजा को० नं० २१ देखो	द गांत १	त क्षाप्त कारत १	ह योग अ	नं० २१ देखो

许		-	र भंग को० नं० २१	द्खा १ साम को० नं० २१	मू क्षेत्र ५	. ~	१ लेख्या को० नं० २	देखां १ अवस्था को० नं० २१	देखी १ सम्पर्कत्व को० नं० २१	بر مرابع	र यनस्या दो में में कोई १	अवस्था १ उपयोग को० नं० २१ ६७ो	
जलकायिक जीव	9	~	सारे मंग को० नं० २१	देखा १ भंग को० नं० २१	क्ला ~	~	१ रंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० १ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो	~	२ दोनों ज्ञवस्या	१ मंग को० नंः २१ देखो	
	us	१ले २२ मुसा० में	र मंत्रु सम बद २३ को० नं० २१ के समान	२ को० न० २१ के समान	१ले २२ मुसा॰ में	१ ससयम १ले २रे गुण् भे		२ को० नं० २१ के समान	् को० नं० २१ के समान	१ले २२ मुसा० में १ ग्रमंत्री जानना	ने कोउनंउ २१ के ममान	ते को भंग २१ के सणाता	
१ ) नं० २६	*	2	१ भंग को० नं० २१	द्वा १ ज्ञान को० नं० २१	₩ ₩ ₩	~	१ लेख्या को० नं० २१	रख। १ अवस्या को० नं० २१	<u> </u>	~	~	१ उपयोग को॰ नं॰ २१ देखो	
( १२२ कोष्टक न	>	~	क्तारे भंग को० नं० २१ देखो	१ मंग को० नं० २१ देखो	~	~	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ मंग हो० नं० २१ देखो	~	~	o.	१ मंग को० नं० २१ देखो	
चौंतीस स्थान दर्शन	ሙ	१ले गुर्गा० में १ सपंगक्त केट जराज्या	र उर्ज प्रयामा २३ को० न० २१ के समान	२ को० नं० <sup>5</sup> १ के समान	१ले मुराउ में	९ यस्यम् १के मुख्य में अस्तान्यस्य	९ अचनुदर्शत ३ को० नं० २१ के समान	े को० नं० २१ के समान	१ १ले गुरा० में १ भिष्याध्य जानन	्रते गुग्र में १ले गुग्र में १ त्रसंभी जात्म	१ १ले पुग् भे १ साहारक जानना	े को० नं० २१ के समान	
चौंतीस स	c ~	१० वेद	१ कपाय को० नं० २१ देखो	१२ ज्ञान को० नं० २१ देखो	१३ संयम १	१४ दर्शन १	१५ लेख्य श्रग्रुभलेख्या	१६ भव्यत्य को० नं० २१ देखो	१७ सम्ययत्व र मिण्यात्व, सासादन		१८ बाहोर्क याहारक, ब्रनाहारक	२० उपयोग को० नं॰ २१ देवो	

冲	u -	ह ध्यान को० नं० २१ देखो १ भग को० नं० २१ देखो, १ भंग भो० नं० २१ देखो
जलकायिक जीव में	9	<ul> <li>भंग</li> <li>को० नं० २१</li> <li>देखो</li> <li>सारे भंग</li> <li>को० नं० २१</li> <li>देखो</li> <li>नो० नं० २१</li> <li>देखो</li> </ul>
	UP	. ह को० नं० २१ के समान को० नं० २१ के समान २४-२२ २४-२२ के भंग को० नं० २१ के समान
कोष्टक नं० २६	አ	१ ध्यान को० नं० २१ देखो १ भंग को० नं० २१ देखो १ भंग को० नं० २१
कोष्टक	<b>&gt;</b>	<ul> <li>शंग</li> <li>को० नं० २१</li> <li>देखो</li> <li>को० नं० -१</li> <li>देखो</li> <li>शंग</li> <li>को० नं० २१</li> <li>देखो</li> </ul>
र्शन	· &	को० नं० २१ के समान ३६ को० नं० २१ के समान २४ को० नं० २१ के समान
चौतीस स्थान दशन	۲	११ देखो ३ देखो ११ देखो २४
नींती	۵٠	२१ ध्यान को० नं० २१ देखो २२ ग्रान्नव को० नं० २१ देखो २३ भाव २३ भाव २४

ग्रमगाहना—लब्ब्य पर्याप्तक जीव की जवन्य ग्रवगाहना घनांगुल केग्रसंच्यातवें भाग प्रमास्स जनना ग्र**ीर उत्कृष्ट भवगाहना (**जपलब्ध न हो सकी)≀

ध्वय प्रकृतियां—७५ को० न० २८ के ७९ प्र० में से म्रातप १ घटाकर ७८ प्र० का उदय जानना वंत प्रमृतियां--१०६-१०७ को० नं० २१ के समान जानना

२७ सत्य प्रकृतियां—१४५–१४३ को० नं० २१ के समान जानना नंद सल्या – ग्रसस्यात लोक प्रमा्या जानना।

६ क्षेत्र- सर्वलोक जानना

० स्पर्शंन - सर्वलोक जानना ।

काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से संस्यात लोक प्रमाण् (काल तक जलकाय जीव ही बनता रहे) क्षन्तर--नाना जीवों की क्रपेक्षर कोई क्रत्तर नहीं । एक जीव की क्षपेक्षा क्षुद्रभव से क्षसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न हो तो ~

दुवारा जलकाय जीव वनना ही पड़े ।

३३ जाति (योनि)—७ लाख योनि जानना।

३४ फुल-७ लाख कोटिकुल जानना।

( २२४ ) कोप्टक नम्बर् ३०

चौतीस स्थान दर्शन	रशीन	कोएटक नम्बर्	नम्बर् ३०		अग्रिकायिक जीव	जीव <b>में</b>
क० स्थान सामान्य ग्रालाप	पर्याप्त				b.K.	भ्रपयिष्त
	नाना जी शें कं प्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के नाना समय न	नाना जीवों ी शरेक्षा	र जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
~	m	>	¥.	Uy	9	n
१ गुगा स्थान १	१. मिध्यात्व मुग्	~	~	१ मिध्यात्व गुग्ग स्थान	~~	~
२ जी। समास नो० न० २१ के समात	ें को० नं० २१ के समान	र समास दो में से कोई १	। १ समात दो में से कोई १		१ समास २ में से कोई १	२ में से कोई १ कोई १ समास
			संमास	२ का भंग एकेन्द्रिय तुरु। े.र बादर अपयिति		
३ पयादित . ४	<b>.</b>	१ भंग	१ भंग	กร	१ भग	े भंग
को० न० २१ देखो	को० नं ० २१ के समान	४ का भंग	४ का भंग	श्वासोच्छवास घटाकर (३)	३ का भंग	
				रल गुराउम ३ का भंगको० नं० १७		-
	נק	१ भंग	१ भंग	T T	१ भंग	१ भंग
भार नं र देखा	को० नं० २१ के समान	४ का भंग	४ का भंग	श्वासोच्छ्वास घटाकर (३)		
				रुले गुरा० म ३ का भंग को० मंः १७		
५ संग	<b>&gt;</b>	१ भंग	। १ भंग	द्व	१ मंग	. १ मंग
को० नं० २१ देखी	फरें० नं० २१ के समान	४ का भंग	४ का भंग			४ का मंग
e de la companya de l			and the second seco	के समान जानना		
र गाय	१ल गुण्ण म १ तियंच गति	~	~	!ले गुग्ग भं १ सियन मित	~	α.
			_			

					त निजानना	en e
१ जनस्या		२ का भग प-मिन्त्	१ यवस्या	म्रोई १	र का मंग यो जन् जिले	
दोनों में से कोई	दो में से कोई ?	१ते गुण् भं	वो मंस कोई	भन्य, स्रभन्त में से	रोते गुरा ॰ में	नजा, माभव्य
१ भवस्या	•	6	१ अवस्था	१ मनस्या	b.	१६ भव्यत्व २
जाननाः		३ का भंग प्याप्तित्रत् जानना	कोई १ लेक्पा		समान बानना	
नोई एक लेखा	३ का भंग	१ले गुरा भं	३ के मंग में से	३ का भंग	रिकामंग को० नं० १७ के	मगुभ लेखा
१ लेख्या	१ मंग	·	१ लेखा	* ***	, 113·	१५ लेख्या ३
•	•	१ अच्छा दर्शन	,	•	१ प्रचंत दर्शन	
0		१ असयम	o	o	१ जसयम • भे गमाः भे	9 × zrita
	÷	१ले मुस्त में	~	~	ं ने गुगुर में	१३ संयम "१
					-	
नवातवत् जानग	4 41	त नुस्ति म	स्मित्र वास		H SING THE COLORS	
१ शान	~	i or	० अति	~	6- 6-	१२ जान
	-	•			समान जानना	
11.15		२३ का भंग पय	में से कोई १ मंग	कोठ मंठ १८ देखो	रश्च का भंग ीठ नं० १७ के	
र मंग	सार भग	m d	१ भंग	सारे मंग	e constant	११ मपाय
		१ मपु सक् वेद		-	१ नपुंसक वेद	-
***	•	१ते गुरा० में	~	~	१ले मुंग् में	१० वेद
वानना	वानना	(一) 中地	•	on and Prov Pro	क्रीं नि १७ में देखों	
में कोई १ योग	कोई १ भंग	कामिंग काययोग ये (२)			१ ग्री० काययोग जानना	
१-२ के भंगों में	१-२ के भंगों में से	म्री० काययोग १ मीर	,	,	१ले मुस्स् में	ा नं  २१ देख
, १ योग	१ भंग	٠ × ١٠٠٥ ١	~		१ आरम्भाय पानमा १	ह योग ३
~	₩	१ले गुरा० में		<b>∞</b> ~	१ले गुरा॰ में	मार्थ
		१ एकेन्द्रिय जाति	•		१ एकेन्द्रिय जाति	
•••	~	१ले मुसा भे	<i>~</i>	~	१ले मुसार में	७ इन्द्रिय जाति १
R	9	יינט	અ	>	na-	۲
क जीवों में	श्राग्नकायिक जीवो		नं० ३०	कोष्टक	चौंतीस स्थान दर्शन	चौंतीस
			५४४ )	<b>6</b> *		
i i						

जीवों में	n	~	~	१ भवस्या दो में से कोई	१ भवस्य। १ उपयोग ३ मे मंगों में से	कोई १ उपयोग १ ध्यान ८ में से कोई		१ मंग पर्याप्तवत् जानभा	
अग्निकायिक जीवों में	<b>9</b>	~	~	दोनों प्रवस्था	र भंग ३ का भंग	१ मंग द का भंग	~	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	
	ω·	१ते गुरा० में	१ तिच्यारव जानना १ले मुसाठ में १ ममंत्री जानना	्र नदशा थाता। २ १ले मुसाँ० में इतेट नंद्र विकास समस्य	रते गुरा॰ में १ले गुरा॰ में ३ का भंग पर्याप्तवत्	<b>े में</b> अस्ति• भूद्य•	ज स	के समान जानना २४ १ते गुरा० में २४ का भंग पर्याप्तवत त्रानना	
२२६ ) कोष्टक नं० ३०	ጽ	~	<b>~</b>	•	श्रु उपयोग ३ के मंग में से	काइ १ उपयात १ ध्यान ८ में से कोई	<ul><li>१ ध्यान</li><li>१ भंग</li><li>सारे भंगों में से</li><li>कोई १ भंग</li></ul>	१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना	
, भाष	>	~	<b>~</b>	~	१ भंग ३ का मंग	१ भंग द का भंग	सारे भंग ११ से १८ तक के सारे भंग	१ भंग १७ का भंग को० नं०१८ देखो	
ર્યાન	m	१से मुरा० में १ मिध्यत्व जानमा		१ १ले गुरा० में १ माहारक	本	त्र	३६ को० नं० २१ के समान	२४ १ले गुएए० में २४ का मंग को० नं० १७ के समान जानना	
चौतीस स्थान दर्शन	5	•	~	प्राहारक ॰ २ माहारक, मनाहारक	३ २१ देखो	मान को० नं० २१ देखो	वृद्ध	२४ ० २१ देखो	
र्वोत	~	१७ सम्यक्त	१८ संजी	१६ श्राहारक प्राहारक,	२० उपयोग को० नं० २१ देखो	२१ ध्यान को० नं	२२ मास्रव को० नं०	२३ भाव को• नं०	

- प्रवगाहना—लब्द्य पर्याप्तक जीव की जघन्य श्रवगाहना घनांगुल के श्रसंस्यातवें भाग प्रमाए। जानना ग्रौर उत्कृष्ट श्रवगाहना (उपलब्ध न हो
- बाघ प्रकृतियां---१०५ वंघयोग्य १२० प्र० में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, मनुष्यद्विक २, मनुष्यायु १, वैन्नियिकद्विक याहारिद्वक २, तीयँकर प्र० १, उच्चगोत्र १ ये १५ घटाकर १०५ प्र० का बंध जानना ।
  - उचय प्रकृतियां--७७ को० नं० २६ के ७८ में से उद्योत १ घटाकर ७७ प्र० का उदय जानना
- सख प्रकृतियां---१४४ को० नं० २८ के १४५ में से नरकायु १ घटाकर १४४ का सत्व जानना ।
- न संख्या—असंख्यात लोक प्रमास् जानना।
- ह क्रेत्र—सर्वेलोक जानना।
- ० स्पर्शन-सर्वेलोक जानना ।
- काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा क्षु द्रमव से असंख्यात लोक प्रमार्श काल तक प्रिमकाय जीव ही वनता रहे
- क्षग्तर—नामा जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से भसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न जा सके तो दुवारा भ्रमिनकाय जीव वनना ही पड़ता है।
  - ३ जाति (योनि)—७ लाख योनि कानना ।
- कुल ३ लाख कोटिकुल जानना ।

( २१८ ) कोष्टक मं० ३१

चौर्त	चौतीस स्थान यर्शन	र्गन	ं कोष	कोप्टक मं० ३१	<b>ত</b>	वायुकायिक जीव में	
स्थान	सम्मान्य ग्रालाप	पर्याप्त	l'A		अपयित		
		नाना जोव की ग्रपेक्षा	एक जीय फ नाना समय से	एक जान क एक समय मे	नाना जीवों की अपेक्षा	् जाव क नाना समय में	एक जीव के एक समय में
	~	is.	>	κ	ug-	9	ប
मुम् स्थान	ान १	१ मिध्यात्व जानग	~	~	१ मिथ्यात्व, गुर्सा स्थान	~	•~
नसमा ७ नं०	२ जीवसमास ४ को० नं० २१ देखो	२ को० नं० २१ के समान	१ समास १ में से कोई १	१ समास २ में से कोई १	२ रले मुसा० में	१ समास पर्याप्तवत्	<b>१</b> समास पर्याप्तवत्
iास्ति ० म्	३ पयांगित कोठ नं० २१ देखो	४ को० नं० २१ के समान	त्तमास् जानना १ भंग ४ का भंग	तमात जानना १ भंग ४ का भंग	1, 1 0 0 0 w w	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्रासा को० मं	४ ४ देखों.	४ को० नं०. २१ के समान	१ मंग ४ का मंग	१ भंग ४ का भंग	३ को० नं• ३० के समान	१ भंग ।	१ भेग १ का भेग
संग्रा स्रोठ सं	मंगा रे	४ को० न० २१ के समान	स ४ 	१ भंग ४ का अंग	म	१ भंग ४ का भंग	१ अंग ४ का मंग
गित	~	्रेले गुर्सा० में १ तिर्यंच गति		ev.	१ले गुरा० में १ ति नि मि	· · ·	
स्य	७ शन्द्रय जाति १	१ते गुरा० में १ ।सेन्दिय जाति	~	~	१ जे मुर्गा० में १ एकेन्द्रिय जाति	6. ·	~
माय		१ले गुरा० में १ वायकाय	~	~	रेले मुस्सं म १ बायकाय जानना	~	<b>~</b>
ह योग मोऽ नं	र १० २१ देखो	१से मुरा० में	~		न् ३० के समान नं० ३० के समान	्रभगता । कोठ नंठ इंखों म	गर १ योग मोठनं० ३७ देखो
		110 wio did					

,	. 1							}	٠,			- 11			: `				~			
本	ij,	~	१ मंग	प्याप्तिवत्   जानना	१ ज्ञान	पथाप्तवत्. जानना	~	· ·		१ लेखा	2年中午年	कोई.१ लेखा	् अवस्या	पयोप्तवत्	لله	;	~ .	। १ जवस्या	म म स कार्ड	अवस्या   १ त्रवयोग	पर्याप्तवत्	
वायुकायिक जीव	ر م	₩ *** *** *** *** *** *** *** *** *** *	सारे भंग	पयोप्तवत् जानना		र मध २ का भंग	<b>~</b> ~		<b>∼</b>	E	३ का भंग	A Control of the Cont	~!	दा म स काइ १	~	c	~	दोनों ग्रवस्यां	The second secon	१ भंग	•	
	ur.	2,4	5 5	कों० नं० ३० के समान	٢	् को० नं० ३० देखो	१ले मुस्सं में	१ असंयम	१ले गुरा० में १ मचस्रकान	5	क्षो० नं० ३० देखो	•	× 1	क्तीं नं ३० देखा		१ मिथ्यात्व जानना	१ल गुणा० म १ समझो	3	को० नं० ३० के समान	m	को० नं० ३० देखी	
६ ) नं० ३१	×		१ भंग	७-ट-२ के भंगों में से कोई १ भंग	जानना	दो में से कोई	्र ज्ञान १		~	१ लेश्या	३ में ते कोई १	लेश्या जानना	१ मुबस्या	दों में से कहिं १	~	•	~			१ :डवमोग	३ में से कोई	१ उपयाम
भू ५४६ कोप्टक न	<b>&gt;</b>			७-द-६ के मंग		१ भग २ का भंग	~	,	~	१ भंग	२ का मंग			दानों में से कोई १	~	i,	a.	~	•	, j	-	
चोंतीस स्थान दर्शन	m	१ले मुख् में	१ नपु सक वेद २३	को० नं० ३• देखो	(	न् को० नं० ३० देखी	, श्ले मुगा० में	१ यसंयम	१ले मुस्स् में	1 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1	को० नं० ३० देखो			को० नं० ३० देखो	१से मुसा० में	१ भिथ्याःव जानना	१ल गुर्गा० म	**************************************	१ले गुरा० में	१ ग्राहारक जानना <sup>3</sup>	को० नं० ३० देखाँ	
चोंतीस स	l.	~	er c	कोठ नंठ २१ देखो		० २१ देखो	~ (*)	•	<b>~</b>	nr	या		w,	३० देला	~	,	e~!	b,	यनाहारक	, n	२१ देखो	,
	~	१० वेद	११ कनाघ	क्तोंक न	,	१२ जान को० नं०	१३ संयम	· ·	१४ दर्शन	१५ लेक्या	श्रयुभलेश्या	,	१६ भन्मत्व	मो० नं	१७ सम्पद्ध	•	१ व स्वा	१६ ग्राहारक	ज्याहोरक, यनाहारक	Tune . c	को० नं० २१ देखी	

			0 2 3 0	40 )			
नीं भी	चौंतीस स्थान दर्शन	र्थान	कोष्टक	कोष्टक नं० ३१		नायुकायिक जीवों	विं में
~	٠	m	>	న	us-	9	វេ
२१ ध्यान	ıs	ឋ	} rin	१ ध्यान	l.	1	9 CHT3
मी भ	को० नं० २१ देखो	को० नं० ३० के समान	न का भंग	त में से कोई १	को० नं० २१ देखो	८ मन प का भंग	त में से कोई
6	c						१ ध्यान
र्रभाजव	מי מי	( ) ( )	सारे भंग	~ भंग	9 8	48-	१ भंग
के िक	न० २१ दला	का० न० २१ के समान	45	सार मंगों में से	को० नं० ३० के समान		मारे मंग्रेस स
1			सारे भंग	कोई भंग			कोई १ मंग
रत्र माब	<u>व</u>	<i>,</i> , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	१ भंग	१ भंग	200	१ भंग	१ भंग
ने ।	न० २१ देखा	को • नं १० देखो	१७ का भंग	१७ के मंगों में से	को० नं० ३० देखो	11	१७ म मनीम स
!			' को  नं  १ द देखो	ै भंग		•	कोई १ गंग

**सब**णाहुना—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य सवगाहुना घनांगुल के असंस्पातवां भाग प्रमाए। जा∙ना मीर उल्कुब्द मनगाहुना (उपकार म हो सकी)। 3

बंध प्रकृतियां--१०५ को० नं । ३० के समान जानना ।

उबस प्रकृतियां – ७७

सत्य प्रकृतियां —१४४

संस्था--- प्रसंख्यात लोक प्रमाण् जानना

भेत्र-सर्वलोक जानना

स्पर्धत-सर्वलोक जानना।

नाना जीवों की श्रपेक्षा कोई मन्तर नहीं । एक जीव की मपेक्षा क्षुद्रभव से मसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न हो सके क ल – नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की मपेक्षा क्षुद्रभव से असंस्यात लोक प्रमास्स कान तक वायुकाय जीव ही बनता रहे । पन्तर

तो दुवारा वायुकाय जीव वनना ही पड़ता है।

जाति (योनि)—७ लाख योनि जानना। मुल--७ लाख कोटिकुत जानना ( २३१ ) कोप्टक नम्बर ३२

चौंतीस स्थान दर्शन	र्थान	कोत्टक	नम्बर ३२		वनस्पतिकायिक जीव	गिव में
क स्थान सामान्य मालाप	पयप्ति			•	भ्रपयप्ति	Ţ
	नाना जीवों के श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	। १ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
8 2	m·	>	, x	٠٠٠٠	9	u
१ गुरा स्थान मिथ्यात्व, सासादन	१ मिध्यात्व गुर्सा०	~	~	२ मिथ्यात्व सासादन	् २ दोनों जानना	१ २ में से कोई १
२ जीव समास ४ मो० नं० २१ देखो	'२ को० नं∙ २१ के समान	समास कोई १ स॰		२ को० नं० २१ के समान	१ समास को० न० २१ देखो	१ स मोज्नं ९ २
रे पयाप्ति मो० नं० २१ देखो	४ को० नं० २१ के समान	४ भा ४ का भंग	१ भग ४ का भंग	ने को० नं० २१ के समान	1-	-
४ प्रास्त भो० नं० २१ देखो	े को० नं० २१ के समान	४ का भंग	<ul><li>بنا</li><li>ها بنا</li></ul>	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	्र भग ३ का भंग
५ संजा	<b>X</b>	~	· ~	<b>&gt;</b>	~	~
को० नं० २१ देखो	को० नं७ २१ के समान १ले गगा० में	४ का भंग १	४ का भंग १	को० नं० २१ के समान १ले रेगसा० में	४ का भग १	ं ४ का मग <b>~</b>
. (	१ तियँच गति जानना	•	•	१ तियैच गति जानना	,	
७ ६न्द्रिय जाति १	१ले मुसाँ० में १ एकेन्टिय जाति	~	~	१से २रे गुरा० में   १ एकेन्द्रिय जाति	~	~
द काय	रैले गुरा॰ में	~	~		۵.	~
ह योग ३	१ वनस्पति काप १	۵	۰.	१ वनस्पात काय २	र भंग	१ भंग
को० नं० २१ देखो	१ले मुस् भ	•	•	को० नं० २१ के समान	٠.	4
१० मेद	भ्रो० काययोग जानना १ले गुरा० में	•	۰~	: मुर्गा० में	का० न० २१ देखा १	कार्ठन् २ <b>१ र</b> खा १
	१ नपुंसक वेद जानना			] १ नपुंसक वेद जानना		

										•
तिवों में	lt.	१ भंग पयसिवत्	१ जान २ में से कोई १	<b>~</b> ; <sup>5</sup>	~	१ लेखा २ में से कोई १	१ श्रवस्था पर्माप्तवत्	१ सम्यक्त्व को० न० २१	देखो { १ १ अवस्था सो० न० २१	देखो १ उपयोग ३ में से कोई १ १ व्यान = में से कोई १
वनस्पतिकायिक जीवों में	<b>9</b>	सारे भंग पर्यप्तिवत् जानना	१ भग २ का भंग	~.	~	१ भंग ३ का भंग	१ अवस्था पर्याप्तिवत्	१ भग को० न० २१ देखो	१ दोनों ग्रवस्या को० न० २१ देखो	भग अभग अभ अभग
		२३ को० न० २१ के समान	े को० नं० २१ के समान	१ले २२ मुरा॰ में १ असयम जानना	१ले २२ मुस्रा॰ में १ समस्र स्थान	्रा पुरस्ता ३ को० नं० <sup>ट</sup> १ के समान	२ को० नं० २१ के समान	् को० नं० २१ के समात <sup>्</sup> व	१ले २२ मुस्सर्भ १ ससनी जानना २ को० न० २१ के समान कि	३ को० नं० २१ के समान को० नं० २१ के समान
कोष्टक नं ० ३२	<b>ઝ</b>	१ भंग सारे भंगों में से	20 × 4 × 4 × 4 × 4 × 4 × 4 × 4 × 4 × 4 ×	<b>~</b> ~ □	~	% लेख्या अ में से	भाइ ९ १ अवस्था दो में से कोई १	~	• •	१ उपयोग ३ में से कोई १ ि १ घ्यान ५ में से कोई १
ं कोर	>	सारे भंग ७-5-६ के भंग	१ भंग <b>२</b> का भंग	~	<b>~</b> -	१ भंग ३ का भंग	१ अवस्या भग्ग ग्रमन्य मे से कोई एक	जातना १	~ ~	१ भंग ३ का भंग १ भंग ६ का भंग
चौंतीस स्थान दर्शन	m <sup>-</sup>	. २३ · को० नं० २१ के समान	२ को० नं० २१ देखो	१ले मुस्सर में १ मस्यम जानना	१ले गुरा० में १ यचक्ष दर्शन	३ . को नं २१ के समान	ने २ को० नं० २१ के समान	१ १ले मुसा० में १ भिष्यात्व जानता	१ले गुरा० में १ शसी जानना १ १ १ पुरा० में १ साराउस माराउस	
चौंतीस	0.	२३ २१ देखो	२१ देखो	~	~	इ अस्ता	यस्व कोऽ नं० २१ देखो	३ २१ देखो -	१ ११ देवो	३ २१-देवो ५ २१ देवो
,	8	११ कपाय को० नं	<b>१</b> २ ज्ञान को० नं०	१३ संयम	१४ दशन	१५ लेख्या प्रशुभ लेख्या	१६ भव्यस्व कोऽ नं	१७ सम्पक्त को० न०	<b>१</b>	२० जनवीम को० मं० १ ामः बो० मं

चातास स्थान दशन	दशन	!	क्रांट्क न० ३२	वनस	वनस्पातकायिक जीव	म
۲ ک	e é	>>	5Y	υ <del>ν</del>	<b>9</b>	r —
२२ प्रामन ३६ मो० नं० २१ देखो २३ भाव २४ को० नं० २१ देखो	३६ को० नं० २१ के समान २४ को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० नं० - १ देखो १ भंग को० नं० २१ देखो	१ मंग को० नं० २१ देखो १ मंग को० नं० २१ देखो	३७ को० न० २१ के समान २४ को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० न० २१ देखो १ भंग को० न० २१	<ul> <li>क्षेत्र</li> <li>क्षेत्र</li> <li>क्षेत्र</li> <li>क्षेत्र</li> <li>क्षेत्र</li> <li>क्षेत्र</li> </ul>
	-	,				

स्रयगाहिमा — लब्द्य पर्यातक जीव की जवन्य अवगाहिना घनागुल के असंच्यातवें भाग से लेकर उत्कृष्ट अवगाहिना एक हजार (१०००) योजन तक (कमल की) जानना

्रंच प्रकृतियां—्१०६—१०७ को० नं० २१ के समान जानना।

ददय प्रकृतियां—७६ को० न० उँ के समान जानना।

सस्य प्रष्टितियां — १४५–१४३ को० नं० २१ के समान जानना ।

न सम्पा-प्रमन्तानन्त जानना ।

क्षेत्र – सर्वलोक जानना

काल—नाना गीवों की ग्रपेद्या सर्वकाल जानना । एक जीव सादिमिथ्या इन्टि की ग्रपेद्या क्षुद्रभव से ग्रसंब्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोज न जाय तो निरन्तर वनस्पतिकाय ही बनता रहे)।

क्रन्तर—नामा जीवों की क्रपेक्टर क्रहों। एक जीव की क्रपेक्षा क्षुद्रभव से क्रसंख्यात लोक प्रमास काल तक यदि मोक्ष न जाय तो

दुवारा वनस्पति होना ही पड़े। काति (गोनि)—१० नाख जानना।

इल-१न नाम नोटिनुन जामना

<u> </u>
238
_

चौतीस स	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं०	, इड़ ०		त्रसकायिक जीव	नीव में
क्र स्थान सामान्य ग्रालाप	पयिति			अपर्याप्त		
	नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना   एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
or	ar	×	<b>×</b>	V3°	9	u
१ गुर्पा स्थान १४ को० न० १८ देखो	१४ चारों गति में १ से १४ तक के मुरा० को० नं० २६ के समान जामना	ग्रपने ग्रपने स्थान को सारे गुर्गा स्थान को० नं० २६ देखो	% गुरा को० न० २६ के समान	४ चारों गति में को० नं० २६ के समान जा ना	प्रपने प्रपने स्थार, के सारे गुर्गा स्थान को० नं० २६ देखो	१ मुसा को० नं० २६ देखो
र जीय समास १० एकेन्द्रिय सुक्ष्म पर्याप्त , सुक्ष्म प्रपर्याप्त ,, वादर पर्याप्त ,, ,, प्रपर्याप्त ये ४ वटाकर शेप (१०)	४ पर्याप्त श्रवस्था १ संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त श्रवस्था चारों गतियों में हरेफ में को॰ न॰ २६ देखों	<ul><li>१ समास</li><li>१-४ में से कोई</li><li>१ जीव समास</li><li>जानना</li></ul>	१ समास १-४ में से कोई १ जीव- समास जानना	्र अपर्याप्त अवस्था चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० २६ देखी	१ मास १-४ में से कोई १ जीव समास जानना	१ समास १-४ में से कोई १ जीव- समास जानना
भा• न० १ दहा ३ पर्याप्ति भो• नं• १ देहो	४ शेष जीव समास तियंच गति में जानना को० नं० १७ देखी ६ नारों गतियों में हरेक में ६ का मंग को० नं० २६ समान जानना १ का मंग तियंच गति में द्यीन्द्रिय से असंजी पेचेन्द्रिय	१ भंग ६-५ के भंगों में से कोई १ भंग	<ul> <li>भंग</li> <li>६-५ के मंगी</li> <li>में से कोई १</li> <li>मंग</li> </ul>	तियंच गति में भे शेष जीव-समास जानना को॰ नं॰ १७ देखों ३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग को॰ नं॰ २६ के समान जानना लिड्य रूप ६ भीर ५	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
	तक मन पयाप्त घटाकर ५ का मंग जानना को० नं० १७ देखी					

चींतीस स्थान दर्शन	( २३% कोष्टक नं०	_ er er		त्रसक्तायिक जीवों में	में में
m·	>> 	×	Ų.	9	
१० चारों गतियों में हरेक में	बार्	१ भंग श्रपने श्रपने स्थान	७ चारों गतियों में हरेक में	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
१० का भग कां० न० के समान जानग	र६ क १० काभंग को०नं०	<del> &amp;</del>	<b>Y</b>	מענה	· ;
मनुष्य गांत म ४–१ के भंग को० नं०	१८ यव	- - - - - - - - -	मनुष्य गात म		-
देखो तियँच गति में	सारे भंग		देखो तियंच गति में	"	2
६-ट-७-६ के भंग को० नं० १७ के समान	म		७-६-४-४ के भंग को० नं० १७ देखो		
, , ,		१ भंग	, o	सारे भंग	१ भंग
चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६	में वारों गतियों में-हरेकमें अपने अपने स्थान से १९ ४ का मंग को० के भंगें में से	 अपने अपने स्थान के भंगों में मे	चारों गतियों में हरेक में ४ का मंग को० नं० २६	पयोप्तवत् जानना	रयोप्तवत् जानना
के समान जानना	नं र र देखो		के समान जानना	:	
मनुष्य गति में	अपने अपने स्थान के		मनुष्य गति में	:	:
कोह मं० १ व के समान	मिनि तार भर जानन		(०) का मंग काउन ५ ५५ देखो		
तियंच गति में	2		तियंच गति में	7.	**
४ का भंग इंगिन्स से	4		४ का भंग प्रमाधकत जातका		
असूत्रा पुत्रान्द्रय तक क में ४ का भंग जानगर को			141043 41111		
१७ क सनान जानना ४	० मनि	। १ मनि	>>	१ गति	१ गति
चारों गति जानना	४ में से कोई १ गति	नोई १ मति	चारों गतियां जानना	४ में से कोई १ गति	कोई १ गति
; > ;	्र जाति	् जाति	3 3 4 7	१ जाति	१ जाति
च.रो मनियों में हर्रक में के मंदिर मंत्रितिया जानि	४ प स काइ १	४ म स काइ १	नारा गासवा म हरक म १ मंत्री पंचेरित्य जाति	'विस्थित जानमा	नवातवतं जानना
The steep of the state			पर्याप्तवत जानना		
क्षितंत्र मित्र में			तिरंच गति मं		
			४ जाति पर्याप्तवत् जानना		

जीवों स	- [	~	१ योग १-२-१-२-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना	१ वेद पर्याप्तवत् जानना	
त्रसकायिक उ	9	~	१ भंग १-२-१-२-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ भंग पर्याप्तत्रत् जानना	
	w	१ पयांप्तवत् जानना	४ वारों गतियों में हरेक में १-२ के भंग को० नं० २६ के समान मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं०	< क समान तियंच गति में १-२ के भंग ३ () नरक गति में १ नधुंसक वेद को० नं० १६ के समान (२) तियंच गति में	नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-१-१-० के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देनगति में १-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना
( २३६ ) दश्न	*	~	१ योग ६-६-१-३-०-२ के भंगों में से कोई १ योग जानना		
	>>	~	१ भंग ६-६-१-१-३-०-२ के मंगों में से कोई १ मंग जानना	१ भंग यपने अपने स्थान के अपने अपने स्थान भंगों में से कोई १ मंगों में से कोई भंग जानना	
	uř	४ द्यक्टिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय श्रसंजी पचेन्द्रिय ये ४ जातियां जानना १ चारों गतियों में हरेक मे १ त्रसकाय जानना	<ul> <li>११</li> <li>चारों गितयों में-हरेक में</li> <li>६ का भंग को० नं० २६</li> <li>के समान जानना</li> <li>मनुष्य गति में</li> <li>१-६-४-३-० के भंग</li> <li>को० नं० १८ के समान</li> </ul>	तियंग गति में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना ३ (१) नरक गति में १ नपुंसक देद को० नं० १६ के समान जानना (२) तियंच गति में ३-१-३ के भंग	को० नं० १७ के समान (३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-२-१-० के भंग को०नं० १६ के समान जानना (४) डेवगति
चौतीस स्थान दश्तन	8	≪	१५ नं॰ २६ देखो	को० नं० १ देखो	
ं चौर	~	हें ह	ह योग को० नं	<b>१</b> ० येद मो	

न जीव में		१ संयम पयोप्तवत् जानना
त्रसकायिक जीव	9	सारे मंग
	w	(२) तियंच गति में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में २-३-३-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) सेगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (१) भोग भूमि में २-३ के भंग को०नं० १७- १६ के समान जानना ११) नरक व देव गति के ४ संयम जानना (१) नरक व देव गति के १ का भंग को० नं० १६- १ के समान जानना (१) तियंच गति में १ का भंग को० नं० १९ १ का भंग को० नं० १९ के समान जानना (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १९ १ का भंग को० नं० १९ १ के समान जानना (१) भोग भूमि में १ के समान जानना (४) भोग भूमि में
न ) नं० ३३	*	<ul><li>१ संयम</li><li>श्रयम</li><li>के सार भंगों में</li><li>से कोई १</li><li>.</li></ul>
, २३६ कोष्टक न	>	सारे भंग १ संयम् प्रपने अपने स्थान के श्रपने अपने स्थान सारे भंग जानना के सार भंगों में से कोई १
चोंतीस स्थान दर्शन	m	(३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४ १ के भंग को० नं० १ द के समान जानना (४) देवनाति में ३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जनना (५) भोग भूमि में ३-३ के भंग को० नं० १७-१ द के भंग को० नं० १७-१ द वेदो (१) नरक गति में देव गति में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १० १० १० देखो (३) मनुष्य गति में १० १० १० से भंग को० नं० १० १० १० १० १० १० १० १० १० भोग भूमि में १० भाग भूमि में १० भोग भूमि में १० में १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०
चौंतीस	~	१३ तंयम को० मं० २६ देखो

नीवों में	r	१ दर्शन पर्याप्तवत् जानना १ लेश्या पर्याप्तवत् जानना
त्रसकाधिक जीवों में	9	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना , १ भंग पर्याप्तवत् जानना
	υy	११) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तियंच गति में १-२-२ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मचुष्य गति २-३-३-१ के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में २-३-३ के भंग को०नं० १६ के समान जानना (१) नरक गति में ३ का भंग को०नं० १६ के समान जानना (१) नरक गति में ३ के समान जानना (२) तियंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (२) सचुष्य गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (२) सचुष्य गति में
कोष्टक नं० ३३	· 54	
भे	>	सारे भंग पने अपने स्थान के भूग पने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ मंग जानना
दर्शन	m	<ul> <li>१) नरक गति में</li> <li>२-३ के भंग को०नं० १६ के सगान जानना</li> <li>१) तिर्यंच गति में</li> <li>१-२३-३ के भंग को० नं० १०-२-३-३-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना</li> <li>१) मनुष्य गति में</li> <li>२-३-३-३-१ के भंग को० नं० १८ समान जानना</li> <li>१) भोग भूमि में</li> <li>२-३ के भंग को० नं० १८ देव गति में</li> <li>१८ के समान जानना</li> <li>१० हे समान जानना</li> </ul>
चौतीस स्थान दर्शन	~	र्था १६ देखो स्या को० नं० २६ देखो
वाः	~	१४ दर्शन को० नं॰ १४ लेख्या को० नं

		\ \ \	( ०,८ )			? ?
् बौंतीस	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं०	नं० ३३	·	त्रसकायि	त्रसकायिक जॉवों में
٤	m	۶	೫	IJν	<b>9</b>	វេ
	(५) भोगभूमि में १३ का मंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			(४) भोगभूमि में १ का मंग को० नं० १७- १८ के समान जानना		
१६ भव्यत्व भव्य, सभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ ते १६ के समान जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोंडे १	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १६ के समान	१ भंग । पर्याप्तवत् जानना	१ श्रवस्था पर्यप्तिवत् जानना
१७ सम् पत्व को० नं० २६ देखी	(१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग कोठ नं १६ के समान (१) तियंच नित में १-१-१-२ के भंग तो० नं १७ के समान (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-२-२-२ के भंग को० नं १८ के समान जानना (४) देनगति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं १८ के समान जानना (४) मेंगगभूमि में १-१-१-३ के भंग को० नं १८-१-३ के भंग को० नं १८-१-३ के भंग को० नं	मारे भंग अपने प्रपने स्थान के सारे भंग जानना		प्रभाग प्रमुक्त प्रिक्त प्रमुक्त मिल्न प्रमुक्त प्रमुक्त मिल्न प्रमुक्त	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ सम्यक्त्व पर्याप्तवत् जानना
१= संगी संगी, श्रमंत्री	२ । (१) नरक व देव गति में	१ भंग अपने अपने स्थान	१ श्रवस्था श्रपने ग्रपने	जानना २ (१) नरक व देवगति में	१ मंग पयोप्तवच् जानना प	१ प्रवस्या पर्याप्तयत् अननाा

		الالالالالالالالالالالالالالالالالالال				1
चौंतीस स्यान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	न् अञ्		नसकायिक ज	जीवां मं
01	m	>>	አ		න	ប
	१ का भंग को० नं० १६-	के मंगों में से कोई	स्थान के भंगों में	१ का भंग को०नं ० १६-		
	=	१ भंग जानना	से कोई १ ज्ञवस्या	१६ के समान		
	(२) तियन गांत म			१-१-१-१-१ के भंग को		,
				नं० १७ के समान जानना		
	.1			(३) मनुष्य गति में		
	१-० क भग का० न० १व	٤.	•	१-० क मन क्षांठ न०		
	क समान जानना (४) भोग भिम में		-	(४) भोग भूमि में	•	
	१ का भंग को० नं० १७-			१ का मंग को० नं० १७-		
	१ = के समान जानना			१ द. के समान जानना		
6	\$ 13 H	ू भंग नुसः सम्	१ मयस्या ने में ने मोन	्र सम्बद्धाः सम्बद्धाः	१ मंग नेन्से स्म	े शवःया नेने संस्टि
الكافاتية وتداوات	१६) मर्स व दुवशास म	<u>-</u>	१ संबस्या जानना	१-१ के मंग को ०नं० १६-	जानना	१ अवःथा
	臣			१६ के समान		
				(२) तियँच गति में		
	१ का भंग को० नं० १७ के			१-१ के भंग की० नं० १७		
	समान् जानना			के समान जानना	,	
	(३) मनुष्य गात म			(=) 4ged 410 4		
	१ के समान जानम.			नं १ व के समान जानना		
	(४) भोग भि			(४ भेग भूमि मे-तियंच	•	
	१ का भंग को० नं० १७-			क्रीर मन्य गति में हर्क में		
	<b>)</b>			१-१ के मंग को०मं० १७-	***************************************	
	•			१८ के सम,न जानना		4
पसोग १२	or (	नारे भंग	१ उपयोग	2		१ डपयोग
० २६ देता	(१. नरक गति में ४-६-६ के मंग को०नं० १६	प्रपने प्रपने स्थान के सारे भंग जानना	प्रपन ज्ञपने स्थान के भंगों में से कोई	कुग्नवाम ज्ञान, मनः प्यय ज्ञान ये २ घटाकर (१०)	पयाप्तवत् जानना	पयासवत् जानना
ż	के समान		१ डपयोग जानना	(१) नरक गति में		ja ,
					-	

विगे में	. (i)	· : · : ·	१ ध्यान पयक्तिवत् जानना
त्रसकायिक जीवों में			सारे भंग पर्याप्तवत् जानना
	υΨ	४ ६ का भंग को० नं० १८ के समान जानना (२) तियंच गति में ३-४-४-४-३-४-४ के भंग को०, नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४-६-६-२ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ के भंग को०नं० १८-६	११ १० नं० २६ देखो (१) नरक गति द-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तियंच गति भें द का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति भें द-६-७-१ के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देव गति
) इड़ (	24		<ul><li>१ ध्यान</li><li>के प्रपने अपने स्थान</li><li>के सारे भंगों में</li><li>से कोई १</li><li>ध्यान जानना</li></ul>
( २४२ ) कोष्टक नं <b>०</b>	, <b>&gt;</b>		सारे भंग प्रपने ग्रपने स्थान के सारे भंग जानना
चोतीस स्थान दर्शन	m	(२) तियंच गति में ३-४-५-६-६ के भंग को०नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-२ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (४) देवगति में ५-६-६ के भंग को०नं० १६ के समान जानना (१) भोग भूमि में १-६-६ के भंग को०नं० १७- १६ में समान जानना	१६ (१) नरक गति में
चौंतीस ।	œ		पाम को० नं० १ द देखो
į	~		२१ ध्याम को० न

चौंतीस स्थान दर्शन	<b>न</b> दर्शन	<b>,</b> मी	( २४३ ) कोष्टक नं० ३३		त्रसकायिक जीवों में	नीवों में
~	กา	>	*	us	9	u
२२ मासन को० नं० २६ देखो		ं सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १० देखो	सारे भंग १ भंग प्रपने स्थान के प्रपने स्थान भंग जानना के सारे भंगों में नं० १८ देखो से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	१६ के समान जानना (४) भोग भूमि में  ६-६ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना ४६ को० नं० २६ देखो (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तियंव गति में ३८-३४-३६-३६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-१२-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४३-३६-३३-१२-३१-३३-१२-१३ भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४३-३६-३३-४२-३७-३३ २३-३६-३३-४२-३७-३३	सारे भंग पयस्तिवत् जानना	१ भंग पयितिवत् जानना
२३ भाव को० नं० २६ देखो	१७-१६ फ समान १३ १३ १९) नरक गति में २६-२४-२५-२७ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	सारे मंग अपने प्रपने स्थान केश्रपने अपने स्थात सारे मंग जातना के मंगों में से कोई को० नं० १ = देखी १ भंग जानना	१ भंग ग्रपने ग्रपने स्थात के मंगों में से कोई १ भंग जानना	४९ को० नं० २६ देखो (१) नरक गति में २५-२७ के मंग को० नं० १९ के ममन्त्र	सारे भंग पर्याप्तवत् जानुना	१ मंग प्यक्तिवत् जानना

- प्रवगाहना—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य श्रवगाहना घनांगुल के श्रसंस्यातबें भाग से लेकर उत्कृष्ट श्रवगाहना एक हजार (१०००) योजन तक महामत्स्य जानना । 70
- १५ वंष प्रकृतियां—१२० भंगों का विवर्सा को० नं० २२ से २६ में देखो ।
- उदय प्रकृतियां—११७ उदययोग १२२ प्र॰ में से एकेन्द्रिय जाति १, म्रात्तप १, साधारसा १, सूक्ष्म १, स्थावर १, ये ५ घटाकर ११७ प्र॰ नदय जानना
- २७ सस्य प्रकृतियां--१४८ को० नं० २६ समान जानना
- ( तंस्या-- असंस्थात लोक प्रमाए। जानना ।
- क्षेत्र—-यसनाडी की ग्रपेक्षा लोक के ग्रसंख्यातवें भाग प्रमाए। जानना । केवलसमुद्घात प्रतर ग्रवस्था की ग्रपेक्षा ग्रसंख्यात लोक प्रमाए। जानना केवलसमुद्द्यात लोकपूर्गा प्रवस्या की ग्रपेक्षा सर्वलोक जानना
- ३० स्पर्शन-सर्वलोक को० नं० २६ के समान जानना ।
- क्षाल—नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा क्षुद्रभव सें लेकर दो हजार सागर ग्रौर प्रथक्त पूर्व कोटि काल तक जानना
- परावतंन काल तक यदि मोक्ष नहीं प्रतर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से लेकर असंख्यात पुद्गल हो तो दुवारा स्थावरकाय से त्रसकाय में जन्म लेना पड़े।
- तियैच ४ लाख, नारकी ४ लाख, जाति (घोनि)—३२ लाख जानना । (द्यीन्द्रिय २ लाख, त्रीन्द्रिय २ लाख, चारइन्द्रिय २ लाख, पंचेन्द्रिय देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख, ये ३२ लाख जानना)।

\*

कुल—१३२॥ लाख कोटिकुल जानना, (द्यीन्द्रिय ७, त्रीन्द्रिय ८, पंचेन्द्रिय तियैच ४३॥, नारकी २४, देव २६, मनुष्य १४,–लाख कोटिकुल ये सब १३२॥ लाख कोटिकुल जानना)

مو
30
12
_

स्थान   सामान्य   आलाप				•
~	पयक्षि			अपय <b>ि</b>
· &	नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की ग्रपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	
	m	>-	ω·	は-の-シ
गुर्गा स्थान ० भ	म्रतीत गुर्ण स्थान	0	0, ,	
ास ०	,, जीव समास	0	o	
पर्याप्ति	,, पर्याप्ति	o	0	
O	, प्रास	o	•	
0	,, संशा	o	•	
0	श्रगति	0	. 0	
इन्द्रिय जाति ० अ	अतीत इन्द्रिय	0	o	
• •	<b>अ</b> काय	0		
· •	त्रयोग	0		
0	प्रपगत वेद	o	0	
कपाय ० इ	अक्तपाय	~	~	
ज्ञान <u>१</u> व	केवल ज्ञान जानना	0	•	-
संयम ० न	प्रसंपम, संपमासंपम, संपम ये तीनों से रहित	o	•	
~	शेन जानना	<i>م</i> ہ	~	
लेस्पा ० ।	मलेखा	. 6	. 0	
भव्यत्व	<b>अनुभ</b> य	o	0	
रिय १	क्षांपिक सम्यक्त जानना	•	~	
न संग्री	प्रमुभय	. 0	. 0	-
0	स्रनुभय	0	0	
n	दर्शनीपयोग, शानोपयोग दोनों युगपत जानना	२ युगपत	२ यगपत	
ध्यान ०	म्रतीत ध्य,म	, 0	,	
भाषव ०	यनालव			
भाव	्सायिक ज्ञान, सायिक दर्जन, सायिक वीर्य, जीवत्व	थ् भाव जानना	र भाव	
	य ४ जानना			

स्चना - कोई ग्राचार्य सायिक भाव ६, जीवस्व १, ये १० मानते है

२४ श्रवमाहना—सिद्धों की प्रपेक्षा ३॥ हाथ से ५२५ धनुप तक जानना

बंच प्रकृतियां – अवंच जानना

सत्व प्रकृतियां — भसत्व जानना

संस्था--ग्रनन्त जानना ।

क्षेत्र—४५ लाख योजन (म्रडिच द्वीप प्रमास्।) सिद्ध शिला जानना । स्पर्गंत—सिद्ध भगवान् स्थित रहते हैं ।

काल-सर्वकाल जानमा।

प्रन्तर - मन्तर नहीं।

जाति (योनि)—जाति नहीं।

कुल-कुल नहीं।

वीं	चौतीस स्थान दर्शन	न कोष्टक नम्बर् ३५	म्बर ३५	सत्यमनोयोग ः	सत्यमनीयोग या अनुभय मनोयोग में
क्र स्थान	सामान्य श्रालाप	पय प्ति			श्रमयस्ति
·		नाना जीवों की भपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
~	8	m	>>	ঠ	g-10-5
१ मुस्स स्याम १ से १३ तम् २ जीव समास भ मांग भो० नं० भो० नं० सात को० नं०	१ गुर्ण स्थान १३ १ से १३ तक के गुर्ण । २ जीव समास १ ३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो भो० नं० १ देखो भो० नं० १ देखो को० नं० १ देखो को० नं० १ देखो	्षक से १३ तक के गुरा स्थान अपने अपने स्थान के समान जानना को० नं० २६ देखो १ संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त चारों गतियों में हरेक में जानना को० नं० २६ देखों ६ का भंग को० नं० २६ के समान जानना १० चारों गतियों में, हरेक में १० का भंग को० नं० १६ के समान जानना ४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखों ११) नरक-तियंच-देवग़ति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१६ देखों (१) नरक-तियंच-देवग़ति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१६ देखों (२) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १६-१० के समान जानना १४ का भंग को० नं० १७-१० के समान जानना	सारे गुएए स्थान के सारे मुख्य स्थान के सारे मुख्य । १ भंग इ. का भंग जानना १ भंग आपने स्थान के सारे भंग जानना । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥	१ गुराः भ्रायमे भ्रपने स्थान के भुराः में कोई १ १ भंग ६ का भंग जानना १ भंग भग जानना १ भंग भग जानना १ भंग भग जानना १ भंग भग जानना १ भंग भग जानना १ भंग १ भंग जानना १ भंग भाने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	मुचना— यहां प्र अपयांत मवस्या नहीं होती है।

चीतीस स्थान दर्शन	काष्ट्रक न०	Ser.	सत्यमनायाग या अनुम यमनायाग म	। यस्तायाः। म
	m	, ,>	æ	m - - - -
र जाति १ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति	~	~	
१	का० न० १६ स १६ देखा १ चारों गतियों में हरेक में १ यसकाय जानता	~	~	
~	काठ नर १६ ५ ६ ५ ६ १ ६ ५ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६	१ दो में से कोई १ योग	१ दो में से कोई १ योग	
श्रनुभय मनोयोग जानना	दोना भागा में से कोई. १ योग जिसका विचार करना हो यह एक योग जानना		,	
द नगुं गक-स्थी-गुर्ग वेद	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भग ग्रपने ग्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	९ वद अपने अपने स्थान के मंगों में से कोई १ वेद	
ग बाहित संव १ देखी	२५ चारों गतियों में डरेक में	सारे भंग अपने यपने स्थान के	जातता १ भंग अपने अपने स्थान के	
	को० नं० २६ के समान भग जानना	मारे भंग जानना को० नं० १८ टेखो	सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना कोर बंग १० देखो	
मि सम्भास्त २६ सेसी	न सागें ग्रिमों में द्येस में	सारे मंग यपने यपने स्थान के	१ शान श्रापने यपने स्थान के	
	की० नं० २६ के समान भंग, जानना	सारे भंग जानना	भंगों में से कोई १ जान	
भ मोo नंग् २६ देखो	७ चारोगतियों मं हरेक में को० नं २६ के समान भंग जानना	तार मग प्रायने प्रयमे स्थान के सारे भंग जानना	प्रपने श्रपने स्वान के भंगों में से कोई १	
र्गन कोउ नं० वृद्ध देखी	४ नारों गतियों में हरेन में	सारे भंग जुपने श्रुपने स्थान के	त्रथम १ दर्शन श्रुपने ग्रुपने स्थान के	
	को० नं ९३ के समान भेग जानना	सारे भंग जामना	भंगों में से कोई १ दर्शन	

.

_
_
0
><
3
$\overline{}$

चौतीस स्थान दर्शन	( २५० न दर्शन कोष्टक नं०	) علا	सत्य मनीयोग या अनुभय मनीयोग	भय मनोयोग में
~	m	>>	<b>ઝ</b>	¤-೨-೪
१५ लेख्या को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग प्रपते अपने स्थान के भगों में से कोई एक भंग	१ लेख्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १	
१६ भवगत्व भव्य, ग्रभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान मंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	लेख्या जानना १ यवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १	
१७ सम्ध्यत्व को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान मंग जानना	जानना सारे भंग प्रपने प्रपने स्थान के सारे भंग जानना	अवस्या जानना १ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १	
१ द संभी संजी	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के ममान भंग जानना	१ मंग अपने अपने स्थान के मंगों में से कोई मंग		
१६ माहारक श्राहारक	१ चारों गतियों में हरेक में	१ मंग अपने अपने स्थान के	, जानना मनस्या गग्ने स्थान	
२० उपयोग को० नं० २६ देखो	का० न० २६ क समान भग जानना १२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ अयस्था जानना सारे भंग अपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	१ अवस्था जानन १ उपयोग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १	
२१ ध्यान को० नं० १८ के १६ में से ध्युपरत कियानिवर्ति-	१५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	उपयोग जानना १ च्यान श्रपने अपने स्थान के मंगों में से कोई १	
२२ मासव ४३ १२ मासव ४३ मिल्यात्व ५ मचिरत १२	४३ (१) नर्क गति में	सारे भंग श्रपने ,श्रपने स्थान के	ध्यान जानना १ भंग श्रपने श्रपने स्दान के	•

सारे भंग जानना सारे भंगों में से कोई सी- सी- सी- सी- सी- सी- सी- सी- सी- सी-	
सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	~
	के भंग समा० भे
工 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	४१ का मंग-सामान्य के ४३ के भंग में से स्त्री-
T. C. E. T. T. M. HE	४१ का भग जानना ग्रन्थ
	भुद्रुधन तके४१ के भंग में से
	३६ का भंग जानना
ξ L L ω fe	स्थान म के ३६ के भंग में से ग्रमंता-
į Δ L ω He	नुवंधी कपाय ४ घटाकर ३ - का भग जानना
	(२) तिर्यंच गति में४३-३ प-३४-२६-४२
	२७-२२ क मग १ले गुग़ स्यान में
E i i w fe	४३ का भंग-सामान्य के ४३ के भंग ही
	के ४३ के भंगों में में मिछा हि
i. i. ω fe	र्भ मा स्थानिक स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान
in i w	स्यान में
i-ω fg	के ३ - मंगों में से यनंतानु-
i-ω fe	यंदी कपाय ४ घटाकर ३४ का भंग जानना 
ω  ς-	रव गुरा स्थान क 1 मंगजनर के ३४ के भंग में से ग्रप्रह्या-
łç	ख्यान कपाय ४, त्रसहिंसा १ ये ५ घटाकर २
łs-	
ŀc	(२) मोगभूमि में १ले गुएए स्थान मे
	त ४३ मंगों में से नमुंसक
	वंद १ घटाकर ४२ का भग जानना
	रहे गुण् स्थान मे

<b>హ-</b> ్-3	
*	
>	
m	३७ का भंग-ऊपर के ३० के भंग में से नधुंसक वेद १ घटाकर ३७ का भंग जानना ३१ ४वे गुण स्थान में ३३ का भंग-ऊपर के ३४ भंग में से नधुंसक वेद १ घटाकर ३३ का भंग जानना (३) मनुष्प गति में—४३-३८-३८-१८-१४-१८-१४-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-
c	
~	

सत्यमनीयोग या अनुभय मनीयोग में

( २४२ ) कोप्टक नम्बर ३५

> ं चौतीस स्थान दर्शन

चौतीस	( २५३ ) चोतीस स्थान दर्शन कोध्टक नं० ३५	-	सत्य	मनोयोग य	। अनुभय	सत्य मनोयोग या अनुभय मनोयोग में
~	m	<b>&gt;</b>		<b>ઝ</b>		<b>ಬ-</b> ၅−ಕ್ರಿ
	१४ का मंग-ड्यर के ६वे गुरा॰ के १४ के मंग					
	हो जानन। हवे नगा स्थान में					
	द का भंग-अपर के १४ के भंग में से हास्यादि ६					
	। जानमा का मंग-ऊ।र				······································	
	के मंग में से नपुंसक वेद पटाकर ७ का					
						-
	के भंगों में से स्त्रीवेद घटाकर ७ का मग		•			
	्वे गुगु के ४थे भाग में ५ का मंग-जनर के ६ के					
	भंग में मुह्पवेद घटाकर १ का मंग जानना					
	हिन गुग् क रूव भाग म 8 का नग-जगर ग र के भंग में से क्रोधकपाय घटाकर 8 का भंग					
	अस्तिमा		,			
	हिने गुर्गा० के इवे भाग में ३ का भग-उन्पर के ४ के भंग में से मानकषाय घटाकर, ३ का भंग					
	जानना					
	हिने मुस्ति के ७वे भाग में २ का भग-जन्दर के इ					•
	जानना					
	१०वे गुरा० में २ का भंग में से वेद ३,					;
	६ घटाकर					į.
	भंग जानना		,			,
	११-११-११व गुर्ग स्यान म १ का भंग}डतर के दों के मंग में से लोभकपाय		٠	•	1	
	१ घटाकर १ का भंग मर्थात् सत्य मनोयोग या					
	1 Y 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1					

मस्याम स्थाप स्थाप	right.	१ १५४ )	,	א ההלבת הניבה זה הלתלבת הבע	्र स्तिमा स
मातात ह्यान	वसाम	しゅうしゅ	- 1	ताय मनायाग या अ	छुमय मतायाग् म
~	_	w.	>0	અ	n-9-A
		जिसका विचार करना हो वो एक योग जानना			
		र भोगभूमि में-१ से ४ गुरा स्वानों में			
		४२-३७-३३ के भंग-जपर के कर्मभूमि में ४३-३८			
	<del></del>	-३४ के हरेक भंग में से एक नपु सक वेद घटाकर			
		४२-३७-३३ क भूग जानना ।			
		(०) दवनात म—०१-२७-२२-०१-२५-२१ प भंग श्रवनत्रिक देवों से १६घे स्वर्ग तक			
		देशों में			
		१ले गुरा स्यान में			
		४२ का मंग-माशन्य के ४३ के भंग में से नपुंसक			
		वेद १ घटाकर शेष ४२ का भंग जानना			
	<del></del>	२रे सासादन मुगा॰ में			
		३७ का भग-जपर के ४२ के भग में से मिथ्यात्व			-
		५ घटाकर ३७ का भग जानना			
		दर हम निर्मा स्थान म			
	<del></del>	कर का मंग्री-छत्र क रहा है मा मारा मंग्री है।			
		वस्त कपाय ४ वटाकर २२ का मन जानना			
		२. नवग्र वयक क दवा म-१ स ४ गुग्रा स्थान म			
	<del></del>	४१-३६-३५ क भग-उपर क ४२-३७-३३ क			
	······································	हर्स भग म स एक एक स्त्रा वद घटाकर शप			
	-	रे. नव अनिदिस श्रीर पंचानतर के देवों में-			
		(यहां एक ४ या मुस्स ही होता है)			
		४थे गुर्गा स्थान में			
		३२ का मंग-जपर के ३३ के मंग में से एक स्ती-			
ļ	 1	वेद घटाकर ३२ का भंग जानना		,	
- 1 d	24 W.	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		~ भंग	
काठ नठ १व द्या		नारा गांतथा में, हरक म को० ने० २६ के समान मेंग जानना	श्रपन श्रपन स्थान क सारे मंग जानना	श्रपने श्रपने स्थान के सारे भंगों में कोई एक	
			任	मंग जानना	
	_				

मवगाहना—संस्थात घनांगुल प्रथवा स्वयं भूरमए। के महामच्छ की अपेक्षा घनांगुल के असंस्थातवें भाग से लेकर एक हजार (१०००) योजन तक जानना ।

५ बंध प्रकृतियां---को० नं० २६ के समान जानना।

चवय प्रकृतियां—१०६ उदययोग्य १२२ में से एकेन्द्रियादि जाति ४, ∮गत्यानुपूर्वी ४, श्रातप १, साघारए। १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, ये १३ घटाकर १०६ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्य प्रकृतियां—को॰ नं॰ २६ के समान जानना ।

्द संख्या-असंख्यात जानना।

१६ क्षेत्र—लोक का श्रसंस्यातवां भाग प्रमासा जानना ।

स्पर्शन—लोक का संख्यातवां भाग, द राजु जानना, सर्वलोक को० नं० २६ के समान जानना ।

काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा एक समय में अंतर्मे हूर्त तक क्षपक अरेग़ी की अपेक्षा जानना

एक जीव की अपेक्षा अंतमुँ हुत असंख्यात पुद्गल परावतंन काल तक असंज्ञी पर्यायों में ही **प्रग्तर**—नाना जीवों की प्रपेक्षा कोई श्रन्तर नहीं

जाति (मीनि)—-२६ लाख जानना (नरक के ४ लाख, देवों के ४ लाख, पंचेन्द्रिय तियँच के ४ लाख, मनुष्य के १४ लाख ये २६ लाख जानना । जन्म लेते रहें बाद में जरूर संजी हो।

कुल ─ १० दा। लाख कोटिकुल जानना (नरक के २५, देवों के २६, पंचेन्द्रिय तियँच के ४३॥ मनुष्य के १४ लाख कोटिकुल ये १० दा। लाख

नास स्थान ब्यान	क्रोटिस ने	ा । ग	असत्य मनोयोग या उभय मनोयोग	उभय मनोयोग
or .	m	»	בי	ಭ- <b>១-</b> ೪
त्र ग्यन दर्शन घटाकर .प ३ दर्शन जानना	है (१) नरक, देवगति में १-३ के भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) भोग भूमि में	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	१ दर्शन यपने स्थान के ग्गों में से कोई १ दर्शन जानना	
पा क्री० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग ग्रपने ग्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ लेख्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेख्या	
र भव्य, सभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	जानता १ भंग प्रपने ग्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	्रान्ता १ अग्रस्या अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई: १ अवस्था	
पितम की० मं० २६ देतो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	णानना सारे भंग ग्रपने ग्रपने स्थान के सारे भंग जानना	जानना १ सम्यक्तव अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्तव	
र संग्री प्राहारत	१ वारों गतियों में हरेक में को७ नं० २६ के समान भंग जानना १ चारों गतियों में हरेक में १ याहारक प्रयक्ता जानना को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग को० नं० २६ देखो १ भंग ब्राहारक ब्रवस्था	णानना १ अवस्था को० नं० २६ देखो १ अवस्था प्राहारक अवस्था	

	उभय मनायाग	<b>క-</b> ၅-ప్ర		
	असत्य मनायाग गा उभय मनायाग	əf	१ उपयोग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में के कोई १ उपयोग जानना १ ध्यान भं से कोई १ ध्यान जानना "" "" "" "" "" "" "" "" "" "" "" "" ""	१ भंग अपने अपने स्थान कि
	कोष्टक नं० ३६	<b>&gt;</b>	सारे भंग अपने हथान के सारे भंग जानना , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	सारे भंग यपने यपने स्थान के
	,	er.	१० नरकगित, तियीच गति, देवगिति में ५–६–६ के भंग को० नं० १६–१७–१६ देखी (२) मनुष्य गिति में ५–६–६ के भंग को० नं० १६–१७–१६ देखी १–६–६–७ के भंग को० नं० १८ देखी १८–१८–६ के भंग को० नं० १९–१८ देखी १८) नरकगित, देव गिति में ५–६–१० के भंग को० नं० १९–१६ देखी (२) तियीच गिति में ५–१०–११ के भंग को० नं० १९ देखी (३) मनुष्य गिति में ६–१०–११ के भंग को० नं० १८ के समान जातना (३) भोग भूमि ६–१०–४–१–१ के भंग को० नं० १८ के समान जातना १८३ के भंगों का विवर्ण को० नं० १८ के भंग को० नं० १८–१८ के भंग को० नं० १८–१८ वेदित अप को० नं० १८ के भंगों के समान यहां भी सब भंग जातना परन्तु यहां सत्य मनोयोग या अनुभय मनोयोग का जानना घरना गंग जानना	४६ (१) नरक गति में
ė	चीतीस स्थान दर्शन	2	२० उपयोग १० केवल दर्शन वे २ उपयोग घटाकर (१०) पूड्म किया प्रति पाति, ज्युपरत किया प्रति पाति, ज्युपरत किया मिवतिनि ये २ वटाकर थेए (१४) प्रति पात्र १२, (हिंसक ६ + हिंस्य ६) क नाय २५, प्रसंत्य मनोयोग, या उभय मनो- योग दन दो में से नोई १ योग दान दो में से नोई १ योग दान दा करना हो तो १ योग जानना	य सब ४३ अस्तिय जानता २३ भाव केनल झान, केवल दर्गत

- **प्रवगाहना—सं**ख्यात घनांगुल या घनांगुल के ग्रसंस्यात**नें** भाग से लेकर एक हजार (१०००) योजन तक जानना यंव प्रकृतियां--- को० नं० २६ के समान जानना
  - १६ स्वयं यक्तितयां—१०६ को० न० ३५ के समान जानना
    - सस्य प्रकृतियां—१४८ को० नं० २६ के समान जानना
- रें सस्या-श्रमंख्यात जानना ।
- क्षेत्र—लोक के असंस्थातयां भाग जानना।
- स्पर्गन लोक का ग्रसंख्यातवा भाग, न राजु जानना, सर्वेलोक को० नं० २६ के समान जानगा।
- काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मे हुर्त तक जानना
- **प्रन्तर—नाना** जीवों की ग्रपेक्षा कोई श्रन्तर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा १ श्रन्तमुँ हूतै से ग्रसंस्यात पुद्गल परावर्तन काल तक जानना जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना । (को० नं० २६ देखो)
  - जाज (जाज)—र ९ लाख थान जानमा । (का० न० २६ दे कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानमा । (को नं० २६ देखो)

_
3
w
3
•
_
_

	2016	कार्टिक गुरु र त	1 , 7	מולם שיחיו שווויו
फ्र स्थान सामान्य	पयक्ति			श्रपयक्ति
	नाना जावों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की ग्रपेक्षा एक समय में	
2	er.	>>	<b>2</b> 4	ह-०-ह
१ मुग्रा स्थाम १३ १ से १३ तक के मुग्रा० २ जीयसमास संशी पंत्रीन्द्रय पर्याप्त ३ पर्याप्ति १ को० नं० १ देखो ४ प्रास्स	१३ चारों गतियों में १ से १३ तक के गुरा० अपने अपने स्थान के समान जानना ।ः को० नं० २६ देखो चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय प्यिपि जानना को० नं० २६ देखो ६ का भंग को० नं० २६ के समान जानना १० वारों गतियों में हरेक में १० वारों भान को० नं० १६ से १६ देखों १२) भोग भूमि में	सारे गुर्सा स्थान के सारे गुर्सा स्थान के सारे गुर्सा स्थान जानना १ १ भंग ६ का मंग जानना १ भंग अपने स्थान के एक भंग जानना	१ गुण स्थान के मपने अपने स्थान के गुण स्थान के शुण स्थान १ १ भंग ६ का भंग जानना १ भंग अपने स्थान के एक एक भग जानना	सुचना— यहां पर प्रपाति प्रवस्या नहीं होती है।
५ संज्ञा को० नं० १ देनो ६ गति को० नं० १ देनो	र नारों गतियों में को० नं० २६ के समान जानना ४ नारों गतियां जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ ४ में से कोई १ गति जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना १ कोई १ गति जानना	

सत्य वचन योग में	¤-⊌೨	•							
सत्य व	አ	~	~	<i>م</i>	र बद श्रपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ वेद जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ ज्ञान ज्ञपने अपने स्थान के भगों में से कोई १ ज्ञान ज्ञानना	१ संयम श्रपने श्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना
) સહ	>>	~	~	~	१ भग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	सारे मंग ज्ञपने ज्ञपने स्थान के सारे मंग जानना	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	सारे भंग ग्रपने ग्रपने स्थान के सारे भंग जानना
( २६३ न दर्शन कोष्टक नं०	m	१ चारों गतियों में को० नं० २६ के समान भंग	शानगा १ चारों गतियों में को० नं० २६ के समान भंग जानग	भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	२१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान जानना	ट चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	४ नारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान जानना
चौतीस स्थान दर्शन	6	े   ) । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	द काय त्रसाकाय	१ सत्य वचन योग	१० वेद को० नं० १ देखो	११ कपाय को० नं० १ देखो	१५ ज्ञान को० नं० २६ देखो	१३ संयम को० नं० २६ देखो	१४ दर्शन को० नं० २६ देखो

चीतीस स्थान दर्शन	् रर्ड न कोष्टक नं०	દું કુ નં૦ રૂહ	₩	सत्य वचनयोग में
ar .	et.	>>	አ	<b>ಬ-</b> ၅-ಕ್ರಿ
१५ लेखा को० नं० २६ देखो	ड़ चारों गतियों में हरेक में को० ने० २६ के समान भंग जानना	ं १ भंग श्रपने श्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ लेख्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेख्या	
१६ भन्यत्य भन्य, ग्रभन्य	् चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान मंग जानना	१ भंग यपने अपने स्थान के मंगों में से कोई १ भंग	जानना १ श्रवस्था श्रपने श्रपने स्थान के भंगों में से कोई १	
१७ सम्पगत्व को० नं० २६ देखो	् चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जातना	सारे भंग श्रपने श्रपानं के सारे भंग जानना	श्रवस्था जातता १ सम्प्रतत्व श्रपने ग्रपने स्थान के भंगों में में कोई १	
१ द संजी	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ मंग प्रपने प्रपान के मंगों में से कोई १ मंग	सम्पन्त्व १ अवस्या अपने 'प्रवने ; स्यान के भंगों में से कोई १	
१६ माहारक याहारक		१ भंग श्राहारक अवस्या	भवस्या जानना १ मवस्या माहारक मवस्या जानना	
२० उपगोग को० नं० २६ देखो	का० न० ९६ क समान भग जानमा १२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ उपयोग श्रामे श्रपने स्थान के मंगों में से कोई १	
२१ घ्यान को० नं० ३५ देशो	१५ चारों गतियों में हरेक में े कोंऽ नंऽ २६ के समान भंग जानना	सारे भंग यगने यपने स्थान के सारे भंग जानना	डपयाग जानना १ ध्यान श्रपने श्रपने स्थान के भंगों में से कोई १	
२२ पागव पिच्यात्व ४, घरित्व १२,	४३ नारों गतियों में हरेक में	सारे भंग यपने यपने स्थान के	ब्यान जानमा े १ भंग यपने अपने स्थान के	

( ४६४ )

मः	<b>ს</b> -ე-კ	
सत्य वचन योग में		सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग प्रपने ज्ञयने स्थान के सारे मंगों में से हरेक भंग सं के कोई १ धंग जानना
त्रास्त्र । कोष्टक नं० ३७	, ,	सारे भंग जार,ना को० नं० १ द देखो सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना
कोध्दक	rx	को० नं० ३५ के समान भंग जानना परन्तु यहां सत्य मनोयोग या अनुभय मनोयोग के जगह सत्यवचन योग जानना ५३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना
चीतीस स्थान दर्शन	cr	(हिंसक ६ - हिंस्य ६) कपाय २५, सत्य वजन- योग १ वे ४३ जानना भाव भाव को० नं० २६ देखो
affi.	~	(हिंसक १ कपाय २५ योग १ वे भाव को।

८ ग्रवमाहना - को० नं० ३६ के समान जानना ।

वंत्र प्रकृतियां को० नं० २६ के समान जानना।

उदय प्रकृतियां—१०६ को० नं० ३५ के समान जानना। सत्त्र प्रकृतियां—१४८ को० नं० २६ के समान जाननो।

१ संख्या--- प्रसंख्यात जानना ।

क्षेत्र--नाना जीगों की प्रगेशा लोक का प्रसंख्यानवां भाग प्रथान मनुष्य लोज (ग्रडाई द्वीप) जानेना।

त्मग्न--मामा जीयों की ज्ञपेत्रा सर्वलोक जानना । एक जीव की ज्ञपेत्रा लोक का ऋसंख्यातवां भाग प्रथित = राजु जानना

(को० नं० २९ देखो)

नाना जीवों की प्रनेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्भे हूती तक जानना ।

<del>प्रस्तर—नाना जोवों की अपेक्षा ग्रन्नर नहीं, एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँहुतै से ग्रतंत्यात पुद्गल परावर्तन काल के वाद सत्य वचनयोग जरूर</del> वारम् करना कु।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख दोनि जानना । (को० नं० २६ देखो) ३४ गुज्य—१०=॥ लाग कोटिकुल जानना । ( ° ''

चौतीस स्थान दर्शन	्रार नं कोप्टक नम्बर	n _ m	असत्य वचनयोग या उभय वचनयोग में	षि वचनयोग में
क्षे स्यान   सामान्य त्रालाप	पयन्ति			अपयर्दि
	नाना जीयों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीय के एक समय में	
~	m <sup>*</sup>	>>	ಸ	R-0-3
१ मुस्स स्थान १ से १२ तक्त के मुस्स	१२ चारों गतियों में–१ से १२ तफ के गुसा० अपने अपने स्थान के समान गुसा० जानना को० नं० २ <u>६ हे</u> नो	सारे गुर्सा स्थान ग्रपने ग्रपने स्थान के सारे गुर्सः जानना	१ गुरा स्थान १ से १२ में से अपने अपने स्थान में से कोई	सूचना— यहां पर अपगीत प्रयक्षा नहीं होती
ास पंनेन्द्रिय पर्गा	1, 1	~	१ गुराज्ञानना १	-  she'
र प्याप्त कोठमंड १ देलो ४ मन्त	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० २६ के समान जानना	१ भंग ६ का भग	१ भंग ६ का भंग	
क्षीठ मंठ १ दे <del>त</del>	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० न० २६ देखो	१ मंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
४ तथा को० मं० १ देलो	४ चारों गतिय' में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग श्रपने श्रपने जान के सारे भंग जानना	्र भंग यपने त्रपने स्थान के सारे मंगों में से कोई	
६ गति क्तो॰ नं० १ देखो ७ उन्तिय जाति पनेन्दिय जाति	४ चारों गतियां जानना २ १	१ गति चारों के से कोई १ गति, १	१ मंग जानना १ गति चारों में से कोई १ गति १	
भाग भाग व	ारा गावना में हरक में १ संगी पेकेटिंदम जाति जानना १ चारों गतियों में हरेत में १ वसकाय जानना	~	~	

	<i>:</i>	(		
चातास स्थान दशन	क्षिटक न्	ព	असत्य वचनयाग या उभय वचनयाग	ाय वचनयाग म
~	m²·	>>		ម ភ្ន
६ योग श्रसत्यमनोयोग या उभय वचनयोग जानना	१ चारों गतियों में हरेक में दोनों योगों में से कोई १ योग जिसका	१ दोनों में से कोई १ योग	दो में से कोई १ योग	,
१० गेंद को० नं० १ देखो	ावचार करना है। वा एक याग जानना ३ चारों गतियों में हरेक में की० नं० २६ के समान मंग जानना	१ गंग ज्ञपने ज्ञपने स्थान के मंगों में से कोई १ मंग	१ वेद श्रपने अपने स्थान के मंगों में से कोई १ वेद	
११ कपाय को० नं० १ देखो	२५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ः६ के समान भंग जानना	सारेभंग स्रवने स्थान के सारेभंग जानना	जानना १ भंग भ्रपने श्रपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १	
१२ ज्ञान केवल जान १ घटाकर शेष ७ ज्ञान ज्ञानना	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	का० न० १८ दल्ला सारे भंग अपने स्थान के सारे भंग जानना	भग जानना १ ज्ञान श्रपने श्रपने स्थान के संगों में से कोई १ ज्ञान	•
१३ संयम को० नं० २६ देखो		सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	जानना १ संयम अपने अपने स्दान के भंगों में से कोई १	
१४ दर्शन केवल दर्शन १ घटाकर (३)	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानमा	र रि भंग अपने अपने स्थान के सारे मंग जानना	संयम जानना १ दर्शन अपने अपने स्थान के अंगों में से कोई १ दर्शन	
१५ लेख्या को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानता	१ भंग यपने यपने स्थान के भगों में से कोई १ भंग	जानना १ लेख्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन	
१६ मञ्जरत अन्य, सभन्य	२ चारों गतियों में हरेक में	१ भंग अपने अपने स्थान के	जानना १ श्रवस्था श्रपने श्रपने स्थान के	-

Ç.	

चीतीस स्थान दर्शन	( २६६ १ दर्शन	પ્ર	असत्य वचनयोग या उभय वचनयोग में	य वचनयोग में
c` ~	æ	>	۴.	<b>ყ</b> ~ე-}
	को० नं० २६ के समान भंग जानना	भगों में से कोई एक भंग	भंगों में से कोई १ ग्रवस्था जानता	
१७ सम् नत्व को० मं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग श्रपने श्रपने के सारे भंग जानमा	र सम्यक्त्व श्रपने श्रपने स्थान के भंगों में से कोई १	
१म संशी संशी		१ भंग को० नं० २६ देखो	सम्यक्षत्व जानना १ स्रयस्था को० नं० २६ देखो	
१६ पादारक शहारक	का० न० २६ क समान भग जानना १ नगरों गतिगों में हरेक में १ ब्राहारक जानना	१ भंग ग्राहारक ग्रवस्था	१ मदस्या सहिरिक प्रवस्था	
२० अपगोम को० नं० २६ देलो		सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ उपयोग यपने अपने स्थान के सारे मंगों में से कोई १	
२१ व्याप्त पो० नं० ३६ सेनो	१४ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३६ के समान भंग जानना	सारे भंग ऋपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	उपयोग जानना १ च्यान प्रपने श्रपने स्थान के संभों में से कोई १	
२२ जाराम ४३ मिरवास्य ५, ब्रिनिस्स १२, (स्थिम ६-१-स्थिम ६) क्षाम १५, बास्स यनक-	४३ चारों गतियों में हरेक में मंगों का विववरता को॰ नं॰ ३५ के समान भंग यहां भी बानना, परत्यु यहां तत्यमनोयोग या श्रनुभय मनोयोग	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान के सारे मंग जानना को० नं० १८ देशो	ध्यान जानना १ भंग प्रपने श्रपने स्थान के हरेक भंग में से कोई १ भंग जानता	
योग या उभय वन्त्रयोग इन नेतों में में बीई १ बोग रिफ्ता नियार करना हो तो बोग बान्सा ने सब	की जगह यसत्य पत्तमयोग या उनय वचनयोग जानना			

388 )
<b>-</b>

चोंतीस स्यान दर्शन	• ,	कोप्टक नं० ३ द	असत्य वचनयोग या उभय वचनयोग	योग या उ	भय वचनयो	书
2	m	<b>&gt;</b>		*	<b>¤-</b> ე-ჭ	
२३ भाव ४६	ur >º	सारे भंग		भंग		
को० नं० २६ देखी	चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३६ के समान भंग जानना	***	ने   श्रपने प्रपने स्थान के   हरेक भंग में से कोई	स्थान के सिकोई १	***	
		कोट नं० २६ देखो		•		
			नो नो नं ग्र देखी	द देखी		

ज्ञवमाह्या-को० नं० ३५ समान जानना ।

यंच प्रकृतियां—को अन् न० २६ के समान जानना।

उदय प्रहृतियां—१०६ को० नं० ३५ के समान जानना ।

तत्व प्रकृतियां—१४८ को० नं० २६ समान जानना।

न संख्या-- यसंख्यात जानना ।

ह क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

स्परांन—नाना जीवों की श्रपेक्षा सर्वेबोक जानना । एक जीव की श्रपेक्षा लोक का श्रसंख्यातवां भाग श्रयदि न राजु जानना (को॰ न॰ २६ देखो)

कान--नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अंतमुँ हूर्त तक जानना ।

अन्तर — न ना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा अंतर्भ हूर्त असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न हो सके तो असत्य वचन योग या उभय वचन योग इनमें से कोई भी एक योग अवश्य वार्सा करना पड़े।

अन्तर्य नमन मान था उम्म नमा मान साम साम साम साम साम साम मान मान मान मान मान मान साम साम साम साम साम साम साम साम सामित (योमि) —-२६ लाख योमि जानमा । (को० न० ३५ देखो)

४ फ़ुल-१०न॥ लाख कोटिजुल जानना । (को० नं० ३५ देखो)

असभय वसम्मास भ	अध्यक्ति		<b>ర−</b> ၅,−3	सुनाना— यहां पर अपयिति अवस्था नहीं होती है।
<b>न्न</b>		एक जीव के एक समय में	×	१ गुएए स्थान के मुएए० मं से कोई १ मुएए० मं से कोई १ मुएए० जानना १ समास ४ में से कोई १ समास जानना १ मंग जानना १ मंग जानना १ मंग काई १ मंग जानना १ मंग जानना भंग जानना
。 ) हमं० ३६		एक जीव के नाना समय में	>>	सारे गुर्पा स्थान के सारे गुर्पा स्थान के सारे गुर्पा स्थान जानना १ समास जानना १ मंग इन्ध्र समास जानना १ मंग जानना सारे भंग आपने अपने स्थान के सारे भंग जानना श्रपने अपने स्थान के सारे भंग जानना
( २७० ) नि कोष्टक नं०	पयित	नाना जीवों की अपेक्षा	m	१ से १३ तक के गुपा० में जानना को० नं० २६ देखो। "१ नारों गतियों में हरेक में १ संजीपनेदिय पर्याप्त जीय समास जानना को० नं० १६ से १६ देखो, शेप ४ समास दियंन गति में जानना, को० नं० १७ देखो ६-५ के भंग चारों गतियों में हरेक में १० ता भंग-को० नं० १६ से १६ देखो १० १० का भंग को० नं० १० के भंग नारों गति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १६ देखो (१) तियंन गति में १० का भंग को० नं० १६ से १६ देखो (१) तियंन गति में १० का भंग को० नं० १६ से १६ देखो १० का भंग को० नं० १६ से १६ देखो
चींतीस स्थान दर्शन	त्रः स्यान सामान्य ग्रालाप		8	१ मे १३ तक के मुख् १ मे १३ तक के मुख् १ जीव समास दीन्द्रिय, असंशीपंत्रे- निद्रय, संशीपंत्रिह्य- पर्याप्त थे ५ जानना ३ पर्याप्ति को० नं० १ देसो ४ प्रास्त

अनुभय वचन योग में	५.७-५			
अनुभय व	హ్	१ मंग ज्ञपने ज्ञपने स्थान के सारे मंगों में से कोई १ मंग जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति १ जाति चारों में से कोई १ जाति	~ ~
3E	>>	सारे भंग ज्ञपने स्थान के सारे मंग जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति १ जाति बारों के से कोई १ जाति	~ ~
नि दर्शन	m <sup>*</sup>	(४) भोग भूमि में १० का भंग को० नं० १७-१८ देखो ४ ४-४-३-२-१-१-०-४ के भंग चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ४ का भंग द्वीन्द्रिय से ग्रसंशी तक के जीवों को० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में	<ul> <li>४ का भंग को० नं० १७-१८ देखो</li> <li>४</li> <li>चारों गतियां जानना</li> <li>४</li> <li>संजी पंचेन्द्रिय जाति जानना</li> <li>को० नं० १६ से १६ देखो</li> <li>(२) तियंच गति में</li> <li>द्वीन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, ग्रसंजी- पंचेन्द्रिय जाति ये ४ जाति जानना</li> <li>को० नं० १७ देखो</li> </ul>	१ चारों गतियों में हरेक में १ वसकाय जानना १ अनुभय वचनयोग जानना चारों गतियों में हरेक में १ अनुभय वचन योग जानना
चोंतीस स्थान दर्शन	8	४ संज्ञा को० नं० १ देखो	६ गति को० नं० १ देखो ७ इन्द्रिय जाति एकेन्द्रिय जाति १ घटाकर ४ जानना	द काय ह योग १

. १०८

चींतीस स्थान दर्शन	( २७२	~ m		
2	v	) _	अप्रमय	पष्त थाः। म
	77	>>	*	¤-೧-3
१० वेद को० नं० १ देशो	३ चारों गतियों में हरेक में को० न० ३३ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ वेद    अपने श्रपने स्थान के 	
११ कपाय को० नं० १ देखो	२५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के मारे भंग जनना	147 11	
१२ ज्ञान को० नं० २६ देखो	ट नारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के तमान भंग जानना	की० नं० १ द देखी सारे मंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जातना	प्रार्मिंग न स काइ ( भंग जानता १ ज्ञान श्रमने श्रमने सारे भंगों में में कोई १ ज्ञान	
१३ संगम फो० नं० २६ देतो	७ चारों गतियों में हरेक में कों० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे मंग जानना	जानना श्रमंत्र अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ संग्रम जातन	
१४ दर्गन को० नं० २६ देवो	४ चग्रों गतियों में हरेक में गो० नं० ३३ फे समान भंग जानना	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	ापन जानमा १ दर्शन यपने शपने स्थान के समें में ने कोर १ टर्गन	
१४ नेस्या को० नं० २६ देनो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	१ भंग प्रपने त्रपने स्थान के मंगों में से कोई १ मंग बातना	जानना १ लेख्या यपने प्रपने स्थान के	
१६ गजाता २ सन्त्र, गमध्य	२ नारो नितयों में हुदेल में को० नं० ३३ के समान नंग जानना		जानना श्रान्स्या जनते थपने स्थान के नेगों में में कोई १ जनस्बा	
			-	

अनुभय वचनयोग में	よ-む-3	
``````````````````````````````````````	ಶ್	श्रम्त्रव्यंव अपने अपने स्थान के संगों में में कोई १ सम्यक्त्व जानना श्रम् अपने स्थान के मंगों में से कोई १ अतस्या जानना श्रम् अपने स्थान के कारे मंगों में से कोई १ उपयोग जानना १ च्यान १ च्यान
) हे० ३६	>	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ अवस्या श्वाद क्षेत्र कोई १ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग अवस्था जानना सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना
( २७३ चौतीस स्थान दर्शन	m	क् वारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना २ वारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना-को० नं० १६ से १६ देखों (२) तियंच गति में १ अमंजी-दीन्द्रिय से असंजी पंचिन्द्रिय तक के जीव असंजी जानना को० नं० १७ देखों (३) मनुष्य ग्रायांत न संजी न असंजी अवस्था जानना, देखों को० नं० १८ १७-१ न देखों १७-१ न देखों १ अ.हारक अवस्था जानना १ अ.हारक अवस्था जानना १ अ.हारक अवस्था जानना १ अ.हारक अवस्था जानना १ जाने नं० ३३ के समान भंग जानना को० नं० ३३ के समान भंग जानना
	8	१७ सम्यक्त्व ६ विश्व को के नं २६ देखो ६ संजी, यसंजी २ संजी, यसंजी ६ याहारक याहारक १२ व्याम १

चौतीस स्थान दशन	। दशीन कोष्टक नं० ३६	38	श्रनुभ	अनुभय वचनयोग में
c	ft.	>>	አ	ಭ- <b>೯-</b> ಕಿ
मनाय २४, सनुभय बन्त योग १ ये ४३ जानना	परन्तु यहां एक अनुभय वचनयोग ही जानना	की उनं श्द देखों	१ भंग जानना	
२३ भाव को० नं० २६ देखो	५३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग प्रयमे प्रपमे स्थान के सारे भंग जानना	१ मंग अपने अपने स्थान के हरेक मंग में से कोई १	
		कोट नं० १८ देखो	भंग जानना	

४ श्रयमाह्नमा---गो० नं० ३५ के समान जानना ।

२१ वय प्रकृतियां—गो० नं० २६ के समान जानना ।

उवय प्रकृतियां—११२ उदययोग्य १२२ प्र॰ में से एकेन्द्रिय जाति १, आनुपूर्वी ४, श्रातप १, साधारए। १, सूक्ष्म १, स्थावर १, ग्रापर्यात १, में १० घटाकर ११२ प्र० का उदय जानना ।

. १७ सत्य प्रकृतियां—को० नं० २६ के समान जानना ।

२् संस्था-प्रसंत्यात जानना ।

१६ वोत्र-नोक का श्रमंत्यातवां भाग प्रमास जानना ।

स्पर्गंत--लोफ का मंह्यातवां भाग, प्रयति = राजु जानना, सर्वलोक को० नं० २६ के समान जानना ।

फाल--नाना जीवों की प्रपेशा सर्वकाल जानना, एक जीव की श्रपेक्षा एक समय से श्रंतमुँ हूर्त तक जानना।

करतर—नाना जीवों की प्रपेक्षा कोई श्रन्तर नहीं एक जीव की श्रपेक्षा एक श्रंतमुँहुतै से श्रसंस्थात पुड्गल परायतंन काल तक श्रनुभय वचन प्राप्त नहीं होता। जाति (योनि)—३२ लाल योनि जन्नना, (ग्रीन्द्रिय २ लाख. मीन्द्रिय २ लाख, चतुरिन्द्रिय २ लाख, पंचेन्द्रिय पग्रु तिर्यंच ४ लाख, नारको ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख ये ३२ लाख योनि जानना ।

हुत्त – १३२॥ लाज कोटिकुल जानना, (बीन्द्रिय ७, योन्द्रिय ६, चनुरिन्द्रिय ६, पंचेन्द्रिय पगु तिर्यंच ४३॥, नारकी २४, स्वर्ग के देव २६, मनुष्य १४ वारा कीटिकुन से १२२॥ नास कोटिकुन जानना ।

श्रीदारिक काय योग में	अपयिति		<u>బ-</u> ฤ-ప్ర	सूचना— यहां पर अपयिप्ति अवस्था नहीं होती है।
श्रीदारिक		एक जीव की श्रपेक्षा एक समय में	<b>X</b>	१ गुएए स्थान के अपने अपने स्थान के जानना १ समास अपने अपने स्थान के समासों में से कोई १ जानना अपने अपने स्थान के भंगों अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना
( २७४ ) कोष्टक नं० ४०		एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	>-	सारे गुर्गा स्थान प्रापने प्रया स्थान के श्र समास अपने अपने स्थान के ग्रामासों में से कोई १ समास ग्रामासों में से कोई १ समास प्रापने ग्रापने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग १ भंग श्र भंग १ भंग १ भंग श्र भंग १ भंग
	पयप्ति	नाना जावों की प्रपेक्षा	Er.	(१) तियंच गति में १ से ४ मुएए स्थान (२) भोग भूमि में १ से ४ भुएए जानता (४) भोग भूमि में १ से ४ मुएए जानता (४) भोग भूमि में १ से ४ मुएए जानता (१) तियंच गति में ७–१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १–१ के भंग को० नं० १० देखो १–१ के भंग को० नं० १० देखो १–१ के भंग को० नं० १० देखो १२ मनुष्य गति में १–१-४-४-६ के भंग को० नं० १९ देखो (१) तियंच को० में १०-१-५-७-१-४-१० के भंग को० नं० १७ के समान जानना
चौतीस स्थान दर्शन	क्र० स्थान सामान्य		٤ - ٧	१ मुस्स स्थान १३ । से १३ तक के मुस्स २ । से १३ तक के मुस्स २ । से नादर अवसमास अवस्त्र अस्त्र अवस्त्र अस्त्र १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

चीतीस स्थान दर्शन	। दर्शन	, २ मोव्ह	( २७६ ) कोप्टक नं० ४०	श्रीदारिक काय योग में	ष योग में
~		æ	>>	<i>3</i> -	<b>ょ-の-</b> う
		(२) मनुष्य गति में २०-४-२० के मंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ टेक्टो	१ भंग को० नं० १= देखो	
५ मंजा को० नं० १ देखो	, در	ار 1 1 - بردر د	१ भंग को० नं० १७ देखो	र भंग को० नं० १७ देखो	
	~	8—४ क भग काठ नठ ९७ ५६। ( ) मनुष्य गति में ४—३—९—१—१—०—४ के भंग स्मेर सं८० से समापन सामना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देगो	
६ गति तिर्यंत्र नित, मनुत्य गति		१८ ५२ ५ ५५ भारता २ १ तियाँच गति को० नं० १७ देखो	१ गति १	१ महित १	
७ इन्द्रिय जाति क्षेठ नं ० १ देतो	<u> </u>	१ मनुष्य गात काठ न० १५ दखा १ (१) तियंन गति में ५-१-१ जाति कोठ नं० १७ देखो	१ १ जाति १ जाति को० नं० १७ हेमो	< १ जाति १ जानि को० नं० १७ देखो	
म काम मोठ मंठ १ म देखी		(२) मनुष्य गति में { जाति भो० नं० १८ देखो १) तियन्त गति में	१ जाति को० नं० १ = देखो १ काय छो० नं० १७ टेन्नो	१ जाति को० नंद १८ देखो १ काय इन्ने० २० अन्ते	
. योग		६-१-१ के भंग को॰ नं॰ १७ देखो (२) मनुष्य जाति में १ त्रसकाय को॰ नं॰ १८ देखो	१ काय १ काय को० नं० १८ देखो	्र काय यो० नं० १८ रेग्रो १	
मौदारिक काम योग		( ) तिर्वंच गति में १ औ॰ कायवोग हो॰ नं॰ १७ देखों (२) मनुष्य गति में १ औ॰ काययोग हो॰ नं॰ १= देखो	· ~ ~	~ ~	
१० ोय क्लीक मं० १ देखी	ar	रे (१) तिर्घच गति में ३-१-३-२ के मंग को० नं० १७ देखो	१ देद को० नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १७ देयो	:

		कोष्टक नं ० ४०	अद्भारम कार्य याग म	ंद थान म
તે	m	>-	**	น-อ- พ
	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग स्केट नंद शन होता	१ वेद क्रो० मं ० १ मध्यो	
	को० नं० १ व समान भंग जानना			
۶۲ م بر بر الم	२५ (१) दिगौन महिन में	सारे मंग को नं , १७ हेखो	क्रिंग मंग १७ हेस्सो	
~	१८)।तथन गात म २५-४३-२५-२१-२५-२१-१७ -२४-२० के भूग			
	को० नं० १७ के समान जानना			
		सारे भंग	१ भंग	
	-x-x-3-0-63-63-8-x-x-	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	
	३-२-१-१-०-२४-२० से भंग को० नं० १५ के समान जानना			
น		१ भंग	१ ज्ञान	
को० नं० १= देखो	(१) तियंच गति में	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
	२-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो			
	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ सा	
	३-३-४-४-१-३-३ के भंग को० नं० १८ के ममान लावना	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	
<u>ඉ</u>	9	१ भंग	१ संग्रम	
को० नं० १८ देखी	(१) तिथैच गति में	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
	१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखी			
	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ संयम	
	१-१-३-३-२-१-१-१ के भंग	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	
	कीं नं १६ के समान जानना			
•	>> i	१ मंग	१ दर्शन ः	
का० न० रूप दखा	(१) तिथन गाति म	क्रा० न० १७ दल।	का० न॰ १७ द्सा	
	スーペースースースース st 441 mile in			
	(३) मनस्य मनि में	lik ch	१ दर्शन	
,	( ) 13-3-3-( -2-3 帝 轩打	को० नं० १व देखो	को० नं० (द देखो	
	को० नं०० १ स समान जानना			

चातास स्थान दशन	कोष्टक न०	، ۶٥	श्रौदारिक	श्रौदारिक काय योग में
o′ <b>~</b>	er ,	>	*	. 5-9-3
१४ जेखा के उन्हें		۶ بنا ا	१ लेश्या	
	(१) ातपत्र गात म ३-६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	काठ नठ ९७ दिख	काठ नठ १७ देखा	
	(२) मनुष्य गति में ६-३-४-३ के यंग को० मं० १० त्रेयो	सारे भंग को भं १० केली	१ लेखमा	
१६ भव्यात्व २		१ भारत	१ अवस्था	
भव्य, ग्रभट	(१) तियंच गति में	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
	<-:-<- क्षेत्रमा क्षेत्रमा चि ० १७ देखा (२) मनस्य मिन में	ik (th	0	
	२ १ १ न ३ ५ मारा न २-१-२-१ के मंग कोठ नंठ १ द देखो	को० मं० १८ देखो	को० मं० १८ भेटारे	
	UYY	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	१ सम्प्रवत्व	
को० नं० १८ सेतो	(१) तियंन गति में	मों नं १७ देवो	को नं १७ देखो	
	१-१-१-२-१-१-१ के मंग			
•	(२) मनत्य मनिय मनिय	ļ, (1)		
	१-१-१-३-३-३-२-१-१-१-३ के मंग	को० नं० १८ देखो	को० मं० १८ देखो	
	को० नं० १ न के समान जानना			
रूप समा	6	१ भंग	१ प्रवस्या	
	(१) तियन गति में	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
	१-१-१-१ के भग को० नं० १७ देखो			
ne saudos	(र) मनुष्य गांत म	सार भग	१ मयस्या	
Se meren	१-०-१ क भग का० न० १ द द्वा	कों० नं० १ द देखो	को० नं० १८ रेखो	
रक्त सम्बद्धार	12 - 13 to 13 (6)	े भग	े शवस्था	
	(c) indep tild to (c) in the (c) (c) in the (c)	का० न० १७ दवा	को० न० १७ देवो	
-	(२) मनत्य गति मे	in the	and the second	
	१-१-१ के मंग को० मंं १८ देखी	कोठ नंठ १८ देखो	क्षित्र १० भिन्ने	
२० उपवाम	68	र मंग	2 ज्यागोम	
मीठ नं १८ हता	(१) तियोन नित्र में	क्षीर मं १९ हेखो	1310	

	ा-योग में	<b>ぱ-9-ÿ</b>		,				•	
· .	श्रौदारिकाय योग	'n		१ उपयोग को० नं० १८ नेखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना		
•	%	>>		सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं <b>०</b> १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	,	
ଟ୍ରବ )	दर्शन	m	३-४-५-६-इ-४६-६ के भंग को० नं० १७	क समान जानना (२) मनुष्य गति में ४-६-६-७-७-२-४-६-६ के भंग की० न० १ द के समान जानना	१४ (१) तियंच गति में द-६-१०-११-द-६-१० के भंग को० नं० १७ के समास सात्रत	(२) मनुष्य गति में ८-१०-११-७-४-१-१-९-६-१० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	म विस भ	३७-३६-४२ के मंग-द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय ग्रीर श्रसंजी पंचेन्द्रिय जीव में– को० नं० १७ के ३८-३६-४०-४२ के हरेक मंग में से अनुभय वचनयोग १ घटाकर ३७-३६-४२ के मंग जानना ४३ का मंग-संजी पंचेन्द्रिय जीव में को० नं० १७ के४१ के मंग में से मनोयोग ४. वचन-	त यो १ ४वे भि मंग भि मंग भि मंग
	चौंतीस स्थान	0'	· .		२१ ध्यान ब्युपरत क्सिंग निवर्तिनी शुक्त ध्यान १ घटाकर (२५)		२२ म्रास्तव ४ मिट्यात्व १२, (हिंसक ६-१ हिंस्य ६) क्राय २४, मीदारिकाय योग १ ये ४३ जाननना		

य योग में	<b>ద-</b> ల-,	
भीदारिक काय योग में	ಶ	१ भंग अपने अपने स्थान के हरेक भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग अपने अपने स्थान के हरेक भंगों में से कोई १
0%	>>	सारे मंग यपने यपने स्थान के सारे मंग जानना को० नं० १० देखो सारे मंग अपने यपने स्थान के सारे मंग जानना
( २६० ) कोष्टक नं० १	m·	(५) भोगभूमि में १ से गुर्सा स्थान में ४२-३७-३३ के भंग को० नं० १७ के ५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के योग द्याकर ४२-३७-३३ के भंग जानना (२) मनुष्य गति में १ से स्थाप को० नं० १ द के ५१-४६-४२-३७-२२ के संग को० नं० १ द के ५१-४६-४२-३७-२२ के हरेक भंग में से मनीयोग ४, वचन योग ४ वदाकर ४३-३८-३८-१८ के भंग जानना ७ से १ १ गुर्सा० में १४-१४-११-११-१०-१०-६ के हरेक मंग में से ऊपर के द्योग घटाकर ४३-३८-३८-२-२-१ के भंग को०नं० १ द के २२-१६-१४-१४-१३-११-११-११-१०-१०-६ के हरेक मंग में से ऊपर के द योग घटाकर १३व गुर्सा में १ से ४ गुर्सा० में १ अवातिक काययोग जानना को०नं० १ द के १०-११-१९-३०-३२ के भंग को० नं० १ द के प्राप्त में १२०-११-१९-३०-३१-३०-३१-३६-३०-३१-२६-३०-३१-२६-२०-२१-२६-२०-२१-२६-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-
चौतीस स्थान दर्शन	er ~	र ३ भाव नरकपति, देवगति ये २ घटाकर, ५१ भाव जानना

श्रवगाहिमा-- धनांगुल के असंख्यातवें भाग से एक हजार (१०००) घोजन तक जानना। बंब प्रकृतियां-को० नं० २६ के समान जानना।

चव्य प्रकृतियां—१०६ उदययोग्य १२२ प्र० [में से नरकदिक २, नरकायु १, देवदिक २, देवायु १, वैक्तियिक दिक २, भ्रौ० मिश्रकाययोग १, म्राहारकद्विक २, कामरिए काययोग १, अपर्याप्त १, ये १३ घटाकर १०६ प्र० का उदय जानना ।

२७ सस्य प्रकृतियां—को॰ नं॰ २६ के समान जानना । २८ सस्या—ग्रमन्तानन्त जानना । २६ क्षेत्र—सर्वेलोक जानना ।

काल--नाना जीवों की प्रपेक्षा सर्वकाल जालना । एक जीव की प्रपेक्षा एक समय से श्रन्तामुँहूर्त काल कम २२ हजार वर्ष तक जानना । त्परान – सर्वलोक जानता ।

क्रन्तर—नाना जीवों की क्रपेक्षा कोई क्रन्तर नहीं । एक जीव की क्रपेक्षा एक समय से ३३ सागर नव्नुक्रन्तर्भु हुर्त २ समय तक क्रीदारिक काययोग नहीं घारस् करता ।

मे ११ लाख कोटिकुल घटाकर १४ न। लाख कोटिकुल जाति (ग्रोनि)—७६ लाख ग्रोनि जानना (नरक ४ लाख, देव ४ लाख, ये = लाख घटाकर ७६ लाख जानना) को॰ नं॰ २६ देखो । फुल—१४८।। लाख कोटिकुल जानना । (नारकी २५, देव २६, लाख कोटिकुल जानना को नं० २६ देखो) ।

	औदारिक मिश्रकाय योग में	
( څوځ )	कोष्टक नं ४१	_
	चोतोस स्थान दर्शन	

	अपेक्षा एक जीव के एक जीव के नाना समय में एक समय में	B	सारे गुर्सा स्थान १ गुर्सा स्थान के अपने स्थान के सपने स्थान के सपने स्थान के सुर्मा के सिर्म मारे भंग जानना गुर्सा० में से कोई १ गुर्मा०	होड़ नंड १८ देखी तर्यच-मनुष्य गति में नंड १७-१८ देखी १ समास १ समास १ समास १ समास	१ समास को० नं० १८ देखो	१ भंग को० न० १७ देखों को० न० १७ देखो	१ भंग देखों को० नं० १८ देखों को० नं० १८ देखों
अपयित	नाना जीवों की ऋपेक्षा	US	४ १-२ <b>-४-</b> १३ ये ४ गुर्सा स्थान जानना (१) <sub> </sub> तिर्यंच गति में १-२ गुर्सा स्थान जानना को० नं० १७ (२) मनुष्य गति में	१-२-४-१३ गुण स्थान को० नं० १८ देखो (३) भोग भूमि में-तिर्यंच-मनुष्य गति में १-२-४ गुण स्थान में को० नं० १७-१८ देखो ७ ११) तिर्यंच गति में	७–६–१ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति भं १–१ के भंग—को० नं० १८ देखो	र (१) तियँच गति में ३-३ के भग —को० न० १७ देखो	(२) मनुष्य गति में ३-३ के भंग—को० नं० १८
पयक्षि		አ-Ջ-ድ	धूचना— यहां पर पर्याप्त अवस्था नहीं होतीं है।	9 - B			
कि स्थान सामान्य श्रालाप		er -	१ मुर्सा स्थान १-२-४-१३ मे मुर्सा स्थान जानना	२ जीव समास एकेन्द्रिय सूक्ष्म श्रपप्ति	" बादर ''' द्वीन्द्रिय त्रान्द्रिय चतुरिन्द्रिय गान्त्रीम्बेन्टिंग	तंत्रात्तात्त्रात्त्र्य संज्ञीपंचेन्द्रिय ये ७ जीव समास जानना ३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	·

त्रौदारिक मिश्रकाय योग में	. ប			१ भंग	को० नं० १ न देखी		「あなり〉or ole	१ भंग	को० नं १८ देखी	- · ·	दो में सं कोई १ गांत	े जात	कार वर्ष वर्षा	di b	क्रीत मंत्र शत देखी	१९ १९ १९ १९	को० नं० १७ देखो		१ काय	को० नं० १८ देखो	~				%	मो० नं० १७ देखो	<i>2</i> 52	
ग्रौदारिक मि	Ð			सारे भंग	को० नं० १ न देखो	ू मा	काठ नठ १७ विद्या	क सारे भंग	को० नं० १ द देखी	~	दोनों में से कोई १ गति	र जाति	का० न० १७ दल।		मारा जात	कार्या १ व देवा	को० नं० १७ देखो	•	सारे भंग	को० नं० १८ देखो	~				% भंग	को० नं० १७ देखो		
( २=३ ) कोष्टक नम्बर् ४१	موں	कार के का अस्तान को अस्त का अस्त का अस्त अस्त अस्त अस्त अस्त अस्त अस्त अस्त		(२) मनुष्य गति में	७-२-७ में मंग-कों नं १ द देखों	> ? 	(१) तियम् गति म	(2) मनस्य मिन में	४-०-४ के मंग — की० नं० १ द देखी	ο.	(१) तियंच गति (२) मनुष्य गति	ج د د د	(१) तियच गांत म	४-१ के भग कार न० १७ देवा	(२) मनुष्य गांत म	۲) هه هاه	र मियाँच मियाँच मि	६-४-१ के मंग-को० नं० १७ देखो		१ यसकाय-नो० नं० १८ देखो।	~ *	(१) तियच गति म-ग्रा॰ मिथकाय थाग जानना	काठ न० १७ दावा	(४) मनुष्य गांत मन्त्राठ मध्यकाय यात्र यात्राता	ماه ۲۰ مردر ماه ۲۰ مردر	(१) तियैन गति में	३-१-3-१-3-१-१ के मंग-को० मं० १७ के	। समान जानना
<b>-</b>	አ-ጸ-È		,																									
चौतीस स्थान दर्शन	6	-	•			پر « ر ر	को० न० १ दखा		•	O.	तियंच गति, मनुष्य गति	जाति ५	क्षो० नं० १ देखी			v	क्रो मंग्री हेखी				ह योग	मध्यकाव याग			m	को० नं० १ देखी		
, <b>19</b> '	~					५ संजा	10			S TH. 3	तियंच	७ इन्द्रिय	4a*				ন ড u				ह योग	7470			% विस			

त्रौदारिक मिश्रकाय योग भे		१ वेद को० नं० १८ देखो १ भंग हुए को० नं० १७ देखो १ भंग नो० नं० १८ हेखो	8. ज्ञान न ६ ६ ६ हि १ १ ज्ञान को० न० १ ६ देखो हि न० १७ देखो	<ul><li>१ संयम</li><li>को०, नं० १ द देखो</li><li>१ दर्शन</li><li>को० नं० १७ द खो</li></ul>	< दशन
श्रौदारिक	၅	हैंसारे भंग को० नं० १ द देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १ द देखो	१ भंग को० न० १७ देखो सारे भंग को० न० १	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	को० न० १८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारेभंग को० नं० १८ देखो
( २८४ ) कोष्टक नं० ८१	υ¥	(२) मनुष्य गति में ३-१-०-२-१ के भंग-को० नं० १ द देखो २५ (१) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२४-२३-२५-२४-१६ के भंग- को० नं० १७ के समान जानना (२) मनुष्य गति में २४-१६-०-२४-१६ के भंग-को० नं० १ द के	समान जानना (१) तियीच गति में २-२-३ के भंग-को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-३-१-२-३ के भंग-को० नं० १८ देखो ४ (१) तियाँच गति में १-१ के भंग-को० नं० १७ देखो	(२) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग-को० नं० १८ देखो ४ (१) तियँच गति में १-२-२-२-३ के भंग-को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में	२-३-१-२-३ क भग-को० नं० १८ देखो ६ (१) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग-को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ६-१-१ के भंग-को० नं० १८ देखो
चौतीस स्थान दशन	४-४-४	११ कपाय को० न० १ देखो	<ol> <li>श्वम्नक्षि ज्ञान, मनः</li> <li>प्रयेग्जान ये २ घटाकर</li> <li>(६)</li> <li>१३ संयम</li> <li>भो० नं० १८ देखो</li> </ol>	१४ दर्शन को० नं० १८ देखो	१५ लेख्या को० नं० १ देखो

नीनिस स्थान स्थीन		( २६६ ) क्रोध्यक्ष मन् ८१	स्रोहारिक पि	योटारिक मिथकाय योग में
יואר ייור איוויור				
٤	<b>አ-</b> ջ-è	US	9	'n
२१ ध्यान श्रातेष्यान ४, रीद्रध्यान		११ ११ (१) तिग्रैच गिति में	१ मंग कोर्ंनं० १७ देखो	१ घ्यान को० नं० १७ देखो
४, आज्ञा वि० १, अपायवि० १, सूक्ष्मित्रमा प्रतिपाती १, ये ११		प्र-प्त- के भंग-को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में प्र-१-प्त-१ के भंग-को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० न० १० देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखी
-		m <sup>-</sup> >>	सारे भंग	१ भंग
严 症.		(१) तियैच गति में १ले गुरा स्थान में	श्रपने ग्रपने स्थान के सारे भंग जानना	
कपाय २५, श्राद्यारक मिश्रकाय योग १ ये		३६ का भंग — एकेन्द्रिय जीव में – को० नं०   १७ के ३७ के भंग में से कामिस्सिकाय योग घटाकर		भग जानेना
(£&)	,	३६ का भंग जानना		. •
		ें का भी—हान्द्रिय जाव मान्त्रिय के रेस् के भंगों में से ब्रविरत ७ (हिसक का विषय १ —		
		६ हिस्य मे ७) घटाकर, अविरत द (हिसक के		
		विषय २ + हिस्य ६ य द) बोडकर ३७ का भग जानना	,	
		के भंग में से अविरत द घटाकर अविरत ६ (हिंसक		
		के विषय ३ + ६ हिस्य पे ६) जोडकर ३८ का		•
		भग जातना ३६ का भंग – चतरिस्टय जीव में स्प्राप्त के		
		३= भंग में से अविरत ६ घटाकर, अविरत १० (हिसक		3,
		के विषय ४ + ६ हिस्य ये १०) जोड़कर ३६ का		
		भंग जानना		
		४२ का भंग श्रसंजी पंचेन्द्रिय जीव में-जपर	•	
	,	के ३९ के भंग में से अविरत १० घटाकर, अविरत		
		११ । हिसक क विषय ५ - ६ हिस्य ये ११)		
	·	जाड़कर आर स्त्रा-पुरुष वद्य र जाड़कर ४२ का		
,		して で で で で で で で で で で で で で で で で で で で		

,	.1		1	•	•				_											,									•		
	श्रकााय योग में	ប													,									ر بنا بنا	को० नं० १७ देखो		८ भंग	को० नं० १८ देखो			
	श्रौदारिक मिश्रकााय योग	9																					•	सार भंग	को० नं० १७ देखो	~ /	सार भग	का० न० १५ द्वा			
( રવલ )	कोष्टक नं० ४१	UY	४३ का भग-संज्ञी पचेन्द्रिय जीव में-को० नं० १७ के ४४ के भग में से कार्मासकाय योग	१ घटाकर ४३ का भंग जानना : ने समा स्थान में	३१-३२-३३-३४-३७ का भंग डपर के १ले	गुए के ३६-३७-३८-३६-४२ के हरेक भंग में से	मिच्यात्व ५ घटाकर ३१-३२-३३-३४-३७ के भंग	अनिना	३ मा भग - अपर के सन्ना पचीन्द्रय जीव क	४३ भग म स मिथ्यात्व १ घटाकर ३८ का भग जानना	४या गुरा स्थान यहा नहीं होता	र. भोगभूमि में- १ले २रे ४थे मुस्रा० में	४२-३७-३२ के मंगको० नं० १७ के ४३-	३८-३३ के हरेक भंग में से कर्माएकाय योग १	घटाकर ४२-३७-३२ के भंग जानना	(२) मनुष्य गति में	8३-३६-३२-१ के भंग-को० नं० १८ के ४४-	३६-३३-२ के हरेक मंग में से कामिष्पिकाय योग १	घटाकर ४३-३ द-३२-१ के भंग जानना	२. भोषाभूमि में-१ले २रे ४थे मुरा॰ में	४२-३७-३२ के मंग-को० नं० १८ के ४३-	डद-३३ के हरेक भंग में से कार्माणकाय योग १	घटाकर ४२-३७-३२ के भंग जानना		(१ तियंच गति में	48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-4	कि भंग को० नं० १७ के समान जानना	d		न्० १८ के समान जीननी	
	ान दर्शन	ት % ቱ								٠		•	. · .		•	1						+.					•				
	चौतीस स्थान दर्शन	~		***************************************	, ( m g , m .						-		,		-				,	******		•	-	रेड़ भाव ४५	क्रुयविध ज्ञान १, मनः	प्ययंत्रान १, उपयामसम्यम्त्व	उपसमनिरित्र १ नरक	गति १, देवगति१, संयमा-	संयम १, सरागसंयम १, ये	न भाव पटाकर ४४ जानना	•

उदय प्रकृतियां—९८ उदययोग १२२ प्र॰ में से महानिद्रा ३, मिश्र सम्यक्त्व १, नरकद्विक २, नरकायु १, वेजियकद्विक २, २४ ं वंष प्रकृतियां—११४ वंधयोग्य १२० प्र॰ में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवायु १, आहारद्विक २, ये ६ घटाकर ११४ प्र॰ का बंध जानना प्रवगाहना--वनांगुल के असंख्यातवें भाग से कुछ कम एक हजार योजन तक जानना।

स्राहारकद्विक २, तियंच गत्यानुपूर्वी १, मनुष्य गत्यानुपूर्वी १, परघात १, उच्छवास १, स्रातप १, उद्योत १, विहायोगति २, स्वरद्विक २, ये २४ घटाकर ६८ प्र० का उदय जानना ।

सत्व प्रकृतियां---१४६-नरकायु, देवायु १ ये २ घटाकर १४६ प्र० का सत्व जानना

संस्था--अनन्तानन्त जाननः।

S

क्षेत्र—सर्वलोक जानना। सर्गतंत्र सर्वजीक नारका

स्पर्शन-सर्वलोक जानना ।

काल--नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अंतर्भे हुत्ते तक जानना ।

श्रन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई श्रन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा एक समय से ३३ सागर तक और एक समय से श्रंतमुँहर्त तक एक कोटिपूर्व तक श्रौदारिक मिश्रकाय योग की प्राप्ति न हो।

कुल—१४८।। लाख कोटिकुल जानना । (को० नं० ४० देखो)

w
Is.
••
_

कोव्टक मं० ४२
नाना जावों की अपेक्षा
४ ) नरक गति में और रवगित में हरेक में में ४ तक के मुरा० जानना
र १) नरक क्रीर देव गति में हरेक पे १ संजी पंचेस्टिय पर्यात जानना को० नं० १६–१६ देखो
६ देय गति में हरेक में नं० १६–१६ देखो
१० (१) नरक और देवगति में हरेक धे १० का मंग की० न० १६–१६ देवो
४ सरक ग्रीर देव गति में हरेक में ग संग को० तं० १६–१६ देखो
२ (१) नग्दः ग्रोर देव गति में जानना को० नं० १५–१६ देखो
१ ११) नरक बीर देव गति में हरेस में १ पेनेस्टिय सामि साममा

चौतीस स्थान दर्शन	( २६० न दर्शन	× ×	बैत्रिपिक क	वैत्रियिक काय योग में
۵	m	>>	<b>x</b>	प्र- <b>०</b> -५
द काय १ यसकाय	१ (१) नरक ग्रौर देव गति में हरेक में १ समसम्प्र स्रेट नं १६ १६	१ त्रसकाय को० नं० १६-१६ देखो	१ त्रसकाय को० नं० १६–१६ देखो	
ह योग वैक्तियिक काययोग	र तसकाथ काठ पठ ९६–१८ दखा १ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ वैत्रियिक काय योग जानना	१ को० नं १६-१६ देखो	१ को नं० १६-१६ देखो	
१० वेद को० नं० १ देखो	को० नं० १६–१६ देखो ३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग १ नपुंसक वेद को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ रखो	
११ कपाय को० नं० १ देखो	(२) देवगति में २–१–१ के मंग को० नं० १६ देखो २५ (१) नरक गति में २–३–१–६ के मंग को० नं० १६ देखो	सारे मंग को नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६–१६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १६–१६ देखो	
१२ ज्ञाम को० नं० १ देखो	(२) देव गति में २४–२४–१६–२३–१६–१६ के भंग को० नं० १६ देखो ६ (१) नरक गति में ३–३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो	
१३ संयम	(२) देव गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखों १	सारे भंग को० न० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १	i. '
अत्ययम १४ दर्शन को० नं० १६ देखो	(१) नरक शार दनगात म हरक म १ असंयम जानना को० नं० १६–१६ देखो ३ (१) नरक गति में २–३ के भंग को० १६ देखो	को० नं <b>०</b> १६–१६ देखो १ मंग को० नं <b>०</b> १६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो १ वर्शन को० नं० १६ देखो	

चोतीस स्थान दर्शन	( २६१ कोप्टक नं०	~ %	वैत्रियिक	वैत्रियिक काय योग में
	m	>	<b>ઝ</b> ⊀	¤-೯->
	(२) देव गति में २३ के मंग की० वं० १६ देखी	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	
	(१) नरक गति में	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो	
	३ का मंग को० नं० १६ देखो (२) देव गति में १-३-१-१ के मंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० न० १६ देखो	१ लेख्या को० नं० १६ देखो	
•	२ (१) रक गति में	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ ग्र <sup>-1</sup> स्या को० नं० १६ देखो	
(r • .r	२-१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) देव गति में ५-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ अवस्या को० नं० १६ देखो	
٠ ٣,	१) नरक गति में	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	•
\$ \times &	१-१-१-३-२ क मंग का नं० १६ दल। (२) देव गति में १-१-१-२-३-२ के मंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्तन को० नं० १६ देखो	
<i>۳</i> ۵۰	् (१) नरक ग्रौर देवगति में हरेक में १ मंत्री जानना को० नं० १६–१६ देखो	१ को अन्त १६-१६ देखो	को० नं० १६–१६ देखो	
ٽ م	१ (१) नग्क ग्रीर देव गति में हरेक में १ मादारक जानना को० नं	१ को० नं० १६–१६ देखो	१ को० नं० १६–१६ देखो	
	१ १) नरक ग्रीर टेव गति में हरेक में ५-६-६ के भंग को० न० १६१६ देखो	१ भंग को० नं० १ <sup>7</sup> –१६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६–१६ देखो	
	१० (१) नरक श्रीर देव गति में हरेक में द-६-१० के मंग को० नं० १६-१६ देखो	सारे मंग को० नं० १६-१६ देखो	१ घ्यान को० नं० १६-१६ देखो	

काय योग में	ช- อ พั	
वैत्रियिक काय	24	अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६ देखा भंगे में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६ देखों भंगों में से कोई १ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६ देखों
۲۰۰۰ کې	>>	सारे भंग सारे भंग जानना को० नं० १६ देखी सारे भंग जानना कारे भंग जानना को० नं० १६ देखी सारे भंग जानना को०नं० १६ देखी सारे भंग जानना को०नं० १६ देखी
, १६२ कोप्टक नं	m	४२ का भंग को० नं० १६ के ४६ के भंग में से मनोगोग ४, बचनयोग ४ वे व योग घटाकर ४१ का भंग जानना २१ गुएए० में ३६ का भंग जानना ३६ का भंग जानना ३६ का भंग जो० नं० १६ के ४४ के भंगों में से ऊपर के व योग घटाकर ३६ का भंग जानना ३२ थे गुएए० में ३२ का भंग को०नं० १६ के ४० के भंगों में से उपर के व योग घटाकर ३२ का भंग जानना १२ देवगति गति में १ से ४ गुएए० में ३२ का भंग को०नं० १६ के ४०-४५-४१-३६-३२-३२ के भंग को०नं० १६ के ५०-४५-४१-३६-३२-३२ के भंग जोनना में से ऊपर के व योग घटाकर ४२-३७-३३-४१-३६-३२-३२ के भंग जानना में से ऊपर के व योग घटाकर ४२-३७-३३-४१-३६-३२-३२ के भंग जानना है ११ नरक गति में १ से ४ गुएए० में २६-२४-२४-२६-३७-२१-२६-२४-२६-३७-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-
चौंतीस स्थान दर्शन	2 2	२२ ग्रास्तव ४, अविरत १२, (हिंसक के विवय ६ + ६ हिंस्य ये १२) कषाय२५, ये ४३ ग्रास्तव जानना ये ४३ ग्रास्तव जानना है अवश्यन-सायिक स० २, क्रियान ३, सिंच्या ६, सर्योपश्रम सम्प्राल्व १, सर्यापश्रम १, संस्था दर्शन १, यसंयम १ ग्रजान १, प्रसंयम १ ग्रजान १

	~	
	१, सुक्ष्म	
	خہ	, .
<u>व</u> ाग्या ।	, साधारसा	,
=	oř	
1181	क्षेत्र .	
र्य	यक (	
० वनुप अवगाहन	वैत्रियिक दिक २	
0	_:	-
×.	್⊶ ಣ	निन
रिगितिह में एक हाथ और ७व नरक में ५००	देवायु	15
1	$\alpha$	12
9व	150	15
K	देवद्विक	्रा द
ᅺ		>
हाध	कायु १,	, c
16	क्र	15
127. 14T	म्	· 12
þγ	G,	ų. U
正	15	٠
1	म	(1)
4	नरकदिक	ŀ
H	/सर	माजानमध्य ३ मे १० घटाकर १०४ वंध प्रकृतिया
जानमा	主	
le Je	ъ К	E
तिक	× ×	
० वन्प	) ~ ) ~	.
0	4	
2,	े कि	4
dr	4.	. ;
213	۵ ر	
. एक द्राय मे	ء ۾	•
آ	i in	÷ .
i.	ال السارة	<u>:</u> ئ
1		*
F	* .	o T

उदय प्र≅तियां—∽९ ज्ञानावरस्यीय ५, दर्शनावरस्यीय ६ (३ महानिद्रा घटाकर), वेदनीय २, मोहनीव २८, नरकाथु १, देवायु १, नरक गति १, देवगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, व क्रियिकद्विक २, तैजस १, कामिए। १, हुंडक संस्थान १, समचतुरस्रवसंस्थान २, स्पर्शादि ४, अमुहल हु १, उपवात १, परघात १, ख्वासोच्छवास १, बिहायोगति २, शुभ प्रकृति १०, (प्रत्येक वादर श्रस, पर्याप्त, सुभग, स्थिर, गुभ, मुस्वर, ब्रादेय, यदाः कीर्ति ये १० जानना) ब्रगुभ प्रकृति ६ (दुर्भग, ब्रस्थिर, ब्रगुभ, दुःस्वर, ग्रनादेय, अयशः कीर्ति मे ६ जानमा) निमास्सि १, गोत्र २, मन्तराय ५, मे ८६ प्र० का उदय जानना । स्यावर १, विकलत्रक ३, याहारकाद्वक

प्रकृतियों (साधार्सा, सुक्षम, स्थावर, का उदय एकेन्द्रिय तियंच गति में ही होता है और ४था अपर्याप्त सभुभ प्रकृति का उदय सूचना --१० गुभ प्रकृतियों का उदय देवगति में ही होता है और ६ यगुभ प्रकृतियों का उदर नरक गति में हो होता है । येप ३ यगुभ लह्द्य पर्वाप्तक (सियंच) जीवो में हो होता है ग्रीर ये जीव मनुष्य ग्रीर तिर्यचों में पाये जाते हैं।

, सत्य प्रकृतियां—को० नं० २६ के समान जानना।

संख्या—-ग्रसंख्यात जानना।

जानना और सविधि सिद्धि के श्रहमीन्द्र देवों में ७वें नरक तक जाने की वासि है, परन्तु वे जाते नहीं इसिलिये यहां यासि ल्यजन--लोक का यसंख्यातवां भाग ग्रथांत् १६वॅ स्वगं का देव किसी मित्र को संवोधन के लिये ३रे नरक तक जाता है इस ग्रपेक्षा से १६वॅ स्वगंसे मध्य लोक ६ राजु नीचा है ब्रौर मध्य लोक से तीसरा नरक २ राज नीचा है ये न राजु लोक का असंख्यातवां भाग की ग्रपेक्षा से १३ राजु स्पर्शन बतलाया गया है। (जैसे सर्वासिद्धि से मच्य लोक ७ राजु नीचा है ग्रौर मघ्यलोक से ७वां नरक क्रेत्र--लोक का ग्रसंख्यातवां भाग प्रमास् जानना ।

यन्तर—नाना जीवों की यपेक्षा यन्तर कोई नहीं, एक जीव की यपेक्षा एक समय से यसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक --नाना जीवों की भ्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मे हुत काल तक जानना । ६ राजु नीचा है, ये १३ राजु जानना) न घारस्य कर सके।

जाति (योनि)— = लाख योनि जानना । (नरक गति ४ लाख, देव गति ४ लाख ये = लाख जानना)। कुत---५१ लाख कोटिकुल जानना । (नरफ गति २५, देवगति २६ ये ५१ लाख कोटिकुल जानना)

चोंतीस स्थान दर्शन	ान दर्शन	( २६४ ) कोष्टक नं०४३	वैक्तियिक	वैक्तियिक मिश्रकाय योग में
फ्र० स्थान सामान्य आलाप	पयिति	अपयक्ति		
		नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
~	<b>⊁-</b> 8-€	υ¥	9	r
१ गुर्सा स्थान ३	सूचना — ग्रन्मं एउ एग्रीप	हे प्रसाम क्षेत्र भी भी सम्म (०)	सारे गुरा स्थान साथे साथे	१ मुर्गा स्थान को० नं० १६-१० हेखो
0 12 15 to 0 - 2 - 3	प्ता १८ प्यात अवस्था नहीं	भात म <b>ा</b> १००५ तिम		
	होती है।	१-२-४ ये ३ गुरा स्थान जानना को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो	
२ जीव समास		~	१ समास	
संजी पंचेन्द्रिय अपयाित		(१) नरक ग्रीर देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो
		१ संजी पंचेन्द्रिय अपयांत्र जीव समास जानना को० मं० १६-१९ देखो		
३ पयिस्ति ३		·; m	० भंग	१ भंग
नं० १ देखी		(१) नरक और देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो
		३ का भंग को० नं० १६-१६ देखो लडिघ ह्न ६ पर्यापि		
४ प्रासा		<b>9</b>	१ भंग	१ भंग
को० नंट १ देखो		(१) नरक और देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१६ देखी
		७ का मंग को० न० १६-१९ देवो		· ·
र तथा को० मं० १ देखो		हैं (१) सरक ग्रीप टेवगति में झरेक में	होते में १८-१९ हेखो	र मग को० नं० १६-१९ देखो
•		४ का मंग को० नं० १६-१९ देखो	<i>y</i> · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
६ गति		v	१ मित	१ मति
नरकगात, देवगात		(१) नरक ग्रौर देवगति जानना	को० न० १६-१६ देखो	को० नं १६-१६ देखी
१० दक्षिण जामि		का० न० १६-१९ देवा ०		4
पति जान		्र (१) नरक ग्रीर देवगति में डरेक में	र जाति म	को मं १६-१६ देखो
			こうと ノインと コニュニ	

.

चौतीस स्थान दर्शन	म	( २६५ ) कोष्टक नम्बर् ४३	वैभिषिक मि	वैिक्रियक मिश्रकाय योग में
8	<i>እ-</i> Ջ-È	υy	ഇ	, tr
		१ पंचोन्द्रय जाति जानमा को० नं० १६-१६ देखो		
, द काय १		200	~	۵.
त्रसकाय		(१) नरक और देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो
		१ त्रसकाय जानना, को० नं० १६-१६ देखो		
ह याग नेभ्दिमित्त पिश्यमात गोग		%	~ 4	~
		१ वे मिश्रकाय ग्रोग जानमा	का० न० १६-१६ द्वा	का० न० १६-१६ देखो
		कोठ नं १६-१६ देखी		-
		ın	१ वेद	tu to
को० नं० १ देखो		(१) नरक गति में-१ नपुंसक वेद जानना	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
		को, तं, १६ देखो		
		(२) दनगति में	सारे भंग	० वेद
		२-१-१ के भंग-को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
*		3 CO (	सारे भंग	१ मंग
का० न० ९ दखा		(१) नरक गांत म	अपने अपने स्थान के सारे	कोठ नंठ १६ देखो
		२३-१६ क भग-का० न० १६ दखा	भंग को० नं० १६ देखो	
		(x) add. (t) add. (x)	सार भग	्र भग
		46-48-{6-44-{6-46 % 44- 410 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40	का० न० १६ द्वा	का० न० १६ देखा
१२ जान			माने भंग	
कुमति १, कुश्रुत १,		(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को० मं ३ १६ हेस्बो
भान ३ यं ४ जानना		२-३ के भंग-को० नं० १६ देखो		
		(२) दंबगति में	सारे मंग	१ सान
ه سنبت د و		२-२-३-३ के भग-को० न० १६ देखो	को० नं० १६ हेखो	को० नं० १६ देखो
्र तथन प्रमंग्रम		्र भ जर्मन से मीमाम्स मीम सरम (०)	सरिभग	े संयम
		१४) गर्भ गर्भ भार दुन्भार प्रस्थित १६-१६ देखी	155 01.55 01.055	काठ न० १६-१६ दखा
१४ दर्शन		m	१ मंग	र दर्शन
भी नं १६ देखो		(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	कों नं १६ देखी
2.00			girmink	

स्क्रिंट	मित्रक मंद्र ।		A THE PROPERTY OF THE PARTY OF
वातात त्याम ब्याम	2	व। नाथक	मञकाय याग म
A . X - E	UP	. <b>១</b>	March Services
	२-३ के भंग-को० नं० १६ देखो		
<u></u>	(२) देवगति में	१ भंग	१ दर्शन
े प्रस्कृतिक	२-२-३-३ के मंग-को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	्को० नं० १६ देखो
, नं० १ देखो	र् (१) नरक गति में	को० नः ० १६ - अयो	१ लेह्या क्रो० मं० १६ हेको
	३ का भंग-को० न० १६ दखो		
	(२) बेबगति में	भंग	. १ जेश्या
१६ भव्यत्व	. ५-३-१-१ क अग-का० न० १९ दहा 5	कोंं नं १६ देखों	को० नं० १६ देखो
भव्य, अभव्य	(१) नरक ग्रीर देवगति में हरेक में	१ भग को० नं० १६-१९ देखो	   को० नं० १६-१६ देखो
श्रिक सम्मन्त्रम्	२-१ के मंग-कों नं १६.१६ देखो		
र तान्त्रन्त्व १५	z (	सारे भंग	१ सम्पन्ध
11. 4clar (4)	(१) नर्भ पाता म	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
	(२) हेबमित में	.ļ. 1	Tuesday Bar O
\$ \$ 1	१-१-३ के भंग-को० नं० १६ देखो	कोट मं० १६ देखो	र्सम्पर्वत्व को० मं० १६ देखो
रद संज्ञा		१ भंग	9 和 <b>司</b> 和
संग	(१) नरक शौर देवगति में हरेक में	को० नं० १६-११ देखो	नगे १६-१६ देखो
१६ माहारक	१ संशी जानना को० न० १६-१९ दखो		•
ग्राहारक, ग्रनाहारक		सारभग	१ अवस्या
- C	१-१ के मंग-को० नं० १६-१६ देखो	B な ひ	ं कार्य तर्भ र स्वात
त्र द्वादान् क	u	१ भंग	१ डपयोग
	(१) नरक मि । ।	को० नं० १६ देखो	को नं० १६ देखो
	४-६ स भग-ना० १६ देखो ४२) भुजनान भ		€ '
	(人) 4441114 中 (人) 425-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X	्र भाग	१ उपयोग
		का० न० १६ द्वा	कोठ नठ हि देखी
कीं० न० १६ देखो	(१) नरक और देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो
	a-ह क भग-का० न० १६-१६ देखा		•

वैन्नियिक मिश्रकाय योग में	រេ	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग क्यो० नं० १६ देखो			
वैिक्षियक मि	<b></b>	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारें भंग को० न० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो			
( २६७ ) कोष्टक नं० ४३	US*	1 <del>5</del> 1	हरक भग म स कामार्याकाय याग र घटाकर ४१-३० के भंग जानना (२) देवगति में ४२-३७-३२-४१-३६-३:-३२ के भंगको० नं० १६ के ४३-३६-३३-३२ के भंगको० हरेक भंग में से कामर्याकाय योग १ घटाकर	४५-३७-३५-३६-३२-३२ क भग जानना ३= (१) नरक गति में	४४-४७ भ भग – काठ नठ १६ दखा (२) देवगति में २६-२४-०-२६-२४-२=-२३-२१-२६-३६ के मेग—कोठ नंठ १६ के समान जानना	1		
i.	አ-Ջ-È				·		,	
चींतीस स्थान दर्शन	٤	२२ शास्त्रव ४३ मिष्यात्व ४, श्रविरत १२, हिसकविषय के ६ + ६ हिस्य)	योग १ ये ४३ जानता	२३ भाव को सुर ४० से ३६ से	भागें में से कुक्रवित ज्ञान नटाकर ३५ भाव बानना			

	or .	ļ	Ē
	TP TP	_ ;	о Х
	ायो	निन ४	مو 0
	कि	° ব ণুন	, ,
	~`	0 F	5
	3वास	٠ م	-
	3 1	α χ α	- -
-	~ 2	ر م <del>ال</del> ال	?
निन	ध्वात	у. ф. ф	•
રા જ	F (#	<u> </u>	•
वै ० काय योगियों की ग्रवगाहना से कुछ कम ग्रवगाहना जानना । । ४२ के १०४ प्र० में से तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ मे २ घटाकर १०२ जानना	-७८ का० न० ४२ क द६ प्र० में से मिश्र सम्पर्कत १, नरकगति १, देवगति १, परवात १, उच्छवास १, विहायोगति स्वरिद्वक २, ये ६ घटाकर शेष ७७ प्र० में नरकगत्यानपवी १. हेवगत्यानपत्ती १ में स्मेत्यम १०० म	न देव या नरकायु में से कोई १ और मध्यमान तियैच या मनुष्य मायु में से कोई १ छे २ घटाकर १४६ म.	9
के वै ० काय योगियों की श्रवगाहना से कुछ कम श्रवगाहना जानना नं० ४२ के १०४ प्र० में से तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ मे २ घटाकर	विगारि एत्री	्य ।	,
न जा	, e	# 0°	,
गहन ये २	ति १	य्यं <u>भ</u> यां -	
श्रव। पु	रकम हे.	र्रे तियः	
कम ुष्याः	व्युः म	मान	
म ख	व १,	्र मध्य	
ें एवं फी	न्यक्त कगत्	<u>1</u> ₹	
हिना थैचा	× + +	~ ~	
प्रवग् ते ति	中,	के कि	
मंब	tr k tr 9	ΛĐ	
यः	म् ५	ম কু	
योगि १०४	지 의 의	1रक	
भ भ	म तिस	याः	
و کی ج	W 60	io io	
भुक्त भुक्त भुक्त	न् स	मान	
रें भी दें	<u> </u>	भुज्य	गान
भू भू	र नर्हा	w W	सत्व जानना
णाहना—को० नं० ४२ के वे प्रकृतियां—१०२ को० नं०		~	Þ
ी संयाः स्थि		तयां-	
गहन प्रकृति	તે જ	प्रकृ	
प्रवगाहना—को० नं० ४२ के वंघ प्रकृतियां—१०२ को० नं	उरुष अष्टातया—७६ को व के ४२ के दूर प्रव में से मिश्र सम्पक्त १, नरकगति १, देवगति १, वरवात १, उच्छवास १, विहायोगति २, स्वरिद्वक २, ये ६ घटाकर शेष ७७ प्रव में नरकगत्यानपर्वी १. हेवगत्यानपत्री १ से स्मेरकम् १०० म	सन्व प्रकृतियां—१४६ भुज्यमान	
> >< w	<u>,                                    </u>	9	

२८ संख्या--- असंख्यात जानना ।

६ क्षेत्र--लोक का श्रसंख्यातवां भाग प्रमासा जानना।

० स्पर्धत—लोक का संख्यातवां भाग प्रमासा जानना।

काल--नाना जीवों की अपेक्षा अंतर्भु हुत्ते से पल्य के असंख्यातवें भाग तक यह योग निरन्तर चलता रहता है। एक जीव की अपेक्षा अंतर्भु हूत्तै से अंतमुँ हुत तक जानना।

भ्रग्तर—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से १२ मुहूर्त तक संसार में किसी भी जीव के वैक्तियक मिश्रकाय योग न होता हो यह संभव है वर्षे से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक वै० मिश्रकाय योग प्राप्त न हो सके अन्य एक जीव की श्रपेक्षा साधिक दस हजार गतियों में ही जन्म लेता रहे। 3

फुल – ५१ लाख कोटिकुल बानना, (नरकगति के २४, देवगति के २६ ये ५१ लाख कोटिकुल जानना) जाति (योनि)—- द लाख योनि जानना, (नरकगति ४) लाख, देवगति ४ लाख, ये ६ लाख जानना)

			388		•	,
चीतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक	<b>&gt;</b>	आहारक काययोग या आहारक मिश्रकाययोग	हारक मिश्रकाय	योग में
क्र ह्यान सामान्य भालाप	र वयसि				अपयपि	æ
	नाना जीव की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
۵٬	m	>>	⇒¢ (	US	g	៤
१ गुण स्थान १ ६वां प्रमत्त गुण्	१ ६वां प्रमत्त गुरा० जानना	~	<b>~</b> ,	१ ६वां प्रमत्त गुर्ण स्थान	~	~
जानगा २ जीव समास संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कोन नामांघ से (२)	१ संज्ञी पं० पर्याप्त	१ समास संज्ञी पं० पर्याप्त	१ समास संज्ञी पं० पर्याप्त	१ संज्ञी पं० श्रपयिति	१ समास संज्ञी पं० ग्रपयिति	१ समास संजी पं० अपयप्ति
नार नापात प्रत्र इ पर्यापि को० नं० १ देखी	६ ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	३ ३ का मंग को०नं०१ द देखी लडिस ह्प ६ पर्याप्ति	१ भंग ३ का भंग	१ मंग ३ का मंग
४ प्रासा को० न०१ देखो	१० १० का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	७ ७ का मंग को०नं० १ द देखो	शंग ७ का भंग	<ul><li>भंग</li><li>७ का मंग</li></ul>
थ् संज्ञा को० नं० १ देखो	४ का भंग को० न० १८ देखो	८ भंग ४ का भंग	१ भंग का भंग	४ ४ का भंग को ०नं० १८ देखो	१ मंग ४ का भंग	<b>० भग</b> ४ सा भग
६ मति मनस्य गति		~	· · ~	१ भनव्य गति		•
७ इन्द्रिय जाति १ पंचित्रिय जाति	ं3 १ पंचेस्टिय जाति जानना	۰.	~	क्रिय जाति जानना	•	~
० काय न्यास्था	\ \ \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	~	~	१	~	~
र योग १ श्राहारक कावयोग या	रतान जाना १ ब्राहारक काययोग जानना	हाययोग	१ म्राहारक काययोग	ाताच जानम् १ म्राहारक मित्रकाययोग	~	<u>~</u>
भाहारक नियक्ताययात जिसका विचार करना हो यो योग जानना		जानना	वास्ता	जानना		The space of the state of the s

पुष्ठा वेद जानता  रिका भंग कीठ नंठ : त के अं-2,-2 के अंग कीठ नंठ ?  समान जानता  रे का भंग कीठ नंठ : त के अं-2,-2 के अंग कीठ नंठ ?  समान जानता  रे का भंग कीठ नंठ : त के अं-2,-2 के अंग कीठ नंठ ?  समान जानता  रे का भंग कीठ नंठ ? त के अंग भंग है के अंग समान जानता  रे का भंग कीठ नंठ ? त के अंग भंग है के अंग समान जानता  रे का भंग कीठ नंठ ? त के अंग भंग है के अंग में से अंग में अंग में से	चातास स्थान दशन	शन	कोष्टक नं०	2,2	श्राहारक काययोग या	आहारक मिश्रकाय योग	ाय योग में
हाद भंग हु भंग हु प्राप्त प्रवादित्व की० नं० हु भंग हु भंग हु का भंग की० नं० हु		er	>>	<b>5</b> 4	ur	ອ	ır
सारे भंग   १ भंग   भंग   १ भंग   भंग   १ भंग   १ भंग		~	~	~	~	~	~
्र को अ-4-६ के भंग को ० नं ० १ ८ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	पुरुष	वेद जानना	!! //		पुरुष वेद जानना	•	•
कोठ नं	९१ का भंग	८ को० नं०	४-४-६ के भंग	१ भग को० नं० १८	%	सर्	1. 1.
सारे भंग   ६ ज्ञान   ३ का भंग   ३ का भंग   ३ का भंग   ३ का भंग   २ का भंग	समा	ानना	को० नं० १८ देखो	देखो	7555	2	खी
दिन के कि		m	मारे भंग		ſ	:	
१८ के १ का भंग १ संयम २ का भंग को० नं० १८ के समान सारे भंग सारे भंग १ का भंग के समान जानना सारे भंग सारे भंग १ दर्जन के समान जानना सारे भंग १ दर्जन के समान जानना सारे भंग १ तेह्या के समान जानना सारे भंग १ तेह्या के समान जानना सारे भंग पर्याप्तवत् १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	३ का भं	म कों० नं० १ त के			الله الله الله الله الله الله الله الله	सार भग	
१८ के       र का मंग       १ का मंग       २ का मंग       में समान जीनना       सारे मंग         १८ के       ३ का मंग       १ के मंगों में से       ३ का मंग को० नं० १८       पर्यातवत्         १८ के       ३ का मंग       १ के स्था मंग       १ के मंगों में से       १ के मंगों में से       १ के मंगों में से       १ के मंग मंग       १ का मंग </td <td></td> <td>समान</td> <td></td> <td></td> <td>- 48</td> <td><del>-</del></td> <td></td>		समान			- 48	<del>-</del>	
१८ के       र का मंग       र का मंग       र का मंग       के समान जानना         १८ के       इ का मंग       ३ के मंगों में से ३ का मंग को० नं० १८       प्यितिवत्         १८ के       सारे मंग       १ के मंगों में से ३ का मंग       प्यितिवत्         १८ के       १ का मंग       प्रविवत्         १८ के       १ का मंग       १ का मंग         १८ के       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग         १८ का मंग       १ का मंग       १ का मंग		G.	सारे भंग		ر د د	माने भंग	
सारे भंग १ दर्शन है समान जानना सारे भंग है के भंगों में से है का मंग को० नं० १८ पर्याप्तवर्त् सारे भंग १ केव्या है का भंग व्यक्तिवर्त् १ १ १ मच्य जानना सारे भंग व्यक्तिवर्त् सारे भंग १ के भंगों में से १ भच्य जानना सारे भंग १ के भंग में से १ भच्य जानना १ का भंग १ के भंग में से १ का भंग १ के भंग में १ का भंग १ के भंग में १ का भंग १ के भंग में १ का भंग १ का भंग १ का भंग १ का भंग संजी १ का भंग स्वी	२ का भं	ग को० नं० १८ के	२ का भंग		र का भंग को० नं० १८	र का भंग	र का भग
सारे मंग १ दर्शन हे का मंग को० नं० १ प्यितिवत् कोई १ दर्शन के समान जानना सारे मंग सारे मंग १ लेख्या को० नं० १ देखो सारे मंग कोई १ लेख्या को० नं० १ देखो १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	सम	नि जानना			के समान जानना		
इ का मंग     ३ के मंगों में से     ३ का मंग को० नं० १०     पर्याप्तवत्       सारे मंग     १ के संगों में से     ३ का मंग     पर्याप्तवत्       १     १     १     १       १     १     १     १       १     १     १     १       सारे मंग     १ का मंग     १     १       १ का मंग     १ का मंग     १     १       १ का मंग     १ का मंग     १     १       १ का मंग     १ का मंग     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १     १     १       १     १     १	•	m	सारे भंग	१ दर्शन	m	सारे भंग	० तथीन
सारे मंग १ लेख्या ३ क समात जानता सारे मंग १ लेख्या ३ का मंग पर्याप्तवत् १ हेक्या को० नं० १ द देखो १ १ १ भेद्य जानता १ १ भम्यक्त्व २ सम्प्रक्त्व २ का मंग २ के मंग में से २ का मंग २ का मंग २ के मंग में से २ का मंग २ का मंग १ के मंग में से २ का मंग २ का मंग १ के मंग में से २ का मंग २ का मंग संज्ञी १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	र का भ	म को० नं० १८ के	३ का भंग			पयितिवत	प्यक्तिवत
सारे भंग १ लेख्या ३ का भंग पर्याप्तिवत् १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	सम	ान जानना	•	नोई १ दर्शन		,	
३ का मंग   ३ के मंगों में से   ३ का मंग पर्याप्तवत्   १	•	m ,	सारे भंग	१ लेखा	m	सारे भंग	१ लेडया
श्रु १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	अ का भ	म को० नं० १८ के	३ का भंग	46	३ का भंग	पयितिवत	प्याप्तिवत.
सारे भंग १ सम्प्रकत्व २ सारे भंग २ का	सम	ान जानना		कोई १ लेखा	ស	,	,
सारे भंग १ सम्यक्त्व २ सारे भंग २ का भंग १ का भ	,	~	~	~	•	~	~
सारे भंग   १ सम्यक्त्व   २ सारे भंग   २ का	में	मन्यं जानना ० नं० १८ देखो		`	१ भव्य जानना	•	*: •
२ का भंग   २ के भंग में से   २ का भंग   २ क		6		9 मध्यक्षत	ſ		
<ul> <li>१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १</li></ul>	२ का	भंग को० न० १८	का भंग	12 第 44 年 年	ر البائد الله در	तार भग	स स्यक्ति
१     १       संजी     १ का मंग       संजी       १     १       श्राहारक     १ का मंग       आहारक     १ का मंग		देखो		कोई १ सम्यक्त	को० म० १० हेखो	च । जिल्लामा	र म त काइ
संजी १ का मंग संजी को० नं० १ देखों १ श १ १ आहारक प्राहारक शाहारक को० नं० १ देखो		~	~		10 5 5 7 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5	•	्रताम्पुरव्
१     १       आहारक     १       आहारक     १ का भंग       को० नं० १८ देखो	१ का ३	रंग को० नं० १८	संजी	संजो	१ का भंग	् संजी	संजी
, १ १ १ आहारक प्राहारक १ का भंग आहारक को० नं० १	•	द्धा	0	¢	<del>م</del> ت		
को० नं० १ द देखो	ر 10-	मंग को० नं० १८ देखो		आहारक		अहासक	१ ग्राहारक
	_				मं० १८	,	,

काय योग में	tr'	१ उपयोग पर्याप्तवत् १ ध्यान ७ में से कोई १ ध्यान जानना १२ का भंग जानना को० नं० १८ देखो
। आहारक मिश्र	၅	सारे भंग पर्याप्तवत् सारे भंग १२ का भंग जानना जानना को० नं० १८ देखो
आहारक काययोग या आहारक मिश्रकाय योग में	. سوں	ह. का भंग को० नं० १ द हेखी ७ ७ ७ का भंग को० नं० १ द भे भाग को० नं० १ द मनोयोग ४ वचनयोग ४ ये ६ घटाकर (१२) १२ का भंग को० नं० १ द के समान जानना २७ ६० का भंग को० नं० ह
o? ) fo 88	አ	१ उपयोग कोई अभूगों में से १ ध्यान १ भंग १ भंग १ भंग को० नं० १ द देखो
(ं ३०१ कोप्टक नं	<b>&gt;</b>	सारे भंग ६ का भंग सारे भंग ९० का भंग जानना को० नं० १८ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	m	६ का भंग को० नं० १ व के समान जानमा  ७ ९० का भंग को० नं० १ व के समान जानना २० प्राह्मारक मिश्रकाय योग वटाकर (२०) २० का भंग को० नं० १ व के समान जानना २७ १७ १७ का भंग को० नं० १ व के समान जानना
चौंतीस	8	२० डक्योग बात्तेष्योग ३, दर्शनीप- बंग ३ व ६ जानगा २१ ध्यात इस्ट वियोग घटाकर प्रातं डगात ३, धर्म- ध्यात ४ थे ७ जानगा २२ प्रात्तव उपरोक्त क्यायोग १, प्राह्मारक काययोग १, प्राह्मारक काययोग १, प्राह्मारक काययोग १, मनोयोग ४, वचनयोग १, निच्च १, मनुष्यगति १, कपाय ४, गुभ लेख्यो ३, लुष्गिलिग १, सराग- संयम १, सज्ञात १, प्रक्मालिग १, सराग- संयम १, सज्ञात १, प्रक्रमिल्ल १, वे (२७)

अवगाहना—एक हाथ ऊंचा शरीर जानना।

3

बंध प्रकृतियां—६३

```
बदय प्रकृतियां−६१ को० नं० ६ के ⊏१ उदय प्रकृतियों में से स्थानगृष्यादि महानिद्रा ३, स्त्री वेद १, नपुंसक वेद१, अप्रयस्त विहायोगति १,
   डुःस्वर १, संहनन ६, ग्रौदारिकद्विक २, पहले समचतुरस्नसंस्थान छोड़कर शेष ४ संस्थान ये २० घटाकर ग्राहारककाययोग
  आहारकामिश्र काययोग की अपेक्षा   ऊपर के ६१,   प्र० में  से परघात  १,   उच्छवास  १,  प्रशस्तविहायोगति  १,  सुस्वर  १  ह
   भन्तर—नानो जीनों की अपेक्षा एक समय से वर्ष पृथक्त्व तक कोई भी माहारक काययोगी नहीं हो सकते। एक जीव की अपेक्षा यन्तर्मे हुत्
  काल—-शहारक काययोग में एक समय से अन्तमुँहतें तक जानना और श्राहारकमिस्तकाय योग में  अन्तमुँहतें से अन्तमुँहतें तक जानना ।
   सक्या—आहारक काययोग में ५४ जीव एक समय में हो सकते हैं और आहारक मिश्रकाययोग में २७ जीव एक सम्य में हो सकते
  से द या ७ अन्तर्मुहुर्तं कम अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक आहारक काययोग धारसा न कर सके।
                         माहारक मिश्रकाय योग को मवस्थायें में देवायु १ घटाकर ६२ जानना
   सस्व प्रकृतियां—१४६ नरकायु १, तियँचायु १ ये २ घटाकर . ४६ प्र० का सत्ता जानना ।
को० नं० ६ के समान जानना ।
   स्पर्धन — लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाए। जानना ।
   जाति (योनि)—१४ लाख योनि मनुष्य जानना ।
   कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य जानना।
                               3
   න
න
   8
```

कामस्सिकाय योग में		एक जीव के एक समय में	n	<ul> <li>श्रुक्त स्थान</li> <li>श्रुक्त स्थान</li> <li>सारे गुक्त</li> <li>श्रुक्त</li> <li>श्रुक्त</li> <li>को०नं० १६ से १६</li> <li>देखो</li> </ul>	<ul><li>१ समास</li><li>श्रपने श्रपान के</li><li>समासों में से कोई एक</li><li>समास जानना</li><li>को० नं० १६ से १६</li><li>देखो</li></ul>	<ul><li>१ मंग</li><li>श्रपने श्रपने स्थान के</li><li>३ का भंग जानना</li><li>गो० नं० १६ से १६</li><li>देखी</li></ul>	१ भंग
<b>l</b> €	,	एक जीव के नाना समय में	9	सारे गुरा स्थान यपने अपने स्थान के सारे गुरा स्थान जानना को० नं १६ से १६ देखो	<ul> <li>१ समास</li> <li>अपने अपने स्थान के</li> <li>कोई १ समास जानना</li> <li>को० नं० १६ से १६</li> <li>देखो</li> </ul>	१ भंग त्रपने त्रपने स्थान के ३ का भंग जानना कों० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग
( ३०३ ) कोष्टक नं० ४५	अपर्यात	नाना जीवों की श्रपेक्षा	w	<ul> <li>४</li> <li>(१) नरक गति में—१ले ४थे गुएए स्थान</li> <li>(२) तिर्यंच गति में—कर्मभूमि में १-२ गुएए०</li> <li>भोगभूमि में —१-२-४ गुएए। जानना</li> <li>(३) मनुष्य गति में—१-२-४-१३ गुएए।</li> <li>(४) देवगति में—१-२-४ गुएए। जानना</li> <li>को० इ० १६ से १६ हेल्लो</li> </ul>	9 (१) नरक गति में ३ का मंग—को० नं० १६ देखो (२) तिग्रैंच गति में ७-६-१ के मंग—को० नं० १७ देखो ' (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	<ul> <li>(४) देवगीत में</li> <li>१ का भंग—को० नं० १६ देखी</li> <li>(१) नरकादि चारों गतियों में हरेक में</li> <li>३ का भंग—को० नं० १६ से १६ देखो</li> <li>(२) भोगभूमि में</li> <li>३ का भंग—को० नं० १७-१= देखो</li> </ul>	लाब्ध हप ५ पयास होता है ७
ŀr	पय प्ति .		ሽ- <b>欠</b> -È	सूचना— यहां पर पर्याप्त प्रवस्था नहीं होती है।		<b>.</b>	
चीतोस स्थान दशीन	क्रा स्थान सामान्य ग्रालाप		~	१ गुसा स्थान १-२-४-१३ मे गुसा स्थान जागना	२ जीव समास श्रपयीप प्रवस्था जानना को० न० १ में देखो	३ फ्यांप्ति को० नं० १ देखो	४ प्रास् को० नं० १ देखो

:	1			the state of the s	·
神	दः -को० नं० खो मा	बिने बैने	+	.*	į.
नामिसाकाय योग	原心 * E	१ अंग को० नं० १६ देखो १ अंग ४ का अंग-जानना को० नं० १६-१७-१६ देखो को० न	४ में से मोई १ मित १ मोत १ मित १ जाति नो० नं० १६-१८-१६	जाति १७ देखो नाय १६-१८-१६	से से
- High	8 8 - 9 8 4 - 9 8 8 9 8 9 8 9 8 9 8 9 8 9 8 9 8 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9	भी के विश्व	公 说 讲 会 是 会 是 会 是 会 是 会 是 会 是 会 是 会 是 会 是 会	कोड नं ९७ देखो १ काय कोड नं १६-११६ देखो १ काय	१९ देखो १ वेद को० न०१६ देखो
16-	ी० मं० ने मं०		. 10	10	को० नं
٩	ए का भंग-को० नं० १६-१९ देखो १ भंग कोई १ भंग को० नं० १७ देखो	को० नं ९६ देखो ४ का भंग जानना को० नं ९६-१७-१६ देखो सारे भंग को० नं ० ९६ देखो	४ में से कोई १ मित को० नं० १६-१६-१६ देखो १ जाति	कीं नं ६७ देखों कों नं १६-१८-१८ हेखों कों नं १७ देखों	
	ए का 3 8 ६ - ९.६ कोई १ भ ९७ देखो	को० न का भंग ० १६-१ सारे नो० नं०	में से कोई १ १ जाति १ जं १६-१ १ जाति	े ने १७ १ काय १ काय ने १७ ह	१ १ देखे
	· 治 ※		- NO NO	को० नं० १७ देख को० नं० १६-१८- हेखी को० नं० १७ देखी	ी भंग को० नं० १६ देखो
~ <del>%</del>	(१) नरक और देवगति में हरेक (१) तियंच गति में १६-१६ देखो ७-७-६-५-४-३-७ के मंग—को० नं० के समान जानना ३) मनुष्य गति में	स्ति में वी बी	(		
्र जुर्ग जुर्ग	देवगति में भंग	गति में हरेक हे ६-१७-१८ देखो १८ देखो	<u> </u>	में हर्नम द-१ व-१ १	- मि न
भीरदक नं	(१) मरक और देवगति में हरेक (१) तियंच गति में ७-७-६-४-४-३-७ के मंग—को० नं० हे) मनुष्य गति में ७-२-७ के मंग—को० नं० १० देखे	(१) नरक-तियँच-देवगति में हरेक में ४ का भंग-को० नं० १६-१७-१९ देखो ४-०-४ के भंग-को० नं० १८ देखो ४ गति जानना, को० नं० १६ मे ००	१ ) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ९ पंचेन्द्रिय जाति जानना—को० नं० १८ के सभान जानना (२) तिर्यंच गति में १९-१ के भंग—को० नं० १७ दखो	(१) नरक-मनुष्य-दवगति में हरेक में काय जातना—को० नं० १६-१८-१६ १३) तिर्यंच गति में १९ के भंगः—को० नं० १७ देखो एक त्य योग जानना	ंसक वेद
	(१) मरक भ्रं ७ का भंग—कोः (२) तिर्यंच ग ७-७-६-४-४-३-७ के समान जानमा ३) मनुष्य गति ७-२-७ के भंग—के	) नरक-। भंग-को। अनुष्य के भंग-	गरक-मनुष्ट य जाति १ सभान १ स्येच गित्ति भंग—को	ममनुष्यं निर्मान्त्रों व गतिः निर्मान्त्रोः	· 并 — — — — — — — — — — — — — — — — — —
	9 5 16 6	(१) नरक-तियैच-देवग ४ का भंग-को० नं० १६- (२) मनुष्य गति भे ४-०-४ के भंग-को० नं० चारों गति जानना, को० नं०	१ (१) नरक-मनुष्य-देवगित १ पंचेन्द्रिय जाति जानना- १८१६ के सभान जानना- (२) तिर्यंच गित में: ४-१-१ के भंग—को० नं० १	(१) नरक-मनुष्य-दनगति में हरेक में (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के मंग,—को> नं० १६-१८-१६ देखो कामिष्णिकाय योग जानना	रक गति में- नपुंसक वेद-को० नं० १६ देखो
				8 = 3 = 4 = 4 = 4 = 4 = 4 = 4 = 4 = 4 = 4	ê
न्त्रश्ने ३-४-४ ४-४-४		•			-
नेसीस स्थान दर्शन २ / ३-४-				***	
	<b>X</b>	>> ><		and and a second	
	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	न सेखी		~ m.	
	संगा को० म	ं मंं जनाति नं	नी मी में १	योग कामस्सिकाय योग को० नं० १ देखी	
	×	ू गति को शिक्रा	न माय भी	10	W.
	٠,	•	•	· w & · /	

į.	( xoe )	क्रमीमा काय योग	प्रोग
चौतीस स्यान दर्शन	कोप्टक नं० ४५		
	λ-γ-t	<b>9</b>	
		भंग कि	वेद १७ देखो
	३-१-३-१-३-१-१ मंग को०न० १७ देखो	काठ ने देव देव। भार भार १ वेद	नेव
and the second	(३) मनुष्य गति में ३—१—०—२) के भंग नं० १८ देखो	देखों को० मं	र्न देखीं भूम
	(४) देव गति में	सार भग सार भग सार भग सार भग	१६ देखो
,	२-१-१ के मंग कों नं १६ देखा	सारे मंग	当十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二
११ कपाय	(१) नरक गति में	अपने अपने स्थान केसारे भंग अपने अपने स्थान के सार	यान क धार कोई मंग
का० न० १ दखा	23-१६ के मंग को० नं० १६ देखो	क्षीठ न० १६ दखा नगा न थ	~ 当
	(२) तियम गति में २ २२ २४ -२४-२३-२४-२४-१६	कोठ नं	१७ देखो
	के मंग को० नं० १७ के समान जानना		भग
	(३) मनुष्य गति में	सार्भग स्रेत्स् १८ सेबो सी० में	१ द द्वी
	24-78-0-78-78 新和		•
	कोठ मठ १व भ समान जानन	<b>~</b> .	
	(8) दव गात म २४-२४-१६-२३-१६-१६ के मंग	ी० न० १६ देखी को० न०	₩ <b>~</b>
	को० नं० १६ के समान जानना	मारे भंग	१ ज्ञान
१२ जाम	त त्यास मानि में	देखों, को मं	१६ देखो
कुम्रवाय ज्ञान १, मनः नाम नाम १ मे २ घटाकर		~ Life o	जान
शेप ६ जानना	(२) तियंच गति में	ख़ो	को० नं १७ देखो
41	(2) 中华 中华 中华 (2) (2) (3)	मंग	२ ज्ञान - १- ऱ्यो
	(३) मनुष्य भार । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	देखो कांग्रन० १	१० १६ दल। १ जान
	(४) देव गति में	को० नंग १६ देखी को नं	नं० १६ दसो
	0	१ असयम १ म	१ स्त्रायम
११ संपम् असंग्रम, यथास्यात	(१) नरक, तिर्वच, देवगति में हरेक में	को न० १६-१७-१६ देवो को० न , १६-१७ १६ पता	15.6 4 5.9 X-10
Trends of the page			

चींत	चींतीस स्थान दर्शन		(३०६) कोष्टक नं० ४५	क <b>ा</b> मि	कानीसा काय योग में
~	or	አ-ጸ−₽		ด	រ
		<del>-</del> .	१ ग्रसंयम जानना को०नं० १७-१ द-१६ देखो		
			(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ संयम
ا <u>.</u> :			१-१ के भंग-को० न० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो
१४ ब्याम			) )	१ भंग	१ दर्शन
क्रींट	कों० न० १ देखों		(१) नरक गांत में	को० नं० १६ देखों	को० नं० १६ देखो
,			२-३ के भग-कों नं १६ देखों		-
			(२) तियंच गति में	१ भग	१ दर्शन
			१-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखों	कों नं १७ देखो
			(२) मनुष्य गति में 🔻 🔅	साम	१ दर्शन
			्र २-३-१-२-३ के भंग-को० नं० १ द देखो	को० नं० १ न देखो	को० नं० १८ देखो
			(४) देवगति में	१ भंग	१ दर्शन
,			२-२-३-३ के भंग-को० नं० १९ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
१५ लेश्या	υ,		us	१ भंग	
भू	को० नं० १ देखो		(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
			३ का भंग को० नं० १६ देखो		
			(२) तियंच गति में	१ भंग	१ लेखा
			३-१ के मंग- को मं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	कों नं ७ देखो
	<u>-</u>		(३) मनुष्य गति में	# 보기	१ लेख्या
			६-१-१ के भंग-को० नं० १ न देखो	को० नं० १८ देखी	मों नं १८ देखो
			(४) देवगति में	१ भग	१ लेखा
1			३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
१६ भव्यत्व	~			<b>०</b> भंग	१ प्रवस्या
भव	भव्य, श्रभव्य		(१) नरक और देवगति में हरेक में	को०नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो
			२-१ के भंग-को० नं० १६-१६ देखो		-
			(२) तियंच गति में	१ भंग	१ मवस्या
·		,	२-१-२-१ के भंग को. नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो
				सारे भंग	१ अवस्या
	,		२-१-२-१ के भग को० न० १न देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो
					•

कर्मासा काय योग	u	<ul> <li>१ सम्यक्त्व</li> <li>को० नं० १६ देखो</li> <li>१ सम्यक्त्व</li> <li>१ सम्यक्त्व</li> <li>१ सम्यक्त्व</li> <li>को० नं० १० देखो</li> <li>को० नं० १० देखो</li> </ul>	<ul> <li>१ सम्प्रक्तव</li> <li>को० नं० १६ देखो</li> <li>१ अवस्या</li> <li>को० नं० १६–१६ देखो</li> <li>१ अवस्या</li> <li>१ अवस्या</li> <li>को० नं १७ देखो</li> </ul>	१ अवस्था को० नं० १८ देखों १ श्रमाहारक अवस्था	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग	काठ न० १७ दला १ उन्योग को० न० १८ देखो
<b>10</b>	9	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ मंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ को० नं० १६–१६ देखो १ भग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को <b>ं</b> नं <b>ं</b> १८ देखी १ श्रनाहारक भ्रवस्था	१ मंग को० नं० १६ देखो १ भंग	को० न० १७ दखा सारे भंग को० नं० १८ देखो
(३०७) कोप्टक नं० ४५	US	पू (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में १-१-१-१-२ के मंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-२-१-१-१ के भंग	को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो २ (१	(२) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो १ (१ चारों गतियों में हरेक में १ अनाहारक अवस्या जानना	को० नं॰ १६ से १६ देखो १० (१. नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तियैच गति में	३-४-४-३-४-४-६ कं भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४-६-१-४-६ के भंग को० १८ देखो
दर्शन	አ-ጸ-ቴ	* <del>*</del>	€	~	° &	
चीतीक्ष स्थान दर्शन	2	१७ सम्यक्तत्र मिश्र वटाकर शेप (५)	१८ संजी संजी, श्रसंज्ञी	<b>१६</b> माहारक यनाहारक	१० उपयोग को० नं० १ देखीं	

१६ ध्यात १० प्रत्यान ४, मार्ग के के भाग कोठ नंठ १६ हेह्या ११ मार्ग का मार्ग के भाग कोठ नंठ १६ हेह्या १६ मार्ग का मार्ग	चौतीस स्थान दर्शन		( २०८ ) कोष्टक नं० ४५	कामांस काय	ए काय योग में
१० (१) दंवगति में ४-४-६-६ के मंग को० नं० १६ देखी ते १ थे १० जान पर, ते दिल्लान ४, ते १ थे १० जानता ते १ थे भाग को० नं० १६ देखी ते १ थे १० जानता ते १ थे भाग को० नं० १६ देखी ते १ थे १० जानता ते १ थे भाग को० नं० १६ देखी ते १ थे १० जानता ते १ ते प्राप्त में १ वे थे गुणा० में ते १ थे जानता ते १ थे गुणा स्वात में ते शे जानता ते १ गुणा स्वात में ते शे भाग को० नं० १७ के भाग में ते शे गुणा स्वात में ते शे गुणा स्वात में ते शे गुणा स्वात से १० जानता ते शे गुणा स्वात से १० व्हान्त से १० वह से भाग में ते शे गुणा स्वात से १० वह से भाग में ते शे गुणा स्वात से १० वह से भाग में ते शे गुणा स्वात से १० वह से भाग से १० वह से भाग से १० वह से भाग जानता ते शे गुणा स्वात मही होता ते गुणा स्वात मही होता		<b>አ-</b> Ջ-È	ψ	<b>9</b>	ឞ
१० १० (१) तस्क गति में			(४) देवगति में	१ भंग	१ उपयोग
१० १० पर ४, रोडब्यान ४, विकास १० १० व्हास १०			४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
त. १ में १ में भारत कार्य ते १ में	२१ ध्यान श्रानेह्यान ४ रौदह्यान ४		१० १० सरक ग्राम भे	सारे भंग कोर मंत्र १६ धेवो	१ ध्यान को० मं० १६ सेखो
(२) तियंच गति में ह के मंग कोठ नं० १७ देखी (३) मनुष्य गति में ह के मंग कोठ नं० १० देखी (४) देवगति में ह के मंग कोठ नं० १८ देखी (४) देवगति में ह के मंग कोठ नं० १६ देखी ४३ (१) नरक गति में १ले ४थे गुणु० में ४१३३ के हिरक मंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के मंग (२) तियंच गति में १० प्रिश्वनाययोग १ घटाकर १८ में मंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर १८ में में १८ में मंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर १८ -३२-३२ के मंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३८-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-	श्राज्ञाविचय १, सुक्ष्म किया		त-धीने मंग कार नं १६ देखी		
द-द-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में  द-१-१-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देनगति में  र-१ के भंग को० नं० ११ देखो  ४३ (१) नरक गति में १के ४थे गुण्ण में ४१-३२ के भंग को० नं० १६ के ४२-३३ के हेरक भंग में से ने० मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के भंग को० नं० १६ के ४२-३३ के १८) तिर्यंच गति में १० ने ३६-४०-४३-४४ के भंग को० नं० १७ १८-४२-४३ के भंग जानता १२ गुण्ण में १८-४२-३२ के भंग जानता १८ गुण्ण में १८-३२-३२-३४-३८-३६ के हरेक भंग में से १८-३२-३२ के भंग जानता	प्रतिपाति १ ये १० जानना		(२) तियैच गति में	१ भंग	१ च्यान
(३) मनुष्य गति में  ८४३  ४३  ४४, अविरत १२,  ४४, कामाण काय- दे के मंग को० नं० १६ देखो  ४४, कामाण काय- दे ४३ काम को० नं० १६ देखो  ४४, वानता  ४४, कामाण काय- दे ४३ काम को० नं० १६ के ४२-३३ के हे देक मंग को० नं० १६ के ४२-३३ के हिरक मंग में से बै० मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के मंग  (२) तियंच गति में १९ नु १०-३८-१८-४८-४३ के मंग को० नं० १७ के ३१-३८-३८-४८ के मंग को० नं० १७ के ३१-३८-३८-४८ के मंग को० नं० १७ के ३१-३२-३८-३८-३८-३८-३८-३६ के संग को० नं० १७ के ३१-३२-३८-३८-३८-३८-३८-३१-३२-३१-३२-३१-३८-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-			द-द-६ के भंग को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो
<ul> <li>४३</li> <li>४३</li> <li>४३</li> <li>४३</li> <li>४५</li> <li>४५</li> <li>४५</li> <li>३२</li> <li>३५</li> <li>३६</li> /ul>			(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ घ्यान
(४) दंनगति में  == ६ के भंग को० नं० १६ देखी  ४३  १४, क्रामिए काय- १४, क्रामिए क्रामिकाययोग १ घटाकर १६-३७-३८- १६-१०-१६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ १६-१०-१६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ १६-१०-१६-१६-४२-१४-३८-३६ के हरेक भंग में ११ गुण भे ११-१२-३२-३४-३४-३८-३६ के हरेक भंग में १३१-३२-३४-३४-३४-३४-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३२-३१-३१-३२-३१-३१-३२-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-			प-६-१-प-६ में भंग को० नं० १ प देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो
४३  ४३  ४३  ४३  १४, प्रविरत १२,  ४४, कामिए काय- थे ४३ जानता  ४४, न्या कोठ नं० १६ के ४२-३३ के हिर्क भंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के भंग कोठ नं० १६ के ४२-३३ के हिर्क भंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के भंग  (२) तियंच गति में १८० मिश्रकाययोग १ घटाकर १६-३७-३०-३०-३०-३०-४३-४४ के हिरक भंग में ३६-३७-३०-३१-३१-४४-३०-४३ के भंग कोठ नं० १७ के ३७-३०-४२-३४-३०-४०-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३०			(४) देनगति में	भंग	१ ध्यान
४३  ४३  ४४, क्रामिरत १२,  ४४, क्रामीरा काय- ४४, क्रामीरा काय- ४४, क्रामीरा काय- ४४-३२ के भंग को० नं० १६ के ४२-३३ के ४१-३२ के भंग  (२) तियंच गति में १९ गुण स्थान में १९ गुण स्थान में १९ गुण स्थान में १६-३९-३६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३६-३६-४२-४३ के भंग मो० नं० १७ के ३७-३६-३१-३२-४३ के हरेक भंग में ११ गुण के ११-३२-३४-३७-२६ के भंग को० नं० १७ के ३२-३३-३४-३७-२६ के हरेक भंग में ११ गुण स्थान यहां नहीं होता ४था गुण स्थान यहां नहीं होता ४था गुण स्थान यहां नहीं होता			द- ह के भंग को० नं० १९ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
(१) नरक गति में १ले ४थे गुराए में ४१-३२ के भंग को॰ नं॰ १६ के ४२-३३ के हिरक भंग में से वै॰ मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के भंग (२) तियंच गति में १ले गुरा स्थान में ३६-३९-४२ के भंग को० नं० १७ के ३७-३६-४९-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३६-४२-४३ के भंग जानता २१-४२-४३ के भंग जानता २१ गुराए में ३१-३२-३४-३७-२८ के भंग को० नं० १७ के ३२-३२-३४-३४-३६-३६ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ अ३२-३२-३४-३४-३६-३६ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३	२२ मासव ४३		څخ	सारे भंग	१ भंग
४१-३२ के भंग को० नं० १६ के ४२-३३ के हिरेक भंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के भंग (२) तियंच गति में १ है। प्रियंच गति में १ है। इ६-३७-१८-१८-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३८-३६-४०-४३-४४ के हरेक भंग में से अपे० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८-१८-४३ के भंग जानता २१ गुएए० में ३१-३२-३४-३४-३६-३६ के हरेक भंग में से ३१-३२-३४-३४-३६ के हरेक भंग में से ३४-३२-३४-३४-३६ के हरेक भंग में से अपे० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ अपे० इर-३१-३६ के हरेक भंग में से अपे० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३४-३४-३४-३६ के हरेक भंग में से अपे० में भंग जानता	मिथ्यात्व ४, अविरत १२,		(१) नरक गति में १ले ४थे गुरा० में	श्रपने श्रपने स्थान के	अपने अपने स्थान क
हरेक मंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाक ४१-३२ के भंग (२) तिर्यंच गति में १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	क्षाय २४, कार्माम् काय-		मों नं १६ के ४२-३३	सारे भंग जानना	सार भंगों में से कोई १
४१-३२ के भंग (२) तियँच गति में १ ले गुण स्थान में ३६-३७-३६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३६-४०-४३-४४ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८- ३१-४२-४३ के भंग जानता २२ गुण० में ३१-३२-३४-३८-३६ के हरेक भंग में से ३१-३२-३४-३४-३८-३६ के हरेक भंग में से भौ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३६ के भंग जानता ४या गुण स्थान यहां नहीं होता	यांग १ यं ४३ जानना		हरेक भंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर	`	भंग जानना
(२) तियँच गति में १ले गुण स्थात में ३६-३७-३६-४२-४३ के मंग को० नं० १७ के ३७-३६-४०-४३-४४ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८- ३६-४२-४३ के मंग जानता २रे गुण् में ३१-३२-३४-३५-३८ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३६ के हरेक भंग में से अ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ११-३२-३३	- government of the control of the c		४१-३२ के भंग		
१ले गुर्सा स्थान में ३६-३७-३६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३८-३८-४३-४४ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८- ३६-४२-४३ के भंग जानता २२ गुर्सा० में ३१-३२-३४-३८-३६ के हरेक भंग में से अी० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३६ के मंग जानता ४या गुर्स स्थान यहां नहीं होता भोगभूमि में १ले २२ से ४थे गुर्सा० में			(२) तियँच गति में		
३६-३९-३६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३द-४०-४३-४४ के हरेक भंग में से ब्रौ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३द-३६-४२-४३ के भंग जानता २१ गुएए० में ३१-३२-३४-३७-२द के भंग को० नं० १७ के ३२-३२-३४-३५-३द के हरेक भंग में से ब्री० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३०-३ के भंग जानता ४या गुएए स्थान यहां नहीं होता			१ले गुरा स्थान में		
के ३७-३८-४३-४४ के हरेक भंग में से औं मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८- ३६-४२-४३ के भंग जातना २२ गुएए में ३१-३२-३४-३८-२८ के भंग को नं ० १७ के ३२-३२-३४-३८-३६ के हरेक भंग में से औं मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३६ के भंग जानना ४था गुएा स्थान यहां नहीं होता		-	३६-३७-३८-३६-४२-४३ के भंग को० नं० १७		-
से औं भिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८- ३६-४२-४३ के मंग जानना २२ गुएए० में ३१-३२-३४-३७-२८ के मंग को० नं० १७ के ३२-३२-३४-३६-३६ के हरेक मंग में से औं भिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३८ के मंग जानना ४था गुएए स्थान यहां नहीं होता			के ३७-३ द-३६-४०-४३-४४ के हरेक भंग में		
३६-४२-४३ के भंग जातना २२ गुएए० में ३१-३२-३४-३७-२८ के भंग को० नं० १७ के ३२-३२-३४-३८-३६ के हरेक भंग में से भी० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३८ के भंग जानना ४था गुएए स्थान यहाँ नहीं होता			से औं मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८-	-	
२२ मुएए० में ३१-३२-३४-३७-२८ के भंग को० नं० १७ के ३२-३३-३४-३६-३६ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३८ के भंग जानता ४या मुएए स्थान यहां नहीं होता भोगभूमि में १से २२ से ४थे मुएए० में			३६-४२-४३ के भंग जानना		,
३१-३२-३७-२५ के भंग को० नं० १७ के ३२-३३-३४-३५-३६ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३८ के भंग जानना ४था गुर्या स्थान यहां नहीं होता भोगभूमि में १से २२ से ४थे गुर्या० में			२रे मुस्सं॰ में		~~~
के ३२-३३-३४-३६ के हरेक भंग में से औं मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३८ के भंग जानना ४था गुर्एा स्थान यहाँ नहीं होता भोगभूमि में १से २२ से ४थे गुर्एा० में			३१-३२-३३-३४-३७-२८ के भंग को० नं० १७		
ऋों० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३ ३४-३७-३८ के भंग जानना ४था गुर्या स्थान यहां नहीं होता भोगभूमि में १ले २२ से ४थे गुरा० में			के ३२-३३-३४-३५-३६-३६ के हरेक भंग में से		
३४-३७-३८ में भंग जानता ४था गुरा स्थान यहां नहीं होता भोगभूमि में १ले २२ से ४थे गुरा० में			ऋों० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३		
४था गुरा स्थान यहां नहीं होता भोगभूमि में १ते २२ से ४थे गुरा० में			३४-३७-३८ के भंग जानना		•
नाजभूति म देव १८ स ४थ गुरा० म			ेषा गुर्पा स्थान यहां नहीं होता नेम्मानिक के बन्दे के प्रत		
			नागर्मान न दल ५८ स हथ मुराठ म		

कार्माए। काय योग में	r		<ul> <li>श्वमने अपने स्थान के</li> <li>सारे हरेक भंग में से कोई</li> <li>भंग जानना</li> <li>भंग</li> <li>को०न० १७ दखो</li> </ul>
कामि	ഉ		सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को०नं० १६ देखी सारे भंग को०नं० १७ देखो
( ३०६ ) कोष्टक नम्बर ४४	USP	४२-३७-३२ का मंग को नं० १७ के ४३-३८- ३६ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाय योग  (१) मनुष्य गित में १-२-४-१३ में गुण में ४३-३८-३२-१ के भंग को० नं० १८ के ४४- ३६-३३-२ के हरेक भंग में से औ० मिश्र काययोग १ घटाकर ४३-३८-३२-१ के भंग बानमा १ का भंग को० नं० १८ के समान जानना भोग भूमि में १ले ४थे गुण्० में ४३-३८-३२ के भंग को गं० १८ के ४४- ४६-३३ के हरेक भंगों में से औ० मिश्र- काययोग १ घटाकर ४३-३८-३२ के भंग मानना  (४) देव गति में १-२-४थे गुण्० में ४२-३७-३२-४१-३६-३२-३२ के भंग को० नं० १६ के ४३-३८-३२-३१-३२-३३-३३-३३-३२-३२-३२ के	४८ (१) नरक गति में १ले ४थे गुर्या० २५-२७ के मंग को० नं० १६ देखों (२) तिर्यंच गति में १ले २२े गुर्या० में २४-२५-०७-२९-२३-२५-२५ के भंग को० नं० १७ देखों
<del>ال</del>	አ-ጸ-ἐ		:
चौतीस स्थान दर्शन	۲		भाव उगशम-वारित्र १, मनः पर्यय झान १, कुप्रविध झान १, संयम-संयम १, सराम- संयम १ ये ५ घटाकर ४= भाव जानना
चौत	~		भाव उनशम-वारित्र १ मनः पर्यंग भान १ कुप्रविध भान १, संयमा-संयम १, १ संयम १ ये ५ घ ४= भाव जानना

U.

कामरिए काय योग में	r 	१ भंग को० नं० १८ देखी १ भंग को० नं० १६ देख		•
कामि	9	सारे भंग को० नं० १८ देखी सारे भंग को० नं०१६ देखो		
( ३१० ) कोष्टक नम्बर ४५	USP	भोग भूमि में १ ले २ दे ४ थे गुण् में २४-२२-२५ के भंग को० नं० १७ देखी (३) मनुष्य गति में १ ते २ ४ थे १३ वे गुण् में ३०-२६-३०-१४ के भंग को० नं० १६ के समान जानना भोग भूमि में १-२-४थे गुण् में २४-२२-२५ के भंग को० नं० १६ देखो ४) देव गति में १-२-४थे गुण् में २६-२४-२२-२६ के भंग को० नं० १६ देखो के भंग को० न० १६ के समान जानना		
ान दर्शन	x-22-8-			
चौतीस स्थान दर्शन	~		·. ,	

ग्रन्तर—नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं। एक जीव की ग्रपेक्षा जघन्य ग्रन्तर क्षुद्रभव में ३ सयय कम. क्षुद्रभव में रहकर मरएा करके दुवारा विग्रह गति में कांमिस्सिकाय योग घारसा कर सकता है। उत्कृष्ठ अन्तर ३ समय कम ३३ सागर के वाद विग्रह गति में आकर वंच प्रकृतियां—११२ वंघयोग्य १२० प्र॰ में से मायु ४, नरकगति १, नरकगत्यानुपूर्वी १, माहारकद्विक २ ये घ घटाकर शेप ११२ वंध प्र॰ सूचना:—(१) विग्रह गति में छोड़े हुए शरीर का श्रवगाहना रूप श्रात्म प्रवेश की श्रवगाहना वना रहता है। (२) केवल समुद्पात उदय प्रकृतियां—--९ उदययोग १२२ प्र० में से महानिद्रा ३, मिश्र (सम्यक्त्व) १, ग्रौदारिकद्विक २, वैक्षियिकद्विक २, ग्राहारकद्विक २, संस्थान ६, संहनम ६, उपवात १, परवात १, उच्छवास १, मातप १, उद्योत १, विहायोगति २, प्रत्येक १, साघारए। १, स्वरद्विक २, ग्रवगाहरा--निगोदिया जीव के त्यक्त शरीर की जवन्य ग्रवगाहना घनांगुल के ग्रसंख्यातवें भाग जानना ग्रीर उत्कृष्ट ग्रवगाहना एक हजार काल--नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की ग्रपेक्षा एक समय से तीन समय तक जानना। में प्रतर ग्रीर लोकपूर्ण ग्रवस्या में वर्तमान बारीर के ग्राकार हो 1 है। ये ३३ घटाकर पट प्र० का उदय जानगा। सत्य प्रकृतियां—१४८ को॰ नं॰ २६ के समान जानना कामांएायोग वारए। करना ही पड़े जाति (योनि)—=४ लाख योनि जानना कुल-१६६॥ लाख कोटिकुल जानना संख्या--ग्रनन्तानन्तं जानना स्पशंन--सर्वलोक जानना क्षेत्र-सर्वलोक जानना। 9

	w Ø
3 6 5	डक नं०
<u> </u>	मोद

चोंतीस स्थान दर्शन	न दर्शन कोष्टक नं०४६	્ર જ	श्रयोग में	<b>#</b>
फ्रo स्थान सामान्य आलाप	पयपि			अपयक्ति
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाता समय में	एक जीव के एक समय में	
~	er*	>>	×	<b>బ-</b> ຄ-స
	१ १ चोदहवः गुरा स्थान जानना	१ मुस्स स्थान	१ गुरा स्थान	सूचना — यहां पर अपयिपि
२ जीव समास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यापि	१ १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पयिष उपचार से जानना	१ समास	१ समास	स्रवस्या नहीं होती है।
पयांदित को० नं० १ देखो	६ ६ का भंग को० नं० १ न देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्रास् १ मन्त्र प्रास	१ १ आयु प्रासा- को० नं० १८ देखो	~	~	
संगा	० मतीत संज्ञा	o (	•	
६ गांत मनव्यगति	१ १ मनस्य गति–को० नं० १८ देखो	१ गति मनुष्य	१ गति मनुष्य	
७ इन्द्रिय जाति १ तंत्रेहिन्य जानि	المراجع من مراجع المراجع المرا	१ जाति	१ जाति	
द काद	157 57 01 015 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17	<b>~</b>	~	
त्रसकाय क्रमोम	१ त्रसकाय को० नं० १ द देखो			
	(०) अयात वेद जानमा	0 0	0 4	
	(०) अक्षाय जानना	· •	· •	-
	१ केवल जान जानना	~	~	
	१ यथास्यान संयम जानना	S.**	•	•
१४ विद्या	१ मेवल दश्न जानना (०) मनेसम् लग्नम	~	~	
भव्यत्व	१ मध्यत्व जानना	0 0	• •	
1		•	•	

<b>は-の-</b> ₩		
	*	१ ० २ युगपत् जानना १ १ १३ का भंग जानना
٠ ٨٤	>>	१ ० १ २ युगपद् जानना १ १ १३ का भंग जानना
कोव्टक न० ४६		१ क्षाियक सम्यक्त्व जानता (०) मनुभय (न संज्ञी न ग्रसंज्ञी) १ ग्रनाहारक जानना २ ज्ञानोपयोग १, दर्शनीपयोग १ पे (२) १ व्युपरत क्षिया निर्वातनी शुक्ल ध्यान (०) ग्रनास्तव जानना १३ क्षा भंग-क्षो० नं० १८ देखी
चौतीस स्थान दर्शन	a	सम्यक्त्व
चीं	~	१७ सम्यक्त्व १८ माडी १९ माडीरक २० उपयोग नानोपयोग २१ हणन २२ मास्रव

सस्य प्रहातियां — (१) द्विचरम समय में ८५, वेदनीय २, मनुष्याषु ै, गोत्र २, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, यरीर ५, वंधन ५, प्र०१, बादर१, पस १, पर्याप्ति१, सुभग१, ग्रादेय१, यज्ञः कीति१, ये१२ जानता। सामान्य केवली की ग्रपेक्षा-तीर्थंकर प्र०१ घटाकर ११ प्र०का उदय जानना। नदय प्रकृतियां-१२ तीर्षेकर कोवलियों की स्रपेक्षा- साता वेदनीय १, मनुष्यायु १, उच्च गोत्र १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जाति १, तीर्थंकर ज्ञःगाहता -- जवन्य अवगाहना ३॥ हाय और उत्कृष्ट अवगाहना ५२४ धनुप तक जानना वंच प्रकृतियां—(०) यहां वंच नहीं है

संघात ४, अंगोपांग ३, सस्थान ६, संहनन ३, स्पर्शादि २०, अगुरुलष्ठ १, उपघात १, परघात १, उच्छवास १, पर्यात १, अपग्र प्त १, स्थिर १, अस्थिर १, गुभ १, अशुभ १, यशः कीति १, अयशः कीति १, प्रत्येक १, बादर १, तस १, सुभग १, दुर्भग १ सुस्वर १, दुःस्वर १, आदेप १, अनादेय १, निर्माण १, विहायोगति २, तीर्यंकर १ थे ६५ जानना । (२) चर्म समय में– १३ ऊपर के उदय प्रकृति १२ और असाता वेदनीय १ जोड़कर १३ जानना । सामान्य केवनी की अपेशा तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १२ जानना।

क्षेत्र – लोक का असंख्यातवां भाग जानना । स्पन्ना - ७ राजु ।

र् काल--अ-३-३ स-१८ प्राप्त कर्मा कर्म के बाद फिर संसार में नहीं ग्राता १२ सम्तर--कोई ग्रन्तर नहीं, कारमा मोक्ष जाने के बाद फिर संसार में नहीं ग्राता १३ लाति (बोनि)--१४ वाख मनुष्य योनि जानमा।

जुस--१४ नात्त मोटिकुन पल्य की जानता।

चोतीस स्थान दर्शन	र्शन	कोप्टक	कोष्टक नं <b>०</b> ४७		ਰਿਚ	पुरुष वेद में
क्त० स्थान सामान्य ग्रालाप	पय्यादित			प्रपर्याप्त		
	नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना ए समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय मे	१ जीव के एक समय में
<i>~</i>	רא	>•	ಶ	US	9	រេ
१ मुस्स स्थान १ से ६ मुस्स् जानना	ह (१) तियँच गति में कमेंभिम में	सारे मुसा स्थान अपने अपने स्थान के ५ सारे गसा	१ मुस्स <b>ः</b> कोइं१ मुस्स <b>ः</b> १ मुस्सः	४ (१) तियंच गति में कमंभिष में १-२ गुरा०	सारे गुर्या० श्रपने श्राने स्थान के सारे गुरा०	<ul><li>शुराः</li><li>मोई १ मुसः</li><li>नोः नः १७</li></ul>
	१ से ५ मुरा० जानना भोगभूमि में १ से ४ मुरा० (२) मनुष्य गति में कर्मभूमि में १ से ६ मुरा०		को <b>ं</b> मंं १७ देखो १ मुरा० कोः नं १८	भोगभूमि में १-२-४ गुरा० । (२) मनुष्य गति में कर्मभूमि में क्रमभूमि में क्रिक्ति १-२-४-६ गुरा०	को० नं० १७देवो सारे गुरा० को० नं १८ देखो	देखो १ गुराए० को० न <sup>.</sup> १
	जातना भोगभूमि में १ से ४ मुर्गा० (३) देवगति में १ से ४ मुर्गा० जानना	सारे गुर्गाः कोः नं १६	देखां १ गुगा० देखो को० न० १६देखो	E) _	सारे गुराः को० नं० १६ देखो १ समास	१ मुराए० को० नं० १६देखो १ समास
२ जीव समास ४ श्रसंती पं० पर्यप्ति श्रपर्याप्त सन्नीपंचेन्द्रय " "	२ (१) तिर्यंच गति में १ श्रसंत्री पं० पर्याप्त को०	१ समास १ श्रसंज्ञी पं० प०		~	पयशिवत्	पयक्तिवत्
ये ४ जानना सूचना—-श्रसंज्ञी पं० प० श्रपयिति प्रयनस्था यहाँ गो० क० गा० ३३०-२३१	नं० १७ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ सज्ञीः पंचेन्द्रिय पर्याप्त	को० नं० १७ देखा १ संज्ञी पं० पर्याप्त	प० १ संशी पं० प०	देवगति में हरेक में १ संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना	पर्याप्तवत्	प्पाप्तवत
के समान लिया है ३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१ भंग १ का भंग	१ भंग १ का भंग	३ (१) तियैच-मनुष्य- देवगति में हरेक में ३ का भंग जानना	१ भग ३ का भग	१ भंग .३ का भंग

	٠,	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	,						~			
वे त में	r		१ भंग ७ का भंग	७ का भंग		४ का भंग ४ का भंग		१ भंग ४ का भंग	१ मति   ३ में सं कोई	१ जाति		· •
पुरुष	• စ		१ भंग ७ का भंग	७ का भंग	}	४ का भंग		सारे भंग ४ का भंग	१ मति ३ में से कोई १ मि	, जाति , जाति		
	US"	को० नं० १७-१८-१९ देखो, लिडव रूप ६-४ का भंग भी होता है	७ (१) तियँच गति में १० का भंग-गमः भे	(२) तियँच गति में मनुष्य-देवगति में हरेक भ	भ ७ का भंग को० नं० १७.१८-१९ देखो	४ (१) तियँच-देवगति में	हरक म ४ का मंग को० नं० १७-१९ देलो	(२) मनुष्य गति में ४ का भंग का० नं०	१= देखो ३ तिर्यच-मनुष्य—ेवगति	१ तीनों गतियों में	हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति	जानना को० नंऽ १७-१द-१६   देखो
5)× °	ಶ	्र का भंग	१ भंग ९ का भंग	१० का मंग		१ भग ४ का भंग	े भंग	४-३-२ के मंगें में से कोई	१ मंग १ मित ३ में से कोई १	गत १ जाति		
( ३१५ कोघ्टक नं	≫	० का भंग	१ भंग १ का भंग	१० का भंग		१ भंग ४ का भंग	म् २ भंग	४-३-२ के मंग	१ गति ३ में से कोई १	गत १ जाति		
र्थान	m	(२) तियँच-ममुष्य-देवगति में हरेक में ६ का मंग-को० नं० १७-१ न-	\$ (S)	ह का मन-अपस्था को० नं० १७ के स (२) तियँव-मनुष्य-देव	म हरक म १० का मंग- को० नं० १७-१८-१६ देखो	४ (१) तियीच-देवगति में हरेक में	४ का भंग-को० न० १७- १६ देखो (२) मनस्य गति में	४-३-२ के मंग को० नं० १ व के समान	३ तिपैन-मनुष्य-देवगति में	१ तीनो गतियों में हरेक में	१ पंनेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१८-१६	
चौतीस स्थान दर्शन	~	-	ग्राम् को० नं० १ देखो			पंजा को० नं० १ देखो			गति तिर्यन–मनुष्य–देवगति	. जाति १ य अति		
ची	~		४ प्रास् मो०			४ संजा को०			६ गति तियंन-	७ उध्दिय जाति पंतेरिट्य अति		

	1	1 -	· E	•	ha:	Œ		l <del>r-</del>
य वेदा में	r	१ वस्तिय	१ योग पर्यात्तवत् जानना	् १ योग को० नं० १७	देखो १ योग को०नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १६ देखो	~	१ मंग के प्रपने अपने स्थान १ के संगों में से विहें १ मंग
पुरुष	9	१ १ त्रसकाय	१ भंग पर्याप्तवत् जानमा	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	a.	सारे भंग प्रपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १७ देखो
	ນອ້	१ तीनों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	कों नं १७-१८-१६ देखों ४ घों मिश्र काययोग १, वे मिश्रकाययोग १, झां मिश्रकाययोग १,	कामार्ग कायवाम १, ये ४ योग जानना (१) तियैच गति में १-२२ के मंग को० नं० १० हेन्से	. १८ दुवा मनुष्य गति में १-१-२ के भंग नं० १८ देख़ो		१ तीनों गतियों में हरेक में १ पुरुष वेद जानना	२३ (१) तियंच गति में म २३-२३-२३-२३ के हरेक मंग में से स्त्री वेद क
कोप्टिक न० ४७	st.	१ त्रस्ताय	१ योग प्रपने ग्रपने स्थान के मंगें में से कोई १ योग	१ योग को०नं० १७ देखो	<u>ৰ</u>	१ योग को०नं० १६ देखो 9	,	
क्रीह	>> _	१ १ त्रसकाय	१ भंग १ योग प्रपने श्रपने स्थान भंग जानना के भंगों में से कोई १ योग	देखो	भंग १८ देखो	१ भग को० नं० १६ देखो व	स रे भंग	ान भे नन् भे देखो
44(1)	ro-	{ तीनों गतियों में हरेक में १ बसकाय जानना को० नं० १७—१६ हेखो	११ श्रौ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, श्रा० मिश्रकाययोग १, कामिश्य काययोग १,	ये ४ घटाकर (१ ) (१) तियंच गति में ६-२-६ में मंग को० नं० १७ देखो	(४) मनुष्य गांत मं ६-६-६-६ के अंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति भे	१६ देखो	तीनों गतियों में हरेक में १ पुरुष वेद जानना २३	-१५ के २५- के हरेक
1025 1.11 1 11111	8	<b>१</b> त्रसकाय	रह देखी देखी			~	पुरुष वद २३ व	क वद कर (२३)
:   '	s	प काय	ह योग को० नं			१० वेद	११ कवाय	स्त्रा-नपुसक वद ये २ घटाकर (२३)

	<b>中</b>	ឋ	,	<del>.</del>				को०नं० १८ देखो			,	<b>2</b>					को०नं० १६ देखो			÷ .
,	पुरुष वेद	9			· · · · ·		सारे भंग	नं० १५ देखो								सारे भंग	नं० १६ देखो	,		. ,
		~دن	२३-२३ के T	म न को० न स	क र्ठ के भंग में वेद १ घटाकर २३. मंग जानना	र कोठनं० १७ गनना		त न भ २५ भ		1	१८-११ क मंग काठन ० १८ के समान		, b-:	वेद घटाकर	<u>न</u>	समान	- मो	गात म के मंग	१६ के २४-	न भंग म
			२३-२२-२३ भंग जानना	भोग भूमि में र ३ का भंग	१७ के १४ के भूग में स्त्री वेद १ घटाकर २३ का भंग जानना	१६ का भंग को०नं० के गमान जानवा	(२) मनुष्य गति में	१८   २३ का भग हो० नं० १८ के २५	भंग में से स्वी-न	मंग जानना	१८ के समान	भोग भूमि में	25 to 55 -	एक स्थी	१३ का मंग	मं० १८ के	जानना (१)	(३) दव गति म   २३-२३ के मंग	कों० नं० १	२४ के हरेक भंग
( ၈) ક	न मं० ४७	×				····	~	को० नं०	· ·										,	
;	कोष्टक	<b>&gt;</b> >^ .		16			शारे भंग	को० नं० १८ देखो 										=		•
,	चीतीस स्थान दर्शन	nr	भंग में से स्त्रीवेद १ नपुंसक वेद १ य २ घटाकर २३-२३-	२३-१६-१५ के भंग जानना भोग भूमि में	२३-१६ स भग का० न० १७ के २४-२० के हरेक सम स स स्टिंग यह	षटाकर २३-१६ के मंग		२३-१६-१५-१९ के भंग जो ० म ० १८ के २५-२१-	१७-१३ से हरेक मंग में से स्त्री सर्प सक बेट ये २	मटाकर २३-१६-१५-११	११ का भंग कोठनं० १८	के समान जानना	के १३ के मंग में के स्ती	ग्रोर नगुंसक बेद ये २	५ का मंग को० नं० १	के छ में मंग में से स्ती-	नषु संक वेद ये २ घटाकर ४	भीत भूमि भ	२३-१६ के मंग को० नं०	१ व क २४-२० क हरक
	चौतीस			***************************************	nggan katir yan a sa in															, ,

2
m
_

चौंतीर	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं  ४७	नं <b>०</b> ४७		तुरुष	वेद मे
~	w	>	*	w	໑	ឋ
१२ ज्ञान केवल ज्ञान घटाकर शेष ७ ज्ञान जानना १३ संग्रम सूक्ष्म सांपराय ज्ञीर यथान्स्थात ये २ घटा कर (५)	भंग में से एक स्त्री वेद घटाकर २३-१६ के भंग अनना २३-१६ के भंग को० नं० १६ के २४-२० के हरेक भंग में से एक स्त्री वेद घटाकर २३-१६ के भंग जानना २३-१६ के भंग जानना ७ (१) तियँच गति में २-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो ३-३-४-३-३ के भंग को० नं० १० देखो (३) देव गति में ३-३-४-३-३ के भंग को० नं० १० देखो १६ देखो	वेद मंग त में तिकर तिकर तिकर तिका तिका तिका तिका तिका तिका तिका तिका	१ भंग को०नं० १६ देखो १ ज्ञान १ ज्ञान शे०नं० १८ देखो १ ज्ञान १ ज्ञान को०नं० १९ देखो भागे भे से कोर्ध भंगों में से कोर्ड १ संयम कोर्ड १ संयम हो भंगों में से	स्त्री वेद १ घटाकर २३- २३ के भंग जातना १६ का भंग-को० नं० १६ के समान जानना २३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना जानना १९ तियंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) देवगति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १६ देखो (३) देवगति में २-५-३-३ के भंग को० नं० १६ देखो ३ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना ये (३) (१) तियंच गति में १७ देखो	१ भंग हो० नं० १७ देखो सारे भंग सारे भंग ति० नं० १६ देखो १ भंग १ भंग १ भंग शपने अपने स्थान हे भंग जानना हो० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान १ ज्ञान को०नं० १६ देखो १ संयम १ संयम शपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना

वेद सं	ır	१ संयम को०नं० १ = देखो १ संयम को०नं० १६ देखो	<ul> <li>१ वर्शन</li> <li>प्रपने अपने स्थान</li> <li>के भंगों में से</li> <li>कोई १ दर्शन</li> <li>कोटनं - १७ देखो</li> <li>१० दर्शन</li> <li>१० दर्शन</li> </ul>	तो कोठनं० १८ देखो १ दर्शन १ लेक्या १ लेक्या १ के प्रपत्ने स्थान के मंगों में से को कोई १ लेक्या वोठनं० १७ देखो	कोठनं० १८ देखो १ लेह्या कोठनं० १६ देखो
पुरुष	9	सारे भंग को० नं० १५ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	भंग १ दर्शन अपने स्थान के प्रपने अपने स्थान भंग जानना के भंगों में से को० नं० १७ देखों कोई १ दर्शन को०नं १७ देखों	नं० १ द देर १ मंग नं० १६ देर भग्ने स्थान म जानना नं० १७ देख	की० नं० १८ देखी १ भंग को० नं० १६ देखी
	UF	(२) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १ द देखो (३) देवगति में १ श्रसंयम जानना को नं० १६ देखो	रे (१) तियाँच गति में २-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में	२-३-२-३ के भंग को नं० १ = देखी (३) देव गति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ देखी ६ (१) तियंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो	६-३-१ क मंग को० नं , १ = देखो (३) देव गति मं ३-३-१-१ के मंग को० नं० १६ देखो
9× °	24	१ संग्रम को०नं० १६ देखो	<ul> <li>१ दर्शन</li> <li>के को०नं० १७ देखी</li> <li>श्रपने अपने स्थान</li> <li>के भंगों में से</li> <li>कोई १ दर्शन</li> <li>१ दर्शन</li> </ul>	देखो देखो स्थान स	क्षो०नं० १८ देखी १ लेख्या क्षो०नं० १६ देखो
कोष्टक नं०	>	सारे भंग को० नं० १६ देखो	<ul><li>१ मंग</li><li>श्रपने श्रपन के</li><li>भंग जानना</li><li>को० नं० १७ देखो</li><li>सारे भंग</li></ul>	नं० १ द देखें १ मंग नं० १६ देखें १ मंग भ्रम नं० १७ देखें सारे भंग	को० नं० १५ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो
दर्शन	m	को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १ असंयम जानना को० नं० १६ देखो	रे (१) तियँच गति में २-२-३-३-२-३ के मंग को० नं० १७ देखो (२) मनव्य गति में	<b>∺</b>	६.३-१-३ के भंग को० नं० १८ देवो (३) देव गति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १६ देवो
चौंतीस स्यान दर्शन	oʻ		दर्शन को० न० १७ देखो	ध्या को० नं० १ देखो	
मुं			१४ दर्शन को० न	१५ लेघ्या को०	

			340				
चौंतीस	चौंतीस स्थान दर्शन	इथीन	कोष्टक नं०	98	,	पुरुष	क्षे म
~	a	tts-	>>	<b>2</b> 4	w	٠. ع	al a
१६ भव्यत्व	8	6	१ भंग	१ अवस्या	۴	१ भंग	ु १ अवस्था
भव्य, झभव्य		(१) तियंच गति में	अपने अपने स्थान	र में से कोई १	(१) तियंच गति में	पिवत <u>्</u>	पर्याप्तवत्
		४-१-१-६ क भग को० नं० १७ देखो	क भग जानना को० नं० १७ देखो	ग्रवस्था को०नं० १७ देखो	२-१-२-१ क भग को० नं० १७ देखो		কাতনত <b>ং</b> ভ ব্ৰা
			भंग	१ अवस्या	(२) मनुष्य गति में	सारे भग	१ अवस्था
		के भंग  - भूको	को० नं० १८ देखो।	मो०नं० १८ देखो		को० नं० १८ देखो	कोर्नं १८ देखो
	,	(३) देवगति में	% मंग	१ अवस्था	काठ न ० १ द द्वा (३) हेवम्मि में	, <u>vir</u>	१ शबस्या
		२-१ के भंग	देखो	खे	१-१ के भंग		कोत्नं १६ देखो
•		को० नं० १६ देखो			को० नं० १६ देखो	•	1
		() ()	१ भंग	१ सम्घनत्व		१ भंग	१ सम्यक्त्त्र
का न० १६	द दखा		भपने अपने स्थान	IF	मिश्र घटाबार (५)	ग्रपने श्रपने स्थान	श्रपने श्रपने स्थान
		१-१-१-१-१-१-१ के भंग	के भंग जातना	मां में से	(१) तियैच गति में	के भंग जानना	中古中年中
		कों॰ नं॰ १७ देखो	को० नं० १७ देखो		१-१-१-१-१ के भंग	को० नं० १७ देखो	कोई १ सम्यक्त
		7	,	<u>(a)</u>	को० नं० १७ देखो		को०नं० १७ देखो
		(२) मनुष्य गांत म	सारभग	िरव	(२) मनुष्य गति में	सारे	१ सम्यक्त्व
		8-8-8-3-3-3-5-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-8-	कों० १८ प्रमास्त	n i	१-१-२-१-१-१ के भंग	को० नं० १ द देखो	क्तिंग्नं १५ देखी
		१ द देखी		यमा <i>द</i> ा	कां० न० १८ दला		
			सारे भंग	१ सम्यक्त	(३) देवगति में	सारे भंग	१ सम्यक्त
		१-१-१-२-३-२ के मंग क्षो० मं० १० केको			१-१-३ के भंग	को जनं १६ देखो	को० नं० १६
१ त संजी	8	1	१ भंग	१ अवस्था	का० न० १६ देखा उ	rir 6	दस्।
संजी,	श्रसंजी	(१) तियंच गति मं	अपने अपने स्थान	र मं से कोई	(१) तियैच मित में	पयिप्तिवत	र अवस्य। पर्याप्तवत
٠		१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	के भंग जानना को नं० १७ हेको	१ मवस्या कोठनं० १५ हेखो	१-१-१-१-१-१ के भंग कोट मंट शुरू केलो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७
		(२) मनुष्य गति में	भंग		(२) मनुष्य गति में	१ भंग	१ अनस्या
	ē	८-१ क भग को मं० १८ देखो	कां० न० १व देवा	क्तिन् १ द देखी	१-१ के भंग को० मं० १८ हेखो	को० नं० १प देखो	को० न <b>ं०</b> १द हेन्नो
	,	_				,	

१ संग १ सवस्या (३) देव गति में को० नं० १६ देखी । १ संग नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी १ संगी जानना को० नं० १६ देखी । १ संग नं० १७ देखी । १ संग को०नं० १६ देखी काम से से में से प्रियं ज्ञान य १ घटाकर भंग जानना कोड्युं १ उपयोग को०नं० १६ देखी (३) तियंच गति में सारे संग १ उपयोग को०नं० १६ देखी कान नं० १७ देखी काघन हो। नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी काघन काघन हो। नं० १६ देखी काघन काघन हो। नं० १६ देखी काघन काघन हो। नं० १६ देखी काघन काघन काघन काघन काघन काघन हो। नं० १६ देखी काघन काघन काघन काघन काघन काघन काघन हो। नं० १६ देखी काघन हो। नं० नं० १६ देखी	न्तेंनीस रशास स्मोस		Į,		३२१ ) अस्त ४७	#	प्रव	मः ज
१ मवस्था (३) देव गति में को० नं० १६ देखी १ म्र था १ म्र था १ म्र था १ म्र था १ मुम्म को०नं० १७ देखी १ १ मुम्म को०नं० १७ देखी १ १ मुम्म को०नं० १७ देखी १ १ मुम्म को०नं० १६ देखी १ अवस्था १ अवस्था १ १ अवस्था १ अवस्था १ १ अवस्था १ १ सम्म का०नं० १६ देखी १ १ सम्म का०नं० १६ देखी १ १ सम्म का०नं० १६ देखी १ १ सम्म में से प्रम का०नं० १७ देखी १ १ सम्म का०नं० १६ देखी	त्राह्म स्वान स्थान		1		,	w		
१ मवस्था (३) देव गति में १ भंग १ म था १ भंग १६ देखी १ भंग १६ देखी १ भंग १९ देखी १ भंग १९ देखी १ भंग भा १८-१-१ के भंग को० नं० १७ देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १८ देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १० देखी विकाल १८-१-१ के भंग को० नं० १० देखी को० नं० १० देखी को० नं० १८ देखी कार्य कार्य के भंग को० नं० १८ देखी कार्य कार्य के भंग को० नं० १८ देखी कार्य कार्य के भंग को० नं० १८ देखी कार्य के भंग को० नं० १८ देखी कार्य के भंग को० नं० १९ देखी कार्य के भंग कार्य के भंग कार्य के १० देखी कार्य के १० देखी कार्य के १० देखी कार्य के भंग कार्य के भंग कार्य के भंग कार्य के १० देखी कार्य के १९ देखी कार्य के १० देखी कार्य के १९ देखी कार्य के १० १० देखी कार्य के १० १० देखी कार्य के १० देखी कार्य के १० देखी कार्य के १० १० देखी कार्य के १० देखी कार्य के १० १० देखी कार्य के १० १० देखी कार्य के १० १० १० देखी कार्य के १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०	.						-	
१ म था २ १ मंग २ १६ देखी १२ भंग को०नं० १७ देखी १२-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखी विशेषा गति में १७ देखी को०नं० १६ देखी विशेषा मानः स्वानमा को०नं० १६ देखी (१) तियम् गति में १ अपने अपने स्थान केप को भंग में से पर्येय ज्ञान य २ घटाकर भंग ज्ञानना कोइक्षेत्र उपयोग केप का नं० १७ देखी (१) तियम् गति में १ उपयोग केप केप नं० १७ देखी को०नं० १६ देखी का को०नं० १६ देखी का का०नं० १६ देखी का का०नं० १६ देखी का					१ मनस्या को०नं० १९ हेखो	(३) देव गति में १ मंत्री जानना	~ .ti	१ अवस्था को०नं० १६ देखी
१ स था १ भिग्ने भाग को०नं० १७ देखो १८-१-१ के भग को० नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो सारे भंग १८-१-१ के भग को०नं० १८ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो काग	को० नं० १६ देखी	बो				को० नं० १६ देखो	· ·	
ते कीठनं० १७ देखी (२) तिसंच पति में कोठ नं० १७ देखी कोठ नं. १७ देखी कोठ नं. १७ देखी कोठ नं० १८ देखी कोठ नं० १८ देखी कोठ नं० १६ देखी हैं। १८ १८ १८ देखी कोठ नं० १६ देखी हैं। १८ १८ देखी कोठ नं० १६ देखी हैं। १८ १८ देखी कोठ नं० १६ देखी कोठ नं० १७ देखी कोठ नं० १७ देखी कोठ नं० १७ देखी कोठ नं० १७ देखी कोठ नं० १० देखी कोठ नं० १८ देखी कोठ नं० १६ देखी काठ नं	ميدة الم		'	~ .	१ म था	~ ·	~	१ अवस्था
ह सबस्या (२) मनुष्य गति में सारे भंग है। सारे भंग (२) मनुष्य गति में है। के भंग को० नं० १८ देखो को०नं० १८ देखो को० नं० १८ देखो को०नं० १८ देखो			भ	म्	क्रीं०नं० १७ देखो	(२) तिगैच गति में	मं०	कोठनं० १७ दखो
श् अवस्था १-१-१-१ के भंग को० नं० १ द देखो को०नं० १ द व्हे वो को०नं० १ द देखो को०नं० १ द देखो को०नं० १ द के भंग हो०नं० १ ६ देखो को०नं० १ हे देखो	१-१ भ भग को मं० १७ देखो	१-१ भ भग को मं० १७ देखो			,	१-१-१-१ भ भग को०नं १७ देखो		· · ·
श्चित्रस्था १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १ द देखो को०नं० १ द देखो को०नं० १ द देखो को०नं० १ द देखो को०नं० १ द के भंग १ अवस्था १ अवस्था को० नं० १ ६ देखो को०नं० १ ७ देखो को०नं० १ ० देखो को०नं० १ ० भंग १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	आहारक ही	आहारक ही	٠	,	-	(२) मनुष्य गति में	#	१ अवस्या
१ को०नं० १ द देखी को० नं० १ द देखो १ अंग १ अ १ १ अ १ १ अ १ १ अ १ १ १ अ १ १ १ अ १ १ ४ १ १ अ १ १ १ अ १ १ ४ १ १ ४ १ १ ४ १ १ ४ १ ४	-	-		सारे भंग	गस्या	१-१-१-१-१ में मंग	मं० १५	को०नं० १८ देखो
१ अवस्था १-१ के मंग को० न० १६ देखो को०न० १६ देखो को०न० १६ देखो को०न० १६ देखो हो। १ अपने अपने स्थान कुश्चर्या को अपने अपने स्थान कुश्चर्या कुश्चर्या को स्थान के प्रयोगियत हो। को०न० १७ देखो को०न० १७ देखो को०न० १० देखो को०न० १६ देखो विभिन्न को स्थान को०न० १० देखो को०न० १० देखो को०न० १६ देखो	१-१ के भंग		क्	नं० १८ देखो	१८ देखी	को० नं० १८ देखो		
१ सबस्था को० नं० १६ देखो को० न० १६ देखो को०नं० १ सबस्था को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो कापने स्थान कुत्रविध ज्ञान, मनः प्रपने स्थान केपियित्रवत के संग में से पर्यय ज्ञान य २ घटाकर भंग ज्ञानना को०नं० १६ देखो हो। १८ मिनुष्य गति में सारे मंग १८ चप १८ देखो को०नं० १६ देखो को। नं० १० देखो को। नं० १० देखो को। नं० १६ देखो	को० नं० १ द देखो						१ भंग	१ अवस्था
१ अवस्था को० नं० १६ देखो १ उपयोग १ उपयोग के अपने अपने स्थान के प्रयोगवान के अपने अपने स्थान के प्रयोगवान के अपने अपने स्थान के प्रयोगवान कोईदैं उपयोग १ अनुष्य गति में को० नं० १८ देखो को नं० १ १ उपयोग को। नं० १८ देखो को नं० १ १ उपयोग को। नं० १८ देखो १ अप १ उपयोग को। नं० १८ देखो को नं० १९ देखो को। नं० १६ देखो को। नं० १९ देखो	माहारक ही	म्राहारक ही		~			न० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
१ उपयोग १ उपयोग के अपने अपने स्थान कुश्रवधि ज्ञान मनः अपने अपने स्थान केपियिप्तवत् के अपने अपने स्थान कुश्रवधि ज्ञान य २ घटाकर अंग ज्ञानना कोठनं० । कोई। १ उपयोग १ उपयोग १ को० नं० १७ देखो को० नं० १६ देखो को नं० १ उप १ उपयोग को० नं० १६ देखो को नं० १६ देखो को नं० १ अप १ उपयोग को नं० १६ देखो को नं० १६ देखो को नं० १ अप १ उपयोग को नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १				भंग	१ अवस्या	मं० १९	-	
१ उपयोग के अपने स्थान के भंग में से पर्येय ज्ञान य २ घटाकर कोईंगुर उपयोग कोईंगुर उपयोग १ उपयोग को०नं० १६ देखो को० नं० १७ देखो १ उपयोग १ भेन १० देखो १ भेन १० देखो १ अप को० नं० १६ देखो को नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १	गनना	गनना	<u>क</u>	१६ देखो	कोठनं० १६ देखो			
१ उपयाम		का० न० १६ दस्।					•	
क अपने अपने स्थान कुअवांध ज्ञान, मन: अपने अपने स्थान किंग्योग्नवत् के भंग में से प्रयेय ज्ञान य २ घटाकर भंग जानना कोठनंठ । कोड़ें १ उपयोग १० १७ देखो हो कोठ नंठ १७ देखो कोठनंठ १० देखो को नंठ १० देखो	02 60	•	•	१ भन	१ उपयाम		० भग	
ा जानना के भग में से पयंग्र ज्ञान ये २ घटाकर भंग जानना किंग्निक १७ देखी कोंड्युं उपयोग है । विग्रंच गति में सोंड्युं उपयोग है । विग्रंच गित में सारे भंग १ उपयोग है । विग्रंच गित में सारे भंग है । विग्रंच गित में सारे भंग १ उपयोग को नं० १८ देखी हो नं० १६ देखी ह	•	•	यपने	श्रपने स्थान के	अपने अपने स्थान	मन:	अपने अपने स्थान के	
नाइड्रें उपयाग नां १७ देखी को॰नं॰ १७ देखो (१) तियँच गति में १ उपयोग ४ -४ -४ -४ -६ के मंग नं० १८ देखो को॰नं० १८ देखो को० नं० १७ देखो १ भंग १ उपयोग को नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो (३) देच गति में १ भंग को० नं० १६ देखो को० ४ -४ -६ के भंग को० नं० १६ देखो को० को० नं० १६ देखो को०			<b>Æ</b>	ग जानना	के भग में से	२ घटाकर	ानना	क्तों भें ० १७ देखों
न० १७ देखी कारुन० १७ देखा (१) तियच गांत मे १ उपयोग ४-४-४-४-६ के भंग नं० १८ देखो कोर्न्न १८ देखो कोर्न्न १८ देखो (२) मनुष्प गति में सारे भंग ४-६-६-४-६ के भंग कोर्न्न १८ देखो को १ उपयोग को नं० १८ देखो को १ अप्रेम कोर्न्न १६ देखो कोर्न्न कर्ने १६ देखो कोर्न्न कोर्न्न हिर्मे	भग का० न० १७ देखा		4		कोइंड्रे उपयोग	( <del>1</del>	को० न० १७ देखो	
सार्ट भंग १ उपयोग ४-४-४-४-६ कं भंग नं० १८ देखो को०नं० १८ देखो को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में सार्ट भंग ४-६-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो को १ भंग १ उपयोग को नं० १८ देखो हो। सार्ट भंग को०नं० १९ देखो (३) देव गति में १ भंग ४-४-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो को०	部 。	部 。	कर्	म् % ७ ,	क्रींजन० १७ देखो	(१) तियच गांत में		
न० १८ देख। को०न० १८ देख। कि। के। वि से सारे भंग (२) मनुष्प गति में सारे भंग ४-६-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो को १ भंग १ उपयोग को नं० १८ देखो है। सारे भंग को०नं० १६ देखो (३) देव गति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो को०			•	सारे भंग	१ उपयोग	メーターターターを中は、中は一		•
(२) मनुष्य गांत म       सार भग         ४-६-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो को         भंग को०नं० १६ देखो (३) देव गति में       १ भंग         ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो को०	くま - さーらーさーの - さーと   年10		4.10	न्० १५		क्रीं नं १७ देखों		
भंग     १ उपयोग     को नं० १ देखो       भंग     को०नं० १६ देखो     (३) देव गति में     १ भंग       ४-४-६-६ के भंग     को० नं० १६ देखो     को०	६-६ के भग	६-६ के भग		,	-		सारे भंग	१ जपयोग
भग है उपयाग का न० इन देखा भंग को०नं० १९ देखो (३) देव गति में ४-४-६-६ के भंग को० नं॰ १९ देखो को० नं० १९ देखो	काठ नठ १व देखी	किंग्नि न० १व देखी				可	नं० १८ देखो	त म० १८ दखा
नग १५०५७ १६ देखो कोठ नं ६ १६ देखो कोठ नं ६ १६ देखो कोठ नं ५ १६ देखो			H	是是	१ उपयाग कोन्डेर १९ डेक्टो	(३) अन्य मन्ति भ	ļį.	श ज्यमीम
नं० १६ देखी	<u>ज</u> े					भ भंग	१९ देखो	ो जन्ति १६ देखो
					,	नं० १६ देखो	, ,	•
_								

																							,				
j.:	म् म		ប	9 F7163	श्रपने श्रपने स्थान	म भगों मं स	नार १ ध्यान कोवनं १ १ हेस्बरे		į	्र स्यान कोठनं० १८ चन्त्र	<b>                                    </b>	१ ध्यान	को०नं० १६ देखो	• !	1 1 1	अपन स्थान के मंगें से स	कोई १ मंग	जानना					— १ भग स्रोताता है।	न०१७ दस्ता			
•,	पुरुष	9	» —   -	भंग	अपने अपने स्थान के अपने स्थान	क्रिंट मंं शाननी			सारे थंग	देखो		< भंग	का० न० १६ देखो क	e e	अपने अपने स्थान के सम	सारे भंग जानना			-			ii.	नं० १७ सेवो				
		יעט			2पपत्व ।वतक विचार् शुक्ल ध्यान १ घटाकर	(88)	(१) तियच मित में ८-६-१ के भांम	कों नं १७ देखो	(२) मनुष्य गति में		पा न० १५ दखा (३) हेन मि भ		नं० १६ देखो		स्य	d= 1	घटाकर)	भ्रौ० मिश्रकाययोग १,	वि० मिश्रकाययोग १,	नाहारक निश्वकाययांग १, कामिता काय्योम ०	में ४४ माथव जानना	(१) तियन गति में	8१-४२-३६-३७ के मंग को०	न० १७ के ४३-४%-	से स्त्री वेद नप्सक वेह	वटाकर ४१-४२-	र ६-३७ के भंग जानना
३२२ <b>)</b> मं० ८७	2	H		्र ध्यान के अपने श्याने स्थान	के मंगों में से	की हैं १ ध्यान	१ ध्यान	को०नं० १८ देखो		% स्याम	कोंत्नं० १६ देखी		र मंग		क्रीकि व्यास			क्षेत्र संग		<del>-</del>	क्त	<u>*</u>	သိ ¶	6 m	4	ा हो 	32
् भोष्युं		>		र भग श्रपने श्रपने स्थान	भंग जानना	<b>取りからた。</b>	H.	का० न० १८ देखो	,	सारे भंग	को० नं० १६ देखो		सार भग अपने अपने स्थान	सारे भंग जानना			1	争				.,				<u> </u>	-
दशन	n	~	mr ov	( ) तियँच गति में	५-१-१०-११-५- १-१० के भंग	को० मं० १७ देखो	(२) मनुष्य गति में ==8=१० ।	1-4-40-44-10-12-1 4-4-8-40 部 知知	को० नं० १ व देखो	(३) दंबगति में	क्षीर में कि भूक	150 47 A SEE	ग्रौ॰ मिश्रकाययोग १,	वे । मिश्रकाययोग १,	आ॰ मिथकाययोग से,	कीमीसा काययोग १, ये ४ धराहर केट (1.0)	(२) तियंच गति में	हों मंं	म ४३ म भी में में स्वी	पर, गुराक वद य र घटाकर ४१ का भंग	•	४६-४४-४०-३५ के मंग (	किं नि १७ के ५१-	भाग में में मार्थ ने हर्तन मंग	ये २ घटाकर ४६-४४-	४०-३५ के भंग जानना	
चौंतीस स्थान दर्शन	~		_	आत च्यान ४, रीव्र च्यान ४	धर्म ध्यान ४, पृथवत्व	ध्यान जानना						र ग्रास्तव	रता वद, नपुस्क वेद ये २ घनाच्या भेग	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	(44)		<u>ت</u>		•		-					_	

नं० १७ के ५०-४५-४१ के हिद्या में से स्त्री वेद १ घटाकर ४६-४४-४०-४४-४४-४४-४०-३५-२० के मंग जानना ४६-४४-४०-३५-२० के मोंग जो० नं० १८ देखी मोंग को० नं० १८ देखी मोंग को० नं० १८ के मंग जो० नं० १८ के मांग में से स्त्री वेद नचु कर के मांग नो० नं० १८ के समान जानना २० का मांग-को० नं० १८ के समान जानना २०-१४ के मांग-को० नं० १८ के स्था जानना २०-१४ के मांग नो० नं० १८ के २२-१६ के हरेक मांग नो० नं० १८ के भाग को० नं० १८ के भाग नोवता १०-१४-४९ के भाग को० नं० १८ के भाग नोवता १० भाग सारे मांग १० भाग १० भाग सारे मांग
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

चौंतीस स्थान दर्शन	शिन	( ३२४ कोष्टक नं०	२४ <b>)</b> न <b>े</b> ०४७		प्रमृ	मः ज
~	m	>>	*	usr	9	r
	के हरेक भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४६-४४- ४० के भंग जानता ४६-४४-४०-४० के मंग को०नं० १७ के समान	2	5	३३-४२-३७-३३-३३ के :तंग को० नं १६ के समान जानना सुचना—भवनत्रिकदेवों में से ३३ का भंग नहीं होता।		<u>.</u>
२३ भाव ४३ उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १,	४३ (१) तियँ च गति में २४-२६-२७-२८-३०-२७ के मंग को० नं० १७ के २७-३१-२६-३०-३२-२६	सारे भंग अपने अपने स्थान के अपने स्थान सारे भंग जानना के भंगों में से को० नं० १७ देखो कोई १ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग निम्नो स्थान के भंगों में से कोई १ भंग कोर्व १७ देखो	३ <sup>८</sup> चारित्र १, चारित्र १, विम १, पि शान १,	सारे भंग अपने अपने स्थान के अपने अपने स्थान सारे भंग जानना के भंगों में से कोई १ भंग	१ मंग अपने अपने स्थान के मंगों में से कोई १ मंग
क्षयोपदाम भाव १६, तियंच-देव-मनुष्प गति ३, कपाय ४, पुरुष लिग १, लेश्या ६, मिध्या- दर्शन १, असंयम १, भज्ञान १, श्रसिद्धत्व १, पारिस्पािष्क भाय ३,	के हरेक मंग में से स्त्री- नपुंसक वेद ये २ घटाकर २४-२६-२७-२६-३०-२७ के भंग जानना भोग भूमि में २४-२०-२४-२६ के भंग को० नं० १७ के २७-२४-	2		कुअवधि ज्ञान १, य ५ घटाकर (३८) (१) तियंच गति में २४-२४-२३-२३ के मंग को० नं० १७ के २७- २७-२५-२५ के हरेक मंग में से स्त्री नयुंसक	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भग को <b>०नं०</b> १७ देखो
ये ४३ भाव जानना	२६-२६ के हरेक भंग में से स्त्री वेद घटाकर २६- २४-२५-२८ के भंग जानना (२) मनुष्य गति में २६-२७-२६-३१-२६-२६ ह	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग क्लो०नं० १८ देखो	वेद ये २ घटाकर २५- २५-२३-२३ के भंग जानना भोग भूमि में २३-२१ के भंग को० नं० १७ के २४-	*	
	३१-२६-३०-३३-३०-३१ के हरेक भंग में से स्त्री वेद, नपुंसक वेद ये २ पटाकर २६-२७-२८-३१- २८-२६ के भंग जानना		,	से स्त्री वेद घटाकर २३-२१ के भंग जानना २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना		,

G		४८६ )	( )			7
चौतीस स्थान	. दर्शन	कोष्टक नं०	9% o		पुरुष	वद म
~	m	<b>&gt;</b>	አ	υν	9	ւ
	२७ का भंग को०नं० १८	11	"	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	~ भंग
	के समान जानना		•	रद-रह क भग कां० न०	क्रां० न० १८ देखा	
	२६-२७ के भंग को० नं०	33		रूप के २०-२प के हिर्क		ुखा
	१८ के ३९-२९ के भूग म			नप्सक वेद ये २ घटाकर		•
	में ए समस्य २१-२७ में			र्ट-२६ के भंग जानना		
	भूग जानमा			३० का भंग-को० नं०		
	२७ का भंग ऊपर के दवे	•	•	१८ के समान जानना		
				२७ का भंग-को० नं०		"
	औं यहां जानना			१ न के समान जानना		•
	भोगभिम में		:	भोगभूमि में	*	
	२६-२४-२५-२ के भंग	:		२३-२१ के मंग को० नं०		
	कों नं १ द के २७-२%			१ न मे २४-२२ मे हरेक		
	-२६-३६ के हरेक भंग में			भंग में से स्त्री वेद	-	
	से स्त्री वेद घटाकर २६-			घटाकर २३-२१ के भंग	•	
	२४-२४-२ हे भंग जानना		•	जानना		
	(३) देवगति में	सारे मंग	१ भंग	२४ का भंग-को० नं०		*
	<u> </u>	क्ष	को० नं० १६	१८ के समान जानना		
	२४-२८ के भंग को०		देखो	(६) देवगति में	सारे भंग	१ भंग
	नं० १६ के २४-२३-२४			२४-२३-२४-२३ के भंग	को० नं० १६ देखो	को० नं० १व
	२६-२६-४४-५६-३६		- ,	को० न०१६ के २६-२४-		देखो
	हरेक भंग में से स्त्री वेद		-	२६-२४ के हरेक भंग में		
	१ घटाकर २४-२२-२३-	,		से स्त्री वेद १ घटाकर		
	२४-२६-२०-२४-४८			२४-२३-२५-२३ का भंग		
	भंग जानना			जानना	2	:
	क्र-४५-४५-४६-४४			रत-र३-११-१६-१६ के		:
				भंग को० नं० १६ के		
. 34254 4	समान जानना			समान जानना		
			ĺ			

श्वरागाहिमा—को० नं० १७-१६-१६ देखो ।  श्वर प्रकृतियां—१२० सामान्य आलाप से जानना ।  श्वर प्रकृतियां—१२० सामान्य आलाप से जानना ।  श्वर प्रकृतियां—१०७ उदयनोग्य १२२ में से स्त्री वेद १, नरकदिक २, यारकदिक २, ये ८ प्रकृति घटाकर १९२ जानना ।  सुरम १, स्यावर १, अपर्याप्त १, आतप १, तीयंकर प्र० १, ये १५ घटाकर १०७ प्र० का उदय जानना ।  संस्या—असंख्यात जानना ।  सोया—असंख्यात जानना ।  सोया—जाक का असंख्यातवां भाग जानना ।  स्पर्या—कसंख्यात जानना ।  स्पर्या—विक का असंख्यातवां भाग जानना ।  स्पर्या—विक का असंख्यातवां भाग जानना ।  स्पर्या—नान जीवों की अपेक्षा लोक का संख्यातवां भाग जानना । १६वे स्वर्ग से ३२ नरक तक आने की अपेक्षा मारव्यात्तिक समुद्ध्यात में पुरम देद नरक तक आने की अपेक्षा मारव्यात्तिक समुद्ध्यात में पुरम वेद का उदय होने की अभेक्षा ६ राजु जानना ।  स्पर्या—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा अतमुद्धितेंसे नवसी (६००) सागर तक निरम्पर पुत्प वेद को प्रक्ष वेद को प्रस्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा एक समय से असंख्यात पुद्गाल परावर्तेन काल तक पुरम वेद को प्रस्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोहि अपेक्षा देव ४ लाख मिन्ता ।  बाति (योति)—२२ लाख योनि जानना, (तियंच ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख को २२ लाख जानना) ।  कुल — ६३।। वाख कोटिकुल जानना, (तियंच ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य नित्र लाख कोटक्य के चानना)
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ഉ
E.
,
_

क्रुवान मामान्य आलाप						
	<b>पय</b> िस		`		अपयति	<b>-</b>
	नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	के नाना एक जीव के एक में समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय से	एक जीव के एक समय में
6 8	m	>>	24	υ	٩	u l
१ गुसा स्थान १ से ६ गुरा० जानना	हे १ से ६ तक के मुस्सक विशेष विवर्सा को० न० ४७ में दखो	सारे गुसा स्थान को० नं० ४७ के समान जानना	१ मुस्ए० को०न० ४७ के समान जानना	र मिथ्यात्व, सासादन गुराए तिर्यंच, मनुष्य, देव इन तीनों गति में हरेक में जानना	दोनों गुरा स्थान प्रपने प्रपने स्थान के सारे गुरा० जानना को०नं० १७-१६-	कोई १ मुसा० को०नं० १७-१द- १६ देखो
र जीव समास ४	र मिन्न प्रमाम	१ समास	१ समास	ج ج 13 مزين جام	१ समास	१ सम स
कार नुरु हुन्ता । त्रु पर्यापि स्रोत संत १ देखो	को तम् ४७ में समास ह	१ भंग	१ मंग	भारतात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्वात्	१ मंग	१ मंग
पार १८ ५५५। प्रमास स्रोट मंट १ सेसो		१ भंग	१ भंग		१ मेंग	१ मंग
प्रसंजी ४ हेला स्रोत्से० ३ हेलो	क्रो० मं ००० में तातात अ क्रो० मं ०४० के समान	१ भंग	१ भंग	क्रोंट मंद्र ४० मामाम	१ भंग	१ भंग
६ गति ३ तियेच, मनुष्य, देव	तीनों गति जानना	१ गति	१ मति	सार पर्याप्तवत् जानता	१ गति	१ गति
य ३ मात जानना ७ इन्द्रिय जाति पंतेन्द्रिय जाति	रे। दीनों गतियों में	१ जाति	१ जाति	्र १ तीनों गतियों में	े श्रमित	१ जाति
	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७–१म–१६ देखो		100	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१म-१६ देखो	,	

स्त्री वेद में	u g	१ योग पयसिवत्	<b>१</b> १ भंग खो को०नं० ४७ देखो	8 ज्ञान - के अपने यपने स्थान 1 के मंगों में से - कोई १ ज्ञान को०नं० १७-१८- १६ देखो
	ug.	हीनों गतियों में	१-२ के भंग को०नं० १७-१६ देखो १ तीनों गतियों में हरेक में १ स्त्री वेद जानना २३ तीनों गतियों में हरेक में को० नं० ४७ देखो	पानना परन्तु यहां स्त्री वेद के जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये १ भंग इग्नविध ज्ञान ग्रोर ३ ज्ञान ग्रापने ग्रापने स्थान के घटाकए (२) सारे भंग जानना १९) तियंच गति मेनुष्य गति में १६ देखों ३-२ के मंग
( ३२८ ) कोप्टक नं० ४८	*	१ योग श्रयने श्रयने स्थान के भंगों में से कोई १ योग	१ १ भंग की०नं० १७ देखो त	शानना परन्तु यहां हिन विद के जगह प्र विद घटाना चाहिये के भंगों में से घटाकए (२) कोई १ ज्ञान (१) तियंच गति कोर्ल १७ देखो पनुष्य गति १ ज्ञान देव गति में हरेक में
	×	ं जानना -१८-१९ देखो १ भंग ययोग १, प्रपने श्रपने स्थान के योग पोग १, को०नं० १७-१८-१६ (१०) देखो	हरेक में निर्मा हरेक में को० नं० ४७ देखो हर्ग	पुरुष वद १ भंग श्रपने अपने स्थान ब भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो
चौंतीस स्थान दर्शन १ र	_	ह योग १ वसकाय तीनों गतियों १ वसकाय जानना को० नं० १७-१८ दे हे अराहारक काययोग १ यो० मिश्रकाययोग १, ये २ घटाकर (१३) को० नं० ४७ देखों	१     १       स्त्री वेद     तीनों गितयों में हरेक में       ११ कपाय     २३       पुरुष वेद, नपुंसक वेद     तीनों गितयों में हरेक में       ये २ वेद घटाकर (२३)     को० न० ४७ के समान जानना परन्तु यहां	१२ ज्ञान  मनः पर्ययः ज्ञान १ भेषेत्र मानः पर्ययः ज्ञान १ भेषेत्र ज्ञान १ १२ (१) तिर्यंच गति मे  घटाकर (६)  पराकर (६)  सनुष्य गति मे १ से ४ गुराउ मे

š			1 2 P		मञ्जू	मनी भेट
चांतार	चीतास स्थान दशन	के।७५क	40 84	-	127	
0	tu.	>	*	us	9	ប
,	- c - c - c - c - c - c - c - c - c - c		,	को०नं० १७-१ दन-१६ देखो		
	को० नं० १८ देखी	. ,				
•	(३) देव गति में	सारे मंग	१ जान	•		
	३-३ के भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	•	·	
	कां न १६ वला	•	•	c	Ö	•
१३ संयम	४ १०) स्मिन मानि में	नगरे गणने स्थान के नगरे संघत	१ सयम ज्ञान ज्ञापने स्थान	र तीनों गतियों में हरेक में		٠ <u>.</u>
ग्रस्यम, सयमासयन,	(c) (de 4 410 4 2-2-9 के भंग	भंग जानना	अभागाम स	१ श्रसंयम जानना		
तना ग्रे ४ मंग्रम जानना	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	कोई १ संयम	कोठमं० १७-१८-१६ देखी		
			को०नं० १७ देखो			
	(२) मनुष्य गति में		१ संयम	٠,		
	र के मंग	मो० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखो			
^ •	म.ो० नं० १ प देखो			•		,
	(३) देव गति में	भंग	१ संयम			
,	१ श्रसंयम जानना	को० नं० १९ देखों	को०नं० १६ देखो	•		
•	को० नं० १६ देखो		,			
१ < दर्शन	m	१ भंग	१ दर्शन			
० नं० १ देखो	(१) तियंच गति में	ग्रपने ग्रपने स्थान के  ग्रपने ग्रपवे स्थान	म्रपने म्रपवे स्यान			
•	२-३-३-२-३ के भंग	भंग जानना	कमगोमस			-
	को० नं० १८ देखो	को० नं० १७ देखो	कोई १ दर्शन			
			को०नं० १६देखो			,
	(२) मनुष्य गतियों	मारे मंग	१ दर्शन			
	र-३ के भंग	को० नं० १८ देखो	कोठनं० १५ देखो			
	को० नं० १८ देखो					•
	(३) देवगति में	मारे भंग	१ दर्शन			
	र-३ के भंग	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो			
	को० नं० १६ देखो	•	6	·		9 :PETT
<i>६.</i> ५ लेख्या ६	υž	्र संग	्र लक्षा	ן ט ייפו		
को० न० १ देखो	को० नं० ४७ के समान जानना	नि० नं० ४७ देखो	     	कोन्ने ४७ दखो (१) तियच गति म	का० न० ४७ दल।	कार्यव ४७ ५९।

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	ं कोष्टक नं	डक नं ० ४८		स्त्री	स्त्री वेद में
~	, m	<b>&gt;</b>	*	مون	ຸອ	u .
				६-२ के भंग		<b>D</b>
				को० नं० १८ देखो		-
				(२) मनुष्य गति में		<b>.</b>
	<del></del>					
				काठ नं रूप देखा		
				(३) दन गांत म   ३-३ के भंग	:	
,				को० नं० १६ देखो		
१६ भव्यत्व		१ भंग	१ अवस्था	· P	१ भंग	१ अवस्या
भव्य, स्रभव्य	को० नं० ४७ के समान	को० नं० ४७ देखो	ख		को० नं० ४७ देखो	1
१७ सम्यक्त ६		~	१ सम्पक्त		१ भंग	
को० नं० १८ देखो		को० नं० ४७ देखो	को०नं० ४७ देखो	닐	कों नं ४७ देखो	<u>ar</u>
सूचना-यहां भाव वेद						
की अपेक्षा जानना।	जगह पुरुष वेद घटाना			१-१ के भंग		
			,	को० नं० १७-१८-१६		
-	,			क समान		
٠	,	•		प्तादन जान	•	
रुप संग्री	۵.	र भग	१ अवस्या	1 1	१ भंग	१ अवस्था
त्या, भत्या ।	• काक - -	का० न० ४७ दल।	कार्यन ४७ द्वा	का० न० ४७ क समान	का० न० ४७ द्वा ्रांस	काठनठ ४७ दखा
क, अनाह	क को० नं० ४७ के समान	को० नं० ४७ देखो	को०मं० ४७ देखो	७ के समा	न सोठ नं० ४७ देखो	कोठमं० ४७ देखो
२० डपयोग ह	w	१ भंग	१ उपयोग	, ,	१ भंग	१ उपयोग
ज्ञानोपयोग ६	(१) तियंच गति में	E	निष्यपने भ्रपने स्थान	कुमति, कुश्रुत, ग्रचक्ष	पयितिवत	न्त
दर्शनोपयोग ३	使きーさーさーさース	भंग जानना	क भंगों में से	चक्षु दर्शन ये (४)	,	,
ये ६ जानमा	मंग को० नं० १७ देखो		कोई १ उपयोग	तीनों गतियों में हरेक में		
	(२) मनुष्य गति में		जानना	४ का भंग		
	४-६-६-१-६-६ मंग			को० नं० १७-१८-१९	•	
	क्रिक नं १ द देखों			देखाँ		
	(३) दवनाति मे					•
	१-६-६ क भग					

स्त्री वेद में	y g	१ मंग १ ध्यान म्रीर क्षो० नं० ४७ देखो को०नं० ४७ देखो		१, के सारेभंग ये १० जानना मे	भंग की		० मं,	ि नं <b>॰</b> यहां पुरुष को <b>॰</b>
	<b>U</b> *	न घमें घ्यान चार प्रयक्त्व विताके वि	16 A	त्रौ० काय योग वै० काययोग १ ये घटाकर (४३) (१) तियँच गति में	४१-४२-३६-३७ के भंग को० नं० ४७ देखो परन्तु यहां स्त्री वेद की अगद्र पहत वेद घटाना	्राहु ३९५ पद पर   चाहिये   (२) मनूष्य गति मे	३७ के मंग की	४२-३७ के मंग को० नं ४७ देखो परन्तु यहां स्त्री वेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये (३) देवगति में ४२-३७ के मंग—को०
( ३३१ ) कोष्टक नं० ४८	>>	१ मंग १ व्यान को० नं० ४७ देखो   को० नं० ४७ देखो	मं मं					
दर्शन	m	को० नं० १६ देखो १३ को० नं० ४७ के समान जानना	५० औ० मित्रकाय योग १,	ر در المراجعة المراج المراجعة المراجعة ا	जानना परन्तु यहां स्त्री-वेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये श्रौर मनुष्य गति में ग्रादानक्रकाय ग्रोगी का	न जारारमभाव पागा भा २० का भंग भी नहीं होता		
चौंतीस स्थान दशेन	٠.	२१ ध्यान १३ को नं० ४७ देखो	२२ स्रास्त्रव ५३ प्राह्मरक भिष्नकाय योग	१, आहारककाय योग १, पुरुष वेद १, नपुंसक वेद	ये ४ ६ट मर (४३)			

*
•
R
m
W.
$\overline{}$

भू के मानों में, से मानों में, से मानों में, से मानों में से होताह है, केरवा हो, केरवा हो, केरवा हो, केरवा हो, केरवा हो, हो, हो हो, हो, हो, हो, हो, हो, हो,	1.15.5 1.11.5 18118.7	44(1)	काष्ट्रक न ०	ง x		स्त्रो	स्त्रा वंद मे
पर स्थाप भी भी में की सारे भंग जानता के भंगों में से हिलीहिला है, करवाद डं, सारे भंग जानता सभ श्रीर भीग भूमि में को० नं० १७ देखी कोठ में ए असे स्थाप है, असंस्थार विकास में असे भूमि में को० नं० १७ देखी पारियामिक भाव है, असंस्थार परन्तु यहां हमीवेद की जगह साने जानता परन्तु यहां हमीवेद की जगह साने जानता हो हमीवेद की जगह हमीवेद हमीवेद की जगह हमीवेद की जगह हमीवेद की जगह हमीवेद की ज	કે ક	m	<b>&gt;</b>	*	سون	9	<u>r</u>
ा रह-२४-२५-२६ के भंग को० नं० १७ देखा कांध्र १ भंग मिच्या दर्शन १, असवम् १ मिच्या दर्शन १, अस्वम् १ सारे भंग मिच्या दर्शन १ मिग्र मिन्य गति में १८ १८ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १८ १८ १८ विकास १, विकास मिन्य	४३ के भावों में से	२४-२६-२७-२८-३०-३७ के	सारे भंग जानना	भ भंगों भ	१, कपाय १. लेइया	सारे भंग जानना	在 注:
रह-२४-२५-२६ के संग को० जानमा वाता १, असिद्धल्व १, विश्व के समान जानमा परन्तु यहां स्तीयेद की जगह सारे भंग विश्व के समान जानमा परन्तु यहां स्वीय को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो कि मंग को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो कि मंग को० नं० १७ देखो कि मंग को० नं० १७ देखो कि मंग को० नं० १० देखो कि मंग को० नं० १६ देखो कि मंग को० नं० १८ देखो के समान जानना परन्तु यहां स्तियेद को जगह पुरुष्वेद को जगह पुरुष्वेद विद्यान का को० नं० १८ देखो कि मंग को० नं० १८ देखो कि मंग को० नं० १८ देखो के समान जानना परन्तु यहां स्तियेद को जगह पुरुष्वेद को जगह पुरुष्वेद विद्यान वाहिये के समान जानना परन्तु यहां स्तियेद को जगह पुरुष्वेद के समान परन्तु यहां स्तियेद को जगह पुरुष्वेद के समान वात्ते वात्ते के वात्ते के अपन को वात्ते के समान वात्ते वात्ते के समान वात्ते वात्ते के समान वात्ते वात्ते के वात्ते के समान वात्ते वात्ते के समान वात्ते वात्ते के वात्ते के वात्ते के वात्ते के समान वात्ते वात्ते के वात्ते वात्ते के वात्ते के वात्ते वात्ते के वात्ते वात्ते के वात्ते के वात्ते वात्ते के वात्ते	मनः पर्यय ज्ञान १,			कोई १ मंग	मिथ्या दर्शन १, अस्यम्		r Ä
गह् सारे भंग १ भंग लिंक ५, ये (३०)  में में  में में  भे के नं० १८ देखी की०नं० १८ दंखी (१) तियंच गित में  ४५-२५-२३ के भंग को० नं० १७ देखी  १५-२५-२३ के भंग को० नं० १७ देखी  गर्ने परने यहां स्त्री वेद की  गर्ने प्रवाद प्रदानांचाहिये  भोग भूमि में  १३-२१ के भंग को०नं०  ४७ के समान परन्तु यहां  स्त्रीवेद की जगह पुरववेद  पराना वाहिये  १४-२३ के भंग को०नं० को० नं० १८ देखी  ४८ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरववेद  पराना वाहिये  भोग भूमि में  १३-२१ के भंग को० नं०  ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरववेद  स्ताना चाहिये  १३ देव गति में  १३ देव गति में  १३ देव गति में  १३ देव गति में  १४-२३ के भंग को० नं०	घटाकर ४२ जानना	२६-२४-२५ के मंग को		जानना	अज्ञात १, असिखत्व १,		जानना
गह सार भग १ भग लिंक ५, ये (३०)  में में  में में  भे में  २५-२५-२३-२३ के भंग को० नं० १७ देखी  ४७ के समान  परन्तु यहां स्त्री वेद की  अगह पुरव्येद घटानांचाहिये  भोग भूमि में  २३-२१ के भंग को०नं०  ४७ के समान परन्तु यहां  सारे भंग १ भंग (२) मनुष्य गित में  सारे भंग १ भंग (२) मनुष्य गित में  सारे भंग १ भंग (२) मनुष्य गित में  इ३-२१ के भंग को०नं० १६ देखी  ४५-२३ के भंग को०नं० १६ देखी  ४७ के समान परन्तु यहां  स्त्रीवेद की अगह पुरव्येद  घटाना चाहिये  भोग भूमि में  १३-२१ के भंग को०नं०  ४७ के समान परन्तु यहां  स्त्रीवेद की अगह पुरव्येद  घटाना चाहिये  भोग भूमि में  १३-२१ के भंग को०नं०  ४७ के समान परन्तु यहां  स्त्रीवेद की अगह पुरव्येद  घटाना चाहिये  १३-२१ के भंग निव्येद की अगह  १३ देश-२३ के भंग  १३-२२ के भंग  १३-२३ के भंग  १३-२२ के भंग  १३-२३ के भंग		न० ४७ में समान जानना		को०नं० १७ देखो	पारिस्पामिक भाव ३,		
भो० नं० १६ देखो को०नं० १६ दंखो (१) तियैच गति में सारे भंग २५-२५-२३ के संग को० नं० १७ देखो ४७ के समान परन्तु यहां स्त्री वेद को जगह पुरुषवेद घटानांचाहिये ", यस भूमि में २, १३-२१ के भंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटानांचाहिये ", १३-२१ के भंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटानांचाहिये जागह पुरुषवेद घटानांचाहिये के भंग को०नं० वित्र के संग को०नं० वित्र के संग को०नं० वित्र के संग को०नं० वित्र के संग को०नं० विद्र के संग को०नं० १६ देखो १३-२१ के संग को० नं० १० के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटानां चाहिये विद्र के संग को०नं० १० के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटानां चाहिये विद्र के संग को०नं० १० के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद की जगह		परन्तु यहा स्त्रावद को जगह	भंग	१ भंग	लिंग्घ ४, ये (३०)		
.१६- ४७  परने पहुं के समान कि नं० १७ देखी हों की नं० १७ देखी जगह पुरुषवेद घटानांचाहिये ""  दे - ११ के संग को कं० ""  १३-११ के संग को कं० कं० हिल्ली सारे संग को कं० कं० १८ देखी १४-१३ के संग को कं० कं० १८ देखी १३-११ के संग को कं० हिल्हे		पुरुषवंद घटाना चाहिये (२) मनसम्मन्दिः भूभिक्ते	को० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखो	(१) तियैच गति में	E	१ भंग
परन्तु यहां स्त्री वेद की  परन्तु यहां स्त्री के भंग को०नं०  ८६ के भंग को०नं०  १८ -११ के भंग को०नं०  १८ के भंग को० के १८ देखी को०नं०  १८ के भंग को०नं०		78-36-38-38-38-38-38-38-38-38-38-38-38-38-38-			रथ-रथ-र३-र३ के भंग	<del>عا</del> .	क्ती०नं० १७ देखो
परन्तु यहां , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		२७-२७ में मंग की व न० ४७			काठ नठ ९७ क समान		
गह पुरुषवेद ", "गे प्रेप्ति में ", १३-२१ के मंग को०नं० १९-३१ के मंग को०नं० १९ देखो १३-२१ के मंग को०नं० १८ देखो १३-२१ के मंग को० नं० १९ देखो को०नं० १३-२१ के मंग को० नं० १८ देखो को०नं० १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के मंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३-२१ के समान परन्तु यहां १३ के यंग को० नं० १८ के समान परन्तु यहां १३ के यंग के यंग वर्णवेद के समान परन्तु यहां १३ के यंग वर्णवेद के समान परन्तु यहां १४-२३ के यंग वर्णवेद के समान परन्तु यहां १४ के यंग वर्णवेद के समान		समान जानना परन्त यहां	-		नरन्तु यहा रता वद का		
१६ - १ के भंग को० ।  १६ के भंग को० ।  १६ के भंग को० ।  स्वीवेद की जगह पुरुषवेद ।  सारे भंग । प्रमान परन्तु यहां । प्रमान । प्रमा		स्त्रीवेद की जगह प्रष्यवेद			भारत प्रत्यंत्र बदानाचा। हथ भोग भीम में		
४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरवंद समान जानना विद्य की जगह पुरवंद विद्य की जगह पुरवंद विद्य की जगह पुरवंद विद्य की जगह पुरवंद विद्य की जगह पुरवंद की जगह विद्य की जगह पुरवंद की जगह विद्य की ज		घटाना चाहिए	\$		२३-२१ के भंग को बन		
१५ के भंग को० समान जानना समान जानना नी बेद की जगह समान जानना नी बेद की जगह सारे भंग ना चाहिय ना चाहिय को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो १४-२३ के भंग को०नं० को० नं० १८ देखो को०नं० १४-२६-२५- १४-२६-२५- ना को० नं० ४७ ना परन्तु यहां ना को० नं० १७ के समान परन्तु यहां ना को० नं० ४७ के समान परन्तु यहां हिनीद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिय ना परन्तु यहां हिनीद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिय हिनीद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिय विनान नाहिय ना परन्तु यहां हिनीद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिय ना ना भाग ना भाग हिनीद की जगह पुरुषवेद चिराना चाहिय ना ना भाग ना को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां हिनीवद की जगह		भोग भूमि में			४७ के समान परन्तु यहां		
समान जानना सी वेद की जगह सारे भंग (२) मनुष्य गित में सारे भंग । भ सारे भंग । भ १४-२६ ने भंग को०नं० को० नं० १८ देखी को०नं० १४-२६-२४- प्रमान परन्तु यहां स्त्रीवेद को जगह पुरुषवेद परन्तु यहां स्त्रीवेद को जगह पुरुषवेद सारे भंग । भ १४-२६-२४- परन्तु यहां सीवेद को जगह पुरुषवेद सारे भंग को० नं० १३-२१ के भंग को० नं० १४-२३-२४-२३ के भंग को०नं० ४७ के समान	•	रह-र४-२४-२८ के भंग को०			स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद		
ना बाहिये को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो २५-२३ के भंग को०नं० को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो २५-२३ के भंग को०नं० को० नं० १६ देखो को०नं० ११४-२६-२५- १४-२६-२४- ने को० नं० ४७ ने समान परन्तु यहां ने को० नं० ४७ ने भंग भूमि में ने परन्तु यहां ने को० नं० ४७ के समान परन्तु यहां हिनेदिद को जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये हिनेदिद को जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये हिनेदिद को समान परन्तु यहां हिनेदिद को समान परन्तु यहां स्त्रीवेद को जगह		न० ४७ के समान जानना	,		घटाना चाहिये	·	
ना चाह्य काठ न० १६ देखी कीठनं० १६ देखी स्थ-२३ के भंग कीठनं० काठ न० १६ देखी काठनं० १८ -२४- १४-२६-२४- ग कोठ नं० ४७ भाग कोठ नं० ४७ ना परन्तु यहां ना परन्तु यहां ना परन्तु यहां ना परन्तु यहां स्वीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये १३-२१ के भंग कोठ नं० ४७ के समान परन्तु यहां हिनेविद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये (३) देव गति में १३-२१-२३ के भंग कोठनं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह	-	परन्तु यहा स्था वद का जगह	सारे भंग	१ भंग	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	। भंग
४४-२६-२४- १४ को को को का		रिय असु मिन्सि साहित	का० न० १६ द्वा	क्रीं अर्थ है है हो		<del>با</del> .	मोठनं० १८ देखो
ं ४७ यहां पवेद		(x) 44 410 H			४७ के समान परन्तु यहां		•
पक्षां पनेद		マソーン   マー・スペースペー   マソーンロ 部 25年   175 年   イン			स्यावद का जगह पुरुषवेद	•	
पुर्व पुर्व प्र		A HUIT WITH HE TO SE			घटाना चाहिय	•	
ש ש ש ש ש ש ש ש ש ש	,	म् रामान थानमा परन्तु यहा			भाग भाम म		•
		त्यावद का जगह पुरुषवद			२३-२१ के मंग को० नं०		•
स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये (३) देव गति में २४-२३-२४-२३ के मंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह		नदाना चाहिय			४७ के समान परन्नु यहां		
घटाना चाहिये (३) देव गति में २४-२३-२४-२३ के मंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह	-				स्त्रीवेद की जगह पूरुपवेद		
(३) देव गति में " २४-२३-२४-२३ के मंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह	•	,			घटाना चाहिये		
२४-२३-२४-२३ के भंग को०नं॰ ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह				,	(३) देव गति में		•
को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह				: -	२४-२३-२४-२३ के मंग		,
परन्तु यहाँ स्त्रीवेद की जगह					कोठनं० ४७ के समान		
					मरन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह		

श्रवगाह्नां – को० नं० १७-१८-१६ देखो।

बंध प्रकृतियां – १२० पर्याप्त श्रवस्था में जानना श्रीर निर्वृत्यपर्याप्तक श्रवस्या में १०७ जानना, वन्ध योग्य १२० प्रकृतियों नरकद्विक २, देवद्विक २, वैकिषिकद्विक २, माहारकद्विक २, तीर्णकर प्र० १, ये १३ घटाकर १०७ जानना।

उदय प्रकृतियां—१०५ को० नं० ४७ के १०७ प्र॰ में से माहारकद्विकं २, पुरुष वेद १ ये ३ घटाकर और स्त्री वेद १ जोड़कर १०५ प्र० का उदय जानना

२७ सत्य प्रकृतियां—१४८ को० नं० २६ के समान जानना

संख्या—ग्रसंख्यात जानना ।

क्षेत्र—लोक का श्रसंख्यातवां भाग जानना।

३• स्पर्शन—लोक का श्रसंख्यातवां भाग जानमा, विशेष भंग को० नं० ४७ में देखो

क्रन्तर—नाना जीवों की ग्र**पेक्षा कोई क्रन्तर नहीं, एक जीव की** श्रपेक्षा क्षुद्रमव से असंख्यात पुद्**गल परावर्तन काल तक स्त्री पर्याय न** घारहा नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वेकाल जानना, एक जीव की ग्रपेक्षा एक समय से शतपुथकत्व पल्य तक स्त्री वेद ही वनता रहे

कर सके । ३३ जाति (योनि)—२२ लाख योनि जानना (को० नं० ४७ देखो)

फुल--- दशा लाख कोटिकुल जानना (को॰ नं॰ ४७ देखो)

×

•	
<u>س</u> س	
•	
_	

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	क्ष. किनं०४६		नेत	नपुंसक वेद में
क्र०  स्थान सामन्य श्रालाप	पयस्ति			अपर्याप्त		
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	के नाना एक जीव के एक में समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
~	m	>>	*	US"	9	lt.
१ मुसा स्थान ह्यू १ से ६ मुसा० तक	ह (१) नरक गति में १ से ४ गरा० स्थान	सारे गुर्सा स्थान श्रपने श्रपने स्थान के सारे गगा	१ गुरा० श्रपने श्रपने स्थान के मारे भंगे से	३ (१) नरक गति में के अने ——————————————————————————————————	सारे भंग ने श्रपने स्थान	१ मुराएं    अपने श्रपने स्थान
••	(२) तियैच गति में कर्मभूमि में १ म ४ गगा० जानना	स्थान जानना को० नं० १६-१७- १८ हेको	भ सार मंगा म से कोई१ गुस् स्थान जानना			के सारे भंगों में से कोई १ गुएए स्थान जानना
•	(३) मनुष्य गति में कमभूमि में १ से ६ गुरा० जानना		११८ -१८ देखो १८-१८ देखो	जानना (२) तिर्यच गति में कर्मभूमि में १-२ गुराए० जासना	१न देखो	को० नं० १६- १७-१ <b>न देखो</b>
२ जीव समास १४	9	१ समास	१ समास	(३) मनुष्य गति में १–२ गुरा० जानना		
का० न० १ देखा	(१) नरक-मनुष्य गति में १ संशी पंचेन्द्रिय पर्यप्ति की० नं० १६-८६ देखो	१ सज्ञी पं० पर्याप्त को० नं० १६-१	को० नं० १६- १८ देखी	मनुष्य गति ो पंचेन्द्रिय	समास प्रिं अपयिप्ति नं १६-१८	्रसमास को०नंऽ१६- १= देखा
	(२) तिर्यंच गति में ७–१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	<ul><li>१ समास</li><li>७-१ के भंग में से</li><li>कोई १ समास</li><li>को० नं० १७ देखों</li></ul>	१ समास को० नं० १७ देखो	देखो	दल्ला १ समास को० न० १७ देलो	१ समास को० नं० १७देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य गति में ह	<ul> <li>* #نا</li> <li>* # # # # # # # # # # # # # # # # # # #</li></ul>	१ भंग को० नं० १६-	९७ के समान ३ सीनों गतियों में हरेक में	१ भंग १ का भंग	१ भंग ३ का मं <i>त</i>
	१ म देखी	काठ नठ १६-१८	१ूद देखाँ		2 2	को० नं० १६- १७-१ <b>न दे</b> लो

वेद में	r		१ भंग प्रपने प्रपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	जानमा को० नं० १६- १५१७ देखो	१ भंग पर्याप्तपत् जानना	४ का भंग १ गति	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६- १ <b>८</b> देखो
नपु सक	9		<ul><li>१ भंग</li><li>श्रपने श्रपने स्थान</li><li>में भंग</li><li>को० नं० १६-१८</li></ul>	देखों १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	४ का भंग १ गति	<b>१</b> जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६–१ <sup>६</sup> देखो
		लिंघ रूप ६-५-४ पर्यापि भी		१६-१८ देखो (२) तियैच गति में ७-७-६-५-४-३ के मंग को० नं० १७ देखो	<b>४</b> (१) नरक-तियैच गति में हरेक में ४ का भंग को० न०	(२) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १८ देखो ३	ताना भाष जानना ४ १) तियंच मति में ४ का भंग की०नं० १७ धन्ते	रुता (२) नरक-मनुष्य गति में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८ देखो
नं० ४६	x	१ भंग को० न० १७ देखो	<ul><li>१ भंग</li><li>अपने श्यान</li><li>के भंगों में कोई</li><li>१ भंग जनना</li></ul>	को० नं० १६- १द-१७ देखो	<ul> <li>१ भंग</li> <li>मपने प्रपने स्थान</li> <li>के ४ के भंगों में</li> <li>से कोई १ भंग</li> </ul>	देखी १ मंग को०नं०? द देखो १ गति	१ जाति म्राने अपने स्थान के कोई १ जाति	हारम् १ प्रदास १ जाति कोठ नं १६- १ न देखो
कोष्टक नं०	<b>&gt;</b> 0	१ भंग को० नं० (७ देखो	<ul> <li>4 संग</li> <li>अपने स्थान</li> <li>भंग को० नं०</li> <li>१६-१० देखो</li> </ul>	१ भंग को०नं०१७ देखो		न् १५-१९ ५५। सारे मंग को० नं० १८ देखो १ मति	१ जाति १ जाति ग्रपने ग्रपने स्थान के ग्राने ग्रपने स्थान कोई१ जाति जानना के कोई १ जाति	काठ नठ १७ दक्ष। १ जाति को० न० १६-१८ देखो
दर्शन	ner .	(२) तियैच गति में ६-५-४ के भंग को० न० १७ देखी	{० (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में~१० का मंग को० नं० १६-१¤ देखो	(२) तियंच गति में १०-६-द-७-६-४ के भंग को० नं० १७ देखो	४ (१) नरक-तियैच गति में हरेक में ४ का भंग को० न० १६-१७ देखों	(६) मनुष्य गति में ४-३-२ के भंग को० नं० १= देखो		काठ न० १७ दल। (२) नरक-मनुष्य गति में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० न० १६-१८ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	8	,	१ देखो		१ देखी	u.	नरक, 'तियव, मनुष्य ये ३ मति जानना इन्द्रियं जाति को० नं० १ देखों	
· ·	~		४ प्रास्त को० नं० १		५ संज्ञा को० नं० १ देखी	६ मसि 	नरक, 'तियव, मनु ये ३ गति जान्ता ७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखोँ	

त्रभू

प्राह्मरक्षित पाग है, के कोई है भंग है योग है के कोई है भंग के भंगों में से कार्य पाग है, के कोई है भंग के भंगों में से कोई है भंग के भंगों में से कोई है भंग को के है है का भंग को के है है भंग है योग है योग है योग है जोना है में कोई है योग है जोना है में को के लं है है भंग को के लं है है भंग को के लं है है भंग है वोग है है योग है है भंग को के लं जानना है योग है योग है है भंग को के लं जानना है योग है योग है है भंग को के लं जानना अपने अपने स्थान है योग है से साहे भंग को के लं जानना अपने अपने स्थान है योग है से साहे भंग को के लं जानना अपने अपने स्थान है से साहे भंग है को से साहे भंग है से साहे से साहे भंग है से साहे से से से साहे से से से साहे से से से साहे से
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

.

	1	
क त्र भ	n	१ मंग पयिप्तवत् जानना को नं० १ १ मंग को० नं० १८ देखों ",
नगु सक	9	सारे भंग पर्यप्तिबत् जानना को० नं० १६ सारे भंग को० नं० १७ देखो,
	w	को० नं० १६-१७-१८ देखो १३ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग को० नं० १६ देखो १३-२३-२३-२३-२३ के भंग को० नं० १७ के भंग को० नं० १७ के २४-२४-२४-२४ के हरेक भंग को० नं० १९ का भंग जानना १३ मनुष्य गति में २३ का भंग नो० नं० १८ के २५ के भंग में से स्वी-पुरुष ये २ वेद घटाकर २३ का भंग जानना १६ का भंग-को० नं० १८ के समान जानना १६ का भंग-को० नं० १८ के समान जानना
6 ) 6 88	; ət'	<ul> <li>श्रमंग</li> <li>त्याने अपने स्थान</li> <li>से कोई १ भंग</li> <li>श्रमंग</li> <li>श्रमंग</li> <li>श्रमंग</li> <li>ते भंग</li> <li>तेलो नं० १६</li> <li>तेलो</li> /ul>
( ३३७ कोग्टक नं <b>०</b>	>>	सारे भंग के सारे भंग जानना को० नं० १६ सारे भंग को० नं० १७ देखो को० नं० १० देखो
दर्शन	er.	कोठ नं ० १६-१७-१ न देखी  २३ -१६ के भंग कोठ नं ० १६ देखी २३-११ के भंग स्वान में २३-१२-२३-५३ के भंग कोठ नं ० १७ के २५-२५ -२५-२५ के हरेक भंगों में से स्ती-पुरुप के हरेक भंगों में से स्ती-पुरुप वेद मे २ घटाकर २३ का भंग जानना ३२ ४थे ५वे गुगा० में १६-१५ के भंग कोठ नं ० १७ के २१-१७ के हरेक भंगों में से स्ती-पुरुप वेद में उत्तानना १९७ के २१-१७ के हरेक भंग जानना (३) मनुष्य गति में २३-१६-१५-११-११ के भंग कोठ नं ० १८ के २१-११ के भंग कोठ नं ० १८ के २५-११-११-११ के भंग में से स्ती-पुरुप वेद में योग में से स्ती-पुरुप वेद में योग में से स्ती-पुरुप वेद में योग ने २ घटाकर २३-१६-११-११-११ के भंग जातना
चौतीस स्थान दर्शन	૯	वेब से २ अ जातना जातना
चौत	~	्र कपाय २ स्त्री-पुरुष वेद ये २ वटाकर २३ जानना

चौतीस	चौंतीस स्थान दर्शन	कोष्टक न	न० ४६		नपु सक	व्यं म
٤	mr	>	અ	υΥ	9	<b>u</b>
१२ ज्ञान	USF	सारे भंग		హ	_	1
मनः पर्ययः ज्ञान १	(१) नरक गति में	३-३ के भंग	#	कुअवधि ज्ञान घटाकर (४)	\rangle \rang	२-३ के मंगों में
केवल ज्ञान १ य २		जानना	कोई के ज्ञान	य मः	₹ <del>-</del> 3	से कोई १ जान
घटाकर ६ जानना	का न० १ द्वा		जीनना	३-४ के भग क्रो० मं० १० शेको		
	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ जान	(२) निग्रंच गमि मे	viir.	9 474
	7-3-3 帝 如	२-३-३ के भंगों	२-३-३ के भंगों	२ का भंग	ı ı	おおばれる
	को० नं० १७ देखो	में से कोई १ मंग	में से कोई १ ज्ञान	को०नं १७ देखो		नोई १ जान
	(३) मनुष्य गति में		१ ज्ञान	(३) मनुष्यं गति में	सारे भंग	१ आस
	३—३-४-४ के भंग	को० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखो	२ का भंग	को नं १ देखो	कोठनं० १८ देखो
•	को० नं० १ द देखो			को० नं० १ द देखो	•	
१३ संयम	>>	१ भंग	१ संयम	•	१ भंग	१ संयम
को० नं० ४ प देखो	(१) नरक गति में			(१) नरक गति में		•
	१ श्रसंयम चानना			१ असंयम जानना		
	को० नं० १६ देखो			को० नं० १६ देखो		
	(२) तियंच गति में	८ भूग	१ संयम	(२) तियँच गति में	•	2
	१-१ के भंग	र में से कोई १ भंग	दो में से कोई	१ असंयम जानना		
	को० नं० १७ देखो	•		को० नं० १७ देखो		
	(३) ममुष्य गति में	सारे भंग		(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ संयम
	१-१-३-३-२ के भंग	अपने अपने स्थान के अपने अपने स्थान	अपने अपने स्थान	१ का भंग	१ का भंग	१ संयम
	को० नं० १८ देखो	सारे भंग जानना	क मंगों में स	कों मं० १ द देखो	कों नं १ देखो	को०नं० १८ देखो
		को० नं० १८ देखो	नोई १ संयम		•	•
£	4		जानना			,
१४ दर्शन		१ भग	१ दर्शन	m	१ भंग	१ दर्शन
को० नं० १७ दखो	(१) नरक गति में	年	२-३ के भंगों में	(१) नरक गति में	पर्याप्तवत जानना	जानना पर्याप्तवत जानना
	२-३ के भंग	हि १ भंग	से कोई १ दर्शन	२–३ के भंग	को० न० १६ देखो	
	की० नं० १६ देखी	को० नं ०१६ देखो		को० नं० १६ देखो	•	٠
	(२) तियँच गति में	भंग		(२) तियँच गति में	१ मंग	१ दर्शन
	१-२-२-३-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	क्तींं नं १७ देखो		१७ देखो	कोठनं० १७ देखो

		) 33.8 3.3.6.7.7.7.1.1.0.0	~ ×	. 4	नयुं सक	वी त्म मेर
चीतीस स्थान दर्शन	रशीन	1. 65516	<b>,</b>		9	u ,
8	m	>>	<b>3</b> 4	r		
,	को० नं १७ देखो (३) मनुष्य गति में		१ दर्शन स्मेत्रम् १८ देखो		सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
१५ लेख्या को० नं० १ देखो	२-३-३-३ के भग को० नं० १ द देखों ६ १) नरक गति में	२-२-३-२ क मग को० नं० १ द देखी १ भंग ३ का भंग			१ मंग ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ लेख्या पर्याप्तवत् जानना को०नं० १६ देखो
		१ भंग को० नं० १७ देखो	₹ <del>6</del>	कों नं १६ देखों (२) तिगैच गति में ३ का भं। को० नं० १७ देखों	१ भंग ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ लेखा ३ में से कोई १ लेखा को०नं० १७ देखो
	काठ न० १७ ५५। (३) मनुष्य गति में ८-३-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	ं १ लेख्या क्रो०नं० १	(३) मनुष्य गति में ६ का भंग ने डें १० हेवो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेक्या कोत्नं १८ देखो
१६ मव्यत्व भव्य, ग्रमव्य	को० नं० १८ देखो २ तीनो गतियों में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१७- १- ट्रेन्टो	१ श्रवस्या को०नं० १६-१७- १८ देखो	कार पुर्दे प्राप्त श्रीनों मितयों में हरेक में २-१ के मंग को० नं०	१ भंग को० नं० १६-१७- १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१७ १८ देखो
१७ सम्प्रकत्व	२-१ कं भग को० नं० १६-१७-१८ देखो ६ (१) नरक गति में	10.	<u>₹</u>	१६-१७-१८ के समान ४ मिश्र ग्रौर उपशम स० के न समाक्षत्र (४)	सारे भंग	
		१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो	(१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखों (२) निग्नंच गति में	को अन्व १६ देखो १ भंग	
	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-३-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्पक्तव १ को०नं० १ द देखो	52.4EEZ	को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	क्षोठन० १७ दल।   १ सम्पक्त   क्षोठनं० १= देलो
		-				

			,			
चौंतीस	चौंतीस स्थान दर्शन	( ३ <sup>.</sup> कोष्टक	३४० ) न न ० ४६		•	
~	, ex	×			नपु सक वंद	विद्यं म
१ संजी		-	75°		9	ս
र पना संजी, असंजी	२ (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में १ संशी जानना	१ को० नं० १६-१ घ देखो	१ को० नं० १६- १ <b>न देखो</b>		१ को० नं० १६-१८ देखो	को० मं० १६- १ म स्म
	को० नं० १६-१८ देखो (२) तियंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को॰ नं० १७ देखो	१ अवस्था को० मं० १७ अस्मे	ानना १६-१८ देखो न गति में १-१ का भंग	१ भंग मं० १७ हेम्बो	••
९८ अहिरिक अहिरिक, अनाहारक	१ (१) नरक गति में १ श्राहारक जानना को० न० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो		<u>.</u> و.	सारे भंग को० न० १६ देखो	नार नुरु १७ देखो १ अवस्या को नुरु १६
	(२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनध्य मन्नि भे	१ को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १७ देखो		१ भंग कोः नं० १७ देखो <sub>।</sub> ब	दला १ अवस्था को० नं० १७
२० उपयोग को० न० १६ देखो	(१) पुरुष गात म १–१ के भंग को० नं० १८ देखो १९) सम्बन्ध	सारेभंग को० नं० १८ देखो १ भंग	१ अवस्था को० न० १८ देखो १ उपयोग		सारे भंग को० नं० १८ देखो व	देखो १ अवस्या को० नं <b>० १</b> ८ देखो
^	(१) मरकगात म ४-६-६ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में	.को० नं० १६ देखो <sub>न</sub> १ भंग	ख	(۶	१ भंग को० न० १६ देखो न	१ उपयोग को० नं० १६ देखो
	२-४-५-६-६ कं भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-७ के भंग	को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १ = हेन्सो	नं ० १७ नं ० १७ उपयोग	भंग	१ भंग को० नं २ १७ देखो को	१ उपयोग को० नं० १७
	कां० नं० १८ देखो		देखों न ० १ व	۳ م	सारे भंग १ को० नं० १ द देखो   को	दल। १ उपयोग को० नं० १८ देखो

	वेद में	n	१ ध्यान अपने अपने स्थान सारे के भंगों में से कोई १ ध्यान	, a	१ घ्यान को०नं० १७ देखो	१ ब्यान ८ में से कोई १ ध्यान १ मंग को०नं०१८ देखो	कोंग्नं० १६ देखो	१ मंग को०नं० १७ देखो "
	नपु सक	<b>9</b>	सारे भंग अपने अपने स्थान के अपने सारे भंग जानना सारे को० नं० १ द देखों से के	को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग = का भंग को० नं० १= देखो सारे भंग	को० न० १६ देखो	सारं भग को० नं० १७ देखो "
,		· υ9•	ह प्रपाय विचय १, विपाक विचय १ भौर संस्थान विचय १ ये ३ थौर पृथकत्व वितक्	विचार युक्त ये ४ घटाकर (१) नरक गी द–६ के भंग	का० न० १६ दखा (२) तियंच गति में = का भंग को० न० १७ देखो	(३) मनुष्य गांत म द का भंग को० नं० १६ देखो ४३ वचन योग ४, मनोयोग४ औ० काय्योग १,	काययाग १ कर (४३) नरक गति ३३ के भंग नं० १६ देख	(४) तिथच गात म ३७-३८-३६-४० के मंग को० नं० १७ के समान जानना ४१-४२ के भंग को० नं० १७ के ४३-४४
1286	नं० ४९	×	१ ध्यान को०नं० १६ देखो		१ घ्यान क्रो०नं० १८ देखो 	१ भंग	को०नं० १६ देखो	१ भग को०न० १७ देखो
_	कोष्टक	<b>&gt;&gt;</b>	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं०१७ देखो	सार भग को० नं० १८ देखो	सारे मंग	को० नं० १६ देखो	सार भग को० न० १७ देखो "
•	चोंतीस स्थान दर्शन	m	१३ (१) नरक गति में द-६-१० के भंग को० नं० १६ देखो	न के मंग देखो	(३) मतुष्य गांत म =.६-१०-११-७-४-१के मंग कोट नं० १८ देखो	४० ग्रो० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १,	कामाण कावयाग १, ये ३ घटाकर (४०) (१) नरक गति में ४९-४४-४० के मंग को० नं० १६ देखी	मंग (के मंग -११- रेक
	चींतीस	6	२१ व्यान १३ को० नं० ४७ देखो	•		२२ शासव ५३ प्राहारक मिशकायवोग १, प्रा॰ काययोग् १,	स्थी पुरंप पद २, य ४ घटाकर ४३ जानना	

म ज ज	្ឋា	HTTA	१ भंग हेखो १८	<ul> <li>भंग</li> <li>अपने अपने</li> <li>स्थान के सारे</li> <li>भंगों में से</li> <li>कोई ९ भंग</li> <li>जानना</li> </ul>	
नपु सक	9	, ·	सारे भंग को० नं० १८ देख	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	
	w	के हरेक भंग में से स्त्री- पुरुष वेद २ घटाकर ४१- ४२ के भंग जानना ३६ का भंग-को० नं० १७ के ३८ के भंग में से स्त्री-पुरुष वेद घटाकर ३६ का भंग जानना ३७ का भंग-को० नं० १७ के ३६ के भंग में	घटाकर ३७ का भंग जानना (३) मनुष्य गति में ४२-३७ के भंग-को० नं० १८ के ४४-३६ के भगों में से स्ती-पुरुष वेद ये २ घटाकर ४२-३७ के	भंग जानना ३३ क्षायिक सम्यक्त्व १, कुज्ञान २, दर्शन ३, ज्ञान ३, वैदकस० १, लिड्घ ५, नरक गति- तियैच गति-मनुष्य गति- ये ३, कपाय ४, नपुसक लिंग १, स्रशुभ लेश्या ३,	। मध्यादशन १, असयम १, मज्ञान १, म्रसिद्धत्व १, पारिस्मामिक भाव ३, ये ३३ जानना
% %	<b>ಎ</b>	<ul><li>१ भंग</li><li>को० नं० १ द</li><li>देखो</li></ul>		<ul><li>१ मंग</li><li>देखो</li><li>१६</li><li>१५</li><li>भंग</li><li>ने० १७</li><li>देखो</li></ul>	u .
कोष्टक नं० ४६	≫	सारे भंग को० नं० १८ देखो	α	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	
र्शन	m	भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर ४९-४६- ४४-४०-३५ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में ४६-४४-४०-३५-२० के भंग-की० नं० १८ के भंग-की० नं० १८ के भू१-४६-४२-३७-२२ के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद २ घटाकर ४६-४४- ४०-३५-२० के भंग	भंग को हरेक ब वेद -१४ के		र४-र६-र७-र६-३०-२७ के भंग को० नं० १७ के २७-३१-२६-३०-३२-२६
चौंतीस स्थान दश्नी	٨			२३ भाव ४२ के ४२ के भावों में से स्त्री वेद १ घटाकर नपुंसक वेद जोड़कर ४२ जानना	
वि	*			२३ भाव को० नं० भावों में घटाकर न जोड़कर	

1	1	UV · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
त मः	្ឋ	कोठ मंग देखी १ मंग हेखी तेन हे १६ देखी कोठ नं ० १६
नपुंसक वेद	9	सारे भंग सारे भंग को० नं० १७ देखो " " सारे भंग को० नं० १ द देखो
	US	(१) नरक गति में २५-२७ के मंग को० नं० १६ देखी (२) तिर्यंच गति में २४-२५ के मंग को० नं० १७ के २७-२७ के मंगों में से स्त्री-पुरुप ये २ वेद घटाकर २५-२५ के मंग जानता २२-२१ के मंग-को० नं० १७ के समान २२-२१ के मंग-को० नं० १७ के समान २३-२३ के मंग-को० नं० १७ के २५-२५ के हरेक मंग में स्त्री-वेद पुरुप-वेद ये २ घटाकर २३-२३ के मंग जानना (३) मजुष्य गति में २६-२६ के मंग जानना (३) मजुष्य गति में २६-२६ के मंग जानना उपुष्य वेद ये २ घटाकर २६-२६ के मंग
न् ४६	ઋ	्र भंग देखों देखों
( ३४३ कोप्टक नं०	>-	सारे भंग को० नं० १ ट देखो
दर्शन	m	के हरेक मंग में से स्त्री- पुरुष वेद पे र घटाकर २५.२६-२७-२६-३०-२७ के मंग जानना (३) मनुष्य गति में २६-२७-२६-३०-२६-२६ -२६-२७-२७ के मंग को० नं० १८ के ३१-२६-२६ के हरेक भग में से स्त्री-पुष्प वेद ये २ घटाकर २६-२७ -२६-३१-२६-२६-२७ २७ के भंग जानना
चौंतीस स्थान दर्शन	~	
चौत	2	

श्रयगाहना—को० नं० १६-१७-१८ देखो।

2 2

3

2

9

er

१०८ निर्वेत्य पर्याप्तक अवस्था में आयु ४, नरिद्वक २, देवद्विक २, वैक्तियिकद्विक २, आहारकद्विक २, ये १२ घटाकर १०८ न्दय प्रकुतियां—११४ उदययोग्य १२२ में से देवद्विक २, देवायु १, त्राहारकद्विक २, स्त्री वेद १, पुरुष वेद १, तीर्थंकर १, ये द घटाकर फाल—नोना जीबों की प्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की प्रपेक्षा सादि नपुंसक वेदी एक समय से ग्रसंख्यात पुद्गल परावरोंन काल तक फ्रन्रर—नाना जीवों की श्रपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की ज्ञपेक्षा थ्रन्तमुँहूर्त से नवसौ (६००) सागर काल तक नपुँसक वेदी नहीं बने । स्पर्शन —सर्वलोक १४ राजु जानना । ७वे गरक का नारकी मघ्य लोक में जन्म लेने की ग्रपेक्षा ६ राजु जानना । जाति (योनि)—-८० लाख जानना (देवगति के ४ लाख घटाकर शेष ८० लाख जानना) फुल—-१७३।। लाख कोटिकुल जानना (देवगति के २६ लाख कोटिकुल घटाकर जानना) वंघ प्रकृतियां—१२० सामान्य ग्रालाप की भ्रपेक्षा जानना । **षीत्र —**लोक का ग्रसंख्यातवां भाग, १४ राजु ६ राजु । सस्व प्रकृतियां —१४८ जानना । संख्या — अनन्तानन्त जान्ना। जानना ।

चौतीस स्थान दर्शन	वर्शन	कोर	कोष्टक नं० ५०		अपग	अपगत वेद में
सामान्य भालाप	प पयिति		,		मपयित	त्र
	नाना जीव की प्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव कें एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
ر.	ge-	>>	×	w	9	u
मुसा स्थान ६ ९ से १४ तक के (६)	हे हमे गुएए के प्रवेद भाग से १४वें गुएए तक के	सारे गुर्स स्थान ६ से १४ सारे गुर्सा० जानना	१ मुस् ६ से १४ में से कोई १ मुस्स	१३वें गुरा। जानना को० नं० १८ देखी	सारे गुसा स्थान १३वें गुसा० जानना	१ मुसाः १३वे मुसाः
जीव समास ४ संज्ञी पं० पर्याप्त ग्रप०	र गुरा स्थान जानमा १ (१) मनुष्य गति मे १ संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	•	~	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपयपि	, <b>~</b>	<i>⊶</i>
रित को० नं० १ देखो	का॰ न॰ १८ दला ६ (१) मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं॰ १८ देखी	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	को० नं० १८ देखो ३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं १८ देखो	१ भंग ३ का भंग	<b>१</b> भंग ३ का भंग
ए को० नं० १ देखो	१० (१) मनुष्य गति में १०-४-१ के भंग क्रो० नं० १ = न्यो	सारे भंग को० नं० १८ देखो ः	्र भंग कोठनं० १ द देखो	लिडियरूप ६ का भंग होता है  (१) मनुष्य गति में  २ का भंग	सारे भंग कों० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १ प् देखो
१ परिग्रह संज्ञा	१ १ मनुष्य गति में १९) मनुष्य गति में १-१-० के भंग को॰ नं॰ १८ देखो	सारे भंग को० नं० १= देखो ६ १	१ भंग को०नं० १प देखो		सारे मंग को० न०१८ देखो	सारे मंग को०नं० १८ देखो
न मनुष्प मति	१ मनुष्यगति जानना		~	१ मनुष्य गति जानना	~	~

<b>~</b> %
70
m
٠.
<u> </u>

its.	ษ	१ योगः २ मे से कोई १ योग जानना को०नं० १ द देखो १ मंग १ जान १ जान १ जान १ जान १ संगम को०नं० १ द देखो
ञ्चपग्दा	න	श्वार भंग र का भंग को० नं० १ द देखी को० नं० १ द देखी को० नं० १ द देखी
		त्रंशी, पंचेत्द्रिय जाति १ व्यक्ताव जानमा १ य व्यक्ताव जानमा १ व व वानमा १ व व व व व व व व व व व व व व व व व व
0 %	<b>ಶ</b> ಳ	१ योग १ योग १ योग के अपने स्थान जानना कोठनं० १ देखो १ भंग के भंगों में से को भंगों में से जानना को भंगों में से जानना को भंगों में से श्री क्षाय
कोप्टक मं०	<b>&gt;</b>	श्वार भंग सारे भंग जानना सारे भंग जानना को० नं० १ = देख अपने स्रपने स्थान सारे भंग जानन सारे भंग जानन को० नं० १ = देख सारे भंग जानन को० नं० १ = देख सारे भंग जानन
र्शन	m² .·	१ संज्ञी पंजेन्द्रिय जाति १ तस्काय जानना दे विश्वकाययोग ये २ बटाकर (१) गनुष्य गति में १-५-३-० के भंग को० नं० १ द देखो जानना । को० नं० १ द देखो प्रमुख्य गति में १) मनुष्य गति में
चींतीस स्थात दर्शन	કે કે	ण इन्द्रिय जाति १ सम्बाय १ सम्प्रय अस्ति १ सम्प्रय अस्ति १ १ मन्द्रिय जाति १ मन्द्रिय जाति १ मन्द्रिय जात् १ मन्द्रिय भाषा १ मिन्द्र- काय्योग १ मिन्द्र- काय्योग १ मिन्द्र- काय्योग १ मिन्द्र- वात्त्रा १० हेद् ० १ सम्बाय मिन्द्रिय काय्या १ १ स्वाय मिन्द्रिय काय्या १ १ स्वाय मिन्द्रिय क्ष्याय मे ४ जान्ता १ १ मात्र- क्षयं केवल जांन मे ४ जान्ता १ १ मात्र- व्यंग केवल जांन हे १ मात्र- क्ष्यंग केवल जांन हे १ संयम हेद्येम १ १ सामाियक, हेद्येम-

	•	9 <u>%</u>	·			
चांतीस	चांतीस स्थान दशेन	कोष्टक मं	नं० ५०		अपगत	वेद में
8.7.2. 3	m	>>	ъł	U3º	<u>ඉ</u>	น
स्वापना, मुक्ष्म सांपराय वयात्रवात्र थे ४ संवप	को० नं० १	सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	के सारे मंगों में से कोई १ संयम	को० नं० १८ देखो		
जाननां १४ यशेन को० नं० १८ यखो	(¹) सनुष्य गति में ३-१ के भंग	सारे मंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखी	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग	को० नं० १ द देखी	१ दर्शन क्यों०नं०,१८ देखी
१५ लेस्या युक्ल लेस्या जानना	को . नं ० १८ देखो १ (१) मनुष्य गति में १-० के भंग	१ को० नं० १८ देखो	१ लेखा को०नंग १ म देखो	को० नं , १	१ को० नं० १८ देखो	. १. लेख्या कोठनं०,१ द देखो
१६ भव्यस्व १ भव्य १७ <i>तम्यतस्</i> व २	का <b>ं नं १</b> देखी १ भव्य जानना २	甘	१ सम्यासत्व	को न॰ १५ देखा १ भव्य जानना १	~ ~	१ १ सम्यक्टन
उपजाम-साधिक सुरु १= मंधी	(१) ममुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १= देखों	को० नं १ द देखो १	क्तो०नं० १८ देखो ,	(१) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १ द देखो	को० न० १८ देखो	कों ब्ना १ द देखी
संगी	(१) मनुष्य गति में १-० के शंग को० नं० १८ देखो	कोठ नं० १८ देखो	कोठनं० १ द देखो	(१) मनुष्य गति में (०) का मंग को० नं० १० तेरो	को० नं० १८ देखो	कोठनं ० १ द देखो
१६ याहारक याहारक, यमहारक	् (१) मजुष्य गति में १-१-१ के मंग को० नं० १= देयो सुकत्—पहुता १ का भंग ६ में	तारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जालना	१ ज्ञवस्था केनो०नं० १ द देखो	(२) मनुष्य शांत में १–१ के मंग १३वें गुएा० जानना को०,नं० १= देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ जनस्या को०न० १८देखो
,	मुस्स्र कि अवेद भाग से १२वें मुस्र तक जानना		. , .			•

म्	चौतीस स्थान दर्शन	स्थीन	, मोष्ट	( ३४न ) कोष्टक नं० ५०		अपगत वेद	क क क
~	8	m	, o¢	<b>3</b> 4	usr	9	n
२० उपयोग जानोपयो पयोग ४ २१ ध्यान युक्ल ध्या	उपयोग शानोपयो ग ४,व्हांसो- पयोग ४ ये ६ जानना ध्यान ४ शुक्ल व्यान ४ जानना	है (१) ममुष्य गति में ७-२ के भंग को० नं १ द देखों ४ (१) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	<ul><li>१ उपयोग</li><li>को नं० १८ देखी</li><li>१ ध्यान</li><li>को०नं० १८ देखी</li></ul>	२ (१) मनुष्य ग में २ का भंग को० न० १८ देखो १ (१) मनुष्य गति में १ का भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखी १ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ श्रास्तव योग ११, कष ये १४ जानना	१ श्रास्तव १५ योग ११, कषाय ४, ये १५ जानना	a w	सारे भंग अपने स्थान के अपने स्थान सारे भंग जानना सारे के भंगों में को० नं० १८ देखों से कोई १ भग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान सारे के भंगों में से कोई १ भग जानना कोठनं० १८ देखों	को	सारे भंग अपने अपने स्थान के अपने श्रपने स्थान स रे भंग जानना सारे के भंगों में को े नं ० १८ देखी से कोई १ भंग जानना	<ul><li>श्वयने अपने स्थान सारे के भंगों में से कोई १ भंग जानना कोठनं० १८ देखों</li></ul>
२३ भाव उपश्चम सम्यक्ष्व उपश्चम चारित्र सायिक भाव ६, सर्थोपश्चम ज्ञान	भाव ३३ उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, सायिक भाव ६, स्योपशम ज्ञान ४,	को० न० १८ देखों ३३ (१) मनुष्य गति में. २६ २५-२४-२३-२३-२१- २०-१४-१३ के भग को० नं० १८ के समान जानता	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान सारे भंग जानना को० नं० १८ देखें	<ul><li>१ भग</li><li>के अपने अपने स्थान</li><li>के सारे भंगों में</li><li>से काई १ भग</li><li>जानना</li></ul>	१४ (१) मनुष्य गति में १४ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग कोर्टनं०१८देखी
दशन ३, लाव्ह भनुष्यगति १, धुक्ल लेस्या १, प्रसिद्धल १, जे भव्यत्व १ ये (	दशन ३, लाब्ध ४, मनुष्यमति १, कषाय ४ धुक्ल लेस्या १, सज्ञान १ प्रसिद्धत्व १, जीवत्व १ भष्यत्व १ ये (३३)						

- ४४ अवगाहमा को० मं० १८ देखो
- वंव प्रकृतियां—१२० ६वें गुएए० के स्रवेद भाग में कषाय ४, जानावरातीय ४, दर्शनावरातीय ४, अन्तराय ४, साता वेदनीय १, उच्चगोप १, यशः कीति १, ये २१ प्र० वन्ध जानना ।
- ।१ १०वें गुर्सा० में ऊपर के २१ में से कवाय ४ घटाकर १७ प्र० का वन्ध जानना।
  - १ ११-१२-१३नें गुसार में १ शुक्त लेख्या का बन्ध जानना।
- १४वें मुर्गा० में वन्य नहीं है।
- नवें गुसा० के म्रवेद भाग में ६३ प्र० का उदय जानना को० नं० ६ देखो । बद्य प्रकृतियां–६३
- १०वें गुएए० में संज्वलन,कोध-कषाय-मान-माया ये ३ घटाकर ६० प्र० का उदय जानना ।
  - ११वें गुए।० में सूक्ष्म लीभ घटाकर ५६ प्र० का उदय जानना।
- १२वें गुसा में नाराच भ्रीर वज्र नाराच संहनन ये २ घटाकर ५७ प्र॰ का उदय जानना।
- १३वें गुएरा० में ज्ञानावरसीय ४, दर्शनावरसीय ६, मन्तराय ४ ये १६ ऊपर के ४७ में से घटाकर तीर्थंकर प्र० १ जोड़कर ५७ — १६ = ४१ + १ = ४२ प्र० का उदय जानता।
  - १२ १४वॅ मुएए० में को० नं० १८ के समान १२ प्र० का उदय जानना।
- सस्य ग्रमृतियां—१०५ नर्ने गुरा के ग्रवेद भाग में १०५ प्र का सत्ता जानना को नं ६ देखो ।
  - १०२ १०वें गुरा। में कोव-धन-मायों ये ३ घटाकर १०२ प्र॰ का सत्ता जानना । १०१ १२वें गुरा। में सूस्म लोभ घटाकर १०१ प्र॰ का सत्ता जानना ।
- जानमा १३वॅ गुएए॰ में ज्ञानावरस्तीय ४, दर्शनावरस्ती १ ६, श्रन्तराय ४, ये १६ घटाकर ८५ की सत्ता
- १४वें गुरा० में दिचरम समय में न्थ्र प्र० का और चरम समय में ऊपर की न्थ्र में से ७२ प्रकृति घटाकर १३ प्र० की सता जानना को० नं० १४ देखो । y Y
- रंट सल्या—उपराम श्रेगी की ग्रपेक्षा—६००८६४ जानना को० नं० ६ से १५ देखो । क्षपक श्रेगी की ग्रपेक्षा—६०१७६१ जानना को० नं० ६ से १५ देखो ।
- क्षेत्र—प्रसनाड़ी की श्रपेक्षा-लोक का ग्रसंस्थातवों भाग जानना । प्रत्तर समुद्घात की ग्रपेक्षा लोक के ग्रसंख्यात भाग जानना । लोकपूर्ण समुद्घात की भ्रपेशा सर्वलोक जानना €2) C)

a %

							*						•							
कवायों में		। १ जीव के एक समय में	ıs	१ मुसा० १ ९ले मुसा०	में १९ने २२ में से	कोइं १ मुरा	6 5 6 7 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	१ सनास.	1				·.`	***	·•	१ अंग	मयतितत्	१६ देखो		
अनन्तानुवंधी ४ कषायों में		१ जीव के नाना समय में	ഉ	सारे मुग्गः (१) नरक गति मे	गुरा० शेव ३ मति	१ले २२, मुस्तुः जानना	•	१ समास	£ .		:		,			१ भंग	प्यस्तिवत			*
	अपयरित	नाना जीवों की अपेक्षा	٠. ٢٠٠	(१) नरक में १ले मुगा०	हा हाता है। (२) शेप तीन गतियों में	हरेक में २ मिथ्यात्व सांसादन	ये २ मुरा-स्थान जानना ने० न० १६ से १६ देखो	७ अपयोप अवस्था	(१) नरक-दवगात म हरेक में १ संजी पं०	यग्याम जीव-समास जानना	का० न० १६-१६ दल। (२) तियंच गति में	७-६-१ के भंग को० न०	१७ के समान जानना	(३) मनुष्य गांत म १-१ ने भंग-नो० नं०	१= देखो	mr.	(१) नरक-देवगति में	नं १६-१६ देखो	लटिय इत्यं अपने अपने	7
3 % 0		एक जीव के एक समय में	'n	१. अस्ति । १ व्याः भि	स नाइ १			१ सर्गाख		,t	•				·	१ भंग	यपने यपने स्थान अस्ति सं	मोर्ट. १ भंग	.जानमा ,	
( ३५१ कोप्टक नं०	*	एक जीव के नाना प समय में	×	सारे गुरा स्थान १ले २रे गुरा	वानना			.१ समास	*		:			=		१ मंग	ग्रपने ग्रपने स्थान   भंगों में म १ भंग	, ;		
ર્યોન	पय रित	नाना जीवों को अपेक्षा	m.	२ (१) चारों गतियों में हरेक में	२ मिथ्यारव सासादन ये २ गुरा० जानना	को० नं० १६ से १६ देखो		७ पर्याप अवस्या	(१) नरक-देवगति में हरेक म १ संज्ञी पं० पर्यप्ति जानगा	कों जनं १६-१६ के	जानना (२) निर्मंत मि	6-8-8 計	को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में १–० के भंग	कों नं १ व देखों -	. W	(१) नरफ-देवगति में	मं० १६-१६ देखो	-	
चौंतीस स्थान दर्शन	क्षेत्र ग्राम सम्बं		2	१ मुस् स्वान २ मिथ्यात्स सातादग				२ जीव समास १४	क्षी० नं० १ देखो							'ئن	कों नं १ देवो		•	en e

节	नि स	चौतीस स्थान दर्शन					7
-		ושנו אצונו	കാപ്ര	नुष् ४१		अनन्तानुबधा ४	कषाया म
~	a	, m·	> >	` s<	w	9	นุ่
-		(c) Fara 464 **	ļ		भी पर्याप्तवत्		
		(1) 1044 110 H	- T	, भूग , ~	(२) तियंच गति में		० भंग
		マーメーの・で、中・中で 田子の 日の 日本	का० न० १७ दखा	का० न० १७	३-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	कों नं १७
		्रिक्रिक मुख्या (६)	. ]	न्त्व।	म <b>०</b> १७ वर्ष		देखो
		1	1 4	- H	(३) मनुष्य गति में		~ मंग
		सोठ मं० १८ सेवो	काठ नठ १८ दखा		1. 当	को० नं० १८ देखो	कों नं श्व
४ प्रासा	؞		y vir.	200 C	का० न० रुद द्वा	•	दंखाँ
मों नं ० दे	देखो	æ	11.		ء م ر	~ मंग	१ भग
•		6 6	410 10 (4-(K	काठ नं ० १६-	(१) नरक-देयगति मे	कों मं १६-१६	को० नं० १६-
		को० मं० १६-१६ हेम्बो		- १८ वर्ष - १८ वर्ष	हरक म ७ का भग	देखो	१६ देखो
٠		(२) तियुंच मिन में	9 vir		काठ नं ० १६-१९ दिवा		
		08-2-3-9-2-3-08	को० नं० १७ हेकी	- +	(२) तियच गांत म		्र भग •
		के भंग को० नं० १७		नेखों	# 12 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	का० न १७ दखा	का० न० १६
		देखो			देखों भार भार ५७		٠
	<del></del>	(३) मनुष्य गति में	० भंग	१ भंग	(३) मनष्य गनि में	e rite	، عتبته
		१०-१० के भंग को० नं०	को० नं० १८ देखो	कों मं  १ द	७-७ में भंग	को० नं० १८ हेखो	को० नं० १८
६ मंजा	<b>×</b>	१न देखा	•	देखो	को॰ नं० १८ देखो	•	
事で の 中の一部	· 1		<u> 취</u>	१ मंग	>>	० भंग	१ भंग
•	 5		र० १६ से १६	को० नं० १६	चारों गतियों में हरेक में	पयक्तिवत्	प्य िष्तवत्
		० का मन्निगठ पठ	यस	सं १६ देखां	४ का भंग को० नं० १६	•	•
६ मति	<b>×</b>	195 W 25 10 1	d	(	से १६ देखो		
को० नं० १ देखो	, च	وسيبة يتاله بتربية	४ मात	१ गति	<b>∞</b>	१ गति	१ मित
•		नार गार बान्ता	- J		चारों गति जानना		
७ इन्द्रिय ज ति	><	(१) नरक-मनव्य-वेनमचि भे	4		का० न० १६ से १६ देखो	i	!
मों नं १ देखो			i.		<i>x x x x x x x x x x</i>	••	१ जाति
		पंचेन्द्रिय जाति		ا الحارث	(१) न एक-मनुष्य-दवगात में हरेक में	पयांप्रयत्	पयोप्तवत्.
		जानना			१ पंचेतिहरम जाति जाना		
		को० नं० १६-१८-१६ देखो			को० मं० १६-१६-१६		4
	-						

	कषायों में	u .	१ जाति क्रो०न० १७ देखो	१ काय पर्याप्तवत्	् १ काय को०नं० १७ देखो	१ योग के प्रपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग	को०नं० १६ से १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो
	अनन्तानुबन्धी ४ का	Ø	१ जाति को० नं० १७ देखो 	१ काय पर्याप्तवत्	१ काय को० नं० १७ देखो	१८ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना	को०नं० १६ से १६ देखो	१ भग को० नं० १६ देखो
· · ·	郑ન	'خون	(२) तिविच गति में ४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ बसकाय जानना	को०नं० १६-१८-१६ देखो (२) तियैच गृति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~	य .३ भग जानना (१) नरक-तियैच-मनुष्य- देवगति में १-२ के भंग जानना को०नं० १६ से १६ देशी	३ (१) नरक गति १ नपुंसक वेद को० नं० १६ देवो
३५३ )	नं० ५१	<u>-</u>	१ जाति क्रो०नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१५- १६ देखो	१ काय को०नं० १७ देखो	१ योग प्रपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग		१ वेद को oनं० १६ देखो
	कोष्टक	>	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ काय को० न०१६-१६- १६ देखो	१ कॉय को० नं०१७ देखो	१ भंग भपने अपने स्थान के प्रपने अपने स्थान सारे भंग जानना के भंगों में से कोई १ गोग	नं० १६ १६ देखो	का० न० १७ दखा १ मंग को० नं० १६ देखो
	चौंतीस स्थान दर्शन	m,	• (२) तियैच गति में ४-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ जनकाम सम्बन	१९ देखो	. ~~ ~	यं ३ टाकर (१०) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का मंग का० न० १६-१८-१६	(२) तियच गति म
	चौंतीस	e ~		द नाय को० नं० १ देखो		ह योग प्रा० मिश्र काययोग १, माहारक काययोग १, मे २ घटाकर (१३)		१० वेद क्षी० वं० १ देखो

शयों में	u 	को  न	देखों १ भंग को० न० १६ देखो	१ भग को० न० १७ देखो	१ मंग को० नं० १८ टेन्स
अनन्तांनुबंधी ४ कषायों	. 9	को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं॰ १८ देखो सारे भग	न १५ ८ न १६	सारे भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं <b>०</b> १८ देखो
뀖퓌	w	(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखी (३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को नं० १८ देखी (४) देवगति में	देखो २२ नरक गति में का भग-को० नं० के २३ के मंग में से खत् अनन्तानुबंधी प ३ घटाकर २० का	}	२२-२०-२२- २२-२०-२२- जानना गति में मंग-को०
० ५१	*	को० नं० १७ देखो सारे भंग को॰ नं० १८ देखो सारे भंग	देखों सारे मंग को नं० १६ दखों	सारे भग को० नं० १७ देखो	्र सारे भंग को० नं० १८ देखो
कोष्टक नं०	, >>	को० नं० १७ देखो। सारे भंग को० न० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६	सारे भंग को० नं ऽ १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	m	(२) तियँ च गति में ३-१ ३-२ के भंग कोट नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में		घटाकर २० का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-२१ के भंग-को० नं० १७ के २५- २३-२५-२५-२४ के हरेक मंग से ऊपर के समान प्रनन्तानुबंधी कपाय ३ घटाकर २२-२०-५२-२२-	
चीतास	€ C			हास्पादि नव नो कपाय ६ ये (२२)	

_	
34	
m	
_	

भूगों में से ऊगर के समान अनन्तानुबन्धी कपाय ३ बटाकर २२-२१ के भंग जानना (१) देव गति में २१-२० के भंग को० नं० १६ के २४ २३- के हरेक भंग में से ऊपर के समान अनन्तानु- बन्धी कपाय ३ घटाकर २१-२० भंग जानना					
ति । स्य- हर्	>	<b>5</b> 4	<b>ν</b> υν	ອ	<b>u</b>
मंग स्थ	समान प्र ३		हरेक भंग में से पर्याप्त- बत् अनन्तानुबन्धी क्पाय		
मिर्न स	<u> </u>		३ घटाकर २२-२१ के मंग जानना		
के हरेक भंग में से ऊपर के समान अननतानु- बन्धी कपाय ३ घटाकर २१-२० मंग जानना	सारे भंग कोठनं० १६ देखी	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में २१,२१-२०, के भंग	सारे भंग को० नं० १९ हेखो	्र भंग मोन्स् १६ टेस्से
बन्धी कपाय ३ घटाकर २१-२० मंग जानना	ਜ਼ ਵ		कोठ मं १६ के २४-	,	
	गुकर	-	ते पर्याप्तवत् अनन्ताः ननन्त्री कषाग्र ३ घराकर		. · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
१२ जान ३	सारे भंग	१ ज्ञान	. P.	सारे भंग	१ ज्ञान
-कुयुत- यि ज्ञान (३) ३ का गंग	नि॰नं १६ देखो	कोठनं० १६ देखो	कुमति-कुश्रुत ये (२) (१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को०न० १६ देखी
	-		२ का भंग		
	१ भग निव्यंव १७ दखो	१ ज्ञान क्रो०नं० १७ देखो	को० न० १६ देखा (२) तियँच गति में	१ भंग	१ जान
<b>a</b>	•		२-२ के भंग में	ने नं १७ देखो	क्तो०न० १७ देखो
(क्) गंजुंध्य गांत म ३ ३ से मंग ति०	सार भग ति० नं० १ च देखो	र शान कोऽनं० १८ देखो	करि में० १७ देखा (३) मनुटय गति में	सारे भंग	१ ज्ञान
恒	•		₩. ,	हो० नं० १ न देखी	को०नं० १ न देखो
(४) दनगात म ३ का भंग तिरे	सार भग  ति नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	का० न० १८ दशा (४) देवगति में	सारे	१ शाम
को नं० १६ देखो .	L.		२-२ के भग को० नं० १६ देखो	को० न० १६ दबा	काञ्च १६ देखा
	~	~	ا مد ا	~	
	को० नं० १६ से १६ देखो	क्रो०नं० १६ से १६ देखो	चारों गतियों में हरेक में	को० नं० १६ से १६ देखो	१६ मि ३ नं १६ से १६ देखी

१ २ १ १४ दर्शन अचक्ष-चक्षु दर्शन २ (.१	m·	_			_	
नक्ष दर्शन २		>>	×	US	න	น
वसु दर्शन	१ असंयम जानना को० म० १६ से १६ हेन्सो			巨本	4	
चक्ष दर्शन	U ~	, rim	9 दर्शम	74 A 20 C	11 7. vir.	१ दर्शन
	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को ०नं० १६ देखी	(१) नरक गति में	को० न० १६ देखो	स्मोठमं० १६ देखो
	२ का भंग	•		र का भंग	۶ م ه	77
	को० नं० १६ देखो			को० नं १६ देखों		- [
(ع	२) तियंच गति में	. १ भंग	१ दर्शन	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ दर्शन
	१-२-२-२ के भंग	देखो	देखो	१-२-२-२ के भंग	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो
-				को० नं० १७ देखो		,
(¥)	१) मनुष्य गति	सारे भंग		(३) मन्दय गति में	सारे भंग	१ दर्शन
	२-२ के भंग	को० नं० १ न देखो	16	२-२ क भंग	कों नं १८ देखो	कोठनं० १८ देखो
	को० नं० १ न देखो			को० मं० १८ देखो		
<u>گ</u>	(४) देवगति मे	१ भंग		(४) देवगति में	१ मंग	१ दशेन
-	२ का भग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	२-२ के भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देख
	को० नं० १६ देखो	,		को० नं० १८ देखो		
الاد الاد الاد	!	१ भग			१ मंग	१ लेख्या
क्कां० न० १ दखा   (१	(१) नरक गति में	क्ती नं १६ देखो	को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में	को० नं०, १६ देखो	क्रो०नं० १६ देख
	र ना भग			३ का भंग		
	कों नं १६ देखो	,		कोंं नंं १६ देखो		
<u>(3</u>	(२) तियंच गति में	१ भंग		(२) तियंच गति में	सरमं	१ लेखा
	र-६-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	देखो	3-2 th rid		को०नं० १७ देखो
	को० नं० १७ देखो			को० नं० १७ देखो	•	
<u>e</u> )	(३) मनुष्य गांत में	सारे भंग	१ लेखा	(३) मनुष्य गति में	१ भंग	१ लेखा
	६-३ मे भूग	को० नं० १८ देखो	कोठनं० १८ देखो	के भंग		को ०नं० १८ देखो
	की मं १८ देखी	;		को० नं० १८ देखो	•	
<u>ප</u>	(४) दनगात मे	~		(४) देव गति में	१ भंग	१ लेखा
	F	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	३-३-१ के भंग	कोठ नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
	का० न० १६ देखो			को० नं० १६ देख		•
				•		

**?**:

कवायों में स्टायों	'n		१. सम्यक्त्व कोठनं० १६ देखो	9 TTTT	कोन्ने १७ देखो	१ सम्यक्त्व कोठन ० १ = टेक्नो		को०नं० १६ देखो	१ अवस्था को०नं० १६–१६	देखो	१ मयस्या को०न० १७ देखो	१ अवस्या	को०न ० १ द देखो	१ कोठनं० १६–१६	नेख <u>ें</u> जैस्	
अनन्तानबन्धी ४ का			 सारे भंग को० नं० १६ हेखो	, n	मो० नं० १७ मे	सारे भंग को० न० १ द हेखो	ं सारे भंग	को० नं० १६ देखो	को० ः		१ मंग तको० नं० १७ देखो	१ भंग	कां नि १५ देखी	सारे भंग को० नं० १६-१६	 देखो	-
郑리	υΣ		२ (१) नरक गति में	१ का भंग को० नं० १६ देखो (२) निर्मंत्र मिन	१-१-१-१ के मंग	का० न० १७ दखा (३) मनुष्य गति में १–१–१–१ के भंग	को० नं० १   देखो (४) देवगति में	१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	२ २ (१) नरक-देव गति में	१ संज्ञी जानना को० नं० १६–१६ देखो	(२) तियंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को०	को० नं० १७ देखा (३) मनुष्य गति में	१–१ क भग को० नं० १द देखो	स्तर्भ र		कोननं० १६–१६ देखो
% % %	*		१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	al क	/ <del> </del>	१ सम्यक्त्व शो०नं० १ द देखो		क्रिंग १६ देखो	१ अवस्या को०नं० १६–१६	देखो	१ श्रवस्या मो०्नं० १७ देखो	१ यवस्या	न० १५ दलाकान्ति १५ दला	क्षीठमं० १६–१६	दंबो	
( ३५७ कोष्टक नं	>>	,	सारेभंग को० नं० १६ देसो	भंग भंग	को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १प देखो	सारे भंग	काँ न० १६ दबा ।	म ६−१€	देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	का० न० १५ द्खा 	१ को० नं० १६–१९	द्वा	
दशन	m		२ (१) नरकगति में	१-१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में	(	्र) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भग	को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ०००	१-१ क भग को० नं० १६ देखो	२ (१) नरक–देवगति में हरेक में	१ सज्ञा जानना को० नं० १६–१६ देखो	(२) तियंच गति में १-१-१-१ के भंग	की०न० १७ दखो (३) मनुष्य गति में १०३ स्टब्स	८-१ भ भग को० नं० १ प देखो	<b>१</b> (१) नरक−देवगति में 	'≓	का. नं १६-१६ दता
चौतीस स्थान र	~		१७ ग्रम्यमत्व निध्यात्व, सासादन		`.				१ - मंजी संजी, स्रसनी					१६ याहारक ब्राहारक, श्रनाहारक		

चीतीस स्थान दर्शन	दर्शन	। रर्ट कोष्टक नं	रर्ट ) नि० ५१		अनन्तानुबंधी ४ कषायों में	कषायों में
~	m·	>>	*	usr	9	ប
	मंग में से अनन्तामुबंधी कपाय जिसका विचार करो उसको छोड़कर श्रेप ३ कपाय घटाकर ४६-४१ के मंग जानना (२) तियंच गति में ३३-३५-३६-३७-४०-४६ के मग-को० नं० १७ के ३६-३८-५०-४५ के समान अनन्तामुबंधी कपाय ३ घटाकर ३३-३५-४९-४६-४३-४७-२२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० न० १७ देखो	पर्याप्तवत् भनन्तानुवंनी कपाय ३ घटाकर ३६ भंग जानना (२) तियच गति में ३४-३५-३६-३७-४०-४१ २६-३०-३१-३२-३५- ३६-४०-३५ के मंग- को० नं० १७ के ३७- ३६-४०-३५ के संग- को० नं० १७ के ३७- ३६-४०-३५ के युर- ३६-४०-३१-३६-३६-३१-३१- ३६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् ग्रनन्तानुवंघी कपायं ३ घटाकर ३४-	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० न०१७ देखो
		सारे भंग को० नं० १ = देखो सारे भंग	<ul><li>१ मग</li><li>को० नं० १८</li><li>देखों</li><li>१ मंग</li></ul>	३०-३१-३१-३१-३५-१६-४०- ३५ के भंग जानना (३ मनुष्य गति में ४१-३६-४०-३५ के भंग को० न० १८ के ४४- ३६-४३-३८ के हरेक भंग में से प्यसिवत् अनंतानुबंधी कपाय १ घटाकर ४१-३६-४०-	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ मंग को० नं० १८ देखो
	४७-४२-४६ के भंग को० नं० १६ के ५०-४५- ४६-४४ के हरेक भंग में से अपर के समान अनत्ता- यंथी कपाय ३ घटाकर ४७-४२-२६-४१ के भंग जानना	१ ह देखी	को० नं० १६	३५ के भंग जानना (४) देव गति में ४०-३५-३६-३४ के भंग को० नं० १६ के ४३- ३८-४२-३७ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अनन्तानुबंधी कपाय ३	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

: ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **		8 भंग को० नं० १६ १ भंग को० नं० १७ १ भंग को नं० १८ १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग		
अनस्तामबंधी 🗙	1	सारे भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो		
	w	घटाकर ४०-३४-३६-३४ के भंग जानना ३३ कुअविध ज्ञान घटाकर व ११ नरकगति में १२ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में २४-२४-२७-२७-२२-के २४-२४-२४-२ के भंग को० नं० १७ देखो (४) देवगति में ३०-१८-२४-२२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २६-२४-२१ के भंग को० नं० १६ देखो (४) देवगति में	·	
३६० ) तमं० ५१	×	तो को० नं० १६ देखो १६ १ भंग देखो १७ १ भंग ते को० नं० १८ १ भंग १ भंग १ भंग		
ं । कोष्टक	>>	सारे भंग सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो		
दर्शन	mr .	३४ २६-२४ के भंग-को० न० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २४-२४-२७-३९-२९-२७- २५ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३१-२६-२७-२५ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२३-२१-२४-२२-२२ के भग-को० नं० १६ देखो।		
चौतीस स्थान दर्शन	~	२३ भाव छुजान ३, दर्शन २, लिड्य ४, गति ४, लेश्या ६, सिथ्यादर्शन १, असंयम १, शजान १, असिद्धत्य १, पारिसा- मिकभाव ३ ये २४ जानना	•	

į			· · <u>*</u> ·
कषया म	B.	<ul><li>श्र अवस्या</li><li>को० नं० १६</li><li>देखो</li></ul>	ुको० नं० १७ १८-१६ देखो
अन्तानुबधा ४ कष्या म	ຸ ၅	१ भंग को० नं० १६ देखो	० मे ० १७-१ प्र- १९ देखो
रू		<del>्र</del> जि	- ति - कि
	US	१ मंग १ ग्र स्था । १ म स्था । १ मरक गति में के को० नं० १६ देखी । १ का भंग को० नं० १६	दक्षा (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति को०,नं० १७-१८- को० नं० १७- हरेक में २–१ के मंग को० नं० १७-१८-१६ देखो
कोष्टक नं० ५१	×	१ श्र स्था को०नं० १६ देखो	को० नं० १७- १=-१९ देखोरे
कोष्टक	>	१ भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १७-१८- १६ देखो
दर्शन	m	२ (१) सरक गति में २-१ के भंग	को० नं० १६ देखो श्रा (२) तियंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में २–१ के भंग को० नं० १७-१६-१६ देखो
चींतीस स्थान दर्शन	a	त २ भव्य, प्रभव्य	बिपय पुष्ठ खूटा हुमा
नीं	~	१६ भग्यत्म	सूनना—यह विषय पुष्ठ ४६ का छूटा हुमा है।

२४ प्रवमाहना—को० नं० १६ से ३४ देखो।

वंच प्रकृतियां—(१) मिन्यात्व गुएए० में ११७ ग्राह्मारकद्विक २ तीर्थंकर प्र०१ ये ३ घटाकर ११७ जानना । (२) सासादन गुएए० में १०१ को० १ प्रमासा को० नं० २ देखो ।

उवप प्रकृतियां—(१) मिथ्यात्व गुग्तु में ११७ सम्यमिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, माहारकद्विक २, तीर्यंकर प्र०१ में ५ घटाकर ११७ को० १ प्रमास जानना । (२) सासादन मुस्ति में १११, को० नं० २ देखो ।

सस्य प्रकृतियां—१४८ को नं २६ देखो । (२) सासादन गुएए में १४५ को नं २ देखो ।

२ संख्या-- प्रमन्तानन्त जानना ।

क्षेत्र—सर्वलोक जानना।

 मान-नाना जीवों की प्रपेक्षा सर्वकाल । एक जीव की प्रपेक्षा एक समय से अन्तर्म हुत तक एक कपात की प्रपेक्षा जानना । स्पर्गत-सर्वलोक जानना ।

क्रन्तर —नाना जीवों की क्रवेक्षा कोई क्रन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा एक समय या क्रन्तमुँहुर्त से देशोन १३२ सागर काल तक कोई भी ग्रनन्तामूत्रधी कपाय उत्पन्न न हो सके।

३३ जाति (ग्रीन) —=४ लाख योनि जानमा ।

३४ कुल.—१६६॥ लाख कोटिकुल जानना।

_
CY.
W.
_

चौतीस स्थान दर्शन	र्शन	कोष्टक	न मं ० ५२	KK.	अप्रत्याख्यान ४ कषायों में	ायों में
क्र स्पान सामान्य मालाप	पयिप				म्रपयिति	i
	नाना जीव की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
	m	>>	34	υy	9	u
भुसा स्थान १ से ४ जानना	४ चारों गतियों में हरेक में १ से ४ गुरा ० जानना	सारे गुर्सा स्थान	्र गुरार	३ (१) नरकगति में १-४ गुएए० (२) निर्मास मिन में	सारे गुर्धाः	<b>₹</b> मुख
·				(२) १९५५ पुराए (३) भोगभूमि में १-२-४ गुराए (४) मनुष्य गति में १-२-४ गुराए (५) देवगति में	,	
१ जीवसमास १४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त प्रवस्था (१) नरक-देवगति में हरे में १ संशो पं० पर्याप्त प्रवस्था जानना	<i>₩</i>	१ समास को०नं० १६-१६ देखो	१-२-४ गुरा॰ ७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-देव गति में हरेक में १ संज्ञी पं॰ अपर्याप्त	१ समास को० नं० १६-१६, <sup>व</sup> देखो	१ समास को० नं० १६-१६ देखो
2	(२) तियंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० न० १८ देखो	र प्रमाप १ समास को० नं० १८ देखो	रेखें रेखें	्ह देखो त में देखो त में त में	१ समास को० न० १७ देखो १ समास को० न० १८ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो १ समास को०नं० १८ देखो

准	ឋ	१ मंग होठनं० १६-१६ देखो १ मंग कोठनं० १७ देखो १ मंग कोठनं० १८ देखो	१ मंग को०नं० १६-१६ देखो १ मंग को०नं० १७ देखो को०नं० १८ देखो	१ मंग ०नं० १६ से १६ देखो
अप्रत्याख्यान ४ कषायो	<u>.</u> . ૭	<ul> <li>को० नं० १६-१६ को।</li> <li>देखो</li> <li>१ मंग</li> <li>को० नं० १७ देखो को।</li> <li>१ मंग</li> <li>१ मंग</li> <li>को० नं० १८ देखो को।</li> </ul>	१ भंग नं० १६-१६ देखो १ भंग नं० १७ देखो १ भंग नं० १ नंदेखो	१ मंग १ मं को० नं० १६ से १६ को०नं० देखो १६
ン 大 権	US	है (१) नरक-देवगति में क हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१६ देखों (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखों (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को. नं० १८ देखों	७ (१) मरक-देवगति में को॰ हर्सक पें ७ का भंग को॰ नं॰ १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० को० नं॰ १७ देखो (३) मनुष्य गति में ७-७ के भंग	४ . चारों गतियों में हरेक में को ४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो
े प्र अस्त	*	१ भंग को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	<ul> <li>१ भंग</li> <li>देखो</li> <li>१ भंग</li> <li>को०नं० १७ देखो</li> <li>१ भंग</li> <li>१ भंग</li> <li>को०नं० १० देखो</li> </ul>	१ मंग को० नं० १६ से १६ देखो
( ३६३ कोष्टक न	>>	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ व १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग १ भंग को० नं० १८ देखो	१ मंग को०नं० १६ से १६ देखो
र्नोतीस स्थान दर्शन	m	ह मि स्क-देवयति में हरेक में ह का मंग को० नं० १६-१६ देवो (२) तिर्यंच गति में ह-५-४-६ के मंग को० नं० १७ देवो मनुष्य गति में विनेट को नंग	१० (१) नरक-देव गति में हरेक में १० का भंग की० नं० १६-१६ देखो (२) तियँच गति में १०-६-५-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०-१० के भंग है०-१० के भंग है० नं० के नंग है	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का मंग को० नं० १६ से १६ देखो
र्चातीस	٤	٠٠٠	प्रतित् १ देखो को० नं० १ देखो	मा क्लो० नं० १ देखो
	~	३ पय:प्ति को० नं० १ देखो	४ प्राप्ता को० नं	५ संग्रा क्षो० नं

<b>.</b>	:	\$ 3 m	· ×	;		÷
चौतीस	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक न	नं० ५२	ID.	अप्रत्याख्यान ४	४ कषायों में
~	m	>>	in in	(J3°	9	tr.
द गति	> .	१ मति	१ गति	%	१ गति	१ गति
को० नं० १ देखो	चारां गांत जानना को० नं० १६ से १९ देखो			चारा गात जानगा को० नं० १६ से १६ देखो		
७ इन्द्रिय ज ति	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	१ जाति		À .	१ जाति	१ जाति !
क्षो० नं० १ देखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति मं हरेक में	क्री० न० १६-१८ १६ देखो	का० न० १६- १न-१६ देखो	(१) नरक-मनुष्य-दवगात में हरेक में	काठ नठ १६-१म १९ देखो	का० न० १६- १म-१६ देखो
	१ पंचीन्द्रय जाति जानना नोत् संत १६ १ - १६		. 5.	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना को०.सं० १६-१८-१६		: :
	नेतारे न १५-१५-१६			देखो		
	(२) तियंच गति में	१ जाति		(२) तियाँच गति में	१ जाति	१ जाति
,	१-१-१ में मों० नं० १७	को० नं० १७ देखा	क्तां० न् १७ देखो	४-१ क भग को० नं० १७ देखो	का० न० १७ दबा	का० न० १७ देखोः
س عا نا	ω - - -	१ काय	१ काय	990	१ काय	१ काय
को० नं० १ देखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में	•	को० नं० १६-	(१) नरक-मनुष्य-देवगति	को० मं १६-१८	कोठ मंट १६-
	हरक म	१६ दला	र्म हत् बला	० समझ्या जानम	- Bre 0 >	\ त-१८ १७। १८-१८
	१ त्रसकाय जानना को० न० १६-१घ-१६			र नहामान जानमा कोर मं० १६-१८-१६		
	देखो			देखो		
	(२) तियंच गति में	१ क्षाय	्र काय -	(२) तियंच गति में		१ काय
	क्री० नं ० १७ हेन्डो	का०न० १७ दला	काठ न ० १७ देखो	६-४-१ क मध को० नं० १७ देखो	काठ न० १७ दख	का० न <b>० १</b> ७ देखो
ह योग १३	02	१ भंग	१ योग	m	. १ भंग	१ योग
कों० नं० ५१ देखो	ओं िमिश्रकाय योग १,	٠		मी० मिश्रकाय योग १,		
	वं । मिश्रकाय योग १,					
	कामिसिकाय योग १,			कामोशिकाय योग १,		
	य ३ घटाकर (१.)	;; ;; ;; ;; ;; ;; ;; ;; ;; ;; ;; ;; ;;	#\\\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	(१) सरक्षामसस्य भेगमन्ति		#
,	(१) मरमन्मितुष्यन्दवगात म	१६ देखी	१८-१९ देखो	१८) गर्भ मधुष्य-प्रमाश में हरेक में	१९६ देखो	१ द-१६ देखो
	ह का भंग-को० नं० १६-		· ·	१-२ के मंग को० गं०		•
	१ द-१६ देखो			१६-१८-१६ देखो		

$\overline{}$
がい
w
•
~

नौतीस स्यान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	० ५२	최 <u>정</u>	त्रश्नत्यास्यान ४ कषायों	यों स
6°	m	<b>&gt;</b>	ਲ	: ۳۷	9	. <b>W</b> .
	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ योग	(२) तियंच गति में	⊷.	मंग
	ह-२.१-६ के मंग	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो	१-१ के मंग को० नं० १७ देखो	कां नि १७ देवा	क्रांग्न १७ वेस्
के देव	10 m	१ भंग	१ वेद	· m·	१ मंग	१ वेद
क्षीठ नं० १ देखी	(१) नरक गति में	, १६ देखों	को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
	१ का मंग कोर बंद १६ धनो		,	१ का भग को० न०१६ देखो		
,	(२) तियंच गति में	१ भंग	.१ वेद	(२ तियंच गति में	१ भंग	~ बे
	३-१-३-२ के भंग	देखो	को०नं० १७ देखो	३-१-३-१-३-१-१ के भंग	को० नं० १७ वेखो	को०नं० १७ देखो
	को० नं० १७ देखो		,	क्षां न० १७ देवा	4	, d
		सारं भग	ं वद	(त) मनुष्य गांत म	तार भग	र वद
		का० न० १ द देखा	का०न० १ द द्वा	4-8-4-8 # ## 4 1. 8. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2.	काउन० १८ द्या	कार्यर १८ देखी
	को० न० १८ देखाँ			का० न० १८ देखा		
	-	सार भग	् ४ वद 	ł	सार भग	् वद
	. (	कां नं १६ देवा	कान्न १६ देखा		का० न० १६ दखा	क्तान्न १६ देखा
	को० न० १६ देखा	,	,	का० न० १६ देसा		
११ कपाय २२	23	सारे भंग	% भंग		सार भग	१ भग
श्रनन्तानुबन्धी कपाय	(१) नरकगति में	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखा	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	कोठमंठ १६ देखो
४, श्रप्रत्याख्यान कवाय	२०-१६ के मंग			२०-१६ के भंग		
जिसका विचारकरो थो।	को० नं० १३ के २३-१६			कोठ नं ०१६ के २३-१६		,
१ कपाय, प्रत्यास्यान	के हरेक भंगों में से मप्र-			के भगों म से पयांत्रवत्		
क्षाय४, संउलन क्षाय४	्त्यास्यान कपाय जिसका			मप्रत्याख्यान कपाय ३		
हास्यादिक नवनोकपाय	却			हरेक में घटाकर २०-१६		
६ ये २२ कषाय जानना	शेप २ क			क भग जानना	.].	•
	घटाकर २०-१६ क भग			(४) तिथन गात म	年17年十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十十	<del>-</del>
	जानमा .		•	11 10 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 0	9 ~ 0 T	काठन० १७ दला
	1.2%	सार भग को० नं० १७ देखो	१ भग को०नं०१७ देखो	स्र-र१-१६ क भग	:	
	रुट में मंग		- Sek	-25-25-25-25-25-52-52-		
		,	<i>5</i>			

	: <b>*</b>		. •	• •	. :	٠,	
कषायों में	R		<b>१ भंग</b> को०नं० १८ देखो		१ भंग को०नं० १६ देखो		१ भंग को०नं० १६ देखो
अप्रत्याख्यान ४ क	Ð		सारे भंग को० नं० १८ देखो		सारे भंग को० नं० १६ देखो		ग़ारे भंग नं० १६ देखो
<b>数</b>	ردن .	१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२- २०-२२-२२-२२-	ज्य गति में २१-१६ के भंग ० १८ के २५-		र-१६-५१-१६ निना वि में १६-२०-१६- म	का० न० १६ क ५४- २४-१६-२३-१६-१६ के हरेक भंग में से पर्याप्त- वत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २१-२१-१६- २०-१६-१६ के भंग	घटा गति भे १ देखे
( ३६६ ) कोष्टक नं० ५२	ઝ		१ भंग को०नं० १८ देखो		१ भंग को नं०१६ देखो		१ ज्ञान को०न० १६ देखो
को को	>		सारे भंग को० नं० १८ देखो		सारे भंग को० नं० १६ देखो		सारे भंग को० नं० १६ देखो
र्यान	W.	_ 40 P= 0.	१७ के मंग ति में २१-१७ के मंग	☆神 上」	कर २२-१६-१७ के भंग जानना (४) देव गति में २१-१७-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के भंग	२३-१६-१६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान श्रत्याख्यान कपाय ३ घटा- कर २१-१७-२०-१६-१६ के भंग जानना	
चौतीस स्थान दर्शन	r						m. m.
<u>ब</u> ्रें	~	,		•			१२ झाल कुशान ३, जान ये ६ जान जानत

			· · ·	ક્રેફ્લ ( )			
चौंतीस	चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नग	नम्बर् ४२	<b>अप्र</b> ट	अप्रत्याख्यान ४ कषायो	# ==
~	~	m	>	*	υν	ອ	ır
		(२) तियंच गति में २-३-३-३-३ के भंग	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	(२) तियंच गति में २-२-३ के भंग	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
		सं सं	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	कोठ न० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग स्रोत नं० १० सेसो	सारे मंग को• नंः १ द देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
		का० न० १न देखा (४) देवगति में ३-३ के मंग क्रो० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	•	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम	प्रसंयम	भार गुरु ५५ ५ ५ म बारों गतियों में हरेक में १ ससंयम जानना को०नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को०न० १६ से १६ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६	१ को० न० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो
१४ दर्शन को० नं०	3	३ (१) नरकगति में २-३ के मंग	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	देखो ३ (१) नरक गति मे २-३ के भंग	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ दर्शन को०न० १६ देखो
		को० नं० १६ देखो (२) तियँच गति में १-२-२-३-३-२-३ के मंग को० नं० १७ हेखो	१ मंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन क्रो०नं० १७ देखो	को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भग को०नं० १७ दखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ में भंग क्रोठ मं० १८ हेखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ <b>दर्शन</b> को०नं० १८ देखी	(३) मनुष्य गति में २.३-२-३ के भंग को० नं० १८ टेखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		, u	१ मंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	、京学 。	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
१५ लेक्या को० नं० १	१ देखी	्र रहा १ (१) नरक गति में	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेख्या कोठनं० १६ देखो	교교	१ मंग को०नं० १६ देखो	१ लेख्या को०नं० १६ देखो

चौतीस स्थान दशन	दर्शन	( १६६ कोष्टक नं	645	, kv	अप्रत्याख्यान ४ क	८ कषायों में
~	m	>	ઝ	USF	ع م` ا	u
-	३ का भंग-कों० नं० १६			३ का भंग को० नं० १६		
	देखो (२) तियैच गति मे	१ भंग		तयम गरि	* ## 	े लेख्या स्रोत्स्ति
	३-६-३ के भंग को० नं०	को० नं० १७ दंखो	को० न० १७ हेखो	१—१ क भग का० न० १७ देखो	किं प्रति प्रति	मार्थ मुर्
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग कोऽ वंऽ १० हेखो	१ लेखा क्रो० नं० १८	(३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग को० नं०	सारे भेग को० नं० १८ देखो	१ लेक्या को० नं० १८
	<u>0</u>	5 .	•			देखो • भिना
	(४) देवगति में   १८३=१=१ के गंग-को	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेख्या को० नं० १९	. ४) देवगात म ३-३-१-१ के भंग	१ भग को० नं० १६ देखो	र लख्या को० न० १९
	नं० १६ देखो	, ~	•	को० नं० १६ देखो	•	देख <u>ो</u>
१६ भव्यत्व २		ı	१ अवस्था स्रेट से १६ भ	त्र सम्बर्भ में स्पेक्ष में	१ भग को० कं० १६ से १६	१ अनस्या को० नं० १६
भव्य, श्रमव्य	वारा गतिया में हरके में २-१ के भंग को० मं० १६	काठ नठ ५६ स १६ देखो				,
	से १६ देखो		,	१६ से १९ देखो	1	9 HTHREST
१७ सम्यक्त		Ë.	१ सम्पन्त्व न्रेट न्		सार भग	कोठ नं ० १६
की० न० १६ दखा		بور م	मार न १६	7/#	-	
	कोठ नं० १६ देखो		;		,	,
	(२) तियँच गति में	. भंग	१ सम्यक्त	१६ देखो	·. c	ESERTATE O
	8-8-8-8-8-8-8-8 ** **** **** *** ***	कां न० १७ द्वा	भार न १७ श्वो	भंग	को० नं० १७ देखो	को०मं, १७
	मुख्यें सार्वा सार्वा पर			•	•	देखो
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ सम्पक्त		सारे भंग	
	8-8-8-8-8-8-8	को० नं० १८ देखो	मों नं १८ नेतो	१-१-१-१-१ के	का० न० १५ दबा	का० न० रद देखो
	देखी कार पर ६५	,	· ·			
	ति मः	सारे भंग	१ सम्यक्त	ाति में	H.	
	8-१-१-१-३-२ के भंग को० मं० २६ लेखो	को० न० १९ देखो	मों नं १६ हेबो	१-१-३ के भंग को० नं० १६ देखो	का० न० १६ दबा	का० न <b>०</b> १६ देखो
				4		

षायों में	n	१ मवस्या -को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो	, को०नं० १६ मौर १६ देखो	१ जनस्था	को०नं० १७–१द देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०न० १७ देखो	· ·
अप्रत्याख्यान ४ कषायो	9	१ भंग को० नं० १६–१५– १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ कोर्टनं० १६ ग्रीर १६ देखो	عا تا: م	क्षो० मं	१ भंग क्रो० नं० १६ हेखो	१ मंग को० नं० १७ देखो	
<b>À</b>	יעט	२ (१) नरक-मनुष्य-देव गति हरेक में १ संशो जानना	को०नं० १६-१८१६ देखो (२) तियंच गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	२ नरक-हेव गतियों में हरेक में १-१ के भंग	कोठ नंठ १६ स्रीर १६ देखो निर्मात्त भीर मनस्य गतियों	तिवन अरिमगुष्य गापन में हरेक में १-१-१- के भग	का० न० (७-१८ दख। द कुग्रविध ज्ञान घटाकर (८)		३-४-४-३-४-४-४-६ के भंग को० नं० १७ देखों
्र १	*	१ भंग ० नं० १६-१५-भो०नं० १६-१५- १६ देखो	१ प्रवस्था को०नं० १७ देखो	१ को०नं० १६ ग्रौर १६ देखो	को०न० १७-१म 'देखो		१′उपयोग को०नं० १६ देखो	१ डपयोग को०नं० १७ देखो	१ उपयोग देखोकोऽनं० १८ देखो
कोष्टक नं	<b>&gt;</b>	१ भंग को० नं० १६–१⊂– १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं०१६ श्रौर १६ देखो	को० नं० १७-१८ देखो	-	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ यंग को० नं० १७ देखो	मारे भंग को० नं० १८ देखो
दर्शन	m	ाति में	को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गरित में १-१-१-१ के मंग को० नं० १७ देखो	हरेक में 1 8 के हेन्से	नारन १६ आ१ १८ ५ था। तिर्मन थौर मनुष्य गति में को० हरेक में	११ क भग को नं० ७-१८ देखो	ह (१) नरक गति में ५०.९ से संग	कोठ नंठ १६ देखो (२) तिर्यंच मित में ३-४-५-६-१६-६ के भंगको० कोठ नंठ १७ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-६-६-४-६-६ के भंग को० नं८ १८ देखो
चीतीस स्यान दर्शन	\$	१ द संग्री संग्री, प्रसंग्री		१६ माहारक माहारक, मनाहारक			२० उपयोग क्षेण नं० १६ देखो		

36.

र्वोतीर	चौतीस स्थान दर्शन	( <sup>3</sup> कोष्टक	३७० ) मं <b>०</b> ५२ .	Ē		# * *
•				<b>5</b>	मत्रताल्याच ६ क	
·	mr	>	* 	U9°	<b>9</b>	៤
	(४) देवगति में ५–६–६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-६-४-६ के भंग को० नं० १८ टेखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ डपयोग को०नं० १८ देखो
११ ध्यान			ار	(४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो
यान ४, गान ४,	१९) नरक-तियँच-मनुष्य- देवगति में हरेक गति में	सार भग को० नं० १६ से १६ देखो	१ घ्यान को० नं० १६ से १६ देखो	ह अपाय विचय धर्में:ध्यान १ घटाकर (६)	 सो० नं० १६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो
आशा विषय १, अगय विषय १ ये (१०)	द-६-१० केंग्रेमंग् को० नं० १६ से १६ के समान जानना			(१) नरक गति में === ६ के भंग		
				को॰ नं॰ १६ देखो (२) तिर्यंच गति में	१ भंग	१ ध्यान
				द-द-६ के भंग को० नं० १७ हेखो	मों० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो
						१ ध्यान
				नं० १ द देखो	का० न० १८ देखो	को०नं० १5 देखो
	•				सारे भंग क्रो०नं० १६ भेक्नो	१ ध्यान स्रोत्स् १९ स्मान
२२ मालव ५२	~ ~	.ļ. 1		देखो		कार्य र १६ ६६।
मिथ्यात्व ४, अविरत १२, योग १३	म्री० मिश्रकाययोग १,	1 × 1 × 1	१ भग	४२ मनोयोग ४, वचनयोग ४	सारे भंग	१ भंग
कपाय २२, ये ५२ मासव जानना	वर्ग मध्य काययोग १, कामिष्णि काययोग १			मों काययोग १, वै काययोग १.		
		सारे भंग को० नं० १६ टेन्नो	१ भंग सन्दर्भ	४२)		१ मंग्
	को० नं० १६ के ४६-		1 by 5 5 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5	रह-डे० क भग को० नं० १६ के ४२-	को० नं० १६ देखो बि	कोठनंठ १७ देखो
			-			

.

	चौतीर	चौंतीस स्थान दर्शन	रशन	कोष्टक नं०	となっ	裓	अप्रत्याख्यान ४ कषाया	शाया म	
~		٤	, m²	>>	አ	w	9 ·	v	,
		,	४४-४० के हरेक मंग में			३३ के हरेक भंग में से		· · ·	
	,	-	क्यान न			पय्तिवत् अप्रत्याच्यान			
			$\sim$			क्षाय ३ घटाकर ३६-३०		*	
			उसको छोड़कर गैप ३			के भंग जानना		,	
			क्याय घटाकर ४६-४१-			(२) तियंच गति में		्र भंग	
•			३७ के मंग जानना	,		३४-३४-३६-१७-४०-४१-मि नं	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो	-
			(२) तियंच गति में	H	१ मंग	-36-36-36-36-36-36-	,	>/** •	
•			व न- वर- वर- वर- वर- वर- १	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो	४०-३५-३० के मंग कोठनंठ		,	
			४३-३६-४७-४२-३८ के मंग			-६८-०८-३६- <b>५</b> ६-९०-८३-		,	
			को० मं० १७ के ३६-३८-			- जर्ने अंत-इंश्वर्म इंत-			
		-	-とス-3ス-23-86-スピースと			३६-४३-३८-३३ के हरेक			
			५०-४५-४१ के हिरेक मंग में			भंग में से पर्यापवत् ग्रप्र-	الم	-	
			से ऊपर के समान अप्रत्या-			त्याख्यान कपाय ३ घटा-		, .	
			क्यान कपाय ३ घटाकर			-0久-9年-3年-大主-大车 土地			
,			-52-02-08-36-86-86			-78-58-0-36-32-37-			
			४३-३६-४७-४२-३८ के मंग			३६-४०-३५-३० के भंग		•	
			जानना			जानना			,
				सारे	१ भंग	(३) मनूष्य गति में	मारे मंग	१ मंग	
			-80-84-3c	को० नं० १८ देखो	कोठनं० १८ देखी	08-78-08-08-38-38	को० नं० १८ देखो	क्तिवनं १८ देखी	
			के मंग को० नं०. १ न के			के भंग को० नं० १० के		,	
			18-18-08-28-38-68			\$ &-== e-= e-= e-= e-= e-= e-= e			
			या हरक भग म स उपर क			के हरक भग में से प्यांति-			
		•	समान यप्रत्याख्यान क्वाय			वत् अप्रत्यान्यान कपाय			
			३ मराकर '४८-४३-३६-	•		३ घटाकर ४१-३६-३०-			
			४७-४२-३८ के भंग जामना			४०-३४-३० के भंग			. •
			(४) देवगति में	मारे मंग	१ मंग	जानना		***************************************	
				क्तों नं १६ देखो	मोठनं० १६ देखी	(४) देव गति में	सारे भंग	* <del>*</del> <del>*</del> <del>*</del> <del>*</del> <del>*</del> *	
		,	उक के मंग कों नं १६		`	80-3% 40-36-38-30-	नो० नं० १६ देखो	मोठनं १६ देखो	
			क ४०-४४-४६-४६-४१-			३० के भंग को० नं० १६		,	,
			४०-४० क भगम सं अपर						•

妆		ß	<i></i>	१ भंग कोब्नं० १६ देखो		को०नं०१७ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ मंग को०नं० १६ देखो	-
अश्वस्याख्यास 🗙 कषाग्री	0	9	,	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग	को० न० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो   	
	)rx	· ·	के ४३–३८–३३–४२– ३७–३३– ३ के हरेक मंग में से पर्या यत् अप्र- त्यास्यान कषाय ३ घटा- कर ४०–३ –३०–३६– ४४–३०–३ के भंग	जानन। ४३ कुम्रवधि शास घटाकर	त में ते में	-22-	(३) मनुष्य गति में ३०–२५–३०–२४–२२– २५ के भंग को० नं० १८ हेस्बो	र रहे स	
ch (		<b>a</b>		१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	<b>०</b> भंग	को०नं० १८ देखो १ भंग	को०नं० १६ देखो	
हेंग्डर ) स्ट्रायस	مارادها با	>		सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० न० १७ देखो	सारे भग	को० नं० १८ देखो सारे भंग	को० नं० १६ देखो	
	ંતા	m	के समान अप्रत्याख्यान कपाय ३ घटाकर ४७- ४२-३६-४१-३७- ३७ के भंग जानना	४१ (१) नरकगति में	५-२८- ६ देखो में ७-३१-	३०–३२–२७–२५–२६– २६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	३१–२६–३०–३३–२७– २५–२६२६ के भग को० नं० १५ देखी (४) देवगति में	२५-२३-२४-२६-२७- २५-२६-२६-२४-२२- २३-२६-२ के मंग को० नं० १६ देखो	
चौतीस स्थान स्प्रीन	مردادا دهاما ق	2			······································	ामच्या दशन १, असथम १, ब्रज्ञान १, मसिद्धत्व १, पारिस्पामिक भाव ३ ये (४१)			

वंप प्रज्ञतियाँ – ११७, १ते मुएए में ११७, ३२ मुएए में ७४, ४थे मुएए में ७७ जानना प्रवगाहना—को० नं० १६ से ३४ देखो।

नवय प्रज्ञतियां—१ने मुएए में ११७, २रे मुएए में १११, ३रे मुएए में १००, ४थे मुएए में १०४ जानना । तत्व प्रकृतियां—१४५–१४५–१४७–१४६ प्र० का सत्ता क्रम से को० नं० १ से ४ समान जानना ।

देशोन अर्बपुट्नाल परावर्तन काल तक अप्रत्यास्यान कपाय नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मे हुत तक (एक कपाय की अपेक्षा) जानना ।

भ्रत्तर—नाना जीवों की श्रपेक्षा कोई श्रन्तर नहीं, एक जीव की भ्रपेक्षा भ्रन्तमुहूर्त से

जाति (योनि)—-२६ लाख योनि जानना । जिगत को० नं० २६ देखी कुल---१०=।। लाख कोटिकुल जानना । विगत को० नं० २६ देखो ।

ध्पर्यत—लोक का असंख्यातथां भाग, द राजु को० नं०२६ के समान जानना ।

क्षेत्र--लोक का असंख्यातवां भाग, तसनाड़ी प्रमास्।

संस्था—ग्रसंस्थात जानना ।

	४ कथाय। म		१ जीव के एक समय में		श्रयमे	्रत्यान के सार मुख्य के कोई १ मुख्		१ समास को० नं० १ ६- १८-१ <b>६</b> देखो	<b>१</b> समास को० नं० १७	दल। १ मंग को० नं० १६- १८-१६ देखो
	ग्रंचाल्यान		१ जीव के नाना       समय में	9	सारे गुरा० प्रपने प्रपने स्थात के सारे समा	स्यार अर्थे अपनेपा		१ समास को० नं० १६-१ <i>द-</i> १६ देखो	१ समास को नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १६-१ <b>द-</b> १६ देखो
		भपयोदा	नाना जीवों की श्रपेक्षा	us	३ (१) नरक गति में १ले ४थे गुरा०	(२) तियंच गति में १-२ गुरा० भोगभूमि में १-२-४ गुरा० १३	(४) मनुष्य गात म १–२–४ गुरा (४) देवगति में	'	को० नं० १६-१६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक
ं४ <b>)</b> न् ० ५३			एक जीव के एक समय में	<i>&gt;</i> 4	HV	<u>म</u> ुस्त ०		१ समास को० नं० १६- १६-१६ देखो	ודי חטי	१ भंग को० न० १६- १द-१६ देखो
( ३७४ कोष्टक नं०			एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	>	सारे गुरा स्थान भ्रपने भ्रपने स्थान के सारे गुरा०	जानना		१ समास को० नं० १६-१प्त- १६ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो	१ भग भो० नं० १६-१=- १६ देखो
दर्शन	। पर्याप्त		नाना जीवों की श्रपेक्षा 	rr-	प १ से ५ तक के गुरा जानना (१) ननक नेन्नि	(१) गर्भ-द्वगात म १ से ४ गुण० (२) तियँच-मनुष्य गति में १ से ५ गुण् भोगभूमि में १ से ४ गुण्		७ पर्याप्त प्रवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संगी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१ ६	देखो (२) तियंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में
चौतीस स्थान दर्शन	स्थान सामान्य श्रालाप	-		or .	१ गुरा स्थान १ से ४ गुरा, स्थान			र जाब समास १४ मो• न०१ देखो	३ पर्याप्ति इ	ं नं० १ देखो
	₩• स्याः			~	* 34		4	<u>।</u> इ	३ पर्याप्ति	前

		x 0 }				
चातास स्थान दशन	दशन	काष्ट्रक न०	न० ५३	·	प्रत्याख्यान ४	४ कषायो म
٠ - ١	•••	<b>&gt;</b>	*	υ <b>ν</b> ΄	g	រ
	इ का मंग-को० नं० १६-	arra u		३ का भंग को० नं० १६-		
	१६-१६ दल। (२) तियैच गति में	१ भंग	१ भंग	१८-१६ दल। (२) तियैच गति में	१ भंग	म् भ
-	६-५-४-६ के मंग क्रो॰ मं० ३७ सेबो		को० नं० १७ भूत	३-३ के भंग को मं १० टेखो	को० नं० १७ देखो	कों० न० १७
४ प्रास्त	0%	१ भंग	१ भग	9	१ भंग	द्ध। १ मंग
कों नं १ देखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१द- ११ हेखो	को० नं० १६- १८-१६ हेखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में दरेक में	तो० नं० १६-१द- १८ हेन्सो	को० नं० १६-
	१० का भंग को० नं०			७ का भंग को० नं० १६-		१५-१८ वर्ख
	१६-१८-१६ देखो (२) तियैच गति में	9 <b>પ્ર</b> ા	% अंग	्१८-१६ देखी (२) तिग्रैच गति में	, <del>,</del>	. ļ
	4£	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७	. 4 <del>c</del>	र मग को० नं० १७ देखो	्रभग को० नं० १७
	भंग को० नं० १७ देखो		देखो	भंग को० नं० १७ हेस्बो		
५ संज्ञा ४	>	१ भंग	१ भंग	>	१ भंग	१ भंग
को० नं० १ देखो	(१) चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग-को० नं० १६	को० नं० १६ से १९ नेखो	को० नं ० १६ मे १० हेखो	चारों गतियों में हरेक में हि ४ का धंग-को० नं० १६	१६ से १९	को० न० १६ से
	से १६ देखी				- - - -	१६ दखा
६ मान को० नं० १ देखो	४ मार्गे गवि जानम	~ ~ ~	~ i	۶ ,	ر م	~
•	को० नं० १६ से १६ देखो	مور م	मार्थ न १५ से १६ देखो	को० नं० १६ से १६ देखो	का० न० १६ स १९ देखो	काठन० १६ स १६ टेबो
७ इन्द्रिय जाति ५		१ जाति	१ जाति	× ×	१ जाति	े जाति
क्तां न० ९ दल।	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में	को० नं० १६-१द-	कोठ न० १६-	(१) नरक-मनुष्य-देवगति को० नं० १६-१	को० नं० १६-१ द-	को० नं० १६-
	हरक म १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१६ दखा	१द-१६ दखा	म हरक म १ पंचेन्द्रिय जाति जानन-	१६ देखा	१८-११ देखो
,	को० नं० १६-१८-१६देखो	,	ı	को नं० १६-१८-१६ देखो		
	ų. o	१ जाति को० मं० १७ हेखो	१ जाति क्रो० मं० १७	(२) तियँच गति में ४-२ के भंग को वें	१ जाति सोठ मंठ १७ सेसो	१ मंग स्रोध्यान
	-		सेंबों	खो		नार नुरु १७ देखो
_						

नि ४ कषायों में	ี น	काय १६-१८- को० न० १६- ति	काय १७ देखो	देखा भंग १ योग	० १६-१८- १८-१६ देखो	भंग १७ देखो   को० नं० १७   देखो	भंग १६ देखो को० नं० १६ देखो	भंग ? वेद १७ देखो को० नं० १७ ३म्मे	भग १ वेद १५ देखो को० नं० १८   देखो
प्रत्यांख्यान		-देवगति को० नं० १६ देखो	ना . ६ देखो	र्खा योग १, योग १,	-देवगति को० नं० १६ देखो ० मं०	•	मं मं	भंग को नं	सारे को <b>ः</b> नं
		(१) नरक म में हरे	< यसकाय जानना को० न० १६-१८- (२) तिर्यंच गति मे ६-४-१ के भग	কাত নত ংড ব্রো ই ফ্রীত দিপ্রকাযে থান বৈত দিপ্রকায় যানা		१८-१६ ह तियान र के मंग	मीत को	म मित -३-२-१ १७ हेर	고 왕 H ·
<sup>द</sup> ) न <b>ं</b> ० ५३	, .×	१ काय - को० नं० १६- १८-१६ देखो	१ काय को० नं० १७	द्ख। १ योग	- को० नं० १६- १५-१६ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो	१ वेद   को० नं १ १६   देखो	१ वेद को नं०१७ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
( ३७६ कोष्टक न	· >>	१ काय को० नं० १६-१ <i>द</i> - १६ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ भंग	को० नं ० १६-१८- १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं०१६ देखो	सारे भंग को० न ०१७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो
चोंतीस स्थान दर्शन	m	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	र क्षमान आक्षा को॰ नं॰ १६-१६-१६ देखो (२) तियैच गति में ६-१-१ के भंग क्षोत में १७०३ होसो	भार गुरु दुला १० झौ० मिश्रकाय योग १, वे० मिश्रकाय योग १,	कामोणकाय योग १, ये ३ घटाकर (१०) (१) नरफ-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-	१८-१९ देखो (२) तियँच गति भे १-२-१-६ के भंग को० नं० १७ देखो	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो	(२) तियँच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं०१७ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-३-२ के भंग को० न० १८ देखो
चौंतीस	e	न काय को० नं० <sub>्</sub> १ देखो		६ योग को० नं० ५१ देखो			१० वद को० नं० १ देखो		

कषायों में	ឋ	बेद देखों से मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ संग १ सं १ संग १ संग १ संग १ संग १ संग १ संग १ संग १ संग १ संग १
प्रन्यास्यान ४ कषायों मे	.ඉ	, सारे मंग सारे मंग को० नं० १६ देखो को० नं० १७ देखो सारे मंग को० नं० १८ देखो
	US	(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १६ देखी २२ १२ ११) नरक गति में को० नं० १६ के भंग को० नं० १६ के भंग कपाय ३ घराकर २०- १६ के भंग जानमा (२) तियंच गति में २०-२०-२२-२२-२२-२२-२२-२१-१६ के भंग को० नं० १७ के २५-२३-२५-२२-२१-१६ के भंग वानमा आनग गति में २२-१६ २१-१६ के भंग जानमा ३ भग में से प्यतिवत् प्रताह्यान कपाय ३ घटाकर २२-२२-२२-२२-२२-२२-२२-२२-२२-२२-२२-२२-२२-
३७७ ) क नं० ५३	న	१ वेद १ मंग १ मंग १ मंग दखो दखो देखो नं० १८
( ३) कोष्टक	>	सारे भंग मारे मंग को० नं० १६ देख कारे भंग को० नं० १६ देख कारे भंग को० नं० १६ देख
दर्शन	m.	(४) देवगति मं २-१-१ के भंग को० नं० १६ देवो १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२ १२
चौतीस स्थान दर्शन	~	११ कपात प्रतसानुबंधी कपाय ४, प्रप्राक्ष्यान कपाय ४, प्रत्याक्ष्यान कपाय जिस का विचार करो प्रो १ कपाय, संज्यला कपाय ४, हास्यादि नव गो कपाय ६, ये २२ कपाय जानता

कषायों में	ប	मंग को॰नं ० १६ देखो	१ भाव	क्तो ०नं ० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	१ ज्ञान कोठमं० १८ देखो १ जन्म	हो को०नं० १६ देखो १६ को० नं० १६ से १६ देखो
प्रत्याख्यान ४	9	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग	को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग कोऽ नंऽ १८ देखो मारे भंग	1 w w .
	w	(४) देवगति में २१-२१-१६-२०-१६म १६ के भंग को० नं० १९ के २४- २४-१६-२३-१६-१६ के हरेक भंग में से पयिति- वत् प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २१-२१-१६-२०- १६-१६ के भंग जानना	५ कुप्रविष जान घटाकर (४)	(१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं॰ १६ देखों	(२) तियंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १ द देखो (४) देवगति में	ग खो हरेक में ना १६ देखो
३७न ) तमें० ५३	<b>5</b> %	१ भंग कोठनं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखी	१ ज्ञान को०र्नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०मं० १६ देखा	१ संयम को० नं० १६ १६ देखो
( ३१ कोष्टक	>>	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो
चौतीस स्थान दशेन	ET.	(४) देव गति में २१-१७-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १९ के २४- २०-२३-१६-१६ के हरेक भंगों में से ऊपर के समान प्रत्याख्यान कवाय ३ घटा- कर २१-१७-२०-१६-१६ के भंग जानना		को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में २-३-३-३-३ के मंग		<b>⊢</b> ,⊷	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना की० न० १६–१६ देखो
चौंतीस	ક		ी ६ ० ४२ देखो				संयम श्रसंयम, संयमासंयम थे (२)
	~		शान को० नं० ५२				३ संयम मसंयम, २ ये (२)

m

४ कषायों में	៤		काठन० १६ दल।
प्रत्याख्यान ४ क	9	<ul> <li>१ भंग</li> <li>१ भंग</li> <li>१ भंग</li> <li>१७ देखो</li> <li>भंग</li> <li>१० देखो</li> <li>भंग</li> <li>१ भंग</li> </ul>	का० न० १६ दत्ता
	سون	(१) नरक गति में     २-३ के भंग     को० नं० १६ देखो     (२) तिर्यंच गति में     १-२-२-२-३ के भंग     को० नं० १६ देखो     (४) वेवगति में     २-३-२-३ के भंग     को० नं० १६ देखो     (१) नरक गति में     ३ का भंग को० नं० १६ देखो     (१) नरक गति में     ३ का भंग को० नं० १६ देखो     (१) नरक गति में     ३-२-३-३ के भंग     को नं० १६ देखो     (१) नरक गति में     ३-६ के भंग     ३-१ के भंग     ३-१ के भंग     वो० नं० १८ देखो	३-३-१- कभग को० नं० १६ देखो
नम्बर् ४३	×		कार्जन १६ दला
कोष्टक मग	>>	. य में से मंदर में व	मा० न १६ दला
दर्गन	m· ·	मूं च	१-३-१-१ क भग को० नं० १६ देखो
चौंतीस स्थान दर्शन	8	नि गे० नं० १६ देखी पा को० नं० १ देखी	
मी	~	१४ व्यंत को० नं १५ लेक्या को० नं	

	चौंतीस	चौंतीस स्थान दर्शन	( ३५० कोष्टक नं	नः ) नं ० ५३		प्रत्यास्यान ४ कषायों	ग्रायों में
~	8	m	>>	24	υ <del>ν</del>	໑	Մ 
१६ भव्यत्व	or	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १६ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १६ देखो	२ चारों गतियों में हरे हें २-१ के मंग को० नं० १६ से १६	१ भग को० नं० १६ से १६ देखो	१ अवस्था से १६ को०नं० १६ से १६ देखो
<b>१</b> ७ सम्यवत्व को० नं० १६	१६ देखो -	६ (१) नरक गति में	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मम्यक्त्व को मं० १६ देखो	प्ला ५ मिश्र घटाकर (१)	सारे भंग	१ सम्यक्त्व
,		१-१-१-३-२ के मंग को० नं० १६ देखो तियंच गति में १-१-१-३-१-३ के	१ भंग भंगको० नं० १७ देखो	१ सम्पक्त क्रोन्न १७ जेसी	(१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो		को ०न ० १६ देखो
		को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-१-१-३ के भंग	मारे मं		(१) (तयच गांत म १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	१ भग नं० १७ देखो सारे भंग	१ सम्यक्त्व  मो०नं० १७ देखो   १ सम्यक्त्व
		4	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्ष्व को०नं	१-१-२ १-१-२ के मंग को० नं० १८ देखी (४) देवगति में १-१-३ के मंग	को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
<b>१</b> ८ संज्ञी संजी,	र संजी, मसंजी	२ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ संशी जातना को० नं० १६–१६–१६	१ भंग को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ अवस्या कोठनं० १६-१८-। १६ देखो	<ul> <li>१ अवस्था</li> <li>२</li> <li>१००० १६-१८-(१) नरक-मनुष्य-देवगति मे १६ देखो</li> <li>१६ देखो</li> <li>१६ संशी जानना</li> </ul>	१ भंग को०नं० १६-१८- १२ देखो	१ झवस्या को०नं० १६-१६- १६ देखो
•		देखी (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के मंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नंग १७ देखो	१ अवस्या को०नं० १७ देखो	कां। नव १६–१५–१६ देखे (२) तिर्मंच गति में १-१-१-१-१ के भंग कों० नं. १७ देखो	१ भंग को० नं १७ देखो	१ मनस्या कोठनं० १७ देखो

बायों मे	r	१ सास्या को०नं० १९ से १६ देखो	१ उयोग	मोठनंट १६ देवो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	१ उपयोग कोण्नं० १६ देखो	१ ध्यान	मोठनं० १६-१६ देखो
प्रत्याख्यान ४ कषायों	<b>9</b>	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग	को० नंऽ १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को ः नं० १६ देखो	सारे भंग	को० नं० १६-१६ देखो
	us	२ चारों गतियों में हरेक मेंको० मंगों का विवरसा को० नं० ५२ के समान	जानना द कुग्रयक्षि झाम घटाकर (=)	`	٦٠ ا	का० न० १७ दला (३) मनुष्य गति में ४-६-४-६ के संग को० नं० १ द देखो	( · ) देवगति में ४-४-६-९ के भंग को नं० १६ देखो	ह अपाय विचय विषाक विचय ये २ घटाकर (६)	(१) नरक गति–देवगति में हरेक में ८-६ के भंग को०नं० १६-१६ देखो
३८१ । नं० ५३	*	१ मो०नं० १६ से १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	१ डपयोग क्रो०नं० १७ देखो		ि । ० न ० १ ८ दखा १ उपयोग को ० नं० १९ देखो		१ घ्यान को० नं० १६- १ १६ देखो	१ व्यान कोऽनं० १७ देखो
, कोस्टक	>>	१ को० नं० १६ से १६ देखें।	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग न	न० १८ दला १ भंग नं० १६ देखो		सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ मंग को० नं० १७ देखो
चोंतीस स्थान दर्शन	m	१ चारों गतियों में हरेक में भंगों का विवस्स कोल नं० ५२ के समान	जानना ९ (१) नरक गति में ″∽∈≘ के भंग	को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में ३-४-५-६ ६-१-६-६	देखो	४-६-६-४-६- क भग का० को० न० १ द देखो (४) देवगति में ४-६-६ के भंग को०	को० नं० १६ देखो	११ (१) नरकगति-देयगति में हरेक में	द-६-१० के भंग कोब्नं० १६-१६ देखो (३) तिर्यंच गति मं द-१०-११-द-१० कोठ नं० १७ देखो
चींतीस	ρ 	१६ ग्राहारक भाह रक, प्रनाहारक	२० उपयोग को० न० १६ देखो					२१ ब्यान मातं ध्यान ४, रीद्र ध्यान ४,	त्तांश चिन्त, ज्ञाय (त्रांश चिन्त, ज्ञाय विन्त्र, विवाक चिन्य) वे ११ व्यान जानम

चौंतीस स्थान दश्नेन	दशन	( १५२ कोष्टक नं०	& & O		प्रत्याख्यान ४ कषायों में	कषायों में
er	m'	>>	<b>ઝ</b>		9	្រ.
	(३) मनुष्य गति में ८-१०-११-८-१० को० नं० १८ देखो के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ देखो	चा' o	१ भंग को० नं० १७ देखो	
२२ घासव ५२ पिथ्यात्व ४, म्रविरत १२,	ह श्री० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १	सारे भंग	१ भंग	त म भंग को० नयोग ४,	सार भग को० नं० १८ देखो सारे भंग	९ ध्यान को० नं० १६ देखी १ भंग
योग १३, कपाय २२ ये ५२ जानना	कार्मासम्बद्धा थीम १ ये ३ घटाकर (४६) (१) नरक गति में ४६-४१-३७ के भंग को० नं० १६ के ४६-४४-४०- के हरेक भंग में से प्रत्या-	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो		को० नं ० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
	स्यान कपाय जिसका विचार करो उसको छोड़ कर शेष ३ कपाय घटाकर ४६ ४१-३७ के भग			हरक भग में से पयोप्त- बत् प्रत्याख्यान कवाय ३ घटाकर ३६-३० के भंग जानन		j
	जानना (२) तियम्ब गति में ३३-१४-३६-३७-४०-४८ ४३-३६-३४-४७-४२-३८ के भंग-को० नं० १७ के	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को <b>०</b> नं० १७ देखो	(२) तियंच गति में ३४-३५-३६-३७-४०-४१-को० मं० २६-३०-३१-३२-३६ ४०-३५-३० के भंग	भंग १७ देखो	१ भंग को० नं १७ देखो
	२५-३६-४६-४०-४३-४१- ४६-४२-३७-४०-४५-४१ के हरेक मृंग में से ऊपर के समान प्रयाख्यान कपाय ३ घटाकर ३३-३५-			को० नं० १७ के ३७- ३८-३६-४०-४३-४४-३२- ३३-१४-३५.३८-३१- ३६-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान		· ·

चींतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	પ્રસ	찬	प्रत्याख्यान ४ कषायाँ	त्या म
~	R*	>	pł .	us <sup>r</sup>	Ð	r
	-३६-३७-४०-४द-४३-३६- ३४-४७-४२-३द के मंग	<b>V</b>	-	क्पाय ३ घटाकर ३४- ३५-३६-३७-४०-४१-१६-		,
	(३) मनुष्य गति ४८-४३-३६-३४-४७-४२-	सारे भंग को० नं० १८ देखो	। १ भंग को०नं०१८ देखो	३५-३० के भंग जानना (३) मनुष्य गति में	सारे भंग	्र मंग (मोर्ड्ड अर शेस्
	इद क मर्ग काठ नठ ९५ के ५१-४६-४२-३७-५०- ४५-४१ के हरेक मंग में से			. ८ - २ ६ - २ - २ - २ - २ - २ - २ - २ - २ -	5 2 5	
	क्रमाय ३ घटाकर ४६-४३- ३६-३४-४७-४२-३६ के मंग			बद् प्रत्याख्यान कवाय ३ घटाकर ४१-३६-३०- ४०-३५-६० के मंग		
	(४) देवगति में ४७-४२-३८-४६-४१-३७- ३७ के मंग को० नं० १६ के ५०-४५-४१-४६-४४-	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को०नं० १६ देखो		सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं १६९६ देखो
	ऊपर के समान प्रत्याख्यान कपाय ३ घटाकर ४७-४२- ३८-४६-४१-३७-३७ के भंग			तिवत् टि.क ३४-		
भाव उपशाम-भाषिक स० २, स्वास ३ मात्र ३	४२ (१) नरक गति में २६-२४-२४-२७ के मंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को०नं० १ ६देखो	४१ कुन्नवधि ज्ञान घटाकर (४१)	सारे भंग	१ भंग
अनाग २, नाग २, दर्शन ३, लिल ४, वेदक सम्यवत्व १, गति ४, कपाय ४, लिग ३, तेदया ६, मिथ्या	को० न० १६ देखो (२) तियंच गति में २४-२५-२७-३१-२६-३०-३	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(१) नरकगति में २५-२७ के भंग को० नं० १६ देखो	को <b>० नं</b> ० १६ देखो	को०नं० १६ देखो

7 7 1 1 2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	<b>→</b> [		सारभग को०नं०१७देखो   को०नं०१७   देखो	भग	देखो को देखो देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो   को० नं० १६	वेखो .			उपशम सम्पन्दन की अपेक्षा जानमा ।		मिंजा सकता है। इस	सिर्मानमा	। काल तक संयमासंयम्	
× ×	*	५ सम्बद्धाः	२४-२५-२७२०२२- २३२४-२४-२४२२- २२२५ के मंग को०	देखी १० १८ । न० १७ देखो देखी	१ भंग   २५ के भंग को० नं० को० नं० १६   १८ देखो	(४) देवगति में २६-२४-२६-२४-२=	रर-४९-२६-२६ के भंग को० नं० १६ देखो	१वे गुरा० में ६७ प्र० वंध जानना।	ं न७ प्र० का उद्	रप गुर्था० में १४७ प्र० का सत्व उपशाम सम्प्रा ।		ं। 3८ रवान वाला जात्र मर कर १६वे स्वनं में	यन्तमु हुत त	IV.	•
नौतीस स्थान दर्शन कोष्टक नं	)o	यम १, २७-२५-२६-२६ , शहात १, ३ भंग -	पारिस्ताः देखो ये ४० (३) मनुष्य गति में सारे भंग ३१-२६-३०-३३-३० को० नं० १८ झ्लो	(६-२६ के भंग द देखो	(४) दव गांत में २४-२३-२४-२६-२७- को० न० १६ देखो २४-२६-२६-२४-२२-		प्रविकाः हुना — को० नं० १६ से ३४ हेन्नो ।	भें को० नं० १ इ भू के	१स४क्समान जानना । स४केसमान जानना ५३	भी प्रपेक्षा जानना	स्पगंत—तोक का थर्मल्यातयां भाग ६ राजु जानना । प्रयोग—तोक का थर्मल्यातयां भाग ६ राजु जानना । मध्य लोक का पांचवे गाम स्लगन	दाल—नामा जीशे की स्रोत्या सर्गात	की अपेक्षा एक एक जीव की		फूल — १६६॥ मास्य स्टेट्ट
-	~	दर्शन १, संयमासंयग	प्रसिद्धत्व १, पारिस् मिक भाव ३ ये ४० भाष जानना			ı		२४ २६ ध्र	२७ सा	रूट २९ क्षु	३, स्प	38 4:1	स्	वेत्र जा	35

फुल—१६६॥ लाख कोटिकुल जानना ।

		)	संउवलन कोघ, पान	कोघ, पान, माया कषायों मं	h \
न्रोतोस स्थान द	दर्शन			अपयिष	
मृत्र्यान मामान्य ग्रालाप	वयसि ः		~	 	एक जीव के म्ह ममय में
0.00	मामा जीव भी था		नाना जीवों की योखा	समय म	
		>	موں ر	9	n
c ~	Tr.			तरे गया स्थान	१ मुसा०
१ गमा स्थान ६	——; H	~	=	अपने अपने स्थान के अपने अपने स्थान माने गाग स्थान के सारे गुरा स्थान	न सारे गुरा स्थान
१ से ध्वें गुरा० के	हब गुरा० मान्न जानना		(१) नाक गति भ १ने ४थे गुरा स्थान		में से कोई १ गुरा० जानना
<u>.</u>	(१) नरक गति में		२) तियंच गति म अस् असे मीर		,
	(२) तियंच गति में		भीग भूमि की अपेक्षा		
	१ से ४ मुख् (३) भोग भूभि में		१-२-४ मुसा <b>॰</b> (३) मनुष्य गति में	,	
	१ से ४ मुस्स (×) मनब्द्य गति में		१-२-४-६ मुरा॰ (४) भोग भीम में	ì	ra
	1000年	_	१ २-४ मुसा० (१) नेनम्मि में		A
	(से ४ मुन्		१-२-४ मुस्		• ;
	(६) देवगति मे		ं सप्यस्ति स्वस्या	१ समास	
२ जीव समास १४		१ समास को० नं० १६-१ द- को०नं० १६-१ द-	(१) नग्क-मनुष्य-देवगति	कोठनं० १६-१प- १६ देखो	कार्यन १५-१. १९ देखो
मो० न० १ देखो	(१) नरक-मनुष्य-दव झरेक में	१६ देखो १६ देखो	में हर्क म १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपयित		
	१ संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	-	ग्रवस्था जानना		
	क्षोठनं० १६-१८-१६ देखी	9 समान		१ समास क्लो० न० १७ देखो	१ समाप्त को०नं० १७ देखो
	(१) तियन गांत म ७-१-१ के मंग	नो० नं० १७ देखो को अनं० १७ देखो	ो ७ ६-१ क भग को० नं ० १७ देखो		
	नो० नं० १७ देखो			<del>.</del>	

न्षायों में	ប	१ भंग न-को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १-कोत्नं०१६-१८-	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग -को०नं० १६-'७- १६ देखो	१ भग को०नं० १८ देखो १ को०नं० १६ से १६ देखो
मान, माया, कषायों	9	१ नंग को० नं० १६–१८– १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो <sup>ह</sup> १ भंग को० नं० १६—१८- <sup>ह</sup> १. देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १६–१७– <sup>ह</sup>	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ को० नं० १६ से १६ देखो
संज्वलन कोध	U3°		को०नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो ७ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक मे	को०नं० १६-१८-१६देखो १ १ (२) तिर्यंच गति में १ ७-७-६-५-४-४-३-७ को० नं० के भंग को० नं० १७ देखो १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ ६ देश ४ का भंग	को० नं० १६-१७-१६ देखो (२) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो * चारों गति जानना को० नं० १६ से १६ देखो
, y , y , o	* -	१ भंग -को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो, १ भंग को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ भंग हो०नं० १७ देखो १ भंग हो०नं० १६-१७- १६ देखो	
( ३५६ कोष्टक नं०	>>	१ भंग को० नं०१६-१६- १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १६–१८– १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो <sup>ह</sup> १ भंग को० नं० <sup>१</sup> ६–१७– <sup>ह</sup> १६ देखो	सारे भंग १ भंग को० नं० १८ देखोको०नं० १८ देखो १ १ को० नं० १६ से १६ को०नं० १६ से देखो
दरीन	m	६ (१) नरक, मनुष्य, देव गति में हरेक में ६ का भंग	कां न १६-१८ देखों (२) तियंच गति में ६.५-४-६ के भंग कों नं १७ देखों १० १० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	सोरनं १६-१६- देखो (२) 'तियंच गति में १०-१७-६४-१० के भंग को नं ७ देखो (१) नरक-तियंच-देवगति में हरेक में	का० न० १६-१७-१६ देखो (२) मनुष्य गति में ४-१-२-१-४ के भंग को० न० १८ देखो ४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १६ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	~	र्मि को० नं० १ देखो	स को० न० १ देखो	आ भो० नं० १ देखो	ति फो० मं० १ देखो
चौत	~	३ पर्याप्ति को० नं	४ प्रास को	४ संजा को० ग	क गति मी०

i i		्रिकाति को० नं० १६- १८-१६ देखी को० नं० १७ देखी १८-१६ देखी १८-१६ देखी १ योग पर्याप्तितत् जानना १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग	<b>१</b> योग को नं० १८ देखो
ओध-पान-पामा नकान्	9	१ जाति १६ देखो १६ देखो को० नं० १६ देखो १ काय १ काय १ काय सारे भंग पर्याप्ततत् जानना १ भंग १ भंग १ भंग हे देखो	सारे मंग को० नं• १८ देख़ो
संख्वलन अ	. 050	११) नरक-मनुष्य-देवगिति में हरेक मं १ पंचेन्द्रिय जाति जानन को नं० १६-१६-१० देखी (२) तियंच गति में ४-१ के भंग को० नं० १७ देखो १ नरक मनुष्य-देवगिति में हरेक में छा० मित्रकाय योग १, योग निर्मात्य योग १, योग निर्मात्य योग १, कार्माण्यात्य योग १, कोरमाण्यात्य योग १, को मित्रकाय योग १, कार्माण्यात्य योग १, कार्माण्यात्य योग १,	(२) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के मंग को० नं० १८ देखो
३८७ ) ह न ० ५४	*	१ जाति भो० नं० १७ देखी १ काय १ काय १ काय १ काय १ वोग १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग १ योग	१ योग को२ नं० १७ देखो
कोटिक	<b>&gt;&gt;</b>	ति म इस्को स्वाम स्याम	१ भग को० नं १७ देखो
		११) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेत्व्य जाति जानता कों० नं० १६-१८-१६देखी (२) तियच गति में १७ देखी १७ देखी १९ देखी ते १९ १८ १९ १० तियंच गति में १९ देखी ते १९ १० देखी हरेक में १९ १० १० देखी हरेक में १९ १० १० १० देखी हरेक में १९ १० वियंच गति में १९ वेदि मध्यकाय योग १, ये ४ घटाकर (११) ए अरे पटाकर (११) हरेक में १० नरह गति-देवगति में हरेक में १० नरह गति-देवगति में १० नरह गति-देवगति में १० नरह गति-देवगति में १० हरेकों १० हरेकों	। को० नं०
चीतोक्ष स्थान दर्शन	2 - 3	७ इन्द्रिय जाति १ देली को० नं० १ देली देश कोण के १ देली हैं योग हैं योग १ १ देलो को० नं० ११ देलो	

कषायों में	n	१ वेद को० न० १६ देखो	१ वेद को० न० १७ देखो १ वेद को० न० १८		१ भग । को० न १६ देखो	१ भंग को० न०१७ देखो
न्रोध, मान, माया कषायों	9	१ भग को० नं० १६ देखो	<ul><li>१ भंग</li><li>को० नं० १७ देखो</li><li>सारे भंग</li><li>को० नं० १८ देखो</li></ul>	सारे भंग नं० १९	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० न० १७ देखो
संज्वलन क्	Usr	हे (१) नरक गति में १ का भंग	काठ नठ	को० नं० १ द देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० न०१६ देखो	२२ (१) नरक गति में २०-१६ के भंग को० नं० १६ के २३ १६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन	कपाय ३ घटाकर २ – १६ के भंग जानना (२) तियंच गति में २२-२० - २२-२२- २०-२२१-१६ के
7 7 8	<b>ಎ</b>	<ul><li>१ योग</li><li>को० नं० १ द</li><li>१ वेद</li><li>को० नं० १६</li><li>देखो</li></ul>	१ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८	र्षा १ वेद को० नं० १६ रेखो	१ भंग को० नं ११६ देखो	१ मंग को० न० १७ देखो
( ३६६ क्रोष्टक नं	>>	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं,० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सरिभंग को० नं० १८ देखो	सारे भग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	e 2	(३) मनुष्य गति में <u>६-६-६ के भंग</u> को० नं० १ द देखों ३ (१) नरक गति में	१६ देखी भ भ १७ देखी १ भे १० ३—३—२—१		११ कपाय अमन्तानुबंधी क० ४, अप्रत्याख्यान क० ४, प्रत्याख्यान क० ४, को० न० १६ के २३–१६ काया जिसका काया जिसका विचार	गिंद जानना (२

चींतीस स्यान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	नं० ५४	संडबलन क	संडवलन कोध, मान, माया कषायों	कषायों में
~	mr ·	>>	አ	 us-		v
	२१-१७ के भंग ० नं० १७ के २५	सारे भंग को० नं० १ न देखो	१ मंग को०नं० १ द देखो	भंग की० नं० १७ के २४-२३-२४-२४- २:-२४-२४-६ के हरेक भंग में से पर्याप्त- वत् संज्वलन कपाय ३ घटाकर२२२१९-१६ के भंग जानना ।३) मनुष्य गति में २२-१६-६-२१-१६- के भंग को० नं० १६ के २४- १६-११-२४-१६ के	सारे भंग को० नं० १८ देखो	े १ मंग को०न०°१८ देखो
<del>.</del>	Υ	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	वत् संज्वलन कपाय ३ घटाकर २२-१६- ६-११-१६ के भंग जानना (४) देवगति में २१-२१-१६-२०-१६- १६ के भंग को० नं० १६ के २४- २४-१६-२३-१६-, १ के हरेक भंग में से पर्याप्त- वत् संज्वलन कपा। ३ घटाकर २१-२१-१६-	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को०नं० १६ देखो
				जीनना	1	·

चींतीस स्थान दर्शन	इर्थान	( ३६१ ) कोष्टक नं०	ر بر خ د	संज्वलन कोध,	मान, माया कषायों	यों में
~	m .	<b>&gt;</b> .	× .	uso	.9	ឋ
१४ दर्शन	m <sup>-</sup>	१ मंग	१ दश्न	w	१ भंग	१ दर्शन
मं १६ देख	(१) नरक गित में	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
	२-३ के मंग क्रो० नं० १६ देखो			४-३ क भग कोऽ नं० १६ देखो		
	(२) तियंच गति में	) भंग	। १ दर्शन	(२) तियैच गति म	१ भंग	१ दर्शन
	१-२-२-३-३-३ के मंग	को० नं० १७ देखो	कोठनं० १७ देखो	१-२-२-२-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	देखोक्तो०नं० १७ देखो
	को० नं० १७ देवो	•	•	क्रीं न० १७ देखीं		•
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ दशन	(३) मनुष्य गांत म	सार भग	१ दशन े ः
	२-३-३-२-२ के भग	क्री न १८ देखो	कार्जि १५ दखा	२-३-1-२-३ क भग को० मं० १८ अस्	का० न० १५ देवा	काठन० १८ देखा
	क्षांव नव ९६ ६६।	१ भंग	१ दर्शन	(४) देवगति में	१ भंग	१ दर्शन
	ं असे संस		को जनं ० १६ देखो		१६ देखो	कोठनं० १६ देखो
	को मं १६ देखो			को० नं० १६ देखो		
१५ लेडमा ६	, , 	१ भंग	१ लेखा	' مون	१ भंग	
को० नं० १ देखो	(१) नरक गति में	को० नं १६ देखो	को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	क्ते०नं० १६ देखो
	त्र का मन			र का भग		-
	(2) क्रिक्ट मनि में	vir. 6	१ लेख्या	भाष गुठ १६ ६९। (२) तियाँच गति में	१ भंग	१ लेड्या
	3.6-3-3 के भंग	•	कोठनं० १७ देखो	€-8 की भंग 5-8 की भंग	ຸ ວ~ ເ	देखी को ०नं ० १७ देखो
	कोठ नं० १७ देखी			को० नं० १७ देखो	•	
	(३) मनुष्य गति में	सारे मंग	ना	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ लेख्या
	६-१-१-३ के भंग	को० नं० १८ देखो	कोठनं० १८ देखो	६-३-१ के मंग	को० नं ०१ द देखो	कोठनंट १८ देखो
	को० नं० १न देखी			का० न० १५ दला ४४) डेनाटि भ		
	(४) दवगात म	· + + 1	(	(8) 441101 4		१ लक्षाः
	१-३-१-१ के भंग	कां० न० १६ देखा 	का०न १६ दला	३-३-१-१ क भग को० गं० १६ देखो	मि न. १६ दवा	क्तांग्न १६ देखा
. १६ भन्यत्व	157 77 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15	१ मंग	१ अवस्या	•	१ भंग	१ मवस्या
+od × +od	नारों गतियों में हरेक में		नं० १६ से		को० नं० १६ मे	कोठनं० १६ से
	२-१ म मंग	१६ देखो		२-१ के मंग कोन्न १६ से १६ हेनो	१६ देखो	१६-देखो
**	का० न० १६ स १६ दल।					÷

मौतीस स्थान दर्शन	र्शन	( ३६२ कोप्टक नं०	۶ ( ) ۶ ( )	संडवलन नोघ,	मान, माया कषायों	ं [यों में
~	, W	>	<b>ઝ</b>	US	9	n
१७ सम्पक्त्व को० नं० १६ देखो	ंह् (१) नरक गति में	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्ष्त्व को०नं० १६ देखी	४ मिश्र घटाकर (४)	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व कोःनं० १६ देखो
	<-{-{-{{ क भग को०नं० १६ देखो (२) तियँच गति में १-१-१-२-१-	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखी	(१) नरक गति में १–२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में	१ भंग	१ सम्यक्त्व
	१-१-३ क भग को०नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-२-३-२-	सारे भंग -२-को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १	१-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-२-२-१-२ के भंग	को० न० १७ देखो सारे भंग क्रो० नं० १८ देखो	को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
	१-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१-१-२-३-२ के भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	को० नं० १ द देखो (४) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे मंग गं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
१८ संज्ञी संज्ञी, श्रसंज्ञी	को॰नं॰ १६ देखो २ (१) नरक–मनुष्य–देवगति में हरेफ में	़ भंग को०नं० १६-१८-१६ देखो	भंग १६-१८-१९को०नं० १६-१८- देखो	२ (१) नरक–मनुष्य–देवगति में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१ <i>६</i> -	१ स्रवस्था को०न०१६-१द- १६ देखो
	्र को०नं० १६–१६–१६ देखो (२) तियँच गति में	<b>भ</b>	१ अवस्या	९ सज्ञा जानेना 'को० नं० १६–१८–१६ देखो (३) निर्यंच गनि मे	į į	· .
१६ माहारक माहारक, मनाहारक	१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो १ १) नरक-देवगति में	को० नं० १७ देखो १ को० नं० १६ ग्रीर	मी भी भी	(,) त्युव गात न १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखी १	१ संग को०नं० १७ देखो १ मंग	१ अवस्था कोठनं ०१७ देखो १ ज्ञवस्था
			् १६ देखो 	१९) गरभ-दुष्पात म हरेक में १–१ के मंग को०नं० १६ श्रीर १६ देखो	काठन १ ५ स्था ५-१ ह काठन ०.१ ६ आ १ देखो १५०१ १९६४ १८ १८ १८ १	१९ देखो

ና ት		( 383 )	•		•	
चात	चातास स्थान दशन	कोध्टक न० ५४	संडवलन	सज्बलन कोघ, मान, माया कषायों	, माया कष	ायों में
e -	er.	8	us-		9	ប
	(२) तियँच गति में १-१ के भंग कोर ने १० केरो	१ को० नं० १७ देखो <sub>्</sub> को०नं० १७ देखो	l	भें की ने	भग १७ देखो	१ मनस्या को०नं० १७ देखो
	कार मुख्य गति में १-१ के मंग कोठ नं० १८ देखो	सारे मंग १ सवस्या अपने अपने स्थान के दोनों में से कोई	新さず。 (3) मनु। ?-?-? ?	. श्रपने	न भ	१ प्रबस्या कोई १ मवस्या
२० उपयोग.	• • •	को० नं० १ देखो कोऽनं० १ द देखो १ मंग			सार भग को० नं० १ न देखो १ भग	काठनं १६६सा १ सम्मोस
झानोपयोग ७, दर्शनोपयोग ३, ३, १, सार्टी	(१) नरक गति में ४-६-६ के मंग क्रोड़ में ०९ नेस्डे	१६ दंखो को 	कुप्रवधि मनः ज्ञान ये २ घटाव	र्यंव (न)	•	·
16416 o > .		१ मंग   १ उपयोग के मंगको० नं॰ १७ देखो को०नं० १७ देखो	(a) % (b)	सी में ने	१६ देखो	को० नं०१६ वेखो
	कोर्ंनं १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-६-६-७-६-७-६ के भंगको	सारे भंग नं० १८ देखो	(२) तियँच गति में योग ३-४-४-३-४-४-४-६ १-६ हेलो के मंग	-६ को० नं	भंग १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो
	को० नं० १६ देखी   (४) देवगति:में ४-६-६ के मंग को० नं० १९ देखो	१ मंग नं० १६ देखो		न को	मंग १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १ द देः नै
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		410 40 45 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46	में भ	मंग १६ देखो	१ उपयोग को०नंः १६ <b>बे</b> लो
२१ व्यान पाते डियान ४, रोद्र व्यान ४, वर्म-	<u>e</u>	सारे भंग १ च्यान को०नं० १६- को० नं० १६- १६ देखो १६ देखो	ह ह अपाय विचय विवास विचय		सारे भंग	१ ध्यान
ब्यान ४, पृष्यत्त्व- वितर्भ विचार १ ये १३ ध्यान जानना			संस्थान पृथनत्व ये ४ घट	(¥)	v. I	- ·

300

?

~	, and	>	አ :	w	9	ĸ
	के हरेक भंग में से ऊरर				,	
	ज्यलन			४३-३६-३३ क हर्क भग		
	३ घटाकर ३३-३४-३६-			में से पर्याप्तवत् सज्बलन		
	-% è-3 è-2 2-0 % -0 % -0 % -0 % -0 % -0 % -0 % -			कषाप ३ पटाकर ३४-		
	४७-४२-३८ के भंग जानना			-> x-0x-9E-3:-XE		
	(३) मनुष्य गति	सारे भंग	१ मंग	76-30-38-38-38-		
	-32-56-80-	क्तों नं १८ देखो	को०नं० १८ देखी	\$ 5-80-34-30 के भग		
	₩		,	मानना		
	भंग को० नं० १			(३) मनुष्य गति में	सारे मंग	१ भंग
	-とと-0と-と -のと-とペー3ス			**	को नं १ द देखो	मो अं १८ देखी
	१६-१४-१४-१३ के हरेक			३० के मंगकी० नं० १८		
	मंग में से अपर के समान			-Ex. 28-38-83. 4		
	संज्वलन कपाय ३ घटाकर			बद-३१ के हरेक मंग में से		
	$ \alpha$ $^{\prime}$			प्यमिवत संज्वलन कपाय		
	१३-१२-११-१० के भंग जानना			३ घटाकर ४१-३६-३०-		
	१० का मंग			६-४०-३५-३० के मंग		
	कों० नं० १ द के १२ के			जानमा		
	/**			(४) देव गति में		
	मान-माया-लोभ कपायों			80-3K-80-3E-32-30-	सारे भंग	१ भंग
	में से कोई २ कपाय घटा-			३० के मंग को० नं० १६ को० नं०	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो
	कर १० का भंग जानना			-96-28-36-48 b		
	१० का भंग			३३-३३ के हरेन मंग में		
	कों नं १९ के			से पर्याप्तवत् संज्वाम क्षाय		
	भंग में से ऊपर के समात			३ घटाकर ४०-१४-३०-		
	माया, लोम कबायों			३६-३४-३०-१० के मंग		
	हि १ कप			जानना		ngi nganggang Pipk
	कर १० का भंग जानना					
	१०-१० का भंग 'खाली					
	एक लोभ कपाय के विचार				,	
	ों कींग्नं १८ के समान जानना			-		
	- after ministration of the color of the col					

•
•
س
W
m
***

•

7	ाया म	<b>w</b>	१ भंग १ भंग
	मान, माया कषाया	9	सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो
	संज्वलन क्रोध,	usr	४१ सायिक व्यश्वमम्चारित्र १, क्षायिक वारित्र १, क्रुअवधि ज्ञान १ मन- पर्ययज्ञान १ स्पमा- संपम १ ये प्रदाक्ट (४१) ११) नरक गति में २५-२७ को० नं० के भंग को०नं० १६ देखी (२) तियंच गति में सारे २४-२५-२९-२९-२२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में सारे ३०-२६-३०-२७-२४-३२ को० नं० २५ के भंग को०नं० १६ देखो (४) देवगति में सारे २६-२४-२६ के भंग को० नं० १६ देखो
	<b>አ</b> አ	<b>ઝ</b>	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग को०नं० १८ देखी
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	कोष्टक नं०	>>	सारे भंग कि नं० १६ देखो सारे भंग कि नं० १७ देखो कि नं० १७ देखो सारे भंग कि नं० १९ देखो
i	र्शन	·m·	भूमि की म्रपेक्षा को० नं०   १ द के ४४४-४१ के हरेक मंग में से ऊपर के समान विचार करो उसको छोड़कर शेप ३ कपाय घटाकर ४७-४२-३ द के भंग जानना ४७-४२-३ द -४६-४१-३७-३७ के भंग को० नं० १६ के ५०-४४-४१-४६-४४-४०-४०-४१-३०-३०-३०-३०-३०-३०-३२-२६-२०-२१-२६-२०-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-
:	चौतीस स्थान दर्शन	~	२३ भाव को०ंनं० ५३ के ४२ में सराग संयम १, मन: पर्यंप ज्ञान १, अपश :- चारित्र १, क्षायिक चारित्र १ ये ४ कोड़कर (४६)

प्रवगाहना—का० न० १२ स ३६ दल।। संघ प्रकृतियां— १ से द गुएए० में को० न० १ से द के समान जानना। ६वें गुएए० के धवें भाग में ६० प्रकृति का उदय जानना। उक्य प्रकृतियां————————————————————————————————————	संस्था—मुनियों की मपेक्षा (८६०६६१०३) तक जानना । क्षेत्र—लोक का मसंस्थातवां भाग जानना ।	स्पर्यंत—लोक का असंख्यातवां भाग जानना । काल नाना जीवों की प्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा एक समग्र से ब्रन्नमुंहुर्त तक एक कपाय की ग्रपेक्षा जानना । कन्तर नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्नर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा श्रन्तमुँहर्त से देगोन श्र'ग्रुक्गल परावर्तन काल तक ऊनर लिखि हुई	भार है। गुएए स्थान प्राप्त हो सके यह उपशम श्रोसी की अपेक्षा जानना। क्षपक श्रोसी की अपेक्षा ग्रन्तर नहीं है। जाति (योनि)— =४ लाख योनि जानना।
में शेषां स	क <b>क</b>	比略值	हो क

कुल—**१६६॥ साख कोटि**कुल जानना ।

चींतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ३६६ कोष्टक नं०	ंद ) न्० ४५		संज्वलन लोभ कषाग्रों	। क्षायों में
<b>क्र</b> े स्थान सामात्य ग्रालाप	ाप ' पर्याप्त			श्रपयन्ति		
	नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	। ए जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
~	m	>	<b>ઝ</b>	US-	9	
१ मुस्स स्थान १ से १० मुस्स स्थान	१० (१) नरक-देवगति में १ से ४ मुःग० जानना (२) तियँच गति में १ से ५ भोगभूमि में १ से ४	सारे गुरा स्थान श्रपने श्रपने स्थान के सारे गुरा। जानना	<ul> <li>श्रुषाः</li> <li>श्रुषाः</li> <li>स्यान</li> <li>सारे गुराः</li> <li>से कोई १</li> <li>गुराः</li> </ul>	४ (१) नरक गति में १ले ४ये गुरा० जानना (२) तियँच गति में १–२ श्रीर भोणभीम में	सारे गुए स्थान पर्यप्तिवत्र जानना	१ मुराउ पर्यक्तिवत्
२ जीव समास १४ को० नं० १ देखो	ر الله	१ समास को० नं० १ <u>६-</u> १८-		१–२–४ गुसा॰ (३) मनुष्य गति में १–२–१–६ गुसा॰ जानना भोगभूमि में १–२–४ गुसा• ७ अपयिति अवस्था	स	१ समास
	प्त भवस्थाः १६	१६ देखो	* (重	नरक-मनुष्य-देवगात में हरेक में शी पं० अगयिति या जानना नं० १६-१८-१६	को० नं० १६-१प- १६ देखो	को० नं० १६- १द-१६ देखो
३ पर्यापि	(२) तियंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो ° नंग	<ul><li>१ समास</li><li>को० नं० १७</li><li>देखो</li></ul>	देखा (२) तियंच गति में ७-६-१ के मंग को० नं० १७ देखो	१ समास को नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ हेखो
का० न० १ देसो	(१) नरक-मनुष्य-दॅवगति में हरेक में	्ते न । स्ते न न १६-१८- १६ देखो	१ भग को० न० १६- १न-१६ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ मंग को० नं० १६-१ <i>द-</i> १६ देखो	१ मंग को० नं० १६- १८-१६ देखो

-
_
W
W
2
_

म त	น	<ul><li>श्रमंग</li><li>शेरा</li><li>शंग</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेरा</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><li>शेर</li><l></l></ul>	१ मंग को०नं <b>०१७ देखो</b> मंग को० नं० १६- १७-१६ देखो	१ मंग को०नं०१८देखो	१ को <b>०</b> नं० १६ से १६ देखो १ जाति को०नं० ५४ देखो
संज्वलन लोभ कषाय	9		१ भंग नं० १७ देखो १ भंग नं० १६-१७- दखो	ारे भंग • १ द देखी क	्र को० नं० १६ से को देखो १ जाति को० नं० ५४ देखो को
'सं	792	को० नं० रेखो गति में को० नं० व मुख्य-देवगति	में 5 मंग विगति	भ म म न	४ बारों गति जानना को० नं० १६ से १६ देखो ४ को० नं० ५४ के समान 'क
गर ५५	<b>5</b> {	<b>१</b> मंग को०नं० १७ देखो १ मंग हे देखो	<ul><li>१ मंग</li><li>मोठनं० १७ देखी</li><li>१ मंग</li><li>१२ १६ देखी</li></ul>	१ मंग को०नं० १८ देखो	१ १ १६ को० नं० १६ से १६ देखो १ प्रक्रे को० नं० ५४ देखो
कोष्टक नम्बर	>	<ul><li>१ मंग</li><li>को० नं० १७ देखो</li><li>१ मंग</li><li>१६ देखो</li></ul>	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १६-१७- १६ देखो	ग न देखो	को० नं॰ १६ से १६ देसो को० नं० ५४ के समान
रर्शन	m	10 १६- म क्षो० ते में	१६-१८-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-६-५-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो ४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में होने में	४ का भंग को० नं० १६- १७-१६ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-४ के भंग को० नं० १८ देखो	, बारों गति ातना को० नं० १६ से १६ देखो ५ को० नं० ५४ के समान
चींतीस स्थान दर्यान	૪	र प्रासा को० नं० १ देखो	१ देखो ४		१ देखो ४ ति ४ १ देखो ४
र्वात	~	४ प्रासा को० नं	५ संज्ञा को० नं० १ देखो		६ गति को० नं० १ देखो ७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो

week fire

	लोभ कषायों में	n.	संस् तो भूते मंग्रे भूते मंग्रे ने ने न	वारे
	संज्वलन ल	9	को नं॰ ४४ वे सारे भंग को॰ नं॰ १६ देखे सारे भंग सारे भंग वारे भंग वारे भंग नं॰ १६ देखो	K' -
		US	कोठ नंठ ५४ देखो  कोठ नंठ ५४ देखो  कोठ नंठ ५४ देखो  कोठ नंठ ५४ देखो  रेठ-१६ के भंग कोठ नंठ १६ के ३- १६ के भंग कोठ नंठ १६ के ३- १६ के भंग में से संज्वलन कोब-मान-माया ये ३ कषाय घ कर २०- १६ के भंग जानना (२) तियंच गति में २२-२२-२२-२१-१६ के नंठ १७ के २४-२३-२५- २१-१-१ के भंग कोठ नंठ १७ के २४-२३-२५- २१-१-१ के भंग कोठ नंठ १६ के भंग कोठ नंठ १६ के भंग कोठ नंठ १६ के भंग कोठ	
( ४०० ) कोष्टक मंत्र पण	2	or	्र काय देखों देखों देखों को० नं० ५४ को० नं० ५४ १ भंग को० नं० १६ देखों भोनं० १७ देखों को० नं० १६	
		-	को नं को मं सारे मं स	
दर्शन	m·		भोठ नं० ५४ देखो भोठ नं० ५४ के समान भोठ नं० ५४ के समान २०-१६ के भंग कोठ नं० १६ के २३-१६" के हरेक भंग में से संज्वलन कोष-मान-माया ये इ कपाय घटाकर २०-१६ के भंग जानना (२) तियंच गति में २२-२०-२२-२१-१७-१८-१४-१४-११-११-११-११-११-११-११-११-११-११-११-	
चौतीस स्थान दर्शन	~	द कृषि	है योग १ देखी १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	

संज्वलन लोभ कषायों में	ъ 	सारे भंग नं० १६ देखो सो० नं० १६ देखो	सारे भंग १ ज्ञान को० नं० ५४ देखो को० नं० ५४ देखो		कांo नo १६-१६   कांo नo १६- देखो   १६ देखो	भंग १ संयम १७ देखो को० नं० १७ हेलो
संडव	UV-	-२ ६-१६ के हरेक से सज्वलन नि-माया ये ३ वटाकर २२-१६- १६ के भंग १६ के भंग -१६-२०-१६-१६ को० नं० १६ के को० नं० १६ के न्१६-२०-१६-१६ कपाय घटाकर कपाय घटाकर	भ साँ को०नं॰ ५४ देखो को०नं०		(१) नरक-दयगात म   का० न० हरेक में   देखो १ ग्रसंयम जानना को० नं० १६–१६ देखो	(२) तिगैच गति में १ भंग १-१ से भंग को० नं० को० नं० १७ देखो १७ देखो
ກ່ ກ່ ກ່	<u>-</u> -	१६-११ भंग में क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-म क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क्राध-स क क क क क क क क क क क क क	१ ज्ञाम को नं० ५४ को० नं देखो	१ संयम को० नं० १६- १६ देखो	(१) म १ सयम हिन को० नं० १७ १ यस्य देखो को० १ १ संयम देखो	को० नं० १८ देखो
कोष्टक नं०	>	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे मंग को० वं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग	作
दर्शन	m·	को नं १६ के ६५- २१-१७-१३-११-१३-७-४- २४-२० के हरेक मंग में से संष्मलन कोध-मान- माया ये ३ कपाय घटाकर २२-१९-१४-१०-८-४- १-२१ १७ के मंग जानना (४) देवगति में २१.१७-२०-१६-१६ के मंग को० न० १६ के संग को० न० १६ के हरेक भंग में से संज्वलन- कोध-मान-माया ये ३ कपाय घटाकर २१-१७-२०-१६-	७ को० नं० ५४ के समान	६ (१) नरक-देवति में हे १ असंयम जानना		१-१-३-२-३-२-१-१ के भंग को० न० १८ देखी
चौंतीस स्थान दर्शन	~		ा कोठ नं ० ४४ देखो	र् यसंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोव-	स्थापना, पारहार वि॰, सुक्षम सांपराय ये (६)	

**%**0%

	संज्वलन
( २०४ )	कोष्टक नं० ५५
	चोंतीस स्थान दर्शन

लोभ कषाय में

ប			देखो १ ज्ञवस्था १ मि ने० ५४		द्खा १ स्रवस्था को० नं० ५४	दल। १ स्रवस्था को० न० ५४		द्वता १ ध्यान क्रो० नं० ५४	दखा १ संग पर्याप्तवत् जानना
9	सारे भंग को० नं० १ न्देखो	१ अंग को नं १४ देखो १ भंग को० नंः १४ देखो	१ भंग को० न० ५४ देखो	मारे भंग को० नं० १४ देखो	१ भंग को०नं० ५४ देशो	१ भंग को० नं० ५४ देवो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	ं सारे भंग को० नं० ५८ देखो	द्यारे भंग पर्योक्षत्रच् जानना
w	(३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं १ द देखो	३ को० नं० ५४ देखो इ को० नं० ५४ देखो	२ को० मं० ५४ देखो	५ को०नं०५४देखो	२ को० नं० १४ देखो	२ को० न० ५४ देवो	द को०नं० ५४ हेबो	११ को० न <sup>ं</sup> ० ५४ देशे	४३ मनोयोग ४, वचनगोन ४,
24	-	१ दर्शन को० न० ५४ देखो १ लेश्या को० न० ५४	दंबो १ अवस्था को० नं० ५४ देखो	्र सम्यक्त्व को० नं० ५४ अस्रे	५५५। १ अवस्था को० नं० ५४ हेखो	र्ता १ को नं॰ ५४ देखे	र अ १ उपयोग को० नं० ५४ सेनो	५९९। १ ध्यान को० नं० ५४ केले	रता १ मंग य्रपने य्रपने स्थान
>		<ul><li>१ मंग</li><li>को० नं० ५४ देखो</li><li>१ मंग</li><li>को० नं० १४ देखो</li></ul>	१ भंग को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंघ को० नं० ५४ देखो	१ को ग्नं० १४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान
to.		३ को० नं० ५४ के समान इ ६ को० न० ५४ के समान	२ को० नं० ५४ के समान <sup>ः</sup>	६ कोः नं० ५४ के समान	२ को० नं० ५४ के समान	१ को० नं० ५४ के समान	१० को० नं० ५४ के समान	१३ को० नं० ४ के समान	५१ औ॰ मिश्रकाय योग १
c		दर्शन को० न० १६ देखो लेख्या को० न० १ देशो	ग्यत्व भव्य, ग्राभन्य	म्ययत्व को० नं० १६ देखो	गी संजी ग्रसजी	ग्राहारक ग्राहारक, ग्रनाहारक	ध्यान क्षो० नं० ५४ देखो	ग्राम को० नं० ५४ देखो	ग्रास्तव ५४ को० न°० ५४ देखो
-		वर्शन को० न १५ लेख्या को० न	१६ भव्यत्व भव्य <sub>ा</sub>	१७ सम्यवत्त्र को० न	१८ संशी संश	१६ माह माह	२० ध्यान को०	२१ च्यान को	२२ म्रास्त् को० न

~
۲۳ ٥ ۷
_

~	r	ar	>>	አ .	υν	ອ	
		वै० मिथकाय योग १	के सारे भंग जानन		न्नी काययोग १, वे०		
				कोई १ भंग	काययोग १, श्राहारक		<del></del>
		य ३ घटाकर (४१)	सारे भंग	० भंग	काववाग ९ च ९९ वटा- अर (४३)		
		के मंग	को० नं० १६ देखो	को०न० १६ देखो	गति में	सारे भंग	१ भंग
		कोठ नं ०१६ के ४६-				को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
•		४४-४० के हरेक भंग में			कोंग्नं १६ के ४२-३३		
		से संज्वलन क्रोध-मान			हरेक भग में से संज्वलन		
		गाय घ र			-		g
		スピースと一当の は れい			कपाय घटाकर ३६-३०		
		जानना	,		के भंग जानना		•
		(२) तियंच गति में	W.E.	१ भंग	(२) तियंच गति में	世	१ भंग
		-02-0E-	को० नं० १ : देखो	को भनं १७ देखी	ー・スーのとーうとーかとーえと	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो
		~のスースを一きと一とスーカス			89-38-30-38-38-		
		४२-३८ के भंग			のこーなを一のスーさを一大き		-
		क्लों न १७ के ३६-			के भंग को० नं० १७		
		コローコピーストースタースとー			के ३७३६३६४०		ميدر والمحجد
		ーイスーのなーのを一とスーちス			ーとを一とを一名れてきた		
		४१ के हरेक भंग में से					
		-मान-			४३-३५-३३ के हरेक		
		में ३ मटाफर ३३-३५-			भंग में से संज्वलन कोष-		
		-ミスーヒター			मान-माया ये ३ कपाय		
		またーランーシャーラミ			घटाकर ३४-१५-३६-		
		भंग जानमा			-08-36-28-02-68		-
		(२) मनुष्य गति में		१ भंग	-02-35-31-35-5:		
		-38-83-	को. मं० १८ देनो	क्तिंग्नं १ द देशो	३१-३० के मंग जानना		
		20-28-83-83-88-			(२) मनुष्य गति में	सारे मंग	१ भंग
		क मंत कि न			-30-6-80-	को० नं० १८ देशो	को०नं० १८ देखो
		一つと一たとったとしなり			३५-३० के भंग	,	
		33-30-33-35-32-		_	•		

<b>~</b> %	•
.° %	

	कषाय में	ប	१ मंग देखो े
	सं उवलन लोभ	<sub>ق</sub>	मारे भंग को० नं० १६ देखो
		US	को० न० १८ के ४४-३-१३-१३-१३-१३-११-४३-३६-३१-३१-४३-३६-३१-४१-४३-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१
×°×	ं नं ० ५५	*	१ भंग को० मं० १६ देखो
	कोष्टक	<b>&gt;</b>	सारे भंग को० नं० १६ देखो
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		m	१४-१३ के हरेक भंग में से संज्वलन कायाय घटाकर ४८-४३-३६-३४-१६-१७ के भंग जानना १० का भंग-को० नं १० के भंग-को० नं १० के भंग-को० नं १० का भंग जानना १० के भंग-को० नं १० का भंग जानना १०-१० के भंग-को० नं १० हे भंग-को० नं १७ के भंग-को० नं १७ के भंग-को० नं
	चौंतीस स्थान दर्शन	~	
*** <u>*</u>	चौंतीस	~	

the first of the second of the

υγ **~** 

- १४ प्रवगाहना को० नं० १६ से ३४ देखो।
- वंध प्रकृतियां---१ से ६ मुस्स० में को॰ नं॰ १ से ६ के समान जानना। १०वे गुस्स० में (०) बंध नहीं है।
- नस्य प्रकृतियां—१ से ६ मुएए० में को० नं० १ से ६ के सनान ज नना। १०वे मुएए० में ६० प्र० का उदय जानना।
- सत्व प्रकृतियां—१ से ६ मुस्स० में को० नं० १ से ६ के यसान जानना। १०वे मुस्स० में १०२ क्षपक श्रोसी की अपेक्षा जानना।
  - संख्या--(८६१०००,००) न्नाठ करोड एक्यनिने ला न यह सस्या मुनियों की अपेक्षा जानना ।
    - क्षेत्र ---लोक के ग्रसंख्यातवां भाग जानना ।
- स्पर्शन—लोक का ग्रसंख्यातवां भाग जानना ।
- काल —नाना जीवों की यपेक्षा मर्बकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा एक समय से ग्रन्तेमुहुतै तक एक लोक क्रपाय की ग्रपेक्षा जानना ।
- थ्रन्तर—नाना जीवों की ग्रपेक्षा भ्रन्तर नहीं । एक जीव की ३ पेक्षा श्रन्तेमुहूर्त से देशोन भ्रर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक संज्वलन लोभ को
  - धारसा न कर सके। अथति १०वां मुसा स्थान धारसा न कर सके।
    - ३३ जाति (योनि)—=४ लाख योनि जानना ।ं करार ३४ कुल —१६६॥ लाख कोटिकुल जानना ।

चीसीस स्थास दर्शन	श्रुम	् कोप्टक	ु . . नं ० ५६	ho	हःस्यादि छह नोनःषायों में	ायों में
नातार जनमान	पयमि				अपयिति	
11.100	1	एक जीव के नाना पि समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की भ्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
6.	m	>>	*	υν	9	ĸ
१ सास्थान १ से द मुस्स	न परक गति में १ से ४ गुरा। (२) तिर्यंच गति में १ से ४ गुरा। १ से ४ गुरा।	सारे गुए स्थान ते भपने अपने स्थान स्थाने अपने स्थान के भपने अपने स्थान सारे गुए। जानना के सारे मंगों में से कोई १ गुए।	१ गुएए० क्षेप्रपने त्रपान के सारे मंगों में से कोई १ गुएए०	४ (१) नरकगति में १ले ४ गुरा० (२) तिर्यंच गति में १-२ गुराए०	सारे गुर्सा स्थान   पर्यप्तिवत् जानना	१ गुर्या० पर्यप्तिवत् जानना
	भाग भूमि म १ से ४ गराउ (३) मनुष्य गति में १ से व गुराउ भोग भूमि में १ से ४ गुराउ			११-४ गुरा० (३) मनुष्य गति में १-१-४-६ गुरा० (४) भोग भूमि में १-၁-४ गुरा० (५) हेवगति में		
२ औस्ममास १४ क्षेत्र नं० १ देखो	(४) दव गांत म १ से ४ गुरा० ७ पर्शन प्रवस्या तो० न० ५४ के समान	१ समास को० नं० १४ देखो १ भंग	१ समास को०नं० १४ देखो १ भंग	(२) र गार्थ । १-२-४ मुस्स ७ म्रपयांत म्रवस्या को० नं० ५४ देखो	देखो	१ समास को०नं० ५४ देखो १ भंग
३ पगाप्ति को० क० १ देखो ४ प्राण को० क० १ देखो	को <b>ं मंं ५</b> ४ के समान १ कोंः नं १४ के समान ४		को०नं० ५४ देखी १ भंग को०नं० ५४ देखो १ भंग	नं• ५४ देखो  नं• ५४ देखो ४	को॰ नं॰ ५४ देखों १ भंग को॰ नं॰ ५४ देखों १ भंग	की०नं० ५४ देखो १ मंग की॰नं० ५४ देखो १ मंग
४ सता को० न० १ देवो ६ गति को० न० १ देवो	को० न० ५४ के समान ४ को० नं० ५४ के समान	संबो	को०नं० ५४ देखो १ को०नं० ५४ देखो	को० नं० ५४ देसो ४ का० नं० ५४ टेसो	को० नं <b>० १</b> ४ देखी १ को० नं १४ देलो	का. न० ५४ देवा १ तो०न० ५४ देवो

୭୦%

<u> </u>
12
0
≫
_

हास्यादि छह नोकषायों में	r —	१ जाति १ जाति १ जाति । १ जाति १ काय १ काय १ काय १ काय १ काय । १ काय १ योग १ योग १ योग १ योग १ यंग १ यंग १ यंग १ वंदो मो० नं० १६ देखो मो०नं० १९ देखो को०नं० १६ देखो
हास्यादि	w	१ ५ १ के समान ६ १ ४ देखो १ १ ४ देखो १ १ ४ देखो १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
, । । नं ० ५६	ř	१ जाति १ जाय १ काय १ काय १ योग १ योग १ येग १ वेद १ वेद को०नं० ४ देखो को० नं० ५ ४ १ वेद १ वेद को०नं० ४ देखो (१) चारों गि १ वेद को०नं० १ देखो (१) चारों गि १ वेद कोगनं १ वेद १ के भंग १ के स्हेरेल को०नं० १६ देखो (२) नग्क गि १ के स्हेरेल को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गी १ भंग १ भंग १ भंग १२०-१६-२०-१०-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-
कोष्टक मं०	<b>&gt;</b>	१ जाति १ काय १ काय तो० नं० ५४ देखो सारे भंग तो० नं० १६ देखो सारे भंग तो० नं० १६ देखो सारे भंग तो० नं० १६ देखो
चौंतींस स्थान दशैन	m	भू को० नं० ५४ के समान को १९ को० नं० ५४ के समान को १९ को० नं० ५४ के समान को भं-देवगति में न्देवगति में होएक में को० नं० ५४ के समान मंग जानन। (१) नरक गति में होएक में को० नं० १६ के १३—१६ हेर्स मंग को० नं० १६ के १३—१६ हेर्स मंग में होस्यादि ६ नेक्वायों में से जिसका विचार करों थो १ छोड़कर होष ५ के मंग जानन। (२) तियंच गति में १० हेर्स मंग को० नं० १६ के १३—१६ हेर्स मंग में होड़कर होष ५ के मंग जानन। (२) तियंच गति में १० के भंग को० नं० १७ के २५—१० १०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१०—१
चौंसींस	*	७ इन्द्रिय जाक्कि ५ काम ६ काम ६ विका १ देखो ६ योग १० १ देखो १० वेद' ३ वेद' ३ वेद' ३ वेद' ३ वेद' ३ वेद' ४ कामदि ६ नोकपायों में से जिसका विचार करो थो १ छोड़कर शेष ५ कपाय घटाकर २० जानना

गयों में	v	<b>१</b> भंग को०नं० १	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ शान को०नं० १६ देखो	१ संयम को०नं० ५४ देखो
हास्यादि छह नोकषायोँ	၅	- सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे गंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ मंग को० नं० ५४ देखो
हार	U3°	य घटाकर २० १-२०-१८-२०- ४ के भग जानना प्रथ गति में ४-६-१९-१४ को० न० १८ के १-११-२४-१९ भग में से पर्यात्तवत्	क भग (४) देवगति में १९-१६-१४-१८-१४- १४ के भंग को० नं० १९ के २४-१६-२३-१९- १६ के हरेक भंग में से प्यतिवत् शेष ५ मोकपाय		ये २ घटाकर(५) ४४ के समान ३ ५४ देखो
્ર ( )	ಶಳ	१ भंग को०नं० १ द देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ साम को०मं० ५४ देखो	
( ४०१ कोष्टक नं०	>	सारे भंग को० नं० १८ देखो	् सारे भंग को नं० १६ देखो	सारे मंग क्रो० नं० पर <i>टे</i> न्नो	÷. ~ .€
र्चोतीस स्थान दर्शन	m.	ं शेष ४ १ १०- ६-१२- जातना ६-५- १२१-	F b . Af	२४-२०-२१-१६-१६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान ४ शेप नोकपाय घटाकर १६-१४-१५-१४-१४-१४-१४-१४-१४-१४-१४-१४-१४-१४-१४-१४-	४, भ प्रमान १४ के समान
र्चातीस स	~			۶	काठन० ५४ दला। सम क्लो० नं० १४ देखो
	~			१२ भाम हिस्सान	कार्वन १३ संसम् क्षोर न

चींतीस स्थान दर्शन	स्थान दश	र्ीन	( ४१० ) कोष्टक नं०	) પ્રદ	到 <b>是</b>	हास्यादि छह नोक्षायों	षायों में
*	~	m		<b>ઝ</b> િ	υ <b>ν</b>	Ð	៤
१४ दर्शन	U3.	m	१ भंग	१ दर्शन	fir	् १ भंग	्र दर्शन
को० नं० ५४ देखो	र देखो	को० नं० ५४ के समान	देखो	को०नं० ५४ देखो	को० नं० ४ देखो	को० नं० ५ र देखो	को०नं० ४४ देखो
१५ लेक्या	w	υσ·	भंग	१ लेखा	w	१ भंग	् १ लेश्या
<del>ا</del> 0	१ देखो	को० नं० ५४ के समान	को०नं० ५४ देखो	को०नं ९ ४ देखो	को०नं० ४ देखो	को० नं० ५४ देखो	मिो०नं० १४ देखो
१६ भव्यत्व	8	$\alpha$	१ भंग	१ अवस्या	,5*	१ भंग	
को० नं० ५४ देखो	४ देखो	को० नं० ५४ के समान	को० नं० १४ देखो	को०नं० ५४ देखो	को० नं० ५४ देखो	को० नं० ४ देखो	को नं० ५४ वेखो
१७ सम्यक्त्य	υ» / /	υν	१ भंग	१ सम्यक्त्व	<b>ಶ</b> ೇ	सारे भंग	१ सम्यक्त
को० नं० १	१६ देखो	को० नं० १४ के समान	को० नं ५४ देखाँ	कों को १४ देखों	घटा	कों नं १६ देखो	को०नं० ५४ देखो
	•	जानना	•		को० नं० १४ देखो		
१ व संशो			~	१ मयस्या	r	१ भंग	१ अवस्था
संग्री,	श्रसंगी	को० नं० ५४ के समान	को० नं० ५४ देखो	को०नं० ५४ देखो	को० नं० . ४ देखो	को० नं० १४ देखो	को०नं० १४ देखो
१६ माहारक	r	~	~		n	१ भंग	१ भवस्था
jç.	यन हारक	को०नं० १४ के समान	को०नं० ५४ देखो	(F_	को भं भ्४ देखो	को नं० ५४ देखो	देखो को०नं० ५४ देखो
२० उपयोग	0 ~	0 %	१ भंग	१ उपग्रोग	វេ	१ भग	१ उपयोग
को० नं ० ५४ देखो	,४ देखो	को० नं० ५४ के समान	को० नं० ५४ देखो	को०नं० १४ देखो	को० नं० ५४ देखो	को० नं ५ ६ देखो	फो०नं० १४ देखो
२१ ध्यान १३	m /	**** Ox**	सारे भंग	यान	*	सारे भंग	१ ध्यान
कोठ नं ० प्र	१४ देखो	को० नं० ५४ के समान	को० नं० ५४ देखो	को०नं ५४ देखो	को० नं० ५४ देखो	को० नं ० १४ देखो	को०नं० ५४ देखो
२२ यासव	3,	ત્ય જ્ય		१ भंग	>> *	सारे भंग	१ भंग
मिथ्यात्व ५, श्रावरत	प्रावरत	मों मिश्रकाययोग १,		के श्रपने अपने स्थान	मतोयोग ४, बचनयोग ४,	, प ीप्तवत् जानना	पयमियत् जानना
१२, याग १५, कपाय	, कपाय		सारे भंग जानना	क सारे भंगों में	मी० काययोग १,		,
२०, (हास्यादि	in a	ग्राहारक" %		सि कोई १ भंग	वै० काययोग १,		
नाकपाय में में हिसका	। जसका	कामाए काययोग १		-	माहारक काययोग १,		
विचार करा	न्ना %	यं ४ घटाकर् (४८)			_		
धाड़कर शप ४ घटाकर	५ षटाकर	(१) नरक गति में	सारे भंग	र भंग	(१) नरक गति में		१ भंग
ये प्रश्नास्त्र	ं सानमा	88-38-38 年 भगकोठन० को०	िक्षो न १६ देखो	कोठनं० १६ देखो	ः के भंग	को० नं• १६	देखो को ०नं० १६ देखो
		は 08-00-02 中 4 h 1 h 1 h 1 h 1 h 1 h 1 h 1 h 1 h 1 h	5, 4		음 소식-소리 유 등 가 수		
	-	क्षाय में से जिसका विचार	_ 上		भगम समयासवत् श्वा		
					द के भंग जानना	-	

चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ४११ कोष्टक मं०	3 X E	हा	हास्यादि छह नोकषायों में	तयों में
કે કે	er T	> .	54°	USP	ອ	ft.
	प्र वटाकर ४४-३६-३५ के मंग जानना (२) तिर्वच गति मं ३१-३३-१४-३६-४६-४६-४६-४६-४६-४६-४१-३६-४१-४१-४१-४१-४१-४१-४१-४१-४१-४१-४१-४१-४१-	सारे भंग सारे भंग को० न० १ न देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भग १ भंग को०नं० १८ देखो भंग नो०नं० १६ देखो	(२) तियंच गति में इन्-३३-३४-३५-३२-३४-३५-३२-३१-३२-३२-३२-३२-३२-३२-३२-३२-३२-३२-३२-३२-३२-	सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे गंग को० नं० १८ देखो	१ मंग कोठनं० १७ देखो १ भंग १ भंग कोउनं० १८ देखो

गयों में	r	१ भंग को०नं० ५४ के समान जानना १ भंग को०नं० १ द देखो
हास्यादि छह नोकषायोँ	9	सारे भंग को० नं० ५४ के समान हरेक में जानना सारे भंग को० नं० १८ देखो
हास	w	४१ उपशम-वारित्र १, क्षप्रधम-वारित्र १, क्रुध्रविध ज्ञान १, सयमासंयम १ थ ५ घटाकर (४१) (१) नरक-तिर्यच-देवगति में हरेक में को० नं० ५४ के समान भंग जानना (२) मनुष्य गति में? ३०-१८-३०-१७-२४- क्रुर-२५ के भंग को० नं० १८ देखो
( ४१२ ) कोष्टक नं० ५६	አ	१ भंग को०नं० ५४ के समान हरेक में जानना १ भंग को०नं० १ द देखो
कोष्ट	>	सारे भंग समान हरेक में जानना सारे भंग को० नं० १ प्ट देखो
र्शन	er.	शेप ५ कपाय घटाकर ४४-४४-३६-३४-३४, के भंग जानना ४६ ४६ मात्री में हरेक में को० नं० ५४ के समान भंग जानना भंग जानना भंग जानना ११०-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-३१-
चौतीस स्थान दर्शन	8	३ भाव ४६ उपशम-शायिक स० २ उपशम चारित्र १, सायिक चारित्र १, प्रायोपशमिक भाव १८, पारिस्सामिक भाव ३ ये ४६ भाव जानना
वि	~	२३ भाव उपद्यम- उपद्यम- सायोपद स्रोदर्श्य पारिस्सा

काल - नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा एक समय से ग्रन्तमुँ हुते तक किसी एक नोकपाय की ग्रपेक्षा जानना १३ - प्रकृति क्षपक घोएी की ग्रपेक्षा। टबें मुएए० के मन्तिम भाग में ६६ प्रकृति का उदय जानना दवें गुएए० के ६वें भाग में २२ प्रकृति का वन्य जानना। प्रन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई भ्रन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा भ्रत्तमुँ हुते जानना। से ७ के समान जानना। बंच प्रकृतियां – १ से ७ मुस्स् में को नं ० १ प्रवगाह्रता—को० नं० १६ से ३४ देखी। जाति (योति)—८४ लाख योनि जानना कुल—१६६॥ नाख कीरिकुल जानना । संस्था--ग्रनन्तानन्त जानना स्पशंत-सर्वलोक जानना । भेत्र—सर्वलोक जानना उवय प्रकृतियां— संत्व प्रकृतियां—

चौतीस स्थान दर्शन	शंन	कोष्ट	कोष्टक नं० ५७		अक	अकषायों में
फ हथान सामान्य ग्रालाप	पयिति				त्रपयित	E
	नाना जीव की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	/ १ जीव के नान। समय में	एक समय में एक समय में
e'	m	>	*	us	Ð	r
१ मुस्स स्थान ४ ११-१२-१३-१ त्रमुसा०	४ ११ से १४ ये ४ मुसा० कौ-दं १ द देखो	सारे गुस्स स्थान	8 मुराः ४ में से कोई <b>8</b> मुराः	१ १३वें गुरा स्थान	₽-	۰
२ जीव समास संशी पं०-पर्याप्त-अपर्याप्त	१ १ पर्याप्त ग्रवस्था	~	, , ~	१ अपर्याप्त समस्या	~	~
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो ँ	६ ६ का भंग को० नं० १८ झेको	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	३ का भंग निकास	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्रासा को० नं० १ देखो	१० १० १० १० १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५	१ भंग को० नं० १ व देखो	१ भंग को०नं०१८ देखो	कार न <b>े र्</b> ट द्खा ७ ३ का भंग	१ भंग को० न०१८ देखो	१ भंग को०नं० १ द देखो
थ संज्ञा ६ मति	काठन० १८ देखा श्रदीत संज्ञा १ मनुष्य गति जानना	· ~	° ~	को० नं० १ द देखो ° १	۰ ~	~
७ इन्द्रिय जाति ः १	कार्यक १८ देखा १ पंचेन्द्रिय जाति कोर्ठन १८ देखो	~	~	~	~	~
	१ यसकाय को०नं० १८ देखो	~	~	~	~	~
११ मनोयोग ४, वचनयोग ४. ज्ञी० काययोग १, श्री० मिधकाययोग १, कार्माण काययोग १,	ह प्रौ० मिश्रकागयोग १, कामिएा काययोग १ ये २ घटाकर (६) (१) मनुष्य गति भे	सारे भंग	१ योग	२ श्रौ० मिश्रकाययोग १ कार्मास्स काययोग १ ये २ योग जानना	सारे भंग	१ योग
य ११ योग जानना	_			L N. L. E. (1)		

चौतीस स्थास स्थान	ने स्थान	म् (	४१५ ) मं० ५७		Z E H	· 14
					buk	
D .	m	>>	<b>*</b>	UV	<b>9</b>	n
	8-५-३-० के भंग को० नं० १ द देखी	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १ द देखो	२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ टेम्बरे	र योग
० विद	श्रपगत वेद	• 0	0		5.0	कार्ण १५ वर्ता
११ कपाय ०	ग्रक्ताय		۰	0	0	
१२ जान ४	<b>જ</b>	सारे मंग	१ जान	<i>م</i> ہ	सारे भंग	१ ज्ञाम
मति-श्रुत-प्रविध जान-	(१) मनुष्य गति में	को० नं० १८ देखो	को०नं८ १८ देखो	१ का भंग	कों नं १८ देखो	कोठनं० १८ देखो
मनः पयंय-केबल-जान	४-१ के भंग			को० नं . १ न देखो		
ान जानना	का० न० १६ द्या		,			,
१३ सयम	्र यथाख्यात सयम	~	~	~	~	~
	काठ न ठ ५ व व्य	.ļ	0	•		
१४ दशन		सार भग - १ २	१ दश्त	~	~	~
सन्धा दर्शन-चंदा दर्शन	(१) मनुष्य गात म	का० न० १५ द्वा	काठन० १८ देखा	l€ ~•`	कों मंं १ देखों	कोर्नं १ द देखो
स्वाम स्थान-भवत द्यान				की न० १८ देखी		
१५ जेस्या	2	~	۵	6	0	c
गुक्ल लेखा	(१) मनुख्य गति में	को० नं० १८ देखी	क्ती अनं १ द देखी	(१) मनव्य गति में	क्रीटनं ० १८ हेराने	अंत्रे ११ भ
)	7.0 मे मंग			१ का भग	7	5
	को० नं० १८ देखो	,		को० नं० १ न देखो	* *********	
१६ मन्यरत	१ भव्य जानना	~	~		~	. ~
१७ सम्यनत्त्र २	n'	सारे भंग	१ सम्यक्त	•	तारे भंग	9 attnerer
डपदाम स्०, धरापिक स्०		को० नं० १८ देखो	कोन्नं १८ देखी	(१) मनुष्य गति में	कि में १ सम्हो	<u>ئ</u> م 18
ये २ जानना	२-१ की भंग को अंत १ में से	·+		१ का भंग	•	
१ च संगी	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	~	٩	0		
	(१) मनदम्मति में	को मं १८ हेवो	को वनं १८ हेनो	o	0	0
	१-० अभाग	2				
	को० नं० नद संसो					
१६ माहारक	n	मारे भंग	१ भवस्या	D.	मार भाग	9 97575757
माहारक, प्रमाहारक		ै को० नं० १८ देखो	को०मे० १ द देतो	(१) मनुष्य गति में	गो० नं० १८ देखो	त्रवस्य। कोठनं श्ट देखो
	7-8-8 市中			2-3		
	भिष्ठ ५५ वात	_		कार में १८ द्वा	·	

~
∞ ~ ≫
ت

अक्षायों में	n	१ उपयोग को०नं० १ द देखो	ं १ ध्यान को०नं० १ द देखो		१ भंग को०नं०१८६ देखो	१ भंग को०नं० १ द देखो
裍	9	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १ = देखो	सारे भंग	सारे भंग को० नं० १ द देखो सारे भंग	सारे भंग को० नं० १० देखो
	US	७ कुम्नवधि ज्ञान, मनः पर्ययक्षो० नं० ज्ञान ये २ घटाकर (७) (१) मनुष्य गति में	र का भग को० नं० १८ देखो १ सूक्ष्म किया प्रति पाति १ का भंग को० नं० १८ देखो	् श्रौ० मिश्रकाययोग १ कार्मास काययोग १	ये २ योग जानता (१) मनुष्य गति मे २-१ के भंग को० न० १ = देखो २ = उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १,	
रह <i>)</i> नं० ५७	¥.	१ उपयोग को०नं० १८ देखी	१ ध्यान को०नं०१ द देखो	१ भंग	१ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	
( . ४१६ ) कोप्टक नं० ५७	>	सारे भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	
चौंतीस स्थान दर्शन	mr	ह (१) मनुष्य गति में ७-२ के भंग को०नं० १८ देखो	४ (१) मनुष्म ४,ितः में १-१-१-१ के भंग को०नं० १ द देखो	ह औं मिश्र काययोग १ कामांग काययोग १	ये २ घटाकर (६) (१) मनुष्य गति में ६-४-३-० के भंग को० नं० १	57 s s s s s s s s s s s s s s s s s s s
चौंतीस	2	े उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ४ मे ६ जानना	<ul> <li>ध्यान</li> <li>पृथवत्व वितकं विचार १</li> <li>एकत्व वितकं अविचार</li> <li>भूक्षम किया प्रति-</li> <li>पाति १, स्यूपरत क्षिया</li> <li>भिवतिनी १ ये ४ युक्त-</li> </ul>	ध्यान जानना श्रास्त्रव ऊपर के योग स्थान के योग (११) जानना	भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशमचारित्र१, क्षायिक भाव ६. जान ४. दक्षी	रे, क्षयोपदाम लहिच ५, धुक्ल लेख्या १, मनुष्य गति १, श्रज्ञान १, श्रमित्तत्व १, जीवत्व १ भव्यत्व १ ये (२६)
	~	२० उपयोग शानोपये दर्शनोपय पे ६ जा	२१	ध्यान ज २२ श्रास्त्रव ऊपर के योग (११	२३ भाव उपश्रम उपश्रम भाव	3, हा युक्त मिति प्रमित्त भव्यत्

क्रवगाहता—३।। हाथ से लेकर ५२५ थनुप तक जाननों। बंध प्रकृतियां—१:-१२-१३वें गुएए॰ में एक साता वेदनी। का बन्ध जानना, १४वें गुएए॰ में क्रवन्ध जानना। बद्ध प्रकृतियां—११-१२-१३-१४वें गुएए॰ में कम से ५६, ५७, ४२, १२ प्र॰ का उदय जानना को॰ नं॰ ११ से १४ देखो। सस्य प्रकृतियां—११-१२-१३वें गुएए॰ में कम से १३६, १०२, १०-१, द५ क्रौर १४वें गुएए॰ में द५-१३ प्र॰ का सत्ता जानना।	सस्या—को० नं० ११ से १४ के समान जानना । क्षेत्र—लोक का ग्रसंख्यातवां भाग कपाट समुद्दवात की ग्रपेक्षा जानना । प्रत्तर समुद्द्यात में ग्रसंख्यात लोकप्रमाण जानना भीर लोकपूर्ण समुद्द्यात में सर्वलोक जानना । को० नं० १३ देखो ।	स्पर्शन — ऊपर के क्षेत्र के समान जानना। एक जीव की अपेक्षा आठ वर्ष अन्तमुँहर्त कम कोटि पूर्ववर्ष तक जानना, उपशम अरो काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। पोर क्षपक श्रेशो की अपेक्षा मन्तमुँहर्त देशोन कोटि पूर्व वर्ष तक जानना। की प्रपेक्षा एक समय से मन्तमुँहर्त तक जानना, गौर क्षपक श्रेशो की अपेक्षा अन्तमुँहर्त अधेपुद्गल परानर्तन काथ तक ११वां गुण स्थान प्राप्त ग्रन्तर—नाना जीवों की प्रपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तमुँहर्त अधेपुद्गल परानर्तन काथ तक ११वां गुण स्थान प्राप्त	न कर सके। जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना। कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना।
•	<b>t</b> c	E #	

ਲ %
×
_

चींतीस स्थान दर्शन    सामान्य प्राप्ता   प्रकाशीय के नाना प्रकाशीय के एक   समय में समय में नाना जीवों की अपेक्षा   समय में समय में नाना जीवों की अपेक्षा   समय में समय में नाना जीवों की अपेक्षा   र   र   र
पर्याप्त  पर्वाप्त  नाता जीवों की अपेक्षा  इ  भारों गतियों में हरेक में १-२-३ गुण् जान्ता १६ देखो १२-३ गुण् जान्ता ११ नरक-मनुष्य-देवगति में १६ देखो ११ नरक-मनुष्य-देवगति में १६ देखो ११ नरक-मनुष्य-देवगति में १६ देखो ११ नरक-मनुष्य-देवगति में १६ देखो १२ नरक-मनुष्य-देवगति में १६ देखो १२ भेग नरिक में
पयप्ति  पयप्ति  नाना जीवों की अपेक्षा  ह समय में  समय में  समय में  ह समय में  ह समय में  ह समय में  ह समास  ह ह देखो  ह समास
पयप्ति  पयप्ति  नाना जीवों की अपेक्षा  ह  चारों गतियों में हरेक मे १-२-३ गुगु जानना वना—(१) पेज नं ४२७ देखों ७ पर्यात्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं पर्याप्त जानकों नं ० १६-१६-१६ देखों ६ का भंग-को० नं ० १९ देखों ६ का भंग-को० नं ० १९ देखों १२-१८-१६ देखों ६ का भंग-को० नं ० १९ देखों ६ का भंग-को० नं ० १९ देखों ६ का भंग-को० नं ० १९ देखों
स्थान सामान्य ग्रालाप जालाप जालाप जालाप असाम असाम १४ सिमास १४ सिम

कोष्टक नं० ५ द	स्टिक में०	कोष्टक नं
स्टिक में ०	कोष्टक नं	कोव्दक्त नं
* कोव्ह		
	n	, nar

,	१ मंग को० नं० १६- १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	्र भंग पर्यक्षित्रत् जानना	ंकोई १ गति	१ जाति को० नं० १६- १८-१६ देखो	ं सर् १ जाति को० नं० १७ देखो	
<b>D</b>	१ मंग को० नं० १६-१८- १६ देखी	१ भग को० नं० १७ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	कोई १ गति	१ जाति हो <i>०</i> नं० १६-१ <b>न-</b> १६ देखो	१ जाति २ १ जाति को० नं०१७ देखो को० नं०१७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८- १६ देखो
	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-	१=-१६ देखोः (२) तियैच गति में ७-७-६-५४-३-७ कि मंग को० न० १७		४ चारों गति जानना कोऽ नं० १६ से १६ देखो	<ul> <li>१</li> <li>१ काति</li> <li>१ करक-मनुष्य-देवगति को० नं० १६-१८- में हरेक में १६ देखो १ पंचेन्द्रिय जाति जानना</li> </ul>	को नं	६ (१) नरक मनुष्य-देवगति में हरेक में १ इसकाय जानता को० न० १६-१६ देशो
·	१ मंग को० नं० १६- १८-१६ देखो	१ भग को १ न० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	कोई १ गति	१ जाति को० नं० १६- १८-१६ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ काय को० न॰ १ - १ द-१ ह
•	१ मंग को० मं० १६-१८- १६ देखी	१ भग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं १६ से १६ देखो	कोई १ गति	१ जाति को० नं० १६-१=- १६ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८- १६ देखो
	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेफ में १० का भग-को० नं	देखो म अ-६-४-१० ० न ० १७	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग-को० नं० १६ मे १९ टेन्टो		४ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	नो० नं०,१६-१द-१६देखो (२) तिगेन गति में ४-१-१ के मंग को० नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ यसकाय जानना को० नं० १६-१६-१६ देखी
r	४ प्रास् को० नं० १ देहो		५ संज्ञा को० नं० १ देखी	६ गति की० नं० १ देखो	७ इन्द्रिय जाति १ को० न० १ देखो		म काम कोठ नं ० १ देलो

书	n	१ काय को० नं० १७ १ योग को० नं० १६- १ योग को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १६ देखो	
कुमिय-कुश्रुत ज्ञान	ຄ	को० नं० १७ देखो के १ संग को० नं० १७ देखो के १६ -१६ - १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १९ देखो को० नं० १९ देखो को० नं० १९ देखो को० नं० १९ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को०	
		(२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भग को० नं० १७ देखों वे मिश्रकाय योग १, वे मिश्रकाय योग १, कामिताय योग का० वे १, कामिताय योग को० नं० १० देखों १, कामिताय योग को० नं० १० देखों विर्यंच गति में का० नं० १० देखों विर्यंच गति में विर्यंच	185 U
बर् ५८	አ .	······································	
कोष्टक नम्बर	>	१ काय को० नं, १७ देखो को० नं० १७ १ भंग १ योग १ भंग १ योग १ भंग १ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १७ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १७ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १७ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १८ देखो	
रथीन	ſſť	(२) तियंच गति में ६-१-१ के भंग को र नं० १७ देखों १० मी० मिश्रकाय योग १, ये ३ घटाकर (१०) ११) नरक-मनुष्य-देनगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१६-१६ देखों ११ तियंच गति में १० नरक गति में ११ नरक गति में	155 // 01. 015
चौतीस स्थान दर्शन	٤	# # m m m m m m m m m m m m m m m m m m	
चौंत	~	ह योग योग १, या० का योग १, ये २ घटा योग १, ये २ घटा १० वेद को० नं० १ देखो	

चौतीस स्थान दर्शन	યોન	् मोष्ट	( ४२१ ) कोष्टक नं० ५ प		कुमति-कृष्रुत	शान में
~	m	>	አ	سون	න	ប
११ कपाय २५	x	14	१ भंग		सारे	१ भग
नं० १ देखो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो	(१) नरक गति मे	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
	२३-१२ क भग को० नं० १६ देखो			२३ का भग को० नं० १६ देखो		
	(२) तियंच गति में	सारे भंग	१ भंग	(२) तियंच गति में	सारे भंग	१ भंग
-	-82-25-27-28-38	को० नं० १७ देखो	कोन्नं १७ देखो	24-23-24-23-	को अन् १७ देखो	को०नं० १७ देखो
	२४-२० क भंग क्षो० नं० २७ हेखो			२५-२४ क भग को० नं० १७ देखो		
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ भंग	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	- - rit
	२४-२१-२४-३० के मंग	को० नं० १८ देखो	को ०मं० १८ देखो	र्ष-र्थ के भंग	को० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखी
	को० नं १८ देखो			को० नं० १८ देखो		
	(४) देवगति में	सारे भंग	ू भंग	(४) देवगति में	सारे भंग	१ भंग
	२४-२०-२३-१६ के मंग	को० नं० १६ देखो	क्री०मं० १८ देखो	२४-२,-२३ के भंग	को० नं० १६ देखी	मोठनं० १६ देमो
	क्तां न० १६ देखो		•	को० नं० १६ देखा		**********
१२ जान	·	~	~	*	~	~
सुमात-कुथुत इन दान। में से जिसका विचार	दोनों में से कोई १ जिसका			पर्यात, गांत्रथा में हर्ष में पर्यात,वत जानना		
करना हो यह १ क्रमान		~ 1000		•		
जानना	कुशान जानना					
मूनता २—पेज ४२७ पर	,		•	•		
१३ सयम १	र वारों गितयों में हरेक में	~	~	१ चारों पतियों में हरेक में	~	~
	१ ग्रसंयम जानना			१ मसंयम जानना		-
	को० न० १६ से १६ देखो	·		को० नं० १६ से . ६ देखो		,
१४ दर्शन	œ	8 tim	१ दशन	φ÷	१ भंग	१ दर्शन
मनश् द०, नश् दर्शन	(१) नरक गति में			(१) नःक गति में	को० न० १६ देवो	को०नं० १६ देखो
	<b>6</b> ~			२ का भूग को० नं० १६ हेखो		
	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ दर्शन	(२) तियंन मित मं	र भंग	१ दर्शन
	ે- <b>ક-</b> ફે	क्ति० नं० १७ देखो	क्तोठनं० १७ देखो	१-२-२-२ के भंग	कोठनंठ १ व देखी	क्षित्रं १७ देगो

चौतीस स्थान दर्शन	शॅन	( ४२२ कोप्टक नं०	) , ५ द		कुमति-कुश्रुत ज्ञान में
2	m²	>	ъł		<b>y</b>
	(३) मनुष्य गति में २–२	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	<del>-</del>	१ भंग १ दर्शन को० नं० १८ देखो को०नं० १८ देखो
	(४) देवगति में २२	१ मंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	काठ नठ रद दख। (४) देवगति में २–२ के मंग स्मेर मंद्र १६ भेस	१ भंग १ दर्शन को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो
१५ लेखा को० न० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग	१ भंग को०नं०१६ देखो	१ लेख्या को०नं० १६ देखो	नार नट ६६ पदा (१) नरक गति में ३ का भग	१ भंग १ लेख्या को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो
	का॰ न॰ १६ देखा (२) तियैच गति में ३-६-३ के भंग को॰ न॰ १७ देखो	१ भंग को० नं०१७ देखो	१ लेख्या को०नं० १७ देखो	का० न० १६ दला (२) तियंच गति मे ३-१ के भंग को० न० १७ देखो	१ भंग १ लेश्या को० नं १७ देखों को०न० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में ६—३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे मंग कों० नं९ १८ देखो १ मं	१ सेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या	(३) मनुष्य गति में ६–१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में	सारे भंग   १ लेश्या को० नं० १८ देखो को०नं० १८ देखो १ भंग   १ लेश्या
१६ भन्यत्व भन्य, सभन्य	१—३—१ के भग को० नं० १६ देखो २ (१) नग्क गति में २—१ के भंग	कोठ नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	को o नं o १६ देखी १ अवस्या को o नं o १६ देखो	३-३-१ के भग को० नं० १६ देखो २ (१) नरक गति में २ के भंग	१९ देखो को मंग १६ देखो को
	को० नं १६ देखो (२) तिर्यन-मण्डय-देवगति में हरेक में २१ के मंग को० नं० १७-१=-१६ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८- १६ देखो	१ मवस्या को० न०१७- १५-१६ देखो	को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच–मनुष्य–देव गति में हरेक में २–१ के'मंग को०नं० १७-१∈-१६ देखो	१ भंग को० नं० १७-१ <i>८ ब</i> रो०नं० १७-१८- १६ देखो

			· ·		•
चौतोस	चौतोस स्थान दशन	क्टिक न०	ે પૂત		कुमांत-कुश्रुत ज्ञान में
~	rit.	>>	ઝ	( <b></b> )	y 9
E FEBRUARE	m	मारे यंग	० सम्प्रवस्य	·	THE LEAST THE
सासादन,	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	कोठनंठ १६ देखी	मिश्र घटाकर (२)	
मिश्र ये ३ जानना	१-१-१ के भंग	•		रिक गति में	की० नं० १६ देखों को०नं० १६ देखों
-	कीं नं १६ देखी	•	,	१ का भंग	
	(२) नियं - मनुष्य-देव गांत म	भम	१ सम्यक्त	को० नं० १६ देखो	
	व्यर्भ म	~ 건물~	किंठिन० १७-१६-	मनुष्य-देवगात	१ भंग १ स
	1 to 50 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	१८ वस	न कुछ । १५ ५५	4 00 cg 4 cg 4 cg 6 cg 6 cg 6 cg 6 cg 6 cg 6	글 남
	155 22-52-52 OF OF			है-१ प मर्ग होतमें ०१०-१ में	रह वला १६ चला
Se triff	n	% अंग	9 अस्तरभा	C	<del></del>
संशो ससंश	英 相邻一种主 主任(1)	新 対 9 5-12-	# 2 0 0 E - 9 E	ं १० । उराह्म सम्मान्त्रेयान्त्रि	- <del></del>
11411	7	10	वो १९५५ मार्गाला १५९५	म् वर्गेक में	410 10 {4-{4-   Alor   86-{4-
_	१ संजी जानना			१ संजी जानमा	
	कोठनं० १६-१८-१६ देखी	<b>*</b>	*	मोठमं० १६-१८-१६ देखो	***************************************
	(२) तियंच गति में		१ अवस्या	(३) तियंच गति में	१ भंग १ जनस्या
	१-१-१-१ के मंग	को०नं० १७ देखो	क्तें किं १७ देखो	१-१-१-१ के भंग	को० नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो
	को० नं० १७ देखो			को० नं० १७ देखो	
१६ ग्राहारक २	~	~	~	~	~
प्राहारक, मनाहारक	नरक-देव गतियों में	对比	को०नं० १६ ग्रीर	नरक-देव गति में	को० नं० १६ श्रीर को०नं० १६ श्रीर
	हर्क में	१६ देखो	१६ देखो	हरेक में	१६ देखो
	१ माहारक जानना				.,
	र १६				, ,
	नियंच-मनुष्य गतियों में	~	~	नुष्य गी	~
	हरेक में	को० नं० १७-१न	को०मं० १७-१ व	हरेक में	को० मं० १७-१ मो०मं० १५-१ व
	१-१ में भंग	रेखो	देखो	१-१-१-१ के मंग	देखो
,	क्ती० मं० १७-१८ देखो			को० नं० १७-१८ देखो	·
२० जनमोम	mr i	१ भंग	१ उपयोग		१ भंग १ उपयोग
शानायमा ३.	(१) नरक गति में	3-४ के मंगा में से	३-४ के भंगों में	(१) नरक गति मं	३ का भग जानना ३ के मंगों में से
is burbuilt		कांद्र १ मग जानमा	उपयोग	भग	मोद ? उपनोग
	का० नं १६ के ४-५ के	,		निवन्व १६ के ४ के भंग में	जाननाः

_
_
مر
፠፠
_

चौंतोस स्थान दश्न	दर्शन	। कोष्टक नं	น - พ		कुमति-कुश्रुत	ज्ञान में
2	m	>	ਲ	us	9	y 
	हरेक मंग में से कुज्ञानों में से जिसका विचार करो	_		से पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान (दोनों में से कोई १) घटाकर े का गंग		
,	भार धाड़कर सप फुशान घटाकर ३-४ के			G.	ļ.	, ज्यागोग
	(२) तियंच गति में	१ भंग		(र) तियव गात म २-३२-३-३-३ के भंग	८ - ३ - ३ - ३ - ३ - ३ - ३ २ - ३ - ३ - ३ - ३ - ३ - ३	8-8-8-8-8-8-6
	२-३ के भंग को० नं०	२-३ के मंगों में	२-३ के भगों	को० नं० १७के ३-४-४-	भंगों में से कोई १	一部 #inji # #
	भें से उपर के समान कोई		<u> </u>	र-० क हरक मंग में से पयितिवत बोनों		पाइ ८ ठाया जानना
	१ कुमान (दोनों में से)			मुजानों में से कोई १		
	बटाकर ५-३ क भग जानना			कुशान घटाकर २-३-३- २-३-३-३ के भंग		
	३-४ के भंग-उपर के	रें के भंगों में	.३-४ के भंगों में	जानना		
	नरक गति के समान यहां	से कोई १ भंग	से कोई १	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ जपयोग
	भौ जानना भोगभि में		डपयोग	३-३ के भंग-ऊपर के निगंच गति के समात	पयप्तिवत्	३-३ के मंगों में से कोई १
	३-४ के भंग-जपर के		*	जानना		उपयोग जानना
	समान जानना			(४) देवगति में	१ भंग	१ उपयोग
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	**	`#T	३-३ के भंगों में	३-३ ले भूगो
	३-४-३-१ क भग-ऊपर के तियँच गति के समात	अपने अपने स्थान   के सारे भंग		नरक गांत के समान जानना	सं कांद्र १ भंग	म स काइ १  उपयोग जानना
		जानना		•	•	
	(४) देवमति में	१ भंग	१ उपयोग			
	३-४ के भंग नरक गति	३-४ के भंगों में	३-४ के भंगों में			
	क समान जानना	स काइ १ भग	स काई १ उपयोग			
२१ ध्यान ह		     मारे भंग	थानमा १ ध्यान	ļ	بتند جبيد	१ हमान
श्रातंच्यान ४, रोद्र-	(१) चारों गतियों में हरेक में	नं० १६ स	को० नं० १६ से	म्राज्ञा वि॰ घटाकर (८)	की० नं० १६ से	को० नं० १६
ध्यान ४, श्राज्ञाविचय धर्मेच्यान १ ये (६)	₩ ₩ ₩ ₩	- देखो -		(१, चारों गतियों में हरेक में द का भंग-को० न० १६	१६ देखो	से १६ देखो

	_				
				١	
			,		
	,	1	,	•	
			,		
•	_				

चौतीस स्थान दशेन	न दर्शन	कोष्टक	नं ० ५ द		कुमति-कुश्रुत	ज्ञान में
~	mr .	>	x	Ugr	g ,	u
२२ मानव ५५		सारे भग	१ भग	řχ	सारे भंग	१ मंग
ग्रा० मिथ्रकाय योग १,	•			मनोयोग ४, वचनयोग ४		
प्राहारककाय योग ?	वै० मिश्रकाय योग १,			<u>؞</u> ٠		
ये २ घटाकर (१५)	•			वं काय योग १, ये		
	ये ३ घटाकर (५२)			१० घटाकर (४४)		
		सारे भंग	१ भंग	(१) नरक गति में	सारे भंग	१ भंग
	∀€-ゞ४-४० 帝 ዣ町	को० न० १६ देखो	को० नं० १६	४२ का मंग-को० नं०	को० नं० १६ देखो	कों नं १६
	को० नं० १६ देखो		द्रखो	१६ देखो		देखो
	(२) तियंच गति में	मारे भंग	१ भंग	(२) तियैच गति में	सारे भंग	ं१ भंग
	34-5x-25-35-35	नो० नं० १७ देखो	को मंं १७	२४-६%- १-३६-५ वर्	कों मं १७ देखो	को० नं० १७
	生 32-82-07-28-38		दक्षो	35-33-37-37-36-36-		देखो
	भंग को० नं० १७ देखो			४३- : न के मंग कोठ न		
	(३) मनुत्य गति में		१ मंग	१७ देखो		
	ልጸ-ሽጸ- <b>0 ሽ-</b> ሮጲ ፡ ደ-ያሽ	कों नं १८ देखो	को नं० १८	(३) मन्दय गति में	सारे भंग	र भंग
	्री के भंग को० नं० १८		देखो	४४-३६-४३- ज मेम	मो० नं० १८ देखो	को नं० १ द
	- देखे			को० नं० १८ देखो		देखो
	(१) देवगति में	भंग	१ भंग	(४) देवगति में	सारे भंग	१ भंग
*	12-32-8	कों नं १६ येवी	को० नं० १६	४३-३८-४२-३७ के भंग	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६
	के भंग को० नं० १६		देखो	को० नं० १६ देखो		देखो
	देखो					
२३ भाव ३२		सारे भंग	ं भंग	CY m	सारे भंग	१ भंग
7.77	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६
विनार करो मो	१ - २४-२२-२३ के मंग को०		देखो	३३ का भंग		सेतो
कुगान, दर्शन २,	मं० १६ के २६-२४-२५			को० नं० १६ के २५ के		
नंहिष ४, मित ४,	के हरेक भंग में से जिसका		•	भंग में से पयािं प्रवत् शेष		
नतपात ४, निय ३,	विचार			२ क्जान यटाकर २३		**********
लेडपा ६, मिच्यादर्शन १,				का भंग जानना		
मनंतम १, मजान १	घटाकर	ī.		(२) तियंच गति में	सारे भंग	१ भंग
	भंग जानना			र३-५४-२६-२६-२१-२२ को० नं०	की० नं० १७ देखो	को० नं० १७
	*					। दल।

<u> </u>
×200
_

क्मति-कृश्रुत ज्ञान में	<b>រ</b>	सारे भंग १ भंग १ भंग सारे भंग १६ देखो को० नं० १६ वेखो को० नं० १६ वेखो को० नं० १६
	UY	२४-२४-२३-२१ केभंग को० नं० १७ के २४-२५-२७- २७-२२-२३-२५-२४-२४- २२ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान घटाकर २३-२४-२६-२६- २१-२२-२४-२४-२१-२१ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में २६-२७-२३-२१ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान घटाकर २६-२७- २३-२१ के भंग जानना (४) देवगति में २१-२१ के भंग जानना (४) देवगति में २१-२१ के भंग जानना (४) देवगति में २१-२१ के भंग जानना पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान घटाकर २५-२३-२१-२३-
त्र् <i>।</i> हन्०५८	ઝ	<ul> <li>१ मंग</li> <li>देखो नं० १७</li> <li>देखो नं० १८</li> <li>देखो नं० १९</li> </ul>
कोष्टक नं०	>>	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो
	กา	(२) तियंच गति में २३-२४-२६-२७-२६- २५-२३-२४ के भंग को० नं० १७ के २४-२५-२७ के हरेक भंग में से ऊपर के समान १ कुजान और ३१-२६-३०-२७-२५-२६ के हरेक भंग से ऊपर के समान शेष २ कुजान घटा- कर २३-२४-२३-२४ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में २६-२७-२५-२२-२६ के भंग जानना (३) कुजान घटा- कर २१-२६-३०-२५-२६ के समान शेष २ कुजान घटा- कर १६-२७-२५-२१-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ कुजान घटा- कर १६-२७-२५-२३-२४- २४ के भंग जानना (४) देवगति में २३-२१-२२-२१-२३-२४- २७-२४-२६-२४-२२-३१-३४- २७-२४-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२१-२२-२२
चौंतीस स्थान दर्शन	૪	भाव ३ ये (३२) जान्ता भाव ३ ये (३२) जान्ता
ं चौंतीस	. <b>~</b>	मान ३ मे

```
प्रनार—नाना जीवों की ग्रपेक्षा ग्रन्तर नहीं। एक जीव की फ़पेक्षा सादि जुजानी ग्रन्तेमुहुतें से देशोन १३२ सागर काल तक उपशम या
  काल--नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानमा । एक जीव की अपेक्षा सारे कुजानी अर्त्तमुह्ते से देशोच् अर्थ पुद्गल पराव्तैन काल तक
   ,, ११७-१११-१०० प्र० का उदय जानना । की० नं० २६ देखों ।
   १४५-१४५-१४५ प्र० का सत्व जानना । को० नं० २६ देखो ।
   बंध प्रकृतियां—१ते २२ ३२ मुएए० में कम से ११७-१०१-७४ प्र० का बंध जानता । को० नं० २६ देखी ।
मूचनाः – (१) कुमित-कुश्रुत इन दोनों ज्ञानों को मिश्र गुएए स्थान में मिश्र संज्ञा हो जाती है।
                                    मुचताः—(२) इन दोनों नानों को मित्र गुण स्थान में मित्र संज्ञा हो जाती है।
   क्षयोपज्ञम सम्यन्हिट ज्ञानी वनता रहे।
   सत्व प्रकृतियां— ,, ,, ,, ,,
  स्वय प्रकृतियां--" " "
   संस्था-अनन्तानन्त जानना ।
  स्परान-सर्वतोक जानना ।
  क्रेत्र —सर्वलोक जानना ।
```

जाति (मीनि)—-४ लाख योनि जानगा कुत--१६६॥ लाख कोटिकुल जानगा।

चौतीस स्थान दशंन	् कोष्टक	ं १८ क मं० ५९	क्रअवृधि ज्ञान	कुत्रवधि जान (विभंग जान) में
o स्थान सामान्य श्रालाप	पयिष		0	श्रपयक्ति
	नाना जावों की ग्रपेक्षा	् एक जीव की ग्रपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	
6 2	m	>>	<b>5</b> 4	は-め-ÿ
१ मुर्गा स्थान १-२-३ मुर्गा० जानना	ें मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र ये ३ मुर्सा० चरते महिमों से सन्तर्मा	सारे गुरा स्थान	१ मुरा० जानना	सुचना—यहां पर
१ जीवसमास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	पारी गारीयों ने जानता १ संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त चारों गतियों में जानना	~	~	- E 157 (
३ पर्याप्ति को० न०१ देखो	् चारों गतियों में हरेक में ६ का मंग कोट नं० १६ से १६ हेन्सो	१ भंग को० नं० १६ से ११६ देखो	१ भंग का० नं० १९ से १९ देखो	म मरसा नहीं होता
४ प्रास्त नो० नं० १ देखो	: : <del> </del>	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	क का	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	
६ गति को० नं० १ देखो	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति को० नं० १६ से १६ देखो	१ गति को० नं० १६ सं १६ देखो	
७ इन्द्रिय जातिः पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ चारों गतियों में हरेक में १ संशी पंचेन्दिय जानना को० न० १६ से १९ हेखो	१ जाति को० नं० १६ से १६ देखो	१ जाति को० नं० १६ से १६ देखो	

चौतीस स्थान दर्शन	ं की	ट्स नं० ५६	कुअवधि ज्ञान (विभंग ज्ञान) में	जान) में
3 3	m	>	,	<b>は-</b> の−3
काव १	१ चारों गतिगों में हरेक में	~	~	
	१ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १६ देखो		12.00	
१० १० मनोयोग ४, वचनयोग ४,	१० चारों तियों में हरेक में	१ भग को० नं० १६ से १६ देखो	की० नं०	
म्रो॰ कायमोग ?, वै० कायमोग ?,	६ का मंग कोठनं० १६ से १६ देखो		* **Automotive	
०) जानना	r	nin 6	tu do	
१० वद क्षा क्षा १ देखो	र (१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	
	१ मगुंसक वेंद जानना			
	का० न० १६ दखा (१) तिर्यंच-मनुष्यगति में-हरेक में	को० नं० १७–१८ देखो	को० नं० १७-१ देखो	
	र-२ के भंग को० मं० १७? हेस्सो			
	(३) देवगति में	सारे भंग	~ वेद	
	२-१ के भंग	को० नं० १६ देखी	को० नं० १६ देखो	
i C	का <b>० न० १६ द</b> खा २%	माने भंग	% भंग	
१९ मापात कोठ नंठ १ स्तो	र्र · (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	को० नं । १ = के समान	कोठनं० ५ द देखें।	
	क्षी नं प्र के समान जानना	1	- 1	
need annual	(२) तियव गति म भः २३ - २४ - ३५	सार भग	्रभग कोठमं० १७ हेम्बो	í
	スメースメースペースでいる コーカイの コーカイ ヨーカー コーカー マーカー アーカー アーカー アーカー アーカー カーカー アーカー ア			
१२ जान	~	~	~	
फुषयमि जान (निभंग) ज्ञान	चारों गतियों में • ऋमतीः (सिलंग) नाम सामना			
अ मीगा	83414 (1444) 4114 (1744)	~	~	
ग्रमांग	चारों गितगों में हरेक में	•	,	

चौंतीस स्थान दर्शन	(; ४३० कोष्टक मं०	४३० / मं० ५८	कुञ्चवधि ज्ञान (विभंग ज्ञान में)	ग शान में)
۰	tt.	>	*	<b>ప-</b> ຄ-ప్ర
	् १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो			
१४ दर्शन को० नं० १६ देखो	त्र १८६४ में जनकों में हरेक में २८३ के जंग	१ भंग जोत में १६ से ११ जेली	१ दर्शन को मं० १६ से १९ सेको	
•	को०नं० १६ में १६ देखो	2		
९२ पश्य। को० नं० १ देखो	ह (१) नरक गति में	१ भंग   को० नं० १ <b>६</b> देखो	१ लेख्या को० नं० १६ देखो	
	३ का भंग को० नं० १६ देखी			
	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ लेखा	
	६-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
	काठ नठ १७ दल। (३) मनत्य गति में	माने थंग	9 <del>2</del> 5711	
	६-३ से भंग	को० नं० १ न देखो	को० नं० १ न देखो	
	कोठ नठ १५ देखो (८) २६- २			
	(४) दवगति म १-३-१ के भंग	१ भंग को० न० १० हेलो	१ लेश्या	
	को० नं० १६ देखो			
१६ भव्यत्व भव्य, सभव्य	१ चारों गतियों में हरेक में	१ मंग क्री० नं० १६ से १६ देखो	१ प्रवस्था को० नं० १६ से १६ देखो	
	२–१ के भंग को० नं० १६ से १६ देखो			
१७ सम्यक्त	m	नारे भंग	१ सम्यक्त	
मिथ्यात्व, सांसादन, मिश्र	चारों गतियों में हरेफ में	को० नं० १६ से १६ देखो	को नं १६ से १६ देखो	
	१-१-१ के मंग	,	·	
% Hi.	कों नं १६ से १६ देखो			
~ ti'h	# ** ~ * d	~	~	
	नारा गातथा म हरक म १ मंजी जानना	का० न० १६ से १६ देखो	कों० नं० १६ से १६ देखो	
	को० नं १६ से १६ देखी			

वेभंग) ज्ञान में	ば	
कुञ्चवधि ज्ञान (विभंग) ज्ञान में	5⊀	१ उपयोग कोरनं, १६ देखो १ ध्यान १ भंग कोठ नं० १६ देखो १ भंग कोठ नं० १७ देखो १ भंग १ भंग कोठ नं० १६ देखो
) %	>	१ मंग को०नं० १६ से १६ देखो सारे मंग को० नं० १६ देखो सारे मंग को० नं० १६ देखो सारे मंग को०नं० १८ देखो सारे मंग को०नं० १८ देखो
( ४३१ कोष्टक म <b>०</b>	m	श्वारों गतियों में हरेक में श्वारक जानगा को० न० १६ से १६ देखो ४ वारों गतियों में हरेक में झ-४ के भग को० न० १६ से १६ के हरेक मंग में १५-६ के हरेक भंग में से कुमति-कुत्रुत ये २ कुजान घटाकर हरेक में ३-४ के भंग जानगा को० न० १६ से १६ देखो ११) नरक गति में ४२-४६-४४-४० के भंग को० न० १६ देखो १३) मनुष्य गति में ११-४६-४२-५०-४५-४१ के भंग को० न० १६ देखो १३) मनुष्य गति में ११-४६-४२-५०-४४-४१ के भंग को० न० १६ देखो १४) देवगति में १४०-४५-४१-४६-४४-४० के भंग को० न० १६ देखो १४) देवगति में
चोतोस स्थान दर्शन	0"	१६ ब्राह्मरक व्राह्मरक रु उपयोग १, द्यान १, द्यान ४, प्रोद्र ध्यान ४, प्राज्ञा विचय धर्म ध्यान १ मे (६) २२ ब्राह्मय व्राह्मरक काययोग १, ब्राह्मरक काययोग १, ब्राह्मरक काययोग १, ब्रो० मिश्रकाययोग १, ब्रो० मिश्रकाययोग १, क्री० मिश्रकाययोग १,

र नो ०नं ० ५ द देखो	m-	51		
			<b>2</b> 4	ឋ- <b>ଶ-</b> -
	३२ क गति मे	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
(र) तियु	२४-२२-२३ के भंग को० नं० १६ के २६- २४-२५ के हरेक भंग में से कुमति-कुश्रुत ये २ कजान घराकर २४-२३-३ के भंग जातना			
, AF AF	् युवान पदानर (२५५५ में पान पाना) (२) तियेच मति में २६-२७-२६-२४-२३-२४ के भंग कोठनं० १७	सारे भंग नो० नं० १७ हेन्बरे	१ भंग कोन्नं, १७ हेस्सो	
r C	के ३१-२६-३०-२७-२५-२६ के हरेक भंग में से अपर के समान २ कुजान घटाकर २६-२७- २८-२५-२३-२४ के मंग जानना			
(२) मनुत २६-	त्य गति में -२७-२८-२५-२३-२४ के मंग कोठ नं० १८	सारे'भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
A CANON (X)	भ ४८ - १८ - १८ - १८ - १८ - १८ - १८ - १८ -	सारे भंग	, i,	`
सी के	२ २ १ - २ १ - २ ३ - २ ४ - २ २ - २ ० - २ १ के भंग को० नं० १६ के २ ४ - २ ३ २ ४ - २ ७ - २ ४ - २ ६ -	को अनं ९ ६ देखो	त्रा को० नं० १६ देखो	
सम्म १४४	४ -५४-४२ क हरक मंग में से अपर क समान २ कुन्नान षटाकर २ १-२१-२२-२५-२३- २४-२२-४०-२१ के मंग जानना			

\$ \$ \$ \$ \$ \$	प्रवगाहना—को० नं० १६ से ३४ देखों। बंध प्रकृतियां— १ते २२ ३२ गुए।० में कम से ११७–१०१–७४ प्रकृति का वन्य जानना, """ वद्य प्रकृतियां—"""" १९७–१११–१०० प्रकृति का उदय जानना, """ सत्य प्रकृतियां—""" १४८–१४५–१४७ प्रकृति का सत्य जानना, """
B 0 0 0	सक्या—अअअस्थात आगा। क्षेत्र—लोक का ग्रसंख्यात जानना। स्पर्शन—नाना जीवों की ग्रपेशा सर्वलोक जानना। एक जीव की ग्रपेक्षा लोक का ग्रसंख्यातवां भाग मारियांतिक समुद्धात की ग्रपेक्षा घसनाडी स्पर्शन—नाना जीवों की ग्रपेशा सर्वलोक जानना। एक जीव की ग्रपेक्षा लोन नी ग्रपेक्षा जानना। की ग्रपेक्षा जानना ग्रीर दैराजु १६वें स्वर्ग का देव ३२ नरक तक जाने की ग्रपेक्षा जानना।
m m	काल – नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक पनथ ते १५ भाग भाग प्रकाल परावर्तन काल तक कुअवधि ज्ञान प्रन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक कुअवधि ज्ञान प्राप्त न कर सके ।
ш. ш. ш. ж	जाति (योति)—-२६ लाख योगि जानना । (विगत को० नं० २६ देखो) कुल—-१०=॥ लाख कोटिकुल जानना ।

	मति-श्रत ज्ञान में
( & £ & ) ·	कोष्टक नं० ६०
	चौतीस स्थान दर्शन

ह समय में नाना जीवों की अपेक्षा (प्रांच की वाना (एक जीव के ताना वानों की अपेक्षा) (र जीव के नाना समय में नाना जीवों की अपेक्षा) (र जीव के नाना समय में समि में र जातना के सारे ग्रुप्प (र) नरक-तियंच-देवगति प्रांप्तवंवत् जानना के सारे ग्रुप्प वां ग्रुप्प के सारे ग्रुप्प वां वां ग्रुप्प वां ग्रुप्प वां वां वां वां ग्रुप्प वां वां वां वां ग्रुप्प वां		£1.4			C	410-% U 3114 H	श्रांच म
था समय में नाना जोवों की अपेक्षा समय में नाना जोवों की अपेक्षा समय में समय में नाना जोवों की अपेक्षा समय में जाना के सारे गुण्ण के सारे गुण्ण में से प्रिया गुण्ण ने सारे गुण्ण ने सारे गुण्ण नाना है से समास कोण्य ने दिन में से प्रिया गुण्ण जानना है समास कोण्य ने दिन में से दिन में से प्रिया गुण्ण जानना है समास कोण्य ने दिन में से प्रियं माने में से प्रियं माने स्वापति कोण ने दिन स्वापति में से प्रियं माने से प्रियं माने से प्रियं माने में माने माने माने माने माने माने माने माने	<del>,</del>	य ।प्त			श्रपयो प्त		
सारे गुरा (१) मरक-तियंच-देवमति प्रयोप्तवत् जाना के सारे गुरा के सारे गुरा के मुरा के मिल में भोग- भीग भी में श्वा मुरा के मिल में श्वा मुरा के मिल में श्वा मुरा के मिल में हें समास के मिल में के स्वा मुरा के मिल मुरा के मिल में हें समास मिल में हें समास मिल में हें समास मिल में हें हो हो में हें समास मिल में हें समास मिल में हें हो हो में हें हो हो में हें समास मिल में हें हो हो में हो में हें हो हो में हें हो हो में हें हो हो में हो में हें हो हो में हो में हें हो हो हो में हें हो हो में हो	नान	। जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
गुण् अपने अपने स्थान के गुण् में से अपने स्थान में अथा गुण् जानना के सारे गुण् के मुण् में से अपने स्थान में अथा गुण् जानना के मुण् के गुण् में से अथा गुण् विपंच गति में भोग- भीम में अथा गुण् में से अपने मुण् में अया गुण् में से अपने मुण् में अया गुण् में सिम में अथा गुण् में सिम में अया गुण् में सिम में अया गुण् में अपने में अपने में सिम		m <sup>r</sup>	>>	*	USP	9	u 
<ul> <li>१ समास की० नं० १६ (१) नरक-मनुष्य-देवगित को० नं० १६-१८-।</li> <li>हरेक में को० नं० १६ (१) नरक-मनुष्य-देवगित को० नं० १६-१८-।</li> <li>त जानना १६ देखो १६ देखो १ संजी पंचेन्द्रिय प्रमास प्रमास १६ देखो ११६</li> <li>१ संजी पंज प्रपर्याप्त को नं० १७ देखो छोनना को नं० १७ देखो</li> <li>को० नं० १७ देखो</li> </ul>	(2) 4 (3) 4 (3) 4 (3) 4 (3) 4 (4) 4 (5) 4 (5) 4 (6) 4 (7) 4 (7) 6 (7) 6 (8) 7 (8) 7	हे से १२ तक के गुस्तं रक गति में प्रया प्	सारे गुरा श्रपने श्रपने के सारे गुरा जानना	8 मुस्तः अपने अपने स्थान के मुस्तः में से कोई १ मुस्तः	२ (१) नरक-तियँच-देवगति में ४था गुरा० तियँच गति में भोग- भूमि में ४था गुरा० (२) मनुष्य गति में ४था ६ठा गुरा० भोगभूमि में ४था गुरा० जानता	सारे गुरा पर्याप्तवत् जानना	१ मुसा० पर्याप्तवत् जानना
	फ से ४ वा ४ फ ४ (४		१ समास को० नं० १६ १६ देखो	१ समास को० नं० १६ से १६ देखो	१ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय श्र गयिति (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की श्रपेक्षा १ संज्ञी पं० श्रपर्याप्त जानना	१ समास को० नं० १६-१८- १६ देखो १ समास को नं० १७ देखो	१ समाः को० नं० १८-१६ । १ समास् को० नं०

<u>म</u>	ប	ļ.	१ मंग को० नं० १६- १८-१६ देखो	१ भंग को० न० १७ देखी	१ मंग को० नं० १६- १८-१६ देखो			त् भग को० न० १ देखो	
मति श्रुत ज्ञान	9		- 5 & }	म ७ देखो	१ भंग को० नं०१६-१६- १६ देखो	१ भंग को ३ नं० १७ देखो	त्र नो० नं देखो	१ मंग साको० नं १७ देखो	
	us <sup>s</sup>		३ १ भ (१) नरक-मनुष्य-देवगतिको० नं० १° में हरेक में ३ क्टा धंग-को० नं०	न-१६ देखी तिर्यंच गति में मि की प्रपेक्षा भंग जानना	भंग ग्राति ग्रि	देखो ( ) तियंच गति में भोगभूमि की श्रपेक्षा ७ का भंग जानना को० नं० १७ देखो	8 (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१६ देखो		
.४ ) नु०६०	×		१ भग को  न ० १६ से १९ देखो		१ भंग को० न० १६ से १६ देखो			१ भंग १ को० नं० १७ देखो	
( ४३५ कोष्टक नं०	×	-  - ,	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	•	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	•	१ मंग को० नं० १६-१६ं देखो	१ मंग को० नं०१७ देखो	
		m.	ृ नारों गतियों में हरेक में के इ. का भंग-को० नं०   १	१६ से १९ देखों	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग-को० नं० १६ से १६ देखी		४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग-को० नं० १६-	१६ देखो (२) तियंच गति में ४-४ के मंग को० नं , १७ देखो	
	चोतीस स्थान दशन	~	यः वि		् १ देखो		>9		
	चौतीस	~	३ पय दित कोः नं० १ देखी		ें ४ प्राया को० नं० १ देखो	,	४ सन्तर		-

मति—श्रुत ज्ञान मे	, Tr	सारे भंग नं	में में
मति-		<u> </u>	भ की
	ur	(३) मनुष्य गति में ४-०.४ के भंग को० न० १६ देखो ४ चारों गति जानना को० न० १६ से १६ देखो १ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	
४३६ ) मं० ६.०	×	<b>१</b> भंग को०नं० १८ देखो १ गति १ को०नं० १६ से १ <b>६</b> देखो	को० नं० १६ से १८ देखो १ योग
(    ४३६ कोष्टक नं ०	<b>&gt;</b>	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ गति १ को० नं० १६ से १६	कोठनं० १६ से १६ देखो १ भन
दर्शन	m	(३) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग को० नं० १८ देखी ४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १६ देखों १ पंचेन्द्रय जाति जानना १ पंचेन्द्रय जाति जानना १ पंचेन्द्रय जाति जानना को० नं० १६ से १६ देखों को० नं० १६ से १६ देखों	१ चारों गतियों में हरेक में १ घसकाय जानना को० नं० १६ से १६ देखी श्री मिश्रकाययोग १, वे० मिश्रकाययोग १, सा० मिश्रकाययोग १, कामिए काययोग १,
चौतीस स्थान दर्शन	c-	देखो देखो प जाति	य. १ १ १४ को जे ने ७ २६ देखो
ir I	~	६ मति को० नं० १ ७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रि	द काय. १ योग कोर

म श्रा	រេ	१ योग को०नं० १६-१६ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो		१ योग को०नं० १८ देखो	tu	क्रांग्नं १६ देखो		१ वेद क्षो०नं० १७ देखो	•	१ वेद सरेत्रं १०० मेन्स	r.		मिठिन्ठ १६ देखी		क्तीवनंव १६ देखो	
मति-श्रुत इ	ອ	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	दुशः १ भंग स्रपेक्षा कोठनं ० १७ देखो		सारे भंग को०नं० १ द देखो	्र भंग	किं नि १६ द्वा		भू भूग को० नं० १७ देखो		सारे भंग कोर बंद १० वेसो	5 7 2 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7	सारे मंग	काठ नव १६ दवा	41	माठन ६ देवा	
स्वाध्याय स्वाध्याय पर		तम हिं तथः है । जिसने	प्रता स्रोतेसा	१-५ क भग जाननी को०नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग	ख}, ख}	हप-नेतु सक्त बंद जानन। १) नरक गति में	१ का भंग को० नं० ६ देखी	(२) तियैव गति में केवल भोग भीम की अपेश	१ पुरुष वेद जानमा को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में	को० नं०. १ द. देखो	(४) देवगति में	१-१ क भग को० नं० १६ देखो	33	(१) नरक गांत भ १६ का भंग	
स्वाध्याय किया है से मुक्त हो गया। यह है। कि आह्न जानना, भिन्न जा	। वहः । स्त्राष्ट्र । को नक्षर प्	संसार बन्धन पाय का ऋषे पर से मिन्न पर में रागादि		१ योग	: देखो	hr do	क्रिनि १६ देखो		० १७ देखो	१ वेद कोठनं० १८ देखो	,	þr	को०नं० १६ देखो		१ मंग	क्तिंग्न १६ दला	
न करना, रागादि  में रमके हैं।  स्वाच्याय से हैं। स्वपर निवेन  मूच्छि स्याग क	्रेट्डिंग्ड हें हो ् र्ग कार	्विबेक होता पर पदार्थी में ए। है। प्रनादि		सारे भंग	को० नं० १८ देखो	१ भंग	को॰ नं० १६ देखो	१ भंग	मो० नं० १७ देखो 	सारे मंग को० नं० १८ देखो	•	सार भंग	कोण्नं १६ देखो	an de la Calabración	रे नंग	० नं ० १६ देवी	Rate-lan-
वृद्धि अनारमीय पर	दार्थों में िंध पूज साद जी कत राय स्थान	उनभी रही। य जुल्लक ो बर्गी प्रकारक दर्शन		को० नं० १७ देखो (३) मनस्य गति में	६-६-६ के भंग को० मं० १ द देखों	m	(१) नरक गति में १ का भंग	कोठ नंग १६ देखो (२) तिर्यंच गति में	ें ३-२ के भंग कोठ नंउ १७ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-१-२		भाव नव (च दखा (४) रेचमति में	२-१-१ के भंग	मां न० १६ दत्ता	20.	(१) नरक गति में	मोर मा १६ देवो
सरधना (जिल् नाम पुस्तक पीर	ું હું દ	मृ० पी०)	- ·			m	को० नं० १ देतो		nusi nusikan n	and and an artifact					११ मृत्याम २१	7	(४४)

ज्ञान में	វ	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	•>	१ संयम	को० न० १६- १६ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो	१ सयम को०नं०१ द देखो
मति-कुश्रुत	9	सारे भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं <sup>,</sup> १६ देखो	~	१ भंग	को० नं० १६- १६ दखो	१ भंग को० नं० १७ देखो <sup>३</sup>	सारे भंग को० नं० १८ देखो
	05,	(२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा १९ का भंग को० नं०	१७ दखा   (३) मनुष्य गति में   १६-११-१६ के भंग   को नं <sub>० १</sub> ८ हेन्ने	देवग -१६-१ नं	नारों गतियों में हरेक में पर्यापतवत् जानना	३ शस्यम, सामायिक,	छेदोपस्थापना ये (:) (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना	म भः या	
४३६ ) नम्बर् ६०	*	ने भी भ	१ भग को०नं०१़द देखो	१ भंग को०नं० १६ देलो	<b>~</b> ⋄	१ संयम को० नं० १६-	९६ दखा १ संयम को०नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १ द देखो	,
( ४३ <sub>द</sub> कोष्टक <sub>़</sub> नम्बर्	>	सारे भंग को० न०१७ देखो	तार मग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं १६ देखो	~	१ भंग को० नं० १६- ०० नेको	न ७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो ह	;
दर्शन	m	(२) तियंच गति में २१-१७ २० के भंग की म्नं० १७ देखो	१९-१७-११-११-७- १९-१७-१३-११-१३-७- ६-५-४-३-२-१-१-०-२० के भंग को े नं० १ द के	समान जानना (४ देवगति में २०-१६-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	१ वारों गतियों में हरेक में दोनों में से कोई एक ज्ञान जिसका विचार करना हो	वह १ शान जानना ७ (१) नर <i>४</i> -देवगति में हरेक में १ असंध्य जानन	कोठ मं ९६-१६ देखो (२) तियंच गति में १-१-१ के भंग कोठ मं ० १७ टेम्से	-< भे देखो	
चौतीस स्थान दर्शन	~				१२ ज्ञान मित-श्रुत ज्ञानों में से जिसका विचार करना हो वह एक ज्ञान	भागता १३ सयम को० नं० २६ देखो		,	

नान में	រេ 📗	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	१ दशन को०नं० १७ देखो	१ दर्शन शोत्नं०१ द देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	१ लेख्या कोठनं० १६ देखो	१ सेरया को०नं० १७ देखो	१ लेख्या को०नं० १८ देखो	१ लेख्या कोठनं० १६ देखो	
मति-श्रुत ज्ञान	ອ	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नंः १७ देखो	सारे भंग को॰ नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
	US <sup>o</sup>	३ (१) नरक गति में : के भंग	को०नं० १६ देखो (२) तियैच गति में भोग भूमि की क्रपेक्षा ३ का मंग	कार्टिंग १७ देखा (३) मनुष्य गति में ३–३–३ के भंग कोर नं० १८ देखो	(४) देवगति में ३–३ के भंग को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का मंग	को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा १ का भंग	कार पर प्या (३) मनुष्य गति में ६-३-१ के मंग को० नं० १ द देखो	(४) देवगति में ३-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो	
( ° %	<b>5</b> 4	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	देखो	१ दशन को०नं० १ द देखो १ दर्शन	देखो	१ लेख्या को०नं० १६ देखो	१ लेख्या को०नं० १७ देखो	६ परवा कोठनं० १ द देखो १ लेखा	की०नं० १९ देखो	
( ४३६ कोष्टक नं०	>>	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारभग को <sup>ऽ</sup> नं०१६ देखो १ भंग	१६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को० नं०१७ देखो	नी० नं० १८ देखी १ भंग	को० नं० १६ देखो	
दर्शन	mr .	३ (१) नरक गति में ३ का मंग	को० नं० ६ देखो (२) तियंच गति में ३—३ के भंग को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति म ३-३ -३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में	र का भग को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग	को० नं १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	(३) मपुष्य गात म ६-३-१-३ के भंग को०नं० १८ देखों () देवगति में	१-३-१-१ के भंग को०नं० १६ देखो	
चींतीस स्थान दर्शन	6*	र्थान को० नं० १६ देखो				नं० १ देखो			,	-
र्चाती	~	१४ दर्शन को० नं				१५ लेस्पा को नं				

		۰۶۶ )			Ć	
र्वातीर	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं०	O (j) O		मति-श्रुत ज्ञान	ज्ञान में
~	m	>	*	, ,	ອ	u·
१६ मन्यरन १	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य ही जानता	१ भव्य	१ भव्य	१ चारों चतियों में हरेक में १ भव्य ही जानना	१ भव्य	. १ भव्य
१७ सम्पक्त्व ३ उपराम, क्षापिक, क्षयोगश्चम ये (३)	को० नं० १६ से १६ देखो १ (१) नरक गति में ३-२ के भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्ष्त्व को०नं० १६ देखो	कों oनं o १६ से १६ देखी २ उपशम घटाकर (२) (१) नरक गति में	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
		खो	१ सम्यक्ष्त्व को०नं० १७ देखो	१ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तियैच गति भं भोग भूमि की श्रपेक्षा	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्षत्व को०नं० १७ देखो
	३ के भंग खो	भंग १ - देखो भंग		२ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-२-२ के भंग	सारे भंग को० नं७ १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं ११ देखो
•	२-३-२ के भंग को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	को० नं० १ द देखो (४) देवगति में ३ का भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
१ द संज्ञी संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में) एक पंत्री जानना कोठनं० १६ से १६ देखो	~	~	को o नं o १६ देखी १ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ संजी जानना (२) तियैच गितयों मे		१ को०नं० १६ से १६ देखो
१६ आहारक याहारक, अनाहारक ————————————————————————————————————	१ (१) नरक-देव गतियों में हरेक में	१ को० नं० १६ और १६ देखो	१ को०नं० १६ भीर १६ देखो	भोग भूमि की अपेक्षा १ यंत्री जानना २ (१) नरक-देव गति में १-१ के भंग	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ स्रवस्था को०नंं १६-१९ देखो

ह व्यहारक जातना को. नं १६ और १६ हेकी ने के १६ और १६ हेकी ने के १८ के भी को कं १९-१६ हेवी को कं १७-१८ हेवी हेकी हेकी हेकी हेकी हेकी हेकी हेकी हेक	र्चोतीस स्थान दर्शन	न दर्शन	१ ४४१ कोप्टक नं	~ w	emented annet besteger get best bestegere enterpriser	मति-श्रुत ज्ञान	त्रान में
१ प्राप्टरिक जातना को. नं १ श्रुवारिक जातना १ १ के क्षांत्र कोर महत्वेत्र को १ श्रुवारिक जातना १ १ के क्षांत्र कोर महत्वेत्र को १ श्रुवारिक जातना १ १ के क्षांत्र को १ श्रुवारिक जातना कान जातन जातना को. नं १ श्रुवारिक जातना वातना वातना वातना (१) तिर्वेच गति में १ भंग प्रवेदिक जातना वातना वातना (१) तिर्वेच गति में १ भंग वातना वातना वातना (१) तिर्वेच गति में १ भंग वातना वातना वातना (१) तिर्वेच गति में १ भंग १ उपयोग जातना १ भंग १ उपयोग जातना वातना वातना वातना वातना वातना वातना वातना वातना १ भंग जातना १ भंग जातना १ भंग जातना वातना वातना वातना १ भंग जातना वातना वातना १ भंग जातना १ अंग जातना १ भंग जातना १ अंग जातना १ भंग जातना १ अंग भंग जातना १ अंग भंग जातना १ अंग भंग जातना १ अंग भंग जातना १ अंग भंग जातना १ अंग भंग जातना १ अंग गंग जातना १ भंग जातना १ भंग जातना १ भंग जातना १ भंग जातना १ अंग गंग जातना १ भंग जातना	8	nr	>>	አ	U3°	ģ	ឋ
हुन्ना स्प्राहरिक धारारा है से संस्ताह के हुन्दार है से संस्ताह के हुन्दार है से संस्ताह के स्वाहरिक स्वाहरिक स्वाहरिक स्वाहरिक से संस्ताह के स्वाहरिक से संस्वाह से स्वाहरिक से स्वाहरिक से संस्वाह िक से सं					मोत मंत १६-१६ हेखो		
हेशी तियंत्र और मिहन्य मितियों को के के का जानना में सुर्पत्र मित्र में सुर्पत्र में सुर्पत्र मित्र में सुर्पत्र मित्र में सुर्पत्र मित्र मि					(२) तियैच गति में	१ भंग	१ अवस्या
हें के भंग जानना से सहिरे मं स्वाप्त मिले में होते हुंचे हैं भंग जानना से होते में होते हैं के भंग जानना से सहिर्म में सहिर्म में होते होता है कि से से से होता है कि से से होता है होता है कि से से होता है है के भंग जानना है के से भंग जानना है के संग जानना जाने के संग		7 F 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7			भोगभूमि की अपेक्षा	क्ते नं १७ देखो	को० मं० १७
१ के भंग-को० नं० देखी देखी १-१०-१० विके नं १७०-१० विके भंग विका नं १७०-१० विके भंग विका नं १९ के भंग विका विका विका विका विका विका विका विका		। ग्रीर मनत्य	~	~	१-१ के भंग जानना		नेयों .
११ के भंग- कोठ नं० देखी १०-१ = देखी १०-१ = देखी १० भंग कोठ नं० १ = देखी १० भंग कोठ नं० १ = देखी १० भंग का भंग जानना १० भंग का भंग का भंग जानना १० भंग का भंग का भंग जानना १० भंग का भंग		第 25年 年	को० नं० १७-१व	को० नं० १७-	(३) मनुष्य गति में		१ अवस्या
१ १०-१ = हेबो १ १०-१ व होसे में १ भेग १ १ भेग १ १ भेग १ १ १ भेग १ १ १ भेग १ १ भेग १ १ १ भेग १ १ भेग १ १ भेग १ १ भेग १ १ भेग १ १ १ १ भेग १ १ १ भेग १ १ १ भेग १ १ १ भेग १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १		事	सेवी	१ न देखो	१-१-१-१-१ के मंग	को० न० १८ देवो	को में १व
2, ४ का भी—कोठ नं ० १६ ४ का भी जानना ४ के भोगें में ४ का भी—ोठ नं ० १६ पर्गाप्तव जानना के ६ के भागें में से दिवसका विचार कि का भी जानना करों में से विवसका विचार के का भी में से विवसका विचार के भागें में से विवसका विचार के का भागें में से विवसका विचार के भागें में से विवसका विचार के का भागें में से विवसका विचार के भागें में १ का भाग-जान के १ भाग जानना वानना वानमा वेप १ जान वानना वा		•			को० नं० १८ देखो		•
१, ४ का भंग-को० नं० १६ ४ का भंग जातना ४ के भंगों में ४ का भंगा-गे० नं० १६ प्रगीसवित् जातना पवा के क्षेत्र भंग में से जिसका विचार करे भंग जात	>>		१ भंग	१ उपयोग	(१) नरकगति में	१ भंग	१ जनयोग
त्र को क्केभ्य में से महित्युता करों ब्रो श्रेडाड़कर दोप : ब्राना में से जिसका विचार करों ब्रो श्रेडाड़कर दोप : ब्राना (२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंगों में ४-४ के भंग को प्रवासित के समान वात्र में ४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-		४ का भंग-को० नं० १६	४ का भंग जानना	४ के मंगों में	भंग-नो० मं०	पर्याप्तवत् जानना	पर्याप्तवत्
जिसका विचार होड़कर शेप : र ४ के भंग त र ४ के भंग त र ४ के भंग त सेग ज्ञार के ४-४ के भंगों में ४-४ के भंगों में ४ का भंग-ज्ञपर के समान के समान से कोई १ अंग सेकोई १ उपयोग नरक गति में सारेभग १ व्ययोग हे ५-७-६-७-६ सारे भंग जानना १ उपयोग हिरेक भंग में से पर्यात्रवत् त में से ज्ञपर के १-४-४-४ के ४-४-४-४ के १-६-६-६-६ के जानना १ उपयोग हिरेक भंग में से पर्यात्रवत् त में से ज्ञपर के भंग जानना १ उपयोग हिरेक भंग में से पर्यात्रवत् त में से ज्ञपर के भंग में से नादिक्य के १-४-४-४ के १-४-४-४ के १-४-४-१-६ के जानना १ उपयोग हिरेक भंग में से पर्यात्रवत् त भंग १ उपयोग १ १ व्ययोग वात्रवा	1	के ६ के भग में से मिति-थत		से कोई १	क ६ के मंगों में से	•	जानना
ह्योड़कर शेष :  र ४ के भंग  र ४ के भंग  र ४ के भंग  र इच्योग भोगभूमि की अपेका  र इच्योग भोगभूमि की अपेका  र इच्योग भागभूमि की अपेका  र इच्योग वानना  र इच्योग वानना  र इच्योग (३) मनुष्ण गति में सारिभग र ४-४-४-४-४ के भंगों में कोई १ दक्ष गति के समान  सारे भंग जानना  र इच्योग (३) मनुष्ण गति में सारिभग र ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-४ के ४-४-४-४-१ के वानसा  र इच्योग होका वानसा  र इच्योग होका वानसा  र इच्योग हेका भंग जानमा  र इच्योग ४-४ के भंग जानमा  र भंग जानमा  र इच्योग ४-४ के भंग जानमा  र भंग जानमा  र अप सामान १ भंग जानमा  र इच्योग ४-४ के भंग जानमा  र भंग जानमा  र इच्योग वानमा  र इच्योग वानमा  र भंग जानमा  र भंग जानमा  र इच्योग वानमा  र इच्य		जानों में से जिसका विचार		उपयोग जानना	पयितिवत् शेप २ ज्ञान		
त्र ४ के भंग त के भंग त के स्वात के प्रमंग १ क्ष्म १ के मंगों में ४ का मंग-ऊपर के क्षमां में १ क्षा मंग जानना विक्र स्वात के समान की की है १ भंग से को है १ उपयोग नरक गति के समान जानना शानना वानना १ उपयोग (३) मनुष्य गति में सादेभग १ उपयोग १ उपयोग १ के क्ष्म में १ के भंग ने १ के भंग में १ के भंग को १ के भंग को १ के भंग को १ के भंग में १ के भंग में १ के भंग को १ के भंग में १ के भंग को १ के भंग में १ के भंग को १ के भंग को १ के भंग में १ के भंग को १ के भंग में १ के भंग १ के भंग में १ के भंग भेग वानवा		करो यो १ छोडकर येप :			घटाकर ४ का भंग		
भंग ज्यार के ४-४ के भंगों में ४ का भंग-ज्ञपर के समान से कोई १ भंग १ इच्योग भोगभूमि की ययेका द का भंग जानना ४ के भंगों में ४ का भंग-ज्ञपर के समान जानना जानना वानना वानना वानना सिम्प्रे १ ज्ययोग (३) मनुष्य गति में सिप्रे भंग वानना १ उपयोग (३) मनुष्य गति में सिप्रे भंग १ ४-४-५-४ के ४-४-४ के भंग-को० नं० ४-४-८-१ के भंग वानना १ उपयोग हुरेक भंग में से पर्याप्तव वानसा १ उपयोग हुरेक भंग में से पर्याप्तव वानसा १ उपयोग १ उपयोग १ ४-४ के भंग वानमा १ ४ भंग १ १ भंग १ १ भंग १ ४-४ के भंग-ज्ञपर के १ भंग १ १ भंग वानना १ भंग में से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से भंग वानना भेगे से से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से से नरक गति के समान १ भंग वानना भेगे से से न्यानना		जान यटाकर ४ के भंग			जानना		,
भंग ज्यार के ४-४ के भंगों में ४ का भंग-ज्ञपर के विकास मिन्न मिन्य					(२) तिर्यंच गति में	१ भंग	१ डायोग
भंग ज़ार के ४-४ के भंगों में ४-४ के भंगों में ४ का मंग-ज़्पर के समान से कोई १ अपयोग नरक गित के समान जानना जानना सारे मंग जानना १ अपयोग (३) मनुष्य गित में सारे भंग जानना १ अपयोग हरेक भंग में से पर्यात्रक्त १-६-६-६-६ के जानसा १ अपयोग हरेक भंग में से प्यात्रक्त १-६-६-६ के जानसा १ अपयोग हरेक भंग में से प्यात्रक्त १-६-६-६ के जानसा १ अपयोग हरेक भंग में से प्यात्रक्त १-६-६-६ के जानसा १ अपयोग हरेक भंग जानना १ अपयोग १ ३ अपयोग जानना १ ३ अप		(२) निर्मंच गति मं	१ मंग	१ डपयोग	भोगभूमि की अपेक्षा	८ का भंग जानना	४ के भंग
के समान से कोई १ भंग से कोई १ उपयोग नरक गति के रामान वानना वानना वानना वानना सारे भंग से कोई १ उपयोग (३) मनुष्य गति में सारे भंग वानना १ उपयोग (३) मनुष्य गति में सारे भंग वानना भंगों मेंसे कोई १८ के ६-६-६-६ के वानग्रा १ उपयोग हर्रक भंग में से पर्याप्तवत्त्र १८-४-४-४-४ के भंग वानना १ उपयोग १ इर्फ भंग में से पर्याप्तवत्त्र १८-४-४-४-४ के भंग वानना १ अभंग में से पर्याप्तवत्त्र १८-४-४-४-४ के भंग वानना १ अभंग में से नरक गति के समान १ भंग वानना भें से से से से से कोई १ उपयोग वानना १ भंग में से नरक गति के समान १ भंग वानना भें से		15	४-४ के गंगों में	४-४ के भंगों में	४ का भंग-जपर के		म कोंद्र
ामें सारे भंग शुंचपयोग (३) मनुष्य गति में सारे भंग १ व्ययोग १ अपवाग (३) मनुष्य गति में सारे भंग १ व्ययोग १ अपवाग (३) मनुष्य गति में सारे भंग जानना भंगों मेंसे कोई १ द के ६-६-६-६ के जानसा है स्थे में से से से अपवाग शिव १ व्ययोग हिर्फ भंग में से पर्याप्तवत् अपवाग शिव १ व्ययोग १ अपवाग १ अपवाग १ व्ययोग १ अपवाग १ १ भंग १ भंग १ अपवाग १ अपवाग १ १ भंग १ भंग १ अपवाग १ अपवाग १ भंग १ अपवाग १ अपवाग वागना १ अपवाग वागना १ अपवाग वागना १ अपवाग वागना १ भंग वागना वागना वागना वागना वागना		के समा	से कोई १ मंग	से कोई १ उपयोग	नरक गति के रामान		डमयोग जानना
मं     सारे भंग     १ उपयोग     (३) मनुष्य गति में     सारे भंग     १ उपयोग     १ अंग		जानमा	जानना	जानना	जानना	•	,
८ के भंग-को०       ४-५-४-४ के       ४-५-४-४ के       ४-४-४-४ के       ४-४-४-४ के       ४-४-४-४ के       १-४-४-४-४ के       १-४-४-४-६       १ व्ययोग       १ व		(३) मन्दय गति में	सारे भंग	१ डपयोग	(३) मनुष्य गति में	सारे भग	१ जनयोग
त में से अपर न में से अपर ने में से अपर ने में से अपर ने में से प्राप्तियत् ने से ने प्राप्तियत् ने से ने स्वान वटाकर ४- अ-४ के भंग जानना १ भंग १ भंग		1 2- ~~~~ 中北中 中 水一~~~		世 タード・ラードース	४-४-४ के भंग-को० नं०	४-८-४ में मंग	४-४-४के भूगों
त में से ऊपर ते जान श्री क्षेप को में से पर्याप्तवर्त व्यापो से प्राप्तवर्त व्यापो को प्राप्तवर्त के विकास के कि संग व्यापना को के संग में से नरक परि के समान है भग जानना है के संग में से नरक परि के समान है भग जानना में से नरक परि के समान है भग जानना में से नरक परि के समान है भग जानना से से कि उपयोग जानना कोई है उपयोग जानना को के समान है भग जानना से से से का जानना को के समान है भग जानना को के समान है के समान है भग जानना को के समान का का निर्मा का का का निर्मा का का का निर्मा का का का का निर्मा का का का का निर्मा का का का निर्मा का निर्मा जानना का का का का का निर्मा का का निर्मा क		मं० १ म के ६-६-६-७-६		मंग सि कह	रव के ६-६-६-६ के	जानसा	मंस्र नोह १
शेष २ ज्ञान ज्ञानमा शेष २ ज्ञान घटाकर ४-  - १, -४-४-४-४ के भंग ज्ञानमा १ ज्ययोग १ द्वगति में १ भंग १ १ भंग १ ज्ययोग १ उपयोग १ ४-४ भंग-ज्ञपर के ४-४ में से कोई १४-४ ज्ञपर के नरक ४ का भंग ज्ञानमा ४ के भंग में से नरक गति के समान १ भंग ज्ञानमा अवस्ति । अपर के सामान १ भंग ज्ञानमा अवस्ति । अपर के सामान १ भंग ज्ञानमा अपर के सामान १ भंग ज्ञानमा अपर		के झरेत भंग में से जपर		१ डपयोग	हरेक गंग में से पर्याप्तवत्		उपयोग जानना
		के समाम शेव २ जान		जातना ।	शेप २ ज्ञान घटाकर ४-		
१ भंग     १ उच्योग     ४-१ के भंग-जपर के ४-४ में से कोई     ४-४       ज्यर के नरक     ४ के भंग में से नरक गति के समान     १ भंग जानना     में से से से से से के भंग में से नरक गति के समान     १ भंग जानना     में से के भंग में से से से के समान		क १-४-१-१ <u>क</u>			४-४ के भंग जानना		
१ भंग १ उपयोग ४-४ के भंग-जपर के ४-४ में से कोई ४-४ जपर के नरक ४ का भंग जानना ४ के भंग में से नरक गति के समान १ भंग जानना में में नान जानना कोई १ उपयोग जानना उपर		भंग जानना	nga mga Marin		(४) देवमति में	१ भंग	१ डपयोग
ऊपर के नरक ४ का भंग जानना ४ के भंग में से नरक गाँत के समान १ भंग जानना सिन जानना कोई १ उपयोग जानना		(४) देवमति में	१ मंग	१ डपयोग	४-१ के भंग-जपर	8-8 मंस कोई	사 수 시 기대
कोई १ उपयोगः जानना		अपर मे	४ का भंग जानना	४केभंगमें	नरक	१ भंग जानना	मंस्र नाह १
		गति में समान जानना		कोई १ उपयोग	जानना		उपयोग

१ उपयोग ४-४ के भंग में से कोई १ उपयोग वानना

१ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ४४२ कोष्टक नं	ر م د د د د د د د د د د د د د د د د د د		मति-श्रुत	ज्ञान में
2	æ	>	ઝ	us	<b>9</b>	n
२१ ध्यान १४ सूक्ष्म क्रिया अति पाति, ब्युपरत क्रिया दिः० ते २ घटाकर (१४)	<b>१</b> ४ (१) नरक-देव गति में ह <sub>े</sub> का में	सारे भंग   को० न० १५–१६ देखो	/ १ घ्यान को नं १९-१६ देखो	१८ (१) नरक-देवगति में हरेक में ह का अंग	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१६ देखो
	को० नं० १६–१६ देखो (२) ति भि गति में १०-११-१० के भंग को० नं० १७ हेसो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	को० नं० ६ १६ देखो (२) तियंच गरि। में भोग भूमि की अपेक्षा ६ का भंग	१ भंग को०नं०१७ देखी	१ ध्यान को०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में १०-११-७-४-१-१० के भंग	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	कोर नं १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-७-६ के भंग	सारे भंग को <b>ेन</b> ं १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १ द देखो
२२ ग्रास्तव ४६ श्रनन्तानुवन्धी कषाय ४; मिथ्यात्व ५, ये ६ घटाफर (४८) जानना		सारे भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई सारे भंग जानना	भंग केन्नपने ज्ञपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग	नार पुट दुवा इ७ मनोयोग ४, वचन योग ४ धौ० काययोग १, वै० काययोग १,	सारे भंग पर्या <sub>त</sub> वत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
	कामार्ग काययाग १ ये ४ घटाकर (४४) (१) नरक गति में ४० का मंग	सारे भंग क्रो० नं० १६ देखो	जानना १ भग को०नं० १६ देखो	आ० काथवाग १ ये ११ घः।कर (३७) (१) नरक गति में ३३ का भंग	सारे भग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
	का० न० १६ दला (२) तियंच गति में ४२-३७-४१ के भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को० न० १७ देखो	१ भंग को०नं०१३ देखो	काउन० १६ दल। (२) तियंच गति में भोग भूमि की श्रपेक्षा इ.का भंग	सारे भग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में ४२-३६-२२-२०-२२-१६- १५-१४-१३-१२-१९-१०- १०-६-४१ के मंग को० नं० १८ के ममान	सारे भंग कोेंप्सं० १८ देखो	१ भंग कोठनं० १८ देखो	्रोऽन्० १७ देखो (३) मनुष्य गति मे ३३-१२-३३ के भंग कों०न्० १८ देखो	सारे भंग कोरनं	१ भंग को०न०१८ देखो

_
m
% %
_

ज्ञान में	ឋ	<ul> <li>को० नं० १६</li> <li>१ मंग</li> <li>१ मंग</li> <li>को० नं० १६</li> <li>१ मंग</li> <li>१</li></ul>	
मति-श्रुत ज्ञान	9	सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो तो० नं० १६ देखो ने० नं० १६ देखो	And the second s
,	υ)	(४) देव गति में ३३-३३-३३ के भंग को० नं० १६ देवी ३३ उपन्नम चरित्र १, सायिक चरित्र १, सयमासंयम १, स्त्रीलिग १, ये ४ घटाकर ३३ भाव ज नता (१) नरक गति में २५ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग में व पर्याप्तवत् शेष २ जान घटाकर २५ का भंग जानना (२) तियंच गति में भोगभूमि को जगेदा २३ का भंग में से पर्गात- देत् होष २ जान पटाकर २३ का भंग जानना (३) मनुष्य गति में २८-२५-२३ के भंग-नो० नं० १८ के ३०-२७-२५ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ जान वत् होष २ जान पर्याप्तवत् शेष २ जान वत् होष २ जान पर्याप्त	
140 A0	*	्र मंग देखों सेंग तें मंग देखों रेखों रेखों रेखों रेखों रेखों	
कोप्टक	<b>*</b>	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६,देखी को० नं० १७ देखो नो० नं० १९ देखो	
दशीन	E	(१) देवगति में हि देवती हैं। ४१-४०-४० के मंग को० नं० १६ देवती हैं। १६ के २८-२७ के हरेक मंग में से मित-अत ज्ञानों में से जिसका विचार करों हैं। १८ के मंग जोत्या हैं। १८ के मंग में से कपर के समान शेष र ज्ञान घटाकर ३०१-२७ के मंग जोत्या पति में भे अगर के समान देव र हैं। भेग में से अगर के समान वात र जान देव के मंग जोता ने १८ के ३३-३० के हुने मंग में से अगर के समान वात देव का मंग जाना देव का मंग नोता वेत देव का मंग में से जगर के समान वात वेत वे जान पटाकर २६ का मंग जाना	
चोंतीस स्यान दर्शन	~	३३ भाव डगराम सम्पक्त १, डगराम सम्पक्त १, साधिक मम्प्रवात १, महिन्युत ज्ञान में से जिसका विचार करो लेशि ५, वेदक स० १, संयम १, गति ४, काराम १, गति ४, स्यम १, गति ४, संयम १, गति ४,	* }

चौंतीस	चौंतीस स्थान दर्शन		कोष्टक	न नं ० ५०	,	मति-श्रुत ज्ञान	त जान में
~	8	m	>>	*	ωv	9	រេ
		२५ का भंग-को० नं० १८ के सुन में से उपर के समान शेष २ वान घटाकर २५ का भग जानता २६-२१-२४-२४-२३-२२-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(४) देवगति में २६-२४-२४ के थग- को० नं० १६ के २८- २६-२६ के हरेक भंग में पर्याप्तवत् शेष २ ज्ञात घटाकर २६-२४-२४ के भंग जानना	मो० नं० १९ देखो	्र भंग तेखो नं

ग्रस्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा अर्त्तमुहूर्त से देशान अर्घ पुर्गल परावर्तन काल तक सम्यक्त्वी नहीं वने । ग्ता प्रमृतियः — १४५–१४७ प्र० कम से ४वे पुरो गुरा० में, १४६–१३६ प्र० ६वे गुरा० में, १४६–१३६ प्र० ७वे गुरा में, १४२–१३६–१३६ प्र० दने गुग्ग्० में, १४२–१३६–१३८ प्र० धने गुग्ग्० में, १४२–१३६–१०२ प्र० १०ने गुग्ग्॰ में, १४६–१३६ प्र० ११ने गुग्ग॰ त्रःय प्रकृतियां— १०४-न्षण-न१-७६-७२-६६-६०-५६-५७ प्र० का उदय क्रम से ४ से १२ गुण् स्थानों में जानना । को० नं० २६ देखो । वंच प्रकृतियां—७७–६७--६३–५६–५५–२२–१७–१–१ प्रकृतियों का वंच कम से ४ से १२ गुर्सा स्थानों में जानना । को० नं० २६ देखो । काल---नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा अन्तेमुहर्त से ६६ सागर स्रीर ४ कोटिपूर्व तक जानना । मं, १०१ प्र० का सत्ता १२वे मुस्ए० में जानना। को० नं० २६ देखो जुल-१०न॥ लाख कोटिकुल जानमा, इसका विगत को॰ नं॰ २६ में देखो ताति (योति) --- २६ लाख जानना । इसका विगत को० नं॰ २६ में देखो । स्पर्धन -- लोक का असंख्यातवां भाग द राजु जानना । को॰ नं॰ २६ देशो । क्षेत्र — लोक का ग्रसंख्यातयां भाग जानना । इ. नगाहना - मो० नं० १६ से १६ देखों। संस्या-- मसंस्यात जानना ।

चौतीस स्थान दर्शन	शिन	) कोष्टक	४४६ ) नं० ६१		अवधि जान	, th
कं ह्यान   सामान्य ग्रालाप	पयक्ति					
		d			ੋ ਤ ਨ ਨ	E
	नाना जीव की श्रपेक्षा	एक जाव के नाना एक जांव समय में समय	र्म जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	। १ जीव के नाना सा समय में	एक जीव के एक समय में
מי	m·	>	24	, ,	6	u
१ गुरा स्थान १ से १२ तक के गुरा	ह को० नं० ६० के समान जानना	सारे गुरा स्थान १ को० नं० ६० देखो को	१ मुसा० को०नं० ६० देखो	े नरक गति घटाकर शेष में	सारे मुग् को० न० ६० देखो	 १ गुरा को०नं० ६० देखो
२ जीव समास संजी पं०-पर्याप्-जपर्याप्त	१ कोग्दं ६० देखो	ै १ को०मं० ६० देखो को०	१ क्रो०नं० ६० वेखो	को० नं ऽ ६० देखो १ को० नं ० ६ <b>०</b> देखो	१ को०नं० ६० देखो क	१ को०नं० ६० देखो
३ पयाप्ति गे० नं० १ देखो ४ प्रासा १० को० नं० १ देखो ४ संज्ञा	६ को०नं० ६० देखो १० को०नं० ६० देखो	ब्रे	१ भंग को०नं० ६० देखो १ भंग को०नं० ६० देखो	३ को० नं० ६० देखो ७ को० नं० ६० हेखो	देखो	१ भंग को॰नं ६० देखो ं भंग
गेंंग्ं १ देखो नेंग्ने १ क्स	४ को०न०६० देखो ४	<ul><li>भंग</li><li>नं० ६० देखो</li><li>१ गति</li></ul>	खो	0	<b>⊢</b> .	कार्रात्य ६० देखो १ भंग कोर्रान् ६० देखो
196 y 010 y 1	कार्नि ६० देखो	को० नं० ६० देखो को०नं०	नं० ६७ देखो	र नरक गति घटाकर (३) सूचना— ४थे गुर्सा० वर्ती श्रवधि ज्ञान मरकर —— २ ००००००००००००००००००००००००००००००००००	१ गांत तीनों में से कोई ती. १ गति	१ गति तीनों में से कोई १ गति
७ इन्द्रिय जाति १ पंचेन्द्रिय जानि	~ .		~	नरक म नहा जाता । 	· .	
द काय वसकाय	नाठनट ८० दला <b>१</b> कोठ नं० ६० देखो	की नर्ग्ड देखी कोठनंट ६० देखो १ कोट नंट ६० देखो कोटनंट ६० हेक्स			< ६० देखो १-	१ को०नं० ६∙्देखो १
				६० दखा	किंिनं ६० देखो को	को०नं० ६० देखो

_
<u>چ</u>
≫
_

भाग भ	n	१ योग १ योग १ वेद हो १ वेद १ संग १ संग १ दहींन १ दहींन १ दहींन को ०नं० ६० देखो १ तह्या १ तहांन १ तह्या १ तहांन १ तहां
अवधि ज्ञान	9	श्रमंग १ मंग १ मंग नो० नं० ६० देखी ना२ मंग १ १ मंग नो० नं० ६० देखी १ भंग १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
	υs <sup>ν</sup>	हें को का
~ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\	×	१ योग १ वेद १ वेद १ भंग १ भंग १ भंग १ द्वांन १ दश्न ६० देखो १ देश्म १ देश्म १ देश्म १ सम्यक्ष्व १ सम्यक्ष्व १ सम्यक्ष्व १ सम्यक्ष्व १ सम्यक्ष्व
, ४% कोप्टक नं	>>	कोठ नंठ ६० देखो कोठ नंठ ६० देखो सारे भंग कोठ नंठ ६० देखो १ भंग कोठ नंठ ६० देखो १ भंग कोठ नंठ ६० देखो सारे भंग कोठ नंठ ६० देखो कोठ नंठ ६० देखो रीठ नंठ ६० देखो
चौतीस स्थान दर्शन	m	भो० नं० ६० देखो  कोठनं० ६० देखो  २१ कोठ नं० ६० देखो १ अविश जानमा  कोठ नं० ६० देखो कोठ नं० ६० देखो कोठ नं० ६ देखो कोठ नं० ६ देखो कोठ नं० ६ देखो कोठ नं० ६ १२ देखो
चौतीस स	~	ह योग १ १ १ थे ३ १ १ व ३ १ १ व व ५ १ १ व ३ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

चोंतीस स्थान दर्शन	रीन	( ४४द कोष्टक नं	& & & o		अवधि	म,
	w	×	*	υν	9	រ
	१ शो० नं० ६० देखो	~	~	२ को०नं० ६० देखो	१ भंग	्र अवस्था
€	itr	१ भंग ४ का भंग जानना	१ उपयोग ४ के मंगों में से कोई १ उपयोग	# * =	१ भंग पर्यक्षित्रत् जानना	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना
10 25 110	को०नं० १६ के ६ के भंगमें से मति-श्रुत ये २ ज्ञान घटाकर ४ का भंग		जानना	को० नं० १६ के ६ के भंग में से पर्गप्तवत् २ ज्ञान घटाकर ८ का भंग		
(3) F	जानना (२) तियैच गति में ४-४ के भंग ऊपर	१ भंग ४-४ के भगों में से	१ उपयोग ४-४ के भंगों	नर्यच गरित में भूगि को श्र	१ भंग ४ का भंग जानना	१ उपयोग ४ के भंग में से
1,0 10 1	के नरक गति के समान कोठ नं ० १७ के ६ के	कोई १ भंग जानना	में से कोई १ उपयोग जन्म	`४ का भंग ऊपर के नरक गति के समात जाउटा		कोई १ उपयोग जानना
V W 12	ا الا لا ال			(३) मनुष्य गति में ४-४-, के भंग	सारे भंग ४-४-४ के भंगों में	१ उपयोग ४-४४ के अंगों
(F)	(३) मनुष्य गति में ४५-४-४ के भंग	सारे भंग ४-४-४-४ के सारे	१ उपयोग ४-५-४-४ झ	को० नं० १८ के ६-६-	से कोई १ भंग जानना	भें से कोई े१ उपयोग
10	-		HIA ATA	तं ्	-	जानना
			कोई १ उपयोग जानना	४-४-४ के भग जानना (४) हेवगति में	१ भंग	१ उपयोग
3	घटाकर ४–५–४–५–४ के भंग जानना केन निस्	; ;	j j	४-४ के भग ऊपर के नरक गति के समान	४-४ के भगा में स कोई १ मंग जानना	४-४ क भगा म से कोई अञ्चलीत
<u>@</u>	(४) दव गांत म ४ का भंग ऊपर के नरक गति के	र भग ४ का भंग जानना	९ उपयान ४ के भंग में से कोई ९ उपयोग		•	र उपयात जानना
	समान जानना		जानना		`	
		-				

_	
<i>2</i>	
_	

							,	The state of the s	-
		•		388 )	(R)		-		
	,	चौतीस स्थान	स्थान दर्शन	ं कोष्टक नं०	ે છે ૦		अवधि शान	ज्ञान में	
	~	r -	æ	×	эł		9	u .	
	२१ व्यान को० नं० ६० २२ मास्रव को० नं० ६०	६० देखो ४५ ४६	१४ को० नं० ६० देखो ४× को० नं० ६० देखो	ं सारे भंग को० नं० ६० देखो सारे भंग को०नं० ६० देखो	१ ध्यान को०नं० ६० देखो १ मंग को०नं० ६० देखो	१४ को०नं० ६० देखो ३७ को०नं० ६० देखो	सा भंग को० नं० ६० देखो सारे भंग को० नं० ६० देखो	१ ध्याम को०नं० ६० देखो १ मंग को०नं० ६० देखो	
	रु३ भाव को० नं० ६०	३७ ६० देखो	3७ (१) नरक गति में २६-२५ के भंग को० नं० १९ के २८-	सारे भंग १७ का भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग १७ में से कोई १ मंग	३३ उपशम चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, संप्रमानंयम १	सारे भंग पयक्षिवत्	१ मंग पर्याप्तवत्	
·			रेक मंग में से ज्ञान ये २ ज्ञान ६-२५ के मंग ते में		१ मंग १७-१७ के हरेस		सारे भंग पर्याप्तवत्	१ मंग पर्यप्तिवत्	
			३२- ग में मित- टाकर हंग	को०नं० १७ देखो सारे भंग	में से कोई १ मंग १ मंग	ज्ञान घटाकर २४ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की ज्ञपेक्षा २३ का मंग को० नं० १७ के २५ के	सारे भंग १७ का भंग पर्यप्तिवत्	१ भंग १७ के भंग में कोई १ भंग पर्यासवत्	
			३१-२८ के मंग को० नं० १८ के ३३- ३० के हरेक मंग में से मित-भूत ये २ ज्ञान पटाकर ३१-२८ के मंग जानना	१७-१७-१७-१७-हरेक मंग में से १७-१७-१६-१४- कोई १ मंग १४-१७ के मंग को० नं० १८ देखो	हरेक मंग्र में से कोई १ मंग	गत घटाकर २३ का भंग जातना (३) मनुष्य गति में २८-२५-२३ के भंग को० नं० १८ के ३०- २७-२५ के हरेक भंग में से मित-श्रुत ये २ जान	सारे भंग १७-१७-१७ के भंग पर्याप्तवत्	१ भंग हरेक मंग्नें से कोई १ मंग	

		0 % %		The state of the s	the same of the sa	2 4 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5
चौतीस स्थान दर्शन	किसी:	कोष्टक नं०	ູ້ຜາ		अव्हि आन्	जान में
٤	<u>केट हैं हैं एक कोट</u> केट हैं के एक कोट केट हैं के केट	> % · % · % · % · % · % · % · % · % · %	<b>x</b>	The state of the s	्रेड्ड स्ट्राइड स	2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
	२८ की भग की० नं श्रेट	3 8 4 6 C	1	१६१ यस अधि ।	े खर्न रेन्द्र र त प्राप्त अस्	55 TO 10 TO
~~~~	श्रुत-मनः पर्ययः ज्ञान ये ३		京の で でん 11年	बटाकर (२५–२५ के मंग जानना		
٠ ع قاد	घटाकर रेट का भंग जानना २४ का भंग को० न० १८	स स मु	The state of		सारे भंग	१ भंग
	के रख मंग में से मिति-ः				.臣	हरेक भंग में से
* O*	श्रुत ये २ जान घटाकर			रहन्रहाके हरे मंग्र में	The Thine of	्रमाञ्चार्थं भगाया वित्रम्भवास्त्रम्
	34-36-36-38-38-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-36-			स् भयासबत् रुक्तान घटाकर १२६–२४-२ x	1. C.	
· ·	73-77-78-76-20-20-1	भूमार्थक क्षेत्रम		की मेंग जातनाड़ कर ह		•
~ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	कोंग्नं १६ के ३१-२६-	2017年 発	77 - 37 - 37 - 37 - 37 - 37 - 37 - 37 -	ा अधिकार अस्ति		
	36-24-30-24-3X-	, k.		(4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4)		-
	२४-२३-२३ १२१-२७ अप के हरेक भंग में के मितिस्ता			क की माना है।	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	100 mg 10
~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~	श्रुत-मनः पर्ययः ज्ञानः ये ३			The state of the s	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
<u>.</u> -	ज्ञान-धेटांकर (२ द-२६-		<del></del>	A STATE OF S		
1 1/15 - 5 0/5 0/1	スペースペースペースポースペー	The off off	113. V	William Man 3	,	
CO SAIS	भंग जाननाः	स्था स्था		ने मेर ने मेर ने मेर से अ	Francis	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	रेष का मंग कोठनं १ त के	,		to A	W. 517	
	रेट के भगमित मात-श्रुत येट जान घटाकर २७ का	The standard of the standard o	18 0 2 0 3 o Cal	Tres of otroits	THE SECTION	the state of the state
A Company of the Comp	भूगीयान्त्र १०००	कर यह की वहा	March to distribute	97	1	
(F) :	देवगति मेंंं		P SATISTICAL			žŀ.
Y	को०न० १६ के २६-२६		हरेक भंग में से			
Company of the formation of the company of the comp	3६-२५ के हरेक भंग में से क	से को० नं० १६ देखो	काइ १ भग	Te:		
Post State S	अपर, के , समान २ जान	<del></del>	The second secon	and a transfer and and the property of the second second of the second o	the to strange of a boundary of the strange of the	And the second s
	न्दायर १०-१७-१४-२३ के भंग जानना		er)		The state of the s	17 17 17

प्रवताहता—को० नं० १६ से १६ देखी हैं हैं भारत हैं।

२६ े अनुस्य प्रकृतियां—१०४-वर्ष-वर्ष-वर्ष-६६-६०-५६-५७ को० नं०४ से १२ देखो । २७ सिम्पार्थकृतियां—१४८-१४७-१४६-१३६-१४६-१४१-१४०-१३६-१४१-१४१-१४१-१४१-१४१-१४१-१४६-१३६-१३६-१३६-१३६-१३६-१३६-१३६-१३६ को० नं० ४ से १२ देखी। को० नं० ४ से १२ देखों। नंष प्रकृतियां — ७७-६७-६३-५६-५५-२२-१७-१-१

् को०,नं ४ में १९ देवो । ११ ११ १

संस्था — ग्रसंस्थात जानमा । हे असाम अधि अधिक

क्षेत्र — लोक का असंस्थातवां भाग जानता।

३० स्पर्गत—लोक का ग्रसंस्थातियो भाग च राजु ६ राजु इसका खुलासा को० नं० २६ देखो। ३१: फाल—नोना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानेना। एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुते से ६६ सागर और ४ कोटि पूर्व तक जानीय। ३१: फाल—नोना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानेना। एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुते से ग्रांधपुद्गल परावर्तनः काल तक ग्रवधि शान

नहों सके।

-

जाति (योति) — २६ लाख योति जानना । (को॰ नं॰ २६ देखी) फुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना । को० नं० २६ देखी

C 2007 1603.

स्थान साम।	सामान्य श्रालाप	पर्याप्त			अपयिति
		नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
a		us	>>	<b>ઝ</b> િ	ప-6)- స్త
१ गुरा स्थान ६ से १२ तक है २ जीव समास संजी पवेन्द्रिय प् व पर्यास्ति को० न० १ वे को० न० १ वे को० न० १ वे ह गति ६ गति ६ गति ६ गति ६ गति ६ गति ६ गोग ह गोग ह गोग	मुण स्थान ६ से १२ तक के मुण् बीव समास संजी पवेन्द्रिय पर्याप्त पर्याप्ति को० न० १ देखो को० न० १ देखो को० न० १ देखो भाग गति शिक्त अति देखो भाग भाग भाग १, वचनयोग ४,	७  मनुष्य गति में ६ से १२ मुरा् जानना १ संजी पंचेन्द्रिय पर्यप्ति श्रवस्था जानना मनुष्य गति में— ६ का मंग को० नं०. १८. देखो भनुष्य गति में १० का भग को० नं० १८ देखो १ मनुष्य गति में १ संजी पंचेन्द्रिय जाति जानना मनुष्य गति में १ संजी पंचेन्द्रिय जाति जानना मनुष्य गति में १ संजी पंचेन्द्रिय जाति जानना मनुष्य गति में	सारे गुरा स्थान १ १ १ भग १ भग १० का भंग १० का भंग १० का भंग १० के भग १० के भग	१ मुख स्थान १ १ १ भग ६ मा भंग जानना १ भंग १० मा भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग	सूचना—यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है ।
- ~	कोठ नं० १ देखो	८-९ क भग-का० न० १८ दला ३ मनुष्य गति में १-१-३-२-१-० के भंग को० न० १८ देखो	सारे भंग ३-१-३-३-२० के भंग	कोई १ योग १ वेद सारे मंगों में से कोई १ वेद जानना	

मनः पर्ययः ज्ञान में

( ४५२ ) कोष्टक नं० ६२

चौंतीस स्थान दर्शन

कोप्टक नं ः ६२		,	मनः पर्यय ज्ञान में   ह-७-६
т.	>>	<b>a</b>	ಗ-ಲ-ಭ -
&	-	१ भंग	
मनुष्य गात म ११-११-११-७-६-५-४-३-२-१-१-० के भंग	कां० न० १प दला कां०	कां० न० १ द दखां	
को० नं० १ द देखो १ पटः वर्षाः सम्बन्धः	c	•	,
वित साम जामगा ४	५ सारे भंग	<b>१</b> १ संयम	
मनुष्य गति में	सेवा	को० नं० १८ देखो	
३-५-३-५-१ क भग को० न० १८ देखी			
m		१ दर्शन	
मनुष्य गति में—३-३ के भंग को० नं० १८ हेवाँ	को० न० १८ देखो को०	को० नं० १ द देखी	
m	सारे भंग	१ लेडग्रा	
मनुष्य गति में — ३-१ के भंग कोउ नं ०१८ होसे	ख <u>ो</u>	को० नं० १८ देखी	
m		•	
मनुष्य गति में १ भव्य जानना को० नं० १८ देखो		•	
m	सारे मंग	१ सम्यत्व	
मनुष्य गति में— ३-२-३-२-१ के मंग को० नं० १८ देखो	देखो	को० नं० १ द देखी	
मनुष्य गति में १ संज्ञी जानना	~	~	
मनुष्य गति में१ श्राहारक जानना	~	~	
>>		१ उपयोग	
मनुष्य गति में ४-४ के मंग-को० नं० १८ के ७-७ के मंगो में से मति-श्रत ग्रववि ये ज्ञान घटाकर	४-४ के भंग जानना ४-४	४-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	

भारतात मान्य हैं क्षांचार मान्य हैं क्षांचार के क्षां	अमीतीस (स्थान दर्शन समासास	त्ता वहान्त्रच यव्हा ताताव (डाल्थ्रप्र ) ४-९ एत्तान्यात यत् रहा कोह्टकानिवर् ६२ गरोह्य अस्ति	र ६२ ० अस भागत	इ. अवंक अध्याम् मृत् पर्यय ज्ञान	् पर्यय ज्ञान में
स्परी में विकास हैं कि स्वास्तित के स्वास्ति के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्ति के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्ति के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्तित के स्वास्ति के स्वस्ति के स्वास्ति के स्वस्ति के स्वस्ति के स्वस्ति के स्वस्ति के स्वस्ति		u' mr	9)C ₹ <mark>}</mark> >	मिति। स्ट	5-9-3
सारे से स्वाप्त से स्वाप्त के सार की स्वाप्त से सार से स्वाप्त से सार से स्वाप्त से सार से से सार से से सार से सार से से से सार से से से से सार से से से से सार से से से से से सार से	St. Mills	गुरुच्यों की महा जाननी विष्य		*>	
भित्रपाण नेदना । अमेतुव्यासिति में अध्या अव्यक्त अव्यक्ति के मां	२१ ध्यान सन्त ह	W	सारे भंग	१ ध्यान	
निद्यात्वकार्यात    अ.च. १ के मम-को० नं ० जानना से कोई १ ख्यान जानना कियां कियां है।   निर्माणकार,   प्रश्निकी कियां	र स्मिन्ट संयोग, वेदना- ह	अमेनुस्य(मंतिनमे हे अस्तु। अस्यतः	७-४-१-१ के भंग	७४.१ भे भेगों में	
भू अमंत्रामुक्त अप ते प्रमुक्त के अप कार्या के अप कार्य कार्य के अप कार्य के अ	जनितः निदानज्ञातं-	७-४१ के भग-को० नं०	जानना	से कोई १ ध्यान	
जितकं किवार है, अर्थ प्राप्त पहुंच कर उपल्लाक के तरा अपने करा अपन	ध्यात् ३, धर्मध्यात् ४,८	ुर्द्धिया देखी हैं		जानना	
यान जानना १ के प्राप्त १ कि प्राप्त में अंदि अध्यास सारे संग १ संग १ संग १ के पाप १, ५ भेग १०-२०-२०-१९-११-११-११-११-११-११-११-११-११-११-११-११-	मृथक्त्ववितकं भविचारः १,	The tenth of the state of the state of the state of	1174 - 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	107 × 3 4 5 5 6	
यान जानता क्षेत्र के के के के के के के के की की का	🖔 एकत्ववितकै अविचार १ः 🏴	d	15 S. 15.	PSP C	
स्वित्त के विकास है, अस्ति के विकास स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स	ये ६ ध्यान जानना	किस में के विस्			
अपर.के गोण १, ऽ २०-२०-२९-१६-१४-१४-११-१९- को० नं० १८ देखी को० नं० १९ देखी माय ११ साम १८ व्या ११ साम १८ व्या ११ साम १८ व्या १८ के मंग्री-को० नं० १६ देखी जो० नं० १६ देखी जो० नं० १६ देखी ता वाल गुर्भ भूम १८ व्या १८ व्		संभित्वयी मिलिन्से ( अटब अध्या	माने भंग	Ļ	
भाव रेट बहुत हैं हैं भंगा-कीठ नं 8 द देखी  भाव रेट बहुत हैं के भंगा-कीठ नं 8 द देखी  जुरुश मुक्स सम्बन्ध है,  समुख्य गति में की कोठ नं कीठ नं	ं अपर में योग ह,	-0 6 - 8 6 - 6 6 - E 6 - X (+ K 6 - 3 6 + 2 6 - 0 2 - 0 2	को जा १ व लेखी		
भाव कि रहा द्वा दिन स्थित साह में मिल को मिल को मिल की मि	कवाय ११	सार पर के भंगीको न १० १० देखो			
अप्रतम सम्प्रक्त १, ३ मनुष्य गति में अप्रत्य सम्प्रकार १, ३ मनुष्य गति में अप्रत्य सम्प्रकार १, ३ मनुष्य गति में अप्रत्य सम्प्रकार १, ३ साविक १८ ५६ ५६ ५९ ५८ २६ ५२ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८	भाव ीप्र यहत्रा	स्तित साध म	が特化的の	The distriction	
सम्बन्धार्थ, सार्थिक ध्रुव्हेन्द्र के मंग्निक के हुन स्वत्य के स्वास्तित के हुन स्वत्य के संग्रामित के हुन स्वत्य के संग्रामित के हुन स्वत्य के स	उपशम सम्यक्त १.	भ मानद्वा मानद्वा			
सस्यमंत्वा(१, सायिक- ने १९-११-१६-११-१६-११-११-११-११-११-११-११-११-११-	उपज्ञम चारिका १, इक्षायिक		186 57 65 66	का० न ः १ द दखा	
जारित है, मनः प्येय के के विश्व हैन्स मंग में से लिक्स के के कि मंग में से लिक्स के कि मंग कि मंग कि मंग कि मंग कि मंग के मंग कि मंग के कि मंग कि मंग के कि मंग के कि मंग के कि मंग के मंग के कि मंग	सम्यक्त्वा ११, - सायिक-	((マン・) (マン・) (マン・	The Up of the	100 110 011 117	
जाति क्षित्यक्ति के क्षिप्त के हरेक भूग में से लिखाने के का नाम से लिखाने के का नाम के नाम स्थाप के स्थाप के का नाम के नाम स्थाप के स्याप के स्थाप	🔆 जारित १, मनः पर्ययः	-16-36-51-36-38-38-38-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48-48			
लिक्स, सर्गसंग्रम्, इंप्सित-अतंत्र्यविष्येज्ञान पे व ज्ञान स्थान १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०	आन्द्रिं क्षित्रवर्शनाः कुन्नर	在 班 班		Ť	
सपीपुराम सम्पन्दन्तार, भाष्यदाकंद्र श्रन-१९-१६-१५-२१-२१-१३- भाग भाग स्थाप्ताम सम्पन्दन्तार, संज्वलन- २२-११-१९-०-०-१९-१९- के मंग स्थाप्त श्री संज्वलन- २५-११-१९-०-०-१९-१७ के मंग स्थाप्त श्री संज्वलन- २५-११-१०-०-०-१९-१०-०-०-१९-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-	लिब्धिः ४, सरागंसंयमः १,	ंसित-अतःसविध्येजान ये ३ जान			
मुद्रुध्य गति १, संज्वलन- २२-२१-२००-१६-१७ के भंग धार, यंत्र प्राप्त १, संज्वलन- २२-२१-२००-१६-१७ के भंग धार, यंत्र प्राप्त १, जंननहिंद्र शास वात्र । अस्ति स्वार्थ १, अस्ति स्वार्य १, अस्ति स्वार्थ १, अस्ति स्वर्थ १, अस्ति स्वार्थ १, अस्ति स्वार्थ १, अस्ति स्वार्थ १, अस्ति स	क्षयोपुराम सम्यक्त्व।१-,	ं विद्यक्ति रुद्ध-२६-२४-२३-	The second of the	110% D 6 0 to 140	
भणाय ४, पुरुष रिजा १, अपनिनाहें आप गोमार भुम लेख्यां श्रेश महीते १ अंतु १० १० १ १५। भिष्यत्वाश्चारी श्रेश महीते १ अंतु १५। भिष्यत्वाश्चारी श्रेश स्थापनिता १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १		२२-२१-२००-१म-१७ के भंग			
शुभ लेक्प हैं अन्नांने १ स्था थ्वा १ स्था थ्वा १ स्था १ स		े जीननेत्रे अप् अस्ता	 • •		
असिब्हुम्थ्यावीवस्त १, ५३-३१-४४-४-४-४-४-४-५-५-१-७ मे अस् व्यान क्षण्डेन कुन्ता सान स्ट ४ म बुन्ता अस्व १ मेच्या स्थापना स्थित्य सहित्र सहित्य सहित्र	गुम लेक्या अस्यानि १	मार्थ में र होने हैं है	2	.~	
अध्यत्वा १६वे। द्वाप्ता संशिक्त वाह्म हु हैं। हैं। हैं। हैं। हैं। हैं। हैं। हैं।	मसिखत्व १ . जीवत्व १,	1-3-3-5-5-8-5-5-5-5-5-5-5-5-5-5-5-5-5-5-5			
अपना अपना अपना करणा है। जिल्ला करणा करणा करणा करणा करणा करणा करणा करण			tive of a second	1	
		\sqrt{\chi}	10年		
2		and the second s	and the second s		
21 22 0 1 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0	extenses and extenses are extenses and exten	To a special property of the s	c*.	No.	Single Si
	THE PROPERTY OF	のなかが		and the professional for the first of front and front an	the first term of the term of
	,	The second of th			

त्रं के के निकास स्टब्स इन उदय नहीं होता इसिलिये १९८१ - अपने मार्ग सम्पन्त, द्वितियोष्यम अवस्था ही होती है। प्रथमोष्यमा अवस्था में मुनः पूर्य जान नहीं होता १९४० १० प्रजनाहिना—३॥ होये से ५२५ धनुष तक जानना १ — १ अस अन्तर के सुधा है। १० १० १० १० त्रां क्षेत्र स्थान ह र्रेस सम्बद्ध प्रकृतियां — इत्रे-पृष्टे-पृष्टे-२२-१७-४-१ को० नं० ६ से १२ देखो । १९६९ सम्बद्ध प्रकृतियां — दश्के उद्युष्टे प्रकृतियों में से मनः पर्यंय ज्ञान के उदय में स्त्री-वेद ७२-६४-६०-४६-४७ को० नंग्रद्ध सार्थर देखी। भाषा ये। व घटाकर एषा का उदय जानना ।

ा है। जार पश्चन—लाक का अनुस्थातुषु। माग जानमा महत्र हो। जार हो जार हो हो हो हो हो हो हो हो तक अमोपजाम सम्पक्त की अपेक्षा हो है हें हो के कान—नाना जीवो की अपेक्षा सर्वकाल जानना है एक जीवृत् की अपेक्षा अन्तुमुँ हुते हो है जोने पूर्वकार वक्षा सम्पक्त की अपेक्षा ्रास्तु क्षातियां—१४६-१३६: १४३-१३६-१३६-१३५-१३५-१०१ को० नं, ६ से १२ देखो १९१५ सम्बर्धा सम्बर्धा नीतो की अमेका असंख्यात जानता । क्षर्क असी वालों की संख्या ६ से १२ गुर्स स्थान की भे रेह क्षेत्र—लोक का श्रमस्योतियों भाग जानना। है । पत्रीन—लोक का श्रमस्यातिया भाग जानना।

क्षा है है े हां जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना

हर्सीक रीत क्षेत्रींट अगून

1.155 1.157 171715	1.17	45.1%	אל פון וליי		मन्त्र साम म	ŗ
क्र॰ स्थान  सामान्य ग्रालाप	पयिति				अपयिति	tr:
	नाना जीव की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	के नाना एक जीव के एक में समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
6	m	>	<i>ઝ</i>	υν	*	ឋ
१ मुसा स्थान २	ج جست کی سلته دو	सारे गुरा स्थान	१ मुसाः	۵ <u>ا</u>	<i>~</i>	~
र जीव समास संज्ञी पं०-पर्याप-अपराप्ति	र मंत्री पनेन्द्रिय पर्याम अवस्था	१ समास	१ समास	१ देव गुरा० जानना १ संजी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सन्वस्था	~	~
३ पर्यापि		१ भंग	१ भंग	m	१ भंग	१ भंग
कीठ नठ १ दिखा	५ का भग को दं १ न देखो	६ का भग	६ का भेग	३ का भंग को० नं० १८ देखो	३ का भंग	३ का भंग
४ प्रास्त १०	; >> ⟨	. १ भंग	१ भंग १ भंग		१ भंग	१ भंग
आषु, कायवल, इवासोच्छवास.	मनुष्य गांत में ४-१ के भूम	४-१ के मंगों.में से	४-१ के मंगों में	, आयु-काय बल ये (२)	२ का भग	२ का भंग
वचन बल ये (४)	को० नं० १८ देखो	काइ १ मन जानना	त काइ ५ मग जानना	र का भग को० नं० १ द देखो		
र संजा	(o) भ्रपगत संज्ञा	o	. 0	. 0	0	, <b>o</b>
६ गात ७ इन्द्रिय जाति १	१ मनुष्य गात १ पंचेन्द्रिय जाति	~ ~	~ •	~ 0	~	<b>∞</b> (
न काय १	१ तसकाय	· «	•	~ ~	· ~	ar a
ह याग सत्य वचन योग १.	भ्रं भौऽ मिश्रकाययोग १	सारे भंग	१ योग	•	सारे भंग	१ योग
अनुभय वचनयोग १,	1			आ० ।मश्र काययाग १ ।२ नामामा नाययोग १	२-१ क भग जानना	<b>∼∼ 후 भ</b> ग 과 과 교수
सत्य मनोयोग १, अनभय मनोगोग १	ये २ घटाकर (·) गन्दरम् मन्ति से			ये २ योग जानना		र योग १ योग
मीं मिश्रकाययोग १.	१-३-० के भंग	४-३-० के भंग	४-३-० के भंगों		•	जानना
श्रीदारिक काययोग १, । कामील काययोग १	को० नं० १ द देखी		में से कोई १ योग	को० नं० १ द देखो		
ये ७ योग जानना			जानना		•	

_
<u></u> የሂራ
<u>&gt;</u>
_

चौत	चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक	नं० ६३		केवल	ज्ञान में
~	•	m	>>	*	w	w	វេ
१० वेद	0	(०) अपगत वेद	0	o	O	0	0 . 1
११ कवाय	0	( ) मनवाय	•	o	0	0	0
	~	१ केबल जान जानना	~	~	~	~	~
१३ स्यम	~	१ यथास्यान जानना	~	~	~	~	~ ·
>0	~	१ केबल दर्शन जानना	~	~	~	~	<b>~</b>
१५ लेस्या	~	१-० के मंग	सारे भंग	१ लेख्या	गुमल लेश्या जानना	~	~
		क्रो० नं० १ न देखो	१-१ भंग	१ लेख्या	को० नं० १८ देखो	-	Art days when
१६ भन्यत्व	~	१ भव्य जानना	~	~	~	~	~ ·
१७ सम्यक्त्व	~	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानता	~,	~	~	~	~
१ द संजी	0	(०) यनुभय श्रयति, न संज्ञी न ग्रसंज्ञी जानना	0	o	o	•	0
Activitie 9 9	r	•	मारे भंग	१ जनस्या	~	मारे भंग	१ ग्रवस्था
Actual material	Activity A	मनस्य गति में	8-9 Hin	१-१ में में कोई	मनष्य गति में	१-१ से भंग जानना	१-१ में से कोई
, far ( ) 21 k	2	११ के भंग	जानना	१ ग्रवस्या	१.९ के भंग	•	१ जनस्या
		कों मं १ द देखों			कों नं १ द देखो		
२० डपंबोग	D.	6	मारे भंग	१ उपयोग	or	मारे भग	१ उपयोग
जानोपवीग १, दर्शनोप-	, दर्शनाप-		दोनों य्गपत जानना	दोनों उपयोग	२ का भंग	दोनों उपयोग	दोनों युंगपत्
योग १.ये २	२ उपयोग	को० नं० १८ देखो	,	युगपत् जानना	को अनं १ द देखो	युगपत् जानना	जानना
२१ ध्यान	0	r	सारे भंग	् ध्यान	~	सारे भंग	१ च्यान
सुधम क्रिया प्रति पाति	गित पाति	१-१ के अंग	१-१ भंग	दोनों में से कोई	१ का मंग	१ भंग	१ घ्यान
व्युपरत किया नियातिनी		को०नं० १८ देखो	जानना	१ च्यान जानना	को०नं० १८ देखी		**************************************
ये २ हमान जानमा	<del></del>	सुचनापेज ५ = पर देखो	,				•
२२ ग्रासव	ອ	メ	सारे भंग	२ भंग	ዮ	Ή	े भग
अपर मे ७ गोग जानना	ोग जानना	4-3-0 के भंग	मों नं १८ देखो	को नं ० १८ देखी	२-१ के भंग	को० नं० १ न देखो	मोठन० १८ दलो
		को० नं० १ व देखी			को० नं० १८ देखो		,
२३ भाव	>>	2.8	सारे भंग	१ भंग	× ~	सारे भंग	१ भंग
सापिक भाव	ह, मन्त्य	मन्दय गति में	मोठ नं० १८ देखो	कोठनं । १८ देखी	मनुष्यं गति में	को० नं० १ द देखो	को नं० १८ देखो
गति १, गुगल लेभ्या १,	न लेख्या १,।	१.४-१३ के भंग			१४ का भंग		
म्रसिद्धत्व १, जीवत्व १,	जीवत्व १,	को० नं० १ न देखी			को० नं० १ न देखो		
भड्यत्व १ मे	१४ भाव.						
जानना	-					-	

```
बंघ प्रकृतियां— १३वें गुराए में १ साता वेदनीय का बन्ध जानना, १४वें गुराए में प्रबन्ध जामना ।
  को० नं ९६ से १४ देखो।
%
१८
१८
सुचना—यहाँ मनोयोग नहीं होता है उपचार से कहा गया है।
   उदय मक्तियां—४२, १२, को० तं० १३ ग्रीर १४ देखो ।
               ..
श्रवगाहना— ३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना ।
   जाति (योनि)—१४ लाख योनि मनुष्य की जानना ।
   फुल—१४ लाख कोरिकुल मनुष्य को जानना ।
   (नहदय०२), ५६५,
   सत्व प्रकृतियां— ५५-५२-१३ ''
  भेज--लोक का श्रसंख्यातवां भाग
  ष्मन्तर—कोई यन्तर मही।
  काल सर्वलोक जानमा।
  सक्ति "
  es.
  26
```

चीतीस स्थान दर्शन		कोष्टक नं०	नं० ६४			असंयम में
स्थान सामान्य गानाप	पय्राप्त			अपर्याप्त		
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना । समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	। १ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
~	m	>	<b>x</b>	us	9	tr
्रमुण् स्थान १ में ४ तक के मुम्ग्	% (१) नरक गति में १ से ४ (२) तियंच गति में १ से ४ भोगभूगि में १ से ४ में मनुज्य गति में १ से ४ मोगभूगि में १ से ४	सारे मुस्स स्थान याने अपने स्थान के सारे मुस्स् स्थान जानना	१ गुरा० सारे गुरा० में से कोई १ गुरा० जानना	रे (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तियंच गति में १-२ भोगभूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में	सारे गुसा स्थान पर्याप्तिवत् जानना	१ गुरा पर्याप्तवत्
२ जीव समास १४ मो० नं० १ देवो		१ समास हरेक गति में १ मंभी पं० प जीव समास जानना	१ समास हरेक गति में १ सजी पं० पर्याप्त जानता	भोगभूमि में १-१-७ (४) देवगति में १-२-४ ७ अपर्यात अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्यात अवस्था जानना	१ समास हरेक गति में पर्यातवत् जातना	१ समास हरेक गति में पर्याप्तवत् जानना
र्गात मोऽ मंऽ १ सेनो	(२) तियंत्र गति मं ७-१-१ के भंग तो० नं० १७ देखो ६ १) नरक-मनुष्य-देवगति मं हरेक मं ६ का भंग को० नं० १६- १=-१६ देखो	? समास को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १६-१८- १६ देखो	<ul> <li>समास</li> <li>को० नं० १७</li> <li>देखो</li> <li>भंग</li> <li>को० नं० १६-</li> <li>१=-१६ देखो</li> </ul>	(२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के मंग को० नं० १७ देखों ३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में झरेंक में ३ का भंग-को० नं० १६-	१ समास को नं० १७ देखो १ मंग को० नं० १६-१ <i>द</i> - १६ देखो	<ul> <li>समास</li> <li>को० नं० १७</li> <li>देखो</li> <li>भंग</li> <li>को० नं० १६-</li> <li>१६-१६ देखो</li> </ul>

(5)			,		・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・	-
6			-			- 1.1
	m	>>	*	w	9,	n
	(२) तियैच गति में	१ भंग	१ भंग	(२ । तिर्यंच गति में	० भंग	१ भंग
	१-५-४-६ के भंग को० नं , १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	३-३ के भग को० नं० १७ हेखो	को० नं० १७ देखो	कों नं १७ हेखो
(† (†	0 %	१ भंग	१ भंग		म ~	**************************************
দাত নত < বল।	(१) गरा-मनुष्य-दवगात म हरेक में	का <b>ः</b> नः १६-१६- १६ देखो	का न० १६- १८-१६ देखो	(१) नरक⊹मनुष्य-देवगति में हरेक में		को० नं० १६- १८-१६ देखो
	१० का भग-का० न० १६-१ द-१६ देखो			७ का भंग को ऽनं० ১೯-२१-२६ टेस्टो		
	(२) तियँच गति में	० भंग	१ भंग	१५-१५-१८ ५९। (२) तियंच गति में	१ भंग	१ भंग
	१०-१-५-४-१० क भंग-को० नं० १७ देखो	का० न० १७ द्वा	कार्ठ न ० १७ देखो	७-७-६ ५-४-३-७ के मंग को०न ४९० देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो
५ सजा	>~	० भंग	nin 6	,	1	-}
को० न० १ देखो	नारों गति	कों० नं० १६ से	कों मं १६	४ चारों गतियों में द्वरेक्त में	१ भग को० नं० १९ भे	्रभग को० न० १०
	४ का भंग-को० नं <b>०</b> १६ मे १६ असो	१६ देखो	~=	भंग को वन	·	से १६ देखो
६ गति	~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~	१ मति	१ मति	१६ स १६ दला ×	و عراق	ه با
को० नं०१ देखो	चारों गति जानना	,	: :	चारों गति जानना	<del></del>	
	का० न० १६ स १६ देखो			कोऽन०१६से १६ असो		
७ इन्द्रिय जाति		१ जाति	१ जाति	>\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	१ जारि	१ जाति
कीं नं ं देखो	<b>€</b>	को० नं० १६-१८-	कोठ नं० १६-	(१) नरक-मनुष्य-देवगति	को० नं० १६-१⊏-	को० न० १६-
	१ मंत्री पंत्रेतिस्य जाति	१८ देखा		में हरेक में	१६ देखो	१८-१६ देखो
	को० नं० १६-१६-१६			१ संशा पचान्द्रय जगात को० नं० १६-१६-१६		
	देखां	(		देखो		
	(२) तियंच गति में ४-१-१ के भंग—कोठ नंठ	१ जाति क्रो० नं० १ ७ भेको	१ जाति	तियंच गति में	् १ जाति	्र जाति
	१७ देखो		यार गुरु देखो	क भग-का० न० खो	का , न० १७ दला	काः न ० १७ देखो
			_			-

_
·
es.
<u>س</u> مر
_

श्रसंयम में	น	ं क्षाय - कोण्नं०१६-१द-   १६ देखो	 १ काय को०नं० १७ देखो	१ योग	ह को० नं० १६ से १६ देखो		१ वेद   को०न० १६ देखो	१ वेद मोठनं० १७ देखो
· ·	உ	१ काय को० नं० १६-१८- १६ देखो	१ काय कोंग्नं० १७ देखो	१ भंग	को०नं० १६ से १ <b>६</b> देखो		१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को न०१७ देखो
	US	६ (१) नरक-मनुष्य-देव गति, में हरेक में १ देसकाय जानना कोठ नं० १६-१६-		कार्यक १० दुवा ३ औ॰ काय्योग १, वै॰ काय्योग १, कार्याम इ	ये ३ थंग जानना (१) नरक-तिर्यंच-मनुष्य देवगति गति मे हरेक मे	१-२ के मंत कोठनंठ १६ से १६ देखी	3 (१) नरक गति में १ नगुंसक हेद जानना	, (२) तियंच गति मे = १-३-१-१-२-२ के भंग को कोठ नंठ १७ देखो
( ४६१ ) कोष्टक नं० ६४	ər	१ काय को०नं० १६-१ <i>न-</i> १६ देखो	१ काय कोंग्नं० १७ देखो	१ योग	कोठनं० १६-१द- १६ देखो	१ योग कोठनं० ६७ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	१ वेद सोठनं० १७ देखो
) क्रीक	>>	१ काय को० नं० १६-१६- १६ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ भंग	को० नं० १६-१८- १६ देखो	१ भंग को० नंऽ १७ देखो	१ गांग को० नं० १६ दे वो	१ मंग को॰ नं० १७ देखो
दर्शन	m	६ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ त्रसकाय जानना	7	१० श्रो मिश्रकाययोग १, यै० मिश्रकाययोग १, कामी्ग काययोग १	चें.	कोठनं० १६-१=-१६ देखो (२) तिर्मच गति में ६-२-१-६ के भंग कोठ नं० १७ देखो	३ (१) नरक गति में १ नषु नक बेद जानना	का० न० १६ देवा (३) तिसंग मि में ३-१-३-२ के भंग को० न० १७ सेनो
चीतीस स्थान दर्शन	~	द कार्य कोठ नंठ १ देखो	,	१३ न्ना० मित्रकापयोग १, प्राक्षारक कावगेग १, के २ बटाकर (१३)		A COLUMN TO A COLU	१० मेर मोठ नंव १ मेरी	

असंयम में	n	१ वेद को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग १ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो १ यान १ यान १ यान को०नं० १६ देखो	2
ļ.	9	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो हो। १६ देखो हो। १६ देखो हो। १६ देखो हो।	
	us-	(३) मनुष्य गति में ३-१-२-१ के भंग को०नं० १ द देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो २५ ११) नरक गति में २१-२३-१५-२५-२३-२५- को० २१८-२३-१५-२१-२३-२५- को० २४-२३-१५-२१-२३-२१- को० २४-१६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २१-१६-२४-१६ के भंग को० नं० १६ देखो (४) देवगति में २४-१८-२३-१६-१६ को० को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो र१ नरक गति में के भंग को० नं० १६ देखो र१ नरक गति में	खो
<sup>६२</sup> ) नं० ६४	<b>5</b> 4	१ वेद कोठनं० १ द देखी १ वेद कोठनं० १६ देखी १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग कोठनं० १६ देखी १ भंग कोठनं० १६ देखी १ शान कोठनं० १६ देखी	
( ४६२ कोष्टक नं	>	सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १९ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	,
चौतीस स्थान दर्शन	m.	(३) मनुष्य गति में ३–२ के भंग को० नं० १ द देखों (४) देवगति में २-१-१ के भंग २-१-१ के भंग २५ १६ देखों (१) नरक गति में २३-१६ के भंग को० नं० १७ देखों (२) तिर्यंव गति में २१-२२-१४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-२४-२१-१४-२१-१४-२१-१४-२१-१४-२१-११-११ देखों को० नं० १६ देखों वो० नं० १६ देखों दे? तिर्यंव गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखों २२-३-३-३ के भंग को० नं० १६ देखों	
चौतीस स	~	ज्याय २५ को० नं० १ देखो तान ६ को० नं० १६ देखो	
ì	~	११ कपाय को० स को० स को० स	

																	,													
श्रसंयम में	ħ	१ समि	को० मं० १ प	•	१ ज्ञान	को० न० १६	देखो	~		•		१ दर्शन	ो को० नं० १६			१ वर्शन	को० नं० १७		१ वर्शन		देखो	१ दर्शन	को० न ० १६		१ लेख्या		देखो	,	तेद्या	का० न० १७ येलो
श्रसं	9	मारे भंग	को० नं० १ द देखो	•	सारे भंग	को० नं० १६ देखो		~				१ भंग	पुर			१ भंग	को० नं० १७ देखो		सारे मंग	को० नं० १८ देखो		१ भंग	की० नं० १६ देखो		४ भंग	को० नं० १६ देशो		•		किंग् १७ देखी
`	us	(३) मनत्य गति में	२-३-२-३ के भंग	को० नं० १८ देखो	(४) देवगति में	२-२-३-३ के भंग	को० नं० १६ देखो	~	चारों गतियों में	E	मों नं १६ से १६ देखो	m	(१) नरक गति में	२-३ के भंग	को० नं० १६ देखो	( - ) तियंच गति में	१-२-२-२-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में	२-३-२-३ के भंग	को० नं० १८ देखी	(४) देवमति में	२-२-३-३ के भंग	को० नं० १६ देखो	ילט.		३ का मंग-को० नं	१६ देखों १२: हिन्दा न	्रावयम् गातम्	१-१ का सगन्तारु न्र १७ देखो
नं० ६४	አ	9 जारन		•	१ सान	कों नं १६	देखो	•				१ दर्शन	कों नं १६	देखो		१ दर्शन	कों मं ० १७	देखो	१ दर्शन	क्षो० नं० १८	देखो			देखो	१ लेश्या	कों० नं० १६	देखो		र तस्य।	कार नुरु १५ देखो
कोष्टक नं०	>>	माने भंग	कों० नं० १८ देखो	•	सारे भंग	को० नं० १६ देखो		a				१ भंग	को० नं० १६ देखो			१ भंग	को० नं० १७ देखो		सारे भंग	10		१ मंग	को० नं० १६ देखो		17.	कों मं १६ देखो		. !	ながらずる	2.
धिन	m·	(३) मनत्य गनि में	३-३-३-३ के भूग		(४) देवगति में	३-३ के मंत	को० नं० १६ देखो	<b>3</b> *,	चारों गतियों में	१ असंवम जानना	को० नं० १६ से १६ देखो	m	(१) नरक गति में	२-३ के भंग-को० नं ३ १६	संबो	(२) तियंच गति मं	१-२-२-३-३-२-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	(३) मनुत्य गति में	२-३-२.३ के भंग-को० नं०	१ न रेखो	(४) देवगति मं	२-३ कि भग	की० नं० रह देखो	(	•	ने मा भग-ना० न० १६	(c) (c)	in the	१० येली
चीतीस स्यान दर्शन	૪						· *	~	ग्रसंयम	*		u).	का० नं । १६ देखो												υ»,	मार म ० १ रेगो			***************************************	
नीत	~							१३ मंपम	-,			१४ दर्शन	क्रिंग न											,	१८ न्यत्	2015				

ر الا	
23× )	

नौनीय स्थान दर्शन	त्र <u>,</u>	(ं ४६४ कोष्टक नं०	~ »		श्रसं	त्रसं ।म में
4 4414 4414 4	er	>>	አ	U9°	<b>6</b> )	ß
	(३) मनुष्य गति में ९-३ के भंग	सारे भंग को. नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	ति में श्रेमो	सारे भंग क्षोठनं० १८ देखो	१ लेक्या को०नं० १८ <sub>,</sub> देखो
	10	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ लेख्या को०नं० १६ देखो		१ भंग को० नं० १६ देखी	१ लेश्या को०नं० १६ देखो
१६ भव्यत्व २ भव्य, अभव्य	को० नं० १६ देखो २ चारों गतियों में हरेक में	१ भंग को० नं० १६ से १९८ हेम्बो	१ अवस्था को०नं १९६ से १९ देखो	्र २ तयों में हरेक में मंग	ं भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ अवस्था १६ को०नं० १६ से १६ देखी
१७ सम्प्रयुत्ति ह स्रोधनंत्र भित्रो	५-१ क भन को० नं० १६ से १६ देखो ६ १) नरक गति में	रू म देखा	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	को० नं० १६ से १६ देखो ५ मिश्र १ घटाकर (१)	सारे भंग स्रोत्यंत १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०न• १६ देखो
	के मंग देखो भे		१ सम्यक्त	(१) नरक गांत म १-२ के भंग को० नं० १६ देखो		१ सम्यक्त
	-2-3 (a)	के भंग को जं १७ देखो	कोठनं० १७ देखो १ सम्प्रहाव	(२) तियन गात म १–१–१–१–२ के भंग क्रो० नं० १७ देखो	कोठनं० १७ देखो	क्रो०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गांत म १-१-१-३-१-१-३ के भंग क्रोत मंत्र १८ हेखो	18	र तन्त्र भ्य कोठनं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में सारे भंग १-१-२-१-१ के भंग को ०नं० १ द देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
	(४) देवगति में १-१-१-२-३-२ के मंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	को० नं० १८ देखों (४) देवगति में १-१-३ के मंग	सारे भग को०नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०न० १६ देखी
ै दन संजी संजी, श्रसंजी	$\mathbb{S}$	१ भंग को०नं० १६-१८-१६ को०नं० १६-१८- देखो	१ अवस्या १ मो०नं० १६-१ प्त- १६ देखो	मः 🤡 भ	१ भंग तकोठनं०१६-१६-१६	१ अवस्था को०नं० १६-१६- १६ देखो
٠	१ संज्ञी जानना को०नं० ६-१८-१६ देखो			~.₽.	<del>-</del>	

त्रसंमय में	r.	१ सनस्या क्रो०नं०१७देखो	१ ज्ञवस्था को०नं० १६ और १६ देखो	हरेक भंग में से कोई १ अवस्था	१ उपयोग	कोठनं १६ देखो	१ उपयोग कोठनं० १७ देखी	१ उपयोग को०नं० १ द देखो १ उपयोग को०नं० १६ देखो
<b>統</b>	9	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ और १६ देखो	हरेक में दोनों में से कोई १ ग्रवस्था	१ भंग	क्तीं नं १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० न० १६ देखो
	-دن	(२) तियँच गति में १-१-१-१-१के भंग को० नं० १७ देखो		देखो तियंच-ममुष्य गति में हरेक में १-१-१-१ के भंग	ਾਹਿ 📴	(१) नरक गति में ४-६ के भंग		
) 5 & &	<u>ح</u>	१ स्रवस्था कोऽनं० १७ देखो	१ को०नं० १६ और देखो	१ हरेक म	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग	काठन० रुख दक्षा १ उपयोग कोठनं० रुच देखो	१ उपयोग की०मं० १६ देखो
( ४६५ कोप्टक मं०	>	१. भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६ मौर १६ देखो	०म ४५ <b>०</b> स स	१ भंग क्रो० नं० १६ देखो	१ भंग	काठ नठ १७ दखा मारे भंग कोठ नं० १ द देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
इथीन	æ	(२) तियंन गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ नरक-देव गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० न० १६ श्रीर १६	देखा तियेच-मनुख्य गति में हरेक में १-१ के भंग	को० नं० १७–१८ देखो ६ (१) नरक गति में ॥ ६.६ के भंग	र-र्-र् भा नग को० नं० १६ देखों (२) तिर्यंच नि में		को० नं० १८ देखो (४) देव गति में ५-६-६ के भंग को०नं० १६ देखो
चींतांस स्थान दर्शन	٤ 3		१६ माहारक यहिरक, मनाहारक		२० उपग्रीम कोर्ल्स १६ देखो	·		

_
ω ω >ο
_

चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	ر س -		अस	असंयम में
8	w	>>	*	υy	9 . :: 	អ
२१ ध्यान श्राते ध्यान ४,	१० (१) चारों गतियों में हरेक में	सारे भंग को० नं० १६ से	१ घ्यान को० नं० १६	ह अपाय विजय धर्मध्यान	सारे भंग	१ ध्यान
रीद्रध्यान ४, ग्राज्ञाविचय १, ग्रपायविचय १	द-६-१०, के भंग-को० नं० १६ से १६ देखो	१६ देखो	से १९ देखो	# # # # # # # # # # # # # # # # # # #	को० नं० १६ से १६ देखो	को० नं० १६- १द-१६ देखो
य १० ध्यान जानना				मग्र−का० १९६ देखो मैच गति में के भंग १९७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो
ः रु ग्राह्मव ग्रा० मिथकाययोग १	५२ ज्रो० मिश्रकाय योग १	सारे भंग अपने श्रपने स्थान	१ भंग सारे भंगों में से	४५ ववनयोग ४ मनोयोग ४,	सारे भंग अपने अपने स्थान	१ भंग सारे भगों में
शाहान्य काष योग १ ये २ घटाकर (४५)	वै० मिश्रकाय याग १, कार्माश्यकाय योग १	के सारे भंग जानना	कोई १ भंग जानना	मौ० काययोग १ वै० काययोग १ ये १०	के सारे भंग जानना	से कोई १ भंग जानना
	य ३ घटाकर (५२) (१) नरक गति में ४६-४४-४० के मंग	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	घटाकर (४५) (१) नरकगति में ४२-३३ के भंग	को० न०१६ देखो	को न १६ देखो
	का० न० १६ दे हा (२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३८-००-४३-५१- ४६-४२-५०-१४-४१ के मंग- को० न० १७ के	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	नियाँ तियाँ सम्म	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं०१७ देखो
	समान जानना (३) मनुष्य गति में ११-४६ ४२-५०-४५-४१ के भंग-को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग		को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-४३-३६-३३ के भंग को० नं० १८ हेखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं०१८ देखो
	५०-४४१-४६-४४-४०-४० के भंग-को। नं० १६ देखो	#	को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को०.नं०१६ देखो

_
95%
>>
_

				~		<u>۾</u>				្ត			લ્ય							
अस्यम में	น		१ भंग	१ भंग को० नं०	देखो १ भंग	को० नं०	देखो		१ भंग	मों मं	दला	भूम	कों० नं०	दखा						
郑	၅		सारे भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	माने भग	को० नं० १७ देखो			訊	部		सार भग	को० नं० १६ देखो	,						
,	ບາ	३३ के मंग को० नं० १६ देखो	४० कुग्रवधि ज्ञान घटाकर् (४०)	(१) नरक गति में २५-२७ के मंग	को० नं० १६ देखी (२) निग्नैस मि में	-22-92-92-82-82	२३-२५-२५-२४-२३- २५ के भंग-को० नं०	१७ देखो	(३) मनुष्य गति में	३०-२८-३०-२४-२५ के	भग का० न० १व देखा	(४) दवगात म	75-78-75-78-78-73-	की० नं० १६ देखी					٠	
नं० ६४	አ		१ भंग को० न० १६	- - -	१ भग कोऽ मंऽ १७	<u>,                                     </u>		१ भंग	को० नं० १८	देखो	1	44	को० नं० १६				,	,		
कोष्टक नं०	>>		सारे भंग को० नं० १६ देखो		सारे भंग को० नं० १७ देखो			सारे भंग	10		1	सार अग	कोठ नंठ १६ देखो							
दर्शन	m·		Al	र्द्रुबन्द्रुव्याच्या भारता प्रमाणकार प्रम प्रमाणकार प्रमाणकार प्रमाणकार प्रमाणकार प्रमाणकार प्रमाणकार प्	(२) तिर्यंच गति में	३२-२७-२४.२६-२६ के मंग	को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में	-% c-0c-23-06-36-66	२६-२६ के भंग को० नं	्न देखा (५) भ्यमिन भ	(0)	- 14-95-56-56-56-56-56-56-56-56-56-56-56-56-56	२४ के मंग को० नं० १६	नेवो	The second				
चीरंग्स स्थान दर्शन	2 1 2		२३ भाव उपयम-थापिक समास्यय स्थास ३	तान्य १९२७, जुनाप्य १, जान्य ३, दर्शन्य, लहित्य ४, वेदक-	सम्मन्त्व १, गति ४, मनाम ४. विम ३.	लेक्या ६, मिथ्या-	~~~	भाव ३,	ये ४१ जानना		•									againstannin g

प्रमगाहना--को० नं० १६ से ३४ देखो।

मंघ प्रकृतियां---१ से ४ गुएए० में कम से ११७-१०१-७४-७७ प्र० का बंध जानना। को० नं० १ से ४ देखी।

उदय प्रकृतियां—

१४८-१४४-१४७-१४८ मौर १४१ म० सत्ता जानना। को० नं० १ से ४ देखो ११७-१११~१००-१०४ प्र० का उदय जानना। को० नं० १ से ४ देखो। सत्व प्रकृतियां---

संख्या--श्रमन्तानन्त जानना

भेत्र --सर्वलोक जानना।

स्पर्धन-सर्वलोक जानना।

जानना ।

मग्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जी । की अपेक्षा अन्तंमुहूर्त से अन्तमुँहूर्त कम एक कोटिपूर्व तक संयमी बना है असंयम प्र पत न सके।

ज ति (योनि)—६४ लाख योनि जानना।

कुत्र – १६६॥ लाख कोटिकुल जानमा।

( %६६ )

१ १ १ १ भंग को० नं० १७-१न १ भंग को० नं० १७-१न १ भंग
१ १ १ भंग का० नं० १७-१८ १ भंग को० नं० १७-१८
१ भंग ६ का भंग का० नं० १७-१ द १ भंग १० का भंग को० नं० १७-१ द
१ भंग ६ का भंग का० नं० १७-१८ १० का भंग को० नं० १७-१८ १ भंग
का० नं० १७-१ द १ भंग १० का भंग को० नं० १७-१ द १ भंग
१ मंग १० का मंग को० नं० १७-१ न १ मंग
को० नं० १७–१न १ भंग
_
को० नं० १७-१ देखों निर्ा नं० १७-१ द देखो
१ गति १ गति
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

<i>(</i>		( 00	•	
चौतोस स्थान दर्शन	। दर्शन	૦ ૬૫	संर	संयमासंयम मे
۵ .	lo.	>>	<b>న</b>	೮-၅-೪
	१ संजी पंचेन्द्रिय जानना को० नं० १७-१८ देखी			
द काय वसकाय	१ (१) तियंच~मनष्य गति में हरेक में	~	~	
	१ त्रसकाय जानना इने नं० १७०-१८ टेम्बो			
ह योग	υ ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω	१ .भंग	१ योग	
योग	(१) तियंच गति में	६ का भग	कों नं १७ देखों	
श्री काययोग १,	८ का मंग	को० भं० १७ देखो		
य (६)	(२) मनुष्य गति में	८ का भंग		
· h	८ का भग	कोठ मं० १व वेखो	को० नं०	
र वद में प्राप्त में प्रमाने	**************************************	(१) तियच गति म १ भग	ত্ব	
_	(१) (तथन-मनुष्यं गात म हरक	(४) मनुष्य गांत म सार भग		
	द का भग को० नं० १७—१	का० न० १७-१८ दिला	कों० न० १७–१ न देखो	
१९ कपाय १७	٠ ٩ ١	सारे भंग	٠, ٢, ٥	
प्रत्याख्यान कपाय ४,	(१) तिर्यंच-मंगुष्य गति में हरेक में	को० नं० १७-१ व देखो	को ०मं० १७-१ सम्बो	
	्रं मा मंग	•		
नो न्दाय ह ये (१७)	को० मं० १७-१८ देखो			
१२ ज्ञान	ar (	(१) तियंच गति में १ भंग		
मात-श्रुत श्रवांच		(२) मनुष्य गति में सारे भंग	१ ज्ञान	
	3 की मंग	कोर्जन १७-१ द देखो	को० मं	
१३ मंग्रम	ক।ত নত <্ডি—্থ द्वा ।	. ]		
संयमामं	, भ ऋंद्र भ सीम प्राप्तम मिन ११	र भग	१ संयम	
	१४) त्यं यन्त्रेज्यं गार्यं न हर्यं न १ संघमासंघम जानना	का० न ९७-१८ द्वा	किं नि १७-१८ देखो	
,	कोठनं० १७-१ द देखो			
१४ रर्शन	· m·	2 भंग	o c	
ग्रन्थ दर्शन, चक्ष दर्शन	(१) तिर्यच-मनुष्य गति में हरेक में	को० नं० १७-१८ देखो	र दशन को० नं० १७–१८ देखो	
अवाच दशन य (३)	३ का भग			,
	काठन० १७१व स्वा	-		•

चींतीस स्थान दर्शन		( ४७१ ) कोप्टक नं० ६५	संय	स्यमास्यम मे
6	W.	న	υy	#-๑-⅓
१५ ने।या गुनभ नेस्या जानना	३ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ३ का भंग को० न० १७-१ देखो	१ भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ लेख्या को० नं० १७–१ द देखो	
१९ भःयत्व १	३ (१) तिर्यच-मनुष्य गति में हरेक में १ भव्य जाननः को० नं० १७–१ देखो	१ को० नं० १७–१= देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	
१७ सम्प्रवत्य उपद्यम-आप्रिक-क्षयोपद्यम	र (१) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखी १ सम्यक्त्व	
१ = मंडी स्वी	ड का भग को० नं० १८ देखों १ १) तिर्यच—मनुष्य गति में हरेक में १ सझी जानना	का० न० १न दत्ता १ को० नं० १७—१न देखो	काऽ न० १८ दवा १ को० नं० १७-१८ देखो	
१६ पाहारक ब्राह्म	का० न० १७-१६ दखा १ (१) तियँच-मनुष्य गति में हरेक में १ प्राहारक जानना तो० नं० १७-१६ देखो	१ को० नं० १७-१म देखो	१ कोः नं० १७-१ द देखो	
६० डपयोग जानोग्योम ३ १८६ तियोम ३, मे (६)	्र (१) निर्यच-मनुष्य गति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ उपयोग कोऽ नंऽ १७१द देवो	,
	Мандар онносидь даларо Алер отпольто, получина разретту ¬, з., получиненняющей операльную посиденняющей посиде			•

संयमासंयम में	క•၅స్త	
संय	<i>S'</i>	१ ध्याम को० नं० १७-१ द देखो को० नं० १७ देखो को० नं० १७ देखो
ر د د د د د د د د د د د د د د د د د د د	>-	१ भंग सारे भंग सो० नं० १७१८ देखो सो०नं० १७ देखो सारे भंग सारे भंग सारे भंग
( ४७२ कोप्टक न ०	, e	११ (१) तिर्यन-मनुष्य गति मं हरेक में ११ का भंग को० नं० १७-१८ देखी ३७ (१) तिर्यन मनुष्य गति में हरेक में ३७ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना सामान्य के ३१ में से क्षायिक स०१, मनुष्य गति भें २ घटाकर २६ का भंग जानना (२) मनुष्य गति में इ० का भंग सामान्य ३१ के भंग में से तिर्यन गति १ घटाकर ३० का भंग जानना
चौंतीस स्थान दर्शन	٤ ٤	२१ ध्यात ४, रीव्र ध्यान ४, अज्ञात वि०, अज्ञात वि०, अज्ञाय वि०, अज्ञाय वि०, विव्य ३, वे ११) २२ ज्ञास्त्र व्यस्तिस्सा वटाकर ज्ञावस्त १९, (हिसक स्पर्शादि इन्द्रिय विष्य ५ ४ + हिस्य ६ वे ११) योग ६, कपाय १७ वे १२०) जानना ३, दर्शन ३, लिव्य ५ स्प्रमान विदक सम्प्रकल १, संप्रमान संप्रम १, तिर्यंच गति १, मनुष्य गति १, कपाय ४, लिंग ३, अभ लेख्या ३, अज्ञान १, असिद्धं १, जोवत्व , भव्यत्व १

४ अदमाहरा—नंख्यात घनांगुल से एक हजार योजन तक जानता।

५ बंघ प्रकृतियां— ६७ को० नं० ५ देखो

उदय प्रकृतियां---- प

२७ सस्य प्रकृतियां—१४७—१४०

संस्या-- १ त्य के ग्रसंस्यात में भाग प्रमाण जानना ।

ह क्षेत्र—लोक का प्रसंस्यातवां भाग जानना।

स्पर्यंत—लोक का श्रसंख्यातवां भाग ६ राजु जानना । को०नं० २६ देखो

मान-नामा जीवों की प्रपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की प्रपेक्षा प्रन्तमुँहुते से अन्तमुँहुते घौर पृषक्रव वर्ष कम कोटिपूर्व वर्ष तक

क्रनर — म.ना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं। एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुतै से देशोन् ग्रर्ध पुद्गत परावर्तन काल तक देश संयमी नहीं वन सके।

जाति (योनि)—१८ लाख ममुष्य योनि जानना । (तियीच ४ लाख, मनुष्य १४ लाख ये १८ लाख जानना) कुल—५७॥ लाख कोटिकुल जानना (तिर्यच ४३॥ घौर मनुष्य १४ ये ५७॥ लाख कोटिकुल जानना) (४७४) कोप्टक नं० ६६

The state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the s

चातास स्थान वशन	शैन	कोष्टक नं०	ns, ns,	सामायन	सामायिक-छेदों पर्थापना	ह्यम म
स्थान सामान्य ग्रालाप	पर्याप्त			प्रवयस्ति		
	नाना जीवों की भ्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
~	æ	>	<b>ઝ</b>	UΥ	9	u
१ मुस्स स्थान ६ से ६ तक के मुस्स	४ मनुष्य गति में६-७-द-९	सारे मुख	१ मुस्त	१ ६वां गुरा स्थान जानना	~	ar
२ जीव समास संजी पचेरिद्रय पर्याप्त	य ८ गुराठ जानगा १ संजी पंचेह्दिय पर्याप्त	~	~	१ सक्षी पंचेस्टिय श्रुपक्षि	<i>م</i>	ar
अप० ३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	कार न्य द्वा ६ ६ का भंग—कोर नंर १८ हेखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ हेखो	कार नुव दुवा ३ ३ का मंग्-को० नं० १८ हेखो	१ भंग १८ को० नं० १८ देखो	१ मंग को० नं० १ द देखो
४ प्रास्त को० नं० १ देखो	۵	१ भंग १८को० नं० १८ देखो	र भंग को० नं० १८ हेम्बो		१ भंग को० न० १८ देखो	१ भंग को० नं० १ द
५ संज्ञा कॉ० नं० १ देखो	रता ४ मनुष्य जाति मे ४-३-२-१ के भंग	सारे मंग को० नं० १८ देखो	१९५१ १ मंग कोठ नं० १८ देखा		सारे भंग को० न० १८ देखो	४ भंग श्री० नं० १ द देखो
६ गति ७ इन्द्रिय जाति १ ८ काय १	कार कर दला १ मनुष्य गति जानना १ पचेन्द्रिय जाति जानना १ वसकाय जातना	2 8 8 F	~ ~ ~ ;	~ ~ ~ .		~ ~ ~ /
ग्रोग ४, वसन ४, श्र <b>े</b> ० का	र । आ॰ मिश्रकाय योग घटा- कर (१०) (१) मनुष्य गति में	तार मंग कोठ नंग १८ देखो	् या कोठ नं० १८	काय ति में	सार्भग को० नं० १= देखो	१ या। को० न० १ द देखो

चौतीस स्थान दर्शन	र्थान	( ४७६ कोष्टक नं	<sup>9६</sup> ) नं० ६६	सामायि	सामायिक-छेदोपस्थापना संयम् मे	संयम् मे
~	m	>>	አ	موں ·	9	น
९५ लेस्या गुभ लेस्या जानना	रे ( ) मनुष्य गति में ३-३ के भंग-को० नं०	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	रे (१) मनुष्य गति में ३ का भंग-को० नं १८	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ लेश्या को० न <i>०</i> १८ देखो
१६ भव्यत्व १ भव्य	१ - ५९१। १ १ भव्य-को० नं० १ द	~	~	५.स। १ भव्य-को० नं० १ द	~	۰۰
१७ सम्यवत्व उपशम क्षायिक- क्षयोषश्चम स॰ ये (३)	€	सारेभंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	., 0	सारे भंग (२) को० नंः १८ देखो १८	१ सम्यक्तव को० न० १६ देखो
१ द संजी मंजी	१ संशी जानना	av	~	दखा १ संजी जानना	~	e.
्रसा शहारक अनाहारक आहारक अनाहारक	१ १ म्राहारक को० नं० १८ देखो	~	~	१ ९ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	१ को० नं० १८ देखो	१ सनस्था को० नं० १८ देखो
२ · उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३ ये (४)	७ (१) मनुष्य गति में ७-४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	सूचना-पज ७४ पर देखा ६ मन: पर्यंय ज्ञान घटाकर (६) (१) मनष्य गति में	सारे भंग को० न० १८ हेको	१ उपयोग को० मं० १ -
२१ ध्यान इप्टिमियोग छोड़ंकर शेप आर्तध्यान धर्नध्यान ४, पृथक्त- वित्तै विचार थुं ल ध्यान १ में हु हतान	न (१) मनुष्य गति में ७-४-१ के भंग–को० नं० १८ देखो	सारेभंग को० नं० १८ देखी	१ ध्यान को० नं० १८ देखो		भंग % व	देखो १ ध्यान को० नं० १ द देखो
जानना					•	

_
•
5
Š
_

1 संयम में	រ	्
सामायिक-छेदोपस्थापना	ອ	सारे भग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो
सामा	US <sup>o</sup>	क्ष्पाय ४, हास्यादि नो क्ष्पाय ६, पुरुष-वेद २, ब्राह्यारक मिश्रकाय योग १ ये १२ जानना १२ मनुष्य गति में १२ का भग-को० नं० १८ देखो २७ स्त्री-वेद १, नपुंसक- वेद १ मनः पर्ययंजान १ ब्रोर उपश्रम सम्यक्त्व १ योर उपश्रम सम्यक्त्व १ योर उपश्रम के में में घटाकर (२७) जानना १२ मनुग्य गति में २७ का भग-को० नं० १८ देखो १८ देखो
न मं० ६६	×	्र भंग देखी श्रेण नं० १८ देखों देखों
्रु ५५ कोष्टक नं	>>	सारे भंग सारे भंग को० नं० १ - देखो
दर्शन	m	२४ १४ १४ १५ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४
ं चीतीस स्थान दर्शन	~	२२ मासव २४ योग १८, कवाय १३ योग १८, कवाय १३ व ३३ जान १, वास्त्र २, जान ४, वर्षन १, सरागसंगम १, सरागसंगम १, मनुष्य गति १, कवाय ४, ि म ३, द्युम-लेख्या ३, मजान १, महात्र १, मजान

सस्व प्रकृतियां— ६वे मुरा० में १४६, ७वे मुरा० में १४६ या १३६, दवे मुरा० में १४२-१३६-१३६, ६ वे मुरा० में १४२-१३६-१३६ प्र० का **थन्तर—**नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँहर्त से देशोन् ग्रर्थ पुद्गल परावर्तन काल तक सामायिक**-**काल—नोना जीवों की यपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की यपेक्षा ८ वर्ष यन्तमुँ हुर्त कम एक कोटिपूर्व वर्ष तक जानना। सुचना—१६ नं० याहारक के ६ठे स्थान में याहारक मियकाय योग में यनाहारक यवस्था भी होती है। गृह के अस्ता कि हि वंध प्रकृतियां — ६-७-द-६ के गुरार में कम से ६३-४६-४८-२२ प्र० का वंध जानना। को० नं० ६ से ६ देखो। राज्यान्या ं,, द१-७६-७२-६६ प्र० का बंध जानना। सख्या—(न्ट२६६१०३) जानना । विशेष खुलासा को० नं० ६ से ६ देखो **प्रवगा**हना—३॥ हाथ से ५२५ घनुप तक जानना जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना । स्पर्गन-लोक का श्रसंख्यातवां भाग जाननना । फुल —१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना। क्षेत्र-लोक का असंख्यातवां भाग जानना। 3,

परिहार विशुद्धिसंयम में	अपयिति		มาดา	स्चना — यहां पर प्रवस्था नहीं होती है।				,		
परिहार वि		एक जीव की अपेक्षा एंक समय में	x	१ मुस्स स्थान दो में से कोई १ मुस्स० १	१ भंग को०नं० १८ देखो	्रभंग को०नं० १८ देखो	१ भंग कोठनं० १८ देखो	~ ~ ~	१ योग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
कोष्टक नं० ६७		एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	>>	सारे गुरा स्थान दोनों गुरा० १	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ मंग को० नं० १८ देखो	~ ~ ~	सारे मंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १= देखो
	पयिष	नाना जावों की ग्रपेक्षा	Er.	२ ६ प्रमत्त, ७ जप्रमन्त ये २ मुस्स स्थान १ सज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना	ह् (१) मनुष्य गति ६ का भंग	कोः नं		१ मनुष्य गति जानना १ पंचेन्द्रिय जाति जानना १ त्रसकाय जानना	ह (१) मनुष्य गति में ६-६ के भंग	को० नं० १ द देखो (१) मनुष्य गति में १ पुरुष वेद जानना
चीतीस स्थान दर्शन	क <b>्र</b> स्थान   सामान्य		0.	१ 'मुस्स स्थान ६ म्रीर ७ मे २ मुस्स २ जीय समास	३ पर्याप्ति को० नं <b>० १</b> देखो	४ प्रास् को० नं० १ देखो	४ संज्ञा को० नं० १ देखो	६ मति ७ इन्द्रिय जाति १ = काय	ह गोप मनोयोग ४, यननयोग ४, श्रो७ कत्ययोग १ मे (६)	१० वेद

चौतीस स्थान दर्शन	( ४६ ) कोष्टक मं०	<u>ඉ</u>	परिहार विशुद्धि संयम में	दि संयम में
or or	m	>>	*	ಚ <i>್</i> ಕಿ-್ಗಿ
	को० नं० १८ के ३ के भंग में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर १ पृष्प वेद जानना			
११ कपाय संख्या कपाय ४	११) मनुष्य गति में	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भं। कोठनं० १ द देखो	
हास्यादि नास्त्राय ६ पुरुष <b>ेद</b> १, ये (११)	११ का भग को० नं०१ द के १३ में भंग में से स्त्री-नपु सक केट के २ घटाकर ११ का भंग जानना			
१२ ज्ञान	2 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -		१ ज्ञान	
मति- श्रुत-ज्ञविष ज्ञात ये ३ जासना	(१) मनुष्य गति में ३ का भंग	को० नं० १८ देखो	को०नं  १   दलो	
	को०न० १ द के ४ के भंग में से मनः पर्यंय ज्ञान			
	घटाकर ३ का भग जानना १ परिहार विश्वद्धि संयम जानना	~	~	
१४ दर्शन	m	सारे भंग	१ दर्शन	
ग्रचसु-चसु-ग्रवधि दर्शन	(१) मनुष्य गति में ३ का भग —> ÷ ०= >=>	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १ द देखो	
१५ लेखा	कार्ग १५ द्वा ३	मारे भंग	१ लेखा	
भ लेश्या जानना		को० नं० १८ देखो	को०नं ऽ १ न देखो	
	२ का मंग को० नंट १८ देखो			
.१६ भव्यस्व १		~	•	
१७ सम्यक्षेत्र २ साथिक सयोपदाम	रें (१) मनस्य गति में	सारेभंग कोरु मेरु अन् भूतो	१ सम्यक्त्व	
ये २ सम्यक्त्व जानना		155 s 1 0 1 0 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5	15 × 61 0 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10	<b>†</b>
	को० नं० १८ के ३ के भंग में से उपशम			
१ न संजी	१ संशी जानना		~	
		,		

द्धि संयम में	ફ-૭-૪		•••
( ४५१ ) स्थीन कोष्टक नं० ६७ परिहार विशुद्धि संयम	અ	१ १ ध्यान १ ध्यान को० नं० १ देखो को० नं० १ देखो	•
	<b>&gt;</b>	सारे भंग बोठ नं० १ घ देखी सारे भंग कोठ नं० १ घ देखो	
	m	१ ब्राहारक जानता  ६ का भंग  को० नं० १ न के ७ के भंग में से मनः पर्यंग्र  वात १ घटाकर ६ का भंग जानता  ६ १० के भंग  को० नं० १ न देखी  २०-२० के भंग  को० नं० १ न के २२-२२कों भंगों में से स्थी-मधुसक वेद ये २ हरेक में घटाकर २०-२० के भंग  को० नं० १ न के २२-२२कों भंगों में से १०-२० के भंग  को० नं० १ न के २२-२२कों भंगों में से १०-२० के भंग  को० नं० १ न के २२-२२कों भंगों में से १०-२० के भंग जानता  २७  सामान्य के समान जानता  २० का भंग को न० १ न के ३१ के भंग में में उपयान सम्यक्त १, स्थी-नपुंसक वेद २, मनः पर्यंग्र जात १ थे ४ घटाकर २७ का भंग जानता	
चीतीस स्थान दर्शान	~	१६ प्राहारक १ २० उपयोग वे १० उपयोग वे ६ जानना ६ ६ जानना २१ ध्यान व्यट वियोग बहाकर प्रातं ध्यान ११ प्रे ७ जानना २२ प्रां व्यान ११ प्रे ७ जानना २२ प्रां वे १० जानना २२ प्रां वे १० जानना ११ प्रे २० जान १, वेदक स० १, जान १, वेदक स० १, त्रां ३, प्रां ३, प्रां वित् १, क्याय ४, प्रे वे १० प्रां वे १० प्रे १०	भव्यत्त्व १, ये २७ भाव जानमा

ı

प्रवगाहना--- ३॥ हाथ से ५२४ धनुष तक जानना ।

8

```
को० नं० ६ की ८१ प्रकृतियों में से नपुंसक वेद १, स्त्री वेद १, उपश्म सम्यक्त १, मनः पर्यंय ज्ञान १, ये ४ प्रकृ
  सुचना--- वर्ष के उम्र में सयम थारए। करने की योग्यता होती है परन्तु गृहस्यावस्या में ही ३० वर्ष तक संयमासंयम मनस्या निदोष व प्रभाव
   शाली रहने पर जो मुनिवत थारए। करता है उसके ही अन्तमुँहत के वाद परिहारविशुद्धि चारित उत्पन्न हो सकता है जो एक कोहि-
   ग्रन्तर—-नाना जीवों की ग्रपेक्षा  कोई ग्रन्तर नहीं ।  एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुत्   से देशोन् ग्रवंपुद्गल परावर्तन काल तक परिहारिवग्रुद्धि
  नाना जीवों की भ्रपेक्षां सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा श्रन्तमुँ हुर्त से १८ वष कम एक कोटिपूर्व वर्ष तक जानना ।
   ्र से नो० नं० ७ की ५६ प्र० में से उत्पर की ४ प्र० घटाकर ५५ प्र० का उदय जानना।
   ४६३६५२०६, २६६६६१०३ को० नं० ६ और ७ देखो
  सत्व प्रकृतियां —१४६—१३६ को० नं० ६ मौर ७ के समान जानना ।
  पूर्व की शेष त्रायुतक परिहार वियुद्धि संयम रह सकता है।
  जाति (योनि)- १८ लाख मनुष्य योनि जानना ।
   स्पर्भत--लोक का असंख्यातवां भाग जानता ।
   भेत्र--लोक का श्रसंख्यातवां भाग जानना ।
  कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।
          कों नं ६ देखो
                              उदय प्रकृतियां---७७
बंघ प्रकृतियां – ६३
   मांस
                         8
   S.
```

m m

मूक्ष्मा सांपराय संयम में	<b>अपयां</b> प्त		¤~೯)− ಕ್ರಿ	सूचना — यहां पर   अपयक्षि अवस्था नहीं	्रोती है।	•				
मुक्ष्मा स		एक जीव की श्रपेक्षा एक समय में	ጵ	~	~	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १ = देखो	१ को० नं० १= रेखो १	१ १ योग को० नं० १८ देखो	· •
ાં હ લ્ય		एक जीव की ग्रपेक्षा नाना समय में	>>	~	~	१ भंग गो० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं०१ द देखी	१ को० नं० १५ देखो १ १	१ सारे भंग को० नं० १ = देखो	o ~
न कोष्टक नं	पयक्ति	नाना जावों की त्रपेक्षा	'n	~	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १८ देखो	६ (१) मनुष्य गति में ६ का भंग कोऽ नं० १८ देखो	१० (१) मनुष्य गति में १० का भंग को० नं० १० देखो	१ १ परिग्रह संज्ञा जानना को० नं० १८ देखो १ मनुष्य गति जानना १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ यसकाय जानना ह (१) मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० १ द देखी	(०) अपगत वेद (१) मनुष्य गति में १ सुक्ष्म लोभ जानना को० नं० १८ देखों
चीतीस स्थान दर्शन	कः / स्थान   मामान्य		è }	१ मुग्ग स्थान १ मध्म सांपराय जानना	२ जीव समास संज्ञी पंचेत्रिय पर्याप्त	३ पयाप्ति को० नं० १ देखो	४ प्राम् को० नं० १ देखो	थ संज्ञा १ परिग्रह संज्ञा जानना ९ गिन १	१ १८६ थेलो	१० वेद ११ कताम मुक्षम लोभ बानना

	चातात स्थान क्यान			
~	m	>-	≥<	¤-೧-3
१२ ज्ञान	>>	सारे भंग	१ ज्ञान	
केवल ज्ञान घटाकर (४)	(१) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १ द देखो	को० नं० १८ देखो	को०नं० १ न देखो	
१३ संयम	. संयम जानना	~	~	
१४ दर्शन ३	w	सारे भंग	१ दर्शन	
को०नं० ६७ देखो	(१) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १ द देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १ द देखो	
१५ लेस्या १	~	~	~	
गुमल लेस्या	(१) म्तुष्य गति में १ जुक्ल लेक्या जानना	को० नं० १ न देखो	को० नं० १८ देखो	
	क्तिनं १ द देखा			
१६ भव्यत्व १	१ भन्य जानना	~	~	
१७ सम्यक्त्व २	or	सारे भग	१ सम्यक्त्व	
श्रीपर्शामक, सायिक स०	(१) मनुष्य गति में २ का भंग	को० नं० १८ देखो	को० नं० १ न देखो	
	कां न० १८ देखां			
१ द संजी	१ संशी जानना	~	~	
१६ ग्राहारक	१ माहारक जानमा	· ~	- ~	
२० उपयोग ७	<u> </u>	सारे गग	१ उपयोग	
ज्ञानोग्योग ४, दर्शनोप्योग	(१) मनुष्य गति में ७ का भंग	को अनं १८ देखो	को अं १ द देखो	
३ ये ७ जानना	को० नं० १ व देखो	•	*	
२१ ध्यान १	~	~	۵	
पृथक्त वि विचार	(१) मनुष्य गति में १ पृथकत्व वितक विचार	•		
	भुक्ल ध्यान जानना को० नं० १ द देखो			
२२ मासव १०	02	सारे भंग	9 xin	
योग ६. सुष्टम योग १	(१) म्मुष्य गति में १० का भंग	को० नं० १ द देखो	को० नं० १ द देखो	
जानना	क्तांग्ने १ द देखा			
२३ भाव २३	m (r)	सारे भंग	2 nin	
उपशम-क्षायिक स॰ २,	'	को० नं० १ न देखो	को ति १० १० हेखो	
उपशम-सायिक चारित्र २,	को भं १ द देखो	•		
ज्ञान ४, दर्शन ३, लहिंध ४,				
मनुष्य गति १ सूक्ष्म लोभ				
१, गुन्ल लेश्या १, सन्नान				
१, ज्ञासद्भव्य १, जीवत्व १				
भवर्यात १			-	

४ अयगाहमा—३१। हाय से ५२५ घनुप तक जानना ।

१५ वंध प्रकृतियां— १७ को० नं० १० देखो

उदय प्रकृतियां—६०

सत्य प्रकृतियां—१४२-१३६-१३५-१०२ को० न०१० देखो

द संख्या--१९६ और ५६८ को० नं०१० देखो

क्रेत्र—लोक का ग्रसंस्यातवां भाग जानना।

स्पर्धन-लोक का ग्रसंस्यातवां भाग जानना ।

काल—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना । एक जीव की अनेक्षा क्षपक श्रेणी वाले अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त जानना म्रौर उपशम श्रेसी वाले एक समय से मन्तमुँ हूर्त तक जानना।

क्रन्तर — नाना जीवों की अपेक्षा क्षपक श्रोसी में एक समय से ६ महीने तक जानना श्रीर नाना जीवों की अपेक्षा उपश्रम थोसी में एक समय से वर्षे पृयक्त्व जानना और एक जीव की अपेक्षा उपशम शेएी में अन्तर्भे हुत्ते से देशोन् अर्थ पुद्गल परावतीन काल तक सूक्ष्म सांपराय संयम वारमा न कर सके।

जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना ।

४ कुल-१४ लाख कोटिकुल मनुष्य गति के जानना

योग

सारे भंग

ग्रौ० मिश्रकाययोग कामांग काययोग ये (२)

योग

सारे भंग

श्रौ॰ मिश्र काययोग १,

मनोयोग ४, वचनयोग ४, श्रौ० मिश्र काय-

७ इन्द्रिय जाति

१ त्रसकाय जानना

कामित्य काययोग १

ये २ घटाकर (६)

সী০ দাय-

ांयम में	៤	को०नं० १ द देखो	0 (	् १ को०न० १ द देखो	१ १ क्षो०नं० १ = देखो	~ ~ ~ ·	•	१ श्रयस्या को०नं० १ द देखो
यथाख्यात संयम	ອ	विगेशमं १ द देखो	° °	१ को० नं० १८ देखो	१ १ को० नं० १ द देखो	~ ~ ~	o	सारे भंग कोऽनंऽ १८ देतो
	USY	(१) मनुष्य गति में २-१ के भंग	को जनं व्हेट देखों ०	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल ज्ञान जानना		कों	े को० नं० १ द देखो	२ (१) मनुष्य गति मे १–१ के भंग कोट नंट १८ देनो
( W 9 0	೫	क्रीठनं० १८ देखो.		१ ज्ञान को <b>०नं०</b> १८ देखो	१ १ दर्भन को०नं० १ = देखो	१ १ १ सम्पत्त्व को०नं० १८ देखो	१ कोठनं० १ द देखो	१ ग्रवस्था को०नं
( ४५७ कोष्टक नं	>>	को०नं० १८ देखो	• o .	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ १ सारे भंग को० नं० १ न देखो	१ को० न० १ द देसो	सारे मंग को०नं० १८ देखो
चौतीस स्थान दशीन	m	(१) मनुष्य गति में ६-४-३० के भंग	को०नं० १८ देखो (०) श्रपगत वेद (०) कपाय	४ (१) मनुष्य गति में ४-१ के भंग क्रो॰ में १- टेक्से	१ यथाख्यात संयम जानम। ४ (१) मनुष्य गति में ३-१ के भंग	भाग न्य ९५ ५९। १ शुक्ल लेक्या जानना १ भव्य जानना २ ११) मनुष्य गति में १-१ के भंग	को० नं० १८ देखो १ (१) मनुष्य गति में १-० के भंग को० नं० १८ टेको	् १ (१) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को०नं० १ द देखो
र्नोतीस	٠ ٢	योग १, कार्माण काय योग १, ये ११ योग		१२ ज्ञान मति-श्रुत-ग्रवधि मतः पर्यय-केवल ज्ञान	१३ संवम १४ दर्शन प्रचक्ष-चश्रु दर्शन-प्रवधि- केवल दर्शन से ४	१५ सेख्या १६ भव्यत्व १७ सम्यम्हत उपदाम-क्षायिक स०	१ - संजी संज्ञी	१६ प्राहारक प्राहारक, यनाहारक

चींतीस स्थान दर्शन	न दर्शन	( कोष्ट	( ४न्न ) कोष्टक नं० ६६		यथास्यात संयम	संयम में
~	m	>>	*	us	9	n
१० उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग × ये (६)	ह (१) मनुष्य गति में ह) ७-२ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	° उषयोग को०नंऽ १	य स	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
२१ ध्यान गुमल ध्यान जानता (४)		सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १ द देखो	को० नं० १ देखो १ (१) मनुष्य गति में १ सूक्ष्म क्रिया प्रति पाति	१ को० नं७ १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो
१२ फ्रान्नव ऊपर के पोग (११)		सारे भंग	१ भंग	को० नं० १८ देखो २ (१) मनुष्य गति मे	सारेभंग को नं०१० देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
	में २ घटाकर (६) में २ घटाकर (६) (१) मनुष्य गति में ६३-० के भंग	को० नं० १८ देखो	क्ती०मं० १८ देखो	र=९ भ मा को० नं०१ द देखो		
२३ %ाव उपशाम सम्यक्षत्व १, उपशाम चारित्व १, व्यातिकः भारत्	ω	सारे भंग को० नं० १८ देखो भंग	१ भंग को०नं०१ देखो	१४ (१) मनुष्य गति में १४ का भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं०१ द देखो
नात ४, दर्शन ३, लिंडम ४, मनुष्य गति १, धुक्ल लेगूया १, स्रज्ञान १, श्रक्तिद्धत्व १, जीवत्व १, भस्यत्व १, ये २६ जानमा	ति १, म १, १,			के ि न ० १ प देखी		

बंघ प्रकृतिर्षा— ११–१२–' ३वॅ मुस्ए० में १ सातावेदनीय का बन्ध जामता। को० नं० ११–१२–१३ देखो, १४वॅ मुस्ए० में अबन्ध जानना। उदय प्रकृतियि 👉 ११ – ११ – ११ में गुर्गा० में कम से ५६ – ५७ – ४२ – १२ प्र० का उदय जानना। को० नं० ११ से १४ देखो। सत्य प्रकृतियां—११-१२-१३-१३वो गुए० में कम से १४२-१३६-१०१-वध (वध ग्रोर १३) प्र० का सत्य जानना अवगत्तुना—रा। हाथ से ४२४ धनुप तक जानना । को० नं० ११ से १४ देखो

संख्या-- मो० नं ०११ से १४ के समान जानना।

क्षेत्र—लोक का ग्रसंस्यातवी भाग जानना। ग्रसंस्यातवां भाग, सर्वलोक, इसका विशेष खुलासा को० नं० १३ में देखो।

स्पर्शन--- अपर के क्षेत्रवत् जानना ।

ष ।त--नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा उपशम श्रोणी वाला एक समय से अन्तर्भेहूर्त काल तक जानना ग्रीर क्षपक श्रेग्री वालों की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुर्त से देशोम् एक कोटिपूर्व वर्ष तक जानना।

क्रासर — न ना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक एक जीव की अपेक्षा उपशम शेएी में अन्तर्मु हुते से देशोन् अधे पुद्गल परावर्तन काल तक ययाख्यात संयम वारमा न कर सके।

अनि (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना । कुल-१४ लाख कोटिकुल म ्प्य की जानना। 880 )

चौतीस स्थान दर्शन	शिन	कोष्टक नं०	<b>့</b>	श्रुत्रसंम-संयमासंयम संयम-रहित (सिद्ध गति) में	हित (सिद्ध गति) में
फ्र रथान सामान्य ग्रालाप	लाप	पयक्ति			मपयिति .
		नाना जीवों की श्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
8		m	>>	<b>ઝ</b>	ม-อ- <i>ง</i>
१ मुसा स्थान		भ्रतीत गुग्ग स्थान जानना	0	9	यहां अपयत्ति
	。	,, जीत्र समास ,,	0	9	म्बस्या नहीं
र पयाप्ति	•	", पर्यारित	0	o	होती ।
४ प्रास्त	0	,, प्राया 	o	•	
८ मति		), सम। गति रहित (सिद्ध गति) जानना	· o	0 0	
७ इन्द्रिय जाति	0		. 0	· •	
	•	,	o	o	• •••••
८ योग े	•	मयोग	0	`o	
	•	म्रुभात वेद	o	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
	•	सम्पाय "	•	•	
	~	१ केवल ज्ञान	~	~	
	0 (	शसयम-सयमासयम-सयम स रहित जानना	0	o	,
१४ वश्या १५ लेड्या	~ ;	१ केवल दशन जानेना गरीकार सरबन्ध	~	<b>~</b> ·	
१६ भव्यत्व		अनभय (न भव्य न अभव्य) जानना	9 (	ò	
१७ सम्यक्त्व	~	स्व जानना	, ,	) a	
ij	0	अनुभय (न संजी न श्रसंजी) जानना	• 0	· 0	
w		(न श्राहा	o	o	
	<b>₽</b>	केवल ज्ञान-केवल दर्शनोपयोग दोनों युगपत् जानना	o	<u>ن</u>	
	•	अतीत ध्यान जानना	o	0	
~ (	0		٥		
र्स भाव	*	ज्ञान-दश्	5-1	×	
	-	जावत्व १ थ १ जानना			

१० भाव मानत है।	11 1
र जीवत्व १ ये	यनुप तक जानना
। पिक भाव ह और जीवत्व १ पे १० भ	č.,
मुचनाः - कोई ब्राचायै आविक भाव ६	Ē.
मृचनाः - क्	म्बगहिता
	>

उदय प्रकृतियां— नंघ प्रकृतियां —

ग्रनन्त जानना । ४५ लाख योजन सिद्ध शिला जानना । सिद्ध मगवान् स्थिर रहते हैं। सर्वेलोक जानना ।

चौतीस स्थान दर्शन	रर्शन	( कैंटर कोष्टक नं			अचक्षु दर्शन	थि। भ
क० स्थान   सामान्य ग्रालाप	पर्याप्त				अपयित	ic.
	नाना जीव की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
~	m	>>	ઝ	UF	9	n
१ मुए स्थान १ स १२ तक के गुरा	१२ (१) नरक गति में १ से ४ गुरा० (२) तियंच गति में १ से ४ गुरा० भोग भूमि में	सारे मुराए अपने स्थान के स.रे मुरा स्थान जानना	१ मुस्ए० अपने अपने स्थान के सारे मुस्स्ए० में से कोई १ मुस्स्। जानना	४ (१) नरक गति में १ते ४थे (२) तिर्यंच गति में १-२ मुसा० भोगभूमि में	सारे गुर्सा स्थान हे यपने अपने स्थान हे सारे गुर्सा स्थान जानना	न
	(३) मनुष्य गति में १ से १२ भोग भूमि में १ से १ (४) देव गति में			(३) मनुष्यं गति में १-२-४-६ भोग भूमि में १-२-४ (४) देवगति में		
२ जीवसमास १४ को० नं० १ देखो	<ul> <li>१ स ४</li> <li>७ पर्याप्त श्रवस्था</li> <li>(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में</li> <li>१ संशी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना</li> </ul>	8 समास को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ समास को०नं० १६-१८- १६ देखो		१ समास को०नं० १६-१ <sup>५:-</sup> १६ देखो	१ समास को०न० १६-१द- १६ देखो
	दल। (२) तियाँच गति में ७-१.१ के भंग को० नं० १७ देखों	१ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो	देखो (२) तिर्यच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देवो

-		×63	~			it J
चीत्रास स्थान दर्शन	रर्शन	कोष्टक नं	ફેક		अवस्ति त्य	प्रश्निम
~	ar	>>	አ	US	.g	n
३ पर्याप्ति कोठनं० १ देखो		१ भंग को० नं० १६-१द- १६ देखो	१ भंग कोत्नं०१६-१८- १३ देखो	ति	१ भंग को० नं० १६-१८- १६ देखो	१ मंग को०नं० १६-१ <b>द-</b> १६ देखो
	को० नं० १६–१5–१६ देखो (२) तिर्यंच स्ति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	८६-८- ८ व गति में ग १७ देखो १ स्थान की	१ भंग को०मं० १७ देखो	१ भग को०न०१७ देखो
४ प्रासा कोठनं० १ देखो	(১)	१ भंग को० नं० १६-१घ- १६ देखो	१ भंग को०नं० १६-१द- १६ देखो	लाब्ध रूप ६-४-७ प्याति भी होती है। ७ (१) नरक-मनुष्य-देवगतिको० न० में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१ न १६	भंग १६-१ <i>द-</i> देखो	१ मंग को०नं०१६-१६- १६देखो
५ संज्ञा त्री० नं० १ देलो -	दखा (२) तियंच गति में १०-६-२-७-६-४-१० के भंग को०न०१७ देखो ४ (१) नरक-तियंच-देव गति में हरेक में	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १६-१७- १६ देखो	१ मंग को०नं० १७ देखो १ मंग को०नं० १६-१७- १६ देखो	दल। (२) तियंच गति में ७-७-६-५-४-३ के भंग को० नं० १७ देखों ९) तियंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में ४ का भंग	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १६-१७- १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं १६-१७- १६ देखो
gen (***)	कों का का कोंठ नंद १६–१७–१६ देखो (२) मनुष्य गति में '४३-२-१०-४ के भंग कोंठनें १८ हेको	 सो० नं० {व्देखो	१ भंग कोठनं०१ द देखो	को०नं० १६-१७-१६ देखो (३) मनुष्य गति में ४- के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	ी १ भंग को०नं० १८ देखो

दर्शन में	r.	१ गति	१ जाति को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ जाति को०नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१द- १६ देखो	१ काय को०नं० १७ देखो	् योग	१ योग को०नं०१६-१६ देखो
श्रचक्ष	9	१ गति	१ जाति को०नं० १६-१६- १६ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१ <i>न-</i> १६ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	भंग	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो
	<b>ઝ</b> ∕	४ चारों गति जानना	४ (१) नरक~मनुष्य-देव गति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	को०नं० १६-१८-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग		<ul> <li>१ त्रसकाय जानना</li> <li>को० नं० १६-१८- १६ देखो</li> <li>(२) तियैच गति में</li> <li>१ ६-४-१ के भंग</li> <li>को० नं० १७ देखो</li> </ul>	र प्रौ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, ग्रा॰ मिश्रकाययोग १.	कामींशा काययोग १ ये ४ योग जानना (१) नरक-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को०नं० १६–१६ देखो
ે (	ವಳ	१ गति	१ जाति -को०नं० १६-१६- १६ देखो	१ जाति को०नं०१७ देखो	१ काय -को०नं० १६-१ <i>द</i> १६ देखो	१ काय को०नं० १७ देखो	१ योग	१ योग को०नं० १६–१६ देखो
( ४६४ ) कोष्टक नं	>>	१ गति	१ ज.ति गे० नं० १६१८- १६ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ काय हो० नं० १६–१५- १६ देखो	१ काय को०नं० १७ देखो	१ भंग	१ भंग को० नं० १६–१६ देखो
यशीन	m	४ चारों गति जानना	१ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेत्दिय जाति जातना	को नं ९६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ४-१-१ के भंग को० नं ० १७ हेखो	६ ६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ जमकाम जाउँ	को० नं० १६-१६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१-१- के भंग को० नं० १७ देखो	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, श्रा० मिश्रकाययोग १,	कीमीएए काययोग १ ये ४ घटाकर (११) (११) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६–१६ देखो
चौंतीस स्थान दर्शन	2	६ गति को० नं० १ देखो	७ शन्द्रय जाति १ को० नं० १ देखो		न काय को० नं० १ देखो		१ थाग को० नं० २६ देखो	

-

_
* % %
_

दशन में	រ	१ योग हो०नं० १७ देखो	१ योग को॰नं० १ द देखो १ वेद को॰नं॰ १६ देखो	१ वेद हो०न० १७ देखो	१ 'वेद भो०नं० १८ देखो १ वेद हो०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देवो	१ भंग को॰नं० १७ देखो
अन्सु व	<b>9</b>	१ भंग को०नं १७ देखो	सारे भंग को० नं० १	देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे मंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देशो
	سون	(२) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति मे १-२-१-१-२ के भंग को०नं० १८ देखों ३ १) नरक गति में	१ नगुंस में बेद जानना को भे ने १६ देखी (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-१-१ के भंग को नं १७ देखो	(३) मनुष्य गति में १-१-१-२-१ के भग को० नं० १= देखो (४) देवगति मे २-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के मंग को० नं १६ देखो	(२) तियंच गति मं २५-२३-४५ २५-२३-२५-को० ४४-१६ के भग को० नं० १७ देखो
मं ७१	<b>ə</b> ⁄	१ योग को०न० १७ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १६ देखो	देखो	को०नं० १ न देखो १ वेद को०नं० १६ देखो	१ भग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखी
्र हर् कोष्टक नं	>>	१ भंग को०नं० १७ देखी	सारे भंग कोंठनं० १८ देखों १ भंग कोंठनं० ६ देखों	भंग , १७ देखो रे भंग	को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	m	(२) तिर्यंच गति में ६-२-१-६ के भंग क्रोत मंत्र १७ देखो		र जानना देखो i भंग देखो	३-३-३-१-३-२-१-०- २ के भंग को० न० १८ देखो देवगति में २-१-१ के भंग सो० नं० १९ देखो	२५ (१) नग्क गति में २३-१६ के भंग नो० न० १६ देखो	(२) तियंच गति में २५-२३-२५-२५-२१-१७- २४-२० के भंग कोठ नं० १७ देखो
चौतीस ं	2	-	१० वेद मोत संत १ हेम्सो			११ मनाय को० नं० १ देखो	

_
w
W
>0
_

चोटोस स्थान दर्शन	र्शन	कोष्टक नं०	jo oš		अचक्षुदर्शन	र्शन में
~	w.	>>	አ	US-	<b>9</b>	u
		सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २४-१९-११-२३-१९ के भंग- को० नं० १न	सारे भंग को० नं० १ व देखो	१ भंग को नं०१८ देखो
	२४-२० के भग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२०-२३-१६-१६ के भंग कोः नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	-१६. <b>१</b> ६ १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग	१ भंग को० न० १६ देखो १ झान
१२ झान केवल झान १ घटाकर शेप (७) जानना	७ (१) नरक गति में ३-३ के मंग को० नं० १६ देखो (२) तियँच गति में	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग	<ul> <li>श्रीत</li> <li>श्रीत</li> <li>श्रीत</li> <li>श्रीत</li> <li>श्रीत</li> <li>श्रीत</li> <li>श्रीत</li> </ul>		को० नं० १६ देखो	को० न <b>०</b> १६ देखो
	<ul> <li>४-इ-इ-इ-इ क भग</li> <li>को० नं १७ देखी</li> <li>(३) मनुष्य गति में</li> <li>३-३-४-३-४-३-३ के भंग</li> <li>को० नं० १ द देखो</li> <li>(४) देवगति में</li> <li>३-३ के भग</li> </ul>	काट नट इंप्टद्रा सारे भंग कोट नंट इंप्टो सारे भंग कोट नंट ३६ हेखी	साम मं० १ प साम साम १,० १,०	<ul> <li>(1) तिर्यंच गति में</li> <li>(2-2-३ के भंग</li> <li>को० नं० १७ देखो</li> <li>(३) मनुष्य गति में</li> <li>२-३-३-२-३ के भंग</li> <li>३००००००००००००००००००००००००००००००००००००</li></ul>	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० न० १७ देखो १ ज्ञान को० न० १८
१३ संयम का० नै० २६ देखो	को० नं० १६ देखी ७ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना	भार पुरुप्ता को० नं० १६- १६ देखो	न १८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८	m	सारे भंग. को० नं० १६ देखो १	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १
	कों० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग	१ भंग को० नं १७ देखो	१ संयम कोेेे नं ०१७ देखो		को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६- १६ देखो

अचक्षु दर्शन में	ıs	भंग १ संयम १९६ देखो भंग १ संयम १८ देखो १८ देखो १८ संयम १८ देखो १८ देखो	~	भंग १६ देखो को०नं० १६ देखो	<ul> <li>१ मग</li> <li>१ लेखा</li> <li>० १७ देखो</li> <li>मो०नं० १७ देखो</li> <li>गो०नं० १९ देखो</li> <li>नं० १८ देखो</li> <li>नो०नं० १८ दे १</li> </ul>	
	9	को० नं० सारे को०नं० १	The second second	को० नं०	१ भग को०नं० १७ देखी सारे भंग को० नं० १ द देख	की में अ
	*	को० नं० १६–१६ देखी (१) तियंच गति में १-१ के भंग को० गं० १७ देखी (२) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखी	~	६ (१) नरक गति मे ३ का भग	कोठ नं ० १६ देखों (१) तियंच गति में ३-१ के भंग कोठ नं ० १७ देखों (३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग	को० नं० १ द देखो (४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो २ बारों गतियों में हरेक में
~ \$ 9 •	>	१ संयम कोठनं० १८ देखो	~	१ लेख्या की०ने० १६ देखो	१ लेदया को०नं० १७ देखो १ लेदया को०नं० १८ देखो	8 लेख्या को को०नं० १६ देखो १ सनस्था १६ को०नं० १६ से १६ देखो
( ४६७ कोष्टक नं०	>>	सारे भंग को० नं० १८ देखो	e~	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को० नं ३ १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १६ से १६ देखो
वशीन	m	को० नं २ १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-१-१ के भंग को०नं० १= देखो	१ चारों गतियों में श्रम्भक्ष कर्मन सम्मन	, जबन्तु क्यांत जातना ६ (१) नरक मति में ३ का मंग	ग्रें भंग नेखी भंग भंग	<ul> <li>का० न० १ = दवा</li> <li>(४) देवगति में</li> <li>१-३-१- के भंग</li> <li>ने० १६ देवो</li> <li>नारों गतियों में</li> <li>हरेक में</li> <li>को० न० १६ से १६ देवो</li> </ul>
चौतीस स्थान दर्शन	۲۰		~	द् को० नं० १ रेघो		ट्र समन्त्र समन्त
चौंत	8		४ दर्गत	४ नेरमा मो० नं		६ भटारन भय

Wirter Gitterne

को० नं० १६-१६ हेन्यो १६-

| Ant .. 25-86 |

_
જુદ્રા

许	ս	१ सम्पन्द्व	को०नं० १६ देखो	१ सम्यक्ष	को०नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १ द देखो		सम्यक्त	कॉर्न्स १६ देखो	१ अवस्या	को०नं० १६-१द- १६ देखो	•		१ श्रवस्था ग्नं० १७ देखो	· •	१ अवस्था को०नं० ६१-१६-	<del>-</del>	
अचक्षु दर्शन	ອ	सारे भंग	मं० १६ देखो	१ भंग	नं० १८ देखो	सारे भंग नं० १ द देखो		भंग	क्तानन १६ द्वा कार	१ भंग				१ भग नं०१७ देखो को		१ भग १ को० नं० १३-१६ को०। नेनो	5 5	
	U3°	χ γ	त्तित्र पटानर (२) (१) नरक गति में को० ९ २ के भंग	रेखो ति में	१-१-१-१-२ के भंग को० को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में १२-२ <sup>,</sup> १-१-२ को०	के भंग को० नं० १८ देखो		-१-३ क भग े को० नं० १९ हेखो	· ~	(१) नरक-मनुष्य-देवगति को०नं० १६—१=- में हरेक में	१ संजी जानना को० नं० ६-१६-१६		(२) त्वयंच गात म '-११-१-१-१ के भंग को०	को०नं० १७ देखो	र (१) नरक-देवगति में को नरेक्ट में	1	मा० न० १:-१६ द्वा
मं० ७१	<b>x</b>	१ सम्यक्षत्व क्रोजनं १ हेस्से		१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो		कोठनं० १ च देखो		को०नं० १६ देखो		१ अवस्या	को०नं० १६-१८- १६ देखो			१ अवस्या को०नं० १७ देखो		१ को० नं० १६-१६ हेक्सो		
कोष्टक	>>	सारे भंग क्रो० झं० १९ हेखो	7 7	१ भंग नं० १७ देखो	सारे भंग	नं० १ द देखो	सारे भंग	को० नं० १९ देखो		१ भंग	को० नं० १६-१५- १६ देखो			को० नं १७ देखो	¢	्र को० मं० १६-१६ व हेवो		
थींन	m	६ १) तरक गति मे	मंग	(२) तिर्यंच गति में १-१-१-३-१-१-१-१ के भंग को०	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	१-१-१-३-३-२-३-२-मो० १-१-१-१-३ के भंग	कों० नं० १८ देखो (४) देवगति में	१-१-१-२-३-२ के भंग	क्षां ने १६ देखा		ग्गति में	ग्नी जानना गं० १६–१५–१६	देखो (२) स्टिन्ट न	ांस	कोर्गर १७ देखो ,	१ (१) नरक-देवगतियों में इरेक्त में	१ याहारक जानना क्रो० नं० १६ – १९ टेक्वो	
चीतीस स्थान दर्शन	د :	१७ सम्यक्तव क्रो०नं० १ देखा								१ द संजी	संजी, प्रसंजी				० सम्बन्ध	गाहारक, अनाहार प्राहारक, अनाहार		

श्रचक्षु दर्शन में	ls g	१ भंग     १ अवस्था       को० नं० १७ देखो     देखो       सारे भंग     १ अवस्था       को० नं० १ = देखो     देखो	१ भंग १ उपयोग	को० न०१६ देखो   को नं १६ देखो		१ भेग ० में० १७ देखी वी० में० १७		
		(२) तियंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	६ अप्रविध ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १ वे २ घटा-	₩ ₩ ₩	पर्यप्तिवत् शेष १ दर्शन घटाकर ३ का भंग जानता ४ का भंग-को० नं०१६ के ६ के भंग में से	प्याप्तवत् र दश्त घटा- कर ४ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में ३ का भंग-को० नं० १७ को०	.क तमान जानन। ३-३ के भण-को० नं० १७ के ४-४ के मंगों में में से पर्याप्तवत् शेप १ दर्शन घटाकर् ३-३ के मंग जानना	
နဲ့ ၅	*	१ अवस्था को० नं० १७- १८ देखो	१ उपयोग क्रो० नं० १६ देखो		•	•	१ उपयोग को नं. १७ देखो	
कोष्टक नं०	*	सारे भंग को० नं० १७-१ न देखो	१ मंग के नं० १६ देखो	,		:	१ भंग को० नं० १७ देखो	
दश्न	m	(२) तियंच-मनुष्यं गति में हरेन में १-१ के भंग-को० नं० १७-१ देखों	द ( · ) नरक गति में ४ का भंग को० नं० १६	भंग में से जिल् करो यो १ द जेप दर्शन ४ का भ	जानमा ४ का भंग-को० नं० १६ के इके मंगों में में ऊपर के समान लेप २ दर्शन यदाकर ४ का भंग	अनिता ४ का भंग-को० नं० १६ के ६ के भंग में से ऊनर्के गमान शेष २ दर्शन बटा-	पर ॰ का मंग जानना १ का मंग-को० नं० १७ के ममान जानना १ का मंग-को० नं० १७ के ४ के भंग में से जगर	
चौतीस स्थान दश्नेन	~		ं उत्रवीत अतो त्योग ७, दर्शनो- वयोग १ से (८)	antiquation and a graph of the transfer and				_
<b>पा</b> *	~		२० उत्रयोग धानोग्योग ७, इ पयोग १ से (६)					į

दशन में	ប	"				=				श. उपयोग क्रो० नं० १८	देखो			:		· •		-					3
अचक्ष द	9	***	, <b>6</b> , .			2				सारंभग को०नं ३१ = हेखो		1		:				:					,
	Ugo	३ का भंग-को० नं०	12	१३ के ४-४-४ के भंगों में से पर्याभवत लेग १	ति घटाकर् भंग जानना	गि−को० नं∝	के ६ के भंग में से पर्याप्तवत शेष २ दर्शन		जानना ०	(३) मनुष्य गांत म ३ का भंग-को० नं० १८	के ४ के भंगों में से	् शेव १	घटाकर ३ का भग	जानना ४-४ का भंग-को० नं	१८ के ६-६ के भगों में	से पर्याप्तवत् शेष २	घटाकर ४-४ क भग जानना	३ का भंग-को० नं०	४ के भंग	पयप्तिवत् शेष् १ दर्शन	घटाकर ३ का भंग	जानना	४ का भंग-को० नं० १६
\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	Sr	 	66		:	=			"				•				् उपयान को० नं० १प	देखो		•			i
कोष्टक नं०	>>		2					•	,							.;	तार मग को० नं० १ द देखो					•	
दर्शन	m	समांन शेष १ दर्शन घटा-	क् ३ का भंग जानना के ४ का भंग-को० नं० १७	के ५ के भंग में से ऊपर के ममान केल तर्का १ घटा-	४ का भंग जातना ४-४ के भंग-को० नं०	१७ के ६-६ के भंग में से	ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग	जानना	•	के १ के भग में से उपर			8-8 유 મુના-માં મુ 8-8 	८७ क ६-६ क मग म स ऊपर के अमान शेष २	दर्शन घटाकर ४-४ के भंग	जानना के अध्येक	น ~	के थ के भंग में से ऊपर	के समान शेष १ दर्शन	र ४ का	जानना	४-४-५ क भग-का० न०	१न क ६-६-७-७ क हरक
मौतीस स्थान दर्शन	8																						

कोष्टक नं० ७१	13 X X	-2.१-२. के से डापर के दर्गन घटा- -25-२१-	. १२ – १९ म भग ने भंग ने भंग पर्याप्तवत् शेप १ दर्शन पर्याप्तवत् शेप १ दर्शन वटाकर २३ २१ के भंग	जानना २३ का भंग को० नं० १८ के २५ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर २३ का भंग ११२०००	ा४) दवगात म २४ २३-२४ को०नं० १६ के २६-२४ के ह <sup>3</sup> सारे भंग १ भंग में से पर्योप्तवत् हो० नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी दश्ने घटाकर	में से ऊपर बोप १ दर्शन बीप १ दर्शन ८-२२ के भंग प्यस्तिवत् वेप २ दर्शन प्यस्तिवत् वेप २ दर्शन प्यस्तिवत् वेप २ दर्शन प्यस्तिवत् वेप २ दर्शन प्रस्तिवत् वेप २ दर्शन प्रस्तिवत् वेप २ दर्शन प्रस्तिवत् वेप २ दर्शन प्रस्तिवत् वेप २ दर्शन व्यस्तिवत् त् वेप २ दर्शन व्यस्तिवत्वत् वेप २ दर्शन व्यस्तिवत्वत् वेप २ दर्शन विवर्धन वेप २ दर्शन वेप २ दर्शन वेप २ दर्शन वेप २ दर्शन वेप २ दर्शन वेप
, ४०४ कोष्टक नं०		२४२३२१-२० के हरेक भंग में से ऊपर के समाम शेष २ दर्शन घटा- कर २८-३१-२६-२६- २,১६-२५-२६	२२-२१- के भंग ग		सारे भंग १ भंग नं० १६ देखो कोठनं० १६	
चीतीस स्थान दशीन	2	Or the throp of	e or by or h	~ YOFO. WAS THE	(A)	ता है विकास

ا المواقع الواقعي

भ	រ	:					
अच्छु दर्शन	9	*			THE STATE OF THE S		•
	O2.	२१ के भंग में से पर्याप्तवत् शेप १ दर्शन घटाकर २२-२० के भंग जानना २४-२४ के भंग	को० नं० १६ के २६-२ के हरेक भंग में से पर्यप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर २४-२४ के भंग जानना				
्रुव्ह ) कोष्टक नं० ७१	x			:		•	
	>	u			:		
चौतीस स्थान दर्शन	m.	ं के समान शेष २ दर्शन घटाकर २२-२४ के भंग जानना २६-२४ के भंग	कों ेनं ० १६ के २७-२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ इश्ने पदा- कर २६-२४ के भंग जानना	को० नं० १६ के २६-२६ हरेक भंग में से ऊपर के समान शेप २ दर्शन घटा- कर १४-२७ के भंग जानना	रव-रर् क भग को० नं० १६ के २४-२२ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर २३-२१ के भंग जानना	२१-२४- ३ क भग को० न० १९ के २३- २६-२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर २१-२४-२३ के भंग जानगा	
चौतीस स	8			***			
	1	L.					1

```
४ अवगाहना—को० नै० १६ मे ३४ देखो।
```

् बंध प्रकृतियां — को० नं० १ से १२ के समान जानना ।

उनय प्रमृतियां "

सत्य प्रकृतियां ---

संख्या-श्रनन्तानन्त जानना।

u or क्षेत्र—सर्वलोक जानना ।

० स्पर्शन-सर्वलोक जानना ।

काल-नाना जीवों की अपेक्षा सबैकाल जॉनना। एक जीव की अपेक्षा सिद्ध होने वाले जीवों की अपेक्षा अनादिसोत जीनना और नित्य निगोद जोवों की स्रपेक्षा श्रनादि श्रनन्त जानना।

मातर — कोई मन्तर महीं।

जाति (योनि)— ५४ लाख योनि जानेना

कुल-१६६॥ लाख कोटिकुल जानना।

_	८९
40d	कोष्टक नं०

चौतीस स्थान दर्शन	शिन	्रहरू कोष्टक नं	දින ර		चक्षु दर्शन	ति में
ं ध्यान सामात्य भालाप	पर्याप्त			भपयप्ति		
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
2 8	m²	>>	ಶಳ	سوں	9	រ
१ मुसा स्थान १२ १ से १२ तक जानना	7 <del>.</del>	सारे गुरा स्थान को० नं० ७१ देखो	१ मुसा० क्षोo नं० ७१ देखो	४ को० नं० ७१ देखो	सारे मुरा स्थान को० नं० ७१ देखो	<ul><li>१ मुसा०</li><li>को० न० ७१</li><li>देखो</li></ul>
२ जीव समास ६ चक्षरिन्दिय प० श्रप० श्रमंत्री पं० प० श्रप० संज्ञी प० प० श्रपयाित	जगह चक्षुदर्शन जान ।। ३ पर्याप्त श्रवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संशी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ समास को० नं० १६-१द- १६ देखो	१ समास को० नं० १६- १८-१६ देखो	३ अपर्याप्त श्रवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगनिको० न० १६-१६- में ३२क में १ सज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	१ समास कोऽ न० १६-१८- १६ देखो	१ समास को० नं० १६- १८-१६ देखो
य ६ जानना	जानना को० नं० १६-१६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ जीव समास—को० नं० १७ के ७ के भंग में से एकेन्द्रिय सूक्ष्म-बादर प० जीव समास २, द्वीन्द्रिय १	१ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ देखा	जानभा को०नं०१६-१८-१६ देखो (२) तिर्यंच भति में ३ जीव-समास प्रपय प्र प्रवस्था पर्याप्तवत् जानना १ का भंग-भोगभूमि प्रपेक्षा को० नं०१७	१ समास को० न० १७ देखो "	१ समास को० नं० १७ देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	कर शेत. ३ जीव-समास जानना १-१ के भंग-को० नं० १७ देखो ६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	" १ भंग को० नं० १६-१ <i>द</i> -	" भारत संखा	ड (१) नरक मनुष्य-देवगति।ो० नं० मे हरेक में	१ भंग गोरु नं० १६-१न- १६ देश	१ भंग को० नं० १६ १६-१६ देखो

	ļ .	्र के कि के कि
चक्षु दर्शन में	វ	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १७-१६ देखो १७-१६ देखो १ जाति १ जाति १ जाति १ जाति १ जाति १ पति
चक्षे द	<b>9</b>	१ भंग को० नं० १७ देखो १६ देखो १ भंग १ भंग १ भंग को० नं० १६-१७- १६ देखो १ गति १ गति १ गति
	יינט	३ का भंग-को० नं. १६-१८-१६ देखो २.) तियच गति में ३-३ के भंग-को० नं० १७ देखो भ देश में हरेक में ७ के १६ १६ १६ देखो २.) तिर्यच गति भ ७-७-१-७ के भंग को० नं० १६ १६ देखो भ हरेक में १९ देखो भ हरेक में १९ १६-१६ देखो भ हरेक में १९-१६ देखो १०-१६ देखो
नं० ७२	*	१ भंग कोठ नं० १७ १ भंग कोठ नं० १६- १६-१६ देखो १ भंग कोठ नं० १६- १७-१६ देखो १ भंग १ भंग कोठ नं० १६- १७-१६ देखो १ जाति १ जाति १ जाति
कोष्टक	<b>&gt;</b> >	१ भंग १ भंग १ भंग १६ देखो १६ देखो १६ देखो १६ देखो १६ देखो १६ देखो १ मित १ मित १ जाति १६ देखो
ŀĽ	, ur	६ का भंग-को० नं० १६- १८-१६ देखी ६-५-६ के भंग को० नं० १७ देखो १० का भंग-को० नं० १६-१-१६ देखो १०-६-द-१० के भंग को० नं० १७ देखो १०-१६ देखो १०-१६ देखो १७-१६ देखो १७-१६ देखो १७-१६ देखो १७-१६ देखो १०-१६ देखो १०-१९ देखो १०-१६ देखो १०-१६ देखो को० नं १६ देखो ११ नरक-मनुष्य-देवगति में
चौतीस स्थान दर्शन		१ देखो ४ १ देखो ४ १ देखो ४ १ देखो १
चौतीस	~	४ प्राप्त को० नं० १ स् मित को० नं० १ उडिस्य जाति चतुरिस्त्रिय जाति

		, 880	· • ·			;
नातास स्थान दश्रान	こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ こ	काष्ट्रक न०	न ७ ७५		चेश्ने द	चक्षु दशन मे
~	m	>>	<b>5</b> 4	US'	9	u
	(२) तियँच गति में	१ जाति	१ जाति	(२) तिर्यंच गति में	जाति	, जाति
	र का भंग-को० न० १७	को	को० नं० १७	.मः	में नं १७ देखो	को० नं० १७
	प र क मंग म स एकान्द्रय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जाति ये		<u></u>	१७ क १. क भगम म स एकेत्यित शिहित्म श्रीतित्रम		दंखों
	३ घटाकर शेव २ जाति			जाति ये ३ घटा हर		
	जानना ।			ंशेप २ जाति जानना		
	१-१ क भग-का० न० १७ देखो			१ का भंग-भोगभूमि को गाथिस जावना		æ
				को० नं० १७ देखो		
द कृषि	,	~	~	~	~	~
त्रसकाय	चारों गतियों में हरेक में			चारों गतियों में हरेक में		•
र योग	१ त्रसकाय जानना	•	,	१ त्रसकाय जानना		
His ac on with	>> \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \	० भग	१ याम	>> 4	१ भंग	१ योग
Py サント   Pi   Pi   Pi   Pi   Pi   Pi   Pi   P	भा० मिथकाय याग १,			ग्रो० मिश्रकाय योग १,		
	या० मिथकाय योग १			वं मिश्रकाय यात १, सर्मा मिश्रकाय मोम १		
	कार्माम् वाग १,			कामश्यिकाय योग १		
	ये ४ घटाकर (११)			ये ४ योग जानना		
	(१) नरक-मनुष्य-देवगति मे	को० नं० ७१ देखो	कों मं  ७१	(१) नरक-मनुष्य-देवगति	को० नं  ७१ देखो	को० नं० ७१
	को० नं० ७१ के समान		द्वा	म हर्दन म को० नं० ७१ के ममान		देखो
	जानना १,०,०			जानना		
		१ भंग	१ योग	ायंच गति में	१ भंग	१ योग
	१५ हेम्बो	कों नं १७ देखो	मो० मं० १७		को० नं० १७ देखो	कों मंं १७
१० वेद	m		देखा े टेन	का० न० १७ देखा		देखो
ो० नं० १ देखे	कों नं  ७१ के समान	र भग को० नं० ७१ देखो	्रवद को० म० ७०	ने नं ७१ के समान	र भग को० नं० ७० सेनो	~ di
	जानना परन्तु यहां अचस-		देखो	ना		काठ न ७ ७१ देखो
	जानना					

दर्शन में	ı	事 告 年 <del>作</del>	१ प्रवस्था को०नं० ७१ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० ७१ देखो को०नं० ७१ देखो १ स्रवस्था १ स्रवस्था
त्युः व	<u>ه</u>	सी सो अंग्रेश से सी में भी	१ भग को० नं० ७१ देखो को०नं० ७१ देखो १ भंग को० नं० ७१ देखो १ भंग १ भंग
	<b>5</b> 4	(१ के समान त, मन: पर्यंग यटाकर (५) ११ के समान १ के समान न जानना १ के समान	को के चित्र के समान जानना १५ को समान को चित्र के समान जानना २ को मान जानमा ३ को ने छ है के समान जानमा
· ~	ઋ	<ul> <li>१ भंग</li> <li>१ झान</li> <li>को०नं० ७१ देखो</li> <li>१</li> <li>ने०नं० ७१ देखो</li> <li>१</li> <li>ने०नं० ७१ देखो</li> </ul>	र अवस्य। १ सम्प्रक्त्व को०नं० ७१ देखो १ अवस्था को०नं० ७१ देखो को०नं० ७१ देखो
( ४११ ) कोप्टक नं० ७२	>>	सारे भंग को० नं० ७१ देखो तो० नं० ७१ देखो को० नं० ७१ देखो नयु दर्शन शे० नं० ७१ देखो	
र्गन	m	र्थ को निका के समान जानमा है के समान जानमा है के समान जानमा है नारों गितियों में हरेक मं १ नारों गिर्में जानमा	को० नं० ७१ के समान जानना जानना तो० नं० १७ के समान जानना दिक्षेत्र के समान जानना जानना
चींतीस स्थान दर्शन	8	११ कपाय न् १ १ वर्षा को को कं १ देखों १२ सान ७ केवल ज्ञान घटाकर(७) १३ संग्रम ७ वर्ष देखों १४ दर्शन वर्षा दर्शन वर्षा दर्शन वर्षा दर्शन वर्षा दर्शन वर्षा दर्शन है।	भव्य, प्रभन्य १७ मम्बस्थ्य ६ मो० नं० १८ देलो १८ मान्नी १६ मान्नार २ सान्नारक २ सान्नारक २

0
200
_

٠,,

मीत	चौतोस स्थान दशन	र्शन	कोष्टक नं०	දින ර		च्छु दर्शन	शंन में
~	ح ا	w	>>	<b>ઝ</b> ર્ય	US	9	ឋ
२० उपयोग को० नं	डपयोग को० नं० ७१ देखो	त को० नं० ७१ के समान परन्तु यहां चारों गतियों के हरेक भंग में अचकु- दर्शन के जगह चक्षुदर्शन	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ उपयोग को सं० ७१ देखो	ह् को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को०नं० ७१ देखो	१ डपयोग को० नं० ७१ देखो
२१ ध्यान को० नं० ७१ २२ स्राप्तव को० नं० ७१	१४ को० नं० ७१ देखो स्प्रव को० नं० ७१ देखो	१४	सारे भंग को० नं० ७१ देखो सारे भंग	< ध्यान को० नं० ७१ देखो १ मंग	१२ ७१ के समान ४६ ८, बचनयोग ४, योग १,	सारे भंग को० नं०७१ देखो सारेभंग	१ ध्यान को० मं ७१ देखों . १ मंग
		कार्माराकाय योग १ ये: ४ घटाकर (५३) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नंः ७१ के समान	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो	काय योग १ ये ११ घटा- कर (४६) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान	सारे भंग को० नं०७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो
•		(२) तियंच गति में ४०-४३-५१-४६-४२-३७- ४०-४५ ४१ के भग-को० नं० १७ के समान जनाता	सारे भंग को० न० १७ देखो	१ भंग वेदों नं १७ देखो	जानमा (२) तिर्यन मति में ४०-४३-४४-३५-३६- ४३-३८-३३ के भंग- को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० न० ७१ देखो
र३ भाव ।को० न	भाव ुको० नं० ७१ देखो	४४ १) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नंः ७१ के समान परन्तु यहां श्रचक्षु दर्शन के जगह चस्रु दर्शन जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो	३६ (१) नर्क-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान जानना	सारेभंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० न० ७१ देखो

		३०%)	. ( }		,	·
चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	नं० ७१		अचक्षु दर्शन	नि में
٤ - ١	ድ	*	ಘ	υx	9	n
	भग में से ऊपर के समान शेए २ दशेन घटाकर ४-४- ४-५ के भंग जानना			के ६ के भंग में से पर्याप्तवत् शेप २ दशंन घटाकर ४ का भंग		
• •	४ का भंग-को० न० १८ के भोगभूमि के ५ के भंग में से ऊपर के समान शेष			जानना (४) देवगति में ३-३ के भंग-को० नं० ०६ २ ४ ४	ें १ भग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० न० १९
,	. <u> </u>	*		रंट पे उन्हें पे हर्भ भंग में से पर्यपितवत् शेप १ दर्शन घटाकर ३-३ के भग जानना		<u></u>
	के समान शेप २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग			न्-६ के यतिवत्	=	n.
	्रान्ता (४) देवगति में ४-४ के भंग-को० नं० १६ के ४-६ के हरेक मंग	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो	दशन घटाकर ४-४ क भंग जानना		
	में से ऊपर के समान येष १ दर्शन घटाकर ४ ५ के भंग जानना					:
	४ का भंग-को० नं० १६ के ६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान येप २ दर्शन घटाकर ४ का भंग	2	=			
२१ ज्यान यूक्ष्मदिया प्रति- सम्भ • ज्यान	जानना १४ (१) नरक-देवगति में हरेक में	सारे मंग को० नं० १६-१६	१ ध्यान को० नं० १६-	१२ यातेच्यान ४' रीद्रच्यान	सारे भंग	१ ध्यान
ावा ६, जुरुत क्या नियमित्री १	द-६-१६ देखो १६-१६ देखो	٠ ٢ ٢	१६ दला	४, धमेंच्यान ४ ये (१२)		:

अचसु दर्शन में	u	को०नं० १६–१६ इसो	् १ ध्यान को०नं० १ <b>७</b> देखो		१ भंग		#; 6	को ०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो		१ भग को०नं० १८ देखो
अवस	ø	को० नं० १६ - १६ देखो	। १ भंग कोऽनं० १७ देखो	ं सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग		सारे भंग	को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	የ የ	सं० १ व देखो -
	UΣ°	। (१) नरक-देवगति में हरेक में	द-६ के भंग   को० नं० १६-१६ देखो ( ) तियंच गति में   द-द-६ के भंग	को० नं १७ देखो (ः) मनुष्य गति में ६-७-६-३ भंग	का० न० १६ दख <b>।</b> ४६ मनोयोग ४, वचनयोग ४.	श्रौ काययोग १, वै० काययोग १,	आहारक कायवाग १, ये ११ घटाकर (४६) (१) नरक गति में	-३३ के भंग नं . १६ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३७-३ - २ - २ ६ - ४० - ४३ - को०	े ४ - २ ५ २ २ ४ १ ५ - ३ ५ - ३ ६ - ४ ३ - ३ ६ - ३ ३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनद्य ग्रीन से	१९) १८ - १२ - ११ - ४३ - को० ३८ - १३ के मंग को० नं० १८,देखो
( ४०२ ) कोष्टक नं <b>०</b> ७१	<b>x</b>	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १ द देखो		१ भंग		० भंग	को०नं	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं०१ द देखो	· ,
, कोष	>>	१ भंग • के भंग को० नं० १७ देखो	् सारे भंग को० नं० १८ देखो 		सारे भंग		े सा <sup>े</sup> भंग	कां० न० १६ देखा	सारे भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	, 
दर्शन	n <del>y</del>	(२) तियंच गति में ५-१०-११-५० के भंग	(३) मनुष्य गति में ==-१-१०-११४-१-१- =-१-१० के भंग	काठ नठ ्य देखा		व ामश्रकाययाग् १, ज्ञा० मिश्रकायोग २, कार्माग्र काययोग १	· 💮	कोर्नः १६ देखो	3-x?- x-x?-	के भंग को० नंc १७ देखो (३) मनुष्य गति भे ५१-४६-४२-३७-२२-०- व	२२-१६-१५-१४-१३-१२- ११-१०-१०-६-५०-४५- ४१ के भग को० नं० १८ देखो
चींतीस स्थान दर्शन	~	ये २ शुक्ल ध्यान घटाकर १४ जानना		२२ मासव ५७	मिथ्यात्व ४, म्रविरत १२, गोग ९५ सतमा २५	में ५७ जानना					

A K		ឋ	१ भंग १सो को० नं० <b>१</b> ६ देखो	<del>;</del> ~	१ भंग देखो को० नं० १६ देखो	<b>:</b>	को ०	
ਸ਼ਚਲ ਵਗੰਜ	3 3 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5	9	सारे भंग को० नं० १६ देखो माने भंग		सारे भंग को० नं० १६ दे	2	सारे भंग को० न० १७ देखो	,
,		υν	(४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३- ३३ के भंग—को० नं० १६ देखो	उपशम चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, कुप्रविध ज्ञान १ मनः पर्यंय ज्ञान १, संयमास्यम १, ये ५	ं असं संस् स्थान भंग	जानना २५ का भग-को० नं० १६ के २७ के भंग में से पर्यात्तवत् शेप २ दर्शन घटाकर २५ का भंग	जानना (२) तियैच गति में २४ का भंग-को० नं० १७ के समान जानना २४-९६ के भंग-	9 10 16 1
( १०५ ) कोस्यक सम्बद्ध (92	म्बर् ७१	*	% भंग को॰ नं॰ १९ देखो » भंग	को० न० १६ देखो	.:	१ भग को० नं० १७ देखो	<b>.</b>	H
	ali ibodib	>>	े सारे भंग को० नं० १६ देखो मारे थंग	म <u>,</u> भ	, <i>"</i>	सारे भंग को० नं० १७ देखो	2	•
, r	وعرام -	m	(४) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०- ४० के भंग को० नं० १६ देखो	~	शप ९ दशन घटाकर ९४- २३ के भंग जाना २३-२६-२५ के भंग-को० नं० १६ के २४-२६-२७ के हरेक भंग में से ऊपर	बटाकर २३-२६-२ मंग जानना (२) तिर्यंच गति में े४ का भंग–को। १७ के समान जान	२४-२६-३०-२८ के भग- को० नं० १७ के २५-२७- ३१-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेग १ दर्शन घटाकर २४-६६-	३०-२८ के भंग जानना २८-३०-२७ के भंग को० नं० १७ के ३०-३२-६६
र्भेट साथ्य मसिंस	चातास स्थान	& ·		४३ माथ उपश्रम सम्यक्त्व १, उपश्रम चारित्र १, शायिक सम्यक्त्व १, शायिक चारित्र १, कुज्ञान ३, ज्ञान ४,	प्रचयुद्धान १. लोडव ४, वेदक सः १, सराग- संयम १, संयमासंयम १, गति ४, कपाय ४, लिंग ३, लेस्या ६, पिस्यादर्शन १, श्रसंयम १,	मज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिस्एामिक भाव ३, ये ४४ जानना		

दर्शन में	រេ	" " १ भंग को०नं० १ द देखो
अचक्ष	9	" " सारे भंग को० न० १ द देखो
	w	१ दर्शन घटाकर २४– २६-२६ के भंग जानना २२ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २२-२४-२४ के भंग को० नं० १७ के २३– २४-२५ के इरेक भंग में पर्यातवत् शेष १ दर्शन भग जानना २३-२१ के भंग को० नं० १७ के २४-२२ के दर्शन घटाकर २३-२१ के भंग को० नं० १७ के २५ के भंग में से पर्यातवत् शेष १ दर्शन वत् शेष १ दर्शन घटाकर २३-२१ के भंग जानना १३ का भंग को० नं० १७ के २५ के भंग में से पर्यातवत् शेष २ दर्शन वत् शेष १ दर्शन घटाकर ३६-२९ के भंग को० नं० १६-२९ के भंग वानना वानना ३६-२९ के भंग वानना २६-२९ के भंग वानना २६-२९ के भंग वत् शेष १ दर्शन घटाकर २६-२७ के भंग जानना २८-२५ के भंग जानना
नं० ७१	૪	" १ भंग को०नं० १ द देखो
कोष्टक नं०	>>	" सारे भंग को० नं० १
दर्शन	us.	के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन पंग जानता २६-२. के भंग को० नं० १७ के २७-२५ के हरेक भंग में से ऊपर के हरेक भंग में से ऊपर के हरेक भंग में से ऊपर के हरेक में मंग पर-२७ में भंग को० नं० १७ के २६-२६ के हरेक में मंग ३०-२७ के भंग जानता १४-२७ के भंग जानता १४-२० के भंग जानता १८-२० के भंग जानता को० नं० १६ के ३१-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के हरेक भंग कातता जानता १६-२७-२०-२९-२१-१८- १९-१०-३१-२९-१९-१८- १९-१०-३१-१९-१९-
चौंतीस स्थान दर्शन	۲۰ ۲۰	
, IL	~	

	चौती	चींतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नम्बर ७२	बर ७२		चक्षु दर्शन	冲
		~	ድ	۶	አ			រ
			(२) तिर्यंच गति में १से गुरा० के २४ के भंग घटाकर शेप सारे भंग— को० नं० ७१ के समान जानना परन्तु यहां श्रवसु दर्यान के जगह चसु दर्शन जानना	सारे भंग को० नं  ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो	(२) तियंच गति में १ले गुर्ग स्थान के २४ के भंग १ घटाकर शेप सारे भंग को० नं० ७१ के ममान जानना परन्तु यहां अच्छ दशंन के जगह चधु दशंन आनना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० न० ७१ देखो
* * *	ग्रवत वंघ्:s	हिना—को क्रितियां—	प्रवताहता—को० नं० १६ से ३४ देखो । वंष'्प्रकृतियां— को० नं० २४-२५-२६ के समान जानना	ग्राननाः।				

बदय प्रकृतियां--- "

सत्य प्रकृतियां —

द सरैया - ममेंस्यात जानना ।

. क्षेत्र - लोक का ग्रसंख्यातवां भाग जानमा।

स्पर्यंन – नाना जीवों की ग्रपेशा सर्वलीक जाननना । एक जीव की ग्रपेक्षा लोक का ग्रसंख्यातवां भाग द राजु को० नं० २६ देखो । फाल—नोना जीवों की श्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हूर्त से दो हजार (२०००) सागर तक जानना ।

क्रन्तर—नाना जीयों की योधा कोई यन्तर नहीं । एक जीव की क्रपेक्षा कुद्रभव से देशोन् यर्थ पुर्गल परावर्तन काल तक चक्षुदर्शन म प्राप्त कर समे।

जाति (गोनि)—२५ लाख योनि जानना । (चतुष्टिदय २ लाख, पंचेन्द्रिय २६ लाख, ये २८ लाख जानना ।

कुल --११७॥ लाख कोटिकुल गानना । (चतुरिस्दय ६, पंचेन्द्रिय १०८॥ वे ११७॥ लाख कोटिकुल जानना

串

चीतास स्थान दर्शन	نا نوا	( ४१५ कोध्यक्त मं	69,		स्रवधि दर्शन	धिन से
					. 6166	
٠	m <sup>*</sup>	>>	×	υν	<b>9</b>	<b>u</b>
०१ ग्राम	ò	१ भूग	१ भंग	<u>.</u>	१ भंग	भंग
कोठनं० १ देवो	चारों गतियों में हरेक में	dt w	को अनं ० १६ से	चारों गतियों में हरेक में	体	को०नं० १६ से
		१६ देखो	१९ देखो	७ का भंग		१६ देखी
४ संजा	भाग न १६ त १६ दखा	१ भंग	ه بند	का० न० १६ म १६ द्वा ×	9 يزير	9 थंग
को० नं० १ देखी	(१) नरक-हियैच-देव गति में	§ €	Trong 25-96-	(१) नरक-तिर्यच-देवगति	को० न० १६ से	कोठनं० १६ से
	्रें भ	१६ देखो	१६ देखो	मनुष्य गति में हरेक में	१६ देलो	१६ देखो
	क्षेत्र भन् १८ -११० ६०			४ का भग		
	ジャークシーボン or old			काठ नठ १५ स १६ दखा		
	(२) मनुष्य गिन में	   ਜਨ भंग	१ भंग			,
	10-2	देखी	को०नं० १ द देखो			
	८ के भंग			•		
	को० न० १५ देखा	,				1
t all a straight	>	१ गति	१ मति	>> (	१ मित	१ मति
्र मीन्य जाति छ	0	•		चारा गांत जानना	,	•
पंचित्रिय जाति	नारों गतिमों में उनेस में	~	~	* -\{-	~	~
	१ पंत्रीन्द्रय जाति जानना			१ पंचेत्तिय जाति जानना		
	मोठनं० १६ मे १६ देखो	·		कोठनं० १६ से १६ देखो		
द कृषि	;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;;	~	~	٠	~	~
शसकाय	नारा गातया म हरेक में			चारों गनियों में हरेक में		
	१ यसकाय जानना			१ यसकाय जानना		
	क्ति न १६ सं १६ देखो		•	कों नं १६ से १६ देखो		,
C 414	~ ~ ~	१ भंग	१ योग	<b>&gt;</b>	१ भंग	र योग
का न० १६ बरा	म् ६ मध्यकाययाम् १,			ग्रो० मिथकाययोग १,		
	वं मध्यकाषयाम् १,			वे । मिथकाययोग १,		
	या० मिथकाय्याम १,			ग्रा॰ मिथकाययोग १,		
	कामाम् कायवाग १			कामीए काययोग १		
	यं ४ घटाकर (११)			ये ४ योग जानना		

	शिन मे	ឋ	१ योग १६ देखो १ योग १ योग नगुसक वेद नगुसक वेद नगुसक वेद कोठनं० १७ देखो १ वेद कोठनं० १६ देखो १ भंग कोठनं० १६ देखो १ भंग कोठनं० १६ देखो
ر ا	अवधि दशन	၅	१ भंग १६ देखी सारे भंग को० नं० १८ देखी १ भंग को०नं० १७ देखी सारे भंग को० नं० १६ देखी सारे भंग को० नं० १६ देखी सारे भंग को० नं० १६ देखी
		υs~	(१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१७-१६ देखी (३) मनुष्य गति में १ नपुर्य गति में १ नपुर्य कवेद ही जानना को० नं० १६ देखी (१) नरक गति में भाग भूमि में १ पुरुषवेद जानना को० नं० १६ देखी (१) देवगति में १-१ के भंग को० नं० १६ देखी १८ के भंग को० नं० १६ देखी
	क न० ७३	ಶ	१ योग १६ देखो १ योग १ योग १ वेद भो०नं० १७ देखो १ वेद भो०नं० १६ देखो १ वेद भो०नं० १६ देखो १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग
	कोव्टक	>>	१ धंग १६ देखी सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखी सारे भंग को० नं० १९ देखी सारे भंग को० नं० १६ देखी सारे भंग को० नं० १६ देखी
	शन	m	(१) नरक-तियंच-देवगति में हरेक में ६ का भंग को नं
ć	चोतांस स्थान दशन	r	, वेद को०नं० १ देखो कपाय २१ अनन्तानुबन्धो कपाय ४ घटाकर (२१)
ä	<u>ब</u> ्	~	१० वेद को ११ कपाय अनन्तान् ४ घटाव

चीतीस स्थान दशेन   २   ३
(३) मनुष्य गति में सारे भंग २१-१७-१३-११-१३- को० नं० १ द देखो
७-६-५-४-३-१-१-०- २० के भंग को० नं० १८ देखो
(४) देवगति में २०-१६-१६ के भंग को० न० १६ देखो को० न० १६ देखो
४ सारे भंग (१) नरक गति में को० नं० १६ देखो ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो
(२) तिर्यंच गति में १ भंग ३-३ के भंग की० नं० १७ देखी को० नं० १७ देखों (३) मनध्य गति में
३-३-४-३-४-३-३ को०नं० १६ देखो के भंग को० नं० १६ देखो (४) देवगति में
कीं नं
(१) नरक-दंगगत म हरेक में १ प्रमंथम जानना को० नं० १६-१६ देखो
(२) सिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो

शिन में	r	१ सयम को० नं० १ द देखो	् १ लेश्या को० नं० १६	देखो १ लेश्या को० नं० १७	देखां १ लेक्या को०ँनं० १ प् देखो	१ लेह्या को० न० १६ देखो १	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो
अवधि दर्शन	9	नारे भंग को० नं० १६ देखो	े १ भग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे मंग को० मं० १८ देखो	१ भग को० नं० १६ देखो १	सारे भंग कोे नं० १६ देखो
	υy	को न० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२-१ के मंग को० नं० १८ देखो	चारों गतियों में-हरेक में १ ग्रविव दर्शन जानना ६ (१) नरक गति में	0	भग-का० न० १७ मनुष्य गति में १ के भंग-को नं० खो	(४) देवगति में ३-१-१ के भग-को० नं० ह १६ देखो १ १	१ भव्य जानता को० नं० १६ से १६ देखें ३ (१) नरक गति में २ का भंग-को० नं० १६ देखो
५१६ ) त न्० ७३	<i>5</i> 4	१ संयम को० न् ०१ द देखो	१ लेश्या को० नं० १६	देखो १ लेह्या को० नं० १७	न्तु भी के कि	को० नं० १ ह देखो १	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो
( <sup>५</sup> कोष्टक	>	सारे भंग को० न०१८ देखो	े १ भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को० नं० १७ देखो	शारे भंग • नं० १ च १ भंग	को० नं० १६ देखो १	सारे भग को० नं० १६ देखो
दर्शन	m <sup>*</sup>	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१ के मंग—को० नं० १८ देखो	10 10	३ का मग-को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच मति में ६-३-३ के भंग-को० नं०		गंग-को० लेख में	१ भव्य जानना को० नं० १६ से १६ देखो ३ (१) नरक गति में १-३-२ के भंग-को० नं० १६ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	~	१४ दशन	ग्रवधि दर्शन १५ लेख्या को० नं० १ देखो	ı	;	१६ भव्यत्व १	१७ सम्यक्त्व उपश्म आयिक- क्षयोपश्म १० ये (३)

अवधि दर्शन में	ນ ອ	१ भंग १ सम्यक्त्व को० नं०१७ देखो को०नं०१७ देखो	सारे मंग १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो को०नं० १८ देखो	सारे भंग 'सम्यक्त को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो	~	सारे भंग १ श्र श्र सस्या को० नं० १६-१६ को०नं० १६-१६ देखो	देखो को०न्	१ भग १ प्रवस्था कोई १ प्रवस्था कोई १ प्रवस्था	१ भंग को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो
	<b>ਕ</b>	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में २ का भंग		(४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १९ से १६ देखो		5 5.	(३) तियच गति म १-१-१-१ के भंग को० गं० १७ देखों	
( ) ( )	>	१ सम्प्रमहत्व क्रोठमं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व क्रो०नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्य को०नं० १६ देखो	~	१ को० नं० १६ १६ देखो	१ अवस्या को०नं० १८ देखो	~	१ उपयोग को०नं० १६ देखो
( ४१६ कोष्टक नं०	<b>&gt;</b>	१ मंग को० नं १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	~	१ कोठनं० १६-१६ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	~	१ भंग को०नं० १६ देखो
दर्शन	m		m	(४) देवगति में १-२-३-२ के मंग को० नं० १६ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ संभी जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ प्राहारक जानना	रखें।	(३) तियच गति म १-, के भंग को० नं० १७ देखों	प्र १९) नरक गति में ४-४ के भंग को० नं० १९ के ६-६ के
चोतीस स्थान दर्शन	œ	**************************************	***************************************		तः भ	र प्राहारक, अनाहारक			*
चोंती	~				१ प्रसंशो	१६ प्राहारक प्राहारक		•	२० उपयोग शानोपयोग ४, दर्शनोपयोग १, मे ५ जानना

ने	चोंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ४२° कोष्टक मं	न् )		अवधि दर्शन	द्यांन में
~	or	us	>>	አ	w	ອ	ıs
		हरेक भंग में से श्रवक्ष- दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर ४-४ के भंग			का भंग जानना (२) तिर्यंत्र गति में भोगभूमि की अपेक्षा ४ का भंग पर्याप्तवत	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो
	•	णानता (२) तियंच गति में ४-४ के भंग–को० नं० १७ के ६-६ के मंगों में से ऋचस्तु-दर्शन, चस्तु-दर्शन ये	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो		सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
		२ घटाकर ४-४ के भंग जानता ४-४ के भंग-भोगभूमि में ऊपर के कभेभूमि के समान		τ	भग में सं पयासवत् २ दर्शन पटा हर् ४-४-४ के भंग जानना (४) देवगति में		१ उपयोग क्रोट सं
		जानना (३) मनुष्य गति में ४-४-४-४-४-४ के भंग को० नं० १ द के ६-६-७-	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	8-8 क भग-का० न । १६ के ६-६ के भंगों में से पर्याप्तवत् २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग खटाकर	भाव रह दबा	देखों भे ९ ९
		द-७-६-६ क हरक भग म से अचक्ष दर्शन, चक्ष दर्शन पे २ घटाकर ४-४-४-४- ४-४-४ के भंग जानना (४) देवगति में ४-४ के भंग-को० न० १६ के	१ भंग गे० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो		·	•
<b>२</b> १ ध्यान को <b>०</b>	ान को० नं० ७१ देखो	भ्रमक्षु दर्शन, मक्षु दर्शन ये २ घटाकर ४-४ के भंग जानना १४ (१) नरक गति में १६ देखो	सारे भंग 10 नं० १६ देखो	१ ध्यान को० न० १६ देखो	१२ (१) नरक गति में १ का भंग-को० नं७ १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ च्यान को०नं० १६ देखो

दर्शन में	น	श क्यान १ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान १ भंग बातना १ भंग १ भं १ भंग १ भंग	
अवधि व	9	१ भग को० नं० १७ देखो मारे भंग ना० नं० १६ देखो सारे भंग जानना सारे भंग जानना को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो	
	'وں	(२) तियंच गति में भोग भूमि की अगेशा  ६ का भंग को० नं० १७ देवो  (३) मनुष्य गति में  ६—७—६ के भंग को नं० १८ देवो  (४) देवगति में  ६ का भंग को० नं० १६ देवो  यो० काययोग १, वै० काययोग १, वे० मायोग १, वे० काययोग १, वे० काययोग १, वे० माययोग १, वे० काययोग १,	
५२१ । न० ७३	*	१ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान १ भंग कोठनं० १६ देखो १ भंग कोठनं० १६ देखो १ भंग कोठनं० १६ देखो १ भंग कोठनं० १६ देखो	
<i>(</i> कोप्टक	2	१ भंग नं० १७ देखो नं० १८ देखो नं० १६ देखो मारे भंग जानना जानना नं० १६ देखो नं० १६ देखो नं० १६ देखो नं० १६ देखो	
. दशीन	m	( ) तिर्यन गति में  \( \) के भंग  को० नं० १७ देखी  ( \) मनुष्य गति में  \( \) ह-१०-११-७-४-१-१-को०  ह-१० के भंग  को० नं० १ द देखी  ( \) देवगति में  को० नं० १ द देखी  ( \) देवगति में  को० नं० १ द देखी  ( \) मुद्रमति में  को० नं० १ द देखी  को० नं० १ द देखी  को० नं० १ द देखी  हे के भंग  को० नं० १ द देखी  ( \) तिर्यंन गति में  प्रचानकर (४८)  ( \) नरक गति में  प्रचानकर (४८)  ( \) निर्यंन गति में  प्रचानकर १७ देखी  ( \) हिर्यंन गति में  प्रचानकर १० देखी  ( \) हिर्यंन गति में  प्रचानकर १० देखी  ( \) हिर्यंन गति में  प्रचानकर गति में  प्रचानकर श्रीं के भंग  को०नं० १० देखे	
चौंतीस स्थान दर्शन	~	२ ब्राप्तव ४, प्रमन्तामुक्पी क० ४ ये ६ घटाकर् (४८)	

( ४३४ )

		भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ
दर्शन में	. ឋ	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग
भ्रवधि दर्शन	<b>ඉ</b>	सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो
,	usr	स्रो० नं० १६ देखी  उपश्म चारित्र १, सायिक चारित्र १, मनः पर्यंग्र ज्ञान १, स्त्री वेद १ थे ४ घटाकर (३५) (१) नरक गति मं ग्रेश का भंग को० नं० १६ के २७ के भंगों में से अचक्ष दर्शन, वटा-कर २५ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा २३ का भंग जानना १३ का भंग जानना २३ का भंग जानना २३ का भंग जानना ३३ का भंग जानना ३३ का भंग जानना ३३ का भंग जानना २३ का भंग जानना ३३ का भंग जानना १३ मनुष्य गति व्यव्यु
ر م رونج اونج	ઋ	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग
१ ४१९ कोष्टक नं०	>>	सारे, भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १७ देखो को० नं० १० देखो
चौतीस स्थान दर्शन	æ	(४) देवगति में  ४१-४०-४० के भंग  को० नं० १६ देखो  २३-२६-२५ के भंग  नो० नं० १६ के २५- २८-२७ के हरेक भग  में से अचस्य दर्शन, चस्य  दर्शन ये २ घटाकर  २३-२६-२५ के भंग  जानना  (२) तिर्यंच गति में  ३०-२७-२७ के संग  जानना  से अचस्य-वस्य दर्शन  गें से अचस्य-वस्य दर्शन  १६-२६-२६ के हरेक भंग  में से अचस्य-वस्य दर्शन  २६-२६ के हरेक भंग  में से अचस्य-वस्य दर्शन  २६-२०-२७-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-२९-
चौतीस स	8	भाव उपश्रम-सम्प्रयत्व १, उपश्रम चारित्र १, सायिक सम्प्रवत्व १, सायिक चारित्र १, न्नाम ४, वेद सम्पक्त्व १, संप्रमा संप्रम १, सराग संप्रम १, गति ४, कपाप ४, लिंग ३, लेख्या ६, प्रसंप्रम १, प्रज्ञान १ प्रसंप्रम १, प्रज्ञान १ प्रसंप्रम १, प्रज्ञान १, जीवत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १,
	~	भाव उपश्रम-सम्ययत्व उपश्रम चारित्र १ झायिक सम्यक्त्व झायिक चारित्र १ ज्ञाम ४, वेद सम् १, संयमा संयम पति ४, कपाय १, गति ४, कवाव ६ असंयम १, अज्ञा प्रसिद्ध १, भव्यत्

3

रान मे	រេ	१ भंग को०न <b>०</b> १६ देखो
अवधि दशन	உ	सारे भंग को० नं० १६ देखो
	ft3v	दर्शन, चक्षु दर्शन थे २ बटाकर २६-२४-२: के भंग जानना (४) देवगति में २६-२४-२४ के भंग को० नं० १६ के २६ २६-२६ के हरेक भंग में से पर्यात्तवत् २ दर्शन घटाकर २६-२४- २४ के भंग जानना
දින o	አ	१ भंग को०नं
( ४२३ कोष्टक नं०	>	सारे भंग को० नं० १६ देखो
चोतीस स्थान दर्शन	m.	२६-२६-२९-२६-२१- २५-२४-२ - २३-२१- २०-२६-२६ के हरेक मंग में से अचली दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर २६- ३१-२६-२४-२६- २७-२७-२६-२४-२६- १६-२४-२७ के भंग जानमा (४) देवगति में २२-२४-२७ के भंग को० नं० १६ के २४ २६ २६-२१-२३ के भंग के हरेक भंग में से अपर के समान २ दर्शन घटाकर २१-२४-२३-२६-२१ २१-२४-२३-२१-२१-
चौतीस	~	
	~	

```
र् अवगाहना--संख्यात घनांगुल से (१०००) एक हजार योजन तक जानना।
```

- बंध प्रकृतियां— को० नं० २६ के समान जानना ।
- २६ उदय प्रमुतियां---
- असत्व प्रकृतियां— "
- २ संख्या-- ग्रसंख्यात जानना ।
- क्रित्र—लोक का स्रसंख्यातवां भाग जानना।
- ० स्पशंत--लोक का श्रसंख्यातवां भाग न राजु, ६ राजु को० नं० २६ देखो ।
- काल--नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की ग्रपेक्षा को॰ नं॰ ३३ देखो।
- **म्रातर—**नाना जीवों की म्रपेक्षा कोई म्रन्तर नहीं । एक जीव की म्रपेक्षा मन्तर्मु हूर्न से देशोन् मर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक म्रविघ दर्शन
  - न हो सके।
- ३३ जाति (योनि)—-२६ लाख योनि जानना । को० नं० २६ देखो
  - कुल-१०मा। लाख कोटिकुल जानमा। को० नं॰ २६ देखो

_
27
<b>5</b>
_

चोंतीस स्यान दर्शन	र्श्यन	्रर्र कोष्टक नं०	ه د و چ		केवल दर्शन	H J
क्र   स्थान   सामान्य शालाप	पर्यादा			म्रापय्दि	i	
	नाना जीवों की प्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
2 . 3 .	m	>>	24	us.	9	r
१ गुण स्थान २	् १३३ १४वे ये २ मसा०	सारे गुरा० दोनों गुरा स्थान	१ मुस्स <b>े</b> कोई १ मुस्स	१ १३वे गुसा० जानना	~	~
र्ट-१४ ४ र पुर् २ नीय-समास	المالية	~ )	~	१ १ संजी पंऽ ग्रपयिष	<i>م</i>	ov.
संशो प० प० श्रप० ३ पर्यापित	८ तथा प्रवास्त्रय प्रवास	१ भंग	१ भंग		१ भंग	१ भंग
नं० १ देख	६ का भंग-को० नं० १ द सेखो	६ का भग जानना	क् भा भग	र का भग-का० न० १८ देखो		\$ \$ *
४ प्राण - ४	४ ४ (१) मनुष्य गति में	सारे भंग को० नं० १ द देखो	. १ भंग को० नं० १८	२ मायु कायनल मे २)	सारे भंग	१ भग
र्यासीच्छवास, बन्तन बल में (४)	, ४-१ के भंग-को० नं० १८ देखो			(१) मनुष्य गति में २ का भंग-को० नं० १ व हेखो	को० न० १८ देखो	को० नं० १८ देखो
) मंत्रा	(०) ग्रपगत संगा	o		0	0 (	<b>o</b> (
द गति	१ मनुष्य गति	~ •	~ 0	~ ^	~ ~	or a
७ डस्ट्रिय जाति १ - सम	१ पचान्द्रय जाति १ वसकाय	~ ~	~ ~	v «	• ~ •	~ ~ '
ह मीन	भू भूमा भूमा १	सारे भंग	य योग	२ झौ० मिथकाय योग १	सारे भंग	१ योग
सत्यमनायाग् १, प्रमुभय मनोयोग १,	आ० नियमाय याग १, कामगिकाय योग १, के अस्तर १४।			कार्मास्प्रकाय योग १, ये २ योग जानना		
सत्य वचन याग १ सनुषयं यचन योग १,	(१) मनुष्य गति में	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखा	(१) मनुष्य गति में २-१ के भंग -को० नं०	को० नं० १५ देखो	को० नं <b>०</b> १८ देखो
त्रोर माथ पार १, प्रोरु मिश्रकाय योग १,	१ म देखी			नं० १८ देखो		
			***************************************			

r py 13 Sayta

दर्शन में	r		0	o .~	~ ~	~	o	v	, o	१ प्रवस्था	को० न० १व	देखा	२ युमपत	जानना		0		-	१ मंग			क्रो अं १ १ त	देखो
केवल	න		o	o a	~ ~~	~	~ (	<b>~</b> •	<b>-</b> c	सारे भंग	कों नं १८ देखो		२ युगपत	जानना		o			सारे भंग			Fire no on Array	
	υΥ		o	o &	~ ~~	~	о <b>г</b> (	~ •	~ a	o 6*	मनुष्य गति में	१- ' के भंग-को० नं० १ म्ह्रम्	ر ر ر	(१) मनुष्य गति में २ का भंग-को० नं	१ द देखी	0			n	म्रौ० मिश्रकाय योग १,	कामांशिकाय योग १	ये २ श्रासव जानना (१) मनत्म मनि मे	१.१) २-१ के भंग-को० नं० १८ देखो
त मं० ७४	ર્સ		0	0 &	· ~	•	~ •	~ a	- 0	१ अवस्या	कों० नं० १८	देखाँ	२ युगपत	जानना		१ ध्यान	को० नं० १८ देखो	·	१ भंग			मी० मं० १९	
ं कीष्टक	>>		o	0 0	~ a~	~	ه مه	ov 0	~ «	सारे भंग			: यगपत	जानना		सारे भंग	को० नं० १८ देखो		सारे भंग			क्को मं० १८ हेखी	
	m		(०) श्रपगत वेद	(०) अकपाय १ सेन्य नाम जानम		१ केवल दर्शन जानना			१ क्षापिक सम्यक्त्व जानना (०) याचनम	(८) त्रगुमव जानगा २	,	१-१ के भंग-को० नं० १- केमो	ر م م	(१) मनुष्य गति में २ का भंग-को० नं० १	देखों भा भा भार भुष्ट (प	r	(१) मनुष्य गति में १-१ के अंग-कोर मेर	<u> </u>	<i>≫</i> {	म्रौ मिश्रकाय योग १,	F	यं २ घटाकर ५) १) मनध्य गति में	१-३-० के भंग-को० नं० १८ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	e	कर्मासकाय योग १, ये ७ योग जानना	0	0 6	~ ~	• ~	or 1	~ (	~ ·	o 12	ग्राहारक ग्रनाहारक		6	गि १, गि १. (२)		<b>1</b>	सुक्ष्मां क्या प्रतिपाती, ज्युपरत क्या निवस्तिमे	ये २ जानना	9	ज्जपर के योग स्थान के	गानना		
चौतीस	~	कमियाकाय योग ये ७ योग जानना		११ कपाय . १२ जान	१३ संयम	१४ दर्शन	१५ लेखा	१६ मध्यत्व	१० तम्बर्पर	१६ माह "	माहारक		२० उपयोग	ज्ञानोपयोग दर्शनोपयोग		२१ ध्यान	सुक्ष्मन्त्रिय व्युपरत हि	ये २ जाः	२२ मासव	अपर भे र	याग ७ जानना		

चोतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नम्बर ७४	बर ७४		केबल दर्शन	徘
2	m	>>	አ	us	9	វេ
२३ भान को० नं० १३ देखो	१४ १९८१३ मे भंग-को० १४-१३ के भंग-को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं. १० देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१४ (१) मनुष्य गति में १४ का भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १ द देखो

ब्ध प्रकृतियां—१३वे गुएए० में १ सादा वेदनीय का बंध जानना और १४वे गुएए० में खबंध जानना। को० मं० १३-१४ देखो। प्रवगाहना—३॥ हाथ से ५२५ घतुप तक जानना ।

नदय प्रकृतियां—१ वे मुण् ० में ४२, १४वे मुण् ० में १२ प्र० का जदय जानभा। को० नं० १३ ब्रोर १४ देतो

सत्य प्रकृतियां—१३वे मुस्ए० में ८५ १४वे मुस्ए० ८१, १३ जानना। को० नं० १३ मौर १४ देखो।

संख्या--- ८६ ५४०२ और ५६ न को० नं० १३ और १४ देखो।

क्षेत्र — लोफ का प्रसस्यातवां भाग, लोक के प्रसंस्यात भाग, सर्वलोक, को० नं० १३ देखी ! स्पर्गन — ऊपर के क्षेत्र के समान जानना ।

काल – सर्वकाल जानना।

मनतर – कोई मन्तर नहीं।

जाति (योनि)—१४ लाख योनि मनुष्य के जानना

कुल-१४ लाख कोसि<sub>ड</sub>ल मनुष्यों की जानना ।

<u> </u>
५२व
٠, _

रिया में	te	एक जीव के एक समय में	u u	१ मुसा । अपने अपने स्थान के सारे भगों में से कोई १ गुसा । जातना	१ समास को०न० १६-१८- १६ दे <i>व</i> ो	१ समास को०नं० १७ देखो
कृष्ण या नील लेख्या	श्रपयि	/ १ जीव के नान। समय में	9	सारे गुर्सा स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुर्सा० जानना	१ समास को० नं० १६–१८– १६ देखो	१ समास को नं०१७ देखो
		नाना जीवों की ग्रपेक्षा	UF	है (१) नरक गति में १ले ४थे गुरा। जानना (२) तियंच गति में १-२ गुरा। १-२-४ गुरा। भोग भूमि में कोई गुरा। ने होते।	१-२ पुरा० ग भवन्वक देवों की ग होना है। ७ अपर्याप्त भवस्या नरक-मनुष्य-देवगति नरक-मनुष्य-देवगति नरक-मनुष्य-देवगति नरक-मनुष्य-देवगति था जानना	तियैन गति में के मंग नं० १७ देखो
<b>*</b> 50 0		एक जीव के एक समय में	<b>⊃</b> ⊀	१ मुसाः सारे मुसाः में से कोई १ मुसाः जानना	१ समास को०नं० १६ १ द देखो	र समाप को०नं० ९७ देखो
कोष्टक नं०		एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	>	सारे मुरा० प्रपने स्थान के सारे मुरा स्थान जानना	१ समास को० नं० १६-१ द देखो	र पनात को० न० १७ देखो
ર્શન	पयित	नाना जीव की ग्रपेक्षा	m	४ (१) निर्यंच गति में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से ४ भोग भूमि में कोई गुराः नहीं होते ।	<ul> <li>७ पर्याप्त अवस्था</li> <li>(१) नरक और मनुष्य गतियों में हरेक में</li> <li>१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना</li> <li>२० १६-१८ देखों</li> <li>२० निर्मेत्र मिंत्र में</li> </ul>	१९) तिष्य भारत प्र ७-१ के भंग को० नं० १७ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	सामान्य ग्रालाप		8	१ मुस स्थान १ से ४ तक के गुसा०	१ देखो देखो	-
'বা'	के व्यान		~		२ जीवसमास को० नं	

चींतीस स्थान दर्शन	ान दर्शन	( ४२६ कोष्टक नं०	( '3	, ,	कृष्ण या नील ह	लेक्या में
č 2	mr	>>	×	24	9	ır
३ <i>पयापि</i> कोठनं० १ देखो	६ (१) नरक - मनुष्य नित में हरेक में	) १ भंग को० नं० १६-१¤ देखो	१ भंग को०नं० १६-१ घ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ भंग को०नं० १६-१६- १६ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८- १६ देखो
	को० नं० १६-१= देखी (२) तिर्यंच गति में ६-५-४ के मंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	३ का भग को॰ नं॰ ९-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राम को० नं० १ केषो	् (१) नरक-मनुष्य गति में हुरेक में १० का मंग सो० नं० १६-१८ टेक्टी	१ भंग को० नं० १६-१ द देखो	१ भंग कोठनं०१६-१८ देखो		भंग १ -१घ- १यो	१ मंग को०नं० १६-१ <i>न-</i> १६ देखो
४ मंद्रा मोठ वं० १ देखो	(२) तिर्यन गति में १०-६-=-७-६-४ के गो० नं० १७ सेवो ४ १	१ भंग मंग को० नं० १७ देखो १ भंग गति में,को०नं० १६-१८७	१ भंग १९ देखो को०नं० १७ देखो १ भंग १९-१८-१७ को०नं० १६-१८-	共	? भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १६ से	१ मंग को०नं०१७ देखो १ मंग को०नं०१६ से
६ मित को० ने० १ रेमो	हरक म ४ का भंग को०नं० १६-१८-१७ देखो ३ नरक, निर्मंत्र ग्रीर मनुष्य ने ३ मित जानना	रेखों १ गति १ गति १ गति १ गति १ गति १ गि०नं० १६-१७-१	१७ देयो १ गति को०नं० १६-१७. १= देखो	वो	नेवो ति ६ मे १९	१६ देखो १ गति को० नं० १६ १६ देखो

			,			
म्या में	n	१ जाति को० नं० १६- १ <b>५-१</b> ६ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो १ काय को० नं० १६- १ =-१६ हेको	१ काय को० नं० १७ असे	दल। १ योग	को० नं० १६- १८-१९ देखो
कृष्ण या नील लेग्या में 	<b>9</b>	१ जाति को० नं० १६-१ <i>द-</i> १६ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो १ काय को० नं० १६-१८-	१ काय को० नं० १७ देखो	१ भंग	मो० न० १६-१६- १६ देखो
	us.	भू कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१६	तिर्यंच गति में भग– को० नं० खो ६ मि की ग्रपेक्षा	<i>₩</i>	है श्रौ मिश्रकाय योग १, वै मिश्रकाय योग १, कार्मासाकाय योग १	य ३ याग जानना कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य-देवगति को० न० १६-१८- में हरेक में १-२ के भंग-को० नं १६-२६ देखो
नं० ७५	અ	१ जाति को० नं० १६- १ <b>द</b> देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो १ काय को० नं० १६- १८ देखो	<b>१</b> काय को०नं० १७ देखो	१ योग	को० नं० १६- १म. देखो
कोष्टक नं० ७५	>>	१ जाति को० नं० १६- १ द देखो	१ जाति १७ को० नं० १७ देखो १ काय को० नं० १६- १ द देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ भंग	को ं नं ० १६- १ द देखो
दर्शन	m	भू कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य हरेक में ' पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६—१६	•	हरेक में १ त्रसकाय जानना को॰ नं॰ १६–१८ देखो (२) तियंच गति में ६-१ के भंग–को॰ नं० १७ देखो	१० अौ० मिथकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्मासकाय योग १,	<ul> <li>प्रदाकर (१०)</li> <li>कर्मभूमि की अपंक्षा</li> <li>(१) नरक मनुष्य गति में हरेक में</li> <li>१६ का भंग-को० नं० १६- १८ देखो</li> </ul>
चौतोस स्थान दर्शन	۲ .	७ इन्द्रिय जाति ५ को० नं० १ देखो	न काय कोठ नं० १ देखो		ह योग ग्रा० मिश्रकाय योग १, ग्रा० काय योग १, ये २ घटाकर (१३)	

क्रुडम या नील लेश्या में	ຫ	(२) तियंच गति में १ भंग १ योग १-२ के भंग को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो ३ १ भंग १ वेद ११) नरक गति में को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो १ मयु सक वेद जानना	्र भंग १ वेद १९ देखों १७ देखों सारे भंग १ वेद गांत में सारे भंग १ वेद गंग को० नं० १८ देखों को०नं० १८ १८ देखों सारे भंग १ वेद	नः १६ देखी कोठनं ० १६ नः १६ देखी कोठनं ० १६ सारे भंग	र४-५२-४४-४४-४४-५३-५।० न० १७ ५/२। कि०न० १७ द्वा २४ के मंग को० नं० १७ देवो (३) मनुष्प गति में सारे भंग १ भंग
। ४३१ ) कोष्टक नं० ७५	*	१ योग (२) तिर्यंच गति को०नं० १७ देखो १-२ के भंग को०नं० १७ देख १ वेद को०नं० १६ देखो (१) नरक गति	(२) तिर्यंत्र गति १ वेद ३-१-३-१- को०नं० १७ देखो को० नं० १७ दे (३) मनुष्य गति १ वेद ३-१ के मंग को०नं० १८ देखो कोऽ नं० १८ दे	. रेखो	र नग कोठनं १७ देखो २५ के भंग कोठ नं० १७ देखों (३) मनुष्य गति में
् मोष	× 	१ भंग को०न०१७ देखो १ भंग को० नं०१६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग	को० नं० १७ देखो
दर्शन	nr	(२) तियंच गति में ६-२-१ के भंग को०नं० १७ देखों कमें भूमि की प्रपेक्षा (१) नरक गति में	कोर्ग १६ देखो (२) तियंच गति में ३-१-३ के भंग कोर्ग नं. १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३ का भंग कोर्ग नंर १८ देखो	्थू कमे भूमि की स्रपेशा (१) नरक गति में २३ १६ के भंग को० नं० १६ देखो	१५/-२३-२५-२५-२१ के भंग की० नं० १७ देखो
र्चोतीस स्थान दर्शन	٠,	र क्तोठमं० १ देखो		२५ मो० नं० १ देवो ं	
म्	~	१० भेद मो ०२		११ क्षणाय मो०	

	किण्या या नील लेह्या में	n S	र देखो कोठनं० १ १ जान १ जान देखो कोठनं० १	सार भंग १ सान सान सार भंग १ सान सार भंग १ सान १ सान को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो १६ देखो १६ देखो १६ देखो १६ देखो को०नं० १६ देखो
<b>(</b>		טי	(४) देवगति में २४ का भंग को० नं० १६ देखो ५ १६ देखो १८) नरक गति में १८-३ के भंग को०नं० १६ देखो (२) तियंच गति में हेखो २ का भंग को०नं० १६ देखो (३) तियंच गति में	र-३ के भंग को० नं० १८ देखो १४) देवगति में २ का भंग को० नं० १६ देखो १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखे १८) नरक गति में २-३ के भंग निर्य गति में ११) तियंच गति में २-२ के भंग को०नं० १७ देखो १३) मनुष्य गति में
( ४३२ कोष्टक नं	>	•	सारे भंग १ व्हें हो नो ने नं १ व्हें हो नो नं नं १ व्हें हो ने	है को कं ह दिखा है से
पान दर्शन	m²		ارگان (ج. این	को० नं० १८ देखो  तीनों गितयों में हरेक १ अस्यम जानना को० नं० १६-१७-१= हे कम् भूमि की अपेक्षा (१) नरक गति में २-३ के भग को० नं० १६ देखो १-२-१-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो
चौतीस	۰ م		१२ ज्ञान कुज्ञान ज्ञान ३, ज्ञान	१३ संयम १ असं. म १४ दर्शन नेवल दर्शन घटाकर (३)

妆	រ	१ दर्शन देखो - १६ १ १ प्रवस्था - को० नं० १६ से १६ देखो १ सम्प्रवस्व को० नं० १६ देखो १ सम्प्रवस्व को० नं० १६ देखो १ सम्प्रवस्व को० नं० १६ देखो १ सम्प्रवस्व को० नं० १६
कृष्ण या नील लेश्या	ຶ້	१६ देखो भग भग भग १६ देखो १६ देखो १६ देखो
स्त्र	-رون	को० नं० १ = देखो (४) देवगति में १६ देखो ११६ देखो ११६ देखो १२१ के भंग-को० नं० १६६ देखो १६६ देखो १६६ देखो १६६ देखो १११ नरक गति में ११६ देखो १११ नरक गति में ११६ देखो १११ नरक गति में ११६ देखो ११९ नरक गति में ११६ देखो ११९ नरक गति में ११९ देखो ११९ ने भंग-को० नं० १६६ देखो ११९ ने भंग-को० नं० १६६ देखो ११९ देखो
ं नं ० ७५	ਖ	<ul> <li>१ दर्शन</li> <li>देखो</li> <li>१</li> <li>श्रवस्था</li> <li>को० नं० १६</li> <li>१७ १६ देखो</li> <li>१० १६ १६ १६ देखो</li> <li>१० १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६</li></ul>
कोष्टक नं०	>>	सारे भंग १ १ भंग १८ देखो १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो
दर्शन	nv	(३) मनुष्य गति में २-३ के भंग को० नं० १ द देखो  कुप्ण या नील लेह्या में से जिसका विचार किया जाय वह १ लेह्या २ कम्भूमि की प्रपेक्षा तीनों गतियों में हरेक में २-१ के भंग-को० नं० १६-१७-१ देखो १९ देखो (१) नरक गति में १-१-१ के भंग-को० १६ देखो ११६ देखो ११६ देखो ११९ देखो ११९ देखो ११९ देखो १२-१-१२ के भंग-को० नं० १७ देखो १३ मनुष्य गति में १-१-१-३ के भंग-को०
चोंतोस स्थान दर्शन	۲	त जिसका । जाय - भठा २ १६ देखा
नि	~	१५ लेख्या कृत्म् या नील जिस् विनार किया यह १ लेख्या १६ मध्यस्य भव्य ग्रभवा १७ ग्रम्पनस्य को० नं० १६ हे

>
m
≫
_
_

चौंतोस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं०	<b>মূ</b> ত		कुष्ण या नील लेश्यां	रियां में
8	m	>	አ	-دن	9	
१८ सजी संजी, यसंगी	२ कर्म भूमि को अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१=	१ को० नं० १६- १८ देखो	१ को० नं० १६- १= देखो	२ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संशो जानना को० नं० १६ १८-१६	१ को० नं० १६-१६- १६ देखो	१ को० नं० १६- १६-१६ देखो
	दख। (२) तियँच गति में १-१-१ के भंग-को० नं० १७ टेको	१ भंग को० नं०१७ देखो	१ प्रवस्था को० नं० १७ देखो	५९। (२) तियंच गति में १-१-१-१ के भंग— को० नं० १७ देखो	१ मंग को०नं०१७ देखो	<ul> <li>श्रवस्या</li> <li>में० नं० १७</li> <li>स्वो</li> </ul>
१६ माहारक ् याहारक, अनाहारक	्रुत्ता १ कमेभूमि की अपेक्षा तीनों गतियों में हरेक में १ अ हारक जानना कोर नं , १६-१७-१ द	१ को०नं १६-१७- १८ देखो		र कर्मभूमि की अपेक्षा चारों गतियों में हरेक में १-१ के भंग-को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	र अवस्था को० नं० १६ से १६ देखो
रं॰ उपयोग ज्ञानीपयोग ६ दर्यनीपयोग ३ भेर्ने	ह (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग-को० नं०	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो	ह कुग्रवधि जान घटाकर (८) (१) नरक गति में ४-६ के भंग-को नं	१ भग को० नं० १६ देखो	र उपथा। को नं १६ देखो
الما ح د والما	१६ दखा (२) तिर्यंच गति में ३-४-५.६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भग को० न०१७ देखो		१३ दला (२) तिर्यंच गति में ३-४-४ :-४-४ के मंग- को० नं० १७ देलो	स	१ उपयोग को <b>० नं०</b> १७ देखो
	(२) मनुष्य गा. म ४-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सार्भग कोठनंऽ१ददेखो	् दुपया। को० नं० १ द देखो	(३) मनुष्य गात म ४-६ के भंग-को० नं० १८ देखो (१) देवगति में ४ का भंग-को० नं० १९ देखो	सारभग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	सार भग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १६

चौतीस स्थान दर्शन	. दर्शन	( ४,३६ कोष्टक नं०	५,३६ ) नं० ७५		- - - - - - - - - - - - - - - - - - -	7
~	m	>			रुष्त या नाल लाश्या म	लश्या म
		0	×   - -	<i>x</i>	ອ	r.
				(४) देवगति में ४३,२० के संग	सारे भंग	1
२३ भाव	,			को० नं० १६ देखो	का० न० १९ देखो	कोठनं० १९ देखी
उपश्म-सायिक स् २, फुजान ै, जान ३,	इ. (१) नरक गति में २४-२२-०३	सारे भंग को०नं० १६ देखी	१ भग को०नं० १६ देखे	३२   उपराम-क्षाधिक-	सारे भंग	१ भग
दगन ३, लिंड्य ५, वेदक सम्यक्त १, गति ४ सन्तर	र्र रान्त्रन्त् रप्त भंग को० नं० १६ भू			क्षयोपशम सम्यक्त्व ३, कुत्रवधि जान १ वे ४		
गारा ७, कथाय ४, लिंग ३, छच्चा नील में से जिसका विचार किया	२४-२'-२द-२ हरेक भंग में से नीय नेग्या				को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
जाय वह १ लेखा, मिथ्या दर्शन १	लश्यावा ग विचार			10 8 8 35 35 35 35 35 35 35 35 35 35 35 35 35		
श्संयमासंयम १, श्रज्ञान १, श्रसिद्धत्व १	थ।ड़ंकर घटाकर			₹ <del>1</del>		
परिः मिक भाव ३, ये ३६ भाव जन्म	२२-२३-२६-२५ के भंग जानना			लक्या घटाकर २३- २५ के भंग जानना		
		सारे भंग कोऽ नं शुरु नेन्ते		(२) तियँच गति में २२–२३–२४–२४–२० न	सारे भंग कोठ नं १० भन	१ भंग भंग
	1 1	- By ひの 〉 - 1. o 1	कार्जि १७ देखो	२१२३-२३ के भंग को० नं० १० अ. २८		कार्वन १७ देखी
	ने उत्पर भे			- \$2-52-82-82-82-82-82-82-82-82-82-82-82-82-82		
	शेष २ लेख्या घटाकर			२१-२५ के हरेक भंग में से पर्याधनन सेन		
	जानना		110	नेत्या घटाकर २२-	<i>8</i> -1	
	रूड्-२४-२४-२७ के भंग को० नं० १७ के ३१-			२३-२४-२५-२०-२१- २३-२३ के भंग जानना		
			# F	ोग भूमि में		
	-			वहां काइ भग नहीं		

तेश्या में		१ मंग भो०नं० १६ देखो १ भंग १ भंग
कृष्ण् या नील लेश्या में	9	सारे भंग " सारे भंग सारे भंग
	υΥ	(३) मनुष्य गति में २६-२६ के भंग को० नं० १६ के ३०- २६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ लेक्या घटाकर २६-२६ के भंग जानना २५ का भंग को० नं० १६ के ३० के भंग में से पर्यातवत् शेष ५ लेक्या घटाकर् २५ का भंग जानना भोग भूमि में यहां कोई भंग नहीं होते। (४) देवगति में २४-२२ के भंग को० नं० १६ के २६- २४ के हरेक भंग में से पर्यातवत् शेष २ लेक्या घटाकर २४-२३ के भंग जानना
* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	አ	१ भंग को०नं० १ द देखो
कोष्टक नं	>-	सारे भंग को० नं० १
दर्शन	m	६-३०-३२ के हरेक भंग में से जार के समान शेष ४ लेश्या घटाकर २६-२४-२५-२७ के भंग जात्ना भोग भूमि में वहां कोई भंग नहीं. होते । कमें भूमि की अपेक्षा (२) मनुष्प गति में २६-२४-२२ के भंग को० नं० १८ के ३१-२६-३>-३३ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष ५ लेक्या घटाकर २६-२४-२५- २८ के भंग जानना भोग भूमि में पहों कोई भंग नहीं। होते ।
चौतीस स्थान दर्शन	6	
मौत	~	

```
भ्रत्तर— नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा अन्तमुँ हुने से साधिक ६३ सागर प्रमास काल तक कृष्सा या नीक
  काल—नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँहूर्त से ७वें नरक की ग्रपेक्षा ३३ सागर
  लेख्या न हो सके। यह सर्वार्थ सिद्धि की अपेक्षा जानना।
  धंध प्रकृतियां--- को० नं० १ से ४ के समान जानना
   जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना ।
भ्रवगाहना-को० नं० १६ से ३४ देखो।
  ' प्रमास काल जानना
  संख्या--अनन्तानन्त जानना
   स्पर्शत—सर्वलोक जानना ।
  क्षेत्र—सर्वलोक जानना।
  सत्व प्रकृतियां—
  उदय प्रकृतियां—
   m
  3
   S
D
   9
```

फुल—१६६॥ लाख मोटिकुल जानना ।

W	
ابر س	
<del></del>	

रेच्या में		१ जीव के एक समय में	រ	<ul> <li>शुरा०</li> <li>अपने अपने</li> <li>स्थान के कोई</li> <li>शुरा०</li> </ul>	१ समास को० नं	को० नं० १७   देखो	को० नं० १८ देखो	क्रो० नं ० १६ देखो
कापोत लेखा में		१ जीव के नाना समय में	9	सारे गुराः श्रपने श्रपने के सारे गुराः जानना	् १ समास को० न० १६ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १६ देवो
	अपयोप्त	नाना जीवों की श्रपेक्षा	U3°	है (१) नरक गति में १से ४थे (२) तियंच गति में १२-४ १से ४४ १से १२ भोगभूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में		नार पर दु दु है। (२) तियँच गति में ७-६-१ के भंगः-को० नं० १७ हेखी		(४) देवगति में १ संज्ञी पं० श्रपशित की० नं० १६ देखो
रें वह		के नाना एक जीव के एक में समय में	<u>خ</u> ر	१ गुराए० ज्ञपने ज्ञपने स्थान के कोई १ गुराए०	१ समास को० नं० ७५ देखा			
कोस्टक नं०		एक जीव के नाना समय में	>>	सारे गुरा स्थान श्रपने श्रपान के सारे गुरा० जातना	१ समास को० नं० ७५ देखो			
र्शेन	पयस्ति	नाना जीयों की श्रपेक्षा	tr.	४	७ पर्यप्ति कर्मभूमि की ॰ पेक्षा (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में	को० नं० ७५ देख़ो २) तिर्यंच गति में को० नं० ७५ देखो		
चौतीस स्थान दर्शन	क्रिंग स्थाम सामान्य प्रात्ताप		è }	१ मुग स्थान १ मे ४	२ गोब-समास १४ क्ते.ज वरु १ देलो (		The strong call and an annual control of the contro	

_
0%%

·--.,

व	चातास स्थान दशन	(1ન	काष्ट्रक न०	ع م م د اع م م د		कापात लक्ष्या म	4
~	ક	m	>-	ጵ	us	9	
३ पर्याप्ति	US	موں	१ भंग	१ भंग	mr ,	१ भंग	्रे. -~
में	को० नं० १ देखो	कर्मभूमि की अपेक्षा को <b>०</b> मं० ७७ देखो			(१) नरक-देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१६ देखो	को०३मी७ १६- १६ देखी ५० ६८
					३ का भंग-को० नं०		
						, tr	् अस्म युव १७
						को० मं० १७-१	को न० १६
						दंखो	رم 10
						- The same of the	के वर्षा विकास
					ेली ब्यास्प ६ कि भग भी होते हैं	~~	
४ प्रास	0	02	१ भंग	१ भंग		१ भंग	१ भंग
कों	कों ० नं० १ देखो	कर्मभूमि को प्रपेआ	,		ागति में	को० न० १६-१६	क्रें
		को० मं ० ७५ देखो				देखो	१६ देखो
	_			·	७ का भंग-को० न०		
					१६-१६ देखो		, ,
					(२) तियंच गति में	को० नं० १७ देखो	को ा मंधिए
					७-७-६-१-४-४-३-७ के भंग स्रेट मंट १० भूस		देखों धान कु बाहि     अतुर अतुर
					(३) मनध्य गति में	को ० मं० १८ देखो	को० नं विधिह
					७७ में भंग-मों नं	•	देखो
					१ न देखो		
५ संजा	>	>~	१ भंग	१ भंग	<b>&gt;</b>	१ भंग	१ भंग ह
मी	को० नं० १ देखो	कभंभूमि की श्रपेक्षा		····	(१) नरक-देवगति में	和	
		को० नं० ७५ देखो			हर्म में	देखो	१६ देखोत म
					े का भंग-को० नं०		मुंब के विक
					१६.१९ देखो		
	7				(२) तियंच-मनुष्य गति	१ भंग	्र भंग
					म हरक म	कों <b>० नं० १</b> ७-१न	

४ १ मित १ मित १ मित १ मित १ जाति १ जाति १ जाति	को० नं० १७-१ द देवो		ह महि १ गति १ मित १ जाति १ द-१६ देखोड्डब्रा १ जाति
१ मति १ जाति	18		ह मति १ मति १ जाति को० नं० १६- १:६-१६ देखोड्ड्या १ जाति १ जाति
१ जाति	l <del>5</del>	- <u>-</u> ,	े इंखी ह जाति को० नं० १६- १६-१६ देखोड्ड्या १६ जाति को० नं० १७
ए फ़ि	18	ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ	र जातत कोठ नं० १६- १६-१६ देखींड् <u>ब्</u> रा इं <sub>ट्री</sub> १ जाति कोठ नं० १७
		<u> </u>	् <sub>डाती</sub> १ जाति को० नं० १७
			भूमा) १ जाति को० नं० १७
		-	कीं जन ० १७
			देखों ्रखा
१ काय १ काय	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति को० नं		१ काय को० नं० १६-
	भे हरेक में १६ देखों		१८-१६ देखोऱ्या
	o		
	'hr		, काय को० नं० १७६ <u>न्</u> र
	m		देखो ?योग
<del></del>		:	Tr.
	वर मिथकाय याग १, कामसिएकाय योग १		म्हें इंड
		y vin	1
			् नाग को० नं० १६-
			१६ देखो
१ भंग १ योग	१६-१६ देखो (१) तियँच गति में ६-४-१ के मंग-को० नं १७ देखों में किथकाय योग १, दे० मिथकाय योग १, कार्मायाकाय योग १,	16- 110	१ काय को० नं० १७ देखो १ मंग को० नं

410	नातास त्यान वरान	(श्राय	つかん	भाष्ट्रमा चार उर		المالما المالم	المطالبا
~	c'	m	<b>&gt;&gt;</b>	*	υs	9	.; <b>b</b> ,
। । । । ।	m,	३ कर्म भूमि की अपेक्षा को० न० ७५ देखो	. भंग	₩ ₩ ~	1. 12 Fig.	१ भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो तो० नं० १९ देखो सारे भंग सारे भंग	१ योग १ योग १ योग कोऽनं० १८ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो सो०नं० १७ देखो
११ कपाय को०	प्य को० नं० १ देखो	२५ कमे भूमि को घपेक्षा को० न० ७५ देखा	सारे भंग	१ मंग		तार भंग सारे भंग सारे भंग है। नं० १६ देखो है। नं० १७ देखो	१ वेद शुभंग १ भंग को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो
					रप्र-र्षट-रुष्ट क भग को० नं० १८ देखो		

	•	•	483			,
चौतीस स्थान दर्शन	t <del>r.</del>	कोष्टिक	ह नं ० ७६		कापोत लेखा में	श्या में
8	lu-	>> 		; ;		្រ
				(४) देवगति में २४ के भंगे-को० नं० १६ टेन्नो	को० नं० १६ देखी	क्तो० न० १६ देखो
१२ मान कुशान ३, मान ३	६ कर्मभूमि की अपेदार	सारे भंग	१ ज्ञान	र कुत्रवधि ज्ञान घटाकर	सारे भंग	१ जान
य (द)	कीठ नेठ धर् द्वा		1	. गति में भंग-को० न	को० नं० १६ देखी	को० नं० १६ देखो
				१६ दखा (२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग-को० नं० १० टेस्टे	१ भंग नं० को० नं० १७ देखो	१ जान को नं० १७
		-		(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग	सारेभंग को० नं० १८ देखो	द्रवा १ ज्ञान को० नं० १ द
		`		का० न० १८ दख। (४) देवगति में २ का मेंग–को० नं० ९९ भेतो	को० नं० १६ देखो	दखा को० नं० १६ देखो
१३ संपम १ संपम सत्यम	१ कम्भूमिको झपेक्षा को० नं० ७५ देखो	~	~	१ १ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो
१४ दर्भन किवल दर्भन मटाकर (३)	३ कर्मभूमि की त्रपेशा को० नं० ७४ देखो	१ भंग	१ दर्शन	द् <sup>रत।</sup> (१) नरकगति मं २-३ के मंग-को० नं०	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
				१६ दखा (२) तियेच गति में १-२-२-२-३ के मंग- <sub>तो</sub> ० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो

		•	88x )			•	i
	चौतीस स	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं०	ا ا ا ا		कापोत लेश्या मे	गेशया मे
~	~ ~	er	>>	×	υ <b>ο</b> ν -	9	ប
) 			_		(३) मनक्ष्य गति में	Tirk Fig.	१ दर्शन
					(*) 43~ ''(') 1 २-३-२-३ 하 भंग	को० नं० १८ देखो	, को०नं० १८ देखो
	•				को० नं० १ द देखो		
					(३) देवगति में	१ भंग	१ दर्शन
					२ का भंग	को० नं० १६ देखों	क्रीं०नं० १६ देखों !
श्रु नेडग्रा	•	o	•	٥	का० न० १६ द्वा १	۵	۵
5 K C		तीनों गतियों में हरेक में	•	<u>,</u>	^		_
		१ कापोत लेश्या जानना					
१६ भन्यान	r	6	१ भंग	१ मनस्या	€.		१ जनस्था
 	भ. य, स्रभव्व	कमें भूमि की ग्रपेक्षा			नरक रेवगति में हरेक में	कोठनं० १६१६	को० नं० १६-
		को० नं० ७५ देखो			२-१ 휴 <del>개</del> 개 	देखो	१६ देखा
					कीठने १:-१६ द्वा निर्मन-मन्तर मन्ति मे		mion 9.9-9 c
					त्रेक में	१ द देखो	देखो
					२-१-२-१ के भंग		
					का० न० १७-१म झत्ता		
१७ सम्यक्त	w	w	सारे भंग	१ सम्यक्त	≫	सारे भंग	१ सम्यक्त
को०नं	को ०नं १ १ देखो	कर्म भूमि की अपेक्षा			मिश्र शौर उपज्ञम ये २		
		को० नं० ७५ देखो	•••		घटाकर (४)	7	1
					(१) नरक गांत म १-२ के भंग	का० न० १६ द्वा	माठन्ठ १६ द्वा
					को० नं० १६ देखो		
			•		(२ तियैच गति में	१ मंग	१ सम्यक्त
					१-१-१-१ के भंग	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखी
					को० नं० १७ देखो		
					(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ सम्यक्ष
					१-१-२-१-१-२ के भंग कोऽ नं ० १ से सेवो	को० नं० १८ देखो	कोठन० १व देखा
					:		

	कोप्टक नं०	7		कापोत लेख्या में	विया में
w.	>>	*	ijΣ*	9	5
		a	(४) देवगति में १-१ के भंग को० मं० १६ देखो	सारे भग को० नं० १६ देखो ं	१ सम्यक्तव को०नं० १६ देखो
२ कर्म भूमि की क्रपेक्षा को० नं० ७५ देखो	a•	~ .		१ को० नं० १६-१६ देखो	१ क्रो०नं० १६–१६ देखो
`			को० नं० १६–१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भग को० नं० १७ देखो	१ मनस्था को०नं० १७ देखो
			(३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	कोठनंठ १८ देखो
१ कमे भूमि की झपेशा को० नं० ७५ देखो	~	~	२ १ भग (१) नरक-देवगति में को० नं० १६-१६ की हरेक में १-१ के भंग	१ भग को० नं० १६-१६ देखो	१ अवस्य। कोठनं० १६–१६ देखो
			को० नं० १६–१६ देखो (२) तियँच-मनुष्य गति मेंब हरेक में १-१-२-१ के मंग	को० नं० १७–१ <i>६</i> देखो	को०नं० १७–१द देखो
े कमें भूमि की झपेंझा को० नं० ७४ देखों	१ भंग	१ उपयोग	कुन्नवि मान घटाकर (द)	१ भंग	१ उपयोग स्र <sub>ेटम</sub> ् १८ भेर
			१८) गर्भ गारा म ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो	 इ इ इ	77

भ्या में	n	१ उपयोग देखो १ उपयोग १ उपयोग १ उपयोग इखो १ उपयोग १ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान १ ध्यान	देखो
कापोत लेश्या में	9	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो	सारे भंग सारे भंग को० न० १६ देखों सारे भंग को० नं० १६ दखों
	w	च गति में नं १७ मं १७ य गति में के भग १८ देख़ी ति में !! प-को० नं स् स् स् स् स् स्नाति में स् व वराकर च गति में	१७ दखा (३) मनुष्य गति में ८-१-८-१ के भंग-को० वि तं १८ देखो (४) देवगति में ८-१ के भंग-को० नं० वि १६ देखो ४५ ११) नरक गति में वर्र-३३ के भग
र <b>)</b> नं ७६६	*	१ च्यान	१ भंग
( १४६ कोप्टक नं०	>>	सारे भंग	स रे भंग
<u>ਜ</u>	m	१० कभेभूमिकी ग्रपेया को० नं० ७५ देखो	४२ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो
चोतोक्त स्थान दर्शन	8	नं ० १६ देखो	मं० ७५ देखो
चोर	~	२१ ह्यान को० नं	२२ ग्रास्त्रव को०

कापोत लेश्या मे	n.	१ भंग वो को०नं० १७ देवो	 १ भंग   को०नं०१८ देखो	<del></del>	१ भंग देखो को०नं० १६ देखो	and the second section of the second	१ भंग सो को०नं• १७ देखो
कापोत	<u>ඉ</u>	सारे भंग को० न० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १		सारे भंग को०नं० १६ से		सारे भंग को व नं १७ देखो -
	w	(२) त्तियंच गति में ३७-३८- ६-४०-४३- ४४-३२-३३-३४-३५- ३८-३१-४३-३८-३३ के मंग	भारत १ ७ दुंखा (३) मनुष्य गति में ४४–३६–३३–४३–३६– ३३ के भंग	कार्रम १ द रे (४) देवगति में ४३-: द के मंग कोर नंर १६ देखो	३२ (को० नं० ७ 'देखो) (१) नरक गति में	२३-२४ के भंग को॰ नं॰ १६ के २५- २७ के हरेक भंग में से कृट्या-नील ये २ लेह्या घटाकर २३-२५ के भंग जानना	(२) तियंच गति में २२-२३-२४-२४-२०-२ २१-२३-२३ के भंग को० नं० १७ के २४- २४-२७-२७-२२-२३- २४-२५ के हरेक भंग में से कुटसा-नील लेक्या
४४७ ) नं० ७६	8				म भ ~		
( ४) कोष्टक नं	>>			H.			
चातीस स्थान दर्शन	er			समें यपि सी माध्या	भूभ प्राप्त भूभ भूभा कोठ नं० ७५ देखो		
नातीस	07	•		رن عز من من من	की० नंग ७५ देखी		

चौतीस स्थान दर्शन		्र ४,४,५ कोष्टक नं०	रुंद्र ) के मं० ७६		कापोत लेखा	ध्या में
e	lts-	>>	ər	υ <b>ν</b> 	9	រេ
				मे २ लेग्या घटाकर		والمناسبين وندست
				4-43-48-4		
				२३-२३ के भंग जानना	-	
				२४-२०-२५ के भंग-	=	
				िको० नं० १७ के समान		
				जानना	सारे भंग	० भग
-				(३) मनुष्य गति में	和。	को० न० १६
			· · · · · ·	रद-२६ के मंग-को०		दंखो
				मं० १ म भ ३०-२ त के		
				हरेक मंग में से कुः सा	-	
				नील ये २ लेश्या घटा-		
				कर २८-२६ के भंग		
				जानना		
				र स मा भंग-को० नं०	2	**
				् १८ के ३० के भंग में		
-				में कापीत लेश्या छोड़-		
		-		कर शेष ५ लेख्या बटाक ग		
				२४ का भंग जानना		
				२४-२२-२५ के मंग-	3	•
,				का० न० १८ के समान	-	-
				जानना		. •
				(४) देवगति में	सारे भंग	१ भग
				२४-२२ के मंग-को०	轨	को० नं० १९
	•			नं० १६ के २६-२४ के		देखो
			<del></del>	हरेक भंग में से कुष्ण-		
				नील ये २ लेखा घटा-	,	
		*****		कर २४-२२ के मंग		
			<del></del>	जानना		
		_	•	_		

४ प्रयताहमा-को० नं० १६ से ३४ देखो

त् संत प्रकृतियां—११५

नस्य प्रज्ञतियां—११६

सत्य प्रकृतियां — १४६

सर्या — प्रमन्तामन्त जानना

षेत्र – सर्वलोक जानना ।

स्पर्गन - सर्वलोक जानना।

काल--नोना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की ३रे नरक की अपेक्षा अन्तमुँ हूते से ७ सागर काल प्रमाण जानना ।

क्षरार--नाना जीनों की अपेक्षा कोई यन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्भु हूर्त से ७वे नरक की अपेक्षा ३३ सागर तक कापोत लेख्या न

३३ जाति (योनि)—द४ लाख योनि जानना । ३४ कुल—१६६॥ लाख कोटिकुल जानना ।

हो सके।

Ϋ́Ϋ́

चींतीस स्थान दर्शन	र्थान	<b>,</b> कोष	( <sup>५५</sup> ० , कोप्टक नं <b>०</b> ७७		पीत ले	पीत लेखा से
फि० स्थान सामान्य ग्रालाप	<b>पय</b> ित				इत्याप्त	
	नाना जोव की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के
2	m	>>	<i>⇒</i> ⊀	υν	9	ប
१ मुख् स्थान १ से ७ तक ने मुख्	ि (१) तियेन गति में १ से ५ मोग भूमि में १ से ४ (२) मनुष्य गति में १ से ७ मोग भूमि में १ से ४ (३) देवगति में १ से ४	सारे गुर्गा० अपने अपने स्थान के सारे गुर्गा स्थान जानना	१ मुस्सा । १ मुस्सा । में में भ्रममें	४ १) मनुष्य गति में कमें भूमि की ग्रपेक्षा १-२-४-६ (२) देवगति में	सारे गुसा स्थान १ मुसा । प्रपने स्थान के प्रपने प्रपने स्थान सारे गुसा जानना के सारे गुसा में से कोई १ मुसा	१ मुख भ के सपने स्थान के सारे मुखा में से कोई १ मुखा
२ जीवसमास	c			करपवासियों की श्रपेक्षा सूचना-यहां तियंच गति नहीं होती (देखो गो० क० गा० ३२७)		
यित १,  पर्याप्त १	र तियंत्र, मनुष्य, देवगति में हरेक में १ संझी पं० पयित जानना को० न० १७-१६ देखो	१ को० नं० १७-१द- को०नं० १७-१द- १६ देखो १६ देखो	१ को०नं० १७-१८-१ १६ देखो	्र दोनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० ग्रपयांस	१ को० नं० १८ १६ देखो	१ को०न० १ <i>५–</i> १६ देखो
३ पर्याप्ति	६ तीनों गतियों में हरेक में ९ का भंग को० नं० १७-१६ देखो	१ भंग को० नं० १७-१द- १६ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८- १९ देखो	कोरनं १ द-१६ देखो मनुष्य-देवगति ३ दोनों गतियों में हरेक में ३ का भंग कोठ नं ० १ द-१६ देखो	१ भंग को.नं० १८–१९ व देखो	१ भंग को०नं० १८-१९/ देखो

लेखा में	r	१ भंग को०नं०१८-१६ देखो	१ भंग को०नं०१८ देखो	१ भंग कोर्ना १६ देखो	१ गति	· ~	~
पीत ह	9	१ भंग को० नं० १८-१६- देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ गति	~	~
	*	७ दोनों गतियों में हरेक में ७ का भंग को०नं० १५-१६ देखों	४ (१) मनुष्य गति में ४ का मंग	का० न० १८ देखा (२) देवगति में ४ का भंग को० नं० १६ देखों	र मनुष्य, देव ये २ गति	जानन को० नं० १८-१६ देखो १ दोनों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानता	को० नं . १८-१ देखो १ मनुष्य-देवगति में १ वसकाय जानना को० नं० १८-१६ देखो
ରର <sub>ଓ</sub>	አ	१ भंग को०नं० १७-१ द- १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भग को०नं० १८ देखो १ भंग	का०न० १६ दखा १ मति	~	~
( ४५१ कोष्टक नं०	>>	१ भंग को०नं० १७-१६-१६ को०नं० १७-१ <i>द-</i> देखो	१ भंग कों०नं० १७ देखो		का० न० १६ दल। १ मित	~	~
दर्शन	m	१० तीनों गतियों में हरेक में १० का भंग कोंऽनं० १७-१६-१६ देखो	४ (१) तिर्यन गति में ४-४ के भंग क्रो० नं० ३७ टेक्से		े देखो जानना ७-१६-१९ देखो	, 压造	कोठ नं० १७-१८-१६ देखो १ तियंन-गनुष्य-देव ये ३ गतियों में हरेक में १ एसकाय जानना कोठ नं० १७-१८-१६ देखो
चोतीस स्थान दर्शन	6	४ प्राम्म को० नं० १ देखो	थ्र संज्ञा कोठ नंव १ देखो		६ गति तियीत, मनुत्य, देव रे ३ गति जानना	७ युन्द्रिय जाति १ पंत्रीन्द्रिय जि	व काष

ोर्या में	n	१ योग	१ योग हो०नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं०१८ देखो
पीत लेक्या	9 	१ भंग	 सारेभंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० न० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग नं० १ द देखो
	w	<b>४</b> थौ० मिश्रकाययोग १, वै ० मिश्रकाययोग १,		का० न० ९८ दखा (२) देवगति में १-२ के मंग को नं० १६ देखो	२ स्त्री-पुरुष वेद (२) (१) मनुष्य गति में २-१-१ के भंग	कारनं ९ द देखा (२) देवगति में २-०-१ के भंग कों नं ९६ देखों	१ भंग को०नं० १७ देखो नपुंसक वेद घटाकर (२४) को० (१) मनुष्य गति में २४ का भंग
99 0	*	१ योग	१ योग को०नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो १ योग को०नं० १६ देखो	७ देखो	९ वद को०नं० १ द देखो १ वेद को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखोन
( ४४२ कोष्टक नं०	>>	१ भंग	१ भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो मारे भंग		सारे भंग को०नं० १७ देखो
दर्शन	nr	११ श्री० मिथकाययोग १, वै० मिथकाययोग १,	था० । सथकाययाग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११) (१) तियैच गति में द-६ के भंग को० नं० १७ देखो	(२) मनुष्य गति में ६-६-६-६ के भंग को० नं० १५: देखी (३) देवगति में ६ का भंग को० नं० १९ अस्ते	र ५५५। ३ ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति भे	३-३-२-१-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति भे ३ का भंग को० नं० १६ देखो	२५ (१) तिर्यंच गति में २५-२५-२१-१७-२४-२० के भंग को० नं० ६७ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	₽ *	६ योग को० नं० २६ देखो			१० वेद को०नं० १ देखो		को० नं० १ देखो

चीतीस स्थान दर्शन	ŀĽ	्र कोष्टक	१११ <i>।</i> नम्० ७७		पीत लेश्या	रया में
~	æ	>	ጵ	UY	<b>9</b>	r 
Company of a company of the company		सारे भंग	१ भंग	मंं १८		
	-62-88-68-86-86	क्रो० नं० १८ देखो	को० नं० १८	भंग में से १ नपुंसक	-	
	'h <del>-</del>		देखो	वेद घटाकर २४ का भंग		
		सारे भंग	१ भंग	जानना		
		को० मं० १६ देखो	को० न० १९	१६-११ के भग-का	**	
	म्		देखो	नं० १ द देखी (२) चेनानि भे	मंद साम	منند و
	# v v >			(4) 4441(1 中 2火-26 帝 并和一新。	को० नं० १६ देखो	को० मंं १९
		~ **		को० नं० १६ देखो	•	देखो
१२ जान		ᅾ.	१ जान	*		
फ़ियल जान घटाकर		को० नं० १७ देखो	को० नं० १७	कुम्रवि जान मनः		
(ඉ)	भंग-को०		देखो	पर्यय जान, ये २ पटा-	•	
-	नं ०१७ देखो			कर (५)	•	•
	(२) महुष्य रति में	सारे मंग	१ ज्ञान	(२) मनुष्य गति में	भग	
	३-३-४-३-४२ के भंग-	争	को० नं० १८	२-३-३ के ने भंग	कों० नं० १८ देखों	क्षीं नि० १ प
	को० मं० १८ देखो	-	से १६ देखो	को० नं० १ न देखो	•	देखा
	.1	गारे भंग	१ ज्ञान		तारे भंग	트.
	३-३ के भंग-कों नं	को० नं० १६ देखो	को अने १६	२-३ के भंग-को० नं०	मो० नं० १६ दखो	को० न० १६
	१६ बेतो		देखो	१६ देखो	٠	दला
१३ मंत्रम ५	<b>x</b>	भग	१ संयम	>>	१ भग	१ सयम
गुरम सांपराम,	(१) तियंन गति में	को० नं० १७ देखो	कों० नं० १७	श्रसंयम, सामायिक,	-	
स्थान्यात में २ घटाकर	१ १-१-१ के भंग-कों नं		देखो	छेदोपस्थापना, परिहार		
(%)	१७ देखो			वि० ये (४) जानना	•	•
	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ संयम	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ संयम
	१-१-:-२-३-१ के भंग-	कों मं १ द देखो	को० नं० १८	१-२ के भंग-को० नं०	को० नं० १ न देखो	को० नं० १८
	को० नं० १ न नेखो		देखी	१ द देखो		दखो
	📗 ३, देवगति में	१ भग	१ संयम	(३) देवगति में	१ भंग	. संयम
-	१ यस्यम् जानम्	को० नं० १६ देखो	को० न० १६	१ सस्यम जातना	को० नं० १६ देखो	को० नं० १९
ن خوات معور	की० नं० १६ देखी		देखो	को० नं० १६ देखो		देखा
The same of the sa						

र्या में	ıs	१ दर्शन १ दर्शन १ दर्शन १ अवस्था १६ देखो १६ देखो १ सम्यक्त्व १ सम्यक्त्व १ सम्यक्त्व १ सम्यक्त्व १ सम्यक्त्व
पीत लेश्या	9	को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो
	עט	है (१) मनुष्य गांत में २-३-३ के भंग को० नं० १ द देखों (२) देवगति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखों भेग हेरक में १ पीत लेश्या जाना। १ पीत लेश्या जाना। १ पीत लेश्या जाना। १ पीत लेश्या जाना। १ के भंग को०नं० १ द-१६ देखों १ १-१-२ के भग को० नं० १ द देखों १ १-१-३ के भंग को० नं० १ द देखों १ १-१-३ के भंग को० नं० १ ६ देखों १ १-१-३ के भंग को० नं० १६ देखों
୍ ରଚ ୦	<b>a</b> 4	१ दर्शन को०नं० १७ देखो १ दर्शन १ दर्शन १ दर्शन १ अवस्था १ अवस्था १ सम्प्रमत्व को०नं० १७ देखो १ सम्प्रमत्व को०नं० १६ देखो
कोष्टक नं०	>>	को०न० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग १ भंग १६ देखो को० नं० १७ देखो १६ देखो को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो को० नं० १८ देखो को० नं० १८ देखो
दर्शन	m	(१) तिर्यंच गति में  २-२-३-३-२-३ के भंग  को०नं० १७ देखो  २-३-३-१-६-३ के भंग को० नं० १६ देखो १ देवगति में १ पीत लेस्था जानना २ तीनों गतियों में हरेक में १ पीत लेस्था जानना २ तीनों गतियों में हरेक में १ पीत लेस्था जानना २ तीनों गतियों में हरेक में १ पीत लेस्था जानना २ तीनों गतियों में हरेक में १ पीत लेस्था जानना २ को० नं० १७-१६-१०३ के भंग को० नं० १७ देखो १-१-१-३-३-२-३-१-१-१-१-३-१-१-३-३-१-१-३-३-३-१-१-३-३-३-१-१-१-३-३-३-१-१-१-३-३-१-१-१-३-३-३-१-१-१-१-३-३-३-१-१-१-१-३-३-१-१-१-१-१-१-१-३-३-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१-१
चौतीस स्थान दर्शन	ጵ	ह 0, च थ 3 दर्शन व 4 दर्शन व 4 दर्शन व 4 दर्शन व 4 दर्श व 4 दर्श व दर्श व व 4 दर्श व व 4 दर्श व व व व व व व व व व व व व व व व व व व
••	~	१४ दर्शन प्रविध दर्श ये (३) ज १६ भन्यत्व १६ भन्यत्व १७ सम्यक्त्व

( 888 )

चौतीस स्थान दर्शन	न दर्शन	( ४४५ कोष्टक नं	) 99 (		पीत लेख्या	श्या भे
8	ar .	>	<u>-</u>	USP	த	u
१= गझी संजी	२ (१) तियंच गति में	१ मंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को० नं० १७	१ (१) मनुष्य गति में	~	~
	१-९-९ क सग को० नं० १७ देखो १२) मनुष्य गति में १-९ के भंग-को० नं०	~	~ • • •	{ का भग-का० न० १ द देखो (२) देवगति में १ का भंग-को० नं०	~	~
	्ट दल्ला (३) देवगति में १ का भँग-को० नं० १९ देखो	~	~	र हे देखा इं		
१६ प्राहारक प्राहारक, प्रनाहारक	१ तीनों गतियों में ह १ स्राहारक जानन	~	~	२ (१) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग-को० नं०	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो
	क्तारु नुरु १७.१ द-१६ पेलो			१ द देखो (२) देवगति में १-१ के मंग-को० नं ०	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
२ - उनयोग भागोनयोग ७ स्क्रीनयोग ३ भ । १ - ० जनवन		१ भंग को० नं०१७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो	१६ देखां ====================================		
	(२) मनुष्य परि में ५-६-६-७-६-७-१-६ के मंगः को० ने० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	बटाकर (५) (१) मनुष्य गति में ४-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
	(३) देवगति में १-३-६ के भंग-को० नं० १६ देवो	१ भंग को० नं० १६ देखी	१ उपयोग को० नं० १६ देखो	(२) देवगति में ४-६ के भंग-को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उनयोग को० नं० १६ देखो
२१ ध्यान १२ युग्त ध्यान ४, महाकर (१२)	<u></u>	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	१२ (१) मनुष्य गति में न-७-१ के भंग-	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं  १ द देखो

_	
シ な な	
_	

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	मोध्यम	भूष्ट् ।		मीत ले	लेखा में
e - }	æ	>>	<b>-</b> 4	U3°	9	្រ
	के भंग-को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ८ १०-११-७-४-६- १० के भंग	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १ द देखो	को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ८-६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ द्वेलो	१ भंग को०नं० १६ देखो
	का० न० १६ देखा (३) देवगति में ६-१-१० के मंग को० न० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो			
९२ ग्राप्तय ५७ को० नं० ७१ देखो	५३ क्रौ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १,	सारे मंग १ मंग अपने अपने स्थान के अपने अपने स्थान सारे मंग जानना के सारे भंगों में	१ मंग ग्रपने श्रपने स्थान के सारे भंगों में	४५ सारे भंग सनोयोग ४, वचनयोग ४, अपने अपने अपने स्थान श्री० काययोग १, सारे भंग अ.नता कि सारे भंग भे	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भग जानना	१ भंग प्रपने श्रंपने स्थान हे सारे भंगों भे
	ग्रा० मिश्रकाययोग १, कार्माता काययोग १ ये ४ घटाकर (४३)		कोई १ भंग जानना			स कोई १ भंग जानना
	(१) तियन गति म ४१-४६-४२-३७-५ -४५- ४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सार भग को० नं० १७ देखो	१ भग को०नं० १७ देखो	ये १२ घटाकर (४४) (१) मनुष्य गति में ४४-३६-३ -१२ के भंग क्रोटन ४८ डेको	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग हो०नं० १८ देखो
	(२) मनुष्य गति में ४ -४६-४२-३७-२२-२०- २२-४०-४४-४१ में मंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को ०नं० १८ देखो	<b>:</b> ←	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग कोर्लनं० १६ देखो
ı	(३) देवगति में ५०-४५-४१ के मंग को० नं० १६ देखी	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० {६ देखो			
२३ भाव उपशम-क्षापिक सम्पक्त २,	३८ (१) तियंच गति में २६-२४-२५-२७ के भंग	सारे भंग को० नं. १७ देखो	१ भंग कोठनं० १७ देखो	३३ कुर्वाध झांने १, मनः पर्यय झान १,	सारे भंग	१ भग
		,				

श्या में	น	१ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग
पीत लेक्या में	ရ	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो
	አ	तियंच गति १,  मपुंसक वेद १,  मंयमासयम १,  थ ५ घटाकर (३३) (१) ममुष्य गति मं  २५-२६-२५ के मंग  को० नं० १ द के ३०- २८-३० के हरेक भंग  में से पीत लेक्या छोड़- कर शेप ५ लेक्या छोड़- कर शेप ५ लेक्या छोड़- कर शेप ५ लेक्या छोड़- कर शेप १ लेक्या छोड़- कर भंग में से  पद्म और शुक्ल लेक्या २ लेक्या वटाकर २५ का मंग जानना भोग भूमि में  यहां कोई भंग नहीं होते। कार्या यहां पीत लेक्या ही होती है। (२) देवगति में  मवनविक देवों,में  यहां कोई भंग नहीं
) ඉබ •	>	,, हे भंग को०नं० १ द देखी
( ११५७ कोष्टक नं०	>>	" सारे भंग को० नं० १ द देखो
दर्शन	fr*	को० नं० १७ के ३१- २६-३०-३२ के हरेक मंग में से पात लेह्या छोड़कर होव थे लेह्या घटाकर २६-२४-२५-२५ के भंग को० नं० १७ के २६-२४-२५-२६-२६ के भंग जानना होटकर मंग में से पद्म-राज्य महत्य गति में १९-२४-२४-२५ के भंग जानना होड़कर होप थे लेह्या छोड़कर होप थे लेह्या हेटिकर भंग लोठ नं० १८ के ३०-३९-२६-२६ के संग
चींतीस स्थान दर्शन	2	केवत ज्ञान घटाकर जेप ज्ञान ७, केवल दर्शन विमा ज्ञाप वर्षन ३, ज्ञापेण्यम सम्पन्तव १, नरफ गति जिना थेप लिग ३, सिंघ्य १, ग्रयमा- ग्रंपम १, ग्रजान १, प्रति लेड्या दर्शन १, प्रमित्या दर्शन १, प्रमित्या दर्शन १, प्रमित्या दर्शन १, में ३६ भाष जानमा

पीत लेश्या में	ឋ	को असे प्रमंग
पीत हे	9	सारे मंग को० नं० १६ देखो
	ųν	कल्पवासी देवों में २४-२१-२६ के भंग को० नं० १६ के २६- २,-२८ के हरेक भंग में से पद्म-जुक्ल ये २ लेखा घटाकर २४-२२- २६ के भंग जानना
५५२ ) तम्० ७७	ಶ	१ भंग को०नं० १६ देखो
( कोप्टक	>>	सारे मंग को० नं० १६ देखो
le l	m	में से पद्म-गुक्ल ये २ लेक्या घटाकर २६- २६-२५-२६-२५-२३- २४-२७ के भग जानता भवनतिक देवों में भवनतिक देवों में भवनतिक देवों में को० नं० १६ के समान कल्पवासी देवों में २५-२३-२४-२७ के भंग को० नं० १६ के स्थान को० नं० १६ के स्थान सो० नं० १६ के स्थान श्रिन भंग में से पद्म- युक्ल ये २ लेक्या घटाकर २५-२३-२४-२७ के भंग जानना
चीतीस स्थान दर्शन	0	
चीतं	~	

×	प्रवगाहना—को० नं० १७-१६-१६ देखो ।
2 K	वंच उक्तियां - १११ वन्वयोग्य १२० प्रकृतियों में से नरकदिक २, नरकायु १, विकलत्रथ २, सावारण १, तुरंग १, गंगाण १ व पटाणर
	१११ जानना ।
ህት በታ	उत्त प्रकृतियां—१०५   उदय योग्य १२२ प्रकृतियों में से नरकदिन २, नरकाषु १, तिपच गरगात्रणा १, द्रगार्थमार याग १, अस्य प्रकृतियां—१०५   उदय योग्य १ मध्य १  मध्य १  प्रवर्षात् १ ये १४ प्रकृत घटाकर १०५ जागना
ე. ე	तायकर १, सायारण १, प्रन्म १, राग १, मान जानना । महत्त्र प्रकृतियां —१४८ को० नं० १ से ७ मुर्ग स्थान के समान जानना ।
ıı O	संस्था—असंस्थात जानना ।
. u	सेत्र. — लोक का ससंख्यातवां भाग जानना ।
, t.	स्पर्शत—लोक का असंस्थातवां भाग द राजु, ६ राजु जानना । को० मं० २६ देखी
, e.	काल — नामा जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तमुहूत से दा अन्तमुहूत आर र सागर अमार्थ रर स्वग का
th Cr	<b>ग्रन्तर</b> —नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमु हुत से ग्रसंख्यात पुद्गल परावतन काल तक पात लक्ष्या ग्रन्तर—नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमु हुत से ग्रसंख्यात पुद्गल परावतन काल तक पात लक्ष्या
:	न हो सके।
to to	जाति (गोनि)—-२२ लाख योनि जानना । (पंचेन्द्रिय तियँच ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख य सव २२ लाख जानना) ।
ر در	कुलदेश लाख कोरिकुल जानना । (पंचेन्द्रिय तियँच ४३॥ देव २६, मनुष्य १४ य सव दर्श। लाख कारिकुल जानग।)

| १ जीव के एक समय में १ मुर्गा० ıs भंग १ मति जान भंग १ भंग १ योग ্ত ত भंग 冲 पद्म लेश्या १ जीव के नाना समय में सारे गुरा सारे भंग भंग भंग १ भंग १ मति १ भग १ भंग १ भंग ඉ ३ लिंडिय रूप ६ भी नाना जीवों की ग्रपेक्षा अपयोप्त u) 9 एक जीव के एक समय में १ मुरा॰ १ जान १ भंग ᆏ. १ गति १ योग १ भंग १ भंग hr No ຮອ >< कोष्टक नं० एक जीव के नाना। समय में सारे गुरा स्थान सारे भंग १ भंग १ मति भंग भंग १ भंग भंग भंग ≫ नाना जीवों की श्रपेक्षा m पर्याप्त चौतीस स्थान दर्शन सामान्य श्रालाप रप्र को० नं० ७७ देखो ४ प्रास्त को० नं० ७७ देखो को० नं० ७७ देखो ान मो भंग ७७ भूतो एर-स्थान को० नं० ७७ देखो क्तो० नं० ७७ देखो को० नं० ७७ देखो गिंग को० नं० ७७ देत्रो को० नं० ७७ देखो को० नं० ७७ देखो को० नं० ७७ देखो को० नं० ७७ देखो 3 ७ इन्द्रिय जाति जीव समास १ गुरा-स्थान पर्याप्ति स्थान ११ कपाय ४ संज्ञा ह यो १२ ज्ञान द काय १ ३ वेद ê

_
~
0)'
J

चीतोस स्थान दर्शन	दर्शन	( १६१ कोष्टक नं०	५६१ ) मं० ७ प्र		पदम हे	पद्म लेख्या में
ar	er.	>-	×	UY	9	ឋ
१३ संवम स्रोत संग्रह	×	१ भंग	१ संयम	>>	१ भंग	१ संयम
१४ दर्गत स्रोत संग्रह	m	१ भंग	१ दर्भन	m	१ भंग	१ दर्शन
१५ तेश्वा	१ तीनों गतियों में हरेक में	۵.	~	~	~	~
१६ मध्यस्य सोर मेर सर सर्वे स्वो	१ पद्म लेख्या जानेना २	१ भंग	१ जनस्या	r	१ भंग	१ अवस्था
रेड मुरम्पद्य ६	है अस्ति स्वत्यास्य स्वतंत्र	१ भंग	१ सम्यक्त्व		१ भंग	१ सम्यक्त्व
	(१) तित्रच य मनुष्य गांत म को० नं० ७७ के समान जानना (२) देशनि में			काठ नठ ७७ के स्मान जानना		,
	त्र्रिकः स्थानिकार					
१व मंगी गो० नं० ७७ देखो	~	१ भंग	१ जनस्या	Ow'	१ भंग	१ जनस्या
१६ माहारक को० मे० ७७ देनो	~	~	~	٧	सारे मंग	१ जनस्या
२० उपयोग नो० नं० ७७ देयो	0	१ भंग	१ उपयोग	ıs	१ भंग	१ उपयोग
२१ च्याम शो० मं० ७७ येथो	ò.	१ भंग	१ ध्यान	۶,	१ भंग	१ व्यान
२२ मायम मो० नंर ७७ देशी	or X	सारे भग	१ भंग	** *	सारे भंग	१ भंग
्रे अस्ति स्रोति स्थाप्ति स्थाप्ति	1 1 1:	सारे भंग	१ भंग	€	सारे भंग	१ भंग
-	(१) ग्रिया भाग मान मनुष्य मिन में कोंग नंग ७३ के समान		and the second second	कार न ७ ७७ के समान जानेगा		
egitte i i i i i i i i i i i i i i i i i i						***************************************

争	चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( <sup>५.६२</sup> ) कोष्टक नं <b>०</b> ७८	, ਜੇਂਹ		पद्म	पद्म लेश्या	भ
~	or .	tts.	У	24	US	 9		ប
यहां पीत लेख्या जानना जानना	त लेग्या के ग लेश्या	जानता परस्तु यहां हरेक भंग में पीत लेक्या की जगह पद्म लेक्या जानता (४) देवगति में भवनित्म देवों में-कोई भंग नहीं होते कल्पवासी देवों में को० नं० ७७ के समान जानना परन्तु यहां हरेक भंग में से पीत-गुक्ल ये २						
×c	nan1241—#	मनमादनाक्रो० मं० १/९-१८-१८ देखो ।						

भवगाहना--का० न० १७-१८-१९ दिला।

बंध प्रकृतियां---१११-को० नं० ७७ के समान जानना।

**च**वय प्रकृतियां—-{०८

सत्व प्रकृतियां — १४८

संख्या—असंख्यात जानना ।

मेत्र--लोक का श्रसस्यातवां भाग जानना ।

स्पर्धन--लोक का असंख्यातवां भा न राजु जानना। को० नं० २६ देखो। m

काल—नाना जीवों की घ्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की क्रपेक्षा घ्रन्तमुँ हूर्त से दो घ्रन्तमुँ हूर्त घ्रौर १ न। सागर प्रमासा १२वे स्वर्ग की श्रगेक्षा जानना । **प्रतर**—नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुते से ग्रसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक पद्म लेश्या न हो (1)

जाति (योनि)-- २२ लाख जानना । को० नं० ७६ देखो ।

कुल-- दशा लाख कोटि मुल जानना । को० नं० ७६ देखो -<u>ښ</u>

् ४६३ ।

				9	1, 15, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1,
<b>पर्या</b> प	į			ञ्जपयित	
नाना जीव की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	ं नाना जीवों की अपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
· m	>>	*	U3°	9	ឋ
	ं रात बे	१ मुसाः प्रपने श्रपने स्थान के सारे मुसाः में	१) मनुष्य गति में १-२-५-	सारे गुरा स्थान अपने अपने स्थान सारे गुरा। जानना	१ मुरा। प्रपत्ने अपने स्थान हे सारे गुरा। में
(२) ममुष्य गात म १ स १३ भोग भूमि में १ से ४ (३, देवगति में १ से ४ १ संशो पं० पर्यांटा		स काइ ९ गुरा <i>०</i> जानना १	(२) दवगात म १-२-४ १ संज्ञी पं० प्रपर्याप्त १ संज्ञी पं० प्रपर्याप्त	~	में कोंद्र १ मुस्सि॰ जानना १
नाना पात्या म हर्क म १ नजी पं॰ प्यांत्त जानमा को॰ नं॰ ७-१६-:६ देखो ६	१ भंग	१ भंग	म हरक प्रपर्यात्त १६ देखो	१ भंग	१ मंग
नाता गातुषा म हुरक म ६ का भंग को० ने० १७.१८-१६ देखो	,	,	दीनो गतियों म हरेक में ३ का भंग जानना को० नं०		
१० (१) तिर्यंच-देव गतियों में हरेक में १० का मम जानना को० न० १७-१६ देवो	१ मंग को० मं० १७- १६ देखो	१ मंग को०नं० १७- १६ देखो	े (१) देच गति में ७ का मंग जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
	पयाप्त  श्व १३ १३ १३ १३ ४ ४ भोग भूगि में १ से ४ भोग भूगि में १ से ४ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३	पक जीव के नाना समय में समय में समय में समय में सारे गुण स्थान १ से ४ से ४ सारे गुण स्थान १ से ४	पक जीव के नाना समय में समय में समय में समय में सारे गुण स्थान १ से ४ से ४ सारे गुण स्थान १ से ४	पिक्षा समय में समय में नाना एक जीव के एक नाना जीवों की अपेक्षा कि समय में समय में समय में समय में नाना जीवों की अपेक्षा कि समय में समय में समय में समय में हैं हैं से दें से प्राप्त हैं आपने अपने स्थात के अपने स्थात के समरे गुणा भें हैं हैं गुणा के सारे गुणा भें हैं हैं गुणा के सारे गुणा में हैं हैं गुणा के हैं हैं गुणा हैं	प्रक्त जीव के नाना एक जीव के एक नाना जीवों की अपेक्षा ( १ जीव के नाना समय में

लेखा में	<b>u</b>	<u>म</u>	१ भग को०नं०१ददेखो	१ भग को०न०१६देखो		~·	~	~
भुकल	9	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो		~	. ~	~ تلان
	æ	(२) मनुष्य गति मे ७-२ के भंग को० न १ द देखो	४ (१) मनुष्य गति में ४-० के भंग	को० नं० १		र मनुष्य, देवगति ये २ गति जानना को० नं० १८-१६ देखो	१ दोनों गतियों में हरेक में पर्याप्तवत् जानना को० नं १८-१ देखो	१ मनुष्य-देवगति में हरेक गे १ जसकाय को० नं० १८-१६ देखो
(B)	<b>ઝ</b>	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	, देखो	१ भग को०नं० १६ देखो	~	~	~
कोप्टक नं०	>>	सारे भंग को० नं. १	१ भंग को०नं० १७ देखो		१ भग को० नं० १६ देखो	~	~ ·	~
र्शन	w	(२) मनुष्य गति में १०-४-१० के भंग को०नं० १ द देखो		१७ देखो त में १-०-४ के भंग १- देखो	(३) देवगति में ४ का भंग को०नं० १६ देखों	३ तिर्यंच-मनुष्य-देव ये ३ गति जानना को०नं० १७-१८-१९ देखो	१ तीनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१६-१९ देखो	१ १ दिनों गतियों में १ त्यकाय जानना को० नं० १७-१८-१६ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	~		५ संज्ञा को० नं० १ देखो			६ गति . रक्त गति घटाकर (३)	७ इश्विय जाति १ संशी पं॰ जाति जानना	द काय १

کو مر

3		, ४६४ )	$\overline{}$		(i here	<del>\</del>
चातास स्थान दशन	द्यान	क्राध्टक न०	96		ત્રીયલ હા	
~	err -	>	ಶ್	υž	<b>9</b>	វ
ह मोंग १५	કે કે	१ भंग	% योग	<b>&gt;&gt;</b>	१ भूम	१ योग
<ul><li>मं० २६ वं</li></ul>	न्रो० मिथकाययोग १,		-	म्रौ० मिश्रकाययोग १,		,
	न् मिश्रकाययोग १,		-	वं मध्यकाययोग १,		,
	ग्रा० मित्रकाययोग १,		**	ग्रा मिथका योग १,		-
	कामांसा काययोग १			कामिंग का योग १		
	ये ४ घटाकर (११)			ये ४ योग जानना		,
	(१) तियंच गति मं	१ भंग	१ योग	(१) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ योग
	प्र-८ के भंग	को०मं० १७ देखो	कोंग्नं० १७ देखो	१-२-१-२-१ के भंग	को०नं० १ द देखो	को०नं० १८ देखो
	क्षों मं १७ देखों			को० नं० १८ देखो	,	•
	(२) मनत्य गि में	सारे भंग	१ योग	•	१ मंग	१ योग
		को० नं० १८ देखो	कों अनं १ द देखो	१-२ के भंग	को० न० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो
				को नं० १६ देखो	•	
	(३) देवगति में	१ भंग	१ योग			
	६ का भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखा			
	को० नं० १६ देखो					
१० वेद	m	१ भंग	१ वेद	~	सारे भंग	क क र
स्त्री-पुरप्-नपुंसक वेद	(१) तियंच गति मं	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो		<b>-</b> .	
	३-२ के भंग			(१) मनुष्य गति में	्मो० नं० १ द देखो	को०नं० १८ देखो
	को० नं० १७ देखो			२-१-१-० के भंग		
	(२) मनुष्य गति में	गरे भंग	२ वैद	को०नं० १८ देखो		
	と-を-さーさーさーさーさ	को० नं० १न देखो	को०नं० १८ देखो	(२) देवगति में	सारे भंग	१ वेद
	०-२ के मंग			२-१-१ के भंग	कों नं १६ देखो	कोठनं० १६ देखो
	को० नं० १८ देखो			को० नं० १६ देखो		
	(३) देवमति में	मिर भंग	१ वेद		***************************************	
	२-१-१ का भंग	को०नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो			-
,	को० मं० १६ देखो					
११ मताम ११		मारे मंग	१ भंग	38	सारे भंग	१ भंग
मोर नं १ श्रेम	$\widehat{\mathbb{E}}$	मोठनं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो	नपुंसक वेद घटाकर (२४) को०	नं० १८ देखो	को०नं० १८ देख
-	oと-2と-01-8と-12-12			(१) मनुष्य गति में		
	क भेग			२५-१६-११-० के भेग		,

_
سوں
w ~

ं म <sup>ा</sup> तीस	स्थान दशन	( ४६६ कोष्टक नं०	( ) HO 0		मुक्ल लेः	लेख्या मे
2	er.	>>	*	υσ	9	r
	को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१३-११-१३-	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग कोऽनं०१८ देखो	को०नं० १ द देखो (२) देवगति में ४-१६-२३-१६-१६ के मंग	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं ११ देखो
	२२० के भंग को० नं० व्देखो (३) देवगति में २४-२०-२३-१६-१६ के भंग को भ	सारेभंग कोःनः १६ देखो	१ भंग क्रो०नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो		
१२ ज्ञाम की० नं० २९ देखो	को० नं० ६ देखो न (१) तियँच गति में	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	ह कुप्रवधि ज्ञान, मनः पर्यय	१ भंग	१ सन्
	di di	सारे भंग संस्कृति संग	स्राप सान १०५० ० म	(६)	सारे भंग को॰ नं० १ <b>द दे</b> खो	१ ज्ञान को०मं १९६ देखो
	e ~	नियार नाट ६५ दुखा सारे भंग को० नं० १६ देखो	गाउन ६ ५ दख १ ज्ञान को०नं० १६ देखो	का० न० १८ द्वा (२) देवगति मे २-३-३ के भंग को० न० १६ देखो	सारे मंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम को० नं० २६ देखो	काठ न० १६ ५ खा ७ ११) तियेच गति में १,०० के जंग	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो	भू संयमासंयम, सृक्ष्म सांपराय	१ भंग	१ संयम
	१-१-१ क मंग कोठनंठ १७ देखो (२) मनुष्य गति में १3-5-3-2-9-9-9	सारे भंग सोरु मंत्र १० केस्	१ संयम स्रोत्सः ७ - स्टारे	य २ घटाकर (४) (१) मनुष्य गति में १-२-१ के मंग े -	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ संयम को०नं १ द देख
	को० नं १ ९ ९ १ ९ १ ९ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ में	~ ~		काठनठ १द दखा (२) देवगति में १ का मंग	۵٠	~
	१ श्रसंयम जानना को० नं० १६ देखो			को० नं० १६ देखो		

गुक्ल होस्या में	n	देखो को०नं० १ द देखो देखो को०नं० १ ६ देखो १ अवस्था १ अवस्था १ अवस्था १ देखो १ सम्प्रमत्व
ग्रेबल	9	सारे भंग १ मंग १ मंग १ मंग १ भंग वो०नं० १६ देखो सारे भंग सारे भंग सो० नं० १६ देखो
	UΥ	% (१) मनुष्य गति में २-३-:-१ के भंग को० नं० १ द देखो (२) देवगति में २-३-३ के भंग को० नं० १ ६ देखो १ यपितवत् जानना २ दोनों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को०नं० ११६ देखो १०-१-२-१ के भंग को०नं० १ द-१ हे वंदो ११) सनुष्य गति में १-१-२-२-१ के भंग को० नं० १ ६ देखो ११) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १ ६ देखो
ଧ୍ର ୧	×	१ दर्शन को०नं० १७ देखो १ दर्शन १ दर्शन १ प्रवस्था १ प्रवस्था १६ देखो १६ देखो १ सम्पक्त्व को०नं० १७ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो
( ४६७ कोव्टक नं०	×	को० नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो सारे भग १ दर्शन को० नं० १८ देखो को०नं० १६ देखो १ भंग १ स्रवस्था को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो १ भंग १ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को० नं० १७ देखो को०नं० १८ देखो को० नं० १८ देखो को०नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो
चोतीस स्थान दर्शन	m	(१) तियंत्र गति में २-२ ३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-३-३१-२-३ के भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो १ जुम्ब लेक्या जानग १ १ के भंग को० नं० १७ देखो १ १-१-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो १ १-१-१-३ के भंग को० नं० १६ देखो १३) देवणति में १२-१-१-३ के भंग को० नं० १६ देखो
र्वातीस	8	त, नश्च दर्शन त, केवलदर्शन श शुक्त स्वर्धा व्याप्त प्रभव्य र, १६ देसी
	~	१४ वर्षान प्रविध् वर्षान, प्रे त्रिया १६ भव्यस्व १६ भव्यस्व भव्य भव्यस्व

<u> </u>
र ज्य
_

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं ॰ ७६	ଧ୍ର - ତ		गुक्ल	लेख्या में
~	m	>>	>	చ	<i>9</i>	u .
१८ संज्ञी संज्ञी	१ तीनों गतियों में हरेक में	<b>~</b> •	8	१ दोनों गतियों में हरेक में	~	~
१६ माहारक माहारक, मनाहारक	<ul> <li>१ संजी जानना</li> <li>को०नं० १७-१८-१६ देखो</li> <li>१</li> <li>१००० हे भंग</li> </ul>	१ को० नं० १७ देखो	१ को०मं० १७ देखो	१ संज्ञी जानना को० नं० १८–१६ देखो २ (१) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग	दोनों ग्रवस्था को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो
	र्र, भूभभ को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को नं० १८ हेखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ झवस्था कोऽनं०१ <b>द</b> देखो	को नं १८ देखो (२) देवगति में १.१ के भंग को० नं० १६ देखो	दोनों प्रवस्था को० नं० १६ देखो	.१. ग्रवस्था को०नं० १६ देखो
ः उपयोग	( ) देवगति में १ ग्राहारक जानना को० नं० १६ देखी	ग्राहारक ग्रवस्था को०ं० १६ देखो १ भंग	१ अवस्था को०नं० १६ देखो १ उपयोग	, 0	सारे भग	१ उनयोग
ोग ४ ोग ४ गनना	(१) तियंच गति में ५-६-६६-६ के भंग को० नं० १७ देखों (२) मनध्य गति में	को०नं० १७ देखो सारे भंग	को०नं० १७ देखो १ सम्योग	कुग्नवधि झान मनः पर्यय- ज्ञान घटाकर (१०) (१) मनुष्य गति में ४-६-६-२ के भंग	को०	को०नं० १ व देखो
	, ५, ५, ६, ६, ६, ६, ६, ६, ६, ६, ६, ६, ६, ६, ६,	को० नं० १	कोर्न् १ द देखो १ उपयोग कोर्न् १६ देखो	को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भग कोऽ नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १ ६ देखो
२१ ध्यान स्युपरत किया निवत्तिनी	को० नं० १६ देखो १ / (१) तियंच गति में	भंग १७ देखो		१२ गर्तेच्यान ४, रौद्रघ्यान् ४,	१ भंग	१ ध्यान
घटाकर (१५)	द-१०-११-द-१० के भंग			धमं त्यान ४, य (१२) (१) मनुष्य गति में ८-९-७-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान मो०नं० १ न देख

यों भ	चींतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ४६६ कोष्टक नं०	් ලෙස ව	• •	युक्तल हो	लेखा में
~	6	m	>	አ		໑	ឋ
		جار ،	र्मन १	१ व्याम को०नं० १ द देखो १ व्याम	को०नं० १८ देखो (२) देवगति में ८-१ के मंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो
२२ ज्ञान्तव क्षी० न	मन को० नं० ७१ देखो	~ . ~	कोठनं० १६ देखा कोठनं० १६ देखा सारे भंग १ भंग सपने स्थान के सपने स्थान सारे भंग जानना के सारे भंगों में से कोई १ भंग	को॰नं॰ १६ देखा १ मंग प्रपने अपने स्थान के सारे मंगों में से कोई १ भंग	४५ सारे भंग मनोयोग ४, बचनयोग ४, अपने अपने स्थान के अपने स्थान औ० काययोग १, सारे भंग जानना के सारे भंगों में वै० काययोग १, कोई १ भंग आ० काययोग १,	सारे भंग श्रपने श्रपने स्थान के सारे भंग जानना	१ मंग प्रयमे प्रपने स्थान के सारे मंगों में कोई १ मंग
		गं ४ घटाकर (४३) (१) तियाँच गति में ५१-४६-४२-३७-४०- ४५-४९ के भग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	नपु सक बंद १, ये १२ घटाकर (४५) (१) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-१२-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखी	१ भंग को०नं०१८ देखो
		(२) मनुष्य ति में ११-४६-४२-३७-२२-२०- २२-१६-> ५-१४-१ ३-१२- ११-१०-१०-६-४-३-५०- ४५-४१ के मंग को० नं० १५ देखो	सारे मंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १ म देखो	को० नं० १८ देखो (२) देवगति में ४३-३-२३३-४२-३७-३३- ३३ के भंग कोऽ नं० १९ देखो	सारे भंग को० न० १६ देखो	१ मंग को०नं० १६ देखो
-		(३) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०- ४० के भंग को० नं० १६ देखी	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो			

रया में	<b>u</b>	१ भंग		१ भंग क्रो०नं०१ द देखो		*		१ भंग को०नं० १६ देखो	
शुक्ल होश्या में	9	सारे भंग		सारे भंग को० नं० १८ देखो			:	सारे भंग को० नं० १६ देखो	
	US	४० उपशम चारित्र १,	कुश्रविध शान १, मनः पर्यय जान १, संयमासंयम १, तियंच गति १,	ानना ग	कार नर ६५ क १८- २६-३० के हरेक भंग में से १ ग्रुक्स लेख्या छोड़कर शेष ५ लेख्या घटाकर २४-२३-२५		∩r i⊷	जानना (२) देवगति में कल्पवासी देवों में २४-२२-२६ के मंग को० नं० १६ के २६-	२४-२८ के हरेक भग
30 OS	<b>ઝ</b> {	१ भंग क्रो०नं० १७ देखो		:	1	१ भंग को०नं० १८ देखो			
कोष्टक नं०	>>	सारे भंग को० नं० १७ देखो		•		सारे भंग क्रो० नं० १८ देखो	<u>.</u>	•	
चौतीस स्थान दर्शन	m	४७ ४० में मीम में	.२७ के भंग के ३१- के हरेक भंग स्या छोड़कर	र्यप ५ लक्या चंदाकर २६-२४-२५-२७ के भंग जानना २७-२५-२३-२४-२७		<u> </u>	स्राप्त १८ के ३१- २६-३०-३३ के हरेक भंग में से १ शुक्त लेश्या	ह्यांकर २६–२४–२४ व्यास्ता के मंग जानना २६–२४–२६ के मंग को० नं० १८ के ३०– ३१–२७–३१ के हरेक	ोत-पद्
चौतीस स	2	- ع ۶ م	٠ ١ ١	सराग संयम १, तियंच गति १, मनुष्य गति १, देवगति १, क्षायिक भाव ६,	कवाय ४, लिंग ३, शुक्ल लेश्या १, मिथ्या दर्शन १, भसंयम १, भजान १:	अतिकृत्य १, गर्यातम् भाव ३ ये ४७ भाव जानना	•		,

से के केंद्रवा घटाकर २६- २६-२१,-२६ के मंग जानता २६-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-	चोतोस	चोतीस स्थान दशन	कोष्टक नं० ७६	न् ७६	•	शुक्ल लेश्या में	श्या में
२ लेख्या घटाकर २६— २६—२५—२६ के भंग ३६—२१—२१—२१—११— २८—१४ के भंग को० नं० १६ के समान जानमा २५—२३—२४—२७ के भंग को० नं० १६ के हरेक भंग को० नं० १६ के हरेक भंग में से पीत-पद्म ये ए लेख्या पटा कर १५—२३—२४— २७ के भंग जानना सेवगति में केवगति पटाकर १५—२३— २४—२१—२१ के संग जानना २४—२१—२१ के संग जानना २४—२१—२१ के संगानना २४—२१—२१ के संगानना अन्तनना	~	er .	>-	* 	س	໑	វេ
२६-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-		ा घटाकर ४–२६ के			में से पीत-पद्म ये २ लेखा घटाकर २४-२२-		
को० नं० १ द के समान जानमा २५-२३-२४-२७ के मंग को० नं० १ द के २७- २५-२६-२६ के हरेक मंग में से पीत-पद्म ये २ लेक्या पटा कर २५-२३-२४- २७ के मंग जानना देवगति में को० नं० १६ के स्थेन १५-२१-२१-२१-२१- १५-२१-२१-२१-२१- १४-२१-२१-२१-११-१५ हेन्या पटाकर २५-२३- १४-२१-२१-२१-११ हेन्या पटाकर २५-२३- १४-२१-२१-११ हेन्या पटाकर २५-२३- १४-२१-२१-११ हेन्या पटाकर २५-२३- १४-२१-२१-११ हेन्या पटाकर १४-२३- १४-२१-२१-११ हेन्या पटाकर १४-२३- १४-२१-२१-११ हेन्या पटाकर १४-२३- १४-२१-२१-११ हेन्या पटाकर १४-२३- १४-२१-११ हेन्य समान		अन्ता २६-२६-२५-२५-२६- २४-२४-२३-२३- २८-१४ के मंग	<b>a</b>	•	र६ क मंग जानग। २३-२१-२६-२६ के मंग को० नं० १६ के समान	t t	
२५-२६-२६ के हरेक भंग में से पीत-पद्म ये २ लेक्या घटा हर २५-२३-२४- २७ के भंग जानना देवगति में कल्प्यासी देवों में कल्प्यासी देवों में को० नं० १६ के २७- २५-२६-२६ के हरेक भंग में में पीत-पद्म ये २ लेक्या पटाकर २५-२३- २४-२० के मंग जानना २४-२० के मंग जानना २४-२२-२३-२६-२५ के भंग	-	को० नं० १ द के समान जानना २५-२३-२४-२७ के मंग को० नं० १ द के २७-			जानना		
देवगति में  कल्पवासी देवों में  २५-२३-२४-२७ के भंग को० नं० १६ के २७- २५-२६-२६ के हर्रक भंग में में पीत-पद्म में २ तेय्या पटाकर २५-२३- २४-२९-१६-२५ के मंग जानना २<-२९-२३-२६-२५ के भंग		२४-२६-२६ के हरेक मंग में से पीत-पद्म पे २ लेक्या घटा हर २४-२३-२४- २७ के भंग जानना					
÷		देवगति में कत्पवासी देवों में २५–२३–२४–२७ के मंग को० नं० १६ के २७–	सारे भंग को० नं० १६ देखो			-	
<del>§</del> ✓ •		२४-२६-२६ के हरेक भंग में में पीत-पद्म में २ नेस्या पटाकर २५-२३- २४-२७ के मंग जानता २४-२२-२३-२६-२५ के भग		**		`	
		<del>€</del> •• ••					

- २४ प्रवगाहना—को० नं० १७–१८-१६ देखो ।
- बंध प्रकृतियां— १०४ को० नं० ७७ के १११ में से एकेन्द्रिय जाति १, तियंचद्रिक २, तियंचायु १, ग्रातप १, उद्योत १, स्थावर १ ये ७ 3
- घटाकर १०४ जानना ।
- उदय प्रकृतियां—१०६ को० नं० ७७ के १०८ में तीर्थंकर प्रकृति १ जोड़कर १०६ जानना।
  - सत्व प्रकृतियां---१४८ को० नं० १ से १३ ये यथायोग्य गुरा स्थान के भंग देखो । 200
    - द संख्या--श्रसंख्यात जानना ।
- भेत्र--लोक का श्रसंख्यातवां भाग, लोक के श्रसंख्यात भाग, सर्वलोक, को० नं० २६ देखो ।
- स्पर्शंन--भोक का श्रसंख्यातवां भाग, लोक के श्रसंख्यात भाग, सर्वेलोक, ६ राजु, को० नं० २६ देखो ।
- काल—नाना जीवों की घपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की घपेक्षा घन्तर्मु हूर्तं से साधिक ३३ सागर घमाए सर्वार्थसिद्धि विमान को श्रपेक्षा जानना
- **म्रन्तर—**नाना जीवों की म्रपेक्षा कोई मन्तर नहीं । एक जीव की म्रपेक्षा मन्तमुँ हुतै से मसंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक न हो सके। 3

गुमल लेखा

- ३३ जाति (योनि)—-२२ लाख योनि जानना । को० नं० ७६ देख
  - ३४ कुल-- दशा लाख कोटिकुल जानना । को० नं० ७६ देखो

m
<u>ಸ</u>

अलेश्या में	ફ-૭-ઘ				,	,						. ,	
अले											•		
	ጽ	. भंग भंग											
, ao	>>	% भंग											
( ४७४ ) कोष्टक नं०	fir"	१३ १३ का भंग–को० नं० १८ देखो	धनुष तक जानना ।		२६ देखो।	नं० २६ देखो।	खो।	ाग जानना ।	भाग जानना ।			ुष्य योनि जानना ।	ुष्य के जानना।
चोतीस स्थान दर्शन	~	१३ फ भाव ६, मनुष्य- १, श्रिसद्धत्व १, व १, जीवत्व १, १ भाव जानना	अवगाहना३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक ज	वंघ प्रकृतियां—-ग्रवंध जानना ।	उदय प्रकृतियां—१२-को० न० २६ देखो।	सत्त्व प्रकृतियां ५५१३ की० नं० २६ देखं	संख्या५६ नो० नं० १४ देखो।	क्षेत्रलोक का श्रसख्यातवां भाग जानना ।	स्पर्शन-लोक का श्रसंख्यातवां भाग जानना	फाल-सर्वकाल जानना ।	भ्रन्तर — कोई भ्रन्तर नहीं।	जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना	फुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना।
<b>ं</b> या	~	२३ भाव क्षापि मिति भव्यत् ये ५३	१०	አራ	<b>6</b>	න (Y	<b>5</b>	ઝ	er.	er er	er C	m iii	'n

~	
30 X	
_	

र्नोतीम स्थान दर्शन	ij.	न . कोव्ह	, ४७२, , कोष्टक नं <b>०</b>		*	भव्य में
नाता मामान्य ग्राताप	पयिप्त				अपयिष	
The sales	जीव की सा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	रक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
~	rr.	>	አ	US	9	ប
१ मुग्ग स्थान १४ १ से १४ तक के गुरा०	१४ (१) नरक गति में १ से ४ मोग भूगि में १ से ४ भोग भूगि में १ से ४ भोग भूगि में १ से ४ भोग भूगि में १ से ४ (३) देवगति में १ से ४	सारे गुरा॰ १ गुरा॰ अपने अपने स्थान के अपने अपने स्थान सारे गुरा स्थान के सारे गुरा॰ में जानना से कोई १ गुरा॰	<ul> <li>१ गुरा०</li> <li>के घारे गुरा० में</li> <li>से कोई १ गुरा०</li> <li>जानना</li> </ul>	भू १ नरक गति में १ ले ४थे गुए।० १ले ४थे गुए।० १ले ४थे गुए।० १०-२-४ १२ भोग भूमि में १०-२-४ ।-१३ भोग भूमि में १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १३ १०-२-४ १६ १०-२-४ १६ १०-२-४ १०-४ १०-४ १०-४ १०-२-४ १०-४ १०-२-४ १०-४ १०-२ १०-२ १०-२ १०-२ १०-२ १०-२ १०-२ १०-२	सारे गुरा स्थान सप्ने अपने स्थान सारे गुरा स्थान जानना	१ गुराः के ब्रपने ब्रपने स्थान के सारे गुराः में से कोई १ गुराः जानना
२ जीय समास १४ को० नं० १ देखो	S S		and the second of the second second and the second	(3) Signature (1) Signature (1	<u>'ls</u>	१ समास 10 नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो १ समास १ समास
	७-१-१ क भग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के के भंग को०नं० १८ देखो	को० न० १७ दला १ समास को० नं० १८ देखो	क्तांनिक १७ दश १ समास १ क्रोठमं० १८ देखो	को० नं० १७ देखो १(३)मनुष्य गति में ११-१ में भंग को० नं० १८ देखो	कारम् १७ दक्ष १ समास को० नं० १८ देखो	कार्वा १७ द्खा १ समास कोठनं० १८ देख

भव्य में	u —	१ समास को०नं० १९ देखो १ भंग को०नं० १६-१न १९ देखो	१ भंग को०नं० ३७ देखो	१ भंग को०नं०१६-१६ देखो १ भंग को०नं०१७देखो	१ मंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १ -१७- १६ देखो
,	ອ	8 समास को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १६-१ न- १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को नं०१६-१६ देखो १ भंग १ भंग को० नं०१७ देखो	8 भंग को० नं० १ द देखो को०नं० १ १ भंग १ भंग को० नं० १६-१७-को०नं० १ १६ देखो
	<b>ઝ</b> ł	(४) देवगति में १ संज्ञी पं. अपयिति को० नं० १६ देखो ३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति को० में हरेक में ३ का भंग	को०नं० १६-१६-१६ देखो (२) तियंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो अपने अपने स्थान की ६-४-४ पर्याप्ति भी होती	में मंग	भार नर १७ द्रश्वा (१) मनुष्य गति में ७-२-७ के मंग को० नं. १८ देखो ४ १) नरक-तियंच-देवगति में हरेक में ४ का भग
्र य )	<b>24</b>		१ भंग को०नं० १७ देखो	१ मंग को०न० १६- १६ देखो १ मंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को ०नं० १ द देखो १ भंग को ०नं० १६-१७- १६ देखो
( ४७६ कोष्टक नं०	>	W	१ भग को०नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १६- १६ देखो १ मंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो   को०नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६-१७ को०नं० १६-१७- १६ देखो
मा राज	ft.	(८) देवगति में १ संज्ञी पं॰ पर्याप्त जानना को॰ नं॰ १६ देखो को॰नं॰ १६ देखो १ मंग (१) नरक-मनुष्य-देवगति में को॰नं॰ १६-१-१ हरेक में	को० नं० १६-१८-१६ देखो (१) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	<ul> <li>१०</li> <li>१० का भंग</li> <li>को०नं० १६-१६ देखो</li> <li>(२) तियँच गति में</li> <li>१०-६-४-१०</li> <li>के भंग</li> </ul>	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०-४-१-१० के भंग को०नं• १८ देखो ४ (१) नरक-तियँच-देवगति में हरेक में
चौतीस स्थान दर्शन	~	तित कोट मं० १ देखो		प्रास् को० नं० १ देखो	र फो० नं० १ देखो
नौतं	~	३ पयिति कोट मं		४ प्रास् को	५ संज्ञा को०

भ टय में	n ———	त देखो प क देखो प क देखो प १६-१६- १६-१६-१	न १७ दन्ता काठ न ० १७ देनो १ मंग १ योग
	UY	हैं से मार्ग हैं। १० १ मिल	६-४-१ क भग को० नं १७ देखो ४ श्री० मिश्रकाय योग १, वं० ि ध्रान्त्य योग १, प्रा० मिश्रकाय योग १,
५७७ ) नम्बर् स्१	*	<ul> <li>१ भंग</li> <li>देखी</li> <li>१ गति</li> <li>१ जाति</li> <li>१ जाति</li> <li>१ जाति</li> <li>१ जाति</li> <li>१ काय</li> </ul>	क्ता <b>० न० १७</b> हेनो १ योग
( १७७ कोप्टक नम्बर	>	नोठ नं० १८ देखो १ गति १ जाति १६ देखो १६ देखो १६ देखो १ काय नोठ नं० १६-१८- १६ देखो १ काय नोठ नं० १६-१८- १६ देखो	कार न १७ दव १ भंग
दर्शन	m	को नं १६-१७-१६ देनो (१) मनुष्य गति में ४-२-१-१-०-४ के भंग को नं १= देनो वारों गति जानना १ पनेन्द्रिय जानि जानना को नं १६-१-१६ देनो ११-१-१ के भंग को नं १२ देनो ११-१-१ के भंग को नं १२ देनाति में ११ नरा-मनु ग-देनगति में १ पत्ताय जानना को नं १९ देना	१-१-१ म भग गो० नं १७ देनो ११ गो० मिथ मा गोग १, गं० मिथकाय गोग १
चातीस स्थान दर्शन	~	ते के १ स्ता प्रमा मोरु वं १ स्ता प्रमा प्रमा वं १ स्ता प्रमा वं १ स्ता वं वं १ स्ता वं	म हो० कं १५ देशो
य	~	में मंत्री में होता में में से में	<u>।</u> = 1 = 1

		ลห )	५७६ )			
चौतीस स्थान दर्शन	<u>با</u>	कोष्टक न	नं ० ५१	. 22 Manageri — Administra d'Alberton, d'Alberton, de Maria de Mar	- 1 Law Catterna Carteria de La Lacia de la Catteria de la Catteri	भव्य में
કે ક	m	>>	24	U3-	9	ս
१० वेद को० न० १ देखो	कामिश्यकाय योग १ ये ४ घटाकर (११) (१) नरक-देवगित में हरेक में ६ का भंग-के० नं० १६- १६ देखो (२) तियैच गति में ६-२-१-६ के भंग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-६-६ ५-३-०-६ के भंग- को० नं० १६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे मंग को नं० १८ देखो	नं	कार्मास्तकाय वोस्त १  ये ४ योग जानना (१) नरक-देवगति मे हरेक में १-२ के भंग को नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यच गति मे १-२-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति मे १-२-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६- १६ देखो १ योग को० नं० १७ देखो सो। नं० १६ सो। नं० १६ देखो को। नं० १६
	१ मपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो १२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-१-३-१-३-३-२-१-०-२ के भंग-को० नं० १८ देखो ४, देवगति में	१ भग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० मं० १६ देखो	೨ u w ~ ~ ~	नना हे भंग भंग	को० म को० मः को० म	hr ~ ~ ~
११ कपाय २५ को० नं० १ देखो	<u> </u>	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० न० १६ देखो	२४ (१) नरकगति में २३-१६ के भंग को० नं॰ १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को० नं० १६ देखो

भव्य में	n.	१ भंग १ आन
,	ອ	सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो भेठनं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो
	υ)* ^	(२ तिर्यंच गति में क्रिय्-२३-२५-२५-२३- २५-२४-२६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गित में २५-१६-११-०-२४-१६ को० के भंग को०नं० १८ देखो (४) देवगति में २५-२६-१६ को० के भग को० नं० १६ देवो का० नं० १६ देवो का० नं० १६ देवो
្ត ប 0	አ	१ भंग १ भंग १ भंग १ भं । १ ज्ञान १ ज्ञान
कोप्टक नं०	>>	सारे भंग सारे भंग नं० १= देखो नं० १६ देखो नं० १६ देखो नं० १७ देखो नं० १७ देखो सारे भंग नं० १६ देखो
दर्शन	er'	(२) तिग्व गति में २५-२३-२५-२१-२७- की० २४-२० के भंग को० नं० १७ देखी (३) गगुष्य गति में २४-२१-१७-१३-१-१ - को० ९४-२१-१७-१३-१-१ - को० ९४-२१-१७-१३-१-१ - को० १४-२१-१७-१३-१-१ - को० १४-२०-२३-११-१ - को० के भंग को० नं० १६ देखो हो हे के भंग को०नं १६ देखो हो हे के भंग को०नं १६ देखो १२) निर्मान गिनि में १२) निर्मान गिनि में १३) मनुष्य गनि में १३) मनुष्य गनि में १३) मनुष्य गनि में १३) देखो (३) सेन्याति में १३) देखो
वीतीस स्यान दर्शन	Ĉ,	मा कि उद्दर्भ म

भव्य में	r	१ लेक्या कोठनं० १७ देखो १ लेक्या कोठनं० १८ देखो १ लेक्या १ लेक्या १ लेक्या	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देख १ सम्यक्त्व १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व १ सम्यक्त्व
Andrewskie wie der Steine der Steine Geleie gestellt geleie Geleie Geleie geleie geleie geleie geleie geleie g	9	१ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो	सारे गंग को० नं० १६ देखो १ भंग सारे भंग को० नं० १९ देखो तो० नं० १९ देखो
	US*	(२) तियंच गति में ३-१ के मंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१-१ के मंग को० नं० १० दंखो (२) देवगति में ३-३-१-१ के मंग को० नं० १६ देखो	पू (१) नरक गति में १२) नरक गति में १-२ के मंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो (४) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १६ देखो
~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~	24	१ लेक्या को०नं० १७ देखो १ लेक्या को०नं० १८ देखो १ लेक्या को०नं० १६ देखो	१ सम्प्रकत्व को०नं० १६ देखो १ सम्प्रकत्व को०नं० १८ देखो को०नं० १८ देखो को०नं० १६ देखो
( ४न१ कोष्टक नं०	>>	१ भंग को० नं० १७ देखो । सारे भंग को० नं० १६ देखो । १ भंग को० नं० १६ देखो ।	सारे भंग १ भंग १ भंग को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो को० नं० १६ देखो
दर्शन	m.	(२) तिर्यंच गति में ३-६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखों (३) मनुष्य गति में ६-२-१-०-३ के भंग को नं० १० देखों (४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १६ देखों १	म १ - १ - १ - १ - १ - १ - १ - १ - १ - १
चातास त्यान दर्शन	6	hete 8	म्यात्त्व को०नं० १६ देवो
म् प्	3	telkelt 38	१६ सम्ययस्य क्षोक्ष्यं

_	
_	
ห	
<b>~</b>	
_	

. .

×

चौत	चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोरटक न	नं० द१			भव्य में
~	6	m	>>	⊃¢ 	U3°	ຶ້ ຄ	r.
१व संज्ञी संजी	र संजी असंजी	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में	१ को० नं० १६-१६ देखो	१   को० नं० १६-  १६ देखो	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में	१ को० नं० १६ १६ देखो	को मं ०१६- १६ देखो
		१ संज्ञी जानना को • नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-, के भंग को ० नं० ३० मेलो	१ भंग को मं०१७ देखो	१ प्रवस्था को० मं० १७ हेन्सो	ं संजी जानन। को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १० तेलो	<del></del>	१ अवस्था को० न० १७
		(३) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को नं० १८ देखो	~	~	(३) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० न० १८ हेखो	~	~ ~ ~
१६ जाहारक प्राहारक, जनाहारक	<u>۲</u>	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ ग्राहारक जानना	१ को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६- १६ देखो	्र (१) नरक-देवगति में हरेक में १-१ के अंग-कोल नं	ं अवस्था को नं० १६-१६ देखो	१ अवस्या को० न० १६- १६ देखो
		म. मं ज	१ को०नं १७ देखो	१ को० नं० १७ देखो		१ मनस्या को० नं० १७ रेखो	१ श्रवस्था को० नं० १७ देखो
२० उपयोग शानोपयोग	ıı Ç		सारेभंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ हेखो		भंग	मारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग	१ अवस्था को० नं० १८ देखो १ उपयोग
दर्शनोपयोग ४ ये १२ जानना		देखो -६-६ के मंग देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो	अव्ययां थान, मन: पर्यंय ज्ञान ये २ घटाकर (१०) (१) नरक गति में ४-६ के मंग—को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो

nr
सारे भंग सो० मं० १८ हेस्से
१ भग को० न० १६ देखो
सारे भंग
को० नं० १६-१६
दंखा
र भग को० नं० १७ देखो
सारे भंग
को० नं० १८ देखो
1,4

भेठत में	<b>ນ</b>	१ .सो० नं० १६ देखो	तों में सारे भंग १ भंग -४३-४४-को० नं० १७ देखों को० नं० १७ -३६-४३- T-को०	में सारे भंग १ भंग -२-१ <sup>.</sup> को० नं० १८ देखो को० नं० १८ भंग–	ता   सारे भंग १ भंग ३७.३३-को० नं० १६ देखो   को० नं० १६ 1० नं०   देखी	ले। रेभंग १ भंग न: टाकर	८ से ०
	US	याहारक काय ठ ये ११ घटाकर (१) नरक गति ४२-३२ के भंग	को० न० १६ देखां (२) तिर्घन गति में ३७-३८-३६-४०-४३-४४-को० न ३२-३३-३५-३८-३६-४३-	नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-१२-२-१ ४३-३=-३३ के भंग—	काठ न० १८ वृक्षा (४) देवगाति में ४३-३८-३३-४२-३७.३३- ३३ के भंग-कोठ नंठ १६ देखो	४० कुश्रवधि ज्ञान, पर्यय ज्ञान ये २ (४०) जानना	((() 1 ((4) 1 (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4)
्रुप <sup>ु</sup> / नंo द?	አ	को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को नं १८ देखो	१ भंग को०नं०१६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	:
कोव्टक न	>>	को० नं० १६ देखो	सारेभंग को० नं० १७ देखो	सारेभंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखा	सारेभंग को० नं० १६ देखो	2
वर्शन	m	कार्माएकाय योग १ ये ४ घटाकर (५३) (१) नरक गति में ४६-४४-४० के भंग	को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३६-४०-४३-४१- ४६-४२-३७-५०-४४-४१ के भंग-को० नं० १७	वेसो (३) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-३७ २२-२०- २२-१६-१५-१४-१३-१२-	११-१०-१०-६ ५-३-०-५०- ४४-४१ के भंग-को० नं० १= देखो (४) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०-	देखो १२ १२ (१) नरक गति में २५ का भंग-को० नं० १६ के २६ के भंग में से	१ अ मण्य घटाकर २५ का भंग जानना २४-२५-२६-२७ के भंग को० नं० १६ के समान जानना
चौतीस स्थान दर्शन	or					प्र	
चींन	~					२३ भाव जभव्य घटाकर	

~ ~
ับ
34
_

भन्य में	្រ	2	१ भंग क्रो०नं० १७ देखो	•	•						***************************************		***		• •	* Hill	क्षितिक रुप दुखा		-						:
	໑	2	   सारे भंग  को० नं० १७ देखो	•						·	•		<b>:</b>	:		<b>.</b>	का० न० १८ द्वा				2	·····	ne ne	:	:
	US	२७ का भंग	1-	को० नं० १७ के २४-	२५-२७-२७ के हरेक भंग में ने २ ग्रभव्य घटा-	कर २३-२४-२६-२६	के भंग जानना	२५-२३-२४-११ के भग	कोठ नं १७ क समान	२३ का भंग को० नं०	१७ के २४ के भंग में से	१ अभव्य वटाकर २३	का मंग जानना	२२-२४ के भंग	कों नं ०१७ के समान	(३) मनुत्य गति में	ر ا ا	कार्वा १० १० के १०	क मन म म ८ अमध्य	1	२८-३०-२७-१४ भि भूग	कोठ नंठ १ न के समान	जानना	भोग सुगि में	२३ का मंग को नि
४व४ । मन्द्र	አ	१ भंग	मान्त्र १७ दत्ता			5.		-					१ मंग	को ०नं० १८ देखो		;						•			
) कोप्टक	>>	सारे भंग	कां० न० १७ दबा			**	and the property of				ñ		生	ते० नं० १८ देखो		,						=			
दरोंन	ar-		-30 年 4年 3 帝 22-	गंग में से १ समस्य	वटाकर २३-२४-२६-	22-30-32-28 के भंग	को० नं० १७ के समान	जानना .	उद् का भग को० न० १७	क रेंछ के भूग में से अभव्य	२५-२६-२६ के भंग	को वन १७ के समान	(३) मनुत्य गति मं		के ३१ के गंग में से प्रभव्य	पटाकर ३० का भंग जानना	78-30-33-30-38-	30-36-36-34-	ーをとースとーなとーのと	きょうシージーンとったっ	म मह्म है है है है है है है	अस्तिया अस्य स्रोठ संठ १ ज्	学 200 部 公田 中の	प्रभव्य घटाकर २६ का	In the second
चीतीस स्थान दर्शन	8			and the second s	or the second			,	<i>~</i>	per let - p 's den	with *	• • •				<del>-</del>					- was also and a second				gates**

नन प्रकृतियां - 2२० को० नं०१ से १४ देखो यनमाहता—को० नं० १६ से ३४ देखों। उत्त प्रकृतियां—१२२

संस्था—प्रमन्तान्त्य जानना धेत्र--त्रयंलोक जानमा । भर्त प्रज्ञतियो— १४८

स्पर्मत-सर्वेतोक जानमा

काल -- सर्वेकाल जानना । यन्तर—कीई प्रन्तर नहीं ।

जाति (मोनि)— ८४ नाल् योनि जानना

मुल-१६६॥ नात कोटिकुन जानमा।

नोंतीस स्थान दर्शन	न दर्शन	( १८५ कोष्टक नं	( c d o		31.5 1.0 1.0 1.0 1.0 1.0 1.0 1.0 1.0 1.0 1.0	ग्रभन्य में
क्ष०   स्थान सामान्य ग्रालाप	लाप पर्याप्त			श्रपयप्ति		
	नाना जीवों को ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
2	w.	>>	<b>5</b> 4	03"	9	ľ
१ गुरा स्थान	१ चारों गतियों में हरेक में 9 मिल्साटन समा जाना	~	~	१ पर्याप्तवत् जानना	~	~
२ जीव-समास १४ को० नं० १ देखो	€	१ समास को० नं० १६-१ <sup>द</sup> - १६ देखो	१ समास को० नं० १६- १घ-१६ देखो		१ समास को० नं० १६-१ <i>८-</i> १६-देखो	१ समास कोट नं० १६- १८-१६ देखो
	जीव समास जानना को० नं० १६ द-१६ देखो		i i	श्रपयोप जीव समास जानना कोऽ नं० १६-१८-१६		
	(४) तिथव गीत भ ७ जीव समास पर्यात्त प्रवस्था जानना	१समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो	तियंच गति में व समास अपर्याप्त	१ समास को० नं० १७ देखो	े समास को० न० १७
	को० न० १७ देखो भोगभूमि में–१ संज्ञी प० पर्याप्त जानना	:	2	ग्रवस्था जानना को० नं० १७ देखो मोगभूमि में	£	देखों ,,

त १ मंग को० नं० १:-१ट-| १६ देखो

कोे नं ९७ देखो भोगभूमि में १ संज्ञी पं० श्रपयप्ति

जानना

१ भंग को० नं० १६-१८- | को० नं० १६-दंखो | १८-१६ देखो

(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग-को० न० १६-

को० नं० १७-१८ देखो

_
SIS.
24
<u> </u>

अभव्य में	r	१ भंग को०नंः १७ देखो	१ मंग मोठनं० १६-१८ १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं०१६-१६ देखो	१ भंग क्षो०नं० १७–१८ देखो	१ गति १ जाति गो०नं० १६-१६-
· А.	9	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१ <b>न-</b> १६ देखो	१ भंग कोठनं० १७ देखो ।	१ भंग को॰मं०१६–१६ देखो	१ भंग को० नं० १७—१ द देखो	१ मति १ जाति को० नं० १६-१५- १६ देखो
	USr	तियंच गति में के मंग नं० १७ देखो हप ६-५-४ भी होती		को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-१-४-३-७ के मंग को० नं० १७ देखो	४ (१ नरक-डेवगति हरेक में ४ का भंग	का० न० १६-१६ दखा (२) तिर्यच-मनुष्य गति में हरेक में ४-४ के भंग को० नं. १७-१० देखो	४ अमना ५ -तिर्यंच-देवगति म म य जाति जानता
ું પ્ર	<b>x</b>	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग कोठनं० १६-१६- देखो	१ भंग को०नं० १७- १८ देखो	१ गति १ जाति को०नं० १६-१८- १६ देशो
, ४५६ कोण्टक नं	>	सारे मंग को० नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १६–१न १६ देखो	. १ मंग को० नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १६-१६- <sup>व</sup> देखो	१ भंग को०नं० १७-१ व देखो	१ गति १ जाति को० नं० १६-१५- १६ देखो
दर्शन	m	(२) तियंत्र गति में ६४-६ के भंग कोठनं० १७ देखो	本	को० नं० १६-१८-१६ देखो (२) तियंच गति में १०-६-६-७-६-४-१० के भंग	को० नं० १७ देखो ४ (१) नरक-देवगति मं हरेत मं ४ का भंग	कोठनं० १६-१६ देखो (२) तिर्यन-मनुष्य गति में हरेता में ४-४ के मंग कोठ नं० १७- <i>०</i> हेलो	४ नारो गित जानमा ४ ११) नरफ-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंगेन्द्रिय जाति
चींतीस स्थान दर्शन	~		म्म को० नं० १ देखो		गा कोठ नं० १ देखो		६ गति कोठ कंठ १ देखो ७ इस्प्रिय जाति - १ कोठ कं. १ देखो
बाँत			४ प्रास् क्षो० नं		४ संगा कोठ न		त्रीत व्यक्तिक व्यक्ति

१ काय नं० १७ देखो १ भंग १ भंग १ भंग नं० १७ देखो नं० १० देखो
को
देखां (२) तिर्यंच गति में ६-१ के मंग-को० नं० १७ देखां वे० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय थोग १, हे कार्मान १, हे कार्मान-को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में
<ul> <li>१ काय</li> <li>को० नं० १७</li> <li>१ योग</li> <li>३ योग</li> <li>३ योग</li> <li>१ योग</li> <li>३ योग</li> <li>१ योग&lt;</li></ul>
१ काय मो० नं० १७ देखो १ मंग को० नं० १६-१६ देखो १ मंग को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो
(२) तिर्यंच गति में ६-१ के मंग-को० नं॰ १७ देखी १० योग १, वे॰ मिश्रकाय योग १, कार्माशाकाय योग १, पे ३ घटाकर (१०) ११) तरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग-को० नं॰ १६- १६ देखी (२) तिर्यंच गति में द-२-१-६ के भंग को० नं॰ १७ देखो द-६ के भंग को० नं॰ १७ देखो
ह योग ब्रा० मिथकाय योग १ ब्रा० काय योग १, ये २ वटाकर (१३)

10 केर हैं हैं केर की कार केर केर केर कार की कार केर हैं केर की कार केर केर केर कार की कार केर केर केर कार कार की कार केर केर की कार केर केर की कार कार की कार केर की	र्वातीस	चौतीस स्थान दर्शन	( ५६१ कोष्टक नं	हर । नं० दर्	•	<u>최</u>	अभव्य में
है सुर्वा (१) मरक्ताति में कोठ नं ९ ६ देखी कोठनं ९ ६ देखी (१) मरक गति में कोठनं ० १६ देखी कोठ	2	er.	>>	<b>3</b> 4	US <sup>o</sup>	၅	ប
श्री संक्र होता   (१) सरक्रमाति में की क क १६ देखी को का क १६ देखी का	er 250 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	m	8		m	۰	
(२) तियं माति में क्षाना १ मार्ग १ वेच्च (२) तियं माति में १ मार्ग १ वेच्च (३) तियं माति में १ मंग १ वेच्च (३) तियं माति में कोठनंठ १६ देखी	ने भं १		१६ देखो	कोठनं० १६ देखो	(१) नरक गति में	को०नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो
(१) तिर्वेच परि द्र्सी तोजनंद १७ देखी कोजनंद १० देखी काजनंद १० देखी कोजनंद १० देखी काजनंद १० दे		१ नगुंसक वेद जानना			१ मपुंसक वेद जानमा स्रोत्स्त १६ सेस्से		
\$\frac{2}{2} - \frac{2}{2} -		(२) तियंच गति में	० भग		काउन ८ ६ ५ ६ ५ । (२) तिर्यंच मित में		200
(३) मनुष्य गति में सारे संग १ वेद (३) मनुष्य गति में सारे संग को० नं० १७ देखी को०नं० १८ देखी को०नं० १९ देखी को०नं० १९ देखी को०नं० १८ देखी को०नं० १८ देखी को०नं० १८ देखी को०नं० १८ देखी को०नं० १९ देखी का०नं० १९ देखी को०नं० १९ देखी को०नं० १९ देखी का०नं० १९ देखी का				देखो	३-१-२ के मंग	नं० १७	ඉ
(३) मनुष्य गति में सारे भंग तोठ नं. १ = देखी कोठनं० १ = देखी		को० नं० १७ देखो			को० नं० १७ देखो		
हैं - २ के भंग की o नं. १ ट इंसी की o नं ० १ द हंसी की o नं ० १ द हंस		(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ वेद	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ वेद
(१) देवगति में सारे भंग १ वेद (४) देवगति में सोरे भंग १ वेद (४) देवगति में सोरे भंग १ वेद १८ देखी को०नं० १६ देखी के०नं० १६ दे		५-२ के मंग	नं. १८ देखो	को०नं० १८ देखो	३-२ के भंग	नं० १५	को०नं० १८ देखो
2.५ के भंग कोठ नं ० १६ देखो कोठन ० १६ देखो २-१ के भंग कोठ नं ० १६ देखो कोठन ० १८ देखो कोठन ० १९ देखो कोठन ० १८ देखो कोठन ० १८ देखो कोठन ० १८ देखो कोठन ० १९		कांग्नं १५ देखा			कोठनं० १ द देखी	•	······································
२.१ क भग को० नं० १६ देखो को० नं० १७ देखो को० नं० १० देखो को० नं० १६ देखो को० नं० हेथा के० नं० नं० नं० नं० नं० नं० नं० नं० नं० नं		(१) दवगोत म	सारे भंग	१ वेद	(४) देवगति में	सारे भंग	~ वीदा
२५ १ देवा काजन १६ देवा काजन १६ देवा काजन १६ देवा काजन ११ संग १ संग १ संग १ संग १ संग १२ संग १२ संग संग हो काजन १६ देवा काजन १८ १२ २२ २२ १५ २४ १ संग १ संग १८ १८ १८ देवा काजन १९ देवा काजन		२-१ के भग	नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो	२-१ के भंग	नं० १६	को०नं० १६ देखो
२५		मार्गत १६ देखो			को० नं० १६ देखो		~~
(१) नरक गति में को० नं० १६ देखो को०नं० १६ देखो (१) नरक गति में को० नं० १६ देखो को०नं० १० देखो कानेव कानेव हिम्मे सारेव को को०नं० १० देखो को०नं० १० देखो केविमें को०नं० १० देखो को०नं० १० देखो को०नं० १० देखो को०नं० १० देखो केविमें को०नं० १० देखो को०नं० १० देखो केविमें को०नं० १० देखो को०नं० १० देखो केविमें केविम		አ አ	쿠.	१ भंग	ን አ አ	机	१ भंग
(१) तिर्गंच गित में सारे मंग १ भंग	~	(१) नरक गति में	<b>~</b>	को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में	40	को०नं० १६ देखो
(१) तिर्मेन गित में सारे मंग १ भंग (२) तिर्मेन गित में सारे मंग १ भंग (२) तिर्मेन गित में सारे मंग १ भंग १८ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १० देखो का०नं० १० देखो के०नं० १० दे		२३ का भग			२३ का भंग		
(१) विस्त गति में सारे मंग १ भंग १ भंग १ भंग १० देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १० देखो का०		कार नर १६ दता			कोठ नं० १६ देखो		
२५-२३-२४-२४ के मंग को० नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो को०नं० १० देखो के।०नं० १० देखो के।०			सारे भंग	१ भंग	(२) तियंच गति में	सारे	१ भंग
(३) मनुष्य गति में सारे भंग १ भंग (३) मनुष्य गति में सारे भंग १ भंग १ भंग १ भंग १४-२४ के भंग को०नं० १८ देखी को०नं० १९ देखी को०नं० १९ देखी को०नं० १९ देखी को०नं० १९ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग को० नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग को० नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग को०नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग को०नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग को०नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग को०नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग को०नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी केने के भंग काठी के भंग	•	२५-२३-२५-२४ के भंग	किं नं १७ देखो	कोठनं० १७ देखो		٠ ٦	कों०नं० १७ देखो
(३) महुत्य गति में सारे मंग १ मंग १३) महुत्य गति में सारे मंग १ भंग १८-२४ के भंग को०नं० १८ देखी को०नं० १६ देखी का०नं० १६ देखी		क्रिं वि में			को० नं० १७ देखो		
१४-२४ के भग कोठनं० १८ देखो कोठनं० १६ देखो कोठनं० १८ देखो कोठनं० १			मारे मंग	१ मंग	(३) मनुष्य गति में	出	
कोठ नंठ १५ देखों सिर स्था १ भंग (४) देखमित में सारे भंग १ भंग (४) देखमित में सारे भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग कोठ नंठ १६ देखों कोठनंठ १६ देखों केठे १६ देखो		२४-२४ के जम	कोठनं० १८ देखो	को ०नं ० १८ देखी	२५-२४ के भंग	નું.	
(४) दवगात में सारे भंग १ भंग १ पेंग १ भंग १ १६ देवो कोठनंठ १६ देवो काठनंठ		क्षांत्र १ द्रांस			को० नं० १५ देखो		
रंथ-२३ फ भंग मो० नं० १६ देखो कोठनं० १६ देखो प्रें भंग को० नं० १६ देखो कोठनं० १६ देखो कुन्नम २ सारे भंग १ जान ३ का भंग को० नं० १६ देखो कोठनं० १६ देखो कुन्नम बटाकर (१)		(४) स्वयात म	सारे भंग		(४) देवगति मं		१ भंग
है की प्रमा कोठ नं १६ देवी कुड़ान (१) नरक गित में कोठ नं ० १६ देवी कोठनं ० १६ देवी कुम्रयिम ज्ञान घटाकर ३ का मंग १९ जान		1,500 ft set	मिं मं १६ देखो		४-२४-२३ के भंग	નું.	कोन्नं ० १६
ुक्रजान (१) नरक गति में को० नं० १६ देखों को०नं० १६ देखो कुप्रविध ज्ञान बदाकर वारे भंग दे का भंग (१)		क्षां ने १६ दत्ती			को० नं० १६ देखो		annething via
रित में भीत में कोठ नेठ १६ देवी कोठनठ १६ देवा कुन्नयोय ज्ञान बटात ३ का में भे			सारे मंग	्र मग	· (	सारे भंग	१ जान
	<u> </u>	~~	को० न० १६ देख	क्तिंग्नि० १६ दत्ती	कुम्बांच जान वटाकर		
		THE CO.	***************************************	,	(3)		
			~ .		•	,	

63
ਤੌਂ _

	चौतीस	चौतीस स्थान दशन	कोष्टक नं०	น		ऋं	त्रभन्य में
~	~	m	>>	አ	U3°	<u>9</u>	n
		को०नं , १६ देखो			(१) नरक गति में	सारे भंग	१ ज्ञान
		(२) तियंच गति में	१ भंग	१ ज्ञान	२ का भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
		२-३-३ के भंग	को०नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो	को० नं० १६ देखो		
		को० नं० १७ देखो	•		(੨) ਰਿਬੰਚ गति में	भंग ,	ं शान
		(३) मनुष्य गांत म	सार भग	१ ज्ञान	२-२ के भूग	को०नं० १७ देखो	क्रो०न० १७ दला
		खे		<u></u>	काठ नठ १७ दल। (३) मनध्य गनि में	साने भंग	० जान
		(४) देवगति में	सारे भंग	१ शान	(*) '3의 '111 '1	१ न देखो	को ०नं ० १ द देखो
			को० नं० १६ देखो	देखो	को० नं० १८ देखो	•	
		को० नं० १६ देखो			(४) देवगति में		१ जान
					२-२ के भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
	,				को० नं० १६ देखो	,	
१२ सयम	<i>~</i> .	~ (	~			~	
	अस्यम	चारों गतियों में हरेक में	को० नं० १६ से	कों अं १६ से	चारों गतियों में हरेक में	क्तोठनं० १६ से १६	, से १६ को० नं० १६ से
		_			१ असंयम जानना	देखो	१६ देखो
	ı	क्रां० नं	•		को०नं० १३ से १६ देखो	ė	•
१४ दशन	r •		० भूत		r	१ भंग	१ दर्शन
अचक्षु दशन,	चक्षु दश्न	। (१) नरक गति में	को०नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में	को० न० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
य २ जानना		२ का भग			२ का भग	,	
		काठन ०१६ देखा			को० नं० १६ देखो		•
			सार भग	6	(२) तियंच गति में	० मंग	१ वशन
			का०न० १७ द्वा '	का०न० १७ दखा	१-२-२ के भंग	को नं० १७ देखो	को०न० १७ देखो
		किंद्र के प्राप्त (ह)	1		কাতে নত <b>ং</b> ও ব্ৰা	,	c
		(4) Hast till H		1	(३) मनुष्य गति मे	सारे भंग	
		को० मं० १ सम्म	بر د د	काठन० १८ दखा	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	कों नं १८ देखों	क्रां०न० १८ दखा
		(४) देवगति में	सारे मंग	१ दर्शन	का० न० र्ष द्वा (४) हेवसनि में	2 ينت	१ दर्शन
		२ का भंग	को० नं० १६ देखो	देखो	२-२ के भंग	१९ देखो	को०नं० १६ देखो
		को० नं० १६ देखो			को०नं० १६ देखो		
				_			

श्रभव्य में	r S	१ भंग १ लेक्या को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो १ भंग १ लेक्या को० नं० १७ देखो को० नं० १७	सारे भंग की० नं० १	~ ~	१ गो०मं ६-१८- को०मं०१६- १६ देखो १८-१६ देगो	१ मंग १ प्रवस्था को नं०१७ देखों को० नं०१७ देखों
	uy	ह (३) मनुष्य गति में ३ का भंग-को० नं० १६ देखो (२) निर्यंच गति में ३-१ के भंग-को० न०	(३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग-को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३-१ के भंग को० नं १६ देखो	१ पर्याप्तवत् जानना १ पर्याप्तवत् जानना	२¹ (१) नरक-ममुष्य-रेवगति होरेक में १ संजी जानना को० मं० १६-१६-१६	दल। (२) तियेच गति में १-१-१ के मंग को० नं० १७ देखो
त्त्र । तत्व दर्	*	१ लेख्या को० नं० १६ देखो १ लेख्या को० नं० १७ देखो	<b>१</b> लेख्या को० नं० १ द देखो १ लेख्या को० नं० १ ६	~ ~	र को० नं० १६- १न-१६ देखो	१ अवस्या को० नं० १७ देखो
कोप्टक	>>	१ भंग की० नं० १६ देखी / भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	~ ~	१ को० नं० १६- १८-१६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
दर्शन	nr	हैं (१) नरक गति में 3 का मंग-को० नं० १६ देखों (२) तिर्यंत्र गति में ३-६ ३ के मंग को० नं० १७ देखों	(३) ममुष्य गात म ६-३ के भंग-को० न० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१ के भंग नो० न० १६ देखो	१ वारों गतियों में हरेक में १ ग्रमच्य जानना १ नगरों गतियों में हरेक में १ मिध्यात्य जानना को० नं० १६ में १६ देनो	(३) तरक-मनुष्य-देवति में प्रदेश में १ मंत्री जामना को० ने० १६-१६-१६	(२) निर्णय यति मे १-१-१ कि संग-कोठ नंठ १७ देलो
चातोस स्यान दर्शन	6.	१५ नेटमा क्यो० नंठ १ देयो		य सभस्य स्टा स्टि	रूत सरित सर्वा, यम्ही	

श्रमन्य मे	ıs	्रम स्र	प इपयोग इस्त्रेश हे हेस्स्	- - 5	देखो को	भंग १ उपयोग १८ देखो की०नं० १८ देखो	भंग १ उपग्रोग १६ देखो को०नं० १६ देखो	म से १६ को०नं० ६ से १६ देखो	भंग
t, north and and	໑	<u>भ</u>	१ भंग भंग		र् भग को० नं० १७	सारे भंग को० नं० १८	सारे भंग को० नं० १९	सारे भंग को०नं० १६ से देखो	सारे भंग
	w	२ चारों गतियों में हरेक में १-१ के मंग जानना को० नं० १६ से १६ देखो	४ कुमवधि ज्ञान घघटाकर (४)		(४) ातथच गात म ३-४-४-४ के भंग को० न० १७ देखो			का० न० १६ दल। द (१) चारों गतियों में हरेक में = का भंग जानना	को <b>ं</b> नं १६ से १९ देखी ४५ मनोयोग ४, बचनयोग ४ श्रौ॰ काययोग १, वै॰ काययोग १, ये १० घटाकर (४५)
् वर्	አ	१ को०नं० १६ से १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १ च देखो	१ उपयोग	काठन <b>० ५</b> ८ दिख	१ स्यान को०नं० १६ से १६ देखो	् भंग
( ४६४ कोष्टक नं०	≫	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	~ .ti	o F	सारे भंग को० नं० १६ से १६ देखो	सारे भंग
र्शन	ſſY	१ चारों गतियों में हरेक में १ ग्राहारक जानना को० नं० १६ से १६ देखो	्र (१) नरक गति में ५ का भग	कार्र पर देव। (२) तियंच गति में ३-४-४-५ के भंग -> - १००० नेस्	काठ न० रुष दखा (३) मनुष्य गति मे १-५ के भंग	को नं० १ द देखो (४) देवगति में एस भंग	र का मग को० नं० १६ देखो	न चारों गतियों में हरेक में न का भंग जानना को० नं० १६ से १९ देखो	५५ भ्रो• मिश्रकाययोग १, वै• मिश्रकाययोग १, कार्माया काययोग १
चौतोस स्थान दर्शन	~	१६ ग्राहारक ग्राहारक, ग्रनाहारक	24 24	ਹਿਰ ਰ ਰ ਰ ਰ ਰ		-		२१ ध्यान को०नं० १ देखो	२२ प्रास्तव ४५ श्रा० मिश्रकाययोग १, ग्राहारक काययोग १ ये २ घटाकर (५५)

म्रभव्व में	៤	कों मंग १६ ५ मंग १६ ५ मंग १६ ५ मंग १६ ६५ मंग १६ १६ हेन्द्रों नं १७ १६ हेन्द्रों नं १७ १६ हेन्द्रें
<b>数</b>	9	सारे भंग सारे भंग सारे भंग को, नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो नो० नं० १६ देखो
	w	(१) नरक गति में ४२ का भंग-को० नं० व १६ देखो (२) तियंच गति में ३७-३८-४०-४३- व ४४-४३ के भंग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-५३ के भंग को० नं० १६ देखो ४३-४५ के भंग को० नं० १६ देखो ११) नरक गति में १३० वर्ष को भंग में से १३० का भंग-को० नं० १६ के २५ के भंग में से १३० का भंग-को० नं० १६ के २५ के भंग में से १३० का भंग-को० नं० १६ के २५ के भंग में से १३० का भंग-को० नं० १६ के २५ के भंग में से १३० का भंग-को० नं० १६ के २५ के भंग में से १३० का भंग-को० नं० १६ के २५ के भंग में से १३०-१८-१८ के संग-को० नं० १७ के २१-२४-१८-१८ के सरक भंग में से १ भव्य घटाकर २३-२४-१६-
रहरू नं० दर्	<b>ಶ</b> ೇ	्र भंग देखों नं १९ १ भंग १ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १
् रहर कोष्टक नं	>>	सारे मंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो
दर्शन	m	(१) नरक गति में ४६ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यन गति में ३६-३८-४८-४३-४९- ४० के भंग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४०-४६ के भंग को० नं० १६ देखो ४०-४६ के भंग को० नं० १६ देखो ११ नरक गति में ३३ स्था भंग-को० नं० १६ के २६ के भंग में में ११ नरक गति में २३-२४-२६-३०-२६ के भंग ज नता (२) तिर्यम् गति में २३-२४-२६-३०-२६ के भंग ज नता (२) तिर्यम् गति में २३-२४-२६-३०-२६ के भंग-को० नं० १७ के दरिक भंग में ने १ भव्य पटाकर २३-२४-२६-३०- १६ के भंग जाताना (२) मनुष्य गति में
चीतीस स्यान दर्शन	G.	१ के ३४ मे १ भन्य ३३) जानना
मूर	~	२३ भाग को० नं० भागों में पदाहर

~							
	8	u.	>>	<b>ಎ</b>	To the state of th	9	น
		में में १ भव्य घटाकर इ०-१६ के भंग जानना (४) देवगति में २४-१६-२३ के भंग-को० नं० १६ के २५-२७-२४ हरेक भंग में से १ भव्य घटाकर २४-२६-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(३) मनुष्य गति में २६-२३- के भंग-को० नं० १८ के ३०-२४ के भंग में से १ भव्य घटा- कर २६-२३ के भंग जातना (४) देवगति में २४-२४-२२ के भंग- को० नं० १९ के २४- २६-२३ के भंग में से १ भव्य घटाकर २४-	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग देखो नं० १८ १ भंग को० नं० १६
र४ प्रवि २५ वेष ६ २६ लव्स	गहिना— की प्रकृतियां — । प्रकृतियां —	श्रवगाहना— को० नं० १६ से ३४ देखी। वंय प्रकृतियां—११७ वंधयोग्य १२० में आहारकद्विक २. तीर्थंकर प्र० १ से ३ घटाकर ११७ प्रकृति जानना नदम प्रकृतियां—११७ उदययोग्य १२२ में से आहारकद्विन २, तीर्थंकर प्र० १, सम्यग्सिय्यात्व १, सम्यक्त्व जानना।	हिरकदिक २. तीर्थंकर प्र० से ग्राहारकदिक २, तीर्थंक	१ से ३ घटाकर र प्र०१, सम्यपि	तिथंकर प्र०१ से ३ वटाकर ११७ प्रकृति जानना। २, तीर्थंकर प्र०१, सम्पर्गिय्यात्व १, सम्यक्तव प्रकृति १ ये ५ घटाकर ११७ प्र०	१ वे ५ घटाकर ११	о д э

सन्व प्रजृतियां—१४१ माहारद्विक २, तीर्थकर प्र०१, माहारक वंधन १, माहारक संवात १, सम्यग्मिध्यात्व १, सम्यक्त प्रकृति १ ये ७ घटाकर १४१ प्र॰ जानना।

सख्या—श्रनन्त जानना। S II

स्पर्शन—सर्वलोक जानना। क्षेत्र—सर्वलोक जानना । 30

फाल-सर्वकाल जानना। ~ ₩

जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना क्रन्तर—कोई अन्तर नहीं।

कुल--१६६॥ लाख कोटिकुल जानना

चींतीस स्यान दर्शन	ब्र <u>स्</u> स्रा	( ४६७ ) कोष्टक नं० दर्		भन्य अभन्य रहित में (सिद्ध गति में)	सिद्ध गति में)
फ़॰ (स्थान सामान्य	17	पयिति			अपयिति
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	नाना जावों की ग्रपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की श्रपेक्षा एक समय में	
2		ff*	>>	*	رو <u>ن</u>
१ गुरा स्थान	•	ग्रतीत गुरा स्थान	0	0	
		,, जीव समास	0	0	सूचना-
	0	" पर्याप्ति	0	•	अपयाम नहीं होती ।
४ प्रास्त	•	" प्रास्	0	0	,
४ मंत्रा	•		0	•	
	0	गति रहित (सिद्ध गति)	o	0	
७ इस्ट्रिय जाति	0	मतीत इन्द्रिय	0	•	
= काय	0	प्रकाय	•	•	
ह मोंग	0	ग्रयोग	0	0	·
१० वेर	0	प्रपगत बेद	0	•	· · · · ·
११ नापाय	· c	अन्तवाय	•	0	
२ जान	~	१ केवल जान	~	~	
१३ संयम	,	यनंगम-संयमासंयम-संयम ३ से रहित	0	o	<del></del>
	~	. १ क्वित दर्शन	•	0	
१५ नेह्या	•	प्रलेखा	0	6	
	0	अनुभव (न भव्य न सभव्य)	•	•	
	~	१ शामिक सम्पन्दव	0	0	
१ द संशो	•	अनुभय (न संजी न अनाहा≥क)	0	٥	
१ ह प्राहारम	 0	अनुभय (म आहारक न अभव्य)	o	٥	****
२० उपयोग	or.	२ जानोपयोग-दशनोपयोग (दोनों युगपत्)	0	0	· · · · · ·
३१ च्यान	0	<b>ट्या</b> न	•	0	·
२२ मात्तव	ç	अासनं रिह्त	0	0	
र्भ भाव	<b>&gt;</b> (	17	0	•	
		जीवत्व ये ५ भाव			

सुचना-कोई म्राचार्य सायिक भाव ६, जीवत्व १ ये १० मानते हैं।

**प्रवगाहना**—३।। हाथ से ५२५ घनुष तक जानना ।

बंघ प्रकृतियां--- प्रवन्ध जानना ।

उदय प्रकृतियां—अनुदय जानना ।

सत्व प्रकृतियां —सत्ता रहित भवस्या जानना।

संख्यां --- अनन्त जानना।

क्षेत्र--४५ लाख योजन सिद्ध यिला श्रपेक्षा जानना।

स्पर्शन—सिद्ध भगवान् स्थिर रहते हैं।

फाल-सर्वकाल जानना।

श्रन्तर—कोई श्रन्तर नहीं।

जाति (योनि)—जाति नहीं।

कुल—कुल नहीं।

( 488 )

र्चोतीस स्थान दर्शन	र्यान	्रहरू कोप्टक सं <b>०</b>	रहर <i>।</i> कमंग्र	मिध्यात्व में (सम्यक्त्व मार्गेगा। का पहला भेद	त्व मार्गसा का	पहला भेद)
क्र ह्यान सामान्य प्रालाप	पयपि				अपयपि	
	नाना जीव की था	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की श्रपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
~	æ	>>	zť	UST	٩	ւ
१ गुरा स्थान ?		~	~	१ पयप्तिवत् जानना	~	~ .
५ जीव सन्सि	१ मिथ्यात्व गुए। ७ पर्याप्त भवस्या	१ समास	१ समास	७ प्रपर्यात ग्रवस्था	१ समास	१ समास
का० न० दर देखा ३ पर्गाप्ति	υγ	१ भंग	१ भंग	३ लिंहम ह्य ६ भी नोसर है।	१ मंग	१ भंग
का० न० दश् द्वा ४ माण् १०	° ~	१ भंग	१ भंग	פֿוּענו אַ	. १ भंग	१ भंग
मारु नव दर्भ स्था १. संजा	<b>»</b>	१ भंग	१ भंग	>	१ भंग	१ भंग
का० न० देश देश ६ मसि	>>	१ मित	१ मति	>>	१ गति	१ गति
का० म० वर् वता। ७ वृश्चिय जाति प्र	×	१ जाति	१ जाति	<b>3</b> 4	१ जाति	१ जाति
म माय	υs•	१ काय	१ काय	UY	१ काय	१ काय
कि में कि में वर्षी	0 %*	१ भंग	१ योग	m	१ भंग	१ योग
१० मेर	នា*	~	१ वेद	m	~	१ वेद
कार्र न दर्दत्ता ११ कपाय २५ क्रोजनं ० ६२ देसो	አと	सारे भंग	१ भंग	<u>ئ</u> ر در	सारे भंग	१ भंग
						***************************************

चीतीस स्थान दर्शन	त्र व	भे भोष्टक	ू <sup>९</sup> ० प	मिध्यात्व में (सम्प्रबत्व मार्गमा का पहला	व मार्गमा का व	म्बा भेन)
2 3	m	>>		W	9	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
१२ शाम स्रोत संग्राम	m	सारे भंग	१ शान	6	सारे भंग	१ ज्ञान
r h	۵٠	~	~	~	~	~
र दर्शन १४ दर्शन को० मं० न्य नेस्स	œ	१ भंग	१ दर्शन	œ	१ मंग	१ दर्शन
१५ लेखा की० नं० दर देखो	U <sup>gr</sup>	१ भंग	१ लेखा	UΥ	१ भंग	१ लेक्सा
१६ भव्यत्व २ भव्य, ग्रभव्य	् चारों गतियों में हरेक में ट्रास्टर्भा जानका	१ भंग को० नं० १६ से १६ क्रेक्टो	१ अवस्था १६ को०नं० १६ से १८ नेन्से	२ चारों गतियों में हरेक में	१ भंग कों ०नं० १६ से १९	
910	र या मर आर्या को० नं० १६ से १९ देखो	- V 5		र का मन जानना कोठनंठ १६ से १६ देखो	र्ध	१६ देखा
्र सम्बद्धत्व भिष्यास्य     मिथ्यास्य	र नारों गतियों में हरेक में १ पिध्यास्य जासना	~	~	१ परास्तिवस् जानना	~	~
१ द संजी को० नंग दर संखो		~	~	ſΥ	~	~
१६ माहारक को०नं० दर देखो	~	~	~	O.	~	.~
२० जपयोग को०नं० दश् देखो	ъł	१ भंग	१ उपयोग	>>	१ भंग	१ उपयोग
२१ च्याम की० मं० १८ हेखो	n	सारे भंग	१ च्यान	ប	सारे भंग	१ च्यान
्य मु	<b>안</b> 참	सारे भंग	१ भंग	***	सारे भंग	१ भंग
२३ भाव ३४ कुशान ३, दर्शन २, लिब्स ४, गति ४, क्ताय ४, लिस ३	३८ (१) नरक गति में ३६ का भंग क्लोठमं १६ सेखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	३३ कुग्रवधि जान घटाकर(३३)को० नं० (१) नरक गति में	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं०१६ देखो
		1		२४ की भग   क्रो० नं० १६ डेज्जे		

	चीतोश स्थान दर्धन	कोप्टक न	मं	मिथ्यात्व में (सम्प्रवत्व मार्गाणा का	ह्य मार्गेसा का प	पहला भेद)
	er e	>	54	سون ا	໑	ıs
वेदमा १ प्रमानम् प्रतिक्रम्	लेहमा ६, मिथ्यादर्शन १ (१) तिर्यंच मति में २४-२५-३९-३९-२७ मिम्स् भाग १, मिस्सार- को० नं० १७ देखो मिस्स भाग १ में १८) मनुष्य मति में १९० मनुष्य मति में १९० नंग मिस्स भाग १ में १८ विषय मिस्स मिसस मिस	सारे भंग ७ के भग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो । को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग १ भंग	(२) तियंच गति में २४-२५-२७-२६के को० नं० १७ देवो (३) मनुष्य गति में ३०-२४ के गंग को० नंः १० देखो (४) देवगति में २६-२६-२३ के भंग को० नं० १६ देखो	भंग झे० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो त्रो० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १ द देखो १ भंग को७नं० १६ देखो
\$	अवगाहना-को० नं० १६ से ३४ देखों।					
ا ا ا	वंध प्रकृतियां— ११७ नो० नं० १ देली					
ָרָ אָרָ אָרָ יִּיּ	वर्ष प्रमुक्तिया—११७ काठ न० १ देवा मध्य वस्तिम् १८८ क्षेत्र स्थाप		4.			
9 U	संस्य अभृतिषा—१४८ व्या न० १ द्वा संग्यः—प्रमन्तामन्त्र जानमा ।	~	N. av.			
D, W € 3	धेत्र —सम्बोक जातमा। सर्मान—मयेनोक जानमा।					
25.7 27	• 1क—-नाना जीवों की प्रपेक्षां सबैकाल जानना। तक जानना।		एक जीव की अपेशो सादिमिष्या होस्ट	होंट अन्तर्मे हुते से देशो।	अन्तमुँहुतं से देशोन् अधेपुद्गल परायतेन	न काल
ρν. 231	यन्तर—माना जीयों की यांच्या कोई ग्रन्तर महीं।	एक जीव की	योथी यन्तर्महर्ने से	१३२ सागर प्रमास्	कास तक मिथ्यात्व का	त उदय
82 c	ग ता सह। जाशि (मोधि)—ईंट्रेंचान मोनि जानमा ।	~				
34 1237	कृत१६६॥ नाम मोशिषुन जानना।					

। दूसरा भेद)	H	एक जीव के एक समय में	ឋ	o.		१ समास	कों०नं० १७ देखो	 १ समास कों०नं० १८ देखो	े १ समात को०नं० १६ देख	१ भंग कोंग्नं० १७-१८- . १६ देखो
क्टिन मार्गगा क	अपयित	१ जीव के नाना समय मे	9	~		१ समास	को०नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १६ देखो	भंग १७-१६- खो
सासादन में (सम्यक्त्व मार्गगा का दूसरा भेद)		नाना जीवों की ग्रपेक्षा		१ (१) नरक गित मे	रे. पुरार नहा हाता (२) तियंत्र-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ सासादन गुसा० जानना को० नं० १७-१६-१६	्रसा ६ अपर्याप्त एकेन्द्रिय सुक्ष्म जीव समास घटाकर शेव (६)	(१) तियंच गति में ६-१ के भग को० नं० १७ टेन्सो			रे (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति को० न० में हरेक में ३ का भंग
्रंं ) मोस्टिन नं ० प्र		एक जीव के एक समय मे	*	~		१ समास को०नं० १६ से १६ देखो				१ भंग को०नं० १६ से १६ देखो
् कोत्ट		एक जीव के नाना समय मे	>>	~		१ समास को० नं० १६ से १६ देखो				१ भग को० नं० १६ से १६/ देखो
<b>ર્</b> શન	पयांत	नाना जीव की क्षा	er.	् चारों गतियों में हरेक में १ मासादन गुस्छ। जानना	को० नं० १६ से १६ देखो	ति हरेक में स्य पर्याप्त	अवस्था जानना को० नं० १६ से १६ देखो		U	(¹) चारों गतियों में हरेक में कि ६ का भंग को०नं० १६ से १६ देखो
चौतीस स्थान दर्शन	के स्थान सामान्य ग्रालाप		er .	१ मुग्ग स्थान साराग्दन मुग्गः		र जाव समास ७ संशी पं० पर्याप्त १, अपर्याप्त अवस्था ६ छे ७ जातमा			३ पर्याप्त ६	को०नं० १ देखो

	मांग्रीम	मोतीम स्यान दशन	क्रींध्टक नं ०	้า	सासादन में (सम्यक्त्व मार्गगा का दूसरा	त्व मार्गगा का	दूसरा भेद)
	0	m	``	ત્ર	U <sup>3</sup>	9	15
					को० नं० १७-१८-१९ देलो लिडिंग हप ६-५-४ के भग		Mill have had all headers have
४ प्रामा को० नं० १ देवो	१ स्तो	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को०न० १६ से १६ देखो	१ मंग कोठनं० १६ से १६ देखो	े वियंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में का विवर्षा को को नं १७-१६	१ मंग को० नं० १७-१६ १६ देखो	१ भंग को०नं० १७-१ द- १६ देखो
थ संज्ञा को० नं० १ देखो	% غيار غيار	४ (१) चारों गतियों में हरेक में ४ का भग को० नं० १६ से १६ देखो	१ थंग को० नं० १६ से देखो	१ संग १६ को उन १६ से ६ देखो	देखों '४ सियेच-मनुष्य-देवगतिको० नं० १७-१८- में हरेक में ४ का भंग को० नं० १:-१८-१६		१ भं। कोणनं० १७-१८- १८ देखो
६ मति क्षो० नं० १ देखो	र नेको	४ बारों मित जानभा	? मित	े म म प्र	देखों अस्य सित्र श्रोडक्षर केपा क्षेत्र सित्र अस्तर	१ गति	े म
७ इस्टिश्य जाति । गो० नं० १ देखो		१ (१) चारों गितयों में हरेक में व १ पंतेस्थिय जाति जातता को० ने० १६ से १६ देखो	१ गो० नं० १६ से देखी	१६ होत्तं १६ से १६ स्तो	तात नात जानता प्र (१) निर्मंच गति मे ५–१ के भंग होत जा १७० हेलो	१ जाति क्रोजनं० १७ देखो	१ जाति क्षोण्नं० १७ देखो
	and the second s				(२) मनुष्य द्वमति में हरेक में १ सजी प्नेस्टिम जाति जानना कोनना	१ जाति कोल्नं०१द-१६ देखो	१ जाति कोल्कं० १=-१६ देखो
,			-	_			****

		' 
दूसरा भेद)	រ	१ काय १ काय १ काय १ काय १ योग १ योग १ देखो १६ देखो १ वेद १ वेद १ वेद १ वेद १ वेद १ वेद १ वेद १ वेद १ वेद १ वेद
व मार्गसा का दृ	၅	१ काय ह काय ह काय ह काय ह काय ह भंग १ भंग हो० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो हो० नं० १६ देखो
सासादन में (सम्यक्त्व मार्गसा का	سون)	रथावरकाय ३, त्रसकाय १ ये ४ काय जानना (२) तिर्यंच गति में ४-१ के भग को० नं० १७ देखो १, मनुष्य-देवगति में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१६ देखो वे भाषकाययोग १, कामिया कार्योग १, कामिया कार्याच मित्रंच क्षि १६ देखो ३२२ के भंग को०नं० १६ देखो १२२ के भंग को०नं० १६ देखो १३ मनुष्य गति में ३२२ के भंग को०नं० १६ देखो ३२२ के भंग को०नं० १६ देखो
' ቫኒ	*	१ काय देखो १ योग १ योग १ वेद को० नं० १६ से १ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद
कोष्टक नं०	>>	को० नं० १६ से १६ दखो १ भंग १ भंग को० नं० १६ से १६ को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो
्रशंन	lu.	ं १ (१) चारों गतियों में हरेक में १ व्यक्ताय जानमा को ० नं १६ से १६ देखी के ि मिश्रकाययोग १, वे विप्रकाययोग १, कामीया काययोग १, कामोमिया काययोग १, वारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो १ तियंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १६ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को० नं० १६ देखो
मीतास स्थान दर्शन	~	काय ४ अशिकाय, वे व्यवकाय, वे २ वटाकर थेव ३ थे (४) थे १ थे १ थे १ थे थे थे १ थे थे थे १ थे
म्	۵٠	द काय में २ घटा में २ घटा मोर नसक श्राहोरक में २ घटा १० वेद को०

**(** १०५

यी'	चौंतास स्थान दर्शन	दश्न	( ६०५ कोप्टक नं	ا 5 حبر	सासादन में (सम्यक्तव	क्त्व मार्गेए।का दूसरा भेद)	दूसरा भेद)
~	~	to.	>>	<b>5</b> 4	Ugr	ອ	ឋ
		(४) देवगति में २-१ के मंग	सारे मंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १९	(१) देवगति में २-१ के भंग	सारेभंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६
११ क्षाय को०	२५. क्रंग्ज्ने १ देखो	कोऽ नं० १६ देखो २५ (१. न क गति में २३ का भग-को० नं० १६	सारे मंग को० नं० १६	देलो १ भंग को० नं० १६ देखो	भंग	सारे भंग को० नं , १७ देवो	देखो १ भग   को० न० १७   देखो
		खो	सारे मंग को नं०१७ देखो	१ मंग को० नं० १७ देखो	ar High	सारे भंग को० नं० १८ दखो	१ भंग को० नं० १ द देखो
			सार भग को० नं॰ १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	% भग को० नं० १ द देखो १ भंग को० नं० १९	(३) दवगात म २४-२४-२३ के भंग को० नं० १६ देखो	सार मग को० नं० १६ देखो	्र मुर्भ को० नं० १६ देखो
१२ जान	क्ष भाग स	को० नं० १६ देखो ३ (१) सारों गतियों में हरेक में ३ का भंग-को० नं० १६ से १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ (से १६ देखो	देखो १ ज्ञान को० नं० १६ से १६ देखो	२ कुग्रवधि ज्ञान घटाकर (२) (१) तियँच-मनुष्य-देवगति में हरेक में	सारे भंग को० नं० १७-१८- १६ देखो	१ शाम को० नं० १७- १प-१६ देखो
१३ संयम	3 असंगम	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ प्रसंयम जानना को•नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं०१६ से १६ देखो	२-२ के भंग-को० नं० १७-१८-१६ देखो १ (१) तियंच-मनुष्य-देवगति हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १७-१८-१६ देखो	१ को० नं० १७.१८- १६ देखो	१ को० नं० १७- १८-१६ देखो

चौतीस स्थान दर्शन	. दर्शन		1.5			
٠٤	A THE PARTY OF THE	ا لا له المحلم ا	न० प्र	सासादन में (मिध्यात्व मार्गेसा का इसरा भेट	त्वि मार्गसा का	तसरा भेत्र)
-	mr	>	24	71	5	(8)
१४ दर्शन यचक्षु दर्शन १,  नक्षु- दर्शन १ ये (२)	् (१) चारों गतियों में हरेक में २ का भग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ से १९ देखो	२ (१) तिर्यंच गि। में १-२-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	द १ दर्शन को०नं० १७ देखो
१४ लेखाः				14.	सारे भंग को० मं० १५–१६ हेसो	१ दर्शन को०नं० १⊏— १६ देखो
की मं ९ देखो	र् (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० न० १६ देखो	१ लेख्या को०नं० १६ देखो	ह (१) तियंच गति में ३-१ के मंग	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेख्या को०नं० १७ देखो
	(१) ातथच गात म ६१ के अंग को० नं० १७ देखो (१) मनुष्य गति भे	१ मंग को नं०१७देखो इ सारेभंग	१ लेख्या को०मं० १७ देखो		सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सेच्या कों०नं० १ द देहो
१ व भव्यत्व	खो खो	९ = देखो भंग १६ देखो	र लस्य। कोरनं० १८ देखो १ लेश्या कोरनं० १६ देखो	(३) देवगति में ३-३-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो।	१ लेश्या को०नं० १६ देखो
भव्य	१ नारों गतियों में हरेक में १ भज्य जानना को० नं० १६ से १६ देखो	~	~ the the	१ (१) तिर्यच-मनुष्य-देवगति में हरे हे में १ भड़्य जानना को० नं० १७-१६ देवो	~	~
						,

चींतीस स्थान दर्शन	괴	कोध्टक नं ०	ँ नं० दर्	सासादनमें (सम्प्रकत्व मार्गेगाका दुनरा भेद	त्व मार्गसाका द	मरा भेद)
6	C. C.	×	ጵ	U3"	Ð	r
१७ मःयगत्व १ सामादन जानना	१ चारों गनियों में हरेक में १ सासादन जानना	~	~	१ (१) तियंच-मनुष्य-देव- गति में हरेक में १ सामादम अस्मत	~	~
१व नक्षी संजी अनंजी	१ (१) चारों गनियों में हरेक में १ संबी जानना कोठ ने२ १६ से १६ देखो	१ क्तो० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखा	२ (१) तिर्यंच गति में १-१ १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ श्रवस्था को० न० १७ देखो
				<ul> <li>(२) मनुष्य गित में</li> <li>१ का भंग-को० नं०</li> <li>१८ देखो</li> <li>(३) देवगित में</li> <li>१ का भंग-को० नं०</li> </ul>	१ भंग को० नं० १	१ अग्रस्या को० न० १८ देखो १ अवस्या को० त्रं० १६
१६ जाहारक ब्राहारक, जनाहारक	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ ब्राहारक जानना को० नं० १६ से १६ देशो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० न० १६ से १८ देखो	१६ देखो २ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-१ के भंग जानना को० नं० १७-१ =-१६	१ मंग को० नं० १७-१ <i>द-</i> १६ देखो	देखो ग्रवस्था को० नं० १७- १८-१६ देखो
२० उपगोग जानीएगाँग ३	भू (१) नरक गति में	१ मंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० न० १६	देख। ४ कुप्रविधि शान घटाकर	१ भंग	१ डपयोग
दशनावशाम २ ते (५) जानना	४, का भग को० नं० १६ देखो (२) तियँच गति में के क्य	मू	दिखाः १ उपयोग	. 8) (१) तियेच गति में ३-४-४-४ के मंग स्रोत मंत्र १०० टेस्सो	कों० नं० १७ देखो	को० नं : १६ देखो
	x-x के भग कोठ मंठ १७ देखो (३) मनुष्य गति में x-x के भंग	काठ न १७ दखा सारे भंग को० नं० १८ देखो	का० न० १७ देखी १ उपयोग को० नं० १ न देखी	कार पुरुष गति में ४-४ के भंग को० नं० १५ देखो	सारे भंग को० नं० १= देखो	१ डपयोग को० नं० १७ देखो

चौंतीस	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक	त नं ० प्र	सासादन में (सम्य	(सम्यक्तव मार्गेसार का	द्सरा भेद)
8	m	>>	æ€	nz	ອ	น
	को० नं० १८ देखो () देवगति में	% भग	१ उपयोग	(३) देवगति में ४-४ के भग	सारे भंग क्रोत बंद १६ हेखो	१ उपयोग स्रोत्सं १९ हेखो
	४ का भंग बोधनं १६ भेवो	को० नं० १६ देखो	मों नं ०१६ देखो	को० नं० १६ देखो	9 2	
ប	5 V V	सारे भंग	१ घ्यान	វេ	स.रे भंग	१ ध्यान
मोट नं० १ देखो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखी को०नं० १६ देखी	को०नं० १६ देखो	(१) तियंच गति में	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो
	न का भग			द-प के भंग		
	किं निर्मन-प्रनय मि	9 vin	hiting	को० नं० १७ देखो (३) मनसम्म मन्दि भ	-	
	हरेक में	को० मं० १७-	को०मं० १७-१८	(र) मनुष्य गात म द-द के भंग	सीर भग कोरु मंत्रुट सेखो	१ च्यान क्रोऽनं० १८ हेखो
	त-प के भंग	१ न देखो	देखो	कोठनं० १८ देखो	5	
	को० नं० १७-१  देखो			(३) देवगति में	सारे भंग	१ ध्यान
	) (३) देवगति में	सारे भंग	१ ध्यान	त के भंग	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो
	द का भंग	को० नं० १६ देखो	को०न० १६ देखो	को० नं० १६ देखो		
	को० नं० १९ देखो		-			
3,0	<u>ه</u> ۶	सारे भंग	१ भंग	%	सारे भंग	२ भंग
मिध्यात्व ४,	। माः निधकाययोग १,			मनोयोग ४, वचनयोग ४,		
मा० मिथन ायबोग १	नै० मिथकाययोग १,			घो० काययोग १,		
ग्राहारक काययोग १	कामिंग काययोग १					
य ७ घटाकर (४०)	यं ३ घटाकर (४७)			ये १० घटाकर १४०)		
	(१) नर्कगात म	तारे भंग	१ भग	(१) तियंच गति में	सारे भंग	१ भंग
	४४ का भग	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो	34-33-38-34-34-	कों नं १७ देखो	को०नं० १७ देखो
	(त) हिन्दू निवा	,	•	३६-३८ के भंग		•
	(२) तियच गति म	सारे भग	१ भंग	को० नं० १७ देखो	सारे भंग	१ भंग
	88 차 파 파피	को० न० १७ देखो	को०नं० १७ देखो	(२) मनुष्य गित में	१८ देखो	को अनं ० १ द देखो
	काठ नं ० देवा	,		३६.३८ के भंग	-	
	(३) मनुष्य गांत म	भंग	१ भंग	को० नं० १ द देखो	机	१ मंग
	८५-०५ क मन	कार्जि १८ देखा	क्तां अव १ द देखो	(३) देवगति में	को० नं० १६ देखो	क्तों जन् १६ देखी
	क्षित्व १ द देखा			ः प-३७ के भंग		•
				कान्ति १६ द्वा		

चीतीस ध्यान दर्शन	वशीम	, कोप्टक न	न् ० प्र न् ० प्र	सासादन में (सम्यक्त	में (सम्यक्त्व मार्गेणा का द्व	दूसरा भेद)
c	m.	>>	ಶ	U3"	ອ	៤
	(४) देवगति में ५५-४४ का 'म को० नं० १६ देखो	ग़ारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग कोठनं० १६ देखो			
र को० नं० र देगो	३२ (१) नरक गति में	सारे भंग कोठनं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	३१ कुन्नविद्यास घटाकर	सारे भंग	१ भंग
	र्ष्ठ का भग को॰नं० १६ देखी (२) तियँच गति में		१ भंग	(२) तियैच गति में २२-१३-२४-२४-२२	को० नं० १७ देखो 	को०नं० १७ देखो   
,	: ६-२५ क मग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	क्तांग्न १७ दखा व सारे भंग	ज्ञान्त १७ दखा * भग	क भग कोऽ नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	H.	१ भंग
	२६-२५ के भग को० नं० १६ देखो	को० नं० १८ देखो	गेठनं० १ द देखी	२६-२२ क भग को० नं० १८ देखो ८८० भूसति भ		काठन १ द दावा
	(४) दवगात म २३-२५-२२ के भंग को० नं० १६ देखो	सार भग को० नं० १६ देखो	१ भग कोठनं० १६ देखो	(६) दवगात म २४-२४-२१ के भंग को० नं० १६ देखो	मग १६ देखो	्र मर्ग कोठनं० १६ देखो 
	n ** Semantin 1 August					
				٠		
	-					
the second second designations and the second secon	THE PROPERTY OF THE PROPERTY O					

प्रवगाहुना—को० नं० १६ से १६ देखो। वय प्रकृतियां—१०१ को० नं० २ देखो। वयय प्रकृतियां—१९१  ., सरं प्रकृतियां—१४५ श्राहारकदिक १, तीर्थंककर प्र० १ ये ३ घटाकर १४५ प्र० का सत्ता जानना। संख्या—परुषा प्रसंख्यातवां भाग जानना। सेत्र—जोक का प्रसंख्यातवां भाग जानना। सेत्र—जोक का प्रसंख्यातवां भाग जानना। स्पर्शन—जोक का प्रसंख्यातवां भाग च राजु, १२ राजु, को० नं० २ के समान जानना। स्पर्शन—जोक का प्रसंख्यातवां भाग द राजु, को० नं० २ के समान जानना। स्पर्शन—जोक का प्रसंख्यातवां भाग द राजु, को० नं० २ के समान जानना। स्पर्शन—जोक का प्रसंख्यातवां भाग द राजु, को० नं० २ के समान जानना। स्पर्शन्त नाना जीवों की प्रपेक्षा एक समय से पर्श्य का प्रसंख्यातवां भाग तक लोक में कोई भी सासादन गुण स्थान न हो सके। पक्ष जीव की प्रपेक्षा परुष का प्रसंख्यातवां भाग से देशोंनु अर्थपुर्शल परावतंन काल तक सासादन गुण स्थान न हो सके। जाति (प्रीति)—५६ लाख गोनि जानना। (प्रतिकाय ७ लीभे, वायुकाय ७ ये १० लाख कोटिकुल घटाकर १६६।। लाख कोटिकुल जानना। (प्रिनिकाय ३, वायुकाय ७ ये १० लाख कोटिकुल जानना।	10
२५ बच प्रकृति २६ वच्च प्रकृति २७ सरा प्रकृति २९ सेत्रने ३० स्पर्शनने ३२ फातर १२ फातर	
U TO THE TOTAL THE THE TANK THE	

<b>~</b>
υY
_

चौतीस स्थान दर्शन	। ६११ ति कोष्टक नं०	ัน น ~	मिश्र में (सम्यक्त्व मार्गेगाका ३रा भेद)	ग ३रा भेद)
क्र इयान सामान्य यालाप	पर्याप्त			<b>अ</b> पयिति
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
0'	m	>>	ጵ	tr-0-3
१ गुए स्वान ३रा मित्र गुरा स्वान	१ चारों गतियों में-हरेक में ३रा मिश्र गुरा॰ जानना को॰ नं॰ १६ से १६ देखो	१ गुसा॰	१ मुसा॰	सूचनाः—यहां पर श्रपयिति श्रवस्था नहीं होती है
२ जीव-समास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ चारों गतियों में हरेक में-१ संज्ञी पं० पर्याप्त को० नं० १६ से १६ देखो	१ समास को० नं० १६ से १६ देखो	१ समास को० नं० १६ से १६ हेखो	,
३ पर्याप्ति क्षो० नं०१ देखो	कारों गतियों में-हरेक में ६ का संग-को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ १६ से देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	
४ प्रास् को० न० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में- ० का मंग-को० न०१६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ मंग को० नं० १६से १६ देखो	
४ संगा को० नं० १ देलो	४ नारों गतियों में हरेक में-४ का भग-को० नं० १६ से १६ देखों	१ भंग को० मं० १६ से १६ देखो	१ मंग को०नं०१६ से १६ देखो	
इ मित क्रिकंट १ देगो	४ नारों गति जानना	१ गति	१ गति	
७ दृष्टियम् जानि । प्रोहितम् जाति	कार ने ६ स १६ देखा १ न रों गतियों में हरेक में-१ पंचेन्द्रिय जाति लोड डेट के १६ डेल्से	१ जाति को० नं० १६ से १६ देखो	१ जाति को० नं० १६ से १६ दलो	
र्माय प्रसाय	नारों गतियों में हर ह में-१ यसकाय को॰ नं॰ १६ से १६ देखी	ow.	~	

चौतीस स्थान दर्शन	( ६१२ कोष्टक नं	, दर्	मिश्र में (सम्यक्त्व मार्गणाका दरा भेद)	गाका दरा भेद)
~	m	>>	×	ឋ-၅- <u>ភ</u>
ह योग श्रा० मिश्रकाय योग १, श्रा० काय योग १, श्रो० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कामिश्सिकाय योग १	१० (१) चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग-को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ योग को० नं० १६ से १६ देखो	
१० वेद को० नं० १ देखो	<ul> <li>१) नरक गति में-१ नयुंसक वेद जानना</li> <li>को० नं० १६ देखो</li> <li>(२) तिर्यंच गति में</li> <li>३-२ के भंग-को० नं० १७ देखो</li> </ul>	१५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १	<ul> <li>१ वेद</li> <li>को० नं० १६ देखो</li> <li>१ वेद</li> <li>को० नं० १७ देखो</li> </ul>	·
११ कपाय श्रमन्तानुबंधी कपाय ४ घटाकर (२१)	(३) मनुष्य गांत म ३-२ के भंग-को॰ नं॰ १८ देखों (४) देवगति में २.१ के भंग-को॰ नं॰ १६ देखों ११) नरक गति में १६ का भंग-को॰ नं॰ १६ देखों (२) तिर्यंच गति में २१-२० के भंग-को॰ नं॰ १७ देखों	सार भग सारे भंग को े नं ० १६ देखो सारे भंग को े नं ० १६ देको सीरे भंग को े नं ० १६ देखो	, वद कोठ नं० १८ देखी १ वेद १ भंग कोठ नं० १६ देखी १ भंग भोठ नं० १७ देखी	
१२ ज्ञान कुत्रान	(३) मनुष्य गांत में २१-२० के भंग-कोठ नं० १८ देखो (४) देवगति में २०-१९ के भंग-को० नं० १९ देखो चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग-को० नं० १६ से १९ देखो	सार भग को० नं० १	१ भग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो १ शान १ सान को० नं० १६ से १६ देखो	·

ाका ३रा भेद)	រ-១	
मिश्र में (सम्यक्त्व मार्गासाका ३रा भेद)	<b>5</b> 4	को० नं० १६ से १६ देखो १ दर्शन को० नं० १६ से १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो १ लेख्या को० नं० १६ देखो १ १ १ १ १
े ( (	>>	को० नं० १६ से १६ देखी को० नं० १६ से १६ देखी को० नं० १६ से १६ देखी को० नं० १६ देखी को० नं० १६ देखी को० नं० १६ देखी को० नं० १६ देखी सारे भंग को० नं० १६ देखी को० नं० १६ देखी १ भंग को० नं० १६ देखी को० नं० १६ देखी १ १ भंग १ १ भंग १ १ भंग १ १ १ भंग १ १ १ १ १ १ १ १ १६ देखी
( ६१३ र्गि कोष्टक नं०	กา	श्रम् मितयों में हरेक मं-१ असंपम जानना को० नं० १६ से १६ देखों चारों गतियों में हरेक में ३ का मंग-को० नं० १६ से १६ देखों (१) नरक गति में ६-३ के भंग-को० नं० १७ देखों (४) देयगति में १-३-१ के भंग-को० नं० १६ देखों १-३-१ के भंग-को० नं० १६ देखों १-३-१ के भंग-को० नं० १६ देखों १ पड्य जानना-को० नं० १६ से १६ देखों वारों गतियों में हरेक में-१ मिश्र जानना को० नं० १६ से १६ देखों वारों गतियों में हरेक में-१ संभी जानना को० नं० १६ से १६ देखों १ प्राहारक जानना-को० नं० १६ से १६ हेरतों वारों गतियों में हरेक में १ साहारक जानना-को० नं० १६ से १६ देखों
न्गेनोस स्यात दर्शन	8	१३ संयम मसंयम् १४ दर्शन दर्शन वडाकर (३) १५ लेक्या (३) १६ भव्यत्य भव्य १६ भव्यत्य १६ भव्यत्य १७ सम्यवत्य १८ सम्भिन्न १८ मन्नी १८ माहारक १८ माहारक साहारक दर्शनोपायोग ३, दर्शनोपायोग ३, दर्शनोपायोग ३, दर्शनोपायोग ३, दर्शनोपायोग ३, दर्शनोपायोग ३

	EV.	>>	*	<b>ゖ</b> -๑-ኌ
२१ ध्यान ह	ω	सारे भंग	१ ध्यान	
को० नं० ६ रेखो	चारों गतियों में हरेक में ह सा भंग-सोट मंट १८ में १९ नेखो	को० नं० १६ म १६ हेम्बो	को० नं० १६ से १६ देखो	
२२ यासव ४३		सारे भंग	१ भंग	
नं० ३ देलो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ दखो	को० नं १६ देखो	
	४० का भग-को० नं० १६ देखो /२) निर्मंत्र मन्त्रि में	HÝ.	ļ. Ļ.	
	४२-४१ के भंग-को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	~	
	४२-४१ के भंग-को० नं० १० देखो (४) हेबमिन मे	को० नं० १८ देखो सम्हेशंस	को० नं० १८ देखो	
	४१-४० के भंग-को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	
२३ भाव ३३	er er	सरे भंग	~	
को० नं० १ देखो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	
	९२ का मग-काठ न० १६ दख। (२) निग्रंच गनि में	ric dri	٥	
	र ३०-१६ के भंग-को० मं० १७ देखो	क्री० मं० १७ देखी	को० मं० १७ सेवो	
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	े भंग	
	३०-२६ के भंग-को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १ द देखो	
		सारे भंग	१ भंग	
	२४-२६-२३ के मंग-को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखों	

प्रवगाह्मा-को० नं । १६ से १६ देखो।

बंच प्रकृतियां—७४-को० नं० ३ देख

उदय प्रकृतियां—१००-को० नं० ३ देखो ।

सत्व प्रकृतियां — १४७ –तीर्यंकर प्र० १ घटाकर १४७ प्र० का सत्ता जानना

संख्या--पल्य का यसंख्यातवां भाग जानना

क्रेत्र—लोक का ग्रसंख्यातवां भाग जानना ।

स्पग्नैन-लोक का श्रसंस्थातवां भाग न राजु को० नं० ३ देखो ।

काल—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तमुँ हुत से पत्य का असंख्यातवां भाग एक जीव की अपेक्षा अन्तमुँ हुतें से अन्तमुँ हुत तक जानना।

प्रन्तर—नाना जीवों की अपेसा एक समय से पल्य का असंख्यातवां भाग एक जीव की अपेक्षा

अन्तमुँ हूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल

तक मिश्र गुरा स्थान न हो सके।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख मनुष्य योनि जानना ।

३४ कुलं — १० ना। लाख कोटिकुल जानना।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में	अपयात		USP	सूचना— यहां पर क्रपयिति क्रवस्था नहीं होती है।				•	
प्रथमोपशम		एक जीव की अपेक्षा एक समय में	*	<ul> <li>शुराः</li> <li>श्रवने श्रवने</li> <li>से सारं गुराः</li> <li>से कोई २ गुराः</li> <li>जानना</li> </ul>	१ कोठनं०१६ से १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १६ देखो	१ भंग कोठनं० १६ से १६ देखो	१ मंग को० नं० १६-१६ देखो	
ত ১		एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	>	सारे मुसा॰ श्रपने श्रपने स्थान के स.रे मुसा स्थान जातना	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ भग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं०१६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	
( ६१६ ) कोष्टक नं० द	पयिष्ठि .	नाना जावों की ग्रपेक्षा	m	<ul> <li>४</li> <li>(१) नरक गति में ४था गुर्शा स्थान</li> <li>(२) तियँच गति में ४० गुर्शा स्थान</li> <li>भोग भूमि में ४था गुर्शा स्थान</li> <li>(३) मनुष्य गति में ४०-५-६-७ गुर्शा०</li> <li>भोग भूमि में ४था गुर्शा०</li> <li>(४) देवगति में ४था गुरा।०</li> </ul>	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ति जानना को० न० १६ से १९ देखी	द्रारों गतियों में हरेक में ६ फा भंग	はないないできない。		६–१६ देखो
चौंतीस स्थान दर्शन	फ०/ स्थान सामान्य आलाप		8	१ मुसा स्थान ४ से ७ तक के मुसा०	२ जीव समास संज्ञी पं० पर्याप्ति जानना	३ पर्याप्ति नं० १ देखो			

१ (२) तिर्यंत्र गति में ४-४ के भंग को० नं० १७ देखी को भंग को० नं० १७ देखी है। मनुष्य गति में ४ देखों १ देखों १ देखों १ देखों १ देखों १ देखों भें हरेक में पंचेहित्रय जाति जानना को० नं० १६ से १६ देखों ६ ताम १ वाहों गतियों में हरेक में पंचेहित्रय जाति जानना को० नं० १६ से १६ देखों ६ गोग १० वाहों गतियों में हरेक में १ वाहों गतियों में हरेक में १ वाहों गतियों में हरेक में १० वाहों वाहों गतियों में हरेक में १० वाहों	हें में सियंच गति में कें कें कें कें कें कें कें कें कें क	8 मंग को० नं० १७ देखों १ मंग को०नं० १ द देखों १ गति	४ १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ गति	६-७-इ सूचना यहां पर् अपर्यात्त अवस्था नहीं होता है।
(३) गो० मं १ देवो । जाति १ देवो हिस्य मानि मानमा १ १	में ७ देखो भंग द देखो ४ आनना गानना जाति ६ निना दे से १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखों १ भंग को०नं० १= देखो १ गति	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ गति	सूचना यहां पर् अपर्याप्त अवस्था नहीं होता है।
ें सोठ मं १ देवो । जाति । जाति १ देय गानि जानमा १	र देखी भंग भंग ८ देखी ४ आनना गानना ने से हरेक मे	को० नं० १७ देखी १ भंग को०नं० १८ देखी १ गति १	को० न० १७ देखो १ भग को०नं० १८ देखो १ गति	अपयाप्त अवस्था नहा होता है।
ें को है देवों है जाति वासिना है है विस्था का कि वासिना है है विस्था के कि विस्था कि विस्था के	6 देखा मं भंग ८ ४ ४ गानना गाति इन्हें में जाति इन्हें में इ.से १६ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो १ गति १	१ भग को०नं०१ द देखो १ गति १	10' 
४ कोठ मं १ देवो १ वासि १ १ १०	भंग ८ ४ गानना गमना गम् हरेक मे जाति इ. नना	कोठनं० १ न देखो १ गति १	कोठनं० १ द देखो १ मति	
ें मो० मं १ देवो १ जाति १ १० वसकाय	द देखी ४ ४ गानना १ में में हरेक मे जाति कानना इ. से १६ देखी	१ मति १	१ मित	
४ नाति १ देवो १ जाति १ १ देय गाति जानना १	४ गानना गें में हरेक मे जाति इ.मना इ.से १६ देखो	१ मति १	१ मति	
तारीत १ चना हित्रय जाति जानमा त्रमकाय	ग्रम्ता १ १ में हरेक मे जाति ऊ।नना ६ से १६ देखो	. ~	·	
ि अ।।।। हिन्नय जाति जानमा १ वस्तिमय १०	ों में हरेक मे जाति इ.मना हे से १६ देखो	~	•	
त्रमकाय	जाति यानमा ६ से १६ देखो			
त्रमकाय त्रमकाय १०	ह से १६ देखी			
त्रमकाय	•			
त्रमकाय १०	ו	~	<b>3</b> /	****
0	मिस्क मे	•	•	gar kana ayan
50	जानना			
- 0	र सं १६ देवो			
	\$\$	१ भंग	१ योग	
मनयोग ४,	त में हरेत में	िको० नं० १६-१६ देखो	को० न० १६-१६ देता	
ر انجم س		-	- •	
2 of 41th (10) h (10) h (10) h (10)	The state of the s			
(२) विमन्ति ।	#	सत् भंग	१ योग	
THE STATE OF THE S	41 41	को० नं० १७ देलो	क्तोर्जन १७ देखो	
्रिक शिक्ष के शिक्ष क	الإساء	magang ta vil		
(३) मनुत्य गनि ।	الله	सारे मंग	१ योग	
ल - ह - ह - ह - ह - मम	ने भंग	किं मंं १८ रेखो	कोठनं० १८ देखी	
1	海		,	
w. 	(d).	~	१ वेद	المراجعة المراجعة
जार ने देना (१) महास्त्र मान म	tr	कों जं १६ देखो	कोठनंठ १६ देखो	1
र न्यु मन बद्ध अनिन्	द आमना			,

A CONTRACTOR

49°.

and the second s

r ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) (				,	
27,					
,	ć			,	<b>X</b>
•	चातास स्थान दशन	ानं काध्यक न	୦ ମଓ	प्रथमापश्म	प्रथमापशाम सम्पक्तन म
	~	æ	>>	<i>x</i>	n - 0 - n
		को० नं० १६ देखो	-		
		(२) तिर्यंच गति में ३_२ ऋ भंग	१ भंग	८ वेद	
		र्गर्भ म्य नोठनं० र७ देखो		できるから Fore	
		(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	~ वेद	
		3-3-3-3-3-3 部村	कीं नि १८ देखों	कोंत्नु १ द देखी	
		का०न० ९६ दल। (४) देवगति में	माने भंग	to Ato	
		२-१-१ के भंग	को०नं० १६ देखो	कोठनं० १९ देखी	
	११ कपाय २१		सारे भंग	१ भंग	·
	श्रनन्तानुशन्धो कपाय ४	(१) नरक गति में	को०नं० १६ देखो	को अनं ० १६ देखो	
	घटाकर (२१)	१८ के भग		-	
		काठ नव दिव्हा (२) मिर्गच मित्र में	1		
		28-86-88 岩田	तार मग	たま ~ 15mm ~ 15	
		को० नं० १७ देखो			
		(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ भंग	-
		२ -१७-१३-१३-२० के भंग	को० नं० १ द देखो	को०नं० १८ देखो	
		भार प देवति में	माने भंग	ţ	
		Tit # 36-3, -0C			
		को० नं० १६ देखी	का० न० १६ द्वा	काठन० १९ दला	
	१२ ज्ञान ४		सारे भंग	१ शान	
	मति-श्रुत-श्रवधि जान	(१) नरक-देवगति में हरेक में	को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६दिलो	
	श्रार मनः पयय ज्ञान ये (४)	र का भग कोन्यं १६-११ मेलो			
		(२) नियंच गनि में	.]		
		### ## E-E		र साम	
			411000 613 6141	काठ न ठ ८ ५ दखा	

r			×	प्रवमानशाम तम्बब्धि म
	m	»	<b>x</b>	<b>な</b> = の − <b>か</b>
Para Para Para Para Para Para Para Para	को० नं० १७ देखो			
	(३) मनुष्य गात म ३—३ के मंग	सारे भंग को० नं० { द देखो	१ ज्ञान को०न० १ द देखो	
१३ मंयम	को० नं० १८ देखो 			
, संयमासंयम,	४ (१ नरक-टेवगति में में हरेक में	४ परिहार वियुद्धि घटाकर	१ संयम को नं० १६–१६ देखो	
नामात्रक, ध्वापस्थापना परिहार विग्रुद्धि गं (४)	१ प्रसयम जानना को० नं० १६–१६ देखो	(४) . मो० नं० १६–१६ देखो		
	(२) तियैच गति में	१ भंग		
	१-१-१ क भग को० नंऽ १७ टेखो	कोठनं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
	(ः) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ संयम	
	१-१-३-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	मो० नं० १ द देखो	को० नं० १८ देखी	
१४ दर्मा	111	१ भंग	1111 6	
नियम दयान पटानिर (३)	(१) नरफ-देवगति में हरेक में न सा भंग	को० नं० १६-१६ देखो	कोठनं० १६-१६ देखो	
	को०नं ६-१६ देखो			
	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ दर्शन	
	३–३ के भग को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	
•	( ) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ दर्शन	
	र्नश्नाश्चन के भंग	को० नं० १८ देखो	कोठनं० १८ देखो	
१५ जेरवा	भारत पुरुष्ता करता. स	, vir.		
गो० नं० १ देती	(१) नरक गति में	को ०नं० १६ देखो	९ दशन को० नं० १६ देखो	
	३ मा भग कोऽनं० १९ देखो			

चोंतीस स्थान दर्शन	( ६२० । कोष्टक नं	<b>.</b> . प्र	प्रथमोपशम	प्रथमोपशम सम्यवत्व में
~	m	>>	7	j-9-3
	(२) तिर्यंच गति में ६–३–३ के भंग	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो	
	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६—३—३ के भंग न्रे	 सारे भंग   को० नं० १   देखो	१ लेख्या को० नं० १८ देखो	
	क। न०१५ दख। (४) देवगति में १–३–१–१ के भंग क्रो० नं० १९ टेखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेख्या को०ं० १६ देखो	
१६ भव्यस्व १ भव्य	्तर प्रता १ चारों गतियों में हरेक में	१ को० नं० १६ से १६ देखो को० नं० १	१ को०मं० १६ से १६ देखो	
	१ भग्य जानना को० नं० १६ से १६ देखो	•	٠	
१७ सम्यतत्व प्रथमोषशम सम्यत्त्व	१ चारों गतियों में हरेक में	۵٠	~	
१ द संज्ञी संज्ञी	१ प्रथमपिशम सम्यक्त्व जानना १ चारों चतियों में हरेक में १ मंत्री जातना	~	~	
१६ ग्राहारक ग्राहारक	, पुरा नामा को० नं० १६ से १९ देखो १ चारों गतियों में द्वरेक में	c		
•	१ शाराहक जानना को० नं० १६ से १६ देखो	~	6~	
रुठ उपथा। ज्ञानीपयोग ४, दुर्शनीपयोग ३	७ (१) नरक–देवगति में हरेक में ६ का भंग को० न० १६–१६ देखो	१ भंग को० नं० १६—१६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६-१६ देखो	
य ७ जानना	(२) तियंच गति में ६-६ के मंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं १७ देखो	

सम्यवत्व में	い - の- y			ι						,	
प्रथमोपशम सम्यवत्व	ಶೇ	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	१ घ्यान को०नं० १६-१६ देखो	१ व्याम को०नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १५ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	: `
্ ৩ ৮	>>	सारे भंग को०नं० १८ देखो	सारे मंग को०नं० १६-१६ देखो	१ भंग को०नं०.१७ देखी	सारे भंग को०नं० १घ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	. सारे भंग को० नं० १६ देखो	
( ६२१ कोप्टक नं० ट	m.	(३) मनुष्य गति में ६, के भंग स्रोत सं, २ : स्सो	१२ १२ (१) नरक देवगति में हरेक में	(२) तिर्यंच गति में १०-११-१० के मंग	काठ न० ९७ ५५। (३) मनुष्य गति में १०-१९-७-४-१० मे मंग क्रो० मं० १० टेको	्र प्रता ४३ (१) नरक गति में	४० का भग का० न० १६ दखा (२) तियंच गति में ४२–३७-४१ के भंग	का० न० १७ दुन। (३) मनुष्य गति में ४२. ३७२२२१ के गंग	ता न ९ ५ ५९। (४) देवगति में ४१–४ –४० के भंग क्रोत मंत्र १९ केसो	्राट कर दुवा ३६ (१) नरक गति में ३६ कर क्षा क्षा को उन के ब्रेस	रेंद्र भारता ने भारता है। इस्ते प्रमुख्य में से सामित्र हो स्थानियाम से २ सम्पन्त न घटाकर २६ का भंग जानना
र्नोतीस स्थान दर्शन	۲ ~		२१ ध्यान यातेच्यान ४, रोदध्यान ४,	वन च्यात ॰ व (११) जानना		२२ मासव ४३ मिवरत १२, मोग जपर	क स्थान क १०, (ग्रो० पित्र०, वै० पित्र०, ग्रा० पित्र०, ग्रा०काययोग,	कामाम् कायवाम् ४ घटाकर् १०) कपाय २१ (स्रमन्तानुबन्धी	(Fe) & (1) MIDE	२: भाव उपनाम सम्यनस्य १, सम्य न सम्यन्न न सन्ति ए	नंगमासंग्रमश्, सराग संग्रम् १ भीत ४, कृषांब ४, लिंग ३,

हेरचा ६, क्रमंग्रम ६, से १६ का प्रंथ के संगी जातना प्रदेश है के २७ के संगी जातना प्रवास १, जीवत्व १, जीवत्व १, जीवत्व १, जीवत्व १ (२) दियं जाति में १ वेदक सम्यव्य १, जीवत्व १ (२) दियं जाति में १ वेदक सम्यव्य प्रवास १, जीवत्व १ (२) दियं जाति में १ वेदक सम्यव्य प्रवास १, जीवत्व १ (२) दियं जाति में १ वेदक सम्यव्य प्रवास १ के १६ के १६ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य प्रवास १ १ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य प्रवास १ १ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य प्रवास १ १ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य प्रवास १ १ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य प्रवास १ १ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य प्रवास १ १ वेदक सम्यव्य (३) वेदक सम्यव्य प्रवास १ १ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य व्यास १ १ के भाग जाता (३) वेदक सम्यव्य व्यास १ १ के भाग जाता व्यास सम्यव्य नहीं होता। में व्यास मम्यव्य नहीं होता।	चौतीस स्थान दर्शन	यान दर्शन	য	प्रथमोपशम सम्यक्त्व	सम्यक्त्व में
१, से से श्रमीयक्षम सम्प्रकृत घटाकर । १, का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग से १ अयोपक्षम सम्प्रकृत घटाकर । १, का भंग जानना १, तियंच गति में १ वेदक सम्प्रकृत घटाकर १७ के ३२–२६ के भंग में १० वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० का भंग में १० वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० का भंग को० नं० १७ के २१ के भंग जानना १, भंग में १० वेदक साय्रकृत घटाकर १० का भंग जानना १३–२०–२६ के भंग को० नं० १६ के सम्प्रकृत घटाकर १० के भंग जानना १४ का भंग जानना १४ का भंग जानना १४ का भंग जानना १४ के भंग में १ वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० के भंग जानना १४ का भंग जानना १४ का भंग जानना १४ के भंग में १ वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० के भंग जानना १८ के भंग में १ वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० के भंग जानना कहण्यासी नवज्ञ वेदक देवों में १० वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० के भंग जानना कहण्यासी नवज्ञ वेदक देवों में १ वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० के भंग जानना कहण्यासी नवज्ञ वेदक देवों में १ वेदक सम्प्रकृत घटाकर १० के भंग जानना कहण्यासी नवज्ञ वेदक देवों में १ वेदक सम्प्रकृत वेदक भंग में १ व्यानित वेदक भंग में १ व्यानित विमान में व्यानना नव यनुदिव और पंचानुत्तर विमान में व्यानमा सम्प्रकृत नहीं होता।	٤ - ١	æ	<b>&gt;</b>	አ	<b>ぱ・</b> の- 汝
से से १ स्वयोपकाम सम्प्रकृत्व घटाकर २९ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में १२-२८ के भंग को० नं० १७ के ३२-२६ के हरेक भंग में से १ बेदक सम्युक्त घटाकर ३१-२८ के भंग जानना २७ का भंग को० नं० १७ के ३२-२६ सायिक ये १ सम्युक्त घटाकर २७ का भंग जानता (३) मजुष्य गति में ३१-२८-२७ के भंग को० नं० १६ के ३३-३०-२६ के हरेक भंग में सायिक- स्वोपन्यम ये १ सम्युक्त घटाकर ३१-२८- २७ के भंग को० नं० १६ के (भवनत्रिक- स्वोपन्यम ये १ सम्युक्त घटाकर ३१-२८- २७ के भंग जानना (४) देवगति में २५ का भंग जानना करुपनाती नवग्रे वेदक देवी में २९७-२४ के भंग को० नं० १६ के २६-२६ के हरेक भंग में ६ शायिक और वेदक सम्युक्त घटाकर २५ का भंग जानना करुपनाती नवग्रे वेदक देवी में २९७-२४ के भंग को० नं० १६ के २६-२६ के हरेक भंग में ६ शायिक और वेदक सम्युक्त प्रांच सम्युक्त वाहानर १७-२४ के भंग जानना नव ग्रमुदेश और पंचानुत्तर विमान में यहां उपराम सम्युक्त नहीं होता।	लेख्या ६, ससंपम १,	२६ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग			
(२) तिर्वेच गति में ३१-२६ के भंग को० नं० १७ के ३२-२६ कि।० नं० १७ देखी के हरेक भंग में से १ वेदक सम्यव्स्व घटाकर ३१-२६ के भंग जानना २७ का भंग को० नं० १७ के २६ के (भोग भूमि में) के भंग में से वेदक धायिक ये २ सम्यवस्व घटाकर २७ का भंग जानना (३) मनुष्य गति में ३१-२६-२७ के भंग में से शायिक- धायोग्याय ये २ सम्यवस्व घटाकर ३१-२६- १७ के भंग जानना (४) देवगति में २५ के भंग में से १ देवक सम्यवस्व घटाकर २५ का भंग जानना करवासी नवग्र वेदक देवों में २६ ने १६ के भंग में से शायिक और वेदक सम्यवस्व घटाकर २४ का भंग जानना करवासी नवग्र वेदक देवों में २६-२८-१८ के भंग में से शायिक और वेदक भंग वेदक सम्यवस्व घटाकर २४ का भंग जानना करवासी नवग्र वेदक देवों में २९-२८-१८ के भंग में से शायिक और वेदक सम्यवस्व घटाकर ३४ का भंग जानना करवासी नवग्र वेदक देवों में २९-२८ के भंग में से शायिक और वेदमान में यहां उपवाम सम्यवस्व नहीं होता।	म्रज्ञाम १, मसिद्धत्व १,	में से १ अयोपशम सम्पर्कत घटाकर	•		
(२) तिर्षेच गति में से १ वेदक सम्प्रवंदव कार के हुद्क भग में से १ वेदक सम्प्रवंदव वटाकर ३१-२८ के भंग जानना २७ का भंग में से १ वेदक सम्प्रवंदव वटाकर ३१ -२८ के भंग जानना २७ का भंग की० नं० १७ के २६ के (भोग भूमि में) के भंग में से वेदक सार्यवंदव वटाकर २७ का भंग जानना भंग जानना (३) मनुष्य गति में ३१-२८-२७ के भंग को० नं० १८ के इंद्रेक भंग में से सार्यिक- सार्यायं १८ के भंग में से १ वेदक सम्प्रवंदव वटाकर ३१-२८-२८ २० के भंग जानना (४) देवगति में १८ के भंग में से १ वेदक सम्प्रवंदव वटाकर २४ का भंग जानना करण्यासी नवंद्र वेदक देवों में २०-२४ के भंग में से सार्यिक और वेदक देवों में २०-२४ के भंग में से सार्यिक और वेदक सम्प्रवंदव वटाकर २४ के भंग ने १६ के २६-२६ के हरेक भंग में से सार्यिक और वंचानुत्रर विमान में २०-२४ के भंग जानना नव अनुदिश और पंचानुत्रर विमान में यहां उपवाम सम्प्रवंद नहीं होता।	भग्यत्व १, जीवत्व १	२९ का भंग जानना			
३१२६ के भंग को० नं० १७ के ३२-२६ को० नं० १७ देवी के हरेक भंग में से १ वेदक सम्यवस्व घटाकर ३१ को १८ के १६ के १६ के भंग भी को नं० १७ के २६ के भंग भी के भंग में से वेदक सार्यिक पे १ सम्यवस्व घटाकर २७ का भंग जातना (३) मनुष्ण गति में ३१ सम्यवस्व घटाकर २९ को भंग जातना (३) मनुष्ण गति में ३१ के भंग को० नं० १६ के के ११-२६-२९ के भंग को० नं० १६ के भंग सारिक- सयोपवाम ये १ सम्यवस्व घटाकर ३१-२६-१६ के भंग जातना (४) देवगति में १४ का भंग जातना (४) देवगति में ११ के के १६-२६ विक भंग में से ११ वेदक सम्यवस्व घटाकर २४ का भंग जातना करणवासी नवग्र वेदक देवों में २०-२४ के भंग जातना करणवासी नवग्र वेदक देवों में २०-२४ के भंग जातना वानमा नव ग्रनुदिश्व श्रीर पंचानुत्तर विमान में यहां उपशाम सम्यवस्व नहीं होता।	म ्३६)	(२) तियंच गति में	सारे भंग	१ भंग	
बेदक सम्यक्तव   ""   १७ के २६ के   सारे भंग   से से वेदक   को० नं० १ द देखो   को० नं० १ द देखो   मंग में से सायिक—   सारे भंग   सारे भंग   सारे भंग   सारे भंग   देके सम्यक्तव   को० नं० १ ६ देखो   देके १६—२६—   सारे भंग   देके २६—२६   पिक और वेदक संगंग   १०—२४ के भंग   पिक और वेदक   भंग   पिक और वेदक   भंग   पिक और वेदक   भंग   पिक आगर वेदक   भंग   पिक वेदक   पिक वेदक   भंग   पिक वेदक   पिक वेदक   भंग   पिक वेदक   पिक वेदक   पिक वेदक   भंग   पिक वेदक   पिक वेदक		₩ 9% o.	को० नं० १७ देखो	को उनं ० १७ देखो	
ा जानना १७ के २६ के गंग में से वेदक घटाकर २७ का घटाकर २७ का को० नं० १ व के भंग में से साधिक— । घटाकर ३१—२=— सारे भंग सारे भंग देवों में ० १६ के २६—२६ गियक और वेदक । २७—२४ के भंग । २७—२४ के भंग । १६ विमान में		वेदक			
सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो		घटाकर ३१ - २ द के भंग जानना			
सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो		W	:		
सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो		(भोग भूमि में) के भंग में से वेदक			
सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो		क्षायिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर २७ का			
सारे भंग सोरे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो		भंग जामना			
को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो		(३) मनुष्य गति में		٥ بنتا	
सारे भंग को० नं० १६ देखो		३१-२८-२७ के भंग को० नं० १० के	को० नं०	क्नो०नं० १८ देखो	
सारे भंग को० नं० १६ देखो "		३३-३०-२६ के हरेक भंग में से झायिक-			
सारे भंग को० नं० १६ देखो		क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर ३१-२८-			
सारे भंग को० नं० १६ देखो "		२७ के भंग जानना			
को० नं० १६ देखो		(४) देवगति में		० भंग	
		र्थ का भंग को० नं० १६ के (भवनत्रिक		को०नं० १६ देखो	
		देन) २६ के भंग में से १ वेदक सम्यक्त		•	
		घटाकर २४ का भंग जानना			
		कल्पवासी नवग्रै वेदक देवों में			
		१७-२४ के मंग को० नं० १६ के २६-२६	;	•	
सम्पेक्तव थे २ घटाकर २७–२४ के मंग जानना नव अनुदिश श्रौर पंचानुत्तर विमान में यहां उपशम सम्प्रकत्व नहीं होता।		क हरेक भंग में से क्षायिक और वेदक			
दिश ग्रौर पंचानुत्तर शम सम्यक्त्व नहीं होता		सम्युक्त ये २ घटाकर २७-२४ के भंग			
दिश श्रौर पंचानुत्तर शम सम्पक्त नहीं होता					
यहां उपशम सम्यक्त्व नहीं होता।		दिश स्रौर पंचानुत्तर			******
		यहां उपशम सम्यक्त्व नहीं होता।			
			-		

- बंध प्रकृतियां—७७-६७-६१-५७ प्रकृति को० नं० ४-५-६-७ के समान जानना परन्तु को०नं० ७ के ५९ प्र० प्राहारकद्विक २ ये दो घटाकर प्रवगाहना - मं। नं १६ से १६ देखों। ४७ मकृि जानना । š 35
  - उदय प्रकृतियां—६६ को० नं० ४ के १०४ में से गत्यानुपूनी ४, सम्पनत्व प्र० १ ये ५ घटाकर ६६ जानता। 3
    - ७ न को० नं० ६ के ८१ में से याहारदिक २, सम्यक्त्व प्रकृति १ ये ३ घटाकर ७८ जानना। प्टर को० नं० ५ के द७ में से सम्यक्त प्र० १ घटाकर पट् जानता।
      - ७५ को० नं० ७ के ७६ में से सम्यक्त्व प्रकृति १ घटाकर ७५ जानना।
        - सत्य प्रकृतियां---१४६--१४६ को० नं० ४ से ७ के समान जानता।
          - संस्या श्रमं स्यात जानना । , Dr
            - क्षेत्र लोक का प्रसंस्यातवां भाग जानना।
- स्पर्गत—लोक का ग्रसंख्यातवां भाग, द राखु को० नं । २६ के समान जानना । W.
- माल—नाना जीवों की श्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुत से पत्म का श्रसंख्यातवां भाग जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तमुँ हुत से ग्रन्तमुँ हुत तक जानना ।
  - **प**न्तर—नाना जोवों की श्रपेक्षा एक समय से ७ श्रहोरात्र (रातदिन) जानना। एक जीव की श्रपेक्षा श्रसंख्यात वर्ष से देशोन् श्रषं पुद्**ग**ल परायतंन काल तक प्रयमोपशम सम्यक्त्व नहीं हो सके।
    - जाति (योनि)—-१६ लाख योनि जानना । को० नं० १६ देखो 43. 43.
      - कुस--१०=॥ लाख कोटिकुल जानना ।

	चीतास स्थान दशान	कोष्टक न०	ง ห	•	द्वितीदोपशम सम्मन्दव	बत्व में
प्रकास सामान्य भालाप	पयस्ति			श्रपय⁵ट		
	नाना जीवों कें अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	जीव के नाना  एक जीव के एक समय में समय में	नाना जोत्रों की प्रतेथा	औव कि नाना समय में	? जीव के एक समय गे
0.	m	>-	<b>X</b>	U*	<b>6</b> 1	រេ
१ मुण् स्थान प्र ४ सं ११ तक के मुग्ग० (	ट अपेशा (१) मनुष्प गति में ४ से ११ गोगभूमि में-दितीयोपश्चम स्० नहीं होता (२) देवगति में	सारे मुसा स्थान अपने अपने स्थात के सारे मुस्स स्थान जानना	<ul><li>गुरा</li><li>ग्रपा</li><li>में सं</li><li>कोई</li></ul>	१ (१) पमुष्य मनि जितीयोपञ्चम स्व होता भोगभूमि में-पय जानना	सारे भंग ज्ञवने ज्ञवने स्थान के सारे पुर्गा० जानना	१ मुर्गाः प्रयने अपने स्थान के सारे मुग् में से कोई १ मुर्गाः
भास २ ० पर्याप्त ग्रप०	हितायापश्म सठ नही होता १ संज्ञी पं० पर्याप्त (१) मनुष्य गति में १ का भग-को० नं० १ द	१ समास को० नं  १ द देखो	<ul><li>१ समास</li><li>को० नं० १</li><li>देखो</li></ul>	(२) दवगात म ४ था १ संजी पं॰ अपर्याप्त (२) देवगति में–१ संज्ञी पं॰ अपर्यःति को॰ सं॰ १३ नेको	१ समास को० न० १६ देखो	१ समास को० न० १६ देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६ य गति में पि की श्रोक्षा 1 भंग-को० नं० १ घ	१ भंग को नं०१८ देखो	१ मंग को० नं० १८ देखो	ह (१) देवगति में ३ का भंग-को० नं १९ देखो	१ भंग को० नं १६ देखो	१ भंग को० नं० १९ ३खो
	१ य गति में का भंग-को० नै० १ प	क्ष	सारे भंग को० नं० १८ देखो	लंडिय रूप ६ का भग भी ७ (१) देवगति में ७ का भंग-को० नं० १६ देखो	स्वो	१ भंग को० नं० १६ देखो
० नं० १ देशो	(१) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-० के भंग	सारेभंग को० नं० १८ देखो	१ भग को० नं० १ द देखो	४ (१. देवगति में ४ का भंग	१ भंग को० नं० १६ खो	१ भंग को० नं० १६ देखो

यक्तव में	15	१ मित १ १ योग १ योग को: नं० १६ १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग
द्वितीयोपशम सम्यक्त्व	ອ 	१ गति १ ११ १ भग १८ १ १ भग १८ १८ १ १ भग सारे भंग
	US	को० नं १६ देखी देवगति जानगा को० नं० १६ देखी देवगति में १ संजी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १६ देखी देवगि में १ जमकाय जानगा को० नं० १६ देखी देवगति में १-२ के गंग-को० नं० १६ देखी १-२ के गंग-को० नं० १६ देखी १-२ के गंग-को० नं० १६ देखी १-३ के गंग-को० नं० १६ देखी
रार / न नं० प्रव	×	१ मिति १ योग १ योग १ योग स्थो नं० १८ १ येग १ येत
भोष्टक नं०	>	१ मति १ १ १ १ सारे भंग गो० नं० १ = देखो। सारे भंग को० नं० १ = देखो।
١৮	er	को० नं० १८ देखो  पमनुष्य गति जानना  पनुष्य गति म  पनुष्य गति म  १ संज्ञी पनेदिय जाति  थे प्रमण्य गति मे  १ १ प्रमण्य गति मे  १ १ द्रों मे  ११ पनुष्य गति मे  १२ १-३-३-३-१-० के भंग  गो० नं० १८ देनो  ११ पनुष्य गति मे  १२ १२-१० के भंग  गो० नं० १८ देनो  ११ पनुष्य गति मे  ११ १२-१०-१-० के भंग  ११० गनुष्य गति मे
चींतीस स्थान दर्शन	è .	६ गति २ मनुष्य-देवगति १ पनिद्रय जाति १ पनिद्रय जाति १ पनिद्रय जाति १ पनिद्रय जाति १ पनिद्रय जाति १ पनिद्रमाय गोग १ पे० त्याम स्था १ पे० त्याम स्था १ पे० त्याम स्था १ पे० त्याम देशि ।

चौतीस स्थान दर्शन	स्यान व	दर्शन	कोष्टक नं०	नं ० दद	<del></del>	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व	क्त्व में
· ~	r	er .	>>	<b>ઝ</b>	US-	, 9	ี ข
१२ ज्ञान केवल ज्ञान पटाकर	डाकर	४ (१) मनुष्य गति में ३ ८० के संस	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ आन को मं १८	३ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (२)	सारे भंग	े शान
	<u>.</u>	र्टन्य मुन्त को० नं० १ द देखो		, ,	(१) देवगति में ३-३ के मंग-को० नं० ०० भन्मे	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६
१३ संयम परिहार विशुद्धि स० घराकर (६)		६ (१) मनुष्य गति में १,१,२,० के ने ने	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १ <sup>द</sup> <sub>सेस्रो</sub>	१६ ५७। १ असंयम (१) देवगति में	१ असंयम	१ यस्यम
१४ दर्शन केवल दर्शन घटाकर् (३)		को० नं० १ द देखी ३ ११) मनुष्य गति में ३-२-३ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	रता १ दर्शन   को० नं० १ द	१ अतथम जागमा को० नं० १६ देखी ३ (१) देवगति में ३-३ के मंग-को० नं०	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन .को० नं० १६ देखो
१५ लेक्या को० नं० १ देखो	क क बि	कीठ नेठ १६ देखी ६ (१) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या । को० नं० १ देखो	१९ देखा ३ गुभ लेश्या (१) देवगति में ३-१-१ के भंग	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेख्या को० नं० १६ देखो
१६ भव्यत्व	१ ५	कार के दिखा १ मनुष्य गति में	~	~	का० न <b>० १६ दला</b> १ देवगति में	~	<b>∞</b>
१७ सम्प्रक्त द्वितीयोशम सम्पक्त	थनत्व	र मन्य जातना १ मनुष्य गति में १ द्वितयोपशम सम्यक्त्व	~	~	१ भव्य जानना १ देवगति में १ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व	~	<i>م</i>
१ द संशी	संजी क	णानमा १ मनुष्य गति में १ संज्ञी जानना को० नं० १८ देखो	۵ .	~	जानना १ देवगति में १ संजी जानना को० नं० १६ देखी	~	~

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में	ທ	भंग १ प्रवस्था १६ देखो को०नं० १६ देखो	रंग १ उपयोग	. ६ देखो    को०नं० १६ देखो 	रंग १ ध्यांन	भंग १६ देखो को०नं० १६ देखो	रंग १ भंग	iग १ मंग ९ देखो को०नं० १६ देखो 	रंग १ भंग	
हितीय		सारे भ को० नं० १	१ भंग	/         	सारे भंग [ ४,	सारे भंग को० नं० १६	र,	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग	
	U9°	२ देवगति में १-१ के मंग जानना	_ जु _	(१) देवगति में ६-६ के भंग को० न० १६ देखी	16 5	थ ६ च्यान जानना (१) देवनाति में ६ का भंग क्षो० नं० १६ हेखो	३५ मनोयोग ४, बचनयोग ४, झौ० काययोग १,	(१) देवगति में ३३-३३-३३ के भंग को०नं० १६ देखी	२६ सायिक सम्यक्तव १, वेदक सम्यक्तव १, मनः पर्यय झान १, स्त्री-प्रक्रय वेत २	741 364 44
६२७ ) म्० दद	*	~	१ उपयोग को०नं० १८ देखो		१ घ्यान को०नं० १८ देखो		१ भंग क्रो०नं० १८ देखो		१ भंग को०नं० १८ देखो	
( १ कोष्टक र	*	~	सारे भंग को० नं० १८ देखो		१ मंग को० न० १८ देखो		सारे भंग को नं० १८ देखो		सारे भंग को० नं० १८ देखो	
वींतोस स्थान दशन	æ	१ मनुष्य गति में १ आहारक जानना	काठ नठ ९५—१८ ५५॥ ७ (१) मनुष्य गति में ८ ७ ७ ३५ भंग	को० नं० १ व देखो	१३ (१) मनुष्य गति में १०-११-७-४-१ के भंग कोट नं	410 40 444	४४ (१) मनुष्य गति में ४२-३७-२२-१६-१५-	१९ १५-१९-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-	(२) मनुष्य गति में १९-२६-२६-२६ के भंग को० नं०१ द के ३३-३०- ३१-३१ के दरेक भंग में	
र्बातोस	2	१६ माहारक माहारक- मनाहारक	२० डम्पोग ज्ञानीययोग ४, ज्यानीययोग ३,	में ७ वातना	१३ मार, गित	न्दुनस्त । तथा । त० मे ३ घटाकर (१३)	२२ आसव ४४ मिवरत १२, योग ११, फवाय २१ में ४४४		२३ भाव को० नं० न७ देली	

मृत्व मृ	ıs	को १ अंग देखो में १ १
द्वितीयोपशम सम्यक्त्व	9	को० नं० १६ देखो
( <del>)</del> 33.	w	संयमासंयम १, सरागसंयम १, अशुभ लेक्या ३ थे १० वटाकर (२६) (२) देवगति में २६-२४ के भंग-को० नं० १६ के (कल्पवासी- नवग्रे०) - द-२६ के हरेक भंग में से क्षायिक- क्षायोपश्चिमक ये २ सम्यक्त घटाकर २६- २४ के भंग जानना २४ का भंग-को० नं० १६ के (नव अनुदिश- पंचानुत्तर के) २६ के भंग में से क्षायिक- क्षयोपश्चिमक ये २ घटा- कर २४ का भंग
مان مان ما	*	*
( ६२८ कोष्टक नं	>>	•
र्थान	m	से क्षायिक-क्षयोपश्मिक  ये २ सम्प्रकृत्व घटाकर्  ३१-२६-२६-२६ के भंग जानना २६-२९-२९-२० के भंग- को० नं०१६ के २६-२६-२१-२४-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-
चोतीस स्थान दर्शन	8	
व में	~	

- ४ प्रमाधना-को० नं० १८.१६ देखो।
- से ७७-६७-६२-४६-४८-४८-१९७-१ प्र० का वंष जानना। को नं ४ त्रंत प्रकृतियां —४ से ११वे पुर्णा में कम

के समान

- ज्ञानना ।
- बदग्र प्रकृतियां— ६४ ४थे गुर्गा० के १०४ में से नरक-तियैच-मनुष्य गत्यानुपूर्वी ३, नरक गति १, तियैच गति १, नरकायु १, तियैचायु १. ग्री॰ मिश्रकाय योग १, स्त्री वेद १, मपुंसक वेद १, ये १० यटाकर ६४ प्र० का उदय जानना। ५ से ११वे गुरा। भे क्रम से ५७-५१-७६-७२-६६-६०-५६ प्रं का उदय जानना।
  - सस्य त्रकृतियां ---४ से ११वे गुएए० में कम से १४५--१४६-१४६-१४६-१४२-१४२-१४२ प्र॰ का सत्य जानना
- २८ सरवा संख्यात जानना
- १६ क्षेत्र लोक का ग्रसंख्यातवां भाग जानना ।
- 30 स्पर्शंत लोक का ग्रसंस्पातवां भाग जानना।
- काल —नाना जीवों की यपेक्षा एक समय से वर्ष पृथक्त्व जानना । एक जीव की यपेक्षा यन्तमुँ हुतें से यन्तमुँ हुतें जानना ।
- ग्रन्तर---नामा जीवों की ग्रपेक्षा एक समय से वर्ष पृथक्त्व जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा ग्रन्तामुँ हुत् से देशोम् ग्रर्ध नुद्गल परायतीन काल तक द्वितीयोपशम सम्यक्त्व न हो सके।
  - जाति (योनि)—्ट लाख योनि जानना । (१४ लाख मनुष्य की, ४ लाख देशों की ये १८ लाख जानना ।
    - फुल---४० लाख कोटिकुल जानना । (मंनुष्य के १४, देवगति के २६ ये ४० लाख कोटिकुल जानना ।

बींबीस स्थान बर्गंन		
यान बहुन	काध्य न पर	A TITEL THE TAKE
		です。 マロースとする マーカンとする マーカンとする マーカンとする マーカンとする マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーカンと マーち マーち マーち マーち マーち マーち マーち マーち

क <sub>्</sub> रयान सामान्य ग्रालाप पर्याप्त नाना १ २	[				****	
	81				न्नपर्याप्त	ਸ਼
~	नाना जीव की क्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	/ १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
	m-	>>	<b>ઝ</b>	UP"	<b>9</b>	u
१ गुएए स्थान ४ • ४ से ७ तक के गुएए० (१) न (२) हि भ	©. फो ≻	सारे गुरा स्थान १ गुरा॰ अपने अपने स्थान के अपने अपने स्थान सारे गुरा स्थान के सारे मंगों में जानना से कोई १ गुरा॰	१ गुरा० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुरा० जानना	२ (१) नरक गति में ४था २) तिर्यंच गति में — भोग भूमि में अषा (३) मनुष्य गति में ४-६	सारे गुए।० यपने अपने स्थान के मारे भंग जानना	१ मुसा॰   श्रपने श्रपान   के सारे भंगों में   से कोई १ मुसा॰   जानना
र जीव समास २ (૫) दे १ संज्ञी पं॰ पर्याप्ति = = अपर्याप्ति १	(४) देवगति में त्रथा १ संज्ञी पं॰ पर्याप्त चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना	१ समास को० नं० १६ से १६ देखो	१ समास को०न० १६ से १९ देखी	भोग भूमि में ४या (४) देवगति में में ४था १ संग्रा पं० अपर्याप्त (१) नरक-मनुष्य-देवगति इ में हरेक में १ संग्री पं० अपर्याप्त	१ समास बिको० नं० १६-१ <i>द-</i> १६ देखो	१ समास को०नं० १६-१८- १६ देखो
		•		को० नं० १६-१८-१६ देखो (२) तियंच गति में भोग भूमि में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ समास को०न० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो
३ पर्योप्त को०नं० १ देखो (१) चा ६	६ (१) चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को०नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को०नं०१६से १६ देखो	को० नं० १७ देखो ३ १ भंग (१) नरक-मनुष्य-देवगति को० न० १६-१८- में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१८-१९	१ भंग 1० न० १६-१६- १९ देखो	१ मंग को०नं० १६-१ द- १९ देखो
			1	देखो		

चीं,	चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ६३ ) कोष्टक नं०	द ३१ ) म् ० प्र		क्षयोपशम सम्पक्त	म्टन में
~	ᠬ	er:	» ·	*	w	9	น
		•				१ भंग को०नं०१७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्रास् को० मं	१० को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में १०का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १६ देखो	लिंघ रूप ६ का भंग भी ७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग	१ भंग को०नं०१६-१ ट. १६ देखो	१ मंग को०नं०१६-१८- १६ देखो
	and the property of the second se			,	:U ~	१ भग क्रो० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
प्र. संज्ञा कोठ नं	पंजा कोठ नं० १ देखो	8 (१) नरफ देय-गति में हुरेंक में को०नं० १६-१६ ४ का भंग को०नं० १९-१६		१ भंग को०नं० १६— १६ देखो	को० नं० १७ देखो ४ (१) नरक-देवगति में हरेक में	१ मंग को०नं० १६-१८ देखो	१ भंग को०नं० १६- १६ देखो
	amazatan e esana esana esana esana esana esana e e e e e e e e e e e e e e e e e e				देखो i	१ भंग को० न०़ १७ देखो	१ <sup>ँ</sup> मंग की०नं० १७ देशो
६ मित मोनन	प मोबन्० १ देवो		काठन० १= दला १ मित	किंग्नि १८ देखा १ मित	का० न० १७ दखा (३) मनुष्य गति में ४-४ के मंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १= देखो १ गति	१ मंग हो०मं० १ द देलो १ गति

the second of the second

न्रीन्ति स्यान दर्शन	दर्शन	मोध्य	मं० प्र		क्षयोपशम सम्पक्त्व	मृत्व मे
~	,	>	×	US	9	ឋ
				(२) मनुष्य गति में १-२-१-१-३ के भंग	सारे मंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १व
१० वेब	mr (	~.	۰ مہ	को० नं० १ द देखो २ १	~	देख <b>ा</b> १
क्तां न १ द्या	(१) नर्फ गांत म १ नपुंसक वेद जानना क्रोत मंत्र १९ हेखो	का० न० १६ देवा	कां न० १६ देखो	स्त्रा-बद घटाकर (४) (१) नरक गति में १ नय मक वेट जानना	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ हेखो
	(२) तियंच गति में ३-२ के भग	१ मग को० नं० १७ देखो	वेद नं० २७	को० नं० १६ देखी (२) तियँच गति में	१ भंग	ਦਾ ਦਾ ~
	को० नं० १७ देलो			१ पुरुष वेद जानना	को० नं० १७ देखो	कों मं १७
	(३) मनुष्य गति में ३-३-१-१-३-२ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	वेद नं० १८	को० नं० १७ देखी (३) मनुष्य गति में	सारे भंग	देखा १ वेद
	को० नं० १ द देखो (४) हेबमित में	माने भंग	देखों १ वेट	१-११ के भंग को० सं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	को अने १ ९ ९ द देखो
		को० नं० १६ देखो	मं० १९		सारे भंग	ا، وا م
	का० न० १९ देखा				का० न० ९९ दबा	का० न० १६ देखो
	सूनानाः —ोच ६४० नं० पर देखो					
११ क्याम ३१ व्यास	२१ (१) सरुफ़ गरिन छे	सारे भंग को० नं० १६ भेत्रो	१ भंग को० मं० १६	२० म्यो वेत घराकर (२०)	सारे भंग	१ भंग
४ पटाक (२१)	१६ का भंग	77 Y	^		को० नं० १६ देखो	को० नंः १६
	का० न० १६ दला (२) तिर्यंच गति में	सारे मंग	१ भंग	१६ का भग-का० न० १६ देखो	P <sub>A</sub>	_ इ
	२१-१७-२० के भंग को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	(२) तियंच गति में भोगभिम में १६ का मंग-को०	सारे गंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७
,	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	भंग	को० नं ० १७ देखो		
-Maga	२१-१७-१३-११-१३-२० के भंग-को० नं० रत	को० नं० १८ देखो	शे कि निक्र देखी	(३) मनुष्य गति म १६-११-१६ के भंग	सार भग को० नं० १८ देखो	१ भग को० नं० १८
	देखी			को० नं० १८ देखो		देखो

\*\*\*

and the sample of the same of

चौतीस स्थान दर्शन	. दर्शन	( ६३४ कोष्टक नं०	् । य	·	क्षयोपशम सम्प्रक्त	म्स्व में
δ΄	m	>>	*	UJ	<b>9</b>	r
	(2) देवगति में २०-१६-१६ के मंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में १९-१९-१६ के मंग नोत्र नंत्र ५० नेनो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
१३ ज्ञान केवल ज्ञान घटाकर	~	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान देखो को०नं० १६ देखो	· ·	सारे भंग	१ ज्ञान
(8)	, को भग को० नं० १६ देखो (२) तियँच गित मे	१ भंग	१ ज्ञान	(१) (१) नरक गति में ३ का भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो ।
	१. १. ३ के भंग स्रोत मंत्र ३७ अस्मे		कोठनं० १७ देखो	को० नं० १६ देखो (२) डिन्तैंड मिटि से	, ,	İ
	(३) मनुष्य गति में इ. से. मंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १ द देखो	(४) तिपुत्र गात म भोग भूमि में ३ का भंग	र मग को० नंग १७ देखो	र आन को०नं० १७ देशो
	को०नं० १ द देखो (४) देवगति में	सारे भंग	% श्राम	को० नं० १७ देखो (३) सनध्य गति में	nin film	ر الا
	त्र मंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	३-३.३ के भंग	को० नं० १८ देखो	को०नं० १ द देखो
	काठ नठ १६ दत्ता			का० न० १८ दखा (४) देवगति मे	सारे भंग	१ जान
	Contrade the Contrade			३-३ के गंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को ०नं० १६ देखो
	36 36 36		१ संयम	; , , , , ,	~	~
सूधम सापराय ४, यथास्यात १ ये २	(१) नरक-देवगात में हरेक में	कां० न० १६- १८ देखो	क्षां०न० १६-१६ सेबो	संयमासंयम घटाकर (४)	100 m	; ;
घटाकर (४)	१ यसंयम जानना			११) गर्भान्ययाति म हरेक में	फाउन ७ ८५ <b>-</b> ८८   देखो	१६ देखो
	को० नं० १६-१६ देखो (२) निमेन मन्दि से			१ श्रसंयम जानना		
	१८) तिथ्व गात म १-१-१ में भंग	र मन् को० नं० १७ देखो	र सबम को०नं० १७ देखो	का० न० १६-१९ दखा (१) तियंच गति में	१ मंग	१ भंग
	कोठनं० १७ देखो (३) मनस्य मन्नि भे	‡ †		मोग भूमि में	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखी
	१-१-३-१-३-१ के भंग	को०नं० १८ देखो	त् तथम को०नं० १ प्र देखो	९ श्रसयम जानना को० नं० १७ देखो		
	की० नं० १८ देखी	- '		•	-	

_
×
m
w
_

चातीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नम	ग्रं / नम्बर् ८६		क्षयोपशम सम्यक्त	क्ति में
2	'n	>>	ጵ	-دن	g	រេ
				(३) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग कोठ न० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संपम को० न० १ म देखी
१४ दर्शन क्रियस दर्शन यदा कर	३ (१) नरक गति में ३ का भंग-कां० नं० १६	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	09°	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को नं० १६ देखो
	दल। (२) तिर्यंत्त गति में १-३ के मंग-को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं. १७ देखो	ඉ	भंग-	१ भंग ते० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में ३-३-३-३ के गंग को० नं० १८ देखो	सारे मंग को० नं० १८ देखो	ឋ	(३) मनुष्य गति में ३-३-३ के भंग को० नं० १ द देखो	सारे भंग गे० नं३ १८ देखो	१ दर्शन को नं०१ द देखो
१४ क्षेत्रमा फोरु नं० १ देनी	٠. عن	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो १ लेख्या को० नं० १६		१ भंग को नं०१६ देखो १ भंग हो० नं०१६ देखो	१ दश्तत को० नं० १६ देखो १ लेक्या को० नं० १६
	३ का भग-का० व० १६ यहो (२ मिर्यंच गति में ६-२-३ के भंग रे० नं० १७ रेखो	देखे	दला १ लेस्या को० नं० १७ देखो	३ का भग-का० न० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में-३ का मंग कोट नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	द ता १ लेश्या को० नं० १७ देतो
	(३) ममुष्य गति में ६-३ के भंग पोठ ने० १८ देशो (४, १।गति में १-३-१-१ के भग को ने० १६ देखो	तारे भंग को० नं० १= देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेखा को० नं० १८ रेखा १ लेखा को० नं० १६ रेखा		सारे भंग को० न० १८ देखी १ भंग को० नं० १६ देखो	र लेक्या को० नं० १८ हे ग्री १ लेक्या को० नं. १६
e de de la lactura de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la const						

मत्व में	u	~	~	~	१ को०नं० १६— १६ देखो	१ को०नं० १७ देखो	१ ज्ञवस्था को०नं० १८ देखो	१ उपयोग स्रोहेस	कार्या ५५ देखो
क्षयोपशम सम्यक्त्व	9	~	~	~	१ को० नं० १६- १६ देखो	१ को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग कोऽसं, १६ <del>३ल</del> ो	7
	រេ	१ पर्याप्तवत् जानना	१ पर्याप्तिवत् जानमा	१ पर्याप्तवत् जानना	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १-१ के भंग	को०नं० १६-१६ देखो (२) तियँच गति में भोग भूमि में १-१ के भंग	९७ दला गति में १–१ के मंग ९ न देखो	६ मन: पर्यय ज्ञान घटाकर (१) ११) नरक गति भे	
६३६ ) नं० नः	೫	&	~	~	१ को०नं० १६— १६ देखो	१ को०नं० १७ देखो • ननगण	र अपस्य। कों ठनं० १ द देखो	१ उपयोग₃. को०नं० १६ द्खो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो
( रांन कोष्टक	>>	~	~	~	१ को०नं० १६ १९ देखो	१ को०नं० १७ देखो सारे यंग	को <b>ं</b> त्र पत्त को <b>ं</b> नं १८ देखी	१ भंग नो० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
	m	१ चारों गतियों में हरेक में १ भस्य जानमा	को० नं० १६ से १६ देखों १ चारों गतियों में हरेक में	न । इरक	खाँ	१ ह दबा (बो	१२) १५५ में भंग १-१ के भंग को०नं० १८ देखो	७ (१) नरक गति में ६ का मंग को०नं० १६ देखो	(२) तियंच गति में ६-६ के भंग
चीतोस स्थान दशंन	. è / à	१६ भव्यत्व १ भव्य	१७ सम्यवत्व क्षयोपशम सम्द्रमत्व	१ न संज्ञी सज्ञी	१६ माहारक माहारक, मनाहारक			२० उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३, ये ७ जानना	

र्चोतीस स्थान दर्शन	शन द	र्यान	( ६३७ कोप्टक नं	३७ ) नं० दह		क्षयोपशम सम्यक्त्व	मः
~	رب ا	m.	×	ઋ	us	g	្ន .
		को० नं० १७ देखो			(२) तियँच गति में	१ भंग	१ उपयोग
		(३) मनुष्य गति में	सारे भंग		भोगभूमि में-६ का भंग	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७
		६-७-६-७-६ के भंग	को० नं० १८ देखो	મું	को० न० १७ देखो (३) मनाम मिन्से		देखां
		कीं नं १द द्वा (४) हेबगति में	१ भंग	दल। १ उपयोग	६-६-६ के भंग	नार मग को० नं० १ च देखो	् उपयाग को० नं० १व
	<del></del>	को० नं०	१६ को० नं० १६ देखो	मं० १६	को० नं० १ द देखो		देखो
				देखो	(४) देवगति में		१ उपयोग
	<del></del>				६-६ के भंग-को० नं०	को० नं० १६ देखो '	कों नं १६
1	Ç	(				# 1	दख।
२१ ह्यान ११	<u>ئ</u> ر ``	(2) जरस हेक्सरिय में	सार भग कोर बंद १६-१६	१ घ्यान क्रोत मंत्र १६-१६	११ (१) नरसः देवगति में	को भारतार भग	र स्थान कोन्नं १६-१६
ज्यान ४, वर्षच्या	J K	अरोक म	अखो १८ ५५१८	देखो	ह का मंग-को० नं०		देखो
मे ('२) ध्यान		१० का भंग-को० नं०			१६-१६ देखो	·	
जानना		१६ १६ चेलो			(२) तियँच गति में	१ भंग	१ व्यान
		(२) तियन गति में	१ भंग		भोगभूमि में – ६ का भंग	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७
		१०-११-१० के मंग	क्तो० नं० १७ देखो	मं० १७	को० नं० १७ देखो		देखो
	****	क्तों नं १७ देवी	-	देखो	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ व्यान
		(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ ध्यान	६-७-६ के भंग	को० नं० १८ देखो	को० नं० १व
	- 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10° - 10°	१०-११-७.४-१० के भंग	को० नं० १८ देखो	को० नं० १५	को० नं० १ द देखी		देखो
		मात्र स० १० व्या		दखा	•		•
र्श्यापन	ls xo		सार भग	11t &	36	। सार भग	१ भग
reserved 2,	100	यार मिथानाय याग १,			मनायाग ठ, वचनयाग ठ, गौर सम्म मोम १		٠
४. में हे गद्राम्हर	. 10	गाउ मिथासम्म गोम १	-		वैश्वाय योग ?.		
*)	(\$2)	नामित्राकाय योग १			मा० काययोग ?.		
•	,	वे ४ वटाकर (४४)	nig nam		स्ती वेद १, मे १२		
		(१) मरक मित में	सारे भंग	८ गंग	_		
	•	४० ता अंग-मो० नं०	को० नं० १६ देतो	की० नं० १६	.च.	सारे भंग	१ भंग
	<u>a</u> u soqo®a	१६ गेली		怎	३३ का भंग-को० नं० १९ भन्ने	कों० नं० १६ देखो	को० नं० १६
			-		१ ४ वसा		दर्भ

नातास स्थान दशन	दश्	काष्ट्रक न	न० प्रह		प्रथमोपशम सम्य	सम्यक्त्व में
2	ድ	<b>*</b>	<b>ઝ</b> ⊀	03"	ອ	î.
•	(२) तियैच गति म	सारे भंग	१ भंग	(२) तियँच गति में	सारे भंग	१ भंग
	४२-३७-४१ के भंग	को०नं० १७ देखो	कों०नं० १७ देखी	भूमि में		*2
	कार्य निर्वात १७ देखाँ १३) मनाम मनि भे	ţ. T	<u>.</u> į.	३३ का भूग स्रोता स्तार्थित		
•	82-56-55-69-58 4 July 92-58	को०नं० १ द देखो	कोठनं० १ द देखी	काठ नठ (७ वक्षा (३) मनव्य गींग में	सारे भंग	ू भंग
	के मंग	•		३३-३३-३३ के भंग		को०नं० १ द देखो
	को० नं० १ - देखो			को० नं० १ द देखो		
	(४) देवगति में	सारे भग	ू भः	(४) देवमति में	सारे भंग	१ भंग
	×	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखी		को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
	को० नं० १६ देखो					
२३ भाव ३७	9 er	सारे भंग	१ भंग	· >	सारे भंग	१ भंग
वेदन सम्यक्त १,	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	क्तो०नं० १६ देखी	मनः पर्यय ज्ञान १,		
ज्ञान ४, दर्शन ३,	को ०			~		
लिंड ४, संयमासंयम१,	के २८ के मंग में से			स्त्रीवेद १ ये ३ घटाकर		
सराग संयम् १, मति ४,	उपशम सायिक ये २	_				
क्षांघ ४, लिम ३,	सम्पक्त घटाकर २३ का			(१) नरक गति में	सारे भंग	१ भंग
लेश्या ६, असंयम १,	भंग जानना			२६ का भंग को अंत	कोउनं० १६ सेवो	कों भं १६ हेली
यज्ञान १, यसिद्धत्व १,	२६ का भंग को० नं०			१३ के २७ के भंग में से	•	
जिवत्व १, भव्वत्व १,	१६ के २७ के भंग में से १			सायिक सम्यक्त्व बटाकर		
य २७ भ व जानना	उपशम सम्यन्ति घटाकर	·		२६ का भंग जानना		
	२६ का भंग जानमा	,	· ·		ना भंग	१ भंग
	(२) तियंच गति में	一部神	१ भंग		को ० नं ० १७ देखो	कोठनं ० १७ हेको
	३१२८-२८ के भंग	को०नं० १७ देखो	कों किं १७ देखी		•	
	को० नं० १७ के ३२-२६-			के २५ के		
	३६ हरेक भंग में से उपशम			से सायिक सम्यक्त्व १		
	सम्यक्तं घटाकर ३१ - २ द-			वटाकर २४ का मंग		
	रद के भग बानना		,	जान ग		
	(३) मनुष्य गात म	सार भग	े भंग	नुष्य म	世	१ भंग
	かくしくにしくの チャーチ10	का० न० रव द्वा	,कार्जार्ज १ व द्या	スペースミースと 寄 おお	THE PLANE	かけるこれが

	चौंतीस	चौतीस स्थान दर्शन	् र्र्स् कोप्टक नं०	10 SP		क्षयोपशम सम्यक्त	बिरव में
-	0-	æ		አ	υν	9	տ
İ			•		२७–२५ के हरेक भांग भ भ ० अमितक समास्त		
		क्तावक । २ सम्बक्त्व घटा- कर ३१-२८-२६ के मग			म स १ जाविया प्रत्याप्य घटाकर २६–२६–२४ के		
				-	भग जानना (४) भ्यमन्ति मे	माने भंग	rein 9
		अस्ति भग कार्ना १८ अस्ति सम्मासिस		-	२६-२४-२४ के भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
		सायिक सम्यक्त्व घटाकर			कों नं १६ के उद-		
		२६ का भंग जानना			रहरह के हरेक		
		२६-२७ के भंग को० नं०			भग मंसं उपशम श्रार		
	,	्रद के ३१ (७व मुस्र क)		-	सामिक य र सम्पन्त		,
		भंग में में त्याम-आधिक			भंग जानना		,
	•	ये २ सम्यन्त्व घटाकर					
,		न भग					
			सारे भंग	१ भंग			
		२५ का भंग को० नं० १६	क्रिंड नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो			
		क २६ के भंग में से १					-
		उपश्म-सम्यक्त घटाकर					
		२ य का भग जानना	•	•			
		२७-२४ के भंग को० मं०	•				may s gardi
		१६ के २६-२६ के हरेक					
		ो में ठ सम्प्रकृष घ्रमाहर	•				~~~
		•					
		२४ का भंग कोंव मंव १९	-				
		क २५ के मंग में से १					, manner est
		157					
		२४ का भंग जानना					un van - ne
	***************************************						

```
सुचना—-अपर्याप्त यवस्था में वेदन सम्यवत्व सहित मरने वाला जीव नियम से कल्पवासी देव ही बनता है। परन्तु यपर्याप्त अवस्था में
```

ममुष्य ग्रीर तियंच गति का उदय उन्हीं जीवों मे हो सकता कि जिन्होंने टेवक सम्यक्त्व प्राप्त करने से पहले मनुष्य ग्रापु गर तियंच ग्रायु वन्य रखी हो, ग्रो नियम से भोग भू मे के मनुष्य या तियंच हो वनते हैं (देखो गो० क० ग०) ष्रवगाहना - को० नं० १६ से १६ देखो।

3

को० नं० ४ से ७ के समान जानना । वष मङ्गतियां— ७७-६७:-६३-५६

ङ्ग्य प्रकृतियां—१०४-द७-द१-७६

प्तय प्रमुतियां—- १४५-१४७-१४६-१४६

<u>ل</u> ۲.

मंख्या-- असंख्यात जानना ।

सेत्र--लोक का यसंस्यातवां भाग जानना ।

स्पर्धत—लोक का श्रसंस्यातवां भाग द राजु, को० नं० २६ के समान जााना ।

काल—नामा जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा श्रन्तमुँहूर्न से ६६ सागर काल तक निरन्तर वेदक सम्यक्ष्व रह

**भग्तर**---नाना जीवों की अपेक्षा कोई भ्रन्तर नहीं एक जीव की यपेक्षा भन्तमुँहर्त से देतीप् अभैतुर्गल परावर्तन काल तक क्षयोपशम सम्पकत्<sub>र</sub> जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना । (को० नं० २६ देखो)

फुल—१०दा। वाख कोटिकुल जानना ।

क्षायिक सम्यक्त्व में	1	र जीव के नाना । १ जीव के एक समय में समय में	<b>u</b>	सारे गुरा। १ गुरा। १ गुरा। अपने स्थान अपने स्थान के सारे गुरा। के सारे गुरा। से से कोई १	पुण् जानता  १ समास १ समास  १६ स्रोर १७ देखो १५-१६ स्रोर	१ भंग ते को० नं १६-१८- १६-१७ देहो
-	ऋपयदित	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	w	३ (२) नरक गति में (२) तियैच गति में भोगभूपि में ४था	(३) मनुष्य गति में  ४-६-१३  भोगभूमि में ४था  (४) देनगति में ४ था  १ सपर्याप्त अवस्था  १) नरक-मनुष्य-देनगति को० नं० १६-१८-  में श्रीर तिर्यंच गति में १६ ग्रीर १७ देलो	१ संजी पं॰ अपयप्ति जानमा को नं॰ १६-१८-१६ और १७ देखो १ भंग १ भंग १ भंग (१) नरक-मनुष्य-देवगति को॰ नं॰ १६-१८-१ भेगगुमि को अपेका ३ का भंग-को॰ नं०
~ W		एक जीव के एक समय में	ಶ	o गुसाo जपने यपने स्थान सारे के गुसाo में से बे ने}ंडें <	मुरा स्थान जानना १ समास को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो
कोप्टक मं <b>०</b>		एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	>	सारे गुर्सा स्थान श्रपने श्रपने स्थान के सारे गुर्सा स्थान जानना	१ समास को० नंः १६ से १६ देखो	१ भंग को मंग्रद्ध १९६ देखो
रर्शन	पयस्ति	नाना जीयों क्रै श्रपेक्षा	æ	मूचनाः—पेज नं॰ ६५२ पर देखो ११ (१) नरक गति में अया (२) तियँच गति में ४	(३) मनुष्य गति में ४ से १४ गोगभूमि में ४था (४) देवगति में ४था १ पर्याप्त ग्रवस्था चारों गि गों में हरेक में १ संज्ञी पंत्रेन्दिय पर्याप्त	को० नं
चौतीस स्यान दर्शन	द्ग <b>े हयान भामान्य</b> क्रालाप	•	٤	१ मुसा स्थान ४ से १४ तक के मुसा०	२ जीव समास २ संजी पं० पर्पाप्त स्रपण	व पर्गापि कोठ कंठ १ देतो

583

***
~
मः
्रका० न० १६-१६ देखो
श्रम को० नं० १७
H
कोठ नंठ
को० नं० १६
~
को भं
第一
को० नं०

<b>च</b> ैंतीस स्थान दर्शन	र स्थान स्थान	( ६४४ कोष्टक नं	0 & O		क्षांियक सम्यक्त्व	म्त्व में
c -	m	>>	<b>ઝ</b>	w	၅	ប
	को० नं० १८ देखो			(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	- वे व
	( ) देवगति में	सारे भंग	~	१-१-3-१ के भंग	कों नं ०१ द देखो	को० नं० १व
	२-१-१ के भंग	को० नं० १६ देखो	को नं १६	को०नं० १८ देखो (४) अनमनि भे	मारे भंग	देखों 9 येग
			- - - -	१-१ के भंग-को० न०	को० नं० १६ देखो	
			_	१६ देखो	•	देखो
११ कपाय २१	8 P	सारे भंग	१ भंग	30	सारे भंग	१ भंग
अनन्तानुवंधी कृपाय	,	को० नं० १६ देखो	कों मंं १६			
४ घटाकर( ५१)	१९६ का मग-का० न०		देखो	नरक गा	का . न० १६ देखा	का० न० १६
	१६ दखा   (२) निर्मन गनि भे	मांग भंग	irit.	१६ का भग-का० न० १८ भवो		द्धा
	११) तिवयं गाति म	मिनेट मेंट १७ भिन्नो	H) H. 055	८६ ५७। ८३) स्मिन मस्मिन्	माने भंग	Trite 6
	ं ७ देखो	P		_	भगकों नं १७ देखों	्नाः क्षो० नं० १७
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ भंग	को० न० १७ देखो	•	
	-3-0-68-83-83-82	नं० १८ देखो	कों मं ०१ द	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१भंग
	世 02-0-82-5-8-火-		देखो	१६-११-०-१६के भग	कों० नं० १ द देखो	को० नं० १न
	भग-को० न० १८ देखो			को० नं० १८ देखो		देखो
	(४) देवगति में	सारे भंग	१ भंग	(४) देवगति में	सारे भंग	१ भंग
	२०-१६-१६ के मंग	को० नं० १९ देखो	को० नं० १६	१६-१६-१८ में भंग	को० नं० १६ देखो	को नं० १९
	को० न० १६ दंखो		देखी	को० न० १६ देखो		देखो
१२ शान	ੜੀ (	सारे भंग	१ शान	>>	सारे भंग	१ ज्ञान
फुशान ३ पटाकर (५)	(१) नरक गति में 3 का भंग_कोत नंत १६	को० नं० १६ देखो	कों० नं० १६ स्रेती	मनः पर्यय ज्ञान घटाकर	-	
(· )	· ·		- ;;	(१) नरक गति में	क्षो० मं० १६ देखो	क्तों मं १६
	(२) तिर्यंच गति में	भंग	१ जान	ग-को		
	३ का भंग-को० नंग १७	को० नं० १७ देखो	कों मंं १७			
	द्यवा		देखो	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ ज्ञान
	(२) मनुष्य गांत म = ३-४-३-४-१ के भंग	सारंभग को० मं० १८ हेखो	१ ज्ञान को० नं० / ट	पोगभूमि में ३ का भंग	कोऽ नं० १७ देखो	को० न० १७ भूमरे
		2		- F		- 55
				,		***************************************

जीतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ६४५ कोप्टक नं०	. ou		क्षापिक सम्पक्त	मृत्व में
ė'	m <sup>*</sup>	>>	*	US	ອ	n
	को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३–३–१–३ के भंग को नं० १८ देखो (४) देवगति में	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे गंग	१ शान कोत्नं १ द देखो १ साम
१३ संग्रम को० नं० २६ देखो	७ (१ नरक-देवगति में में हरेक में १ समंग्रम जानना	१ को०नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	३-३ के भंग को० नं० १६ देखी ५ संयमासंयम, सूक्ष्म सांप- राय ये २ घटाकर (५) (१) नरक-देवगति में	देखो	, सार कोठनं० १६ देखो १ कोठनं० १६–१६
	को० नं० १६–१६ देखो (२) तियंच गति में १ का भंग को० नं० १७ देखो (३) ममुष्य गति में	मंग १७ देखो मंग	१ संयम को०नं० १७ देखो १ संयम होऽनं० १० हेलो	हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६–१६ देखो (२) तियँन गति में भोग भूमि में	देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	देखी १ संयम को०नं० १७ देखो
१४ दर्शन को० मं० १ <b>द दे</b> खो	१-१-३-३-५-१-१-१ के भंग को० नं० १:: देखो ४ (१) नरक गति में	न <b>०</b> ६५ दल। १ मंग नं० १६ देखो	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १–२–१–१ के भंग को० नं० १८ देखो ४ (१) नरक गति में	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १६ देखो
The second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second secon	र का भग कोठ नं० १६ देलो (२) सियंच गति में इ.का भंग कोठ नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	को० नं ० १६ देखो (२, तिर्यंच गति में भोग भूमि में ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देलो	१ दर्शन कोठनं० १७ देसो

₩ %

रक्टन में	ឋ	१ को०ं,नं० १६- १७-१६ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० न० १६- १६ देखो	१ को० न० १७ देखो	श्यवस्या को० नं० १८ देखो	, उपयोग       सो० नं० १६	    -   
क्षायिक सम्यक्त्व	Ð	१ को० नं० १६-१७- १६ देखो	१ को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
	υ <b>ν</b> -	१ (१) नरफ-तियँच-देवगति में हरेक में १ संजी जानना को० नं १६-∶७-१६	(२) मनुष्य गप्ति में १-०-१ के भंगको० नं०१८ देखो	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १-१ श्रवस्था	को० नं० १६-१६ देखो (२) तियँच गति में भोगभूमि में १-१ अवस्था जानना को० नं० १७ देखो	ग्नुष्य गति में १-१-१-१ के भंग न० १८ देखो	द मन: पर्यय ज्ञान घटाकर (८)	६ का भंग
मं० ६०	አ	१ को० नं० १६- १७-१६ देखो	१ को० नं० १ द देखो	१ को० नं० १६- १६ देखो	\$ 7 7	को० नं० १ द देखो	१ उपयोग को० न० १६ देखो	
कोष्टक नं०	>>	१ को० नं० १६-१७- १६ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	ं १ सारे भंग	को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
<u>je</u>	m	तियंच गति भोगभूमि की श्रपेक्षा जानना १ (१) नरक-तियंच देवगति में हरेक में १ मंत्री जानना को० नं० १६-१७-१६	(२) मनुष्य गति में १-०-१ के भग को० नं० १८ देखो	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ ब्राहारक जानग	को० नं० १६-१६ देखो (२) तियंच गति में १ प्रयस्था जानना को० नं० १७ देखो (३) मनत्य गति में	१-१-१-१ के भंग को० नं० १ द देखो	ह (१) नरक गति में ६ का भंग-को० नं० १६ देतो	
चीतीस स्थान दर्शन	~	संजी	•	र जनाहारक			ोग ४ तिम ४ आसता	
र्वातीस	~	१ = संशी		ि याहारक माहा रण,		-	२० उपयोग शानोपयोग ५ दर्गनीपयोग ४ ये (६) जानत	

चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	, कोष्टक न	६४५ ) नं० ६०		क्षायिक सम्यक्त्व	भूत्व मू
٠	m	>>	يا 	US"	໑	រេ
	(२) तिर्यंच गति में ६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सन्हे भंग	१ उपयोग को०नं० १७ देखो ० जातोस	को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में	१ भंग को०नं०१७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो
	् के भंग देखो	देखो		र गा गा को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-६-२-६ के मंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग ।ो०नं० १ द देखो
	६ क। मंग को० नं० १६ देखो	- 要 が ・ ・ ・ ・ ・ ・	कोण्य ९ ६ दख	का० न० १८ दखा (४) देवगति में ६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो
२१ ध्यान को० नं० १६ देखो	१६ (१) नरक-दंबगति मे हरेक में १० का भंग	सारे भंग को०नं० १६-१६ देखो	१ घ्यान को०नं० १६– १६ देखो	१३ प्रथक्त्व वितर्क विचार १, एकत्व वितर्के अविचार१,	सारे भंग	१ व्यान
	<u></u>	देखो 	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	ब्धुपारत प्रम्यागवात्रगार, ये ३ घटाकर (१३) (१) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग	को०नं० '६-१९ देखो	कोठनं० १६- १६ देखो
	(३) मनुष्य गति में १०-११-७-४-१-१-१- १-१० के भंग क्रोत बंत १० हेस्सो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	' ध्यान को०नं० १८ देखो	खो	१ भंग को० न० १७ देखो	१ च्यान को०नं० १७ देखो
				९ भ। मग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-७-१-६ के भंग को० नं० १≈ देखो	सारे भंग क्रो० नं० १८ देखो	१ घ्यान कोऽनं० १ द देखो
	-					,

		ώ _	( 3×3			,
चौंतीस	चौतीस स्थान दर्शन	कोप्टक नं	नं० ६०		क्षायिक सम्यक्त	पक्तव में
~	m	>>	અ	ω,	<b>9</b>	v
२२ ग्रान्तव ४=	» »	सारे भंग	१ भंग	m <sub>r</sub> w	सारे भंग	
मिरमास्य थे, ग्रनस्तानभन्धी कषाय ४	न्नार्व्याययोग १, वै० मिथकाययोग १.			मनोयोग ४, वचनयोग ४, मी. क्रामाम १	******	•
मे ६ वामर (४६)			-	त्राप्त पापवाता (, वै० काययोग १,	***************************************	
	कार्माण् काययोग १			मा० काययोग १,		
	(१) नरक गति में	सारे भंग	र भंग	स्ताव् १ मे १२ घराकर (३६)		
	४० का भंग	को० नं० १६ दखो	को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में	मारे भंग	१ भंग
	को० नं० १६ देखो			३३ का भंग	नो नं १६ देखो	को०नं० १६ देखो
	(२) तियंच गति म	訊.		को० नं० १६ देखो		
	हैं। से भग	को० नं १७ देखो	को०नं० १७ देखो	(२) तियैच गति में	रे भंग	१ भंग
	(३) मनव्य गति में	माने थंग	ļ	भाग भीन में	को०नं १७ देखो	को०नं० १७ देखो
	-とら6268585858585858585858	को० नं० १व देखो	कोठनं० १८ हेखो	दर का मग क्लोठ नंत १७ हेन्से	 	i i
	-51-62-23-23-53			(३) मनुष्य गति में	को० नं० १ द देखो	९ मर्ग कोठनंत २८ हेम्बो
	88-80-80-8-8-3-			३३-१२-१-१-३३ के भंग	•	
	क्षों मं १ भग			को० नं० १ द देखो		
	(४) देवमति में	माने भंग	т <u>і</u> , о	(४) देवगात म	भूत	
	४१-४०-४० के मंत	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	२२=१२-१२ फ मग को० नं० (६ देखी	न० १० दखा	काठनं १६ दखा
	को० नं० १६ देखो					
7.7 Eliz 63	४५ (१) तरक गति में	सारे भंग कोट बंद १६ टेको	्र भंग	ָּבְּבְּבְּבְּבְּבְּבְּבְּבְּבְּבִבְּבְּבְּבִבְּבִּבְּבְּבִבְּבִּבְּבְּבְבִבְּבִבְּבִבְּבִבְּבִבְּבִבְּבְבִבְּב	सारे भंग	१ गंग
न भाव है,	२६ का भंग	* •	काठन ० १६ वखा	मनः पथ्य ज्ञान १, मंगमासंग्रम १ मन्तेभेट १		
शाम ४, यसाम २,	मोठ मं० १६ मे २न भे			जनगातिमा १, रनाप्त १		
निहर ४, संगमा-	भंग में से उपशाम क्षयोप-			ये ५ घटाकर (४०)		
मगम १, सदायः	शम ये २ सम्यक्त्व घटाकर			(१) नरक गति में	明神	१ भंग
समिम १, मात ४,	१३ का भंग जानना			7.7	को० नं० १६ देखो	कोठनंठ १६ देखो
The o' last 4,		सारे	१ मंग			
	सार भूति म ५७ का मान वि	मिरि नि १३ देवा म	क्तीठनं० १७ देखा	१ दायोप		
	T S VY S STATE			सुम्पन्तं घटाकर् २६		

₩ ~

एवं में	ប							والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون والمستون وا			on the second second	
क्षायिक सम्पक्त्व	Ð	u										
	uy	२४ का भग-को० नं० १६ के २६ के भंग (नव	अनुदिश और पचानुत्तर) में से अपशम-क्षयोपश्चम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २४ का भंग जानना									
? ) jo & o	<b>*</b>	"		१ भूम	को० नं० १६ देखो		*				and a fine of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the control of the con	
( ६५१ दर्शन	>0	· ·		सारे भंग	मो० नं० १६ देखो		2			•		
	nor .	२०.१४-१३ के मंग- कोठ नं० १८ के समान	जानना २७ का भंग-को० नं० १८ के २९ के भंग में से उपशम-ध्रयोपकाम ये २	सम्पन्तव घटाकर २७ का जोनना (४) देवगति में	२७-२४ के मंग-को० नं० १६ के २६ २६ के हरेक	मंग में से उपराम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्य घटाकर	२७-२४ के मंग जानना २४ का भंग-को० नं० २० २० १० भे भंग से	१६ भ १४ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ				
चौतीस स्थान दर्शन	~											And the second section of the second section of the second section of the second section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section section secti
वि	~*											Appendix to the second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second

सुचना— क्षायक संम्या दर्शन में तिर्यच गति के कर्मभूमि के भंग नहीं वनते मराठी गोमट सार कर्मकांड पन्ना २७१ देखो ।

प्रवगाहना-को० नं १६ से १६ देखो।

वध प्रश्नुतियां---को० नं० ४ से १४ के समान जानना।

उदय प्रकृतियां—

सत्त्र प्रकृतियां —

संख्या-- प्रसंख्यात जानना ।

क्षेत्र--लोक का श्रसस्यातवां भाग जानना ।

स्पर्धन —लोक का श्रसंख्यातवां भाग जानना।

क्षाल-- नाना जीवों की ग्रपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा एक समय से साधिक ३३ सागर काल प्रमार्गा जानना ।

प्रन्तर – कोई प्रन्तर नहीं।

जाित (योनि)—२६ लाख योनि जानना ।

फुल—६६ लाख कोटिकुल जानना। (नारकी २५ देव २६, मनुष्य १४, तियैच में नभचर १२, स्थलचर १०, मुसर्पादि ६,ये ३१ मिलकर सब

६६ लाख कोटिकुल जानना)

संजी में	प्त	एक समय में	n	१ मुस्तः अपने श्वपन के सारे मुस्तः में से कोई १ मुस्तः जानना	१ समास कोठनं० १६ से १६ देखो १ मंग कोठनं० १६ से
	श्रपयिति	/ १ जीव के नाना समय में	9	सारे गुर्या० १ गुर्या० अपने अपने स्थान सारे गुर्या० जानना के सारे गुर्या० में से कोई १ गुर्या०	१ समास को० नं० १६ से १६ देखो १ भंग १ भंग हेखो
		नाना जीवों की ग्रपेक्षा	w	8 (१) नरक गति में १ ले ४थे (२) तियंच गति में १ -२ १ भोग भूमि में १ -२ -६ भोग भूमि में १ -२ -४ -६ भोग भूमि में १ -२ -४ -६ भोग भूमि में १ -२ -४ -६	१-२-४   १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ समास १ संशी पं० अपर्याचा १६ देखो १६ देखो १६ देखो १६ देखो १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ भंग १ संग १ संग १६ देखो लो० नं० १६ से १६ देखो सो० नं० १६ से १६ देखो १६ देखो सो० नं० १६ से १६ देखो सो।
कोष्टक नं० ६१		एक जीव के एक समय में	*	१ गुयाः के प्रापने श्रपने स्थान के सारे भंगें में से कोई १ गुयाः जानना	१ समास को०नं० १६ से १९ देखो १ मंग को०नं० १६ से १९ देखो
कोध्दव	,	एक जीव के नाना   एक जीव के एक समय में समय में	>>	सारे गुर्सा स्थान सारे गुर्सा स्थान जानता	नो १ समास देखो देखो १ भंग १ भंग को० नं० १६ से १६
दर्शन	पर्याप्त	नाना जीव की क्षा	m	१२ (१) नरक गति में १ से ४ भोग भूमि में १ से ४ भोग भूमि में १ से ४ भोग भूमि में १ से १२ भोग भूमि में १ से ४ (४) देवगति में १ से ४	१ संशी पं॰ पर्याप्त प्रवस्या नारों गतियों में हरेक में १ संशी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना गो॰ नं॰ १६ से १६ देखो नारों गतिनों में हरेक में ६ मा भंग हो०नं० १६ से १६ देखो
चीतीस स्थान दर्शन	के ह्यान   नामान्य बालाप		2	१ मुण् स्थान ४ च १२ तक के मुण्	द जीय समाम १ संदी पंठ पत्रश्चि मामिष्टा ३ ममिति सोठभ० १ देगी

( & % 3 )

चौतोस स्थान दशन	थान	( कोष्टक	६५४ ) तनं० ६१			संजी में
c` / &	æ	>	ж 	r	9	
०१ ग्रास ४	%	१ भंग	१ भंग	စ	१ भंग	१ भंग
को०नं० १ देखो	में हरेक में	कों अंतर १६ से १६ ।	. १६ कोठनं० १६ से	चारों गतियों में हरेक में	₩ W	को०नं० १६ से
and and	१० का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	दखा	१९ दला	७ का भंग को० नं० १६ से १६ देखी	१९ देखो	<b>१८ देखाँ</b> -
५ संजा			१ भंग	; ; ; . ≫	१ भंग	१ भंग
कों० नं० १ देखो	(१) नरक-तियैच-देवगति भे नरेज भे	को० नं० १६-१७- ०० भन्मे	कोठनं० १६-१७-	(१) नरक-तियँच-देवगति	को० न० १६-१७-	कोठनं० १६-१७-
				म हरक म ४ का भंग	ر بر مردا د بر مردا	- फु ७ ७
	को० न० १६-१७-१६			को० नं० १६-१७-१६		
	दखाः (३) सन्तः ३६	.ļ. 41	ا د	देखों (२) =====		
	(४) मनुष्य गांत म ४३२६ १००४ में भूस	はくせん	** *** ***	(२) मनुष्य गात म	भंग	ू भग
	०-२-९-९-९-८-४ क मग को०नं० १ द देखो	माण्त्र ६५ दखा	मार्गर १५ दख	8-8 क भरा को० नं० १८ देखो	न० १प द्रखा	का०न० १ द द्रष्ता
६ मति	> >>	१ मति	१ गति	~	१ मित	१ मित
को० नं० १ देखो	चारों गति जानना			चारों गति जानना		• .
७ इन्द्रिय जाति १	~ (i	~	~	~	~	~
संशा पचान्द्रय जाति	चारों गतियों में हरेक में १ संजी पंचेन्द्रिय जाति			पयप्तिवत् जानना		
	जानना					
	को० नं० १६ से १६ देखो					
र गाय तसकाय	ै चारों गतियों में हरेक में	~	~	१ पर्योध्नवत जानना	~	~
	को० नं० १६ से १६ देखो					
ह यान	~ ~ (	१ भंग	( १ योग	>>	१ भंग	१ योग
काठ नठ रूप द्वा	मिथकाययोग १,			ग्री मिश्रकाययोग १,		
	व । मञ्जूषाया। ५, मा० मिथकाययोग १.			वर्णामञ्जनाययोग १, सारु मिशकाममेम		
	໌~`	appa a se se se se se se se se se se se se se		कार्मास काययोग १,		
	य ४ याग पटान्हर (११)		~	ये ४ योग जानना		

संजी में	n	को नं० १६- १६ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो	ं योग को०नं० १८ देखो	~	१ वेद को०नं० १७ देखो	१ वेद कोऽनं० १ द देखो	१ वेद को०नं० १६ देवो	१ भग कोन्नं० १६ देशो
	ອ	कोण्नं ८१६–१६ देखो	१ मंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	۵	१ भंग को० मं <sup>त</sup> १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	स.रे भंग भो० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो
	w	(१) मरक-देवगति में हरेक में १-२ के मंग कोत मंत्र १००० नेको	तार पर ५५-१८ ५ ५१ (१) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के मंग को० नं० १७ देखो	(४) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के मंग को० नं० १८ देखो	३ (१) नरक गति में १ मपुंसक वेद जानना क्रो० नं० १६ टेनो	(२) तियंच गति में ३-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-१-१-२-१ भंग को० नं० १ द देखो	(४) दयगात म २-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो	२५ (१) नरक गति में ११-१६ के भंग को० नं० १६ देखो
8.3	*	कोठनं० १६-१६ देखो	देखी	१ थोग क्तेठनं८ १८ देखो	~	3 देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	१ मंग कोल्नं० १६ देखो
( ६४५ कोष्टक नं०	>>	को० नं० १६— १६ देखो	१ भग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १= देखो	~		सारे मंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	तारे मंग हो० नं० १६ देखो
दर्शन	N3-	(१) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग छोत मंत्र १६-१६ हेक्बो	(२) तिर्यन गति में ६-६ के मंग को०नं० १७ देशो	(३) मनुत्य गति में ६-६-६-६ के मंग को० नं० १८ दंखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानमा को० नं० १९ देखो	(२) तियंच गति मे ३-२ के मंग को० नं० २७ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१-०- २ के भंग	कारन ६५ द्या ( ) देवमति में २-१-१ के मेंग कोरने १६ रेगो	्र) १३ १६ के गंग को० नं० १६ देशी
चतिस स्थान दर्शन	۲,				३ को०नं० १ देखो				्र पोठ नेट १ देवो
व	~-			•	१० मेर कोठन				स्थात स्थाप

_
_
w
<b>√</b>
Ų,
_
_

		13 )	( ১৮১			2
चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नर	नम्बर ६१			संशी में
~	m'	>	<b>ক</b>	US	9	រេ
	(२) तिर्यन गति में	सारे	भंग	(२) तिर्यंच गति में	सारे	भूत
	२५-२५-२१-१०-४४-५०	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	२४-५ -२४-१६ में भग कोः मं० १७ देखो	कांठ न० १७ दबा	काठ न ० ९७ देखी
	AND THE STREET			(३) मनुष्य गति में	型.	% भंग मुंद्र भंग श्र
	(३) मनुष्य गति में २५-२१-११-१	सारं भग को० नं० १८ हेखो	१ भग को० नं० १८	२५-१६-११-२४-१६ भ भंग-को० नं० १८ देखो	का० न० रद्भवा	
	-0-2-3-2-5-0			(४) देवगति में	(日) (日)	्र भंग मेः
	२४-२० मंग-को० नं० १८ हेस्तरे			२४-२४-१६-२३-१६-१६काः के भंग-को० नं० १६	म ~ %	कार न १ ८८ देखो
	(४) देवगति में	सारे भंग	१ भंग	देखो		
	र४-४०-२३-१६-१६ के	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६			
·	मंग-को० नं० १६ देखो	1		ž	1 to 1	<b>०</b> न
१२ शान ६	رة الله الله الله الله الله الله الله الل	सारमग	र सान	५ स्क्रमित साम सम्बन्धा	417 41	
क्षवल सान घटाकर (७)	(१) मर्क नात म	٠ ٢ ٢	9- 	मुभवाप आर्था नथा नथा नथा मार्थ नथा मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ म		
6	2				को० नं० १६ देखो	कोर नं० १६
	(२ तियैच गति में	१ भंग	शान			<u>देखो</u>
		को० नं० १७ देखो	कों नं १७	१६ देखो ८० ६ ७ - ८० ३	~ ، <sub>ا</sub>	१ जान जोट यंट शह
	निरुप्त १७ द्वा (३) मनत्य गनि में	सारे भंग	द्ध। १ आत	(x)   44 410 H	<b>∂</b>	
		को० नं० १ द देखो		को० नं० १७ देखो		
	को० नं  १ द देखो	,	देखो	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	$\sim$
		सारे भंग	शान	२-३-३-२-३ के भंग	को० नं० १८ देवो	का. न० १६
	त्र-३ क भग-को० नं० । १६ भम्	का० न० १६ द्वा	कार्व न० १६	का० न० १८ देखा (४. भेनमभि भे	माने थंग	दख। ४ जाम
	- - - -		- -	<u>.</u> =	को० न० १६ देलो	
	:	c	¢	को० नं० १६ दखो		ब्दा
र असम क्षीर मंग्र दह देनो	ु (१) नरक-देवगति में हरेक में	र को० नं० १६-१६	को० मं० १६-	ं श्रमंथम, सामाधिक,	~	~
	१ यसंयम जानना	देखो	१६ देखो	क्षेदोपस्थापना परिहार		

	र्वातीस स्वान दर्शन	स्यान व	रशिन	( ६५७ कोष्टक नं	( % d o			संजी में
	~	~	mr.	<b>*</b>	አ	us <sup>a</sup> .	9	tr
		•	कोग्नं० १६-१६ देखी			! <del></del> ;}	2 C	00 11 11
				१ भग को०नं० १७ देखो	१ सयम कोठनं० १७ देखो	<b>.</b> .	कार नर १६—१६ विद्यो	कार्य ९६- १६ देखो
,			का० न० १७ दल। (:) मन्त्य गति में	सारे भंग	१ संयम	१ अस्यम् जानना कोठनं० १६-१६ देखो		٠,
				को० नं० १८ देखो	क्तोठनं० १८ देखो	(२) तियंच गति में १–१ के मंग	१ भंग को० नं० १७ देखो	्र संयम क्वो०नं० १७ देखो
			को० नं० १ = देखो		•	को० नं० १७ देखो		
						(३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग	सारे गंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १ द देखो
						को० नं० १ द देखो		•
	१३ दर्शन सोर संग्रह भूस	m t	्र १९) सङ्ख्य महिन में	१ भंग क्रोत मंत्र १६ हेस्बो	१ दर्शन क्रो०मं० १६ हेस्बो	भ (१) तरक गति में	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ दर्शन क्रो <sub>0</sub> नं० १६ देखो
,	y	 				२-३ के भंग		* * - 1 - 1 - 1 - 1
•			को नं० १६ देखी	•		को० नं० १६ देखो	•	•
			t <del>.</del>	१ भग क्रो०नं० १७ हेखो	१ दर्शन कोठनं० १७ देखो	(२) तियंच गति म २-२-३ के भंग	१ भग को० नं० १७ देखो	१ दशन क्री०नं० १७ देखो
. ,						कों नं १७ देवो		
			(३) मनुटम गति में		१ दर्शन	(३) मनुष्य गति में	出.	१ दर्शन
,			2-3-3-2-4-5 of that	क्रांग्न १ द देखी	क्तिं १ दिला	र-३-३-२-३ स भग	का० न० १५ द्वा	कार्या १ व स्था
				१ मंग	१ दर्शन	(४) देवगति में	१ मंग	१ दर्शन
			गंग	को० नं० १६ देखो	क्तों नं १६ देखो	२-२-३-३ की मंग	को० नं० १९ देवो	को०न० १६ देशो
	j	1.	कोठ नं० १६ रेजो			को में ने १६ वर्ता		
	次元祖	, T	(१) नरक गति में	१ सम् क्रो०नं० १६ देखो	र लक्या कोठनं० १६ देखो	(१) नरक गति में	( भ। मो० नं० १६ देखे	१ १६ देखो को०नं० १६ देखो
و که مید ایس		-				३ का भंग		
			क्ष मंग्र १६ देती			कोटनट १६ देखो		
		() andersegue 3	-	day paragabah			•	

त्र प्र स
Ū

	संजी में	v	१ लेखा	को० नं० १७	देख <u>ो</u>	१ लह्या को० नं० १८	देखो.	१ लेखा	को० नं० १९	देखो	१ अवस्या	का० न० ९६ स	( D) U U V	१ मध्यवत्त्र	कोंं मंं १६	देखो			१ सम्यक्त	कों नं १७	द्वा ।	को मं० १६	देखो	१ सम्पक्त्व	को० नं० १६	दला	ו
		9	१ भंग	को० नं० १७ देखो	:	सार भग को० नं० १६ देखो		१ भंग	को० नं० १६ देखो		~	काठ नं ठ १६ स ०० भेटने		सारे भंग	•	कों नं ०१६ देखो		,	० भंग	क्री० न० १७ दव्हो	सारे भंग	ने नं	•	सारे भंग	को० नं० १६ देखो		<b>~</b>
		US	(२) तियैच गति में	३-१ के भंग-को० नं०	१७ देखों	(३) मनुष्य गात म १६-३-१ के भंग	को० नं० १८ देखो	(४) देवगति में	३-३-१-१ के भंग	कों० नं० १६ देखो	7	नारा गातया महरक म ३-१ के जंग होते न		± 5⊀	मिश्र घटाकर (४)	(१) नरक गति में	१-२ के भंग-को० नं०	१६ देखो		%-१-१-१ क भग को० म० १७ भमे	(३) मनव्य गति में	१-१-२-१-१-१ के मंग	को० नं० १८ देखो	(४) देवगति में	१-१-३ के भंग-को० नं० व	, c 154 17	्र पर्याप्तवत् जानना
г) .	न० ६१	ઝ	१ लेश्या	को० नं० १७	द्वा	र लखा को० नं० १६	देखो	१ लेश्या	कों मं १६	दला	र अवस्था सोर मं ००	से २० सेवो	- ;; ;	१ सम्यक्त्व	को० नं० १६	देखो		१ सम्यक्त	का० न० १७	दखा १ सम्यक्तव	कों मं १ १	देखो	,	< सम्यक्त्व => = क्ष्र	का० न० ९६ देखो	~ *	•
``````````````````````````````````````	मोप्टक	>>	१ भंग	कों नं १७ देखो	# * *	कोठ नं० १८ देखी		१ भंग	को० नं० १६ देखो	ii. o	*** *** *****************************	بر م م		सारे मंग	को० नं० १६ देखो			भेग	का० न० १७ दिला	सारे भंग	को० नं० १८ देखो			सारभग	₩ <b>~</b>	~	,
		m	(२) तियँच गति में	६-३-३ के भंग	कों मंं १७ देखों	(२) मनुष्य गात म ६-३-१-३ के भंग	को० नं० १ द देखो	(४) देवगति में	१-३-१-१ के भंग	क्तां नं १६ देखां	は一次のは、社会は、大学のは、大学のでは、それらいは、大学のでは、それらいは、大学のは、大学のは、大学のは、大学のは、大学のは、大学のは、大学のは、大学の	२-१ से भग-को० मं०		us <sup>r</sup>	(१) नग्न गति में	१-१-१-३-२ के भंग		(२) तियच गात म	१-१-१-१-१-१-१ के भगका का व	(३) मनध्य गति में		१-१-१-१ ३ के भंग-को०		(४) देवगति म	करे. १-१-१-१-१ मर्ग	~	चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना
•	चातास स्थान दश्न	r								n	22 K.IK				० २६ देखो											۰۰	संग्री
	चांतास	~								9 c sterrer	भुद्धाः भुद्धाः			१७ सम्यनत्व	को० नं०											१८ संशो	

संजी मे	រេ	स्या १ अवस्या भे १९ मने में १९ मे	सेंबो	१ उपयोग		मोठ गंठ १६ देखो		11	र उपयाग को०मं० १७ देखो		१ उपयोग	को०नं० १८ देखो		१ उपयोग	क्तोजनं० १६ देखो		१ ध्यान				कोठनं० १६-१६	製			१ ह्यान	क्तिंग्नं १७ देता	
	၅	दोनों अवस्था	नारा ५ ५ देखो	१ भंग		को० नं० १६ देखो		ţ	र मग को० नं० १७ हेखो		सारे भंग	को० नं० १८ देखो			को० नं० १६ देखो		सारे भंग				को० नं० १६-१६	थेवो			१ भंग	कों नं १७ देवो	
·	n <sub>o</sub> ,	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	चारा गातथा म हर्ष्य भ १- की म्रवस्था क्रोब नंब १६ मे १६ हेखो	10 m	कुग्रवधि ज्ञान, मनः पर्पय	गान घटाकर (ट) (१) नरक गति में		को० नं० १६ देखो				•	को० नं० १८ देखी	(४) देवगति में	४-४-६-६ के भंग	को० नं० १६ देखो		पृथमत्व वितकं विचार,	एकत्व वित्तकं अविचार,		(१) नरक-देवगति में		त- <b>६ के भंग</b>	कोठ नं , १६-१६ देखो	(॰) तिर्गच गति में	न-द-१ मे भंग	को० नं  १७ देखो
. ) 	જ	,	काठन० १६ स १६ देखो	१ उपयोग	को०नं० १६ देखो		१ उपयोग	को०नं० १७ देखो	tefrence 6	क्रीठमं० १ द देखी			१ उपयोग	क्रिंग्नं १६ देखी	,		१ च्यान	कोठनं० १६-१६	देखो			१ ६११न	क्री०नं० १७ देखो				
( ६५६ कोष्टक नं०	>>	~	काठ नठ १६ स १६काठन ० देखों १६	१ भंग	को ०नं० १६ देखो		१ भंग	कोठनं० १७ देखो	माने भंग	को० नं० १८ देखी	•		ر بنا د	को० नं० १६ देखो			सारे मंग	किंग् मंग्रह-१६	雪			१ भंग	कों मंं १७ देखो	· · · · · · · ·	n nggad Wyl ach	PR-7	_
दर्शन	W.	१ श्राहारक १ १ १ १	चारा गातया म हरक म १ आहारक जानना क्रोंट कं ०६ के ०६ टेको	٩٥ ما در دعا در دعا در دعا	(१) नरक गति में	४-६-६ क मंग कोठनं० २६ देखो	(२) तियैच गति में	४-६-६-४-६-६ के भंग 	काठन० १७ दखा (३) मनाय गमि में	3-3-1-0-5-0-5-3-1	के मंग	को० नं० १ न देखो	(४) देवगति में	प्र -६-६ के भंग	करें नं १६ देनो		>> ~	(१) नरक-देवगति में	हरेक में	द-€-१० के भग	को० नं० १६१६ देखो	(२) तियंन गति में	E-E-30 88-5-80	के भूग	फो०नं० १७ देखो		
चौतीस स्यान दर्शन	۶	१६ ब्राहारक २	त्राहारक, त्रनाहारक	२० उपयोग १०	ड मिनेषयोग ७,	देशनाष्याम ३, मे १० जानना										•	२१ व्यान १४	मुडम निया प्र० १	न्मूप्रत पिता नि १	में र महाक (१८)		- <i>y</i>	******			~~	

<u> </u>
0
w
•
_

संजी में	r	र ध्यान को०नं० १ द देखो	१ भंग	१ भंग को०नं० १६ दखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१. भंग को०नं० १८ देख	१ भंग को०नं० १६ देख	१ भंग
	9	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग	सारे भंग को०नं० १६ देखो	सारे मंग के ० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग
	US	(३) मनुष्य गति में ८-९-७-८-६ के भंग को० नं १८ देखो	४ मनोयोग ४, वचनयोग ४, झौ० काययोग १, वै० काययोग १, , झा० काययोग १.	ये ११ घटाकर (४६) (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग	नार पट ९५ ५५। (२) तियम गति मे ४४-३६-४३-३६-३३ के मंग	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-१२-४३-३८- ३३ के भंग	को० नं० १ द देखो (४) देवगति में ४३-३ द-३३-४२-३७-३३- ३३ के मंग को०नं० १९ देखो	४१ कुग्नवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, मिश्र-
o ) o & ?	24	१ ध्यान कोठनं० १ द देखो	१ भंग	१ भंग को०न० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं०१६ देखो
( ६६० कोष्टक नं०	>>	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो
चोतीस स्थान दशन	er er	(३) मनुष्य गति में =-१-१०-११-७-४-१-मो० नं० १-=-१० के भंग को० नं० १९ देखो	५३ श्री० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, श्रा० मिश्रकाययोग १,		•	७ देखो मॅ -३७-२२-२०- -१४-१३-१२-	~	को० नं० १६ देखो ४६ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२० के भंग
चीतीस	8		ाथव ५७ को० नं० ७१ देखो					%, %, %, %, %, %, %, %, %, %, %, %, %, %
error (	~		२२ ग्राथव को० नं०			,		२३ भाव केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १ धारिक लिंड्य ये ७ घटाकर

हों।  ह दृह १ )  ह वा सम्प्रमुख्य १, संयमा- सम्प्रमुख्य १, संयमा- सम्प्रमुख्य १, संयमा- सम्प्रमुख्य १, संयमा- सम्प्रमुख्य १, संयमा- १, साविक- १७ देखी सोठनं० १७ देखी सोठनं० १७ देखी सोठनं० १६ देखी सोठनं० सोठनं
( ६६१ )  प्र प्रमाणक है , संगमा- सारे भंग है भंग संगम है , संगमा- सोठ नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो सारिक में प्रमाणक है है देखो हो० नं० १६ देखो हो० नं० १६ देखो हो० नं० १६ देखो हो। नं० १६ देखो
कोएटक नं० ६१  ४  ४  सम्यक्ष्व १, संयमा- सारे भंग १ भंग सम्यक्ष्य १, संयमा- को० नं० १७ देखो को०नं० १७ देखो वार्तिय १ थ घटाकर (११) नरक गति में २५-२७ के भग को० नं० १६ देखो को०नं० १८ देखो (१) सिर्यंच गति में २९-२६-२४-२२-२५ के भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो को० नं० १६ देखो
कोण्टक नं ० ६ १ ४ ४ ४ सारे भंग १ भंग १ भंग को० नं ० १७ देखो को०नं ० १७ देखो सारे भंग १ भंग को० नं ० १६ देखो को०नं ० ११६ देखो
कोण्टक नं
को० नं० १६ देह को० नं० १६ देह ३१-२६-३०-३ २७-२५-२६ २ को० नं० १७ देह ११-२७-१-२२ २१-२७-१-२२ २१-२७-१६-२ २१-२६-२०-१ २१-२६-२१-२ २१-२६-२१-२ २१-२६-२१-२१ ११-२६-२१-१ ११-२६-२१-१
१ २
न् <u>न</u> निर्म

- श्रमगाहना- को० न० १६ से १६ देखो।
- वध प्रकृतियां १२० भंगों का विवर्षा को० नं० १ से १२ के समान जानना ।
- डबष प्रक्षतियां—११३ उदययोग्य १२२ में से एकेन्द्रियादि जाति ४, ज्ञातप १, साधाररा १, सूक्ष्म १, स्थावर १, ज्ञपयित १ ये ६ घटाकर ११३ जानना। इसका विवर्षा १ से गुर्षा० मे १०५ को० नं० १ के १ ७ में से ऊपर की ६ प्रकृतियां घटाकर १०५ जानना,
  - २रे गुएए० में १०६ को० न० २ के १११ में से एकेन्द्रियादि जाति ४, स्थावर १ ये ५ घटाकर १०६ जानना, ३रे से १२ गुराए
    - में शेप भंगों का विवर्षा को॰ नं॰ ३ से १२ के समान जानना।

सत्य प्रक्रुतियां — १४८ भंगों का विवर्षा को० नं० १ से १२ के समान जानना ।

- संख्या--- श्रसंख्यात जानना । S S
- क्षेत्र--लोक का श्रसंख्यातवां भाग जानना ।
- स्पर्शन—लोक का श्रसंस्यातवां भाग न राजु, सर्वलोक को० नं० २६ के समान जानना ।
- नाना जीवों की ग्रपेक्षां सर्वेकाल जानना । एक जीव की ग्रपेक्षा क्षुद्रभव से नवसौ (६००) सागर क़ाल प्रमास्स जानना । 2
- **प्रन्तर—**नाना जीवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं । एक जीव की ग्रपेक्षा कुद्रभव ग्रह्**ए काल से ग्रसंक्यात पुद्**गल परावर्तन काल तक संज्ञी न वन सके।
- जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना । (को० नं० २६ देखो)
  - फुल---१०८॥ लाख कोटिकुल जानना

यतंती में	ÎA	एक जीव के एक समय में	ı	र मुसा॰	१ समास कोर्ज्न १७ देखो	१ मंग को०नं० १७ देखो	१ मंग कोठनं० १७ देखो	१ भंग ४ का मंग
<b>ж</b>	अपयिपि	/ १ जीव के नाना समय में	9	मु स्थान	१ समास को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग की० नं० १७ देखो	१ मंग ४ का मंग
		नाना जीवों की घ्रपेक्षा	سوں	२ (१) तियैच गति में	१-२ गुरा स्थान जानना • अपयिष श्रवस्था (१) तियैच गति में ६ जीव समास अपयिष	जातना की० नं० १७ देखो ३ (१) तिर्यंच गति में ३ का भंग को०नं० १७ देखो	-४ के व्यवास, में	७-६-५-४-३ के <i>मंग</i> को०नं० १७ देखो ४ पर्यासद् जानना
कोष्टक नं० ६२		एक जीव के एक समय में	<b>ઝ</b>	~	्रसमास को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ मंग को०नं० १७ देखो	१ मंग ४ का मंग
कोल्ट		एक जीव के नाना समय में	>>	~	१ समास को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ४ का भंग
दर्शन	। पर्याप्त	नाना जीव की क्षा	er	१ मिथ्यात्व (१) तियंच गति में १ मिश्यात्व जनका	६ पर्याटन आस्या ६ पर्याटन प्रवस्या १) तियेच गति में ६ जीव समास पर्याप्त जानना	को० नं० १७ देखो ५ (१) तियंत्र गति में ५-४ के भंग जानना को० नं० १७ देखो	(१) तिर्यंत गति में ६-द-७-६-४ के भंग को० नं० १७ देखो	४ (१) तिर्यंच गति में ४ का भंग को० नं० १७ रेजो
चीतोस स्थान दर्शन	के स्थान मामान्य ग्रालाप		8	१ मुस स्यान मिथ्यात्र्य सासादन	२ जीव समास १२ संशो पंत्रीन्द्रय के पर्याप्ति - प्राप्यां हत ये २ घटाकः (१२)	३ पर्याप्ति ४ मन पर्याप्ति घटाकर (४)	४ प्राप्त मनोबल प्राप्त घटाकर (६)	थ संझा सो० गं० १ देतो

η, Δ, ω,

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ६६ कोष्टक नं०	६६४ ) मं० £२		<b>Ж</b>	श्रसंजी में
٥	æ	>>	<b>್ಷ</b>	us	9	r (
६ गति ७ इन्द्रिय जाति १	१ तियंच गति मे भू	१ % १ जाति	१ १ जाति	or 51	१ १ जाति	१ १ जाति
१ से ग्रसंज्ञी पं॰ पर्याप्त	(१) तियंच गति में ४ एकेन्द्रिय से असंजी पंचेन्द्रिय पर्यात्त जानना			(१) तियंच गति में ४ श्रसंजी पं० तक पांचों ही जाति जानना को० नं० १७ देखो		
न काय को० नं० १ देखो	नाउं १७ ५९। ६ (१) तियंच गति में ६ को भंग	१ काय	१ काय	(१) तियँव गति में ६—४ के भंग	१ काय	१ काय
६ योग श्रौ० मिथकाययोग १, श्रौ० काययोग १,	को० नं० १७ देखी २ ग्री॰ काययोग १, ग्रनभय वचन योग १.	१ भंग	१ योग	को० नं० १७ देखो २ ग्रौ० मिश्रकाययोग १, कामांग काययोग १.	१ भंग	१ योग
कार्माएए काययोग १, शतुभय वचनयोग १, ये ४ योग जानना	ये २ जानना (१) तियैन गति में २-१ के भंग	१ भंग	१ योग	ये २ योग जानना (१) तियंच गति में १-२ के भंग	१ भंग	१ योग
१० पेद को० नं० १ देखो	को० नं. १७ देखो ३ (१) तियंच गति में १–३ के भंग	१ भंग	~ वी वी	को० नं० १७ देखो ३ (१) तिर्यंच गति में १३ के भंग	१ भंग	% क क
११ कपाम को० नं० १ देखो	को० नं० १७ देखो २५ (१) तियँच गति में २३-२५ के भंग	सारे भंग	१ भंग	को० नं० १७ देखो २५ (१) तिर्यंच गति में २३-२५-२३-२५ के भंग	सारे भंग	१ भंग
१२ ज्ञान कुमति-नुश्रुत	को नं० १७ देखो २ (१) तिर्यन गति में २ का भंग	१ भंग	१ ज्ञान	को० नं० १७ देखो २ (१) तियैच,गति में २ का भंग	१ भंग	१ शान
	को० नं० १७ देखो			को० न० १७ देखो		

;

	असंजी में	n	१ संयम	१ दर्शन	१ लेस्या	१ जनस्या	१ सम्पक्त	~	१ जवस्था	१ उपयोग
	, w	<b>9</b>	१ भंग	१ भंग	१ भंग	१ भंग	१ : १	~	दीनों अवस्था	१ मंग
		us	१ पर्याप्तवत् जानना	२ पयस्तिवत् जानता	र ३ का भंग को० नं० १७ देखो	. १). तियंच गति में २-१ के मंग	कोठ नं ८ दुवा २ (२) तियान गति में १–१ के भंग सोट नं १७ वेसो	~	२ (१) तियंच गति में १-१ के मंग को० नं० १७ देखो	४ (१) जियंच गति में ३-४-३-४ मंग को० नं० १७ देखो
ं ( क्रेडे	० ६२	አ	१ संयम	१ दर्शन	१ लेखा	१ जवस्या	~	~	~	१ डपयोग
	कोप्टक नं०	×	१ मंग	१ मंग	१ भंग	१ मंग	<del>م</del>	~	~	१ मंग
	रर्शन	er	१ (१) तियँच गति में १ ऋसंयम जानना	को० नं० १७ देखा २ (१) तियँच गति में १–२ का भंग को० नं० १० सेन	भार पुरु पुता ३ ३ का मंग को० नं० १७ देखो	२ (३) तियँच गति में २ मिय्य त्व जानना को० मं० १७ हेस्सो	१ १ तियान गति में १ मिया त्व जानना सोव नंव १७ देखो	१ प्रमंडी आनता	(१) सिर्मन गति मे १ माहारक जानना को० नं० १७ देनो	४ (१) तियंच गति में ३-४ के भंग को० मं० १७ देतो
	मेंतीस स्यान दर्शन	۲	१३ संयम प्रसंयम	१४ दर्गन प्रनित्तु दर्शन, नधु दर्गन ये (२)	१४ तेयम प्रयुभ तेयम	१६ भव्यत २ भव्य, ग्रभ य	१७ तम्पद्धत गिष्यात्म, तासारन	१= संशी प्रसंशी	में अंभ	२० जाणीम ४ जानीमाम २, दमेनोममोम २ मे ४ जानम

प्र० का उदय जनिना। सत्त्व प्रकृतियां—१४७ तीयैकर प्र० १ घटाकर १४७ प्र० मा सत्व जानना

व संख्या – ग्रनन्तानन्त जानना

ध्रम्म सर्वलोक जानना। स्पर्शन-सर्वलोक जानना।

काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा सादि असंजी क्ष्ट्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक जानना ।

मन्तर—नाना जोवों की ग्रपेक्षा कोई ग्रन्तर नहीं। एक जीव की ग्रपेक्षा सादि ग्रसंनी क्षुद्रभव से नवसी (६००) सागर काल प्रमाए। तक ग्रसंती न वन सके।

जाति (योनि)—६२ लाख योनि जानना । (एकेन्द्रिय ५२ लाख, विकलेन्द्रिय ६ लाख, ग्रसंज्ञी पंचेन्द्रिय ४ लाख, ये सव ६२ लाख जानना) कुल--१३४॥ लाख कोटिकुल जानना । (एकेन्द्रिय ६७, विकलेन्द्रिय २४, ग्रसंजी पचेन्द्रिय ४३॥ ये सव १३४॥ लाख कोटिकुल जानना ।

को० नं० १७ म्रौर २६ देखो

<b>~</b> -
u w
_

¢

चौंतोस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं	m	अनुभय सं	अनुभय संजी (न संजी न	न असंजो) में
क्र० स्थान सामान्य श्रालाप	प पर्याप्त			श्रपयधित		
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	् जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
~	m	>>	<b>24</b>	US	9	น
१ मुस्स स्थान १३-१४ से २ मसा	े अड.१४ में अपना	सारे गुरा स्थान	• मुसा	१३वे सम्पन्नसम्बद्धानस	~	~
र जीय समास संज्ञी पं० पर्याप्त श्रप	( <u>2</u>	~	~	१ सप्यांत्य अवस्था १ संजी पं० अपर्याप्त	<b>~</b>	~
३ पर्यापि को० नं० १ देखो	र प्रशा न प्राप्त प्रवास जानना कोठ नं० १६ देखो ६ (१) मनुष्य गति में ६ का भंग-कोठ नं० १६ देखो	१ भंग	१ भंग	नों। को के इंट हो हो (१) मनुष्य गति में ३ का भंग-को ० नं० १ द देखो	१ भंग	१ भंग
४ प्रास् को० नं० १३ देखो		सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १ द देखो	लिडव रूप ६ का भंग भी होता है २ वचनवल ख्वासोच्छ्वास पे २ घटाकर (२) (१) मनुष्य गित में	सारे भंग को० नं० १ द देखो	१ भंग को० न० १ व
५ संज्ञा	(०) प्रपगत सज्ञाः १ मनुष्य गति जानना १ संज्ञी पं० जाति १ जसकाय	0 ~ ~ ~	·	२ का भंग-को० नं० १८ देखो ० १ १ १	0 ~~ ~	देख <u>ो</u> ४०० १०

असंजी) में	r	१ योग	**************************************	१ योग	का० न० १द   देखो	o	0	~		-	~			~	~			•	~	c	१मवस्या	कीं मंं रूद	- - - -	
अनुभय संजी (न संज्ञी न	9	सारे भंग		भंग	का० न० १५ दखा	0	•	**			~			~	~		``	<b>~</b>	~	o`	म्स	क्ति न १ द देवो		
अनुभय स	υ <del>ν</del>		क्षा० ।मथकाय याग <i>१,</i> कार्मासामाय योग १ ये २ योग जानना	丰			0	ر ا	(१) मनुष्य गात म १ केवल झान जानना	को० नं० १ द देखो	~	(१) मनुष्य गति मे	१ पथाल्यात संयम को० नं० १८ देखो	~		it .	र का भग-काठ नठ १८ देखी	१ मन्य	१ सायिक सम्।क्त्व	0 (		निष्यं गति म सन्ध्याः वास्त्राः	को० मं  १ द देखी	-
0 R 3	54	१ योग		१ योग	का० न० १प देखो	٥.	0	~			~			~	~			~	~	0	र अवस्था	श्र अवस्या स्रोत जेत श्रम	1000年	Poster
( ६६६ कोष्टक नं०	>>	सारे भंग		सारे भंग	का०न० १५ द्खा	0	· o	~			~			~	~			~	~	o '	नार मा	दान्हा जवस्या संघ नं ३ म मेले		_
दर्शन	ſſŶ		ग्रो० मिश्रकाय योग १, कार्मागुकाय योग ये २ घटाकर (५)		५-३-० क भग को० नं० १८ देखो	(०) ग्रपगत वेद	(०) मन्त्राय	~ ;	(१) मनुष्य गात म १ केवल ज्ञान ज्ञानना	को० नं० १ द देखो	~	(१, मनुष्य गति में	१ यथास्यात सयम को० नं० १८ देखो	१ केवल दर्शन	~	(१) मनुष्य गति में	१-० क भग को० नं० १८ देखो	१ भव्य	१ धापिक सम्पक्त	(०) प्रनुभय	<u>ም</u>	(१) मनुष्य गति मे	१-९ प्रवस्था जागमा कोठ नंठ १८ देखो	
चोंतीस स्थान दर्शन	o		ं १ देखा		., ., ., .,	0	0	~			~			~	~	न लेख्या		240	~	0	O.	पाहारक, प्रमाहारक	e other der was not dynamic	
बाँ	~	ह योग	की व मं		•	१० वेद	११ क्षाय	१२ ज्ञान.			१३ संयम			१४ दर्गम	१५ लेख्या	युगल		१६ मध्यस्य	१७ सम्पन्त	१८ संगी	१६ महारक	याहारक,		

चौतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नं	त मं ० १८ स	श्रनुभय संज्	अनुभय संज्ञी (न संज्ञी न असंज्ञी) में	ज़ी) में
~	m <sup>r</sup>	>	×	UF	9	ឋ
२० उपयोग केवल ज्ञान-केवल दर्शनीपयोग ये (२)	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग-युगपत्	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १ द देखो	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग-युगपत्	ं सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
२१ ध्यान सुःम क्रिया प्रतिपाती ध्युगरत क्रिया नि॰ ये २ ध्यान जानना	का न १६ दखा २ '१) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ घ्यान को० नं० १८ देखी	का० न० १८ ६७। १ (१) मनुष्य गति में १ का भंग-को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो
२२ श्रासव को० नं० १३ देखो	भू और मिश्रकाय योग १,	सारे भंग	१ भंग	२ झौ० मिश्रकाय योग १,	सारे भंग	१ मंग
	कामायाकाय थाग १ ये २ धटाकर (४) (१) मनुष्य गति में ४-३-० के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ मंग को० मं० १ द	कामाराकाय याग १ ये २ योग जानना (१) मनुष्य गति में २-१ के मंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १व
२३ श्रासव को० नं० १३ देखो	€	सारे भंग को० नं० १८ देखो	<i>ω</i> ~	को० न० १ द देखों ४ (१) मनुष्य गति में १४ का भग-को० नं०	सारेभंग को० नं० १८ देखो	देखो १ भंग को० नं० १८ देखो
	্ তা ও বিজ্ঞান কৰি। ১০০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০			्र दख् <b>ा</b>		
					,	

प्रवगासुना — ३।। हाथ से ५२५ धनुप तक जानना ।

वंग प्रक्रियां —१३वे गुए। में १ साता वेदनीय जानना । १४वे गुए।० में बंध नहीं, अबंध जानना ।

>३व प्रकृतियां —

८५-१३ प्र० का सत्ता जानना । को० नं० १३-१४ देखो । ४२ और १४वे मुएए० में १२ प्र० का उदय जानना। को० नं० १३—१४ देखो। दथ शीर ,, द४-१३ प्र० का सत्ता जानना। को० नं० १३-१४ देर सत्य प्रकृतियां —

क्षेत्र--लोक का प्रसंख्यातवां भाग जानना । असंख्यात भाग लोक, सब्लोक ये सब भेद केवल समुद्वात के समय में जानना को० नं० २६ सक्या – को० नं० १३–१४ के समान जानना ।

स्पर्शन--ज्यर के क्षेत्र के समान जानना

देखों ।

काल-सर्वकाल जानना ।

प्रनतर—कोई यन्तर नहीं।

जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना

फुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

	अहिरिक में	
( ৫০১ )	कोष्टक सं ० ६४	
	•	
	चौतीस स्थान दर्शन	

क्र स्यान सा	सामान्य श्रालाप	पयप्ति				अपयपि	h-
-		नाना जीव की क्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	। १ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
	8	m	>>	<b>x</b>	Us	9	u
ा स्थान १ १	१ गुएा स्थान १३ १ से १३ तक के गुरा	<ul> <li>१३</li> <li>(२) नरक गति में १ से ४</li> <li>(२) तियंच गति में १ से ४</li> <li>(३) मनुष्य गति में १ से १३</li> <li>भोग भूमि में १ से १३</li> <li>भोग भूमि में १ से १३</li> <li>(४) देवगति में १ से ४</li> </ul>	सारे गुरा स्थान अपने अपने स्थान सारे गुरा स्थान जानना	१ मुरा० प्रपने प्रपने स्थान के सारे गुरा० में से कोई १ गुरा० जानना	सारे गुर्सा स्थान है ग्रुस्सा० (१) नरक गति में सपने अपने स्थान (१) नरक गति में सारे गुर्सा० में हिन प्रिक्त गति में हिन हैं जुर्सा० में सि कोई १ गुर्सा० (२) तिर्यंच गति में जानना जानना भीग भूमि में "-२-४ १२ १०२-४-६-१३ भीग भूमि में १-२-४	सारे भंग १ गुण् श्रपने श्रपने स्थान केश्रपने श्रपने सारे गुण् जानना के सारे गुण् में से कोई १ गुण्	<ul> <li>शुर्याः</li> <li>भ्रपने स्थान</li> <li>भे सारे गुर्याः</li> <li>से कोई १ गुर्याः</li> <li>जाननाः</li> </ul>
र जीव समास को० गं०	वि समास १४ को० ने० १ देखो	मं प्रि	१ समास को०नं० १६–१न– १६ देखो	१ समास को०नं० १६-१६- १६ देखो	(४) देवगति में         १ समास       ७ अपयिपि अवस्था         को०नं० १६-१८-(१) नरक-मनुष्य-देवगति         १६ देखो       में हरेक में         १ संशी पं० अपयित्त         जानना	१ समास को० नं० १६-१८-को०नं० १६-१८- १६ देखो	१ समास को०नं० १६-१६- १६ देखो
		को० नं० १६-१८-१६ देखी (२) तियँच गति में ७००१ के भंग को नं० १७ देखो	ो १ समाम को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो	को०नं० १६-१८-१६ देखो (२) तियंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देख

असंजी में	r	१ भंग को०नं० १६-१५. १६ देखो	१ भंग कोठनं० १७ देखो	१ मंग को०नं०१६- १६देखो	१ भंग को०नं०१७ देखो १ भंग	१८ देखा को अने १८ देखो भंग १ योग १६-१६ को अने १६-१६ लो
	9	१ भंग को० न०१६-१८- इं६देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ मंग को० नं० १६– १६ देखो	१ भंग को॰ नं० १७ देखो सारे भंग	को। नं० १व देखो १ भंग को० नं० १६~१६ देखो
• .	No.	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का मेंग को० नं० १६-१८-१६	देखो (२) तियंच गति में ३–३ के भंग को० नं० १७ देखो लिट्य रूप अपने अपने स्थान की ६-५-४ पर्याप्ति		का० न० १६–१६ देखा (२) तियंच गति में ७-५-६-५-४-३-७ के मंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	मं मं
( ६७३ ) क नं० ६८	ə⁄	१ मंग को०नं० १६-१प- १६ देखी	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १६-१९ देखो	१ मंग को०नं० १७ देखो	१ भग को०नं०१= देखी १ योग को०नं०१६- १६ देखी
) कोध्टक	>>	१ भंग को०नं० १६–१६– १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६- १६ देखो	खे	सार भग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १६-१६
दशौन	m	$\mathfrak{S}$	दन्त । (२) तियोग मि ६-४-४-६ के भंग को०नं० १७ देखो	१० (१) नरक-देवगति भे हरेक भे १० मा भंग	<del>e</del>	(१) मगुष्य गात म १०-४-१० के मंग को० नं० १= देखो ४ १) नरक-देगमित मं हरेक मं ४ का मंग को० नं० १६-१६ देखो
चीतोस स्थान दशैन	6 / 8	३ पर्गाप्ति मो०नं० १ देवो		४ प्रास् क्रीउनं० १ देनो		भू संज्ञा गो० नं० १ देखो

अहिरिक में	2	मंग १ भंग १ भंग १७ देखो भंग १७ देखो को०नं० १७ देखो १ भंग १ भंग १ मंग १ मंग १ माति १ म	
	ອ 	सारे सारे को नं के हिस्ह हिस् हिस्	
	w	(२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (४) मनुष्य गति में ४-०.४ के भंग को० नं० १० देखो थे ४००.४ के भंग को० नं० १० देखो थे देदक में १६-१८-१६ देखे भंग को०नं० १६-१८-१६ देखो १२ के भंग को०नं० १६-१८-१६ देखो हो०नं० १६-१८-१६ देखो १३ तिर्यंच गति में हरेक में १२ के भंग को०नं० १६-१८-१६ देखो १३ तिर्यंच गति में १२४-१ के भंग को०नं० १६-१८-१६ देखो १३० तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	वि मिश्रकाययोग १, श्रा० मिश्रकाययोग १, ये ३ योग जानना
> \times	<b>x</b>	१ रांग १ भंग १ भंग १ मति १ जाति १ जाति १ जाति १ जाति १ जाय १ नाय १ नाय १ नाय १ नाय १ नाय १ नाय १ नाय १ नाय १ नाय १ स्थाय १६ देखी	
( ६७४ कोष्टक नं०	>>	१ भग को० नं० १७ देखो सारे भंग १ गति १ जाति १ जाति १ जाति १ जाति १ जाति १ काय १६ देखो १ काय १६ देखो १ काय १ काय १६ देखो १६ देखो ११६ देखो	
दर्शन	to.	ति में ति में ति में ति में १९६ देखी	ग्रा० मिथकाययोग १, ये ३ योग घटाकर (१६)
चीतोस स्थान दर्शन	6	६ मति को० नं० १ देखो ७ इन्टिय जाति भ को० नं० १ देखोः द नाम ६ योम १४ कामस्सि काययोम १	

नींनीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक	मं० ह४		आह	अहारक में
~	ęŋ	>>	<b>ઝ</b>	usr	თ	ช
	(१) नरक गति में ६ का मंग-को० नं० १६	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ योग को० नं० १६	(१) नरक गति में १ वै० मिश्रकाय योग	१ भंग	१ योग
	(२) निर्मन गति में ह१६ के भग	१ भंग को <sup>ु</sup> नं० १७ देखो	दल। १ योग को० नं० १७	जानन। (२) तिर्यच गति में १ ब्रौ० मिश्रकाय थोग	१ भंग	१ योग
	कार न २५ देखा (.) मनुष्य गति में १.६.६.२.२,३.६ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	देखा १ योग को० नं० १ द	जानना ।३) मनुष्य गति में १ ब्रौ० मिश्रकाय योग	सारे भंग	१ योग
	<i>₩</i>	१ भंग को०नं० १६ देखो	दखा १ योग को नं १६ देखो	जानना (४, देवगति में १ वै० मिश्रकाय योग जानना	१ भग	१ योग
१० भेद को० मं० १ देनो	३ (१) मग्न गति में १ नगुरात वेर जानना	१ को ः नं० १६ देखो	"" ~	३ (१) नरक गति में १ नपुसक वेद जानना	१ को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो
	तां न १६ देशा (२) तियंन गति में ३ १-३-२ ते भंग को० नं० १७ देशो	१ भंग को० नं० १७ रेखो	बद को नं० १७ देखो	का० न० १६ देखा (२) तियंन गि में ३-१-३-१-३-२-१ के मंग को० न० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देनो
	(३ मनुष्य गति में :-३-३-१-३-३-२-१-०-२ के मंग-को० न० १६	सारे मंग को० नं० १= देखो	१ वेद को० नं० १८ देलो	(३) मनुष्य गांत में ३-१-१-०-१-१ के भग को० नं० १= देखो	सारे भंग को० नं० १= देखो	१ वेद को० नं० १प देलो
,	दरा। १-१-१ के भंग को संग्रहित है	मारे मंग को० नं० १६ देखो	वेद को० नं० १६ हेबो	(४) देवगात म १-१-१ के भंग को नं० १६ देखो	सारभग को० नं० १६ देखो	१ वद को० नं० १६ देतो
११ डनाम - २५ होठ नंठ १ देगो	Š	तारे मंग को० मं० १६ देवो	१ भंग गो० नं० १६ देवो	२५ (१) नरक गति मे २ -१६ के भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग कोऽ नं० १६ देनो

_	
w w	
_	

र्चीतीस स्थान दर्शन	थान ः	र्शन	् ६७ कोष्टक नम	६७६ ) नम्बर् ५४		শ্ব	श्राहारक में
~	~	rn,	>>	አ	US	9	n
			सारे भंग	१ भंग	को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति मे	सारे भंग	१ भूंग
		२४-२३-२५-२५-२९-१७- २४-२० के भंग-को० नं० ००० केन्से	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	२४-२३-२४-२४-२३-२४- २४-१६ के भंग-को०	क्री	को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ भंग	न०१७ देखो   (३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ भंग
		5 4-5 4-8-5-8-6-8-6-6-6-6-6-6-6-6-8-8-8-8-8-8-8	को० नं० १८ देखो	្ត ~	२४-१६-११-0-२४-१६ के भंग-को० नं० १८	को० नं० १ द देखो	को० न० १८ देखो
		२४-२० के भग-को० नं० १८ देखो			देखों		-
		(४) देवगति में	सारे भंग		(४) दवगात म २४-२४-१६-२३-१६-१६	सारभग को अं १९ हेखो	र भग को० नं १६
		२४-२०-२३-१६-१६ के भंग-को० नं० १९ हेखो	भें	को० नं० १६ हेखो	के मंग-को० नं० १६		-
	៤ (	r	सारे भंग	h <del>.</del>	es o	सारे भंग	9 415
क्षां० न० २६	२६ देखा	मति में भ भंग भे	को० नं० १६ देखो		कुअवधि ज्ञान मनः		7
-		१६ देखो		दंखा	P.		
		(२ तियंच गति में	१ भंग	१ सान	(१) (१) नरक गति में	सारे भंग	2 जान
		२-३-३-३ कं भग को० नं० १७ देखो	को० नं , १७ देखो	को० नं० १७ स्रेतने	मं०	को० नं० १६ देखो	को नं० १६
		•		् १ ज्ञान	८६ दख। (२) ियँच मनि भे	o vin	दखा   १ नाम
		Æ ¶	को० नं० १ द देखो	को० नं० १८	·	र ना को० नं० १७ देखो	को० मं० १७
		(४) देवगति में	सारे भंग	नाम	को० नं० १७ देखो		रेखो
		३-३ के भंग-को० नं०	को० नं० १६ देखो	नं० १६	. र) मनुष्य गति म २-३-३-१-२-३ के भंग	सार भग को० न० १८ त्रेयो	्र जान को स्टब्स
		१९ देखो		,		- S - S - S - S - S - S - S - S - S - S	नगा र मण्ड (द   देखो
				-		सारे भंग	१ ज्ञान
					र-र-र-३ के भूग को० नं० १६ देखी	का० न० १६ देवा	को० नं० १६ हेनो

र्चोतीस	चौंतीस स्थान दर्शन	दर्शन	( ६७७ कोप्टक नं	<i>∞ ∞ ∞</i>		त्राहारक	रक में
~	~	m	>	'n	US	9	ប
३ संयम कोट नं ० व	२६ क्षेत्र क्षेत्री	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में	१ को० नं० १६-१६	१ को० नं० १६-१६	४ संयमासंयम, सूक्ष्म सांप-	~	~
		र अस्यम जानमा को० न० १६-१९ देखो	•		राय ये २ घटाकर (५) (१) नरक देवगति में	को० नंः १६-१६	क्रोo मं ० १६-
		'1	्र भंग -		हरेक में		देखो
		की व	कि।० न० १७ व्रत	कार नुरु ८७	को० नं० १६-: ६ देखी		
		ति में	सारे भंग			१ भंग	१ संयम
		1-8-3-4-3-4-4-8-8 部	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ हेखो	१-' के भंग-को० नं० १७ देखो	को० न० १७ देखो	को० नं० १७ हेन्नो
					(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ संयम
					१-२-१-१ के भंग को० नं० १प देखो	को० नं० १८ देखो	को० न० १८ सेवो
7 4217	>	>	१ भंग	१ दर्शन	>>	१ मंग	१ दर्शन
मो० मं०	१ न देशो	(१) नरक गति में २-३ के भंग-को० नं०	को० नं० १६ देखो	02"	(१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं०	को० नं १६ देलो	को० नं० १६ हेत्यो
	,				१६ देखो		Ţ,
		,	市	दर्शन	(२) तियंच गति	१ भंग	१ दर्शन
		क्षेत्र ने ने ने ने के मंग	नो० नं० १७ देखो	को० नं० १७ हेस्सो	१-२-२-३ कं भव को० नं १७ देखो	क्तो० नं० १७ देखो 	मो० न० १७
		(३) मनुष्य गित में	सारे मंग	दर्शन	(२) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ वर्यान
,		२-३-३-१-१-१	को० नं० १८ देलो	को० नं० १५	२-३-१-१-१-३ के भंग	को भनं १८ देखो	को न० १८
		(४) देवमति में	م بند	द'त। १ दरोन	(४) देवगति में	१ भंग	दला १ ज्यांच
			कों मंं १६ देवो		२-२-३-३ के भंग		को वर्ष
4		E		यंत्रो	को० नं १६ देलो		•
			4.2	र लेस्या	# ### ### (6)	क ~ '	नस्याः
2		अ श्री भूक मान है।	निक स्थान कर	沙	द का भंग-को नं	क्षा १० १५ देख	कीठ न - १६ हेन्स्रो
		•	~ ~ ~				1.31
THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE OWNER.	THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE OWNER.	Indianate and the second secon		And in case of the last of the			

24-28-89-83-8-8-0 9-6-4-8-3-2-8-0-
२४-२० के भंग-को० नं० १ द देखी देवगति में २४-२०-२३-१६-१६ के भंग-को० नं० १६ देखो नरक गति में ३-३ के भंग-को० नं० १६ देखो तियंच गति में २-३-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो मुख्य गति में ३-३-४-१-३-३ के भंग-को० नं० १८ देखो देवगति में ३-३ के भंग-को० नं० १८ देखो ३-३ के भंग-को० नं० १८ देखो ३-३ के भंग-को० नं० १८ देखो

•								•				
रक में	ឋ	~	को० नं०१६- १६ देखो	१ संयम	को० नं० १७   देखो   १ संयम		१ प्यान   को० नं० १६   देखो	१ दर्शन को० नै० १७ देखो	१ दर्शन   को न०१ द   देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	१ नेदमा को० नं १६	
श्राहारक	9	~	को० नं १६-१६ देखा	१ भंग	कां० न० १७ देखो सारे भंग	को० नं० १ द देखो ° नंग	देखो	१ भंग को०नं०१७देखो 	सेवो	१ भग को० नं १६ देखो	१ मंग को० १० १६ देखो	
-	use	भ् सियम, सुक्ष्म	राय ये २ घटाकर (५) (१) नरक देवगति में हरेक में	र अस्थम जानना को० नं० १६-:६ देखो (२) तियंच गति में	१-' के भग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में	१-४-१-१ के भंग को० नं० १ <b>८ दे</b> खो	(१) नरक गति में २-३ के मंग-को० नं० १६ देखो	(२) तियंच गति १-२-२-२-३ के भंग को० नं १७ देखो	(२) मनुष्य गति में   २-३-३-१-२-३ के भंग को : नं० १८ देखो	(४) दवगात म २-२-३-३ के मंग को० नं० १६ देखों		३ का भन-को० न० १६ देखो
0 88	೫	१ को० नं० १६-१६	देखो १ संयम े ं	न् ० संयम्	को० नं० १ <b>८</b> देखो	i i i i	् ५५४म को० नं० १६ देखो	ඉ	दर्शन नं० १	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	१ लेस्या को० नंः १६	दंगी
कोष्टक नं०	٠	१ मं० १६-१६	ो . ~ भंग	न० १७ सारे मंग	को० नं० १८ देखो		१ मग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	सारेभंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग औरु नं ० १६ देखो	
दर्शन	m	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में	Æ ·		-२ भ देखो	,	ै (१) नरक गति में २-३ के भंग-को० नं० १६ देखो	(२) तियंच गति में १-२-२-३-३-२-३ के गंग को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-३-३-१-२-३ के भंग को० नं १५ देन्तो	(४) रेबगति में २-३ के मंग-को। नंऽ १६ रेसो	or im	३ का भंग-कोठ नं० १६ देनो
चौतीस स्थान दर्शन	or	संगम कोट मं ० २६ दे थे				,	शन कोठ नं० १ द देशो			intelescope and an extensive an 9-4	ह्या कोठ नंठ १ देलो	Michaelan
चौती	~	१३ संगम कोट नं				•	हें दुशन मोठ नं		•	· ,	पूर नेदया कोठ नंठ	

त्रोंतीस स्थान दर्शन	रशंन	( ६७६ कोप्टक नं०	६७ <b>द</b> ) नं० ६४		श्राह	अहारक में
8	m.	>>	*	us-	9	t
	(२) तिर्यंच गति में	्र भंग - भंग - १९	१ लेखा	(२) तियंच गति में	१ भंग	१ लेख्या
•	३-१-१-३-३ म भग को० नं० १७ देखो	का० न० १७ दखा 	काठन० १७ दखा	३-१ क भग को० नं० ५७ देखो	कोठनं ० १७ देखो	क्तिन्न १७ दंखा
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ लेखा	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ लेखा
	६-१-१-१ म मग को० नं० १८ देखी	- 5 5 5 7	100 to 10	६-३-१-१ क भग को० नं० १६ देखो	किंग्टिन्ट १५ द्खा 	ा०न० १ द द्वा
,	(२) देवगति में	भंग	१ लेखा	(४) देवगति	१ भंग	१ लेख्या
	१-३-१-१ का भंग को० नं० १६ हेखो	को० नं० १६ देखो 	को०नं० १६ देखी	३-३-१-१ के भंग क्रो० मं० १० भेको	को०नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो
१६ भव्यत्व २	17 C	ं भंग	१ अवस्था	- 10 m m m m m m m m m m m m m m m m m m	y rim	१ ग्रवस्था
भन्य, ग्रभ	चारों गतियों में हरेक में	#	को० नं० १६ से	चारों गतियों में हरेक में	कोठनं ० ६ से १६	कोठनं० १६ से
	२-१ के भंग	१६ देखो	१६ देखो		देखो	१६ देखो
	को०नं १६ से १६ देखो			र १६ देखो		
१७ सम्यवत्व	, , ,	五八		ಶ	सारे भंग	१ सम्यक्त्व
गां० नं० १८ देखो	(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो	मिश्र घटाकर (५)		
	१-१-१-३-२ के भंग			(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	को नं० १६ देखो
	कार्जन १६ दला (२) तियंच गति में	० भंग	% सम्यक्त्व	《 국 하 મંग 라스 라스 의 유하		
	8-8-8-8-8-8-8		To,	(२) नियंच गति में	% भंग	१ सम्यक्त
	•			१-१-१-१	देखी	को०नं० १७ देखो
	को बनं १७ देखो			को० नं० १७ देखो	•	,
	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ सम्यक्त्व	(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ सम्यक्त्व
	2-8-8-3-3-3-9-8-9-8-9-8-9-8-8-8-8-8-8-8-8			१-१-१-१-१-१-१-१	को० नं० १८ देखो	क्तो०नं० १८ देखो
	को० मं० १० सेवो			क भग स्टें हैं हैं दे		
	(४) देवगति में	सारे भंग	१ सम्यक्ष	का० न० १व द्वा (४) देवगति में	माने भंग	१ सम्यक्त्व
	2-2-3-2	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६देखो	: 1 <del> S-</del>	क्नो०नं० १६ देशो	ीठनं , १६ देखो
	क्षी भग कि कि देखी	,		कों नं १ देखो		

		1	74		HIL	油出
אונווט נאווא	चोतोस स्यान दश्न	काष्ट्रक न	न० ६४		था <i>रू</i>	अहि।रक म
o 	ירו	>>	አ	w	ອ	ır
	P	~	१ अवस्था	۲۰	~	~
Title and	(१) नरक-देवगति में	कों नं १६-१६	को०नं० १६-१६	(१) नरक-देवगति में	को० नं० १६-१६	को०नं० १६-१६
	हर्रा में	देखो	देखो	हरेक में	देखो	देखो
	र संजी जानना			१ संशी जानना		
	क्तो०नं० १६-१६ देखो	१ भंग		को० नं० १६-१६ देखो		
	(२) तियंच गति में	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो	(२ ' तिर्यंच गति में	्र भंग	१ यवस्या
	2-2-2-3 市 沖町			१-१-१-१-१-१ के भग	क्तिं नं १७ देवो	क्नो०नं० १७ देखो
	को० नं० १७ देखो		१ अवस्या	कों० नं० १७ देवी		
	(३) मनुष्य गित में	को० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में	~	१ यवस्था
	१-0-१ के भंग			१-0-१ के भंग	कों नं १ द देखो	क्री०नं० १८ देखो
	को० नं  १८ देखो			को० नं० १८ देखी		
१६ माहारक		~	~	7 ~ 7 ~ 7	~	~
प्राहारक	चारों गतियों में हें के में			चारा गातया म हरक म	-	
;	१ श्राहारक जानना			१ ग्राहारक जानना	,	•
२० उपयोग १२	88	भंग	१ उपयोग	°~	१ भंग	१ उपयोग
	(१) नरक गति में	को० न० १६ देवो	को०न० १६ देखो	कुप्रवाय जान प्रार		
दर्शनोषोग ४	४-६-६ के भंग			मनः पयय ज्ञान य दा		
ये १२ जानना	को नं  १६ देखो			घराकर (१०) जानना		
	(२) तियंन गति में	१ भंग	१ उपयोग	(१) नरक गति में	१ भंग	१ डपयोग
	きーきーよーきーきースート	मों नं १७ देवो	मो०नं० १७ देखो	४-६ के भंग	को० नं० १६ दखो	क्रो०नं० १६ देखो
	के मंग			को० नं० १६ देखो	•	
	कों नं १७ देशी			(२) तियंच गति में	भंग	। १ उपयोग
		生		३-४-४-३-४-४-४-६ के भगको० नं०	को० नं० १७ देखो	कोठनं० १७ देखो
	19-1	१-५-मो० नं० १८ देखो	को०नं० १ न देखो	मों नं १७ देवी		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	६-६ के भंग				सारे भंग	१ उपयोग
	को० नं० १व देवो			-४-६ के भंग	को० नं० १८ देखो	कोठनं० १ द देखो
	(४) देव गति में	भंग	१ उपयोग	को० न० १८ देखो		
	1-६-६ के भंग	मो नं १६ देखो	को०नं० १६ देखो		१ भंग	१ उपयोग
	ं को० नं० १६ देखो		of Volume	४-४-६-६ के भंग	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखी

चीतीस स्थान दर्शन	<b>.</b>	( ६६० क्रोप्टक नं	६८० ) त नं० १४		आहि	म्राहारक में
٠ ٤	m	>>	ታ	ω·	<b>9</b>	ช
२१ ध्यान स्युपग्त क्रिया नि० घटाकर (१५)	१५ १५ (१) नरक गति-देवगति में हरेक के	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ घ्यान को० न० १६- १६ देखो	१२ पृथगत्य विताकं विचार, एकत्य विताकं ग्रामिचार,	सारे भंग	१ :यान
	द १- ० के भग को० नं० १६-१६ देखो (२) नियंच गति में द -१०-११-द १-९० के भंग-को० न० १७ देखो	新6 5	च्यान नं० १७	मुक्ष्म िया प्रतिपाती, ये 3 घटाकर (१२) ११) नरक गति-देवगति में हरे हे में द-६ के भंग-को० नं०	मारे भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ ह्यान को० नं० १६- १६ देखो
•	(३) मनुष्य गांत म ६-१-१-११-७-४-१- १-६-१० के भंग-को० न० १६ देखो	सारभग को० नं० १० देखो	९ ब्यान को० नं० १८ देखो	१६-१६ देखा (२) तिर्यंच गति में द-द-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में द-१-७-१-द-६ के भंग	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १	१ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १ द
२२ ब्रास्तव	है घौ० मिश्रकाय योग १. वै० मिश्रकाय योग १,	सारे भंग	१ भंग	को० नं	सारे भंग	देखो १ भंग
	में इ घटाकर (५३) (१) म-क गति में ४६-४४ ४० के भंग को० नं० १६ देखो (२) तियंच गति में - ३६-३६-४०-४६-१९- ४६-४२-३७-५०-४५-४१	सारेभंग को० नंः १६ देखो सारेभंग को० नं० १७ देखो	<ul> <li>१ भंग</li> <li>देखो</li> <li>१ भंग</li> <li>१ भंग</li> <li>को० नं० १७</li> <li>देखो</li> </ul>		सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ मंग को० नं० १६ देखो

		देखो									विद्या							संस		दलो				द्री			
श्राहारक में	ឋ	१ भंग को०नं० १७ देखो		* #*** * * *****		•				१ भंग	को०नं० १८ देखो						~ भंग	कोठनं० १८ देतो	१ भंग	कोठनं० १ न दलो	•		१ मंग	क्तिकमं० १८ देशो	·····		_
श्राह	ອ	सारे भंग को० नं० १७ देखो								सारे भंग	को० नं० १८ देखो						Ħ.	को० नं० १८ देखो	सारे भंग	कोठनं० १८ देखो			सारे भंग	कोणनं० १८ देता			
	Uν	(२) तियीच गति में ३६-३७-३६-३१-४२-४३-को० ३१-३२-३३-३४-३७-३	४२-३७-३२ के भंग नंकी० १७ के ३७-३८-	36-84-84-86-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35-35-	३३ के हरेक भग में से	कामार्श कायवाग र पटा-	-96-26-25-26-26-28	३८-४२-३७-३२ के भंग	जानना			कों नं १ द के ४४-३६-	३३ के हरेक मंग में से	नामिल् नाययोग १ घटा-	कर ४३-३८-३२ के भंग	जानना	नं० १६		१ गा भंग नं० फो० १८	के २ के भन में में कामिए	काययोग पटाकर १ का भंग	ग्री॰ मिथकाययोग जानना	४२-३७-३२ के मंग को०	मं० १८ कि ४३-३६-३३	हें के भंग में में कामिए	नाययोग १ पटाकर ४२-	३७-३२ कि मंग जानना
0 & X	25	१ भंग को०नं०१ द देखो	•		्र मंग्र इ.५.५,	कावनं १६६वा										-									andre andre a		
कोष्टक नं०	>>	सारे मंग को० नं० १८ देखो			मंग	न० १८ वला																			44	************	
नोतीस स्थान दशन	er.	,	3-89-	४५-४१ के मंग को० न० १५ देखी	5	χ ο χ ο ζ ο σ	को० नं० १६ देखो															~ .	Notes and		design name		
चोतीस	~		and the second second second second second	`	•	••	••••																				
	~										•																Assessing prompares
	}	•																									-

\$ to \$

श्राहारक में	r	१ भंग १ भंग १ भंग १ भंग होरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना होरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना होरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना
, श्राह	US	सारे मंग सारे भंग सारे भग सोठ नं० १६ देखो १७-१६-१७- ६- १७ के मंग १७-१६-१७-१६- १७-१६-१७-१६- के भंग को नं० १८ देखो १७-१६-१७-१६- १८-१६-१९-१६- १८-१६-१९-१६- १८-१६-१९-१६- १८-१६-१९-१६- १८-१६-१९-१६- १८-१६-१९-१६-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-१९-
	24	(४) देवगति में सारे संग ३२-३७-३२-४१-३६-३२-को० नं० १६ देखी ३२-३७-३२-४१-३६- ३३-३३ हरेक भंग में से कार्माण काययोग १ घटा- कर ४२-३७-३२-४१-३६- ३२ के भंग जानना ४६ कुश्रवधि ज्ञान १, मनः प्रय ज्ञान १, जयवाम चारित्र १, सरागसंयम १ ये ४ घटाकर (४६) (१) नरक गति में को० नं० १६ देखी को० नं० १६ देखी २४-२७ के भंग को० नं० १९ देखी को० नं० १६ देखी (३) तिर्यंच गति में १७-१७ के मंग २४-२५ २४-२२-२३- १७ के मंग ३०-२८-३०-२०-१३- १७-१६-१७-१६-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-१८-
>>	>>	१ भंग हरेक भंग में से भंग जानना हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना भंग जानना भंग जानना भंग जानना भंग जानना भंग जानना
( ६न२ ) कोष्टक नं० ६४	>>	सारे भंग १७-१६-१६-१७ के भंग को० नं० १६ देखो १७-१६-१९-१७- के भंग को० नं० १७ देखो १७-१६-११-१७- १७-१६-१६-१९- १७-१६-१६-१९- १७-१६-१६-१७- १७-१६-१६-१७- १७-१६-१६-१७- १७-१६-१६-१७- १७-१६-१६-१७- १७-१६-१६-१७-
	ar .	<ul> <li>५३</li> <li>११) नरक गति में</li> <li>२६-२४-२४-२६-३७ के भंग को० नं० १६ देखो</li> <li>१४-२५-२७-३१-२६-१८-३९-२६-३०-३२-२६ के भग को० नं० १७ देखो</li> <li>१३ पनुष्य गति में</li> <li>११-२७-३१-२६-२६-२६-२६-२९-२९-२१-२९-२१-२६-२६-२६-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-२१-</li></ul>
चौतीस स्थान दर्शन	~	24 24
चौंतीस	~	रे अ भाव

अयगाहना—को० नं० १६ से ३४ देखो 30

3

- नंभ प्रकृतियां -- १२० पर्यात श्रवस्था जानना, ११२ श्रपयित श्रवस्था में अन्धयोग्य १०० में से नरक-तियैच-मनुष्य-देवायु ४, श्राहारकद्विक २, नरकिंदिक २ ये न घटाकर विग्रह गति में ११२ प्रकृतियों का वन्य जानना को० नं० १ से १३ में देखो।
- उषय प्रकृतियां--१२२ पर्याप्त अवस्या में जानना । ११० अपर्याप्त अवस्था में उदययोग्य १२२ में से नरकादि गत्यानुपूर्वी ४, घटाकर ११० विग्रह गति में जानना, विगत को० नं० १ से १३ में देखो।
- सस्य प्रकृतियां--१४५ मंगों का चिवरए। को० न० १ से १३ में देखो
- तह्या--ग्रनन्तानन्त जानना
- पश्चन-सर्वलोक जानना । क्षेत्र –सर्वलोक जानना । 8
- काल--नाना जीवों की प्रपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा तीन समय कम क्षुद्रभवं से ३३ सागर काल तक जानना
- फन्तर—नाना जीवों की श्रपेक्षा कोई श्रन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा विग्रह गति में एक समय से तीन समय तक श्राहारक न बन सके।
  - जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना ।
- मुत-१६६॥ लाख कोटिकुल जानमा ।

स्थान सामान्य श्रालाप	ייין איזיין	ali depolde	4)		अनाहारक म	١٩٠ ١
-	पर्याप्त			<b>अपर्या</b> त		
	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	एक जीव के नाना एक जीव के एक समय में समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की ग्रपेक्षा	र जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
2	m·	>>	<b>≥</b> ⊀	υΥ	9	น
१ मुस्स स्थान ५ १-२-४-१३-१४ मे ५ मुस्स० जानना	१ (१) मनुष्य गति में १४वे गुरा स्थान जानना	१ मुसा० ११४वे मुसा० जानना	१ मुसा० १४वे मुसा० जानना	४ (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तिर्यंच गति में १-२	सारे गुर्या० स्थान ग्रपने ग्रपने स्थान के सारे गुर्या० स्थान जानता	१ मुरा० अपने अपने स्थन के सारे मुरा० में से कोई १
२ जीय समास - द संजी पं० पर्याप्त १, प्रपर्याप्त स्रवस्था ७, ये द जानना	१ (१) मनुष्य गति में १ संजी पं० पयांत्र ज्ञवस्था को० नं० १८ देखो	. १ रामास	१ समास	(३) मनुष्य गति में	१ <sup>°</sup> समासः को० नं० १६-१⊏- १६ देखो	भुद्धारु जातना १ समास को० न० १६- १द-१६ देखो
				तिर्यंच गति में १ के भंग–को० लो	१ समाप्त न०क्रो० नं १७ देहो	१ समास को० नं० १७ असो
३ पर्याप्ति फो० नं० १ देखो (१	(१) मनुष्य गति में ६-६ के भंग–को० नं० १८ देखो	१ भंग को० न०१८ देखो	<ul><li>१ भंग</li><li>को ० नं० १ प्र</li><li>देखो</li></ul>	र देवगति में में गंग-को० नं०	१ भंग कोऽ नं० १६-१६ देखो	र्धा १ भंग को भं १६- देखी

( ६५४ । कोष्टक नं० ६५

ारक में	n l	<ul> <li>१ मंग</li> <li>१ द देखी</li> <li>१ मंग</li> <li>१ १ मंग</li> <li>को० नं० १६-</li> <li>१६ देखी</li> <li>१७ मंग</li> <li>१६ देखी</li> <li>१६ देखी</li> <li>१६ देखी</li> <li>१६ देखी</li> <li>१६ देखी</li> <li>१६ देखी</li> </ul>
अनाहारक	ඉ	१ मंग देखी १ मंग १ मंग देखो को० नं० १६-१६ १ मंग को० नं० १६ देखो १ मंग को० नं० १६-१६ देखो १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ मंग १ भंग को० नं० १६-१६ १ मंग १ मंग १ भंग को० नं० १६-१६
	ų»-	(२) तिर्धन-मनुष्य गित को० नं० हेत्हों १७-१ न देखों १७-१ न देखों लिड क्ष्म अपने अपने स्थान के ६-५-४ के भंग स्थान के ६-५-४ के भंग को० नं० हेर्स्क में हिते हैं १८ देखों १९ तिर्धन गिति में होती हैं १८ देखों १९ तिर्धन गिति में को० नं० १९ देखों १९ तिर्धन गिति में को० नं० १९ देखों १८ ५८-१८ के भंग को० नं० हेर्स्क में १८ ५८ देखों १८ १८ देखों भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० नं० हेर्स भंग को० नं० हेर्स हेर्स भंग को० नं० हेर्स हेर्स भंग को० नं० हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स भंग को० नं० हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स भंग को० नं० हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स भंग को० नं० हेर्स हेर्
,  ० ६५	24	्र मां देखों ० ०
, ५ <sup>५</sup> , कोष्टक नं०	>>	१ भंग १ नं० १८ देखो
दशन	m'	१ (१) मनुष्य गति में १ अयु प्राया जानना को० नं० १ द देखों । (१) मनुष्य गति में (०) य्रपगत संज्ञा जानना को० नं० १ द देखों
चोंतीस स्थान दयान	۲٢	मास् मो० नं० १६ देखो को० नं० १ देसो
1P	~	४ मंत्री सो

						1 1 1 1 1 1 1	
~	e	m	>>	*	w	9	r
६ गति को० न		१ मनस्य गित जानना	~	~	४ बारों गनि जानना	१ मति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति १ संज्ञी पं० जाति		8 8 4 (१) मनुष्य गति में। १ संज्ञी पंचिन्द्रिय जाति	~	~	१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ जाति को० नं० १६-१६- १६ देखो	१ जाति को० नं० १६- १८-१६ देखो
					<ul> <li>( संशा पर्वान्द्रय जाति</li> <li>को० नं० १६-१६-१६</li> <li>देखो</li> <li>(२) तिग्रैच गति में</li> </ul>	, भ	१ जाति
द साय	vr	•	~	۵	४-१ के भंग-को० नं १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो
की० नं० १ द देखो	० १५ देखो	(१) मनुष्य गति में १ यसकाय जानना को० नं० १० देखो	•	•	र (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ वसकाय जानना	्काय को० नं० १६-१८- १६ देखो	र काथ को० नं० १६- १८-१६ देखो
						१ काय को० नं० १७ देखो	१ काम को० नं० १७
६ योग कामस्यिकाय योग	ाय योग	° श्रयोग जानना	o		को० नं० १७ देखो १ (१) चारों गतियों में टरेक्स में १ का संस		देखो १ को० नं०१६ से
<b>१०</b> पेद मो० नं० १ देसो	ं० १ देसी	o गत वेद <b>ं</b> जानना	o	o	हरा पर पा प्राप्त कार्माण्यकाय योग विग्रह गति में जानना को० नं० १६ मं १६ देखो ३ १९) नरक गनि में १ नपुंसक वेद जानना	क क्लो	१९ प्या १ कोठ नं० १६ देखो

क्रीतीस स्थान दर्शन १ २   ११ कगाय ५२ को० नं० १ देखो	में अकपाय जानना	कोष्टक नं ॰	~ <del>*</del> <del>*</del> <del>*</del> <del>*</del> •	上传 E 独	अनाहि १ भंग १० १७ देखो १० १६ देखो १० १६ देखो १० १६ देखो १० १६ देखो १० १६ देखो १० १६ देखो १० १६ देखो १० १६ देखो	रक्त में
$\cong$	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल ज्ञान जानना को० नं० १८ देखो	~	~	को० नं० १६ दे-ो ६ (१) नरक गति में २–३– के मंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	। १ आम को०नं० १६ देलो (

मीनीम स्थाम स्पीन		ं ६५५ सम्ब	. a		ני נידוד	7# 
לינועו גאום ל	્યાન	1. 65-16	1		भग । हा । भ	
۲ ا	m	>>	೫	ער	9	ឋ
				(੨) ਰਿਧੰਚ ਸਰਿ ਸੇ	१ सं	१ शान
				२-२-३ के भंग	को० नं० १७ देखो	4
				को० नं० १७ देखो		
				(३) मनुष्य गति में	भंग	१ ज्ञान
				२-३-१-२-३ के भंग	को० नं १ १ ट देखो	क्तो०नं० १ द देखो
	,			को० न० १८ देखी		
				(१) देवगति में	सारे भंग	१ ज्ञान
				२-२-३-३ के भंग	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखा
		•		का० न० १६ दला		,
१३ संयम	or!	~	~	8	~	~
ग्रसंयम, यथास्यात	(१) मनुष्य गति में			(१) नरक-तियँच-देवगति	को० नं० १६-१७	को०नं०
ये २ जानना	१ यथाख्यात जानना		,	में हरेक में	१६ देखो	१६ देवो
	को० न० १ न देखो			१ श्रमंयम जानना		
				किर्नि १६-१७-१६ देखी		•
				(३) मनुष्य गति में	सारे	१ संयम
				१-१-: के भंग	को० नं० १८ देखो	कोठनं० १ द देखा
		•		का०न दद्धा		·
१४ दशन	an (	~	~	>	सारे भंग	१ दशन
का० न० १८ दखा	(१) मनुष्य गति में			(१) नरक गति में	क्ती ०नं० १६ देखो	कोठन० १६ देखा
	र कवल दशन जानना			र-र स भग 		
	का० न० १५ द्वा			काठ नठ १६ देखा १२: हिन्सैन नहिन्स	.]	1
			-	(४) जिथम गाउँ म		7 Sella 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
				१-२-२-२ भग	क्तांभ्य १७ दखा	क्तान्त्र १७ दख।
				का० न० १७ देखा		
				(३) मनुष्य गति में	H.	१ दशन
				र-३-१-१-१ के भंग	को० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखा
				कीं नि १५ देखीं		¢.
	-			(४) दवगात म	१ भग	
				२-२-३-३ क भग	का०न० १६ दत्ता	काठन० १६ दना
		_				

चौतीस	चौतीस स्थान दर्शन	कोष्टक नं	न्ट ) न् ६५		अनाह	श्रनाहारक में
~	ſſ.	>	24	us-	9.	ប
				को० नं० १६ देखी		
१५ लेखा ६	0	o	0	· 10°	१ भंग	१ लेखा
की० नं० १ देखी	म्रलेश्या जानता			(१) नरक गति में	को० नं० १६ देखो	कोठनं० १६ देखो
					•	
				काठ न १६ देखा		
-				(४) तियच गात म	ू मंग	१ लक्ष्या ने ने शुरु के
* ****			,	को० सं० १७ देखो	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	155 07 0 Fold
				(३) मनव्य गति में	सारे भंग	१ लेखा
				६-३-१-१ के भंग	१ देखो	को०नं० १ द देखो
				को० न० १८ देखी	•	•
					१ मंग	१ लेख्या
				<b>~</b> ~	TE TE	को ०नं० १६ देखो
				को० नं० १९ देखो	•	
१६ भव्यत्व २	ن م و	~	~	6 ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °	१ भंग	१ अवस्था
गव्य, ग्रमवा	(१) मनुष्य गात म			(१) चारो गति में हरेक में कोठनं० १६ से २० के मंग	गेठमं० १६ से नेन्ने	१६ मोठन १६ म
	मो० मं० १म देखी			मिर न भी	न इ. ५ ५	160 461
~		~	~	20 x 1 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x	सारे भंग	१ सम्यक्त
गित्र पटाकर (४)	(१) मनुष्य गति में		,	(१) नरक गति में	मों नं १६ देखो	को ०नं० १६ देखी
	१ थापिक सम्पर्गत			१ १-२ का मंग		· · · · ·
	क्षीठ नंठ १८ देखी			कोठ नं १६ देखो		· ~~
				(२) तियंच गति में		१ सम्पक्त
				१-१-१-१-२ के मंग	को० नं० १७ देखो	को ०नं० १७ देखो
				Λ.		
	-			(३) मनुष्य गति में	出	१ सम्पन्त
				?-?-?-?-?-!   it itir	कों नं १ द देवो	क्रीठनं० १८ देखी
		•		को नं १ र देखी		

र्वातीः	चींतीस स्थान दर्शन	दर्शन	कोष्टक नग	नम्बर देश		श्रनाहारक	रक में
8	~	m.	>>	*	w	9	
		-			(४) देवगति में	सारे भंग	१ सम्पक्त्व
		,			१-१-३ के भंग	कों नं १६ देखो	को०नं० १६ देखो
יו פּ	r				को० नं० १६ देखो		
	٠ <del>١</del> ٠ ٠ ٠ ٠	0	0	0	<b>6</b> ~		~
<b>.</b>	या यस्य	अनुभय श्रयात् न सज्ञा			(१) नरक-देवगति में	3 }_	को०नं० १६-
		न श्रदाश जानन	•	,	हरेक में १ संशी जानना	·	. १६ देखो
		***		-	कोठनं० १६-१६ देखो		
	-	`			(२) तियँच गति में	१ भंग	१ शवस्या
,	: :			-	१-१-१-१-१ के भंग	देखो	को०नं० १७ देखो
	٠,	,	, .	•	को० नं० १७ देखो		
		-			(३) मनुष्य गति में	~	१ भवस्या
,		٠		1	१-0-१ मे भंग	को० नं० १ न देखो	को०न० १ द देखो
	c				को० नं० १८ देखो	•	
रह आहारक	~	; ~ (	~	~	~	~	~
	अनाहारक	(१) मनुष्य गांत म			चारों गतियों में हरेक में	•	•
		१ श्रनाहारक जानना क्रोत नं १८ जेको			। श्रमाहारक विग्रह गति	1 19	
२० उपयोग	02	4 1 2 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4		1	में जानना		
ज्ञानोपयाम ६		* tJ# #35# (6)	४ थुगप्त	र युगपत्	0~		१ डपयोग
दर्शनोपयोग ४	~ ~	(१) गुज्य गांत म			(१) नरक गति में	कोंठनं० १६ देखो	कोठनंट. १.६ देखो
ये १० जानना	· 네	क्रो० मं १ १ सम्			w		
	:				का न० १६ देखो		
	,			•	(२) तियँच गति में	१ भंग	१ उपयोग
					३-४-४-३-४-४-६ के भंग	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो
					कों० नं० १७ देखो	,	
•					(३) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ उपयोग
				,	४-६-२ ४-६ के मंग	क्ति नं० १८ देखो व	को०नं० १ द देखो
	•				कीं ने १ देखी		
	,				(४) दवनात म	० भंग	् १ उपयोग
					FH th 1-1-0-0	का० न० १६ देखा का०न० १६ देखो	गठनं० १६ देवो

0 22

रिक में	tr	1	कार्यत (५-१८ देखो १ ध्यान होडान १७ टेखो	भारता १५ दुवा १ घ्याम मोठनं० १८ देखो	१ मंग कीठनं० १६ देखो	१ भंग कीठनं० १७ देखो	१ भंग को०नं०१ द देखो
श्रनाहारक	ອ	सारे मंग	हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं	(元) (元) (元)	सारे भंग कोेेें नंं १६ देखो	सारे मंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो
	ψ×	w <sub>a</sub>	· 4=	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में द-१-१-६ के मंग को मं० १८ देखो	४३ (१) नरक गति में ४२-३४ के मंग कोर नं १८ ३ के	(२) तियं न गति में ३७-३८-३६-४०-४३- ४४-३२-३३-३४-३५- ३६-३६-४३-३२-३३ ३६-३६-४३-३६-३३	मी में पुरुष विद्यों (३) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-२-१-४३- ३६-३३ के मेंग को० नं० १६ देखो
६६१ ) क नं० ६५	34	~		-	0		
कोष्टक	>>	~		<u>.</u>	•		
दर्शन	an-	१ (१) मनुष्य गति में १ का मंग को० नं० १० देखो	* .		यतासय जानना		
र्चोतीस स्थान दर्शन	2	२१ ध्यान सोरु नं० १६ देखो		२२ मस्तिव	४, २, ाययोग १	केपाय न्य, में (४३) जानना	

रिक में	ប	१       को० नं० १६       १       को० नं० १६       को० नं० १८       इेखी       १       भंग       १       को० नं० १८       देखी       १ <th></th>	
अनाहारक	g	सारे भंग सारे भंग नं० १६ देखो नं० १७ देखो नं० १९ देखो नं० १९ देखो नं० १९ देखो	
	US*	(४) देवगति में  ४३-३८-२३-४२-३७-३३ को० -३१ के भंग-को० नं० १६ देखो  ४६ देखो  ४६ देखो  ११) नरक गति में १२-२७ का भंग को० नं० १६ देखो  १२ तियँच गति में २४-२१-२१-२१ के भंग-को० नं० १७ देखो  (२) मनुष्य गति में २७-२५-२०-१४-२२-को० २५-३०-१४-२०-२२-को० १८ देखो  (४) देवगति में १६ देखो  (४) देवगति में २१-२६-२६ के भंग- को० नं० १६ देखो	
6 8 4	ક	% भंग देखों नं० १ प्र	,
त् स्टर कोष्टक नं	<b>&gt;</b>	सारे भंग को० नं० १ च देखो	. , ,
धिन	er.	१३ १३ का भंग-को० नं १६ देखो सुचना:—पेज नं० ६६३ पर देखो	
चौतीस स्थान दर्शन	~	२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, मुग्रवधि शान १, मनः पर्यय शान १, सरागसयम १, ये ५ घटाकर	

सूचना:--कल्प वासी देवीं में जाने वाले के विग्रह गति में द्वितीयोपश्चम सम्यक्त्व भी अनाहारक अवस्या में होता है इस अपेक्षा से उपसं सम्परव भी

नहीं घट सकता केवल प्रथमोपसं सम्यत्व में मरए। न होने की अपेक्षा ही उपसं सम्यक्त्व पट सकता है।

ाध प्रकृतियां—१११ वंध योग्य १२० प्र० में से आयु ४, आहारकदिक २, नरकदिक २ ये जन घटाकार ११२ प्र० का बंध जानना । प्रवगाहमा-को० नं १६ से ३४ तक देखो।

स्वरिद्धक २, महानिद्धा के (निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृष्टि थे है), ये वेश का तर प्र का उदय जानना। की० ने १-२-४-६-१३ म दना। उडय प्रकृतियो— = ६, उदययोग १२२ प्र० में से मिश्र (सम्पन्त्व मार्गेणाका इराभित), ग्रीदारिकद्विक २, वैक्तियक्षिक २, माहारकद्विक २, संस्थात ६, संहमन ६, उपचात १, परघात १, उच्छ्वास १, म्रातम १, उद्योग १, विहायोग्ति २, प्रत्येक १, साधारण १,

सत्य प्रकृतियां — १४८ मोठ नं० १ – २ –४ –६ – १३ देवो ।

प्रेय—लोक का ग्रसस्यातवां भाग, लोक के ग्रसंस्यात भाग, सर्वेलोक, विशेष खुलासा को०नुनं० '-२-४-६-१३ देखो स्ट्रेस्ट सम्बट्ट केन के मनस्य सम्बट्ट न

काल --नाना-जीवों की अपेक्षा सर्वकाल-जानना । एक जीव की अपेक्षा विग्रह गति में एक समय से तीन समय तक जानना । अयोग केवलो की स्कांन — ऊपर के क्षेत्र के समान जानता।

**प्र**न्तर—नाना जीवों की भपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की जिपेक्षा तीन समय कमें खुदभव ग्रहण काल से ३३ सागर काल तक श्रनाहारक अपेक्षा अन्तमु हुतः जानना । न बन मने।

आति (योनि)— ८४ लाल योनि जानना । कुल--१६६ । लाष्ट्रीकीरिकुल जानना । श्रव इस ग्रंथ की समाप्ति करते हुये लिखिये हैं कि जितने जैन शास्त्र हैं तिन सवका सार इतना ही है, व्यवहारकरी पांच परमेण्ठी की भक्ति श्रौर निश्चयकरी श्रभेद रतनत्रयमयी निजातमा की भावना ये ही शरण है, भव्यात्मा हो ! यह बात तब समभ सकेगा जब कि श्राप शान्त भाव से निरन्तर जैन शास्त्र का स्वाध्य य करें देखो प्रवोधसार ग्रंथ में लिखा है कि—

श्रुत वोधप्रदीपेन शासनं वर्ततेऽधुना। विना श्रुतंत्रदीपेन सर्वे विश्वं तमोमयम्।। ग्रीर भी तदुक्तं गाथा—

दंसण्णाण चिरत्तं सरणं सेवेह परमसिद्धाणं।
ग्रण्णं किपि न सरणं संसारसंसरणंताणं॥
ग्रीर भी सामायिक पाठ में कहा है कि—
एको मे शाश्वतश्चात्मा ज्ञानदर्शनलक्षणः।
शेप वहिर्भवा भावाः सर्वे संयोग लक्षणाः॥१३॥
इसका ग्रथं विचार करके विषय कषाय से विमुख
होकर शुद्ध चैतत्य स्वरूप की निरन्तर भावना करनी

चाहिये। यही मोक्ष का मार्ग है, तदुक्तं गाथा-

जेणिणिरन्तर मण्धिरियं विसयकसायहं जतु । मोनखह कारण पतंडे श्रणणतं त्यां मंतु ॥ जंसनकइ तं कीरह जं एा सक्तेइ तं च सद्ह्णां । सद्द्हमाणा जीवो पावइ श्रजरामरं ठाणां ॥ तवयरणं वयधरणंसंजम सरणं सव्व जीव दयाकरणं। श्रंते समाहिमरणं चडगइ दुक्खं निवारेई ॥ श्रंतोणित्य सुइएां कालो थोवो वयं च दुम्मेहा । तं णविर सिक्वियव्वं जं जरमरणं क्खयं कुणई ॥ इसी तरह समाधिशतक में भी कहा है—
तद्य यात्तप्तरान् पृच्छेत् तिदच्चेत्तप्तरो भवेत् ।
येनाविद्यामयं रूपं त्यक्त्वा विद्यामयं व्रजेत् ॥५३॥
सारांश-इस पंचमकाल में जैन शास्त्र बड़े उपकारी हैं,
यावन् काल इनका अवगाहन रहै तावत् काल ज्ञान का
प्रकाश होय, इन्द्रियों का अवरोध होय, जैसे सूर्य के उदय
उद्योत होय और घूषू (उल्सू) नाम जीव अंध हो जाय है,

#### त्रथ त्रन्तिम मङ्गल स्मर्ग

योग्य है।

जिसतें शांत भाव से निरन्तर शास्त्राम्यास करना सर्वया

येऽतीतापेक्षयाऽनन्ताः, संख्येया वर्तमानतः । ग्रनन्तानन्तमानास्तु, भाविकालव्यपेक्षया ।। तेऽर्हन्तः सन्तु नः सिद्धाः, सूर्यु याच्यायसाधवः । मङ्गलं गुरवः पंच, सर्वे सर्वेत्र सर्वेदा ।।१॥

धर्यात्—जो अतीत काल की अपेक्षा अनन्त संख्या वाले हैं, वर्तमान काल की अपेक्षा जो संख्यात हैं तथा भविष्यत्काल की अपेक्षा जो अनन्तानन्त संख्यायुक्त हैं, वे समस्त अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा साधु-रूप पंचगुरु समुदाय सदाकाल सर्वत्र हमारे लिये मङ्गल स्वरूप होवें।

'जयतु सदा जिनधर्मः सूरिः श्रीशान्तिसागरो जयतु' यह जैन धर्म सदा जयवन्त हो तया भाद्रपद गु॰ २ श्री वीरनिर्वाण सं० २४६२ विक्रम सं० २०१२ सन् १९५६ ई० को ५४ वर्ष की श्रायु में दिवङ्गत श्राचायं वर्ष श्री शान्तिसागर जी महाराज सदा जयवन्त रहें। चौंतोस स्थान दर्शन--

प रि शिष्ट

\*\*\*\*

2.0 \_ . . . . . . . . . . *.* 454 \$ 95.0 m ~ . \* : . . . . . . . . . .

# (दोहा)

प्रहें त्सिद्ध भगवान को, वन्दो मन-वच-काय। चौतीस स्थान दर्शन, रचना कहों बनाय॥१॥

# (छन्द-सवैया इकतीसा)

₹ , ¥ , · गुरा चौदा, जीव चौदा, प्रजा षट, प्रारा दस, संज्ञा चार, गति चार, छटवा स्थान जानिये। 3 इन्द्रिय पांच, कायपट, योग पन्द्रह, वेद तीन, ११ १२ १३ चौकपाय, ज्ञान ग्राट, संयम सात मानिये ॥२॥ १६ -**१**४ · १५ हग चार, लेश्या पट, भव्य दोय, सम्य कछे, 38 २० सैनी दोय, श्राहार दो, उपयोग बारा, मानिये। . २२ घ्यान सोला, श्रास्त्रव सत्तायन, भाव त्रेपन, भ्रवगाहना योजन हजार, वताइये ॥३॥ बंध एक शत वीस, उदय एक शत वोईस, २७ सत्व शत एक ग्रड्तालीस प्रभु गुरा गाइये। २६ ३० संस्या है अनन्त, क्षेत्र-फर्श भी है सर्वलोक, काल परिवर्तन भ्रसंख्यात पुद्गल जानिये ॥४॥ जघम्य नरक-देव दश हजार मानिये, तियंक् नर जघन्य काल अन्तर्मृ हतं घ्याइये। मध्यम में अनेक भेद जिनवाणी गाइये,

37

नारकी-मनुष-देव-तिर्यंच भ्रन्तर जानिये ॥५॥ जघन्य कहो एक ही भ्रन्तर्मुहूर्त मानिये, भ्रन्तर उत्कृष्ट के भ्रनन्त भेद जानिये।

33

जाति लाख चउरासी ग्राधघाटि दो सौ लाख,
 ३४
 कोटिकुल संसार त्याग सिद्ध पद पाइये । ६।।

# (छन्द-सवैया तेईसा)

पहले जीव समास सकल है,
शेषन में त्रस एक ही जान।
पर्याप्ति चौदम लग पट् ही,

प्राण वार में लग दस जान ॥७॥ तेरम वच-तन-श्वास-म्रायु चतु,

चौदम एक श्रायु पहिचान।
संज्ञा किह्ये पट लग चारो,
सप्त श्रष्ट त्रय हार न स्थान।।।।
नव में मैधुन परिग्रह दोनों,
दस में परिग्रह श्राये हान।
संज्ञा पर संसार खड़ा है,
इनके गिरते ही पावत निर्वाग ॥६॥

#### छन्द-चीपाई

पहले तें चतुलग गति चार, पंचम में नर पशु विचार। छट्टे तें चौदम लग कही,

मानुष गति इक जानो सही ॥१०॥

इन्द्री पांचों मिथ्यात,

दूजे तें चौदम लग जात।

६क पंचेन्द्री जिनवर कही,

इम इन्द्रिय वर्णन वरणई ॥११॥

पहले गुरा पट काय जु लसे,

दुजे तें चौदम त्रस बसे।

पहले दूजे तेरह योग,

हारकद्विक विन जान वियोग ।।१२॥

तीजे में दस इमि गिन लाय,

मन वच ग्रष्ट भौदारिक काय।

वैकीयक मिल सब दस भये,

चौथे त्रयोदस पहिले कहे ॥१३॥

पंचम में मन वच वसु जान,

ग्रीर ग्रीदारिक मिल नव स्थान।

प्रमत्त में एकादस योग,

हारकद्विक युत जान नियोग ।।१४॥

सप्तम तें वारम लग जान,

नव पचमवत् जान सुजान ।

तेरम जोग सप्त निराधार,

अनुभय-सत्य, वचन मन चार ॥१५॥

श्रीदारिक श्रीदारिक मिश्र,

कार्माण मिल सप्त जो विस्र।

चौदम गुरा स्थान ग्रयोग,

काट संसार मोक्ष सुख भोग ॥१६॥

वेद प्रथम ते नव लग तोंन.

ग्रागे वेद न जान प्रवीन।

वेद रहित जो भये प्रवीन,

मोक्ष सुखों में वे हुये लीन ॥१७॥

ग्रव कपाय को वर्गान करो,

गुरा स्थान भिन्न भिन्न उचरो ।

यही संसार का विप महान्,

इसको ही त्याग भये भगवान ॥१५॥

#### छन्द-छप्पय

पहले दूजे सर्व मिश्र,

इकवीस भनीजे ।

चौथे हू इकवीस चोंकड़ी,

प्रथम न लीजे ॥१६॥

श्रप्रत्याख्यान विना,

देश संयम में सतरा ।

प्रत्याख्यान विना तेर पट्,

सत वसुं इकरा ॥२०॥

नव में गुएा सव सात हैं,

संज्वलन त्रये वेद भन । 💜

दसमें सूच्छम लोभ इक,

श्रागे हीन कपाय गन ॥२१॥

प्रथम द्वितीय कुज्ञान,

तीन तीजे सुमते भन।

चौथे तीन सुज्ञान,

पंचम में भी इमि गन ॥२२॥

पट् ते द्वादश तई,

ज्ञान केवल विन चारो।

तेरम-चौदम गुरा-स्थान,

केवल इक धारो ॥२३॥

इहि विधि गुरा पर ज्ञान को,

कथन कहो जगदीश ने।

श्रव संयम रचना कहूं,

जिमि सूत्तर भाषी जिने ॥२४॥

पहले तें चतु लगे, 🐪

श्रसंयम ही इन जानो।

पंचम-संयम-देश छठें,

सप्तम इम भानो ॥२४॥

सामायिक, छेदोपस्थापना,

परिहारविशुद्धी ।

ग्रप्टम-नव गुग्। दोय,

नाहि परिहारविद्युद्धी ।।२६॥

सांपराय, सूच्छम दसे, ग्यारमतें जु ग्रयोग तक। इक यथास्यात ही जानिये, .. ये संयम सुखकर श्रघिक ॥२७॥ पहले दुजे दोय, म्रचक्षु-चक्षु भनीजे। त्रयतें बारम तई, ग्रवधियुत तीन गनीजे ॥२८॥ केवल तेरम-चौद, ग्रीर पट लेश्या चतु लग । पचम-पष्टम-सप्त, तीन शुभ लेश्या हर ग्रघ ॥२६॥ फिर अष्टम तें सयोग तक, एक शुक्ल लेश्या ही कही। गुण चोदहें सब नाश कर, जाय सिद्ध पदवी लही ॥३०॥ -पहले भव्य-ग्रभव्य, .. द्वितीयतें भव्य चीदम तक । त्रयगुरा के जो नाम, तहां वोही सम्यक इक ॥३१॥ चतुपण पट सत माहि, क्षय-उपशम ग्रह वेदक । वसुते ग्यारम तई दोय, उपशम श्रीर क्षायिक ॥३२॥

वसुते ग्यारम तई दोय,
उपशम श्रीर क्षायिक ॥३२॥
शेपन क्षायिक ही कही,
सैनी-श्रसैनी मिथ्यात में।
गुरा दूजे तें चौदम तई,

इक सैनी ही सुखपात में 113311

# ( छन्द-सवैया तेईसा )

पहले दूजे हार-ग्रन्हारक,
तीजे हारक चौथे दोय।
पनमते वारम तक हारक,
तेरम हार-ग्रनहारक होय॥३४॥
चौदम इक ग्रनाहार गनीजे,
गुग्ग-स्थान चौदह इमलीजे।

काय रहित भये जो सिद्ध, चरनों में उनके शिर जे ॥३४॥ ( छन्द-छप्पय ) पहले-तूजे दर्श दोय, कुज्ञान तीन है। मिश्र माहि जय दर्श, ज्ञान पुनि मिश्र तीन है।।३६। चतु पन पट विज्ञान, तीन शुभ दर्श वलानो । पटतें द्वादश तई, सप्त मनः पयय जानो ॥३७॥ तेरम चौदम दोय है, केवल दर्शन-ज्ञान युत । फिर अघातिया हान के, पायो पद अति अद्भुत ।३=।। पहले दूजे ग्रष्ट, म्रार्ता-रीद्र के जांय। मिश्र माहि नव जान. धर्म का एक मिलोय ॥३६॥ पुनि वृपके दोय भेद, मिले दस चतु गुए। स्थानो । पंचम त्रय वृप मिले, एकादश सब पहिचानो ॥४०॥ पट ग्रारत त्रय धर्म चड, सव चंड ग्यारम लग शुक्ल। वारम तेरम पुनि चौदमें, क्रमतें शेप त्रिक गुक्त ॥४१॥ पहले पचपन कहे, भ्राहारकद्विक विन जानो। पंच मिध्यात्व जु विना द्वितीय पच्चास वलानो ॥४२॥ तीजे मिश्र जु माहि,

तीन चालिस ईवानी।
श्रवत गुरा जिहि नाम,
चतुम चालिस छह जानो। ४३॥
योग कपाय जु पूर्ववत्,

न्नद्रत ग्यारह पंच में।

( 400 चौबीस योग कराय के, 😁 प्रमत्त गिनिये संच में ॥४४॥ सप्तम ग्रष्टम गुरा-स्थान। वाईस जु श्रास्रव। नव में सोलह लये, दसम दस ग्यारम में नव ॥४४॥ वारम में नव जान, तेरमें सप्त गनीजे। मन-वचके द्वय दीय, श्रीदारिक युगल सु लीजे ॥४६॥ कार्माण मिल सप्त द्वेषे, 🚈 🦠 👵 🦠 तेरस गुए। में जानिये। पुनि चौदम में ब्रास्नव नहीं, 🗀 🦠 🦠 🚟 यह मन-वचः उर भ्रानिये ॥४७॥ पहले चौंतीस दूजे वत्तीस, तेहतिस भाव मिश्र में जान। चौथे छत्तिस पचम षटम, सप्तम में एकतीस वखान ॥४८॥ ग्रष्टम नवमें उनत्तीस ही जानी, दसमें तेईस कह्यो भगवान ।

ग्यारम में एकईस कही है, वारममें बस बीस ही जान ॥४६॥ तेरमें चौदह चौदहमें तेरह, सिद्ध गति में पांच ही जान । भाव त्रेपन का यह वर्णन, जिन वाणी भाषा भगवान् ॥५०॥ सात धनुष पंचशतक,

नारक की ग्रवगाहन जान। एक हाथ से धनुष पंचशत, देवों की भाषा भगवान् ॥५१॥ एक हाथ से तीन कोस काया, मनुप्य गति किया वखान। घनांगूल का भाग ग्रसंस्य से, तीन कोस तियंक् जान ॥ १२॥ एकसी एक वंघ नारकी, एकसी सतरा तियँच की जान।

एकसौं वीस मनुष्य की जानो, एक सौ चार देवकी भान ॥ १३॥ 🐪 मनुष्य तियँच लब्ध्य की जानो, एकसो नव कहे भगवान। भोगभूमि की बंध प्रकृति, मिला नहीं म्रलब्ध्य वखान ॥ १४॥ उदय छयंत्तर नारक कहिये एफ सौ सात तियँच की जान। मोगभूमि तियँच उन्नासी, लब्ध्य तिर्यंच इकत्तर जान ॥ ११।। एकसी दोय मनुष्य बतायो, भोगभूमि में श्रठत्तर जान। मनुष्य गति लब्ध्य इकत्तर, जिन वाणी मैं किया बखान ॥ ४६॥ देवगति में उदय प्रकृति सतत्तर, 🛒 👵 🚓 बागी में मिलता बखान। चारों गति उदय की हानि, करम काट पहुंचे निर्वाण ॥५७॥ नरक-तियँच-देवगति की, सत्त्व सी सेंतालीस जान। मनुष्य गति एक सौ ग्रडतालीस, सव की सव भाषी भगवान् ॥ ५८॥ नरक-मनुष्य-देव की ग्रसंख्यात, श्रनन्त संख्या तियंच की जान। अन्तर भेद वहुत से भाषित, इसी ग्रन्थ में किया वखान ॥५६॥ तरक-देव-मनुष्य जीवों का, त्रसनाड़ी है क्षेत्र महान्। तिर्यंच जीव सर्वलोक में, जिन वासी भाषा भगवान् । ६०॥ नरक स्पर्शन छे राजु, समुद्घात मारगान्तिक जान। देवगति का तेरह राजु, शक्ति के आधार वसान ॥६१॥ तियंच-मनुष्य सर्वेलोक स्पर्शन,

समुद्घात मारणांतिक जान ।

केवल समुद्धात मनुष्य सर्वलोक स्पर्शन जान ॥६२॥ तेतीस सागर देव-नारकी,

तियँच-मनुष्य त्रिपत्य वसान ।
नरक-दव की जघन्यकाल,
वर्ष हजार दस ही जान ।।६३॥
तिर्यच-मनुष्य की जघन्यकाल,

ग्रन्तमुं हुर्त ही जान।

कर्मकार जो मोक्ष पधारे,

काल ग्रनन्तानन्त ही जान ।।६४॥ नरक-देव-मनुष्य-तियँच की,

श्रन्तमुँ हूर्त ही श्रन्तर जान। उत्तम श्रन्तर भेदः बहुत है,

वीतीस स्थानक दर्शन में जान ॥६४॥

चौंरासी लक्ष योनि,

प्रथम गुरा स्थाने सारी। दूजे तें चौ तई,

लाख छव्वीस विचारी ॥६६॥ पंचम में नर पश्,

लाख श्रठ्ठारह जानो।

पटते चौदह तई,

मनुष्य लक्ष चौदह स्थानो ॥६७॥ कुलकोडि प्रथम में जान, सब दूजे तें चतु लग चऊ। पंचम नर पशु सकल गन, श्रागे मनुष्य जान सऊ॥६८॥

( छन्द-दोहा )

ये सब रचना पर तनी,

यामें तू नहीं जीव।
तेरा-दर्शन-ज्ञान गुरा,

तामें रहो सदीव ॥६६॥

दक्षिण महाराष्ट्र देश में,
जत्तर-सतारा जिल्हा जान ।
फलटण नगर ग्रादि-जिन मन्दिर,
यह रचना बनी विधान ॥७०॥
श्री ग्रादिनाथ जिन भगवान के,
चरणारविन्द में शिर नमाय ।
श्री ग्रादि सागर मुनि चरणपे,
प्रणाम करे पंडित जलफतराय ॥७१॥

-48.00

# चौबीस-दगडक (दौलतराम कृत)

# दोहा

वन्दों वीर सुवीरकों, महावीर गंभीर ।
वयंमान सन्मित महा, देव देव ग्रति वीर ॥१॥
गत्यागत्य प्रकाश के, गत्यागत्य व्यतीत ।
ग्रद्भुत ग्रातंगित सुगति जो, जैनसूर जगदीश ॥२॥
जाकी भिक्त विना विफल, गये ग्रनन्ते काल ।
ग्रगिगत गत्यागित धरी, कटी न जग-जजाल ॥३॥
चीवीसों दण्डक विषें, घरी ग्रनन्ती देह ।
नाही लिखयो ज्ञान-धन, शुद्ध स्वरूप विदेह ॥४॥
जिनवागी परसादतें, लिहये ग्रातमज्ञान ।
दिहये गत्यागित सवें, गिहये पद निर्वाग ॥५॥
चीवीसों दण्डकतनी, गत्यागित सुन लेव ।
सुनकर विरकत भाव धरि, चहुँ गित पानी देव ॥६॥

### 'छन्दं-चौपाई '

पहिलो दण्डक नारक तनों, भवनपती दस दण्डक भनी। ज्योतिप व्यन्त्र सुरगति वास, थावर पच महादुख रास ॥७॥ विकलत्रय प्रह नर तियंच, पंचेन्द्रिय धारक परपंच । ये.चीवीसों दण्डक कहे, भ्रव सून इनमें भेद जु लहे ॥ ५॥ नारक की गति-स्रागति दोय, नर तियँच पंचेन्द्रिय होय। जाय ग्रसैनी पहिला लगे, मन विन हिंसा करम न पर्ग ॥६॥ सरीसर्प दूजे लग जाहि. तीजे लग पक्षी शक नाहि। सर्प जाय चौथ लग सही, नाहर पंचम ग्रागे नहीं ।।१०॥

नारी छट्टे लग ही जाय, नर श्रहं मच्छ सातवे थाय। ये तौ नरकतनी गति जान, अव आगति भाषी भगवान् ॥११॥ नरक सातवें को जो जीव, पशुंगति ही पावे दुख दीव । श्रीर नारकी पुष्ठ सदीव, दो गति पावें नर पशु जीव ।। ,२।। छट्टे को निकसो जुकदाप, 🚉 सम्यक्तवा होवे निष्पाप । पंचम को निकसो मुनि होय, चौथे को केवलिह जोय ॥१३॥ -तृतीय नरक को निकसो जीव, तीर्थंकर हु है जग पीव। ये नारक की गत्यागत्य, भाषी जिनवाराी में सत्य ।।१४॥ तेरह दण्डक देव निकाय, तिने भेद सुनो मन लाय। नर तिसच पंचेन्द्रिय विना, ग्रीरन के सुरपद नहिं गिना ॥१५॥ देव मरे गति पंच लहाय, भू, जल, तरुवर, नर, पशु थाय। दूजे सूरग ऊपरले देव, थावर है न कहें जिन देव । ६॥ सहस्रार तें ऊंचे सुरा, मरकर होवें निश्चय नरा। नर पशु भोगभूमि के दोय, दूजे सुरग परे नहिं होय ॥१७॥ जाय नहीं यह निश्चय कही, देवनि भोगभूमि नहिं लही। करम भूमिया नर ग्रह ढोर, इन दिन भोगभूमि नींह और ॥१८॥ जाय न तातें श्रागति दोय, गति इनको देवन की होय । कर्म भूमिया तियंच सत्त, श्रावक वृत घरि वारम गत्त ॥१६॥ सहस्रार ऊपरं तियँच. जायें नहीं ये तिज परपंच। ग्रवत सम्यक्त्वी नरभाय, वारमतें उपर नहि जात ॥२०॥ ं ग्रन्यमती पंचारती साघ. भवनित्रकतें जाय न वाघ। परिवाजक दण्डी है जेह, पंचम परे नाहि उपजेह ॥२१॥ परमहंस नामा परमती, सहस्रार ऊपर नहिं गती। मोक्ष न पावे परमत माहि. जैन विना नहिं कर्म नशाहि ।।२२।। श्रवक आर्य अण्वत घार, वहरि श्राविकागरा ग्रविकार । श्रच्यूत स्वगं परे नहि जाय. ऐसो भेद कहो जिन राय ।।२३।। द्रव्य लिंग धारी जो जती, नव ग्रैवेयक आगे नहि गती। वाह्याभ्यन्तर परिग्रह होय, परमत लिंग निद्य है सोय ॥२ ॥ पंचपंचोत्तर नव नवोत्तरा. महामुनो विन और न घरा। केई वार देव जिय भयो, पै केई पद नाहीं लयो ॥२५। इन्द्र हुवो न शची ह भयो, लोकपाल कवहं नहि धयो। लोकान्तिक हूवो न कदापि, अनुत्तर वह पहुंचो न कदापि ॥२६॥ ये पद धरि वह पद नहिं धरे. यलपकाल में मुक्तिहि बरे।

हे विमान सर्वारथ सिद्ध, सवतें ऊंचों श्रतुल जुं रिख ॥२७॥ ताके ऊपर है शिवलोक, परे ग्रनन्तानन्त ग्रलींक। गति-ग्रगति देवन की भनी, श्रव सुनलो मानूप गति तनी ॥२०॥ चौबीसों दण्डक के माहि, मन्प जाय यामें शक नाहिं। मुक्ति हु पावे मनुप मुनीश, सकल धरा को है अवनीश ॥२६॥ मूनि विन मोक्षंन पावे श्रीर, मन्प विना नहिं मुनि को ठौर। सम्यग्हण्टी जे मुनिराय, भवद्धि उतरें शिवपुर जाय ॥३०॥ तहां जाय धविनश्वर होय, फिर जगमें भावे नहि कोय। रहे सासते श्रातम माहि, ग्रातमराय भये शक नाहि ॥३१॥ गति पच्चीस कही नरतनी, ग्रागति पूनि वाईस हि भनी। तेजकाय श्ररु वात जु काय, इन विन श्रीर सर्व नरथाय ॥३२॥ गति पच्चीस श्रागति वाईस, मन्पतनी भाषी जगदीश। ईश्वरसम श्रातमरूप, घ्यावे चिदानन्द चिद्रूप ॥३३॥ तो उतरे भवसागर भया. श्रीर न कोऊ शिवपुर लया। य सामान्य मनुप की कही, श्रव सुनि पदवी घरको सही । ३४॥ तीर्थंकर की आगति दोय. न्र नारकतें ग्रावे सोय। फेर न गति घारे जगईश. जाय विराजे जग के सीस ॥३४॥

चको ग्रवं-चकी वा हली, स्वर्गलोक ते ग्रावे वली। इनको आगति एकही कही, ग्रव सुनिये जागति जू सही ॥३६॥ चकी की गति ठीन बखान. स्वर्ग नरक ग्ररु मोक्ष सुधान। तप घारे तो सुधशिव भाय, मरे राज में नरक लहाय।।३७॥ ग्राखिर पावे पद निर्वाग. पदवीघर ये पुरुष वलमद्दर की दो जागती, सुरमें जाय के है शिवपती ॥३८॥ तप घारे ये निश्चय भाय. मुक्तिपात्र सूत्रन में गाय। श्रधंचिक को एक हि भेद, जाय नरक में लहे जु खेद ॥३६॥ राज माहि यह निश्चय मरे, तद्भव मुक्ति पंष नींह घरे। ग्राखिर पावें पद निर्वाण, पदवीघारक वड़े सुजान ॥४०॥ इनकी आगति सुरगति जान, गति नरकन की कही वखान। भ्राखिर पावें पद शिवलोक. पुरुष शलाका शिव के थोक ॥४१॥ ये पद पाय सु जगके जीव. श्रत्पकालमें ह्वं जग पीव। ग्रीर ह पद कोई नींह गहे, कुलकर नारद हू नहि लहे ॥४२॥ रुद्र भये न मदन हु भये, जिनवर तात मात नहि थये। ये पद पाय रुलै निह जीव, थोरे दिनमें है शिव पीव ॥४३॥ इनकी श्रागति शृत तें जान, जागति रीती कहं जु बखान।

~1.27

कुलकर देवलोक ही जाय, मदन मदन हरि ऊरद थाय ॥४४॥ नारद रुद्र श्रद्योगति जाय. कलह कतह महादुखदाय। जन्मान्तर पावे निर्वाण, वड़े पुरुष ये सूत्र प्रमाण ॥४४॥ तीर्थकर के पिता प्रसिद्ध. स्वर्ग जायके होवें सिद्ध । माता स्वर्गलोक ही जाय, श्राखिर शिवसुख वेग लहाय ॥४६॥ ये सब रीति मन्ष की कही, श्रव सुनि तियंग गति की सही। पचेन्द्रिय पशु मरण कराय, चौबीसों दण्डक में जाय ॥ .७॥ चीबीसों दण्डकतें मरे, पशु होय तो नाहन परे। गति-भ्रागति वरशी चौबीस. पंचेन्द्रिय पशु की जगदीश ॥४८॥ ता परमेश्वर को पथ गही, चौबीसों दण्डक को दहो। विकलत्रय की दस ही गति, दस प्रागति भाषी जिनपति ॥४६॥ मावर पंच विकल तीन, नर तिर्यंच पंचेन्द्री लीन। इन ही दस में उपने श्राय, इनहीतें विकलत्रय थाय ॥५०॥ नारक विन दण्डक है जोय, पृथ्वी पानी तरुवर होय । तेज वायु मरि नवमें जाय, मनुप होय नहिं सूत्र कहाय ।।५१॥ थावर पंच विकलत्रय होर, ये नवगति भाषी दमोर। दसतें श्राय तेज ग्रह वाय. होय सही गावें जिनराय ॥५२॥

ये चौबोसों दण्डक कहे, इनकूं त्याग परमपद लहे। इनमें क्लैं, सो जगको जीव, इनसे तीरे सो त्रिभुवन-पीव। ४३।। जीव इसमें श्रीर न भेद, ये कर्भी, वे कर्म-उच्छेद। कर्म बंघ जों लों जगजंत, नाशत कर्म होय भगवन्त।।४४।।

# (छन्द-दोहा)

मिथ्या श्रव्रत जोग श्रव्ह, मद परमाद कपाय।
इन्द्री विषय जु त्यागिये, श्रम्ण दूर हो जाय।।५१॥
जिन विम गति वहुते धरी, भयी नहीं मुलकार।
जिन मारग उर धरिके, लिहये भवदिष पार।।५६॥
जिन भज सब परपच जन बड़ी बात है येह।
पंच महाव्रत धारिके, भव जल को जल देह।।५७॥
ग्रंतः करण जु शुद्ध है, जिनधरमा ग्रिभराम।
भाषा भविजन कारणें, भाषी दौलतराम।।५६॥

--·o:--

सूचना—संशोधक का यह कहना है कि इस चौबीस-दण्डल की दो-तीन प्रतियां दिखती हैं, उन तीनों की किवतायें कई जगह पाठान्तर जान पड़ती हैं, परन्तु मूल भाव में कुछ भी भेद नहीं है।

कर्मों के मूलोत्तर प्रकृतियों की अवस्था आर संख्या आदि विवरण —

	. ,	. ,		उत्तर प्र	कृतियों	की संख	था	· · · ·		
कर्म प्रकृतियों की ग्रवस्था ग्रौर नाम	संख्या	१ ज्ञाना०	२ दर्श ०	३ वेद०	४ मोह०		. ६ नाम०		० हान्त०	जोड़
۶	.२	₹	8	પ્ર	६	9	=	3	80	११
१. मूल प्रकृतियां	5	8	१	१	8	१	8	<b>१</b>	1 8	5
२. उत्तर प्रकृतियां	१४८	ধ	3	२	२=	8	€3	२	¥	१४८
३. वन्घ योग्य प्रकृतियां	१२०	પ્ર	3	२	२६	8	६७	२	ধ	850
४. ग्रवन्ध योग्य प्र०	२८	0	0		२	0	२ इ	0	0	२=
५. उदय योग्य प्रकृतियां	१२२	ય	ε	२	२८	8	६७	२	ય	१२२
६. श्रनुदय योग्य प्र०	२६	0	٥	0	0	0	२६	0	0	२६
७. सत्त्व योग्य प्र०	१४८	ų	ε.	२	२८	४	£3	ર	ય	१४८
<ul><li>पाति प्र०</li></ul>	४७	પ્ર	3	0	२=	0	0	0	ય	४७
६. सर्वे घाति प्र॰	۶ - ا	१	દ્	0	१४	0	0	0	0	२१
१०. देश घाति प्र॰	२६	8	Ę	0	१४	0	0	0	x	२६ .
११. ग्रघाति प्र॰	१०१	0	0	२	0	४	દર	२	0	१०१
१२. प्रशस्त (पुण्य) प्र॰	६८	0	٥	१	0	æ	६३	१	o	६न
१३. ग्रप्रशस्त (पाप) प्र॰	१००	¥	ê	१	२८	१	40	?	y,	१००
१४. पुद्गल विपाकी प्र०	६२	0	0	o	0	0	६२	0	0	έś
१५. भाव विवाकी प्र०	6	0	0		0	४	0	0	0	Y
१६. क्षेत्र विपाकी प्र०	8	10	0	0	0	o	४	0	0	K
१७ जीव विपाकी प्र०	৬৯	પ્	٤	ર્	२= (	0	ခဲ့ <u>ခ</u>	ર	ય	ଓସ
					1					

							<u> </u>		<del>.,</del>	
<b>?</b>	२	3	8	ਪ	Ę	<b>9</b>	5	3	१०	88
१८. सादि-ग्रनादि-श्रृव-त्रश्रुव रूप चारों प्रकार का बंध होने वाली प्रकृतियां	११४	X	Э	0	२६	0	६७	٦٧	ĸ.	, <b>१</b> .४
१६. ग्रनादि-श्रुव-ग्रध्नुवरुप तीनों प्रकार का बन्घ होने वाले प्रकृतियां	<b>१</b>	0	0	\ 	0	0	0	0	0	<b>१</b>
२० सादि और अधुव रूप दो प्रकार का बन्ध होने वाले प्रकृतियां	४	0	o	0	o	४	0	0		8
२१. सादि वंघ प्रकृतियां	¥	ų,	o	0	0	0	0	0	0	ų.
२२. ग्रनादि वंघ प्रकृतियां	પ્ર	×	0	0	0	0	0	0	o .	¥.
२३. श्रुव वध प्रकृतियां	४७	ų	3	0	38	0	3	0	ય	४७
२४. इधुव दंघ प्रकृतियां	७३	0	0	₹.	<i>b</i> ,	૪	ሂፍ	२	0 7	७३
२५. स्थिति वंध प्रकृतियां	१२०	¥	ε.	२	२६	४	६७	٦ .	y ;	१२०
२६. उदय व्युच्छित्ति के पहले बन्ध व्युच्छित्ति जिनके हावे वे प्रकृतियां	<b>५</b> १	·¥	w	2	X	₹	ሂ၀	9,	¥	<b>5 </b> {
२७. उदय व्युच्छित्ति के बाद बन्ध व्युच्छित्ति जिनके होवे वे प्रकृतियां	ដ	o ·	0	0	0	<b>१</b>	હ	0	0	<b>.</b>
२८. उदय व्युच्छित्ति श्रीर वन्य व्युच्छित्ति जिनके एक साथ श्रयति एक ही गुरा स्थान में होता है वे प्रकृतियां	₹ \$	0	o	0	२१	0	१०		•	ž ģ
२६. जिस प्रकृति का उदय होता है उसका उस ही जन्म में वध होता है ऐत प्रकृतियां	<b>२</b> ७	X	४	0	3	0	१२	0	<b>X</b> :	<b>ই</b> ও

						-				
<u> </u>	२	<b>a</b>	8	4	Ę	છ	=	3	१०	११
३०. एक प्रकृति का उदय होता हुग्रा दूसरे प्रकृति का बंध होता है ऐसे प्रकृतियां	<b>११</b>		0	o	0	2	3		o	१र
३१. आपका या अन्य प्रकृति का उदय होता हुआ या नहीं भी हो तो भी जिस प्रकृति का बंघ होता है ऐसे प्रकृतियां	<b>5</b> 7	o	¥	7	२४	2	४६	२		52
३२. निरन्तर वंघ होने वाले प्र०	ሂሄ	ų	3	0	१६	8	<b>१</b> २	0	ሂ	१४
३३ सांतर वंघ प्रकृतियां स्रयीत् जिनका बन्ध कभी होता है श्रीर कभी नहीं होता है ऐसे प्रकृतियां	३४	o	o	१	४	0	२६	o	0	: <b>४</b> .
३४. सांतर ग्रौर निरन्तर वंध होने वाले प्रकृतियां	३२	0	0	?	æ	٥	२६	२	0	<b>= 7</b>
३५. उद्वेलना प्रकृतियां	१३	0	•	o	२	0	१०	१	0	१३
३६. विघ्यात प्रकृतियां	६७	0	ą	१	१५	۰	४३	२	0	६७
३७ ग्रघः प्रवृत्ति प्र०	१२१	ધ	8	२	२७	४	६७	२	X	१२१
३८. गुरा संक्रमरा प्र०	৬২	0	પ્ર	१	२३	0	8	ર	0	७४
३६. सर्व संक्रमण प्र०	५२	0	ą	0	२७	0	٠ ٤	१	0	५२
४०. तिर्यंगे का दश प्र०	११	0	0	0	٥	0	११	•	0	११
•										

# कर्मीं के मूलोत्तर प्रकृतियां की चवस्थाचों के मादिक कुछ विशेषा विवरमा

१. मूल प्रकृति द हैं — कमं सामान्य से द प्रकार का या १४ द प्रकार के होते हैं भीर असंस्थात लोकप्रमाण भेद भी होते हैं। घाति श्रीर श्रघाति ऐसी उनकी अलग-अलग संज्ञा है, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय श्रीर अन्तराय ये चार घातिया कम हैं, कारण ये जीव के गुणों का घात करते हैं श्रीर श्रायु, नाम, गोत्र भीर वेदनीय ये चारों कमं जीव के गुणों का घात नहीं करते, इसलिये वे श्रघाति कमं कहलाते हैं, इस प्रकार ये कमों की श्राठ मूल प्रकृतियां हैं। उनका कम १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ श्रायु, ६ नाम, ७ गोत्र, द श्रन्तराय इस प्रकार — जानना (देखों गों० क० गां० ७-द-६)

२. उत्तर प्रकृति १४८ हैं—ज्ञानावरणीय के ४, दर्शनावरणीय के ६, वेदनीय के २, मोहनीय के २८, आयु के ४, नाम कमें के ६३. गोत्र कमें के २, अन्तराय के ४ ये सब मिलकर १४८ उत्तर प्रकृतियां जानना (देखों गो० क० गा० २२)।

## १. बंध योग्य प्रकृतियां १२० हैं-

- (१) ज्ञानावरणीय ५ (मति-श्रुत-म्रवधि-मनः पर्यय-केवल ज्ञानावरणीय ये पांच)
- (२) दर्शनावरणीय ६ (ग्रमक्षु दर्शन, चक्षुदर्शन, ग्रविप दर्शन, केवल दर्शनावरणीय श्रीर स्थानगृद्धि, निदानिद्रा, प्रचलाश्रमला निद्रा, प्रचला ये ६)
- (३) वेदनीय के २ हैं [सातावेदनीय (पुण्य), श्रसाता-वेदनीय (पाप) ये २]
- (४) मोहनीय के दर्शनमोहनीय श्रीर चारित्रमोह-नीय ऐसे दो प्रकार हैं. दर्शनमोहनीय का बंध की श्रपेक्षा से 'मिध्यात्व' यह एक ही प्रकार जानना, उदय श्रीर सत्व की भपेक्षा से मिध्यात्व, सम्यङ् मिध्यात्व, सम्य-क्तव प्रकृति ऐसे तीन प्रकार जानना।

चारित्रमोहनीय के -कपायवेदनीय ग्रीर नोकपाय-वेदनीय इस प्रकार दो भेद जानना ।

कवायवेदनीय के—१६ भेद हैं—(श्रनंतानुवंधी— कोध-मान-माया-लोभ ४, ग्रप्रत्याख्यान-कोध-मान-माया-लोभ ४, प्रत्याख्यान-क्रोध-मान-माया-लोभ ४, संज्वलन-मान-माया-लोभ ४ ये १६

नोकपायर्ववनीय के ६ प्रकार हैं—(हास्य, रित, आरित, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुपवेद, स्त्रीवेद, नपु सकवेद ये ६)।

इस प्रकार मोहनीय कर्म के वंध की अपेक्षा, दर्शन मोहनीय के एक मिध्यात्व प्रकृति और चारित्र माहनीय के २४ प्रकृति मिलकर २६ प्रकृति जानना।

- (४) भ्राय कम के ४ भेद हैं (नरकायु १, तिर्यचायु १, मनुष्यायु १, देवायु ये ४)
- (६) नाम कम के ६४ हैं—पिंड श्रौर श्रिपंड की श्रपेक्षा ४२ प्रकार जानना, पिंड प्रकृति १४ हैं, इनके उत्तर भेद ६५ जानना, गति ४, जाति ४, शरीर ५, बंधन ४, संघात ४, संस्थान ६, श्रंगोपांग ३, संहनन ६, वर्गादि ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ६, श्रानुपूर्वा ४, विहायोगित २ ये ६५ हैं।

श्रिपंड प्रकृति २० होते हैं—(१) अगुरुलघु (२) उप-धात (३) परधात (४) उच्छ्यास (५) श्रातप (६) उद्योत, (७) यस (०) स्थावर (६) वादर (१०) सूक्ष्म (११। पर्याप्त (१२) श्रप्याप्त (१३) प्रत्येक घरीर (१४) सामारण घरीर (१६० हिचर (१६०) श्रस्यिर (१७) श्रुम (१६०) श्रुम्म (१६०) सुमग (२०) दुर्मग (२१) सुस्वर (२२) दुस्वर (२२) श्रादेय (२४) श्रादेय (२५) यशः कीर्ति (२६०) श्रयशः कीर्ति (२७०) निर्माण् (२६०) तीर्यंकर ये २० जानना ।

इस प्रकार ६४ + २८ = ६३ नामकर्म के प्रकृतियों में निम्नलिखित २६ प्रकृतियों की बंध में गिनती नहीं की जाती है। इसलिये वंघन ४, सयात ४, स्पर्झादिक १६ (स्पर्झादि २० प्रकृतियों में से स्पर्श १, रस १, गंध १, वर्ग १ ये ४ वंघ में गिने जाते हैं इसलिये ये ४ छोड़कर शेष १६ ये २६ प्रकृतियां ६३ प्रकृतियों में से घटाकर शेष ६७ प्रकृतियों का वंध माना जाता है, वास व में ६३ प्रकृतियों का वंध होता है परन्तु वंध की हिसाव में २६ प्रकृतियों की गिनती नहीं है इसलिये ६७ प्रकृतियों वंध योग्य माने जाते हैं।

- 1७) गीत्र कर्म २ है— (१ उच्च गोत्र, १ नीच गोत्र, ये २ जानना)
- (८) फ़तराय १ एकार का है (दानांतराय, लाभांत-राय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यां तराय ये १ प्रकार जानना)

सव १४= कर्म प्रकृतियों में से दर्शन मोहनीय की २ प्रकृतियां—(सम्यङ्पिथ्यात्त्र १, सम्यक्त्व प्रकृति १ ये २) वंघ योग्य नहीं हैं इसिलये ये २ घटाने से १४६ वंघ योग्य प्रकृतियां रहती हैं, पग्नतु उनमें से २६ प्रकृतियां वंघ में नहीं मानते हैं। इसिलये वह भी कम करके ग्रयांत् १४५—२=१४६—२६=१२० प्रकृतियां वंघ योग्य माने गये हैं। (देखो गो० क० गा० २३ से ३५)।

४. ग्रबंध प्रश्नित्यां ८ इ हैं दर्शनमोहनीय की २ (सम्यङ्मिथ्यात्व. सम्यक्तव प्रश्नृति ये २), ग्रौर नामकर्म की २६ (वंधन ४, संधात ४, स्पर्शादि २० में से स्पर्श-रस गंध-दर्ग ये ४ घटाकर शेप १६) ये २ इ जानना (देखों गो० क० गा० ३४-३५)।

थ्र. उदय योग्य प्रकृतियां १२२ है—ज्ञानावरणीय के थ्र, दर्शनावरणीय के ६, वेदनीय के २ मोहनीय के २० (दर्शनमोहनीय ३ वारित्रमोहनीय २५ ये २०), श्रायु-कर्म के ४, नामकर्म के ६७ (शरीर ४, वंबन ४, संघात ४ इन १५ में से वंधन + संघात ये १०, पांच शरीर में गिंभत होने से ये १० प्रकृतियां घट गये श्रीर स्पर्श ५, रस ४, गंध २ वर्ग ५ इन २० में से फल स्पर्श १, रस १, गन्ध १, वर्ग १ ये ४ प्रकृति गिनती में श्राते हैं। इसलिये इन ४ प्रकृतियों को २० में से घटाने से शेप १६ रहते हैं। इन १६ श्रीर बंधन के ४, संघात के ४ इन

१० मिलकर २६ प्रकृतियों का उदय गिनती में नहीं आती इसलिये ६३ प्रकृतियों में से २६ प्र० घटाने से ६३—२६ –६७ प्रकृतियां उदय योग्य रहती हैं)। गोन- . कर्म के २. अतरायकर्म के ५ इस प्रकार ५+६+२+ २८+४+६७-२ ५=१२२ होते हैं। अर्थात् कर्म प्रकृति १४६ में से २६ प्रकृतियां घटाने से १२२ उदययोग्य प्रकृतियां रहती हैं। वास्तव में १४८ प्र० का उदय रहता है। २६ प्रकृतियां दूसरे प्रकृतियों में गिमत होने से वे गिनती में नहीं आतीं। इसलिये उदय योग्य १२२ प्र० मानते हैं।

६. श्रनुदय प्रकृतियां २६ हैं—नाम कर्म की २६ प्रकृति (वंघन ५ भीर स्पर्शादिक २० प्र० में से स्पर्श-रस-गन्ध-वर्गा ये ४ घटाकर शेप १६ मिलाकर २६) श्रनुदय के जानना (देखो गो०क०गा० ३६-३७-३७)।

७. सत्त्व ब्रक्तांतयां १४८ है - ज्ञानावरणीय के ४, दर्शनावरणीय के ६, वेदनीय के २, मोहनीय के २०, ग्रायुकर्म के ४, नामकम के ६३, (पिंड प्रकृति १४ के उत्तर भेद ६५ गति ४ (नरकगति, तियंचगति, मनुष्य-गति.) जाति नामकर्म ५ (एकन्द्रिय. द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति ये ५), शरीर नामकर्म ५ (ग्रीदारिक. वैक्रियिक, ग्राहारक, तैजस श्राणि कार्माण ये ५) बंधन ५ (ग्रीदारिक शरीर वंधन, वैिक्रियिक शरीर वंघन ये - संघात ५ (श्रीदारिक शरीर संघात, कार्माण-शरीर वंधन ये ५) सधात ५ (ग्रीदारिक शरीर सधात, वैक्रियिक शरीर संघात, आहारक शरीर संघात, तैजरा शरीर संघात, कार्माए। शरीर संघात ये ५) सस्थान ६ (समचतुरस्र संस्थान, नैन्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान, कुट्यक सस्थान, स्वाति संस्थान, वामन संस्थान, हुंडक सरयान ये ६) अगोपांग ३ (श्रीशितक शरीर अंगोपांग, वैकियिक शरीर अगोपांग, आहरक शरीर अंगोपांग, ये ३ जानना। तैजस और कार्माए। शरीर को अंगोपांग नहीं रहते हैं) संहनन ६ (बज्जवृपभ नाराच संहनन, बज्जनाराच संहनन, नाराच सहनन, अर्थ नाराच सहनन कीलित (कीलक) (संहनन, असंप्राप्ता सृगाटिक सहनन ये ६) वर्ग १ । (ध्येन पांटरा) पीत (पियका), हरित या नील, रक्त (लाल), कृप्सा (काला) ये ५) गंघ २। (नुगध और दुर्गंघ ये )१

रस १। (मीठा, कडुवा, खट्टा, कपायला, तिक्त (चरपरा)
ये ५) स्पर्श ६। (कोमल, कठोर, हलका, भारी, शीत,
उप्सा, स्निग्व (चिकना), रुक्ष, ये ६) आनुपूर्वी ४.
(नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यचगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुर्वी,
देवगत्यानुपूर्वी ये ४) विहायोगित २। (प्रशस्त विहायोगित,
अप्रशस्त विहायोगित ये २) ये ६५ पिंड प्रकृति जानना।

श्रिवड प्रकृतियाँ = ऊपर वंध प्रकृतियों में कहे हुए अनुसार जानना। इस प्रकार नामकर्म के ६५ + २ = ६३ प्रकृति जानना। गोत्रकर्म के २, अन्तरायकर्म के ५ ये सब मिलकर सत्व प्रकृतियां १४ = जानना।

द, घाति या प्रकृति ४७ हैं - ज्ञानावरणीय के ४, दर्शननावरणीय के ६, मोहनीय के २८, अन्तराय के ४ ये ४७ जानना।

E. सर्वधातिया प्रकृति २१ हैं—केवल ज्ञानावरगीय १, दर्शनावरगीय के ६ (केवल दर्शनावरगीय १, निद्रा के ५ ये ६) कपाय १२ (अनंतानुवंधी कपाय ४। अप्रत्यास्थान कपाय ४, प्रत्यास्थान कपाय ४ ये १२) मिथ्यात्व १ ये २० प्रकृतियां वंध की अगेक्षा जानना और सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृति १ सत्ता और उदय की अपेक्षा से जानना । इस प्रकार सर्वधातिया प्रकृति १ जानना ।

सम्बद्धिमध्याः प्रकृति को जात्यंतर सर्वधाति कहते हैं। कारण मिथ्यात्वादि प्रकृति के समान यह प्रकृति पूर्णेरूप से घात नहीं करता है और यह प्रकृति वंधयोग्य नहीं है (देखो गो० क गा० ३६ ।

१ देशघाति प्रकृतियां २६ हैं—ज्ञानावरगीय के ४ (मित-श्रुत-ग्रविध मनः पर्यय शानावरगीय ये ४) दर्शना-वरगीय के ३। (ग्रचजुदर्शन, चक्षुदर्शन, ग्रविधदर्शन ये ३) सम्यक्त्य प्रकृति १, संज्वलन कपाय ४, नवनीवपाय ६, ग्रन्तराय प्रकृति ५ ये २६ देशघाति प्रकृति जानना। (देलो गो० क० गा० ४०)।

११. प्राधाति प्रकृतियां १ १ है—वेदनं यक्षमं के २. आयुक्तमं के ४, नामकनं के ६३, गोवकमं के <sup>१</sup>२ ये अब मिलकर १०१ होते है। १२. प्रशस्त (पुण्यरूप) प्रकृतियां ६ - हैं — सातावेदनीय १, तिर्यचायु १, मनुष्यायु १, देवायु १, उच्चनोत्र
१, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, दारीर ४.
वंधन ४, सवात ४, त्रगोपांग ३, द्युश-स्पर्य-रस-गंध-वर्ग
ये २०, समचतुरस्र संस्थान १, वज्जवृपमनाराच संहनन १,
त्रगुरुलघु १, परघात १, उच्छ्वास १, त्रातप १, उधीत
१, प्रशस्तविहायोगिति १, त्रस १, बादग १, पर्याप्त १,
प्रत्येक शरीर १, स्थिर १, द्युभ १, सुभग १, सुस्वर १,
त्रादेय १, यशः कीर्ति १, निर्माण् १, तीर्थवर १ इस
प्रकार ६ प्रकृतियां भेद की त्रपेक्षा से प्रशस्त पृण्यम्प
हैं, त्रभेद विवक्षा से बंधन ४, संघात ४, स्वर्धादिक १६
ये २६ घटाने से ४२ प्रकृति प्रशस्त पुण्यस्प जानना ।
तत्वार्थ सूत्र ग्र० ६ देखो । 'सद्धे थः युभायुर्नीमगीत्राणि
पुण्यन् ॥२५॥' (देखो गो० क० गा० ४१ ४२ ग्रीर
१६४)

१३. प्रप्रशस्त (पापएप प्रकृतियां १०० है — पानि कर्म के सब ४७ प्रकृतियां ग्रगस्त ही है। ग्रसातावेदनीय १, नरकायु १, नीचगोत्र १, नरमद्विक २, तिर्वचित्रक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, न्यग्रोधपरिमंडलादि यंत्य के संस्थान ५, व्यानाराचारि ग्रंत्य के संहतन ५ ग्रगुभ स्पर्ध-रस-गंब-वर्गा ये २०, उपघात १, ग्रप्रसस्य विहानागित १, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १ साधारमा गरीर १, ग्रस्थिर १, ग्रशु । १० दुर्भग १, दुःस्वर १, यनादेय १, अयशः कीति १ इस प्रकार से १०० प्रकृतियां उदयराप श्रप्रशस्त है। भेदविवला से बंधरूप ६= प्रकृतियां है। कारण ४७ घातिया प्रकृतियों में सम्बर्धान्यास्य और सम्यवस्य प्रकृति इन दो प्रकृतियों का बंध कहीं होता। श्रभेदविवक्षा से स्पर्शादि २० प्रकृतियों में से १६ प्रकृति घटाने ने =२ प्र० बंधरूप नहते हैं और उदगरा ५४ प्रकृति स्रीर सत्तास्य १०० प्रकृति रहते हैं। इनमें ६० पुण्यप्रकृति मिलाने से १०० 🕂 ६० - १६० होते हैं। एनमें से पूज्य और पापाल २० प्रकृतियां कम करते से १६=-२०=१४= प्रव रहते हैं (विनों गोट एवं गाव ४३-४४ घीर १६४)

१४८ पुद्रवन निवाकी प्रहतियों ६२ है--पुर्यण

विपाकी अर्थात् पुदूगल में उत्य होने वाले प्रकृति जानना । शरीर के ४, वंधन के ४, संघात के ४ संस्थान के ६, श्रंगोपांग के ३, संहनन के ६, स्पर्श ८, रस ४, गंध २, वर्ण ४ निर्माण १, श्रातप १, उद्योत १, स्थिर १, श्रस्थिर १, शुभ १, श्रशुभ १, प्रत्येक १, साधारण १, श्रमुख्लघु १, उपधात १, परधात १ ये सब मिलकर ६२ प्रकृति जानना ।

१५. भाव विपाकी ग्रकृतियां ४ हैं—नरकायु १, तिर्यच श्रायु १ मनुष्यायु १, देवायु १ मे ४ प्रकृति जानना ।

१६. क्षेत्र विपाकी प्रकृतियां ४ हैं—नरकगत्यानुपूर्वी १, तिर्यच गत्यानुपूर्वी , मन्त्रव्यगत्यानुपूर्वी १, देवगत्यानुपूर्वी १, ये ४ श्रानुपूर्वी प्रकृति जानना ।

'७. जीव विपाकी प्रकृतियां ७८ हैं—घाति कर्म के प्रकृति ४७, वेदनीय के २, गोत्रकर्म के २, नामकर्म के २७ (तीर्यंकर प्र०१, उच्छ्वास १, वादर १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, प्रपर्याप्त १, सुस्वर १, दुःस्वर १, प्रादेय १, प्रनादेय १, यशः कीर्ति १, श्रयशः कीर्ति १, त्रस १, स्थावर १, प्रशस्त श्रीर अप्रशस्त विहायोगित २, सुभग १, दुर्भग १, गित ४, एकेन्द्रियादि जाति नामकर्म ", ये २७) ये सब मिलकर ७८ जानना ।

इस प्रकार सब मिलकर ६२ +४ +४ + ७८ = १४८ प्रकृति होते हैं। (देखी गो० क० गा० ४७ से ५१)

१८, सादि-प्रतादि-ध्रुव-प्रध्रुव रूप चारों प्रकार के वंघ होने वाली प्रकृतियां—ज्ञानावरसीय ४, दर्शनावर-सीय ६, मोहनीय २६, नामकमं के ६७, गोष्ठकमं के २, ग्रन्तराय के ५ ये ११४ प्रकृतियों का बंघ चारों प्रकार का होता है।

१६ अनादि-ध्रुव-ग्रध्नुव रूप ती। प्रकार हा बंध नेदनीय कर्म का होता है। उपशम श्रेशी चढ़ते समय श्रीर नीचे उतरते समय सातावेदनीय का सतत बंध होता रहता है इसलिये सादि बंध नहीं होता।

२०. सािंद ग्रीर श्रद्भ वरूप दो प्रकारों का वंध होने वाली प्रकृतियां — एक पर्याय में एक समय, दो समय, या उत्कृष्ट ग्राठ समय में ग्रायु कर्म का वंध होता है इसिलये सािंद श्रीर हर समय (ग्रायु कर्म के कुं भाग में) श्रन्तमुं हूर्त तक ही होता है इसिलये ग्रद्भव है।

२१ सादि बंध—ज्ञानावरण की पंच प्रकृतियों का वंफ किसी जीव के १०वे गुण स्थान तक प्रव्याहत होता था, जब वह जीव ११वे गुण स्थान में गया तब वंघ का ग्रभाव हुग्रा, पीछे ११वे गुण से च्युत होकर (पढ़कर) फिर १०वे गुण में ग्राया तब ज्ञानावरण को पांच कृतियों का पुनः वंघ हुग्रा ऐसा वंघ सादि बंध कहुनाता है।

२२ ध्रनादि बंध — दसवें गुए स्थान वाला जीय जब तक ११वे गुए भें प्राप्त नहीं हुआ तब तक ज्ञानावरए का अनादि काल से उसका वंध चला आता है इसित्ये यह अनादि वंध है। (देखो गो० क० गा० १२ -- १२३)

१३. ध्रुव प्रकृतियां ४७ हैं—वंघव्युच्छित्ति होने तक जिसका वंघ समय समय को होता है वह घ्रुव वंध कहलाता है। इसका घ्रुव प्रकृति ४७ है। ज्ञानारगौप के ४, दर्शनावरगोय के ६, मोहनीय के मिय्यात्व १, नवनो कपायों में से भय और जुगुप्ता ये २ मितकर १८, ग्रंतराय के ४, श्रीर नामकर्म के ६ (तज्ञ १, कार्माग् १, श्रुगुरुलघु १, उपवात १, निर्माण १, स्पर्ग १, रस १, गंध १, वर्ग १ ये ६) सब मिलकर ४७ प्र० जानना ।

२४. अध्रुव प्रकृतियां ७३ हैं—जिसका वंघ हर समय को नहीं होता है कभी कभी होता है उसकी ग्रध्रुव वंध कहते हैं। वे ग्रध्रुव प्रकृति ७३ हैं। वेदनीय कम के २, मोहनीयों में स नोकपाय ७ (हास्य-रित, ग्ररित-शोक, ग्रीर वेद ३ ये ७) श्रायु कम के ४, गोत्रकम के २, नामकम के ५० प्रकृति गिति ४, जाति नामकम ५, श्रीदारिकदिक २, वैक्रियकदिक २, ग्राहारकदिक २, संस्थान ६, संहनन ६, ग्रानुपूर्वी ४, परधात १, ग्रातप १, उद्योत १, उच्छ्वास १, विहायोगित २, त्रस १, स्यावर १, स्थिर १, ग्रस्थिर १, ग्रुम १, ग्राहेप १, मुमग १, दुर्भग १, सुस्वर १, दुःस्वर १, ग्राहेप १, प्रत्येक शरीर १, साधारण शरीर १, यशः कीर्ति १, ग्रयशः कीर्ति १, तीर्थकर १ ये ५०) सब मिलकर ७३ प्रकृति जानना।

ऊपर के ४७ प्रकृतियों का वंध सादि, ग्रनादि, ध्रुव, भ्रध्नुव इस प्रकार चारो ही प्रकार का होता है। परन्तुः ७३ प्रकृतियों का वंघ सादि ग्रीर ग्रधुव इन दो प्रकार का ही होता है। इस ७३ प्रकृतियों में ६४ प्रकृतियां सप्रतिपक्ष ग्रीर १४ प्रकृतियां ग्रप्रतिपक्ष होते हैं।

श्रप्रतिपक्ष प्रकृति ११ हैं:—तीर्थंकर १, ग्राहारकहिक २, परघात १, ग्रातप, १, उच्छ्वास १, श्रायुकर्म के ४, ये सग ११ प्र० जानना ।

सश्रतिपक्ष प्रकृति ६२ हैं — ऊपर के ७३ प्रकृतियों में से अप्रतिपक्ष के ११ प्रकृति घटाकर शेप ६२ प्रकृति जानना। जिसको प्रतिपक्षी है उसे सप्रतिपक्ष कहते हैं जैसे साता-असाता, गुभ अशुभ इत्यादि।

ग्रध्रुव ७३ प्रकृतियों में से ७ प्रकृति (तीर्थं कर १, ग्राहारकद्विक २, ग्रायु ४ ये ७) वें का निरन्तर वंध काल जघन्य एक ग्रन्तर्मु हूर्त है, ग्रीर ६६ प्रकृति ों का निरंतर वंध काल जघन्य एक समय मात्र है इसलिये इनको सादि ग्रीर ग्रध्रुव ऐसे दो प्रकार का ही वंघ होता है। (देखों गो० क० गा० १२४-१२५-१२६)

# २४-मूलोत्तर प्रकृतियों की स्थिति बंध को बतलाते हैं ।देखो गो॰ क॰ गा॰ १२७ से १३३ श्रौर १३६ से १४२ को॰ नं॰ ४१)

		,			·
कर्म प्रकृतियां	उत्कृष्ट- स्थिति वंध	जघन्य स्थिति वंघ	कर्म प्रकृतियां	उत्कृष्ट- स्थिति वंध	जघन्य स्थिति वंध
<ol> <li>श्र. ज्ञानवरण के मित ज्ञानावरण श्रुत '' श्रुवि ' मनः पर्यय '' केवल "</li> <li>र. दर्शनावरण के श्रुचक्ष दर्शन चक्षु " श्रुविध " केवल " स्त्थान गृद्धि निद्रा निद्रा</li> </ol>	३० कोडा कोडी सागर "" "" "" "" ""	१ श्रंतर्मु हुर्ते "" "" "" "" "" ""	प्रत्याख्यान के कोघ १ मान १ माया १ लोभ १ संज्वलन के कोघ १ मान १ माया १ लोभ १ नोकपाय के हास्य १ रति १	४० को० को० सा० " " ४० को० को० सा० " " "	१ महीना १५ दिन १ श्रंतमु हूर्त
प्रचला प्रचला निद्रा प्रचला	); ;; ;;		ग्ररति ? शोक १ भय १	२० को० को० सा०	
३. वेदनीय के साता वेदनीय ग्रसाता	१५ को० को० सा० ३० को० को० सा०			" " १५ को० को० सा०	•
	७० को० को० सा० ४० को० को० सा० "" ""	१ श्रंतर्मु हुतं दो महिने एक महीना १५ दिन १ श्रंतर्मु हूर्त	पुरुष वेद १  ५-ग्रायुकर्म के नरकाथु १ तियंचायु १ ममुष्यायु १ देवायु १	१० को० को० सा०  ३३ सागर ३ पल्य ३ पल्य ३३ सागर	द वर्षे १ श्रंतर्मुहर्त १० हजार वर्षे १ श्रतमुहर्ते १० हजार वर्ष
श्रप्रत्याख्यान के क्रोध १ मान १ माया १ लोभ १	४० को० को० सा० " " "	दो महीने १ महीना १४ दिन १ श्रंतमुं हूर्त	तिर्यचगति	२० को० को० सा० १५ को० को० सा०	८ मूहर्त

देवगति	[१० को० को० सा०	उपघात	1	_
एके <i>न्द्रि</i> यजाति	- ० को० को० सा०	। परघात	"	
<u> </u>	११८ को० को० सा०	उच्छवास	"	i
-J.C		त्रातप	,,,	
	"	उद्योत	"	
चतुरिन्द्रिय ,;	२० को० को० सा०	1	"	
पंचेन्द्रिय ,,	२० काठ काठ साठ	त्रस	"	
ग्रीदारिक शरीर	<i>n</i>	स्यावर	"	
वैक्तियिक ,,	: "	वादर	'' -> _	
ग्राहारक ,,	ग्रंत: को० को० सा० ग्रंत को० को०	सूक्ष्म	१८ को० को० सा	
तैजस ,,	२० को० को० सा० सागर	पर्याप्त	२० को० को० सा०	
कार्माए ,,	,,,	श्रप्याप्त	१८ को० को० सार	
समचतुरस्र सं०	१० को० को० सा०	प्रत्येक शरीर	२ को को सा०	
न्यग्रोध प० सं०	१२ को० को० सा०	साधारण शरीर	१८ को० को० सा०	
स्वाति संस्थान	१४ को० को० सा०	स्थिर	१० को० को० साः	
कुब्जक संस्थान	१६ को० को० सा०	ग्रस्थिर	२० को० को० सा०	
वामन सस्यान	१८ को० को० सा०	<b>गु</b> भ	१० को० को० सा०	
हुँडक संस्थान	२० को० को० सा०	ग्रगुभ	२० को० को० सा०	
श्री-श्रंगोपांग	,,	सुभग	१० को० को० सा०	
वौक्रियिक ,,	,,	दुर्भग	२० को० को सा०	
	ग्रंत को० को० सा० ग्रंत: को० को०	सुस्वर	१० को० को० सा०	
न्नाहारक ,, वज्रवः नार्धाटन	१० को० को० सा० सागर	दू:स्वर	२० को० को० सा	
वज्रनाराच संह०	१२ को० को० सा	ग्रादेय	१० को को० सार	
नाराच संहनन	१४ को० को० सा०	ग्रनादेय	२० को० को० सा०	
अर्धनाराच संह <b>्</b>	१६ को को ला ।		१० को० को० सा०	= मुहतं
कीलिनसंहनन	१ म को को० सा०	ग्रयशः कीर्ति	२० को० को० साल	38
श्रसं० सृपा० संह०	२० को० को० सा	निर्माए।	,,	
स्पर्श नामकर्म	' .		यंतः को०को० सा <i>र</i>	प्रंतः को० को०
रस "	"	७. गोत्रकर्म के		सागर
<sup>रत</sup> गंध ''	,,		१० को० को० साः	
वर्ण ''	;, <u> </u>		२० को० को० सा०	3.8
	"	द-ग्रंतराय के		१ अंतर्मु हुत
नरक गत्यानुपूर्व्य तिर्येच ,,			३० को० को० सार्व,	"
**	१५ को० को० सा०	लाभांतराय	11	,, ,,
मनुष्य ,, देव ,,	१० को० को० सा०	भोगांतराय	",	71 11
	10 4110 4110 (110)	उपभोगांतराय	,,	,,
प्रशस्त विहा	ा २ को को सा	वीर्या तराय	,,	"
	२ को० को० सा०	-11-11 11 11 1	**	, ,
श्रगुरु लघु	,,			<del></del>

सूचना — तीन शुभ ग्रायु के सिवाय शेप कमों का उत्कृष्ट स्थितिबंध संशीपंचिन्त्रिय पर्याप्त के उसमें भी गोम्य (तीव्र कपायरूप उत्कृष्ट संविश-परिएगमों वाला ही जीव प्रधिक स्थिति के योग्य कहा गया है) जीव के ही हीता है, हर एक के नहीं होता (देखो गो० क० गा० १३३)

# २५-मूलोत्तर प्रकृतियों की स्थित वंध को बतलाते हैं ।देखो गो॰ क॰ गा॰ १२७ से १३३ और १३६ से १४२ को॰ नं॰ ४१)

					·
कर्म प्रकृतियां	उत्क्र <sup>ष्ट-</sup> स्थिति वंघ	जघन्य स्थिति वंघ	कर्म प्रकृतियां	उत्कृष्ट- स्थिति वंघ	जघन्य स्थिति वंध
१. ज्ञानवरण के  मित ज्ञानवरण श्रुत '' श्रुवधि ' मनः पर्यय '' केवल ''  २. दर्शनावरण के श्रवध्य दर्शन चक्षु दर्शन चक्षु " श्रवधि " श्रवधि " स्वान गृद्धि निद्रा निद्रा प्रचला प्रचला	३० कोडा कोडी सागर ,, '' '' '' '' '' '' ''	१ ग्रंतर्मु हुर्ते "" "" "" "" ""	प्रत्याख्यान के कोघ १ मान १ माया १ लोभ १ संज्वलन के कोघ १ माया १ लोभ १ नोकपाय के हास्य १ रति १	४० को० को० सा० " " " " १० को० को० सा० " "	१ महीना १५ दिन १ श्रतमु हूर्त
तिहा प्रचला ३. वेदनीय के साता वेदनीय ग्रसाता ४. मोहनीय के	१५ को० को० सार ३० को० को० सा०	१२ मुहूर्तं १ ग्रंतमुं हूतं	अरात १ शोक १ भय १ जुगुप्सा १ नपुंसक वेद १ स्त्री वेद १ पुरुष वेद १	१५ को० को० सा० १८ को० को० सा० १० को० को० सा०	द् <u>द</u> वर्ष
मिथ्यात्व १ ग्रनतानुवंधी के कोध १ मान १ माया १ लोभ १	७० को० को० सा० ४० को० को० सा० " " "		५-ग्रायुकर्म के नरकायु १ तिर्यचायु १ मनुष्यायु १ देवायु १	३३ सागर ३ पल्य ३ पल्य ३३ सागर	१ श्रंतमुं हूर्त १० हजार वर्ष १ श्रतमुं हूर्त " १० हजार वर्ष
श्रप्रत्याख्यान के कोध १ मान १ माया १ लोभ १	४० को० को० सा० " " "	दो महीने १ महीना १५ दिन १ ग्रंतर्मु हुर्त	तियंचगति	२० को० को० सा० " १५ को० को० सा०	द मूहर्त

देवगति .	[१० को० को० सा०]	उपघात	}	
एके <i>न्द्रिय</i> जाति	ं कों कों सां	परघात	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	
<del>-2</del>	१८ को० को० सा०	उच्छवास	"	1
- <del>2.C</del>		त्रातप	"	
	"	जातान उद्योत	21	
चतुरिन्द्रिय ,, पंचेन्द्रिय ,,	२० को० को० सा०	1	"	
•	र्व याच्याच्याच्याच	त्रस	11	
ग्रीदारिक शरीर	,,,	स्थावर	")	
वैक्तियिक ,,	ग्रंत: को॰ को॰ सा॰ ग्रंत को॰ को॰	वादर	· - 2" ->	1
ग्राहारक ,,			१८ को० को० सा	
तैजस ,,	२० को० को० सा० सागर		२० को० को० सा०	
कार्माग्ग ;	~" ~ ~		१८ को० को० सा०	
समचतुरस्र सं०	१० को० को० सा०		२ : को : को : सा :	
न्यग्रोध प० सं०	१२ को० को० सा०		१८ को० को० सा०	
स्वाति संस्थान	१४ को० को० सा०		१० को० को० सा	
कुव्जक संस्थान	१६ को० को० सा०	i .	२० को० को० सा०	
वामन संस्थान	१८ को० को० सा०	1 9	१० को० को० सा०	
हुँडक संस्थान	२० को० को० सा०		२० को० को० सा०	
श्री-श्रंगोपांग	n	सुभग	१० को० को० सा०	
वीक्रियिक ,,	,,	1 3 1	२० को० को सा०	
	ग्रंत को० को० सा० ग्रंत: को० को०	सुस्वर	१० को० को० सा०	
वज्रवृ ना० संह०	१० को० को० सा० सागर	दु:स्वर	२० को० को० सा	
वज्रनाराच संह०	१२ को० को० सा	ग्रादेय	१० को को० साल	
नाराच संहनन	१४ को० को० सा०	ग्रनादेय ः	२० को० को० सा०	
श्रर्धनाराच संह०	१६ कोः को० सा०	यशः कीर्ति	१० को० को० साल	<b>८ मृह</b> र्त
कीलिनसंहनन	१८ को को० सा०	ग्रयशः कीर्ति	२० को० को० सार्	J:
श्रसं रुपा र संहर	२० को० को० सा	निर्माण	,,	
स्पर्श नॉमकर्म	,,	तीर्यकर प्रकृति	ांतः को०को० सा	ग्रंतः को० को०
रस ''	"	७. गोत्रकर्म के		सागर
गंध ''	"		० को० को० साः	= मृहतं
वर्ण ''	27		० को० को० सा०	3; ··
नरक गत्यानुपूर्व्य	"	द- <b>ग्रंतराय</b> के		१ अंतर्मु हुवं
तिर्यच ,,	,,		। को० को० सा०	
	१५ को० को० सा०	लाभांतराय	,,	"
	१० को० को० सा०	भोगांतराय	",	**
प्रशस्त विहाः		उपभोगांतराय	·	1)
	२ को० को० सा०	वीर्या तराय	"	"
अगुरु लघु	,,	1111 11 11	17	**

सूचना—तीन युभ श्रायु के सिवाय शेप कमीं का उत्कृष्ट स्थितिबंध संजीपंचेन्त्रिय पर्याप्त के उसमें भी योग्य (तीन कपायरूप उत्कृष्ट संक्लेश-परिएामों वाला ही जीव श्रीधक स्थिति के योग्य कहा गया है) जीव के ही होता है, हर एक के नहीं होता (देखो गो० क० गा० १३३)

# २६-उदय व्यु च्छति के पहले बंध व्युच्छिति जिनके होवे वे प्रकृतियां - ८१ हैं -

प्रकृति	वंबब्युच्छित्ति गुग्रस्थान	] उदयव्यु० गुगाः
ज्ञानावरणीय के ४,	१८वां गुरा० में	१२वां गुरा० में
दर्शनावरणीय के ६, में से अचेक्षु,	१०वां गुराग्० में	१२वां गुरा० ने
चक्ष, ग्रवित, केवल द० ४.		, , , , ,
स्त्यानगृ०, निद्रा निद्रा, प्रचला-प्रचला	२रे गुर्गा० में	६वां गुरा० में
ये ३ महानिद्रा।		, , , ,
निद्रा, प्रचला य २ ।	प्तां गुरा० के प्रथम भाग में	१२वां गुरग० में
ग्रसातावेदनीय १,	६वां गुरा० में	१३-१४ गुरा०
साता वेदनीय १,	१३वां गुरा० में	1 ,,
मोहनीय के संज्वलन लोभ १,	िह्यां गगा० के प्रवां भाग <del>में</del>	१०वां गुरग० मे
'' स्त्रीवेद १,	२रे गुएा० में	ε ,,
" नपुंसकवेद १,	२रे गुरा० में १के गुरा० में ६वें "	ε ,,
" ग्ररतिशोक ये २,	६वें ''	<u> </u>
श्रायुकर्म के नरकायु १,	<b>१ल</b> ''	४थे ,,
" तियँचायु १,	२रे " ४थे "	ं वे ,,
" मनुष्यायु ,	४थे "	१४वे ,,
नामकर्म के नरकगति १,	१ले गुर्गा० में २ <del>२</del> "	४थे गुग् में
" तिर्यचगति १,	२र ″ ×ने "	४वे "
" मनुष्यगति १,	४थे "	१४वे ,,
नामकर्म के पंचेन्द्रिय जाति १,	दवां गु <b>गा</b> ० के ६वां भाग में	,, ,,
" श्रीदारिक शरीर १,	४४ गुरा ०में	<b>१</b>
' तैजस-कार्माण् शरीर २,	न्वां गुरा० के ६वां भाग में	n_ n
' ग्रसंप्र प्ता सृपाटिका संहनन १,	१ले गुर्ण० में	ं ७वे ,,
"वज्रनाराच सहनन (,	२रे गुरा० में	<sup>ं</sup> ११वे ,,
" नाराच संहनन १,	२रे गुरा० में	११वे ,,
'' ग्रर्घनाराच संहनन १,	२र गुण० म	७वे ,,
'' कीलक सहनन १,	२रे गुँगा० में २रे " ४थे "	७वे ,,
" वज्जवूपभ नाराच सं० १,	૪થ "	१३वे ,,
" ग्रीदारिक ग्रंगोपांग १,	४ये " १ते "	" "
" हुंडक संस्थान १,	रल	ii u
'' न्यग्रोव , स्वाति , कुटजक o,	ररे "	
वामन सं० ४		11 11
" समचतुरस्र सं० ",	दवां गुरा० के ६वां भाग में "	" "
" स्वर्श, रस, गन्ध वर्ग ४		n n
" नरकगत्यानुपूर्वी १,	१ले गुरा० में २रे "	४ये ,,
100000000000000000000000000000000000000	द्वां गरा० के ६वां भाग में	,, ,, १ <b>-</b> वे ,,
346431 013101 1 1 1 1 1	२रे गुरा में	u <del>s)</del>
981/1 454/1 11	द्वां गुरा॰ के ६वां भाग में	७ <del>३ ते</del>
" जच्छ् वास १, " प्रशस्तविहायोगित १,	" "	
भ्यास्तावहायागात । '' श्रप्रशस्तविहायोगति १,	२रे गुगा० में	n n n n
" न्नस, वादर, पर्याप्त ये दे,	द्वां गुरग्० के ६वां भाग में	" १४वे ",
" प्रत्येक शरीर, स्थिर ये २,	"	१३वे ,,

'' ग्रस्थिर प्रकृति १	६वें गुगा० में	1 ",	71
" जुभ प्र०१	व्वां गेंगा० के ६वां भाग में	17	21
" त्रयुभ प्र० १	६वें गुरा० में	"	77
" सुभग प्र०१	वां गुरा के ६वां भाग में	१४वें	"
" दुर्भग प्र०१	ररे गुरा० में	४थे	11
' सु <del>स्</del> वर १	ह्वां गुरा० के ४वां भाग में	१३वं	27
े दु:स्वर १	रिरे गुरा० में	77,	. •
ु.स्वर १ " ग्रादेय	हवां गुरा० के ६वां भाग में	१४वें	11
" ग्रनादेय १	२रे गुरा० में	. ४थे	11
अनायम १ '' यशः कीति १	१०वां गुर्गां में	१४वें	}-
थरा कात <b>१</b> "ं निर्माण १	दवां गुरा के ६वां भाग में	१३वें	21
'' तीर्थंकर प्रकृति १	विश्व पुराव का स्वा कार्य क	१४वें	. ,,
	००च मण्या में	१४वें	<b>,</b>
गोत्रकर्म उच्चगोत्र १	१०व गुरा० में	र व	,,
" नीचगोत्र १	२रे गुंगा० में	र व १२वें	1,
ग्रन्तराय कर्म के प्रकृति ५,	१०वें गुराा०	१रव	
इस प्रसकार ५ + ६ + २ + ५ + ३ +		1	
५० + २ + ५ = ५१ प्रकृति जानना		•	
२७. ६दय न्युन्छिता के बाद बन्ध न्यु	पुष्टिहा जिनके होवे वे प्रकृतियां न हैं—		
प्रकृति	उदय च्युच्छिति गुग्।	वंघ व	० गुग्
श्रायुकर्म के देवायु १	४थे गुरा० में	्रवंघ व् ७वें गुरा	ा० में
<u> </u>	[ ++ ++		_

६व गुरा० में

वैक्रियिक शरीर १ " वै० त्रुगोपांग १ "

त्र्याहारकद्विक **२** ६वें गुरा० में त्रयशः कीर्ति **१** ४थे गुरा० में

इस प्रकार १ + ७ == प्रकृति जानना

२८. टदय ब्युच्छित्ति धौर बन्ध ब्युच्छित्ति जिनके एक साथ (एक ही गुए। स्थान में) होता है वे प्रकृतियां ३१ हैं—

मोहनीय कर्म के २१ प्रकृतियां— गुरा० का नाम १से गुरग० मिष्यात्व १ ग्रनन्तानुबन्धी---क्रोध-मान-माया-लोभ ४ •रे गृग्।० ४थे गुंगा० स्रप्रत्याख्यान 27 17 27 27 ५वें गुग्। प्रत्याख्यान संज्वलन कपाय - फ्रोध-मान-माया ये ३ हवें गुग्ग हास्य-रति, भय-जुगुप्सा ये ४ व्वं गुग्र पुरुपवेद १ नाम फर्म फे १६ प्रकृतियां— आतप १, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्तक १, साधारस्त्रि, एकेट्रियादि जाति ४, से ६ प्रकृति १स गुग्। मनुप्यगत्यानुपूर्वी १ ४वे गुग्ग इस प्रकार २१ + १० = ३१ प्रकृति जानना । (देखो गो० क० ग० ३६६-४००-४०१)

: ६. जिस प्रकृति का उदय होता है उसका उस ही समय में बंब होता है ऐसी प्रकृतियां २७ हैं—

ज्ञानावरणीय के ४, दर्शनावरणीय के ४, मोहनीय मिथ्यात्व प्र० १, नामकर्म के १२ (तैजस-कार्माण २, स्पर्शादि ४, श्यिर-ग्रस्थिर २, श्रुभ-ग्रश्चभ २, ग्रगुरुलघु १, निर्माण १ ये १२) अन्तराय के ४, इस प्रकार ४ + ४ + १ + १२ + ४ = २७ जानना।

३० एक प्रकृति का उदय होता हुया दूसरे प्रकृति का वंघ होता है ऐसी प्रकृतियां ११ है—

श्रायु कर्म के २ (देवायु, नरकायु ये २) नामकर्म के ६, (तीर्थंकर प्रकृति १, वैक्षियिक द्विक २, देवद्विक २, नरकद्विक २, श्राहारकद्विक २, ये ६) इस प्रकार २ + ६ = ११ जानना ।

३१. श्रापका श्रयवा श्रन्य प्रकृति का उदय होता हुग्रा श्रयवा नहीं हो तो भी जिस प्रकृति का वंघ होता है ऐसी प्रकृतियां ५२ हैं—

दर्शनावरणाय के स्त्थानगृद्धि ग्रादि ५ प्रकृति, वेदनीय के २, मोहनीय के २५ (कषाय १६ नोकपाय ६ ये २५) ग्रायु कर्म के २ (मनुष्यायु, तिर्यचायु ये २) नामकर्म ४६ (तिर्यच गित १, मनुष्यगित १, एकेन्द्रियादि जाति ५, ग्रीदारिक शरीर १, ग्री० ग्रंगोपांग १, संहनन ६, संस्थान ६, तिर्यच गत्यानुपूर्वी १, उपघात १, परघात १, ग्रातप १, उद्योत १, उच्छवःस १, विहायोगित २, त्रस १, स्थावर १, वादर १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, ग्रुपर्याप्त १, प्रत्येक १, साधारण १, सुभग १, दुर्भग १, सुस्वर १, दुःस्वर १, ग्रादेय १, ग्रनादेय १, यशः कीर्ति १, ग्रयशः कीर्ति १, ये ४६) गोत्र कर्म के (उच्चगोत्र, नीचगोत्र) इस प्रकार ५ + २ + २५ + २ + ४६ + २ = ६२ जानना, (देखो गो० क० गा० ४०२-४०३)।

## ३२. निरन्तर वन्ध होने वाली प्रकृतियां ५४ हैं -

ज्ञानावरणीय के ४, दर्शनावरणीय के ६, मोहनीय के १६ (मिथ्यात्व प्रकृति १, कषाय १६, भय-जुगुप्सा २ ये १६) श्रायु कर्म के ४, नामकर्म के १२ (तैजस १, कार्माण १, श्रगुरुलघु १, उपघत १, निर्माण १, स्पर्शादि ४, तीर्थंकर १, ग्राहारकद्विक २ ये १२) ग्रंतराय कर्म के ४, इस प्रकार ४ + ६ + १६ + ४ + १२ + ४ = ५४ जाननः)।

इनमें ४७ प्रकृति ध्रुवोदयी अर्थात् उदय व्युच्छिति तक सतत उदय होने वाली हैं। उनका नाम—ज्ञानावण् ४, दर्शनावरण् ६, अंतराय ४, मिथ्यात्व १, कपाय १६, भय-जुगुप्सा २, तैजस १, वार्माण् , अगुरुलपु १, उपघात १, निर्माण् १, स्पर्शादि ४ ये ४७ अध्रुवोदयी प्रकृति ७ है (तीयंकर १, आहारद्विक २, आयु ४, ये ७) इस प्रकार ४७ + ७ = ५४ जानना।

तीर्यंकर प्रकृति स्नीर ग्राहारकदिक इनका वन्य जिस गुरा स्थान में प्रारम्भ होता है उस गुरा स्थान में निरन्तर (प्रत्येक समय में) वंघ होता रहता है इसलिये इसको निरन्तर वन्ध कहा है।

श्रायुर्वंघ होने का कान एक श्रन्तर्मु हूर्त का है उस एक श्रन्तर्मु हूर्त में वंघ हो तो वह श्रन्तर्मु हूर्त पूर्ण होने तक श्रायु का वंघ सतत होता रहता है इसलिये उसको निरन्तर वंघ कहा है श्रायु वंघ का काल १, श्रमकर्पण में में कभी भी श्राता है।

१३. सान्तर वंघ प्रकृतियां प्रयात् जिनका वंध कभी होता है श्रौर कभी नृतें भी होता है ऐसी प्रकृतियां ३४ हैं—

स्रमाता वेदनीय १, मोहनीय के ४ /नपुंसक वेद १, स्त्रीवेद १, स्ररति १, शोक १, ये ४) नाम कर्म के ०६ (नरकद्विक २, एकेन्द्रिय।दि जाति ४, वज्र वृपभ नाराच विना शेप संहनन ५, समचतुरस्र विना शेप संस्थान ५, अप्रशस्त विहायोगित १, स्रातप १, उद्योत १, स्थावर दशक १०, स्थावर १, सूक्ष्म १, स्रपर्याप्त १, साधारण १, स्रस्थिर १, स्रशुभ १, दुभंग १, दुःस्वर १, स्रनादेय १, स्रयशः कीर्ति १: ये १०) इस प्रकार १ + ४ + २६ = ३४ जानना ।

३४ निरन्तर श्रीर सान्तर बंघ होने वाली प्रकृतियां ३२ हैं—

साता वेदनीय १, हास्य-रति २, पुरुष वेद १, नाम कर्म के २६ (तिर्यचिद्विक २, मनुष्यद्विक २, देयद्विक २, ग्रीदारिक शरीर १, ग्रीदारिक ग्रंगोपांग १, वैक्रियिक दिक २, प्रशस्त विहायोगित १, वज्र वृपभनाराच संहनन १, परघात ', उच्छवास १, समचतुरस्र-संस्थान १, पंचेन्द्रिय जाति १, त्रसदशक १ (त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, ग्रादेय १, यशः कीर्ति १ ये १०) गोत्रद्विक २ इस प्रकार १ + ३ + '६ + २ = ३२ जानना।

ऊपर के ३२ प्रकृतियों में जिस प्रकृति के प्रतिपक्षी प्रकृति का बंध संभवनीय हो इस प्रकृति का बंध सान्तर होगा ग्रीर प्रतिपक्षी प्रकृति की बंध व्युच्छित्त जहां होगी या हो गई हो वहां उस प्रकृति का बंध निरन्तर प्रतिपक्षी प्रकृति की बंध व्युच्छित्ति होने ने बाद उस सान्तर बंध होने वाली प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होने तक सान्तर के बदले निरन्तर बंध होता रहेगा।

स्वजातीय प्रन्य प्रन्य प्रकृतियों का जहां बंध हो सकता है वहां उस प्रकृति को सप्रतिपक्षी प्रकृति कहना चाहिये श्रोग वहां तक ही वह प्रकृति सान्तर वंधी रहती है श्रीर जहां केवल श्रापका ही वंध होता रहेगा वहां निष्प्रति पक्षी प्रकृति कहना चाहिये श्रीर उस समय वह निरन्तर वंधी रहती है।

**उदय बंधो** ३२ प्रकृतियों के सा तर निरन्तर वंध का विवरण गो० क० गा० ४०४ से ४०७ ग्रीर कोष्टक नं० १४१ देखो।

#### ३५ उद्देलन प्रकृतियां १३ हैं--

स्राहारकद्विक २, सम्यक्तव प्रकृति १, सम्यग्मिध्यात्व प्रकृति १, देवद्विक , नरक चतुष्क (नरक गति १, व नरक गत्यःनुपूर्वी १, वैकियिक शरीर १, वैकियिक स्रंगोपांग १ ये ४) उच्चगोत्र १, मनुष्य गति १, मनुष्य गत्यानुपूर्वी १ ये १ = प्रकृतियां क्रव से जीवों के उद्व लन को जाती है। (देखों गो कि गा० ३५०-४१५)

उद्देसन का स्वरूप — ग्राठ देकर भांजी हुई रस्सी का ग्राट जिस प्रकार उकेल दिया जाय उसी प्रकार बंधी हुई कर्म प्रकृति को अन्य रूप से परिगामन करके उसका नाश करना उसको उद्देलन कहते हैं।

#### मिच्यात संक्रमरा की प्रकृतियां ६७ हैं-

स्त्यानगृद्धि श्रादि महानिद्रा ३, श्रसातावेदनीय १, मोहनीय के १८ (अनन्तानुवंधी कपाय ४, अत्रत्याख्यान कवाय ४, अत्रव्यख्यान कपाय ४, अर्ति-शोक २, नपुंसक वेद १, स्त्रीवेद १, मिथ्यात्व प्रकृति १, सम्यग्मिथ्यात्व १ ये १८) नाम कर्म ४३ (तिर्यचिद्विक २, एकेन्द्रिय ग्रादि जाति ४, श्राप्त १, उद्योत , स्यावर १, सूहम १, साधारण १, अश्रशस्त थिहायोगित १, वज्जवृपभनाराच संहनन यह छोड़कर शेप संहनन ४, समचतुरस्र संस्थान छोड़कर शेप संस्थान ४, अप्रयात १, श्रह्यर , श्रशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अप्रशः कीर्ति १, श्राहारकहिक २, वेद्विक २, मनुष्यद्विक २, योदारिकद्विक २, वज्जवृपभनाराच संहनन १, तीर्थकर प्र० १, ये ४३) नीचगोत्र १, उच्चगोत्र १ ये २ सब मिलकर ६७ जानना ।

## ३७. श्रयः प्रकृति संकमरा की प्रकृतियां १२१ हैं —

ज्ञानावरण के ४, दर्शनावरण के ६, वेदनीय २ )
मोहनीय के २७ (मिध्यात्व प्रकृति १ छोड़कर शेप २७)
नाम कर्म के ७१ (पंचेन्द्रिय जाति १, तैंजस शरीर १, कार्माण्
शरीर १, समचतुरस्रसंस्थान १, गुभवर्णादि ४, अगुक्तपु १,
परघात १, उच्छवास १, प्रशस्त विहायोगित १, त्रस १,
वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक शरीर १, स्थिर १, शुभ १,
सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीति १, निर्माण १,
एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, स्थावर १,
सूक्ष्म १, साधारण १, तिर्वचिहक २, अगुभवर्णादि ४,
उपघात १, अप्रशस्त विहायोगित १, वज्यव्यभनारान
सहनन छोड़कर शेप संहनन ५, समचतुरस्रसंस्थान
छोड़कर शेप संस्थान ५, प्रपर्याप्त १, ग्रस्थर १, अगुभ
१, दुर्भग १, दु:स्वर १, अनादेय १, अप्रथः कीति १,
आहारकिहक २, देविहक २, नरकिहक २, वैकियिकहिक २, मनुष्यिहक २, औदारिकिहक २, वज्यव्यभ-

नाराच संहनन १, तीर्थंकर प्रकृति १ ये ७१) गोत्रकर्म के २, अन्तराय ५, ये १२१ जानना ।

### ३८. गुएा संक्रमएा प्रकृतियां ७५ हैं-

स्थानगृद्धि म्रादि महानिद्रा ३, प्रचला १, म्रसाता वेदनीय १, मोहनीय २३, (म्रनन्तानुबन्धी ४, म्रप्रत्यास्यान ४, प्ररति-शोक २, नपुंसक वेद १, स्त्रीवेद १, मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति १, सम्यन्त्व १, हास्य रित २, भय-जुगुप्सा २, ये २३) नामकर्म के ४४ (तिर्यचिद्रक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, म्रातप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, म्रातप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, म्रातप १, उपघात १, वज्जवृपभ नाराच सहनन छोड़कर शेप संहनन ४, समचतुरस्रसंस्थान छोड़कर शेप संहनन ४, समचतुरस्रसंस्थान छोड़कर शेप संहनन ४, समचतुरस्रसंस्थान छोड़कर शेप संहनन ४, ममुद्राह्म १, म्रादेय १, म्रायशः कीर्ति १ म्राहारकिष्टक २, देविद्रक २, नरकिष्टक २, वेकियिकिष्टक २, मनुष्यद्विक २, ये ४४) गोष्र कर्म के २, ये सब मिलकर ७५ जानना । (देखो गो० क० गा० ४१६ से ४२८)

३६. सर्व संक्रमरा प्रकृतियां ५२ हैं—
.
स्थानगृद्धि ग्रादि महानिद्रा ३, मोहनीय के २७

(संज्वलन लोभ १ छोड़कर शेप २७) नामकर्म के २१ (तिर्यचिद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, ग्रातप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, ग्राहारकित २, देवंद्विक २, नरकित्वक २, वैक्रियिक २ मनुष्यद्विक २ ये २१) उच्चगोत्र १ ये ५२ जानना ।

#### ग्रथवा

तियंक् एकादश ११, उद्देलन की १३, संज्वलन लोभ १, सम्यक्त्व मोहनीय १, मिश्र मोहनीय १ इन तीन के विना मोहनीय की २५ और स्थानगृद्धि ग्रादि ३ इन सब ५२ प्रकृतियों में सबंसंक्रमण होता है। (देखों गों० क० गा. ४१७)

४०. तिर्यगेकावश प्रकृतियां प्रयात् सर्व संक्रमण प्रकृतियों में जिनका उदय तिर्यग गित में ही पाया जाता है उन ११ प्रकृतियों के नाम—तिर्यचिद्यक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, ग्रातप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १ ये तिर्यक् ११ प्रकृतियां हैं ग्रर्थात् इनका उःय तिर्यचों में ही होता है इसलिये इनका नाम 'तिर्यगेकादश' ऐसा है। (देखो गो० क० गा० ४१४)

# कर्म कांड शक्ति की विशेषता की कुछ ज्ञातव्य वातें

१. प्रकृति शदद का प्रयं कारण के विना वस्तु का जो सहज स्वभाव होता है उस को प्रकृति कहते हैं, उसको शोल या स्वभाव भी कहते हैं। जैसे कि जल का स्वभाव नीचे को गमन करना है, प्रकृत में यह स्वभाव जीव तथा कर्म का हो लेना चाहिये इन दोनों में से जीव का स्वभाव रागादिक्प परिगाः ने हो जाने) का है श्रीर कर्म का स्वभाव रागादिक्प परिगामानने का है तथा दोनों का सम्बन्ध कनक पापागावत् स्वयं सिद्ध है (देखों गों० क० गां० २)

२. समय प्रवद्ध — सिद्ध राशि के जो कि अनन्तानन्त प्रमाण कही है, उसके अनन्त में भाग और अभव्य राशि जो जघन्ययुक्तानन्त प्रमाण है उससे अनन्त गुणे परमाण समूह को यह आत्मा एक एक समय में बांघता है, अपने साथ संबद्ध करता है इसको समय प्रवद्ध कहते हैं, योगों की विशे ता से विसहश वंध भी होता है सारांश— परिणामों में कपाय की तीव्र तथा मन्दता से कमं परमाण भी ज्यादा या कम वंधते हैं, जैसे कम-अधिक चिकनो दीवार पर धूलि कम-अधिक लगती है। (देखों गो क० गा० ४)

- ३. दर्शनमोहनीय के भेदों से पांच निद्राश्रों का कार्य स्वरूप --
- (१ स्थानगृद्धि इस कर्म के उदय से उठाया हुग्रा भी सोता ही रहे, उस नींद में ही ग्रनेक कार्य करे तथा कुछ बोले भी परन्तु सावधानी न होय।
  - (२) निद्रा निद्रा—इस कर्म के उदय से अनेक् तरह

किस किस संहतन वाले जीव---६वे घ० मृपाटिका संहतन वाले जीव से सावधान किया हुआ भी श्रांखों को नहीं उघाड़ सकता है।

- (३) प्रचला-प्रचला— इस कर्म के उदय से मुख से लार वहती है श्रीर हाथ पैर मगैरह ग्रंग चलते हैं, किन्तु सावधान नहीं रहता।
- (४) निद्रा—इस कर्म के उदय से गमन करता हुआ भी खड़ा हो जाता है, बैठ जाता है, गिर पड़ता है इत्यादि किया करता है
- (५) प्रचला—इस कर्म के उदय से यह जीव कुछ कुछ श्रांखों को उघाड़कर सोता है श्रीर सोता हुश्रा भी थोड़।-थोड़ा जानता है, पुन:-पुन: जागता है श्रयांत् वार-वार मन्द शयन करता है यह निद्रा श्वान के समान है, सब निद्राशों में से उत्तम है।

इन पांच निद्राग्नों में से प्रथम की तीन निद्राग्नों को 'महानिद्रा' कहते हैं।

(देखो गो० क० गा० २३-२४-२४)

४. शरीर में श्रंगोपांग—कीन कीन से हैं ?

नलकी बाहु च तथा नितस्य पृष्ठे उरस्य कीर्षेच ।

श्रष्टैय तु श्रङ्गानि देहे शेपािए। उपङ्गानि ।।२८।।

श्रष्टं—दो पैर, दो हाथ, नितम्य-कमर के पीछे का
भाग, पीठ, हृदय श्रीर मस्तक ये श्राठ शरीर में श्रंग हैं
श्रीर दूसरे सब नेत्र, कान, वगैरह उपाङ्ग कहे जाते हैं
(देखो गो० क गा० २८)

४. संहतन ६ है- वच्चवृषम नाराच, बच्च-नाराच, श्रधं नाराच, कीलित (कीलक), श्रसंप्राप्तानृपाटि-का संहतन ये ६ हैं ?

#### उत्तर

कीन-कीन गृति में उत्पन्न होते हैं?

रित स्वर्ग से इबे स्टर्ग, तक चार युगलों में उत्पन्न होते हैं ५वे कीलित संहनन वाले जीव

४थे अर्घनाराच संहनन वाले जीव

१ले २रे रे नाराच तक इन तीन संहनन वाले जीव १ले २रे वच्चवृपभनाराच, वच्चवृपभनाराच इन दो संहनन वाले जीव

१ले वज्रभनाराच संहनन वाले जीव

E से १२वे स्वर्ग तक अथात् ४वे ६टे युगल में उत्पन्न होते हैं

१३ से १६वे स्वर्ग तक अर्थात् ७वे = वे युगल मे उत्पन्न होते हैं

नव ग्रै वेयिक तक जाता है नव अनुदिश तक जात! है

पांच अनुत्तर विमान तक जाता है

## यदि नरक में जन्म लेवें तो

प्रश्न

छह संहनन वाले संज्ञी जीव ६वे ग्र० सृपाहिका छोड़कर शेप पांच संहनन वाले

१ से ४ अर्थात् अर्ध नाराच संहनन तक के चार संहनन वाले जीव

१ले वज्रवृपभ नाराच संहनन वाले जीव (देखो गो० क० गा० २६-३०-:१)

६, कर्म भूमि की स्त्रियों के ग्रन्त के तीन ग्रर्घनाराच, कीलित, ग्रसंप्राप्ता सृपाटिका सहननों का ही उदय होता है ग्रादि के तीन वच्चवृपभ नाराचादि संहनन कर्म भूमि की स्त्रियों के नहीं होते। (देखो गो० क० गा० ३२)

७. प्रातप ग्रीर उद्योत प्रकृति का लक्षण—ग्रातप प्रकृति का उदय ग्रिनकाय में भी होना चाहिये, ऐसा कोई भ्रम कर सकता है। क्योंकि जो संताप करे ग्रर्थात् उप्णपने से जलावे वह ग्रातप कहा जाता है, ग्रतः भ्रम के दूर करने के लिये ग्रग्नी से भिन्न ग्रातप का लक्षण कहते हैं। ग्राग के मूल ग्रीर प्रभा दोनों ही उप्ण रहते हैं, इस कारण उसके स्पर्श नाम कर्म के भेद उप्ण स्पर्श नाम कर्म का उदय जानना ग्रीर जिसकी केवल प्रभा (किर्ों का फैलाव) ही उप्ण हो उसकी ग्रातप कहते हैं इस ग्रातप नाम कर्म का उदय सूर्य के विम्व (विमान) में उत्पन्न हुये वादर पर्याप्त पृथ्वीकाय के तिर्यच जीवों के समक्तना तथा जिसकी प्रभा भी उप्णता रहित हो उसको नियम से उद्योत जानना।

द. कमं वंघ का स्वरूप-कर्मों का और आत्मा का दूध श्रीर पानी की तरह आपस में एक रूप हो जाना यही वंघ है, जैसे योग्यपात्र में रक्से हुये श्रनेक तरह के रस, वीज, उत्तर

तीसरे नरक तक जाते हैं पांचवीं नरक की पृथ्वी तक उपजते हैं

छटी पृथ्वी तक उत्पन्न होते हैं

जातवीं पृथ्वी तक उत्पन्न होते हैं

फूल तथा फल सब मिन्कर मदिरा (शराव) भाव की प्राप्त होते हैं उसी प्रकार कर्म रूप होने योग्य कर्माण्-वर्गणा नाम के पुद्गल द्रव्य योग ग्रीर होव. दिक्वण्य का निमित्त पाकर कर्म भाव को प्राप्त होते हैं, तभी उन में कर्मपने की सामर्थ्य भी प्रगट होती है, जीव के एक समय में होने वाले अपने एक ही परिणाम से ग्रह्मण (संवंध) किये हुये कर्म योग्य पुद्गल, जानावरणादि श्रनेक भेद रूप होकर परिणामते हैं, जैसे कि एक वार ही खाया हुआ ग्रास, श्रन्न, रस, रक्त, मांस ग्रादि श्रनेक धातु-उपधात रूप परिणामता है।

ह. कर्मों के निमित्त से ही जीव की अनेक दशायें होती हैं, इस कारएा सब कर्मों के मेटों क' का दार्थ की अपेक्षा से कार्य बताते हैं, वह निम्न प्रक र जानना —

श्रावरण — 'त्रावृग्गोति श्रात्रियते श्रनेनेति श्रावरण्म्' ऐसी व्युतात्ति है, श्रयात् जो श्रावरण करे था जिससे श्रावरण किया जाय वह श्रावरण है।

- १. ज्ञानावरण के पांच मेदों का स्वरूप-
- (१) रस, रक्तादि चातुप्रों का परिग्मन प्रम ग्रे होता है ग्रीर ज्ञानावरगादि कर्मों का परिग्मन युगपत् होता है, इतना अन्तर है]।
  - (१) मतिज्ञानावरण कर्म-मितज्ञान का जो ग्रावरण

करे ग्रथवा जिसके द्वारा मितज्ञान ग्रावृत किया जाय ग्रयीत इका जाय वह मितज्ञानावरण कम है।

- (२) श्रुतज्ञानावरण कर्म —श्रुतज्ञान का जो स्रावरण करे वह श्रुतज्ञानावरण कर्म है।
- (३) श्रविधन्नानावरण कर्म श्रवाधिन्नान का जो श्रावरण करे वह श्रवाधिन्नानावरण कर्म है।
- (४) मन:पर्ययज्ञानावरण कम मन:पर्ययज्ञान का जो ग्रावरण करे वह मन:ज्ञानावरण कर्म है।
- (१) केवलज्ञानावरण कर्म-केवलज्ञान को 'ग्रावृणोति' ढक वह केवलज्ञानावरण कर्म है।
  - २ दर्शनावरगा कर्म के नव मेदों का स्वरूप-
- (६) चक्ष्रश्चनावरण कर्म—जो चक्षु में दर्शन नहीं होने देवे वह चक्षुदर्शनावरण कर्म है।
- (७) श्रचक्षुदर्शनावरण कर्म चक्षु (नेव) के सिवाय दूसरी चार इन्द्रियों से जो दर्शन (सामान्यावलोकन को) नहीं होने दे वह श्रचक्षुदर्शनावरण कर्म है।
- ( प्रविधवशना वर्ण कर्म जो अविध द्वारा दर्शन न होने दे वह अविधदर्शनावरण कर्म है।
- (६) केवलदर्शनावरण कर्म केवलदर्शन श्राथत् त्रिकाल मे रहने वाले सब पदार्थी के दर्शन का श्रावरण करे उसे केवलदर्शनावरण कर्म कहते हैं।
- (१०) स्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म 'स्थाने रुवाये गृध्यते दीप्यते सा स्थानगृद्धिः (निद्राविशेपः) दशना-वरणः' घातु शब्दों के व्याकरण में श्रनेक श्रथं होते हैं, तदनुसार इस निरुक्ति में भी स्थें' घातु का श्रथं सोना ग्रीर 'गृघ्' घातु का श्रथं दीप्ति समभना, 'मतलव यह है, जो सोने में अपना प्रकाश करे श्रथात् जिसका उदय होने पर यह जीव नींद में ही उठकर वहुत पराक्रम का कार्य तो करे, परन्तु भान नहीं रहे कि क्या किया था ? उसे स्थानगृद्धि धर्मनावरण कर्म कहते हैं।
- (११) निद्रा निद्रा दर्शनावरण कर्म जिसके उदय से निद्रा की ऊंची पुन: पुन: प्रवृत्ति हो, श्रयीत् जिससे श्रांख के पलक भी नहीं उघाड सके उसे निद्रानिद्रा दर्शनावरणकर्म कहते हैं।

- (१२) प्रचलाप्रचला दर्शनावरण कर्म—'यदुदयात् क्रियाग्रात्मान पुनः पुनः प्रचलयति तत्प्रचला प्रचला दर्श-नावरणम्' ग्रथात् जिस कर्म के उदय से किया ग्रात्मा को वार वार चलावे वह प्रचलाप्रचलादर्शनावरण कर्म है। क्योंकि शोक ग्रवया खेद या मद (नद्या) ग्रादि से उत्पन्न हुई निद्रा की ग्रवस्था में बैठते हुए भी शरीर के ग्रङ्ग बहुत चलायमान होते हैं, कुछ सावधानी नहीं रहती।
- (१३) निद्रादर्शनावरए। कर्म जिसके उदय से खेद ग्रादिक दूर करने के लिये केवल सोना हो वह निद्रा-दर्शनावरए। कर्म है।
- (१४) प्रचलादर्शनवरएा कर्म जिसके उदय ते शरीर की किया श्रात्मा को चलाये श्रीर जिस निद्रा में कुछ काम करे उसकी याद भी रहे, श्रश्रात् कुत्ते की तरह श्रत्पनिद्रा हो वह प्रचला दर्शनावरएा कर्म है।

#### ३-वेदनीय कर्म के दो भेदों का स्वरूप-

- (१५) सातावेदनीय (पुण्य) कमं जो उदय में श्राकर देवादि गति में जीव को शारीरिक तथा मानसिक सुखों की प्राप्तिरूप साता का 'वेदयित' भोग करावें, श्रयवा 'वेद्यते श्रनेन' जिसके द्वारा जीव उन सुखों को भोगे वह सातावेदनीय कमं है।
- (१६) ग्रसातावेदनीय कर्म जिसके उदय का फल ग्रनेक प्रकार के नरकादिक गति जन्य दु:सों का भोग-ग्रनुभव कराना है वह सातावेदनीय कर्म है।

४-मोहनीय कमं के दर्शनमोहनीय श्रीर चारित्र-मोहनीय ऐसे दो भेद हैं। दर्शनमोहनीय कमं बंध की अपेक्षा से 'मिथ्यात्व' यह एक ही प्रकार का है। किन्तु उदय श्रीर सत्ता की अपेक्षा मिथ्यात्व, सम्यङ् मिथ्यात्व, सम्यक्त्व प्रकृति ऐसे तीन तरह का कहा है।

चारित्रमोहनीय के एक कपाय वेदनीय और दूसरा नोकपाय वेदनीय ऐसे दों नेद कहे हैं। उनमें से कदाय-वेदनीय १६ प्रकार का है, श्रीर नोपकपाय वेदनीय ६ प्रकार का है दोनों मिलकर २५ होते हैं।

इस प्रकार मोहनीय कर्म के ३ + २४ = २ द अहाति जानना ।

- (१७) मिय्यात्व नाम दर्शनमोहनीय कर्म जिसके उदय से मिथ्या (खोटा) श्रद्धान हो, श्रर्थात् सर्वज्ञ-कथित वस्तु के ययार्थ स्वरूप में रुचि ही न हो, श्रीर न उस विषय में उद्यम करे, तथा न हित श्रहित का विचार ही करे वह मिथ्यात्व नाम दर्शन मोहनीय है।
- (१८) सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय कर्म जिस कर्म के उदय से परिशामों में वस्तु का यथार्थ श्रद्धान श्रीर श्रयथार्थ श्रद्धान दोनों हो मिले हुए हों उसे (१) सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय कर्म कहते हैं। उन परिशामों को सम्यक्तव या मिथ्यात्व दोनों में से किसी में भी नहीं कह सकते, श्रतएव यह एक भेद पृथक् ही माना है।
- (१६) सम्यक्तव प्रकृति दर्शनमोहनीय कर्म—जिस कर्म के उदय से सम्यक्तव गुरा का मूल से घात तो न हो परन्तु परिगामों में कुछ चलायमानपना तथा मिलन-पना श्रीर श्रशादपना हो जाय उसे सम्यक्तव प्रकृति दर्शनमोहनीय कर्म कहते हैं। इस प्रकृति वाला सम्यग् दृष्टि कहलाता है।

कपाय— 'कपिन्त हिंसन्तीति कपायाः' जो घात करे अर्थात् गुएा को ढके प्रकट नहीं होने दे उसको कपाय कहते हैं। उस कपाय वेदनीय के अनन्तानुवंधी, अप्रत्यास्यान, प्रत्यास्यान, संज्वलन, ऐसे चार अवस्था हैं। इन हरेक के कोध, मान, माया, लोभ ये चार चार भेद हैं। इन अवस्थाओं का स्वरूप भी कम से कहते हैं—अनन्त नाम संसार का है, परन्तु जो उसका कारएा हो वह भी अनन्त कहा जाता है। जैसे कि प्राएग के कारएा अन्न को प्राएग कहते हैं। सो यहां पर मिथ्यात्व परिएगम को अनन्त कहा गया है। वधोंकि वह अनंत-संसार का कारए है। जो इस अनंत-मिथ्यात्व के अनु-साथ साथ-बधे उस कपाय को अनन्तानुवंधी कहते हैं। उसके चार भेद हैं—

(२०) अनन्तानुवंधी कोध, (२१) अनन्तानुवंधी मान, (२२) अनन्तानुवंधी मामा, (२३) अनन्तानुवंधी लोम, जो 'भ्र' अर्थात् ईपत्-शोढ़े से भी प्रत्याख्यान की न

होने दे, अर्थात् जिसके उदय से जीव श्रावक के व्रत भी धारण न कर सके उस चारित्र मोहनीय कर्म को अप्रत्याख्यानवरण कहते हैं। उसके चार भेद हैं:—

(२४) अप्रत्याख्यान कोघ, (२५) अप्रत्याख्यान मान, (१६) अप्रत्याख्यान माया, (२७ अप्रत्याख्यान लोभ।

जिसके उदय से प्रत्याख्यान ग्रर्थात् सर्वथा त्याग का ग्रावरण हो । महावत नहीं हो सके उसे प्रत्याख्यानावरण कपाय वेदनीय कहते हैं । उसके चार भेद हैं: --

- (२८) प्रत्याख्यानावरण क्रोध, (२६) प्रत्याख्याना-वरण मान, (३०) प्रत्याख्यानावरण माया, (३१) प्रत्या-ख्यानावरण लोभ।
- (१) इसमें कोदों चावल का हण्टांत दिया है—
  जैसे कि कोदों चावल यद्यिप मादक (नशा करने वाले)
  हैं। फिर भी यदि वे पानी से घो डाले जाय ता उनकी
  कुछ मादक शक्ति रह जाति है, श्रोर कुछ चली जाती
  है। इसी प्रकार जब मिथ्यात्व प्रकृति की शांक्त भी
  उपशम सम्यक्त्व रूप जल से घुलकर कुछ कम हो जाती
  है तब उसको ही सम्यग्मिथ्यात्व या मिश्र प्रकृति
  कहते हैं।

जिसके उदय से संयम 'सं' एक रूप होकर 'ज्वलित' प्रकाश करे, श्रयीत् जिसके उदय से कपाय श्रंश से गिला हुआ सयम रहे, कपाय रहित निर्मल यथास्यात संयम न हो सके। उसे संज्वलन कपाय वेदनीय कहते हैं। यह कर्म यथास्यात चारित्र को घातता है उसके चार भेद हैं— (३२) संज्वलन कोघ, (३२) संज्वलन मान, (३४) संज्वलन माया, (३४) संज्वलन लोभ।

को नो अर्थात् ईपत्-थोड़ा कपाय हो, प्रवल नहीं हो उसे नोकपाय कहते हैं। उसका जो अनुभव करावे वह नोकपाय वेदनीयकर्म कहा जाता है। उसके नय भेद हैं:—

- (३६) हास्य जिसके उदय ते हास्य प्रकट हो वह हास्य कमें है।
- (३७) रित- जिसके उदय मे देश, धन, पुत्रादि में विशेष प्रीति हो उसे रित कर्म कहते हैं।

- (३८) अरित जिसके उदय से देश आदि में अप्रीति हो उसको अरित कर्म कहते हैं।
- (३६) शोक जिसके उदय से इष्ट के वियोग होने पर क्लेश हो वह शोक कम है।
- (४०) भय जिसके उदय से उद्देग (चित्त में घव-राहट) हो उसे भय कर्म कहते हैं।
- (४१) जुगुप्सा जिसके उदय से ग्लानि अर्थात् अपने दोप को ढकना और दूसरे के दोप को प्रगट करना हो वह जुगुप्सा कर्म है।
- (४२) स्त्री वेद-जिसके उदय से स्त्री सम्बन्धी भाव (मृदु स्वभाव का होना, मायाचार की अधिकता, नेत्र-विश्रम आदि द्वारा पुरुष के साथ रमने की इच्छा आदि) हो उसको स्त्री-वेद कर्म कहते हैं।
- (४३) पुरुष-वेद जिसके उदय से स्त्री में रमण करने की इच्छा म्नादि परिगाम हो उसे पुरुष-वेद कर्म कहते हैं।
- (४४) नपुंसक वेद जिस कर्म के उदय से स्त्री तथा पुरुष इन दोनों में रमगा करने की इच्छा ग्रादि मिश्रित भाव हो उसको नपुंसक वेद कर्म कहते हैं।
  - ४ श्रायु कर्म के चार भेदों का स्वरूप :--
- (४४) नरकायु जो कर्म जीव को नारकी शरीर में रोक रक्षे उसे नरकायु कहते हैं।
- (४६) तिर्यंचायु—जो कर्म जोव को तिर्यंच शरीर में रोक रक्से उसे तिर्यंचायु कहते हैं।
- (४७) मनुष्यायु—जो कर्म जीव को मनुष्य शरीर में रोक रक्ते उसे मनुष्यायु कहते हैं।
- (४८) देव ग्यु जो कर्म जीव को देव की शरीर में रोक रक्से उसे देवायु कहते हैं।

६. नाम कर्म के ६ भेद हैं — इनमें पिड और अपिड प्रकृति की अपेक्षा ४२ भेद हैं। पिड प्रकृति १४ और अपिड प्रकृति २६ हैं। पिड प्रकृति के उत्तर भेद ६५ होते हैं। इस प्रकार — ६५ - १८ = ६३ नाम कर्म के प्रकृति जानना।

- १. गित नाम कर्म जिसके उदय से यह जीव एक पर्याय से दूसरी पर्याय को 'गच्छित' प्राप्त हो वह गित नाम कर्म है। उसके चार भेद हैं:—
- (४९) नरक गित जिस कमें के उदय से यह जीव नारकी के श्राकार हो उसको नरक गित नामक कमें कहते हैं।
- (५०) तिर्यंच गित जिस कमं के उदय से यह जीव तिर्यंच के ग्राकार हो उसको तिर्यंच गित नाम कमं कहते हैं।
- (५१) मनुष्य गति—जिस कर्म के उदय मे यह जीव मनुष्य के शरीर ग्राकार हो उसको मनुष्य गति नाम कर्म कहते हैं।
- (५२) देवगित जिस कर्म के उदय से यह जीव शरीर के आकार हो उसको देवगित नाम कर्म कहते हैं।
- २. जाति नाम कर्म जो उन गितयों में ग्रव्यभिचारी साप्टरंग धर्म से जीवों को इकट्ठा करें वह जाति नाम कर्म है—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय ग्रादि जीव समान स्वरूप होकर ग्रापस में एक दूसरे से मिलते नहीं यह तो ग्रव्यभिचारी पना, श्रीर एकेन्द्रियपना सब एकेन्द्रियों में सरीखा है यह हुग्रा साद्द्रयपना, यह श्रव्यभिचारी धर्म एकेन्द्रियादि जीवों में रहता है, ग्रतएव वे एकेन्द्रियादि जाति शब्द से कहे जाते हैं। जाति नाम कर्म ५ प्रकार का है। जिसके उदय से यह जीव एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चनुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय कहा जाय उसे कम से—
- (५३) एकेन्द्रिय जाति, (५४) वेडन्द्रिय जाति, (५५) तेइन्द्रीय जाति, (५६) चौडन्द्रिय जाति, (५७) पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म समभना
- र. शरीर नाम कमं जिसके उदय से शरीर बने उने शरीर नाम कमं कहते हैं। वह पांच प्रकार का है, जिसके उदय से श्रीदारिक शरीर, वैश्वियिक शरीर, श्राहारक शरीर, तैजस श्रीर श्रीर कार्माण शरीर (कमं परमाणु सें का समूहरूप) उत्पन्न हो उन्हें कम से—(१=) श्रीदारिक शरीर नाम कमं, (१६) वैश्वियक शरीर नाम कमं,

(०६) ब्राहारक गरीर नाम कर्म, (६१) तैजस शरीर नाम वर्म, (६२) कार्माए। शरीर नाम कर्म कहते हैं।

४ वंघन नामकर्म— शरीर नामकम के उदय से जो ग्राहार वर्गगास्प पुद्गल के स्कन्ध इस जीव ने ग्रहगा के किये थे उन पुद्गल स्कन्धों के प्रदेशों (हिस्सों) का जिस कर्म के उदय से ग्रापस में सम्बन्ध हो उसे बन्धन नाम-कर्म कहते हैं। उसके पांच भेद हैं।

(६३) ग्रीदारिक शरीर बन्धन (६४) वंकियिक शरीर बन्धन (६४) ग्राहारक शरीर बन्धन (६६) तेजस शरीर बन्धन ग्रीर (६७) कार्माए शरीर बन्धन

प्र. संघात नामः मं — जिसके उदय से श्रीदारिक श्रादि शरीरों के परमाणु श्रापस में मिलकर छिद्र रहित वन्धन को प्राप्त होकर एक रूप हो जाय उसे संघात नामकर्म कहते हैं। यह नी (६८। श्रीदारिक संघात (६६) वैक्रिनिक संघात (७०) श्राहारक संघात (७१) तैजस संगत (७२) कार्माण शरीर संघात इस तरह पांच प्रकार है।

६. सम्थान नामकर्म-जिस कर्म के उदय से शारीरिक ग्राकार (शक्ल) वने उसे संस्थान नामकर्म कहते हैं। उसके ६ भेद हैं—

(७३ समचतुरस्र संस्थान — जिसके उदय से शरीर का ग्राकार ऊपर नीचे तथा बीच में समान हो ग्रर्थात् जिसके ग्रांगोपाङ्गों की लम्बाई, चौड़ाई सामुद्रिक शास्त्र के श्रनुसार ठीक-ठीक बनी हो वह समचतुरस्र संस्थान नामकर्म है।

(७४) न ग्रोधपरिमण्डल संस्थान — जिसके उदय से दारीर का श्राकर न्यग्रोध के (वड़ के) वृक्ष सरीखा नाभि के ऊपर मोटा श्रीर नाभि के नीचे पतला हो वह न्यग्रोधपरिमण्डल सस्थान नामकर्म है।

(७५) स्वाति संस्थान—जिसके उदय से स्वाति नक्षत्र के श्रयवा सर्प की वांमी के समान रारीर का श्राकार हो, श्रयांत् ऊपर से पतला श्रीर नाभि से नीचे मोटा हो उसे स्वाति संस्थान कहते हैं।

(७६) मृटजफ संस्थान-जिस कर्म के उदय से

शरीर कुवड़ा हो उसे कुटजक सस्यान नामकर्म कहते हैं।

(७७ बामन संस्थान — जिस कमं के जदय से वौना शरीर हो वह वामन संस्थान नामकर्म है।

(७८ हुंडक संन्थान—जिन कर्म के उदय से शरीर के अंगोपाँग किसी खास शक्ल के न हों और भयानक बुरे आकार के बनें उसे हुंडक सस्थान नामकर्म कहते हैं।

७ श्रांगोपाङ्ग नामकर्म — जिसके उदय से श्रांगोपांग का भेद हो वह श्रांगोपांग नामकर्म है। उसके तीन भेद हैं—

(७६) श्रीदारिक श्रांगोपाङ्ग (५०) वैक्रियिक श्रांगोपाङ्ग (५१) श्राहारक श्रांगोपाङ्ग ।

द. संहनन न.मकर्म जिसके उदय से हाडों के बन्धन में विशेषता हो उसे संहनन नामकर्म कहते हैं। वह छ: प्रकार का है—

(५२) वज्जव्वभनाराच संहनन — जिस कर्म के उदय से वृपभ (वेठन) नाराच कीला) संहनन (हाड़ों का समूह) वज्ज के समान हो, अर्थात् इन तीनों का किसी शस्त्र से छेदन भेदन न हो सके उसे वज्जवृपभनाराच संहनन नाम-कर्म कहते हैं।

(५३) बज्रनाराच संहनन - जिस कर्म के उदय से ऐसा शरीर हो जिसके बज्र के हाड ग्रीर बज्र की कीली हो परन्तु बेठन बज्र के न हों वह बज्रनाराच संहनन नामकर्म है।

( द ४) नाराच संहनन — जिस कर्म के उदय से शरीर में वज्ररहित (साधारण) वेठन ग्रीर कीलीसहित हाट हों उसे नाराच संहनन कहते हैं।

(६५) श्रधेनाराच संहनन — जिस कर्म के उदय से हाड़ों को संघियां श्राधी कीलित हों वह श्रधंनाराच संहनन है।

(५६) कीलित संहना—किस कमें के उदय में हाड परस्पर कीलित हों उसे कीलित संहनन नामकमें कहते हैं।

(६७) ब्रसंप्राप्ता सृप।टिका संहनन-जिस कर्म के

<sup>(</sup>१) स्रोदारिक स्रादि शब्दों का स्रयं जीवकाँड की योग मार्गणा में देखो ।

उदय से जुदे-जुदे हाड नसों से बंधे हों, परस्पर (आपस में) कीले हुए न हों वह असंप्राप्ता मृपाटिक संहनन है। क्योंकि 'असंप्राप्तानि (आपस में नहीं मिले हों) मृपाटिका-वत् संहननानि यस्मिन् (सर्प की तरह हाड जिसमें) तत् (वह असंप्राप्त मृपाटिका संहननम् (असंप्राप्त मृपाटिका संहनन शरीर है)' ऐसा शब्दाय है।

ह, वर्णं नामकर्म — जिसके उदय से शरीर में रंग हो वह वर्णनामकर्म है। उसके पाँच भेद हैं — (८८) कृष्ण-वर्ण नामकर्म। (८६) नीलवर्ण नामकर्म। (६०) रक्तवर्णं (लाल रंग) नामकर्म। (६१) पीतवर्णं (पीला रंग) नामकर्म। (६२) श्वेतवर्णं (सफेद रंग) नामकर्म।

१० गन्ध नामकर्म — जिसके उदय से शरीर में गंध हो उसे गन्ध नामकर्म कहते हैं। वह दो तरह का है— (६३) सुरिभगन्व (सुगन्ध) नामकर्म। (६४) ग्रसुरिभ-गन्ध (दुगँध) नामकर्म।

११. रस नामकमं — जिसके उदय से शरीर में रस हों उसे रस नामकमं कहते हैं। वह पाँच प्रकार का है — (६५) तिक्तरस (तीखा-चरपरा) नामकमं (६६) कटुक (कडुग्रा) रसनामकमं। (६७) कषाय (कसैला) रस नामकमं ६८०) ग्राम्ल (खट्टा) रस नामकमं (६६) मधुर रस (मीठा) नामकमं।

१२. स्पर्श नामकर्म — जिसके उदय से शरीर में स्पर्श हो वह स्पर्श नामकर्म है उसके ग्राठ भेद हैं — १००) ककंश स्पर्श (जो छूने में कठिन मालूम हो) नामकर्म (१०१) मृदु (कोमल) नामकर्म (१०२) गुरु (भारी) नामकर्म (१०३) लघु (हलका) नामकर्म (१०४) शीत (ठंडा) नामकर्म (१०५) उष्ण (गर्म) नामकर्म (१०६) स्निष्ध (चिकना) नामकर्म (१०८) रक्ष (रूखा नामकर्म।

श्रानुपूट्यं नामकर्म — जिस कम के उदय से मरण के पीछे श्रीर जन्म से पहले अर्थात् विग्रहगति (बीच की श्रवस्था) में मरण से पहले के शरीर के श्राकार श्रात्मा के प्रदेश रहें, श्रयात् पहले शरीर के श्राकार का नाश न हो उसे श्रानुपूर्व्यं नामकर्म कहते हैं। वह चार प्रकार का है— (१०६) नरकगित प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकर्म – जिस कर्म के उदय से नरकगित को प्राप्त होने के सन्मुख जीव के शरीर का ब्राकार विद्वह ।तियों में पूर्व शरीराकार रहे उसे नरकर्गात प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकम कहते हैं। (१ ६) तिर्यंचगित प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकर्म — (११०) मनुष्वगित प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकर्म (१११) देवगित प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकर्म भी ऊपर की तरह जानना।

१४. विहायोगित नामकर्म — जिस कर्म के उदय से ग्राकाश में गमन हो उसे विहायोगित नामकर्म कहते हैं। उसके दो भेद हैं—(११२) प्रशस्तविहायोगित (ग्रुभगमन) नामकर्म (११३) ग्रप्रशस्तविहायोगित (ग्रयुभगमन) नामकर्म।

(११४) भ्रापुरुत्वचु नामकर्म — जिस कर्म के उदय से ऐसा शरीर मिले जो लोहें के गोले की तरह भारी और आक की रुई की तरह हलका न हो उसे श्रापुरुत्वचु नाम, कर्म कहते हैं।

(११४) उपघात नामकर्म—जिसके उदय से बड़े सींग, लम्बे स्तन, मोटा पेट इत्यादि अपने ही घातक ग्रंग हों उसे उपघात नमकर्भ कहते हैं। (उपेत्यघात: उपघात: ग्रात्मघात इत्यर्थ:)।

(११६) परघात नामकर्म — जिसके उदय से तीक्स सींग, नख, सर्प म्रादि की दाढ़, इत्यादि परके घात करने वाले शरीर के भ्रवयव हों उसे परघात न मकम कहते हैं।

(११७) उच्छ्वास नामकर्म — जिस कर्म के उदय से क्वासोच्छ्वास हो उसे उच्छ्वास नामकर्म कहते हैं।

(११=) श्रातप नामकर्म — जिसके उदय से परकों श्रातप<sup>९ •</sup> करने वाला शरीर हो वह श्रातप नामवर्म है।

(११६) उद्योत नामकर्म — जिस यमं के उदय से उद्योत नामकर्म कहते हैं। (इसका उदय चन्द्रमा के विस्व में स्रोर स्रागिया (जुगुनू) स्रादि जीवों के हैं।

(१२०) श्रम नामकर्म - जिसके उदय से दो उन्द्रि-

१. इसका उदय सूर्य के बिम्ब में उत्पन्न हुए पृथ्वीकायिक जीवों के होता है।

यादि जीवों की जाति में जन्म हो उसे त्रस नामकर्म कहते हैं।

- १२१) स्यावर नामकर्म जिसके उदय से एकेन्द्रिय में (पृथ्वी, जल, ग्राग्नि, वायु, वनस्पतिकाय में) जन्म हो उसे ग्यावर नामकर्म कहते हैं।
- (·२२) वादर नानकर्म जिसके उदय से ऐसा शरीर हो जोकि दूसरे को रोके ग्रौर दूसरे से ग्राप रुके उसे वादर नामकर्म कहते हैं।
- (१२३) मूक्ष्म नामकर्म—जिसके उदय से ऐसा सूक्ष्म शरीर हो जो कि न तो किसी को रोक ग्रीर न किसी से रुक उसे सूक्ष्म नामकर्म कहते हैं।
- (१२४) पर्याप्त नामकर्म जिसके उदय से जीव अपने-अपने योग्य आहारादि (आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा, मन ये ६) पर्याप्तियों को पूर्ण करे वह पर्याप्त नामकर्म है।
- (१२४) श्रपर्याप्त नामकर्म—जिसके उदय से कोई भी पर्याप्ति पूर्ण नहीं हो अर्थात् लब्ब्य पर्याप्तक श्रवस्था हो उसको श्रपर्याप्ति नामकर्म कहते हैं।
- (१२६) प्रत्येक शरीर नामकर्म जिसके उदय से एक शरीर का एक ही जीव स्वामी हो उसे प्रत्येक शरीर नामकर्म कहते हैं।
- (१२७) साधारण शरीर नामकर्म जिस कर्म के उदय से एक शरीर के श्रनेक स्वामी हों उसको साधारण नामकर्म कहते हैं।
  - (१) रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसन्मेदः प्रवर्तते ।

मेदतोस्यि ततोस्यि ततो मज्जं मज्जाच्छुकस्ततः प्रजाः ॥१॥

श्रयांत् अन्न से रस, रस से लोही, लोही से मांस, मांस से मेद, मेद से हाड, हाड से मज्जा, मज्जा से वीयं, वीयं से संतान होती है इस तरह सात वातु हैं सात वातु ३० दिन में पूर्ण होती हैं।

- (१२८) स्थिर नामकर्म—जिसके उदय से शरीर के रसादिक वातु और वातादि उपधातु अपने अपने ठिकाने (स्थिर) रहें उसको स्थिर नामकर्म कहते हैं, इससे ही शरीर निरोगी रहता है।
- (१२६ प्रस्थिर नामकर्म जिसके उदय से धातु ग्रीर उपधातु ग्रपने ग्रपने ठिकाने न रहें ग्रयांत् चलायमान होकर शरीर को रोगी बनावें उसको ग्रस्थिर नामकर्म कहते हैं।
- (१३०) शुभ नामकर्म जिस कर्म के उदय से मस्तक वगरह शरीर के अवयव और शरीर सुन्दर हो उसे शुभ नामकर्म कहते हैं।
- (१३१) श्रशुभ नामकर्म जिस कर्म के उदय से शरीर के मस्तकादि श्रवयव सुन्दर न हों उसकी श्रशुभ नामकर्म कहते हैं।
- (१३२) सुभग नामकर्म जिस कर्म के उदय से दूसरे जीवों को ग्रच्छा लगने वाला शरीर हो उसको सुभग नामकर्म कहते हैं।
- (१३३) दुर्भग नामकमं जिस कमं के उदय ने रूपादिक गुएा सहित होने पर भी दूसरे जीवों को ग्रच्छा न लगे उसको दुर्भग नामकमं कहते हैं।
- (१३४) सुस्वर नामकर्म जिसके उदय से स्वर (ग्रावाज) ग्रच्छा हो उसे सुस्वर नामकर्म कहते हैं।
- (१३५) दु.स्वर नामकर्म—जिसके उदय से ग्रन्छ। स्वर न हो उसको दु:स्वर नामकर्म कहते हैं।
  - (२) वातः पित्तं तथा रलेप्मा

शिरास्नायुश्च चर्म च।

जठराग्निरिति प्रानै:

त्रोक्ताः सप्तोपघातवः ॥२॥

स्रर्थात् वात, पित्त, कफ, सिरा, स्नायु, चाम, जठरा-ग्नि (पेट की स्राग) ये सात उपधातु हैं। (१३६) ग्रादेय न मकर्म - जिसके उदय से कान्ति सहित शरीर हो उसको ग्रादेय नामकर्म कहते हैं।

(१३८) भ्रनादेय नामकर्म — जिसके उदय से प्रभा (कान्ति रहित शरीर हो वह भ्रनादेय नामकर्म है।

(१३८) यज्ञः कार्ति नामकर्म—जिसके उदय से ग्रयना पुण्य गुरा जगत में प्रगट हो ग्रर्थात् संसार में जीव की तारीफ हो उसे यज्ञः कीर्ति नामकर्म कहते हैं।

(१ ६) श्रयशः कीर्ति नामकर्म—जिस कर्म के उदय से संसार में जीव की तारीफ न हो उसे श्रयशः कीर्ति नामकर्म कहते हैं।

(१४०) निर्माण नामकर्म — जिसके उदय से शरीर के ग्रगों-पांगों की ठीक ठीक रचना हो उसे निर्माण नामकर्म कहते हैं, यह दो प्रकार कार्रहें, जो जाति नामकर्म की ग्रपेक्षा से नेत्रादिक इन्द्रियें जिस जगह होनी चाहिए उसी जगह उन इन्द्रियों की रचना करें वह स्थान निर्माण है ग्रीर जितना नेत्रादिक का प्रमाण (माप) चाहिये उतने ही प्रमाण (माप के वरावर) वनावे वह प्रमाण निर्माण है।

(१४१) तीथंकर नामकर्म—जो श्रीयुत् तीर्थंकर (श्रर्हत) पद का कारण हो वह तीर्थंकर प्रकृति नाम-कर्म है।

७. गोत्र कर्म के दो भेदों का स्वरूप-

(१४२) उच्चं गोत्र कर्म - जिसके उदय से लोक-

१०. फपायों का नाम—

- (१) भ्रनन्तानुवंधी कपाय
- (२) ग्रप्रत्याख्यान "
- (३) प्रत्याख्यान "
- (४) संज्वलन "

ग्रर्थात् सम्यक्त्य वर्गे रह को प्रकट नहीं होने देती (देखो गो० क० गा० ४५)

११. इन फपायों को वासना का (संस्कार का) काल 'उदयाभावेऽपि तत्तांस्कार कालो वासना काल:, श्रयांत्

पूजित (मान्य) कुल में जन्म हो उसे उच्च गोत्र कर्म कहते हैं।

(१३) नीच गोत्र कर्म—जिस कर्म के स्ट्रिंग से लोक निदित कुल में जन्म हो उसे नीय गं.ध धर्म कहते हैं।

प्रन्तरायकर्म के पांच भेदों का स्टहप—

(१४४) दानान्तरराय कर्म - जिसके उदय से देना चाहे परन्तु दे नहीं सके वह दानान्तराय कर्म है।

(१४५) लाभान्तराय कर्म - जिसके उदय है लाभ (फायदा की इच्छा करे लेकिन लाभ नहीं हो सके उसे लाभांतराय कर्म कहते हैं।

(१४६) भोगान्तराय कर्म—जिस कर्म के उदय से श्रन्न या पुष्पादिक भोगरूप वस्तु को भोगना चाहे परन्तु भोग न सके वह भोगान्तराय कर्म है।

(१४७) उपभोगान्तराय फर्म — जिसके उदय में स्की, वस्त्र, वगैरह उपभोग्य वस्तु का उपभोग न कर सके उसे उपभोगांतराय कर्म कहते हैं।

(१४८) बीर्यान्तराय कर्म - जिस कर्म के उदय से ग्रपनी शक्ति (बल) प्रकट करना चाहे परन्तु शक्ति प्रकट न हो उसे वीर्यान्तराय कर्म कहते हैं—

इस प्रकार १४८ उत्तरं प्रकृतियों का शब्दार्थ जानना (देखो गो० क० गा० ३३)

फपायों का कार्य —

सम्यक्त्व को घातती है

देश चारित्र को 🧼 "

सकल चारित्र को "

यथांस्यात चारित्रं को "

किसी ने फोघ किया, पीछे वह दूसरे काम में लग गया वहां पर फोघ का उदय तो नहीं है, परन्तु जिस पुरुष पर कोघ किया या उंन पर क्षमा भी नहीं है, उस प्रकार जो कोघ का संस्कार चित्त में बैठा हुआ है उसी की वासना का काल यहां पर कहा गया है।

- (१) संज्वलन कपायों की वासना का काल ग्रन्तमुं हुर्त तक जानना
- (२) प्रत्याख्यान ,, ,, एक पक्ष (१५ दिन) ,
- (३) अपत्याख्यान ,, ,, छ: महीना ,
- (४) श्रनन्तानुवंघी ,, , संख्यात, श्रसंख्यात तथा श्रनंतभव है, ऐसा निश्चय कर . समभना। (देखो गो० क० गा० ४६)
- १२. कालीघात मरण् श्रयवा श्रकालमृत्यु का लक्षण् विषमक्षण् मे श्रयवा विष वाले जीवों के काटने से रक्त-क्षय श्रयवा घातु क्षय से, भय से, शस्त्रों के (तलवार श्रादि हथियारों) घात से, संक्षेत्र परिणामों से श्रयीत् मन-वचन-काय के द्वारा श्रात्मा को श्रिषक पीड़ा पहुंचाने वाली किया होने से, श्वासोच्छ्वास के रुक जाने से श्रीर श्राहार (खाना पीना) नहीं करने से, इस जीव की श्रायु कम हो जाती है, इन कारणों से जो मरण् हो श्रयीत् शरीर छूट उसे कदलीघात मरण् श्रयवा श्रकाल मृत्यु कहते हैं। (देखो गो० क० गा० ५७)
- १३. भक्त प्रतिज्ञा मरए। का लक्षण जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट के भेद से भक्त प्रतिज्ञा तीन प्रकार की है। भक्त प्रतिज्ञा श्रयांत् भोजन की प्रतिज्ञा कर जो सन्यास मरए। हो उसके काल का प्रमाए। जघन्य (कम से कम) श्रन्त-मृंहूर्त है श्रीर उत्कृष्ट (ज्यादा से ज्यादा) बारह वर्ष प्रमाए। है तथा मध्य के भेदों का काल एक एक समय बढ़ता हुश्रा है, उसका श्रन्तमुंहूर्त से ऊपर श्रीर वार

वर्ष के भीतर जितने भेद हैं उतना प्रमाण समभना। (देखो गो० क० गा० ४८-५६-६०)

१४. इंगिनी मरण का लक्षण — अपने शरीर की दहल आप ही अपने अंगों से करें, किसी दूसरे से रोगादि का उपचार न करावे, ऐसे विधान से जो सन्याप धारण कर मरें उस मरण को इंगिनीमरण संयास कहते हैं।

- (१५) प्रायोगगमन मरण का लक्षण अपने शरीर की टहल न तो आप अपने अंगों से करें और न दूसरे से ही करावें अर्थात् जिसमें अगना तथा दूतरे का भी उपचार (सेवा) न हो ऐसे सन्यासमरण को प्रायोपगमन मरण कहते हैं। (देखो गो० क० गा० ६७)
- (१६) तीर्थंकर प्रकृति बंध का नियम—प्रसंयत-चतुर्थं
  गुरा स्थाम से लेकर द्वे गुरा स्थान अपूर्वकररा के ६वे
  भाग तक के सम्यग्हिष्ट के ही तीर्थंकर प्रकृति का वंध
  होता है। प्रथमोपश्चम-सम्यक्तव में अथवा वाकी के
  द्वितीयोपशमसम्यक्तव, क्षयोपश्चम सम्यक्त्व और क्षायिकसम्यक्त्व की अवस्था में असंयत से लेकर अप्रमत्त गुरा
  स्थान तक चार गुरा स्थानों वाले कमं भूमिया मनुष्य
  ही, केवली तथा श्रुत केवली (द्वादशङ्ग के पारगामी)

१. ग्रियक दौड़ने से जो ग्रियक दवासें चलती हैं वहां काय की किया तथा मन की किया रूप संक्तेंग परिस्ताम होते हैं, इस कारण ग्रियक दवास का चलना भी श्रकाल मृत्यु का निमित्त कारण है, इस एक ही हव्यांत को देखकर श्रज्ञानी लोक एकांत से दवास के ऊपर ही श्रायु के कमती बढ़ती होने का श्रनुमान कर दवास के कमती बढ़ता! चलने से श्रायु घट बढ़ जाती है ऐसा श्रमदान कर लेते हैं। उनके भ्रम दूर करने के लिये ग्राठ कारण िगनायं के क्योंकि यदि एक ही के ऊपर विश्वास किया जाय तो शस्त्र के लगने से खास चलना तो ग्रियक नहीं मानूम पड़ता, वहां पर या तो श्रपमृत्यु न होनी चाहिये श्रयवा श्रियक दवास चलने चाहियें, दूसरी बात यह है कि मुज्यमान श्रायु कभी भी बढ़ती नहीं है। समाबि में खास कम चलते हैं, इसलिये श्रायु बढ़ जाती है ऐसा मानना मिय्या है। वहां पर दवास के निरोध से श्रायु कम नहीं होती।

के निकट ही तीर्थंकर प्रकृति के वंघ का प्रतिष्ठापन (ग्रारम्भ) करते हैं, परन्तु इस प्रकृति का निष्ठापन तिर्यंच गित छोड़कर शेप तीन गितयों में ग्रर्थात् नरक, म गुष्य, देवगित में होता रहता है। सारांश ग्रगर निष्ठापन काल के समय वर्तमान ग्रायु का काल समाप्त होकर ग्रगली गित में जन्म होने पर वंघ हो सकता है।

प्रथमोपशम सम्यक्त में तीर्थंकर प्रकृति का वंध नहीं हो सकता ऐसे भी कोई ग्राचार्यों का मत है।

तीर्यंकर प्रकृति का बंध होने का उत्कृष्ट काल—

ः कोटिपूर्व ग्रीर ग्राठ वर्ष + एक ग्रंतर्मु हूर्त कम ३६ सागर काल तक तीर्यंकर प्रकृति का बंध होता रहता है यह उत्कृस्ट काल है। (दो कोटि पूर्व वर्ष + ३३ सागर — वर्ष ग्रीर एक ग्रंतर्मु हूर्त) (देखो गो० क० गा० ६२-६३)

१७. श्राहारक शरं र श्रीर श्राहारक श्रंगोपांग प्रकृतियों का वंध श्रव्रमत्त ७वे गुरा स्थान से लेकर व्वे श्रपूर्वकररा गुरा स्थान के छठे भाग तक ही होता है श्रीर (देखो गो० क० गा० ६२)

१८. श्रायु कर्म का वंध मिश्र गुरा स्थान तथा निर्वृ-

त्यपर्याप्त श्रवस्था को प्राप्त मिश्र काय योग इन दोनों के सिवाय मिथ्या दृष्टि से लेकर श्रप्रमत्त गुगा स्थान तक ही होता है 'देखो गो० क० गा० ६२)

१६. तीर्थंकर प्रकृति १, श्राहारकाद्विक २, श्रायु कर्म के प्रकृति ४, इनके सिवाय वाकी वची प्रकृतियों का वध मिथ्यात्व वगैरह श्रपने श्रपने बंघ की व्युच्छित्ति १ तक होता है ऐसा जानना (देखो गो० क० गा० ६२)

२०. किस गुएा स्थान में कितने प्रकृतियों के वंध की व्यक्तित्व होती है उनकी संस्था निम्न प्रकार जानना, व्युच्छित्ति का अर्थ वंध का अभाव यह ऊपर वता चुकी है, किस गुएा स्थान में जिस प्रकृतियों की व्युच्छित्ति हो चुकी है उन प्रकृतियों का वंध अगले गुएए स्थानों में नहीं होता।

२रे गुए स्थानों में जो २५ प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होती है उन ४ प्र० का बंध केवल मिथ्यात्व से ही होता है और सासादन गुएा स्थान में केवल अनता-नुबंधी से ही होता है (देखों गों० क० गां० ६४ ते १०० को० नं० १) यह कथन इस अध्याय में नाना जीवों की अपेक्षा से जानना।

<sup>(</sup>१) व्युच्छित्ति नाम बिछुड़ने का है। परन्तु जहां पर व्युच्छित्ति कहीं जाती है वहां पर उनका संयोग रहता है। जैसे दो मनुष्य एक नगर में रहते थे। उनमें से एक पुरुप दूसरी जगह गया। वहां पर कियों ने पूछा कि, तुम कहां बिछुड़े थे? तब उसने कहा कि, में अमुख नगर में बिछुड़ा या अर्थात् उससे जुदा हुया था। उसी तरह जहां जहां पर कमों के बन्ध, उदय, अथवा सत्त्व की व्युच्छित्ति बताई है। वहां पर तो उन कमों का रन्थ, उदय अथवा सत्त्व रहता है, उसके आगे नहीं रहता, ऐसे सर्वत्र समक लेना चाहिये।

	् ब्युच्छिति	
गृगा स्थान	प्राप्त प्र॰	जिन प्रकृतियों की बंध व्युच्छिति होती है उन प्रकृतियों के नाम
	की संख्या	•
१ भिभ्यारा	<b>१</b> ६	सिथ्यात्व १, नपुंसक वेद १, नरकायु १, हुंडक संस्थान १, असंप्राप्त सृपाटिका सहनन १, एकेन्द्रियादि जाति ४, स्थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, साधारण १, नरक गति १, नरक गत्यानुपूर्य १ ये १६।
२ सामा ४न	२४	स्थानगृद्धि १, निद्रा-निद्रा १, प्रचला-प्रचला १, ग्रनन्तानुवन्धी कषाय ४, स्त्रीवेद १, तियँचायु १, दुर्भग १, दुःस्वर १, ग्रनादेय १, न्यश्रीध परिमंडल संस्थान १, स्वाति सं० १, कुट्ग सं० १, वामन सं० १, वष्प्रनाराच सहनन १, नाराच सं० १, ग्रर्धनाराच सं० १। कीलित सं० १, ग्रप्रशस्त विहायोगति १, तियंच गति १, तियंच गत्यानुपूर्व्य १, उद्योत १, नीचगं।त्र १ ये २४।
	0	यहां किसी प्रकृति की व्युच्छित्ति नहीं होती।
३ मिश्र	80	श्रप्रत्याख्यान कपाय ४, मनुष्यायु १, वज्जवृषभनाराच संहतन १, श्रीदारिक शरीर १, श्रीदारिक श्रंगोपांग १, मनुष्य गति १, मनुष्य गत्यानुपूर्व्य १, ये १०।
४ श्रसंयत	8	प्रत्याख्यान कपाय ४।
५ देश संयत	Ę	त्रसाता वेदनीय १, श्ररति-शोक २, ग्रस्थिर १, ग्रग्नुभ -, ग्रयशः कीर्ति १ ये ६ ।
६ प्रमत्त ७ ग्रप्रमत्त	8	देवायु १, प्रकृति ही व्युच्छित्ति होती है, जो श्रेगी चढ़ने के संमुत नहीं है ऐसे स्वस्थान अप्रमत्त के ही अन्त समय में व्युच्छित्ति होती है। दूसरे सातिशय अप्रमत्त के वन्ध नहीं होता, इमलिये व्युच्छिति भी नहीं होती।
भाग १	२	निद्रा १, प्रचला १ ये २ प्रकृतियों की व्युक्ति होती है । इस ाग में श्रोणी चढ़ते समय मरण नहीं होता ।

	भाग २	0	इस भाग में व्युच्छित्ति नहीं होती।
	भाग ३	0	77 21 22
	भाग ४	2	n 11 11
	भारत ५	0	11 11 11
	्भःग ६	₹ 0	तीर्थंकर प्र० १, निर्माण १, प्रशस्त विहायोगित १, पंचेन्द्रिय जाति १, तैजस-कार्माण शरीर २, ग्राहारकद्विक २, समचतुरस्रसंस्थान १, देवगित १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिकद्विक २, स्पर्शादि ४, श्रगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छवास १, त्रस १, वादर १, पर्यात १, प्रत्येक १, स्थिर १, श्रुभ, सुभग १, सुस्वर १, ग्रादेय १, ये ३०।
	भाग ७	૪	हास्य-रति २, भय-जुगुप्सा २ ये ४।
3	भाग १	१	पुरुपवेद १ की व्युच्छित्ति जानना ।
	भाग २	१	संज्वलन क्रोध की ""
	भाग ३	१	'' मान १ की ''
	भाग ४	१	" माया १ूकी ""
	भाग ५	१	" लोभ १ की <sup>"</sup>
Fa	सूध्य सां०	\$ Cu	ज्ञानावरण के ४, दर्शनावरण के ४ (चक्षु द० २, ग्रचक्षु द० १, ग्रविध द० १, केवल दर्शनावरण १ ये ४) यशः कीर्ति १, उच्चगोत्र १, ग्रंतराय कर्म के ४, ये १६।
११	उपशांत मोह	0	यहां कोई व्युच्छित्ति नहीं होती ।
१२	धीग् मोह	o	11 11 11
£ 8	संगोग के०	१	ं सातावेदनीय १ की व्युच्छित्ति जानना ।
१४	श्रयोग के० ः	0	यहां वन्य भी नहीं तथा व्युन्छित्ति भी नहीं होती ।
v		१२०	वन्चयोग्य प्रकृतियां, इनकी च्युच्छिति ऊपर् लिने प्रनुसार जानना

२१. गुरा स्थानों की श्रपेक्षा से बंध व्युच्छित्ति, बंध, ग्रबंध, प्रकृतियों के कोव्टक बंध योग्य प्रकृति १२०। (देखो गो० क० गा० १०३ श्रीर १०४ को० नं० २)

	गुरास्थान	ग्रवंघ प्रकृति संस्या	वंघ प्रकृति संस्था	बंध व्युच्छित्ति प्र० संख्या	विशेष विवर्ग
		1			
१	मिथ्यात्व	3	११७	१६	ग्राहारकद्विक , तीर्थकर प्र०१ ये ३।
२	सासादन	38	१०१	२५	34=98=
₹	मिश्र	४६	७४	o	१६ + २५ = ४४ + = ४६ मनुष्यायु १, देवायु १ ये २।
٧	श्रसंयत	63	ಅಅ	१०	५७—३ ४३. तीर्थकर प्र०१, मनुष्यायु १, देवायु १ ये ३ ।
ሂ	देश संयत	५३	६७	لا	प्रत्याख्यान कपाय ४।
Ę	प्रमत्त ्	<i>५७</i>	६३	Ę	को० नं० १ देखो ।
ø	श्रप्रमत्त	६१	५६	१	५:∵ + ६ = ६३ — २ ग्राहारकद्विक = ६१ १ देवायु जानना ।
5	ग्रपूर्व क०	६२	५६	३६	को० नं० १ देखो ।
3	ग्रनिवृ०	£=	२२	Ä	को० नं० १ देखो ।
१०	मूक्ष्म सां०	१०३	१७	१६	को० नं० १ देखो ।
११	उपशांत मोह	११६	8	o	
१२	क्षीएा मोह	388	१	0	
१३	सयोग के०	388	१	१	१ सातावेदनीय जानना ।
	श्रयोग के	१२०	0	o	
			]		

# २२. वंघ योग्य प्रकृति १२० में से ऊपर लिखे हुये वन्घ श्रवन्य प्रकृतियों की संख्या श्रीर नाम निम्न प्रकार जानना—

( देखो गो० क० गा० १०३-१०४ ग्रोर को० नं २ )

	ग्रवन्ध	प्रकृतियों की	वन्य प्रकृतियों की			
गुग्गस्थ न	¦ नंख्या	नाम	संख्या	नाम		
1						
१ मिथ्यात्व	₹	ग्राहारकद्विक २, तीर्गकर प्र०१,ये ३ जानना	११७	ज्ञानावरण ५ दर्शनावरण ६, वेदनीय २, मोहनीय २६, श्रायु ४, नाम ६७—३ =६४, शोत्र २, श्रन्तराय के ५ ये ११७।		
२ सास।दन	38	३ — १६ को० नं० १ के समान — १६ जानना	६०१	ऊपर के ५+६+२+२४ (मिथ्यात्व १, नपुंसक वेद १ ये २ घटाकर (२६—२=२४)+३+५१ (६४—१३ =५१ नामकर्म १३ को०नं० १ के समान) +२+४=१०१.		
३ मिश्र	\\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\	१६ + २५ को० नं० १ के समान = ४४ + २ (मनुष्यायु १, देव यु १, ये २) = ४६ जानना	७४	ज्ञानावरण ५+६ दर्शनावरण (६-३ महानिद्रा घटाकर=६)+२ वेदनीय +१६ मोहनीय (ग्रनन्तानुबन्धी ४, स्त्रीवेद १ ये ५ घटाकर २४ ५=१६) नामकर्म के ३६ (५१—१५ को० नं० १ के समान घटाकर ३६) उच्चगोत्र १, ग्रन्तराय के ५ ये ७४ जानना।		
४ श्रसंयत	. 83	४६–६ (मनुष्यायु १, देवायु , तीर्थंकर प्र० १ थे ३ घटाकर)=(४३) जानना	હહ	ऊपर के ५+६+२+१६+२ (मनुष्यायु १. देवायु १, ये २)+३७ (३६ तीर्यकर प्र०=३७) १+५ ये ७७ जानना		
५ देश संयत	35 90	४३ + °० (को० नं० १ के समान) = ५३ जानना	દ્દ્	जपर के ४ - ६ + २ + १५ (१६ - ४ अप्रत्याच्यान कवाय घटाकार ) + • + ३२ ७ ५ को० नं० के समान = ३ + ) + १ + १ चे ६७ जानना		

C)*	प्रमत्त	५७	५३ + ४ प्रत्यास्यान कपाय == ५७ जानना	६३	कपर के ४ - ६ - २ - ६ (१४ - ४) प्रत्यास्यान कवाय घटाकर) - +१ - ३२ + १ + ४ ये ६३.
<b>.</b>	ग्रप्रमत्त	Ę <b> ?</b>	५७ + ६ को० नं० १ के स तन = ६३ - २ ग्राहारकद्विक २ घटाकर = ६१ जानना	A E	<ul> <li>ऊपर के ५ · ६ + १ तानावेदनी</li></ul>
¤.	ग्रपूर्वकरग	६२	६१ <del> </del> १ देवायु ये ६२ जानना	५८	ऊपर के ४ · ६ + १ ! ६ + ३१ + १ + ४ ये ४ ⊏ जानना
E	ग्रनिवृत्तिक०	e u	६२ + ३६ को० नं० १ के समान == ६५ जानना	२२	जपर के ५ + ४ (६ — २ निद्रा- प्रचला घटाकर = ४)
१०	सूक्ष्मसांपराय	१०३	६८ 🕂 ५ संज्वलन कपाय ४, पुरुपवेद १, ये ५==१०३ जानना	१७	ऊपर के ५+४ ∸१+१ यशः कीति +१+५=१७ जानना (देखो गो० क० गा० १५१)
११	उपशांत मोह	११६	१०३ <del> </del> १६ को० नं० १ के समान ==११६ जानना	१	साता वेदनीय जानना
१२	क्षीण मोह	393	"	१	"
१३	सयोग के०	११६	"	१	<i>?</i> :
१४	ग्रयोग के०	१२०	११६ <del> </del> -१ साता- वेदनीय ये १२० जानना	0	

- २३. मूत्र प्रकृतियों के वंध के चार भेद निम्न प्रकार जानना
- (१) सादि बंध जिस कर्म के वंध का ग्रभाव होकर ग्रथीत् बंध-व्युच्छित्ति के बाद फिर वहीं कर्म बंधे उसे सादि वंध कहते हैं।
- (२) श्रनादि बंध जो गुए स्थानों की श्रेणी पर ऊपर को नहीं चढ़ा श्रर्थात् बंध-स्युच्छित्त के पहले जो वंध श्रव्याहत चालू रहता है, जिसके बंध का श्राव नहीं हुश्रा वह श्रनादि बंध है।
- (३) ध्रुव वंध जिस वंध का ग्रादि तथा ग्रंत न हो भर्यात् जिस वंध का सतत चासू रहता है वह ध्रुव वंध है।
- (४) प्रश्नुव यंच-जिस वंध का ग्रन्त ग्रा जावे उसे अध्रुव-वंध कहते हैं।

भानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, नाम, गोत्र. ग्रंतराय ये छह कर्मी का प्रकृति वंध सादि, श्रनादि, ध्रुव श्रध्रुव रूप चारों प्रकार का होता है।

तीसरे वेदनीय कर्म का बंघ सादि विना तीन प्रकार का होता है। उपशम श्रेणी चढ़ते समय ग्रीर नीचे उतरते समय साता वेदनीय का सतत बंध होता रहता है इसलिये सादि बंध नहीं होता।

श्रायु कर्म का सादि श्रीर श्रध्नुव ये दो प्रकार का ही वंघ होता है। एक पर्याय में एक समय, दो समय या उत्कृष्ट श्राठ समय में श्रायु कर्म का वंघ होता है। इसलिये सादि है श्रीर श्रन्तर्मुहर्त तक ही वंध होता है इसलिये श्रध्नुव है।

ज्ञानावरण की पांच प्रकृतियों का वंध किसी जीव के दसवें गुरण स्थान तक अव्याहत होता था, जब वह जीव ग्यारहवें में गया तब वंध का अभाव हुआ, पीछे ग्यारहवें गुरण स्थान से पड़कर (च्युत होकर) फिर दसवें में श्राया तब ज्ञानावरण की पींच प्रकृतियों का पुनः वंध हुआ, ऐसा वंध सादि कहलाता है।

दसवें गुए स्थान वाला ध्यारहवें में जब तक प्राप्त नहीं हुमा वहां तक ज्ञानावरए। का भ्रनादि वंघ है. गयोंकि वहां तक भ्रनादि काल से उसका वंध चला भाता है।

ध्रुव बंध श्रभव्य जीव के होता है। श्रध्नुव बंध भव्य जीवों के होता है। (देखो गो० क० गा० १२२-१२३)

२४ ब्रावाया कात का सक्षरा -कार्माग् शरीर नामा नामकर्म के उदय से योग द्वारा ब्रात्मा में कम स्वरूप कर्म सं परिग्रामनता हुआ जो पुर्गलद्रव्य यह जब तक उदय स्वरूप (फल देने स्वरूप) अथवा उदीरगा (विना समय के कमं का पाक होना) स्वरूप न हो तय तक उस काल के भागाधा काल कहते हैं। (देखों गोट कठ गाठ १४१)

- (१) प्रावाधा को उतय की प्रपेक्षा मूल प्रकृतियों में वलताते हैं यदि कोई एक कमं की न्यित एक कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण हो तो उस स्थित की श्रावाधा काल (१००) सी वर्ष प्रमाण जानना श्रीर बाकी स्थितियों की श्रावाधा काल इसी के श्रनुसार प्रराशिक विधि से भाग देने पर जो जो प्रमाण श्रावे उतनी-उतनी जानना। यह कम श्रायु कमं के सिवाय सांत कमों की श्राव धा के लिये उदय की श्रपेक्षा से है। (देखों गो० क० गा० १४६)
- (२) अन्तः कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण स्थिति की धाबाध काल एक अन्तर्मुहर्त जानना श्रीर सब जधन्य स्थितियों की उससे संद्यातगुणी कम (संद्यातवें भाग) आवाधा होती है। देखो गो० क० गा० १४७)
- (३) श्रायुकमं की श्रावाधा काल—कमंभूमि के तियंच श्रीर मनुष्यों की उत्कृष्ट श्रायु कमं की श्रावाधा काल कोड्पूर्व के तीसरे भाग प्रमाण है भीर जवन्य श्रायु की श्रावाधा कःल श्रसंक्षेपादा प्रमाण श्रपीत् जिससे थोड़ा काल कोई न हो ऐसे श्रावली के श्रसंस्थातवें भाग प्रमाण तक है। श्रायु कमं की श्रावाधा स्थित के श्रनुसार भाग की हुई नहीं है श्रयित् जैसे श्रन्य कमों में स्थित के श्रनुसार भाग करने से श्रावाधा का प्रमाण होता है, इस तरह इस श्रायु कमं में नहीं है।

देव श्रीर नारकीयों को मरण के पहले छ: महीना श्रीर भोगभूमियों के जीवों को नव महीना वाकी रहते हुए श्रायु का बंध होता है : यह श्रायुवंध भी विभाग से होता है। श्रायु का बंध होने पर श्रगले पर्याय से प्रारम्भ में उसका उदय होता है। बंध से लेकर उदय तकका जो काल वही श्रावाधा काल है। (देनो गो॰ क॰ गा॰ १५८)

(४) उदीरए। की भ्रषेका च वाया कान — थापु कर्म को छोड़कर रोप सात कर्मों की उदीरए। की भवेका से भावाधा एक भावली मात्र है तक तक उदीरए। नहीं होती भीर परभव की भाषु (बच्यमान भाषु) को बांप की मी है उसकी उदीरए। या उदय भुज्यमान भाषु में निश्लयकर नहीं होती। श्रमीत् वर्तमान भाषु की (भुज्यमान भाषु की) उदीरए। तो हो सकती है, परन्तु भागामी भाषु की (बच्यमान भाषु की) नहीं होती (देखी गों० क० गा०१५६)

२५. एक जीव को एक समय में कितने प्रकृतियों का वंघ होता है यह वृतलाते हैं। (देखो गो० क० गा० २१७ को० नं० ५२)

					(400	110 110 110 110		" × × × /	_
गुरा-स्थान	१ ज्ञाना०	२ दर्शना०	३ वेदनीय	४ मोहनीय	पू ग्रायु	६   नामकर्म 	७ गोत्र	प्र इतराय	जोड़
र. मिय्यात्व	¥	8	१	= 2	१	२३-२ <b>४-२</b> ६-२ <i>⊏-</i> २६-३०	१	્ર	<i>६७-६६-७०-७२-७६-</i> <i>७</i> ४
२. सासादन	५	3	१	२१	१	२८-३०	٦, ا	્ય	७१-७२-७३
३. मिश्र	ধ	Ę	१	१७	0	३८-२६	-8	ζ,	६३-६४
४. ग्रसंयत	પ્ર	Ę	१	१७	१	२८-३०	8	ሂ	६४-६५-६६
५. देशसंयत	ধ	Ę	१	१३	१	२८-२६	₹′	ধ	६०-६१
६. प्रमत्त	٧	Ę	१	3	१	२८-२६	8	ય	<b>५</b> ६-५७
७. ग्रप्रमत्त	પ્ર	Ę	१	3	१	२८-३०-३१	१	ሂ	५६-५७-५८-५६
८, ग्रपूर्व क०	પ્ર	६-४	१	3	0	२८-३०-३१-१	१	¥	४.४-४६-४७-४=-२६
६. ग्रनिवृत्ति०	ধ	४	१	५-४-३- २ <b>-</b> १	0	१	१	પ્ર	. २२-२१-२०-१६-१६
१०. सूक्ष्म सां०	Ä	8	१	0	0	<b>१</b> .	8	ধ	१७
११. उपशांतमो०	0	0	१	0	0	o	0	0	१
१२. क्षीएा मोह०	0	0	₹.	0	0	o	0	0	<b>१</b>
१३. सयोग के०	0	0	१	0	0	٥	0	0	?
१४. भ्रयोग के॰	0	0	0	0	0	0	0	0	o
जोड़	<b>X</b>	E- E-8		२२-१२- १७-१३-६ -५-४-३- २-१	₹	२३-२४-२६-२८- २६-३०-३ <b>१-१</b>	8	¥	७४-७३-७२-७१- ७०-६६ ६७-६६- ६४-६४-६३-६१-, ५६-४४-२६-२२- २१-२०-१६-१
			* 4					}	

#### ऊपर के कोष्डक का विशेष स्पष्टीकरण:-

- १. ज्ञानावरण के ५ प्रकृति: —मितज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, श्रविध ज्ञानावरण, मनः पर्यय ज्ञानावरण, केवल ज्ञानावरण ये ५।
- २. दर्शनावररा के ६ प्रकृति—मूल प्रकृति जानना । ६ प्रकृति —मूल ६ प्रकृतियों में से स्थानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलप्रचला ये ३ महानिद्रा घटाकर ६ जानना । ४ प्रकृति ऊपर के ६ में से निद्रा ग्रीर प्रचला ये २ घटाकर ४ जानना ।

#### ३. वेदनीय फे--

४. मोहनीय के २२ प्रकृति—मोहनीय के २८ प्रकृतियों में से सम्यग्गिय्यात्व, सम्यवत्व प्रकृति इन दोनों का वंध नहीं होता। इसलिये ये २ घटाने से २६ रहे। इनमें तीन वेदों में से एक समय में एक ही वेद का वंध होता है इसलिये दो वेद कम करने से २४ रहे। इनमें हास्य-रित में से कोई १, श्रीर श्ररित-शोक इन जोड़ों में से कोई १ का ही वंध होता है इसलिये २४ में से २ घटाने से २२ प्रकृति जानना।

२१ प्रकृति - ऊपर के २२ में से मिथ्यात्व प्रकृति १ घटाकर २१ जानना ।

१७ प्रकृति--- ऊपर के १ में से ग्रनन्तानुवंधी कपाय ४ घटाकर १७ जानना ।

१३ प्रकृति - ऊपर के १७ में से अप्रत्याख्यान कपाय ४ घटाकर १३ जानना ।

ह प्रकृति — ऊपर के १३ में से प्रत्याख्यान कपाय ४ घटाकर ६ जानना ।

५ प्रकृति — ऊपर के ६ में से हास्य-रित मं से १, अरोत-शोक में से १, और भय-जुगुप्सा ये २ में से ४ घटाकर ६-४=५ जानना ।

४ प्रकृति - ऊपर के ५ में से पुरुपवेद १ घटाकर ४ जानना ।

३ प्रकृति - ऊपर के ४ में से संज्वलन क्रोध १ घटाकर ३ जानना ।

२ प्रकृति -- ऊपर के ३ में से संज्वलन मान १ घटाकर २ जानना।

१ प्रकृति -- ऊपर के २ में से संज्वलन माया १ घटाकर १ जानना ।

५. श्रायु कर्म की प्रकृति—

६. नामकर्मं की प्रकृति—(गो० क० गा० २१७-५२६ से ५३१ देखो)।

- (१) २३ प्रकृतियों का वन्ध स्थान एकेन्द्रिय ग्रपर्याप्तयुत एक ही है— ध्रुव प्रकृति ६ (तेंजस शरीर १,
  कार्माण शरीर १, अगुरुलघु १, उपधात १, निर्माण १,
  स्पर्शादि ४ ये ६) वादर-सूक्ष्म में से १, प्रत्येक-साधारण
  में से १, स्थिर-ग्रस्थिर में से , शुभ-ग्रशुभ में से १,
  सुभग दुर्भग में से १, ग्रादेय-ग्रनादेय में से १,
  यश-कीति—ग्रयश-कीति में से १, स्थावर १, ग्रपर्याप्त १,
  तिर्यचिद्वक २, एकेन्द्रिय जाति १, ग्रीदारिक शरीर १,
  छः संस्थानों में से कोई १ सस्थान, ये सव २३ प्रकृति
  जानना ग्रीर 'एकेन्द्रिय ग्रपर्याप्तयुत' का ग्रथं—जो कोई
  जीव इन २३ प्रकृतियों को वांघता है, वह जीव मरकर
  एकेन्द्रीय ग्रपर्याप्त हो सकता है ग्रीर एकेन्द्रिय ग्रपर्याप्त
  हो तो वहां इन २३ प्रकृतियों का उदय होगा।
- (२) २५ प्रकृतियों का दूसरा वन्धस्थान है। इसके ६ प्रकार होते हैं।

१ला एकेन्द्रिय श्रपर्यासयुत—ऊपर के २३ प्रकृतियों में मे श्रपर्यात १, घटाकर शेप २२ में पर्याप्त १, उच्छ्वात १, परघात १ ये ३ प्रकृतियां जोड़कर २५ जानना।

२रा द्विन्द्रिय प्रपर्यासयुत— ऊपर के २४ प्रकृतियों में से स्थावर १, पर्याप्त १, एकेन्द्रिय १, उच्छ्,वास १, परघात १ ये ५ घटाकर शेप २० में त्रस १, मपर्याप्त १, द्विन्द्रियजाति १, असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन १, श्रीदारिक अंगोपांग १ ये ४ जोड़कर २४ जानना।

३रा त्रीन्द्रिय श्रपर्यासयुत— द्वीन्द्रिय श्रपर्याप्तयुत में जो २ प्रकृतियां हैं। उनमें से द्वीन्द्रिय जाति घटाकर गीन्द्रिय जाति १ जोड़कर २५ जानना।

४था चतुरिन्द्रिय भ्रपर्यासयुत — ऊपर के न्नीन्द्रिय के जगह चतुरिन्द्रिय जाति जोड़कर २५ जानना ।

भ्वां पचेन्विय श्रपर्याप्तयुत — कपर के चतुरिन्द्रिय जाति के जगह पचेन्द्रिय जाति जोडकर २५ जानना। ःवां मनुष्य अपर्धाप्तयुत — ऊपर के पंचेन्द्रिय जाति के २५ प्रकृतियों में से तिर्यं वगित घटाकर मनुष्यगित जोड़कर २५ जानना।

(३) २६ प्रकृतियों का ३रा वन्धस्थान के दो प्रकार हैं—

१ला ए हेन्द्रिय । यांत म्रातपयुत — मतुष्यगित म्रपर्गात के २५ प्रकृतियों में से त्रस १, अपर्याप्त १, मनुष्यगित १, पचेन्द्रिय जाति १, म्र—च्मुपाटिका सहनन १, म्रोदारिक म्रंगोपांग १ ये ६ घटाकर शेप १६ में स्थावर १, पर्याप्त १, तिर्यचगित १, एकेन्द्रियजाति १, उच्छ्वास १, पर्यात १, म्रातप १ ये ७ जोड़कर २६ जानना ।

२रा गकार ए निद्रय पर्गाप्त उद्योतपुन - ऊपर के आतप प्रकृति के जगह उद्योत प्रकृति जोड़कर २६ जानना ।

(४) २८ प्रकृतियों का ४था वन्यस्थान के दो प्रकार हैं:—

१ला देवगतियुत — ध्रुव प्रकृतियां ६, त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर-ग्रस्थिर में से १, युभ-ग्रयुभ में से १, यक्षःकीर्ति-ग्रयशःक ति में गे १, सुभग १, श्रादेय १, देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिकद्दिक २, पंचेन्द्रिय जाति १, समचतुरस्र संस्थान १, सुस्वर १, प्रशस्तविहायोगिति १, उच्छ्वास १, परघात १ ये २० जानना ।

२रा नरकगितयुत—ध्रुव प्रकृतियां ६, त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, छस्यर १, ग्रशुभ १, ग्रनादेय १, दुर्भग १, ग्रयश : कीर्त १, नरकिंद्वक २, वैकियिकिंद्विक २, पंचेन्द्रियजाित १, हुंडक संस्थान १, दुःस्वर १, ग्रप्रशस्तिवहायोगित १, उच्छ्वास १, परधात १ ये २८ जानना ।

(प्र) २६ प्रकृतियों का ५वां वन्धस्यान के ६ प्रकार हैं—

१ता द्वीन्द्रिय पर्याप्तयुत—श्रुव प्रकृतियां ६. त्रम १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर-ग्रस्थिर में म १, शुभ-श्रशुभ में से १, दुर्भग १, श्रनादेय १, यशःकीति-श्रयशःकीर्ति में से १, तिर्यंचिद्वक २, द्वीन्द्रियजाति १, श्रोदारिकद्विक २, हुंडक संस्थान १, श्र-सृपाटिकासंहनन १, दुःस्वर १ श्रप्रशस्तिवहायोगित १, उच्छ्यास १, परघात १ ये २६ जानना ।

२रा त्रोन्द्रिय पर्यासयुत—ऊपर द्वीन्द्रिय पर्याप्तयुत के २६ में द्वीन्द्रिय जाति की जगह त्रीन्द्रिय जाति जोड़ कर २६ जानना।

३रा चतुरिन्द्रिय पर्याप्तयुत - ऊपर के त्रीन्द्रिय पर्याप्तयुत के २६ में त्रीन्द्रिय जाति की जगह चतुरिन्द्रिय जाति जोड़कर २६ जानना।

४था पंचेन्द्रिय पर्यातयुत (तियँच — ध्रुवप्रकृतियां ६, श्रस १, बादर १, प्रत्येक १, पर्यात १, स्थिर-ग्रस्थिर में से , श्रुभ-ग्रश्चुभ में से १, सुभग-दुर्भग में से १, ग्रादेय-श्रनादेय में से १, यशःकीति-ग्रयशःकीति में से १, छः संस्थानों में से कोई १, छः संहननों में मे कोई १, सुस्वर-दुस्वरों में से कोई १, दो विहायोगितियों में से कोई १, तिर्यचिद्धिक २, श्रौदारिकद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, उच्छ्वास १, पर्धात १, ये २६ जानना।

प्रवां मनुष्य पर्याप्तयुत—ऊपर के २६ में तिर्यचिद्वक २ के जगह मनुष्याद्विक २ जोड़कर २६ जानना ।

६वां देवगित सीर्थकरयुत—ध्रुव प्रकृतियां ६, त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर-श्रस्थिर में से 1, शुभ- श्रयुभ में से १, सुभग १, श्रादेय १ यशःकीर्ति-श्रयशःकीर्ति में से १, देविहक २, वैिक्रियकिहिक २, पचेन्द्रिय जाति १, समचतुरस्र संस्थान १, सुस्यर १, प्रशस्तिविहायोगिति १. उच्छ वास१, परधात १, तीर्थकर १ ये २६ जानना।

सूचना—२८ प्रकृतियों का वन्धस्थान मे देवगातयुत जो प्रकार दत्तलाया है, उससे एक तीर्थंकर प्रकृति इसमें वढ़ गया है।

(६) ३० प्रष्टितियों का ६वां वन्यस्थान के ६ प्रकार—

१सा होन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत-जपर के २६

प्रकृतियों का द्वीन्द्रिय पर्याप्त स्वान में उद्योत प्रकृति १ जोड़कर ३० जानना।

२रा त्रोन्द्रिय पर्यात उद्योतपृत — ऊपर के २६ प्रकृतियों का त्रीन्द्रिय पर्याप्तयुत स्थान में एक उद्योत प्रकृति जोड़कर ३० जानना।

३२ा चतुरिन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत—ऊपर के २६ प्रकृतियों का चतुरिन्द्रिय पर्याप्तयुत स्थान में एक उद्योत प्रकृति जोड़कर ३० जानना ।

४था पंचेन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत—ऊपर के २६ प्रकृतियों का पंचेन्द्रिय पर्याप्तयुत स्थान में एक उद्योत प्रकृति जोड़ कर ३० जानना ।

१वां मनुष्य तीर्थंकरयुत ऊपर के २६ प्रकृतियों का मनुष्य पर्याप्तयुत स्थान में एक तीर्थंकर प्रकृति जोड़कर ३० जानना।

६वां देवगति घाहारकयुत—जपर के २६ प्रकृतियों का देवगति तीर्थकरयुत स्थान में से तीर्थकर प्रकृति १ घटाकर, ग्राहारकाहक २ जोड़कर ३० प्रकृतियां जानना।

- (७) ३१ प्रकृतियों का एक ही स्थान है-
- १ देवगित ग्राहारक-तीर्षकरयूत ऊपर २६ प्रकृतियों का देवगित तीर्थकरयुत इस स्थान में श्राहारकद्विक २ जोडकर ३! जानना।
- (८) १ प्रकृति का एक ही स्थान है—वह प्रकृति ग्रथांत् यथः कीति १ जानना ।

इस कार नामकर्म के आठ स्यानों के २५प्रकार जानना।

सूचना—नरकगतियुत २८ प्रकृतियों का स्थान में श्रीर एकेन्द्रिय अपर्याप्तयुत २३ प्रकृतियों का स्थान में श्रीर त्रस अपर्याप्तयुत २४ पकृतियों का स्थान में दुर्भग, मुभगादि शुभाशुभ प्रकृतियों में से एक का ही बन्ध होगा। ऐसा जो लिला है यह अशुभष्रकृति का ही बन्ध होगा। (देखो गो० क० गा० ५३३) ग्रीर ऊपर जो नामकर्म के भंग ग्रादि विवरण गो० क० गा० २१७ को० नं ० ५३ ग्राठ स्थान वतलाया गया है उनके गुणस्थान वधस्थान, में देखो ।

२६. कर्मों के उदय का कथन करते हैं—
प्रकृतियों का नाम ।
ग्राहारकद्विक २ ।
तीर्थकर प्रकृति का उदय ।

सम्यङ्मिथ्यात्व सम्यक्तव प्रकृति का उदय ।

गत्यानुपूर्वी का टदय।

उपय कीनसा गुग्गस्थान में होता ? ६ठे प्रमत्त गुग्गस्थान में ही होता है। १३वे सयोग तथा १४वे ग्रयोग केवली के ही होता है।

३रे मिश्रगुर्ण स्थान में ही होता है। क्षयोपश्मससम्यग्हिट के इसे ७ ये चार गुर्ण में होता है।

१ ले मिथ्यात्व २ रे सासादन श्रीर ४ थे श्रसयत गुण स्थान इन तीनों में ही होता है। परन्तु कुछ विशेषता यह है कि सासादन गुणस्थान में मरने वाला जीव नरक-गति को नहीं जाता।

इस कारण उसके नरकगत्यानुपूर्वी वर्म का उदय नहीं होता है स्रोर वाकी वचीं सब प्रकृतियों का उदय --

निथ्यात्वादि गुरा स्थानों में अपने-अपने उदयस्थान के अन्त समय तक (उदयब्युच्छित्ति होने तक) जानना । देखो गो० क० गा० २६१-२६२)।

२७. गुरा स्थानों में उदय व्युच्छित्ति स्नादि कम से कहते हैं -(को॰ नं॰ ५६)
( महाघवल अथवा कपाय प्राभृत के कत्ता यित वृषभाचार्य के मतानुसार जानना )

<ul> <li>१. मिच्यात्व</li> <li>१. मिच्यात्व</li> <li>१. मिच्यात्व</li> <li>१. मिच्यात्व</li> <li>१. मिच्यात्व</li> <li>१. माचाद्व</li> <li>१. माच्व</li> <li>१. माचाद्व</li> <li>१. माचाद</li></ul>	गुएा-स्थान	ग्रनुदय	उदय	् उदय व्युच्छि०	विशेष विवर्ग
<ul> <li>१० = मिथ्यात्व १, स्वाय १, स्वाय १, स्वाय १, श्रयमं १, स्वाय १, एकेन्निय से चतुरिन्निय ज्ञाति १ ये १० जानता । १६ = १० १</li> <li>१ मश्र १२ १०० १</li> <li>१ श्रमं</li></ul>	१. मिथ्यात्व	પ્ર	११७	,	५=तीर्यंकर प्र० १, आहारकद्विक २, सम्यङ्मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति
<ul> <li>२. सासादन १६ १०६ ४ १०६ ४ १०६ विज्ञय से चतुरिन्दिय जाति ४ थे १० जानना । १६ मश्य १०० १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १</li></ul>		İ			
<ul> <li>२. सासावन १६ १०६ ४ १६ ८५ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८</li></ul>				1 1	१० = मिथ्यात्व १, ग्रांतप १, सूक्ष्म १, साधारण १, ग्रंपयोप्त १, स्यावर
<ul> <li>श्रमिश्र</li> <li>१०० १ १ १०० १ १ १०० १</li></ul>	५ मामान्य	00	0 . c	,	
<ul> <li>१ मिश्र</li> <li>१ १००</li> <li>१ २००</li> <li>१ १००</li> <li>१ १००<td>रः तातापन</td><td>1 2 4</td><td>304</td><td></td><td></td></li></ul>	रः तातापन	1 2 4	304		
प्र असंयत १८ १०४ १७ १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०	३ मिश्र	२२	१००	8	
१ श्रमंयत १ १ १०४ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	· · · ·	, ,	•	'	जानना । १== मिश्र प्र० १ जानना
१. देशसंयत १. देशसंयत	४ ग्रसंयत	१८	१०४	१७	१८=२३-४ घानुपूर्वी १ सम्यक्त्व प्र० ये ४=१८ जानना ।
प्र. वेशसंयत । ३५ ८७ ८ ८ ४ ८० ८ ८ ४ ८० ८० ८० ८० ८० ८० ८० ८० ८० ८० ८० ८० ८०					१७ अप्रत्यास्यान ४, नरकदेवायु २. वैकियिक पट्क ६, मनुष्यतिर्यंच-
<ul> <li>६. प्रमत्त ४१ ८१ ४ ४ ८२ ४ ४ ८२ ४ ४ ८० ८२ ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ८० ८० ४ ४ ७ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०</li></ul>				] ]	गत्यानुपूर्वी २, दुर्भग १, ग्रनादेय १, ग्रयदाः कीर्तिः १ ये १७ जानना ।
<ul> <li>६. प्रमत्त ४१ ८१ ४ ४१ = ३४ + ६ = ४३ - २ ब्राहारकिक = ४१ जानना । ४ = स्थानगृद्धि १, निद्रानिद्वा १, प्रचलाप्रचता १, ब्राहारकिक २ ये ४ जानना । ४ = सम्यवत्व प्र० १, प्रयं नाराच १, कीलित १, ब्र० सुध्म सं १ ५० ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६</li></ul>	५. देशसंयत	३४	50	5	
<ul> <li>५. प्रमत्त ४१ ८१ ४ ४१ = ३४ + ६ = ४३ — २ याहारकिक = ४१ जानना । ५ = स्थानगृद्धि १, निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, प्राहारकिक २ ये ४ जानना ।</li> <li>५. ग्रप्रचे क० ४० ७२ ६ ४१ ५६ = ४१ + ५ = ४६ जानना । ४ = सम्यक्त्व प्र० १, प्रयं नाराच १, कीलित १, ग्र० सुपाटिका १ ये ४ जानना ।</li> <li>६. ग्रान्वृ० ५६ ६६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६</li></ul>					
<ul> <li>७. ग्रप्रमत्त ४६ ७६ ४ ४ जानना । ४ अप्राचला १, प्राहारकहिक २ ये ४ जानना ।</li> <li>इ. ग्रप्र्यं क० ४० ७२ ६ ६६ ६ ६० १ ६६ ६० १ ६६ ६० १ ६६ ६० १ ६६ ६० १ १६ १६ ६० १ १६ १६ ६० १ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १</li></ul>	C		- 0		
ण अप्रमत्त ४६ ७६ ४ जानना । ४=सम्यवत्व प्र०१, प्रघं नाराच १, कीलित १, ग्र० सृपाटिका १ ये ४ जानना । १=हास्य, रित, ग्ररित, शोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १=हास्य, रित, ग्ररित, शोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १=हास्य, रित, ग्ररित, शोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १=हास्य, रित, ग्ररित, शोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १=संज्वलन कोध-मान-माया ३, वेद ३, ये ६ जानना । १=लोभ कपाय (मूहम लोभ) जानना । १२ अप्रांतमो० ६३ ५६ २ १६ २ १६ २ ६० १ ६३ १२ वच्च नाराच १, नाराच १, ये २ जानना । १६ जानना १६ जानना । १६ जानना १	६. प्रमत्त	४१	53	*	8 = 3x + 5 = 83 - 4  Migitanian  0  maximum  0
७. ग्रप्रमत्त       ४६       ४६       ४६       ४६       ४५       ५०       ५०       ६०       ६०       ५० <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td>					
ह. स्राप्त के ० १० ७२ ६ कीलित १, य० सुपाटिका १ ये ४ जानना । १० हास्य, रित, धरित, धोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १० हास्य, रित, धरित, धोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १० हास्य, रित, धरित, धोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १० हास्य, रित, धरित, धोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १० हास्य, रित, धरित, धोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १० हास्य, रित, धरित, धोक, भय, जुगुप्ता ये ६ जानना । १० हो भ कपाय (मूक्ष्म लोभ) जानना । १० हो भ कपाय (मूक्ष्म लोभ) जानना । १० हो भ कपाय (मूक्ष्म लोभ) जानना । १० हो भ कपाय १, ये १ जानना । १० हो भ कपाय १, ये १ जानना । १० हो भ कपाय १, ये १ जानना । १० हो भ कपाय १ भ निद्रा १, प्रचला १० हो छो । १० हो भ कपाय १, ये १० जानना । १० हो कपाय १, ये १० जानना । १० हो कपाय १, ये १० जानना १, ये १ व्याप्त १, ये १० हो वेदनीय १, ये १० जानना । १० हो वेदनीय १, ये १० जानना । १० हो वेदनीय १, ये १० जानना । १० वेदनीय १, ये १० जानना १, ये १० वेदनीय १, ये १० जानना । १० वेदनीय १, ये १० जानना । १० वेदनीय १, ये १० जानना १, ये १, ये १० जानना १, ये १० जानना १, ये १ वेदनीय १, ये १० जानना १, यो १० जानना	७ ग्रप्रमत्त	४६	ુ છ	8	_
ह. श्रम्वे क० १० ६ ६ १० ६ १० ६ १० ६ १० ६ १० ६६ १० १० सुक्ष्म सांत्र ११. ज्याति मोत्र ११. व्याति मात्र ११. व्याति मात्र ११. व्याति मात्र ११. व्याति ११. व	OI MAINE	`			
ह. ग्रिनिवृ०  १६ ६६ ६ १ १६ ६ १ १६ १ १६ १ १६ १ १६ १	८. श्रपूर्व क०	५०	७२	Ę	
१०. सूक्ष्म सांत ६२ ६० १ ६२-४६ + ६=६२ जानना । १=लोभ कपाय (सूक्ष्म लोभ) जानना । १२ जपतांतमो० ६३ ४६ २ ६३ - १ ६३ - १ दे । २ यज्य नाराच १, नाराच १, ये २ जानना । १६ की सामित १३ ४० ६६ ६६ + १ ६३ - १ दे । २ यज्य नाराच १, नाराच १, ये २ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना । १६ जानना १ जामांग १, त्रास्थान ६, स्पर्शोद ४, अगुरुलपु १, जपयात १, परयात १, उच्छ्यान १, परयात १, वेदनीय २, मनुष्यायु १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जानि १, नुभग १, अवती १, वादर १, पर्यान्त १, प्राहेत १, वादर १, पर्यान्त १, प्राहेत १, वादर १, पर्यान्त १, प्राहेत १, वादर १, पर्यान्त १, प्राहेत १, वादर १, पर्यान्त १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत १, प्राहेत १, प्राहेत १, वादर १, प्राहेत	- "				ये ६ जानना ।
१०. सूक्ष्म सांत्र ११. उपघातमो ११. उपघातमो ११. उपघातमो ११. उपघातमो ११. उपघातमो ११. ४६ ११. १६ १६ ११. ६३ ११. ६३ ११. ६३ ११. ६३ ११. ६३ ११. ६३ ११. ६३ ११. ६३ ११. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ.	६. ग्रनिवृ०	५६	६६	દ્	
११. जपशांतमो० ६३ ४६ १ ६३ ६३ ६३ १२ यच्च नाराच १, नाराच १, ये २ जानना । १२. क्षीरा मोह० ६५ ४० १६ १६ ६६ १२ ६६ १२ ६६ ५२ ६६ ६६ ६१ ६६ ६१ ६६ ६१ ६६ ६१ ६६ ६१ ६६ ६१ ६६ ६१ ६६ ६१ ६१	_		_		
१२. क्षीग्रामोह० ६५ १० १६ ६५=६३+२=६५ जानना। १६= ज्ञानावरग्रा ४, दर्शनावरग्रा ४- निद्रा १, प्रचला १=६, ग्रंतराय के ५ ये १६ जानना। १३. सयोग के० ८० ४२ २६ ८०=६५- १६=८१- १ तीर्यंकर प्र०=८० जानना। २६= वज्जवृषम नाराच संहनन १, निर्माग्र १, स्वरिद्रक २, ग्रुमिंडक २, स्वरिद्रक २, विह्रायोगित २, ग्रीदारिद्रक २, तेजस १, जामांग्र १, संस्थान ६, स्पर्शाद ४, ग्रुमुक्लप्र १, उपपात १, परपात १, उच्छ्वाग १, प्रत्येक ग्ररीर १, ये २६। १४. ग्रुयोग १०६ १३ १३ १०६ ८० ५२६ - १०६ जानना। २६ वदनीय २, मनुष्यायु १, मनुष्य गित १, पंचेन्द्रिय जानि १, गुम्ग १, प्रत्येक १, बादर १, पर्यन्त १, ग्रादेग १, यशः क्रीत १, तीर्यं २ १, उच्च-					
१३. सयोग के० ८० ४२ २६ १६ जानना ।  १३. सयोग के० ८० ४२ २६ ८० ६६ १६ जानना ।  १३. सयोग के० ८० ४२ २६ ८० ६६ १६ ६० ६० ६६ १६ ५६ ६० ६० ६० ६६ १६ ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६०					
१३. सयोग के० ८० ४२ २६ ८० ६५ १६ ८० ६५ १६ ८० ६५ १६ ८० ६५ १६ ८० ६५ १६ १६ ६० १५ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६	१२. क्षारा माह०	६र	2,10	{4	
१३. सयोग के० ८० ४२ २६ ८० — ६५ — १६ — १६ — १६ — १६ — १६ — १६ — १६					
१४. श्रयोग १०६ १३ १३ १३ १०६ ५० ६०० ५०० ५०० ६०० ६०० ६०० ६०० ६०० ६०	१३. सयोग के०	50	४२	२६	
संस्थान ६, स्पर्शादि ४, श्रगुरुलपु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वान १, प्रत्येक शरीर १, ये २६ ।  १४. ग्रयोग १०६ १३ १३ १०६ =० 1-२६ =१०६ जानना ।  •३ वेदनीय २, मनुष्यायु १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जानि १, नृभग १, यम १, बादर १, पर्यन्त १, श्रादेग १, यम गति १, तीर्यं २ १, उच्च-	( 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1,		`		
१४. श्रयोग १०६ १३ १३ १०६ ५० ५०६ जानना ।  केवली १३ १३ १०६ ५०६ जानना ।  े वेदनीय २. मनुष्यायु १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जानि १. नुमग १.  अस १. बादर १, पर्यन्त १, श्रादेग १. यशः कीति १. तीर्थं र १, उस्त-			1	1	स्वरद्विक २, विह्ययोगति २, श्रीदारिद्विक २, तैजस १, कार्मांग १,
१४. ग्रयोग १०६ १३ १३ १०६ ५० ६० १२६ १०६ जानना । • केवली • ३ वेदनीय २. मनुष्यायु १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जानि १. नुभग १. प्रम १. बादर १, पर्यान्त १, ग्रादेग १. यदाः कीति १. तीर्थ ० १, उस्म-					
केवली २३ वेदनीय २, मनुष्यायु १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जानि १, गुनग १. चन १, बादर १, पर्यान्त १, ग्रादेग १, यदाः कीति १, तीर्थ वर १, उच्च-	->				
त्रम १. बादर १, पर्योन्त १, ग्रादेग १, यशः कीति १. तीर्य ०र १, उत्तन-		308	१३	१ १३	
	कवला				र र जनगान र, नपुष्पायु र, नपुष्प गात र, पचान्द्रम जाता र, गुनग र, सन् १. बादरं १. पर्यान्त १. धादेत १ वका कीति १. तीर्थ उर १. वस्तन-

जपर जो उदय का कोष्टक दिया है उसी तरह छठे गुगा-स्थान तक उदीरणा का कोष्टक जानना। साता, प्रसाता और मनुष्यानु इन तीनों का उदीरणा ६वे गुगा स्थान तक हो होतो है। परना उदय मात्र १४वे गुगा-स्थान तक रहता है, इसिनिये ७वें गुगा-स्थान में १४वें गुगा स्थान तक उदीरणा में ३ प्रकृति कम होकर और धनुदीरणा में ३ प्रकृति वढ़ जायेंगे। (देखो गो० क० गा० २६३ को० नं० ५६)

२२. गुरा स्थानों उदय व्युच्छित्ति स्राद्धिकम से कहते हैं। (को० नं० ६०) (धवल शास्त्र कर्ता भूतदली स्राचार्य के मतानुसार जानना )

	•/			
गुग्रह ग्रान	ग्रनुदय	उदय	उदय व्युन्छित्ति	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	¥	११७	ų	४ = सम्यद् मिथ्यात्व १, सम्यदःव प्रकृति १, स्राहारकद्वित २, तीर्थकर प्रत् १ ये ५ जानना ४ = मिथ्यात्व १. स्रातप १, स्कम , साधारण १, अपर्याप्त १, ये ५ जानना
२ सासादन	११	१११	3	१८ == १० + १ नरक गत्यानुपूर्वी = ११ जानना ६ == ग्रनन्तानुबन्धी कपाय ४, स्यावर १, एकेन्यादि जाति ४ ये ६ जानना ।
<b>३ मिश्र</b>	२२	१००	१	२६ = ११ + ६ २, + ३ ग्रानुपूर्वी २३ - सम्यङ् निथ्यात्व १ = २२ जानना १ मिश्र प्र० जानना
४ धसंयत	<b>१=</b>	६०४	6.8	को० नं ५६ के समान जानना
प्र <sup>े</sup> देश संयत	३५	50	5	" "
६ं प्रभत्त	<b>८</b> १	58	×	"
७ ग्रप्रमत्त	४६	७६	8	"
द ग्रपूर्व क०	५०	७२	Eq	,, ,, मूचना–इस गोष्टक
६ ग्रनिवृ०	४६	६६	Ę	,, के ग्रनुसार श्रामे सब वर्णन किया है
१० सूक्ष्म सां०	६२	६०	१	,, ,,
११ उपशांत मोह	६३	प्रह	२	"
१२ क्षीरण मोह	६४	५७	१६	"
१३ सयोग के०	50	४२	३०	=0=,, ३०=२६ को०नं० ५६ के समान श्रोर साता- त्रसाता में से कोई १ जोड़कर=६० जानना
१४ ग्रयोग के०	११०	१२	<b>१</b> २	११० = ६०   ३० = ११० जानगा १२ = को० नं० ४६ में वेदनीय के दोनों प्रकृतियों का उदय नाना जीवों की अपेक्षा में १४वें गुरा स्थान में माना है और ५ हां दोनों में से कोई १ का उदय माना है इमनियं अनुदय और उदय में एक प्रकृति का अन्तर है।

ऊपर जो ग्रनिवृत्तिकरण गुग स्थान में ६ प्रकृतियों का व्युच्छित्ति वताया है उनमें से ३ वेदों की व्युच्छित्ति सवेद भाग में ग्रीर संज्वलन कषाय के क्रीय-मान-माग इन ३ का व्युच्छित्ति ग्रवेद भाग में जानना।

क्षीरामोह गुगा० के द्विचरम समय में निद्रा श्रौर प्रचला इन - प्रकृतियों का श्रौर श्रन्त समय में शेप १४ प्र० का व्युच्छित्ति जानना।

सयोग केवली गुएए० में ३० की ग्रीर ग्रयोग केवली गुएए० में १२ प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होती है वह नाना जीवों की ग्रपेक्षा से ग्रीर सयोगी में २६ की ग्रीर ग्रयोगी में १३ की व्युच्छित्ति होती है, यह वेदनीय के दो प्रकृतियों की ग्रपेक्षा से जानना।

श्रन्य गुण स्थानों में जैसे साता तथा श्रसाता के उदय से इन्द्रिय जन्य सुख तथा दुःख होता है वैसे केवली भगवान के भी होना चाहिये ? इसका समाधान—केवली भगवान के घातिया कर्म का नाश हो जाने से मोहनीय के भेद जो राग तथा द्वेष वे नष्ट हो गये ।श्रीर ज्ञानावरण का क्षय हो जाने से जानावरण के ध्रयोपश्रम से जन्य इद्रिय ज्ञान भी नष्ट हो गया। इसका कारण केवली साता तथा श्रसात। जन्य इन्द्रिय विषयक सुख-दुःख लेशमात्र भी नहीं होते क्योंकि साता श्रादि वेदनीय कर्म मोहनीय कर्म की सहायता से ही मुख-दुःख देता हुश्रा जीव के गुण् को घातता है। यह वात पहले भी कह श्राये हैं। श्रतः उस सहायक का श्रभाव हो जाने से वह जली जेवड़ीवत् (रस्सी, श्रपना कुछ कार्य नहीं कर सकता।

वेदनीय कमं केवली के इन्द्रिय जन्य सुख-दुःश्व का कारण नहीं है—जिस कारण केवली भगवान के एक सातावेदनीय का ही वन्य सो भी एक समय की स्थित वाला ही होता है, स कारण वह उदय स्वरूप ही है। श्रीर इसी कारण भसाता का उदय भी साता रूप से ही परिणमता है—क्योंकि श्रमाता वेदनीय सहाय रहित होने से तथा बहुत हीन होने से मिष्ट जल में खारे जल की एक बूंद की तरह श्रपना कुछ कार्य नहीं कर सकता, इस कारण से केवली के हमेशा सातावेदनीय का ही उदय रहता है। इसी कारण श्रमाता देव के निमित्त से होने वाली श्रुधा श्रादिक जो ११ परिषह है वे जिन वर देव के कार्य रूप नहीं हुआ करती हैं। (देखो गों० क० गां० २६४ से २७५ श्रीर कीं० नं २६०)

२६. उदय ग्रीर उदीरणा की प्रकृतियों में कुछ विशेषता बताते हैं —

जवय और जदीरणा में स्वामीपने की अपेक्षा गुछ विशेषता नहीं है, परन्तु ६वें प्रमत्त गुण स्थान और १३वां सयोगी, तथा १४वां अयोगी इन तीनों गुण स्थानों छोड़ देना अर्थाद इन तीनों गुण स्थानों में ही विशेषता है और सब जगह समानता है। सयोगी और प्रयोगी केवली की ६० और १२ जदय व्युच्छित्त प्रकृतियों को मिलाना और उन ४२ में से साता, असाता और मनुष्यायु इन तीन प्रकृतियों को घटाना चाहिये और पटाई हुई साता अपि प्रकृतियों को घटाना चाहिये और पटाई हुई साता आप स्थान में ही होती है। बाकी ४२-३==३६ प्रकृतियों की जदीरणा सयोग केवली के होती है तथा बहा ही जदीरणा की व्युच्छित्त भी होती है। और प्रयोग केवली के जदीरणा होती ही नहीं यही विशेषता है। (देनो गो० क० गा० २७६-२७६-२००)।

<sup>(</sup>१) संग्लेश परिगामों से ही इन तीनों की उदीरणा होती है। इस कारण अप्रमलादि के इन नीनों की उदीरणा का होना असम्भव है।

३०. उद्दीरणा की व्युच्छित्ति गुरा स्थानों में क्रम से कहते हैं— (देखो गो० क० गा० २८१–२८२–२८३ ग्रीर को० नं० ६१)

गुण स्थान	ग्रन् उदीरगा	<b>उदीर</b> सा	उदीरगा व्युच्छि०	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	¥	११७	<b>k</b>	कोण्टक नंबर ६० के समान जानना
२ सासादन	88	१११	3	:>
३ मिश्र	२२	१००	3	2)
४ ग्रसंयत	१=	१०४	१७	,, , [
५ देश संयत	३५	50	4	"
६ प्रमत्त	४१	<b>5</b>	=	४१=""" = ज्वय के ५+३ साता-प्रसाता-मनुष्यायु ये ३ जोड़कर = जानना
७ श्रप्रमत्त	38	৬ ३		४६ - ४६ श्रनुदीरका में साता-श्रमाता- मनुष्यायु ये ३ प्रकृति बढ़ाकर ४६ जानना श्रीर उदीरका के ७६ में से यही ३ घटाकर ७३ जानना ४ - को० न ५६ के समान प्रकृतियों का नाम जानना
द ग्रपूर्वकर <b>ण</b>	५३	६९	ĘĘ	को० नं० ६० के समान जानना
६ भ्रनिवृत्ति	५६	६३	ų	"
१० सूक्ष्म सांपराय	६्४	ধূত	8	37
११ उपशांत मोह	६६	४६	२	<b>1</b> )
१२ क्षीग्रमोह	६८	दर	<b>\$</b> £	2)
१३ सयोग के०	म <del>१</del> .	3,5	न ह	दर=६८-{१६=८४-१ तीर्यंकर घटाकर=६३० ३६=४२ में से साता श्रादि ३ घटाकर ३६ जानना
१४ ग्रयोग के	१२२	o	0	

३१. कर्मी का उदय का फ्रम श्रीर स्वामीपना बताते हैं—

कर्म प्रकृति

स्वामीपना--

गति श्रानुपूर्वी

- (१) किसी भी विवक्षित भव के पहले समय में ही उस विवक्षित भव के योग्य गति, श्रानुपूर्वी तथा श्रायु का उदय होता है।
  (२) एक जीव के एक ही गति, श्रानुपूर्वी तथा श्रायु का उदय युगपत हुया

श्रातप प्रकृति का उदय बादर पर्याप्त पृथ्वीकायिव जीव के ही होता है। उच्चगोत्र का उदय मनुष्य श्रीर देवों के ही होता है।

स्थानगृद्धि, निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला ये ३ महा-निद्रा प्रकृतियों का उदय ।

(१) मनुष्य श्रीर तियंचों के ही होता है। (२) श्रीर इन तीन महानिद्राग्रों का उदय संख्यात वर्ष की ग्रायु वाले कर्म भूमिया मनुष्य श्रीर तिर्यंचों के ही इन्द्रिय पर्याप्ति के पूर्ण होने के बाद हुग्रा करना है। (३) परन्तु म्राहारक ऋदि भीर वैक्रियक ऋदि के धारक मनुष्यों के इनका उदय नहीं होता इसलिय ऋदि वाले मनुष्यों को छोड़कर सब कर्म भूमिया मनुष्यों में इनके उदय की योग्यता समभना (देखो गो क गा० २८५-२८६)

स्त्री वेद का उदय निर्वृत्य पर्याप्तक श्रसंयत गुरा स्थान में नहीं है, वयों कि श्रसंयत सम्यग्दिष्ट भरण करके स्त्री नहीं होता इसलिये स्त्री वेद वाले असंयत के चारों श्रानुपूर्वी प्रकृतियों का उदय नहीं होता।

नपुंसक वेद का उदय पहले नरक के सिवाय भ्रन्य तीन गतियों की चतुर्थ गुरास्थानवर्ती निर्वृत्य व्यप्तिक अवस्था में नहीं होता इसलिये नपुंसक वेद वाले असंयत के नरक के विना श्रंत की तीन श्रानुपूर्वी प्रकृतियों का उदय नहीं होता । (देखो गो० क० गा . २८७)

्रपकेन्द्रिय, द्रोन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति नाम-कमं श्रीर सूटम व साधारण प्रकृतियों का उदय तियंच गति में ही होने योग्य है।

अपर्यापा प्रकृति का उदय तिर्यंच श्रीर मनुष्य के

गति में ही होने योग्य है। वच्चवृपभनाराच म्नादि ६ संहनन श्रीर श्रीदारिक शरीर श्रीदारिक श्रंगोपांग का जोड़ा, मनुष्य तथा तिर्यंच के उदय होने योग्य है।

वैक्रियकद्विक ' का उदय देव श्रीर नारकीयों के ही होने योग्य कही है। (देख़ो गो० क० गा० २८८)

उद्योत प्रकृति का उदय तेजः कायिक, वायुकायिक ध्रौर साधारण वनस्पति कायिक इन तीनों के छोड़ कर श्रन्य वादर पर्याप्तक तिर्यचों के होता है।

धेप प्रकृतियों का उदय गुएा स्थान के फ्रम से जानना (देखो गो० क० गा० २८६)

३२. कर्म प्रकृतियों के सत्त्व का िरुपण करते हैं--

मिथ्या दृष्टि, सासादन मिश्र इन तीनों गुएा स्थानों में से कम से पहले में ते'र्यंकर १ की आहार-काद्दिक २ एक काल में नहीं होते तथा दूसरे में तीनीं हो प्रकृति किसी काल में नहीं होते श्रीर मिश्र गुरा० में तीर्यकर प्रकृति नहीं होती, प्रथात् १ले पुरा० में नाना जीवों की भ्रपेक्षा उन तीनों (तीयंकर १ + श्राहारकदिक २= ३ प्रकृतियों की (सव-१४८) सत्ता है परन्तु एक जीव की अपेक्षा १ ले गुए। में जिनके तीर्यकर प्रकृति की सत्ता हो उनके माहारकद्विक २ की सत्ता नहीं रहती श्रीर जिनके श्राहारकदिक २ की सत्ता हो उनके तीर्थ-कर प्रव १ सत्ता की नही रहती।

भावायं - जिनके तीर्घंकर भीर घाहारकदिक की युगपत् सत्ता है वे मिध्याद्दि नहीं ही समते। २५ सासादन गुरा॰ में तीर्यंकर भीर भाहारकद्विक इन तीनों हा प्रशृतियों का सत्व किसी काल में नहीं होते इसनिये १४५ प्र॰ का सत्ता जानना ।

२०. उदीरणा की व्युच्छित्ति गुरा स्थानों में कम से कहते हैं— (देखो गो० क० गा० २८१-२८२-२८३ श्रीर को० नं० ६१)

गुरा स्थान	ग्रन् उदीर	्र्गा विदीरर	ा <mark>उ</mark> दीरर व्युच्छि	विशेष विवर्ग
१ मिथ्यात्व	પ્ર	११७	४	कोप्टक नंबर ६० के समान जानना
६ सासादन	88	१११	3	., .,
३ मिश्र	२२	१००	1 8	"
४ ग्रसंयत	१८	1808	१७	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
५ देश संयत	३५	50	5	",
६ प्रमत्त	४१	<b>5</b> 8	5	٧٩=" "
				<ul> <li>= उदय के ५ + ३ साता-प्रसाता-मनुष्यायु</li> <li>ये ३ जोड़कर = जानना</li> </ul>
७ श्रप्रमत्त	38	<i>φ</i> ₹	8	४६ = ४६ श्रनुदीरका में साता-प्रसाता- मनुष्यायु ये ३ प्रकृति वहाकर ४६ जानना श्रीर उदीरका के ७६ में से यही ३ घटाकर ७३ जानना ४ = को० न ५६ के समान प्रकृतियों का
<b>८</b> श्रपूर्वकरण	५३	६६	Ę	नाम जानना को० नं० ६० के समान जानना
६ भ्रनिवृत्ति	५६	६३	Ę	"
१० सूक्म सांपराय	६५	ধূত	१	"
११ उपशांत मोह	६६	४६	२	21
१२ क्षीग्रमोह	६८	४४	१६	,,
१३ सयोग के०	<b>५३</b>	3 F	₹ <i>6</i>	=३=६म-१६==४-१ तीर्यंकर घटाकर=≠३. ३६=४२ में से साता स्रादि ३ घटाकर ३६ जानना
१४ ग्रयोग के०	१२२	°	0	

३४. कीन से गुरा स्थान में कितने प्रकृतियों का सत्व रहता है। इसका विवर्गा क्षपक श्रेणो की अपेजा से जानना सब प्रकृतियां १४= ।

(देखो गो० क० गा०	३३३ से ३४२	ग्रीर को० नं० ११६)
------------------	------------	--------------------

	[40]	4114 414 411	0 444 (1 4	० ८ आ ८ नगर	10 //4)
गुर	ण स्थान ·	ग्रसत्व	   सरव  -	सत्व व्युच्छि०	विशेष विरग्
8	मिथ्यात्व	0	१४८		
२	सासादन	₹	१४५	0	३ = म्राहारकद्विक २, तीर्यकर प्र०१ ये ३ जानना
ą	<b>मिश्र</b>	8	१४७	0	१ - तीर्घकर प्रकृति जानना
X	श्रसंयत	•	१४८ .	१	१ = नरकायु १ जानना
ų	देशसंयत	१	१४७	१	१ = ग्रसत्व = नरकायु, १=व्युच्छित्ति=तिर्यचायु
Ę	प्रमत्त	२	१४६	o	२=नरका १, तिर्यचायु १, ये २ जानना
. હ	श्रप्रमत्त	ą	१४६	E .	२ = नरक-तिर्यचायु ये २, ८ = श्रनन्तानुबन्धी ४, दर्शन मोहनीय के ३, देवायु १, ये ८ जानना
ς.	श्रपूर्वं कर <b>ग</b> क्षपक	१०	<b>१</b> ३८	१०	१० = २ 十 = = १० जानना (क्षपक श्रेग्गी को अपेक्षा)
	भ्रनिवृत्तिकरण क्षपक श्रेणी की अपेक्षा १ला भाग	१०	१३८		१० = ६वां गुग् स्थान के समान जानना। १६ = स्थानगृद्धि ग्रादि महानिद्रा ३, नरक गति १, नरक गत्यानुपूर्वी १, तियंचगित १, तिर्यच गत्यानुपूर्वी १, एकेन्द्रियादि जाति ४, उद्योत १, ग्रातप १, सामारग् १, सूक्ष्म १, स्थावर १ ये १६
	२रा भाग	२६	१२२	5	२६ — १० + १६ + २६, ८ - स्प्रप्रत्यास्यान ४, प्रत्यास्यान ४ वे ८ जानना ।
	३रा भाग	£&	११४	१	३४ = -६ 🕂 = = ३४, १=नपुंसम वेंद जाननः
•	४घा भाग	₹Ұ	११३	2	३४ - ३४ 🕂 १ =३४, १ - स्प्रीयेद जानमः

भावार्य — तीनों में से किसी भी प्रकृति की सत्ता रखने वाला सासादन गुगा स्थान वाला नहीं हो सकता ग्रीर ३रे मिश्र गुगा॰ में तीर्यकर प्रकृति की सत्ता नहीं होती, इसलिये १४७ प्रकृतियों की सत्ता जानना।

भावार्य-तीर्यंकर की सत्ता वाला मिश्र गुण स्थान वर्ती नहीं हो सकता। (देखो गो० क० गा० ३३३)

३३. चारों ही गितयों में किसी भी श्रायु के बंध होने पर सम्बद्दव होता है, परन्तु देवायु के बंध के सिवाय श्रन्य तीन श्रायु के बंध वाला श्रणुवत तथा महा-व्रत नहीं धारण कर सकता है, क्योंकि वहां व्रत के कारणभूत विशुद्ध परिणाम नहीं है। (देखो गो० क० गा० ३३४)

नरकायु भोगते हुये या ग्रागामी नरकायु का वंघ हुग्रा हो तो श्रर्थात् नरकायु के सत्व होने पर देश व्रत नहीं हो सकता है तथा तिर्यच ग्रायु के सत्व होने पर महाव्रत नहीं होता ग्रोर देवायु के सत्व होने पर क्षपक श्रेगी नहीं होती।

भसंयतादि चार गुण स्यान वाले अनंतानुबंधी के ४, दर्शन मोहनीय कें ३ इन ७ प्रकृतियों का किस तरह नाश करके क्षायिक सम्यग्हिट होते हैं यह बताते हैं— प्रयम अधःकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण करता है। अनिवृत्तिकरण का काल अंतर्मु हूर्त का रहता है। उन सातों में से पहले अनंतानुबंधी चतुष्क का अनिवृत्तिकरण रूप परिणामों के अंतर्मु हूर्त काल के अंत समय में एक ही बार विसंयोजन करके अर्थात् अनंतानुबंधी की चौकड़ी को अप्रत्याख्यानादि बारह कपायरूप या तो कपायरूप परिणामन करा देता है, इस प्रकार विसंयोजन करके अंतर्मु हूर्त काल तक विश्वाम करता है। इसके बाद अर्थात् अनिवृत्तिकरण काल के बहुभाग को छोड़ के दोष संस्यातवे एक भाग में पहले समय से लेकर दर्जन

मोह का नादा करने क उद्यम क्रता है अर्थात कम से मिथ्यात्व प्रकृति, तथा सम्यक्तव मिथ्यात्व तथा सम्बन्तव प्रकृति का क्षय करते हैं। इस प्रकार सात प्रकृतियों के क्षयं करके क्षायिक सम्यग्दृष्टि होता है। यहां पर तीन गूरा स्थानों का प्रकृति सत्व पूर्वोक्त ही समभना, एक जीव की अपेक्षा १ले मिथ्यात्व गुरा स्थान में आहारकः द्विक श्रीर तीर्यंकर प्रकृति का सत्व अनुक्रम से कैसा रहता है वह बताते हैं कोई जोव ऊपरले गुएा स्थान में श्राहारकद्विक का वंध करके मिथ्यात्व गुग् स्थान में श्राया वहां श्राहारमद्विक के उद्देलन करने के बाद नरकायु का वंध किया, उसके वाद असंयत गुण स्थान में श्राकर वहां तीर्यंकर प्रकृति का वंघ किया, उसकें वाद २रे ग्रथवा ३रे नरक में जाते समय मिथ्याहिष्ट हुआ, इस प्रकार निथ्याहिष्ट जीव को आहारकद्विक २ ग्रीर तीर्थंकर प्रकृति का सत्व प्रनुक्रम से रह सकता है नाना जीवों की अपेक्षा से देखा जाय ती एक समय में त्राहारकद्विक २ श्रोर तीर्थंकर प्रकृति का सत्व रह सकता है तथा असंयत से लेकर ७वे गुरा स्थान तक उपशमसम्यग्हिष्ट तथा क्षयोपशम सम्यग्हिष्ट इन दोनों के ४धे गुरा स्थान में अनंतानुबंधी आदि की उपशमरूप सत्ता होने से १४८ प्रकृतियों का सत्व है। ५वे गुरा स्थान में नरकायु न होने से १४७ का, ६वे प्रमत्त गुग् स्थान में नरंक तथा तिर्यंचायु इन दोनों का सत्य न होने से १४६ का तथा ७वे म्रप्रमत्त में भी १४६ का ही सत्व है श्रीर क्षायिक सम्यग्हिप्ट के श्रनंतानुबंधी कपाय ४ तया दर्शनमोहनीय के ३ इन ७ प्रकृतियों के क्षय होने से सात सात कम समभना श्रीर श्रपूर्वकरण गुण स्थान में दो श्रेगी हैं, उनमें से क्षपक श्रेगी में तो १३० प्रकृतियाँ का सत्व है, क्योंकि मनतानुत्रंधी मादि ७ प्रश्तियों का तो पहले ही क्षय किया या भीर नरक, तिर्वन तथा देवायु इन तीनों की सत्ता ही नहीं है, इस प्रकार ७ 🕂 ३ = १० प्रकृतियां कम हो जाती है। (देखी गो० क० गा० ३३४-३३६)

३५, उपशम श्रेगीवाले के चारित्र मोहनीय की शेव २८ - ७ = २१ प्रकृतियों के उपशम करने का विधान बताते हैं - नपशम के विधान में भी क्षपणा विधान की तरह फ्रम जानना । परन्तु विशेष वात यह े कि, प्वा गुरास्थान से ११वां गुरास्थान तक उपशम-श्रे सा च ने वाले जीव को नरकायु श्रीर तिर्यंचायु इन दो प्रकृति क्म होकर १४६ प्रकृतियों का सत्व रहता है; श्रोर जो क्षायिक सम्यग्द्रिट जीव उपशम-श्रेगी चढता है उसे से ११वें गुरास्थान तक १३ - प्रकृतियों का सत्व रहता है। इसी तरह श्रायुर्वेघ जिसको नहीं हुत्रा है ऐसा क्षायिक सम्यग्हिष्ट को ४थे से ७वें गुरास्थान तक १३८ प्रकृतियों का सत्व रहता है। नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, नोकषाय,, पुरुपवेद इनका उपशम कम से होता है श्रीर क्रोच, मान, माया, लोभ, इनका उपशम निम्न प्रकार ६वें गुरास्थान में पुरुपवेद के उदशम होने के वाद नया बन्घा हुन्रा पुरुपवेद कर्म का अप्रत्यख्यान क्रोधासह उपशम करता है। नन्तर संज्वलन कोधका उपशम करता है। इसके वाद नया बन्धा हुन्ना संज्वलन कोघका अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान मान कपायसह उपशम करता है । नन्तर संज्वलन मान का उपशम करता है इसके बाद नया बंधा श्रप्रत्याख्यान श्रीर प्रत्याख्यान हुग्रा संज्वलन मान का मायाकपायसह उपशम करता है। नन्तर संज्वलन माया का उपशम करता है। इसके वात नया वन्धा हुन्ना माया का अप्रत्याख्यान ग्रीर प्रत्याख्यान लोभसह उपशम करता है। नन्तर यादर संज्वलन लोभ का उपशम करता है। कमंबन्ध होने के बाद एक आवती तक उसका उपशम, क्षय, उदय वगैरह नहीं होता, (देखो गो० क० गा० ३४३)।

#### १६. संक्रमण के पांच प्रकार हैं--

पाँच प्रकार के संक्रमण में पाँच प्रकार के भागहार होते हैं। संसारी जीवों के अपने जिन परिणामों के निमित्त से युभकमं श्रीर अञुभकमं संक्रमण करे अर्थाव अन्य प्रकृति- रूप परिगा में उसकी भागहार कहते हैं। उसके उद्देलन, विध्यात, श्रधः श्रवृत्त, गा गुणसंक्रमण और सर्वसंक्रमण के भेद से पाँच प्रकार हैं। (देखों गों० क० गां० ४०६)।

(?) संक्रमण का स्थरूप कहते हैं—ग्रन्य प्रकृतिहर परिरामन को संक्रमण कहते हैं। सो जिस प्रकृति का वंध होता है उसी प्रकृति का संक्रमण भी होता है। यह सामान्य विधान है कि जिसका बन्ध नहीं होता उसका संक्रमण भी नहीं होता। इस कवन का ज्ञापनिसद्ध प्रयो-यह है कि दर्शनमोहनीय के विना शेप सब प्रकृतियां वन्ध होने पर संक्रमण करती हैं, ऐसा नियम जानना । ग्रसाता का बन्ध ६वें गुए।स्थान तक होता है। इसलिये साता का सक्रमण ६वें गुणस्थान तक ग्रसातारूप होयेगा। इसी तरह साताका बन्ध १३वें प्रशस्थान तक होता है इसलिये श्रसाता का संक्रमण १३वें गुणस्थान तक होता है। परन्तु दर्शनमोहनीय के जहाँ बन्ध होना है तहां यह नियम नहीं है। तथा मूलप्रकृतियों का संक्रमण भर्थात् अन्य का अन्य रूप परस्पर में परिशामन नहीं होता। शानावरश की प्रकृति कभी दर्शनावरगारूप नहीं होती इससे सारांश यह निकला कि उत्तरप्रकृतियों मे ही संक्रमण होता है। परन्तु दर्शनमोहनीय ग्रीर चारित्रमोहनीय का परस्पर में सक्रमण नहीं होता तथा चारों श्रायुष्रों का नी परस्पर में संक्रमरा नहीं होता। (देखो गो० क० गा० ४१०)।

सम्यवत्व मोहनीय (सम्यवत्व प्रकृति) का संक्रमण ४थे गुण्एस्थान से ७वें गुण्एस्थान तक नहीं करती। मिथ्यात्वमोहनीय (मिथ्यात्वप्रकृति) का संक्रमण मिथ्यात्व गुण्एस्थान में नहीं करती। मिश्र मोहनीय (सम्यङ्गिष्यात्व) का संक्रमक ३रे मिश्रगुण् भें नहीं करती। सासादन घौर मिश्रगुण्एस्थान में नियम से दर्शनमोहनीय के विक का संक्रमण नहीं होता। सामान्य से दर्शनमोहनीय का संक्रमण ने ७ इन चारों गुण्एस्थानों में होता है। (देशों गो० क० गा० ४११)।

कोई सम्बर्धिट जीव मिच्यास्त्रगुग्रस्थान को पान

	<u> ५वां भाग</u> !	३६	885	£ .	३६ — ३४ 🕂 ं — ३६, ६=हास्य, रित, श्ररति, शोक, भय, जुगुप्सा, ये ६ जानना
	६वां भाग	४२	१०६	8	४२ = ३६ ६ = २, १ = पुरुषवेद जानना
	७वां भाग	چ چ چ	६०त्र	8	४३ च ४२ + १ ४३, १ संज्वलन क्रोध
	<b>=वां भाग</b>	४४	१०४	१	४४ = ४३ + १ = ४४, १ = " मान
	६वां भाग	४५	υ३	8	४५=४४ १ १ - ४५, १= , माया
१०	सूध्म सां० क्षपक	४६	१२	8	४६=४४=१=४४,१= ,, लोभ
१ (	उपदांत मोह	o	o	•	o
१२	क्षीरण मोह	४७	१०१	१६	४७ ४६ + १ = ४७, १६ = ज्ञानावरण के ४, दर्शनावरण के ४, मोहनीय के २ (निद्रा, प्रचला) ग्रन्तराय के ४ १ १६ जानना
<b>\$</b> 3	सयोग के०	دوي موي	5 ¥		६३ — ज्ञानावरण , दर्शनावरण के ह. मोहतीय के २८, श्रायुक्तमं के ३, (नरक- तिर्यच-देवायुः नाम १३, नरकद्विक २, तिर्यच द्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, उद्योत , भ्रातप १, साधारण १, मूक्ष्म ४, स्थायर १ ये १३) श्रन्तराय के ४ ये ६३ जानना।
१४	ध्रयोग के० हिचरम समय पर्वत—	ę		<b>€</b> ₹	६३ = १३वें गुएा० के समान जानना ७२   सःता या श्रसाता में से ोई १ नाम कर्म के ७० (शरीर ४, वंघन ४, संघात ४, संस्थान ६, श्रंगोपांग ३, संहनन ६, स्पर्ग ६, रस ४, गंघ २, वर्ण ४, स्थिर-श्रस्थिर २, युभ-श्रयुभ २, सुस्थर-बुः वर २, देवद्विक २, विहायोगित २, दुभंग १, निर्माण १, प्रयमः कीति १, श्रनादेय १, प्रत्येक १, श्रवर्यात , श्रगुरुलघु १, जद्योत १, परधान १, उच्छवास १, ये ७) नीचगोत्र १, ये ७२ जानना
	श्रयोग केवली श्रंत समय में	१३४	દ્	<b>१</b> ३	१३५=६ + ७२=१३५, १३=साता मा श्रमाता में से कोई १, मनुष्यामु १, नामहर्म के १० (मनुष्यद्विक २, पंत्रेन्द्रिय जाति १ मुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याक्ष १ श्रादेष १, यशः कीति १, तीर्यंकर १ ये १०) उच्य- गोत्र १, ये १३ जानना

(२) प्रकृतियों के संक्रमण का नियम अर्थात किस प्रकृति में कितने संक्रमण (पांच संक्रमणों में से) होते हैं इसका विवरण :—

प्रकृतियों की संख्या							
	संख्या	उद्घेलन संक्रमग्र	ों की संख्य विष्यात संक्रमगा	श्रव:	गुरा संफ्रमरा	सर्व ० संकमग्	     विदोप विवरगा
३६ प्रकृतियों में ३० " ७ ", २० ", १ ", १२ ",	१ ४ २ ३ ३ ४ <b>५</b>	8	<b>2 2</b>	१ १ १	*	\$ \$ \$ \$ \$ \$ .	यह १ जानना  ये ४ ,,  ये २ ,,  ये ३ ,,  ये ३ ,,  ये ४ ,,  ये ४ ,,
४ ,, ሄ ,,	٦ ٦		१	<b>१</b>		१	ये २ ,,
х "	#			१	१	१	य २ " ये ३ "

जोड़ १२२ प्रकृतियों में श्रायु के ४ प्रकृति नहीं है, परन्तु वर्णादिक के ४ प्रकृतियों के जगह गुन वर्णादि ४ श्रीर श्रयुभ वर्णादि ४ ये द प्रकृति इनमें लिया है इससे सब मिलकर १२२ प्रकृतियां होती हैं। (देखो गो० न० गा० ४१८)

उन प्रकृतियों को तथा उनके संक्रमणों को क्रम से बताते हैं। श्रयात् किस प्रकृति में कौन मा संक्रमण होता है इसका खुलासा (कोप्टक नं० १४२ गो० क० गा० ४१६ से ४२८ में देखों। होने पर सम्यवस्वमोहनीय और मिश्रमोहनीय का अन्त-मृंहर्नतक श्रयः प्रवृत्त संक्रमण् होता है और उद्देलन भागहार नक्षमण् उपांत्य कांडक तक (अन्त के समीप के भाग) नियम से प्रवतना है। वहां पर श्रयः प्रवृत्त मंक्रमण् फालिस्प रहता है। एक समय में संक्रमण् होने को 'फालि' कहते हैं।

श्रवः प्रवृत्त संक्रमण में फालिस्प संक्रमण होता है श्रीर समय समूह में संक्रमण होना 'कांडक' कहा जाता है। उद्देलन संक्रमण 'कांडकरूप से' होता है। (देखो गो॰ क॰ गा ॰ ४१२)।

उद्वेलन प्रकृतियों का द्विचरमकांड तक उद्वेलना-संक्रमण होता है। श्रीर श्रन्त के कांडक में नियम से गुणसंत्रमण होता है श्रीर श्रन्तकांडक के श्रन्त की फालि में सबसंत्रमण होता। ऐसा जानना।

सम्यवत्वमोहनीय श्रीर मिश्रमोहनीय ये दो प्रकृतियां उहोलन प्रकृतियों में समाविष्ट हैं। इसलिये उन प्रकृतियों में उद्घोलन सक्रमण, गुरासंक्रमण श्रीर सन्संक्रमण होता है। (देखो गाया ६१२ से ६१७)।

यहां पर प्रसंगवश पांचों संक्रमणों का स्वरूप कहते हैं—

- (१) उद्देलन संक्रमण श्रधः प्रवृत्त, श्रपूर्वकरण, श्रिनवृत्तिकरण इन तीन करणहप परिणामों के विना ही कमंत्र हृतियों के परमाणुश्रों का श्रन्य प्रकृतिहप परिणामन होना वह उद्देलन सक्षमण है। (गाया ३५०-४१५ देखो)।
  - (२) विध्यान्य संक्रमण-मन्द विशुद्धता वाले जीव

की, स्थिति मनुभाग के घटाने रूप, भूतकालीन स्थिति कांडक श्रीर श्रनुभाग कांडक तथा गुए। श्रेणी श्रादि परिएगामों में प्रवृत्ति होना विघ्य त संक्रमण है।

- (३ प्रयः प्रवृत्त संक्रमण वन्यरूप हुई प्रकृतियों का अपने वन्ध में सम्भवती प्रकृतियों में परमाणुग्नों का जो प्रदेश संक्रमण होना वह अधः प्रवृत्त संक्रमण है।
- (४) गुरासकमरा जहां पर प्रतिसमय ससंख्यात-गुराश्रे सो के कम से परमारा प्रदेश अन्य प्रतिरूप परिसा में सो गुरासंक्रमरा है।
- (५) सवसंक्रमरा जो अन्त के कांडक की अन्त की फालि के सर्वप्रदेशों में से जो अन्य प्रकृतिरूप नहीं हुए है उन परमाराष्ट्री का अन्य प्रकृतिरूप होना वह सवसंक्रमरा है। (देखी गाँ० क० गा० ४१३)।

प्रकृतियों के वन्ध होने पर अपनी अपनी-अपनी वन्म व्युच्छित्ति तक अन्य प्रकृतियों का अधः प्रवृत्तसंक्रमण होता है। परन्तु मिथ्यात्व का संक्रमरा पहले गुगा स्थान में नहीं हाता क्योंकि 'सम्मं मिच्छ' मिस्सं' इत्यादि गापा के द्वारा इसका निषेघ पहले ही बता चुके हैं स्रोर बंध की व्युच्छित्ति होने पर । थे श्रसंयत से लेकर ७वें स्रप्रमदत्त गुण-स्थान तक विष्यात नामा सकमगा होता है तथा ५वें भ्रपूर्व-करगा गुमा॰ से म्रागे ११वें उपशांत कपाय गुग्गस्थान पर्यंत वंध रहित अप्रयस्त प्रकृतियों का गुरासंक्रमग् होता है। इसी तरह प्रयमोपशम सम्यक्त्व ग्रह्मा होने के समय प्रथम समय से लेकर मन्तर्मू हुत तक गुरगसंक्रमग्। होता है श्रीर क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करते समय मिथ्यात्व का क्षय करने के लिये मिश्र ग्रौर सम्यक्त्व प्रकृति के पूर्ण कान में अपूर्व-करगापरिगामों के द्वारा मिथ्यात्व के अन्तिम कांडक की उपांत्य फालिपर्यंत गुणसंक्रमण श्रीर चरम (ग्रन्तिम) फालि में सवसंक्रमण होता है। (देखी गी० क० गा० ४१६)।

	1	(	1 270	ŀ	1	ī
प्रत्याख्यान कपाय ४ श्ररिति-शोक २ य ४ नपुस्तक वेद १४ स्त्री वेद १६	0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	12 22 22 22 22 22 22 22 22 22 22 22 22 2	77	, 21   12   13   13   13   13   13	" " "	
(३) तियँचिद्धिक २ एकेन्द्रियादि जाति ४ श्रातप १ जारि ४ उद्योत १ स्थावर १ सूक्ष्म १ १	0 q, 9 0	72 2 22 2 22 2 22 2 22 2 22 2 22 2 22 2	n n n n	n n n n n	" " " " " " " " " " " " " " " " " " "	; , ,
साधारण १ ७ प्रकृतियों में ७ ५, १०, ४ (१) निद्रा १	0	,	्, १	" १	0	ये ३० प्रकृतियां ये २ संक्रमण २ ० ७०० स
प्रचला १ २ १ (२) ग्रशुभ वर्गादि ४ ( ) उपधात १ १	0	0 0 0	7* 7* 77	n .	0 1	ये ७ प्रकृतियां
ेरण प्रकृतियों में (१) ग्रसाता वेदनीय १ (१) ग्रसाता वेदनीय १ (१) ग्रप्रशस्त विहायोगति १	0	n .	? , ,	<b>?</b>	.0	ये ३ संक्रमग्। 
१ते छोड़कर वर्ष्वनाराच ग्रादि सहनन ५ १ते समचतुरस छोड़कर शेप संस्थान ५		27 :	"	"	0	
ग्र <sup>(</sup> यप्ति १. ् ग्रस्थिर १ <sup>१</sup> ग्रेग्रुभ' १ <sup>१</sup> दुर्भग १	0	11 21 21	, n , n , n	" " "	o , o ,	
े दुःस्वर १ प्रनादेय १ प्रयशः कीति १		)) 2) 2)	27 27 21	" "	. 0	ਜੋ 20 ਬਣਵਿਆਂ
(३) नीच गोत्र १ १ मिथ्यात्व प्रकृति १ सम्यक्त्व मोहनीय १२ प्रकृतियों:में	0 0 0	? ?	? ?	*	*	ये २० प्रकृतियां ये ३ संक्रमण् वे ४ संक्रमण् ये ५ ही-संक्रमण्
(१) मिश्र मोहनीय १	,,	**	<b>"</b>	,,	,,	্য হৈছে

		_		-{	-	<del>-</del> 6	¥¥-	}		
*	7,	ì	ĭ	·. '	:	3.	सः		: 1	

				माफ रा हे.	<u> </u>		
प्रकृतियों के नाम	- A		न कौन की	न से संक्रम्य	ए होते हैं -	·	ं ः विशेष विवरण
त्रकृतिया के काम-	उद्वे	लन •	विच्यात	ग्रघःप्र०	गुरा सं	सर्व सं०-	1
३६ प्रकृतियों में	0	o	0	8	0	•	१ १ घः प्रवृत्ति
(१) ज्ञानावरमा के ५		3	0	"	0 1	• !	
(२) <sup>[</sup> दर्शेनांघरंग के ४	. 0	c	0	"	0	0	
(ई) सातां वेदनीय १	. 0:	ı,	•	,,	0	0	
(४) संज्वलन लोग १	. 0	٠,	o,	<b>22</b>		0	
(प्र) नामकर्म-पंचेन्द्रिय जाति तंजस-कार्माण शरीरं २ सर्मचतुरस्न सस्थान १ युभ-वर्णादि ४ श्रम्भ-वर्णादि ४ श्रम्भ-वर्णादि १ पर्धातं १ उच्छ्वास १ प्रशस्त विहायोगति १ सस १ वादरं १ पर्वाप्त १ प्रत्येक शरीर १ स्थित १ सुभग १ सुस्वर १ श्रादेय १ यशः कीर्ति १ निर्माणं १	0-0-0-0-0-0					0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	
(६) ग्रंतराय कर्म के ४	0	•	0;	,,	0	3 % 4	ये ३६ प्रकृति जान । ये ४ संत्रमण् जान
३६ <sup>°</sup> प्रकृतियों में	, •	•	8	<b> </b>		, ,	महानिद्रा <b>३</b>
(१) स्यानएडि ग्रादि ३	°		"	' ''.	· 11	,	400 m. m. <b>2</b>
(२) ग्रनन्तानुवंधी कंपाय ४ ग्रप्रत्यास्यान कपाय ४	0		** **	11 11	, n	. ,,	

	1	(1	GYX 1	ı		ì
प्रत्याख्यान कषाय ४	10	; ,,	) <b>11</b>	"	17	
ग्ररिति-शोक २ य :	00	,,	,,	,,	11	1
नपु सक वेद १४		7,	"	"	77.	<b>!</b>
स्यो वेद १६ १	00	1:	"	,,,	; 22	
No. of the State o		; ",		·	j .+	:
(३) तियंचद्विक २	0	,	,,	ļ <b>2</b> 2	27	:
एकेन्द्रियादि जाति ४	Q.	, ,,	,,	"	"	i
श्रातप १ जा दि	8	,,	ii	"	,,	•
उद्योत १	ę	"	"	'n	<b>37</b> 1	•
स्यावर १	0	"	,;	77	"	
सूक्ष्म १	0	"	ii	j)	"	
साधारण १	0	"	4	1)	"	ये ३० प्रकृतियां
७ प्रकृतियों में	۶,	0	१	१	•	ये २ संक्रमण
(2) 5	,		,			क रूपण्या हो।
(१) निद्रा १	0	0	17	"	0 .	7.11
<b>प्रचला १</b> ३ २ १	٥,	, 0,	**	11 .		•
-	0 1					
(२) श्रशुभ वर्णादि ४	0	0	,,	"		ये ७ प्रकृतियां
<sup>३</sup> २० प्रकृतियों में	.0	,0 ;	" የ	.8	.0	ये ३ संक्रमण
१ : १ :	, ,	3,	. `		,	
(१) मसाता वेदनीय १	,	,, i	? ,,		J 0	
( = 1) +n +	, '	"	"		,	, ,,,
(२) श्रप्रशस्त विहायोगति १	0	,,	٠,,	,,	• •	
🦾 '१ते छोड़ेकर वर्ष्मनाराचः,				1	,	
ं ग्रादि संहनन <b>्</b> रः	0 .	,,	"	,,	00	
🦥 १ले समचतुरस्र छोड़कर	,					
ं शेप संस्थान ४३ ।	0 .	, n	1)	' 22	0	
, म्र <sup>्</sup> यप्ति १.	. :	17 .	2)	17 /	0	
ग्रस्थिर १	0	, ,,	$\binom{n}{n}$	" "	0	
ं ऋधुभ′१ ⊬	S 0	, ,,	. 11	" "	0 ,	
दुर्भग १	0 0	"	"	"	0	
"दुःस्वर १	0	. "	11	′ 22	. 0	
- अनादेय १ नगरा <del>गीनि</del> १		22	, ,,	"	. 0	1
त्रयशः कीर्ति १		"	"	, "		
(३) नीच गोत्र १		,				ये २० प्रकृतियां
१ मिथ्यात्व प्रकृति		<b>?</b> "		8	١ و	ये ३ संक्रमण
१ सम्यन्त्व मोहनीय	1 8		<b>8</b> '	१ १	į .	ये ४ संक्रमण
ः १२ प्रकृतियों में	2	1 8	8	١,	8	ये ५ ही-संक्रमण
·	,			:		
(१) मिश्र मोहनीय १	11	,,	17	,, .	77 3	र प्रा
	,,	I	<b>l</b> ;	,		

(२) ग्राहारकद्विक २	"	,,	,,	,,	[ ,,	,
देवद्विक २	11	,,	,,	į		
नरकद्विक २	"	,,		] 11 ]	,,	
वैक्रियिकद्विक २	ì		,,	"	,,	
मनुष्यद्विक २	"	, ,, }	; ;; 	77	177	
भगुष्याहरा ५	"	"	71	77	7.7	ļ
(2)						1
(३) उच्चगोत्र १	11	"	"	77	,,	ये १२ प्रकृतियां
४ प्रकृतियों में	٥	0	8	0	8	ये २ संकमग्
		1				
(१) संज्वलन कषाय के ३	0	0	,,	0	,,	
्रे (कोध-मान-माया)						
पुरुपवेद वेर १	0	0		0		ये ४ प्रकृतियां
४ प्रकृतियों में	0	8	8	0	"	
0 1121111111	Ţ	•	,		0	ये २ संकमण
(१) श्रीदारिकद्विक २	o					
	İ	,,,	11	0	0 '	
वज्रवृपभनाराच सं० १	0	"	"	0	0	
तीर्यंकर प्र० १	0	"	"	0	0	ये ४ प्रकृतियां
४ प्रकृतियों में	0	0	१	१	१	ये ३ संक्रमण
(१) हास्य-रति २	0	0	"	,,	,,	
भय-जुगुप्सा २	0	0	0	,,		ये ४ प्रकृतियां
		<del></del>			"	
जोड़ ३६ प्रकृतियां		0	35		0	
₹0 ,,	0	३०	३०	३०	३०	
to.	0		ی	ی' ا	0	
7,		२०	२०	२०	0	•
0	0	3	0	1	१	
	\$	,	१			
ξ ,,	8	0.5	1	१	१	
१२ ,,	१२	१२	१२	१२	१२	· !
٧,,	0	0	8	٥	४	
٧ ,,	•	8	8	0	0	
i8 ,,	0	0	8	8	<u> </u>	
सवका जाड़	१३	६७	१२१	৬২	५२	
	I				j	

३७. स्थित श्रीर श्रनुभाग वंद के, तथा प्रदेश वंघ के संक्रमण के गुए-स्थानीं की संख्या फहते हैं—कपायों का उदय १० वें गुग्-स्थान तक ही है इसलिये स्थित श्रीर श्रनुभाग का वंध नियम से मूक्ष्म सांपराय गुग्-स्थान तक हो है। व्योंकि उक्त वंध का कारण कथाय वहीं तक है श्रीर वंधरूप प्रदेशों (कमें परमाणुश्रों का) का संश्रमण भी गृहम-सांपराय गुग्-स्थान तक ही है। वशेंकि 'बंबे प्रवत्यव तो' इस गाया सूत्र के प्रनिप्राय में स्थित वंश गर हों संक्रमण होता मंभव है। साता बेदनीय का प्रकृति श्रीर प्रदेश वंध ११से १६वे गुग्-स्थान तक होता है। (देगों गों० क० गां० ४२६)

६८. पांच भागहारों का (देखो गाया ४०६) श्रहप बहुत्व कहते हैं -

- (१) सर्व संक्रमण भागहार का प्रमाण सबसे थोड़ा है। उसका प्रमाण एक रूप कल्पना किया गया है।
- (२) गुए तंकपरा भागहार का प्रमारा सर्व संक्रमएा भागहार से श्रसख्यात गुएा है श्रर्थात् पत्य के श्रर्थच्छेदों के श्रसंख्यातनें भाग (इतना) है।
- (३) श्रयः प्रवृत्त संक्रमण नामा भागहार का प्रमाण गुणसंक्रमण भागहार से श्रसंख्यात गुणे श्रपकर्षण श्रौर उत्कर्पण भागहार है। तो भी ये दोनों जुदे जुदे पत्य के श्रधंच्छेदों के श्रसंख्यातवे भाग प्रमाण ही है। क्योंकि श्रसंख्यात के छोटे वड़े की श्रपेक्षा वहुत भेद हैं इससे श्रयः प्रवृत्त संक्रमण भागहार श्रसंख्यात गुणा है।

- (४) विष्यात संक्रमण नामा भागहार का प्रमाण भ्रयः प्रवृत्तसंक्रमण भागहार से भ्रसंख्यात गुणा है। श्रयीत् सूच्यंगुल के श्रसंख्यातवें भाग प्रमाण है।
- (५) उद्देलन संक्रमण भागहार का प्रमाण विध्यात संक्रमण भाग हार से असंख्यात गुणा अर्थात् सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग इतना है।

इससे कर्मों के अनुभाग की नाना गुए। हानि शलाका का प्रमाण अनंत गुए। है। इससे उस अनुभाग की एक गुए। हानि के आयाम का प्रमाए। अनंत गुए। है। इससे उसी की डेढ़ गुए। हानि का प्रमाए। उसके आधे प्रमाए। कर अधिक है इससे दो गुए। हानि का आधा गुए। हानि के प्रमाए। कर अधिक है इसी को 'नियंकहार' कहते हैं। इस से उस अनुभाग की अन्योन्याम्यस्तराधि का प्रमाए। अनंत-गुए।। जानना। (देखो गो० क० गा० ४० से ४३५)

सूचना — जिसके भागहार का प्रमाण जादा होगा उसका भागाकार कम होगा प्रथित् कम परमाण का संक्रमण होगा श्रीर जिसके भागहार का प्रमाण कम होगा उसका भागाकार जादा होगा श्रथीत् जादा होगा परमाण का संक्रमण होगा।

# दशकरण यवस्था चूलिका

३६. दश करणों के नाम—वंध, उदर्कर्पण, संकमण, श्रपकर्पण, उदीरणा, सत्व, उदय, उपशम, निधत्ति, निकाचना (निष्काचना), ये दश करण (श्रवस्था) हर एक कमं प्रकृति के होते हैं।

- (१) बंघ कमीं का ग्रात्मा से सम्बन्ध होना, श्रथात् मिथ्यात्वादि परिगामों से जो पुर्गल द्रव्य का ज्ञानावरणादिरूप होकर परिगामन करना जो कि ज्ञाना-दिका आवरण करता है, वह वंघ है।
  - ं (२) उत्कर्षण जो कर्मी की स्थिति तथा श्रनुभाग का बढ़ना वह उत्कर्षण है।
  - (३) संक्रमण जो वधरूप प्रकृति का दूसरी प्रकृति रूप परिएामन जाना वह संक्रमण है।
  - ं (ः) श्रपकर्षण जो स्थिति तथा गनुभाग का कम हो जाना वह श्रपकर्षण है।

- (५) उदीर्गा उदयकाल के बाहिर स्थित, श्रथीं व जिसके उदय का श्रभी समय नहीं श्राया है ऐसा जो कर्म-द्रव्य (निषेक) उसको श्रपकर्पण के बल से उदयावली काल में प्राप्त करना (लाना) उसको उदीरणा कहते हैं।
- · (६) सत्त्व—जो पुद्गल का कर्मरूप रहना वह सत्त्व है।
- (७) उदय- जो कमं का श्रपनी स्थिति को प्राप्त होना श्रधीत् फल देने का समय प्राप्त हो जाना वह उदय है।
- (=) उपशम—जो कमें उदयायली में प्राप्त न शिया जाय अर्थात् उदीरशा अवस्था की प्राप्त न हो सके यह उपशांत-उपशम करण है।
  - (६) निचलि—जो कर्म उ धीरका प्रयांत् उदयादना

में भी प्राप्त न हो सके ग्रीर संग्रमण श्रवस्था को भी प्राप्त न हो सके उसे निधत्तिकरण कहते हैं।

4 1 45 · 1 15 9

(१०) निकाचना—जिस ं कर्म की उदीरणा, संक्रमणा, उत्कर्पणा, श्रीर श्रपकर्पण मे चारों ही श्रवस्थायें न हो सके उसे निकाचना करण कहते हैं। इसको निका-चित, निष्काचना ऐसे भी कहते हैं।

इस प्रकार दशकरणों का स्वरूप जानना (देखो गी० क० गाठ ४३७ से ४००)

४०. गुरा स्थानों में कर्म प्रकृतियों के इन करणों के संभव दिखाते हैं

१) पहले मिथ्यात्व गुगा स्थान से लेकर दवे श्रपूर्वकरण गुगा स्थान पर्यंत 'दस करण' होते हैं।

नरकादि चारों आयु कर्म प्रकृतियों के 'संक्रमणकरण' के विना ६ करण होते हैं और शेप सब प्रकृतियों के 'दश करण' होते हैं।

- (२) ६वे अनिवृत्तिकर्ण और १०वे सूक्ष्म सांपराय गुण स्थान में अंत के उपशम-निघत्ति-निकाचना इन तीनों करणों को छोड़ कर शेप आदि के ७ ही करण होते हैं।
- (३) ११वे उपशांत मोह, १२वे क्षीण मोह, १३वे संयोग केवली इन तीन गुण स्थानों में 'संक्रमणकरण' के विना ६ ही करण (वंध, उत्कर्षण, श्रपकर्षण, उदीरणा, सत्व, उदय ये ६) होते हैं।
- () ११वे उपशांत मोह गुण स्थान में कुछ विशेष वात यह है जि इस गुण स्थान में मिथ्यात्व और मिश्र मोहनीय (सम्यङ् मिथ्यात्व) इन दोनों का 'संक्रमण-करण' भी होता है, अर्थात् इन दोनों के कर्म परमाणु सम्यनत्व मोहनीय (सम्यनत्व प्रकृति। रूप परिणम जाते हैं, किन्तु शेष प्रकृतियों का 'संक्रमण करण' नहीं होता, ६ ही करण होते हैं।
  - (४) १४वे अयोग भेवली गुरा स्वान में सत्व श्रीर जदय ये दो ही कररा पाये जाते हैं।
  - ़ १६) जिस गुए। स्थान में जिस प्रकृतियों की जहां तक बंध ब्युच्छित्ति होती है वहां तक उन प्रकृतियों का बंध

करेगा श्रीर उत्कर्षण करेगा होते हैं श्रीर प्रश्नियों की श्रपनी श्रपनी जाति की जहां बंध से व्युष्टिव्यत्ति है वहां तक संक्रमण करेगा होता है, जैसे कि नानावरण की पांचों ही प्रकृतियां परस्पर में स्वजाति है उनकी बंध व्युष्टिव्यत्ति १०वे गुरा स्थान में होती है। इसलिये उनका संक्रमण करेगा भी १०वें गुरा स्थान तक होगा।

- (७) १४वे श्रीयोग केवली गुग स्थान में जो ८४ प्रकृतियों का सत्व रहता है उसका श्रपकर्षण करण संयोगी केवली गुग स्थान के श्रंत समय तक होता है। (कोण्टक नं० ११६ श्रीर १२४ गाथा ३३३ छे ३४२ देखों)
- (न) क्षीएं कपाय जो १२वे गुए स्थान में सत्य में व्युच्यित हुई १६ प्रकृति तथा १०वा सूक्ष्म सांपराय गुए स्थान में सत्य से व्युच्छित्तिरूप हुआ जो सूक्ष्म लोग इन १७ प्रकृतियों का क्षयदेश पर्यंत क्षय होने का ठिकाना तक) अपकर्षण करण जानना उस क्षय देश का काल यहां पर एक समय अधिक आवली मात्र है, क्योंकि से १७ प्रकृतियां स्वमुखोदयी हैं, सारांश यह है कि प्रकृतियां से प्रकृतियां कार का है। एक स्वमुखोदयी दूसरी परमुखोदयी।

स्वमुखोदयी—जो श्रेपने ही रूप छदयफल देकर नष्ट हो जाय वे स्वमुखोदयी है, उनका काल एक समय श्रिक श्रावली प्रमाण है, वही क्षयदेश (क्षय होने का ठिकाना) है।

परमुखोदयी नेजो प्रकृति भ्रन्य प्रकृति रूप उदयक्त देकर विनष्ट हो जाती है वे 'परमुखोदयी है, उन्हा क्षयदेश श्रंत कांडक की श्रंतिफालि है ऐसा जानना ।

(६) देवायु का अपकर्षण करण ११वे उपनांतमीर गुग स्वान पर्वत हैं और मिथ्यात्व, सम्यङ् मिथ्यार्थ नम्यवंत्व प्रकृति ये ३ प्रकृतियां और 'निरम्ति रिन्ते, इत्यादि सूत्र से कथित ६वे अनिवृत्ति सरण गुग्छ ह्यान में क्षय हुई १६ प्रकृतियां इन १६ प्रकृतियों का अपदेश पर्यंत श्रंपकर्पण करण होता है, श्रर्थात् श्रंतकांडक के श्रंतफालिपर्यंत है श्रीर क्षपक ,श्रवस्थायें श्रिनवृत्तिकरण गुण स्थान के २रे भाग से ६वे भाग तक क्षय हुई जो श्रीठ कर्पाय को लेकर २० प्रकृतियां हैं उनका भी श्रपनेश्रपने क्षयदेश पर्यंत श्रपकर्पण करण है, जिस स्थान में क्षय हुश्रा हो सकी 'क्षयदेश' कहते हैं। (देखों गो क० में कोण्टक नं० ११६)

(१० उपशम श्रेणी में मिथ्यात्व, सम्यङ् मिथ्यात्व; सम्यक्त प्रकृति इन तीन दर्शन मोहनीय प्रकृतियां और हिने गुण स्थान के पहले भाग में क्षय हुई जो नरक- द्विकांदिक १६ प्रकृतियां इन १६ प्रकृतियों का श्रपकर्षण करण ११वे उपशांत मोह गुण स्थान पर्यंत होता है, परन्तु शेष ग्राठ कपायादि ६वे गुण स्थान में नष्ट होने वाले २० प्रकृतियों का श्रपने ग्रपने उपशम करने के ठिकाने तक श्रपकर्षण करण है। (देखों को० न० ११६)

(११) श्रनंतानुवंधी चार कपाय, का श्रपक्षंण कर्ण 'श्रथा श्रसंयत गुण स्थान से लेकर ७वां श्रप्रमत्त गुण स्थान तक यथासंभव जहां विसंयोजनं (श्रन्यरूप परि मन) हो वहां तक ही होता है तथा नरकायु के ४थे श्रसंयत गुण स्थान तक श्रीर तियंचायु के ५वे देश संयत गुण स्थान तिक जदीरणा, सत्व, जदयकरण — ये तीन

करण प्रसिद्ध [ही हैं, वयोंकि पूर्व में इनका कथन हो चुकों है।

(१') उपशम सम्यक्तव के सन्मुख हुए जीव के मिथ्या-त्व गुरा स्थान के अत मे एक समय अधिक एक आवली पर्यंत मिथ्यात्व प्रकृति का उदीरणकरगा होता है, क्योंकि उसका उदय उतने ही काल तक है और सूक्ष्म लोभ का उदीरणाकरगा १०वे सूक्ष्म सांपराय गुरा स्थान में ही होता है, क्योंकि इससे आंगे अथवा अन्यत्र उसका उदय ही नहीं है।

(१३) जो कमं उदयावली में प्राप्त नहीं किया जा सके अर्थात् जिसकी उदीरणा न हो सके ऐसा उपरांत (उपराम) करण, जो उदीरणारूप भी न हो सके श्रीर संक्रमण रूप भी न हो सके ऐसा निधत्तिकरण तथा जो उदयावली में भी न श्रा सके, जिसका संक्रमण भी न हो सके श्रीर जिसका उत्कर्षण श्रीर श्रपकर्षण भी न हो सके श्रीर जिसका उत्कर्षण श्रीर श्रपकर्षण भी न हो सके श्रीर जिसकी ये चारों त्रिया नहीं हो सकती हों ऐसा निकाचितकरण, ये तीन करण व्ये श्रपूर्वकरण गुण स्थान तक ही होते हैं।

भावार्य – इसके ऊपर यथासंभव उदयावली ग्रादि में प्राप्त होने की सामर्थ्य वाले ही कमं परमाणु पाये जाते हैं। (देखों गो॰ क॰ गा॰ ४४१ से ४५०)

४१. मूल प्रकृतियों के बन्ध-डदय-डदीररगा-सत्त्व के भेदों के लिये हुये स्थानों के गुरगस्थानों में कहते हैं—
( देखो गो० क० गा० ४५१ )

स्थान—एक जीव के एक काल में जितनी प्रकृतियों का सम्भव हो सके उन प्रकृतियों के समूह का नाम स्थान है।

			ŧ	্ল সকূ					
गुरा स्थान	 ज्ञाना <b>०</b>	दशं०	वेद०	मोह०	ग्रायु	नाम	गोत्र	ग्रंत <b>ः</b> ।	विशेष विवरण
बन्घ स्थान									
१-२-४-५-६-७ गुरा० में	8	१	१	१	0	१	१	8	ये ७ प्रकार के श्रयवा
11	१	१	१	१	१	१	१	8	ये = प्रकार के कर्म को जीव बांधते हैं।
३-≍-६ गुग्ग० में	१	१	१	१	0	१	१	१	ये ७ प्रकार के ही कर्म बंध रूप होते हैं।
१०वें गुएा स्थान में	४	१	8	0	0	१	१	8	ये ६ प्रकार के ही कमों का यंध होता है।
११-१२-१३ गुरा० में	0	0	१	0	0	0	o	0	१ वेदनीय कर्म का ही बंध है।
१४वें गुगा स्थान में	0	0	0	0	0	0	0	0	फिसी प्रकृति का भी बंध नहीं होता है।

सूचना—इस प्रकार सब गुण स्थानों के मिलकर मूल प्रकृतियों के बन्ध स्थान चार हैं।

(=-७-६-१ इन प्रकृतियों का बन्ध होना सम्भव है इसलिये ४ स्थान होते हैं,

इन स्थानों के भुजाकार बन्ध, अल्पतर बन्ध और अस्थिर बन्ध ये ३ प्रकार के

बन्ध होते हैं। चौथा अवक्तव्य बन्ध मूल प्रकृतियों में नहीं होता।

(देशों गों० क० गां० ४५१-४५२-४५३)

			1	तूल प्रवृ	हतिया <u>ं</u>				
. गुरा स्थान	ज्ञाना०	दर्श०	वेद०	मोह	ग्रायु	नाम	गोत्र	ग्रंत०	विदोप विवरगा
स्दय-स्थान (देखो गो० क० गा० ४५४)							,		
१ से १० गुएा० में	१	१	१	१	१	१	१	१	ये = मूल प्रकृतियों का उदा
११वें १२वें ,,	१	१	१	0	१	१	१	8	है। ये ७ का उदय (मोहनीय है विना) है।
१३व १४वें ,	0	0	१	0	१	₹	१	0	ये ४ श्रधातियों का उदर जानना।
उदीरसा-स्थान (देखो गो० क० गा० ८५५-४५६)		:							
१ से १२ गुरा० में	8	8	0	શ	0	0	О	8	ये ४ की उदीरएा। छद्यस्य ज्ञानी करते हैं।
१ से १० ,,	0	0		१	0	0	0	0	ये १ की उदीरणा सरार्ग करने हैं।
१ से ६ "	0	0	१	0	१	0	۰	0	ये २ की उदीरगा प्रमादि जीव वंरते हैं ।
१ से १३ "	0	0	0	0	0	8	१	0	ये ७ को उदीरणा ऊपर के स जीव करते हैं।
१-२-४-५-६ "	8	१	१	8	o	8	ζ	8	में २ की उदीरणा आयु की स्थिति में श्रावनिमात्र काल दोप रहने पर होती है।
१०वें सूक्ष्म सां० "	१	१	٥	o	0	१	१	8	ये ५ की जबर के समान।
१२वें झीरण मोह "	0	٥	0	0	•	۶	१	0	ये २ की भी ऊपर के समान जानना।
सत्त्व-स्थान (देखो गो० क० गा० ४५७)									
१ से ११ गुएा० में	१	8	१	ફ	۶	१	2	8	ये = ही प्रकृतियों की सत्ता है
१२वें कीएा मोह ,,	1 8	Transcript of the contract of	१	0	१	8	2	?	वेष " "
१३वें १४वें "	c	0	१	o	7	8	S. C.	8	संस्था ।

४२. जीवों का अपयोग गुरा स्यान में कहते हैं— उपयोग के मुख्य दो भेद हैं। एक दर्शनोपयोग दूसरा जानोपयोग, दर्शनीपयोग के ग्रचक्ष दर्शन, चक्ष दर्शन, ग्रविध दर्शन, केवल दर्शनोपयोग ऐसे ये ४ भेद होते हैं ग्रीर ज्ञानोपयोग के जुमित, कुश्रुत, कुग्रविध, मित, श्रुत, ग्रद्धीध, मनः पर्यंय, केवल ज्ञानीपयोग ऐसे ये ६ भेद हैं। दोनों मिलकर १२ जानना।
(देखों गो० क० गा० ४६१ ग्रीर को० नं० १४६)

	गुग्गस्थान	उपयोग संस्या	विशेप विवरसा	
१	मिथ्यात्व	પ્ર	श्रचक्ष दर्शन १, चक्षु दर्शन १, कुमति-कुश्रुत-	कुग्रविघ दर्शन ये ३।
२	सासादन	ų,	<b>31</b> 11 11 11	n
Ą	मिश्र	Ę	अचक्षु द० १, चक्षु द० १, अवधि दर्शन १, तीनों ज्ञान मिश्र होते हैं )	मति-श्रुत-ग्रवधि ज्ञान (ये
४	घसंयत	Ę	श्रचक्षु द० १, चक्षु द० १, श्रवधि द० १, मर्	ते-श्रुत-ग्रविध ज्ञान ये ३।
x	देश संयत	Ę	, ,, ,, ,,	n n
Ę	प्रमत्त	<i>o</i>	ऊपर के ६ + १ मनः पर्यय ज्ञान=७ जानना	t
৩	श्रप्रमत्त	<sub>o</sub>	11 11 21	
5	श्रपूर्व कः	હ	29 22 27	
3	ग्रनिवृ०	b	11 11 11	
१०	मूक्ष सां०	v	)) ))	
११	उपशांत मोह	હ	))	
१२	क्षीएा मोह	v	11 11 11	
१३	सयोग के०	२	केवल दर्शन १, केवल ज्ञान १ ( ये दोनों युगप	त् जानना )
१४	श्रयोग के०	ર	11 11 21	

## ४३. गुरा स्थानों की श्रपेक्षा से संयम बताते हैं-

१ से ४ गुरा स्थानों में -एक असंयम जानना।

५ देशसंयत ,, -- एक संयमासंयम जानना ।

६ प्रमत्त ,, —सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि ये ३ संयम जानका

७ ग्रप्रमत्त ,, — ,, ,, ,, ये ३ संयम जाननः,

प्रपूर्वकरण ,, — ,, ये २ संयम् जानना ।

६ श्रनिवृत्तिकरण ,, , ,, ,,

१० सूक्ष्म सांपराय ,, — १ सूक्ष्म सांपराय सयम जानना ।

११ से १४ तक ,, — १ यथास्यात संयम जानना । (देखो गो० कः गा० ५००)

४८. सामान्य से गुरा स्थानों में सम्भवती लेक्पान्नों की कहते हैं-

गुण स्थान

#### लेक्षाश्रों के नाम श्रीर संख्या-

१-२-३-४ गुरा० में - कृष्रा, नील, कापीत, पीत, पद्म, शुक्ल ये ६ हरेक में जानना

५-६-७ " --पीत, पद्म, शुक्त ये ३ लेश्या जानना ।

द से १३ तक " -- एक शुक्ल लेश्या जानना।

१४वें " —(०) कोई लेश्या नहीं होते (देखो गो० क० गा० ५०३)

- (१) द्रव्य लेक्या—वर्णनामा नामकर्म के उदय से शरीर का जो वर्ण रहता है उसे द्रव्य लेक्या कहते हैं। इस या मार्गणा में द्रव्य लेक्या का वर्णन नहीं है।
- (२) भाव लेक्या—मोहनीय कर्म के उदय से, उपशम से, क्षय से या क्षयोपशम से जीवों में जो चंचलता होता उसी को भाव लेक्या कहते हैं।
  - (३) कौन सा नरक में कौन सा भाव लेश्या रहता है यह बताते हैं -

श्ले नरक के पहले इन्द्र कवील में कापीत लेश्या का जधन्य ग्रंश रहता है—

३रे ,, द्विचरम ,, ,, ,, उत्कृप्ट ग्रंग ,

**२रे**ं,, ग्रंतिम ,, नील लेस्याका जघन्य ग्रंग ,

५वें ,, दिचरम ,, ,, ,, जत्कृष्ट श्रंश ,

५वें ,, ग्रंतिम ,, कृष्ण ,, जघन्य ग्रंश

७वें ,, ग्रवधिस्थान ,, ,, ,, उत्कृष्ट ग्रंश ,

जघन्य ग्रीर उत्कृष्ट इन दोनों के बीच में के लेस्या का ग्रंग मध्यम जानना।

(देखों गो० क० गा० ५४६)

४५. जीव किसी एक पर्याय को छोड़कर (मरकर) दूतर किसी पर्याय में उत्तक्त होना (जन्म लेगा) यथा-सम्भव सिष्यति हैं।

१. नरकगित नारकी जीव मरकर वहां-कहां उत्पन्न होते हैं? समायान रत्नप्रभा, शक्रप्रभा, शलकप्रभा इन तीन पृथ्वी वाले नारकी जीव मरकर गर्भज संज्ञी, पंचेन्द्रिय, पर्याप्त, कर्म भूमिया मनुष्य ग्रथवा तिर्यचपर्याय में उत्पन्न होते हैं। परन्तु वे चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण, मितनारायण नहीं होते।

विशेष—श्रद्धाई द्वीप में १५ कर्म भूमियां हैं उनमें
तियंच श्रथवा मनुष्य श्रीर लवगोदिध, कालोदिध समुद्रों
में श्रीर स्वयं प्रभाचल पर्वत के श्रागे श्रद्यं स्वयं भूरमगद्वीप में श्रीर सम्पूर्ण स्वयं भूरमग समुद्र में श्रीर उसके
श्राग मध्यलोक के चारो कोनों में धर्मा श्रादि तीन पृथ्वी
वाले नारकी जीव जलचर, स्थलचर श्रीर नभचर तिर्यच
हो सकते हैं।

श्रद्धाई द्वीप में ३० भोगभूमिया श्रीर ६६ कुभोग-भूमिया के तिर्यच या मनुष्य में से कोई ऊपर के तीन पृथ्वो में नारकी होकर उत्पन्न नहीं होते। उसी तरह मानुपोत्तर पर्वंत श्रीर स्वय प्रभाचल इन दोनों के श्रसंस्यात द्वीप-समुद्र में भी उत्पन्न नहीं होते।

४थे पंकप्रशः, ५वें धूमप्रभा ६वें तमःप्रभा इन तीन १ व्वी वाले नारकी जीव मरकर तीर्थकरादि के सिवाय पूर्वोक्त तिर्यंच अथवा मनुष्यपर्याय में नत्पन्न होते हैं।

इरे बालुका पृथ्वी तक के नारकी जीव तीर्थंकर ही सकते हैं। इनके आगे के अर्थात् ४थे पृथ्वी बाले से लेकर आगे के नारकी जीव तीर्थंकर नहीं हो सकते।

४थे पृथ्वी तक के नारकी जीव चरम दारीरी हो सकते हैं।

अबें पृथ्वी तक के नारकी जीव सकलसंयमी हो सकते हैं।

६वें पृथ्वी तक के नारकी जीव देशसंयत गुगस्यान तक तिर्यंत अथवा मनुष्य हो नकते हैं। परन्तु इतनी विभेषता है कि—

७वें नरक वाने जीव पूर्वीक्त तिर्वेच (मिय्याइन्टि) पर्याय में ही उत्पन्न होते हैं। (देखी को० क० गा० ५३=)। ७वें नरक वाले जीव ३रे या थे गुरास्थानवर्ती अपने-अपने गुरास्थानवर्ती अपने-अपने गुरास्थानों में मनुष्यहिक तथा उंघ गीत इनको नियम से बांधता है। परन्तु वहां पर (७वीं पृथ्वी में) उत्पन्न हुए सासादन मिश्र-प्रसंयत गुरास्थान वाले जीव जिस समय मररा को प्राप्त होते हैं उस समय मिल्यात्व गुरास्थान को प्राप्त होकर हो। मररा करते है।

(देखो गो० क० गा० ५३६)।

२. तियँचगित — तिर्यच जीव मरण करके कहां कहां उत्पन्न होते ? समस्वान—तिर्यच गित में बादर या मूक्ष्म, पर्याप्त या अपर्याप्त, ऐसे अग्निकायिक अथवा वायुकायिक ये दोनों मरण करके नियम से तिर्यच गित में ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु भोगभूमि में पंचे न्द्रय तिर्यच नहीं होते। तथापि वे बादर, सूक्ष्म पर्याप्त, अपर्याप्त, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, साधारण वनस्पति, पर्याप्त, प्रपाप्त, प्रतिष्ठत, अप्रतिष्ठित, प्रत्येक वनस्पति, दीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी, संज्ञीपंचेन्द्रिय तिर्यच में उत्पन्न होते हैं।

शेप एकेन्द्रिय अर्थात् पृथ्वीकायिक, जलकायिक शेर वनस्पतिकायिक ये वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त इन सब अवस्याओं वाले नित्यनिगोद, इतरिनगोद, वनस्पति श्रीर पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रतिष्ठित, अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति तथा इसी प्रकार पर्याप्त, अपर्याप्त होन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, नतुरिन्द्रिय ये सब जीव मरकर अग्नि श्रीर वायु-कायिक छोड़कर शेप सब तिर्यचों में उत्पन्न होते हैं श्रीर तीर्थकरादि बेसठ शलाका (पदिवधारक) पुग्पों के बिना शेष मनुष्यपर्याय में भो उत्पन्न होते हैं। नित्य श्रीर इतरिनगोद में के सूक्ष्म जीव परण् मर क मनुष्य हो जाय तो वे सम्यवत्व श्रीर देशसंयम ग्रहण् कर सन्ते

श्रमंत्रीपचेन्द्रिय जीव मरग् करके पूर्वोक्त विर्धन श्रवा।
मनुष्यगति में उत्पन्न होता है। तथा घर्मा नाम वाले पहले
नरक में श्रीर देवयुगत में श्रयीत् भवनयासी या ल्यंतर
देवों में उत्पन्न होता है। श्रत्य देव यथवा नारनी नहीं
होता। वर्योकि समंद्री जीवों की श्रामुका उत्पृष्ट दिवित
बन्द पहम के श्रमंत्याह्यां भाग में श्रियक नहीं ही गरना
है। (देहों गों० का गां० १४०)।

संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी ग्रमंभी पंचेन्द्रिय की तरह

पूर्वीक्त गतियों में, सब नारकी पर्यायों में, सब भोग-भूमिया पर्यायों में श्रीर श्रच्युत स्वर्गपर्यन्त सब देवों में उत्पन्न होता है। (देखों गों० क० गां० ५४१)।

३. मनुष्यगित—मनुष्य जीव भरकर कहां-२ उत्पन्न होते हैं ? समाधान—कर्मभूमि के पर्याप्त मनुष्य भरण करके चारों हो गतियों में, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच की तरह सब गतियों में उत्पन्न होता है। उसी तरह श्रहमिन्द्र भी हो सकता है। तथा सिद्ध स्थान मोक्ष में प्राप्त होते हैं।

अपर्याप्त मनुष्य कमभूमि के तिर्यचों में उसी तरह तीर्थंकरादि पद छोड़ कर सामान्य मनुष्यों में जन्म लेता है।

३० भोगभूमि के तियंच श्रीर मनुष्य श्रीर श्रसं ख्यात हीप समुद्र में के जघन्य भोगभूमि के तियंच यदि सम्य-ग्हिष्ट हों तो सीधर्म श्रीर ईशान्यस्वर्ग में जन्म लेते हैं श्रीर उनका गुणस्थान यदि पहले या दूसरे हो तो भवन-त्रिक देवों में जन्म होता है।

कुभोग भूमि के मनुष्य भवनित्रक देवों में जन्म लेते हैं।

चरम शरीरी मनुष्य मोक्ष जाते हैं।

श्राहारक शरीर सहित प्रमत्त गुग्गस्थान वाले मरग् करके कल्पवासी देवों में उत्पन्न होते हैं। (देखी गो० क० गा० ५४१~५४२~५४३)।

४. देवगित—देव मर कर कहां-कड़ां उत्पन्न होते हैं। समाधान - सब देव मरण करके सामान्य से संज्ञी पंचे-न्द्रिय कर्मभूमिया तिर्यंच तथा मनुष्य पर्याय में श्रीर प्रत्येक वनस्पतिकाय, पृथ्वीकाय, जलकाय बादर पर्याप्त जीवों में उत्पन्न होते हैं।

विशेष - भवनित्रक देव मरकर सौधर्म-ईशाय स्वर्ग के देवों की तरह जन्म लेते हैं। वे तीर्थंकारादि श्रेसठ शलाका पुरुषों में जन्म नहीं लेते, श्रन्य मनुष्यों में ही जन्म लेते हैं।

र्धशान्य स्वर्ग पर्यन्त के देव मरकर पूर्वोक्त मनुष्य तिर्यनों में तथा बादर पर्याप्त, पृथ्वी, जल, प्रत्येक बन-स्पति, एकेन्द्रिय पूर्याय में जलपन्न होते हैं। शतार-सहस्रारपर्यंत स्वर्गो वाले देव भी मर कर पूर्वोक्त संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य तिर्यचों में उत्पन्न होते हैं। स्रर्थात् १५ कर्मभूमि में मनुष्य स्रोर लवस्योदिध, कालो-दिध, स्वयंभूरमस्य के अपराध द्वीप, स्वयंभूरमस्य समुद्र इनमें संज्ञी, पर्याप्त जलचर, स्यलचर, नभरचर, तिर्यंच भी होते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि पयन्त के देव मरकर १५ कर्मभूमि में मनुष्य में ही जन्म लेते हैं। (देखो गो० क० गा० ५४<sup>2</sup>- ५४३)।

४६. कौन ग्रीर किस तरह का मिय्याहिष्ट देव। ति में कौन सा देव उत्पन्न हो सकता है ? सभ। धान —

- (१) भोगभूमि में मिथ्यादिष्ट श्रीर तापसी ज्यादा से ज्यादा भवनित्रक देवों में जपन्न होते हैं।
- (२) भरत, ऐरावत, विदेह के मनुष्य ग्रीर तियंच ग्रीर स्वयंभूरमण ग्रवंद्वीप ग्रीर स्वयभूरमण समुद्र लवणोदिष, कालोदिष समुद्र के जलचर, स्थलचर नभ-रचर संजी तियंच पर्याप्त भद्रमिथ्याद्दिष्ट ग्रीर उपशिम (शांत परिणामी) प्रह्मचयंघारक, वानप्रस्थाश्रमी ग्रीर एक जटी, शतजटी, सहस्रजटी नग्न, कांजीभक्षक, कन्दमूलपत्र पुष्पफल भक्षक, ग्रकामनिर्जरा करने वाले, एकदंडी, त्रिदंडी ग्रीर वालतप करने वाले ये सब ग्रपने ग्रपने विशुद्धता के श्रनुसार भवनित्रक से लेकर श्रच्युत स्वयं तक उत्पन्न होते हैं।
- (३) द्रव्यालगी जैनमुनि (मिथ्याद्दिट) नवग्र वेयक तक जन्म लेते हैं। (देखो गो० क० गा० ५४८)

४७. कौन कौन से जीव कौन से नरक में जा सकते हैं? समाधान—१ले नरक में-मिथ्याइप्टि. कर्म- भूनिज, छ: ही संहनन के धारक, श्रमंत्री, पचेन्द्रिय, सरीमृप (सपं विदेश होना चाहिये) पक्षी, सप, सिंह, स्त्री. माता, मनुष्य यह जीव जाते हैं

२२ नरक में श्रसंशी पंचेन्द्रिय छोड़कर शेप ऊपर के सब जीव जाते हैं।

३रे नरक में -- असंशी पंचेन्द्रिय और सरीतृप होड़कर रोप ऊपर के सब जोव जाते हैं।

४थे नरक में-यसप्राप्ता सृपाटिका संहनन छोड़क-

शेष पांच संहनन धारी सर्पापासून मनुष्यापर्यंतचे, जीव जाते हैं।

मत्स्य भीर मनुष्य ये जीव जाते हैं। ७वे नरक में -- वज्जवृषभनाराच संहनन धारी

५वे नरक में — सिंह से लेकर मन्प्य तक के जीव जाते हैं।

मत्स्य श्रीर मनुष्य ये जीव जाते हैं। देखी गी० क० गा० X8E)

६वे नरक में -- प्रथम के ४ संहनन के घारी स्त्री,

४८. फौन से गुण-स्यान में कौन सा सम्यक्त्व रहता है यह बताते हैं—

१ते गुगा-स्यान में १- मिथ्यात्व जानना । २रे १. सासादन १. मिश्र ३रे

३. उपराम, क्षयोपराम, क्षायिक ये ३ जानना । ४से७ "

२. श्रीपशमिक, क्षायिक ये २ जानना । मसे ११ ,,

१. क्षायिक सम्यक्त्व जानना। (देखो गो० क० गा ५०६) १ से १४,,

४६. क्षायिक सम्यक्त्य--दर्शन मोहनीय कर्म के क्षपण का ग्रारम्भ कर्मभूमि के मनुष्य, तीर्घकर या के ली या श्रुत केवलीयों के पादमूल में (सानिष्य) होता है श्रीर निष्ठापन (पूर्णता) वही होगा श्रयवा यदि मरण जाय तो चारों गति में ग्रर्थात् वैमानिक देवों में, भोगभूमि के मनुष्य या तियाँच श्रवस्था में, श्रथवा प्रथम नरक में होगा।(देखो गो० क० गा० ५५०)

५०. वेदक सम्यक्तव-४, ५, ६, ७ इन गुरा-स्यानवर्ती द्वितीयोपशम सम्यक्त धारी मनुष्य मर कर वैमानिक देव में उत्पन्न होता है। श्रीर वहां उसको

द्वितीयोपराम सम्यवत्व का काल पूर्ण होने के बाद वंदक सम्यक्तव प्राप्त होता है।

कर्मभूमि के प्रथमोपशम सम्यक्तवी मनुष्य उपशम सम्ययत्व का काल पूर्ण होने के बाद सम्ययत्वा मोहनीय (सम्यक्त्व प्रकृति के उदय से वेदक सम्यक्त्य होता है।

कमंभूमि सादि मिध्याहिष्ट मनुष्य मिध्यात्व के उदय का श्रभाव करके सम्यक्त्व मोहनीय के उदय से असंगतादि चार गुरा-स्थानों में (४थे से ७वें गुरा-स्थान में) वेदक सम्यग्दृष्टि होती है। (देखो गो० क० गा० ५५०)

५१. गुरा-स्यान में चड़ने श्रीर उतरने का क्रम बताते हैं:--(देलो गो० क० गा० ४५१, ५५७, ५५८, ५५६ श्रीर को० नं० १५६)

कस गुण-स्थान से	किस गुण-स्यान में जाता है ?	स्यान संस्या
<. मिय्यात्व २. सासादन	३, ४, ५, ७ १ मिथ्यात्य जानना	\ ?
३. मिश्र	पड़े तो १ते में, चढ़े तो ४वे में जानना	3.
४. श्रसंयत	पढ़े ३, २, १ चड़े तो ४,७	X X
४. देगसंयत ६. प्रमत्त	पड़े तो ४, ३, २, १ चढ़े तो ७ पड़े तो ४, ४, ३, २, १ चढ़े तो ७	e,
७. ग्रप्रनत्त	पड़ें तो ६ चई तो ६ (मरण हो तो ४मे गुण्०)	3

ह. ग्रपूर्वकरण ह. ग्रनिवृत्तिकरण १०. सूक्ष्म सांपराय ११. उपशांत मो० ह. ग्रपूर्वकरण ह. ग्रपूर्वकरण ह. ग्रप्तवृत्तिक्रण १०. सूक्ष्म सांपराय १२. क्षीणमोह० १३. संयोग कवली	पड़े तो ७ चढ़े तो ६ (मरण हो तो ४थे गुण्०)  "	m m m n n n o o o o o
१४. अयाग कवला 🕽 🛱	तिखायस्या (नापा) म जाता है।	1

५२. जीव किस गुरा-स्थान में मररा करके किस गित में जाता है यह वताते हैं।
(देखो गो० क० गा० ५५६, को० नं० १६१)

गुर्ग-स्थान	गति
१. मिथ्यात्व में मर कर	नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव इन चारों गतियों में जाता है।
२. सासादन में ,,	नरक गति विना शेष तीन गतियों में जाता है।
३. मिश्र गुण-स्थान में	मरएा नहीं होता।
४. श्रसंयत में मर कर	नरकादि चारों गतियों में जाता है।
५. देशसंयत में ,,	देवगृति में जाता है।
६. प्रमत्त गुरा० में मर कर	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
७. ग्रप्रमत ,, ,,	,, ',
८, प्रपूर्वकररा ,, ,,	,, ,, (क्षपक श्रेणी में मरल नहीं होता)
६. ग्रनिवृत्ति० ,, ,	21, 21
१०. सूहम सां० ,, ,,	27 29
११. उपदाांतमोह " "	" सर्वार्यसिद्धि में ग्रहमीन्द्र होता है।
१२. क्षीरा मोह गुरा० में	। मरण नहीं होता
१३. सयोग केवली गुरा० में	<b>*</b> ,
१४. ष्रयोग केवली के जीव	सिद्ध गति गति में (मोक्ष) जाता है।

५३. कि. श्रवस्था में जीव मरण करता नहीं यह बत ते हैं—

१. मिश्र गुण स्थानवर्ती जीव, २-ग्राहारक मिश्रकाययोगी जीव, ३. निर्वृत्य पर्याप्त मिश्रकाययोगी जीव,
४. क्षपक श्रेणी घारक जीव, ५. उपशम श्रेणी चढ़ने
वाला जीव (वर्वे अपूर्वकरण गुण स्थान के प्रथम भाग
में) ६. प्रथमोपशम सम्यक्तवी जीव, ७. सातवें नरक में
२रे ३रे ४थे गुण स्थान घारी जीव, ६. ग्रनन्तानुबन्धी
के विसंयोजन किया हुआ जीव, यदि मिथ्यात्व गुण
स्थान में लौटकर श्राया हो तो एक श्रन्तमु हूर्त तक नहीं
मरण करता है, ६. दर्शनमोह क्षपक कृतकृत्य वेदक

सम्यग्हिष्ट होने तक मरगा नहीं करता है। (देशोः क० गा० ५५०, ५६०, ५६१)।

१४. बढ़ायु फ़तकृत्य येदक सम्यग्दृद्धि मरकर च गतियों में किस तरह जाता है ? यह बताते हैं दर्शन भोहनीय कमं के क्षपण करने का श्रारम्भ व बाला जाब को फ़तकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि कहते। कृतकृत्य वेदक का काल श्रन्तमुं हुतं है। उस श्रन्तमुं के चार भाग करना चःहिये यदि प्रथम भाग में मर होय तो देव श्रथवा मनुष्य गति में जायेगा। यदि भाग में मरे तो देव, मनुष्य, श्रयवा मनुष्यगति में जायेग् यदि ३रे भाग में मरे तो देव, तिर्यच श्रयवा नारक होग (देखों गों० क० गा० १६२)

प्रथ. नाम कर्म के उदय स्थानों के पांच नियत काल हैं।
(देखो गो० क० गा० प्रदर्-प्रदर्भ को० नं० १६७)

( 441 110 110 110 244-240-242 410 10 (40)	
नियत काल का वर्गन	काल मर्यादा
·	
१—विग्रहगित या कार्माण दारीर में (केवली समुद्यात की श्रपेक्षा)	१, २, ३, समय
२ – मिश्र दारीर में (दारीर पर्याप्ति पूर्ण न होने तक)	एक श्रन्तमुं हुर्त जानना
३—शरीर पर्याप्ति में (शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने पर जब तक दवासोच्छ-	17
वास पर्याप्ति पूर्णं नहीं होती तब तक)	
४—श्वासोच्छवास पर्याप्ति में (श्वासोच्छवास पर्याप्ति पूर्ण होने पर जब	,,
तक भाषा पर्याप्ति पूर्णं नहीं होती तब तक)	
५—भाषा पर्याप्ति में भाषा पर्याप्ति पूर्ण होने पर श्रवशेष श्रायु पर्यंत	/ भूजयमान श्रायु में— अपर के चारों को मान गर्म
भाषा पर्माप्ति काल है)	कर्र के चारा वर्ष कर के वर्ष कर के वर्ष कर के वर्ष कर के वर्ष कर के वर्ष कर के वर्ष कर के वर्ष कर के वर्ष कर के
	<u> </u>

अपर के पांच नियत कालों के स्वामां निम्न प्रकार जानना—

- १. लब्ध्यपर्याप्तक जीवों में ऊपर के पहले के दो काल रहते हैं।
- एकेन्द्रिय जीवों में ऊपर के पहले के चार काल रहते हैं।
  - ३. त्रस जीवों में ऊपर के पांचों ही काल रहते हैं।
- ४. ग्राहारक शरीर में ऊपर के पहले के काल छोड़ कर शेप ग्रागे के ४ काल जानना।

#### ४६. स ुद्धात केवली के काल का प्रमाण ---

समुद्घात केवली के कार्माग, श्रीदारिक निश्न, श्रीदारिक शरीर पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति काल । इस प्रकार पांच काल कम से श्रपने श्रात्म प्रदेशों का संकोच करने (समेटने) के समय ही होते हैं श्रीर प्रसरण श्रपीत् विस्तार (फैलाने के समय तीन ही काल हैं।

#### प्रसरण विस्तार

- (१) दंड समुद्घात
- (२) क्पाट ,
- (३) प्रतर ,
- (४) लोक पूर्ण "

#### संकोचन समेटने रूप

- (१) प्रतर
- (६) कपाट
- (७) दंड
- (=) मूल शरीर प्रमारा

(देखो गो : क । गा० ५८६-५८७)

- (१) दंड समुद्धात के करने (प्रसरण में) में प्रथव। संकोचन (समेटने रूप) में ग्रर्थान् दो समय मे ग्रौदारिक शरीर पर्याप्ति काल है।
- (२) कपांट समुद्घात के करने और समेटने रूप युगल में औदारिक मिश्र शरीर काल है।
- (ः) प्रतर समुद्घात के करने और संकोचन में ग्रांर लोक पूर्ण समुद्धात में कार्माण काल है।

इस प्रकार प्रदेशों के विस्तार करने पर शरीर पर्याप्ति काल, मिश्र शरीर काल, कार्माण काल ये ३ ही काल होते हैं ऐसा जानना चाहिये, किन्तु श्यासोच्छ्यास ग्रीर भाषापर्याप्ति समेटते समय ही होती है, वयों कि मूल शरीर में प्रवेश करते समय से ही संजी पंचेन्द्रिय की तरह कम से पर्याप्ति पूर्ण करता है इसलिये वहां (समृद् घात केवली के) पांचों काल सभव हैं।

समुद्वात केवली के प्रसमय श्रीर योग के कोष्टक नं० १६८।

योग

त्रीदारिक काय योग श्रीदारिक मिश्र काय योग कार्माण का योग कार्माण काय योग

योग

कार्मांग काय योग

श्रीदारिक मिश्रकाय योग

श्रीदारिक काय योग

श्रीदारिक काय योग

५७. उद्दोलना स्थानों में जो विशेषता है उसको कहते हैं—

मिथ्यात्व गुगा स्थान में जिन प्रकृतियों के बंध की ग्रथवा उदयं की वासना भी नहीं ऐसी सम्यक्तव ग्रादि गुगा से उत्पन्न हुई सम्यक्तव मोहनीय (सम्यक्त्वप्रकृति) १, मिश्र मोहनीय (सम्यङ् निध्यात्व: १, ग्राहारकिंद्रक २, इन च र प्रकृतियों की तथा शेष प उद्देशन प्रकृतियों की उद्देलना यह जाव यही मिथ्यात्व गुगा स्थान में करता है, (देखो गो० क० गा० ४१३ से ४१५ श्रीर ६१२)

(१) भी उद्वेलन प्रकृति १३ हैं उन प्रकृतियों के उद्वेलन का कम कुते हैं।

श्राहारकद्विक २ प्रशन्त प्रकृति है इसलिये चारों गित के मिथ्याद्दिट जीव पहले इन दोनों की उद्देलना करते हैं। पीछे सम्यक्त्व प्रकृति की, उसके बाद सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति की उद्देलना करते हैं, उसके बाद शेष देवद्विक २, नरकद्विक२, वैक्तियिकद्विक २, उच्चगोश १, मनुष्यद्विक २, इन ६ प्रकृतियों की उद्देलना एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय श्रीर सकलेन्द्रिय जीव करते हैं। (देखो गो० क० गा०

(२) उस उद्वेलना के अवसर का काल कहते हैं —
वेदक सम्यव्तव योग्य काल में ग्राहार कि इक २ की
उद्वेलना करता है, उपशम काल में सम्यव्तव प्रकृति वा
सम्यग्निध्यात्व प्रकृति की उद्वेलना करता है ग्रीर
एकेन्द्रिय तथा विकलेन्द्रिय जीव वैकिथिक पट्क की
(देविद्वक २, नरकद्विक २, वैकिथकाद्विक २) उद्वेलना
करता है। (देखों गों० क० गां० ६१४)

### (३) इन दोनों कालों का लक्षरा कहते हैं---

सम्यक्त प्रकृति ग्रीर सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति इन दो प्रकृतियों की सत्ता रूप स्थिति त्रस के पृथक्त सागर प्रमागा शेष रहे ग्रीर एकेन्द्रिय के पत्य ग्रसंस्यात भाग कन एक सागर प्रनागा शेष र, जाने वह 'वेदक योग्य काल' है ग्रीर उतसे भी जिस ी सत्ता रूप त्थिति कम हो ज य

तो वह 'उपशम योग्य काल' कहा जाता है। (देखों गो॰ क॰ गा॰ ६१५)

(४) तेजस्कायिक ग्रीर वायु काविक जीवों की उहलन प्रकृतियां—

मनुष्यद्विक २ श्रीर उच्च गोत्र १, इन तीन प्रकृतियों की उद्देलना तेजस्कायिक श्रीर वायुकायिक इन जीवों में होती है श्रीर उस उद्देलना के काल का प्रनाण जघन्य ग्रथवा उत्कृष्ट पत्य के श्रसंख्यातवें भाग प्रमाण है, श्रथीत् इतने काल में उन तीन प्रकृतियों के निषेकांची उद्देलना हो जायेगी, पत्य के श्रसंख्यातवें भाग प्रमाण जिसकी स्थिति है, उस सत्ता रूप स्थिति की उद्देलना एक श्रंतर्मुहर्त काल में करता है, तो संख्यात सागर प्रमाण मनुष्यद्विकादिकी सत्ता रूप स्थिति की उद्देलना कितने काल में करेगा ? इस त्रैराशिक विधि से पत्य के श्रसंख्यातवें भाग प्रमाण काल में ही कर सकता है, ऐसा सिद्ध होता है। (देखो गो० क० गा० ६१६-६१७)

प्रत. सम्यक् वादिक की विराधना (छोड़ देना) कितती बार होती है यह कहते हैं—

- (१) प्रथमोपशमसम्यन्तव, वेदक (क्षयोपशमिक)
  सम्यन्तव, देश संयम श्रीर श्रनंतानुवंधी कपाय के विसंयोजन को विधि—इन चारों श्रवस्था को यह एक जीव
  उत्कृष्टपने ग्रथित् श्रधिक से ग्रधिक पत्य के ग्रसंख्यातवें
  भाग समयों का जितना प्रमाण है उतनी बार छोड़-छोड़
  के पुन: पुन: ग्रहण कर सकता है, पीछे नियम से सिद्ध
  पद को ही पाता है। (देखो गो० क० गा० ६१८)
- (२) उपशम श्रेणी पर एक जीव ग्रधिक से ग्रधिक चार वार ही चढ़ सकता है, पीछे कर्मों के ग्रंशों को यक्ष

करता हुम्रा क्षपक श्रेणी चढ़कर वह मोक्ष को ही जाता है भौर—

सकल संयम को उत्कृष्टपने से श्रर्थात् श्रविक से श्रधिक २२ वार ही धारण कर सकता है, पीछे मोक्ष को प्राप्त होता है। (देखो गो० क० गा० ६१६)

विशेष— 'मित्याहाराणुभयं' यह गाथा सम्यक्तव प्रकरण में ग्रा गई है, मिथ्यात्व गुण स्थान में एक जीव की ग्रपेक्षा तीर्थंकर प्रकृति १ ग्रीर प्राहारकिहक २ इन दोनों सिहत युगपत् सत्ता) स्थान नहीं है, तीर्थंकर सिहत या ग्राहारकिहक सिहत ही सत्ता होती है। परन्तु नाना जीव की ग्रपेक्षा दोनों का वहां सत्व पाया जाता है, क्योंकि जिनके तीर्थंकर ग्रीर ग्राहारकिहक इन दोनों कर्मों की सत्ता युगपयत् रहती है उनके थे मिथ्यात्व गुण स्थान नहीं होता, सासादन गुण स्थान में नाना जीवों की ग्रपेक्षा से भी तीर्थंकर ग्रीर ग्राहारकिहक सिहत सत्व स्थान नहीं नहीं है कारण जिस जीव में तीर्थंकर या ग्राहारकिहक इनकी सत्ता हो तो उप जीव के मिथ्यात्व रिहत ग्रनंतानुबंधी का उदय नहीं होगा, मिश्र गुण स्थान में तीर्थंकर प्रकृति ग्रीर ग्राहारकिहक इन प्रकृतियों की सत्ता नहीं है।

५६. श्रायुक्तमं के बंध उदय सत्ता को कहते हैं —

१. आयु के बंध स्वरूप को कहते हैं—देव ग्रीर नार-की अगनी भुज्यमान आयु के अधिक से ग्रधिक छः महीने शेष रहने पर मनुष्यायु अथवा तिर्यचायु का ही बंध करते हैं।

(ग्र) सातवी पृथ्वी के नार की तिर्यंच आयु का ही वंघ करते हैं, कर्म भूमिया मनुष्य और तिर्यंच अपनी भुज्यमाव आयु के तीसरे भाग के शेप रहने पर चारों आयुओं में से योग्यतानुसार किसा भी एक की बांधता है।

(म्रा एकेन्द्रिय भौर विकलप्रय जीव ऊपर के समान

मनुष्ययायु ग्रयवा तिर्यचायु इन दोगों में से किसी एक को बांधते हैं, परन्तु तेजस्कायिक ग्रौर वायुकायक जीव तिर्यचायु का ही बंध करते हैं।

भोग भूमिया चीव (मनुष्य घौर तिर्वन) घ्रपनी घ्रायु के ६ महीने वाकी रहने पर देवायु का ही बंध करते हैं। (देखो गो० क० गा० ६३९-६ ०)

२. उदय श्रीर सत्ता स्वरूप के काते हैं—नारकी, तिर्यच, मनुष्य देव इन जीवों के श्रयकी श्रपनी गति की एक श्रायु का तो उदय हो होता है।

परभव की श्रायु का भी बंध हो जाये तो उनके उदय रूप श्रायु सिहत दो आयु की 'एक बध्यमान श्रीर एक भुज्यमान) सत्ता होती है श्रीर जो परभय की आयु का बंध न हो तो एक ही उदयागत भुज्यमान श्रायु की सत्ता रहती है, ऐसा नियम से जानना। (देखों गो० क० गा॰ ६४१)

३. श्रायु बंच के श्राठ श्रपक वंग त्रिभाग काल - एक जीव के एक भव में चार श्रायु में से एक ही श्रायु बंध रूप होती है श्रीर तो भी वह योग्य काल में श्राठ बार ही बंधती है तथा वहां पर भी यह सब जगह जायु का ३रा भाग श्रविष्ठ, रहने पर ही बंधती है, जर्मात् भुजमान श्रायु का तीसरा भाग श्रविष्ठ रहने पर ही बंधती है इसी तरह श्रामें भी तीसरा भाग केप रहने पर धाठ बार श्रायु बंध हो सकती है।

सूचना—भुज्यमान आयु का तीसरा भाग बाको रहे तो वह काल पहली बार आयुर्वध के लिये गोग्य होती है यदि उस समय आयुर्वध न हो तो आगे के हुउट जिलाग में हो सकती है इसी तरह आयुर्वय के अपकर्षण काल (अवसर) आठ बार आ समते हैं। (देग्यों गोठ कठ गाठ ६४२)

४. पूर्व गयित पाठ प्रपत्येगों (त्रिमागों में) परियो बार के शद प्रांग के दिनोबादि प्राक्तेग गान में हो पहले बार में श्रायु बन्धी थी उस बन्धामान श्रायु की स्थिति की वृद्धि वा हानि श्रथवा श्रवस्थिति (कायमं) रह सकती है श्रीर श्रायु के बंध करने पर जीवों के परिशानों के निमित्त से उदय प्राप्त (भुज्यमान) श्रायु का 'श्रपवर्तन धात' (क.ली धात, घट जनाना) भी होता है।

भावार्थ — ग्राट ग्रपकर्षणों में सभी के ग्रन्दर ग्रायु का बन्य हो हो । ऐसा नियम नहीं है । जहां पर ग्रयु बन्ध के निमित्त मिनते हैं वही बन्ध होता है तथा जिस ग्रपकर्षण में जिस ग्रायु का बन्ध हो जाता है उसके ग्रमन्तर उसी ग्रायु का बन्ध होता है, परन्तु परिणामों के ग्रमुसार उसकी (बध्यमान ग्रायु की) स्थित कम जादे या ग्रवस्थित हो सकती है तथा उसक. उदय ग्राने पर ग्रथींत् भुज्यमान ग्रवस्था में उसका कदली गत भी हो सकता है। (देखो गो० क० गा० ६४३)

सूचना—जैसे १६वें स्वर्ग में किसी को २२ सागर स्थिति का आयुर्वंध हुआ हो और उसके दूसरे अपकर्षण काल में परिगामों की विशुद्धि कम होने से १०वें स्वर्ग की १८ सागर से कुछ अधिक स्थिति रह सकती है।

५. श्रायु कर्म के भंग का स्वरूप—इस प्रकार वंध होने पर श्रथवा बंध नहीं होने पर व उपरत वंध श्रवस्था ने एक जीव के एक पर्याय में एक एक के प्रति तीन तीन भंग नियम से होते हैं।

बंध - वर्तमान काल में परभव की ब्रायुर्वंध हो रहा हो वहां पहला वंध रूप भंग जानना । वहां वंध श्रागामी द्रायु का १, उदय भुज्यमान ब्रायु का १, ब्रौर सत्त्व भुज्यमान ब्रायु का १, व वष्यमान ब्रायु का १ इस प्रकार तीन भंग (वंध १, उदय १, सत्त्व २) होते हैं।

श्रवंध-शाग मी श्रायु का वंध जहां भूतकाल में भी वंध हुश्रा हो श्रीर वर्तमान काल में न हो रहा हो वहां दूसरा श्रवंध रूप भंग जानना। यहां उदय ग्रीर सत्त्व केवल एक भुज्यमान ग्रायु का ही रहता है। इस प्रकार तीन भंग ( वंध ०, उदय , सत्व १ ) जानना।

उपरत वंच — ग्रागा विषायु वंध जहां भूतकाल में हुआ हो श्रीर वर्नमान काल में न हो रहा हो वहां उपरतवन्ध तीसरा भंग होता है। यहां उपरतवन्ध ०, उदय भुज्यमान श्रायु १ सत्व बच्यमान श्रायु १ ग्रीर भुज्यमान श्रायु १ ये २ रहते हैं। इस प्रकार तीन भंग (उपरत वंध ०, उदय १, सत्व २) जानना। (देखो गो० क० गा० ६,४)

६०. श्रास्तव के मूल भेद चार हैं - मिथ्यात्व, श्रविरित, कपाय, योग, इन चार के उत्तर भेद कम से ५, १२, २५ श्रीर १५ ये सब मिलक्र ५ होते हैं।

श्रास्रव—िजसके द्वारा का शिएा वर्ग एगारूप पुद्गल स्कंध कर्मपने को प्राप्त हो उसका नाम श्रास्रव है। वह श्रात्मा के मिथ्यात्व: दि परिएगाम रूप हैं, उनमें से—

- (१) मिथ्यान्त-एकांत, विनय, संशय, विपरीत, ग्रज्ञान ऐसे ५ प्रकार का है।
- (२) स्रविरित पांच इन्द्रिय तथा छ्ट्वामन इनको वशीभूत नहीं करने सें छः भेद रूप ग्रीर पृथ्वीकायादि पांच स्थावर काय तथा एक त्रसकाय इनकी दया न करने से छः भेद रूप इस प्रकार १२ प्रकार का है।
- (३) कषाय— अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोम ४ अप्रत्याख्य न कपाय ४, प्रत्याख्यान कपाय ४, संज्वलन कपाय ४ ये १६ कपाय तथा हास्य-रित, अरित-शोक, भय-जुगुप्सा, नपुंसक, स्त्री, पुरुपवेद ये नव नोकपाय इस तरह नव मिलकर २५ प्रकार का है।

(४) योग—मनोयोग सत्य-ग्रसत्य-उभय श्रनुभय ये ४, इसी तरह वचनयोग ४ श्रीर काययोग ७ (श्रीदारिक काययोग, श्रीदारिक काययोग, वैक्रियिक काय-योग, वैक्रियिक किय-योग, वैक्रियिक काययोग, श्रीहारक काययोग,

त्राहारक मिश्रकाययोग श्रीर कार्माण काययोग वे ७) इस तरह १५ प्रकार का है।

इस प्रकार सब मिलकर ग्रास्नव के ५+१२+२५ +१५=५७ भेद होते हैं। (देखो गो० क० गा० ७८६)

(१ मूल ग्रास्रवों को गुण स्थानों में वताते हैं।

देखो गो० क० गा० ७-७-७८८ ग्रोर को० नं० २१७)

गुग्स्थान	श्रास्रव संख्या	ंविशेष विवरग
१ मिथ्यात्व	8	मिथ्य <sup>ा</sup> त्व, ग्रविरति, कपाय, योग ये ४ ग्रास्रव जानना ।
ं २ सासादन	34	ग्रविरति, कपाय, योग ये ३ जानना ।
३ मिश्र	<b>ब</b>	. 22 21 22
४ ग्रसंयत	३	-1 11 11 1
५ देश संयत	₹	श्रविरित, कपाय, योग, 'यहां संयतासंयत मिश्रभाव रहता है ।
६ प्रमत्त	२	कपाय ग्रीर योग ये २ जानना ।
७ ग्रप्रमत्त	२	79 23 11
म अपूर्वकर <b>गा</b>	2	. 22 29 34
६ ग्रनिवृत्तिकरण	२	23 29 ** .
१० सूक्ष्म सांपराय	2	2' 22 22
११ उपशांत मोह	8	१ योग जानना ।
१२ झीएा मोह	१	"
१३ सयोग केवली	8	,,
१४ धयोग फेवली	0	. •

(२) गुगा स्थानों में ५७ उत्तर ग्रास्नव के ग्रनुदय, उदय, व्युच्छित्ति दिखलाते हैं। इसमें केशव-वृगीं कृत सात गाथा भी ग्राये हैं (देखो गो० क० गा० ७८९–७६० ग्रीर को० नं० २१८)

-	गुरा	स्थान	ग्रनु <b>द</b> य सच्या	  ग्रनुदयगत ग्रास्रवों का नम्म	्र उदयगत ग्रास्रव संख्या	ग्रास्नव व्युच्छि० संस्या	व्युच्छित्ति प्राप्त श्रास्त्रवों का नाम
	8	मिथ्यात्व	₹	त्राहारक काययोग १, त्राहारक मिश्रकाययोग १ ये २	४४	¥	मिथ्यात्व ५ जानना
	२	सासादन	<sub>9</sub>	२ + ५ मिथ्यात्व ये ७ जानना	४०	8 .	थ्रनन्तानुबन्धो कपाय ४ 
	7	मिश्र	१४	११ + ३ (ग्री० मिश्र- काययोग १, वै०मिश्र० १ कार्माएा काययोग १) ये १४ जानना	४३	o	o
	¥	श्रसंयत	88	१४—३ (ऊपर के ३ योग) = ११ ग्रर्थात् ७ + ४ = ११ जानना	४६	W	श्रप्रत्यख्यान कपाय ४, वैक्रियिक काययोग १, वै० मिश्र० १, कार्माण योग १, श्रौ० मिश्र० १, त्रसिंहसा १, ये ६ जानना
	પ્ર	देशसंयत	२०	११ 🕂 ६ ≔ २० जानना	<b>३</b> ७	१५	प्रत्याख्यान कपाय ४, ग्रविरति ११ ये १५
	६	प्रमत्त	nv	२० + १४ = ३५ — २ (ब्राहारक) = ३३ जानना	२४ ं	२	ग्राहारक काययोग १, ग्राहारक मिश्र० १, ये २
	હ	अप्रमत्त	३५	३३十२ (ग्राहारक) =३५	२२	o	o
	<b>5</b>	<b>ग्रपूर्वकर</b> ग	३५	३५ ऊपर के समान जानना	२२	Es	हास्यादि नोकपाय ६
	3	म्रनिवृत्तिकरएा भाग १	४१	३५ — ६ ╾४१ जानना	१६	٤	नपुंसक वेद १,
			1				

		1	•	ſ		
	धास २	४२	४१+१≈४२ "	१५	8	स्त्रीवेद १
	भाग ३	४३	४२+१=४३ "	१४	१	पुरुष येद १
	भाग ४	88	83+4=88 "	१३	<b>t</b>	संज्वलन क्रोध १
	भाग ५	४५	४४+१=४४ "	१२	१	संज्वलन मान १
	भःग ६	. ४६	४४ + १ = ४६ ,,	११	8	संज्वलन् माया १
	भाग ७	४७	४६+१=४७ (यहां स्यूल लोभ जानना)	१०	0	۰
१०	सूक्ष्म सां०	<b>১</b> ৫	४६ 🕂 १ == ४७ ( यहां सूक्ष्म लोभ जानना)	१०	٤	संज्वलन लोभ १ (यहां सूक्ष्म लोग जानना)
११	उपशांत मोह	४६	४७+१=४५	3	o	o
<b>१</b> २	क्षीए मोह	४६	80+8=8c	£	¥	श्रसत्य मनोयोग १, उभय मनोयोग १, श्रसत्य वचनयोग १, उभय वचनयोग १, ये ४ जानना
१३	सयोग के०	४०	४८ + ४ = ५२ - २ (ग्री० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग दे २) = ५० जानना	હ	<b>.</b>	कपर के योग ४+३ (श्री० काययोग १, श्री० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३)=७
१४	ग्रयोग के०	५७	सर्व श्रास्त्रव जानन	0	0	o

(३) श्रास्तव के उदय कार्यभूत जीव के परिस्मामों में ज्ञानावरसमित कर्मवंघ का कारसमान प्रधीत प्राठ कर्मों की प्राप्तवों के विशेष भाव वतलाते हैं। (देखो गो० क० गा० ५०० से ५१०)

मूल कर्म प्रकृतियां

श्रास्त्रवों के विशेष भागव

- १ शानावरण
- २ दर्शनावरण

३ वेदनीय कर्म (साता-ग्रसाता)

४ मोहनीय— (१) दर्शन मोहनीय

(२) चारित्र मोहनीय

१ प्रत्यनकी से ग्रयीत् शास्त्र वा शास्त्र के जानने वाले पुरुषों में।

अविनय रूप प्रवृत्ति करने से, २ अन्तराय = ज्ञान में विच्छेद करने से, ३ उपधात = प्रशस्त ज्ञान में हुंप रखने रूप उपधात से, ४ प्रदोप = तत्व ज्ञान में हुंप नहीं मानने रूप प्रहुंप से, ५ निन्हव = जिनसे अपने को ज्ञान प्राप्त हुआ है उनको छिपाकर अन्य को गुरु कहना रूप निन्हव से, ६ आसादना = किसी के प्रशंसा योग्य उपदेश की तारीफ न करने रूप आसादना से स्थिति और अनुभाग बंध की बहुतता के साथ ज्ञानावरण तथा दर्शनावरण इन दो कर्मों को बांधता है ये ६ कारण ज्ञान के विषय में हो तो ज्ञानावरण के बंध के कारण और जो दर्शन के विषय में हो तो दर्शनावरण के बंध के कारण होते हैं, ऐसा जानना।

१ भूतानुकम्पा — सव प्राणियों पर दया करना, २. व्रत — ग्रहिसादि व्रत पालन करने रूप, ३. योग — शुभ परिणाम में एकाग्रता रखने रूप, ४. क्षमाभाव — क्रोध के त्याग रूप क्षमा, ४. दान — ग्राहारादि चार प्रकार का दान, ६. पंच परमेष्टि की भक्ति कर जो सहित हो ऐसा जीव वहुधा करके प्रचुर ग्रनुभाग के साथ सातावेदनीय को बांधता है, इससे विपरीत ग्रदया ग्रादि का धारक जीव तीव्र स्थित ग्रनुभाग सहित ग्रसाता वेदनीय कर्म का बंध करता है।

अरहंत, सिद्ध चैत्य (प्रतिमा), तपश्चरण, निर्दोप शास्त्र, निर्पंथगुरु, नीतराग प्रिणित धर्म और मुनि आदि का समूह रूप संघ — इनसे जो जीव प्रतिकृत हो अर्थात् इनके स्वरूप से विपरीतता का ग्रहण करे वह दर्शन मोह को वांधता है।

जो जीव तीव्र कथाय और हास्यादि नोकपाय सिहत हो, बहुत मोह रूप परिएानता हो, राग श्रोर होप में श्रत्यंतलीन हो तथा चारित्र गुए। के नाश करने का जिसका स्वभाव हो ऐसा जीव कपाय श्रीर नोकपाय दो प्रकार के चारित्र मोहनीय कर्म को बांबता है। ५ ग्रायु-नरकायु---

जो जीव मिथ्याद्दिष्टि हो, बहुत ग्रारम्भी हो, शील रहित भाव हो, तीव लोभी हो, रौद्र परिखामी हो, पाप कार्य करने की बुद्धि सहित हो, दह जीव नरकायु को बांघता है।

(१) तिर्यचायु-

जो जीव विषरीत मार्ग का उपदेश करने वाला हो, भले मार्ग का नाशक हो, गूढ़ ग्रथीत दूसरे कोन मालूम होवे ऐसा जिनके हृदय का परिएए म हो, मायाचारी हो, मूखंता सहित जिसका स्वभाव हो, मिध्या-माया-निदान सल्यों कर सहित हो, वह जीव तिर्यंत श्रायु को बांधता है।

(२) मनुष्यायु-

जो जीव स्वभाव से ही मंदक कपाय वाला हो, दान में प्रीतियुक्त हो, शील संयम कर रहित हो, मध्यम गुराों कर सहित हो ग्रमीन् जिनमें न तो उत्कृष्ट गुरा० हों न दोप हों, यह जीय मनुष्य ग्रायु को बांघता है।

(४) देवायु-

जो जीव सम्यग्हिष्ट है वह केवल सम्यवत्व से वंधादात प्रगुवत, महा-प्रतों से देवायु को बांघता है तथा जो मिथ्या हिष्ट है वह बालतप प्रथित् ग्रज्ञान रूप वाले तपरचरण से वा प्रकामनिजरा से (संतोपपूर्वक पीड़ा सहन करना) देवायु को बांधता है।

६ नोमकर्म ( जुभाखुभ )

जो जीव मन-वचन-काय से कुटिल हो पर्यां त् सरल न हो, कपट करने वाला हो, अपनी प्रशंसा चाहने वाला तथा करने वाला हो अथवा ऋदि गारव आदि से युक्त हो, वह नरकगि आदि अधुभ नामकमं को वांभता है और इससे विपरीत स्वभाव वाला हो अथित सरलयोग वाला निष्कपट प्रशंसा न चाहने वाला हो वह धुभ नामकमं का बन्ध करता है।

७ गोत्रकर्म (उच्च-नीच) जो जीव श्रह्तादि पांच परमेष्टियों में मिन्तयंत हो, वीतराग कथित धास्त्र में प्रीति रसता हो, पढ़ना विचार फरना इत्यादि गुणों का दर्शक हो, वह जीव उच्चगोत्र को बन्ध करता है ध्रीर इनमें थिपरीत पतने याला नीचगोत्र को बांधता है। < ग्रन्त**रा**य कर्म

जो जीव अपने वा परके प्राणों की हिंसा करने में लीन हो और जिनेश्वर की पूजा क्षया रत्नत्रय की प्राप्ति रूप मोक्ष मार्ग में विष्न डाले वह अन्तराय कर्म का उपार्जन करता है जिसके कि उदय से वह वांखित वस्तु को नहीं पा सकता।

- ६१. भाव का लक्षरा- (जीव के श्रसाधाररा गुरा का लक्षरा) श्रपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशमादिक के होने हुए उत्पन्न हुये ऐसे जिन श्रीपशमिकादि भावों कर जीव पहचाने जावें भाव 'गुरा' ऐसी संज्ञा रूप सर्वदिशियों ने कहे हैं। (देखो गो० क० गा० ६१२)
- (१) भावों के नाम भेद सिहत कहते हैं— वे मूलभाव श्रीपशिमक, क्षायिक, मिश्र, श्रीदियक, परिस्मामिक, इस तरह पांच प्रकार है श्रीर उनके उत्तर भाव कम से २, ६, १८, २१, ३, इस तरह ५३ भाव जानने चाहिए। (देखों गो० क० गा० ८१३)
  - (२) इन भावों की उत्पत्ति का स्वरूप कहते हैं-
  - भ्रोपग्रमिक भाव—प्रतिपक्षी कर्म के उयशम होने से होता है।
  - २. क्षायिक भाव-प्रतिपक्षी कर्म के पूर्णक्षय होने से होता है।
  - मिश्र भाव (क्षयोपशम भाव)—उन प्रतिपक्षी कर्मी का उदय भी हो परन्तु जीव का गुएा भी प्रगट
     रहे वहां मिश्र रूप क्षायोपशमिक भाव होता है।
  - ४. श्रौदियक भाव—कर्म के उदय से उत्पन्न हुमा संसारी जीव का गुरा जहां हो वह श्रौदियक भाव है।
  - पारिगामिक भाव—उपशम, क्षय, क्षयोपशम भ्रीच उदय कारगों के विना जीव का जो स्वाभाविक भाव है वह परिगामिक भाव है।
     (देखो गो० क० गा० ६१४-६१५)

(३) इन भावों के भेवरूप उत्तर भावों को कहते हैं :---( देखों गो० क० गा० ८१६ से ८१६ श्रीर को० नं० २३२ )

उत्तर भेद संस्या	उत्तर भेदों के नाम
२	उपशम सम्यवत्व १, उपशम चारित्र १ ये २ जानना ।
w	ायिक ज्ञान १, क्षाध्कि दर्शन १, क्षायिक सम्यक्त्य १, क्षायिक चारित्र १, क्षायिक दान १, क्षायिक लाभ १, क्षायिक मोग १, क्षायिक उपभोग १, क्षायिक वीर्य १, ये ६ जानना ।
१=	कुमित ज्ञान, मुञ्जूत ज्ञान, कुघविध ज्ञान ये ३ कुज्ञान (अज्ञान)।  मितज्ञान, श्रुतज्ञान, श्रविध ज्ञान मनः पर्यय ज्ञान, ये ४ ज्ञान, श्रवश्चदर्शन,  चक्ष्यदर्शन, भविध दर्शन, ये ३ दर्शन, दान, लाभ, भीग, उपभोग, वीयं वे  ५ क्षयोपशम लिव्ध, क्षयोपशम (वेदक) सम्यवत्व १, सराग चारित्र १,  देशसंयम १, ये सव १८ भाव जानना।
२१	नरक, तिर्यच, मनुष्य, देव ये ४ गति, नपुंसक, स्त्री पुरुष, ये ३ वेद (लिंग), फोध, मान, माया, लोभ, ये ४ कषाय, मिथ्यात्व १, कृष्णा, नील, कापोत पीत, पदा, शुक्ल ये ६ लेश्या, प्रसंयम १, प्रज्ञान १, प्रसिद्धत्व १, ये २१ भाव जानना ।
77	भव्यत्व १, भ्रभव्यत्व १, जीवत्व १ ये ३ जानना । इस प्रकार मूलभाव ५ श्रीर उत्तर भेषरूप भाव ५३ जानना ।
	२ ६ १६ २१

# (४) भंगों की झपेक्षा से भावों के नेव बतलाते हैं-

गुए स्थानों में घीर मार्गेणा स्थानों में संभवते मूलभाव और उत्तर भावों को स्थापना करके प्रमादों के ग्राक्ष संचार (भेदों के बोलने के विधान) के समान घर्षात् भाषों की उलटापलट करने से यहां पर भी १ प्रत्येक भंग, १ प्रविरुद्ध परसंयोगी भंग धौर १ स्वसंयोगी भी भंग समभने चाहियें।

- १. प्रत्येक भंग—म्नलग म्नलग मानों को प्रत्येक भंग कहते हैं घीर जिनमें संयोग पाया जाय उनकी संयोगी भंग कहते हैं। संयोगी भंग दो प्रकार के हैं—परसंयोगी घीर स्वसंयोगी।
- २. स्वसंयोगी भंग—जहां भपने ही एक उत्तर भेद का दूसरे उत्तर भेद के साय संयोग दिखाया जाय उसको स्वसंयोगी भंग कहते हैं। जैसे एक श्रोपदामिक के भेद का दूसरे श्रोपदामिक के ही भेद के साय. अयवा एक श्रोदियक भेद के साथ दूसरे शौदियक भेद का ही संयोग कहना।
- ३. परसंयोगी भंग जहां दूसरे उत्तर नेद के साथ संयोग दिखाया जाय उनको परसंयोगी भंग कहते हैं। जैसे श्रोपशमिक के एक भेद के साथ श्रीदियक के एक भेद का सयोग दिखाना, श्रमवा एक श्रोदियक भेद के माद दूसरे क्षायिक भेद का संयोग दिखाना। इत्यादि (देखी गो० ग० गा० =२०)

(५) गुरा-स्थानों में मूलभावों की संख्या भ्रीर स्वपर के संयोग रूप भावों की संख्या को दिखलाते हैं। (देखो गो० क० गा० ५२१ को० नं० २३३)

TOT TOWN	मूल भावों	ल भावों के नाम और संख्या				जोड़	
ृगुरा-स्थान	की संख्या	<b>ग्रो</b> पशमिक	क्षायिक	मिश्र  (क्षयोपश०)	श्रीदायिक	पारिगामिक	
१. मिथ्यात्व	ै र	0	0	1 8	१	1 8	<b>3</b> 1.
२. सासादन	३	0		8	Ŗ	8	ą
३. मिश्र	₹	0	o	१	8	ę	₹ ,
४. ग्रसंयत	ų	१	१	१	१	?	ሂ
५. देशसंयत	ų	१	१	8	१	8	ሂ
६. प्रमत्त	¥	१	१	१	Ş	१	ሂ
७. अप्रमत्त	¥	१	१	8	१	१	ሂ
८. ऋपूर्व क० उप० श्रे०	પ્ર	8		8	१	१	ሂ
६. ग्रनिवृ० "	પ્ર	१	१	<b>१</b>	8	१	x
१०. सूक्ष्म सां० ,,	×	१	१	१	१	१	ų
११. उपशांत मो॰ ,,	× ×	१	V	8	१	१	ሂ
८. अपूर्वक ० क्ष० श्वे०	8	0	१	8	8	१	8
६. ग्रनिवृ० ,,	8	0	१	8	१	'१	Y
१०. सूक्ष्म सां० .,	8	•	१	१	8	१	X
१२. क्षीरा मोह "	٧	0	१	. 8	१	8	K
१३. सयोग केवली	₹	0	१		१	8	ą
१४. ग्रयोग केवली	ą	0	१	0	१	8	3
तिद्ध गति मैं	२	0	१	0	o	8	२

(६) गुरा स्थानों में ५३ उत्तर भावों के मेद सामान्यपने से कहते हैं— (देखो गो० कण गा० ५२२ को० नं० २३४)

गुए। स्थान	श्रीपशसिक भाव २ में से	क्षायिक भाव ६ में से	मिश्र भाव १८ में से	ग्रीदियक   भव २१ में से	पारिगामिक भाव ३ में से	
१. मिथ्यात्व	0	o	१० = कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्घि ५	   २१ <del>=</del> सव	३ = सव	₹४
२. सासादन	0	o	₹०= "	२० = मिथ्यात्त्र १ घटाकर	२=भव्यत्व, जीवत्व ये ४	३२
३. मिश्र	0	o	११=ज्ञान ३, दर्शन ३, लव्धि ४	₹0== ,,	₹= "	
४. ग्रसंयत	१ उपशम सम्यवत्व	१ क्षायिक सम्दर्कत्व	१२== ऊपर के ११ में वेदक सम्यक्त्व १ ओड़कर १२	₹०= "	₹= "	३६
५. देशसंयत	₹≕ "	₹= ,,	१३ — ऊपर के १२ — १ देशसंयत जोड़कर १३ जानना	१ = म । ति । गति २, कपाय ४, वेद ३, धुभ- लेश्या ३, ग्रज्ञान १, ग्रसिद्धत्व १ ये १४ जानना	٧= ,,	<b>₹ १</b>
६. प्रमत्त	<b>ξ</b> = "	٤= "	१४= ज्ञान २, दर्शन २, लब्घि ४, वेदक सं० १, मन: प० ज्ञान १, सराग चारि० १	१३ — ऊपर के १४ — १ तिर्यच गति घटाकर जानना	₹= "	₹ .
७. ग्रप्रमत्त	?= "	ξ= ,,	१४= "	₹₹ = n	₹= "	₹ ₹

द्द. ग्रपूर्वकर <b>ग</b>	२ ≔ सब	स॰ १,	१२ = ऊपर के १४ - २ (वेदक स० १, सराग चारि० १) = १२	११=ऊपर के १३- २।(पीत० पद्म लेख्या)=११	٦= "	35
६. ग्रनिवृत्ति०	٧= "	₹= "	१२= ,,	٧١ "	₹= "	३६
१०. सूक्ष्म सां०	₹= "	₹= "	१२= "	५ = म० गति १, सूक्ष्म लोभ १, जुभ लेक्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १	₹= ;,	२३
११ उपशांत मो 🛚	२≔ "	१ क्षःयिक सम्यक्त्य	१२= "	४== ऊपर के ५-१ लोभ घटाकर=४	₹= "	२१
१२. क्षीरण मो०	0	२ क्षा॰ स॰, क्षा॰ चारि॰		٧= ,,	₹= "	२०
१३ संयोग के०	0	६=सव	0	३ = मनुष्य गति १, शुक्ल लेश्या १, श्रसिद्धत्व १	₹ = "	१४
१४. ग्रयोग के०		६=सब्	o	२=मनुष्य गति १, ग्रसिद्धत्व १	₹= "	, <b>6</b> ±
हिद्ध गति में	o	४ क्षा॰ ज्ञान क्षा॰ दर्शन, क्षा सम्यक्तव क्षा॰ वीर्य, ये ४	}	0		¥.

सूचना:--कोई म्राचार्य क्षायिक भाव ६- १ जीवत्व ऐसे १० भाव मानते हैं।

६२. सर्वथा एकनयका ही ग्रहर जिनमें पाया जाता है। ऐसे जो एकांत मत है ३ ३ भेदों को कहते हैं—

(१) कियावावियों के १८०, (२) श्रक्तियावादियों के ८४, (३ श्रक्तानवावियों ६७, (४) वैनियक्तवावियों के ३२। इस प्रकार सब मिलकर ३६३ भेद जानना, (देखों गो० क० गा० ८७६)।

#### (१) कियावादियों के मूलभंग कहते हैं-

१ले 'ग्रस्ति' $\times$ ४ 'ग्रापसे', 'परसे', नित्यपनेसे', ग्रानित्यपने से',= $\times$  $\times$ = जीव, ग्रजीव, पुण्य, पाप, ग्रासव, संवर, निर्जरा, वन्ध. मोक्ष= $35\times$  $\times$  काल, ईश्वर, ग्रात्मा, नियति, स्वभाध=15

(२) १ श्रस्ति, ४ श्रापसे, परसे, नित्यपनेकर, श्रिनत्यपनेकर, इन पांचों का तथा नवपदार्थ इन कुल १४ का श्रथं—

१. जीवादि नव पदार्थं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भवरूप स्वचतुष्टयसे 'श्रापसे' (स्वतः) 'श्रस्ति' है। = ६

२. जीवादि नव पदार्थ परचतुष्टयसे 'परतः' (परसे)  $\xi$ ।  $= \varepsilon$ 

३. जीवादि नव पदायं नित्यपनेकर 'ग्रस्ति' है = ६

४. जीवादि नव पदार्थ नित्यपनेकर 'ग्रस्ति' है।

(३) फालबाद—काल ही सब को उत्पन्न करता है ग्रीर काल ही सबका नाश करता है, सोते हुए प्राणियों में काल ही जागता है, ऐमे काल के बंचना (ठगने को) कः ने को कौन समर्थ हो सकता है ? ग्रायीत् कोई नहीं। इस प्रकार काल से ही सबको मानना यह कालबाद का ग्रायी है।

(४) ईश्वरवाद—धात्म ज्ञानरिहत है, ग्रनाथ है

ग्रथित् कुछ भी नहीं कर सकता। उस भात्मा का सुखदु:छ, स्वर्ग तथा नरच में गमन वगैरह सब ईश्वरकर
किया हुआ होता है ऐ ईश्वरका किया सब कार्य मानना
ईश्वरवाद का अर्थ है।

(५) घाःमवाद-ससार में एक ही महान् आत्मा है वही पुरुष है, वही देव है और वह सबमें व्यापक है। सर्वा गपने से अगम्य (छुपा हुआ) है, चेतना सहित है। निर्गु गा है और उत्कृष्ट है। इा तरह घात्मस्वरूप से ही सबको मानना आत्मवाद का अर्थ है।

(६)) नियतिवाद — जो जिस समय जिससे जैसे जिसके नियम से होता है वह उस समय गउसे तैसे उसके ही होता है। ऐसा नियम से ही सब वस्तु को मानना उसे नियतिवाद कहते हैं।

(७, स्वभाववाद कांटे का आदि लेकर जो तीक्ष्ण (चुभने वाली) वस्तु है उनके तीक्ष्णपना कौन करता है और मृग तथा पक्षी आदियों के अनेक तरह पना जो पाया जाता है उमे कौन करता है ? ऐसा प्रश्न करने पर यही उत्तर मिलता है कि सब में स्वभाव ही है। ऐसे सबको कारण के विना स्वभाव से ही मानना स्वभाववाद का धर्ष है।

ऊपर जो (गाया ५७६ देखों) एकांतमत के ३६ भेद दिखलाया है। उनको काल, ईश्वर, ब्रात्मा. नियति मौर स्वभाव इन पांचों को लगाकर गर्माना करने से क्रियावाद के ३६ $\times$  $\times$ =१८ वेद होते हैं। (देखों गो० क० गा० ६७६ से ६६३)।

(=) श्रिक्षयावाद के =४ नेव निम्न प्रकार जानना— १ नास्ति  $\times$  २ श्रापसे, परसे=२ $\times$ ७ जीव, श्रजी, श्रास्तव, संवर, निजंरा, वन्ध, मोक्ष= $१४\times$ ५ काल, ईश्वर, श्रात्मा, नियति = ७०।

#### श्रापसे (स्वतः) जीव काल से नहीं।

परसे जीव काल से नहीं । इस प्रकार जीव-म्रजीव वादिक ७ पदार्थ भापसे, परसे काल के भ्रपेक्षा से नहीं ई इसलिये—१ नास्ति ×२ भापसे, परसे = २×७ पदार्थ = १४ काल की भ्रपेक्षा नहीं है

,, "=१४ ईश्वरापेका से नहीं है

.. , , = १४ म्रात्मा की ...

,, ,, =१४ नियति की ...

" " " (\* Litato da 1

" " उठ भेद जानना।

भेद होते हैं---

१ नास्ति × ७ जीव, ग्रास्नव, संवर, निर्जरा. वन्ध मोक्ष = ७ × २ नियति, काल = १४ ये भेद नास्तिकपने में जानना । पहले के ७० ग्रीर ये १४ सब मिलकर ग्रित्रया-वादियों के ६४ भेद होते हैं । (देखो गो० क० गा० ६६४-६६५) ।

(६) श्रज्ञानवाद के ६७ भेद बताते हैं-

जीवादि नव पदार्थों में से एक एक का सप्त भंग से

(१)	जीवादि न	विपदार्थं	ग्रस्तिरूप है	ऐसा कीन जानता है ?	3=
(२)	31	27	नास्तिरूप है	<b>;</b> ;	3=
(₹)	17	17	ग्रस्ति नास्ति रूप है	7)	3=
(8)	"	73	श्रवक्तव्य रूप है	21	3=
(ਨ)	*;	,,	ग्रस्ति ग्रवक्तव्य है	"	$\beta =$
(૬)	"	7,	नास्ति ग्रवक्तव्य है	"	3 ==
(७)	"	: 7	ग्रस्ति नास्ति ग्रवक्तव्य है	"	3=
					$\frac{3}{\xi^{\frac{3}{2}}}$

१. शुद्ध पदार्थ ४४ ग्रस्ति, नास्ति, ग्रस्ति नास्ति, ग्रवक्तव्य=४

(१) খ্র	द्व पदार्थ	ग्रस्ति रूप है	ऐसे कौन जानता है ?	= {
(२)	<del>,</del> ,	नास्ति रूप है	n	<b>=</b> ₹
(३)	,;	श्रस्ति नास्ति रूप है	<b>,</b>	== {
(১)	"	ग्रवक्तव्य रूप है	<b>27</b> ,	$=\frac{x}{\xi}$
				, <u>8</u>

इस प्रकार पूर्वाक्त ६३ श्रीर ये ४ सब मिलकर श्रज्ञानवाद के ६७ भेद जानता। (देखो गो० क० गा० ८८६–८८७)।

(१०) वैनिधकवाद के ३२ भेद कहते हैं---

दंथ, राजा, ज्ञानी, यति, वृद्ध, वालक, माता, पिता। इन ग्राठों का मन, धचन, काय ग्रीर दान इन चारों से विनय करना इस प्रकार वैनयिकवाद के ५×४=३२ भेद होते हैं। ये विनयवादी गुरा, ग्रवगुरा की परीक्षा किये विना विनय से ही सिद्धि मानते हैं। (देखों गो॰ क॰ गा॰ ५५६)।

इस प्रकार स्वच्छंद श्रर्थात् अपने मनमाना है। श्रद्धान जिनका ऐसे पुरुषों के ये ३६३ भेद रूप पाखण्ड कल्पना की है। श्रन्य भी कुछ एकांतवादों को कहते हैं।

पौरववाद — जो श्रालस्यकर सहित हो तथा उद्यम करने में उत्साह रहित हो। वह कुछ भी फल नहीं भोग सकता। जैसे स्तनों का दूध पीना बिना पुरुपार्थ के कभी नहीं वन सकता। इसी प्रकार पुरुपार्थ से ही सब कार्य की सिद्धि होती है। ऐसा मानना पौरुपवाद है। (देखों गो॰ कं॰ गा॰ ८६०)।

न जानना । जैसे कि 'जीव' ग्रस्तिरूप है ऐसा कीन े जानता है । तथा नास्ति ग्रथवा दोनों, वा वाकी तीन भंग

मिली हुई=इस तरह ७ भंगों से कौन जीव को जानता है।

इस प्रकार नव पदार्थों का ७ भंग से (ग्रस्ति, नास्ति,

ग्रस्ति-नास्ति, श्रवक्तव्य, श्रस्ति श्रवक्तव्य नास्ति श्रवक्तव्य

श्रस्ति नास्ति श्रवक्तव्य, ये ७ गुरा करने पर ७ × ६ = ६३

- (२) दैवबाद मैं केवल दैव (भाग्य: को ही उत्तम मानता हैं। निरर्शक पुरुषार्थं को घिवकार हो। देखों कि किले के समान ऊंचा जो वह कर्णं नामा राजा सो युद्ध में मारा गया। ऐसा दैववाद है। देव से ही सर्वेसिद्धि मानी है। (देखों गो० क० गा० ८६१)।
- (३) संयोगवाद—यथार्थं ज्ञानी संयोग से ही कार्य सिद्धि मानते हैं; क्योंकि जैसे एक पहिये से रथ चल नहीं

सकता, तथा जैसे एक ग्रंधा दूसरा पांगला ये दोनों वन में प्रविष्ट हुए थे सो किसी समय भ्राग लग जाने से ये दोनों मि कर ग्रंथात् ग्रंत्रे के बन्धे पर पांगला बैठकर ग्रंपने नगर में पहुंच गये। इस प्रकार संगोगवाद है। (दे ो गो० क० गा० ८६२)।

(४) लोक नाव — एक ही बार उठी हुई लोक-प्रसिद्ध बात देवों से भी मिलकर दूर नहीं हो सकती तो अन्य की बात गया है, जैसे कि द्रीपदी कर केवल अर्जुन पांडव के ही गले में डालो हुई माला की पांचों पांडवों को पहनाई है ऐसी प्रसिद्धि हो गई इस प्रकार लोकवादी, लोज प्रवृत्ति को ही सर्वस्व मानते हैं। (देलों गो कर गार ६६३)

सार'श - जो कुछ वचन बोला जाता है वह किसी अपेक्षा को लिये हुय ही होता है उस जगह जो अपेक्षा है वही 'नय' है और बिना अपेक्षा के बोलना अथवा एक ही अपेक्षा से अनंत धर्म वाली वस्तु को सिद्ध करना यही परमतो में मिथ्यापना है।

#### ६:. त्रिकरणों का स्परूप कहते हैं-

- (१) अनंतानुवंधी कपाय की चौकड़ी के विना शेष २१ चारिय मोहनीय की प्रकृतियों के क्षय करने के लिये अथवा उ शम करने के निमित्त अधः प्रवृत्तकरण, अपूर्व-करण, अनिवृत्तिकरण ये ३ करण को गये हैं, उनमें से पहले अधः प्रवृत्तकरण को सातिशय अप्रभत्त गुण स्थान वाला प्रारम्भ करता है, यहां 'करण' नाम परिणाम का है। (देशो गो० क० गा० =६७ और जीव कोउ गो० गुण स्थानाधिकार गाथा ४०)
- (२) श्रधः प्रवृत्ताकरण का श्रदार्थ से तिद्ध लक्षण पाहते हैं—

जिस कारण इस पहले करण में जनर के सनय के परिणाम नीचे के समय संबंधी भावों के समान होते हैं इस कारण पहले करण का 'श्रधः प्रमुत्त' ऐसा श्रन्थमं (अमं के अनुसार) नाम कहा [गया हं, उस श्रधः प्रमृत्त

रए। का काल शंतमुं हुर्त है, उस काल में संभवते विद्युद्धता (मन्दता) रूप कपायों के परिएगम प्रसंद्यात- लोक प्रनाए हैं और वे परिएगम पहने समय से लेकर श्रागे-श्रागे के समयों में लगान वृद्धि (चय) कर बढ़ते हुये हैं, (देखो गो० क० गा० ६६-६६ और जीव कांट्र गा॰ ४६-४६) वह सातिशय श्रमक्त संयमी समय समय प्रति श्रमत गुएगो प्रमाएगों की विद्युद्धता से बढ़ता हुना श्रंतमुं हुर्त काल तक प्रथः प्रवृत्त करए। को बरता है, पुनः उसको समाप्त करके श्रपूर्वकरए। को प्राप्त है। ।

#### (३) श्रपूर्वकरण का स्वरूप कहते हैं —

श्रपूर्वकरण का काल शंतमुं हूर्न माण है उसमें है, एक समय में समानचय वृद्धि) ने बढ़ते हुए असंस्थात लोक प्रमाण परिणाम पाये जाते हैं, लेकिन यहां श्रमुकृष्टि नियम से नहीं होती, दयोंकि यहां प्रति असय के परिणामों में श्रपूर्वता होने से नीचे के समय के परिणामों से ऊपर के समय के परिणामों में समानता नहीं पायी जाती। देखो गो० क० गा० ६१० श्रीर जीव कांड गा० ५३)

#### (१) ग्रन्थिकरण का स्वत्य कहते हैं—

जो जीव श्रितृष्ट्रित करण काल के विविधात एक समय में जैंने शरीर के श्राकार वर्गरह ते भेद हुए हो जाते हैं उस प्रकार परिणामों से श्रप्तः करणादि की तरह भेद रूप नहीं होते और इस करण में इनके समय-समय प्रति एक स्वरूप एक ही परिणाम होता है, वे जीव श्रितश्यिनमंल व्यान रूपी श्रीम से जलाये हैं कर्मरूपी वन जिन्होंने ऐसे होते हुये श्रीनृष्ट्रित करण परिणाम के धारक होते हैं, इस श्रीनृष्ट्रित करण का काल भी श्रंत-मुँहुतं मात्र है। (देखो गो० क० गा० ६११-६१२)

६४. कमं स्थित की रनना का सद्भाव कहते हैं— व तब कमों की स्थिति की रचना में घर राशियों की प्रावस्थकता रहती है।

- १, द्रव्य-जो पहले प्रदेश वंघाधिकार में कहे हुए समय प्रवद्ध के प्रमाण वध प्राप्त कर्म पूद्गल समृह हैं।
- २. ियति स्रायाम उस समय प्रवद्ध का जीव के साथ स्थित रहने का काल स्थिति ग्रायाम है, वह स्थिति संख्यात पल्य प्रमारा है।
- ः गुण हानि ष्रायाम निषेकों में शलाकाग्रों का भाग देने से जो प्रमाण हो वह गुण हानि ग्रायाम का प्रमाण होता है गूण हानि का ग्रर्थ कर्म परमासुग्रों का ग्राधा-ग्राधा हिस्सा होना चाहिये।
- ४. नाना गुए हानि-ग्रन्योन्याभ्यस्त राशि की अर्धच्छेद राशियों को संकलित अर्थात् जोड़ने से नाना गुरा हानि का प्रमाण होता है, इस प्रकार पत्य की वर्ग शलाका का भाग पल्य में देने से अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण होता है ग्रीर पल्य की वर्गशलाका के ग्रर्ध-

च्छेदों को पल्य के, अर्ध च्छेदों में घटाने से जो प्रमाण आवे उतनी नाना गुण हानि राशि जाननी चाहिये।

- थ. निषेकाहार श्रर्थात् दो गुए। हानि-गुण हानि का गुना प्रमाण निषेकहार होता है, उसका प्रयोजन यह है कि निषेकाहार का भाग विवक्षित गुण हानि के पहले निषेक में देने से उस गूण हानि में विशेष (चय) का प्रमाण निकल ग्राता है।
- ६. श्रन्योन्याभ्यस्त राशि मिथ्यात्वनामा कर्म में पल्य की वर्ग शलाका को श्रादि लेकर पल्य के प्रथम मूल पर्यंत उन वर्गों का श्रापस में गुणाकार करने से श्रन्यो-न्याम्यस्त राशि का प्रमाण होता है। इस प्रकार पल्य की वर्ग शलाका का भाग पत्य में देने से श्रन्योन्याम्यस्त राशि का प्रमाण होता है।

इस तरह द्रव्यादिकों का प्रमाण जानना (देखो गो० क० गा० ६२२ से ६२८)

# शब्द कीष



श्रगुरुलघु चतुष्क = श्रगुरुलघु १, उपघात १, पर-घात १, उच्छवास १ ये ४ ग्रथवा ग्रगुरुतघु १, उप-घात १, परघात १, उद्योत १, ये ४ जानना । (गो० क० गा० ४००-४०१ देखो)

श्रगुरुलघुद्धिक=श्रगुरुलघु, उपघात ये २ जानना । श्रंगी-पांग दो पैर, दो हाथ, नितम्ब-कमर के पीछे का भाग, पीठ, हृदय और मस्तक ये ब्राठ शरीर में अंग हैं ग्रीर दूसरे सब नेत्र, कान वगैरह उपांग कहे जाते हैं।

प्रघाति कर्म = जीव के अनुजीवी गुर्गों का नाश नहीं करने वाले ग्रायु, नाम, गोत्र ग्रौर वेदनीय ये ४ कर्मों को ग्रघातिया कर्म कहते हैं। (गा० ६)

श्रवलावली कर्म बंध होने के बाद एक श्रावली

तक उसका संक्रमरण, उदीररणा, उदय या क्षय नहीं होता उस काल को ग्रचलावली कहते हैं। (गा० १५६, ५१४ देखो)

प्रघ: प्रवृत्तिकरणः ज्ञिस कारण से इस पहले करण में ऊपर के समय के परिणाम नीचे के समय संवंधी भावों के समान होते हैं उस कारण से पहले करण का नाम 'ग्रघ: प्रवृति' ऐसे ग्रन्वर्थ (ग्रर्थ के ग्रनुसार) नाम कहा'गया है। (गा० ८६८ देखो)

**ग्रघ: प्रवृत्ति संक्रमरा**=वंघरूप हुई प्रकृतियों का श्रपने बंध में संभवती प्रकृत्तियों में परमारागुग्रों का जो प्रदेश संक्रमण होना वह अधः प्रवृत्ति संक्रमण है। (गा० ४१३ देखो)

प्रधंच्छे 1= २ इस संस्था को २ संस्था से जितने बार गुगाकार करके जो विशिष्ट संस्था ग्रावेगी उस संस्था का उतने ही २ संस्था के ग्रांकड़े ग्रधंच्छेद जानना जैसे ४ का ग्रधंच्छेद २×२=४) २ है। १६ का ग्रधंच्छेद ४ (२×२×२×२=१६) चार जानना (गा० ६२५-६२६ देखो)

श्रद्धा - काल विशेष जानना (गा० २०५ देखो)

श्रधिकरण = जिस स्थान में दूसरे (इतर) स्थान (श्राघेय) रहते हैं उसे अधिकरण कहते हैं। (गा० ६६० देखो)

ग्रध्नुव वंध = जो अन्तर सिहत वंध हो अर्थात् जिस वंध का अंत आ जावे उसे श्रध्नुव वंध कहते हैं। (गा० ६०-१२३ देखो)

श्रनािच पुद्गल द्रव्य = जिस पुद्गल द्रव्य को श्रिमिन तक कभी भी कर्मत्व प्राप्त नहीं हुश्रा है श्रयाित् जिसको कभी भी जीवात्मा ने कर्म रूप ग्रह्ण नहीं किया है। उसे श्रनािद पुद्गल द्रव्य कहते हैं। (गा० १८५ से १६० देखो।

भ्रनादि बंध = श्रनादि काल से जिसके वंध का श्रभाव न हुआ हो।

धनुकृष्टिचय - श्रनुकृष्टि के गच्छ का भाग ऊघ्वंचय में देने से जो प्रमाग हो वह जानना (गा० ६०० से ६०७ देखो)

भ्रनुकृष्टि = नीचे श्रीर ऊपर के समयों मे समानता के खड होने को श्रनुकृष्टि कहते हैं। (गा० ६०५ देखो)

श्रनुभागाय्यवसाय स्थान = जिस कपाय के परिगाम से कर्म बंधन में श्रनुभाग पड़ता है जस कपाय परिगाम को जानना (गा० २६० देखों)

श्रनुभाग यंध=कर्मों के फल देने की शक्ति की हीनता व अधिकता को श्रनुभाग वंध करते हैं। (गा॰ = हे देखों)

धनेक क्षेत्र = भनेक शरीर से क्की हुई सब लोक के क्षेत्र को सनेक क्षेत्र कहते हैं (गा० १८६ देशों) श्रनंतानुवंधी कथाय = श्रनंत नाम संसार का न्है, परन्तु जो उसका कारण हो वह भी ग्रनंत कहा जाता है, सो यहां पर मिथ्यात परिणाम को श्रनन्त कहा गयाहै, क्योंकि वह श्रनंत संसार का कारण है, जो इस श्रनंत-मिथ्यात्व के श्रनु-साथ साथ बंधे उस कपाय को श्रनंतानु-वंधी कपाय कहते हैं, (गा० ४५ देखों)

क्षपकर्व काल = आयु वंध होने के जो आठ तिभाग काल होते है वे अपरिवर्तमान परिणाम = जो परिणाम समय समय बढ़ते ही जावें अथवा घटते ही जावें ऐसे संक्लेश या विशुद्ध परिणाम अपरिवर्तमान कहे जाते हैं। 'गा० १०७।

श्रपवर्तन घात = श्रायु कर्म के श्राठ श्रपकर्पणों (त्रिभागों) में पहली वार के विना दिनीयादि बार में जो पहले बार में श्रायु वंघी थी उसी की स्थिति की वृद्धि या हानि श्रयवा श्रवस्थिति होती है श्रीर श्रायु के बंध करने पर जीवों के परिणामों के निभित्त से उदयप्राप्त श्रायु का घट जाना उसको श्रपवर्तन घात (कदली घात) कहते हैं। गा० ६४३ देखों)

श्रत्रवास्थान कवाय = जो 'ग्र' श्रर्थात् ईपत्-योड़े से भी प्रत्यास्थान को न होने दे, ग्रर्थात् जिसके उदय से जीव श्रायक के व्रत भी थारणा न कर सके उस फोध, मान, माया, लोभ स्य चारित्र मोहनीय कर्म को श्रप्रत्या-स्थानावरणा कपाय कहते हैं। (गा० ४५ देखो)

ध्रत्यतर यंघ - पहले बहुत का बंघ किया था पीछे घोड़ी प्रकृतियों के बंघ करने पर ध्रत्यतर बंघ होता है। (गा० ६६ देखों)

श्रवस्थित यंघ = पहले श्रीर पीछे दोनों समयों में समान (एकसा) वंघ होने पर श्रवस्थित यंघ होता है। (गा० ४६६ देखी)

भवक्तव्य बंध = पहले मोहनीय कमें का बंध न होते हुये प्रगले समय में उसका बंध हो जाय तो उसे प्रवक्तव्य बंध कहते हैं। (गा० ४६६ देगो)

ग्रविभाग प्रतिच्छेद = निसका हुमरा भाग न हो ऐसे यक्ति के ग्रंस को अविभाग प्रतिच्छेद कहते हैं। सी यह पर उलटे कम से कहा है, इसका सीवा कम—श्रविभाग प्रतिच्छेद का समूह वर्ग, वर्ग का समूह वर्गगा, वर्गगा का स्पर्द क, स्पर्ड क का समूह गुगा हानि गुगा हानि का समूह समूह स्थान ऐसा जानना चाहिये (गा० २२६)

ग्रसस्यात लोक प्रमाण = ग्रसंख्यात को ग्रसंख्यात से गुणाका र करने से जो संख्या ग्रावेगी वही जानना ।

ग्रसातावेदनं य कम = जो उदय में ग्राकर जीव को शारीरिक तथा मानसिक ग्रनेक प्रकार के नरकादि गति-जन्य दु:खों का 'वेदयित' भोग करावें ग्रथवा 'वेद्यते ग्रनेन' जिसके द्वारा जीव उन दु:खों को भोगे वह ग्रसाता वेदनीय कमें है। (गा० ३३ देखों)

श्रागम भाव कर्म जो जीव कर्म स्वरूप के कहने वाले श्रागम का जानने वाला ग्रीर वर्तमान समय में उसी जास्त्र का चिन्तवन (विचार) रूप उपयोग सहित हो उस जीव का नाम भावागम कर्म श्रथवा ग्रागम भाव कर्म कहा जाता है (गा० ६५ देखी)

भादेश = मार्गणा को स्रादेश कहते हैं। (गा॰ ६६० देखो)

श्राधेय = ग्रधिकरण में जो दूसरे स्थान रहते हैं उये ग्राधेय कहते है।

श्रावाधा काल = कार्मास शरीर नामा नाम कर्म के उदय से योग द्वारा श्रात्मा में कर्म स्वरूप से परिसामता हुश्रा जो पुद्गल द्रव्य वह जब तक उदय स्वरूप (फल देने स्वरूप) श्रथवा उदीरसा स्वरूप न हो तब तक के उस काल को श्रावाधाकाल कहते हैं। (गा० १५५ देखों)

श्राधाम स्थिति वंध में जो समय का प्रमारा है उसी को श्रायाम जानना।

श्रायु कर्म जो जीव को नरकादि शरीर में रोक रक्षे उसे श्रायु कर्म जानना श्रयवा विवक्षित गति में कर्मोदय से प्राप्त शरीर में रोकने वाले श्रीर जीवन के कारण भूत श्राधार को श्रायु कहते हैं।

ग्राहारक चतुष्क = ग्राहारक शरीर १, ग्राहारक ग्रंगों पांग १, ग्राहारक वंधन १, ग्राहारक संघात १ ये ४ जानना । झाहारकद्विक ≕न्नाहारक शरीर १, त्राहारक ग्रंगीर पांग १ ये २

इंगिनी मरण = अपने शरीर की टहल आप ही अपने अंगों से करे, किसी दूसरे से रोगादि का उपचार न क्रावे, ऐसे विधान से जो सन्यास धारण कर मरे उस मरण को इंगिनी मरण कहते हैं। (गा॰ ६१)

उच्छिष्टावली ≕ उदय न होते हुये वचा हुश्रा प्रथम स्थिति के निपेक ।

उत्तर धन अप्रचयधन शब्द देखो ।

उदय = अपने अनुभाग रूप स्वभाव का प्रकट होना अथवा अपने कार्य करके कर्मपने को छोड़ देना (गाउ १३६ देखों)

उदय व्युच्छित्। चंदय की मर्यादा जहां पूर्ण होता है और श्रागे उदय नहीं होता उस श्रवस्था को उदय-व्युच्छित्त जानना।

उदयावि = उदय व्युच्छित्ति को ही उदयावि कहते हैं।

उदीरणा = श्रागाभी उदय में श्राने वाले निपेकों को नियत समय के पहले उदयावली में लाकर फलानुभव देकर खिर जाना श्रर्थात् जिना समय के कर्म का पनव होना इसको उदीरणा कहते हैं। (गा० २०१, ४३६ देखों)

उद्देलन = वंधा हुन्ना कर्म वंध को उकेल कर दूर (नाक्ष) करना उद्देलना है।

उद्वेलन संक्रमण = ग्रधः प्रवृत्त ग्रादि तीन करणक्ष परिणामों के विना ही कर्म प्रकृतियों के परमाणुग्रों का ग्रन्य प्रकृतिक्ष परिणमन होना वह उद्वेलन संक्रमण है ! (गा० ४१३ देखों)

उपवाद योग स्थान = उत्पत्ति के पहले समय में जो योग स्थान रहता है, वही जानना । गा० २१६ देखी;

उपयोग चाह्य तथा श्रम्यन्तर कारगों के द्वारा होने वाली श्रात्मा के चेतन गुग की परिगति को उपयोग कहते हैं।

उपराम योग्यकाल=सम्यवत्व प्रकृति श्रीर सम्यग्म-

थ्यात्व प्रकृति इनकी स्थिति पृथवत्व सागर प्रमागा त्रस के शेष रहे और पत्य के असंख्यातवे भाग कम एक सागर प्रमागा एकेन्द्रिय के शेष रह जावे वह 'वेदक योग्य काल' है और उससे भी सत्ता रूप स्थिति कम हो जाय तो वह उपशम योग्य काल कहा जाता है। (गा॰ ६१५ देखो)

एक ेच स्थम निगोदिया जीव की घनांगुल के असंख्यातवें भाग अवगाहना (जगह) को एक क्षेत्र जानना।

एकान्तानुवृद्धि योग स्थान = एकान्त ग्रर्थात् नियम कर ग्रपने समयों में समय समय प्रति ग्रसंख्यात गुएगी श्रविभाग प्रतिच्छेदों की वृद्धि जिसमें हो वह एकान्तानुवृद्धि स्थान है। । गा० २२२ देखों)

ग्रोघ = गुरा स्थान को ग्रोघ कहते हैं। ग्रीराल=ग्रीदारिक शरीर को ग्रीराल कहते हैं। ग्रीदारिकद्विक=ग्रीदारिक शरीर १, ग्रीदारिक

श्रंत: कोडाकोडी = एक कोडी के ऊपर श्रीर कोडा-कोडी के भीतर। श्रंगोपांग १ ये २ जानना।

फ़ुतकृत्य धेदज = जो वेदक सम्यग्द्दिष्ट मनुष्य गति में क्षायिक त्राम्यवत्व को प्रारम्भ करता है वह क्षायिक सम्यवत्व मनुष्य गति में ही पूर्ण होगा अथवा अगले गति में भी होगा।

जुल=भिन्न भिन्न शरीरों की उत्पत्ति के कारए। भूत नोकर्म वर्गए। के भेदों को कुल कहते हैं।

पदली घात= अपवर्तन घात शब्द देखो ।

कोडाकोटो - एक कोडि को एक कोडि से गुग्गाकार करने से जो ग्रहम अविनो उनी को जानना।

कांडक=तमय समुदाय में राजमणा होना। (गा० ४१२ देखों) षच्छ=गुगहानि श्रायाम को गच्छ जानना ।

गुरा सक्तमरा = जहां पर प्रति समय असंत्यात गुरा श्रीराी के क्रम में परमाराषु-प्रदेश अन्य प्रकृति रूप परिराग में सो गुरा संक्रमरा है।

गुरा-स्थान=मोह श्रीर योग के निमित्त से होने वाली श्रात्मा के सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारिश्रादि गुराों की तारतम्य रूप विकसित श्रवस्थाश्रों को गुरा स्थान कहते हैं।

गुरा च अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपभगादिक के होने पर उत्पन्न हुये ऐसे जिन औपदामिकादि भावों कर जीव पहचाने जाये वे भाव 'गुरा' कहनाते हैं। (गा. द१२ देखी।

गुराहानि आयाम = एक एक गुराहानि में जितने समय या स्थान होंने उन्हीं को गुराहानि श्रायाम कहते हैं।

गुष्य=प्रत्येक गुगास्यान में ग्रीदियक भावों की जिल्ली होंगे उनको गुण्य कहते हैं।

गोत्रकर्न = टुल की परिपाटी के क्रम से चला आया जो जीव का आचरण उसकी गोत्र मंत्रा है अर्थात् उसे गोत्र कहते हैं। (गा० १३ देखों)

घाति कर्म जीव के श्रनुजीवी गुर्गी को घातते (नष्ट करते) हैं ऐसे ज्ञानावरसा, दर्शनावरसा, मोहनीव, श्रन्तराय ये ४ घाति कर्म हैं। गा०६)

घंटमान योग स्थान = भपनी अपनी भरीर पर्याप्त के पूर्ण होने के समय से नेकर अपनी अपनी आयु के अन्त समय तक सम्पूर्ण समयों में परिस्मान योगरपान उत्तर्य भी होते हैं और जयन्य भी नंभयते हैं भीर इसी तरह लड्ड्य पर्याप्तक के भी प्रथती विश्वति के प्रथ भेदों में दोनों परिस्मान योगर्यात समय है। ये प्रयो भी हैं और दहने भी है होर जैने के मैंने भी पहते हैं सो ये सब परिशाम योगस्थान या घोटमान योग समक्ते, (गा॰ २२१ देखों)

चय = सामान्य अन्तर को चय कहते हैं।

चूलिका = जो कहे हुये अथवा न कहे हुये वा विशेषता से न कहे हुये अर्थ का चितन करना उसे चूलिका कहते हैं। (गा० ३६ = देखो)

्रगत प्रतर = जगत श्रेणी को जगत् श्रेणी से गुणाकार करने से जो संख्या ग्रावेगी उसे जानना ग्रथवा एक एक स्पर्धक में वर्गणाश्रों की संख्या उतनी ही ग्रथांत् जगत् श्रेणी के श्रसंख्यातवें भाग प्रमाण है ग्रौर एक एक वर्गणा में ग्रसंख्यात जगत् प्रतर प्रमाण वर्ग है। (गा० २२५ देखों)

जगत् श्रेग्गी = लोक की चौड़ाई ७ राजु है इस राजु के रेपा को जगत् श्रेग्गी कहते हैं।

जीव समास = जिन सहश धर्मों के द्वारा ग्रनेक जीवों का संग्रह किया जाय, उन्हें जीव समास कहते हैं।

तियंक् एकादश = तियंचिहक २, एके द्रिादि जाति ४, ग्रातप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १ ये १! जानना ।

तिर्यंचिद्धक=तिर्यंचगित १, तिर्यंचगत्यानुपूर्व्य १ ये २ जानना ।

तेजोद्विक = तैजस शरीर १, कार्माण शरीर १ ये २ जानना।

त्रसचतुष्क = त्रस १, वादर १, पर्यात १, प्रत्येक १ ये ४ जानना ।

त्रस दशक = त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, श्रादेय १, यशः कीर्ति १ ये १० जानना ।

त्रस नवक = त्रस १, वादर १, पर्याप्त १ प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, ग्रादेय १, ये ६ जानना।

द्रव्यः चंघ प्राप्त पुद्गल समूह को द्रव्य कहते हैं। 'गा० ६२२ ) द्रव्य कर्म = ज्ञानावरणादि रूप पुद्गल द्रव्य का वि

द्रव्य लेश्या = वर्ण नाम कर्म के उदय से शरीर जो वर्ण होता है उसे द्रव्य लेश्या कहते हैं। (गा० ५४६ देखों)

हिचरम=श्रंतिम के पिछले उपात्य को हिचा कहते हैं।

देव चतुष्क - देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैकियि शरीर १, वैकियिक अंगोपांग १, ये ४ जानना ।

देवद्विक = देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्यं १ ये जानना ।

हेष=ग्रनन्तानुबन्ध्यादि क्रोध ४, मान ४, ग्ररि शोक २, भय-जुगुप्सा २, ६नके उदय से जो भाव होता उसे हेष कहते हैं।

धर्म कथा = प्रथमानुयोगादि शास्त्रों को धर्म कथ कहते हैं। (गा० पद देखों)

ध्रुव वंघ = जिसका निरन्तर वंघ हुग्रा करे उसक जानना।

नरकद्विक = नरकगति १, नरकगत्यानुपूर्व्य १ ये । जानना ।

नवक बंध == तत्काल जो नया बंध होता है ्उरे जानना।

नाम कर्म — जो अनेक तरह के मिनोती अर्थात कार्य बनावे वह नाम कर्म है।

नारक चतुष्क = नरकगित १, नरकगित्यानुपूर्व्य १ वैक्रियिक शरीर १, वैकियिक श्रंगीपांग १, ये ४ जानना।

नारक षट्क = ऊपर के नारक चतुष्क ग्रीर वैक्रियिक वंघन १, वैक्रियिक संघात १ ये ६ जानना।

निर्देश = वस्तु के स्वरूप या नाममात्र के कथन करने को निर्देश कहते हैं।

निष्ठापन = पूर्ण करना इसको निष्ठापन कहते हैं।

नियेक = समय समय में जो कर्म खिरे उनके समूह को नियेक कहते हैं।

निषेक हार—गुग्ग-हानि दूना प्रमागा निषेक हार होता है। (गा॰ ६२८)

पद - गुरगहानि आयाम को पद कहते हैं।

प्रकृति वंध = प्रकृति ग्रथीत् स्वभाव उसका जो वंध ग्रथीत् ग्रात्मा के सम्बन्ध को पाकर प्रकट होना प्रकृति वंध है। (गा० ८६)

प्रदेश वंघ - वंधने वाले कर्मों की संस्या को प्रदेश वंध कहते हैं।

प्रचयधन = सर्व सम्बन्धी चयो के जोड़ का ही नाम प्रचयधन है। इसको उत्तर धन भी कहते हैं। (गा० ६०१ देखों)

प्रचला = इस कर्म के उ.य से यह जीव कुछ कुछ आंखों को उघाड़ कर सोता है ग्रीर सोता हुग्रा भी थोड़ा थोड़ा जानता है। बार बार मन्द (थोड़ा) शयन करता है। यह निद्रा स्वान के समान है। सब निद्राओं से उत्तम है। (गा २५ देखों)

प्रचलाप्रचला = इस कर्म के उदय से मुख से लार बहती है और हाथ पगैरह ग्रंग चलते हैं। किन्तु सावधान नहीं रहता यह प्रचला है।

प्रति भाग--भाजक को प्रति भाग कहते हैं।

परघात चतुष्क=परघात १, श्रातप १, उद्योत १, उच्छवास १ ये ४ ानना ।

परमुखोदय=कर्म प्रकृति अन्य रूप होकर उदय को आना। (गा० ४४४)

परिएाम योगस्थान = शरीर पर्याप्ति के पूर्ण होने के समय से लेकर आयु के अन्त तक परिएाम योगस्थान कहे जाते हैं। इसको घोटमान योगस्थान भी कहते हैं। (गा० २०० देखो)

पिंड पद=एक समय में एक जीव के भव्यत्व ग्रभव्यत्व इन दोनों में से एक ही नियम से होता है। गति-लिग-कपाय-नेरगा-सम्पत्तव इनमें भी अपने ग्रपने मेदों में से एक एक ही एक समय में सम्भव होता है। इस कारण ये पिड पद हैं। क्योंकि एक काल में एक जीव के जिस सम्भवते भाव समूह में से एक एक ही पाया जावे उस भाव को पिड पद कहते हैं। (गा० = ५६ देखों)

प्रत्यनिक=शास्त्र वा शास्त्र के जानने वाले ।

प्रत्याख्यान = जिस कर्म के उदय से प्रत्याख्यान अर्थात् सर्वथा त्याग का श्रावरण हो, महाव्रत नहीं हो सके उसे प्रत्याख्यान कपाय कहते हैं।

ारा - जीव में जिनके संथोग रहने पर 'यह जीता है' ग्रीर वियोग होने पर 'यह मर गया' ऐसा व्यवहार हो, उन्हें प्रारा कहते हैं।

फालि = एक समय में संक्रमण होने को फालि कहते हैं। (गा० ४१२ देखों)

वंघ = कर्मों का ग्रीर ग्रात्मा का दूव ग्रीर पानी की तरह ग्रापस में एक स्वरूप हो जाना यही वंघ है। (गा० ३३ देखों)

भाव-गुरा शब्द देखो ।

भाव कर्म = द्रव्य पिंड में फल देने की जो सिक्त वह भाव कर्म है ग्रयवा कार्य में कारण का व्यवहार होने से उस शक्ति से उत्पन्न हुये जो ग्रज्ञानादि वा कोधादि रूप परिणाम वे भी भावकर्म हो हैं। (गा० ६ देखों)

भंग = एक जीव के एक काल में जितनी प्रकृतियों की सत्ता पाई जाय उनके समूह का नाम स्थान है घौर उस स्थान की एक सी समान संस्था रूप प्रकृतियों में जो संस्था समान ही रहे परन्तु प्रकृतियां वदल जांय तो उसे भंग कहते हैं। जैसे कि १४५ के स्थान में किसी जीव के तो मनुष्यायु श्रीर देवायु सहित १४५ की सत्ता है तथा किसी के तिर्यचायु श्रीर नरकायु की सत्ता सहित १ ५ की सत्ता है। श्रतः एक यहां पर स्थान तो एक ही रहा। वयोंकि संस्था एक है परन्तु प्रकृतियों के वदनने से भंग दो हुये। इस प्रकार नव जगह स्थान श्रीर भंग समफ लेना। (गा० १५० देखों) भवनित्रक = भवनवासी १, व्यंतरवासी १, ज्योतिपी १ ये ३ जानना ।

भाव लेश्या = मोहनीय कर्म के उदय से, उपग्रम से, क्षय से ग्रथवा क्षयोपशम से जीव की जो चंचलता होती है उसे भग्व लेश्या जानना।

भिन्न मुहूँ त = अन्तर्म हूर्त के उत्कृष्ट, मध्यम, जघन्य ऐसे तीन प्रकार जानना दो घड़ी अर्थात् ४ = मिनट का एक मुहूर्त होता है, इनमें से एक समय घटाने से ४ = -- १ = उत्कृष्ट प्रमत्म हूर्त होता है और एक आवली + १ समय = जवन्य अन्तर्म हूर्त होता है इन दोनों के वीच में के काल में मध्यम अन्तर्म हर्त असंख्यात होते हैं इन्हीं को भिन्न मुहूर्त कहते हैं।

सनुष्यद्विक = मनुष्यगति १, मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ ये २ जानना ।

स्मर्गरा स्थान = जिन स्थानों के द्वारा अनेक ग्रवस्थाओं में स्थित जीवों का ज्ञान हो, उन्हें मार्गसा स्थान कहते हैं।

नोहनीय = जो मोहै अर्थात् असावधान (अचेत) करे वह मोहनीय कर्म है। (गा० २१ देखों)

योनि कन्द, मूल, अण्डा गर्भ, रस, स्वेद आदि की उत्पत्ति के आधार को योनि कहते हैं।

राग = श्रनन्तानुबन्धी माया ४, लोभ ४, वेद ३, हास्यरित २, इनके उदय से जो भाव होता है उसे राग कहते हैं।

वर्ग = ग्रिविभाग प्रतिच्छेद शब्द देखो । वर्गाएा = ग्रिविभाग प्रतिच्छेद शब्द देखो ।

वस्तु = जिस शास्त्र में ग्रंग के एक ग्रधिकार का ग्रंथ (परार्थ) विस्तार से या संक्षेप में कहा जाय उसे वस्तु कहते हैं। (गा० ८८)

वासना काल = किसी ने कोध किया, पीछे वह दूसरे काम में लग गया। वहां पर क्रोध का उदय तो नहीं है, परन्तु जिस पुरुप पर कोध किया था उस पर क्षमा भी नहीं है। इस प्रकृर जो कोध का संस्कार चित्त में बैठा हुया है उसी को वासना का काल कहा गया है। वर्ण चनुष्क = स्पर्श १, रस १, गंध १, वर्ण १ ये ४ जानना।

वाम = मिथ्यात्व को वाज कहते हैं।

विष्यात संवम्ण = मन्द विगुद्धता वाले जीव की, स्थित अनुभाग के घटाने रूप भूतकालीन स्थित कांडक और अनुभाग कांडक तथा गुए। श्रेणी आदि परिएगामों में प्रवृत्ति होना विष्यात संक्रमण है। (गा० ४१३ देखों)

विधान = वस्तु के प्रकार या भेदों को विधान कहते हैं।

विशेष = चय को विशेष कहते हैं।

वेदक योग्य काल = उपशम थोग्य काल शब्द देखो ।

देदनीय = जो सुख दु:ख का वेदन ग्रथित ग्रनुभव करावे यह वेदनीय कर्म है। (गा० २१ देखो)

वैिक्तियिकद्विक = वैिक्तियिक शरीर १, वैिक्तियिक श्रगो-पांग १ ये २।

वैकियिक षट्क == देवगति १, देवगत्यानुपूर्वी १, नरक ति १, नरकगत्यानुपूर्वी १; वैकियिक शरीर १, वैकियिक श्रंगोपांग १, ये ६ जानना ।

व्युव्छिति = विछुड़ने का नाम व्युच्छिति है अर्थात् जुदा होना ।

श्रतार चतुष्क = तिर्यंच गति १, तिर्यंच गत्यानुपूर्व्य १, तिर्यंचायु १, उद्योत १ ये ४ जानना ।

सनद प्रबद्ध = एक समय में बंधने वाले परमाणु समूह को जानना । ( ना॰ ४ देखों )

सम्यक्त्व गुरा० = संसारी जीव पदार्थ को देखकर जानता है पीछे सप्त भंग वाली नयो से निश्चयकर श्रद्धान करता है इस प्रकार दर्शन, ज्ञान श्रीर श्रद्धान करना सम्यवत्व गुरा० कहा है। (गा० १५ देखों)

सर्व संक्रमण = जो अन्त के कांड की अन्त को की फिल के सर्व प्रदेशों में से जो अन्य प्रकृति एप नहीं हुए हैं उन परमाणुओं का अन्य प्रकृति एप होना वह सर्व संक्रमण है। (गा० ४१३ देखो) सागर = दस कोडाकोडी पत्य को सागर कहते हैं।

सातावेदनीय = जो उदय में आकर देवगित में जीव
को बारीरिक तथा मानसिक सुखों की प्राप्ति रूप साता
का 'वेदयित' — भोग – कराव अथवा 'वेधते अनेन जिसके
हारा जीव उन सुखों को भोगे वह साता वेदनीय कमें है।
(गा० ३३ देखों)

सादिपुद्गल द्रव्य = यह जीव समय समय प्रति सभय प्रवद्ध प्रमाण परमाणुग्रों को ग्रहण कर्म रूप परिणमता है। उनमं किसी समय तो पहले ग्रहण कियं जो द्रव्य रूप परमाणु का ग्रहण करता है उस द्रव्य को सादिपुद्-गल द्रव्य जानना। (गा॰ १६०)

सादिवंध = विवक्षित वंध का वीच में छूटकर पुनः जो वंध होता है वह सादि बंध है। (गा० ६० देखों)

स्तव — जिसमें सर्वांग सम्बन्धी श्रर्थ विस्तार सहित भथवा संक्षेपता से कहा जाय ऐसे शास्त्र को स्तव कहते हैं।

स्तुति = जिसमें एक ग्रंग (ग्रंश) का ग्रंथ विस्तार से ग्रथवा संक्षेप से हो उस शास्त्र को स्तुति कहते हैं। (गा॰ == देखों)

स्थानगृद्धि = इस कर्म के उदय से उठाया हुआ भी सोता ही रहे; उस नींद में ही अनेक कार्य करे तथा कुछ बोले भी परन्तु सावधानी न होय। (गा० २६ देखो)

स्थान=भंग शब्द देखो।

स्थिति = वस्तु की काल मर्यादा को स्थिति कहते हैं

स्यित वंध-ग्रात्मा के साथ कर्मों के रहने की मर्यादा को जानना। ग्र स्थावर चतुष्क=स्थावर १, नूस्म १, नाधारम् १, पर्याप्त १ ये ४ जानना ।

स्थावर दशक = स्थावर १, नूक्ष्म १, साधारमा १, ग्रपयप्ति १, ग्रस्थिर १, ग्रागुम १, दुर्भग १, दुःस्वर १, ग्रनादेय १, ग्रयमः कोर्ति १ ये १० जानना ।

स्थिति वंधाध्यवसाय स्थान जिस कपःय के परि-गाम से स्थिति वंध पड़ता है उस कपाय परिगामों की स्थान को जानना । (गा० २५६)

स्वमुखोदण=कर्म प्रकृति ग्रपनं स्वरूप मे उदय होने को कहते हैं।

स्पर्श चतुष्क=वर्गा चतुष्क शब्द देखी

संज्वलन = जिसके उदय में नंयम 'मं' एक रूप होकर 'ज्वलति' प्रकाश करे, अर्थात् जिसके उदय ने कषाय अंश से मिला हुआ संयम रहे, कपाय रहित निर्मल यथाच्यात संयम न हो सके उसे संज्वलन कथाय कहते हैं। (गा० ३३ देखों)

साधन = वस्तु की उत्पत्ति के निमित्त को माधन कहते हैं।

सुर षट्क=देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिक शरीर १, वैकियिक अंगोपांग १, वैक्रियिक बंधन १, वैक्रियिक संघात १ ये ६ जानना।

मृक्ष्म त्रय = मूक्ष्म १, अपर्याप्त १, मामारुग १ वे ३ जानना ।

क्षयदेश = अपकर्षम् का काल को क्षयदेष जानना । ( गा० ४४५ देखों )

क्षुद्रभव=एक स्वास के १०वे भाग इसनी प्रायु रहने को क्षुद्रभव जानना ।

क्षेप=मिनान गरना या जोहना।

.

en de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de Anno de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya

सागर:-दस कोडाकोडी पत्य को सागर कहते हैं सातावेदनीय-जो उदयमें आकर देवादिगतिमें जीवको शारीरिक तथा मानसिक सुखोंकी प्राप्तिरूप साताका 'वेदयति'-भोग-करावे, अथवा 'वेद्यतेअनेन' जिसके द्वारा जीव उन सुखोंको मोगै वह सातावेदनीय कर्म हैं (गा ३३ देखो)

सादिपुद्गलद्रव्य- यह जीव समय समयप्रति समयप्रवद्ध प्रमाण परमाणुओंको ग्रहणकर कर्मरूप परिणमाता है उनमें किसी समय तो पहले ग्रहण किये जो द्रव्यरूप परमाणू का ग्रहण करता है उस द्रव्य को सादिपुद्गल द्रव्य जानना. (गा. ८० देखो)

सादिसंध-विवक्षित वंघका वीचमें छूटकर पुनः जो बंध होता है वह सादिसंध है. (गा ८० देखों)

स्तय-जिसमें सर्वांग संबंधी अर्थ विस्तार सहित अथवा संक्षेपतासे कहा जाय ऐसे शास्त्र को स्तव कह ते हैं

स्मुति-जिसमें एक अंग (अंश) का अर्थ विस्तारसे अपवा संक्षेपसे हो उस शास्त्र को स्तुति कहते हैं • (गा. ८८ देखो)

स्त्यानगृद्धि-इस कर्म के उदय से उठाय। हुवा भी सोताही रहै, उस नींदमें ही अनेक कार्य करे तथां कुछ बोलें भी परंतु सावधानी न होय. (गा. २२ देखों) स्यान-भंग शब्द देखों

स्यिति-वस्तूकी कालमर्यादा को स्थिति कहते हैं. स्थितिबंध-आत्माके माथ कर्मोके रहनेकी मर्यादा को जानना

स्वावरचतुष्क-स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपयण्ति ये ४ जानना

स्यायरवतक-स्थायर, सूध्म, साधारण, अपर्याप्त सस्पर, अगुभ, पुर्भम, दुःस्वर, अनादेय, अगध-कृति में १० जानना. स्थितिबंधाव्यवसायस्थान-जिस कपायके परिणाम से स्थिति बंध पडता है उस कपाय परिणामों के स्थान को जानना (गा २५६)

स्वमुखोदय-कर्म प्रकृति अपने स्वरूपमें उदय होनें को कहते हैं. स्पर्शनतुष्क-वर्णवतुष्क शन्द देखो.

संज्वलन - जिसके उदयसे संयम 'सं' एक रूप हो कर 'ज्वलति' प्रकाश करे, अर्थात जिसके उदयसे कपाय अंग्रेसे मिला हुआ संयम रहें, कपाय रहित निर्मल यथा ख्यात संयम न हो सके उसे संज्वलन कपाय कहते हैं. (गा ३३ देखों)

साधन-बस्तुकी उत्पत्तिके निमित्तको कहते हैं. सुरषट्क- देवगति, देवगत्यानुपूर्व्यं, वैकियिक अंगोपांग, वैकियिकवंधन, वैकियिक संघात ये ६ जानना.

सूक्ष्मत्रय-सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण ये ३ जानना क्षयदेश-अपकर्षणके काल को क्षयदेश जानना (गा. ४४५ देखों)

खुद्रभव-एवरवासके १८ वें भाग इतना सामु रहने को क्षुद्रभव जानना.

क्षेप-मिलान करना या जोड्ना.

#### साषु स्नुति

शीतरितु जोरै अंगमय ही मकोरै, तहां तन को न मोरैं नदी घोरें।

धीर जे खरे जेठ की सकौरें, जहां अंहा छोड़ें पशु पंछी छोड़ होरें॥

गिरिकोरी तप वे घरें घोर घन भोर चटा चहुँ ओर टोरी वयों वयों।

चलत हिलोर स्यों स्यों फोर्स बलये अरे: हम मेहू लोरे परमारच मों ।। प्रीति जोरैं ऐसे गुरु ओरैं, हम हाथ अंजुलि करे शीतरितु जोरैं।।

#### ₹वरूपसम्बोधन —

मुनताऽमूनतैकरूपोयः कमंभिः संविदादिना । अक्षयं परमात्मानं ज्ञानमूर्ति नमामि तम् ।।१।। श्रो मट्टाऽकलंक विरचितः

(१)

### चौतीसस्थान दर्शनपर अभिप्राय

ले. १) ताराचन्द जैन शास्त्री न्यायतीर्थं नागपूर.

> २) सिगई मूलचंद जैंन अध्यक्ष श्री दि जैंन परवार मंन्दिर ट्रप्ट नागपूर

श्रद्धेय पूजनीय १०८ श्री आदिसागरजी महाराज ( शंडवाल ) जैनसिद्धान्त के मर्मज्ञ हैं, आपने चारों अनुयोगों के महान ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया है. अतः आप चारों अनुयोगोंमें अगाध पांडित्य रखते हैं आपने कर्म सिद्धान्त के ग्रंथ गोम्मटसार कर्मकांह, रूबियसार आदिका सूक्ष्म दृष्टिसे अध्ययन किया, है. अतः आप कर्मसिद्धान्त के विशेषज्ञ हैं आपने इस अत्यंत कठिन कर्म विपयको जिज्ञासुओं के लिये अत्यंत सरल और सुबोध बनानेके लिये। अत्यिकक प्रयत्न किया है. आपने इस कर्म विपय की पूर्ण जानकारी करानेके लिये 'चौतीसस्थान दर्शन' नामका ग्रंथ निर्माण किया है. इस ग्रंथमें जिज्ञासुवोंको अल्प समय में कर्म सिद्धांत का सुगम रीतिसे वोध हो सकता है.

क मंत्रकृतिओं के मेद प्रमेद और प्रयोजनादिकों जान ने के लिये ग्रंथके चौंतीसस्थान की संदृष्टियां या चार्ट अत्यंत उपयोगी हैं. इन चार्टोका गंमीरतासे अध्ययन करने पर कोई भी जिज्ञामु विषय का पूणें ज्ञाता बन सकता है.

पूज्य महाराज ने इस भोगायान विषम कालमें महान वीतरागता वर्षक ग्रंथ की रचना करके भव्य जीवोंका महान उपकार किया है आपके ऐसे पावन कार्यका सवलोग अभिनन्दन करेंगे

समस्त आत्महिताकांक्षी भव्य जीव ऐसे महान ग्रंथोंका अध्ययन करें और अपना अज्ञान भाव दूर करें. इस विभिन्नाय से ही पूज्य १०८ श्रो. आदिसागरजी महाराजने इस ग्रंथ का निर्माण किया है. यह ग्रंथ सभी शास्त्रभंडारों और मंदिरोंमें संग्रहणीय हैं.

इस ग्रंथ के निर्माण कार्य में आदरणीय ब्रह्मचारीजी उरुफतरायजी रोहतक निवासीने पूणं योग दिया है. वहाचारीजी वृद्ध होने पर भी इस पुनीत कार्यके सम्पादन और प्रकाशन में अहर्निश संलग्न रहे हैं. तभी आप ऐसे कठिन विषय के ग्रंथको प्रकाशित करने में समर्थ हुवे हैं

इसलिये पाठकवृन्द ब्रह्मचारीजी के भी अत्यंत कृतज रहेंगे

(२)

ले स्रजभान जैन प्रेम आगरा

श्री परमपूज्य अमीक्षण ज्ञान उपयोगी. चारित्र चूडामणी, तपो मूर्ति, श्री १०८ मुनि आदि सागरजी शोडवाल (बेलगाम) मैसूर प्रान्त

चरणस्थर्श— सादर विनम्प्र निवेदन हैं—
कि आज ता ६ अक्टूबर ६७ को व्र उल्फतरायजी
( रोहतक ) ने अपने चातुर्मास योग स्थान जैन धर्मशाला टेंकी मुहल्ला मेरठ सदर में चौंतीस स्थान दर्शन
यंथ के विषय समझाए, मैं उन प्रकाशन के तात्विक
विषयों को सुनकर वडा प्रभावित हुवा।

इस विशाल ग्रंथ में जीव कांड, कमें कांड, घवला पूज्य ग्रंथों के आध्यातिमक विषयों को मणि माला की तरह एक सूत्र में पिरोया है जो प्रथक २ विखरे थे, यह ग्रंथ परीक्षाओं में वैठनेवाले विद्यावियों स्वाध्याय प्रेमियों, विद्वानों, जिजासुओं को दर्षण की तरह जान ह्यकाने में सह यक होगा। मुझे ज्ञात हुआ कि आदरणीय पू. ब्रम्हचारीजी ही इस पिवत्र ग्रंथ के प्रकाशक हैं। वास्तव में उन्होंने इस के संकलन में आप को पूर्ण सहयोग दिया हैं। साथ ही प्रकांशन आदि के पूरे व्यय का भार अपने ऊपर लिया हैं। उन का परिश्रम और सहायता सराहनाय हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि धर्म प्रेमी वन्धु इस अमृत ज्ञानरूपी रस के प्रवाह से कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर होंगे। इस अन्तर्भावना के साथ मेरी शुभ सम्मति हैं

#### पुस्तक मिलने का पता-

सूचना नं १) निन्मलिखित स्थानों में से किसी मी स्थान के समाज के प्रमुख सज्जन का पत्र मिलने उपर वहां के जिन मंदिर, १०८ मुनि महाराज, तथा जच्च कोटि के विद्यालयों को विना मूल्य भेंट रूप भेजी जायगी।

- नं. २ हर प्रांत के सज्जन अपने प्रांत के केंन्द्र नेता से पत्र व्यवहार करें जिनकी सूची निन्मलिखित हैं जनके पास पुस्तकों का भंडार रहेगा।
- 1) P. C. Jain, 17 B, Dilkhush Street, Park Circus Calcutta-17. Bengal
- 2) Seth Sukmalchand Jain.
  B Indarkumar Jain.M A Kishan
  Flour mill Railway Road Meerut.
  city (u p)
- 3) Master Jaichand Jain, Jain, Street Rohtak city (Hariana)
- 4) Singhai Moolchandji Jain. Proprietor sundar sarec Bhandar Handloom market Gandhibagh Nagpur. (Maharashtra)
- 5) Dr. Hemchand Jain, Karanja Distt Akola, (Maharashtra)

- 6) Dr. S. S. Jain Plat No. 203 Prabhukunj, Pedder Road Bombay 26.
- 7) Seth Ratanchand Fakirchand 37 A, Shanti Bhavan, Chaupati Bombay - 7 Sea Face
- 8) P. K. Jain Times of India 07/1 Quartar Gate Poona-2
- सूचना ३) निन्मलिखित केन्द्रों से मूल्य पर पुस्तक मिल सर्नोगी और वह मूल्य द्रव्य उसी संस्थाके दान खाते में जमा हो जायगा। उस विकी द्रव्य से प्रकाशक का कोई संबंध नहीं है।
- 1) Master Jagadha mal Jain Headmaster, Jain High School, Rohtak city (Hariana)
- 2) Shri Shantisagar Digambar Jain Sidhant Prakashni Sanstha Shanti Birnagar P. O. Shri Mahabirji (Rajasthan)
- 3) Digambar Jain Mahabir Pathshal, Parwar Pura, Itwari Nagpur (Maharashtra)
- 4) Shri Mahabir Digamabar Jain Brahmcharya Shram, Gurukul, Karanja, Distt Akola [Maharashtra]
- 5) Ratanatraya Swadhyay Mandir Shedbal p o. Shedbal Distt Belgaon, Mysore state

पंवित

अशुद्धता

पृष्ठ

शुद्धि-पत्र [नंबर १]

चींतीसस्थान दर्शन कोष्टक के शिरनामा में (हेडिंग में) जो अशुद्धियां हैं उनका शुद्धिकरण निम्नप्रकार कर लेना चाहिये.

शुद्धता

२९	8	मिथ्यात्वगु णस्थान	ſ	मिथ्यात्वगुणस्थान में
२९	२	(कालम) ६-५-५		४- <b>५-६</b> -७
३३	,,	कोष्टक नंबर २	सासादन गूणस्थान वे	ह शिरनामा (हेडिंग) में ३ से ८ समान (हेडिंग) सुधार कर लेन।
३९	२	सामान आलाप	₹	गमान्य आलाप
सूचः	ना:– इसी तरह	र और जगह जहां जहां	ं <b>स</b> ामान शब्द हो वहां व	वहां सामान्य समझना.
४१	१	सासादन गुणस्थान	मिश	प्रगुणस्थानमें -
४३	२	पर्याप्त और अपर्या	<sup>रे</sup> त के बीच का यह रेख	ा निकालकर कालम ५–६ के बीच
		रखना चाहिये		
५२	४	कॉलम ३ में ३ अं	क रिखलेना चाहिये	
६२	२	कॉलम ४ में ४ अं	क लिख लेना चाहिये	·
६३	२	पर्पाप्त और अपर्या	प्त के बीच का यह रेखा	निकालकर कालम ५-६ के बीचणें
				लम ६-७-८ में चाहिये.
७०	२	पृष्ट ७०, ७३-७५	।-७८ ८७ तथा ८३ भें	नंबर.
७३	२	27	"	27
७५	२	37	i 75	,,
७८	२	¢†	, >1	71
८१	२	>,	, ,,	"
१८५	२	पर्याप्त और अपर	र्गप्त के बीचका यह – रे	रेखा निकालकर कालम ५–६ कें
		वीच में लगाना चाहि	्ये .	
. १८५	8	<b>६७</b> ७	₹ <b>-</b> ७-८	

# शुद्ध-यत्र (नंबर २)

प्रत्येक स्थानका विषयके २ रे कालगरी आगे ८ कालम तक एक विषय के सामने एक एक विषय आना चाहिये परंतू यहां हरेक पन्ने में अनेक जगह का विषय इस प्रकार एक के सामने एक विषय नहीं आया है पंक्तियां ऊपर नीचे हो गये हैं। उदाहरणार्थ पृष्ट २९ मैं १२ ज्ञान स्थान देखो

३ रे कालम में	४ थे कालग में	५ वे कालम मे
	१ भंग	१ ज्ञान

- २९ ८ (२) (तिर्यचगित में को. नं. १७ देखों को. नं. १७ देखीं यहां ४ घें और ५ वें कालममें के १ भंग और १ ज्ञान को पंक्ति (२) तिर्यं न गित में के सामने आना चाहिये घा परन्तु वैसा न होकर इस पंक्तिके ऊपर के पंक्ति में रख दिया है यह गलत है। इसी तरह नीचें के पंक्तियां देखों
  - (३) मनुष्यगित में (४) देवगित में इन में भी सारेभंग और १ ज्ञान का पंवितको एक पंवित ऊपर रख दिया है इस गळती को सुधार लेना चाहिये अर्थात तियंन गतिके सामने १ भंग १ ज्ञान और मनूष्य गतिके सामने सारे भंग १ ज्ञान देवगितके सामने सारेभंग १ ज्ञान इस प्रकार समझकर पढ़ा जाय इसी तरह और भी अनेक जगह की गळतियोंको सामने समझकर पढ़ना चाहिये.

## शुद्धि- तत्र नंबर (३)

इस पुस्तक में अनेक जगह में मंग के अनुस्वार छूटकर भंग ऐसा छप गया है इसिलये यहां भून्य देकर सुघार कर लेना चाहिये इसी तरह और भी बंघ, संस्या, संज्ञा, संजी, संयम आदि शब्दों के ऊपर का शून्य जहां जहां नहीं हो वहां भून्य देकर सुघार करके पढ़ा जाय.

## शुद्धि-पत्र नंबर [४]

पृष्टांक	क्रमांव	ह अगुद्ध	गुड
2	१	१ गुणस्थान १४	१ गुणस्थान १४+१
ሄ	१२	(कालम ३ मॅं) (१७) सम्यन्त्व	[१७) सम्यवत्य-६
Y	१२	(,,)	(६) द्यायिकसम्यक्तन-
છ	२२	(कालम १ में) नामकाय	नामकर्मे
14	१९	(,,) व असत्य	न असत्य
१५	Ę	(कालम २ में) तिद्यच	तिर्यच
१७	28	(") चदुरिन्द्रियजन्य	<b>नधुरिन्द्रियजन्य</b>
१८	૭	(,,) ९७	१७
१९	₹ o	(,, ) सहोगकेवशी	सयोगकेवली
28	8.8	- (कालम १ में) श्रद्धान	श्रद्धान
२२	હ	(का. २ में) २१ प्रकृतियों के	२५ प्रकृतियों के
२४	ę	(का. ५ में) अगुणस्यान	<b>धतीतग्</b> णस्यान
२४	२	(,,) अजीवसमास	श्रतीत जीवसमास
२६	२०	(का ३ में) सम्बनत्विमध्यास्त्र	मिच्पास्य
३६		क पृष्टसंस्या- (२५]	(२६ क)
	88		नेत्री
२८	8	[काँ ६ में) २ के मंग	१-२ के भंग
	१३	(काँ. ७ में) ६-७-८-९ के भंग	
२८	१५	(कॉ ७ में) ७-८-९ के मंग	६-७-८-६ मेः मंग

```
26
       १५
               काँ. ८ में) ६-७-८ के भंग
                                                  ६-७-८-३ के मंग
               (कॉ. ७ में) भंग
                                                  १ भंग
₹ १
        १
               (कॉ, ८ में) १ अवस्था
                                                 १ भंग
३१
        Ę
                                                 १९ देखो
               (,,) ९ देखो
38
        ረ
               (कॉलम ४ में) सारेमंग
३२
       १२
                                                 सारेभंग
३२
       १३
               (,,)
                    को.नं १७ देखो
                                                 अपनी अपनी अवस्थाके को. नं १७ देखी
               (कॉ, ४ में ] १ भंग
                                                 कोई १ मंग
३२ क
       १
               (कॉ. ६ में) २४-२५-२७-२२
३२ क
                                                २४-२५-२७-२७
        २
              (कॉ ७ में) सारेभंग
३२ क
                                                सारेमंग
              (,,)
                      को. नं. १७ देखो
                                                 अपनी अपनी अवस्थाके को. नं १७ देखी
३२ क
       २
               (कॉ. ४ में) १ भंग
३२ क
        ₹
                                                १ भंग
               (,,] को. नं १९ देखों
        ሄ
                                                 वपनी अपनी अवस्था का
 "
                                                    को. नं. १९ देखो
               स्पर्श १ रस १ वर्ण १,
                                                   स्पर्श १ रस १ गंघ १ वर्ण १
३२
       १९
               (कालम ७ में) ७
        १
३३
                                                    8
               (कालम १ में) २ पर्याप्ति
                                                    ३ पर्याप्ति
३३
               (कालम ४ में) ०१
३३
        ४
                                                    Şο
               (कालम ६ मे) साधान
३३
        Ę
                                                    प्रमाण
               (का. ६ में) ७-७-६-५-४-५
३३
                                                   ७-७-६-५-४-३
        80
                                                   पर्थाप्ति
        १२
                  (,,)
३३
                          सामास
               (का. ७ में) सामास
                                                   पर्याप्ति
३३
        १७
३४
               (का. २ में) ६
        २
                                                   0
₹8
               (का. ३ में) ६
        ४
               (का. ४ में) घटाकर
३४
                                                   घटाकर ९
        ረ
३४
                (का. १ में) संयम असंयम
                                                  संयम
       १८
                (का. २ मे) १
३४
                                                  १ असंयम
        Ø
                (का. ४ में) लीन
३५
                                                  नील
        ४
                (का. ७ में) ०-३-६-३-१ के भंग
                                                  ०-३-६-३-३-१-३-१ के भंग
३५
         २
               (का. ३ में के ३ से १० रद्द समझना)
34
₹
               (का. ३ में) अनाहलकही
                                                  १ आहारकही
        ξ
               (कॉलम ७ में) को गिनकर
                                                   ९को गिनकर
       १९
३६
               (का. ७ मे) त्रीपंच
                                                   तिर्यच
३७
        ४
               [का. १ में) २६ माव
                                                    २३ माव
 ३७
         १
                                                   एकेन्द्री आदि जाति ४
               २५ एकेंन्द्री आदि जाति ४
36
        २
                                                   असंप्राप्तासृपाटिका
३८
               सृपाटिक
        २
                                                   स्यावर
36
        २
               अस्थावर
                                                   स्थावर
36
        ५
               अस्थावर
```

३८	ų	आचरीय यतीवृपमा आचार्य	यति वृपभाचार्यं
36	१७	ळाभ को में से	लाख कोटि में मे
३९	3	(कॉलम १ में) पर्याप्ति	३ पर्याप्ति
35	१०	(का-३ में) ११ काभंग	१० का भैग
३९	१८	(का. १ में) और काययोग	ऑदारिक काययोग
४०	१	(का ३ में, २	3
४०	9	(का. ३ में) २१-२७ के	२१-२० के
¥•	१५	(का. ३ में) १९ से १९ देखो	१६ से १९ देखो
Y0	२२	(का ३ में) ९	Ę
४१	१	(का. २ में) <sup>३</sup>	<b>१</b>
४१	8	(का ३ में) ३	<b>(</b>
४१	१८	(का २ में) व, मिश्रवायद्योग	वै . भिश्रकायोग
४१	२६	[का, २ में) ये ३३ भाव	जीवत्य १ ये ३३ माव
४२	9	यशर्कीति १ ये ३६	यशकीति १, अयदाकीति १, ये ३६
४२	१५	पल्यका	लोकका
४३	१	(का.३ में)६	१
ጸጸ	२	(का. ४ में) ४ गतियों में से	को नं १६ में १९ देखी
ጸጸ	ą	(का ७ में) १० देखो	१९ देशो
ጸጸ	ሄ	(का. ४ में) १ मंग	१ गति
<b>አ</b> ጸ	4	को. न. १६ ते	चारगतियों में ने कोई १
ጸጸ	Ę	१९ देखो	गति जानना
५५	¥	(का. २ में) आहार का	आहा <i>र</i> क
४५	૮	(का. ३ में) कार्याकाय	कार्माणकाय
४५	१३	(को८ में को. नं १७	को. नं १८–१९ देखो
¥4	<b>\$</b> X	१८ देखी	>> 27
४५	₹₹	•	सारेमंग
४५	१३	(का ४ में) और का. ७ मे	71
४६	o	(का. १ में)और(का ७ में)	१ भंग १ भंग गाउँभंग
४६	Đ,	१ मंग १ मंग	सारेभंग सारेभंग
		१भंग १भंग	सारेमंग सारेभंग
λÉ		(चा. ६ में) को. नं. १६	की. मं. १९
ЯÉ		(का. ४ में) १ भग	सारेमंग
	१३	[,,]	न देनंग
		(मा. ७ में) १ मंग	<b>छ।</b> रेशंग
		[का. ६ में] योग	भीग
	२८	* · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•
¥ξ	२५	(का. ८ में) को नं. १७	को, में, १६

```
का. ३ में) २-३ के भंग
                                                     ३-२ के मंग
 ४७
        २१
                [का. ३ में] ६-३ के
                                                     ३-३ के
 ሄሪ
         Ę
                (कालम ६ में) जानना
 ४८
         Ę
                                                    २ का मंग को नं. १७ देखो
                (का. १ में) १० ध्यान
 ४९
         १
                                                     ११ ध्यान
                (का. ६ में) को नं. १७
 ४९
                                                    को. नं १६
         4
                (का. १ में) १२ आस्रव
 ४९
         २
                                                    २२ आस्रव
 ४९
                (का. ९ मे) धटाकर ३६
        १२
                                                    घटाकर ४६
                (का. ६ में) और का. यो.
                                                    औ. का १ वै. का. १ ये १०
 ४९
        ११
                (क. ६ में) को. नं १६
 ४९
        १७
                                                    को. नं. १७
 ४९
                (का. ६ में ) ३३-३३-३२
                                                   32-33-33
        २२
                                                   नं. १९ देखो
 ४९
                 (,,) नं. १० देखो
        २३
                                                   को. नं. १३
 ४९
        Ę
                का. ८ में को. नं १८
                                                   को नं. १८
 ४९
        १२
                        को. नं. १६
                का. १ में १६ भाव
 ४९
                                                   २३ माव
        Ę
                (का. ३ में) में १८-१७
                                                   में २८-२७
४९
        १९
४९
                        गति ३२-१९
                                                   गतिमें ३२-२९
       २१
                कालम ४ में और का ७ में
40
                                                   लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना
५०
               सर्वकाल जानना
        9
40
       १२
               तथा
                                                   तक
                                                   हरेकमें १ पंचेन्द्रिय जाति को. नं.
                       हरेकमें को नं.
48
       १८
               का, २ में से जानना
       ४
                                                   ये ९ जानना
42
               का ५ में १ भंग
42
                                                  १ योग
        १
                                                  १७-१८
42
        ٧
               ,, १६ से १९
                                                  को नं. १८ प्रमाण
५२ १०-११
               का. ३ में
               का. ५ में
                                                को. नं. १७ देखो
47 9-80
42
       ११
                      29-03
                                                 १८
५३
               (का. २ में) १०
        4
               शिरनामा में अपर्धाप्त
                                                 अपर्याप्त सूचना नं २ पृष्ट ५९ पर देखो
५५
        २
               कालम ३ में १२-११
                                                 १३-११
५६
       ٩o
              का. ३ में २२ या २
                                                २२ या २०
५८
       १
               का ७ में १६
40
        b
                                                १८
              का. ४ में १ गति
६०
       १२
                                                १ भंग
६०
               का. २ में
                                                 ₹
       १४
६० १४-१५
               का. ५ में
                                                १ वेद
              का. ४ में १ भंग
                                                सारे मंग
६०
       १६
              का. ५ में १ भंग
६१
                                                १ ज्ञान
        १
                                                ४ के
                      ४-५-६ के
5,8
        २
                "
```

पृष्ठ	पंनित	<b>षशु</b> द्धता	शुद्धता
६२	*	का. ३ में १	£ <b>?</b>
६२	8	५७–५९	५७+२ = ५ <b>९</b>
६२	€ `	६७ जानना	७६ जानना
Éż	<b>१</b> ६	का. ४ में १ भंग	. सारेमंग
६३	१८	का. ४ में जानना	जानना की. नं. १८ देखी
६६	*	कोण्टक नंबर ८	कोष्टक नंबर ९
६६	8	कालम ६-७-८ में	मूचना–इस अनिवृत्तिकरण गुणस्पान में अपर्याप्त अवस्था नहीं होतीं है ।
६ <b>६</b>	C	का. ५ में क भंगो	२-१ के भंगों
६६	१६१७	का, ४ में	सारेमंग
६६	१९–२०	का. ५ में	१ मंग
६७	२	का. ३ में ३ कामंग	४ का मंग
६७	₹	का. ५ में १ ज्ञान	१ जान
<b>\$</b> 10	<b>१</b> ७	का. ४ में ३-३ के	६-२ के
६७	२२	का. ५ में ३-३ के	३२ के
६७	२७	,, १६ के	<b>१</b> ७ वें
६८	२	काल १ में बंघप्रकृतियां	२५ वंधप्रकृतियां
६९	१	१३७ प्रकृतियों	१३८ प्रकृतियों
६९		होते रे	होते हैं
	₹ 0	१ लाख	१४ लाख
६९	₹ ₹	कोटि ४ कुल जानना	कोटिकुछ जानना
. 60	Ø	का ४ में १ मंग	<b>१</b>
90	6	,, ३ काम मंग	१
90	5-0	का ५ में	<b>१</b>
00	१४	मालम ५ में ९ का भँग	९ के भंगमें से कोई १ योग जानना
७३	3	का. ६-७-८ में गुण में	गुणस्थान में
७४	ø	का. ५ में ३ के	७ के
४७	8 8	का, २ में को, नं, ५ देखी	को न. १० के २३ भावों में से
७६	٩	का ४ में ९ के मंगमें से	९ का भग
	१०	कोई एक योग जानना	
७८	ঙ	का. २ में १	कायबल १
66	ź	का. २ में कपाय १	कपाय
७९	03	का ६ में १ मा नग	२ का भंग
७९	19	(,,) सारेमंग	<b>१</b>
95	<b>१</b> ३	का ४ में सारेमंग	१ जंग
66	έ£	का. ५ में सारेमंग	१ मंग
66	\$10	गा. ५ में सहिमंग	१ भंग

```
पं वित
  वृष्ट
                अशुद्धता
                                                   शुद्धता
 ७९
         २०
                 का. ८ में १-१ के
                                                   १ भंग
 68
                 कां. ५ में ३ का मंग
                                                   ६ का संग
 61
                 का. २ मे १
          Ę
 68
                  (,,)
         १९
 42
                का '१ में १३ माव
                                                   रेरे भाव
 ८५ से ९० पृष्ट तक दुवारा छपवाया है अर्थात ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, क) ८९ छ) ८९ ग) ८९
    ८९ ह) ८९ च) ९० इस प्रकार पृष्टांक समझना.
 ८५
                का ५में १ से मे कोई
         ₹
                                                   १ से ४ में से कोई
 ८५
                का. ६ में गा. २६
        12
                                                  गा. २६३
 ८६
                का. ५ में १ का मंग
         ?
                                                  १० का मंग
८६
        २८
                का. ६ में १ ले ये
                                                  १ ले ४ थे
 ८७
         १
                का. २ में १३
                                                  ११
60
                का. ६ में से ४ वें
         É
                                                  १ लै ४ में
 ८७
                का. ३ में ऊपर के २
        18
                                                  ऊपर के २३
८७
                का. ४ में को. नं १ के
         ९
                                                  कों नं. १८ के
८८
                का २ में ३
                                                  £
८९
         9
                का. ५ में ३-१ कें
                                                 ३-२ के
                का. ३ में कुज्ञान ३
८९ क
        १६
                                                  ज्ञान ३
                का. ६ में ९ घटाकर
८९ ख १२
                                                 ९ घटाकर और
                                                 १६ के
                का. ५ में ६ के
८९ ग
       8
                का. ४ और ५ में ३ रे
८९ घ
         2
                कालम में के २ रे से ७ वें नरक के सामनें कोरा जगह में कॉलम ४ और ५ के
                भंग का. ३ के सदृश जानना.
                कां. ४ में १ से ४ गुण
                                                  १ से ५ गुण
९०
         २
                          २ रे से ६ गुण र रे से ५ गुण
90
      ٠ ٧
               इन पृष्टों में जहां जहां गुण, गुणमे, गुण जानना ऐसा लिखा है वहां वहां गूण, गुण
९० से १९
               में गुण जानना. इस प्रकार समझना.
               कालम ४ मे
९२
         १
               ९-८-७-६-५-४ के
                                                 ९-८-७-६-४ के
               का. ७ में
                                                 १ भंग जानना
९२
         8
                                                ये ४
               का. ३ में ये ३
       १५
९२
                        इन्द्रि
                                                एकेन्द्रिय
       ₹७
९२
                        योग
                                                भोग
९२
       २१
               ,,
                                                ६ से ४ गुण. में
               का. ४ में १ से गुण मे
९२
        ४
               का. ६ में ७ का मंग
                                                ६ का मंग
97
        4
                                                                              21
                                                ४-४ के मंग
९३ १-२ कें बीचमें का. ३ में
               का. २ में २
                                                ४
83
        ţ
```

पुष्ठ	पं वित	<b>जगुद्ध</b> ता	श्रृद्धता
<b>९</b> ३		का. ४ में ८का भंग	४ का भंग
९३	१०-११	यें दो लाईन का. ५ में मे दो ल	ाईन नीचे सरकाकर पढो ।
९४	6	का. ३ में ३	\$
48	१२	का. ५ में २-६ के	<b>२-१</b> के
९४	₹0	का. ८ में १ भंग	१ योग
98	<b>१</b> ३	,, १ भंग	१ योग
९५	प्रारंमसे	का. ४ में	१ से ४ गुण. में ९ का मंग
९५	प्रारंभमें	का. ५ में	९ के मंग में से कोई १ योग जानना
94	१० कें नीचे	का. ७ में	४ घे गुण में १ का मंग
34	55	का. ८ में	१ पुरुषवेद जानना
९५	<b>१</b> १	का. ७ में १ भंग	सारेमंग
९६	Ę	,, के १५ के	के २५ के
९६	२९	,, ३ रे गुण मे	३ दे ४ थे गुण. में
९६	16	,, २५ का भंग	२४ का मंग
30	*	का. ३ में २० का भंगमे से	१० मा भंग ळपर के कर्म भूमिके
			२१ के भंग्में से
९७	प्रारंभभें	_	६-७-८ के भंग
९७	<b>!</b>	का. ६-७-८ मे क्रमसे ५	१ ज्ञान ये तीनो नीचे के स्थान १२ ज्ञान के सामनें रसकर पढ़ो।
90	२४	,, कुल	<b>भु</b> त
९७		का. ४ में ४ घे गुण मे	४ थे ५ वें गुण में
9,0		का. ६ में घटाकर १	घटाकर ५
90		का. ३ में ६	₹
९८		का. ५ में ११ के मंगों	१, २ के भंगो
99	१	का. ५ में १-२ के भंगमे	२ के मंगमें
९९		का. ३ में इस सूचना को इसके रेखा निकालकर पढ़ो।	बीचमे आये हुए कालम ३ लौर ४ के बीच मे का
९९	. १	का. ६ में ४	•
९०	38	का. ६ में	२, ३, ४ पृ. १०० देखो
		का. ६ में	नीचे जो कालम १ में गुरु हुई सूचना हैं वह यहां उसके बीचमें के हुरेक कॉलम के रेखावों को हटाकर पढ़ों।
8.		हे बीच में का. ३ में	१-१-१ के भंग
		का. ३ में २ रेसेपूर्व गुण मे	२ रे से ५ वें गुणस्यान मे
	<b>१ १</b> ३ में क		\$ Carta Statement
		का. ६ में तक के	तक के जीवों में जन्म खेनेकी अपेक्षा जामना
		का. २ में १	7

1. A E.Z.	<b>पं</b> वित	71X1773+	को जिल्हा
<i>पृष्ठ</i> <b>१</b> ०२		अशुद्धता का. ४ में १ से ४	शुर्द्धता १ से ५
	۶ ۲		
		का. ६ में ६	٥ 
	<b>११</b>		ये २ ये ५ का
-	73	,, २ का मंग	५ का भंग
१०३	१ <b>२−१</b> ३	का ६ में	४ का भंग-पर्याप्त के ५ के भंगमे से
	•		कु अवधिज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना।
	<b>१</b>	का. ५ में ६ का भंग	६ के मंगमे सें कोई १ उपयोग
	<b>ર</b>	का. २ में रौद्रध्यान ३	रौद्रध्यान ४, धर्मध्यान ३
	१४	का. ३ में ऊपर के	ऊपर के ८ के मंग मे
	8	का. ४ में १ ले गुण मे	१ ले २ रे गुण मे
	8	का. ७ में १ भंग	सारेभंग
	२०	रा. ६ में अविरत ८ की	अविरत ७ की
	२१	" जगह गिनकर ३९	जगह ८ गिनकर ३८
	१८	का. ३ में असंज्ञी पंचेन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय
	ų	का. ५ में २७ के	१७ के
१०८		का. ७ में १ मंग	सारेमंग
११०		कोष्टक नं. १	कोष्टक नं. १७
<b>११</b> ०		का. ४ में २७ का भंग	१७ का भंग
111	ą	का. १ में २५	२६
\$ \$ \$	6	का. २ में मतुष्यायु १, उच्चगोत्र	मनुंष्यायु १, वैकियिकद्विक २ उच्चगोत
<b>११</b> ३	१	का. ६ में ३	4
११४		का. ४ मे	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना
<b>8</b> 68	१	का. ५ में	१ संज्ञी पं. पर्याप्त जानना
११४	8	का. ६ में १	२
१ <b>१</b> ४	ષ	का.६ में ३	<b>३</b> −६
११४	8	का. ४ में १ भंग	सारेभंग
<b>\$</b> \$8	६	का ७ मे १ भंग	सारेभंग
११५	8	का. ४ मे १ आयुवल प्रमाण	१ आयुवल प्राण
११५	3	का. ४ मे १ मंग	सारेभंग
११७	9	का. ३ मे ६ गुण के	६ गुण के ९ का भंग के
११८	<b>t</b>	का. ३ मे १	7
		का. ४ १ भंग में	सादेभंग
		का. ५ में सारेवेद	१ वेद
११८		का. ६ में	सूचना–आहारककाय योगी पुरुषवेदीही होता है अर्थात पुरुषवेदवाले के ही बाहारकपुतला बनता हैं।
११८	હ	का. ७ में	यह दोनों पंनितयां क्रमसे थोडा मूमि में १ ले २ रे गुण और ४ थे के सामने पढो।

3 3 3 d 3 d

पूष्ट पंवित	वशुद्धता	गृद्धता
११८ ९, १०, १		-
११९ १	का. ३ में ० का मंग लाग	० का मंग-आगे के चारों
<b>११</b> ९ २	का. ३ में वेद हैं ही	वेद नहीं
१२० ४	का. ३ में १७ का भंग	१३ का भंग
१२२ १	का. ४ में ६-७-८	काट टालना चाहिये
१२२ ४	का. ५ में ४-४-६	<b>Y-</b> 4- <i>\xi</i>
१२२ ४-५-६	का. ५ में ये तीनों पंक्तियां ६ वें ७ वें ८	वें गुण के सासने पढ़ी।
१२२ ७-८	का. ५ में २ का भंग जानना	यह पंचित ९ वें गुण. के सामने पढ़ो ।
१२२ १० वे	का. ५ में	१ का मंग जानना. यह १० वे गुण. के
		सामने पढो ।
१२३ १	का. ८ में १ के भंगमे से कोई	१ ज्ञान
<b>१</b> २३ २	,, १ ज्ञान जानना	सारे मंगो में
१२३ ९	का. ३ में श्रृति	श्रुत इसी तरह जहां जहां श्रुति लिला है
		वहां यहां श्रुत ऐसा पढो।
	का. ४ में २–३ के भंग	३–२ के मंग
१२५ ५		₹
१२५	का.३ में	~ > > = & ~ >
	?-3-3-1-2-3 	२-२-२-१-२-३ ३ के मंग में से कोई १ सम्यक्त
	का. ५ में ३ का भंग का. ४ – ५ में १ संज्ञाजानना	यह काट डालना चाहिये
		१ संज्ञी जानना
१२९ ४ के नीचे		
१२९ २ के नीचे		•
	का. ३ में २ का	१ का
१३१ २४		त्रान ३
	का. ४ में संशयमिथ्यात्व	संशयमिथ्यास्य विनयमिष्यास्य यह ४ घे कालम में पढी
१३४ २०	का. ५ में विनयमिथ्यात्व	यहालर २२ का
१३५ १९	,, घमोकर १-२ का का. ४ में	2015. 17.10
१३६	अविरतका ४ का मंग घटाकर यह काट हा	मना चारिये
\$\$	का, ४ में	11167
१३७	का. ० न ३ रे ४ घे गुण में	३ रे४ से गुण में
531a t. £ 1a	का ५ में ये तीनों पंतिक्यों को ४ घे कालम	•
१३७ ५-६-७		यह काट शलना चाहिये
१३७ ८-९		कार १ वेड कोर्ट १ वेड
(30 ((	का. ७ में कोई १ का. ४ में ४ जीव ५ का	४ जीव वे ५ का
१४१ ८	का ४ में पृथ्वी लायु	पृथ्वी, याव
141 6	The was Suntake.	• •

र्पृष्ट	<b>पं</b> क्तिं	<b>अंशुंर्द्धता</b>	<b>बु</b> ढता
१४२	<b>१</b> ६	का. ३ में १ रे गुण	२ रें गुण
१४२	२४	का. ६ में २ ये	ये ३
१४३	१०	का. ६ में १७ के	२७ के
१४३	<b>१</b> २	का. ६ में थे ४ ज्ञान १	ये ४
१४५	२४	का. ३ में का भंग	२० का भंग
१५१	9	का. ४ मे ११ वे	१९ वे
१५५	२०	का. ६ में १ रे	२ रे
१५७		का. ६ मे १९ वें	१६ वें
१५७		का. ८ में १–२ के	२ के
१५७		का. ४ में १ ले गुण में	१ ले २ रे गुण. मे
१४२	१७	का. ४ में चारों गतियों मे से कोई १ गति	एक मनुष्य गति
१४४	११	का. ४ में चारोगतियों मे से कोई १ गति	एक मनुष्य गति
१४५	Ę	का. ४ में तिर्थंच या मनुष्य गतियों मे से कोई १ गति	एक मनुष्य गति
१५२	१५	स्त्री पुरुष ये स. मिथ्यात्व १	स्त्री पुरुष ये २ वेद,
		स. अभि. १, २ वेद घटाकर	सम्यग्मिध्यात्व १,
			सम्यक्प्रकृति १ ये ४ घटाकर
१५२	१६	नामकर्भ २८	_
	१६	नामकर्थं २८ सत्ता जाननां	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर
१५३		सत्ता जाननां	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्मे २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कषाय ४ नरकायु १, तियंवायु १, ये
१५३	8	सत्ता जाननां	सम्यक्प्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्म २७ सत्ता अनन्तानुवंघी कषाय ४ नरकायु १, तियंवायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सरामे से दर्शन मोहिनी की
१५३	११	सत्ता जाननां सत्ता जाननां	सम्यक्प्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्मे २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कषाय ४ नरकायु १, तियंवायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सन्तामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना। सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे
१५३ १५३ <b>१</b> ५३	e e a a	सत्ता जाननां सत्ता जानना लता जानना का. ६ में मंग एक का. ५ में १ कुज्ञान	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्मे २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कषाय ४ नरकायु १, तियंवायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सरामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना । सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामें से देवायु १ घटाकर १३८ जानना ।
१५३ १५३ १५३ १५८ १५९	९ १ स स २ १ र	सत्ता जाननां सत्ता जानना लता जानना का. ६ में मंग एक का. ५ में १ कुज्ञान का ६ में घटाकर १	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्मे २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कषाय ४ नरकायु १, तियंवायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सरामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना। सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे से देवायु १ घटाकर १३८ जानना। मंग २५ कषायों में से एक
१५३ १५३ १५३ १५८ १५९ १५९	९ १ स स स १ १ १	सत्ता जानना  सत्ता जानना  लता जानना  का. ६ में मंग एक  का. ५ में १ कुज्ञान  का ६ में घटाकर १  का. ८ में १ कुज्ञान	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्मं २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कपाय ४ नरकायु १, तियंबायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सर्गामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना । सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे से देवायु १ घटाकर १३८ जानना । मंग २५ कषायों में से एक १ ज्ञान
१५३ १५३ १५३ १५९ १५९ १५९ १६०	<i>०</i>	सत्ता जाननां सत्ता जानना लता जानना का. ६ में मंग एक का. ५ में १ कुज्ञान का ६ में घटाकर १ का. ८ में १ कुज्ञान का. ६ में ३-१-१ कें	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्मे २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कषाय ४ नरकायु १, तियंवायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सरामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना। सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे से देवायु १ घटाकर १३८ जानना। मंग २५ कषायों में से एक १ ज्ञान घटाकर ५ १ ज्ञान
१५३ १५३ १५३ १५९ १५९ १६० १६०	ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο	सत्ता जाननां सत्ता जानना लता जानना ला. ६ में मंग एक का. ५ में १ कुज्ञान का. ६ में घटाकर १ का. ८ में १ कुज्ञान का. ६ में ३-१-१ कें का. ३ में ३	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्म २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कपाय ४ नरकायु १, तियंबायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सर्गामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना। सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे से देवायु १ घटाकर १३८ जानना। मंग २५ कषायों में से एक १ ज्ञान घटाकर ५ १ ज्ञान १ न्हे-१-१ के
१५३ १५३ १५३ १५९ १५९ १६० १६१	९ १ १ १ १ १ १ १ १ १	सत्ता जाननां सत्ता जानना लता जानना ला. ६ में मंग एक ला. ५ में १ जुज्ञान ला. ६ में घटाकर १ ला. ८ में १ जुज्ञान ला. ६ में ३—१—१ के ला. ३ में ३—१—१ के	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्मं २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कषाय ४ नरकायु १, तियंवायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सरामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना। सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे से देवायु १ घटाकर १३८ जानना। मंग २५ कषायों में से एक १ ज्ञान घटाकर ५ १ ज्ञान १-३-१-१ के
१५३ १५३ १५३ १५९ १५९ १६० १६१	९ १ त २१२१४५ के नी	सत्ता जाननां सत्ता जानना लता जानना ला. ६ में मंग एक का. ५ में १ कुज्ञान का. ६ में घटाकर १ का. ८ में १ कुज्ञान का. ६ में ३-१-१ कें का. ३ में ३	सम्यक्ष्रकृति १ ये ४ घटाकर नामकर्म २७ सत्ता अनन्तानुबंधी कपाय ४ नरकायु १, तियंबायु १, ये ६ घटाकर जानना सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सर्गामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना। सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे से देवायु १ घटाकर १३८ जानना। मंग २५ कषायों में से एक १ ज्ञान घटाकर ५ १ ज्ञान १ न्हे-१-१ के

वृष्ठ	पं वित	वश्दता	घुद्धिता
147		का. ६ में	•
	१४	<b>१</b> आहारक—आहारक	<b>१</b> बाहार—झहार
१६६	૮	का. ३ में का भंग	चक्षुदर्शन, ये ५ का भंग
१६६	لا	का. ३ में २६-२७-२५	२१२६२५
१७०	२	का. २ में वेदनीय	वेदनीय र
१७०	X	,, चपद्यात १	उपघात १
१७२	१७	का. ४ में ज्ञायीक	क्षायिक
१७३	ø	का. २ में अतन्तसिद्ध	<b>अनन्त</b> सिद्ध
१७६	<b>१</b> २	का. २ में	१ अमंयम
१७७	<b>७-८</b>	का. २ में १ संज्ञी	१ असंशो
१८०	ų	का. १ में ५ संज्ञी	५ संशा
११	२	का. २ में १	१ तियँचगति
१८१	Ę	,, 8	१ द्वीन्द्रयजाति
१८१	8	11 8	१ त्रसकाव
१८१	*	का. १ मे योग	९ योग
१८१	ų	का. २ में	¥
१८१	<b>१</b> o	का. २ में १	१ नपुंपमनेद
१८१	१३	का. २ में २	२३
१८२	२	का. १ में १३	१३ संयम
१८२	Ð	का. २ मे १	१ असंयम
१८२	Ę		३ का भंग
१८२	ų	का. ७ में ३ का मंग	१ भंग
१८२	Ę	**	३ का भंग
	२३	का ६ में २ से	१ ले
	ሄ	ना ४ में	८ का भंग
१८३		का ५ में	८ वे गंग में ने कोई १ ध्यान
१८३		का. ६ में	३८-३३ के मंग
<b>१</b> ८३	<b>२</b> २ २३ ं	का. ६ में	२४-२२ के मंग
१८५	¥	का. ७ में	8
१८५	<b>१</b> २	मा. २ में १	१ तियं चगति
	9	का. ५ में	?
	•	का. २ में १	१ प्रीन्द्रिय जाति
		मा. २ मे १	१ त्रसकाय
१८६	•	गा. २ मे १	<b>१</b> नपुराक येद
१८६		का २ मे १	१ सर्गवम
		मा २ मे १	( ল্বন্দান ১৯৯১ - জ
४८७	१३	का. ६ में १ ले गूण में	१ हे २ रे गुण में

१८७ ८ का. ८ में २ १८० २० का. ६ में २ १९० ११ का. २ में १ १ १ तिथंचगित १९१ १ का. २ में १ १ १ चतुरिन्दिय जाति १९१ २ ,, १ १ १ चतुरिन्दिय जाति १९१ ८ का. ७ में १ १ १ मंपुसकनेवर १९१ ८ का. ७ में १ १ १ मंपुसकनेवर १९१ ८ का. ७ में १ १ १ असंयम १९१ १० का. २ में १ १ असंयम १९१ १० का. १ में १ १ असंयम १९२ १० का. १ में १ १ असंजी १९२ १० का. ६ में २ १ १ असंजी १९२ ८ का. २ में १ १ असंजी १९२ ८ का. २ में १ १ असंजी १९२ ८ का. २ में १ १ १ तिथंचगित १९३ १० का. ६ में १ १ १ तिथंचगित १९३ १० का. २ में १ १ १ तिथंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ मंजीव्य जाति १९६ १ का. २ में १ १ १ मंजीव्य जाति १९६ १ का. २ में १ १ १ मंजीव्य पण में १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	पृठ	पं िमत	अ <b>गृद्ध</b> ता	शृद्धता
१८७ २० का. ६ में २   १   १   १   १   १   १   १   १   १	१८७	ሪ	का. ८ में	·
१९६ १ का. २ में १ १ चतुरिन्द्रिय जाति १९१ २ ,, १ १ १ मसकाय १९१ ५ ,, १ १ १ मसकाय १९१ ८ का. ७ में पर्याप्तवत् १९१ ८ का. ८ में ७-८-० ७-८-९ १९१ १० का. २ में १ १ श संयम १९१ १५ का. ४ में २ का मंग ३ का मंग १९२ ४ का. ७ में १ जात १ मंग १९२ ५ का. २ में १ १ श समंजी १९२ ८ का. २ में १ १ श समंजी १९२ ८ का. ६ में मुत्रिय पर्याप्तवत् २५ १९३ ८ का. ६ में मुत्रिय पर्याप्तवत् २५ १९३ ८ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९४ ८ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंवगति १९८ १ का. ६ में गण १ में गुण में गुण में १ १०० १३ का. ६ में को. नं. १७ को. नं २२ विष्ठ पर्युसक १९८ २२ ,, चे २८ चे २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में नं. १७ नं. १७ नं. १७ १८ विष्ठ पर्युप्त	१८७	२०	का. ६ में २	१
१९१ ५ ,, १ १ १ नपुंसकवेद १९१ ८ का. ७ में पर्याप्तवत् १९१ ८ का. ७ में पर्याप्तवत् १९१ ८ का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्री १९१ २० का. ६ में कुविष्य पर्याप्तवत् २५ का. २ में १ १ श असंग्री १९१ ८ का. २ में सब लोक सर्वकाल १९४ १२ का. २ में १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९८ १० का. १ में को. नं. १७ को. नं २२ १९८ १० का. १ में को. नं. १० को. नं २२ १९८ १० का. १ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में को. नं. ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में नं. १७ नं. १७ नं. १७ १८ विश्व चगित २०६ १२ का. ६ में मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में मं. १७ नं. १७ नं. १७ १८ विश्व चगित। २०८ १० का. ६ में मं. १८ नं. १७	१९०	११	का. २ में १	१ तिर्थं चगति
१९१ ५ ,, १ १ १ नपुंसकवेद १९१ ८ का. ७ में पर्याप्तवत् १९१ ८ का. ७ में पर्याप्तवत् १९१ ८ का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्रम १९१ १० का. २ में १ १ श असंग्री १९१ २० का. ६ में कुविष्य पर्याप्तवत् २५ का. २ में १ १ श असंग्री १९१ ८ का. २ में सब लोक सर्वकाल १९४ १२ का. २ में १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ विश्व चगित १९८ १० का. १ में को. नं. १७ को. नं २२ १९८ १० का. १ में को. नं. १० को. नं २२ १९८ १० का. १ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में को. नं. ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में नं. १७ नं. १७ नं. १७ १८ विश्व चगित २०६ १२ का. ६ में मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में मं. १७ नं. १७ नं. १७ १८ विश्व चगित। २०८ १० का. ६ में मं. १८ नं. १७	१९१	१	का. २ में १	१ चतुरिन्द्रिय जाति
१९१ ८ का. ७ में पयित्वत् १९१ ८ का. ७ में पयित्वत् १९१ ८ का. ७ में पयित्वत् १९१ १० का. २ में १ १ श्रासंयम १९१ १० का. ४ में २ का मंग १ का मंग १९२ ४ का. ७ में १ श्रास १ मंग १९२ ५ का. ६ में २ १ श्रासंत्री १९२ ८ का. ६ में कुविष्य पर्याप्तवत् २५ १९२ ८ का. ६ में कुविष्य पर्याप्तवत् २५ १९४ ८ का. २ में १ १ श्रासंत्री १९४ ८ का. २ में १ १ श्रासंत्री १९४ १२ ,, ७ लाख १ स्टास्त्री १९४ १२ का. २ में १ १ श्रीवंदिय जाति १९६ १ का. २ में १ १ श्रीवंदिय जाति १९६ २ का. २ में १ १ १ वंदियंचगित १९६ २ का. २ में १ १ १ वंदियंचगित १९६ २ का. २ में १ १ १ वंदियंचगित १९६ २ का. २ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में को. नं. १७ को. नं २२ १९८ १३ का. ६ में को. नं. १० को. नं २२ १९८ १० का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ नं. १७ २८ १०० १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ नं. १७ २८ १०० १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ नं. १७ २८ १०० २८ का. ६ में नं. १८ नं. १७ १८ नं. १७	१९१	२		
१९१ ८ का. ७ में पर्याप्तवत् १९१ ८ का. ८ में ७-८-० १९१ १० का. २ में १ १ श असंयम १९१ १५ का. ४ में २ का मंग ३ का मंग १९२ ४ का. ७ में १ मंग १९२ ५ का. २ में १ १ श असंज्ञी १९२ ८ का. २ में १ १ श असंज्ञी १९२ ८ का. २ में १ १ श असंज्ञी १९२ ८ का. २ में १ १ श स्वंकाल १९४ ८ का. २ में १ १ श स्वंकाल १९४ १२ का. २ में १ १ १ तियंचगित १९४ १२ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ ० का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का. २ में को. नं. १७ को. नं २२ १९९ १ घटाकर ७ जातना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७-१८ २०८ २८ का. ६ में	१९१	ų	_	१ नपुंसकवेद
१९१ १० का. २ में १ १ इ जसंयम १९१ १५ का. ४ में २ का मंग ३ का मंग १९२ ४ का. ७ में १ जान १ मंग १९२ ५ का. २ में १ १ वसंज्ञी १९२ २० का. ६ में २ १ १९३ ८ का. २ में ४ ४ १९३ १७ का. ६ में कुविंच पर्याप्तवत् २५ ला. २ में स्व किलोक सर्वकाल १९४ १२ का. २ में १ १ त्यंचनित १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंचनित १९६ १ का. २ में १ १ १ त्यंचनित १९६ २ का. २ में १ १ १ पंचेन्द्रिय जाति १९६ २ का. २ में १ १ १ पंचेन्द्रिय जाति १९६ २ का. २ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपंचक स्त्री पुरुप नपंसक १९८ २२ , के २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ६ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७–१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ६ में नं. १८ नं. १७	१९१	6		
१९१ १५ का. ४ में २ का मंग ३ का भंग १९२ ४ का. ७ में १ ज्ञान १ भंग १ असंजी १९२ ५ का. २ में १ १ असंजी १९२ ८ का. २ में १ १ १०२ ८ का. २ में कुविंच पर्याप्तवत् २५ जा टाकर २५ १९३ १७ का. २ में कुविंच पर्याप्तवत् २५ जा टाकर २५ १०० १२ का. २ में १ १ तथंचाति १९६ १ का. २ में १ १ तथंचाति १९६ १ का. २ में १ १ १ तथंचाति १९६ १ का. २ में १ १ १ तथंचाति १९६ १ का. २ में १ १ १ तथंचाति १९६ १ का. २ में १ १ १ १ में १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	१९१	ሪ	का. ८ में ७-८-०	9-C-9
१९२ ४ का. ७ में १ ज्ञान १ भंग १९२ ५ का. २ में १ १ असंज्ञी १९२ ८ का. ६ में २ १ १९३ १७ का. ६ में कुविष पर्याप्तवत् २५ ता. २ में अविकास सर्वकास १८३ १८३ १८ का. २ में सविकास १८३ १८ का. २ में ११ १८ विध्वनाति १९६ १ का. २ में ११ १८ विध्वनाति १९६ १ का. २ में ११ १८ विध्वनाति १९६ १ का. २ में ११ १८ विध्वनाति १८३ १८ का. २ में ११ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८ विध्वनाति १८३ १८३ विध्वनाति १८३	१९१	₹ 0	फा. २ में १	१ असंयम
१९२ ५ का. २ में १ १ असंज्ञी १९२ ८ का. ६ में २ १ १९२ ८ का. २ में ४ १९३ १७ का. ६ में कुविष पर्याप्तवत् २५ ला टाकर २५ १९४ ८ का. २ में सब लोक सर्वकाल १९४ १२ का. २ में १ १ तियंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तियंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ २ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ २ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ २ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ २ का. २ में १ १ १ वियंचगित १९६ २ का. २ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपुंचक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ ॥ छे २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में नं. १८ नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७	१९१	१५	का. ४ में २ का मंग	३ का भंग
१९२ ८ का. ६ में २ १९२ ८ का. २ में ४ १९३ १७ का. ६ में कुविंच पर्याप्तवत् २५ शा टाकर २५ १९४ ८ का. २ में सव लोक सर्वकाल १९४ १२ का. २ में १ १ तिर्यंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिर्यंचगित १९६ २ का. २ में १ १ १ पंचेन्द्रिय जाति १९६ २ का. २ में १ १ १ मंतिर्यंचगित १९६ ७ का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का. २ में स्ती नपुंचक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , में २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. थपर्याप्त २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७ नं. १७ २० १० रू. ६ में नं. १८ नं. १७ नं. १७ २० २० १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २० २० २० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २० २८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० ६० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० ६० २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में ५० ६० २८ का. ६ में ४०६ के ४०६ के	१९२	ጸ	का. ७ में १ ज्ञान	१ भंग
१९२ ८ का. २ में ४ १९३ १७ का. ६ में कुविष पर्याप्तवत् २५ जा टाकर २५ १९४ ८ का. २ में सव लोक सर्वकाल १९४ १२ का. २ में १ १ तिर्यंचाति १९६ १ का. २ में १ १ १ तिर्यंचाति १९६ १ का. २ में १ १ १ तिर्यंचाति १९६ २ का. २ में १ १ १ पंचेन्द्रिय जाति १९६ २ का. २ में १ १ १ त्यांचाति १९६ ७ का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपुंचक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , गे २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर २० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. ११ को. नं. १६ से १९ २०० १० का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. वपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. वपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. वपर्याप्त २०१ १२ का. ६ में नं. १७ नं. १७–१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७	१९२	4	का. २ में १	१ असंज्ञी
१९३ १७ का. ६ में कुविष पर्याप्तवत् २५  ता टाकर २५  १९४ ८ का. २ में सव लोक सर्वकाल १९४ १२ का. २ में १ १ तिथ चगित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ २ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ २ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ २ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ २ का. २ में १ १ १ तिथ चगित १९६ २ का. २ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में गुण. में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ ,, के २८ वे २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ६ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में हो. नं. १७ वा. १ संत्री पं. १ संत्री पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ संत्री पं. १ संत्री पं. अपर्याप्त २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७	१९२	२०	का. ६ में २	१
शिष्ठ ८ का. २ में सब लोक सर्वकाल १९४ १२ ,, ७ लाख १ ताख १९४ १२ का. २ में १ १ तिथ च गित १९६ १ का. २ में १ १ १ तिथ च गित १९६ १ का. २ में १ १ १ व च च च च च च च च च च च च च च च च	१९२	6	का. २ में	¥
ता टाकर २५  १९४ ८ का. २ में सब लोक सर्वकाल १९४ १२ , ७ लाख ९ लाख १९५ १२ का. २ में १ १ ति य च गित १९६ १ का. २ में १ १ १ ति य च गित १९६ १ का. २ में १ १ १ पंचे निद्रय जात १९६ ७ का. २ में १ १ १ त्रयंच गत १९६ ७ का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , ग्रे २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में २०० ९ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में नं. १८ नं. १७ २८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७	<b>१</b> ९३	१७	का. ६ में कुवधि	पर्याप्तवत् २५
१९४ १२			ज्ञा टाकर २५	·
१९५ १२ का. २ में १ १ १ तिथंचगित १९६ १ का. २ में १ १ १ पंचेन्द्रिय जाति १९६ २ का. २ में १ १ १ तत्रकाय १९६ ७ का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपुंचक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , ग्रे २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. थपर्याप्त २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७-२	१९४	6	का. २ में सव <sup>°</sup> लोक	सर्वकाल
१९५ १२ का. २ में १ १ एचेंन्द्रिय जाति १९६ १ का. २ में १ १ १ पंचेंन्द्रिय जाति १९६ २ का. २ में १ १ १ तसकाय १९६ ७ का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण में गुण में १९८ १७ का २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , में २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० ९ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ६ में नं. १८ का. ३ में प्राह्म प्रा	१९४	१२	,, ৩ লাৰ	९ राख
१९६ २ का. २ में १ १ त्रसकाय १९६ ७ का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ ,, छ २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में को. नं. से११ को. नं. १६ से १९ २०० ९ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७–१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५–६–६–७–६–७ २०८ २८ का. ६ में ४–६ के	१९५	१२		१ तिर्थंचगति
१९६ ७ का. ३ में को. नं. १७ को. नं २२ १९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ " में २८ ये २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में २०० ९ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. थपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेमंग २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७–१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५–६–६–७–६–७ २०८ २८ का. ६ में ४–६ के	१९६	१	का. २ में १	१ पंचेंन्द्रिय जाति
१९७ १३ का. ६ में गुण १ में गुण. में १९८ १७ का. २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , में २८ में २७ १९९ ६ घटाकर ७ जातना घटाकर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० ९ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. थपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेमंग २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७ २०८ २८ का. ६ में ४-६ के	१९६	२	का. २ में १	१ त्रसकाय
१९८ १७ का २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , में २८ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ वा तना या या कर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ का. ६ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग सारेभंग नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १७ नं. १७ नं. १७ वं. १७ २०८ २८ का. ६ में नं. १८ नं. १७ २८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७-३ ४-४ के	१९६	৩		को. नं २२
१९८ १७ का २ में स्त्री नपुंषक स्त्री पुरुप नपुंसक १९८ २२ , में २८ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ ये २७ वा तना या या कर ९० जानना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ को. नं. १६ से १९ का. ६ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग सारेभंग नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १७ नं. १७ नं. १७ वं. १७ २०८ २८ का. ६ में नं. १८ नं. १७ २८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७-३ ४-४ के	१९७	१३	का. ६ में गुण १ में	गुण. में
१९८ २२ ,, में २८ ये २७  १९९ ६ घटाकर ७ जातना २०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में २०० ९ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७ ५-६-७-३ २०८ २८ का. ६ में ४-६ के	१९८	<i>७</i>	का. २ में स्त्री नपुंषक	स्त्री पुरुप नपुंसक
२०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ नं. १७ १८ २८ का. ६ में नं. १८ नं. १७ ४८ २८ का. ३ में ५८ २८ का. ३ में ५८ २८ का. ३ में ४८ वें ४८ कें ४८ कें	१९८	२२	∯ ⊃./	
२०० १३ का. ३ में को. नं. १९ को. नं. १६ से १९ २०० १३ का. ६ में को. नं. से ११ को. नं. १६ से १९ २०० १८ का. ६ में २०० ९ का. ८ में १ संज्ञी पं. १ संज्ञी पं. अपर्याप्त २०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७ ५-६-७-३ २०८ २८ का. ६ में ४-६ के	१९९	ç	भटाकर ७ जातना	घटाकर ९० जानना
२०० १८       का. ६ में         २०० ९       का. ८ में १ संज्ञी पं.       १ संज्ञी पं. अपर्याप्त         २०१ १२       का. ७ में १ मंग       सारेभंग         २०६ २३       का. ६ में नं. १७       नं. १७-१८         २०८ १०       का. ६ में नं. १८       नं. १७         २०८ २८       का. ३ में       ५-६-६-७-६-७-२         २०८ २८       का. ६ में ४-६ के       ४-४ के	२००	१३	का. ३ में को. नं. १९	को. नं. १६ से १९
२००       ९       का. ८ में १ संज्ञी पं.       १ संज्ञी पं. अपर्याप्त         २०१       १२       का. ७ में १ मंग       सारेभंग         २०६       २३       का. ६ में नं. १७       नं. १७-१८         २०८       १०       का. ६ में नं. १८       नं. १७         २०८       २८       का. ३ में       ५-६-६-७-६-७-३         २०८       २८       का. ६ में ४-६ के       ४-४ के	२००	१३	का. ६ में को. नं. से ११	को. नं. १६ से १९
२०१ १२ का. ७ में १ मंग सारेभंग २०६ २३ का. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७ ५-६-७-२ २०८ २८ का. ६ में ४-६ के	२००	१८	का. ६ में	
२०६ २३ जा. ६ में नं. १७ नं. १७-१८ २०८ १० का. ६ में नं. १८ नं. १७ २०८ २८ का. ३ में ५-६-६-७-६-७ ५-६-७-३ २०८ २८ का. ६ में ४-६ के ४-४ के	२००	9	का. ८ में १ संज्ञी पं.	१ संज्ञी पं. अपर्याप्त
२०८ १०       का. ६ में नं. १८       नं. १७         २०८ २८       का. ३ में       ५-६-६-७-६-७       ५-६-६-७-३         २०८ २८       का. ६ में ४-६ के       ४-४ के	२०१	१२	का. ७ में १ मंग	सारेभंग
२०८ २८       का. ३ में         ५-६-६-७-६-७       ५-६-६-७-६-७-२         २०८ २८       का. ६ में ४-६ के	२०६	२३	का. ६ में नं. १७	नं. १७–१८
५-६-६-७-६-७ ५-६-६-७-३ २०८ २८ का. ६ में ४-६ के ४-४ के	२०८	१०	का. ६ में नं. १८	नं. १७
२०८ २८ का. ६ में ४-६ के ४-४ के	800	२८	का. ३ में	
			<b>५-६-६-७-</b> ६-७	d-t-e-a-t-à-à
२०९१ का. ३ में १	२०८	२८	का. ६ में ४-६ के	<u> </u>
	<i>३०९</i>	8	का. ३ में १	¥

```
वृद्ध
      पंक्ति
               अशुद्धता
                                                 गृद्धता
२०९ १ के अपर का. ६ मे
                                                 ३ मन्यगति मं-
                                                 ४-६-६-२ के भंग
                                                 को. नं. १८ के समान
3.9
      25
               भा, ६ में २
208
      च् ३
                  ,, 6-9-5-?
                                                 6-9-5-9
              का. ४ में १७-१६-१६-१६
388
      74
                                                 १७-१६-१६-१5
288
              का. ५ में १७-२६-१६-१७
      ર્પ
                                                 १७-१६-१:-13
218
       6
               30
                                                 ع رو
218
               ३ राज तक
       16
                                                 ३ रा नरक नक
               का. १ में २३ भाव
र्हेष
      २३
                                                 २३ माव
३१५
               का. २ में स्थान क्रमांक १२, १४, १७, २०, २३ छोड़कर बार्कीन जगह
               ० गुन्य समझना ।
               का. २ में १
210
                                                 १ तियं नगति
      91,
२१८
                                                 १ एकेन्द्रिय जानि
                                                 १ पृथ्यं काय
286
       2
288
                                                 १ नणुंपकवेद
       4
                      ۶
                 "
215
      18
                      ş
                                                  १ अरायम
                  ,,
286
       12
                                                 १ अवध्यदर्गन
                      ţ
२१९
       5
               का २ में १
                                                 १ असंज्ञी
356
                                                 १ तिर्भगमित
       2 2
                      ý
221
                                                 १ एकेन्द्रिय जाति
       88
                      ₹
358
       $ 3
                                                  २ जलकाम
222
                                                 १ नपुसकवेद
                      ŧ
२२२
                                                  १ असंगम
        ξ
               कां. २ में १
२२२
                                                 १ जनसूदर्गन
       6
                      ŧ
5,55
               का. ८ में की. नं. २
                                                 को नं. २४
       99
२२२
               फा. ७ में को. नं. १
                                                 की. मं. २१
       35
                                                 १ असंजी
555
               का. २ में १
       88
२२३
               का, ४ में को नं १
                                                की में अह
        Ų
२२३
                                                असंस्थात
      18
               का २ में संस्यात
२२४ १२ के नीचे का ६ में
                                                लविद्याग ४ व्यापित
                                                 भा सं ३१
258
               का, २ में को नं. २
        18
238
                                                 १ तियंभगति
                      Ę
२२५
                                                 १ तकी इयहानि
        ŧ
                      ŧ
774
                                                 १ अलिकाय
```

१ अपन्य अभिन्

334

पृष्ठ	पं वित	अशृद्धता	ग्द्रता
२२५	<b>१</b> 0	33 <b>?</b>	<b>१</b> असंयम
२२५	११	,, १	१ अचक्षुदशैन
२२६	१	٠,	१ मिध्यास्य जानना
२२६	२	<b>"</b>	१ असंजी
२२६	6	का. ६ में १ ले गुण में	•
२२६	९ के नीचे	75	३ का मंग पर्याप्तवत्
२२८	8	का. २ में १	१ मिध्यात्व
२२८	१०	,, ۶	१ तियँचगति
२२८	* *	٠,	<b>१</b> एके 'न्द्रय
२२८	१२	. <b>,</b> ا	१ वाय्काय
२२९	8	<b>,,                                   </b>	१ नपुरुकवेद
२२९	१२	,,	१ मिध्यात्व जानना
२२२	१३	۶, ۶	१ अम्जी
२२६	£	,, ۶	१ असंयम
२२९		٠, ٧	१ अचक्षुदर्शन
२३०	२	का ३ में को मं ३०	को नं. २१
२३१		का. २ में १	१ तिर्थचगति
२३१		,,	१ एकेन्द्रिय जाति
	₹ ₹	, t	१ दनस्पनिक।य
२३१	१६	<b>,,</b>	१ नपुपकवेंद
२३२	ų	,, <b>१</b>	१ असंयम
<b>२३२</b>		ب.      ا	१ अचक्षुदर्शन
<b>२</b> ३२		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१ असंजी
<b>२</b> ३५		का. ३ में को. ९	को.
२३६	१	का २ में १	< त्रसकाय ्
२३७	१४	का. ३ में ४	६
२३९	Ē	का. ३ में १-२-३-३	१-२-२ ३-३
२४२		का ६ में ४६ का	४ <b>–६</b> के
२४२		का. ६ में १० नं.	को. नं
२४३		का. ३ में ८-१-६०	6-8-80
२४३		" d6-86-8	4 ?-¥ <b>ξ-¥</b> ?
२४३		,, 80-80	११-१० को. नं. १८ देखो
288	=	का. ५ मे	•
२८४		का. २ में १ का ३ में ६ का भंग	१ संज्ञी पचेन्द्रिय गर्याप्त ७ का भंग
२५३			उन्नामग अपर के ८
२५३		., क <b>प</b> र के ७ ७ का भंग	. ६ वा भ्ग
२५३	40	., ७ का सग	. ५ ता च्या

पृष्ठ	यंक्ति	बशुद्धता ः	शुद्धता	131.74.2	· ••••
રૃષ્ફ	१०	', कपर के ८	अपर के ७		
२५३	<b>?</b> ?	,, ७ का भंग	६ का <b>घं</b> ग		
२५३		,, ११-११-१३	११-१२-३३		
२५४	દ્	,, ४१-३६-३२ के	४ <b>१-३६-३२-</b> ३२ के		
२५४		का. २ में को. नं. १८	कों नं २६		
२५६	ć	का २ में			
	•	एकेन्द्रि सूक्ष्म पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय प्रयोप्त		
२५८	२१	का. ३ में को. ७	को.		
२५९	, २	का. २ में केवलदर्शन	केवलज्ञान		• :
244	२	का १ में २१	२१ घ्यान		•
२६३	ঙ	का ३ में ५	<b>१</b>		•
२५७	२५	का. ५ मे १ दर्शन	१ लेश्या		
२६७	ሪ	का. १ में १६ स्व	१६ मन्यत्व		
२६७	१८	का. २ में	२		
२६८	6	का. २ में को. नं. २६	को नं.३६	•	, '
२६८	<b>१</b> ३	का. ६ में को . नं. २६	को नं. ३६	•	٠.
२७१	L	का, २ में १	१ त्रसकाय		•
₹७१	9	,,	१ अनुभय वचन योग		•
२७६	₹.	का. ४ में १ भंग	सारेमंग "	٠.	•
२७६	. १४	का. ५ में को. न. ८	को. नं. १		
२७६	ሪ	का. २ में को. नं. १८	को. नं. १		
२७६	२९	का. ४ में १ देव	१ मंग		
२७९	Ś	का. ३ में ६-५६-६	<b>६-५-६-</b> ६		
	१	का. ३ में ५	₹		
	ं १	" १ से गुणस्थान में	१ से ४ गूण में	-	
२८७		का. ६ में २४-५-,२७	<b>२४-२५-</b> २७		
२८८		९८ उदययोग्य	९८ उदययोग्य		
	११	0.0	· अंतमृहुतं कम एक		
	१५		5.5 <b>.−6</b> .6		
	२४	• • •	8		
२९२	४ ५ के बीच ग	्का <b>. २</b> मे र	र्वः, कःधयोगः १ •		
<b>₹</b> ₹₹	ų	समचतुरस्रवसंस्थान २	समचतुरससंस्यान १		
568	<b>१</b> ४	का. २ मे पंचेन्द्रिय	संज्ञ पंचिन्द्रिय		
२९५	ş	का. ६ मे १ पंचेन्द्रिय	१ संजी पंचेन्द्रिय		•
	eq	मध्यमान	<b>बक्षमान</b>	•	
<b>३००</b>	<b>₹</b>	का २ मे ३ पुरुषचेद	१ पुरुषवेद		

र्षृष्ठ	पंक्ति	नगुद्धता	<b>बुद्धता</b> 💎 🕾 ⊱	3 T. T	2. N.
३०२	9	<b>षटाकर ४६ प्र.</b>	्घटाकर १४६ प्र		:
美の美	70	का. ६ में ३ का भंग	१ का भंग		.`.
३०४	२१	का. ७ में १६-१८-१८	१६-१८-१९		
په ه د	ų	का ८ में सारेभंग	१ वेद		٠,
३०६	,	का ६ में १७-१८-१९	१६-१७-१९	;	<i>:</i> .
३०६	₹	का. २ में को नं १	को. नं. २६		
३०६	१४	का. ८ में को नं ७	को. नं १७		
३०७	0,	का. ७ में १	१ मंग		
- 366	8	का. १ में १० उपयोग	२० उपयोग	* -	٠,
छ ० इ	6	का २ में की नं . १	को. नं १८	1,.	·
इ०७	२९	का. ६ में ४-६-१-४-६	8-4-2-8-4	٠,٠	i a v
>0 €	२४	ना ६ में ३४-३७-२८	38-25-8€		
308	१०	ना. ६ में १ ले ४ थे गुण	१ ले २ रे ४ थे गुण	•	3,23
308	१२	का। ६ में ४९-३३	३९-३३		
218	5	का २ में ३३०-२३१	3\$0-338		• • • • • • • • • • • • • • • • • • •
३१४	१३	का. ६ में पयप्ति	<b>अ</b> पयिष्त		٠ ٢.٠
₹ <b>१</b> ४	१६	,, पर्योध्त	अपर्याप्त -		
३१६	१ <del>६</del>	का में	१ भंग	-	24
₹ १ €	२७	का ६ में २३२३	२३२३२३ के भंग		, 🛂
		<b>२३२३ के</b>	को, नं. १७ के २५-२५-	.२५२५	
३१९	ų	का ७ में मंग	१ अंगः । ।		
३२१		का ४ में सरोमंगः	को. नं ार देखोः 🚲	1.7	V 45
३२२	ę	ना ६ में ३ ्र	18 and 5 5 5 5 5		
३२३	હ	का. ७ में १ भंग 🤢	सारेभंग 📡 🖟 🐰		۶., ۶
३२२	v	का. र में ५	44. · , · ,	ŧ	13.0
ခဲ့သခဲ့	२०	का. ३ में वेये २ 🚉 🕆	वेद में २ 🕠 👉		,
\$ <b>?</b>	ધ્	का. ३ में की. नं: १७	को नं १९: 🚅		., '.
इउ४	₹ও	का ३ में २५-२४-२५-२८	२ <b>६-२४-२५-२८</b>		
કંગ્રંય		का. ६ में २८-२३-२२	२८-२३-२१		•
३२५	\$	का. ८ में को न १५	को मं. १९ 🗀	•	.*
३२८	<b>?</b> ?	•	१-२-१-२ के. मंग	:	
\$36	6	का ५ में को नं १७			
३२९	ц	का इमें १७-१८-९	30-85-88		173
३२५	Ę	का रमें १ देखी	१७ देखों	•	• •
<b>३२</b> ९		का ३ में २ ३-३-२-3	j-5-5-3-4-3		
इ २९		का ३ में १८ देखों	१७ देखी		,
६२९	१६	का ५ में १६ देखो	१७ देखों	•	,

*				
षुष्ठ	पंक्ति	<b>नघु</b> ढता	गुढता 🐪 😳	\$4
३२९	२१	का. ३ में २ ३ के मंग	<b>२-१-</b> ३†२-३	
3,50	?	कार् ६ में ६-२	4-8	
<b>គុ</b> ង្ក	२	का ६ में १८ देखां	१७ देखों	•
३३१	ሄ	का. ८ में अपने जपने	वपने अपने स्यांन के सारे	मंगी में
	•	· · ·	ं योई एक मंग जानमा।	
३३२	6	का. ३ में २९-२७	२९-२७-२८-३१-२८	
		२८-३१-२७-२८-२९-२९	<i>२९-५९</i>	
३३२	१९	का. ६ में २४-२२	२४ <b>–२२–</b> २३–२५	
		<b>२३-२५-२</b> ६-२५	75-78	
३३२	•	का. ६ में १७ के समान	४७ देः समान	<i>:</i>
३३२	દ	का. ७ में 🔐	सारेमंग	
		•	को. नं. १९ देखो	•
वेदर	<b>१</b> ० '	ंका टेमें ,	को. नं. १९१ मंग	•
		· ·		r *
३३५	6	का. ५ में को न. १६	कोई १ भग	x**
३३५	\$	,, १८-१७ देखो	को नं. १७ देखी	
३३५	Ę	का. ८ में को. नं. १६	कोई १ भंग	´ . ` \$
३३५	<b>o</b>	का. ८ में १८-१७ देखी	कां, नं. १७ देखी	
थहह	९	का ६ में ू		,
३३७	૪	का. ८ में	की मं १६ देखी	٠
छई इ	S	का. ६ में	को नं १६ देखो	,
		२३-२३-२३-२३-२३	<b>३२-२३-२३-</b> २३	, ,
३३७	११	का. ६ में स्त्री	स्त्री-पुरुष	
₹5°,33°	805	का ३ में कों ने १	को. न. १६	• ,
355		ना. ६ में ३-४ के भंग	२-३ ने मंग	
3 98	९	का. ४ में	६ वर्षयम	
	के नीचे			
३६८	१० के नीचे	का ५ में	१ असंगम	
३३८	<b>१</b> १	ना, ४ में, २ में स	<b>१-१</b> में ने	
346	<b>\$</b> \$ ? ?	का प्रदेश में त	१-१ में मे	-
\$%e	२६	का. ६ में	»,	
		=-8-8-8-8-8	3-8-8-5-8-8 क्र स्त	
έXŧ		सा. ३ में ३३-३१-३१-२९-२९	3 8-8 6-3 8-8 8-9 8-9%	
584		ना. २ में ४	*	
380		का ८ में सारेमंग	र भग	7
\$¥#	۷	,, मारेमंग	n na na na na na na na na na na na na na	*

र्वेट्ट	यं विह	<b>बब्</b> रहता	बुद्धता ;
<b>इ</b> ४५	Şŧ	का. २ में ३	
३४६	\s	का. व में वै. मिस्नकाकयोग	कार्माण काययोग <b>१</b>
şko	१४	का. ६ में १-१ के भंग	१ का भंग
३४६		का. ३ में	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
•		१३-१२-११-१०-११-९	१३-१२-१ <b>१-</b> १०-१०-५
386	Ę	१२० ९ वें गुण	२१-९ वें गुण.
३४९	3	२११० वे गुण.	१७-१० वे गुण.
३४९	ч	गुण ९ में	गुण में.
340		पृष्टसंस्या (१५०)	(३५०)
३५२	રૃષ	का. ३ में	4
	के छप		_
३५३	१०	का. ३ में २-१-१ के	६-१-१ के
३५३	१२	का. ५ में	को. नं. १६-१८-१९ देखो
	₹ ₹	28	को. नं. १७ देखो
	*	, सारेमंग	१ वेद
	Ş	का. २ में २	<b>२२</b>
- •	\$	क ५ में सारेगंग	१ भंग
	१२	,, सारेभंग	१ भंग
	१५	,, सारेभंग	१ भंग
३५६		का. ६ में को. नं. १८	को. नं १९
३ <b>५</b> ५	२१	"३-२ के मंग	३-१ के भंग
	२४	,, ६-२ के भंग	६-१ के भंग
३५६		का, ७में संदिभंग	१ मंग
३५६	१३	,, १ भग	सारेमंग
३५६		•	ण्यत्व का छूटा हुवा विषय आगे पृ. ३६१ पर देखो
३५८	६१७	का ८ में को. नं. १६ देखो	को. मं. १६ से १९ देखो
३५८	२३	"को.नं.६६	को. नं. १६
३५९	३०	का. ३ में २६-४१ के	४६-४१ के
३६१		का. १-२ में ५६ का	३५६ का
३६२		का. २ में १	<b>Y</b>
३६३	१० के नीचे	का. ६ में	अपने अपने स्थान की लब्बिरूप ६-५-४
			भी होंती हैं।
३६४	२६	का. ३ में १	<b>?o</b>
३६५	२	का ६ में १-१ के मंग	१—२ के भंग
३६६	ų	का. ८ में १ भंग	१ ज्ञान
३६७	२५	का ३ में २ का भंग	२३ के भंग

पुष्ठ	पंनित	<b>બ</b> ગુ <b>ઢ</b> તા	<b>भूद</b> ता
३६७	१९	का ७ में को.नं. १९	को नं. १६
३६८	११ १२	का. ८ में को. नं. १६ देखो	को. नं. १६ से १९ देखो
३६९	१६	,, 6-85	29-09
३६९	8	का. ४ में	१ नंग
	के अप		
३६९		का. ५ में -	१ अरस्या
3120	के कप		
३७० ३७२	१५ ५	का. ८ में को . तं. १७ का. २ में वेचकसम्य¶स्व	की. नं. १६ 
•	•		वेदमसम्यवत्व
३७२	२२	का. ३ में २३२६-२ के	२३ २६-२५ के
३७५		का. ६ में	अपनें अपनें स्थान की लग्धिकप
<b>-</b>	कं मीचे		६-५-४ भी होती हैं।
१७६		का. ४ में सारेमंग	१ मंग
१७७	१ कें मीचे	मा. ४—५ में	को. मं. १९ देखो ।
३७७	या गाप ८	अप्र <b>र्था</b>	प्रत्या
₹७७	16	, स्वान	समान समान
३७७	٧,	का. ६ में ९ के	<b>१९</b> के
३७७	¥	का. ८ में १ ग	र मंग
थण	ų	,, की. १	फो नं. १६
३७८	११	का. ३ में ३ के	३३ मेः
₹७९	२५	मा. ६ में ३-३-१ ने	३-३ <b>-१-१</b> के
३८०	ş	का. २ में २	२ मन्य लगरप
३८०	१६	का. ३ में १-१-२	<b>१-</b> १- <b>१</b> -२
३८०	२	का. १ में म्यवत्य	सम्यक्ष्य
३८०	ঙ	का ६ में १	ष्
126		का ३ में ३	२
३८२		का ३ में २	*4
	-	का. ४ में को. नं. १८	को. मं. १७
		का. ६ मे ३३० वे	3९—३० मेः
		का ६ में ४१.९	*१-२९
-	-	का. ६ में ४०-५-३-३९	¥0-₹4-₹0-₹ <b>\$</b> 
३८६	१ के नीचे	का ६ में	अपने अपने स्थान की एक्पिय
	नः सहस्र		६-५-४ मा होगा है ।
३८६	१७	का. ३ में की गं. ७	को. नं १७
120	ŧ	का. ५ में	को न. १६-१८-१९ देखी
	•	* 1	

r

ष्ट	पं निस	अषुदता	सुद्धता	٠
३८७	१६	का. ६ में को. नं. ७	को नं १७ .	
₹ <b>८७</b>	Ę	का. २ में को नं. ५१	की नं २६	-
<b>३९</b> ०	<b>१</b> ८	का. ४ में १ मंग	सारेंभंग	
३९e	Ś.	का. ७ में १ भंग	सारेभंग	
3.6.8	१९	का. ६ में ६-१ के	६-१ के	
365	२७	का. ३ में गतिमें 🕟	हरेक में	
३९३	ę	का १-२ में २० उपयोट	२० उपयोग १०	
३९३	१२	का. ३ में	•	٠
		3-3-4-4-6-6-6	३४५६ <b>६५६</b> ६	
३९३	<b>१</b> ५	का ३ में 💮 🕟		
	. •	५६६७६७६६	५६६७३७:३६	-
२९३	२७	ना. ६ में पृथवत्व विचार १	पृथक्तव वितर्भवीचार १	
₹ <b>१</b> ४	3	का. ७ में १ ध्यान	१ भंग	; ,
३९४	74	का. ६ में २९ ० ३१	<b>ए९</b> ३० ३१	
3,98	२९	का ६ में ३५८ ३९	३५ ३८ ३१	
३१५	9	का ३ में नं. १८ ५१	नं. १८ के ५१	:
3,94	g o	,, ३७२२०	३७ २२ २०	
३९५	२८	"१०१० का मंग	१०१० के मंग	•
	२१	का. ३ में २७ २ २६	२७ २५ २६	
३९६		का. ६ मे २४ ३२	२४ २२	
३९७	ξο	प्राप्त हो सके	प्राप्त न हो सके	
396	२ ( के सीचे	का ६ में	अपने अपने स्थान की लब्बिकप	
			६५४ भी जानसा।	
४९९	<b>8</b> K	का ७ में को नं १६ मे	फो. नं १६ मे १९ देखो	
800	<b>.</b>	का ३ वें ५	•	
'៩១០	₹0	का. ६ में ३	२३	
800	२३	» २०२२१	२० २२ २१	·
४०२	8	का १ में दर्धन	१४ दर्शन	
४०२	१६	का ३ में नं,, ४ के	नं ५४ के	
४०३	<b>१</b> ९	का ६ में ३८९४३	३८ ३९ ४३	
४०३	२८	,, ९४	९ ४०	
४०७	१८.	का ३ में १	<b>१</b> o	
४०७	16	का. ६ में ८	Ŀ	
	ધ્	का २ में १०	१५	
806	6	का ५ में ४ देखो	५४ वेदी	
ÁŧĆ	१२	का ३ में ३	•	

वृष्ठ	. पंक्ति	अशु <b>द</b> ता	गुद्धता
Y•6	<b>१</b> ३	का. ६ में १८ १ के	१८ १४ के
X08	१७	"१८१के	१८ १४ के
४०९	Ę	का. ८ में को. नं. १९	को. मं. ५४
४१०	२	का. २ में ५४ देखो	१६ देखी
४१०	२	का. ६ में ४ देखी	५४ देखी
४१०	K	,, ४ देखो	५४ देखो
X \$ 0	६	का. ७ में ४ देखो	५४ देखो
४१०	<b>9</b>	का. ४ में १ मंग	सारेमंग
४१०	२६	का. ६ में. ४२-४३ के	४२– ३३ के
४११	<b>१</b> ३	का. ३ में ४-३६ के	४०-३६ के
४११	११	का. ६ में ३३-४-३५	₹ <i>₹−</i> ₹४−₹५
४११	१२	<b>,,</b> ₹₹-४-₹	<i>≨ 3</i> −3 <i>8</i>
४११	२४	का. ६ में और ७-८ में	४ देवगति में
पृष्ठ	पं वित	कालम ६	का ७ का ८
४११	२४	४ देवगति में	सारेनंग १ मंग
		२८-३३-२८-३७	को. नं. १९ देखों को नं. १९ देखो
		३२-२८-२८ के	
		मंग को. नं. १९ के	
		x3-3C-53-x3	
		३७-३३-३३ के	
		हरेक भंग में से	
		पर्याप्तवत् शेंप ५	
		कपाय घटाकर ३८-३३-२८-३७	
		२८-२२-२८-२७ ३२-२८-२८ के	
		भंग जानना	
Vae		≆ा. ५ में	को नं १६ देखी
४२१ ४१२	>> <b>₹</b> o	का. ३ में ३३-३-३१	±==50-=55 40 4 (4.444
¥ <b>१</b> ५		का. ३ में १९ देखी	१८ देखो
* 24		,, {	Y
४१५		नां. ६ में १९ देखी	१८ देखी
४१६		का ६ में २८	२६
¥85		का ५ में की नं १	की नें. १६
*21		का. ३ में २	२३ के भंग भी। त १६ देवी
¥21		का. ४ में	की में हुइ देखें।
	के मीचे	•	•

पृष्ठ	पंक्ति .	अशुद्धता	शुद्धता
		सचना—नरकगति में अवधिज्ञान मद	। प्रत्यय होता है । इसलिये यहा ३ फा
		भंग जानना।	
४२१	२८	का. ३ में १२२	१२२ के भंगको. नं. १७ देखो
४२२	٠ <u>٠</u>	का. ३ में २ २	२ के भंग को. नं. १८ देखो
४२२	γ,	का ३ में २ २	२ के भंग को. नं. १९ देखो
	-	, ,	
		सूचना — देवगति में अवधिज्ञान भवप्र	त्यय हाता है। इसालय यहाँ ३ की
		मंग जानना ।	
४२३	6	का. २ में	4
४२४	₹	का ३ में	ओ १ दोनों में से कोई १
	દ્	का ६ में २३२	₹ ₹ ₹
४२४		का. ४ में १६ से	१६ से १९
४२५	१०	का. ६ में ३९ ४ ४३	\$8 80 83
४२७	Ę	१४८ १४५ १४५ प्र.	१४८ १४५ १४७ प्र.
४२७	१०	सारे कुज्ञानी	सादिकुज्ञानी
४२९	१	का. १ में काय	८ काय
४३०	२	का. ३ में १६ से १६	१६ से१९
४३२	१५	का. ३ में २८ २ २३	२८ २५ २३
४३२	१९	का. ३ में २ २२ २३	२४ २२ २३
४३७	४	का ६ में १६९ देखो	१६ १९ देखो
४३७	१६	का. ६ में ६ देखो	१६ देखो
४३७	१७	का ७ में ६ देखो	१६ देखी
४३९	γ	का ३ में ६ देखी	१६ देखी
४४०	ષ	का. ३ में १	₹
४४०	१३	का ३ में ३ ३ २ २ २ १ ३	३३२३२ <b>१</b> ३
-	२१	का. ६ में ६ ६ ६ ६ के	६६६ कें
	2	का, ५ में भंग	१ भंग
	१६	का ६ में ज्ञान मरकर	ज्ञानी मरकर
	\$ \$	कां ८ में ६ देखो	६० देखो
	<b>\$</b> <del>\$</del>	का. ३ में ४ ३ २ १ १ १	x 3 2 8 <b>8</b> 0
	Y	का. ३ में ७ ४ १ के	७४११ के
	२	का ५ में ७ ४ १	@ X 8 4 ;
इ५४	to 5	का. ३ में	6 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 1
		हर २० २ १६ १५ ४ १३	रा २० २० १६ १५ १७ १३

पुष्ठ	वंक्ति	<b>अनुद</b> ता .	गुद्धता
		१२११ १०१९ कें	१२ ११ १० १० ९ कें
४५४	-	का. ३ में २२ २१ २००	२२ २१ २० २०
४५४	२४ :	का २ में	मूचना ४५५ पर देखो
४५५	8	इन उदय नहीं	इन ४ का उदय नही
४५६	ও	का २ में १०	R
४५७	G	का ४ में ११ मंग	१० के भंग
840	<b>२</b> २	का. ३ में पेज ५८ पर	पृष्ठ ४५८ पर
४५८	8	सर्व लोंक	सर्वं काल
४५९	१९	का. ६ में	अपने अपने स्थान की लब्धिरूप
	के नीचे		६५४ भी होती है।
४६१	१११२	का. ६ में औ कायद्योग १	र्का मिश्रकाययोग १
		वै. कायमोग १	वै . मिश्रकाययोग १
४६२	Ę	का. ४ में ६ देखो	<b>१</b> ६ देखो
४६२	<b>१</b> ३	का. ८ में १ यान	१ ज्ञान
	२८	का ३ में को नं. ६	को. नं <b>१</b> ६
४६४	२८	का. ६ में १ संज्ञा	१ संजी
४६५	ų	का. ५ में देखो	१९ देखो
४६५	१२		सारेभंग
४६६		का. ७ में १६ से	१६–१८
४६७	8	ंका. २ में दर्शन ५	दर्शन ३
<b>*</b> \$0		का. ६ में २४-२३	२४–२२
	११	प्राप्त न सके	प्राप्त न कर सके
•	ሄ	का. ३ में १७-१ देखो	१७-१८ देखो
४७१		का. ३ में ३	<b>१</b>
४७३	१२	१८ लाख मनुष्य योनी जानना	१८ लासयोनी जानना
४७५	₹	का. ३ में ८-९ के	९९ के
•	Ę	का. ३ में ८ देखी	१८ देखी
•	6	~	न्त्री नपुंसकवेद
		का. ६ में पेज ७४ पर	पृष्ठ ४७८ पर
		का. २ में ४	· <b>3</b>
		का ३ में ७-४-१	७-६-७
		का. २ में रोप वार्तध्यान	शेष वार्तच्यान ३ •
४७६	२५ के नीचे	का. ६ में	१ मनुष्यगति में
४७७	v	का. ६ में १ का भंग	१२ का भंग
You	<b>o</b>	का. २ में दर्धन	दर्शन ३

			• • • •	
पृष्ठ	पं वित	अशुद्धता		<b>बुद्धता</b>
४७७	۷	का. ३ में ३१७-३१		38-20-38
४७८	8	बंघ जानना	;	वंघ जानना । को. नं ६ से ९ देखो ।
806	१२	का. ६-७-८ में		
		यहां पर अवस्था		यहा पर अपर्याप्त अवस्था
४८१	२	का. ४ ५ में १-१		१ मंग १ उपयोग
				कौ. नं. १८ देखो को . नं. १८ देखो
४८१	દ્	का. ३ में ६		9
४८१	6	,, ७४ के मंग		७-४ के भंग
४८२	ų	4		५५
<b>ጸ</b> ८४		का. २ में सूक्ष्मयोग १		सूक्ष्मलोम १
४८६	₹ •	का. २ में १		2
४८६	१३	का. ३ में १०-४१ के		१०-४-१ के
४८७	ų	का. ३ में कपाय		वक्षाय
866	8	का. १ में १० उपयोग		२० उपयोग
866	४	का. ६ में १ देखो		१८ देखो
866	9	<sup>8</sup>		<b>११</b>
४८८ ४९०	१४	का. ३ में ९-३-० का. ३ में असास्रव		<b>९-</b> ५-३-०
	२२			अनासव
४९०	२४	का. ३ में यें ५ जानना		ये ५ जाननाः सूचना-पृष्ठ ४९१ पर देखो । .
४९१	२	४२५ 		५२५ सर्वकाल
· ·	ς,	सर्वेलोक का. ६ में ५–४-३ के		५-४-३-७ के
४९३	२०	का. ३ में १-०-४ के		१-१-०-४ के
४९३ ४९३	२६ २८	का. ६ में ४ के		४ <b>-४</b> के
		का. ६ में		
४९५	१२			= 0 = 0.3_5_9
	_	३- <b>१-</b> ३- <b>१</b> -३- <b>२-१</b>		₹-१- <b>₹-१-</b> ₹- <b>₹</b>
४९६	2	का. ६ में ११-२३-१९		११-२४-१९ २ <b>४-२४-१९-२</b> ३
४९६		,, २४-२४-९-२३		
४९७		का.३ में १-३-१		<b>१−३−१−१</b>
४९८		का. ३ में १-१-१-३-		<b>१-१-२-१</b>
४९८		का ६ में <b>१-</b> २		१-१- <b>२</b>
४९८		<b>"१-३</b> के		१-१-३ के
४९८		,, को.नं.६		को. नं. १६
४९८		का. ८ में को नं. ६१	•	को. नं १६
४९९	6	का. ६ में अअवधि		कुअव <b>चि</b>

पृष्ठ	पंक्ति	<b>वगुद्ध</b> ता	<b>गु</b> द्धता
५•२	ų	का. ३ में १ <b>१-०-४</b>	११-७-४
	Ę	का. ८ में १७ देखो	१८ देखो
५०३	२७	का. ६ में ७ के	१७ देखो
५०६	२२	का. ३ में ३ के	२३ के
५०६	4	का. ६ में २६-२	२६-२६
५०८	१५	का. ३ में द्वोन्द्रिय १	द्यीन्द्रिय . १
406	१६	"त्रीन्द्रिय १	त्रीन्द्रियप १
५०८	१३	का. ५ में देखो	१८- १९ देखा
५०९	ષ્	का. ६ में	अपने अपने स्थान के ६-५ पर्याप्ति
	के नीचे		भी लब्बिरुप रहती हैं।
५११	२३	का. ३ में को . नं . १७	को. नं. ७१
५१२	9	का. ७ में को नं ७१	को . नं. १७
५१२	१२	का. ८ में को. नं. ७१	को . मं• १७
५१४	8	या. २ में ८	8
५१४	Ę	का. ७ में सारेमंग	सारे पुणस्थान
५१४	२	का. ८ में सारेनंगो	सारे गुणस्यानीं
188	२२	का ६ में को तं. ६ से	को. नं. १६ से
५१७	3	का. ३ में ३-१-१-०	3-7-1-1-0
५१७	ሄ	का. ६ में ९-११-१९	१९-११-१९
५१७	१६	का. ६ में हरेक में	हरेक में १ असंयम जानना.
४१९	२१	का. ३ में १ वे	१-१ के
५१९		,, १ के	१-१ के
५२१	२	,, ९-१-११	<b>९-१0-११</b>
५२१	X	का ५ में ८ देखो	१८ देखी 
५२२	<i>७</i> २२	का. २ में वेद का. ६ में २८-२६-२३	वंदक २८-२५-२३
			२५-२४-२३-२३
	<del>ئ</del> د.	का. १–२ में १ वें गुण.	१२ वें गुण.
५२७		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	८५-१३ जानना
५२७		"८−१३ जानना का. ३ में	८५-८२ जानना सूचना-देवगति में पर्याप्त सबस्या मे
५२८	६ के नी <sup>ड</sup>		भूषना-देवगात में प्याप्त अवस्या में अगुन छेरया नहीं होती ।
५२९		<sup>1</sup> का. ६ में को. नं ६	की. नं १६
		का ६ में १६-१८-१	१६-१८-१९
		का. ७ में तं. १-१८	रं - १८-१८ नं. १६-१८
423	G	न्यः प्रच पः १०१८	/ 4-/0

वृहरू	पंक्ति	<b>अध्यक्षता</b>	<b>नु</b> खता ्
५२९	२४ के नौचे	का ३ में	सूचना-देवगति में पर्याप्त अवस्या में अशुभ लेश्या नहीं होते ।
630	२ ३	का. ३ में कर्मभूमि की	१ नरक और कर्मभूमि की
५३०	२ ३	अपेक्षा १ करक मनुष्य का. ६ में कमँगूमि की अपेक्षा १ नरक मनृष्य देवमति	अपेक्षा मनुष्यगति में । १ नरक देवगति में <b>को</b> र कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में ।
५३०	Ę	का. ६ में १६-१८-१९	१६-१९-१८
५३०	१२ १३	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य देवगति	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में ।
५३०	१२ १३	का. ६ में <b>कर्मभूमि</b> की अपेक्षा १ नरक मनुष्य	१ नरक देवगति में और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्वगति
५३०	१६	का. ६ में १६-१८-१९	१६-१९-१८
५३०	२६ २७	का ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य गति में।	१ नरक और कर्मंभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में
५३०	२६ २७	का. ६ में कर्ममूमि की अपेक्षा १ चरक मनुष्य देवगति देवगति ।	१नरक देवगित में और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगित
५३०	३०	का. ६ में १६-१८-१९	१ <b>६-</b> १९ <b>-</b> १८
५३१	ц	का ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	इस पंनित को इसके नीचे ८-९ के विश्व
५३१	9	का. ६ में ३-१-३-१	₹ <b>-</b> १ <b>-</b> ३-१ <b>-</b> ३
५३१	१६	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	इस पंक्तिको इसके नीचे १९-२० · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
५३२	१	का २ में ४	Ę
५३२	२	का ३ में कर्ममूमि की अपेक्षा	इस पंक्ति को इसके नीचे ५-६ पंक्ति के बींच पढा जाय ।
५३२	२७	का ६ में २-२	१-२-२
५३३	१६-१७ केबीच	का. ३ में	कर्मभूमि की अपेक्षा इतना पढा जाय।
५३४	२~३	का. ३ में कर्ममूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्य ।
いヨメ	₹~3		१ नरक देवगति में और
740	\ - ₹	<b>.</b>	कर्मभूमि की अपेक्षा
		देवगति	मनुष्यगति ।

पृष्ठ	पंक्ति	<b>वगुद्धता</b>	शुद्धता
५३३	9-१०	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षातीनो	१ नरक और कर्ममूमिकी अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्य इन दोनो ।
५३४	<b>4</b>	ना ६ में १६-१८-१९	१६-१९-१८
५३४	<b>१</b> २-१३	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा तीनो	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच मन्ष्य ।
५३४	<b>१</b> ६	का. ८ में सारेनंग	, १ भंग
	₹-₹	का. २ में कर्मभूमि की अपेका १ तीनो	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच मनुष्य ।
५३५	8	का. ८ में को नं. १६	को. नं १७
५३५	१९	का. ३ में २	३
		का. ६ में ५	४५
५३५		का. ६ में औ. मिश्र	ओं काययोग १ वं. का
		काययोग १ वै. मिश्रकाय योग १	योग १
		ना ६ में ३४-२५-३८	₹ <b>४</b> —३५–३८
	११	का. २ में असंयमानंयम	असंयम
५३६		्मा. ४-५ में	३ रे का. में के २६ आदि
	के नीचे		् भूभमंगी के सामने।
			इस प्रकार गिन्ह छिष छेना
		का. ३ में ९–३०–३२	२९-३०-३२
458	२	का. ३ में	
		कर्ममूमि की अपेका.	इ.स.पंक्तिको इसके नीचे ३-४
630	9 90	का. ३ में कर्मभूमि की	पंक्तिके बीच पढा जाय । १ नरक और कर्मभूमि की
141	1-10	अपेक्षा १ मरक मतृत्य	***
५४०	ą	का ३ में कर्ममूमिकी अर्थेक्षा	जनवार वर्गुल्य गायन र जनर में समान यहां भी लिख हैता
480	પ્	3) 11	
५४०	6	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	१ नरक और कर्मभूमि की अपेंक्षा
	*		मनुष्य तिर्यं न गतिमें हरेक भें।
480	२६	का. ६ में का	४ मा
५४१	₹	का. ३ में कर्मभूमि की अवेका	१ नरक और कर्मनृति की अवेक्षा
			तिर्यम और मनुष्य ये ३ गीत जानता।
५४१	¥	का ६ में एक एक जानना	ग्राम्स ग्रामा दानसः
488	4	ना. ३ में उमंनूनि की अवेशा	१ सरक और सर्वसूमि औ
			स्पेसः मन्द्रय गतिमें ।
**	ŧŧ	गा. रेमें गर्मनृति की अपेक्षा	१ तरक और नर्ममृति की
			बदेशा मगूष्यगति में और

पृष्ठ्य	पंक्ति	बश्द्वता	शुरुता
५४२	<b>१-</b> २ के बीच	का. ६ में	<b>और</b> 
५४२	१ के नीचे	का. २ में	को. नं १ देखी
५४२	ર્	का. ३ में कर्मभूमि को ३	पिक्षा १ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में
५४२	ų	का ३ में कमें भूमि की अ	
<b>५</b> ४३	२	का. ३ में कर्ममूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्ममूबि की अपेक्षी तिर्यंच और मनुष्यगति में।
५४३	५	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कमैभूमि की अपेक्षा तिर्यच और मनुष्य गति में।
५४३	6	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तियँच और मनुष्यगति में।
५४४	२	का. ३ में तीनों गतियों गं	
<b>પ</b> ે ૪ ૪		का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्ममूमि की अपे <b>क्षा</b> तियंच और मनुष्य इन दोनो गतियों में।
488	8 6	का. ३ में कमें भूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेया तिर्यंच ओंर मनष्यगति में ।
480	९ २	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में ।
480	4 4	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तियच और मन्ष्यगति में।
५४	4 6	का ३ में कर्ममूमि की अपेक्षा	१ नरक और कंमभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनूष्यगति में।
५४	६ २	का. ३ में कर्ममूमि की अपेक्षाः	१ नरकगित और कर्मभूमि को .पेक्षा तिर्थच और मनुष्य इन दोनोगितयों में।
५४	<b>૧</b> ૧૬ પ	का. ३ में कर्ममूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिथँच और मनुष्यगतियो में।
५४	९७ १ के ऊ		₹ €
५४	९७ १	का ३ में कमंभूमि की अपेक्षा	१ नरवगति और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगितमों में।
		का ६ में ३७-३८-९	३७-३८-३९
48		का ६ में ४३ – ८ के	४३—३८ के
	४७ १५	का ६ में की. नं, ७	की. मं. ७५
५४८ २	का. ७	में	की. नं. १५

ष्•छ	पं वित	अगुद्धता	<b>ग्</b> दता	e de la companya de l
440	Ę	या. ३ में	नुचना- नरकगति में	गुमन्देशं नहीं
^	के नीचे		होते हैं।	* 3
440	8	का. ६ में १-२-४-६	१-२-४-६ गुण.	•
	۷	का २ में ०	की. नं. १ देखी	* ,
५५१	१९	का. ६ में १८-१ देखी	१८-१९ देखी	<i>y</i> •
५५२	२४ ज	ंका. ३ में ३ का 🦈	२ का	¥
५५२	<b>१</b> ६	का. ६ भे २-१-१ के	३–१–१ के	
५५३	१३	का. ३ भें ४–३ के ∙	¥-₹-₹ के · ·	•
५५३	<b>१</b> २	का ५ में से १९ देखी	'देखाँ	**
444	٤	कार में २	<b>१</b>	7
५५५	२७	का. ६ में ४-७-९	· 6-3-9	* ***
५५६	*	का. ८ में १ मंग	१ ध्यान	2
५५६	<b>१</b> ६	का. ३ में ३७-५-४५	36-16-54	τ,
44६	२०	का. ३ में ५-४६ '	48-85	\$ °C
५५६	<b>{</b> <del>3</del>	का ६ में ३-१२ के	३३−१२ के	•
५६०	१९	का ६ में १	₹	سوره
५६१	१२	का. ६ में १०-३ के	१-२-३ के	3,4
५६१	ų	का ४ में	सारंभंग	2
	के नीचे			÷ <sub>K</sub>
५६१	4	का. ५ में ः	१ सम्ययस्य 🦠 🔻	•
	कं नीचे		۲ سامهای سا	*
५६१	६ नैः ऊपः	्का. ४ में ः	सारेनंग ्र	,
५६१	या करा इ		सम्बन्ध	. "
741	५ के ऊपः		30° 4 34°9	* *
५६२	٤		सारेमंग	
५६२	ŧ	का ५ में	१ मंग	
५६३	ą	या ६ में १-२-५ ६-१३	१-२-४-६-१३ ग्रीस	
५६३	१०	का इमें नं. ७	र्न १७	•
५६३	१५	का. ६ में नं ८	नं १८	^ • •
५६३	¥	ना. १ में प्राण	र ताव	
488	16	का. ६ में १८-१	१८-१%	
५६५	१६	या ६ में २-१-१-०	₹ <b> १-</b> १-०	. , ,
455	8	ना ३ में में ९	र्स १९	ي.
५६६	\$	सा ६ में ४१६	\$14.5°	
५६६	१३	का ३ में ७ वंबे	<u>कि देगी</u>	5.1.4
५६६	<b>₹</b> 4	का. ३ में ४-३-३ के	Y-1-3 3	Ti Ti
<b>५</b> ६६	ર્ષ	या. हे में १५६	<b>₹.</b> • ₹. • ₹.	***

पृष्ठ	<b>पंक्</b> त	<b>अश्</b> दता	घुडता
५६७	Ę	का. ३ में २-३-३-१	<b>२-३-३-</b> १
५६८	१७	का. ६ में ५-६-६-६	<b>4-8-8-8-8</b>
५६९	3	का. ३ में ८-९-१०-१-७	८ <u>+</u> ९-१०-११-७
५६९	<b>?</b> ६	का ३ में ३७-४०	३७-५०
५७१	२३	का. ३ में २-२२-२३	<b>२४-२२-२३</b>
५७३	ę	का ६-७-८ मे	सूचना-महा अपर्याप्त अवस्था नहीं होती.
		अपर्याप्ति अवस्था नहीं होती,	Section of the section of the section
५७५	b	का ३ में ३	<b>Y</b> .
५७५	<	का ६ में १-२-४-१३	१-२-४-६-१३
५७५	<b>१</b> १	का ६ में 🕻	8
५७६	१६	का. ८ में को. नं. १-१७	को . नं. <b>१६</b> –१७
406	२०	का. ६ में ३-१-०	3-4-8-0
५७८	२३	का. ६ में २-१ के	 २१-१ के
५७९	Ę	का. ३ में १३१११	<b>?</b> 3—? <b>?</b> —? 3
५७९	२	का. ६ में २-२३	२५३३
469	१९	का. ३ में २३-३ के	२-३-३-३ के
५७९	२२	का ३ में ३ – ४	<i>3−3-</i> ४
५७९	१४	का. ५ में ९ देखो	१९ देखो
५८०	२	का. ७ में नं ६~१९	नं १६–१९
460	<b>પ</b>	का. ७ में नं ७	नं. १७
420	६	का. २ में को. नं. १८	को नं १
468	२	का. १ में १६ सम्युक्त्व	१७ सम्यक्त्व
५८२	१६	का. ६ में १६-९ देखो	१६-१९ देखो
५८३	Ę	का. ३ में ६ – ६ के	५-६-६ के
५८४	6	का ६ में ३२-३३-३५	३२-३ <b>३-</b> ३४ <b>-३५</b>
५८४	6	का. ७ में लोरे	सारे
466	१०	का. ४ में देखो	१९ देखो
• •	3	का. ३ में ६-४-६	<b>&amp;-4-8-</b> &
५९०		का २ में १	<b>€</b>
	२८	का. ६ में २-१-२	१-२-१-२
	२५	का. ६ में ४-२४-२३	₹ <b>४-</b> ₹४ <b>-</b> ₹३
	१२	का. ७ में ६-१८	१ <b>६-</b> १८
• •	<b>१</b> ३	का. ८ में ६ से	१६ से
• •	<b>२२</b>	का ३ में ५५	47
	२३	का. ३ में २४-२५-७	5x-54-5à
• •	<b>\$</b> 8	का. ४-५ में ०-०	<b>१-</b> १
490	₹ <b>.</b>	ii 6b	<b>१-१</b>

पृष्ठ	पं क्ति	वशुक्ता	गुद्धता
५९७	15	का. ३ में न अनाहारक 🐪	न असंज्ञी
५९७	१९	का ३ में न प्रभव्य	न अनाहारक
490	२∙	का. ४-५ में ०-०	२ युगपत २ युगपत
490	२३	वा. ४ में ०—०	<b>५</b> ५
490	२४	का. ३ में	मूचना— पृष्ठ २९८ वर देखी.
५९८	Ę	का. २ में १०	*
६००	२०	का. २ में १८ देखी	८२ देखो
६०१	<b>१</b> २	२२ लाख	८४ लाख
	२४	का. ६ में ३-१-२	<del>२-१-२-२</del>
	१५	का. ३ में २-२३	<b>२४-</b> २३
-	<b>१</b> ५	का. ८ में को. नं. १६	को. नं १७
	16	का. ८ में को नं १७	को. नं १८
€ ₹ 0	4	परया	पल्यका
६१०	* *	৬ লাম	৬ চার
	ч	का. ४ में १६—१९ से	१६ से १९
<b>६११</b>	<b>११</b>	का. ३ में ◆ का का. ५ में को. नं. १९ से	१० का को. ने १६ मे
<b>६१</b> २	2		
	Ę <b>?</b>	ंका. ४ में मो.मं.	को. नं. •
६ <b>१</b> ३ ६ <b>१</b> ४		का २ में ३ का.२ में को. नं.९	<b>१</b> को : नं - ३
५१• ६१४		का २ में को नं १	्षाः प∙र की सं. ३
६१७		का ३ में १६-९ देखो	१६१९ देखों
	११	का. ३ में १२	28
६१८		का. ३ में २—१७	२१–१७
£ 82.		का. ३ में २०-९-१९	२०-१९१९
६१९	<b>३-४-</b> ५	का. ४ में परिद्वारिव	१ भंग
		मुद्धि घटागर ४	१ असंयम जानना
689	16	का. ३ में ६-१९	<b>१५१</b> ९
585	•	का ५ में १ जान	१ दर्गन
६१९	१५	का. ५ में १ दर्शन	र केंगा
<b>६२१</b>	२	का. ३ में ६-३ के	६-६ के
६२१	<b>4</b> 2	का. ३ में ४१-४-४०	¥4.¥e.¥•
६२२	21	का. ३ में कल्पवासी नवर्षधंदक	कल्पनासी-नवर्षीनेयक
६२३	२	५९म.	પ <b>્</b> ત્ર, મેં મે
६२३	6	¥€-{¥ <b>Ę</b>	\$xe-\$xe
६२४	Ę	का. ३ में २ देवगति में	मूचना- नरक तियंच और देवपति सं ।

र्वृहरु	पंवित	अ <b>गुद्धता</b> े गु	षुद्धता	TO STATE	ja i i i i i i i i i i i i i i i i i i i	50,7
६२४	१	का. ५ में गुण.	१ गुण.			**
६२४	<b>१</b> ७	का. ३ में १	१०	The Total State	\$.	
६२४	२१	का. ३ में	•		<b>1<sup>2*</sup></b> ,	: 7.5
	के ऊपर			A CAN THE	• •	
६२५	ч	का. ७ में १ मंग	सारेभंग		47	* 7.4
६२५	१४	की. २ में की. नं.	को, नं. १		. ;	3.80
६ २ <b>५</b>	२६	का. ३ में २१-७		N	•	5.00
६२५	<b>१</b> ३	का. ८ में १८	88			207
६:२७	8	का. ३ में १८-१९ देखो 👯	१८ देखो		. 3	16.
६२७	२८	का. ६ में स्त्री-पुरूपवेद २	स्री-नपुंपकवेद		2 1	No.?
६३०	₹	का. ६ में मारेमंग	सारेगुण.	•	47.3	2.52
६३०	₹	का. ८ में के खारेभंगों में	के सारेगुण . मे		$\mathcal{F}_{i}^{\bullet}$	235
६३३	१४	का. ३ में पेच ६४०	पृष्ठ ६४०		• !	5,83
६३४	7	का. ४ में १६	१९	11.51	,,	
६३४	१२	का. ३ में ३ के	<b>3−</b> 8− <u>\$</u> −8−3		* }	
६३४	ጸ	का. ६ में ८	<b>3</b>		. 3	
६३५	५	का. ५ में नं. ७	7. (6		3.3	997
६३८	Ę	का. ६ में ३३-३३-३३	३३-१२-३३			
६४०	₹	(देखोगो क.ग)	(देखोगो. क	. गा. ५५०)	•	3.8
६४१	१	का. ५ में ० गुण.	१ गुण.	i vita		- 1
६४१	२	का. ६ में मेथा	में ४ था	~ ~	3	
688	ч	का. ३ में ४	४ को काट डा	लना चाहियं	o <b>.</b> *	· \$2
६४३	१४	का. ३ में ६ से	१६ से		\$ 10	2.53
६४१	१४–१	57- 4-	सूचना पृष्ठः स	५२ पर देखा	5.3	3.73
६४२	ų	का ३ में तियंचगति में	तियंचगति में	गोगभूमि में	, ` ` ` `	5
६४२	१५	का ३ में तिर्यचगित. में.	तिर्यचगति में भ	रोग्;मूमि:मुं		, .
६४२	२२–२६		सूचना- पृष्ठः	,५२,पर <i>-</i> देखो	· •	
६४२	१३	का. ७ में १ भंग	सारेभंग		4.1	•
६४३	ą		सूचना-पृष्ठ ६	५२ पर देखी	•	٠
६४३	१४	का ३ में तिर्यचगित में	तियंचगति में भं	ोगभूमि में	,	. •
६४३	२४	का ६ में तिर्यंचगित में	तियंचगति में म	ोगमूमि में <sup>:</sup>	•	
६४३	२९	का ३ में ०- ०-२ के	१-०-२ के			<i>,</i> '
६४४	9	का ३ में तिर्यचगित में	ं तिर्यचगति में भ	गिगंभूमि में	• :	• .*
६४४	१४	का. ३ में २-११-०-२०	२-१-१-०-२०	# <b>*</b> * *		· .
६४४	<b>१</b> ३	का ६ में ९ का	१९ का			÷
•	•:			•		•

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता 💮 🔆	शुद्धता
Ę¥¥	<b>१</b> ६	का. ६ में १९-१-०-९	89-18-0-19
६४४	२३	नाः ह में तियंचगति में	तियंचगति. में भोगम्मि में
EXX	२७	का. ३ में ३-४-१-४-१ के	३-४-३-४-१-३ के
६४५	१०	का. ३ में तियँचगति में	तियंचगति में मोगभूमि में
६४५	२१	का. ३ में तिर्यचगित में	तियँचगति में भीगम्मि में
६४६	२३	का ३ में ० 🥱	सूचना-पृष्ठ ६५२ पर देखी
६४७	Ę	का. ३ में १ संज्ञी जानना	१ संज्ञी जानना परंतु तियेचगति में मोगभूमि की अपेक्षा जानना ।
६४७	٧	का ६ में १ संज्ञी जानना	१ संजी पर्याप्सवत् जानना
६४७	१७	का. ३ में तियँचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४८	१	का ३ में तिर्यचगित में	तियंचगति में भोगमूमि में
६४८	१५	का. ३ में तियंचगति में	तियँचगति में भोगभूमि में
६४८	२६	का. ६ में ९-७-९	9-19-9-5
६४९	१०	का ३ में तियंचगति में	तियँचगति भें मोगमूमि में
६४९	ও	का. २ में दर्शन ३	दर्शन ३ में क्षयोपराम भाव की
			अपेक्षा जानना, केवल दर्धन तो 🕟 🦠
			९ क्षायिक भावों में गिमत हो चुका है।
£14.0	२२	का ३ में २२-२ के	२२-२० के
	२३	का. ३ में को . नं.	को. मं. १८ के
६५१	२	का. ६ में १६ कें 🔻 🔻	₹९कें
६५२	१३ के नीचे	निम्न प्रकार मुचना लिख लेना चाहिये	•
		सूचना- चाँतीसस्यान कमांक २,३,६,७ में चारोंगति यो में से तिर्यझगति में भो	
६५३	ź	का. ५ में भंगी में	गुण में
<b>દ્રે દ્ર</b>	ર	का ६ मे २५-२	રૃષ–રૂષ
દ્ધદ	१८	का ६ में २ – ३ के	<b>२-२-३</b> के
દ્ધુ	Ę	का. ३-में २-३-३	२-३-२
६५७	1	ना १ में १३ दर्शन	१४ दर्शन
६५७	<b>5</b> X	मा ३ में २-३	६-२
६५८	•	मा. ४ में देखों	१६ देखा
६५८	10	कां ६ में	ę.
६५९	3	का ६ में १	<b>१-१</b>
इ५९	9	ना ६ में ०-६	<b>x</b> £
દ્દ	¥	का ६ में ¥	Y.
६६१	•	नाः, ३ मे ३१-२७ <del>-</del> १	3 <b>१—२</b> ७—३ <b>१</b>
६६१	٩,	का ३ में २७-२६	<b>२७-२</b> ४

			८३●		
पृष्ठ	पंवित	अशुद्धता		शुद्धता	in the second second
				२१२६२६	
६६१	१८	का ६ में २१-२७-२६		को. नं. १ के ११७ में से	,
६६२	8	को. नं. १ कें १०७ में से		दोना गुणस्थान	• •
६६३	8	का. ७ में गृस्थान		8	,
६६३	₹ <del>}</del> ~~	का.३ में ०		•	
- c V	के ऊप <sup>ः</sup> ३	का.२ में पर्याप्त		पर्यंत	•
६६४	ર <b>५</b>	का. ३ में पर्याप्त		पर्यंत	
६६४	Ę	का. ५ में वेद		१ वेद	# 2 T
६६४ ६६४	५ २०	का. ६ में १-३ के		१-३-३ के	
६५० ६६५	9	का. २ में अभय		अभव्य	
६६५ ६६५	१५	का. ३ में २ मिथ्यात्व	•	२ का भंग	
५५५ ६६५	<b>२</b> ३	का. ३ में ०		8	* * * * * * * *
५ ५ ५	के ऊप			· ·	
६६५	१२	का. २ में कांपोत पीत	•	काषोत '	7
4 4 7 6 <b>6 6</b>	٠,٠	का. २ में २८		२७	•
444 <b>६</b> ६६	१०	का. ३ में २८		२७	
६६६		का. ३ में २७ के		२६ के	~ <* · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
६६६		का. ६ में २४-२४		28 <b>–</b> 54	, .
६६८	8	का. ५ में ० गुण		१ गुण.	
६६९		का २ में कों नं. १		को, नं. १३	
६७०		का. ५ में को. नं. १९		को. नं. १८	,
६७०		का. ६ में ४		<b>१४</b>	
६७३		का. ६ में ४		<b>4</b>	9
६७२		का ७ में सारेमंग	••	सारेगुण.	
६७३		का. ६ में ७—६	• ,	७-७-६ १ मग	3
६७३	<b>१</b> ३	का, ५ में १ योग		१ भंग १ भंग	· • ; '
६७३	३ १३	का. ८ में १ योग		४-३-२-१-१-०- <b>४</b> के	
६७	४ ५	का. ३ में ४-३-१-१		९-२-१-९ के	
६७	4 4	का. ३ में ९-१९ के		१ वेद	*
६७	५ १६	का. ५ में वेद		१ वेद	# 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
६७	५ २२	का. ५ में वेद		२३-१९ के	
६७	ष २८	का ६ में २—१९ के		को. नं. १८ देखी	
६७	८ १४			diff it is to see.	-
		नीचे		१९ देखो	*
६७				<b>३-</b> ४	• •
	७९ २०	का ३ में ३-५		८-९-१० के	•
६८	60 X	का. ३ में ८-९.० के		- • •	

पृष्ठ	पंक्ति	अगुद्धता.	शुद्धता
<b>६८</b> •	<b>6</b>	का ३ में ८१०११-८	C-9 to tt C
<b>5</b> 60	<b>१</b> ३	का. ३ में ३	48
६८०	२३	का. ६ में १-३२	<b>∀ १-</b> ≑२
६८१	ঽ	का. ३ मैं ५ ४६	48 85
१८३	E	कां ३ मैं ५ ४५	५० ४५
\$28	२	कां, ६ में ४० ४३	<b>85 85</b>
<b>\$</b> < <b>\</b>	Ę	<sup>33</sup>	₹ <b>९</b> ०
	<b>२</b>	,, ६२ ३७	४८ ३७
<b>\$</b> 62	ઢ	,, ३२ वें	३२ ३२ के
	Ę	का ७ में १७ ६	<b>१७ १</b> ६
562	<b>१</b> 0	n १६७	१६ १७
FCY	<b>6</b>	का ६ में १४ १३	१२४१३ गुण.
<b>\$</b> 68	8	का ४ और ५ में	को नं. १८ देखो
	के मीचे		
	१४	का. ८ में देखी	१९ देखो
	3	नारमें १	ч
	Y	,, संजीपं जाति	की. नं. १ देखी
	Ę	" १८ देखो	१ देखो
	₹¥	का. ३ में गतवेद	अपगतवेद
	ŧ	का. २ में ५२	२५
६८७ ६८८	२३	का. ६ में २४ २४ ९	48 48 <b>4</b> 9
		का ६ में ११ के	१११ के
६८८	-	,, कोनं८	की. मं. १८
466	२३	" १२२२मंग	१ २२२३ को भंग
६५०	\$ <b>?</b>		१ मनुष्यगति में
	के बीच		
	<b>?</b> Ę	मा.६ में २४६ के	२४६ के
471	५६ केंबीच में	्वा. ३ में	१ मनुष्यगति में
£05			<b>V</b> /
६९२	<b>१</b> ४	का. २ में ८ ११०	४८ ११२
	१९	१९९ i	११२ १९९ ।।
ÉGR	6	का २ में अंध हो जाय है,	अंग हो जाय है, इसी सरह मिल्यादृष्टि श्रीय सारीच की तरह सर्वे
			देव, गुरु शासनाः दर्धतः ही नहीं नगराः ।
686	10	PUTT TETAL STO	प्राप्त । प्राप्त करा का निकास स्वर्ग सहस्र का स्वर्ग है। इति
42.	to	दुमरा रकाता अप्	w 1°3

The same of the sa

पृष्ठ	पं वित	अशुद्धता 🐍	शुद्धता	• ••
६९७	१	चौतीसस्थान दर्शन	चौतीसस्थान दर्शन का विवरण.	• 5 5
६९८	१०	१ में २ काते में निद्योग	नियोग 💮	
६९८	9	२ रेका में इकरा	इतरा	• • • •
६१८	२७	., इन	<u>.</u> इक	177
६९८	२९	,, भानो	मानो ः	
६९९	Ę	,, जय	त्रय १८०६	151
६९९	३३	,, ईखानो	बलानो 🧻 😁 🥕	? .
७००	२७	२ रेकाने में तरक	नरक 🖖 😶	÷ ,
१०७	९	१ ले का. में कर्मकार	कर्मकाट	*
७०२	ų	" आतंगति '	अतिगति -	, ' F
७०२	१९	,, निसच '''	तिर्थच ं	1 1
४०७	ও	१ ले काने में सुधाशिव	सुरशिव	1.7
७०५	Ę	,, परपच जन	परपंच जन	; \$
300	9	का. २ में १	२१	
८०७	8	का. ११ में ४	₹४ .	. 📜 🖁
७०८	९	का ८ में ४	88	
७०८	१०	,, ?	र १	
७०९	8	मादिक	नामादिक	, ,,
७०९	ų	१ लेकाने में कम	कर्म 👉 🧎 💉 💖	21.3
७०९	Ę	२ रे काने में सज्वलन गान	संज्वलना कोंध मान	:
७०९	१५	" नामकम के ६५ हैं	नामकर्म के ६७ मेद है	• ?
७१०	२१	,, ८८	२८	. 1
७१०	३२	,, फल	फवत	?
७१०	<b>१</b> २	२ रेकाने में बंधन ५ और	वंघन ५ संघात ५ भीर	· 3
७१०	१४	, <b>,</b> ३६–३७-३७	३६-३७-३८	
७१०	१५	" के ४	के ५ , १८७ -	
७१०	१९	,, गति ·	गति देवगति	. :
७१०	२१	,, आणि चंदर के संस्थान	और	
७१०	२३	,, वंद्यन ये संघात ५ औदारिक शरीर संघात	वंघन बाहारक शरीर	
10.0 -	21.	२ रे काने में पांढरा	वंघन तैजस घरीरवंधन सफेद	• :
७१० ७१०	३५ ३:	· ·	संभद पीला	,
	३५ ३६	" <u> </u>	ये २	. • ,
७११	७	., य २ १ लेकाने में ८	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	. * *
	ं२०	९ जावना	२१ जानना	
७११	. ्रे४ ३१	,, १-१ <del>है</del>	<b>१०</b> ४ धु	
918	33	२ रे कनेमें असु	अशुम	\$ 10

वृष्ठ	पंचित	अश् <b>द</b> ता	गुस्रता
७१२	१२	१ छे रकाने में तिर्धंच गत्यानुपूर्वी	तिबंचगरयानुपूर्वी १
	२०	,, जातिनामक्रमं	जातिनामकर्मे ५
		२ रे रकानेमें बंग	य <b>प</b>
७१२		,, मिध्यात्व १	मिध्यात्व १, कथाय १६
	२६	" "	18
७ १ ३		२ रे कार्ने में आतप १	आतप १ उद्योत १
		ंका: ३ में	स्त्यान
6 X	3	का. ३ में १५ दिन	काट डालना
७१४	Y	,,    १ अंतमृहंनं	१५ दिन
490	ų	3)	१ अंतम्हेर्त
6 \$ 4		पृष्टसंस्या ११५	684
७१५ ७१५		ना २ में ०	२०
७१५		ب, ۶	<b>२</b> ०
७१५		" <u>4</u>	२०
७१५		मा. ३ में	८ मुहुँतं
७१६	२	का. २ में ० वा	१० वा
७१६		का. ३ में १३-१४ गूण.	१३ वा गुण. में
	હ	39 39 39	१४ वा गुण. में
		का ३ में ० वें	५ वें
			६वा
	<b>१</b> ६	का. ३ में बंध उ.	बंबव्युच्छिति
		ं का. र में १९	₹o
		,, ४स ९	४ में ९
250		का २ में १ अपनर्षण	८ अपनार्थं प
	79	,, यं १०	मे १० स्थायरदशका जानना
७१९		का १ में अमदशक १	प्रसद्भाग १०
1989	<b>5</b>	,	१ <b>-३-</b> २६-२
			निरंतर होता रहेगा अर्थात प्रतिरक्षी
	<b>१७</b>	••	क्षीर
		्रा, प्रयस्त १	
94×	्र८ के नीचे	ना. २ में	पर्-पृथ्ठ ७२० कास ७२० जातन देखी। 
७२०	क ११	का ४ में	
		का ६ म जपस्य श्रेणीवाली की	उपगम धेनी या अपना श्रेमीयाको नी
७२० व	5 🔨	सा, ३ में <b>१−१−१</b> -०	t-1-1-1
'5 7 o'	# (Fq. 1. )		
५२० ।	क्र २०	का. ४ में केंगी की अपेदा	१-०-०-० भेगीबालीं की भवेशा

पृष्ठ	पं वित	अ <b>गु</b> द्धता	गुद्धता	
७२० क	٠ ٥٧	का. ४ में	, •	
0 70 41	<b>₹</b> 0	सम्यन्त्वं क्षपंकश्रेणी	सम्यक्तव और क्षपकश्रेणी	·*:
७२० ख	१०	का. ४ में किसी सवेद	किसी भी सवेद	
७२० ख	-	का ४ में सस०००	00000	
७२० ग		का. ४ में ३२-३०-२	37-30-37	
७२० घ	<b>१</b> ३	का. ३ में अपर्याप्त		,
		अवस्तेतच होऊ शकते	अपर्याप्त अवस्था में ही हो	सकता ई।
७२० घ	३२	का ४ में १	8-8	
७२० घ	96	का ३ में १-०-१	8-8-0	
७२० इ	११	का ४ में १९१-८५-८५	१०१-८५-८५	
७२० ङ	8	नीचे के सूचना में देखी	7 4	•
		प्रकृतियों और १४ वें	प्रकृतियों में और १४ वें	•
७२० ङ	ų	नीचे के सूचना में देखी		
		दोनो से कोई १ वेदनीय	दोनों में से कोई १	73.
		कर उदय	वेदनीय का उदय	
७२१	Ę	१ ले रकाने में परिण ने	परिणम,ने	
७२१	ঙ	,, परिणमानं ने का	परिणमावने का	
७२१	१९	२ रे काने में उपङगानि	उपाङ्गाति	
	२४	,, ৰজ	वज्र नाराच, नाराच	
• •	२५ के नोचे	१ ले खाने में और २ रेखाने में की	•	
		गिचे इस तरह पूरा रेखा खीची जाय क	।।रण दम रेखा के नीचे का <b>वि</b>	ाय अलग
	( 1 1 1	है इस रेखाके नीचे १ ले खानें में		_
		में है वह गढा जाय।	and the factor of the fact	
७२२	ą	१ लेखाने में १ ले २ रे रे	१ ले २ रे ३ रे	
७२२	٠, ٠,٠	" वज्रवृषम्नाराच	वज्रनाराच	
	Ę			: *
		ीचे जो प्रक्त और उत्तर छ <b>पी है</b> वह		
			२९-३०-३१	
		२ रे खाने में इस तरह पूरा रेखा खी		
		खाने में का है अलग है		: .
		१ ले खाने में इस कारण	•	•
		के अर्थात ज्ञानावरण के पांच भेदोंका		काने में
		इस तरह पूरा रेखा खीची जाय कार		
		२ रे रकाने में १ मितिज्ञानावरण कर्म अगले पुष्ठ ७२३ के १ ले खाने की प	—मतिज्ञानका जो आवरण इस	
				•••

		८३	<b>१५</b>		
	Č		i- ;	. * j	r % - 1
वृष्ठ	पंवित	वशुद्धता	शुद्धता		, ••
७२३	6	१ ले खाने में मन:ज्ञानावरण	मनःपर्ययज्ञानावरण	•	
७२३		, पक्षु में			
७२३		भ नेपूर्व २ रे खाने में सातावेदनीय	असातावेदनीय	,	,
७२३		, नोप कपाय	नोकपाय		. ,
७२४		,, पार क्याय <b>१</b> ले खाने में ०	<b>१</b> भागनाम	`;	
७२४		१ ले खाने में उन			, ,
		•	इन 		
७२४	<b>१</b> २		वतयां यहां गलजी से छपी गई है इसि		
			१ हे रकाने में अंतिम पंक्ति के नीचे		* 7
			ींची जाय और उस रेखाके नीचे इन	बाठ	
		पंचितयों की पढा			1
७२४			रह पूरी रेंखा खींची जाय कारण इस रे	खा क	• . '
	माच	का विषय १ ले खाने में का है अल			
७२५	२९		<b>93</b>		•
७२५	₹¥.,	ः २ रे.खानें में शरीर के 🔑 🦠	देवदारीर के		* *
७२६			पंक्ति यही गलतीसे छपी गई है इसक		n *
		पृष्ठ ७२५ के २ रेर कानें के स	विसे नीचे इस तरह पूरा रेखा सींचकर	ξ ,	
		उपने नीचे पढा जाय।	•	gs.	•
७३७	¥	२ रे काने में १९	१०९	,	e • 2
७२७	२८	" आत्य १०	आ <b>तप</b> । 👵 💬 💎	•	1.5
७२८	२७	१ हे साने में 📉	•	*	• *
		तवोस्यि तवो	तती		
७२८	२७	२ रे साने में प्राज्ञः	प्राजै:		
७२९	Ę	, <b>१</b> ३	<b>१४</b> ३,	•	٠.
790			निकालकर १ हे ऱकाने में उसी रेविनय		. •
	में पढ़ा	जाय सर्वात् 🕻 रे कपायों का न	ाम कषाची का कार्य इस प्रकार, १	诗.	n y
	रकाने ग	हिं पढ़ों कारण में पांच पंक्तियां र	हें रकानें में गलती में छप गई हैं।		• , •
050	Ę	२ रे रसाने में संयास	सन्यास		
७३०	<b>११</b>	,, गां. ६७	ग्रा ६१		,
<b>4</b> ₹0	Y	१ ल रकाने के नीचे श्रमदान	भद्रान	•	
380	१७	,, আঁহ	गलहीसे छपी हैं निकाल देना		
७३१	Ę	२ र रताने में वर्गरह	वर्गेरह गुपरयानी में		
150	10	,, ९४ से १०	९४ से १०२	,	
•	-	• •	ति के नाम एवं है वे पंतितबद नहीं हैं		
			में के ०-१०-४-६-१ इन पंतित्यों के	÷	7
		पंतित में रस कर पड़ा जा।		۵	
1622	בב	का. ३ में इस	इस माग		
उर्	२२	प्राप्तक पुरुष स्ट्रीय	<b>**</b> ** ** **		

वृष्ठिं	पं विसं	<b>अंगुर्दे</b> ती	्र शुद्धता	
<del>७</del> इ३	ę	का, ३ में सुम	TYNY B	, ,,
७२२ ७३३	<b>१</b> २	, तीष की	शुभ १ कीव १की	8 151
७३४ ४ई <i>७</i>	4	का. ५ यें <b>५</b> ७-३-४३	४६-३-४३	; * * * * *
¥€0	9	,	46-6 = 63	\$ # \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$
७२५	<b>१</b> ९	,, ३६	₹ <b>-१</b>	- 17
७३५	<b>१</b> ६	का. ३ में ४३-∙	¥3-१0	Street Street
<b>१</b> ३५	२३	का. ५ में ३२-७-५	१-३२ ३७-५ की. <b>नं. १</b>	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
७३६	· ```	,, ३३-३	32-3	, *
७३७	<b>₹</b> ₹	१ ले रकाने में		
	₹	जिस बंघ का सतत	जिस बंघ का बंघ सतत	
७३७	३९	१ ले र <b>कानें में क</b> म स्वरूप कर्म	कर्में स्वरूप	•
७३७	શર્પ ઁ	र रे रकाने में कंग	क्रम	
७३७	२८	" विमार्गं से	त्रिमार्ग से	
८६७	१६	का. ५ में २२-१२	<b>२२-२१</b> (1997)	
७३९	৩	वेदनीय के	वेदनीय के १ प्रकृति साता य	
७३९	<b>१</b> ३	ऊपर के १ में से	ऊपर के २१ में से	j <del>rii</del> n
७३९	१६	यें २ में से ४	यें २ ऐसे ४	
७४०	२९	१ लें रकाने में जो २	जो २५	
6¥6	<b>t</b>	२ रे रकाने में वा	६वा	
७४१	₹३	१ ले रकाने में मेवे	में से १	
685	₹₹	२ रे रकाने में	यह विषय २ र रकाने में	•
		बाकी बची सब प्रकृतियोंका	से निकालकुर १ के रुकाने वे	1.
		<b>उदम</b>	रखना चाहिये।	
७ 🛱 ३	१३	्रा. ५ में अप्रत्याख्यान	्रप्रयाख्यान 🚬 💮	
6A3	२२	का ५ में ५६-०	! <b>! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! </b>	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
9 <b>X</b> X	* *	२२-गुण्स्थानो	्र-२८ गुण <del>स्</del> षानी में	7.3
688		का,५में	e e e e e e e e e e e e e e e e e e e	
		<b>११</b> ± <b>९</b> +२±३	<b>११ ± ९</b> = २० ± ३	
७४५	. १८	१ ले रकानें में क्षयोगशम से	अ्योपशम	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
680	, ५४	,, गुणको -	गुण को	** **
680	( Y	२ रेरकानें भें सकारणः	इस कारण 🤔 😁 🤫 🕟	• •
980		"असाता देवके	असाता क	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *
685		का. ३ में ११०	180	
७४७		र रे रंकानें में का	. इ.स.	
681			बीर	
٩٧٥	८ १	२ रे रकाने में करने क	करने का	, <del>.</del>

पृष्ठ	पं मित	अ <b>शुद्ध</b> ता कु	शुद्धता 👵 👵
<b>5</b> ¥€	१७ के नीचे	१ ले खानें में कुल कुल	अ झायिकसम्पर दृष्टि होने का कन
৬४८	ų	२ रे रकांनें में	एक जीव की अपेक्षा मिथ्यास्व गुण में बाहारकद्विक भीर तिर्यंकर प्रकृतिका सस्य कैसा रहता है।
580	v	२ रे रकाने में द्विना	हिंक २
580	3	,, द्वित का	द्विक २ का
७४९	Ę	का. ५ में नरका १	नरकायु १
७४९	6	का ४ में १०	•
७४९	9	, 6 · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<b>१</b> ६ .
1988	२०	का. ५ में ६ ± ८ = ३४.	२६७८=३४
७५०	ч	का. ३ में ०३	<b>ξο</b> ξ
७५०	Ę	,, १२ <sup>.</sup>	१०२
940	v	का. ५ मे ४५ = १ = ४५	¥₹ ± १ = ४६
७५०	१४	, नाम <b>१</b> ३ 👵	नामकर्ग के १३
७५०	२७	,, १ये७ -	१ में ७०
440	२८	" E±67=- ·	६२ <del>1-</del> ७२ =
७५१		पृष्ठमंस्या ७५	७५१
945	१६	१ ले रकाबे में	वप्रधारयान और 🌐 💎 .
		अप्रत्याच्यान कोषासह	प्रस्यास्थान कोषासहित
140	२	२ ऱे.रकाने में 👉 🐇	•
		अ <b>ष:प्र</b> वत्तण	अवःप्रवृत्तः 🔑 🐰 🔻
७५१	6	२ रे रकाने में प्रयो	प्रयोजन, 🕟 🗼 👯
७५१	₹• ∻	3, स.,७ -	४ में ७
७५१	<b>ર</b> ેર <sub>''-</sub> ્	ु, म्यगध्य	<b>गम्यप्</b> टि
, ,	6	,, प्रतिरूप	प्रकृतिरूप
७५२	58	, अवनी अपनी अपनी	अपनी अपनी ः
७५३			में ३ 🔐 💮 👉
068	50	. का. १ में स्पाय	्रह्मान
			मो. ४३० मे
७५७	ţr	१ ले रकाने में सूचना	
७५७	१६	यह गुचना २ रे रकाने में पदा आप २ रे रकाने में अर्घात जादा होगा नरमापूका अर्घान	जादा परमाणका
७५७	16	। छ २ दे रकान के नीचे	•
010	,~	दशकरण अवस्या चूलिका दशकरण अ	क्षा प्रतिहा
	45	•	
७५७	<b>१</b> २	१ के रकाने में	

चतुरिन्द्रिय चतुरिन्द्रिय चतुरिन्द्रिय चतुरिन्द्रिय चतुरिन्द्रिय चतुरिन्द्रिय चतुरिन्द्रिय चर्च ४ २६ २६ रकाने में गरण मरके मरण करके अपरार्ध अपरार्ध ५६६ १२ १ ले रकाने में १ से १४ १२ से १४ १० ६ का. १ में ८ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण	र्षृष्ठ	पं वित	अशुद्धता .	शुद्धता	fy"	•••
७५८ ८ १ ले रकानें में से ४० से ४४० ७५८ १६ ,, कर्ण करण ७६८ १६ का. १० में ये ७ ये २ ७६८ १५ का. ३ में वु अविषयंशेन विद्या मार्गण। ७६२ १० का. ३ में वु अविषयंशेन अविषयं मार्गण। ७६२ १० या मार्गण। लेश्या मार्गण। ७६२ १० या मार्गण। लेश्या मार्गण। ७६४ १० या मार्गण। लेश्या मार्गण। ७६४ १० या मार्गण। लेश्या मार्गण। ७६४ १० या मार्गण। लेश्या मार्गण। ७६४ १० या मार्गण स्वे ४ ये दिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय तुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय चत्र्विन्द्रिय चत्र्विन्द्रिय चत्र्विक्द्रिय चत्रिक्ट्य चत्रिक्ट्य चत्रिक्ट्य चत्रिक्ट्य चत्रिक्ट्य चत		2.7	परिणमन जीना	परिणमन हो जाना	. •	. •
७६१ १६	७५८	6	१ ले रकानें में से ४०	,e.	·; •	
ण्डर १३ का. १० में ये ७ ये ० ये ० एवर १५ का. ३ में ० १ ०६२ १२ का. ३ में ० १ ०६२ १२ का. ३ में कुअविष्वर्धन अविष्वर्धन अविष्ठर १ गो. क. गा. ५०० गो. क. गा. ५०० एवर १० या मार्गणा लेवर १० या मार्गणा लेवर १० १ ते रकाने में बालकप्रभा वालुकाप्रमा अव्य अव्य विष्ट्रय चुरिन्निय चुरिन्	७५९	१६		, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	•	•
७६१ १५ जा. ३ में ० १ ० १ ० ० १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०						
७६१ १२ का. ३ में ० १ १ १ का. ३ में १ १ ० १ १२ १२ का. ३ में १ १ १ ० १ १२ १२ का. ३ में १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १				में १९		
७६१ १३ का. १ में १ ७६२ १-२ का. ३ में कुअविषिद्यांन अविषिद्यांन गी. क. गा. ५०१ ७६३ १७ या मार्गणा लेख्या मार्गणा लेख्या मार्गणा ७६४ ५ १ ले रकाने में बालकप्रभा वालुकाप्रमा। ७६४ १० , द्वीन्द्रिय ह्वीन्द्रिय नेतुरिन्द्रिय नेतुर्विय नेतुरिन्द्रि				ું જિલ્લો ઇંડેક્ટરક	•	:
७६२ १-२ का. ३ में कुअविधिदर्शन अवधिदर्शन शि. क. गा. ५०० गी. क. गा. ५०१ ७६३ १७ या मार्गणा छेदर ५ १ हे रकाने में बालकप्रमा वालुकाप्रमा ७६४ १ २ रे रकाने में बालकप्रमा वालुकाप्रमा ७६४ १ २ रे रकाने में ये ४ ये द्वित्वय चुरिन्व्रय चुरिन्व्यय चुरिन्व्रय चुरिन्व्यय चुरिन्व्यय चुरिन्व्यय चुरिन्व चुरिन्व्यय चुरिन्व्यय चुरिन्व चुरिन्व्यय चुरिन्व चुरिन्व्यय चुरिन्व्यय चुरिन्व चुरिन्व्यय चुरिन्व			का. ९ में १		•	٠.
७६३ १७ या मार्गणा लेक्या मार्गणा लेक्या मार्गणा ७६४ ५ १ ले रकाने में बालकप्रमा वालुकाप्रमा ५६४ १ २ रे रकाने में बेलकप्रमा वालुकाप्रमा ५६४ १ २ रे रकाने में ये ५ थे चित्रय			का. ३ में कुअवधिदर्शन	अवधिदर्शन		
७६३ १७ या मार्गणा छ हथा मार्गणा ७६४ ५ १ छे रकाने में बालकप्रमा बालुकाप्रमा ७६४ १ २ रे रकाने में बालकप्रमा बालुकाप्रमा ७६४ १५ ,, बीन्द्रिय चीन्द्रिय ७६३	٠ ٩	<del>-</del>	गो. क. गा. ५०१	:	: '	
७६४ ५ १ ते रकाने में बालकप्रमा बालुकाप्रमा ७६४ १ २ र रकाने में थे ४ थे ७६४ १५ ,, बीन्द्रिय चीन्द्रिय चीन्		<b>१</b> ७				
७६४ १५ , द्वीन्द्रिय व्वीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय भरण करके अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अस्व ११ १ ले रकाने में १ ते १४ १२ ते से १४ १२ ते हो देव निवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण १०६८ १० २ रे रकाने में हो तो देव मरण होय तो देव अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा नरक होगा निर्यचनित में नायेगा यदि ४ ये भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य तिर्यच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्वाप्ति भाषापर्याप्ति काल प्रवित्तमें पढा जायं।  ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पन्तियों को १ ले ओर दूसर रकाने के नीचे एक पन्तियों पढा जायं।  ७६९ ४ का. २ में कार्मण का योग कामोण काययोग अस्व जीव कि हते हैं एक ले ते हैं एक ले ते हैं एक के ते हैं एक के ते हैं एक के ते हैं एक के ते हैं एक के ते हैं एक के ते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हों हो हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक के ते हते हैं एक ते वे ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं हो हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं एक ते हते हैं हैं हते हते हैं एक ते हते हैं हते हैं एक ते हते हैं हो हते हते हैं हते हते हैं हते हते हैं हते हते हैं हते हते हैं हते हते हैं हते हते हैं हते हते हते हते हते हते हते हते हते हते		ų		वालकात्रमा	^ -	٠.
७६४ १५ , ब्रीन्विय वृद्धित्वय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चतुरिन्विय चरण करके अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध अपरार्ध १२ १ ले रकाने में १ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ तो करे तो देवगति में देव अथवा मनुष्यगति में देव अथवा मनुष्यगति मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा सनुष्य अथवा सनुष्य अथवा सनुष्य अथवा स्व माग्रे में एवं तो देव माग्रे में प्राप्ति से साग में मरण हो तो देव माग्रे माग्रे मरण हो तो देव माग्रे माग्रे मरण हो तो देव माग्रे साग में मरण हो तो देव माग्रे माग्रे मरण हो तो देव माग्रे साग्रे में माग्रे मरण हो तो देव माग्रे साग्रे में साग्रे माग्रे मरण हो तो देव माग्रे साग्रे			४ थे	.**	ı	
चतुरिन्द्रिय  ७६४ २६ २ रकाने में मरण मरके मरण करके  ७६५ ४ ,, अपराब अपरार्थ  ७६५ १ १ ले रकाने में १ से १४ १२ से १४  ७६७ ६ का. १ में ८ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण  ७६८ ९ २ रे रकाने में हो,य तो करे तो देवगति में  ६व अथवा मनुष्यगति में  ७६८ १० २ रे रकाने में मरे तो देव मरण होय तो देव अथवा  मनुष्य अथवा मनुष्यगति मनुष्यगति  ७६८ ११ २ रे रकाने में देव, तिर्थच देव, मनुष्य अथवा  अथवा नरक होगा तिर्थचगित में जायेगा यदि ४ ये  भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य  तिर्थच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में  पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पंक्तियों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक  पंक्तिमें पढ़ा जायं।  ७६९ ४ का. २ में  कार्माण का योग कार्माण काययोग  ७७० ८ १ ले रकाने में यह जाव यह जीव  ७७० ११ ,, कते हैं कंहते हैं  ७७० ३० ,, पल्य असंक्यात पर्यके वसंख्यात  ७७० ३१ ,, र जावें रह जाव	-		,, द्वीन्द्रिय		;	~ ;*·
७६४ २६ २ रे रकाने में मरण मरके मरण करके ७६५ ४ ,, अपराध अपराध अपराध  ७६६ १२ १ ले रकाने में १ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ १२ से १४ से से १४ से १४ से १४ १२ से १४ से १४ १२ से १४	·	•	चत्रिन्द्रय		•	
७६५ ४ ,, अपराव अपरार्ध  ७६६ १२ १ ले रकाने में १ से १४ १२ से १४  ७६७ ६ का. १ में ८ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण  ७६८ ९ २ रे रकाने में हो हुय तो करे तो देवगति में विव अथवा मनुष्यगति में विव अथवा मनुष्यगति मनुष्य अथवा मनुष्यगति मनुष्य अथवा मनुष्यगति मनुष्य अथवा मनुष्यगति मनुष्य अथवा अथवा नरक होगा तियंचगति में जायेगा यदि ४ ये भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य अथवा तिर्यंच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल प्राप्ति काल प्राप्ति भाषापर्याप्ति काल प्राप्ति भाषाण कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि कामणि काल योग पह जीव महते हैं कहते हैं ७०० ३० ,, कते हैं कहते हैं प्रत्येक असंस्थात	७६४	२६			;	
७६६ १२ १ ले रकाने में १ से १४ १२ से १४ ७६७ ६ का. १ में ८ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण ७६८ ९ २ रे रकाने में हो एय तो करे तो देवगित में ७६८ १० २ रे रकाने में मरे तो देव मरण होय तो देव अथवा मनुष्यगित मनुष्य अथवा मनुष्यगित मनुष्य अथवा मनुष्यगित सनुष्य अथवा अथवा नरक होगा तियंचगित में जायेगा यदि ४ थे भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य अथवा नरक होगा। ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्त काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति माण कार्योग यह और दूसरे रकाने के नीचे एक पंक्तिमें पढा जायं। ७६९ ४ का. २ में कार्माण कार्योग यह जीव कार्माण कार्योग यह जीव कार्ये एवं ते से एवं व्यक्ति से यह जाव यह जीव कार्ये एवं व्यक्ति व्यक्ति से एवं व्यक्ति व्यक्				अपरार्घ	٠.	, , , ,
७६७ ६ का. १ में ८ अनिवृत्तिकरण ९ अनिवृत्तिकरण ७६८ ९ २ रे रकाने में हो हो य तो करे तो देवगित में देव अथवा मनुष्यगित में एक्ट अथवा मनुष्यगित में मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा कियंचगित में जायेगा यदि ४ ये भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य अथवा तिर्यंच अथवा नरक होगा तिर्यंच अथवा नरक होगा। ७६९ १२ १ छे रकाने में पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति काने में यह जावं यह जीव यह जीव पर्यके असंस्थात पर्यके असंस्थात एत्यके असंस्थात एत्यके असंस्थात एत्यके असंस्थात एत्यके असंस्थात एत्यके असंस्थात		<b>१</b> २		१२ से १४ 🐪 👵	٠.	1.0
७६८ १० २ रेरकाने में हो है य तो करे तो देवगित में देव अथवा मनुष्यगित में अह अथवा मनुष्यगित में मिर्दे तो देव मरण होय तो देव अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य अथवा तियंचगित में जायेगा यदि ४ थे भाग में भरण हो तो देव, मनुष्य अथवा तियंच अथवा नरक होगा। ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्त काल पर्याप्त भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल प्राप्ति भाषापर्याप्ति काल प्राप्ति भाषापर्याप्ति काल प्राप्ति भाषापर्याप्ति काल प्राप्ति भाणा योग कामोण काययोग कामोण काययोग एड० ८ १ के रकाने में यह जाव यह जीव एड्य लें हैं कहते हैं एड० ३० , कते हैं कहते हैं एडथ ३१ , र जावें रह जावे				९ अनिवत्तिकरण		•
देव अथवा मनुष्यगित में  ७६८ १० २ रे रकाने में मरे तो देव मरण होय तो देव अथवा  मनुष्य अथवा मनुष्यगित मनुष्यगित  ७६८ ११ २ रे रकाने में देव, तिर्थन देव, मनुष्य अथवा  अथवा नरक होगा तिर्यचगित में जायेगा यदि ४ थे  भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य  तिर्यच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में  पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पवितयों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक  पंक्तिमें पढा जायं।  ७६९ ४ का. २ में  कार्माण का योग कार्माण काययोग  ७७० ८ १ ले रकाने में यह जाव यह जीव  ७७० ११ , कते हैं  ७७० ३० , पत्य असंवयात पर्यके असंस्थात  ७७० ३१ , र जावं रह जावे	७६८		, ,	करे तो देवगति में	- ,	1.5
७६८ १० २ रे रकाने में मरे तो देव मरण होय तो देव अथवा मनुष्य अथवा मनुष्य गित मनुष्य गित वेव, मनुष्य अथवा अथवा नरक होगा तिर्यंच गित में जायेगा यदि ४ ये भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य तिर्यंच अथवा नरक होगा। ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल प्रवित्तमें पढ़ा जायं। ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पन्तियों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक पंक्तिमें पढ़ा जायं। ७६९ ४ का. २ में कार्माण का योग कार्माण काययोग ७७० ८ १ ले रकाने में यह जाव यह जीव कहते हैं ७७० ३० , पत्य असंक्यात पत्यके असंस्थात			देव अथवा मनुष्यगति में			
मनुष्य अथवा मनुष्यगित मनुष्यगित वित्र स्वाने में देव, तिर्थ च देव, मनुष्य अथवा अथवा नरक होगा तिर्यचगित में जायेगा यदि ४ थे भाग में भरण हो तो देव, मनुष्य तिर्यच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्याप्ति काल पर्वाप्ति कामाण काययोग कामाण काययोग यह जीव कहते हैं कहते हैं ए७० ३० , पत्य असंक्यात पर्व्यके असंख्यात एत्यके असंख्यात ७७० ३१ , र जावें रह जावे	७६८	ξó		मरण होय तो देव अथवा	•	• . •
अथवा नरक होगा तिर्यंचगित में जायेगा यदि ४ थे  भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य  तिर्यंच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में  पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पक्तियों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक  पंक्तिमें पढा जाय।  ७६९ ४ का. २ में  कार्माण का योग कार्माण कार्योग  ७७० ८ १ ले रकाने में यह जाव यह जीव  ७७० ११ , कते हैं कहते हैं  ७७० ३० , पत्य असंक्यात पंत्यंक असंस्थात  ७७० ३१ , र जावें रह जावे		•	1	7.5		
अथवा नरक होगा तियंचगित में जायेगा यदि ४ थे भाग में भरण हो तो देव, मनुष्य तियंच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पंक्तियों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक पंक्तिमें पढ़ा जायं।  ७६९ ४ का. २ में कार्माण का योग कार्माण काययोग  ७७० ८ १ से रकाने में यह जाव यह जीव  ७७० ११ , कते हैं कहते हैं  ७७० ३० , पत्य असंक्यात पत्यके असंख्यात  ७७० ३१ , र जावें रह जीवे	७६८	<b>१</b> १	२ रे रकाने में देव, तिर्थंच	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	•	
भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य तिर्यच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पवितयों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक पंक्तिमें पढा जायं।  ७६९ ४ का. २ में कार्माण का योग कार्माण काययोग  ७७० ८ १ ले रकाने में यह जाव यह जीव  ७७० ११ , कते हैं कहते हैं  ७७० ३० , पत्य असंवयात पत्यके असंख्यात  ७७० ३१ , र जावें रह जावे	. •	• •	अथवा नरक होगा		• •	* , , *
तिर्यच अथवा नरक होगा।  ७६९ १२ १ ले रकाने में  पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  ७६९ १५ २ रकाने में इन दोनो पित्तियों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक पंक्तिमें पढा जायं।  ७६९ ४ का. २ में  कार्माण का योग कार्माण काय्योग  ७७० ८ १ ले रकाने में यह जान यह जीव  ७७० ११ , कते हैं कहते हैं  ७७० ३० , पत्य असंक्यात पत्यके असंस्थात  ७७० ३१ , र जावें रह जावे	•			•		•
पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  प्रितमें पढा जायं।  प्रित्तमें पढा जायं।  प्रित्तमें पढा जायं।  कार्माण का योग कार्माण कार्योग  प्रित्तमें पढा जायं।  कार्माण का योग कार्माण कार्योग  प्रित्तमें पढा जायं।  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल के नीचे एक  कार्माण कार्योग  कार्माण कार्योग  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्माण कार्योग  कार्माण कार्योग  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्माण कार्योग  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्माण कार्योग  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्माण कार्योग  पर्वति हैं  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्माण कार्योग  पर्वति हैं  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्माण कार्योग  पर्वति हैं  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्माण कार्योग  कार्माण कार्योग  पर्वति हैं  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्योग  कार्माण कार्योग  पर्वति हैं  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्योग  कार्माण कार्योग  पर्वति हैं  प्रित्त भाषापर्याप्ति काल कार्योग  कार्माण कार्योग  स्वाप्ति भाषापर्याप्ति काल कार्योग  कार्माण कार्योग  स्वाप्ति भाषापर्याप्ति काल कार्योग  कार्माण कार्योग  पर्वति भाषापर्याप्ति काल कार्योग  कार्माण कार्योग  स्वाप्ति भाषापर्याप्ति काल कार्योग  कार्योग					,	·* -
पर्याप्ति काल पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल  ७६९ १५ २ रे रकाने में इन दोनो पन्तियों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक पंक्तिमें पढ़ा जायं।  ७६९ ४ का. २ में कार्माण का योग कामाण काययोग  ७७० ८ १ के रकाने में यह जान यह जीन  ७७० ११ , कते हैं कहते हैं  ७७० ३० , पत्य असंन्यात पत्यके असंस्थात  ७७० ३१ , र जावें रह जाने	७६९	१२	१ ले रकाने में		••	, ,
पंक्तिमें पढा जायं।  ७६९ ४ का. २ में  कार्माण का योग कार्माण काययोग  ७७० ८ १ के रकानें में यह जान यह जीन  ७७० ११ , कते हैं कहते हैं  ७७० ३० , पत्य असंन्यात पत्यके असंस्थात  ७७० ३१ ,, र जावें रह जाने	-		पर्याप्ति काल	पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल	` .	. ^
पंक्तिमें पढा जायं।  ७६९ ४ का. २ में  कार्माण का योग कार्माण काययोग  ७७० ८ १ के रकानें में यह जान यह जीन  ७७० ११ , कते हैं कहते हैं  ७७० ३० , पत्य असंन्यात पत्यके असंस्थात  ७७० ३१ ,, र जावें रह जाने	७६९	<b>?</b> 4	२ रे रकाने में इन दोनों पवि	तयों को १ ले ओर दूसरे रकाने के नीचे एक	•	
कार्माण का योग कार्माण कार्योग ७७० ८ १ से रकाने में यह जान यह जीन ७७० ११ , कते हैं कहते हैं ७७० ३० , पत्य असंन्यात पत्यके असंस्थात ७७० ३१ ,, र जावें रह जावे	• ( )	• •	,		•	
कार्माण का योग कार्माण कार्योग ७७० ८ १ से रकाने में यह जान यह जीन ७७० ११ , कते हैं कहते हैं ७७० ३० , पत्य असंन्यात पत्यके असंस्थात ७७० ३१ ,, र जावें रह जावे	१०६९	٧	का. २ में		,	•
७७०     ८     १ के रकाने में यह जान     यह जीन       ७७०     ११     ,, कते हैं     कहते हैं       ७७०     ३०     ,, पत्य असंक्यात     पत्यके असंख्यात       ७७०     ३१     ,, र जावें     रह जावे	• , ,			कामोण काययोग	. ,	
७७० ११     ,, कते हैं     कहते हैं       ७७० ३०     ,, पत्य असंक्यात     पत्यके असंख्यात       ७७० ३१     ,, र जावें     रह जावे	७७०	ሪ	१ से रकानें में यह जाव		•	
७७० ३० , पत्य असंव्यात पत्यके असंस्थात ७७० ३१ ,, र जावे रह जावे		११			,	
७७० ३१ ,, र जावे रह जावे					•	
७७० ९ २ रे रकानें में				रह जावे		
	990	ς.	२ रे रकानें में	** ** ** * * * * * * * * * * * * * * *		,

ब्बर	पंतित	<b>भगुद</b> ता	गुढता .
		निषेकाची	निषेकोंकी
७७१	Ę	१ ले रकाने में मित्या	तित्या
	Ę	२ रे रकाने ६०	£8°
५७२		१ ले रकाने में कली घात	गदली धान -
	16	,, १० वें स्वर्ग	१२ में स्वर्ग
५७२		२ रेकाने में उदय	उदय 🐧
७७४		५७ उत्तर आन्व के	आसय की ५७ उत्तर भेद के
409	Ę	ना २ में ३	\$\$ .
*	<b>१</b> ६		आहारक काययोग आहारक मिश्रकायमीय
७७६	Ę	इन्माग्व 🦠	भाव -
७७६	*	का. २ मे प्रस्यन की	प्र <b>त्यनी</b> क
३७७	ą	,, से 🦠 🔭	रुप वंतराय से
७७८	ર	होनें हुए उत्पन्न हुये 🛷	दूसरे को
७७८	२	जावे भाव	जावें ये भाग
७८२	6	का ६ में ०	१ जीवस्य
520	सूचना-	कोई आचार्य धार्मिक भाव	कोई आचार्य सिद्धगति में धायिकमाव
620	२	१ ले रकाने में	
		मत् है ३ ३ भैदो को	, मत है जनके ३६३ भैदी की
	*	१ ले रकाने में ४ × ८	¥× <b>९</b>
	<b>१</b> ५	्, भवरूप	भावरूप
		२ रे रकाने में ८७८	८७६
	16	,, १८ वंद	<b>१८० भे</b> व
•	₹\$	,, প্ৰ <b>ন</b> ি	अजी <b>य</b> रिकार
	२३ ३	,, नियती ७०	नियती स्टमाव ७०
	_	३२ दूसरे खाने में १४	१४ स्वमास की
420	ŧ	र ले रकान में जीव आखव	जीव, अरोव, अध्यय
92X	5	,, नास्तिकपन <u>े</u>	नः स्तिपन
YSU	v	भ्यत्रभंग से सेंद होते हैं।	सप्तभंगते इसके आगे का विषय न जानना जैसे कि 'श्रीव' इरनादी यही ७८४ पृष्ठ के २ रे रहाने में एक ने ७ पंतित के स्रोग होते हैं
			यहाँ तक सम्बन्धः
458	₹	२ रे रकाने में	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	-	दोनो या बाकी तीन	दोनो या प्रयम्तस्य या बाही शीन

ø

पृष्ठ	पंषित	अशुद्धात .	गुस्ता 👫 🚟		¥/
७८४	30	<b>"</b> , 啊 """""	• कर्णं :::	•	
४८७	<b>ų</b> .	२ रे रकाने में अस्ति-नास्ति	अस्तिनास्ति		٠
७८४	Ę	,, ग्ण	गुणा		·
७८५	৬	,, प्रमाणोकी	परिणामों की	*	
७८५	9	<b>१</b> छे रकाने में होना चाहिये	होना जानना	•	4.5
७८६	3	२ रे रकाने में निषेकाहार	निषेकहार	1	٠'.
७८६	γ.	. ,, गुना नमाण	दूना प्रमाण	-	÷ . :
७८६	ų	,, निषेकाहार	निषेकहार	ı	. • -:
७८७	٠ ک	्र रे रकाने में होते है वे	होते हैं वे अपकर्षकाल जाना	TI :	: 44
७८७	4	21 Commonwealth		·	
•		अपरिवर्तमान परिणामः	यह शब्द मुख्य शब्द के स्थान	· ·	
		4274	में पढ़ना चाहिये 🕟 💷 💆	:	
1960	२६	२ रे रकाने में ६९ देखो	४६९ देखो	÷ .•	÷
७८८	२३	१ ले रकाने में वर्गणाका	वर्गणाका समूह स्पर्छक		
		<b>स्पर्दं</b> कः,	9 × 1	•	5 % w
		१ ले रकाने में समूहस्थान	, स्थान		
		,, गा. ६६० देखो	इसको निकाल देना चाहिये		
७८९	१५ 	"	अंगोपांग १, ये २ जानना	•	• •
10.4.9	के नीचे	भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू भ	जगजो स्वां से निवस्य जेना		
	१७ <b>१</b> ७	,, अंगोरांग १ ये २ जानना ,, इवानके समान् हैं	इसको यहां से निकाल देना स्वानके निद्राके समान <b>है</b>	•	
9 <b>१</b>	₹0		गा. २२०	*}	•
७ <b>९१</b>	ય	,, गा २० २ रेर <b>कानें में</b> प्रत्यनिक	प्रत्यनीक	, >	•
७९१		,, ।ण	प्राण	· .*	:
७९१		,, १०५ की	१४५ की	a '	•
७९१	<b>३३</b>	,, मा. १५८	गा. ३५८		•
: <b>* *</b>	• •	the late of the second		,	•
			المراقب والمساورات		

€0000€

